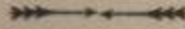


सिरि-सीलंकारियविरह्यं
चउप्पन्नमहापुरिसचरियं



1349

संशोधकः सम्पादकश्च

पं० अमृतलाल मोहनलाल भोजक
(संशोधक पंडित, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद)

प्रकाशिका

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्,
वाराणसी-५

गंधसमप्पणं

भारहसतंतगणतंतपढमरुद्धवइपयविभूसाणं ।
भूसाऽइरेयरहियाण हियाणं धम्मपयईणं ॥ १ ॥
अइकज्जवावडेहि वि रट्टियदिट्ठीएँ चित्तिउं जेहिं ।
मागह-पाययभासाणमुच्चइं ठावणा विहिया ॥ २ ॥
पाययपोत्थयपरिसाएँ तेसिमेयं महापुरिसचरियं ।
विभूण गुणभूणं बुहयणबहुमाणणिज्जाणं ॥ ३ ॥
करकमलकोसमज्जे राइंदपसायपुण्णणामाणं ।
भोजककुलउप्पन्नो अणहिलपुरवासिओ अहयं ॥ ४ ॥
मोहनलालस्स मुओ अमओ पंडियउवाहिओ पणओ ।
अप्पेभि सबहुमाणा विणएणं, भारई जयउ ॥ ५ ॥

(पंचहि कुलयं)

ग्रन्थसमर्पण

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपतिपद को विभूषित करनेवाले, सादगीसे रहनेवाले और धार्मिकस्वभाववालों के हितकारी, अनेक कार्यमें संलग्न होते हुए भी जिन्होंने राष्ट्रीय दृष्टिसे मागधी और प्राकृत भाषा की उन्नति का चिन्तन करके प्राकृत ग्रन्थपरिषद् (प्राकृतटेक्स्टसोसायटी) की स्थापना की, तथा जो विज्ञ हैं, गुणज्ञ हैं और विद्वानोंके बहुमान्य हैं ऐसे पुण्यनाम राजेन्द्रप्रसादजीके करकमलोंमें यह महापुरुषोंका चरितग्रन्थ, भोजक कुलमें उत्पन्न, अणहिलपुर (पाटण) निवासी मोहनलाल का पुत्र मैं पंडित अमृत नमस्कारपूर्वक विनयावनत होकर बहुमानसे समर्पित करता हूँ ।

भारतीका जय हो !

ग्रन्थानुक्रमः

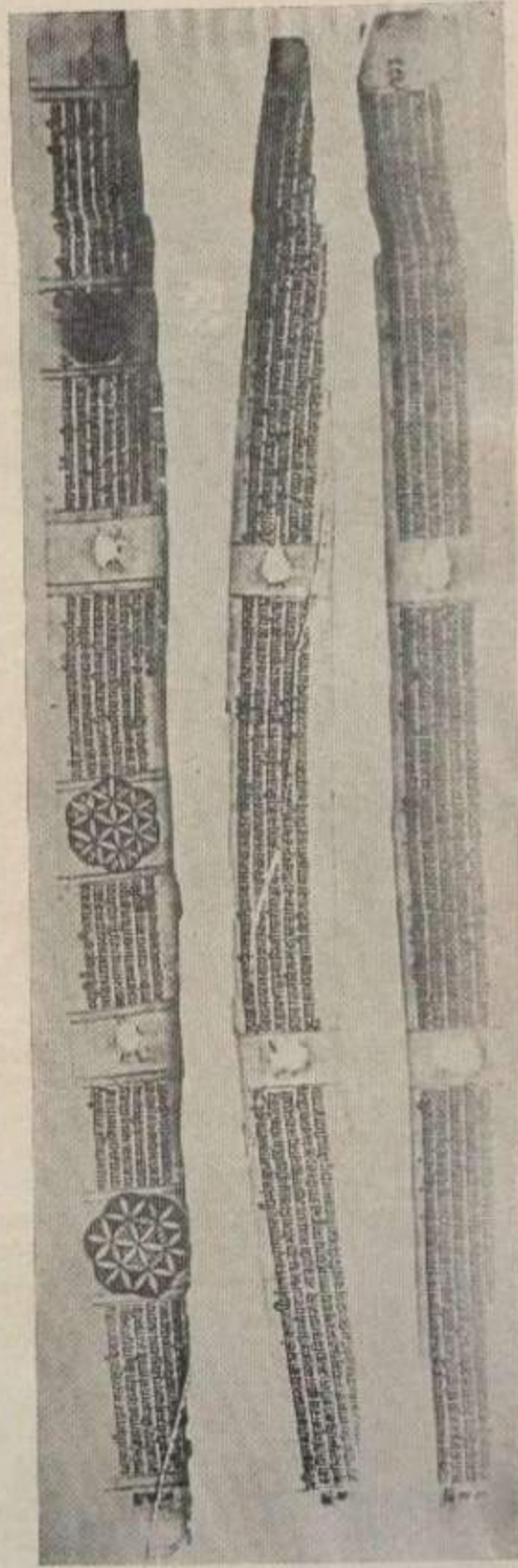
१	Preface : General Editors	1-3
२	Introduction : Dr. Kl. Bruhn	1-31
३	प्रस्तावना : सम्पादक ।	३३-६२
४	'चउप्पन्नमहापुरिसचरिय'स्य विषयानुक्रमः ।	६३-६६
५	महापुरिसगाहाओ ।	६८
६	चउप्पन्नमहापुरिसचरियं ।	१-३३५
७	प्रथमं परिशिष्टम्— विशेषनाम्नामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका ।	३३७-४७
८	द्वितीयं परिशिष्टम्— विशेषनाम्नां विभागशोऽनुक्रमणिका ।	३४८-५६
९	तृतीयं परिशिष्टम्— देश्य-प्राकृतशब्दानां संग्रहः ।	३५७-६०
१०	चतुर्थं परिशिष्टम्— अपभ्रंशसंग्रहः ।	३६१
११	पञ्चमं परिशिष्टम्— वर्णकसंग्रहः ।	३६२
१२	षष्ठं परिशिष्टम्— स्तुति-चन्दनाः ।	"
१३	सप्तमं परिशिष्टम्— सुमाप्तिगाथानामनुक्रमः ।	३६३-७८
१४	अष्टमं परिशिष्टम्— मूर्तिरूपा गाथांशः ।	३७९-८०
१५	शुद्धिपत्रकम् ।	३८१-८४



प्राकृतग्रन्थपरिषद्



चउपपन्नमहापुरिसचरिय-'सु' संज्ञक प्रतिका अन्तिम (३७६ वी) पत्र



चउपपन्नमहापुरिसचरिय-'जे' संज्ञक प्रतिके ३२१-२२-२३३ पत्र

प्रस्तावना

प्रतिपरिचय

‘सू’ संज्ञक प्रति

यह प्रति सूरिसम्राट् आचार्य श्री विजयनेमिसुरीधरजी शास्त्रसंग्रह, अहमदाबाद, के भण्डारकी है। धवलकक (धोलका) में राजा अर्जुनदेव तथा अमात्य मल्लदेवके समयमें स्वम्भातनिवासी पल्लीवालजातीय लीलादेवोंने अपने कल्याणके लिए वि.सं. १३२६ के श्रावण कृष्ण २ और सोमवारके दिन यह पोथी लिखवाई है। ताड़पत्रके ऊपर लिखी गई इस प्रतिमें कुल ३७६ पत्र हैं। इनमेंसे पत्र १ से ११ तथा ३७५ (कुल १२ पत्र) पीछेसे नये लिखाये गये हैं। यह प्रति अतिशुद्ध तो नहीं, परन्तु विशेष अशुद्ध भी नहीं कही जा सकती। इस प्रति परसे ही वि. सं. १६७३ के मार्गशीर्ष कृष्ण १३ और गुरुवार के दिन स्वम्भातनिवासी जोशी नानाजीके पुत्र नथामके द्वारा लिखी गई कागजकी प्रति श्री उर्णाक भण्डारमेंसे उपलब्ध हुई है, जिससे प्रस्तुत ‘सू’ संज्ञक प्रतिकी वाचना अखण्ड सुरक्षित रह सकी है।

इस प्रतिकी लम्बाई—चौड़ाई २०½" × २½" है। प्रत्येक पत्रके प्रत्येक पृष्ठमें अधिकसे अधिक आठ और कमसे कम तीन पंक्तियाँ लिखी मिलती हैं, परन्तु अधिकांशतः प्रत्येक पृष्ठमें चारसे छः पंक्तियाँ हैं।

इसमें संवत्सरके बदले संवत्सर, पुरंषीके बदले पुरन्धी और गौरीके बदले गौरी जैसे संस्कृत शब्द भी कहीं कहीं उपलब्ध होते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि प्रतिके लेखकको संस्कृत भाषाका भी ठीक-ठीक परिचय रहा होगा। लेखनकालमें सिद्धहस्त कहे जा सकें ऐसे लेखक द्वारा यह प्रति लिखी गई है। लिपि सुन्दर एवं सुवाच्य होने पर भी लेखकने लिपि-सौष्ठवका प्रदर्शन करनेके लिए लेखनमें अपनी गति मन्द रखी हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। प्रतिमें अनेक स्थानों पर ‘द्व’के बदले ‘दृ’ और ‘द्वै’के बदले ‘दृ’ हो गया है तथा कहीं कहीं ‘लृ’का ण, ‘ण’का लृ, ‘व’का ध अथवा य और ‘ध’का ध लिखा गया है, तो एकाध स्थान पर ‘श’के बदले क भी हो गया है, इससे ज्ञात होता है कि लेखक आदर्श प्रति की लिपिसे अंशतः अनजान है। नकारके स्थानमें णकार और जुयलके स्थानमें जुवल भी अनेक स्थानों पर मिलता है। चार छः स्थानों पर गणपाठमें वर्णके द्विर्भावका एकीभाव भी उपलब्ध होता है; यथा, मोख, सोख, जोग, पचूस एवं दुलंघके बदले मोख, सोख, जोग, पचूस एवं दुलंघ आदि।

मुद्रित पृ. २११ से ग्रन्थान्त (पृ. ३३५) तक ‘जे’ संज्ञक प्रतिके छः स्थानोंमें तीनसे पाँच पंक्तिजितना तथा चार स्थानोंमें तो कुल मिलाकर साढ़े तीन फोर्म जितना पाठ अप्राप्य है। ये छोटे-बड़े पाठ-सन्दर्भ प्रस्तुत ‘सू’ संज्ञक प्रतिमें ही उपलब्ध होते हैं। मतलब कि केवल इसी एकमात्र प्रतिसे ही चउप्यनमहापुरिसचरियकी वाचना पूर्ण रूपसे प्राप्त हो सकी है।

मुद्रित ग्रन्थमें पृ. २२२ टि. ६, २२४ टि. ९, २२६ टि. ८, २२८ टि. ६, २३१ टि. २, २३३ टि. १२, २३४ टि. ४, २३५ टि. १, २३६ टि. १२, २३८ टि. ४ एवं ७, २३९ टि. ११, २४० टि. ४, २४१ टि. १७, २४२ टि. ८, २४७ टि. ३, २४८ टि. ३ एवं ५, २५२ टि. १०, २५३ टि. ८, २५७ टि. ५, २५९ टि. ३,

१ देखो पृ. ३३५, टि. ६।

२ पृ. २११ टि. ११, २४३ टि. ७, २५२ टि. १, २६० टि. ९, २७० टि. १३ और २७६ टि. ७—इन छः पृष्ठोंमें निर्दिष्ट टिप्पणियाँ जिन मूल पाठोंके ऊपर हैं वे मूल पाठ देखें।

३ पृ. २६१ टि. १, २९२ टि. ४, ३०२ टि. ३ और ३२६ टि. १३ इन चार पृष्ठोंमें उल्लिखित टिप्पणियाँ भी जिन मूल पाठोंके ऊपर हैं वे पाठ देखें।

२६१ टि. ३, २६३ टि. ४, २६४ टि. ४ एवं ९, २६६ टि. ८, २७७ टि. ५, २७८ टि. ५ एवं १० — ये टिप्पणियाँ जिन पाठों पर दी गई हैं वे 'सू' प्रतिमें अधिक प्राप्त होनेवाले पाठ-सन्दर्भ हैं। इन सन्दर्भोंके अभावमें भी अर्थानुसन्धान बराबर सुरक्षित रहा है, अतः उनका यहाँ खास तौर पर अलग उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त शुद्धिकी दृष्टिसे भी आदिसे अन्त तक अनेक स्थानों पर इस प्रतिके पाठ महत्त्वके ज्ञात हुए हैं।

प्रस्तुत प्रतिकी वाचनाका स्वीकार मुद्रणमें अक्षरशः किया है, और जहाँ जहाँ 'जे' संज्ञक प्रतिके पाठ शुद्ध अथवा वास्तविक लगे वहाँ प्रस्तुत प्रतिके पाठोंको नीचे टिप्पणिके रूपमें रख दिये हैं। इस प्रतिका आकार-प्रकार ज्ञात हो सके इस दृष्टिसे इसके अन्तिम पत्र (३७६) का चित्र भी इस ग्रन्थमें दिया गया है।

'जे' संज्ञक प्रति

जेसलमेर (राजस्थान) के किलेमें अवस्थित चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-जैनमन्दिर के भूमिपरमें स्थित, 'बडाभंडार'के नामसे प्रसिद्ध, खरतसगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिसंस्थापित (विक्रमका १५ वा शतक) जैन ज्ञानभंडारकी यह ताड़पत्रीय प्रति है। 'जेसलमेरस्थ-जैन-ताड़पत्रीय-ग्रन्थभण्डार-सूचिपत्र' (जैन श्वेताम्बर कॉन्ग्रस, बम्बई द्वारा प्रकाशित) में इसका क्रमांक २३७ है। इसमें कुल ३२४ पत्र हैं। ३२१ वें पत्रके दूसरे पृष्ठमें मूल ग्रन्थ तथा लेखककी पुष्पिका पूर्ण हो जाती है। पत्र ३२२ से ३२४ तकमें इस प्रतिको लिखानेवाले गृहस्थकी प्रशस्ति आती है। इसकी लम्बाई - चौड़ाई २९ १/४" × २३ १/४" है। प्रतिका अधिकांश भाग अशुद्ध लिखा गया है, फिर भी प्रस्तुत सम्पादनमें उपयुक्त 'सू' संज्ञक प्रतिके अनेक पाठोंके स्थान पर अधिक उपयोगी हो सके ऐसे भी सैकड़ों पाठ इस प्रतिमेंसे प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार पूरक प्रतिके रूपमें इसका इस सम्पादनमें एक विशिष्ट स्थान है। जिस प्रतिके ऊपरसे प्रस्तुत प्रति लिखी गई है वह बीचमेंसे खण्डित होगी तथा उसका पत्रांक सूचक कोई-कोई भाग भी नष्ट हो गया होगा जिससे एक-दो स्थानों पर पीछेके पन्ने आगेके पन्नोंमें मिल गये होंगे। ऐसे ही किन्हीं कारणोंसे भाषासे अनभिज्ञ लेखकने मानो ग्रन्थ सम्पूर्ण हो ऐसा समझकर समग्र ग्रन्थकी प्रतिलिपि की है। इसमें अनेक स्थानों पर 'ण'के बदले न और 'चे'के बदले चैय लिखा मिलता है।

वि. सं. १२२७के मार्गशीर्ष शुक्ला ११ और शनिवारके दिन गूर्जरेश्वर कुमारपाल और बाबुवल अमात्यके समयमें पालउदग्रामके निवासी आनन्द नामक लेखकने यह प्रति लिखी है, और साधारण नामक पुत्रसे युक्त हौन्बटकुलीन पार्श्वकुमार नामक श्रेष्ठीने अपनी पुत्रवधू शीलमती तथा पौत्र नागदेवके कल्याणके लिए यह प्रति लिखवाई है।

प्रति लिखानेवालेकी प्रशस्तिवाला भाग (पत्र ३२२ से ३२४) घिसा हुआ और दुर्वाण्य है तथा अबतक प्रसिद्ध भी नहीं हुआ। संशोधन-क्षेत्रमें अविरत व्यस्त रहनेवाले पूज्यपाद विद्वत्त आगमप्रभाकर मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजीने अपने विद्वन्मण्डलके साथ जेसलमेरमें लगभग डेढ़ वर्ष तक रहकर (वि. सं. २००६-७) वहाँके भण्डारके पुनरुद्धारार्थ जो ज्ञानयज्ञ किया था उस समय उन्होंने प्रस्तुत ग्रन्थ लिखानेवालेकी प्रशस्ति पढ़ी थी और वह 'जेसलमेरस्थ जैन ताड़पत्रीय ग्रन्थभण्डार सूचिपत्र' में छपवाई भी है। प्रस्तुत सूचिपत्रमें प्रकाशित वह सम्पूर्ण प्रशस्ति नीचे उद्धृत की जाती है—

.....प्येकवदे मार्गे सथो जडा अपि जनाः परिसञ्चरन्ति ।

अन्तः स्फुरन्ति किल वाङ्मयतत्त्वसारास्तामिन्दुधामधवलां गिरमानतोऽस्मि ॥ १ ॥

१ देखो पृ. ३३५, टि. ४ ।

२ जेसलमेरके भण्डारोंकी पूर्णरूपसे सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित करके वहाँके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंकी माइक्रोफिल्म एवं अनेक ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि कराने तथा पाठभेद आदि लेनेके लिए पू. मुनि श्री पुण्यविजयजीकी प्रेरणासे पाटननिवासी सेठ श्री केशवलाल किलाचन्दभाईके अध्यक्ष प्रयालके फलस्वरूप जैन श्वेताम्बर कॉन्ग्रसने लगभग पचास हजार रुपयेका प्रयत्न किया था। इसके परिणामस्वरूप भण्डारोंकी अत्युत्तम सुरक्षा एवं सुव्यवस्था हो सकी है और सैकड़ों ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि एवं उनके पाठभेद आदि भी लिये जा सके हैं।

वंशे श्रीमति हौं बटे समभवत् सत्सर्वदेवामिधः श्राद्धः शङ्करवत् सदागतनयास..... ।

.....विशुद्धाशया जाताः सप्त तयोः सुताः सुचरिता भूमण्डले विश्रुताः ॥ २ ॥

चक्रेश्वर-साधारण-शान्ति-सज्जन-बन्धकाः । सुखच्छाऽमुक-सिद्धकपुक्ता मिथ्यात्वनिर्मुक्ताः ॥ ३ ॥

अत्यन्ताद्भुतदाननिर्जितबलेः सद्बुद्धिवाचस्पतेः गाम्भीर्याम्बुनिवेः प्रतापकलितस्फूर्जत्सुतेजोरेखेः ।

जाता...स्य गृहिणी सन्नायिकाख्या दयादाक्षिण्यादिगुणान्विता गतमद्वेष्टादिदोषोत्करा ॥ ४ ॥

कमलिनीवनवत् कमलाश्रया न पुनराश्रितकण्टकविप्रहाः । जिनयना इव भूतिविभूषिताः परमसंवरवैरिपराजिताः ॥ ५ ॥

शमि-सन्तुक-नेमिकुमार-सिद्धधवलामिधाः सदाचाराः । चवारः प्रवरसुता जिनमतनिरतास्तयोजिताः ॥ ६ ॥

गाम्भीर्यदाक्षिण्यदयादमाचैः शब्दगुणैः स्वैरमलैरसंख्यैः । संस्मरयामास जनस्य सम्यगानन्दमुख्यान् सदुपासकान् यः ॥ ७ ॥

सन्तुकश्रेष्ठिनस्तत्र तस्यासीत् प्रेयसी प्रिया । लावण्यादद्याच्चिक्लेव शुद्धशीला सलक्षणा ॥ ८ ॥

जातौ तयोः शाठ्यविमुक्तचित्तौ कान्तौ सुतौ धर्मरतौ विनीतौ । सामायिकाद्युत्तमधर्मकृत्यनिष्ठौ श्रीजिनसाधुभक्तौ ॥ ९ ॥

मतिविभवविजितसुरगुरुमाहात्म्योऽभयकुमारनामाऽऽद्यः । अपरः पार्श्वकुमारः सुविचारधारुचरितरतः ॥ १० ॥

अमृत पार्श्वकुमारस्य मुन्दरी नाम गेहिनी । शुद्धसत्त्वात्रदानेन यत्करे कङ्कणायितम् ॥ ११ ॥

सपुण्यः कोऽपि संजज्ञे साधारणस्तद्वज्रजः । हृदये यस्य निःशेषे जिनो वासमसूत्रयत् ॥ १२ ॥

यशोधवलकः कौर्तिवल्लीप्रारोहमूढः । विमलो दर्पणः श्रीणां कुसुमं नीतिवीरुधः ॥ १३ ॥

सममृत पत्रिकासंज्ञा तनया विनयास्पदम् । खानिर्विकरतनस्य जन्मभूः शीलसम्पदः ॥ १४ ॥

अन्या सीतामिधा पुत्री मूर्तिमती कौर्तिरविद्वत्प्रसरा । कुलकमलभानुरन्या समजायत संपिकानाम्नी ॥ १५ ॥

कान्ता साधारणस्यानूद् रोहिणीव हिमद्युतेः । इन्द्राणीव सुरेशस्य लक्ष्मीरिव सुरद्विषः ॥ १६ ॥

शीलेन सुलसा सीता रेवती च सुभद्रिका । शीलमत्यभिधानेन चैता उपमिता यया ॥ १७ ॥

तस्यैवान्यतरा भार्या जज्ञे (जज्ञेऽथ) शीलशालिनी । प्रतीता सुहवानाम्नी सुभक्ता निजमर्तरि ॥ १८ ॥

शीलमत्याः सुतो जातः प्रथमः श्रीकुमारकः । द्वितीयो नागदेवाङ्गः प्राप्ता साऽथ द्विबौकसम् ॥ १९ ॥

इतश्च—

चान्दे कुले श्रीमति सोमकल्पे समुज्ज्वले शुद्धयशोमयूखे । सद्बृत्तशालिन्यकलङ्कमाजि सदादयानन्दितसज्जने च ॥ २० ॥

गणधर इव साक्षाद्गौतमादिर्व्यहारीदतिशयगुणगेहं यो धरायामधृष्यः ।

स्वपरसमयसिन्धोः पारदद्या प्रसिद्धोऽजनि जितमदनश्री..... ॥ २१ ॥

सुविहितशिरोरत्नं श्रीमज्जिनेश्वरसूरिस्त्रिगणितमयो दुःसंधीयाद् गणाद् गुणसागरः ।

नृपतिविदितः सत्साधूनां प्रवृत्तिविधायकोऽणहिलनगरे पठे तस्याभवद् बुधसम्मतः ॥ २२ ॥

जाता जिनेश्वरमुनीश्वरमुख्य.....सा । आराधनामिधकृति सुरमुन्दरी च चक्रे क्रमेण हि ययेह नवाङ्गवृत्तीः ॥ २३ ॥

आद्यः श्रीजिनचन्द्रसूरिखिलाचारप्रचारे चिरं स्कन्धं विभ्रददध्ननिर्मल्यशा धौरेय..... ।

ख्यातः श्रीजिनभद्रसूरिपरः प्राव्यप्रभावान्वितस्तस्माद्विस्मयकारिचित्रचरितश्चास्त्रिचूडामणिः ॥ २४ ॥

प्राप्तो नव्ययुगप्रधानपदवी तैस्तैर्गुणैर्भारतेऽस्मिन् क्षेत्रेऽभयदेवसूरिमयो निर्नीतजैनागमः ।

मान्योऽन्यस्तु ततः समस्तजगतः प्रोत्सर्पितार्हन्मतः सद्दस्याभिमतः समुन्नतिमतः श्रीदेवताभ्यासितः ॥ २५ ॥

पठे श्रीहरिभद्रसूरिमवत् तस्याथ पूज्यक्रमान्भोजस्याऽभयदेवसूरिसुगुरोर्नय्याङ्गवृत्तेर्वरम् ।

यो व्याख्यां विदधेऽणहिलनगरे विद्वन्मुनिव्रमतो विभ्राणेषु धनध्वनिः कपरिकाशीर्ति चतुःसंयुताम् ॥ २६ ॥

तच्छिष्यः श्रीयशश्चन्द्रसूरिर्भूरिशमश्रियाम् । जातः पदं पदे तस्य पद्मदेवमुनीधरः ॥ २७ ॥
 श्रीमान् समुच्चितसमप्रबन्धोऽप्युपात्तधर्मा न शल्लकलितः कलिकाममुक्तः ।
 कामाकृतिः खलु कलावपि पूर्णकामः पार्श्वप्रभोरभयसूरिगुरोः प्रसादात् ॥ २८ ॥
 बभूव भूमण्डलमण्डनैककृतिः स्वमूर्त्या जनयन् जनानाम् । अमन्दमानन्दमिवात्मबन्धुरनन्यलावण्यगुणेन सिन्धुः ॥ २९ ॥
 चरणकमलमृजस्तस्य निर्मुक्तसङ्गः समजनि जिनभद्राचार्यवर्योऽञ्जितश्रीः ।
 इति गुरुजनवंशं शीलका सप्रशंसं स्म कथयति निमित्तं लेखने पुस्तकस्य ॥ ३० ॥
 ज्ञात्वा ज्ञानं प्रबोधोदधिसितकिरणं दुर्गेतिहाः पिधानं रागद्वेषद्विप्रेन्द्रां कुशसदृशमुरोरप्रमादस्य हेतुम् ।
 सेतुं दुःस्वाम्बुराशेः प्रथितसुरमुखश्रीविधानं निधानं कल्याणानां प्रधानं शिवपुरगमने पूर्णकुम्भोपमानम् ॥ ३१ ॥
 त्रिदिवप्रयाणसमये शीलमती प्राह शसुर-भर्तारौ । मम श्रेयसेऽथ पुस्तकलेखनविषये प्रयतनीयम् ॥ ३२ ॥
 तथा श्रीशान्तिनाथस्य बिम्बमुत्तमकारितम् । यतो जन्मान्तरे बोधिं प्राप्नुयाम् विमले कुले ॥ ३३ ॥
 नागदेवस्य श्रेयोऽर्थं शीलमत्यास्तथैव च । पार्श्वकुमारकः श्रेष्ठी साधारणसमन्वितः ॥ ३४ ॥
 चतुष्पण्णमहापुरुषचरिताख्यां दधद्वराम् । लेखयामास सद्गुणं सुपत्रं पुस्तकं वरम् ॥ ३५ ॥
 जम्बूद्वीपसुमेरुसागरमहानथो महीमण्डले यावद् व्योमतले मृगाङ्ग-मिहिरी नक्षत्रमालास्तथा ।
 राजन्ते जिनशासनोन्नतिकरं मोहज्यपोहाय वः स्तात् तावद् वचनामृतं श्रवणयोः मुष्णजघं पुस्तकः ॥ ३६ ॥

शीलमत्याः पितृपक्षौ कथ्येते यथा—

कटुकासनवास्तव्यो अश्वदेवामिधानकः । वासः समग्रनीतीनां अभूतां ह्रीं वन्दे कुले ॥ ३७ ॥
 सद्धर्मकर्त्तृसंयुक्तः सर्वदेवस्तर्तः परः । सर्वदेवो दयाधाम दास्यदाक्षिण्यवानतः ॥ ३८ ॥
 तृतीयो चाहडो नाम प्रष्टः श्रेष्ठगुणैः सताम् । दृढधर्मानुरागेण शङ्के यं श्रेणिकामजम् ॥ ३९ ॥
 अश्वदेवस्य भार्याऽभूत् समग्रगुणशालिनी । सूहवेति प्रविख्याता चन्द्रलेखेव निर्मला ॥ ४० ॥
 चत्वारस्तनया चतुर्षु विदिता दिग्मण्डलेष्वेतयोर्जातास्तत्र पवित्रचित्रचरितधारिनिपु प्रीतिमान् ।
 ज्येष्ठः श्रेष्ठतमं नयस्य भवनं लक्ष्मीधरो विश्रुतः । ख्यातिं विश्वददन्नशुभ्रयशसा श्वेतीकृतस्वान्वयः ॥ ४१ ॥
 मूलदेव-धवलालयौ यशश्चन्द्रस्तत्त्वयः । त्रिकालं पूजयामासुर्ये त्रिकालविदो जिनान् ॥ ४२ ॥
 राजीमतीति विख्याता तनया गुणराजिनी । सैव शीलमती जाता पाणिग्रहणादनन्तरम् ॥ ४३ ॥
 यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम् ॥ ४४ ॥
 भग्नपृष्ठिकटिप्रीवा तथा दृष्टिरधोमुखी । कथेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥ ४५ ॥
 शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ४६ ॥
 ॥ छ ॥ छ ॥ मंगलं महाश्रीः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

ऊपरकी प्रशस्तिके ३७ वें श्लोकमें उल्लिखित 'कटुकासन' तथा प्रतिके लेखककी पुष्पिकामें आनेवाला 'पालउद्रग्राम' आज भी क्रमशः कटोसन और पालोदरके नामसे प्रसिद्ध हैं। महेसाना (उत्तर गुजरात) से वीरमगाँव जानेवाले रेलमार्ग पर चौथा स्टेशन कटोसन आता है, जबकि महेसानासे पाटनकी ओर जानेवाले रेलमार्ग पर पहला स्टेशन पाँचोट आता है और उससे एक मीलकी दूरी पर पालोदर गाँव आया हुआ है। ये गाँव जिस प्रदेशमें आये हैं वह प्रदेश आज दण्डाव्य अथवा दण्डाव्य कहा जाता है। इसका संकेत लेखककी पुष्पिकामें आनेवाला दण्डाव्यपथक से होता है। प्राचीन स्थलनामोंकी शोधका कार्य जो संस्थाएँ और विद्वान् कर रहे हैं उनके लिए ऐसी प्रशस्तियाँ एवं पुष्पिकाएँ महत्त्वकी सामग्री प्रस्तुत कर सकती हैं।

प्रतिके आकार-प्रकारका ख्याल आ सके इस दृष्टिसे इसके पृ. ३२१-२२-२३ की एक प्रतिकृति भी इस ग्रन्थमें दी गई है।

इन दो प्रतियोंके अलावा अन्य मौलिक हस्तप्रत नहीं मिलती। जो मिलती भी हैं वे इन्हीं दो के आधारपर की गई नकलें ही हैं।

संशोधन

उपर्युक्त दो प्रतियोंमेंसे 'खू' संज्ञक प्रतिका पाठ मूलमें रखा है और जहाँ जहाँ 'खू' का पाठ अशुद्धि आदिकी दृष्टिसे उपादेय प्रतीत नहीं हुआ वहाँ 'जे' का पाठ मूलमें रखकर 'खू' का पाठ नीचे टिप्पणीमें दे दिया है। इसके अतिरिक्त जहाँ जहाँ 'खू' का पाठ अन्यासीके लिए भ्रान्तिजनक प्रतीत हुआ वहाँ भी 'जे' का सामान्यरूपसे प्रचलित शब्दवाला पाठभेद मूलमें रखकर 'खू' के पाठका नीचे टिप्पणीमें निर्देश किया है। उदाहरणार्थ 'सू' में आनेवाले जयो (यतः), सोख, मोखके बदले 'जे' के जओ, सोख, मोख शब्द मूलमें रखे हैं। ऐसे पाठ केवल पाँच-छः स्थानों पर ही आये हैं।

जहाँ-जहाँ शब्द अथवा अक्षर योग्य नहीं लगे वहाँ उस शब्द अथवा अक्षरको मूलमें ही रखकर () ऐसे कोष्ठकमें शुद्ध प्रतीत होनेवाला पाठ रखा है। दोनोंमेंसे एक भी प्रतिमें जहाँ पाठ न मिलता हो अथवा वह खण्डित प्रतीत होता हो वहाँ [] ऐसे कोष्ठकमें योग्य पाठकी कल्पना करके वह रखा है। ऐसा होने पर भी दोनों प्रतियोंमें निर्दिष्ट पाठके स्थानमें शुद्ध पाठ दूसरा ही ज्ञात हुआ हो वहाँ ज्ञात शुद्ध पाठ मूलमें रखकर दोनों प्रतियोंके समान पाठका अथवा अलग-अलग पाठका उल्लेख नीचे टिप्पणीमें किया गया है। मतलब कि जिस टिप्पणीमें 'खू' और 'जे' दोनोंका पाठभेद साथ ही दिया गया है वह टिप्पणी जिस पाठ पर होगी वह पाठ स्वयं इस ग्रन्थके सम्पादक द्वारा सुधारा गया है ऐसा समझना चाहिए। जहाँ केवल एक ही प्रतिका पाठ मिला हो और वह भी पत्रके ऊपर-नीचेका भाग नष्ट होनेसे खण्डित हो गया हो वहाँ, यदि अक्षरोंकी संख्या अवगत हो सकी हो तो, ---- इस तरह स्थान रिक्त रखा है, और अक्षरसंख्या अवगत न हो सकी हो ऐसे नष्ट पाठोंके स्थान पर.... इस प्रकार रिक्त स्थान रखा है। इन दोनों प्रकारके रिक्तस्थानोंके पाठके लिए जहाँ अनुमान हो सका है वहाँ रिक्त-स्थान रखकर उसके पश्चात् () ऐसे कोष्ठकमें संभावित पाठका निर्देश किया है, जब कि शंकित पाठ प्रश्नचिह्नयुक्त कोष्ठकमें रखा है। 'कणयरह' (पृ. २५४) के बदले 'कणयाह' (पृ. २५५) शब्द भी प्रतियोंमें बराबर मिलता है, अतः उन-उन स्थानोंमें वे शब्द व्योके ल्यो रखे हैं। यद्यपि लिपिदोष के कारण खड़ी पाई '1' के स्थानमें '2' की कल्पना की जा सकती है ('कणयाह' के बदले 'कणयरह' किया जा सकता है), फिर भी दोनोंमेंसे किसी भी एक प्रति में '2' के बदले '1' ऐसी खड़ी पाई नहीं मिलती तथा 'पउमचरिय' जैसे अतिप्राचीन ग्रन्थमें अनेक स्थानों पर एक ही व्यक्तिके एकाधिक नाम मिलते हैं; अतएव ग्रन्थकारको यहाँ भी दोनों नाम स्वीकार्य होंगे ऐसा मानकर दोनों ही नाम जैसेके तैसे रखे हैं। इसी प्रकार 'जहाह वृग बैसाह' जैसे द्विजोके रूप दोनों ही प्रतियोंमें एकाध स्थान पर समान मिलते हैं। सम्भवतः ग्रन्थकारने स्वयं ही ऐसा रूप लिखा हो यह समझकर हमने सुधारकर 'जहारह विग वइसाह' रूप सूचित नहीं किया है।

'खू' संज्ञक प्रतिको मुख्य रखकर उसकी अक्षरशः वाचना मूलमें रखनेसे उसमें आनेवाले अनुस्वारोंके परसवर्ण अनुनासिक व्योके ल्यो रखे हैं। इसमें जहाँ-जहाँ अनुस्वारका परसवर्ण अनुनासिक है वहाँ 'जे' संज्ञक प्रतिमें वैसा नहीं है; वहाँ तो सर्वत्र अनुस्वार ही मिलता है। 'खू' संज्ञक प्रतिमें पदान्त अनुस्वारका भी पश्चाद्वर्ती शब्दके आद्य अक्षरके वर्गका अनुनासिक रूप अनेक स्थानों पर मिलता है; जैसे कि, मेत्तं पि = मेत्तम्पि (पृ. ६९, टि. १०), तेहिं वि = तेहिन्वि (पृ. ६४, टि. ५), चित्तं व = चित्तम्ब (पृ. ५८, टि. ७), तेहिं ति = तेहिन्ति (पृ. ५३, टि. १०), पत्तयाल वि = पत्तयालन्ति (पृ. ६, टि. १५), सण्णं पि = सण्णम्पि (पृ. ५२, टि. १७) इत्यादि। ऐसे पाठ 'सू' प्रतिके होने पर भी पाठकके मनमें भ्रम पैदा न करे

इसलिए सिर्फ़ उनकी जानकारीके लिए ही मूलमें न रखकर पादटिप्पणीमें दिये हैं, और वह भी 'सगरचक्रवर्तिचरित' तक, बादमें वैसा प्रयत्न छोड़ दिया है।

ह-न, क-ग-य, ण-न और त-द-य-अ-ऐसे बार बार आनेवाले वर्णोंके परिवर्तनोंके पाठभेदोंको उदाहरणके रूपमें ही प्रारम्भमें दे करके बादमें वैसे पाठान्तरोका निर्देश हमने नहीं किया है। अभ्यासी वाचकको अनुकूलता के लिए 'आऊरिय' के बदले 'आपूरिय' जैसे सभी पाठोंका हमने यथास्थान निर्देश कर दिया है। इसके अलावा जहाँ जहाँ 'ण' के बदले 'ण्ह' मिला है वहाँ भी सभी पाठ लिये हैं; जैसे कि, 'दोण्णि'के बदले 'दोण्हि', 'गेलण्ण'के बदले 'गेलण्ह' इत्यादि। 'जे' संज्ञक प्रतिके सर्वथा निरर्थक और मिथ्या पाठान्तरोका निर्देश करनेसे ग्रन्थका परिमाण पाँच-छः फॉर्म बढ़ जाता। वे पाठ केवल लेखककी भ्रान्ति अथवा उसके सम्मुख जो प्रति रही होगी उसकी अशुद्धिके कारण ही प्रतिमें आये होंगे; अतः उनका निर्देश नहीं किया है। इस बारेमें हमने यथोचित विवेक और सावधानी रखी है; अतः जहाँ-जहाँ मिथ्या पाठोंमें भी यत्किंचित् सन्देह प्रतीत हुआ है वहाँ मिथ्या पाठान्तरोका भी निरपवाद रूपसे उल्लेख किया है।

परिशिष्ट परिचय

इस ग्रन्थके अन्तमें आठ परिशिष्ट दिये गये हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

प्रथम परिशिष्ट (पृ. ३३७ से ३४७)

इसमें प्रस्तुत ग्रन्थमें आये हुए विशेष नामोंका, प्रत्येककी पहचान और स्थानसूचक पृष्ठांकके साथ, अकारादि वर्ण-क्रमसे निर्देश किया गया है।

द्वितीय परिशिष्ट (पृ. ३४८ से ३५६)

इसमें प्रथम परिशिष्टमें निर्दिष्ट नामोंको कुल पचहत्तर विभागोंमें बाँटकर वे विभाग अकारादि क्रमसे रखे गये हैं। इसके अनन्तर प्रत्येक विभागमें आनेवाले विशेषनाम उस-उस विभागके नीचे दिये गये हैं।

तृतीय परिशिष्ट (पृ. ३५७ से ३६०)

इसमें प्रस्तुत ग्रन्थमें आये हुए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध सभी देशीय शब्दोंका संग्रह, स्थानसूचक पृष्ठांकके साथ, दिया गया है। इससे किस शब्दका किस स्थानमें किस रूपसे उपयोग हुआ है यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त 'पाइयसदमहण्णवो' (प्राकृत शब्दकोष) में जिनका उल्लेख नहीं है वैसे प्राकृत शब्द भी इस ग्रन्थमेंसे चुनकर इस परिशिष्टमें सम्मिलित किये गये हैं। देशीय शब्दकी पहचानके लिए उस-उस शब्दके आगे कोष्ठकमें (दे०) ऐसा लिखा है; जिन शब्दोंके आगे कोष्ठकमें '(दे०)' का निर्देश नहीं है वे सब प्राकृत शब्द हैं। आज भी लोकभाषामें प्रयुक्त होनेवाले कतिपय शब्दोंके प्राचीन रूप इस परिशिष्टमेंसे उपलब्ध हो सकेंगे; जैसे कि—अफरिय = आफरा (पेटमें होनेवाली वादी) चढ़ा हुआ, अहड्डयालिय = गु० अडवाळयेळं (मिश्रित), खडफडा = खटपट, चमेडा = चपेटा, गु० चमाट, आसपास = आसपास, इत्यादि।

चतुर्थ परिशिष्ट (पृ. ३६१)

प्रस्तुत ग्रन्थमें आये हुए अपभ्रंश पद्योंका संग्रह इस परिशिष्टमें है। एक स्थान पर गद्यात्मक अपभ्रंशमें अटवीवर्णन आता है; उसका भी अवतरण इस परिशिष्टमें किया गया है।

पंचम परिशिष्ट (पृ. ३६२)

इसमें ऋतुवर्णन तथा युद्ध, नगरप्रवेश, रूपमुग्ध-नारीसमूहव्यापार, चन्द्रोदय, सूर्योदय, नग, नगर आदिके वर्णनोंका निर्देश स्थानदर्शक पृष्ठांकके साथ किया गया है।

षष्ठ परिशिष्ट (पृ. ३६२)

प्रस्तुत ग्रन्थमें श्रुतदेवता (सरस्वती) तथा तीर्थकरोकी स्तुति-वन्दना जहाँ जहाँ आती है उसका निर्देश इस परिशिष्टमें किया गया है।

सप्तम परिशिष्ट (पृ. ३६३ से ३७८)

इस ग्रन्थमें आई हुई ६६८ सुभाषित गाथाएँ, उनके विषय एवं स्थाननिर्देशके साथ, अकारादि क्रमसे इस परिशिष्टमें दी गई हैं।

अष्टम परिशिष्ट (पृ. ३७९-८०)

प्रस्तुत ग्रन्थमें जहाँ-जहाँ मुहावरे एवं लोकोक्तियोंका निर्देश हुआ है उनका उल्लेख स्थान-निर्देशके साथ अकारादि क्रमसे इसमें किया गया है। इन कहावतों और मुहावरोंमेंसे कतिपय आज भी हिन्दी-गुजरातीमें प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ— 'फिलु विणासकाले विवरीयमई जणो होइ' = विनाशकाले विपरीतबुद्धिः; 'करमहियकंकणे दण्णणे किं कजं?' = हाथकंगनको आरसी क्या?; 'किं एकम्मि कयाइ वि कोसे संठाइ खगजुयं' = एक म्यानमें दो तलवार नहीं रहती; 'मारेइ य मरन्तं' = मरनेवाला मारता है; 'जायइ जं वरस सं तस्स' = जो जिसका सो उसका, इत्यादि। इन कहावतों एवं मुहावरोंका उद्भव एवं प्रचार मूल ग्रन्थकारसे भी पुराना होना चाहिए।

शुद्धिपत्रक

यंत्रके ऊपर छपते समय कभी-कभी टाइपके गिर जानेसे अथवा वैसे ही कारगवश किसी-किसी प्रतिमें कुछ अक्षर उड़ गये हैं। वैसे अक्षरोंमें र, क, ए, ि, ऊ और स मुख्य हैं। ऐसी क्षति प्रायः टिप्पणियोंमें विशेष हुई है। इन अशुद्धियोंको छोड़कर शेष अशुद्धियोंका शुद्धिपत्रक अन्तमें (पृ. ३८१ से ३८४ तक) दिया गया है। शुद्धिपत्रकके छप जानेके बाद भी जो अशुद्धियाँ देखनेमें आई हैं उनका निर्देश नीचे किया जाता है—

पत्रांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४८	१३	कहि	कहिं
२६२	३५	२१४	२१५
२६४	३४	२५४	२५७
२७७	३४	(७०	(७१
२७८	२९	(८०	(८१
२८१	३४	२९३	२९४
३६०	१७	बुण्ण	बुण्ण
३७६	२२	समायरिय	समायरियं
३७७	४३	सा	सो
३८१	शीर्षके	'पत्रकम्	'पत्रकम्

प्रस्तुतग्रन्थगत वसुमतीसंविहाणय (पृ. २८९-९२) प्रकरण केवल सूत्रप्रतिमें ही उपलब्ध है, और वह प्रति कोनोंमें त्रुटित होनेके कारण तत्तत्स्थानोंमें.....ऐसा अथवा ----ऐसा रिक्त स्थान छोड़ा है। सद्भाग्यसे श्रीदेवचन्द्राचार्यकृत-मूलशुद्धिप्रकरणटीका (रचना सं. ११४४) गत चन्द्रनाकथानकके आधारपर उन रिक्त स्थानोंकी पूर्ति निम्नप्रकार होती है—

(पद्यविभाग)

पत्र	गाथा	
२८९	२३८	णाणुग्गहेइ ववएसविहिविदिण्णपाणेहि ॥
२९०	२४४	ववहरइ अण्णह चिय
"	२५०	सुरवरसहत्थप्पमुक्कविहम्मणिक्किरणंजियदियंता ।
२९१	२६२	कत्तो लायणुद्दल्लगपच्चलो
२९२	२७०-७१	सो चिय कालो जायइ तवस्स इह पंडिया पसंसंति । सामत्थं जत्थ समत्थवीरिणं होइ जंतूणं ॥ २७० ॥ अगहिंदियत्थसामत्थयाजुओ
"	२७३	वीरियसज्जो जायइ तवो त्ति तणुमित्तसाहणो णेय ।
"	२७७	हिययविचित्तियसरहसपव्वजा*
"	२७९	एयं पि इमाण चेव होइ

(गद्यविभाग)

२९१	पंक्ति-११	सह समागण्ण अंतेउरमहल्लिण
२९२	" ८	रयणवुट्ठी पुण्णाणुबंधसंसिणी उच्छा*
"	" १०	मा एवं भणमु

इनके अतिरिक्त दृष्टिदोषादिकारणवश अशुद्धि रह गई हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। आशा है, पाठक उसे सुधारकर पढ़ेंगे।

ग्रन्थ और ग्रन्थकार

जैनागम समवायांगके सूत्र ५४ में चौवन उत्तम पुरुषोंका जो उल्लेख है वह इस प्रकार है—

“भरहेरवण्णु णं वासेसु एगमेगाण उस्सप्पिणीण ओसप्पिणीण चउवणं चउवणं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा । तं अहा—चउवीसं तित्थयरा, बारस चक्कवट्ठी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।”

अर्थात् भरत और ऐश्वर्य क्षेत्रमें प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणीमें ५४-५४ उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए हैं, होते हैं और होंगे। वे हैं—२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, और ९ वासुदेव।

प्रस्तुतग्रन्थमें वर्तमान अवसर्पिणीके उन ५४ उत्तमपुरुषोंका—महापुरुषोंका चरित वर्णित है। वर्तमान अवसर्पिणीमें शांतिनाथ, कुण्डुनाथ और अरुनाथ ये तीन व्यक्ति चक्रवर्ती भी हैं और तीर्थंकर भी। अत एव प्रस्तुत ग्रन्थमें वस्तुतः ५१ महापुरुषोंका चरित वर्णित है। विषयसूचि देखनेसे ज्ञात होगा कि इन ५१ महापुरुषोंका चरित भी ४० चरितोंमें समाविष्ट है। इसका कारण यह है कि एक महापुरुषके चरितवर्णनके प्रसंगमें पिता-पुत्र या बड़े-छोटे भाईके संबंधसे अन्य महापुरुषका चरित भी आ जाता है। अत एव प्रस्तुत ग्रन्थके मुख्य प्रकरण ५४ नहीं; किन्तु ४० ही है।

जैनागममें ऐसे महापुरुषोंके लिए 'उत्तमपुरुष' संज्ञा है, किन्तु बादमें 'शलाकापुरुष' संज्ञा विशेष रूढ़ हुई है। इन शलाकापुरुषोंकी संख्या श्रीमज्झिमसंन्यासाचार्य तथा श्रीमद् हेमचन्द्राचार्यने ६३ दी है। ९ वासुदेवोंके शत्रु प्रतिवासुदेवोंकी ९ संख्या ५४ में जोड़नेसे वह ६३ की संख्या बनती है। श्रीभद्रेश्वरसूरिने अपनी कहावली (अमुद्रित) में ९ नारदोंकी संख्या जोड़कर शलाकापुरुषोंकी संख्या ७२ दी है।

श्रीहेमचन्द्राचार्य 'शलाकापुरुष'का अर्थ 'जैतरेखा' ऐसा करते हैं, और भद्रेश्वरसूरि 'सम्बन्धरूप शलाकासे युक्त' ऐसा अर्थ करते हैं।

डॉ. उमाकान्तके मतके अनुसार भवविरहसूरि (हरिभद्रसूरि) के कथानकके साथ ही कहावलीका अन्त होता है अत एव कहावलीकार भद्रेश्वरसूरिका समय हरिभद्राचार्यके निकटवर्ती है। इस मतकी माना जाय तब कहावलीको प्रस्तुत चउप्पन्न म० च० से पहलेकी रचना माननी पड़ेगी, किन्तु डॉ. उमाकान्तके कथनमें जो भ्रान्ति है उसका निवारण आवश्यक है। कहावलीका अन्त हरिभद्राचार्यके कथानकके साथ नहीं होता किन्तु वहाँ कहावलीका प्रथमपरिच्छेद समाप्त होता है—

मणियाओ य कहाओ रिसहाइजिणाण वीरचरिमाणं । तत्तिथकहाहि समं भवविरहो जाव सूरि ति ॥

इय पढमपरिच्छेओ तेवीससहसिसओ सअट्ठसओ । विरमइ कहावलीए भद्रेश्वरसूरिरइत्ति ॥

इन गाथाओंसे स्पष्ट होता है कि भद्रेश्वरसूरिने जब प्रथमपरिच्छेदकी ही २३८०० श्लोकप्रमाण बनाया तब उसका शेष परिच्छेद जो अब उपलब्ध नहीं है उसमें हरिभद्राचार्यके बादके कई आचार्योंका जीवन भद्रेश्वरसूरिने लिखा होगा या लिखनेका सोचा होगा। इससे यह सिद्ध होता है कि भद्रेश्वरसूरि हरिभद्राचार्यके निकटवर्ती नहीं। तीर्थंकरोंके चरित में यक्ष-यक्षिणियोंका निर्देश कहावली में है जब कि चउप्पन्न० में नहीं है इससे भी कहावली चउप्पन्न० के बाद की रचना सिद्ध होती है।

कहावलीकारने चउप्पन्न०से कथाओंका संदर्भ तथा विबुधानंदनाटक अपना कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनके समक्ष चउप्पन्न म० च० मौजूद था। कहावलीकार पउमचरिय, वसुदेवहिंड़ी, आवश्यकचूर्णि, तरंगवईकहा-संक्षेप आदि ग्रन्थोंसे शब्दशः उद्धरण लेते हैं जब कि शीलंकाचार्य वैसा नहीं करते। अतएव यह नहीं माना जा सकता कि कहावलीसे शीलंका-चार्यने उद्धरण लिया। इस दृष्टिसे भी कहावलीको चउप्पन्न० की परवर्ती रचना मानना चाहिए। अधिक संभव यह है कि कहावलीकी रचना विक्रम सं. १०५० से ११५० के बीच कहीं हुई है। अतएव महापुरुषोंके चरितके वर्णन करनेवाले उपलब्ध ग्रन्थोंमें चउप्पन्न० का स्थान सर्वप्रथम है। यद्यपि श्रीजिनसेनाचार्यका महापुराण शलाकापुरुषोंका चरितवर्णन करनेवाला ग्रन्थ इससे पूर्ववर्ती है किन्तु लेखक उसे पूरा कर नहीं सके और उनके शिष्य गुणभद्राचार्यने उसे पूरा किया है जो संभवतः शीलंकाचार्यके समकालीन होंगे। अत एव एककर्तृकशलाकापुरुष या महापुरुषोंका संपूर्ण ग्रंथ प्रस्तुत शीलंकाय चउप्पन्न-महापुरिसचरिय सर्वप्रथम है ऐसा कहा जा सकता है।

१ कहावलीका पाठ इस प्रकार है—चउप्पन्न जिणा, वारस चवी, णव पडिहरी, णव सरामा । हरिणो, चकि-हरीसु य केसु य णव नारया होंति ॥ उड्डगई चिय जिण-राम-नारया जेतइहोमई चेव । सजियाणा चिय पडिहरी-हरिणो दुहओ वि चकि ति ॥ न य सम्मत्तसलायारहिया नियमेणिमे जओ तेण । होंति सलाया पुरिसा वड्ढत्तरी..... ॥

२ "त्रिषष्टिः शलाकाभूताः शलाकापुरुषाः, पुरुषेषु जातरेखा इत्यर्थः ।" (यशोधियज्यग्रन्थमालाप्रकाशित सटीक अभिधानचिन्तामणि पत्र-२८१)

३ देखो 'जैनसत्यप्रकाश'. वर्ष १७. अंक ४. पृ. ९१ वा।

४ देखो पत्तनस्यजैनभाषाभाष्यग्रन्थसूची (ओरीएन्टल इन्स्टीट्यूट-बड़ौदा प्रकाशित) पत्र-२४४ वा।

आम्रकृत चउप्यन्नमहापुरिसचरिय

आम्र कविने भी इसी नामक एक ग्रन्थकी रचना की है जो अप्रकाशित है। नाम एवं विषय दोनोंकी दृष्टिसे समान इस रचना का सामान्य परिचय प्राप्त करना यहाँ उपयुक्त होगा - इस दृष्टिसे उसका यहाँ संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

मुख्यतः आर्याछन्दमें रचित और १०३ अधिकारोंमें विभक्त इस प्राकृतभाषानिबद्ध ग्रन्थकी अनुमानतः १६वीं शतीमें लिखित एक हस्तलिखित प्रति सूरिसम्राट् श्री विजयनेमिसूरीधर-शास्त्रसंग्रह, स्वम्भातमें है। १००५० श्लोक-परिमाणके इस ग्रन्थमें ८७३५ गाथाएँ और १०० इतर वृत्त हैं। चौवन महापुरुषोंके चरित्रकी समाप्तिके उपरान्त नौ प्रतिवासुदेवोंको जोड़नेसे त्रैसठ शलाकापुरुष होते हैं, ऐसा उपसंहारमें कहा है।

इसमें भी तीर्थङ्करोके यक्ष-यक्षिणीओंका उल्लेख है, जो प्राचीनतम ग्रन्थोंमें नहीं हैं। अतएव संभावना की जा सकती है की यह ग्रन्थ शीलांकीय चउप्यन्नम० च० के बाद रचा गया होगा। विष्णु सं. ११९० में रचित आम्रदेवसूरकृत आख्यानकमणिकोशकी वृत्तिमें अम्म और आम्रदेवसूरि अभिन्न होनेका कोई आधार मिलता नहीं है। ग्रन्थके प्रारंभ और अन्तमें ग्रन्थकारने अपने लिए अम्म शब्दके अतिरिक्त कोई विशेष परिचायक सामग्री नहीं दी है।

भाषा और श्लोक-परिमाण

शीलांकीय प्रस्तुत ग्रन्थ प्राकृत भाषामें लिखा गया है यह बात स्वयं ग्रन्थकारने पृ. ३३५ की दूसरी गाथामें स्पष्ट की है। मुद्रित पृ. १७ से २७ में आया हुआ 'विबुधानन्द नाटक' संस्कृतमें है और कहीं कहीं अपभ्रंश सुमापित भी आते हैं। इनके अतिरिक्त सम्पूर्ण ग्रन्थ प्राकृतमें है। इसमें 'देशी' शब्दोंका प्रयोग भी ठीक-ठीक मात्रामें हुआ है। ग्रन्थके अन्तमें इन अपभ्रंश पाठों और देशी शब्दोंकी सूचि अनुक्रमसे तृतीय एवं चतुर्थ परिशिष्टमें, अभ्यासियोंकी जानकारीके लिए दी गई है।

अनुष्टुप् श्लोककी गिनतीके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थका श्लोक-परिमाण १०,८०० है। बृहद्विष्णुनिकामें यह परिमाण दस हजार श्लोकका बतलाया है, जबकि 'जे' संज्ञक प्रतिमें १४,००० लिखा है, तो 'सू' संज्ञक प्रतिमें परिमाणका कोई सूचन ही नहीं है; परन्तु इसी 'सू' संज्ञक प्रतिके आधार पर वि. सं. १६७३ में लिखी गई कागज़की पोथीमें यही संख्या प्रतिके मूल लेखकने १०,८०० दी है। प्रतिके कदसे भी यही प्रतीत होता है कि ग्रन्थकी परिमिति इस संख्यासे अधिक नहीं हो सकती।

उपर्युक्त कागज़की पोथीमें किसीने बादमें अनुचित रूपसे छेड़छाड़ करके वह संख्या बढ़ाकर अक्षरोंमें तथा अंकोंमें ११,८०० कर दी है। मूल लेखकने 'अष्टशतधिकानुष्टुप्सहस्राणि दशैव च ॥ १०८०० ॥' लिखा था, किन्तु उसे सुधारकर 'अष्टशतधिकानुष्टुप्सहस्राण्येकादशैव च ॥ ११,८०० ॥' किया गया है। इस सुधारमें जो छन्दोभंग है वह बिल्कुल स्पष्ट है। संभव है किसी व्यवसायी लेखकने उस कागज़की प्रति के आधारसे नकल करते समय लोभवृत्तिसे प्रेरित हो कर ऐसा किया होगा।

विषय

ग्रन्थका विषय मुख्य रूपसे धर्मकथाका है। ऐसी धर्मकथाओंमें शुभ एवं अशुभ कर्मोंके बन्धसे होनेवाले सुख-दुःखके परिणामरूप देवत्व, महर्षित्व, नीरोगिता, मरुपता, —नरकगति, तिर्यङ्गगति, दारिद्र्य, रुग्णता, कुरूपता आदि प्राप्त होते हैं—ऐसा सूचित करके अशुभ प्रवृत्तिके परित्याग और शुभ प्रवृत्तिके आचरण आदिका उपदेश दिया जाता है। अपने सम्प्रदायके प्रधान पुरुषोंके जीवनवृत्तकी संकलना भी ग्रन्थका मुख्य विषय है।

उद्देश्य

वाचक एवं श्रोतागण कल्याणमार्गमें प्रवृत्त हों—यही इस ग्रन्थ-रचनाका मुख्य उद्देश्य है और स्वयं लेखकने भी यही

बात प्रस्तुत ग्रन्थके पृ. ४ पर स्पष्ट की है; परन्तु साथ ही जनताका नैतिक स्तर समुन्नत रखनेकी भी एक आनुवंशिक दृष्टि धर्मकथाकारकी होती है। इसी परिणामसे गोरी, गाथा, मोघ, जातीय अहंकार तथा हिंसा आदि करनेसे कैसा कटु फल भुगतना पड़ता है इसके निदर्शन देवकी, मल्लिस्वामी, चण्डकौशिक, कटुमुनि एवं कर्पणमुनि तथा श्रमण भगवान् महावीर-स्वामीके कथा-प्रसंगोंमें होता है। स्वयं तीर्थंकर होनेवाले जीवोंको भी हिंसा आदिसे उपार्जित दुष्कर्मके कटुविपाक रूप नरक-गति आदिकी विडम्बनाएँ सहनी पड़ती हैं और अपने अशुभ कर्मोंका फल भोगना ही पड़ता है; बाह्यक्रियाकाण्डोंकी सहाय-तासे ऐसे दुष्कृत निष्फल नहीं होते यही समझनेका प्रयत्न लेखकने इसमें किया है।

कर्मकी दुर्निवारताका निवारण आसक्तिके परित्यागमें है और पुरुषके लिए आसक्तिका प्रमुख केन्द्र नारी है। अतएव उसका आकर्षण कम करनेकी दृष्टिसे इसमें नारी-निन्दा विषयक सुभाषित, नायिकाकी अन्य पुरुषमें आसक्तिके सूचक वरुण-वर्मकथानक (पृ. ५७ से ६७) तथा मुनिचन्द्रकथानक (पृ. ११७ से १२७) दिये गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थमें सिर्फ पाँच अवान्तर-कथाएँ आती हैं। इन कथाओंमेंसे उपर्युक्त दो कथाओंका मुख्य प्रतिपाद्य विषय स्त्रीका विधासपात है। अवशिष्ट तीन कथाओंमेंसे एक विजयाचार्य-कथानक (पृ. १०६ से ११४) में एक स्थान पर रानीको दुःशीला बताया है। जहाँ अवसर मिला है, लेखकने दुःशीला नायिकाके कथाप्रसंगको प्राधान्य दिया है; इससे उसके रूझानका हमें पता चलता है। सम एवं शमप्रधान धर्माचार्य किसीके प्रति दुर्भाव नहीं रख सकते, फिर चाहे वह स्त्री हो या अन्य कोई व्यक्ति। उनका तो मूल उद्देश्य आसक्ति के त्यागका है और नरके लिए सबसे बड़ी आसक्ति नारी है। नारीके स्थानमें आसक्तिका कारण अन्य कोई वस्तु होती तो लेखक नारीको छोड़कर उसका प्रतिवाद करता। अतः लेखकका उद्देश्य नारीकी अवहेला नहीं, किन्तु अनासक्तभावका उद्बोधन ही है ऐसा समझना उचित होगा।

संक्षेपमें हम कह सकते हैं कि त्याग एवं नीतिके कल्याणमार्ग में वाचक, श्रोता एवं मानवसमाज प्रवृत्ति करे इसी उद्देश्यसे इस ग्रन्थकी रचना हुई है। साथ ही, अन्यान्य ग्रन्थोंमें आई हुई तथा मुखपरम्परासे चली आती जैन-परम्पराके प्रधानपुरुषोंकी कथाओंकी एक ही ग्रन्थमें संकलित करनेका भी लेखकका उद्देश्य अवगत होता है।

पूर्वस्रोत

जैन परम्परामें ऐसी मान्यता प्रचलित है कि श्रमण भगवान् महावीरके पाँचवें शिष्य सुधर्मस्वामीने आर्य जम्बूस्वामीको समग्र कथानुयोग कहा था। यही कथानुयोग प्रथमानुयोग कहलाता है। यह प्रथमानुयोग कालकाचार्यके समय तक आते आते शाब्दिक रूपसे विस्मृत हो गया था, परन्तु अर्थकी दृष्टिसे उसका प्रवाह आचार्य-परम्पराद्वारा बहता रहा। कालका-चार्यने उस अर्थ-प्रवाहके आधार पर 'प्रथमानुयोग' नामक ग्रन्थकी पुनः रचना की। इसके पश्चात् पूर्वका विस्मृत प्रथमानु-योग 'मूल-प्रथमानुयोग' कहा जाने लगा। आज तो आर्य कालकरचित प्रथमानुयोग भी उपलब्ध नहीं है, यद्यपि इसका अस्तित्व रचनाके उपरान्त भी अनेक शताब्दियों तक रहा।

प्रस्तुत ग्रन्थके रचयिताने इसकी कथावस्तुके पूर्वस्रोतके रूपमें आचार्यपरम्परा द्वारा प्राप्त प्रथमानुयोगका निर्देश (पृ. ४) किया है। इससे ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि उनके समक्ष आर्य कालकरचित प्रथमानुयोग होगा ही। इसीके साथ ऐसा माननेका भी कोई कारण नहीं है कि आर्य कालके प्रथमानुयोगकी परम्परा एवं शण्डिकानुयोगगत शण्डिकाओं तथा इतर प्राचीन प्रवाहोंके प्रभावसे यह ग्रन्थ सर्वथा अछूता ही रहा होगा।

सामान्य रूपसे इतर ग्रन्थोंमें उपलब्ध कथागत वस्तुकी अपेक्षा यहाँ कहीं-कहीं भिन्नता प्रतीत होती है। इससे यह

१ देखो 'आचार्य श्री ब्रह्मचरि स्मारक ग्रन्थ' में विद्वद्वर्य मुनि श्री पुण्ड्रविजयजीका लेख "प्रथमानुयोग अने तेना प्रणेता आर्यकालक ।"

निश्चित होता है कि आनुपूर्वसे चली आती कथा-परम्पराकी अपेक्षा शीलाकाचार्यके सम्मुख मौखिक, लिखित अथवा अन्य प्रकारका कोई दूसरा भी स्रोत रहा होगा। इस विषयमें अन्य ग्रन्थोंके साथ विस्तारपूर्वक तुलना न करके पाठकोंकी जानकारीके लिए प्रचलित परम्परासे भिन्न पढ़नेवाले कतिपय स्थानोंका ही मैं यहाँ निर्देश करूँगा—

प्रस्तुत ग्रन्थमें

१. ऋषभस्वामीके दीक्षा-प्रसंगमें पाँच मुष्टिसे केशलुंचन (पृ. ४०)
२. श्रेयांसस्वामीकी माताका नाम सिरी-श्री (पृ. ९३)
३. द्विपृष्ठ वासुदेव-विजय बलदेव, पुरुषोत्तम वासुदेव-सुप्रभ बलदेव, पुरुषसिंह वासुदेव-सुदर्शन बलदेव, पुण्डरीक वासुदेव-आनन्द बलदेव और दत्त वासुदेव-नन्दिमित्र बलदेव-इन पाँचों वासुदेव-बलदेवके युगलोंमेंसे प्रत्येक युगलकी एक ही माता कही गई है। अवशिष्ट चार युगलोंमेंसे त्रिपृष्ठ वासुदेव-अचल बलदेवकी माताके विषयमें स्पष्टता नहीं की गई है, स्वयम्भू वासुदेव-भद्र बलदेवकी माताके नामका सूचक पाठ दोनों प्रतियोंमें छूट गया है, जबकि लक्ष्मण वासुदेव-राम बलदेव तथा कृष्ण वासुदेव-बलदेव बलदेव इन दो युगलोंकी माताएँ भिन्न-भिन्न हैं ऐसा निर्देश है।
४. स्वयम्भू वासुदेव-भद्र बलदेव, लक्ष्मण वासुदेव-राम बलदेव तथा पुण्डरीक वासुदेव-आनन्द बलदेव-इन तीनों युगलोंमेंसे प्रत्येक युगलकी आयु समान बतलाई है; शेष युगलोंकी आयुका सूचन ही नहीं है। केवल कृष्ण वासुदेव-बलदेव बलदेवके युगलमें वासुदेवकी मृत्युके पश्चात् बलदेवका अस्तित्व बतलाया है।
५. मुनिसुवतस्वामीकी जन्मभूमि राजगृह नगर है। (पृ. १७२)
६. किसी भी फनीका नाम-निर्देश न करके वर्धमान स्वामीका अनेक कथाओंके साथ पाणिप्रहृण बतलाया है। (पृ. २७२)
७. अपने आवास परसे सौधर्मेन्द्रके विमानको जाते देख चमरेन्द्र क्रुद्ध होता है। (पृ. २९२)
८. चमरेन्द्र वर्धमानस्वामीकी शरणमें गया है ऐसा जानकर वज्रदेव स्वयं संरम्भसे विस्त होता है। (पृ. १९६)

अन्य ग्रन्थोंमें

१. चार मुष्टिसे केशलुंचन।
- २- श्रेयांसस्वामीकी माताका नाम विण्ह-विण्हू
३. सभी वासुदेव एवं बलदेवोंकी माताएँ पृथक् पृथक् हैं, अर्थात् वासुदेव-बलदेवके युगल सहोदर नहीं हैं।
४. प्रत्येक वासुदेव-बलदेवके युगलमें वासुदेवकी अपेक्षा बलदेवकी आयु अधिक बतलाई गई है।
५. कुशाम्पुर है।
६. वर्धमान स्वामीकी यशोदा नामकी केवल एक ही फनी है।
७. चमरेन्द्रके आवासके ऊपर सौधर्मेन्द्रका विमान सदा अवस्थित रहता है।
८. चमरेन्द्र वर्धमानस्वामीकी शरणमें गया है यह जानकर 'वज्रदेव चमरेके साथ भगवान्को भी मारेगा' इस ख्यालसे सौधर्मेन्द्र सिर्फ चार अंगुल जितना अन्तर जब बाकी रहता

९. गोशालक सर्वानुभूति नामक मुनिके ऊपर जब तेजोलेस्या छोड़ता है तब सर्वानुभूति मुनि भी गोशालकके सामने अपनी तेजोलेस्या छोड़ते हैं। दोनों तेजोलेस्याओंके बीच युद्ध होता है। उस समय वर्धमानस्वामी शीत लेस्या छोड़ते हैं, जिससे गोशालककी तेजोलेस्या स्वयं उसीको दुःख देने लगती है। फलतः गोशालक वर्धमानस्वामीकी शरणमें आता है और उसका दुःख दूर होता है। (पृ. ३०६-७)

१०. त्रिष्टु वासुदेवके सारथि द्वारा पूछे गये प्रश्नके उत्तररूप मुनिकथनमें यद्यपि स्पष्ट निर्देश नहीं है, फिर भी 'त्रिष्टुके सारथिका जीव ही मरीचिके शिष्य कपिल मुनिका जीव होगा' ऐसी धृति उसमेंसे निकलती है। (पृ. १७-१००)
११. अस्थिक सर्पके द्वारा मारे गये मनुष्योंकी हड्डियोंसे बने हुए मन्दिरका तथा उसके द्वारा वर्धमानस्वामीको किये गये उपसर्गका वर्णन है। (पृ. २७५)

है तब वज्रदेवको वापस बुला लेता है-उसे पकड़ लेता है।

९. गोशालककी तेजोलेस्यासे सर्वानुभूति मुनि तथा मुनक्षत्रमुनि मर जाते हैं। अन्तन्तः वह वर्धमानस्वामीके ऊपर तेजोलेस्या छोड़ता है; तब भगवान्‌के प्रभावसे वह वापस लौटकर गोशालकको ही पीड़ित करती है। इसीके परिणाम स्वरूप गोशालककी मृत्यु होती है।

१०. यह बात अन्य ग्रंथोंमें अस्पष्ट रूपसे भी परिलक्षित नहीं होती।
११. बैल मरकर शूलपाणि यक्ष होता है। उसके द्वारा फैलाई गई महामारीके कारण मृत मनुष्योंकी हड्डियोंसे बने हुए मन्दिर आदिके प्रसंगका उल्लेख मिलता है।

वैष्णवसूक्त उपर्युक्त घटनाओंमें शायद कहीं लेखकका अनवधान कार्य कर गया हो, परन्तु यदि इतर ग्रन्थ आर्य-कालकरचित प्रथमानुयोग पर आधारित हों तो ऐसी कल्पनाके लिए अवकाश रहता है कि प्रस्तुत ग्रन्थके मूल स्रोतके रूपमें कोई दूसरी भी परम्परा रही होगी। प्रस्तुत ग्रन्थका मुख्य मूल स्रोत, जैसा हम पहले कह चुके हैं, प्रथमानुयोग है; तथापि ग्रन्थकारके समक्ष दूसरे भी कथा-ग्रन्थ रहे होंगे। इस प्रतिपादनका समर्थन स्वयं ग्रन्थकारने 'लाइओ तस्स चिरंतणकहासंबंधस्स णाडयस्स य वेरमाजणणो एको अंको' (पृ. १६) तथा अरिष्टनेमिचरित्रके अन्तमें 'अजो उव्वरिं जं भणियं

१ यह कथा 'विबुधानन्द' नाटकमें आती है। इसकी नायिकाका नाम बन्धुमती है। बन्धुमती-आख्यायिकाका उल्लेख तत्त्वार्थ-भाष्यानुसारिणी टीकामें भी मिलता है। वहाँ वह उल्लेख इस प्रकार है- 'विकल्पिते त्वयं स्मृतिर्ह्येता बन्धुमत्याख्यायिकादौ' (भाग १, पृ. ३०६)। तत्त्वार्थटीकामें निर्दिष्ट और यहाँ नाटकमें उल्लिखित कथा एक ही है या भिन्न इसके बारेमें विशेष सामग्रीके अभावमें निश्चितरूपसे नहीं कहा जा सकता।

तमण्णामुं सक्खिअरकहासुमवगन्तव्वं ति' (पृ. २०९) ऐसा लिखकर तथा 'एउमचरिय' का निर्देश करके (पृ. १७६) किया है। इसके अलावा गजसुकुमाल (पृ. २०५), जमाली (पृ. ३३१) एवं कालशौकरिक (पृ. ३१७ तथा ३२०) इन तीनका केवल नामनिर्देश ही किया गया है, जिससे फलित होता है कि ग्रन्थकारके पहलेकी रचनाओंमें ये पात्र तथा प्रसंग सुज्ञात होनेसे उनके विषयमें विशेष विस्तार करनेकी आवश्यकता ग्रन्थकारको प्रतीत न हुई हो। इस लाभके पीछे ग्रन्थकारकी दृष्टि चाहे जो रही हो, इससे एक बात तो स्पष्टरूपसे प्रतिफलित होती है और वह यह कि उनके सम्मुख पूर्व-स्रोतके रूपमें एकाधिक प्राकालीन रचनाएँ रही होंगी।

रचना और उसका प्रभाव

इस ग्रन्थमें महापुरुषके क्रमांक १-२ ऋषभस्वामि भूतचक्रवर्ति चरित, ३०-३१ शान्तिस्वामिचरित, ४१ मल्लिस्वामिचरित और ५३ पार्थिवस्वामिचरित—इन चार चरितोंका विस्तार प्रायः कथानायकके पूर्वभवोंके वर्णनसे हुआ है। ७ सुमतिस्वामिचरित पूर्वभवकी कथा तथा शुभाशुभकर्मविपाकके विस्तृत उपदेशके कारण कुछ विस्तृत हुआ है। ४ सगरचक्रवर्तिचरित, २९ सनकुमारचक्रवर्तिचरित, ३८ सुभूमचक्रवर्तिचरित, ४९-५०-५१ अरिष्टनेमि-कृष्णवासुदेव-बलदेव बलदेवचरित, ५२ ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित तथा ५४ वर्धमानस्वामिचरित—ये छः चरित्र कथानायकोंके विविध प्रसंगोंके घोटक कहे जा सकते हैं। ३ अजितस्वामिचरित, १७-१८ द्विष्टुवासुदेव-विजयबलदेवचरित, २०-२१ स्वयंभूवासुदेव-भद्रबलदेवचरित, ३४-३५ अरस्वामिचरित—ये चार चरित्र अवान्तर कथाके कारण कुछ विस्तृत बन गये हैं। १४-१५ त्रिष्टुवासुदेव-अचलबलदेवचरित भी सिंहमारणके प्रसंगके अतिरिक्त मुख्य रूपसे पूर्वभवके वृत्तान्तके कारण ही कुछ बड़ा हो गया है। ५ सम्भवस्वामिचरित, ८ पद्मप्रभस्वामिचरित और १० चन्द्रप्रभस्वामिचरित—इन तीन चरितोंमेंसे क्रमशः कर्मबन्ध, देव-नरकगति तथा नरकस्थान विषयक उपदेशको बाद किया जाय तो ये केवल चरितकी एक तालिका जैसे ज्ञात होते हैं।

उपर्युक्त १९ चरितोंके अतिरिक्त अवशिष्ट २१ चरित तो कथाकी अतिसंक्षिप्त नोट जैसे मात्राम होते हैं। इन २१ चरितोंमेंसे कोई एक या सवा पृष्ठमें समाप्त हो जाता है तो कोई आवे-पौने पृष्ठमें या फिर पाँचसात पंक्तियोंमें ही पूर्ण हो जाता है।

१ यहाँ अन्य कथाओंसे अभिप्रेत विमलसूरि द्वारा सर्वप्रथम रचित हरिवंश तथा उनके उत्तरकालीन पुत्राटसंघीय आचार्य श्री जिनसेनकृत हरिवंश इन दोनोंके अतिरिक्त श्रीलंकाचार्यसे पहलेके स्वतंत्र कथाग्रन्थ अथवा अन्यविषयकग्रन्थान्तर्गत कथाएँ हैं। एउमचरियके कथा विमलसूरिका हरिवंश आज उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसका कुबलयमालाकार उद्घोतनसूरि (दाक्षिण्यचिह्न) ने जो उल्लेख किया है वह इस प्रकार है—

बुहयणसहस्रद्वय हरिवंसुत्पत्तिकारयं पढमं । वंदामि वंदियं पि तु हरिवंसं चैव विमलपयं ॥

अर्थात् हजारों बुधजनोंकी प्रिय, प्रथम हरिवंशोत्पत्तिकारक=हरिवंशनामकग्रन्थके रचयिता और हरिवंशकी भाँति विमल पद-विमलार्क अर्थात् विमलसूरिको वंदित (इतः पूर्व एक गाथा छोड़ कर) होने पर भी (यहाँ पुनः) वन्दन करता हूँ। इस परसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि कुबलयमालाकार उद्घोतनसूरि (वि. सं. ८३५) की दृष्टिमें हरिवंश नामक कृतिके प्रथम रचयिता विमलसूरि हैं। इस गाथाके अपने पहले किए हुए अर्थमें संशोधन करके श्रद्धेय श्री नाथूरामजी प्रेमी लिखते हैं कि "मैं हजारों बुधजनोंकी प्रिय हरिवंशोत्पत्तिकारक, प्रथम वन्दनीय और विमलपद हरिवंशकी वन्दना करता हूँ। इसमें जो विशेषण दिये हैं वे हरिवंश और विमलपद (विमलसूरिके चरण अथवा विमल हैं पद जिसके ऐसा प्रथ) दोनों पर चरित होते हैं। विमलसूरिका यह हरिवंश अभीतक अप्राप्य है। इसके मिलनेपर जिनसेनके हरिवंशका मूल क्या है, इसपर बहुत कुछ प्रकाश पड़नेकी संभावना है। आश्चर्य नहीं जो पद्मचरितके समान यह भी विमलसूरिके प्राकृत हरिवंशकी छाया लेकर ही बनाया गया हो" ('जैनसाहित्य और इतिहास' द्वितीय संस्करण पृ. ११३-१४)।

कुबलयमालाके संपादक डॉ. ए. एन. उपाध्येजीने इस गाथाके मूलमें "हरिवरिसं चैव" ऐसा पाठ स्वीकृत किया है, और उसके स्थानमें टिप्पणमें "हरिवंसं चैव" पाठोत्तर रूपसे दिया है। मेरा नम्र मत है कि "हरिवंसं चैव" पाठ मूलमें प्राप्य होना चाहिए।

चरुणवर्मकथानक (पृ. ५७ से ६२), विजयाचार्यकथानक (पृ. १०६ से ११४) और मुनिचन्द्रकथानक (पृ. ११७ से १२७) इन तीन अवान्तर कथाओंकी तथा ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित (पृ. २०९ से २४४) के अधिकांश भागकी रचना शैली आत्मकथात्मक है।

आज तक उपलब्ध चरितग्रन्थोंमेंसे यदि किसी भी ग्रन्थमें नाटकके रूपमें किसी अवान्तर कथाकी रचना दृष्टिगोचर होती हो तो वह केवल प्रस्तुत ग्रन्थमें ही है। देवचन्द्रसूरिरचित चन्द्रप्रभचरितमें आनेवाली चन्द्रायुधकथाका उत्तर भाग यद्यपि नाटककी शैलीमें उपलब्ध होता है, तथापि उसे प्रस्तुत ग्रन्थका अनुसरण कहा जा सकता है।

विद्याधरी मायाके प्रभावसे निमेषमात्रमें सारे महल और परिजनोंका अदृश्य हो जाना (पृ. २३७) तथा वेताल्लिनी विषा द्वारा कृत्रिम मृत्युका होना (पृ. १४७) ऐसे प्रसंग अरेबियन नाइट्स जैसे लगते हैं। हमारे प्रायः सभी प्राचीन कथाग्रन्थोंमें ऐसे वर्णन आते हैं। देवागमके प्रसंग, नगरमेंसे प्रतिदिन एक मनुष्यका भ्रूण करनेवाले राक्षसके प्रसंग तथा अन्य दैवीप्रसंगोंमेंसे कोई न कोई प्रसंग अल्पाधिक मात्रामें सर्वत्र उपलब्ध होते हैं। अतएव ऐसे वर्णनोंका समावेश तत्कालीन कथा-रूढ़िके अन्तर्गत ही करना चाहिए।

चौलुक्य नरेश जयसिंहदेव एवं कुमारपालके समकालीन आचार्य हेमचन्द्रके गुरु श्री देवचन्द्राचार्य द्वारा रचित (वि. सं. ११४६) मूलशुद्धिप्रकरणटीका (अपर नाम स्थानकप्रकरण टीका) के चौथे एवं छठे स्थानकमें आनेवाले चन्दना-कथानक तथा ब्रह्मदत्त कथानकको देखनेसे ज्ञात होता है कि इनमें आनेवाली अधिकांश गाथाएँ तथा कतिपय छोटे-बड़े गद्य सन्दर्भ शीलकाचार्यके चउप्यजमहापुरिसचरियमें आनेवाले 'वसुमहसंविहागय' (पृ. २८९-९२) तथा वंभयत्तचक्रवर्ति-चरिय (पृ. २१०-४४) के साथ अक्षरशः मिलते हैं। अतः प्रस्तुत ग्रन्थमेंसे ही वे सन्दर्भ वहाँ अवतारित प्रतीत होते हैं। इन कथाओंके अवशिष्ट भागोंमेंसे भी कितना ही भाग अल्पाधिक शाब्दिक परिवर्तनके साथ चउप्यजमहापुरिसचरियका ही ज्ञात होता है। इन स्थानोंकी विस्तारसे तुलना करना यहाँ शक्य नहीं है। आगामी कुछ वर्षोंमें सिंधी जैन ग्रन्थमालामें उक्त मूल-शुद्धिप्रकरणटीका प्रकाशित होनेवाली है। उसमेंसे विशेष जिज्ञासु यह तुलना जान सकेगा।

वि. सं. ११६० में रचित श्रीवर्धमानाचार्यकृत प्राकृत ऋषभदेवचरित (अप्रकाशित) के प्रारम्भमें आनेवाली एक गाथाको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी रचनामें भी इस चउप्यजमहापुरिसचरियका प्रभाव होगा ही। वह गाथा इस प्रकार है—

महमुहनिज्जरसरियं चरियं पाएण रिसहनाहस्स । कण्णंजलीहिं पिज्जउ वियसियवयणाए परिसाए ॥ ४५ ॥ क. च.
इसकी तुलना करो—

महमुहकलसपलोहं उत्तिमपुरिसाण चरियमुहसल्लिं ।

कण्णंजलीहिं पिज्जउ वियसियवयणाए परिसाए ॥ पृ. ४. गा. ५३ ॥ च. म. च.

उपर्युक्त दो उदाहरण तथा पूर्वोक्त कहावटीके स्थानोंका अवलोकन करनेपर ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि उत्तरवर्ती ग्रन्थकारोंके लिए प्रस्तुत ग्रंथ अत्यसनीय और उपादेय हो चुका था। इस दृष्टिसे इतर उत्तरवर्ती ग्रन्थोंमेंसे भी प्रस्तुत ग्रन्थके प्रभावके प्रमाणोंकी उपलब्धि असम्भव नहीं है।

१ देखो प्रस्तुत ग्रन्थमें 'विजुषानन्दनाटक' पृ. १७ से २७। यह नाटक दुःखान्त है, इसलिए नाटक-साहित्यमें इसका सूचक वैशिष्ट्य है।

२ देखो मुनि श्री चरणविजयजी द्वारा सम्पादित और आत्मानन्द जैन सभा, अंबालासे प्रकाशित 'चन्द्रप्रभचरित' पृ. ६८ से ७६।

शीलांकाचार्यने प्रस्तुत ग्रन्थकी रचना अपनी नैसर्गिक प्रतिभाके बलसे की है। भाषाका प्रवाह अस्खलित गतिसे बहता है। ग्रन्थके अध्ययनसे ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः ग्रन्थकी रचनाके पश्चात् लेखकको दूसरी बार उसे पढ़कर संशोधित करनेका अवसर नहीं मिला है। उपर्युक्त दो प्रतियोंके पाठभेदोंको देखने पर ऐसी भी कल्पना होती है कि प्रस्तुत ग्रन्थमें संशोधन-परिवर्धन हुआ है और वह शायद स्वयं लेखककृत भी हो; तथापि समस्त ग्रन्थ अथवा ग्रन्थका कोई पूरा एक विभाग समग्रतया देखा गया हो ऐसा नहीं लगता। यह बात अधोलिखित अवतरणोंसे अवगत हो सकेगी—

१. नाटकोंमें विदूषककी भाषा प्राकृत होती है। इस प्रणालिकाका अवलम्बन लेखकने भी 'विबुधानन्दनाटक'में किया है। केवल एक ही स्थान पर विदूषकके कथनमें 'जयउ जयउ कुमारो' लिखनेके बदले 'जयतु जयतु कुमारः' (पृ. २२) मिलता है।

२. पृ. ७९ में 'गंगा पडिसोण' लिखा है। 'तरियक्वा' का अर्थ ऊपरसे लगाना पड़ता है।

३. त्रिपुष्ट और विजयके समक्ष विजयाचार्य अपनी आत्मकथा कहते हैं। उस कथानकमें (पृ. १०६-११४) विजयाचार्य अपने आपको लक्षित करके 'मया चितियं' (पृ. १०७ पंक्ति-१३), 'तओ अहं' (पृ. ११३. पं. ६, १४) इत्यादि प्रयोग करते हैं और वे संगत प्रतीत होते हैं; परन्तु उसी कथामें अनेक स्थानों पर 'चन्दउत्त', 'कुमार', 'तेण वि' जैसे प्रयोग भी आते हैं, जिससे 'कथाका कथयिता ही कथानायक है' यह बात समझनेमें भ्रम पैदा हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस कथाके प्रारम्भमें पूर्वविदेहक्षेत्र लिखा है (पृ. १०६) परन्तु उसके स्थानमें भरतक्षेत्र होना चाहिए। यह समग्र कथा कहाकलीमें भदेचरसूरिने प्रायः अक्षरशः ली है। उसमें पूर्वविदेहक्षेत्रके स्थान पर भरतक्षेत्र लिखा है।

४. पृ. १६७ पर आई हुई २८वीं गाथामें 'पडिभणइ' शब्द आता है। २९वीं गाथामें यह वाक्य चाट रहता है, फिर भी वहाँ 'इमं भणइ'का प्रयोग किया है, जो न किया जाता तो भी चल सकता था।

५. अरिष्टनेमि-कृष्ण-चलदेवचरितमें जराकुमार अपनी पहचानके लिए 'हलि-केसवाणमेकोयरो' (पृ. २०१) कहकर अपनेको उनका सहोदर कहता है; परन्तु हली-चलदेव रोहिणीपुत्र है तो केशव-कृष्ण देवकीपुत्र है, यह बात पृ. १८३में आती है। पृ. २०४, गा. २६८में सिद्धार्थदेव चलदेवके आगे लः महाव्रतका उल्लेख करता है। उनके स्थानमें चार कहे होते तो अधिक संगत होता, क्योंकि उस समय चातुर्यामकी ही परम्परा थी।

६. पृ. २१२ में 'दासा दसण्ण आसी' कहकर पृ. २१४में 'दसण्ण' देशके स्थानपर 'सुदंसण' शब्द लिखा है।

७. त्रिपुष्टवासुदेवके चरितके अन्तमें 'अओ उड्डं बद्धमाणत्तिथयरचरियाहिगारे कहिस्सामो' (पृ. १०३) ऐसा लिखकर वर्धमानस्वामीके चरितमें उनके पूर्ववर्ती देवभव (अर्थात् एक ही भव)के अतिरिक्त त्रिपुष्ट और वर्धमानस्वामी इन दो भवोंके बीचके अन्य जन्मोंकी कथा नहीं लिखी।

९. पृ. २३६ पर आई हुई गाथा २०२ के पश्चात् पुष्पवती कहती है कि 'अण्णं च सुमरिजउ मुणिवरमणियं', परन्तु मुनिकवनकी जानकारी पुष्पवतीकी है ऐसा सूचन कहीं भी ग्रन्थकारने नहीं किया; अतः एकाध स्थानमें अन्याहारसे भी सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है।

१०. पृ. १६ एवं १८ में महाबल राजाके मंत्रीका नाम 'विमलमति' लिखा है, किन्तु पुनः पृ. १८ में ही उस मंत्रीका निर्देश 'सुबुद्धि' के नामसे किया है। इसी प्रकार पृ. १५९-६० में जिसका नाम 'रयणप्पमा' आता है उसीको पृ. १६१-६२ में 'अनंगमती' कहा है। पृ. २५४ में 'कणयरह' और पृ. २५५ में 'कणयाह' नाम आते हैं, परन्तु ये दोनों एक ही व्यक्तिके नाम हैं।

११. प्रतिवासुदेवको पराजित करनेसे पहले ही विजय बलदेवकी प्रव्रज्याका (पृ. ११४) निर्देश है।

१२. सम्मैतशैल और अष्टापदगिरि एक-दूसरेसे मिल हैं यह बात प्राचीन-अर्वाचीन समग्र जैन साहित्यमें विख्यात है। यहाँ भी ग्रन्थकारने इन दोनोंका प्रचलित भिन्न भिन्न नामोंसे उल्लेख किया है, फिर भी एक स्थान पर अष्टापदगिरिके बदले सम्मैतशैल लिखा है। वह पाठ इस प्रकार है— 'एवं विहरमागस्त सम्मैयसेल्वंदणगिमित्तमुपपण्णा मत्ती। पयडो सागर-दत्तसत्त्ववाहेण समयं। पणमिऊणं च भगिओ सागरदत्तेग-भयवं ! कहिं पुग तुम्हेहिं गन्तव्वं ! मुगिणा भणियं— वंदणगिमित्त-मट्ठावयगिरि।' (पृ. २४८) इसके आगे भी पृ. २४९ में मुनिके अष्टापद पर्वत पर जानेकी बात आती ही है। अतः मुनिको अष्टापद पर ही जाना था और वहीं वे गये भी, यह स्पष्ट है; परन्तु ऊपरके पाठमें अष्टापदके ख्यालसे ही 'सम्मैत-सेल' लिखा गया है। कहावलीमें इस स्थान पर सम्मैतशैलका ही निर्देश है। इससे रचना किस शीघ्रतासे हुई होगी उसका कुछ आभास मिलता है। साथ ही 'सम्मैयसेल' एवं 'अट्ठावयगिरि' इन दो शब्दप्रयोगोंके बीच केवल ६७ अक्षरोंका ही व्यवधान है, जिससे ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि ग्रन्थकी रचनाके पश्चात् लेखकको पुनः आद्यन्त पद जानेका अवसर नहीं मिला है।

ग्रन्थकी रचना गद्य-पद्यात्मक है। पद्य-भागमें सुभाषित गाथाएँ तो आती ही हैं, परन्तु उनके अतिरिक्त कथा-प्रसंग भी इस विभागमें आते हैं। अधिकांश पद्य-विभाग आर्या छन्दमें हैं; फिर भी कतिपय पद्य आर्याके विविध प्रकारोंमें तथा दण्डक आदि विभिन्न छन्दोंमें भी निबद्ध हैं।

इसमें गद्यका प्रयोग होने पर भी कहीं कहीं पद्यगन्धी गद्य प्रतीत होता है। ऐसे पद्यगन्धी गद्यमें आर्याके एक अथवा एकाधिक चरणके अतिरिक्त दूसरे किसी छन्दके अंशकी प्रतीति नहीं होती। ऐसे गद्यके नमूने नीचे दिये जाते हैं।

सुरवर-गारारंदिवण्णगागरुय ।	आर्यान्वित्यचरण	पृ. ४	पंक्ति ३०
लेसुहेसेण तुह मए सिट्ठं ।	"	२१०	१९
उवउत्ता दंसणे य णाणे य ।	"	८९	१२
....रपंकलुत्ताण भवियसत्ताणं	"	९४	८
हाहारवसद्वहिरियदियंतं ।	"	२११	२९
एवं च ते वणयरा तीण सव्वायरेण विणिउत्ता ।	आर्या पूर्वार्ध	३१२	२४
तह परिणओ करिंदो रोसेणायंविरेण्वत्तणओ ।	"	२८५	४

विशिष्ट भाषाप्रयोग—

यहाँ प्राकृत भाषामें उद्धृतस्वरोंके संधि-लोप-श्रुति-श्रुतिभेदादिप्रयोग, उद्धृतस्वरमें 'व' आगमप्रयोग, ऐकारका प्रयोग, समसंस्कृतप्रयोग, सिद्धसंस्कृतप्रयोग, विभक्तिव्याख्यय, विभक्तिलोप और वर्णव्यत्यय आदि अनेक प्रयोग उपलब्ध होते हैं, जिनमेंसे बहुतसे प्रयोग आचार्य श्रीहेमचन्द्रसूरिने अपने प्राकृतव्याकरणमें 'आर्षम्', 'बहुलम्' और मतांतरसे स्वीकृत किये हैं। इन सबकी तालिकाएँ अग्न्यासीके अवलोकनार्थ यहाँ दी जाती हैं। उद्धृतस्वरसंधिके प्रयोग—

लोयट्ठी	लोयट्ठिई	लोकस्थितिः	पृ. ७३, २७२
पुव्वट्ठीओ	पुव्वट्ठिईओ	पूर्वस्थितयः	३७
ट्ठीं	ट्ठिई	स्थितिम्	२०५ टि०
सहस्सट्ठी	सहस्सट्ठिई	सहस्रस्थितिः	१४८ टि०

आगीओ	आगिईओ	आकृतयः	पृ. १०५
डंढणीओ	डंढणीईओ	दण्ढनीतयः	३७ टि०
अवीय	अविइय	अविदित	६८
प्पभिं	प्पभिई	प्रभृति	११९
पी-माइ	पिइ-माइ	पितृ-मातृ	२५६ टि०
खिप्पइट्टिय	खिइप्पइट्टिय	क्षितिप्रतिष्ठित	१६
महाल	महायाल	महाकाल	११३ टि०
दुज्जयाए	दुज्जयाए	दुर्जयतया	१३४
भगवा	भगवथा	भगवता	७३ टि०
परायणाए	परायणयाए	परायणतया	७४
वल्लहाए	वल्लहाए	वल्लभतया	३२०
समाओ	समायाओ	समायातः	३१६ टि०
खंधार	खंधावार	स्कन्धावार	२१०
अंधार	अंधयार	अन्धकार	१६०, १९४, २३९
कहेणं	कहएणं	कथकेन	११३ टि०

उदवृत्तस्वरलोपप्रयोग—राहिव राइअहिव राअयधिप (पृ. ३०५ टि.)

उदवृत्तस्वरश्रुतिप्रयोग—भुअण पृ. ५६ टि.; भइय पृ. ११९ टि.; सुइण पृ. १२० टि., १५३ टि., १७२ टि.; रोइउ पृ. १२५ टि.; पइटो पृ. १३८ टि.; अडईए पृ. १३९ टि., पृ. १६६ टि.; रोइऊण पृ. १६५ टि.; पोइणिं पृ. १४६ टि., १७३ टि.; कुइयं पृ. २१४ टि.; विक्कुइय पृ. १८६ टि.; पलोइउं २१४; कूइयं १४६, २२०; रोइउं २३६ टि.।

उदवृत्तस्वरश्रुतिभेदप्रयोग । (१) 'अ'के स्थानमें अस्पष्ट 'इ'की श्रुति—अणवरइ पृ. ४६ टि.; सइं पृ. ६३ टि., १४० टि., ३०९ टि.; वाइसो पृ. ६६ टि.; अंतराईं पृ. ८१ टि.; जइमूसण पृ. १४० टि.; पोइणां पृ. १४६ टि.; लाइण पृ. २०८ टि.; खइर पृ. २५० टि.; असुइपुआ पृ. २१९ टि.; 'जइणेहिं पृ. ३०१ टि.; महिलाइणो पृ. ३११ टि.; मइ पृ. ३१६ टि.। (२) उदवृत्त 'इ'के स्थानमें अस्पष्ट 'य'की श्रुति—नीय पृ. ४२ टि., सय पृ. ५६ टि., सुयं पृ. ५८ टि., ६६ टि., १४१, जोयस पृ. ८० टि., णउयं पृ. ८३ टि., तप्पभियं पृ. १५२ टि., कस्सय पृ. १९९ टि., आयम्मि पृ. २१८ टि., गयंद पृ. २६२ टि., २६६ टि., मायंद पृ. ३०१ टि.।

उदवृत्तस्वरमें 'व' आगमप्रयोग । (१) उदवृत्त 'अ'में—ओवण पृ. ७३ टि., ८९ टि.; भुवबलं पृ. ९५ टि.; महोवहि पृ. १३५; 'वहोव पृ. १८६ टि.; भुवलया पृ. १९८ टि.; मरुव पृ. २१६ टि.; हियवय पृ. २३० टि.; भुवईद पृ. २७८ टि.; वियणावेव पृ. ३१० टि.; उवर ३८, ५०, ५५, १८०; उव्वेव पृ. ८, २९, टि., ८१ टि.; णिव्वेव पृ. ८ टि.; जुवल पृ. ९ टि., १० टि., ५९ टि., ८६, ९५ टि., १८१, १९५, १९५ टि., २१५, २२० टि., २२१, २२१ टि., २२७, २३५, २७०, ३०६, ३०७, ३१२, ३१३ टि., ३१७ टि., ३१९ टि., ३२६; जुव पृ. १९८ टि.। (२) उदवृत्त 'इ'में—कूवियं पृ. १४६ टि., २२० टि.; रोविऊण पृ. १६५; ओविओ पृ. १६७ टि.; विक्कुवियं पृ. १८६; पलोविउं पृ. २१४ टि.; रोविउं पृ. २३६ ।

‘ऐ’कारका प्रयोग—वैसाह पृ. १२, २०३ । समसंस्कृतप्रयोग—तया पृ. ३० । सिद्धसंस्कृतप्रयोग—
तत्सा = तस्याः पृ. २९, भावगया = भावनया पृ. ४८, जससे = यशसे पृ. १०२ ।

विभक्तिन्याय—किमेणसि पयाणं कयत्थिज्झ (पृ. १३१, द्वितीयाके अर्थमें पट्टी), जुवर्द्धि (पृ. ३८, पट्टीके अर्थमें तृतीया वा सप्तमी), तेसु घडेसु (पृ. १७३, पट्टीके अर्थमें सप्तमी) । इनके अलावा द्वितीयाके अर्थमें प्रथमाका प्रयोग जहाँ जहाँ प्राप्त होता है वे उदाहरण इस प्रकार हैं—

जम्मो परिणामो जीवाणुयंपयारी पृ. २५५, मिच्छा पृ. ३१३, सहयारमंजरी पृ. २६२, बाहुबलिदेससीमा पृ. ४६, मायाकुंडंगी पृ. ९२, आसण्णसमोसरणन्मी पृ. ३२७, गती पृ. १४४, सयलज्जगमणांदयारिणी वाणी पृ. १७३, पुरवरी पृ. १९९, पेच्छणयविही पृ. २०९, आयरियावासभूमी पृ. १४, सयस्वंडिया पृ. १२, जेवुई पृ. १७५, कुमरी पृ. १०७ टि० ११० टि०, देवया पृ. १२३ टि०, सारही पृ. १९३, परिणई पृ. १९७ टि० ३१० टि०, देसगा पृ. २०५, जंतु पृ. २१८, पेच्छणयविही पृ. २१०, गियघरिणी पृ. २८९, सेट्टी पृ. २९१, अण्णा महिला पृ. ३११, एत्तियन्हे = एत्तिया अन्हे पृ. ३२६, धम्मचारिणी पृ. ६६, पाणवित्ती पृ. ७७ टि०, ‘किलमंतो पेलवमही पृ. ८३, वाणी पृ. १०१ टि०, ववंती पृ. १०१, देसविरई पृ. १७७, लच्छी पृ. २४८, मती पृ. १२० टि० ।

विभक्तिलोप छंदोभंग न हो इस दृष्टिसे हुआ है उदाहरण—मिस्खाहिंडमाण (पृ. ३०२, गा० ४३७), अहिमाण (पृ. २२०, गा० ७८), सम्मत्त णाग दंसण (पृ. ८९, गा० ३७), ‘पंचमि (पृ. १८३, गा० ५१) ।

वर्णन्यायमें यहाँ ‘म’का ‘व’ हुआ है जैसे कि—चव्वकार पृ. ३४, भविमो पृ. ५६ टि., पणविक्रम पृ. ६२ टि., पसवणेण पृ. १४४ टि., गिस्वक्क पृ. १४६ टि., वावणगो पृ. १५३ टि., वावणेण पृ. १५४ टि. १६१ टि., परिणवइ पृ. १८३ टि., ससंभव पृ. २०१ टि., संभवु पृ. २०२ टि., सवण पृ. २५६ टि. ।

स्वरादिशब्दोंमें ‘म’ और ‘त’ आगम हुआ हो वे स्थान—माइच्च पृ. ३९, मण्णाओ पृ. ५९, मम्मसंतो पृ. २८२, तचंत पृ. ४८ ।

इन स्थानोंमें ‘ण’के बदले ‘ण्ह’ मिलता है—डिण्हें पृ. १७५ टि.; कण्हेंतेउर पृ. २०० टि.; गेलण्ह पृ. ४९ टि.; दिण्हो पृ. ४ टि.; दिण्हें पृ. ५१ टि., ५९ टि., १२८ टि.; दिण्हेंण पृ. ४७ टि., ७८ टि.; दोण्हि पृ. १४ टि., २१ टि., २६ टि., ८९ टि., १२७ टि., १४२ टि., १६८ टि., २०६ टि., २१५ टि. ।

दो स्थानोंमें ‘तण्’ त्वया के बदले ‘तण्हें’ (पृ. १५२, २९०) जैसा गौर्जर अपभ्रंशका रूप भी मिलता है ।

इसमें छन्दका मेल बिठानेके लिए कहीं-कहीं दीर्घस्वरका ह्रस्वस्वर, ह्रस्वस्वरका दीर्घस्वर तथा वर्णद्विर्भावका एकीभाव भी हुआ है; जैसे कि—दीर्घका ह्रस्व : वरई पृ. ८८, रूवगव्वि पृ. ८१ । ह्रस्वका दीर्घ : भवियायण पृ. २३५, अप्पाणो पृ. २९९ । द्विर्भावका एकीभाव : उविलण पृ. १९३, उपण्ण पृ. १९३ ।

आज भी लोग पुत्रीको सम्बोधनमें ‘बेटा’ कह देते हैं । उसी प्रकार इस ग्रन्थमें भी ‘पुत्ती’ शब्दके सम्बोधनमें ‘पुत्त !’ रूपे मिलता है । इसी प्रकार जिस पर वात्सल्य होता है उसे हम बाप या बाबाके नामसे सम्बोधित करते हैं । प्रस्तुत ग्रन्थमें भी छोटे भाईको संबोधन करते समय बड़ा भाई ‘वप्प !’ शब्दका प्रयोग करता है । इससे यही फलित होता है कि लोक-भाषामें ऐसे शब्दप्रयोगोंका प्रवाह प्राचीन है ।

१ देखो—पृ. २८९ पं. २४, पृ. २२६ पं. १३, पृ. १५९ पं. १७, पृ. १६१ पं. २ ।

२ देखो—पृ. २०० पं. २९ ।

ग्रन्थकार तथा उनका समय

ग्रन्थकारने अपनी पहचान तीन नामोंसे दी है : शीलोक (पृ. १७) अथवा सीलोक (पृ. २६९) विमलमति (पृ. १७) तथा सीलायरिय-शीलाचार्य (ग्रन्थकी समाप्तिमें पृ. ३३५)। ग्रन्थके अन्तमें ग्रन्थकारकी संक्षिप्त प्रशस्ति एवं ग्रन्थकी समाप्ति सूचक पाँच गाथाएँ हैं, जो इस प्रकार हैं—

चउप(प)णमहापुरिसाण एत्थ चरियं सम्पण एयं । सुयदेवयाण पयकमलकंति सोहाणुहावेणं ॥ १ ॥

आसि जसुज्ज[ल]जोण्हाधवलियनेवुयकुलंवरामोओ । तुहिणकिरणो व्व सूरी इहइं सिरिमागदेवो ति ॥ २ ॥

सीसेण तस्स रइयं सीलायरिएण पायडकुलथं । सयलज्जणवोहणथं पाययमासाण सुप्रसिद्धं ॥ ३ ॥

जं एत्थ लेखण-उक्खर-छंदकखलियं पमायओ मज्झ । लेहअवसउ व्व भवे तं खमियव्वं बुहयणेण ॥ ४ ॥

इय महापुरिसचरियं समत्तं ।

चउपणमहापुरिसाण कित्तणं जो मुणेइ एगगो । सो पावइ मुत्तिमुहं विउलं नथेत्थ संदेहो ॥ ५ ॥

अर्थात् यह चौवन महापुरुषोंका चरित्र श्रुतदेवताके चरणकमलकी कान्तिकी शोभाके प्रभावसे—सरस्वतीकी कृपासे—यहाँ समाप्त होता है ॥ १ ॥ यज्ञकी उज्ज्वल ज्योत्स्नासे निर्द्वितिकुलरूपी आकाशके विस्तारकी ध्वलित करनेवाले चन्द्रके समान मानदेवसूरि थे ॥ २ ॥ उनके शिष्य शीलचार्यने सब लोगोंके बोधके लिए प्रकट एवं स्पष्ट अर्थवाला [अतएव] सुप्रसिद्ध यह—चउपपन्न० म० च०—प्राकृतभाषामें रचा है ॥ ३ ॥ इसमें लज्जण, अक्षर एवं छन्दके बारेमें मेरे अथवा लेखकके प्रमादवश कोई क्षति हुई हो तो विद्वान् उसे क्षमा करें ॥ ४ ॥ जो कोई चौवन महापुरुषोंका चरित्र एकत्र होकर सुनता है उसे मुक्तिका विपुल सुख प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

प्रस्तुत सम्पादनमें जिन दो प्रतियोंका आधार लिया गया है उनमेंसे 'जे' संज्ञक प्रतिमें उपर्युक्त पाँच गाथाओंमेंसे प्रारम्भकी तीन गाथाओंके पश्चात् ग्रन्थसमाप्ति एवं लेखककी पुष्पिका उपलब्ध होती है, अर्थात् अन्तिम दो गाथाएँ 'जे' प्रतिमें नहीं हैं। जिनमें ग्रन्थकार तथा उनके कुल एवं गुरुका निर्देश है वे दूसरी और तीसरी गाथाएँ 'सू' संज्ञक प्रतिमें नहीं हैं; अर्थात् 'जे' प्रतिमें ही ये दो गाथाएँ आती हैं। यहाँ ग्रन्थकारकी परिचायिका दूसरी-तीसरी गाथाएँ प्रक्षिप्त हैं ऐसा माननेका कोई कारण नहीं है। साथ ही, 'सू' संज्ञक प्रतिके लेखकने ये दो गाथाएँ जानबूझकर नहीं लिखी होंगी ऐसा माननेका भी कोई कारण नहीं है। कभी-कभी गच्छ आदिके दुराग्रहके कारण लेखकके प्रशस्ति-पाठमें छेड़छाड़ करनेका, उसे सुधारनेका अथवा न लिखनेका बनता होगा, और वैसा हुआ भी है; तथापि इन दो गाथाओंमें ऐसी कोई बात नहीं है जिसे लिखकर या न लिखकर कोई भी व्यक्ति अपने गच्छाग्रह या व्यक्तिद्वेषका पोषण कर सके। 'सू' प्रतिके लेखन-समय, लेखन-स्थान

१ ऐसी अनधिकार छेड़छाड़को रोकनेके लिए ही विषयकी १७ वीं शतीके जैन विद्वान् श्री समयसुन्दरजीने तथा ब्राह्मण विद्वान् श्री गोवर्धनजीने अपनी-अपनी कृतियोंके अन्तमें स्पष्ट सूचना दी है। श्री समयसुन्दर श्रुत्तरत्नाकरवृत्तिके अन्तमें कहते हैं—

यः कोऽपि मत्सरी मूढः प्रशस्तिं न लिखिष्यति । स लोके लप्स्यते निन्दां कुणिमांवी परत्र च ॥

अर्थात् जो मात्सर्ययुक्त मूढ़ व्यक्ति मेरी प्रशस्ति नहीं लिखेगा वह इस लोकमें निन्दापात्र और परलोकमें कोई भी किया करनेमें असमर्थ हाथवाला होगा। इसी प्रकार गोवर्धनकृत पद्मकोशके अन्तमें एक श्लोक है कि—

अपास्मिन् पद्मकोशाख्ये योऽभिधानकरः परः । स जारजातको ज्ञेयः यदि त्रिस्कन्धपारगः ॥

अर्थात् इस पद्मकोश नामक ग्रन्थमें यदि कोई अपना नाम पुसेय देगा तो वह भले ही त्रिस्कन्धका पारगामी हो, तो भी उसे जारजात ही समझना चाहिए।

ये दोनों हस्तलिखित ग्रन्थ राजस्थान के प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान (जोधपुर) के ग्रन्थसंग्रहमें संग्रहीत हैं और इनका क्रमांक १९७९ एवं १०९ है।

एवं लिखानेवाले व्यक्ति आदिको देखने पर इतना तो कहा जा सकता है कि आदर्श प्रतिमें इन दो गाथाओंका अभाव होनेसे ही इस 'सू' प्रतिमें वे उद्धृत नहीं हुई होंगी। सम्भव है कि आदर्श प्रतिमें अथवा उसकी पूर्वपरम्पराकी प्रतिमें किसी प्रकारकी असहिष्णुताके कारण ये गाथाएँ न भी ली गई हों, परन्तु इतना निश्चित है कि ग्रन्थकारका संक्षिप्त परिचय देनेवाली ये गाथाएँ स्वयं ग्रन्थकार द्वारा ही रचित हैं।

इस प्रकार निर्द्वैतिकुलीन मानदेवसूरिके शिष्य शीलाचार्य, शीलांक अथवा विमलमतिने प्रस्तुत ग्रन्थकी रचना की है। ग्रन्थकार एवं उनके गुरुके विषयमें कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं होती, फिर भी इस ग्रन्थका सम्पादन करते समय ग्रन्थकारके बारेमें जो कुछ थोड़ी-बहुत सामग्री उपलब्ध हुई है वह मैं नीचे प्रस्तुत करता हूँ—

आचार्य पद प्राप्त करनेसे पूर्व एवं उसके पश्चात् ग्रन्थकारका नाम क्रमशः विमलमति और शीलाचार्य रहा होगा और 'शीलांक' तो स्वयं ग्रन्थकारके द्वारा अपने लिए पसन्द किया गया उपनाम प्रतीत होता है। यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थके अन्तमें 'शील + अंक' दोतक कोई शब्द प्रयोग तो उपलब्ध नहीं होता, तथापि विबुधानन्द नाटकके अन्तमें (पृ. २७) 'सच्छीलवान् रत्नः' लिखकर ग्रन्थकारकी वृत्ति शील अंक सूचित करनेकी ज्ञात होती है। केवल इसी एकमात्र स्थानके कारण उनका उपनाम शीलांक पड़ा हो ऐसा नहीं कहा जा सकता। सम्भव है, शीलांक पदसे निर्दिष्ट दूसरी भी रचनाएँ उन्होंने की हों।

श्रीहेमचन्द्राचार्य रचित देशीनाममालाकी टीकामें आनेवाले 'कडंभुं घटस्थैव कण्ठ इति शीलांकः' (पृ. ८८) तथा 'बोडं चूचुकम्, वोटणं इति शीलांकः' (पृ. २५०) इन दो उद्धरणोंसे इतना तो निश्चित होता है कि शीलांक नामके किसी विद्वान्ने या तो देशीनाममाला लिखी थी या फिर किसी देशी शब्दकोशके ऊपर टीका लिखी थी। शीलांक नामके अनेक विद्वान् हुए हैं। आजतकके उपलब्ध साहित्यको देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य शीलांकोंकी रचनाका विषय आगम साहित्य है, जबकि प्रस्तुत ग्रन्थकारका विषय कथा, चरित्र, नाटक आदि है। इसके अलावा प्रस्तुत ग्रन्थमें देशी शब्दोंका प्राचुर्य भी है। इससे ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि हेमचन्द्राचार्य द्वारा उल्लिखित शीलांक चउप्यजमहापुरिसचरित्रके रचयिता शीलांक ही होने चाहिए। जिस प्रकार उपर्युक्त अवतरणोंसे सूचित शीलांककी कोई देशीनाममाला अथवा उसकी टीका उपलब्ध नहीं होती उसी प्रकार दूसरे ग्रन्थ भी प्रस्तुत ग्रन्थकारने लिखे अवश्य होंगे, परन्तु वे अब मिलते नहीं हैं। यद्यपि शीलांक नामक विद्वान्की अन्य कृतियाँ उपलब्ध होती हैं, किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थकारसे उन-उन कृतियोंके लेखक अभिन्न हैं यह बतलानेवाला कोई प्रमाणमूल आधार इस समय हमारे पास नहीं है।

शीलांक वा शीलाचार्यके सम्बन्धमें भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानोंने कुछ आनुमानिक विचार प्रदर्शित किये हैं। उसी नामके एक विद्वान् द्वारा रचित प्रस्तुत ग्रन्थका सम्पादन करते समय उपर्युक्त पूर्वभूमिकाके आधार पर जो बातें ज्ञात हुई हैं उनका निर्देश करना यहाँ उपयुक्त होगा।

इस समय शीलांक अथवा शीलाचार्यने निम्न ग्रन्थोंकी रचना की है— ऐसे उल्लेख मिलते हैं—

ग्रन्थ	कर्ता
१. विशेषावश्यकभाष्यवृत्ति	शीलांक-कौट्याचार्य (निर्देशः प्रभावक चरित्र)
२. आचारांग-सूत्रकृतांगटीका	शीलाचार्य-तत्त्वादित्य-शीलांक
३. चउप्यजमहापुरिसचरित्र	शीलाचार्य-विमलमति-शीलांक

- | | | |
|----|---|------------------------------------|
| ४. | जीवसमासप्रकरणवृत्ति | शीलांक |
| ५. | पूजाविधिप्रकरण (१) | शीलाचार्य (निर्देश : बृहट्पिपनिका) |
| ६. | अज्ञात-अप्राप्य देशीशब्दकोश अथवा देशीशब्दकोशकी वृत्ति | शीलांक (निर्देश : हेमचन्द्र) |
| ७. | एकादशांगवृत्ति | शीलांक (निर्देश : प्रभावक चरित्र) |
| ८. | इनके अतिरिक्त विनयचन्द्रीय (चक्रमकी १३ वीं शती) काव्यशिक्षामें शीलांकका निर्देश है। | |

१. इनमेंसे विशेषावश्यकभाष्यके टीकाकार कोट्याचार्यका नाम शीलांक भी है—ऐसा विधान करनेवाले विद्वानोंमेंसे सबने इस विधानके आधारके रूपमें प्रभावकचरित्रके अतिरिक्त दूसरे किसी ग्रन्थका प्रमाण नहीं दिया। उसमें विशेषावश्यक-भाष्यकी वृत्तिके रचयिता शीलांकको ही एकादशांगवृत्तिकार भी कहा है। उसमें ऐसा भी उल्लेख आता है कि ग्यारह अंगोंकी वृत्तियोंमेंसे केवल आचारांग एवं सूत्रकृतांगकी वृत्तियोंके अतिरिक्त शेष नौ अंगोंकी वृत्तियोंके नष्ट होने पर शासन-देवताने अभयदेवसूरिको उन अंगोंकी टीका लिखनेके लिए प्रेरित किया। प्रभावकचरित्रकारका शासनदेवतावाला यह निर्देश या तो किसी निर्मूल दन्तकथाके ऊपर आधारित है या फिर स्वयं उनकी अपनी ही कल्पना है। अभयदेवसूरिके समयमें शीलांक अथवा अन्य किसी विद्वान्की अवशिष्ट नौ अंगोंपर वृत्ति होती तो “अर्थरूपी रत्नके साररूप, देवता द्वारा अधिष्ठित तथा विद्या एवं क्रियासे बलवान् होने पर भी किसी पूर्वपुरुषने जिसका उन्मुद्रण (व्याख्या या टीका) नहीं किया वैसे स्थानांगका व्याख्यामूलक अनुयोग आरम्भ किया जाता है।” इस प्रकार अभयदेवसूरि स्वयं अपनी स्थानांगवृत्तिके प्रारम्भमें न लिखते। इससे तो यही सिद्ध होता है कि शीलांक एकादशांगवृत्तिकार नहीं थे, अपितु आचारांग एवं सूत्रकृतांगके ही वृत्तिकार थे। अतएव प्रभावकचरित्रकारका उपर्युक्त उल्लेख निर्मूल प्रमाणित होता हो, तो प्रभावकचरित्रमें इसी स्थानपर शीलांकका जो दूसरा नाम कोट्याचार्य दिया है वह भी विशेष सार्थक प्रतीत नहीं होता। कहनेका तात्पर्य यह है कि विशेषावश्यकभाष्यकी वृत्तिके रचयिता कोट्याचार्यका दूसरा नाम शीलांक नहीं है। पुण्यपाद आगमोद्धारक आचार्य श्रीसागरा-नन्दसूरिजीने भी स्वसम्पादित कोट्याचार्यकृत विशेषावश्यक भाष्यकी वृत्तिकी प्रस्तावनामें यह बात स्पष्ट की है।

२. आचारांग-सूत्रकृतांगके वृत्तिकार शीलाचार्यने अपने नामका निर्देश आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्धकी वृत्ति, द्वितीय श्रुतस्कन्धकी वृत्ति तथा सूत्रकृतांगकी वृत्तिके अन्तमें किया है। इन तीनों स्थानों पर आचार्यने अपना नाम शीलाचार्य लिखा है; तथा आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्धकी वृत्तिके अन्तमें ‘निर्भुतिकुलीन-शीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना बाहरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति’ लिखकर अपना दूसरा नाम तत्त्वादित्य भी सूचित किया है। गुप्त या शकसंवत्के विषयमें निश्चय न हो सकनेसे तथा दूसरे विशेष प्रमाणोंके अभावमें भिन्न-भिन्न समयके आचार्योंको एक ही व्यक्ति माननेके अनुमान होते रहे हैं, परन्तु अन्तिम निर्णय अभी तक नहीं हो पाया है। आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्धकी टीकाके अन्तमें ग्रन्थकारने रचनासमय गुप्त संवत् ७७२ लिखा है, जबकि द्वितीय श्रुतस्कन्धकी टीकाके अन्तमें शकसंवत् ७८४ और प्रत्यन्तरमें ७९८ लिखा है। ‘यहाँ गुप्तसंवत् एवं शकसंवत्को एक मानकर शकको गुप्त लिखा गया है वस्तुतः दोनों संवत् शकसंवत्के अर्थमें होने चाहिए’—ऐसी डॉ. फ्रीट आदि विद्वानोंकी कल्पना युक्तिसंगत प्रतीत होती है। इस दृष्टिसे यदि प्रथम श्रुतस्कन्धकी वृत्तिके अन्तमें दिये गये गुप्तसंवत्को शकसंवत् ही मान लें, तो वि. सं. ९०७ में प्रथम श्रुतस्कन्धकी और वि. सं. ९१९ में द्वितीय श्रुतस्कन्धकी टीका लिखी गई होगी। बृहट्पिपनिकामें चउपपन्नमहापुरिसचरियका रचनासमय वि. सं. ९२५ दिया है। इस तरह दोनों शीलाचार्योंने, समकालीन होनेके कारण, अपनी अलग-अलग पहचानके लिए दूसरा नाम भी दिया

१ “विधिचार्यरत्नसारस्य, देवताधिष्ठितस्य, विद्या-क्रियाबलवतापि पूर्वपुरुषेण कृतोऽपि कारणादनुमुद्रितस्य स्थानाङ्गस्योन्मुद्रणमिवानुयोगः प्रारभ्यते।” —स्थानाङ्गटीकाके प्रारम्भमें।

होगा, ऐसा अनुमान सर्वथा असंगत नहीं लगता। इन दोनोंकी समकालीनताका और अभिन्नताका मुख्य आधार दोनों ग्रन्थोंके रचनासमयको ही कहा जा सकता है, किन्तु वस्तुतः वे दोनों भिन्न ही हैं। 'विमलांक' विमलसूरि, 'भवविहांक' हरिभद्रसूरि तथा 'दाक्षिण्यचिह्न' उद्योतनसूरि इत्यादि विद्वानोंने अपने अपरनाम सूचित किये ही हैं, यद्यपि उनके समकालीन उस-उस नामके अन्य विद्वान् ज्ञात नहीं हो सके हैं। यहाँ तो हमें इतना ही सूचित करना है कि आचारांगटीकाकार और चउप्यजमहापुरिसचरियके कर्ता शीलार्च्य अपने अपरनाम भिन्न-भिन्न सूचित करते हैं, और इसीलिए वे समकालीन होने पर भी एक नहीं हैं।

पुरातत्त्वाचार्य मुनीश्री जिनविजयजीने जीतकल्पसूत्रकी अपनी प्रस्तावनामें डॉ. फ़्रीट, डॉ. पिटर्सन, डॉ. लॉयमान तथा डॉ. हर्मन जेकोबीके मन्तव्योंका अनुवाद करते हुए कुवल्यमालाकार उद्योतनसूरिके गुरु तत्त्वाचार्य एवं आचारांग-सूत्रकृतांगके वृत्तिकार शीलार्च्य-तत्त्वादित्य एक ही हैं ऐसी कल्पना की है। इसी प्रकार इसी प्रस्तावनाके अन्तमें (परिशिष्टमें) आचारांग सूत्रकृतांगके टीकाकार शीलार्च्य एवं प्रस्तुत ग्रन्थ चउप्यजमहापुरिसचरियके कर्ता एक हैं ऐसा भी अनुमान किया है। उन्हें प्रस्तुत ग्रन्थकी प्रति उस समय प्राप्त नहीं हुई थी, अतः ऐसी कल्पना करना उनके लिए स्वाभाविक था; परन्तु मैंने उपर असंदिग्धरूपसे सूचित किया ही है कि समकालीन होने पर भी ये दोनों शीलार्च्य एक नहीं किन्तु भिन्न हैं।

आगमोद्धारक आचार्यश्री सागरानन्दसूरिजीने विशेषावश्यकमाध्यवृत्तिकी प्रस्तावनामें आचारांगके टीकाकार शीलार्च्यके तत्त्वादित्य नामको (जो सभी प्रतियोंमें उपलब्ध होता है) कविकृत मानकर उन्हें तथा चउप्यजके कर्ता शीलार्च्यको अभिन्न बतलाया है, किन्तु यह विधान संगत प्रतीत नहीं होता। दोनों आचार्योंकी भिन्नताका निषेध करनेके लिये तत्त्वाचार्य के नामके लिए 'कविकृत' विशेषणका प्रयोग करके उसे प्राक्षिप्त माननेका उनका आशय हो या न हो, परन्तु उससे इतना तो फलित होता ही है कि उन्हें आचारांग-सूत्रकृतांगवृत्तिकार शीलार्च्यका दूसरा नाम तत्त्वादित्य स्वीकार्य नहीं है। उनके इस विधानसे कोई ऐसा भी समझ सकता है कि वह नाम स्वयं ग्रन्थकारने नहीं लिखा है ऐसा श्री सागरानन्दसूरिजीका मानना है। परन्तु जो नाम आचारांगकी उपलब्ध प्राचीनतम प्रतियोंमें निरपवाद रूपसे उपलब्ध होता है उसका बिना किसी आधारके निषेध करना उचित नहीं है। किसी भी विद्वान्ने अन्य विद्वान्के ग्रन्थमें अपरनाम कल्पित करके जोड़ दिया हो ऐसा कभी नहीं हुआ। इतना ही नहीं, ऐसा दुस्साहस किसने और किस हेतुसे किया होगा इसका उत्तर जिसका कोई आधार नहीं ऐसे 'कविकृत' शब्दप्रयोगसे नहीं मिलता। मुनीश्री जिनविजयजीको तो चउप्यजमहापुरिसचरियकी प्रति नहीं मिली थी, अतः उन्होंने दोनोंके एकत्वका अनुमान किया था; परन्तु श्री सागरानन्दसूरिजीको तो चउप्यजके कर्ता शीलार्च्यका 'विमलमति' नाम मिला है, फिर भी दोनोंकी भिन्नताके बदले एकके अपरनामको व्यर्थ मानकर उनका एकीभाव उन्होंने क्यों किया होगा यह हमारी समझमें नहीं आता।

श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाईने भी जीतकल्पसूत्रकी उपर्युक्त प्रस्तावनाका अनुसरण करके आचारांगके टीकाकार तथा चउप्यजके रचयिताको एक माना है। इसके विषयमें तो कुछ विशेष लिखनेका नहीं है। किन्तु जीतकल्पसूत्रकी प्रस्तावनामें कोट्याचार्य शीलार्क, अणहिल्लपुरके स्थापक वनराजके विद्यागुरु शीलगुणसूरि, आचारांगके टीकाकार शीलार्च्य और चउप्यजके रचयिता शीलार्च्यके एक होनेके जो अनिश्चित अनुमान किये हैं (जो उसी प्रस्तावनामें किये गये परिशिष्टके आधार पर

१ डॉ. फ़्रीटने आचारांगसूत्रटीकाके रचना-स्थान 'गंभूता' को खम्भात कहा है, किन्तु यह टीका प्रतीत नहीं होता। महेशाना-पाटन रेल-मार्ग पर आनेवाले घीणोज स्टेशनसे तीन-चार कोस दूर आये हुए गाम्बू नामक गाँवका प्राचीन नाम गंभूता था। इसके सूचक प्राचीन प्रमाण भी उपलब्ध होते हैं।

२ देखो 'जैन साहित्यको संक्षिप्त इतिहास' पृ. १८०-८१।

असंगत और अनिर्णीत कहे जा सकते हैं) उनके आधार पर वनराजके गुरु शीलगुणसूरि और दोनो शीलाचार्योंको एक मानकर श्री देसाईने उनकी स्तुतिके रूपमें मुनिरत्नसूत्रिकृत अममस्वामिचरित्रका जो श्लोक उद्धृत किया है वह भी शीलगुणसूरि या शीलाचार्यकी स्तुतिरूप नहीं है, किन्तु उससे तो श्री हेमचन्द्राचार्यकी स्तुति की गई है। वह श्लोक इस प्रकार है—

गुरुर्गुर्जरराजस्य चातुर्विधैकसृष्टिकृत् । त्रिषष्टिनरसद्वृत्तकविर्वाचां न गोचरः ॥

इसमें आये हुए 'गुर्जरराज' शब्दका अर्थ कुमारपाल के बदले वनराज करके उसके विद्यागुरु शीलगुणसूरिका तथा त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रके बदले चउप्पजमहापुरिसचरियकी कल्पना करके शीलाचार्यका ऐक्य सूचित करनेका आशय माह्यम पड़ता है, परन्तु 'चातुर्विधैकसृष्टिकृत्' विशेषण जितना हेमचन्द्राचार्यके लिए उपयुक्त लगता है उतना शीलगुणसूरि या शीलाचार्यके लिए उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। इसके अलावा त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रके निर्देशका आशय भी इसमें स्पष्ट अवगत होता है। सम्भावनाओंको विधान मानकर किया गया निर्णय कैसा असंगत होता है यह जाननेके लिए उपर्युक्त श्लोकका श्रीदेसाईकृत अर्थ एक उदाहरणरूप है।

प्रस्तुत विचारके सन्दर्भमें एक बात विशेष सूचक है; अतः अन्तमें इसका निर्देश करना मुझे आवश्यक प्रतीत होता है। आचारांग एवं सूत्रकृतांगके टीकाकार अपना नाम तत्त्वादित्य एवं शीलाचार्य सूचित करते हैं, किन्तु कहीं कहीं प्रत्यंतरूपसे शीलांकका भी निर्देश मिलता है। इस परसे यह संभावना होती है कि उनका मूल नाम शीलाचार्य होगा किन्तु बादमें शीलाचार्य और शीलांकचार्यका एकीकरण हो जानेके कारण वे शीलांक नामसे भी प्रसिद्ध हुए।

३. चउप्पजमहापुरिसचरियके कर्ता शीलाचार्यका परिचय दिया जा चुका है।

४. जीवसमासवृत्तिमें ग्रन्थकार अपना नाम शीलांक सूचित करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई जानकारी इसमें उपलब्ध न होनेसे ग्रन्थके साधन अवलोकनके अनन्तर ही कुछ कहा जा सकता है। सरसरी निगाहसे मैं सारा ग्रन्थ देख तो चुका हूँ, परन्तु उसके आधारपर किसी निर्णयपर आना इस समय कठिन है।

५. शीलाचार्यरचित पूजाविधिविषयक कोई कृति का जो निर्देश बृहद्विपनिकामें आता है वह इस प्रकार है— 'श्रीशान्तिवेतालीयपर्वपंजिका स्तनपनविद्यादिवाच्या श्रीशीलाचार्याया।' इस उल्लेख परसे ज्ञात होता है कि इस कृतिका विषय पूजाविधि रहा होगा। अबतक इसकी एक भी प्रति उपलब्ध नहीं हुई, अतः नाममात्रका उल्लेख करनेवाले उपर्युक्त उल्लेखके आधार पर इतनी मात्र संभावना की जा सकती है कि स्तनपनविधि आदि विषयक कोई ग्रन्थ शीलाचार्यका था जिस पर बादवेताल शान्त्याचार्यने पंजिका लिखी थी।

६. हेमचन्द्रीय देशीनाममालाकी टीकामें निर्दिष्ट शीलांक चउप्पजके कर्ता शीलांक होने चाहिए, ऐसे अनुमानका निर्देश मैंने ऊपर किया ही है।

७. प्रभावकचरित्रमें निर्दिष्ट शीलांकके बारेमें पहले कहा जा चुका है।

८. लगभग १३वीं शतके आचार्य विनयचन्द्रने अपनी काव्यशिक्षाके अन्तमें व्यास आदि ब्राह्मण ग्रन्थकारोंके नामोंके साथ जैन ग्रन्थकारोंका भी नामनिर्देश किया है। उसमें शीलांकका नाम भी आता है। काव्यशिक्षाका वह पाठ इस प्रकार है—

भद्रबाहुर्हरिभद्रः शीलांकः शाकटायनः । उमास्वातिः प्र.....॥' (आगेका पत्र उपलब्ध नहीं)

इसमें केवल नामका ही निर्देश होनेसे लेखकको कौनसे शीलांक अभिप्रेत हैं यह जानना कठिन है, तथापि काव्यशास्त्रमें

सूत शीलांक ऐसे होने चाहिए जो व्याकरण, काव्य, कोश, चरित्र आदिके रचयिताके रूपमें ख्यातनाम हो। यह तर्क हमें ऐसी सम्भावनाकी ओर ले जाता है कि लेखकको शीलांक पदसे शायद चउपनके रचयिता शीलांक अभिप्रेत हो।

ग्रन्थगत सांस्कृतिक सामग्री

शालवाहनकी सभा शतशः कवियोंसे शोभित होती होगी, अर्थात् वह अत्यन्त विद्याप्रिय राजा होगा—यह बात पृ. १३८ के अन्तमें आये हुए अटवीवर्णनके श्लिष्ट प्रयोगसे ज्ञात होती है। उसमें कहा है—‘शालवाहनत्वाणि जइ सिय कइसयसंकुल’ इसमें अटवीके पक्षमें ‘कइसयसंकुल’का अर्थ है कपिशतसंकुला तथा शालवाहनकी सभाके पक्षमें अर्थ होता है कविशतसंकुला।

सरस्वती नदीके किनारे पर बसे हुए सिणवड्डिया नामक गाँवके पास (‘पत्तो सरस्सईण तीरासणं सिणवड्डियाहिहाणं गामं ति’ पृ. १८६) जरासंधको हराकर यादवोंने विजयके उसाहमें आकर आनन्द मनाया और उसके स्मारकके रूपमें आनन्दपुर नामक नगर (आधुनिक वडनगर) बसाया। वहाँ उन्होंने ‘अरहंतासणय’ नामक एक कैय भी बनवाया था, जो ग्रन्थकार शीलांकके समयमें विद्यमान था। वह पाठ इस प्रकार है—“तजो भत्तिम्भरनिम्भरेहिं जायवणरिंदेहिं तथ भयवं निवेसिउण अरहंतासणयाहिहाणमाययणं कारियं, आणंदपुरं च जिविटुं। अज्ज वि तथ पसिद्धं पच्चस्समुवलस्सिज्जइ ति।” पृ. १८९।

वर्धमानस्वामिचरितमें सूचित गोसाल, विसाल, विसाहिल, पारासर (पृ. ३०४) आदिके मंत्र, तंत्र, इन्द्रजालमें नैपुण्यसे, विद्यूकातापस (पृ. २८१) एवं गोसालकके (पृ. ३०६-७) तेजोलेखके प्रसंगसे तथा अस्थिकनागराजप्रस्ताव (पृ. २७५) में आनेवाले हड्डियोंके मन्दिरके उल्लेखसे ऐसा ज्ञात होता है कि आजसे ढाई हजार वर्ष पहले वर्धमानस्वामीके समयमें भारतके विविध परिव्राजकोंमें तांत्रिक विद्याका ठीक ठीक प्रसार होगा। उस समय हरी या सूखी शैवालके अतिरिक्त किसी भी पदार्थका आहार न करनेवाले सैकड़ों तपस्वी विद्यमान थे (पृ. ३२३)।

सिंहलद्वीप(श्री लंका)में राज्यधर्म बौद्ध था इसका उल्लेख भी पृ. १५४में मिलता है।

इतिहासप्रसिद्ध नालंदाके लिए ग्रन्थकारने यहाँ ‘णागलंद’ शब्दका प्रयोग किया है। इसके आधार पर नालंदाकी व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई जा सकती है—णागलंद ∠ णायलंद ∠ णाअलंद ∠ णालंद ∠ णालंदा। पाठान्तरमें ‘णागल्लिंद’ शब्द भी मिलता है। यह णागलंद राजगृहकी एक बहिर्भूमि थी ऐसा भी इसमें कहा गया है। वह पाठ इस प्रकार है—

‘तथ णागलंदणामाणं पुरवाड्डिरियाणं एक्कंते पेळ्ळिऊण अवायपरिवज्जियं वसहिं संठिओ सच्चराइयं पडिमं।’ पृ. २८०
पृ. १६६ में चिलिस और डोइ नामकी जातियोंका उल्लेख आता है।

काशीदेशमें खाद्य सामग्रीकी विपुलताका निर्देश इस प्रकार आता है—‘अथि इहेव जंजुदीवे दीवे भारहे वासे कासी णाम जणवओ पउरजणधणसमाउलो पसुइयगामिणयजणजणियहलवोलो अज्जत्तसंपज्जंतसासच्छेत्तरमणिज्जो। अवि य—

सइ जत्थ व तत्थ व जह व तह व संपडइ भोगमणमणं। दारिदधरेसु वि पंथियाण दहि-सालि-कूरेण ॥ (पृ. ८६)

१ प्रस्तुत चउपनमहापुरिसचरियके अन्तर्गत जो विबुधानन्द नामक नाटक आता है उसका अलगसे सम्पादन करके प्रो. फुल्लोत्तमादास जैन ने १९५५ ई. में दरियाना बुक डिपो, रोहतकसे प्रकाशित किया है। उसमें भी ग्रन्थकारके विषयमें पुरातत्त्वाचार्य मुनिश्री जिनविजयजीसम्पादित जीतकल्पसूत्रकी प्रस्तावनासे विशेष जानकारी नहीं मिलती।

अर्थात् यहाँ जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें प्रचुर जन एवं धनसे युक्त, प्रसुदित ग्रामजनोकी ऊँची आवाजवाला तथा जिसके खेतोंमें बिना प्रयत्नके ही धान्यकी निष्पत्ति होती है ऐसा काशी नामका देश आया हुआ है। उस देशमें सर्वत्र और सब समय दखिनेके घरमेंसे भी मुसाफिरोको दही-चावलका श्रेष्ठ भोजन निरन्तर मिलता है।

इसके अतिरिक्त कृषिप्रधान भूमिके अर्थमें घटित हो सके ऐसा काशीदेशका दूसरा नाम कासभूमी (पृ. २१२) भी यहाँ उपलब्ध होता है।

इसमें भिन्न भिन्न विषयोंके प्राचीन शास्त्र तथा उनके प्रणेताओंके जो नाम मिलते हैं वे इस प्रकार हैं—

भरतका नाट्यशास्त्र, समुद्रका पुरुषलक्षणशास्त्र, चित्रशकका संगीतशास्त्र, नग्नका चित्रकलाशास्त्र, धन्वन्तरिका आयुर्वेदशास्त्र, शालिभद्रका अश्वशास्त्र, विहाणका द्यूतशास्त्र, बुधुहका हस्तिशास्त्र, अंगिरसका युद्धशास्त्र, शबरका इन्द्रजालशास्त्र, कात्यायनका स्त्रीलक्षणशास्त्र, सेनापतिका शकुनशास्त्र, गजेन्द्रका स्वप्नलक्षणशास्त्र, नलका पाकशास्त्र और त्रिपाथरका पत्र-लक्षणशास्त्र (पृ. ३८)।

प्रस्तुत ग्रन्थकारके पूर्व एवं अर्वाकालीन अनेक विद्वानोंने पादलिखितसूचित तरंगवतीकथाको एक सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति कहा है। हमारे ग्रन्थकारने भी तरंगवती एवं आदि शब्दसे उस कथाकी अन्यान्य कृतियोंका स्मरण नीचेकी गाथामें किया है—

सा णत्थि कला तं णत्थि लक्खणं जं ण दीसइ फुड्ढं । पालित्तयाइविरइयतरंगमइयाइसु कहासु ॥ (पृ. ३८)

अर्थात् ऐसी कोई कला या लक्षण नहीं है जिसका अर्थ पादलिखित आदि विद्वानोंद्वारा रचित तरंगवती आदि कथाओंमें स्फुट न हुआ हो। मतलब कि तरंगवती आदि कथाएँ कलाशास्त्र एवं लक्षणशास्त्रसे सर्वांग संपूर्ण थीं।

पृ. १०६ में मणि आदिके जलसे सर्व प्रकारके विषोंके मारणका उल्लेख आता है। कुक्कुडसर्प (कुर्कुटसर्प) एक ऐसा सर्प है जो उड़ता हो। ऐसे सर्पका उल्लेख २५० वें पृष्ठ पर आता है। उसमें कही गई एक योजनाकी लम्बाईको अतिशयोक्ति मानें, तो भी इतना तो कहा जा सकता है कि इस प्रकारके प्राणिविज्ञानकी जानकारी अथवा तो कल्पना प्राचीनकालमें थी। बन्दरमें भी बुद्धिशक्ति और औषधोंके गुण-दोषका ज्ञान होता है यह बात पृ. ६० पर आती है। इसे भी प्राणिविज्ञानकी जानकारी कह सकते हैं।

ऐसी भी धूप बनती थी जिससेकि सूँघनेवाले मनुष्यकी मृत्यु हो जाय (पृ. ३०)।

वर्ण-परावर्तन एवं चैतन्याच्छादन (अचेतनकी भाँति निश्चेष्ट हो जाना) के लिए विविध प्रकारकी गुटिकाओंका उपयोग होता था। यह बात पृ. १५४ तथा २२७-२८में आती है। जैन आगमों के भाष्यों तथा व्याख्या-ग्रन्थोंमें भी स्वरभेद एवं वर्णभेदकारक गुटिकाओंका उल्लेख प्रचुरमात्रामें मिलता है।

सम्यक् व्यक्तिके स्वभाविक रूपसे समुन्नत मानव-सन्ध्याके दर्शन होने चाहिए। इस वस्तुका प्रतिपादन धन सार्व-बाहके एक प्रसंग पृ. (११) में उपलब्ध होता है वह प्रसंग इस प्रकार है—

धन सार्वबाहके एक प्रधान कर्मचारीसे एक वणिक् ईर्ष्यावश पूछता है कि तुम्हारे सार्वबाहके पास कितना धन है? उसमें कैसे-कैसे गुण हैं? वह क्या दे सकता है? तब माणिमद्र अपने सेठका परिचय देते हुए कहता है कि हमारे स्वामिमें एक ही वस्तु है और वह है विवेकभाव और जो एक वस्तु नहीं है वह है अनाचार। अथवा दो वस्तुएँ हैं; परोपकारिता तथा धर्मकी अभिलाषा; जो दो वस्तुएँ नहीं हैं; गर्व एवं कुसंसर्ग। अथवा तीन वस्तुएँ उनमें हैं और तीन नहीं हैं। उनमें कुल, शील एवं रूप हैं, जबकि दूसरेको नीचा दिखाना, उद्धतता और परदारगामित्व नहीं हैं। अथवा उनमें धर्म, अर्थ, काम

और मोक्ष ये चार वस्तुएँ हैं, जबकि फलकी अभिलाषा, वड़पनकी भावना, विषयांधता एवं दुःखीको दुःखी करना ये चार बातें नहीं हैं। अथवा उनमें पाँच बातें हैं और पाँच बातें नहीं हैं। ज्ञान, विज्ञान, विनय, कृतज्ञता और आश्रितोंका पोषण ये पाँच बातें हैं, जबकि दुराग्रह, असंयम, दीनता, अनुचित व्यय और कर्कश भाषा ये पाँच बातें नहीं हैं।

बड़े-बड़े व्यापारी जब व्यापारके लिए प्रवास करते तब ऐसी घोषणा करवाते कि जिसको आना हो वह अमुक दिन और अमुक स्थान पर तैयार होकर आ जाय। ऐसा प्रवासी जनसमूह सार्थ और उसका मुख्य पुरुष सार्थवाह कहलाता था। ऐसे सार्थोंमें त्यागी एवं धर्मयात्रा करनेवाले भी जाते थे, छोटे व्यापारी भी जाते थे और उन्हें व्यापारके लिये सहायताकी आवश्यकता होती तो सार्थवाह वैसी सहायता देता भी था। इस प्रकारके सार्थका वर्णन इसके १० वें पृष्ठ पर आता है।

इसके ७ वें पृष्ठ पर एक सेठने अपने पुत्रको जो शिक्षा दी है वह अत्यन्त प्रेरक है। वह शिक्षा देते हुए कहता है कि—हे पुत्र, सर्वकलाओंमें कुशल, विनीत तथा सादी वेशभूषावाले तुझको कुछ कहने जैसा नहीं है तथापि अबसर आने पर गुरु जनको सनायता बतलानी चाहिए—इस उक्तिके आधार पर कहता हूँ कि हे पुत्र, हम कलासे जीनेवाले और अच्छे वेश एवं आचारवाले वणिक् हैं। हमारी युवावस्था भी वृद्ध-स्वभाव जैसी होनी चाहिए, सम्पत्ति उड़ट वेशवाली नहीं होनी चाहिए, अन्य लोग जान न सकें ऐसा हमारा रतिसम्भोग होना चाहिए तथा हमारे दानकी खबर बहुत लोगोंको नहीं होनी चाहिए।

इस उद्धरणसे प्राचीन समयमें सम्पन्नवर्गकी जीवनकला कैसी होती थी वह ज्ञात होता है। सम्पन्न वर्गके साथ असम्पन्न वर्ग अवैमनस्य, सहयोग एवं पारस्परिक स्नेहसंबंधसे रहे इसके लिये सुखी वर्गकी जीवनपद्धतिके ऊपर यह बात ठीक-ठीक प्रकाश डालती है।

दसवें पृष्ठकी २८ वीं गाथामें कहा है कि स्वामि, नौकर तथा सामान्य जनताके घर एक जैसे थे। यह बात सर्वोदय अथवा समन्वाद का आदर्श सूचित करती है।

आजसे लगभग द्वाद्विंशति वर्ष पहले भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीरके समयमें अपहृत स्त्रियोंका विक्रय होता था और उसमें बेचनेवालेको कोई भी राजकीय अथवा व्यावहारिक नियम बाधक नहीं होता था। मानवदेहके अपहरण एवं विक्रयका एक उदाहरण यहाँ (पृ. २८९) वसुमती-चन्दनबालके प्रसंग द्वारा प्रस्तुत किया गया है। युद्धमें पराजित राजाकी नगरीको विजेताकी आज्ञासे कोई भी छूट सकता था, और इसीलिए रक्षणार्थ भागती धारिणी रानी तथा वसुमती राजकुमारीको एक कुलपुत्रक जबरदस्ती पकड़कर ले जाता है। शोकसे रानीकी तो मृत्यु हो जाती है, किन्तु वसुमतीको कोशांबीमें लाकर वह बेच डालता है। संस्कृतिकी दृष्टिसे यह एक निन्दनीय बात है।

पृ. ४७ में उत्तम, मध्यम एवं अधम इस प्रकार तीन तरहके युद्ध बतलाये हैं। दो प्रतिस्पर्द्धी राजा सैन्यका संहार रोकनेके लिए परस्पर दृष्टियुद्ध अथवा मलयुद्ध करते थे। इन दो प्रकारोंमेंसे प्रथम उत्तम और द्वितीय मध्यम युद्ध कहलाता था। रणभूमिमें दो प्रतिस्पर्द्धी राजाओंके सैन्य विविध आयुधोंसे जो युद्ध करते वह अधम कोटिका समझा जाता था। संस्कृतिकी दृष्टिसे यह अत्युत्तम प्रथा है।

आज लोकव्यवहारमें भी प्रथम कन्याको लक्ष्मीरूप मानकर अपनाया जाता है। इस प्रथाका निर्देश इसमें भी है। इसमें कहा है कि—‘पद्मा य फथणा, ता ण जुज्झ वयणमण्णहाकाउं राइणो’ (पृ. २३) अर्थात् (कन्याके विषयमें) पहली प्रार्थना है, अतः राजाका (कन्यादान देनेका) वचन अन्यथा करना उचित नहीं है।

हाथमें पानी लेकर कन्याकी सगाई करनेकी प्रथा प्राचीन समयमें व्यापक अथवा प्रदेशान्तरमें प्रचलित होगी। यह बात ‘जओ अहं अम्मापितीहिं तस्स पुब्बं उदयदाणेण दिण्णा’ (पृ. १४१) से जानी जाती है।

ब्रह्मदत्तके विवाहके लिए कन्याको वरपक्षके नगरमें लाया गया है। (पृ. २२०) इस परसे सूचित होता है कि कहीं-कहीं कन्याको वर पक्षके गाँवमें लाकर उसका विवाह करनेकी प्रथा रही होगी। वस्तुतः यह प्रथा अब भी कई जातियोंमें प्रचलित है।

योग्य पतिकी प्राप्तिके लिए कामदेवका पूजन (पृ. ११०) तथा यक्षकी आराधना (पृ. २३२) करनेकी प्रणालिका भी ऐसा यहाँ आये हुए वर्णनोंसे ज्ञात होता है।

पृ. ३१९ में नगरके द्वारपाल देवताकी यात्राके त्यौहारका उल्लेख आता है।

भारतके प्राचीन कथासाहित्यमें कई कथानायक अनेक स्त्रियोंके साथ विवाह करते दिखाये गये हैं। इसी प्रकार यहाँ भी कई कथाओंमें देखा जाता है। ये कथाएँ उस कालमें लिखी गई थीं जब बहु-पत्नीत्व सामाजिक गौरव एवं पुण्यका सुफल माना जाता था। आज इस विचारधारामें परिवर्तन हो गया है।

‘अणया य वरभणुणो दिवसो ति पयप्पियं भोजं, भुंजंति बंभणादिणो’ (पृ. २३७) तथा ‘तुमं बंभणो णिमंतिओ महयादिवसेसु पुण्णमदेण सेट्ठिणा (पृ. ११३) — इन अवतरणोंसे श्राद्धके दिन ब्राह्मणभोजकी प्रथाकी व्यापकता जानी जा सकती है।

‘तथ य हट्ठमज्झदेसम्मि चचरे कहणं कहाणयं कहंतेणं पढियं गाहाजुयलं’ (पृ. ११३) — इस उद्धरणसे चौक-चौराहों पर रामायण आदिकी कथा कहनेकी जो प्रथा प्राचीन हजारों वर्षों से चली आ रही थी वह ग्रन्थकारके समयमें भी विद्यमान थी और आज भी है।

इस ग्रन्थमें यद्यपि खास पदार्थोंके अनेक नाम उपलब्ध नहीं होते, फिर भी कूर, दाली, सालणय, पक्कण और तिम्मण इतने नाम तो मिलते हैं (पृ. ३२५)।

पृ. २२८, गाथा १२८-३१ में कापालिकका वर्णन आता है। कापालिक साधु मानव-मुण्डोंकी माला धारण करते थे, भिन्न-भिन्न प्रकारके चीथड़ोंसे उनकी छाती ढँकी रहती थी जिससे वे भयंकर मालूम होते थे, मस्तक पर विविध पक्षियोंके फँस रखते थे, हाथसे वे डमरुबादन करते थे और मदिरापानसे उनकी आँखें नशीली लगती थीं। कापालिकोंका ऐसा भीमरूप प्राचीन कथासाहित्यमें प्रायः उपलब्ध होता है।

आमलखेड नामक बालक्रीडाका तथा खेलमें विजित बालकको पराजित बालक अपनी पीठ पर लेकर घूमे इस प्रकारके खेलका निर्देश पृ. २७१-२ पर आता है।

सम्पन्न युवक लाखों रुपयोंकी होड़ लगाकर मुर्गोंको लड़ाते थे—इसका उल्लेख पृ. २२९ के कथाप्रसंग परसे जाना जा सकता है।

पुष्पमालाके गुच्छोंमें हंस, मृग, मयूर, सारस, कोकिल आदिकी आकृतियोंका गुम्फन किया जाता था—यह बात पृ. २११ को देखनेसे ज्ञात होती है।

पृ. २० में आये हुए वर्णनसे राजकुमारीकी चित्रकलाकी निपुणता विदित होती है। पृ. ७६ में रानीकी दिनचर्यामें शुक-सारिकाकी सम्मालके अतिरिक्त चित्रकलाका भी उल्लेख है। इसी प्रकार पृ. १५५ में राजकुमारीकी चित्रकला एवं संगीतकी उपासनाका निर्देश है। यह बात उस समयके संभ्रान्त कुलकी महिलाओंकी रुचिकी सूचक है। स्त्रियोंकी ६४ कलाओंमें इनकी परिगणना की गई है।

सुत्ययुक्त गीतके हिन्दोल नामक प्रकारका उल्लेख पृ. १५० में आता है। इसके अतिरिक्त चर्चरी गीत (गुजराती चाचर) का निर्देश भी पृ. १९१ में किया गया है।

पुरुष भी सिर पर लम्बे बाल रखते थे (पृ. १२०)।

पृ. २८९ में लीलायट्टी (लीलायष्टि) शब्द आता है। इससे ज्ञात होता है कि घूमने जाते समय शौकके लिए हाथमें छड़ी रखनेका रिवाज काफी प्राचीन है।

‘ढौकते कालः’ के बदले ‘ढौकते लग्नम्’ (पृ. २५) बोलना चाहिए—इस कथनसे इस समय भी प्रचलित उस शाब्दिक वहमका सूचन होता है जिसमें किसी शब्द-प्रयोगको अमांगलिक समझकर उसका व्यवहार नहीं किया जाता और उसके स्थानमें उसी भावका सूचक कोई सांकेतिक शब्द रखा जाता है। जैसे गुजरातीमें ‘दुकान बन्धवो’ (दुकान बन्द करो), ‘साचवणुं साचवो’ (ताला लगादो), ‘दिवाने राणो करो’ (दिया बुझा दो) आदि।

तीर्थकरकी माता जब सगर्भा होती है तब गर्भकी रक्षाके लिए देवियाँ आकर भूतिरक्षा, मंत्रौषधि आदि पलंग पर बाँधती हैं ऐसा पृ. २५८ में लिखा है। इस समय भी चाकू रखना, काला धागा बाँधना, यंत्रयुक्त तानीज पहनना आदि प्रथा प्रचलित है। इस प्रथाकी प्राचीनता इससे सूचित होती है।

सार्थमें ऊँट, भैंसे, गधे आदिका उपयोग होता था (पृ. १६) तथा शीघ्र प्रवासके लिए ऊँटकी सवारी प्रसिद्ध थी (पृ. १३५)।

दाम्पत्यजीवनमें विविध प्रहेलिकाएँ (पहेलियाँ) भी आनन्द-विनोदका साधन बनती थीं। पृ. ११८ तथा १२०। ६४ कलाओंमें इनका भी एक कलाके रूपमें उल्लेख आता है।

शकुन (पृ. १०१, १८७), मंत्रसाधना (पृ. ११९) तथा निमित्त (पृ. ५९, ६६, १८९ एवं २५८) ये तीनों बातें सामान्य लोकन्यवहारमें प्रचलित थीं।

धनरथ राजाकी दो रानियोंमेंसे पटमावती रानीका नाम कहावली (पृ. १४९) में तथा त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरितमें प्रियमती मिलता है। इसी प्रकार त्रिषष्टिमें शान्तिस्वामीके पूर्वभवसे सम्बद्ध कपोत-ओवालकका प्रसंग मेघरथके भवमें आता है, जबकि कहावली तथा इसमें (पृ. १४८-९) मेघरथके पूर्ववर्ती वज्रायुधके भवमें आता है।

पृ. ७५ में तीर्थकरके गर्भावतरणके पहले इन्द्र द्वारा गर्भशोधनकी बात आती है, जो नई मादम होती है।

७८वें पृष्ठ पर अरुम्भ-समारम्भवाले गृहस्थको दिया गया दान निरर्थक एवं बन्धहेतुक है ऐसा कहकर उसका कोई अनर्थ न करे इस दृष्टिसे उसी पृष्ठ पर ‘अनुकम्पा-दानका तीर्थकरोने कहीं भी निषेध नहीं किया’ ऐसा सूचित किया है। इसमें ग्रन्थकारकी दीर्घदर्शिता प्रकट होती है। स्वयं तीर्थकर भी एक वर्ष तक आरम्भयुक्त गृहस्थको दान देते हैं। इसका निषेध तो किया ही नहीं जा सकता। अतः गृहस्थको दान न देनेके सूचक वाक्योंके आधार पर कोई निर्णय कर लेना अनुचित है। अनुकम्पा और मानम-प्रेम ही दानकी आधारशिला है।

बीस स्थानकोंमेंसे किसी एक अथवा एकाधिककी आसेवनासे तीर्थकर नामकर्मका बन्ध होता है ऐसा सामान्यतः समझा जाता है। यहाँ पर भी उसका निर्देश है, फिर भी एक स्थान पर (पृ. २५६) सोलह स्थानकोंमेंसे अन्यतरकी आसेवनासे तीर्थकर नामकर्मका बन्ध होता है ऐसा भी लिखा है।

भगीरथने नागबलि एवं नागपूजाका प्रारम्भ किया तथा मृत व्यक्तिकी अस्थियोंके विसर्जनकी प्रथा चलाई पृ. ७१।

ऋणस्वीकार

प्रस्तुत ग्रन्थका समर्पण मैंने माननीय राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादजीको किया है। इसके लिये उन्होंने कृपापूर्वक जो अनुमति दी है एतदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तुत संपादनमें प्रयुक्त दूसरी सूसंज्ञक प्रति स्व. सूरिसम्राट् विजयनेमिसूरीचरजीके भंडारकी है। जो इनके शिष्य-प्रशिष्य आचार्य श्रीविजयोदयसूरिजी तथा आचार्यश्रीविजयनन्दनसूरिजीकी कृपासे हमारे पास लंबे समय तक रही। वि. सं. १९९८ में पुरातत्वाचार्य मुनिश्री जिनविजयजीके साथ जेसलमेरमें रहकर प्रस्तुतग्रंथका सर्वप्रथम परिचय प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। जे संज्ञक प्रतिकी पाण्डुलिपि उन्होंने पू. पा. मुनिश्रीपुण्यविजयजीको दी थी, जो मुझे मिली। एतदर्थ मैं उक्त आचार्योंके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

पूज्यपाद आगमप्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजीके विषयमें तो मैं क्या लिखूँ ? इस ग्रन्थके सम्पादनमें उद्धृत शंका-समाधानमें तथा ग्रूफ आदिके देखनेमें उनकी जो अमूल्य सहायता मुझे मिली है उसके लिए मैं किन शब्दोंमें उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करूँ ! वचनसे लेकर आज दिन तक मुझ पर उनके अनेक ऋणोंका कोमल-मधुर भार सदैव लदता रहा है। हृदयमें एकमात्र यही आकांक्षा बनी रहती है कि ज्ञानयोगी इन गुरुवरण्यका ऋण-भार सदा वृद्धिगत होता रहे ! इस भारसे मैं एक प्रकारके मानसिक हल्केपन और प्रसन्नताका अनुभव करता रहा हूँ।

इस प्रस्तावनाको सुन्यवस्थित करनेमें भारतीय दर्शनशास्त्रोंके गहरे अभ्यासी पण्डित प्रवर श्रीदलमुखभाई मालवणियाने तत्तत्स्थानोंमें परामर्श करके मुझे मार्गदर्शन कराया एवं प्रस्तावनाके आखिरी ग्रूफ देखनेमें जो कष्ट उठाया है इसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। इस प्रस्तावनाका हिन्दी भाषान्तर (इस पेरिग्राफके सिवाय) जैन शास्त्राचार्य प्राध्यापक श्रीश्रान्तिलाल भाईने किया है एतदर्थ मैं उनका भी ऋणी हूँ।

अन्तमें इस ग्रन्थके प्रकाशक प्राकृत टेक्स्ट सोसायटीके प्रति मैं आभार प्रदर्शित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। भारतीय संस्कृति एवं मनीषाके अंगभूत प्राकृत जैन ग्रन्थोंके प्रकाशनका भगीरथ कार्य इस संस्थाने अपने ऊपर लिया है। हमारे राष्ट्रपति पूज्य राजेन्द्रप्रसादजीकी सत्प्रेरणासे यह संस्था अपने अभीप्सित कार्यमें अवश्य सफल होगी ऐसी आशा रखता हूँ।

ता. २६ जनवरी १९६१

प्राकृत ग्रन्थपरिषद्

जैनउपाध्व, लुणसावाडा

अहमदाबाद

विद्वज्जनविनेय —

पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजक

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’स्य विषयानुक्रमः



विषयः	पत्राङ्कः	विषयः	पत्राङ्कः
कथापीठम् ।	१-५	ऋषभस्वामिनो वज्रनाभचक्रि-सर्वार्थसिद्ध-	
संगलम् ।	१-२	विमानदेवभवौ नवम-दशमौ ।	३२-३४
सज्जन-दुर्जनविवेकः ।	२-३	तीर्थकरनामकर्मबन्धनिमित्तभूतानि	
पह्विविधाः पुरुषाः ।	३-४	विंशतिस्थानकानि ।	३३
अभिधेयम् ।	४	ऋषभस्वामिनो जन्म ।	३४
अलोक-लोकवर्णनम् ।	५	” जन्मोत्सवः ।	३४-३७
कालवर्णनम् ।	५	इक्ष्वाकुवंशस्थापना ।	३७
		ऋषभस्वामिनो विवाहो राज्याभिषेकश्च ।	३७
[१] १-२ ऋषभस्वामि-भरतचक्रवर्ति-		विनीतानगरीस्थापना, भरत-बाहुबलि-ब्राह्मी-	
चरितम् ।	६-५०	सुन्दरीप्रभृतीनां जन्म च ।	३८
सप्त कुलकराः ।	६-१०	लिपि-कला-लक्षणशास्त्रादीनां प्रादुर्भावः, कालान्तर-	
वणिजां जीवनकला ।	७	भूततत्त्वज्ञाननिर्मातृनामकथनं च ।	३८
अपानुभावकल्पवृक्षवर्णनम् ।	९-१०	अष्टादश लिपयः, गणितसंख्याश्च ।	३८-३९
त्रिविधा दण्डनीतयः ।	१०	द्वि-त्रि-चतुः-विंशतिप्रकारा वर्णाः ।	३९
ऋषभस्वामिप्रभृतीनां पूर्वमवाः ।	१०-३४	ऋषभस्वामिनो दीक्षा, पञ्चमुष्टिलोचश्च ।	४०
ऋषभस्वामिनो धनसार्थवाह-युगलिक-		” पारणम्, बाहुबलिकृतं धर्मचक्रं,	
सौधमदेवात्मकं भवत्रयम् ।	१०-१६	केवलज्ञानोत्पत्तिश्च ।	४१
सार्थगमनोद्घोषणा ।	१०	मरुदेव्याः केवलज्ञानं निर्वाणं च ।	४२
सार्थवाहस्य गुणाः ।	११	गणधरस्थापना, बालीप्रवाजना च ।	४२
श्रमणानां प्रामातिकी चर्या ।	१३	भरतस्य विजययात्रा, नव निषयश्च ।	४३-४४
साधुसमुदायवर्णनम् ।	१४	भरत-बाहुबलिनोर्युद्धम् ।	४६-४७
सम्यक्त्वम् ।	१४-१५	बाहुबलिनो दीक्षा, केवलज्ञानं च ।	४८-४९
सार्थप्रयाणम् ।	१६	मरीचेभांगवतलिङ्गप्रवर्तापनम्,	
ऋषभस्वामिनो महाबलाल्यश्चतुर्थो भवः ।	१६-२८	ऋषभस्वामिनिर्वाणं च ।	४९
विबुधानन्दं नाम नाटकम् ।	१७-२७	भरतस्य केवलज्ञानं निर्वाणं च ।	५०
ऋषभस्वामिनो ललिताङ्गदेवालयः		[२] ३ अजितस्वामिचरितम् ।	५१-५४
पञ्चमो भवः ।	२८-३०	नरकवर्णनम् ।	५१
निर्नामिकाकथानकम् ।	२९-३०	सम्यक्त्वदौर्लभ्यम् ।	५२
ऋषभस्वामिनो वज्रजङ्घ-सौधमदेवभवौ		सम्यक्त्वस्थैर्ये मुग्धमहकथानकम् ।	५३-५४
षष्ठ-सप्तमौ ।	३०	[३] ४ सगरचक्रवर्तिचरितम् ।	५५-७१
” जीवनान्दवैधमवोऽष्टमः ।	३१-३२	चक्रवर्तिनश्चतुर्दश रत्नानि ।	५५

विषयः	पत्राङ्कः
दुःशीलभार्याजनितवैराग्ये वरुणवर्म- कथानकम् (आत्मकथा) ।	५७-६२
सगरपुत्राणां स्वैरविहारः, अष्टापद- परिखाखननम्, नागकुमारैर्दहनं च ।	६२-६४
ब्राह्मणेन युक्तिपूर्वकं सगरस्य पुत्रमरण- कथनम्, तच्छ्लोक-समाश्वासने च ।	६५-७०
भागीरथेन गङ्गायाः समुद्रनयनम्, गङ्गाया भागीरथी-जाह्नवीनामकरणम्, मृतास्थि- जलविसर्जनप्रणालिकाप्रारम्भश्च ।	७१
[४] ५ सम्भवस्वामिचरितम् ।	७२-७४
समवसरणरचना ।	७३
अष्टप्रकारकर्मबन्धकारणानि ।	७३-७४
[५] ६ अभिनन्दनस्वामिचरितम् ।	७५
[६] ७ मुमतिस्वामिचरितम् ।	७६-८२
मुमतिस्वामिनः पूर्वभवः ।	७६-७९
दानादिचतुर्विधधर्मप्ररूपणा, प्रव्रज्यादौष्कर्यं च ।	७७-७९
शुभा-ऽशुभकर्मबन्धोदयप्ररूपणा ।	८०-८१
[७] ८ पद्मप्रभस्वामिचरितम् ।	८३-८५
समवसरणस्थजीवानां वैराभाववर्णनम् ।	८३
चतुर्विधदेवनिकायवर्णनम् ।	८४-८५
[८] ९ मुपार्थस्वामिचरितम् ।	८६-८७
अष्टप्रकारकर्मसंक्षिप्तवर्णना ।	८६
[९] १० चन्द्रप्रभस्वामिचरितम् ।	८८-९०
वसन्तवर्णनम् ।	८८
लोकान्तिकदेवप्रबोधनम् ।	८८-८९
सिद्धिक्षेत्रवर्णनम्, सिद्धस्वरूपं च ।	८९-९०
[१०] ११ पुष्पदन्तस्वामिचरितम् ।	९१
[११] १२ शीतलस्वामिचरितम् ।	९२
[१२] १३ श्रेयांसस्वामिचरितम् ।	९३-९४
ग्रीष्मवर्णनम् ।	९३
जीवा-ऽजीविभेदाः ।	९४

विषयः	पत्राङ्कः
[१३] १४-१५ त्रिपृष्ठवामुदेव-अचलबलदेव- चरितम् ।	९५-१०३
सिंहव्यापादनम् ।	९६
त्रिपृष्ठस्य मरीच्यादि-विशाखनन्धन्ताः पूर्वभवाः ।	९७-१००
अश्वग्रीवेण सह त्रिपृष्ठस्य युद्धम्, अश्वग्रीवपराजयश्च ।	१०१-१०२
[१४] १६ वामुपूज्यस्वामिचरितम् ।	१०४
[१५] १७-१८ द्विपृष्ठवामुदेव-विजय- बलदेवचरितम् ।	१०५-११४
विजयाचार्यकथानकम् (आत्मकथा) ।	१०६-११४
[१६] १९ विमलस्वामिचरितम् ।	११५-१६
मोक्षमार्गप्ररूपणा ।	"
[१७] २०-२१ स्वयम्भुवामुदेव- भद्रबलदेवकथानकम् ।	११७-१२८
मुनिचन्द्रमुनिकथानकम् (आत्मकथा) ।	११७-१२७
मानवमवदुर्लभता ।	११९
[१८] २२ अनन्तजितस्वामिचरितम् ।	१२९-३०
लोकान्तिकप्रतिबोधना ।	१२९
[१९] २३-२४ पुरुषोत्तमवामुदेव-मुप्रभ- बलदेवचरितम् ।	१३१-३२
मधुकैटभाभ्यां पुरुषोत्तमस्य युद्धम् ।	१३२
[२०] २५ धर्मतीर्थकरचरितम् ।	१३३
[२१] २६-२७ पुरुषसिंहवामुदेव- मुदर्शनबलदेवचरितम् ।	१३४-३६
[२२] २८ मधवचक्रवर्तिचरितम् ।	१३७
[२३] २९ सनत्कुमारचक्रवर्तिचरितम् ।	१३८-१४५
विपरीतशिक्षिताश्चकृतं सनत्कुमारापहरणम् ।	१३८
महेन्द्रसिंहस्य सनत्कुमारान्वेषणार्थं परिभ्रमणम् ।	१३८-४०
सनत्कुमारेण सार्धं महेन्द्रसिंहस्य मेलापकः, सनत्कुमारयात्रावृत्तान्तश्च ।	१४०-४२

विषयः	पत्राङ्कः
इन्द्रकृता सनत्कुमाररूपप्रशंसा, अश्रद्धधानदेवागमनम्, रूपशंशात् सनत्कुमारस्य संवेगश्च । १४२-४३	१४२-४३
रोगप्रस्तसनत्कुमारमुनि-सौधर्मेन्द्रप्रसङ्गः । १४४	१४४
[२४] ३०-३१ शान्तिस्वामितीर्थकर- चक्रवर्तिचरितम् । १४६-५१	१४६-५१
शान्तिस्वामिनः पूर्वभवाः । १४६-४९	१४६-४९
[२५] ३२-३३ कुन्धुस्वामितीर्थकर- चक्रवर्तिचरितम् । १५२	१५२
[२६] ३४-३५ अस्वामितीर्थकर- चक्रवर्तिचरितम् । १५३-६३	१५३-६३
वीरभद्रकथानकम् । १५३-६२	१५३-६२
[२७] ३६-३७ पुण्डरीकवासुदेव-आनन्द- बलदेवचरितम् । १६४	१६४
[२८] ३८ सुभूमचक्रवर्तिचरितम् । १६५-६७	१६५-६७
[२९] ३९-४० दत्तवासुदेव-नन्दिमित्र- बलदेवचरितम् । १६८	१६८
[३०] ४१ मल्लिस्वामिचरितम् । १६९-७१	१६९-७१
[३१] ४२ मुनिमुव्रतस्वामिचरितम् । १७२-७३	१७२-७३
अद्यस्य सम्यक्त्वप्राप्तिः, तत्पूर्वभववृत्तान्तश्च । १७३	१७३
[३२] ४३ महापद्मचक्रवर्तिचरितम् । १७४	१७४
[३३] ४४-४५ रामबलदेव-लक्ष्मण- वासुदेवचरितम् । १७५-७६	१७५-७६
[३४] ४६ नमिस्वामिचरितम् । १७७	१७७
[३५] ४७ हरिषेणचक्रवर्तिचरितम् । १७८	१७८
[३६] ४८ जयचक्रवर्तिचरितम् । १७९	१७९
[३७] ४९-५१ अरिष्टनेमि-कृष्णवासुदेव- बलदेवबलदेवचरितम् । १८०-२०९	१८०-२०९
हरिवंशोत्पत्तिः । १८१	१८१
कुरुवंशोत्पत्तिः । १८२	१८२
राजनीतिधत्वारो नयाः । १८५	१८५
युद्धवर्णनम् । १८६-८९	१८६-८९

विषयः	पत्राङ्कः
जयोत्साहो नगरप्रवेशोत्सववर्णनं च । १८९-९०	१८९-९०
वसन्तवर्णनम् । १९०-९२	१९०-९२
अरिष्टनेमेदीक्षा-केवलज्ञानावाप्ती, उज्जयन्तवर्णनं च । १९३-९४	१९३-९४
वसुदेवस्य पुत्रपट्टकवृत्तान्तः । १९५-९८	१९५-९८
हारिकानिर्णयः । १९९-२००	१९९-२००
कृष्णवासुदेवस्य मृत्युः । २०२	२०२
सिद्धार्थदेवकृता बलदेवप्रतिबोधना, बलदेवस्य दीक्षाग्रहणं च । २०३-४	२०३-४
पाण्डवानां प्रव्रज्या, अरिष्टनेमेर्निर्वाणं च । २०५-६	२०५-६
सौन्दर्यमुग्धवनितासमूहव्यापाराः । २०७	२०७
बलदेव-वतच्छिन्दक-हरिणानां स्वर्गमनम् । २०८	२०८
[३८] ५२ ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरितम् । (आत्मकथा) २०९-४४	२०९-४४
ब्रह्मदत्तस्य जातिस्मरणम् । २११	२११
चित्रमुनेर्जातिस्मरणम् । २१२	२१२
ब्रह्मदत्त-चित्रमुन्योः पूर्वभवाः । २१२-१७	२१२-१७
अतुंगहप्रज्वालनम्, ब्रह्मदत्त-वरधन्वोः पलायनम् । २२०	२२०
ब्रह्मदत्तस्य बन्धुमत्या सह विवाहः । २२१	२२१
„ पुष्पवत्या सह गान्धर्वविवाहः । २२४	२२४
„ श्रीकान्त्या सह विवाहः । २२६	२२६
कुर्कुटयुद्धम् । २२९	२२९
ब्रह्मदत्त-रत्नवत्योर्मिलापकः, मगधापुरं प्रति पलायनं च । २३२	२३२
ब्रह्मदत्तस्य रत्नवत्या सह विवाहः । २३७	२३७
„ मगधराजपुत्र्या सह विवाहः । २३९	२३९
ब्रह्मदत्तस्य श्रीमत्या, वरधनोर्नन्द्या च सह विवाहः । २४०	२४०
„ कटकवत्या सह विवाहः । २४१	२४१
„ दीर्घराज्ञा सह युद्धम्, जयः, नगरप्रवेशश्च । २४१-४२	२४१-४२
[३९] ५३ पार्श्वस्वामिचरितम् । २४५-६९	२४५-६९
पार्श्वस्वामि-कठतापसयोर्मरुभूति- कमठादयः पूर्वभवाः । २४५-५६	२४५-५६

विषयः	पत्राङ्कः	विषयः	पत्राङ्कः
चतुर्दशस्वप्नवर्णना, पार्श्वस्वामिजन्म च ।	२५७-५८	गणधरोत्पत्ति-मृगावतीप्रव्रज्याविधान- प्रस्तावः ।	३०३-४
जन्मामिपेक-जन्मोत्सववर्णनम् ।	२५९-६०	उदयनपरिस्थापनप्रस्तावः ।	३०४-५
पार्श्वस्वामिनः प्रभावत्या सह विवाहः ।	२६१	शशि-सूर्यागमनप्रस्तावः ।	३०५-६
” वसन्तक्रीडा, लोकान्तिकदेव- प्रार्थना, सूर्यास्त-चन्द्रोदय- सूर्योदयवर्णनम् ।	२६२-६५	गोशालसम्बोधनप्रस्तावः ।	३०६-७
पार्श्वस्वामिनो दीक्षा ।	२६६	प्रसन्नचन्द्रकेवलज्ञानोत्पत्तिप्रस्तावः ।	३०७-८
मेघमालिकृतोपसर्गः ।	२६७-६८	नन्दिपेण-मेघकुमारसंविधानप्रस्तावः कनकखलोत्पत्तिप्रस्तावश्च ।	३०८-१५
पार्श्वस्वामिनः केवलज्ञानं, निर्वाणं च ।	२६८-६९	श्रेणिककृतराग्यनिन्दाप्रस्तावो वर्दुराङ्गदेवप्रसङ्गश्च ।	३१५-२०
[४०] ५४ वर्धमानस्वामिचरितम् ।	२७०-३३५	अभयकुमारकृतश्रमणस्त्रिसना- निवारणाप्रस्तावः ।	३२०-२२
गर्भापहरणम् ।	२७०	गौतमस्वामिकृताष्टापदारोहणप्रस्तावः पुण्डरीकचपट्टान्तश्च ।	३२२-२७
मेरुचालनम् ।	२७१	दशार्णभद्रनिष्क्रमणप्रस्तावः ।	३२८-३१
आमलक्रीक्रीडा ।	२७१-७२	कुणालाव्याख्यानप्रस्तावः ।	३३१-३२
वर्धमानस्वामिनोऽनेककन्यापरिणयनम् ।	२७२	वर्धमानस्वामिनिर्वाणप्रस्तावः ।	३३३-३४
” दीक्षा ।	२७३	गौतमगणधरनिर्वाणप्रस्तावः ।	३३५-३५
ब्राह्मणवस्त्रदानप्रस्तावः ।	२७३-७४	ग्रन्थकारप्रशस्तिः ।	३३५
बलिबर्दसमर्पकमूर्खगोपालप्रस्तावः ।	२७४-७५		
अस्थिकनागराजोपसर्गप्रस्तावः ।	२७५		
उत्पलप्रस्तावः ।	२७५-७६		
अच्छन्दकप्रस्तावः ।	२७६		
चण्डकौशिकप्रस्तावः ।	२७६-७८		
सुदाहमुज्ज्वेन्द्रप्रस्तावः ।	२७८-७९		
पुण्य-पुन्यसंवादप्रस्तावः ।	२७९-८०		
गोशालानुगमप्रस्तावः ।	२८०-८१		
सङ्गमकामरजनितोपसर्गप्रस्तावः ।	२८१-८९		
वसुमतिसंविधानप्रस्तावः ।	२८९-९२		
चमरोत्पातसंविधानप्रस्तावः ।	२९२-९७		
गोवृत्तान्तपृच्छकगोपालकृतोप- सर्गप्रस्तावः ।	२९७-९९		
केवलज्ञानोत्पत्ति-गणधरप्रव्रजना- विधानप्रस्तावः ।	२९९-३०३		

ॐ

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम् ।	३३७-४७
द्वितीयं ”	३४८-५६
तृतीयं ”	३५७-६०
चतुर्थं ”	३६१
पञ्चमं ”	३६२
षष्ठं ”	”
सप्तमं ”	३६७-७८
अष्टमं ”	३७९-८०
शुद्धिपत्रकम् ।	३८१-८४



महापुरिसगाहाओ

—●—

	पत्राङ्कः	गाथाङ्कः
अब्भुद्धरणसमत्था जयम्मि जायंति ते महासत्ता । जेहिं परिगलियपावाइं तक्खणं होंति भुवणाइं ॥	१३३	१
उप्पज्जइ को वि महाणिहिं व्व परहियपसाहणुज्जुत्तो । णिइलियगरुयविग्घोवसग्गाम्मो महासत्तो ॥	२४५	१
उप्पज्जइ भवपंकम्मि कोइ परहियणिवद्धववसाओ । तप्पंककविम्भुको कमलं पिव णिम्मलच्छाओ ॥	८८	१
उप्पज्जंति पयाणं पुण्णेहिं महीए के वि सप्पुरिसा । कप्पतरुणोक्कुरा इव हियइच्छियदिण्णफलविवरा ॥	७२	१
उप्पज्जंति पयाणं पुण्णेहिं जणम्मि ते महासत्ता । जे णियजसेण भुवणं भरंति णिव्ववियजियलोया ॥	७६	१
कयसमकएण ण हु होइ णिव्वुइं तेयणिज्जियजयाण । वायामेतुत्तविओ वि जेण पंचाणणो दलइ ॥	१६५	१
गम्भाहाणाउ चिय चिधेहिं णिवेइया महासत्ता । जायंति केइ ते जेहिं णिव्वुयं जायइ जयं पि ॥	१५३	१
गुणिणो सुकुलसमुब्भवपरकज्जसमुज्जया महासत्ता । ते के वि जए जायंति जेहिं भुवणं अलंकरियं ॥	१४६	१
जे संसारालंकारकारणं महियलम्मि ते केइ । उप्पज्जंति सरुवेण पुण्णरासि व्व सप्पुरिसा ॥	८६	१
जे होंति महापुरिसा ते ठिइभंगं कुणंति ण कया वि । उवल्लो किं केण वि मग्गुत्तिणो रहो रविणो ? ॥	६३	७२
जे होंति महापुरिसा ते परकज्जुज्जया सया होंति । णियकज्जं पुण तं ताण जं परत्थाण णिव्वहणं ॥	११२	६३
णिज्जियसेसुवमाणा परहियसंपाडणेक्खवसाया । जायंति महापुरिसा पयाण पुण्णेहिं भुवणम्मि ॥	९२	१
ते केइ होंति भुवणोवरम्मि कप्पतरुणो महासत्ता । जेसिं पारोहो वि हु परहियकरणक्खमो धणियं ॥	१८०	१
दूरे पचासत्ती दंसणमवि जस्स दुल्लुहं होइ । संसारुत्तरणसहं णामं पि हु सो जए जियइ ॥	१२९	१
देवायत्ते जम्मम्मि कइ णु गरुयाण फुरइ माहप्पं । ववसायसहाया तं कुणंति ते जं जणब्भहियं ॥	१६९	१
परजणहियत्थकज्जे समुज्जया जणियविविहविग्घा वि । णिव्वाहंति चिय तं पुणो वि णूणं महापुरिसा ॥	२७०	१
परहियकज्जेकरया चिंतामणिकप्पपायवब्भहिया । उप्पज्जंति पयाणं पुण्णेहिं जए महापुरिसा ॥	११५	१
पुण्णेहिं पुण्णरासि व्व केइ कालकमेण जायंति । जाणुप्पत्तीए चिय भरहमिणं जायइ सणाहं ॥	१५२	१
पुव्वज्जियपुण्णविपच्चमाणवसजायगरुयमाहप्पा । ते केइ जए जायंति जेहिं भुवणं महग्गवियं ॥	८३	१
पुव्वज्जियसुकयमहाफलोहसंभारभावियावयवा । ते होंति कप्पतरुणो जेसिं छाया वि णिव्ववइ ॥	१७७	१
भुवणोयरम्मि वियहे भुवणऽब्भुद्धरणजायववसाया । उप्पज्जंति सइं चिय ते जेहिं जयं महग्गवियं ॥	१७२	१
मुत्त व्व पुण्णरासी जयम्मि जायंति ते महासत्ता । जम्मेण जाण जायंति णिव्वुया सयलजियलोया ॥	१०४	१
संसारम्मि असारम्मि केइ ते णवर होंति सप्पुरिसा । जाण परमत्थकज्जुज्जयाण जम्मो सलहणिज्जो ॥	७५	१
सुहकम्मकंदवावियविसट्टमुहकिसलयाण गरुयाण । पुरिसाण संभवो ताण जाण उवमा ण संभवइ ॥	९३	१

—●—

॥ णमो ह्यु णं पढमाणुओगधरणं ॥

सीलंकायरियविरइयं

चउप्पन्नमहापुरिसचरियं

[कहापीढं]

॥ नेमो अरहंताणं ॥

णमह जयमंगलहरे अणाइणिहणे अणंतवरणाणे । जोइसरे सरणणे तित्थयरे णंतमुहकलिण ॥ १ ॥

पणमह णाहिणिमित्तुव्वहंतैपंभं अणणपैडिबुद्धं । कमलालयमजलमउव्वमुसहममिलाणकमलं व ॥ २ ॥

अवि य—

धम्मवरचक्कट्टी पयडियसुर-णरय-मणुयसिबम्मो । मह सामियो चि होही तिहुयणलच्छीए पैडिबुद्धं ॥ ३ ॥

लच्छी कलाण कलिऊण अत्तणो कालमागयमणगं । विक्कुरइ फुरियजयणाहसम्मवे भरह्वासम्मि ॥ ४ ॥

चिरयालपैलियाए वि दयाए जिणसम्मवं मुणेऊण । अप्पा आसासिज्जइ सहसा सह जीवलोणं ॥ ५ ॥

होही अणणसरिसो मम दइओ उव्व रायलच्छी वि । सहमहइ अपत्ते चिय महिलातरलत्तणगुणेण ॥ ६ ॥

कलिऊण कवलियमिणं जयमसमंजसविहाइमोहेण । उइओ किल जिणमूरो चि वियसियं णाणलच्छीए ॥ ७ ॥

णीइ-सिरीहि वि सहस चि वियसियं जाणिऊण जयणाहं । होन्तउवर भरहसंभममणन्तसिवदाणदुल्लियं ॥ ८ ॥

होही तित्थं तित्थाहिबम्मि जायम्मि भरह्वासम्मि । हरिसुसुयहिययाए पवयणलच्छीए पैडिबुद्धं ॥ ९ ॥

इय कयमवम्मि जम्मि उ भरहम्मि समाउलाहिं लच्छीहिं । उससियं ति पयच्छउ मुहाइं सो वो जुयादिजिणो ॥ १० ॥

णमह सइ चद्धमाणं लक्खिज्जइ जस्स सासणं विउलं । विमलं पि दूसमाए ण चेवें मालिणा वि सा तत्थ (?) ॥ ११ ॥

अवि य—

गम्भभरणीसहा तम्मइ व्व मुणिऊण जस्स मुहजणणो(?)णी । गम्भंतरसंकमणं कीरइ तुरियं सुरिन्देणं ॥ १२ ॥

दोणं मज्जे गम्भाण जेण वसिऊण पयडियं एयं । 'णेत्यि किल सा अवत्था कम्मवसा जा ण संपडइ' ॥ १३ ॥

कयतिहुयणगुहेडिबम्मि सहइ जम्माहिसेयसैमयम्मि । जस्स सुरिदासंकाविहाइ चलणग्गदुल्लियं ॥ १४ ॥

दप्पुद्धुरसुरसमणेण जेण बालत्तणे वक्कथवियं । वयणं सुराहिबणो कयजणमणगुरुचमकारं ॥ १५ ॥

गहियणियमस्स जस्स य दव्वाइअभिग्गहे चउवियप्पे । पुणम्मि कुसुमवुट्ठी मुक्का तुट्ठेहिं तियसेहिं ॥ १६ ॥

अणुक्कलेयरगुरुओवसग्गसहणेण जेण संगमओ । 'कम्मरेवैमणुज्जमंतस्स मह सहाउ' चि पडिबणो ॥ १७ ॥

रक्खंतेण महिंदाठ जेण चम्मरं पतासियं लोए । 'पायच्छाया वि समत्तसत्तरक्खक्खमा णिययं' ॥ १८ ॥

वरसिद्धिपुरिपवेसम्मि चंद-भूरेहिं सह विमाणेहिं । णीरायणं वै कीरइ पयाहिणं से समोसरणे ॥ १९ ॥

इय तं गम्भाहाणाइगरुयलोउत्तरउव्वमुयविहाणं । गुणणिं म्मियाहिहाणं पणमह णिच्चं महावीरं ॥ २० ॥

“सेसे वि य बावीसं बावीसपरीसहोहविदवए । पणमह दुत्तरसंसारसौयरुत्तरणसेउव्वहे ॥ २१ ॥

सा जयइ जीए कमलं दाहिणहत्थेण वुब्भइ सयणं । जाणउ जणो ससक्खं कमलस्स मुहस्स य विसेसं ॥ २२ ॥

खणमेत्तं पि ण मुचइ पोत्थयरयणं पि जीए गुणकलियं । 'मुयणाणे अपमाओ कायव्वो' देसणत्थं व ॥ २३ ॥

१ ओं नमः सर्वेशाय ॥ जे । २ 'मंगलहरे जे । ३ 'तणं' सू. 'तवं' जे । ४-५ 'पडिबुद्धं' सू. ६ 'विक्कुरिय' जे । ७ 'पीडियाए' जे । ८ 'मह दत्तिओ जे । ९ 'वत्तिओ जे । १० 'णामलं' सू. ११ 'पडिबुद्धं' सू. १२ 'सियन्ति प' जे । १३ 'विपुल जे । १४ 'चेव मणाणा वि सू. १५ 'णत्थि सा किल अ' सू. १६ 'वडिभम्मि सहति ज' सू. १७ 'समवसि जे । १८ 'तणे वि वित्थरियं सू. १९ 'खवणु' जे । २० 'व्व सू. २१ 'णिज्जिवाग्गिणं सू. २२ 'सेसा जे । २३ 'साग' जे ।

वियसियपंकयवयणा कमलदलच्छी ये कलियकरकमला । सियकमलधवलदेहा वियसियसियपंकयणिसण्णा ॥ २४ ॥
 जिस्सा कैइसयजीहामु सहइ परिसंठियं गुणगवियं । कमलदलोयरदुल्ललियलच्छिसंकाए व जहिच्छं ॥ २५ ॥
 ताव ण पावंति कैई कइत्तणं दिट्ठसत्थसारा वि । सयलजणवंदेणिज्जे ! जा ण पसण्णा सि तं देवि ! ॥ २६ ॥
 सुयदेवयं पणमिमो जीए पसाएण होइ तं कव्वं । जं गुण-दोसवियारे पंचादेसो व्व विउसाण ॥ २७ ॥
 जीए पसाएण सया भुवणभंतरविहत्तमाहण्यो । वियरइ कव्वनिबंधो जसो व्व विउसाऽऽणणुल्लिओ ॥ २८ ॥
 अंगाई जीए अंगाई तह उवेगाई होन्तुवेगाई । सा सव्वसुयाणुगया देवी मह कुणउ सण्णेज्झं ॥ २९ ॥
 अणुवत्तह णिच्चं पयइसज्जणे दुज्जणे य तह चेव । णियपयइमणुसरंताण ताण किं कीरइ विसेसो ? ॥ ३० ॥
 जइ भसइ तो भसिज्जइ थुव्वइ गुणकित्तणेणं य थुणेतो । कुणइ सई विय लोओ खल-सुयणे, ताण को दोसो ? ॥ ३१ ॥
 सुयणस्स होइ सुयणो खलस्स पिसुणत्तणं पि पयइइ । कज्जावेक्खाए जओ खल-सुयणाणं पइट्ठाणं ॥ ३२ ॥
 जो च्चिय एकस्स खलो सो च्चिय अण्णस्स सज्जणो होइ । कह सुयणो च्चि थुणिज्जइ ? णिदिज्जइ कह खलो काउं ? ॥ ३३ ॥
 णियजाइपच्चएणं खलमुणहो भसइ जइ वि अण्णस्स । तह वि णियमुद्धयाए पिसुणं सुयणा ण याणंति ॥ ३४ ॥
 गुणगहणेणं सुयणो दोसो एभिभाविज्जण इयसो वि । जइ दोण्ह नि मुट्ठिकरं कव्वं ता किण्ण पज्जत्तं ? ॥ ३५ ॥
 जैइ वि—

कह कह वि दिज्जइ मणो वेवंतुप्पित्थहित्थहियएहिं । खलवेरियाण पुंरयो रणे य तह कव्वकरणे य ॥ ३६ ॥
 तैहा वि ससत्ती पउंजियव्वा चेव । जओ—
 किं तेणिह जाएण वि तणलहुसरिसेण दिट्ठणट्ठेण । जस्सा ण जायइ लोओ गुण-दोसवियारणक्खणिओ ॥ ३७ ॥
 अहवा किमिमीए बुहजणोवहसणिज्जाए इयरजणवहुमयाए पिसुणत्तणफलाए परवाचारचिताए ? जइ वा अत्तणो
 "हियोवयाराहिलासिणा परचिता कायव्वा । जओ परोवयारपुव्वमेव अत्तणो उवयारं पुव्वायरिया बहुमण्णन्ति । परोवयारो
 य विसिट्ठोवएस-णोणपयाणेणं कुसल्लमइपवत्तणं । जओ णाणपयाणाओ अवरं विसिट्ठयरमुव्वयैरं ण पसंसंति परमत्थचि-
 न्तया तओ जोगा-ऽजोगणिरूवणत्थं परचिता कायव्वा । कहं पुण समाणे पुरिसत्तणे जोगा-ऽजोगविसेसो ? भण्णइ-इहं
 ताव समासेणं छव्विहा पुरिसा हवंति । तं जहा-अहमाहमा ? अहमा २ विमज्झिमा ३ मज्झिमा ४ उत्तिमा ५
 उत्तिमोत्तिम ६ चि ।

तत्थ जे^१ अहमाहम चि ते पणट्ठधम्म-ऽत्थ-कामाइसण्णा ववगयपरलोयज्झवसाया सया सुहज्झवसायरहिया अण्णा-
 यमुहलेसा अमुणियपंचविहविसयरसो मूढा कूरकम्मकारिणो पावा पावायारा फुडियकर-चरण-सिरोरुहा अहमकम्मकारिणो,
 ते य सोयरिया केवट्ठा भिल्ला पुल्लिदा इंगालदाहया कट्ठच्छिदया खैरवाहया लोदयाइणो, एते सव्वे वि पराओ किं पि
 पाविउण मैज्जं पि वा पियंति "मंसं पि वा स्वायंति, अणं वा अकज्जायरणं किं पि कुणंति, सव्वजणपैरिभूया दुहिया
 दुहियकम्मकारिणो बुहजणउव्वेवणिज्जमवत्थंतरमणुहविउण परलोए य णरगाइजायणाठाणाणि पावन्ति चि ? ।

अहमा उण इहलोयमेत्तपैडिक्कदा अत्थ-कामेकदिण्हियया ववगयपरलोयचिन्ता इन्दियमुहाहिलासिणो जूइयर-राय-
 सेवया वंदियण-णड-णट्ठ-कहा(? कहया)इणो । ते^२ हि उवहसंति धम्मियजणं, णिंदंति मोक्खमग्गं, दुगुंछन्ति धम्म-
 सत्थं, विउस्सन्ति देवकहालावं । भणन्ति य—“ केण दिट्ठो परलोओ ? को वा तओ समागओ ? केण वो उवल्लदो
 णरओ ? केणो वा अवगया जीवसेत्ता ? कहं वा जाणिओ पुण-पावसम्भावो ? किंच लोय-जडा-तिदंडधारणोदियं काय-
 किलेसो, वयगैहणं भोगवंचणा, मूणवयाइयं डम्भो, धम्मवएसो मुदजणपयारणं, देव-गुरुपूयादियं धणक्खेयो, अओ मोत्तूण

१ य धरियं जे । २ कहयणजी जे । ३ कती जे । ४ वंदणज्जा जा जे । ५ पसाएसे व्व सू । ६ सरन्ताण ताण कह कीरउ वि
 सू । ७ ण थुवंतो जे । ८ विक्खाए जे । ९ सुयणे च्चि थुणिज्जइ ? निदिज्जइ कह सू । १० जइ कह वि दिज्जइ जे । ११ पुरओ
 जे । १२ तह वि जे । १३ दिओव जे । १४ अत्तणोवयारं जे । १५ नाणपया जे । १६ यार ण य संसंति सू । यारं पसंसंति
 जे । १७ इय सू । १८ जे ते अहमाहमा ते सू । १९ अणाय जे । २० सा महाइ जे । २१ खडवा सू । २२ भज्ज वा सू ।
 २३ मंसं वा सू । २४ परिहया सू । २५ पडियदा सू । २६ ते वि उं सू । २७ धम्मत्थसत्थं जे । २८ परलोओ ? केण वा उव जे ।
 २९ व सू । ३० केण अव जे । ३१ सण्णा ? कह जे । ३२ यात्तिवं जे । ३३ गहणे जे । ३४ कखओ जे ।

धन-कामे ण अण्णो पुरिसत्थो अत्थि । जओ अत्थो हि णाम पुरिसस्स भेहन्तं देवयं । तदा हि-अत्थवन्तो पूएज्जए लोएणं, परिवारिज्जइ वंधुयणेणं, सैलहिज्जइ वंदियणेणं, बहुमणिज्जए सयणवग्गेणं । अवि य—

ते नत्थि जं ण कीरइ धणलवलोहेण जीवलोयम्मि । सूरुो वि हु अत्थमणे रहेणं बुद्धो समुदम्मि ॥ ३८ ॥

सयणु परियणु [? सयणु परियणु] वंधुवग्गे प

भिच्चयणु मुहि सज्जणु वि घरि कलत्तु आणावडिच्छउं । अत्थुम्ह किल धरइ जाव ताव पुण्णेहिं सैमग्गलु ॥ ३९ ॥

गरुएइ णिहिग्गओ वि हु अत्थो धणइत्तयं न संदेहो । हिययणिलुको वि पिओ ण कारणं किं विलासाण ? ॥ ४० ॥
कामो उण अत्थविणिओओ, तेण विणा अत्थो णिरत्थओ चेव । अवि य—

भासो वि वरं चत्तारि जस्स गुणरत्तियाओ जायंति । सिंगारेणं च विणा जो अत्थो होति किं तेण ? ॥ ४१ ॥

किंञ्च—

कामेण विणा धनसंपया वि पुरिसाण जायति अणत्थो । सीलं रक्खंतीए विहवाए जोव्वणभरो व्व ॥ ४२ ॥

अण्णं च मुणीण वि परिच्छइउं दुप्परिअैट्ठो कामो । जओ—

वेरग्गमणुसरंता णिंदंतु विलासिणीओ व्वमुणिणो । किं पुण हियए ताण वि धण-णयणाडंवरं फुरइ ? ॥ ४३ ॥

पिये अणुक्कली घरि सरइ, अण्णु भुंविणि जसवडइउ वज्जइ । एत्थ समप्पइ मोक्खसुहुं, मोक्खे सोक्खु किं कवलेहि खज्जइ । ४४।

पौणं गेयं णट्ठं मयणाहि षणत्थणीओ महिलाओ । एंयाइ संति जत्थ य सो सम्मो, सेसयं रण्णं ” ॥ ४५ ॥

एवमाइ भासिणो पंचेदियवसगया अहमबुद्धित्तणओ अहमा सयं णट्ठा परेसि पि असब्भूओवएसप्पयाणेण विणासे पय-
ट्ठंति । अहमबुद्धित्तणं च परमत्थओ तेसिं दुक्खे चेव जं सुहाहिमाणो, जओ किं मओ ण मण्णेइ वाहगेयं ? किं वा
मीणस्स ण वेड्ढेइ अहिलासाहरेणं गलामिसं ? किं ण तरलेइ विसट्ठकमलामोओ महुयरं ? किं ण जेणेइ हरिसं पयंगस्स
दीवयसिहा ? किं णाऽऽणंदेइ गैणियारी जूहाहिवइ ? । परमत्थचित्तया उण अत्तणो विणासाय तेसिं वाचारमवगच्छंति । जहा
य एए तदा अण्णे वि इंदियवसगया दट्ठव्व चि । एवं च ते अहमबुद्धित्तणओ अहमा बुहजणगरहणिज्जा इह परलोए य बहु-
वेयणासु गतीसु गच्छंति चि २ ।

विमज्झिमा उण धम्म-ऽत्थ-कामे परोप्परासंवाहेण सेवन्ति । ते उण बंभणा रायाणो वणिया कुडुंविया, अण्णे वि इह-
परलोयावायदंसिणो” विहवा दुब्भगा पवसियभज्जा(? ता)इणो य दट्ठव्व । एए सव्वे धम्ममवेक्खन्ति, परलोयविरुद्धं
परिहरन्ति, ‘जम्मंतरे वि सुहव-रूवस्सि-बहुधण-बहुपुत्ता भविस्सामो’ चि तवचरणं कुणंति, दाणादियं सेवन्ति । जे वि
मोक्खमग्गाहिलासिणो कुप्पावयणिया णाणऽज्झयण-तैवचरणरया परममिच्छादिट्ठिणो ते वि परमत्थादंसित्तणओ विमज्झिमा ।
जे वि सम्मदिट्ठिणो सणियाणा चक्कवट्ठिरूव-विहवाभिलासिणो चित्त-विचित्ताइणो ते वि तच्चिहा चेव चि ३ ।

मज्झिमा उण धम्म-ऽत्थ-काम-मोक्खेसु पसत्ता, सम्मदिट्ठिणो मोक्खेक्कज्जगहियपरमत्था हीणसत्तयाए कालाणु-
भावेणं पुत्त-कलत्तणेहणियलिया लोहबंधणवद्धा य जाणन्ता वि परमत्थं, पेच्छन्ता वि सम्मदंसण-णाण-चरणरूवं मोक्ख-
मग्गं, अवगच्छन्ता वि राग-दोसपरिणामं, बुज्झन्ता वि संसारासारत्तणं, मुणन्ता वि कडुयविवागत्तणं विसयाणं, अवलोयन्ता
वि उम्मन्नापवित्तत्तणं इंदियाणं, तदा वि महुययाए विसयाणं, अप्पडिहयत्तणओ वम्महस्स, चवल्याए इंदियाणं, अंब्भत्थ-
याए संसारसहावस्स, अणासन्नयाए मोक्खमग्गास्स, अचिन्तसत्तित्तणओ कम्मपरिणईए, ण सककंति महापुरिससेवियं पव्व-
ज्जमज्झवसिउं । तओ हीणसत्तयाए धैरवासं समावसंति । ते उण सावया सम्मदिट्ठिणो जहासत्तिगहियच्चया य, अण्णे य
पयइभइया मोक्खाहिलासिणो पयतीए सकरुणा खंति-मइव-ऽज्जवोववेया दाणसीला वयसीला य । ते इहलोए बहुजणप-

१ महंतं जे । २ पुइज्जइ जे । ३ सैलहिज्जए जे । ४ सज्जणं सू । ५ ण पुण्णे सं सू । ६ अत्थुम्ह सू । ७ समग्गलो सू ।
गलितपाठमिदं वस्तुच्छन्दः प्रतिभाति । ८ धणत्तित्तयं जे । ९ विणिओवओ जे । १० णिरत्थो चेव सू । ११ ‘किञ्च’ इति जेउस्तके न स्ति ।
१२ व जे । १३ रियाओ जे । १४ प्रिय जे । १५ भवणे सू । १६ पाणं णट्ठं गेयं मं जे । १७ एमाइ सू । १८ परेसिणं जं सू ।
१९ चेव सू । २० वड्ढेति जे । २१ जणइ जे । २२ करेणुगमिता गजमहणार्थं कृता गता । २३ ‘णो अहवा डु’ जे । २४ धम्मसावेक्खे
सि परं सू । २५ तवचरणं सू । २६ ‘ममेच्छा’ जे । २७ ‘मा य । जे जे । २८ अवभत्तयाए जे । २९ मोक्खस्स, जे ।
३० धरवासमावसन्ति सू ।

संसणिज्जा होइऊण परलोए सुदेवत्तं सुमाणुसत्तं वा पावेन्ति चि ४ ।

उत्तमा उण मोक्खेकदिण्हियया मोक्खेकदिण्हियपरमत्था ने परं परमत्थं मेणंति चि । ते हि उम्मूलिऊण महामोह-
बल्लि, भंजिऊण विसयपटारं, विहाडेऊण अण्णाणतिमिरं, गलत्थेऊण राग-दोसमल्ले, छिदिऊण जेहपासं, विज्झविय कोहगि-
णो, संचुण्णिय माणपव्वयं, णिव्वविय मायाकुंफुयं, लंघिय लोहणारोटा, अजिया कामकुंजरेणं, अणोलुग्गा इंदियतुरंगमेहिं,
अविइविया भोगतण्हाए, अजिया परीसहेहिं, अभग्गा उवसग्गेहिं, दूरे महिलाविलासाणं, अणग्भासे सावज्जाणुट्टाणाणं,
देसंतरे असंजमस्स, अणन्तिए कुहम्मस्स, विइयपरमत्था तोलिऊण अप्पाणयं, उज्झिऊण संसारमुहं, अण्णिऊण पुत्त-कल-
चाइयं, चंपिऊण कम्मपरिणामं, आसण्णमोक्खभावत्तणओ महोपुंरिससेवियं सब्बदुक्खणिज्जरणहेउभूयं, इयरजणमणोरहाणं
पि दूत्तचिणिं पव्वज्जमब्भुत्तगय चि । ते उण साहुणो णाणाविहल्लसिंण्णा ओहि-मणपज्जव-केवल्लोणिपज्जवसाणा
दट्ठ्ठ्ठां ते ये य उरु-उमुर्दिदंकरहिपिड्डहाणं वंदणिज्जा होइऊण मोक्खं वा गच्छंति, अणुत्तरविमाणेसु वा; सुर्दिदा वा इंद-
सामाणिया वा वेमाणिया वा भवन्ति चि ५ ।

“उत्तिमुत्तिमा उण तित्थयरणामकम्मविवागवत्तिणो तित्थयरा उप्पणवरकेवल्लणाणा णिट्ठियट्ठा परकज्जेकदिन्नहियया
उत्तमगुणा(ण)-रूव-सत्तिसंण्णा चउतीसाइसयसंपयोववेया अणुदिणं परावबोहणत्थं महिं विहरिऊण आउक्खए सिवमयल्लम-
रुयमणन्तमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइणामत्थेयं ठाणमवस्सं पाउणंति चि ६ ।

तओ जोगस्सेव हियोवएसपयाणेणं कुसलमइपवत्तणं कायव्वं, ण य अजोगस्स, ण य अइक्कंतोवएसवत्थस्स चि ।
कुसलमइपवत्तणं चै चरियाइअणुट्टाणदंसणेण सुहं चेव कीरइ । परमत्थाहिगारे य कप्पियकहा ण सज्जणमणाणि रंजेइ, ण
हि कोई वालिसो कप्पियमायणिऊण सब्भूयं छेइइ । अवि य—

अइ वि हु दोण्ह वि लोए कुसलमइपवत्तणं फलं सरिसं । तह वि मह कप्पियाओ विहोइ चरियं विसिद्धयरं ॥ ४६ ॥
किंच—

‘सव्वं पि कुसलकप्पिय’मेवंवाईण कप्पियकहाए । दिण्णो^१ हत्थज्वलंबो बहस्सतिमयाणुसारीणं ॥ ४७ ॥

एवं च काऊण सब्बहा कप्पियाओ सब्भूयणैणुक्कित्तणत्तणओ य चरियं पहाणयरं । अवि य—

चउपपन्नमहापुरिसाण चरियमब्भुयविहाणगुणकलियं । भवियस्स जणेइ फुडं रोमंचुच्चाइं अंगाइ ॥ ४८ ॥

कस्स ण जायइ कोउहलाउलं हियमब्भुयैणुमहवियं । रयणायरं व दट्ठं सुचरियचरियाणि वा सोउं ? ॥ ४९ ॥

किंच—

धम्मसुइविउल्लमूलववस्स मइनेहसलिलसित्तस्स । चारित्तुंदकंद-क्खमाइसाहप्पसाहस्स ॥ ५० ॥

छट्ठ-उट्ठम-दसम-दुवालासाइतवचरणवहलपत्तस्स । णरवइ-सुर्दिदधणसंपयाइकुसुमोहगहणस्स ॥ ५१ ॥

उत्तमणरचरियमहादुमस्स गुणमोक्खफलसमिद्धस्स । सव्वणच्छाया वि फुडं ण होइ पुण्णेहिं रहियस्स ॥ ५२ ॥

जैहा तेलोक्कचूडामणिणा मुरा-उसुर-णरिंदमउडमणिमसिणपौयवीदेणं उप्पणवरदिच्चणाणेणं सदेव-मणुया-उसुराए
परिसाए समक्खं भरहचक्कवट्ठिपुच्छिणं पढमवरधम्मचक्कवट्ठिणा उत्तमसामिणा कहियं, पुणो य रायगिहे णयरे
गुणसिलए चेइए जंहुणामस्स सुहम्मसामिणा साहियं, पढमाणुओगाओ त आयरियपरंपराए समागयं सम्मत्तलंभाइ-
महग्गवियं सुरवर-णरिद्विचण्णागारुयं तित्थयराइचउपपन्नमहापुरिसाण चरियं, तहा ससत्तीए किंचि लेसुदेसेण कैहिज्जंतं
णिसामेह । अवि य—

महमुहकलसपलोइ उंत्तिमपुरिसाण चरियमुहसलिलं । कण्णंजलीहिं पिज्जउ वियसियवयणाए परिसाए ॥ ५३ ॥

१ ‘त्त पावे’ जे । २ नउयर जे । ३ बहुमणंति जे । ४ पवीरे जे । ५ विज्झविकण जे । ६ संचुण्णऊण जे । ७ णिवत्तिय जे ।
८ ‘पुंफुया’ सू । ९ ‘णारोहा’ जे । १० तंप्पिऊण सू । ११ ‘उरुत्त’ सू । १२ ‘णाणप’ जे । १३ होइऊण सू । १४ हवति सि जे ।
१५ उत्तिमुत्तिमपुरिसा उण जे । १६ अववक्को सू । १७ व दत्तिसिज्जद अणुट्ठा सू । १८ कोवि जे । १९ विहादि जे । २० दिण्णो
हत्थालम्बो जे । २१ ‘गुणकित्तण’ जे । २२ ‘सुदमवियं’ सू । २३ ‘सुरेद’ जे । २४ जह य ते जे । २५ ‘पायपीदेण’ जे । २६ साहि-
जंत जे । २७ उत्तम जे ।

एत्थ य—

सदा पुव्वपसिद्धा अत्था सिद्धंतसायरुच्छलिया । मालागारस्स व होज्ज मज्झ जइ कोइ गोफगुणो ॥ ५४ ॥

तत्थ य सामण्णेणं दुवे विभागो—अलोओ लोओ य । तत्थ य धम्मत्थिकायाइरहिओ आगासमेत्तसत्तो अलोओ । लोओ उण पंचत्थिकायमइओ, तं जहा—धम्मत्थिकाओ अधम्मत्थिकाओ आगासत्थिकाओ जीवत्थिकाओ पुग्गलत्थिकाओ य । सो य तिहो—अहोलोओ उट्ठोओ तिरियलोओ य । सव्वो वि चोइसरैज्जुप्पमाणो । तत्थ अहोलोओ—सत्त पुढवीओ रयणप्पभाइयाओ षणोअहि-चणवाय-तणुवायवलयत्तिणं अहो अहो द्विणं धरियाओ, पासओ वि वलयत्तिणैव संगहियाओ । उट्ठोओ उण—सोहम्मइया उवरोवारिंठिओ वारह देवलोया, पव मेवेअजाणि, पंच महाविमाणानि, तओ ईसिपम्भाराहिहाणा पुढवी, तत्तो उवरि सिद्धिंखेत्तमिति । तिरियलोओ उण—समभूमिभायमेरुमज्झे अट्ठपएसाओ रुयगाओ उवरि नव जोयणसयाणि एसो उड्डं अहो य, अट्ठारसजोयणसयपरिमाणो तिरियलोओ, तिरिच्छओ उण एकिककंतरियदीव-सागराऽसंखेयपरिमाणो ।

तत्थ जंबुदीवो जोयणलक्खं, लवणसमुद्धो दोण्णि, धायइसंडो दीवो चत्तारि, कालोओ अट्ठ, पुक्खरदीवस्स अट्ठे अट्ठ । तत्थ माणुसोत्तरो पव्वओ । तओ परेण माणुससंभवो पयरो य णत्थि । एवं च माणुसोत्तरपव्वयपरिक्खितं अट्ठाइज्जदीवपरिमाणं पणयालीसजोयणलक्खवित्थिणं माणुसखेत्तं ति । तत्थ य पणरस कम्मभूमीओ, तीसं अकम्मभूमीओ, छप्पन्नं अंतरदीवया ।

तत्थ पंचसु भरहेसु, पंचसु य एरवणसु चारसारं कालचक्कं वीससागरोवमकोडाकोडिप्पमाणं । तं जहा—सुसमसुसमा चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ, सुसमा तिण्णि, सुसमदूसमो दोण्णि, दूसमसुसमा बायालीसवाससहस्सणा एगा कोडाकोडी, दूसमा एगवीसं सहस्सा, दूसमदूसमा वि एगवीसं चेव । एवं दस कोडाकोडिप्पमाणा अवसप्पिणी । “असप्पिणी वि दूसमदूसमादिया सुसमसुसमपज्जवसाणा दसकोडाकोडिप्पमाणा चेव । एवं वीससागरोवमकोडाकोडिप्पमाणं कालचक्कमण्णात्थ वित्थरेण दट्ठवं ति । एत्थ सुसमदूसमाहिहाणे तइए अरए पल्लिओवमट्ठभागावसेसे कुलगरा समुप्पणा । जैहाकमं तेसिमुप्पत्ती ।

॥ कहापीठं सैम्मत्तं ॥

१ तत्थ सामं जे । २ गा-लोगो अलोमो य सु । ३ तिक्किहो जे । ४ रज्जपं सु । ५ लोमो सत्त जे । ६ खेत्तं ति जे । ७ एक्कतरिं सु । ८ दो चत्तां जे । ९ तत्थ य मां जे । १० माणुसुत्तरं जे । ११ मा य दोण्णि जे । १२ ओसप्पिणी जे । १३ जहाकमं जे । १४ ‘सम्मत्तं’ इति सु पुस्तके नास्ति ।

[१ रिसहसामि-२ भरहचक्कवट्टिचरियं]

अत्थि अवरविदेहे अवराजिया णाम णयरी । सा य अमरावड् व्व अच्चंतविबुहजणमणाणंदयारिणी अर्णिदा य, मयलंछणमुत्ति व्व कलोवचिया अदोमुब्भवा य, वारवड् व्व वरजण-धणसमिद्धा अक्खारजलोववेया य, लंकापुरि व्व कंचण-मया अविहीसणा य । जत्थ अणंगसमा पुरिसा, इंसमाओ महिलाओ विहेस्सइसमा विउसा, अलंठवियसुंदराणि रुवाणि, अणालियोवयाराओ अभिजाईओ, असिक्खवियणिउणो परियणो, अकिलेससंपावियाओ धणरिद्धीओ, विणिम्मियउब्भडणाणा-विहमणिभिच्चिक्काइं चिच्चयम्माइं, सहावसुदस्तुलियचित्तयम्माओ जुवईओ, विणिज्जियजुवईसत्थो महुमओ, ओहामियम-हुमयसहावविब्वोयसंधुक्किओ मयणो, मयणुत्तेजवियजयाण(?) ति । अवि य—

वरवारमणिसैम्मइतुद्दहारुच्छलन्तमणिनिपरं । मणिनिपरपहारंजियवहुविहचंचइयगयणवहं ॥ १ ॥

गयणवहधूमपडलुच्छलन्तमेहावसंकिहंसउलं । हंसउलरैवाऊरियणंदणवणभवणउज्जाणं ॥ २ ॥

भवणउज्जाणवियम्मियपरिमलआयडिहओरुममरउलं । ममरउलमुहलरुमलालिदीहियावड्दंकारं ॥ ३ ॥

इंकाररुद्धिदिं सिपहललिउब्भडसरसपहियसंचारं । संचारविपुलरमणीणियंवसरुद्धवियडवहं ॥ ४ ॥

इय जं जं पुल्लउज्जइ णयरीए मंदिरं मणभिरामं । करितुरय-तूर-तोरणवहुजणवतणिव्विसेसं तं ॥ ५ ॥

अह एक्को चिच्च दोसो णयरीए तुलियसग्गसोहाए । सग्गेक्कगमणदेउं धम्मं ण कुणंति अं पुरिसा ॥ ६ ॥

सा य णयरी अमरावड् व्व मुरिंदेणं, अलयापुरि व्व कुवेरेणं, रहणेउरचक्कवालपुरवरमिव स्वयंरिंदेणं, लंका-णयरी व्व विहीसणेणं, ईसाणचंदेणं णरवड्णा पालिया लालिया विहसिया य । सो य राया कुम्मुण्णएहिं चर्रेणेहिं भुवासिहरेहिं च, सुपरिणाहाहोएहिं जेवेहिं वाहाजुयलेणं च, मुविभत्तेणं तिणं पिट्ठीवंसेणं च, गंभीराए णाहीए चित्तेणं च, वित्थिण्णेणं वच्छत्थलेणं लोयणजुयलेणं च, तिलेहालंक्रियाए सिरोहराए णिडालवट्टेणं च, पीवरेहिं गंडत्थलेहिं अहर-दलेणं च, सिद्धजोगो व्व सोहमास्स, पुण्णजम्मदिवहो व्व वम्महस्स, सग्गायासफलं च पयावड्णो, किच्चिधंभो व्व रुवस्स । अवि य—

किं संगो व्व अणंगो सकलो व्व कलाणिही मयविमुक्को । धम्मो व्व दोसरहिओ जणमणतरलत्तणविलासो ॥ ७ ॥

तत्थ य णयरीए सव्वजणाणुमओ आयाकलहरं विणयावासो धणओ व्व बहुधणो चंदणदासो णाम सेट्ठी । तस्स पुत्तो सागरचंदो णाम । सो य णेममजाती वि उदासत्तो, सकलकलापारगो वि वणियकलाऽणभिण्णो । अवि य—

एक्क चिच्च वणियकला तस्स कलापारगस्स गुणणिहिणो । जुवईण णियंतीणं हरइ मणं जीए रुवेणं ॥ ८ ॥

अण्णयो य सो राइणो ईसाणचंदस्स दंसणत्थं राउलं पविट्ठो । दिट्ठो य राया मुहासणत्थो । पायवड्णुट्ठिओ य सम्माणो राइणा आसणत्तंबोलाइणा । पुच्छिओ अ वट्ठमाणि राइणा । साहिया च सेट्ठिसुएणं जहा सव्वं देवाणुहावेणं कुसलं ति । एत्थंतरे य राइणो अत्थाणगयस्स पदियं वंदिणा गाहाजुयलं—

अमुत्तय-वाण-पियंगु-वियसियासोय-पंकउन्विडिमो । वियसइ वालवसंतो कुमुमसरुद्धिंवेणसयण्हो ॥ ९ ॥

सम्मोहं तं वियरइ विर्येसियभूयच्छलेण घोरविसं । छैनमंडलाई पविसउ पदिययणो णऽण्णहा रक्खा ॥ १० ॥

तओ राइणा तमायणिऊण सायरचंदमुहं पलोइयं । तेणोवि विण्णचो राया जहा-देव ! संपत्तो अविवेयजणम-णाणंदयारी महुसमओ । भणियं च राइणा-जाणिओ महुसमओ, "किमित्थ पत्तयोलं ? ति पुच्छामि । तओ भणियं सेट्ठि-सुएणं-देव ! विण्णवेमि । एत्थंतरे पुणरवि पदियं वंदिणा—

१ वहस्सइ जे । २ संपाइयाओ जे । ३ संवड्दइ जे । ४ रवापुरियं जे । ५ दिग्गिबहुललिं जे । ६ वाजिया जे । ७ चलणेहिं जे । ८ पुण्णखाणीजम्मं सू । ९ या सो जे । १० होरणं जे । ११ विक्कसितवहुच्छलेण । १२ धणं जे । १३ तेण विण्णसो सू । १४ किमेत्थ जे । १५ यालन्ति सू ।

वियसियचंपयगोरी कुवलयदललोयणाऽलिकुलकेसी । संकेयं पिव दाउं तुह महलच्छी गउज्जाणे ॥ ११ ॥

भणियं च सेट्टिसुएणं—देव ! जं मए विण्णवियव्वं तमणेण चेव वंदिणा विण्णवियं, ता देव ! माहवसिरिसफल्या-
वायेण उज्जाणगमणेण कीरउ पसाओ । ‘एवं भवउ’ ति भणिऊण राइणा सदिओ पडिहारो, भणिओ य—जाणावेहि
एयमत्थं डिडिमेणं नयरीए जहा—राया रइकुलहरं णांम उज्जाणं कीलानिमित्तं पच्चूसे गमिस्सइ, ता पउरजणवओ वि
अत्तत्तणो विहवेणं सव्ववलेणं गच्छउ ति । पडिहारेण य आणासमणंतरमेव ‘जं देवो आणवेइ’ ति भणिऊण सव्वं
संपाडियं । ‘तुमए वि पच्चूसे वयमणुगंतव्व’ ति भणिऊण विसज्जिओ सेट्टिसुओ ।

पच्चूसे राया अंतउरसवेओ विसेमुज्जलनेवत्थपरियणपरियरिओ सत्थावेसवुण्णं पिव लायणं तरुणियणस्स विक्खि-
रंतो णिग्गओ णयरीओ । पत्तो रइकुलहरं उज्जाणं । सायरचंदो वि असोयदत्तवयंसयसमेयो महया रिद्धीए गओ
उज्जाणं, अण्णो वि पउरजणवओ अत्तत्तणो विहवेणं ति । पवत्तो य कीलिउं ।

तओ पवत्तामु णयरचच्चरीमु, वियंभिए हलबोले, आरूढे णिग्गरे कीडारसे एक्काओ आसण्णाओ वणणिगुंजाओ
‘परित्तायह परित्तायह’ ति सणाहो उच्छलिओ महंतो इत्थिजणकोलाहलो । तओ तमायणिऊण धाविओ साहससहाओ
सायरचंदो । दिट्ठा य पुत्तभइस्स धूया पियदंसणा णाम कुमारी वंदियाणं मज्झगया अणिलचलियकयलीपत्तं पिव
वेविरसरीरा । तओ दक्खभावत्तणओ धीरयाए चित्तस्स, संखुदयाए वंदियाणं, मुन्नहत्थपओगेणं एक्कस्स छुरियमवहरि-
ऊण मोयाविया वंदियाणं सेट्ठिधूया । तीए वि तं दट्ठूण चित्तियं—को पुण एसो अकारणवच्छलो महपुण्णरासि व्व
आवईए समुवट्ठिओ ? । तीए य उवयारक्खित्तहिययाए रुवालोयणविम्हउफुल्लोयणजुयलाए कालकमुम्मिल्लजोव्वण-
वियाराए पयडिओ तस्सुवरि अँवत्ताहिलासो । एत्थंतरे पिदुंणा उवलद्ववंदियरवुत्तंतेणं णीया समवणं पियदंसणा,
इयरो वि पियदंसणारूवक्खित्तहियओ पयडियमयणवियारो मित्तेणं असो गदत्तेणं ति ।

जाणिओ एस वुत्तंतो पिउणा सामण्णेणं जणपरंपराओ, विसेसेणं सदासचेटीउ ति । सदिऊण य अणुसासिओ
पुत्तो जहा—“पुत्त ! सव्वकलाकुसलस्स विणीयस्स अणुव्वभइवेसा-ऽऽयारस्स णत्थि ते उवइसणिज्जं तहा वि ‘गुरुयणेणं
तुह सणाहत्तणं पयडियव्वं’ ति काऊण भण्णसि, पुत्त ! अम्हे ताव वणिया कलोवजीविणो साहुवेससमायारा, अम्हाणं च
जोव्वणं पि बुद्धसहावयाए, संपया वि अणुव्वभइवेसग्गहणेणं, रइसम्भोगो वि पराऽणुवल्लवलो, दाणं पि अवहुजणविण्णाय-
मलंकारो ति । किंच सव्वं पि अत्तणोऽणुरुवं कीरमाणं लोयं रंजेइ । अण्णं च जो एस तैव वयंसओ सो अतीवमाग्गावी,
तुह उज्जुयस्स वि वंको, पयतीए वंचणपरायणो, अवि य—

अणं काऊण मणे अण्णं वायाए भासइ अणज्जो । णिव्वडइ फलेणऽण्णं तुज्झ अणज्जस्स मित्तस्स ॥ १२ ॥

सव्वहा, किं बहुणा ? इह-परलोए य अविर्द्धायारेण होयव्वं” । ति वयणावसाणे य चित्तियं सेट्टिसुएणं जहा—ताएण
उवलक्खितो वंदियण-कुमारीवइयरो, फुडऽवखरं च दूसिओ मह मित्तो, तंओ अहमवि तहेव उत्तरं देमि । ति चिन्तिऊण
भणियं—“जं ताओ आणवेइ तं मए अविहं तहेव कीरइ ति । धण्णा हु गुरुवएसभायणं हवंति, किंतु ”देवजोएण तं
किं पि समावडइ जेण समालोयणावसर एव ण होति ति । किं पुण जेण तुम्हे लज्जिया होह तमहं पाणसंसए वि ण
करेमि ति । जो पुण मेत्तदोसो भणिओ ताएण सो महमुवल्लभो च्चिय ण होइ तस्सेवे दोसो गुणो वा । अण्णं च तायस्स
केण वि अणज्जेण अणज्जं णिवेइतं, जओ जाणइ उजेव ताओ णेहस्स कारणाणि । तं जहा—समाणजाइत्तणं एगणयरनिवासो
सहपमुकीलणं दंसणऽवभासो परोप्पराणुरायाक्कण्णं परोवयारकरणं समाणसील-वसणया य । एयाणि” य सव्वाणि तत्थ
संति । कइयवकारणं पुण तहाविहं ण किंचि दीसइ । एवं च काऊण तक्केमि ‘जारिसो सो ताएण संभाविओ तारिसो
ण होइ ति मह मई युत्ता ।

संवंधेइ पयत्ये अओ च्चिय को वि अँन्तरो हेऊ । परिचयजणणं पुण वज्झकारणं तेण को णेहो ? ॥ १३ ॥
ताय ! किं वा मायावित्तणेणैमा(म)म्हाणं करिस्सइ” । ति भणिऊण संठविओ ताओ । सेट्टिणा वि पुत्तऽभिष्णायं

१ जाणावेह जे । २ नामुज्जाण जे । ३ ‘नैवच्छ’ जे । ४ अचंचता जे । ५ पिउणा जे । ६ साहिऊण जे । ७ तुह जे । ८
फले अण्णं जे । ९ तत्तो जे । १० देवजोएण जे । ११ ‘व सो दोसो जे । १२ ‘णि सव्वा’ सू । १३ अंतरे जे । १४ ‘ण करिस्सइ जे ।

मुणिऊण जाइया पियदंसणा । दिण्णा य पुण्णभवेणं । गणियं लग्गं । उवकयं विवाहोवगरणं । सज्जीकया वेइमूमी । कयाइं कोउयाइं । महया रिद्धीए वत्तो विवाहो । जाया य अतिणिब्भरा पीती परोप्परं । एवं च विसयसुहमणुहवताणं वच्चंति दियहा, सरइ कालो ।

अणया य परिहासपुव्वं भणिया पियदंसणा असोयदत्तेणं विविचे-किं कारणमेस ते दइओ धणदत्तमुहाए सह पतिदिणं मन्तेइ ? । पियदंसणाए वि विमुदचित्ताए भणियं-एयं तुह मिच्चो णिच्छणं जाणइ तुमं च वीयहिययभूयो, अम्हारिसाणं पुण को साहेइ रहस्सकज्जाइं ? । तेण भणियं-अहं जानामि किं तं, अत्थि पओयणं, किंतु तुह ण साहिज्जति । अवि य—

णेइ विसमं पि भूमिं मिच्छा वोत्तुं पियाणि सिक्खेइ । भिंदइ गरुइं लज्जं पयोयणं किं ण कारेति ? ॥ १४ ॥

पुंण वि तीए भणियं-किं तं पयोयणं ? । तेण भणियं-जं मज्झ तुमए । सुद्धिययाए जंपियं पियदंसणाए-मए वि किं तुज्झ पओयणमत्थि ? । [? तेण भणियं-अत्थि] सुंदरि !,

जो जियइ जीवलोए जस्स य तं सुयणु ! गोयरे पडिया । तस्स तए सति कज्जं मोत्तूणं णवरि तुह दइयं ॥ १५ ॥

तओ असंभावियपुव्वं कयाइ असंकणीयं दुव्ववसियपिसुणं अइकंतमज्जायं वयणमायणिऊण किंचि कालमहोमुही टाऊण पियदंसणा भणिउमादत्ता—

“रे रे निलज्ज ! अकज्जसज्ज ! किं तुज्झ जुज्जए एयं । हियएण वि चित्तेउं किं पुण भणिउं मह समवसं ? ॥ १६ ॥

पुरिसाहमेण तुमए अकज्जववसायमल्लिगमित्तेण । लंज्जिहिइ महं दइओ एयं दूमेइ मह हिययं ॥ १७ ॥

किं जुत्तं विमलकुलुब्भवस्स वीसम्भणेहगहियस्स । थेवस्स सुहस्स कए कुलम्मि मसिकुच्चयं दाउं ? ॥ १८ ॥

भुंजेइ जैत्थ तं चिय णवरं भिंदेइ भायणमणच्चो(? ज्जो) । णियचेट्टाए सइ दीवउ व्व णेहक्खयं कुणइ ” ॥ १९ ॥

तओ ईसीसिलज्जोणयवयेणं भणियं असोगदत्तेणं-किमेवमाउलीभूया ? सच्चं चेव मं अण्णहा संभावेसि ? , मए एस परिहासो परिकखाणिमित्तं तुह कओ । तओ ईसदसियं काऊण भणियं पियदंसणाए—

गच्छसु जत्थ च्चलिओ णियवावारं करेसु रे मूह ! । मह उण कया परिकखा जेण सुमिच्चो तुमं वरिओ ॥ २० ॥

तओ सुण्णदेउलं पिब विविच्चो णिग्गओ मंदिराओ । दिट्ठो य किं पि किं पि चित्तयंतो भग्गमच्छरुच्छाहो सायरचंदेणं, पुच्छिओ य-किमुच्चिग्गो चिव लक्खिज्जसि ? । तेण भणियं-आमं । केण कारणेणं ? । तओ मायाकूडकवडभरि-यहियएण दीहं णीससिऊण भणियं-“ संसारे वि वसंताणं उव्वेवकारणाणि पुच्छसि ? अह णिव्वंधो, साहेमि किं तं संसारविलसियं, अवि य—

संसारमावसन्तस्स किं पि तं पडइ माणिणो कज्जं । जं छौइयुं ण युज्जइ ण य कहियुं णेय मरिसेउं ” ॥ २१ ॥

एवं भणिऊण वाहोल्ललोयणो अहोमुहो ठिओ । तओ चित्तियं सायरचंदेणं-अहो ! दोणिवारया संसारविलसियाणं, जेण एवंहिहा वि महापुरिसा संतावस्स गोयरे पडंति, तं महंतं किं पि उव्वेवकारणं मह मित्तस्स, जेण गरुओ दुक्खावेओ वाहगम्भिणेहिं नीसासेहिं लक्खिज्जइ, ण हि अप्पेणं णिहाएणं चलइ वसुहा, ता पुच्छामि उव्वेवकारणं । ति चित्तऊण पुणरवि भणिओ-वयंस ! साहेहि मे जइ अकहणिज्जं ण होइ । तओ भणियं सगगयउक्खरं असोगदत्तेणं-“ किं तहाविहं किं पि अत्थि जं तुज्झ वि ण साहिज्जइ ? विसेसेण एस वइयरो ति । तत्थ जाणइ चेव पियवयंसो जेंहा-सव्वेसिमणत्थाण कारणं महिलाओ, जओ महिला णाम अणग्गी चुडुली, अमोयणा विस्सइया, अणग्गमा विज्ज, अणोसहा वाही, अपज्जवसाणा मोहंणिद ति, अवि य—

चवला मइलणसीला सिणेहपडिपूरिया चि तावेइ । दीवयसिह व्व महिला लद्धप्पसरा भयं देइ ॥ २२ ॥

१ पुव्वयं जे । २ वोत्तुं स् । ३ पुणरवि जे । ४ णवर जे । ५ टाऊण जे । ६ लज्जेही मम दं जे । ७ जत्थ तत्थ य णं स् । ८ वरिओ जे । ९ णिव्वेवकारणाइ जे । १० छौइयुं ण युज्जइ ण य कहियुं जे । ११ एस जे । १२ जह जे । १३ मोहंणिद ति स् ।

एकत्थं कइ वि पेरिमोइया वि अण्णत्थं लम्माइ खणेणं । दूरेण होउ सुहिया महिला कैथारिसाइ व्व ॥ २३ ॥

बंधुयणुव्वेवकरी सयलदुहावायकारणमणज्जा । मरणरयणि व्व महिला चित्तिज्जंती भयं देइ ॥ २४ ॥

तओ एयमायणिऊण सासंकेण भणियं सायरचंदेणं—पयडियं कीए वि महिलाए महिलत्तणं मित्तस्स, का उण सा ? विसेसओ जाणिउमिच्छामि । तओ 'तुज्झ वीयहिययभूयस्स परिसं पि साहिज्जइ' चि असोयदत्तो भणिउमादत्तो—“व-यंस ! सुणसु, अत्थि गणियाणि दियहाणि असमंजसाइं भासन्तीए पियदंसणाए, मए पुण तुज्झ वि असाहंतेणमवहीरिया 'कयाइ लज्जिऊण सयमेव दुरज्जवसाया उव्वसमं करिस्सइ' चि, णवरं ण केवलं ण कओ उव्वसमो, सुहुंयं पयट्ठा । अवि य—

णरसीहेणं सीहो मंतेण फणी तहंकुसेण करी । महिलामणो ण तीरइ केणावि णिरंकुसो धरिउं ॥ २५ ॥

अज्जं पुण तुहं अण्णेसणत्थं घरं गयस्स तं कयमिमीये जं साहिउं पि ण तीरइ चि । तओ महया किलेसेणमप्पाणं मोयौ-वेउं णिग्गाओ गेहाओ । तओ चित्तिउमारदो—'किमप्पाणं वावाएमि ?, अहवा ण वावाएमि ?, जओ सा दुरायारिणी मह मित्तमण्णाहा वुग्गाहिस्सइ । किं जहट्ठियं मुद्धमित्तस्स साहेमि ? एयं पि ण जुत्तं, जओ ण पूरिओ मणोरहो तीए, कहम-वरं कीरइ खए स्वारणिवडणं ?' ति । एवं च एयाणि य अण्णाणि य अट्टदुहट्ठाइं चित्तयंतो तुमए दिट्ठो । तं एयं मे उव्वेवकारणं ” ति । तओ वज्जवडणाइरित्तं एयमायणिऊण णट्टसण्णो व्व थंभिओ व्व किंचि कालं भविऊण सायर-चंदो भणिउमादत्तो—“ पियवयंस ! सव्वं पि एयं जुज्जइ महिलाणं, जओ—

विब्बोयसल्लिभरियं कवडमहावत्तवंचणामयरं । महिलामणमयरहरं अज्ज वि पुरिसा ण धाहेति ॥ २६ ॥

उवहिस्स मुहं रेवा संययं विज्जस्स ओप्पइ णियंवं । सव्वमणायारधेराण मित्त ! महिलाण सम्माइ ॥ २७ ॥

तो” शुंचसु विसौयं, अंगीकरेसु मुहज्जवसायं, किंचियं च एयं संसारविलसितस्स ?, किं वा सा दुरायारा अम्हाणं करिस्सइ ? चि । केवलं तुहं मज्झ वा मणो मा दूँसिज्ज ” । इति भणिऊण सेंटंविओ पियमित्तो । वियल्लिओ य पियदंसणाए उवरि पेमावंधो, णियत्तो सव्भावपसरो, अवगओ य पणयवहुमाणो । तहा वि महापुरिसयाए अलंघंतेण पुंव्वत्थिइं उवरोहमेत्तकयकज्जेणं पालिया पियदंसणा । ताए वि ण एस वुत्तंतो साहिओ पडणो, 'मा मह णिमित्तो चित्तभेदो होउ' चि मण्णांतीए पुव्वकमेणेव ववहरियं ।

सायरचंदो वि पयतीए दाणरुई, उव्विग्गो संसारस्स, परम्मुहो घरवासस्स, णिव्विण्णो विसयाणं, कालेणमाउय-मणुपालिऊण मओ समाणो जंवुंहीवे दीवे भारहे वासे दाहिणदस्स मज्झिमखंडे सुंसमदुसमाए पल्लिओवमदुहभागाव-सेसे काले समकालपरिचत्तजीवियाए पियदंसणाए सह जुगलत्तेणं समुप्पण्णो । संवडिहऊण य चउरासीति दियहे उवरयं जणयजुंयलं । पत्तो य जोव्वणं । अच्छइ य सहयरीए सह भोए शुंजन्तो ।

इयरो वि आउयं पालिऊण मओ समाणो तत्थेव धवलदेहो चउविसाणो वरलक्खणोववेओ करिवरत्तणेणं समु-प्पण्णो । तेण यं इओ तओ परिव्वमंतेणं दिट्ठो सो पुव्वभवमित्तो । जाओ य से पुव्वभवज्जभासेणं तस्सोवरि पेहाणु-बंधो । उवट्ठियं च तं आभिओगियफलं मौयासंजणियं कम्मं । आरोविओ य सो तेणमणिच्छमाणो वि णिए खंधप्पएसे । समुप्पण्णं च तेसिं परोपरं दंसणज्जभासेणं जौइस्सरणं । सो य जौइस्सरणप्यभावेणं अच्छंतस्सुवाए विमलकरिवरवाहण-त्तणेण य सव्वपुरिसाहिओ जाओ ।

तओ य वच्चंतेसु दियहेसु, परिगलंतेसु मुहाणुहावेसु, वियल्लिओ तारिसोऽणुभावो कप्परुक्खाणं, तहा हि—मत्तंगा थेवविरसीयमाणमज्जरसा । ण मुहासण-सयणा भिगा । तुडियंगा य ण तारिसाऽऽउज्जसज्जा । दीवसिहा जोइस्-णामा य ण सम्ममुज्जोवेति । चित्तंगया वि अवगयमुहमल्लोचयारा । ण देति पुव्वं पिव मुहभोयण-फलरसं चित्तरसा । ववगयविविहभूसणुकरिसा मणियंगा । णट्टसोहाणि विविहमंदिराणि भवणरुक्खेसु । ण पयच्छंति सुकुमारवत्थाणि

१ पविमोत्तिहा जे । २ कथारसाहि व्व जे । ३ उव्वसमो जे । ४ तुमसण्णेसं सू । ५ मोयाविउं जे । ६ वुग्गाहइ जे । ७ द्विय-मेव मित्तं जे । ८ साहेति जे । ९ समयं सू । १० पराणि सू । ११ ता जे । १२ यं, चित्तियं जे । १३ तुज्झ मह वा जे । १४ दूँसिज्ज ति जे । १५ संयविओ जे । १६ पुव्वत्थिइं जे । १७ दीवे भां जे । १८ दुसमदुसमाए जे, दुसमदुसमाए सू । १९ 'केवलं' जे । २० वि जे । २१ मायाजणियं सू । २२ परोपरं जे । २३-२४ जाइस्सरं जे । २५ तओ वं जे ।

आइण्णकप्परुक्खा । एवं च परिगलमाणे दसप्पगाररुक्खाणुहावे, ईसीसिउम्मिहंते कसायप्पसरे जुयलयाणं, पेवह्द-
माणे कप्परुक्खममत्ते जाओ परोप्परमैमत्तजणिओ परिहवहिययावेओ । तैओ य मिलिऊण जुयलपुरिसेहिं अम्हाणमेस
बुद्धि-पु(१०)रिस-रुवऽवमहिओ विमलवाहणो चि काऊण पइद्वावियविमलवाहणाऽभिहाणो सामिसालत्तणेणं गहिओ ।
सो य जाइस्सरणुम्मिल्लविवेओ जाणियलोयद्विइसहावो तेसिमुवइसिउमादत्तो । विहत्ता य तेण तेसिं कप्परुक्खा । ठवि-
या मज्जाया । जो य तं मज्जायमइक्कमइ तस्स हकारो चि डंडं पाडेइ । कहं?—हा ! दुट्ठं तए कयं । सो उण 'हा' इति
डंडं डंडिओ मरणाओ वि समवमहियं दुक्खं मणइ चि ।

एवं च पदमकयववत्थस्स हकारडंडणीइजुत्तस्स पलिओवमदसभागाउयस्स णवधणुसयप्पमाणस्स य छम्मासाउअसे-
सस्स चंदजसाए भारियाए अवरं मिहुणं समुष्णणं । पइद्वावियं च णामं [पुत्तस्स] चक्खुमं, धूयाए वि चंदकंता ।
संवहिदुज्जं य ववगयं जणयंमिहुणं । इयराणि य पत्ताणि जोव्वणं । भुंजंति भोए । अद्वधणुसयप्पमाणस्स य तस्स
णिहुरेसंदा पुव्वा चेव दंडणीई । 'सो वि तहेव तेसिं मैज्जायऽइक्कमणिरोहकारओ राया दंडधरो संवुत्तो ।

तस्स य असंखेयपलिओवमभागाउयस्स पच्छिमे काले चंदकंताए भारियाए मिहुणं समुष्णणं । पइद्वावियं च णामं
एकस्स जसस्सी, वीयाए मुरूवा । पुव्वक्रमेणेव पत्ताणि जोव्वणं । अहिगओ य मिहुणेहिं रायत्तणेणं जसस्सी । तस्स
पुव्वुत्ता डंडणीई, मकारणीई य । अप्पे अवराहे पढमा, मज्झिमे वीया, महन्ते दो वि । पढमं वा कए अवराहे पढमा,
वीयकए वीया, तइयवाराए कए दो वि पउंजइ ।

तस्स य अद्वधणुसयदेहप्पमाणस्स पच्छिमे काले मिहुणं समुष्णणं । पइद्वावियं च से णामं एगस्स अभिचंदो,
वीयाए पडिक्खा । सो य पलिओवमासंखेयभागं पुव्वकुलगरहीणं आउयमणुपालिऊण भारियाए सह पंचत्तमुवगओ ।
इयरमिहुणं च जोव्वणं पत्तं । पत्तं च कुलगरत्तणं । तहेव पुव्वुत्ताओ विसेसयराओ दो डंडणीईओ ।

एवं च एएणं चेव क्रमेणं अण्णाणि वि तिण्णि मिहुणाणि । तं जहा-पसेणई राया चक्खुक्कन्ता य भारिया,
धिकाराहियाओ पुव्वुत्ताओ दो डंडनीईओ । छट्ठं मिहुणं मरुदेवो कुलगरो, सिरिकंता य भारिया । सत्तमं णाभी
कुलगरो, मरुदेवी य से भारिया । डंडणीईओ अ विसेसि(?स)यराओ तिण्णि वि । ते य पलिओवमासंखेयभागाउया
आणुपुव्विहीणा आउणा सरीरप्पमाणेणावि । तं जहा-चउत्थस्स सत्त धणुसयाणि, पंचमस्स य छ सयाणि, छट्ठस्स अद्व-
छट्ठाणि, सत्तमरस णाभिरस पंचधणुसयाइं वण्णवीसाणि । आउयं तु संखेयाणि पुव्वणि चि । सव्वे वि" य कुलगरा
अप्पकसायत्तणओ देवेसु उववण्णा । णाहिकुलगरस्स य मरुदेवीए भारियाए उस्सभसामी सुभंगला य मिहुणयं जायं ।
णाही य मरिऊण देवेसु उववण्णो । उस्सभसामिणा जहा सम्मत्तं पावियं, जेत्थियं कालं जैहा वा संसारे हिंदियं तहा
भणइ—

अत्थि जंबुहीवे दीवे अवरविदेहे वासे खितिपइट्ठियं णाम णयरं । तं च गयणविलग्गेणं पायारेणं पायाळोयर-
गंभीराए खाइयाए परियरियं, मुविभत्ततिय-चउक्क-चच्चरं सयलणयरगुणोववेयं ।

अह णवैर तत्थ दोसो करि-तोरण-तुरय-वाररमणीहिं । जं सामि-भिच्च-जणवययरसण ण हु णज्जइ विसेसो ॥ २८ ॥
तं च राया पसण्णचंदो णाम पालेइ ।

तत्थ य उवहसियकुबेरविहवो विणिज्जियसुरलोयरूवाइसओ धणो णाम सत्थवाहो । अण्णया य सो गहियंमंडसारो
वसंतपुरं पत्थिओ । तेण य हिंदिमेणं घोसावियं णयरं जहा-धणो सत्थवाहो वसंतपुरं पत्थिओ, तेण सह गच्छन्तस्स पच्छ-
यणाइणा सत्थवाहो पडिजागरणं करेइ चि, तओ उच्चलंतु कप्पडिया, पयट्ठंतु ववहारिया, सज्जीभवंतु औणुगामिणो, कुणउ पत्था-
णं धम्मियजणो, जस्स जेण कज्जं भैडेमुल्लेण वा वाइणेण वा वत्थेण वा पत्तेणं वा अण्णेण वा ओसहाइणा तस्स तं संपाडेइ

१ परियह्दमाणे जे । २ "समयजणिओ जे । ३ तओ मि" जे । ४ जुयलयपु" जे । ५ बुद्धि-रुव" जे । ६ पइद्वाविवो विमलवा-
हणो चि णामेण, सामि" जे । ७ उण महादेह" सू । ८ "ण वव" जे । ९ "मिहुणयं" जे । १० "सपुव्वा" जे । ११ सो वि तेसि" सू ।
१२ मज्जायमइक्कमणं" जे । १३ विसेसियराओ" सू । १४ छट्ठमिहुणं जे । १५ वि कुल" जे । १६ जहा वा जे । १७ णवरि जे । १८
आणुगामिया जे । १९ मंडमोल्लेण जे । २० पच्छेण सू ।

सत्यवाहो । एवमेयं घोसणमायणिऊण एको बहुदेस-णयरदिट्ठसारो परिणयवओ^१ असूयाए धणस्स सत्त्वाहिगारचित्तयं माणिभइमुवट्ठिओ वणिओ । भणिओ य तेण माणिभइओ जहा-अहो भइमुह ! किं तुम्ह सत्त्वाहस्स अत्थजायमत्थि ? केरिसा वा गुणा ? किं पभूयं विचं ? किं वा दाउं समत्थो ? ति । तओ एयमायणिऊणं विम्हउण्णुल्लोयणेणं भणियं माणिभइेणं-भइ ! अम्ह सत्त्वाहस्स किं पि अत्थि, किं पि णत्थि । णणु सामणमेयं, विसेसो भाणियव्वो । सुणसु जइ विसेसत्थी-“ इह अम्ह सामियस्स एक्कं चेव अत्थि विवेइत्तणं, एक्कं च णत्थि अणायारो । अहवा दुवे अत्थि परोवया-रित्तणं धम्माहिलासो य, दुवे य णत्थि गव्वो कुसंसग्गी य । तिणिण अत्थि कुलं सीलं रूवं च, तिणिण य णत्थि पैराहमदं-सित्तणं उचुणत्त परदारएभंणो य । चैयारि अत्थि धम्म-उत्थ-काम-भोक्खा, चत्तारि य णत्थि णियाणाणुवंधो इड्ढीगारवो विसयलोलुयत्तणं णिस्सुह-दुक्खत्तणं च । पंच अत्थि णाणं विण्णाणं विणओ कैयण्णुयत्तणं पणइयणमणोरहपूरणं च, पंच य णत्थि असम्माहो असमंजसकारित्तणं दीणभावो अत्याणविणिओओ फरुससंभासित्तणं च ति । ता सोममुह ! एवमाह अम्ह सामियस्स किंचि अत्थि, किंचि णत्थि । किंच-विमलेसु गुणेसु रयणवुद्धी, ण पाहाणखंडेसु । सीलमेवाहरणं, ण वज्झो सुवणाइअलंकारभारो । दाणकम्मोसु पैविची, ण कामभोगेसु । जसम्मि लोहो, ण अत्थोवज्जणे ति । अवि य—

सच्छाओ गुणजुत्तो णिलओ सच्चस्स णम्मयाकलित्तो । विंझगिरि वर विरायइ मैहुमिचो फलसमिद्धो य” ॥ २९ ॥ तओ ‘अहो से वयणविण्णासो, अहो भावगरुओ समुल्लावो’ ति चित्तिऊण असूयं उज्झिऊण भणियं वणिणं-सच्चमेयं जुज्झइ ति एवंगुणकलियस्स एवमाघोसणं काउं । ति भणिऊण गओ वणिओ ।

एत्थन्तरम्मि धम्मघोसायरिण पेसियं आगयं साहुजुयलयं । वंदियं माणिभइेणं, पुच्छियं च आगमणपओयणं । भणियं साहूहिं-‘देवाणुपिया ! अम्हे धम्मघोसायरिण पेसिया धणसत्त्वाहसमीवं । सो य किल वसन्तउरं पत्थि-ओ । तेण सह आयरिया वि गंतुमिच्छन्ति, जइ सत्त्वाहो अणुमणइ’ । तेण भणियं-भयवं ! अणुमाहो ति, किं पुण आयरिहिं सयमेव गमणावसरे सत्त्वाहो दट्ठव्वो ति । एवं भणिऊण वंदिऊण य पेसिया साहुणो, गया य । कहिय-मायरियाणं-अणुमयं तेसि ।

तओ पसत्थे तिहि-करण-णक्खत्ते सोहेणे लग्गे कयं पत्थाणं सत्थेणं । आवासिओ वाहिरियाए सत्त्वाहो । उच्चलिओ साहुजणपेरियरिओ धम्मघोसायरिओ । दिट्ठो य सत्त्वाहो । वंदिऊण तेणं भणियं-किं भयवं ! तुम्हे वि गंतुमणा ? । आयरिहिं भणियं-तुम्हाणुमईए । तओ सत्त्वाहो सदाविओ सूत्रकारो, भणिओ य-जाए विहीए जीए चाराए जं वा भोयणं आयरियाणं सपरिवाराणं रोयइ तीए चाराए तमेसिं तुमए दायव्वं ति । आयरिहिं भणियं-देवाणुपिया ! ण एस अम्हाणं कणो, जैओ अम्हाणं अक्यमकारियमसंकणियं, गिहत्थेहिं अंतट्ठा उवकयं, महुयरविचीए पाविऊण आहारजायमालोइऊण य-गुरुणो; तेहिं जहारिहमणुजोइयं अरत्तदुट्ठाणमणुणौयं ति ।

एत्थन्तरम्मि ढोइयं सत्त्वाहस्स परिणयचूयफलपेहंउहत्थं पडलं । तं च दट्ठण हरिसियमणेण भणियं सत्त्वाहो-एयाणि तुम्ह जोग्गाणि, गेण्ह, कीरउ अम्हाणमणुग्गहो ति । आयरिहिं भणियं-देवाणुपिया ! संपयमेव भवओ णिवेइयं जहा गिहत्थेहिं अप्पणट्ठा उवकओ आहारो कप्पइ अम्हाणं, कंद-मूल-फलाइअं तु अस्तथोवहयं छिविउं पि ण वट्ठइ, किं पुण भक्खिउं ? । तओ तमायणिऊण भणियं सत्त्वाहो-अहो दुक्करा पव्वज्जा, विसमं धम्माणुट्ठाणं, अहवा ण सुहेण अच्चंतावाह-‘सोक्खो भोक्खो पाविज्झइ ति, एवं च तुम्हाण अम्हेहिं अप्पं पओयणं ति । पसंसिऊण-पुणो भणियं-भयवं ! सुहेण वच्चइ, जेण केणं वि पओयणं तमम्हाण साहेज्जसु । ति भणिऊण वंदिऊण य पेसिया आयरिया । गया य । आवासिया विवि-चदेसे फामुए थंडिले । दिण्णं च पच्चूसे पयाणयं ।

को य कालो वट्ठिउं पयत्तो ?-हिमोलुमाणलिणियणइणी दट्ठण च हिमौयलाहिमुहं पत्थिओ दिवसयरो । तओ

१ ‘ओ धणस्स सू । २ परादु(ह)मवेसित्तणं, सू, पराहम्मदसित्तणं उतुणत्तणं जे । ३ कयन्नत्तणं जे । ४ ‘कारित्तं जे । ५ एवमा-
सीह अम्ह जे । ६ पयत्ती जे । ७ महं मित्तो जे । ८ एवमादिघोसणं जे । ९ तं पसत्थे तिहिणक्खत्तमुहो सो’ जे । १० परिवारिओ जे ।
११ ‘ण य जं’ जे । १२ दायव्वं । आयं सू । १३ ‘णुपिया जे । १४ जयो अकयं सू । १५ अरणहाए उव’ जे । १६ ‘ण्णायन्ति सू ।
१७ ‘पडहच्छे सू । १८ जोगाणि सू । १९ ‘णुपिया जे । २० ‘सोवो भो’ सू । २१ केणावि जे । २२ हिमालाहि’ जे ।

तच्चिताए व जिज्जिउमादत्ता रयणी । तओ सयसंखंडया पेच्छिऊणं रत्तिं जिज्जमाणिं परिओसेणेव वड्हिउमादत्ता वास-
रा, अणुदियहं च कठोरीहोइ धरणिमंडलं, मुम्मुरोयमाणधूलीरण मणोरहाणं पि दुल्लंघणिज्जा जाया पहिययणस्स पहा,
उच्छलइ झल्लियाझंकारो गयणवहे, अणुदियहं च सूंसंति कमलायरा, सीयंति महाणईसोत्ता(?ता), उत्तम्मंति महाकरिणो,
जायंति सासाउला मयारिणो । अवि य—

अवणेतो^१ वि हु दोसं देतो वि जणस्स सइ सुहालोयं । करचंडयाए मित्तो उल्लियणिज्जो जए जाओ ॥ ३० ॥

तवइ महिमंडलमलं सोसइ कमलायरे भयं देइ । णासेइ सरसभावे गिम्हो दुसमाए सेसो व्व ॥ ३१ ॥

उत्तरदिसाहिजुचं अइभूमिमलंविओ उ गंतूणं । मुरगिरिसंकावलिओ मूरो तेहिं चिय पएहिं ॥ ३२ ॥

दियहा उडुंभुत्ता, रयवहुलाओ दिसाओ, सरफरुओ । ओवाइमारुओ माउयाओ मारेइ पहियजणं ॥ ३३ ॥

इय ताविऊणं भूयणं कमेण परिवड्हिऊणं य पयावं । कुणरिंदो इव गिम्हो पाउसरायागमे णट्ठो ॥ ३४ ॥

तओ वहतंति कालंविणीओ, उच्छलिओ पमयमहुरकंठमयुरकेयारवो काणणंतरेसु, भग्गो ये पहियसंचारो कयंवामोएणं,
महमहइ दिसामुहेसु कुडयकुसुमपरिमलो, णिव्ववियं च गिम्हसंतावतावियं पढमासारेण धरंणियलं । अवि य—

कालम्बिणीहिं समिओ झेलसंतावो समागया दियहा । कयपुण्णाणं ते^२ च्चिय अगणियणेहाण मिहुणाणं ॥ ३५ ॥

अंतोगरुयावेयं पिसुणंतं मुयइ पाउसैरंभो । उक्कुइयलोयणं पित्तं ऐकल्लुपुडिं गयं गयणं ॥ ३६ ॥

कालाइकमतोरवियपवणपिंडारचालियाइद्धं । झल्लज्जलेइ अहियं मेहउलं मेहिसवंद व्व ॥ ३७ ॥

भेसंतो पहिययणं जलधारासरणिवायपहरेहिं । पसमेइ महीए रयं आसारो गिम्हतवियाए ॥ ३८ ॥

ओसरइ कालमेहो पडइ व खुडिऊणं णहयैलाहुचं । गज्जियरवेण फुट्टइ सहसा संधरं धरावलं ॥ ३९ ॥

घणवडलेहिं छज्जंतयं पि ओगलइ अंवरं उयैह । धोइज्जंतं पि जलेण तह वि कलुसत्तणमुवेइ ॥ ४० ॥

कवलणमणस्स भूयणं पाउसवेयालकालकायस्स । अब्भउडदलंतमुहम्मि फुरइ जीह व्व विज्जुलया ॥ ४१ ॥

धारासारं वरिसइ अंतो च्चिय गरुयमंथरं रसैइ । ण तरइ मणयं पि जणो कज्जे वि घरंतरं गंतुं ॥ ४२ ॥

इय वरिसिउं पैयत्तो णिच्चलधारातहद्वियणिवायं । जेण जयैम्मि ण णज्जइ कुओ वि वियरंति धाराओ ? ॥ ४३ ॥

एवं च णिब्भरे पवत्ते पाउसे माणिणीहिययं व धाराहिं मउईकयं धरणिवट्ठं । पहिययणजायालोयणजुयलं व जलेण
पेव्वालिया वमुहा । ताव य सत्थो वि अणवरयपयाणेहिं पाविऊणं महाडविं तीए मज्जयारदेसम्मि दुग्गामत्तणओ मग्गाणं
भण्डविणौसणभएण य तत्थेव काऊण उडवाइयं वासारत्तणिव्वहणत्थं ठिओ । तओ जणपडिपुण्णयाए सत्थस्स, अवारिय-
सत्तपयाणेण य सत्थवाहस्स, अइदीहरयाए कालस्स, समत्थसत्थमज्जयारे खीणं जवसं, ववगयं पाहेयं, विमुरिउमादत्ता
सत्थिया, पयत्ता य कंद-मूल-फलमण्णेसिउं । णिवेइयं च रयणीए वरपल्लंकगयस्स सत्थवाहस्स माणिभहेणं जहा—“समा-
उलीभूओ सत्थो, खीणसंबलत्तणेण य दीणभावमुंवागया सत्थिया, छुहावेयणापरिगया य कंद-मूलाइयमणुचियमाहार-
माहारंति, किंच—

उडैइ लज्जं परिहरइ पोरुसं ण हु धरेइ मज्जायं । दीणत्तणं पवज्जइ उज्जइ मिच्चं कलत्तं च ॥ ४४ ॥

णीयघरेसु वि भिक्खं भैमेइ लंघेइ उडयमायारं । कं कं ण करेइ नरो लोए उयरग्गिणा तविओ ?” ॥ ४५ ॥

एयमायणिऊणं चिंताभरकिलंतदेहो विमुरिउमादत्तो सत्थवाहो । तओ ईसाए व समागंतूणं णिदाए णोल्लिया चिन्ता ।
एत्थंत्तम्मि रयणीए पच्छिमे जामे बंदुराजामइल्लेणं पहियं दुवैइखंडं—

१ 'रायणाणा धूली' सू । २ 'सुसंति जे' । ३ 'तो बहुदोसं जे' । ४ 'उल्लियणिज्जो सू' । ५ 'ओवादि' जे । ६ 'सुज्जाताः, मुदादिककैरिकाः ।
७ 'मुयणं जे' । ८-९ 'व्व सू' । १० 'णिमंडलं जे' । ११ 'कलसंतावो जे' । १२ 'ति जे' । १३ 'सारंमे जे' । १४ 'ओकुहयं जे' । १५ 'एकणं सू' ।
१६ 'महिसिखंडु व्व सू' । १७ 'यलदत्तं जे' । १८ 'सर्वतम्' । १९ 'उवह जे' । २० 'मुयणं जे' । २१ 'फुट्टइ सू' । २२ 'चसइ सू' । २३
पवत्तो जे' । २४ 'जयं पि ण जे' । २५ 'एव्वालिया सू' । २६ 'विणासमं सू' । २७ 'इओ जे' । २८ 'सुपगया जे' । २९ 'छइइ जे' । ३०
समेइ सू' । ३१ 'ए विव गं जे' । ३२ 'दुवई' द्विपवी=छन्दोविशेषः, तस्य खण्डम् ।

चउमुं दिसामुहेसु परिघोलिरणिम्मलजसवियाणओ, सुँर-गर-गाइरेसु केणावि अखंडियगरुयमाणओ ।

विसमदसागओ वि विमणो वि वियारियकज्जसारओ, पालइ जंपियाइ विणओणयओ पर मज्झ नाँहओ ॥ ४६ ॥

तओ णिदाविरमम्मि चिंताभरोसियंतहियएण मुणिऊण सत्थवाहेण चितियं—अहमिवाणेणोवलम्मिओ, ता को उण मज्झ सत्थे दुहिउ ? । ति चितियंतस्स सहस चि आवडिया हिययम्मि आयरिया जहा “ते महारिसिणो ण वायामेत्तेणावि मए एत्तियं कालं पडिजागरिया, तेसिं च अभक्खं कंद-मूल-फलाइयं, ता ते पैर मह सत्थे अच्चन्तदुहिय चि, अहो पमाइ-त्तणं गिहत्यभावस्स ता पडिजागरेमि पच्चूसे, नेमि अत्तणो जम्मस्स सफलत्तणं ।” एवं च चितियंतस्स पुणरवि गीओ जामवोलेण दुहेओ—

संसारे असेरए माणुसदो केण वि तेण सहं घडइ । जम्मइ अणिच्छए दइवहो वि उप्परि सुहरासिहे चैडइ ॥ ४७ ॥

तओ तमायाणिऊण चितियं सत्थवाहेण—उँवक्खित्तो दुहेएण कल्लाणेकहेऊ मह तेण सह संगमो चि तो” गच्छामि पच्चूसे तस्संतियं । ति चितियंतस्स पडियं कालेनिवेदयएणं ।

भुवण भूसिउ कउ मुहालोआ,

पह पयडिय दैल्लियु तमो उइउ मिचो दोसंतकारओ । पडिउँज्जेवि ठाहि तुहं, गुणणिहाण ! णियकज्जसज्जओ ॥ ४८ ॥

तओ ‘एवं कीरइ’ चि भणंतो उट्ठिओ सयणीयाओ । कयं उच्चियकरणिज्जं । गओ य जत्थ आयरिया आवासिया तमु-हेसं । दिट्ठो य मुत्तिमन्तो व पुणरासी सयल्लोयचूडामणिजिणपणीयधम्मो व्व वयणिज्जवज्जिओ, जिणइ समुहं गंभीरयाए, ण केवल मणेणं; काएणावि परिहवइ अणंगं, णिलओ गीईए, कोसो कुसलस्स, पट्ठणं पविचयाए, साला सीलस्स, ठाणं ठिईए, णिकेयणं करुणाए, संगरहिओ वि सस्सिरीओ, मुत्तो वि संसारालंकारकारणं, दोसासंगरहिओ विसोमो, साहुजण-परिवारिओ धम्मघोसायरिओ चि । वंदिओ य हरिसुफुल्ललोयणरोमंचकुइल्लेणं । पिहपिहमंडलिगया साहु य तत्थ केई चरणकरणाणुओगं मूलत्तरगुणकित्तणप्पहाणं आयारंगाइयं भावेन्ति । अण्णे धम्मकहाणुँजोगं उच्चिमसत्तमहापुरिस-रिसिचरियमुयगं उत्तरज्झयण-णायधम्मकहाइयं चितेंति । अवरे गणियाणुओगं खीइवल्लय-दीव-सायर-चंद-सूराइविमाणप-माणादिणिरुवगं जंबुदीव-चंद-सूरपण्णत्तिउवंगाइयं वियौरेन्ति । केइ पुण दव्वाणुओगं धम्मत्थिकायाइद्ववसरुवावहा-रणकलियं सँम्मं दिट्ठिवायाइयं णिरुवेत्ति । तत्थ केइ रयणावलि-मुत्तावलिपमुहचंदायणचारिणो, अण्णे चाउम्मासखमण-खवियदेहा, अवरे मासखमणाइतवोविसेससोसियकलुसा, केइ संलेहणासंलिहियगत्ता, अण्णे विविहायावणकिलन्तदेहा । एव-मेवमादिगुणकलिण वंदिऊँ य साहुणो, तओ असेसकम्मोहघायणपट्टयरेणं धम्मलाहेणं अभिणंदिओ गुरुणा सेससाहुई य, उवविट्ठो य गुरुपायमूले । मुहुत्तमच्छिऊण य भणिउमादत्तो—भयवं ! ण अकयपुण्णाणं घरे वसुहारा णिवडइ, ण य थेवोवज्जिय-कुसलाणं गोयरीभवन्ति णिहिणो, ण हि फुसन्ति मंदभागहेतं मुहाणुभावा, जेण सव्वहा अकारणवच्छलं संसारजलहिपोय-भूयं समतण-मणि-लेट्टु-कंचणं पाविऊण वि भवन्तं धम्मदेसयं ण सुयममयभूयं वयणं, ण कया जैयसलाहणिज्जा चलण-कमलसेवा, ण विहियं पडिजागरणमिइ स्वमियव्वं पमायाचरणमम्हाणं । ति वयणावसाणे भणियं गुरुणा—गुण-सीलप्पिय ! मा संतप्प, सव्वमेव कयं अवया, जओ रक्खिया “सिंघा-उडिहूरसचेहिंतो, पालिया चोराइभयाओ, आहारं पुण देसका-लाणुरूवं जहासंभवं ससचीए पयच्छन्ति भवओ सत्थिय चि । भयवं ! किमणेणं संठवणवयणेण ?, सव्वहा लज्जिओ अहं अ-त्तणो पमायचरिणं, ता कैरंतु अणुग्गहं मे गुरू, पट्टवैतु साहुणो, जेण पयच्छामि साहुणो जोगमाहारं, करेमि पच्चूसा-गमणसइविलम्बणभूयमत्तणो” चेट्ठियं ति । गुरुणा भणियं—देवाणुप्पिया ! एवं कीरइ चि, किं पुण जाणइ चेव सत्थवाहो जमम्हाण कप्पणिज्जं ? । सत्थवाहेण भणियं—भयवं ! जाणामि जमेव पुव्वकयमत्थि मेहे तमेव दाहामि । भणिऊण गओ णिययमावासं । अणुमग्गओ य पत्तं साहुजुयल्लयं । भवियव्वयाए ण किंचि साहुजोगमाहारमत्थि । तओ विमणहुम्मणेणं सयमेव अण्णेसंतेणं थीणं घयमुवल्लं । भणियं च—किं कप्पति एयं ? । ‘कप्पति’ चि भणिऊणं साहुई उँवट्ठविओ । तओ

१ “सु वि दिसमु” जे । २ हरणारएसु के” जे । ३ राहओ जे । ४ “तवेहेण मुणि” जे । ५ “णोवाल्लमिओ जे । ६ चितियंतस्स सु । ७ परं जे । ८ जम्मयफलं जे । ९ “पालएण जे । १० दुववओ सु । ११ असारे मा” जे । १२ जम्मइ जे । १३ वडइ सु । १४ पुण्णित्तो जे । १५ दुयहेण कल्लाणेकहेऊ सु । १६ ता जे । १७ चितियंतस्स जे । १८ “निवेदयणं जे । १९ दल्लिय तमो जे । २० पडिउँज्जेवि ठाहि जे । २१ केवि जे । २२ “णुओगं जे । २३ वियारंति जे । २४ सम्मददिट्ठि” सु । २५ “ण सा” जे । २६ जए सला” जे । २७ सिंहाइह” जे । २८ करेतु सु । २९ चेट्ठियन्ति सु । ३० उत्साहिताः ।

पवड्डमाणेहिं कंडएहिं उल्लसंतेणं भावेणं कयत्थमत्ताणं मण्णंतेणं ताव दिण्णं जाव साहुहिं दाऊण करयलमन्तरे णिवारियं । तओ पडिलाहिया बंदिया य साहुणो दाऊण धम्मलाहं गया । सत्थवाहेण य देस-कालोचिएणं विमुद्धञ्जवसायपवड्डमाणकंडयफामुयदाणेण उवचियं बोहिवीयं, परिचीकओ संसारो, भायणीकओ अप्पा जहुत्तरमुहाणं ।

सो य कयत्थमप्पाणं भावयन्तो अइवाहिऊण वासरसेसं रयणीए गओ आयरियावासभूमी । दिट्ठा य साहुणो जिणवयणा-मयभावणामुइयदेहा णाणासत्थञ्जवियारणपसत्ता विरया असंजमाओ, परिसेसिया दोहिं बंधणेहिं, मण-वइ-कायदंडरहिया तिगुत्तिगुत्ता चउव्विहविगहविवज्जिया परिचत्तचउकसाया पंचसमीइसमिया छकायरक्खणपरायणा सत्तभयट्ठाणमुक्का परि-हरियअट्टमयट्ठाणा उवगयणववम्भगुत्तिओ दसविहधम्मज्झाणोवगया विविहाभिग्गहरया य । तत्थ केइ लगंडसाहणो, अवरे गोदोहियाठाणज्झाइणो, अवरे एकपाय-आयावणरया, इयरे पुण पसारियउद्धवाहुणो मलजल्लविलसरीरा विविहतव-चरणपरिसोसियमंस-सोणिया तय-उट्ठिन्हारुसेसदेहा । तत्थ केइ जिणकप्पणिमित्तं पंचहा अप्पाणं तोलन्ति, अण्णे पडिमाओ अन्नमसन्ति, अवरे कयसामाइयपढमचारिचा, अवरे अन्नमुवगयगरुयाभिग्गहा णाणाविहाहिं आयावणाहिं आयावेन्ति, केइ पुण चरिऊण परिहारविमुद्धियं तइयं चारित्तट्ठाणं पुणरवि गच्छसमुद्धमवगाहेन्ति, एगल्लविहारिणो वा हवन्ति, जिणकप्पं वा पडिवज्जन्ति, पडिमागया वा विहरन्ति । इच्चंभाइगुणकलियं पेच्छन्तो जतिजणं गओ थेवं भूमिमायं । दिट्ठो य णीसेसदोसवज्जिओ असेसगुणरासी तेयपुंजो विव आयरिओ । दट्ठूण य चिन्तियं-अहो गत्थि वयणिज्जवज्जियं पुहइए रयणं मोत्तूण एयं भयवन्तं पुरिसरंयणं ति । तहा हि—

विप्फुरियपयावो वि हु भुव्वेणन्मिन्तरविदत्तमाहण्यो । कुणरिंदो व्व कुवलंयं सरो करपीडियं कुणइ ॥ ४९ ॥

भुव्वणाणंदो चंदो अमयमओ सरसरयणिमुहत्तिलओ । उव्वासियगयणवहो विमलंकलंकंकिओ सो वि ॥ ५० ॥

वित्थिण्णदलं कमलं घणमयरदं सिरीए रइभवणं । विहिविलसिएण जायं जलासयं तं पि हु सयंटं ॥ ५१ ॥

सेविज्जंतो फलओ लच्छीए कुलहरं मुहावासो । रयणायरो वि जायइ णिक्खिसत्तासओ णिययं ॥ ५२ ॥

जाइविमुद्धं धवलं मणोहरं सुइसुवित्तिण्णपंकं । होइ सैरंथं वरमोत्तियं पि लोहाणुसंगेणं ॥ ५३ ॥

तिहुयणपरिओसयरो णिच्चं चिय विवुहसुंदरीकलिओ । अहिलज्जइ णिययं मुरगिरी वि पंगुत्तदोसेणं ॥ ५४ ॥

थिरवणमुहालोयाण दूरमारुढबहुविहगुणाण । सव्वुत्तिमाण लोए निवंधणं होइ रयणाण ॥ ५५ ॥

इय जं जं चिय रयणं चित्तिज्जइ गुणवियारणकहाए । तं तं चिय सकलंकं मोत्तूण गुणायरं एयं ॥ ५६ ॥

तओ एवं चित्तयंतो गओ आयरियसमीवं । बंदिया गुरुणो । दिण्णो य कम्मसेलवज्जासणिभूओ धम्मलाहो गुरुहिं । उवविट्ठो चलणंतिए । पुच्छिओ निरवायमोकखपहो धम्मो । तओ साहिउमाहत्तो गुरुणा-देवाणुप्पिया ! धम्मस्स मूलं सम्मत्तं । तेण भणियं-भयवं ! तं कहं पाविज्जइ ?, किंरुवं वा ? किंगुणं वा ? कहं वा तमुप्पणं लक्खिज्जति ? किंफलं व ? ति । गुरुणा भणियं-

“गुणायर ! गुणमु, सम्मत्तपडिवत्तीए दौणि कारणाणि, तंजहा-णिसग्गो अहिगमो य । तत्थ णिसग्गो सहावो । सो उण णाण-दंसणावरणिज्ज-वेयणिज्ज-उन्तरायाणं चउण्हं कम्माणं एगुणतीसं सागरोवमकोडाकोडीओ णाम-भोत्ताणं एगुणवीसं मोहणीयस्स एगुणहत्तरिं अहापवत्तेणं पढमकरणेणं खवेऊणं सेससागरोवमकोडाकोडीए य देसे खविए अजहण्णुकोसाउय-बंधपरिणामो गंठिदेसं पावइ । सो उण गंठी इयरकम्मसहाएणं मोहकम्मुणा जणिओ घणराग-दोसपरिणामो कक्खड-घण-रूढ-गूढगंठि व्व दुब्भेओ । तं पुण कोइ जीवो पाविऊण भग्गो अणन्ताणुवन्निक्कम्मोदयओ पुणरवि उकोसकम्मट्ठिइं बंधइ । अवरो तप्परिणामपरिणओ कियंतं पि कालं चिट्ठइ । अण्णो उल्लसियवीरियसजोगयाए लहिऊणापुव्वं वीयं करणं, काऊण मोहणीयस्स दवग्गिणो व ऊसराइते देसे उँययविकस्वभं, मेत्तूण य कम्मगंठिं, पाविऊण य अणियट्ठिकरणं, लहइ अलद्धपुव्वं संसौरुत्तरणसेउभूयं सुहपरंपराकल्लाणकारणं सम्मत्तं ति । तप्परिणामपरिणओ य सुहज्जवसाओववेओ तिहा करेति मिच्छत्तदलियं, तं जहा-सुद्धं दरसुद्धं असुद्धं ति । तैत्थ य होऊण अन्तोमुहुत्तकालं उवसमसम्मदिट्ठी, तओ जया सुद्धं पुंजयमुदीरेइ तओ खाओवसभियसम्मदिट्ठी हवइ । दरसुद्धमुदीरयंतो सम्मामिच्छैदिट्ठी । एवं निसग्गसम्मइंसणन्ति ।

१ अन्ने कयं जे । २ रयणन्ति सू । ३ एणउच्चरं जे । ४ कुणरिंदु जे । ५ लमलंकंकिओ जे । ६ सरदं सू । ७ कम्मास-भयवज्जं जे । ८ निरवायं जे । ९ दोहिं सू । १० उदय जे । ११ वत्तारणं जे । १२ तत्थसू हो । १३ मिच्छदिट्ठि जे ।

अहिगमसम्मत्तं पुण सुणेन्तस्स पवयणं, भावयंतस्स जीवा-ऽजीवा-ऽऽसव-संवर-बंध-णिज्जरा-भोक्खमतिप सत्त पयत्थे, वियारयंतस्स हेउ-दिट्ठंत-जुचीहिं, गच्छंते य णाणावरणीए खओवसमं, उम्मिळ्ठंते य मोहविरे, पइदिणं सुणंतस्स आयरिया-इसासासे, अणवरयत्वीयमाणकम्मणो भिण्णकम्मगंठिस्स मुहपरिणामसहावं सम्मत्तमुप्पज्जइ ति । एयं अहिगमसम्मत्तं ।

तस्स पुण सम्मत्तस्स पंच रूपाणि, तं जहा-उवसमं सासायणं खाओवसमियं वेययं खइयं ति । तत्थ उवसमं भिण्ण-गंठिस्स पढमसम्मत्तलाभे हवइ, उवसमसेहिविहाणेण य उवसंतमोहस्स । खओवसमं गए मोहणीए खाओवसमं, तं पुण सम्मत्तपुग्गलोदयजणियपरिणामस्स हवइ ति । सासायणसम्मत्तं तु अपरिचत्तसम्मत्तभावस्स भिच्छत्ताहिमुहस्स अउण्णा-णन्ताणुबंधिणो सम्मत्तपणिमामासायणेणं सह वट्टमाणस्स किंचि सम्मत्तमुहज्झवसायस्स य हवइ ति । वेययसम्मत्तं पुण खवगसेहिमुवगयस्स खीणाणंताणुबंधिभिच्छत्तसम्मामिच्छत्तसम्मत्तदलियगासीकयचरिमकवलस्स खाइयसम्मत्ता-हिमुहस्स हवइ ति । खाइयसम्मदिट्ठी खीणसत्तगो सहावजणियमुहपरिणामो सेणियो इव दट्ठवो । एवमेयं पंचहा सम्मत्तं वंणिणियं । अपरिवडियसम्मत्तभावो य अणुहविऊण मुहपरंपरमवस्सं पाउणति सच्चदुक्खविमोक्खं मोक्खं ति । परिव-डियसम्मत्तो वि ण बंधइ गंठिदेसाहियं कम्मठिइं ति ।

तं पुण सम्मत्तं गुणो तिहा होइ, तं जहा-रोचयं दीवयं कारयं । तत्थ रोचयं जीवा-ऽजीवाइएमु पयत्थेमु अरहया पणीएमु हेउ-आहरणासंभवे वि “तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेदिय”न्ति एवं रुइं करेति । दीवगं पुण अण्णेसिं पि सम्मत्तं दीवेति । कारयसम्मत्तं तु सैम्मं तव-संजमुत्थाणं कारवेइ । तमुप्पण्णं तु एएहिं चेद तिहिं भावेहिं लक्खिज्जइ । अहवा समेणं संवेगेणं णिव्वेएणं अणुयंपाए अत्थिकमइए य । तत्थ य समो इंदिय-णोइंदिहिं, इंदिओवसमो णाम रूव-रस-गंध-सह-फासेमु अणुकूल-पडिकूलेमु अरत्तदुट्ठया, णोइंदिओवसमो पुण कोह-माण-माया-लोहवज्जणं, मोहाभिभवो सच्चत्थ अकोउहल्लत्तणं च । संवेगो पुण सुणन्तस्स जिणप्पणीए भावे, भावेन्तस्स संसारासारत्तणं, समालोपंतस्स कम्मपरिणइं सहाइएमु विसएमु वेरग्गामुप्पज्जइ ति । जिन्वेओ पुण उप्पन्नविसयवेरग्गो णिव्विज्जइ, चारगवांसेणेव संसारवासेण विस-णामिव णिव्विइ भोए, बंधणमिव मंणेइ बंधुयणं, गोत्तिपरं पिव चित्तेइ धैरवासं ति । अणुयंपाओ एगिंदिय-यंचिंदियाणं भवसागरे किलिस्समाणां दट्ठण कम्मपरिणामजणियं दुहविवागं करुणापसहीणहियओ तेहिंतो वि अहिययरं दुक्खं अणुहवइ, पयट्ठइ य जहासत्तीए दुक्खपडियारहेउमु ति । अत्थिकमइसंजुओ उण अत्थ जीवादिप पयत्थे, अत्थ पुण्णं पावं बंधो मोक्खो य, जिणप्पणीए भावे सम्मं सइहइ पत्तियइ रोएइ फासेइ ति । तस्स पुण सम्मत्तस्स फलं सुमाणुस-मुदेवत्तेमु जहुत्तरमुहं, परंपराए णेव्वाणगैमणं ति । ”

एवं जहाविहिं सुणेऊण धणसत्थवाहेण भणियं-सोहणं धम्ममूलं सम्मत्तं, ण एयमग्गण सवणपहमुवगयं, अवणिय व्व मोहणिहा भयवया, पयासिया पउणपयवी सासयपयस्स । ति भणिऊण वंदिऊण य भयवन्तं सेससाह य गओ णिय-यमावासं । सुचुट्टियस्स भावैतस्स य गुरुवयणं किंचावसेसाए रयणीए पडियं कालणिवेयएणं—

खलिऊण जणपयारं अइभरियजलंधयारमहिविरो । वासारत्तो गुणनिहि ! रयणीए भरो व्व परिगलइ ॥ ५७ ॥

जणमणकयववसाओ पयडियपहपडियसत्थमुहजणओ । पच्चूसो व्व वियंभइ हंसउलणिसेविओ सरओ ॥ ५८ ॥

उप्पहगमणणियत्तं सलिलं सरए ठियं सहावम्मि । ववगयजोव्वणकलुसत्तणस्स हिययस्स अणुहरइ ॥ ५९ ॥

सिहिकेयारवुमैहलं तडिलयगहणं णिराउलघणेहिं । पाउसमहाडइं लंधिऊण मुकाइं चावाइं ॥ ६० ॥

होऊण सकलुसाओ आसाओ जलहराणैमुप्पणमणे । ताण पुण वियलणेणं ताउ पसन्नत्तणमुवेन्ति ॥ ६१ ॥

चलणकमन्तमज्झप्पएसपासत्थकइमुदामो । सीमन्ता इव जाया मग्गा गामन्तरालेमु ॥ ६२ ॥

ठाणट्ठाणविसट्ठन्तकमलसरसलिलपूरियदियन्ता । ईसिवसुयायकइममुहसंचारा पहा जाया ॥ ६३ ॥

इय जायसासहरिसियपामरजणजणियच्छेत्तहलवोलो । ववसायसहाओ पिहुलवच्छ ! समवट्ठिओ सरओ ॥ ६४ ॥

तओ एयमायणिऊण सत्थवाहेण सदाविओ माणिभदो, भणिओ य जहा-गलिओ ववसायणियलवंधो पाउसस-मओ, उवागओ उच्छाहसेहाओ सरओ, अज्जेव कीरउ गमणारम्भो ति । माणिभहेणावि 'एवं कीरइ' ति भणिऊण घोसावियं सत्थे पयाणयं । समाउलीभूया सत्थिया । पयत्ता णिएसु वावारेसु । पउणिज्जंति भंडीओ । संजत्तिज्जन्ति उट्टमंडलीओ । पैल्लणयंति महिससत्थं थोरिया । आरोविज्जन्ति लगडाओ रासभेसु । एवं च महारंभेणं पयट्ठो सत्थो । गओ अणवरयपैयाणएहिं वसंतउरं ।

आयरिया य लंघिऊण महाडइं दाऊण धम्मलाहं सत्थवाहस्स जहामुहेण विहरिउमादत्ता ।

सत्थवाहो य विणिओ^१यियभंडो समासाइयजहिट्टलाहो गहियपडिभंडसारो समागओ खिप्पइट्ठिए णयरे । कालेण-माउमणुवालिऊण मओ समाणो दाणतरुकुसुमुग्गमाणुभावेणं उत्तरकुराए सीयाए उत्तरे कूणे जंबुवरपायवस्स पुल्लवेणं तिपलिओवमाऊ तिगव्वुस्सुओ मिहुणगचेणं समुप्पणो ति । तत्थ कप्पतरुयरेहिंतो जहिच्छियासेससंपज्जंतसयल्लिदि-यत्थो मुरलोयव्वहिइ भुंजिऊण भोए आउसेसयाए मरिऊण साहुदाणाणुहावेणं तिपलिओवमाऊ सोहम्मो कप्पे देवत्त-णेणं समुप्पणो ति^२, अवि य—

अवियाणियसहयरिविरहवियणगुरुकप्पतरुवरधरम्मि । चिन्तामेत्तुप्पाइयमणहरसयल्लिदियत्थम्मि ॥ ६५ ॥

णिइलियपुट्ठविपरिणामदोसवित्थरियसोक्खजलहिम्मि । ईसाविसायविणडियमुरलोयं उव्वहसन्तम्मि ॥ ६६ ॥

भोत्तूण तियसणाहो व्व तत्थ भोए वरम्मि सोहम्मो । उव्वण्णो दाणफलावसेसपुण्णज्जियजसोहो ॥ ६७ ॥

तियसंगणाविसट्ठंतसरसमुहकमलभसलकयलीणो । भुंजइ भोए पलिओवमाइं हिट्ठो तहिं तिणि ॥ ६८ ॥

तओ भुंजिऊण भोए आउयमणुवालिऊण चुओ समाणो इहेव जंबुद्धीवे दीवे अवरचिदेहे वासे गंधिलावइविजए वेयइहपव्वए गंधारजणवए गंधस्समिद्धे णयरे सयबलस्स राइणो चंदकंताए भारियाए पुत्तत्तेणं समुप्पणो । पइट्ठावियं च से णामं महाबलो । वडिहओ य सह कलहिं । परिणाविओ य पिउणा विणायवइं भारियं, पत्तो य जोव्वणं । अणया य पिउणा सयबलेणं कुलकमागयस्स मंतिणो विमलमइणामस्स सयल्लकला-सत्थ^३पारगस्स भत्तस्स विणीयरस वीसंभया-णियस्स णिहित्तसयल्लज्जभारस्स जिणवर्यणभावियमणस्स उवल्लद्वजीवादिपयत्थमइणो विण्णायसंसारसहावस्स समप्पि-ऊण अहिसित्तो । सयबलो वि तहाविहाणं आयरियाण सगासे पव्वइओ । मरिऊण य देवलोगं गओ । राया य महाबलो विमलमइमंतिसमेओ रज्जं पालेइ ।

अणया य मंतिणा चित्तियं—“एस राया कुलकमागओ पिउणा समप्पिओ अम्होवरि अच्चन्तवीसम्भमुवगओ, ता एयस्स मित्तपुत्तस्स सज्जणस्स बंधुणो अच्चन्तोवयारपरस्स सामिसालस्स अम्हेहिं पाणेहिं पि उवगरियव्वं, उवयाराणं च एस परमोवयारो जमविण्णायपरमत्थो दुग्गइमग्गपत्थिओ संसारसहावाऽऽसत्तो परमकल्लाणपरंपराकारणे णिरवायसोग्ग-इमग्गो जिणवर्यणे वोहिज्जइ । एसो उ अच्चंतभोगासत्तो पेक्खणरुइ य । ता वेरग्गजणएणं णाडएणं एयं वोहेमि” । ति चित्तिऊण सदाविओ हरगणाभिहाणो नडो । लाइओ तस्स चिरन्तणकहासंवंधस्स णाडयस्स य वेरग्गजणणो एक्को अंको । विण्णत्तो^४अवसरं लहिऊण राया जहा-देव ! समागओ अच्चन्तरसभावणू मुक्कयकरणो चउव्विहाणिणयपत्तट्ठो हरगणाभिहाणो णडो, तओ तहंसणेणं कुणउ देवो अणुग्गोहं ति । राइणा भणियं-एवं कीरइ ति । तओ सज्जिया रंग-भूमी उवविट्ठो मन्तिसमेओ राया । गहियाओ जहाजोग्गं भूमियाओ कुसीलवेहिं । दिण्णो य समइत्थो मुरवाणं ति ।

१ सहावओ जे । २ पल्लणयंति जे । ३ 'पयाण' जे । ४ 'ओइय' जे । ५ सीयाए इति सू. प्रती नास्ति । ६ 'मत्तणेणं जे ।

७ 'मइस्स जे । ८ 'णे वाहिज्जइ जे । ९ 'महन्ति सू ।

[विबुधानन्दं नाम नाटकम्]



(ततः प्रविशति नान्दी, परिक्रम्य च—)

राजीमत्यवधारय प्रियकथामात्मानमालोचय, किं कोऽपीह जगत्पनिन्द्यचरिते ! पत्युर्वियोगे मृतः ? ।
इत्याकर्ण्य वचोऽवधार्य च ततो मूर्च्छाविनोदस्तथा, चक्रे यस्य कृते स पातु भवतः श्रीनेमिनाथो जिनः ॥ १ ॥
निःशङ्कैः पादपातैः स्फुटति वसुमती पर्वता मुक्तवन्धा, दोलायन्ते समन्ताद् भ्रमदिव गगनं लक्ष्यते दिग्भ्रमेण ।
उद्भ्रान्ताः सत्समुद्राः क्षुभितजलचराः शक्रनृत्ये प्रवृत्ते, जातं यज्जन्मकाले जगदिति भवतः पात्वसौ नेमिनाथः ॥ २ ॥
(नान्वन्ते)

सूत्रधारः—आदिष्टोऽहमद्य साधुजनपर्वदा । यथा—अद्य त्वया कवेः शीलाङ्कस्य विमलमत्यभिधानस्य कृतिः
विबुधानन्दं नाम नाटकं एकमङ्गाख्यरूपकं नाटयितव्यमिति । यत्सत्यं ममापि विशेषवेदिन्यां पर्वदि प्रयुञ्जानस्य
सफलः परिश्रमो भविष्यति, कवेरपि [च] । स चेदमुक्तवान्—

वस्तुपाश्रयसौन्दर्यादपूर्वगुणमाप्नुयात् । स्वच्छं मौक्तिकतामेति श्रुक्तिमध्यगतं जलम् ॥ ३ ॥
लगति जनमनसि सकृदपि गदितैषा कृतिरसत्यपि सदर्या । दर्दुररटितमपि यथा भवति मुदे वृष्टिसूचनम् ॥ ४ ॥
तद् यावद् गृहं गत्वा गृहिणीं विदितवृत्तान्तं करोमि । (परिक्रम्य विलोक्य च आकाशे) इदमस्मद्गृहम्, यावद् गृहिणी-
माकारयामि—

गुणवत्पुपभोगकरि ! प्रधानभूते ! मदर्थमुद्युक्ते ! । मत्प्रकृतिसदृशधर्मिणि ! कार्यादार्ये ! द्रुतमुपैहि ॥ ५ ॥

(प्रविश्य)

नटी—(साक्षम्) आणवेदु अज्जो, को णिओओ अणुचिट्ठ(ट्टी)यदु ? ।

सूत्रधारः—आर्ये ! सशोकेव लक्ष्यसे !, तत् कथयतु भवती शोककारणम् ।

नटी—अज्जउत्त ! किं ममं मन्दभायाए सोयकारणेणं पुच्छिणं ? । ता आणवेदु अज्जो, किमणुचिट्ठियदु ? ।

सूत्रधारः—आर्ये ! आदिष्टोऽहं साधुजनेन । यथा—अद्य त्वया विबुधानन्दं नाम नाटकं नाटयितव्यमिति । तत्
सज्जा भवतु भवती ।

नटी—(साक्षम्) नैच्च तुमं जो निच्चिन्तो । मज्झ पुण पुत्तस्स विवाहसमयाणंतरमेव णेमिनिणं कुटुंबभंगो
समाइट्ठो । तओ एयाए चित्ताए भोयणं पि ण रोयइ, किं पुण णैच्चियव्वं ? ।

सूत्रधारः—आर्ये ! कुटुम्बभङ्गः श्रुत इत्युद्दिष्टाऽसि !, अलमुद्देगेन । यतो नष्टपूर्वमसुलभमेतत् संसारान्तर्गतानाम् ।
अपि च—

किं दृष्टोऽसौ क्वचिदपि ? शङ्कित इति वा ? श्रुतोऽपि वा लोके ? ।

योऽनार्यया भविष्यति न खण्डितः कर्मणां गत्या ? ॥ ६ ॥

अन्यच्चार्ये !

घटयति विघटयति पुनः कुटुम्बकं स्नेहमर्थमनवरतम् । भवितव्यतैव लोके न खेदनीयं मनस्तेन ॥ ७ ॥

भङ्गं पुत्र-कलत्र-वन्धु-मुह्यदामर्थस्य रूपस्य वा, संसारेऽपसदे विधानमतुलं पश्यन्नपीहेतु ततः ।

स्वस्मिन् कर्मणि मोहितो हि सततं मूर्खस्तथा पण्डितस्तस्मात् सुभ्रु ! विहाय शोकसरणीं कार्ये मनो दीयताम् ॥ ८ ॥

१ आज्ञापयतु आर्यः, को नियोगोऽनुष्ठीयताम् ? । २ आर्यपुत्र ! किं मम मन्दभागायाः शोककारणेन पुष्टेन ? । तद् आज्ञापयतु आर्यः,
किमनुष्ठीयताम् ? । ३ अस्मीति ज्ञे । ४ गृह्य त्वं यो निश्चिन्तः । मया पुनः पुत्रस्य विवाहसमयानन्तरमेव नैमित्तिकेन कुटुम्बभङ्गः समादिष्टः । ततः
एतया चिन्तया भोजनमपि न रोचते, किं पुनर्नर्तितव्यम् ? । ५ नैच्चियव्वं ज्ञे । ६ नन्पीहा ततः ज्ञे ।

(नेपथ्ये)

एवमेवैतत्, कः सन्देहः ? ।

(उभावाकर्णयतः ।)

नटी — अज्जउत्त ! को उण एसो अज्जउत्तवयणमणुकुरेइ ? ।

सूत्रधारः—(निर्वर्ण्य) आर्ये ! कञ्चुकी स्वकार्यावेदनाकृतहृदय इत एवाभिवर्तते, ततो गच्छावः ।

(परिक्रम्य निष्क्रान्ता ।)

॥ प्रस्तावना ॥

(ततः प्रविशति चिन्तां नाटयन् कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी — अहो ! जराजीर्णदेहस्याद्यापि मे सेवाभियोगः, न धर्मोद्यमः । अपि च—

पिपतिपुरद्य श्वो वा जराधुणोत्कीर्णदेहसारोऽपि । धर्मं प्रति नोद्यच्छति वृद्धपथुस्तिष्ठति निराशः ॥ ९ ॥

वालेऽस्ति यौवनाशा, स्पृहयति यौवनमपीह वृद्धत्वम् । मृत्युत्सङ्गतोऽयं वृद्धः किमपेक्ष्य निर्धर्मः ? ॥ १० ॥

खण्डयतु जरा रूपं, नाशं स्मृति-मेधयोश्च विदधातु । यद् गौरवमपि गच्छति तेनाकालेऽप्यहं पलितः ॥ ११ ॥

आदिष्टोऽहं राज्ञा राजशेखरेण, यथा—गच्छ भो माधव ! योऽयमस्मदन्तिकं लक्ष्मीधरकुमारः कोपात् समायातः कुलजः प्रश्रयवान् सर्वकलापारगो ललितललितैरङ्गैरनङ्ग इव लोकमभिव्रजति, तदस्मै समानवयो-रूप-कुलयोग्याय अस्मद्दुहितरं बन्धुमतीं राज्याय च नियोजय । कथितं च मे बन्धुमतीसरूपा चन्द्रलेखया, यथा—परस्पराविदितकुला-ऽभिधानयोरेव वच्छयोः सकृदर्शनेनैव परां कोटिमारूढः प्रेमानुबन्ध इति । निवेदितं च मे राजकुलाभिर्गच्छतः लब्धप्रत्ययेन सिद्धादेशनाम्ना सांवत्सरिकेण, यथा—गच्छ भो माधव ! कार्यसिद्धये, तत्र सेत्स्यति भवतः सर्वं समीहितम्, किन्त्ववसानविरसमिति, अवश्यम्भाविनश्च भावा न विधिनाऽपि प्रतिकूलयितुं शक्या इति भणित्वा गतोऽसौ । तत्र न विद्मः किं भविष्यति ? इति । यदि वा अवश्यम्भावित्वे किं चिन्ताखेदेन ? । यद् भवति तद् भवतु । निवेदितं च मे दैविक्या वाचा, यथा—“विहाय शोकसर्णी कार्ये मनो दीयताम्” [पद्यम् ८] (इति पुनस्तदेव पठति ।) तत् क्व पुनर्मया लक्ष्मीधरकुमारो द्रष्टव्यः ? । (अग्रतो विलोक्य) कुतश्चिन्निमित्तात् ग्रहवदनकमलो दिशोऽवलोकयन् तदनुचरो बहुरित एवाभिवर्तते । यावत् प्रतिपालयामि ।

(ततः प्रविशति हृष्टो विदूषकः ।)

विदूषकः—हीही ! भो ! पेसिओ म्हि जणयसंदेसुत्तेयवियखत्तिवरीरणं पियवयंसरणं । जहा—गच्छ भो विचित्त ! जानाहि ‘कहिं राया बट्टइ ?’ ति । सुयं चं मए, जहा—राइणा कुमारस्स दाउमाइट्टं रजस्स अट्टं नियमुया य । दिट्ठिया, अण्णहा पिउणो सम्भावणा, अण्णह चिय कुमारपुण्णाणुभावेणं गुण-रूपाखित्तहियओ जणो अणुचिट्टइ ति । (अग्रतो विलोक्य) एसो हु राइणा पेसिओ कंचुई । ता एयस्स पुरओ लीलायमाणो लीलायमाणो चिट्ठिस्सं । (तथा करोति ।)

कञ्चुकी — (उपसृत्य) भो बटो ! क्वास्ते त्वदीयो राजा ? इति ।

(विदूषकः ऊर्ध्वमवलोकयति ।)

कञ्चुकी — (आगमात्) कथमयमुन्मत्त इव चेष्टते ? । यदि वा ब्राह्मणवटुः, अपरं मूर्खः, पुनश्च राजमुताभापित इति महत्यनर्थमालेति । भवतु, एवं भणि(लि)प्ये । (प्रकाशम्) भो दुष्टवटो ! विरूपोऽपि भूत्वा एवं विकुरुषे ? ।

१ अष्टपञ्च । जे, आर्यपुत्र ! कः पुनरेव आर्यपुत्रवचनमनुकरोति ? । २ ‘स्यापि सू । ३ साम्नात् सू । ४ हीही ! भो ! प्रेषितोऽस्मि जनकसन्देशोत्तेजितक्षत्रियवीर्येण प्रियवयस्त्वेन, यथा—गच्छ भो विचित्त !, जानाहि कुत्र राजा वर्तते ? इति । धृतं च मया, यथा—राज्ञा कुमारस्स दातुमादिष्टं राज्यस्यार्थं निजमुता च । दिष्टया, अन्यथा पितुः सम्भावना, अन्यथैव कुमारपुण्यानुभावेन गुण-रूपाक्षिपाहृदयो जनोऽनुतिष्ठतीति । एष खलु राज्ञा प्रेषितः कञ्चुकी, तद् एतस्य पुरतो लीलायमानो लीलायमानः स्थास्यामि । ५ च मे जहा जे । ६ ‘क्वचि(क्वित्त)त’ सू ।

विदूषकः—अह ! कयंतअट्टिसमं अप्पाणं न पलोएसि उव्वसियदंतमालामुहवेविरसरीरं जेण परं उव्वससि !।

कञ्चुकी—भवतु, किं तवानेन ?। तत् कथय क्वास्ते ते राजा ? इति येन तस्मै प्रियं निवेदयामि ।

विदूषकः—अह वम्भणस्स किमेत्थ भविस्सइ ? चि ।

कञ्चुकी—साम्मतमुत्सवः, ततो विशिष्टो लाभः ।

विदूषकः—संपैयमूमवो, तयणंतरमणूसवो, तओ हरिस-विसाएहिं चेव होयव्वं । ण पुण एत्थ वम्भणस्स किंचि ।

कञ्चुकी—मूर्ख ! किमादावेवामङ्गलमुच्चारयसि ? ।

विदूषकः—नो एत्थ वायामेत्तेण किं पि संपज्जइ । जइ पुण तहा ता महं मोयया किं न संपज्जंति ? ।

(ततः प्रविशति गृहीतलङ्कुपडलिका चेटी ।)

चेटी—“पेसिय म्मि सामिणीए, जहा-हंजे चेरिण ! बाहिं गंतुं इमे मोयए बंधुमइसोभणवरलामणिमित्तं भय-
वतीए कुलदेवयाए ढोइय ता अइहिविसेसस्स पयच्छ । कहिं पुण अइहिं पेक्खिस्सं ? ।

कञ्चुकी—(विलोक्य) अये ! राजमहिष्याः सम्बन्धिनी चेटी चतुरिकेयम् । चतुरिके ! कोचलिताऽसि ? ।

चेटी—भयवं ! पणमामि ।

कञ्चुकी—सुभगा भव ।

चेटी—“पेसिय म्मि सामिणीए० । (पुनस्तदेव पठति ।)

कञ्चुकी—यद्येवमस्मै प्रयच्छ । (विदूषकमुद्दिशति ।)

(चेटी तथाकरोति)

कञ्चुकी—भो अवितथवादिन् ! इमे मोदकास्त्वदुक्तितः सम्पन्ना इति ।

विदूषकः—जैइ एवं ता मह वयंसो देवो होही इति ।

कञ्चुकी—आ दुष्टवटो ! अमङ्गलिक ! धिक् त्वाम् । अहं कुमारान्तिकं यास्यामीति । (निष्क्रान्तः)

विदूषकः—(सतोपो मोदकान् नाट्येनावलोक्य) भोई ! इमेहिं सुसिणिद्धेहिं सुपरिणाहाहोएहिं बहुजणपत्थणिज्जेहिं
तुह थणकलसेहिं विअ दंसणमुवगएहिं वि तहा परितुट्ठो, ण जहा वयंसलाहपउत्तीए वि ।

(ततश्चेटी कुपितेनावलोकयति ।)

विदूषकः—“भोदि ! पुणो वि रूसिऊण इमेहिं घणकसिणवहलपम्हलपक्खउडदरुम्मिल्लंततरलतारयावन्न(नेत्त)-
णिमायधवलजोण्हापवाहविच्छङ्गुगम्भिणेहिं कडक्खविकखेवेहिं पलोएसि ! । ददं ददं कोऊइलालो म्मि ।

चेटी—हैयास ! जइ ण गेहसि ता अणत्थ गच्छिस्सं ।

विदूषकः—अणत्थ वि गयाए तुह किमम्ह हियं भविस्सइ ? चि । ननु तुह घरे चेव ताव चिट्ठंतु । पुणो राउलाओ
णिक्खमन्तो”गेहिस्सामि ।

चेटी—तथा । (इति भणित्वा निष्क्रान्ता ।)

१ अयि ! कृतान्तार्विसममात्मानं न प्रलोकयसि उद्दिशितदन्तमालामुखवेपित्तरिं येन परमुपहससि ! । २ किन्तवा” स्तु । ३ अथ ब्राह्मणस्य
किमत्र भविष्यति ? इति । ४ साम्प्रतमुत्सवः, तदनन्तरमनुत्सवः, ततो हर्ष-विषादाम्यामेव भवितव्यम् । न पुनरत्र ब्राह्मणस्य किञ्चित् । ५ मात्र
वाक्मात्रेण किमपि सम्पद्यते । यदि पुनस्तथा तर्हि मम मोदकाः किं न सम्पद्यन्ते ? । ६ वायमे” जे । ७ प्रेषिताऽस्मि स्वामिन्या, यथा—हज्जे
चतुरिके ! बहिर्गन्तुमिमे मोदका बन्धुमतीसोभनवरलामणिमित्तं भगवत्यै कुलदेवतार्यै दौकयित्वा ततोऽतिथिविशेषाय प्रयच्छ । कुत्र पुनरतिथिं प्रेषिष्ये ? ।
८ चतुरिण जे । ९ भगवन् ! प्रणमामि । १० प्रेषिताऽस्मि स्वामिन्या० । ११ यथेवं तद् मम वयस्यो देवो भविष्यतीति । १२ भवति ! एभिः
सुस्निग्धैः सुपरिणाहाहोयैर्वहुजनप्रार्थनीयैस्त्व स्तनकलशैरिव दर्शनमुपगमैरपि तथा परितुष्टः, न यथा वयस्यलाभप्रवृत्त्याऽपि । १३ भवति ! पुनरपि
रुद्ध्वा एभिर्घनकृष्णबहलपद्मलपद्मपुटेष्वमीकतरलतारकजैर्गन्तव्यलज्जोत्सनाप्रवाहविच्छदगर्भितैः कटाक्षविक्षेपैः प्रलोकयसि ! । ददं ददं कुसुहला-
कुलोऽस्मि । १४ हाहा ! यदि न खड्गासि तर्हि अन्यत्र गमिष्यामि । १५ अन्यत्रापि गतावास्तव किमस्माकं हतं भविष्यति ? इति । ननु तव
घटे एव तावत् तिष्ठन्तु । पुनः राजकुलाद् निष्कामन् ग्रहीष्यामि । १६ गिहिस्सामि जे ।

विदूषकः — केहं महई बारा णिगयस्स ? । जइ पुण पियवयंसो जणयवयणुत्तेयविओ मह पउत्तिमणपेक्खिऊणमि-
हाऽऽगच्छेज्जा ! ।

(ततः प्रविशति संख्यो यथोद्दिष्टः कुमारः ।)

कुमारः — कथमेतत् सन्दिष्टं तातेन ? यथा—एकाकी त्वं निर्गतः सामग्रीविकलः, न चैकाकिभिः पृथिवीलाभ-पालने
शक्ये विधातुमिति । तत् किं तातेन 'मदपत्यम्' इति न सम्भावितः ? किं सिंहस्य वने विचरतः सहायैः कृत्यम् ? तथाहि—
वज्रप्रकोष्ठकरजाग्रचपेटघातनिष्पिष्टदन्तिदशनोत्कटमौक्तिकौघः ।
"सिंहः सहायविकलोऽपि दलत्यरातीनन्तर्गतं ननु सदैककमेव सच्चम् ॥ १२ ॥

अपि च—

भीष्मोऽसौ युधि नैव शङ्कितमनाः स्वच्छन्दमृत्युर्यतः, पार्थोऽपीश्वरकेशवोर्षितबलो राधेयरक्षा रवेः ।
पौलस्त्योऽतिबलो भवादनुगुणा द्रोणादयोऽप्यन्यतो, यद् वीर्यं सहजं हरेरिव सदा तद् वीर्यवान् श्लाघ्यते ॥ १३ ॥
अन्यच्च यदुक्तं तातेन, यथा—अस्मदुच्छादितगतिगम्यः कथं भविष्यति ? इति, तत्रापि स्नेहोपचाराधीनस्तातः । यतः—
दुर्वारचापगुणकर्षकिणिप्रकोष्ठो, बाणावशीर्णरिपुचक्रविकीर्णतेजाः ।
शौर्यान्नुरागरसिको ललितोरुचेष्टो, भ्रूक्षेपमात्रगतिकां वसुधामटामि ॥ १४ ॥

विदूषकः — (सहसोपसृत्य) जयतु जयतु कुमारः (जयउ जयउ कुमारो) ।

कुमारः — सखे ! कास्ते राजा ? किंचेष्टो वा ? ।

विदूषकः — कुमार ! ण सम्मसुवलक्खीयइ । ता मुहुत्तमं इमीए कण्णंतेउरचित्तसालाए वीसममह । पुण इहद्विय
"स्येव सम्मं जाणिऊण गच्छिस्सामो ।

कुमारः — यदि पुनरिहस्थितौ काचित् कन्याऽऽवां पश्येदिति ! ।

विदूषकः — वयंस ! अविरुद्धं कणादंसणं ति ।

कुमारः — एवमिति । (तथा कुरुतः)

(ततः प्रविशति बन्धुमती चन्द्रलेखासमन्विता स्वैभवन्वातायनस्थिता ।)

चन्द्रलेखा — भेट्टिदारिए ! एस ते हिययदइओ, ता वीसत्थं पिच्छउ पियसही, जेउ अत्तणो णयणणिम्माणं सफ-
लत्तणं ति । इमाहिं चित्तवट्टियाहिं आलिहउ एयरुत्थं, पयडेउ विद्धदंसणेणं विण्णाणाइसयं ति ।

(ततो बन्धुमती दृष्ट्वा साशङ्केव विस्मयोऽफुल्लोचना गृहीतवर्तिका लिखितुमारब्धा ।)

बन्धुमती — संहि ! णयणाणि रूवदंसणमुयाणि, सवणा वि सदसवणमुया, सिज्जिरकरंगुली तगयहियया य कहं
णु णिम्मविसं चित्तं ? । अवि य—

पियदंसण-फंसुप्पित्यहिययसिज्जिरकरन्नादेसाइहं । पियसहि ! विसमाऽवत्था ण याणिमो कहं णु चित्तिस्सं ? ॥ १५ ॥
(लिखित्वा निर्वर्ण्य) संहि !,

१ कथं महती बारा निर्गतस्य ? । यदि पुनः प्रियवयस्यो जनकवचनोत्तेजितो मम प्रवृत्तिमनपेक्षेहाऽऽगच्छेत् । २ सिंहः जे ।
३ "वाहित" जे । ४ कुमार ! न सम्मसुवलक्ष्यते । तद् मुहुर्मेतस्य कन्यान्तःपुरचित्रशालायां विभाम्पावः । पुनरिहस्थितावेव सम्मम् ज्ञात्वा
गमिष्यावः । ५ जेव स, एष प्रस्तुतनाटकपरिसमाप्तिपर्यन्तं 'ध्येव' स्थाने सुप्रसूते 'जेव' इति पाठो बोद्धव्यः । ६ वयस्व ! अविरुद्धं कन्यादर्शन-
मिति । ७ "स्वमुक्तं" स । ८ भर्तृवारिके ! एष ते हृदयव्यतिः, तस्माद् विश्वस्तं पश्यतु प्रियसखी, नयनवात्मनो नयननिर्माणं सकलत्वमिति ।
आनिधिश्रवर्तिकाभिरालिखत्वेतद् रूपम्, प्रकटयतु विद्वदंशेन विज्ञानातिशयमिति । ९ सखि ! नयने रूपदर्शनोत्सुके, अवणावपि शब्दध्वनयोत्सुको,
स्वेत्कुराण्णुली तत्रतद्दया च कथं नु निर्मास्यामि चित्रम् ? । अपि च—

प्रियवयन-स्पर्शाऽऽकुलद्वन्द्वरेणुकराप्रदेशाऽहम् । प्रियसखि ! विषमाऽवस्था न जानामि कथं नु चित्रयिष्ये ! ॥ १५ ॥
सखि !,

चित्तगओ वि पिययमो किं पि [हु] तरलेइ माणसावेयं । अंगेहि सरस-पिय-कोमलेहिं किं पुण सरूवेण ? ॥ १६ ॥
किंच - निस्सकं मंतिउमादत्ता, ता णिहुयाउ सुणम्ह । (उमे कणं दत्वा तथा कुरुतः ।)

विदूषकः — भो ! मुमरसि तं जणणयण-मनोहारिणीं उवहसियरइरुवविन्मं पयट्टे जणुल्लालमयरहरे जा दिट्ठं चि ।

कुमारः — प्रियवयस्य ! 'स्मरसि' इति न सम्यगभिहितं भवता । यतः —

मतिविभ्रतेव हृदये केनाप्युत्कीलितेव लिखितेव । तन्मयमेव मम मनो वयस्य ! तस्याः कथं स्मरणम् ? ॥ १७ ॥
अपि च-वयस्य !

रूपं सा च मनोहरा चतुरता वक्त्रेन्दुकान्तिः स्फुटा, विव्वोका हृदयङ्गमाः स्मितमुधागर्भं च तद्भाषितम् ।

लावण्यातिशयः सखे ! पुनरसौ तत्प्रेक्षितं सस्पृहम्, मुग्धायाश्चरितं नितान्तमुभयं तत् केन विस्मर्यते ? ॥ १८ ॥

चन्द्रलेखा — मुयं भट्टिदारियाए जं भणियं कुमारेणं ? । तओ जं मए भट्टिदारियाए पुरओ पुव्वं मंतियं जहा 'अणुरायणिन्मो सो भट्टिदारियाए उवरिं' ति तं सव्वं सव्वं एवेव ।

बन्धुमती — अज्ज वि सहि ! संदिद्धं चेव ।

इतरा — कहं चिय ? ।

बन्धुमती — जइ पुण अण्णा का वि तहाविहा दिट्ठं चि भवे ! ।

इतरा — सहि ! मा एवं भण । जस्स तुमं एक्कसिं पि गोयरे णिवडिया सो तुमं वज्जिऊणं किं कहिं पि अण्णत्थ चित्तं णिवेसेइ ? । अवि य —

सहयारमंजरिं वज्जिऊण महमहियपरिमलुगारं । अहिलसइ अक्कलियं कहिं पि किं महुयरजुयाणो ? ॥ १९ ॥

बन्धुमती — सहि ! एस ते मह उवरिं पक्खवाओ, मह उण हिययं अज्ज वि संसयावन्नमेव । ता वीसत्था सुणम्ह । कयाइ विसेसाक्कमो भवे ।

कुमारः — सखे ! अद्य पुनरहं जाने-

पादावनतं त्यक्त्वा मामतिनिष्ठुरतया रूपोपेता । पुनरपि हृदयमनुगता किं चान्यत्रेति नो जाने ॥ २० ॥

बन्धुमती — (सोद्रेगं दीर्घं निःश्वास्य) मुयं सहीए जमणेण पराहीणहियएण मंतियं ? । ता किं अज्ज वि तुमं सव्वं एवेव ? , जओ दंसणं विहाय पायवडणगोयरं किं कयाइ अयं जणो गओ ? । कुओ अम्हाण एत्तियाणि भागहेयाणि ? । ता अज्ज वि किं तुमं हियय ! जलभरिओ व्व घडओ ण सयहा भेयमुवगच्छसि ? । किं तुह निव्वंधकारणमिति । (भगिचा मूर्छिता पतति ।)

चन्द्रलेखा — सैमस्सस्सउ समस्सस्सउ पियसही । कयाइ तुमं एवेव चिंताणीया सुविणयगया भवे । ता पुणरवि सुणम्ह । (समाश्रस्य तथा कुरुतः ।)

चित्तगतोऽपि प्रियतमः किमपि [सख] तरलवति मानसावेगम् । अङ्गैः सरस-प्रिय-कोमलैः किं पुनः स्वरूपेण ? ॥ १६ ॥

किंच निःशङ्कं मन्त्रयितुमारब्धौ, तद् निभृते शृणुवः ।

१ भो ! स्मरसि तां जननयन-मनोहारिणीं मुपहसितरतिकल्पविभ्रमं प्रवृत्ते जनोच्छलितमकरपट्टे या दृष्टा ? इति । २ 'अपि च' इति सूत्रस्तकै नास्ति । ३ साऽतिमनोहरा च' जे । ४ भूतं भर्तृदारिकाया यद् भणितं कुमारेण ? । ततो यन्मया भर्तृदारिकायाः पुरतः पूर्वं मन्त्रितं यथा 'अनु-रागनिर्भरः स भर्तृदारिकाया उपरि' इति तत् सर्वं सत्यमेव । ५ अथापि सखि ! सन्दिग्धमेव । ६ कथमिव ? । ७ यदि पुनरन्या काऽपि तथा-विधा दृष्टेति भवेत् । ८ सखि ! मैवं भण । यस्य त्वमेकतोऽपि गोचरे निपतिता स त्वां वर्जयित्वा किं कुत्राप्यन्यत्र चित्तं निवेशयति ? । अपि च-

सहकारमञ्जरीं वर्जयित्वा मधमचितपरिमलोद्गाराम् । अभिलषत्येककलिकं कथमपि किं महुकरजुवा ? ॥ १९ ॥

९ सखि ! एष ते समोपरि पक्षपातः, मम पुनर्हृदयमयापि संक्षयापन्नमेव । तद् विश्वस्ते शृणुवः । कदाचिद् विशेषावगमो भवेत् । १० भूतं सख्या यदनेन पराधीनहृदयेन मन्त्रितम् ? । तत् किमथापि तव सत्यमेव ? , यतो दर्शनं विहाय पादपतनगोचरं किं कदाप्ययं जनो भवतः ? । कुतोऽस्मात्कमेतावन्ति भागधेयाणि ? । तदथापि किं त्वं हृदय ! जलभृत इव घटो न सतथा भेदमुपगच्छसि ? , किं तव निर्वन्धकारणम् ? इति । ११ समाश्रयतां समाश्रयतां प्रियतमी । कदाचिद् त्वमेव चिन्तानीता स्वागता भवेः । तत् पुनरपि शृणुवः ।

कुमारः — कथं पुनर्लक्षयति भवान् यथाऽसौ सानुरागा? इति ।

विदूषकः — 'किमेत्थ जाणियव्वं? अचंतमुक्खो वि जाणइ सहावाइरिचेहिं विलासेहिं हिययगयं पिययमाणुरायं, किं पुण अम्हारिसो पंडियजणो? ।

कुमारः — के पुनस्ते विलासाः यैरुपलक्ष्यते स्नेहः? ।

विदूषकः — वयंस ! जइ तुमं पि अप्पणेणं खेव कूरेणं पंडिओ करियव्वो ता सुणसु-

णिद्धमहुरा य दिट्ठी अलसं गमणं वियंभणं अहियं । इय एवमादिभावा पियानुरायं णिवेएन्ति ॥ २१ ॥

स चिय अंगदवणा स चिय दिट्ठी ण होइ महिलाणं । णामे वि तस्स गहिण किं पुण सहसा पिण दिट्ठे? ॥ २२ ॥

ईसिवियसंतणयणं कपोलमूलुल्लसंतसंवियासं । वयणं चिय महिलाणं साहइ हिययट्ठियं दइयं ॥ २३ ॥

कुमारः — सत्यमेव पण्डितो भवान् । एतत् तु भवता कुतोऽवसितं यथा 'असौ सानुरागा?' इति ।

विदूषकः — किं न लक्खियं भवया? । जहा-तीए तुमं दट्ठणं समे वि खलिया गती, पुणरपि संठवियं ल्हसियमोढणयं !, ता एवमादिवियारेहिं साहिओ हिययावेओ । ण य कमलायरं वज्जिऊण अण्णं [संरं] रायहंसमाला अहिलसइ । ता छट्टेउ पियवयंसो पेममुलहं अपए विपयासकं ति । किंच-भवया दिट्ठो राइणा पेसिओ कंचुई? ।

कुमारः — न दृष्ट इति ।

(ततः प्रविशति कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी — एष कुमारश्चायासेवनेन स्वस्थस्तिष्ठति । य एषः —

अङ्गसमेतोऽनङ्ग इव राजते केवलं तु रतिरहितः । साऽपि समीपं यास्यति यद्यनुकूलं भवेद् दैवम् ॥ २४ ॥

यावदुपसर्पामि । (उपसृत्य च) जयतु जयतु कुमारः । कुमार ! राजादेशात् किञ्चिद् वक्तव्यमस्ति, ततोऽस्यामेव चित्रशालिकोपरिभूमिकायां सुखासनस्थो भवतु कुमारः ।

कुमारः — (विचित्रमुखमवलोक्य) एवं भवतु । को दोषः? । आदेशय पन्थानम् । (इत्यभिधाय शनैः शनैः सस्रस्व आरो-
हुमारब्धः ।)

कञ्चुकी — आगच्छत्वागच्छतु भवान् ।

(सर्वेऽपि परिक्राम्यन्ति ।)

चन्द्रलेखा — संहि ! इह आरुहिउमादत्ता । ता गच्छिऊण अण्णत्थ कुडुन्तरियाओ सुणम्ह ।

कञ्चुकी — (वातायनस्थां पङ्क्तस्तस्मिन्निष्ठं) इदमासनम्, आस्थीयतामत्र । (कुमारस्तथा करोति । सुखासनस्थं च कुमारं कञ्चुकी वक्तुमुपचक्रमे) कुमार ! राजा समाज्ञापयति, यथा — केन न विदितं भवदीयं राष्ट्रकूटं कुलम्?, केन वा न ज्ञातः सकल-
पार्थिवचूडामणिः प्रसाधिताशेषदिग्बलयो जनितनिःशेषकमलाकरः अपूर्व इव शरत्समयः चन्द्रापीडामिधानस्ते पिता?,
रूप-कला-विज्ञान-विनयास्तु प्रत्यक्षीकृता एव, तदिहागमनेन शोभनमकारि भवता, गृह्णातु च अस्मद्गतये राज्यार्थं बन्धुमतीं
च कन्यकामिति ।

१ किमत्र ज्ञातव्यम्? । अत्यन्तमूर्खोऽपि जानाति स्वभावातिरिक्तैर्विलाससङ्घट्टयगतं प्रियतमानुरागम्, किं पुनरस्मादृष्टः पण्डितजनः? । २ 'व्यं? । सहावाइ' सू । ३ वयस्य ! यदि त्वमप्यात्मीयेनैव कूरेण पण्डितः कर्तव्यस्तत् शृणु —

स्निग्धमधुरा च दृष्टिरलसं गमनं विजृम्भणमधिकम् । इत्येवमादिभावाः प्रियानुरागे निवेदयन्ति ॥ २१ ॥

सैवाज्ञस्थापना सैव दृष्टिर्न भवति महिलानाम् । नाम्न्यपि तस्य गृहीते किं पुनः सहसा प्रिये दृष्टे? ॥ २२ ॥

ईषद्विकसन्नकलं कपोलमूलोल्लसत्सविकासम् । वदनमेव महिलानां कथयति हृदयस्थितं दयितम् ॥ २३ ॥

४ संवियासि जे । ५ किं न लक्षितं भवता? । यथा-तस्याः त्वां दृष्ट्वा समेऽपि स्थलिता गतिः, पुनरपि संस्थापितं कस्तमुत्तरीयम्, तदेवमादिविकारैः
कथितो हृदयावेगः । न च कमलाकरं वर्जयित्वाऽन्यं राजहंसमालाऽभिलषते । तद् व्यजतु प्रियवयस्यः प्रेममुलभासपदे विपदाशङ्कामिति । किंच-भवता दृष्टो
राज्ञा प्रेषितः कञ्चुकी? । ६ सखि ! इह आरोहुमारब्धः । तद् गवाऽन्यत्र कुण्यान्तरिते वृणुवः । ७ 'चण्ढापीडा' जे ।

चन्द्रलेखा — पियेसहि ! दीसइ ते मणोरहतरुणो कुसुमुगमो, ता सासंकमिव मह हिययं, ण याणामि किमेस भणिस्सइ ? चि ।

बन्धुमती — भहं पि ।

कुमारः — कञ्चुकिन् ! तिष्ठतु तावद् राज्याधर्मम्, प्रेषितो मया लेखवाहकः पितुरन्तिकं वार्तान्वेषणार्थं यावदसा-
वागच्छति । कन्या तु युक्ता ग्रहीतुम्, उचित एव सम्बन्धो राज्ञा सह कर्तुम्, किन्तु न शक्यमन्यतः प्रवृत्तं चित्तमन्यतो
दातुम् ।

बन्धुमती — हाँ ! हय म्हि मंदभाइणी । एवं पि सुणिऊण पियवयणं ण गच्छंति मे पाणा । (मूर्च्छां नाटयति ।)

चन्द्रलेखा — सैमस्सस्सउ समस्सस्सउ भट्टिदारिया । क्याति तुहाणुगयचित्तो 'एसा पुण अण्ण' चि मण्णंतो एवं
मंतेइ कुमारो ।

बन्धुमती — कुओ एत्तियाणि अम्हाणं भागधेयाणि ? । अहवा ऐयं पि विट्ठिलसिण सम्माइ चि । (ततः समाश्रयति ।)

विदूषकः — वयंस ! अपडिहयसासणो खु राया, पढमा य पत्थणा, ता ण जुज्जइ वयणमण्णहाकाउं राणो ।

कुमारः — कञ्चुकिन् ! यद्येवं निर्वन्धो भवतः तदानीं निवेदय राज्ञे, यथा — यद् राजा समादिशति तदेव क्रियत
इति, सज्जोऽयं जनः ।

(परिक्रम्य निष्क्रान्तः कञ्चुकी ।)

विदूषकः — (चित्रं दृष्ट्वा) भो वयस्स ! तुमं पि केणावि लिहिओ ।

कुमारः — (निर्वर्ण्य) एवमेवैतत् । तत् केन पुनः किंनिमित्तं वा लिखितः ? ।

विदूषकः — सेव्वमेयंमहं जाणामि ।

कुमारः — महामन्त्रिन् ! कथय यदि जानीषे ।

विदूषकः — "किमेत्थ जाणियव्वं ? । जा इयं कञ्चुइणा तुम्ह निवेइया रायदुहिया तीण संपयं येव तुमं लिहिओ,
जओ चित्तवट्टियासमेओ समुन्नाओ इह येव चिट्ठइ । निमित्तं पुण अणुरायपयडणं ।

कुमारः — विज्ञानाविष्करणमेतत् । अनुरागस्य तु किमायातमत्रादृष्टपूर्वं जने ? ।

विदूषकः — कुंमार ! जइ पुण एसा सा चेव भवे जा अम्हेहि उज्जाणगमणावसरे दिट्ठ चि । किं न संभाविज्जइ
विट्ठिलसियस्स ? । जओ —

जं चित्तिज्जइ हियण नेव जुज्जइ ण चेव जुत्तीहिं । विहडण-संघडणपरो तं पि हयासो विही कुणइ ॥ २५ ॥

तौ वयंसो वि इमाहिं येव चित्तवट्टियाहिं तं हिययगयपडिच्छंद्यमवलोकयंतो एयस्स समीचे अट्ठिल्लित्तु, जओ ण
कयाइ रेहइ रइरहिओ रइणाहो चि ।

कुमारः — यदाह भवान् । (इति भगित्वा लिखितुमारब्धः ।)

चन्द्रलेखा — "पियसहि ! संपयं फुट्टिस्सइ "थिल्लं । णिव्वडिस्सइ जा कावि कयत्था एयस्स हिययगय चि ।

१ प्रियसखि ! इत्येते तव मनोरथतरोः कुसुमोद्गमः, तत् साशङ्कमिव मम हृदयम्, न जाने किमेव भविष्यति ? इति । २ ममापि । ३ हा !
हृताऽस्मि मन्दभाविनी । एवमपि श्रुत्वा प्रियवचनं न गच्छन्ति मे प्राणाः । ४ समाश्रयतां समाश्रयतां भर्तृदारिका । कदाचित् त्वदनुगतचित्तः 'एषा
पुनरन्या' इति मन्वमान एवं मन्त्रयति कुमारः । ५ कुत एतावन्त्यस्माकं भागधेयानि ? । अथवैतदपि विधिविलसिते सम्मातीति । ६ एवं पि जे ।
७ वयस्य ! अप्रतिहतदासनः खलु राजा, प्रथमा च प्रार्थना, तन्न युज्यते वचनमन्यथाकर्तुं राज्ञः । ८ भो वयस्य ! त्वमपि केनापि लिखितः ।
९ सर्वमेतदहं जानामि । १० 'मेवमहं जे' । ११ किमत्र ज्ञातव्यम् ? । वा इयं कञ्चुकिना तव निवेदिता राजदुहिता तया साम्प्रतमेव त्वं लिखितः,
यतश्चित्रवर्तिकासमेतः समुद्गमक इहैव तिष्ठति । निमित्तं पुनरनुरागप्रकटनम् । १२ कुमार ! यदि पुनरेषा सैव भवेद् याऽऽवाभ्यामुद्यानगमनावसरे
दृष्टेति । किं न सम्भाव्यते विधिविलसितस्य ? । यतः —

यच्चिन्तयते हृदयेन नैव युज्यते न चैव युक्तिभिः । निषटन-सङ्घटनपरस्तदपि हृताद्यो विधिः करोति ॥ २५ ॥

तद् वयस्योऽप्याभिरव चित्रवर्तिकाभिस्तां हृदयगतप्रतिच्छन्दकामवलोकयन्नेतस्व समीपेऽभिलिखन्तु, यतो न कदापि राजते रतिरहितौ रतिबाध
इति । १३ तो खु । १४ प्रियसखि ! साम्प्रतं स्फुटिष्यति शिथ-रहस्यम् । निष्कस्यते वा काऽपि कृतार्था एतस्य हृदयगतेति । १५ निर्वहंस् ।

कुमारः — (अभिलिख्य निर्वर्ण्य च) वयस्य ! न सम्यक् तस्या रूपानुरूपं किञ्च विधातुम् । पश्य—

घुणाक्षराकारमदो मतिर्मे, मन्ये विधात्राऽपि न शक्यमन्यत् ।

रूपं विधातुं रुचिराङ्गयष्टेः कुर्यात् कथं तेदृशुवि मादृशोऽन्य (? इतः) ॥ २६ ॥

तद् वयस्य ! मा कश्चिदन्यथा सम्भावयेदिति निर्गच्छावः ।

विदूषकः — एवं करेम्ह, एदु एदु भवं ।

चन्द्रलेखा — 'पियसहि ! णिग्गया एए । ता पेच्छम्ह, का से हिययदइया जा अभिलिहिया ? ।

(निर्गत्यावलोक्य च)

चन्द्रलेखा — 'पियसहि ! तुमं एवेव लिहिया । ता जं मए पुच्चं मंतियं तं सव्वमेव कुमारेण तुमं लिहिऊण सेंचं कयं । ता समस्ससउ समस्ससउ पियसही ।

(बन्धुमती सहर्षा सलज्जेव संवृत्ता ।)

कुमारः — सखे ! मा कश्चिद्विनयमस्माकं सम्भावयिष्यति, अतो गत्वाऽस्मल्लिखितं चित्रमपनय ।

विदूषकः — एवं करेमि । (समारूढः । विधृतश्च चन्द्रलेखा । ततो वातायनस्थः कुमारमाह्वयति, पूकरोति च) भो भो पिय-
वयंस ! अहमेत्थ केणावि धरिओ । ता सइं एवेव कुमारो आगंतूणं मं मोयावेउ ।

(कुमारस्तथा करोति । पश्यति च समारूढः चन्द्रलेखासमन्वितां बन्धुमतीम् । परस्परानुगमं नाटयतः ।)

कुमारः — (आत्मगतम्) अहो ! अतिशयवतां गुणानामेकत्र समवायः । तथा हि—

कान्त्या चन्द्रमसं जिगाय सुमुखी नीलोत्पलं चक्षुषा, गत्या हंसमशोकपल्लवगुणं पाण्याकृतिर्वाधते ।

सचामीकरचारुकुम्भयुगवत् तन्व्याः स्तनौ राजतः, श्रोणीमन्मथमन्दिरोरुयुगलं स्तम्भायतेऽस्याः स्फुटम् ॥ २७ ॥

अपि च—

नामूर्ता न च कौमुदा रतिपतेर्नो पञ्चमोद्गीतयो, ये ते स्तम्भन-मोहनादिकमधु(धो)र्वाणा जगद्व्यापिनः ।

नूनं भूधनुषः कटाक्षवपुषो नेत्रत्रिभावोद्भवास्तेऽमुष्याः कथमन्यथेक्षणगुणा मामाकुलं कुर्वते ? ॥ २८ ॥

(प्रकाशम्) सखे ! केन विधृतः ? ।

चन्द्रलेखा — णिणु अम्हेहि ।

बन्धुमती — (अपवार्य) ईला चंदलेहे ! जइ पभवसि अत्तणो सरीरगस्स ता तुमं एवेव जमेत्थ भणियव्वं तं सव्वं भणसु चि ।

चन्द्रलेखा — भैंट्टिदारिण ! सव्वमहं पत्तावसरं भणिस्सामि । (प्रकाशम्) किमम्हाणं पियसही लिहिय ? चि 'सावराहो' चि काऊण धरिओ ।

कुमारः — अस्त्ययमपराधः । नास्माभिर्ज्ञातम्, यैथा—एषा ते प्रियसखी । इयं त्वस्माकमैतीवचिच्छेदकारिणीति कृत्वा लिखिता ।

विदूषकः — अये असमंजसकारियाओ ! एस अम्हाणं पियवयंसो तुम्हेहि किं लिहिओ ? ।

- १ तद्विधिमां जे । २ एवं कुर्वं, एतद् एतद् भवान् । ३ प्रियसखि ! निगतावेतौ । तत् प्रेक्षावहे, का तस्य हृदयव्यतिथिः याऽभिलिखिता ? ।
४ प्रियसखि ! त्वमेव लिखिता तद् यन्मया पूर्वं मन्त्रितं तत् सर्वमेव कुमारेण त्वां लिखित्वा सत्यं कृतम् । तत् समाश्रितुं समाश्रितुं प्रियसखी ।
५ सखीकयं सु । ६ एवं करेमि । भो भो प्रियवयस्य ! अहमत्र केनापिधृतः । तत् स्वयमेव कुमार आगत्य मां मोक्षयतु । ७ नन्वावाभ्याम् ।
८ सखि चन्द्रलेखे ! यदि प्रभवस्यात्मनः शरीरकस्य तत् त्वमेव यदत्र भणितव्यं तत् सर्वं भण इति । ९ चन्द्रलेहे जे ।
१० भैंट्टां सु, भर्तृदारिके ! सर्वमहं प्राप्तावसरं भणिष्यामि । किमस्माकं प्रियसखी लिखिता ? इति 'सावराधः' इति कृत्वा धृतः । ११ तथैषा जे ।
१२ 'मयन्तं चित्तं' जे । १३ अपि असमंजसकारिके ! एषोऽस्माकं प्रियवयसो युवाभ्यां किं लिखितः ? ।

चन्द्रलेखा—जेण निमित्तेण अहं पियसहि ति ।

विदूषकः—ता दोणं पि सावराहाणं अहं समारणं करेमि । (इति भणित्वा नायिका-नायकयोः करं करेण लगयति ।)

बन्धुमती—अज्जउत्त ! कओ परिहासो, जाणिया उवरोहसीलया तुहं, ता मुंच करं ।

नायकः—

चिरमाशंसितस्पर्शो येन स्वप्ने प्रसारितः । स कथं मुच्यते प्राप्तः परितोषकरः करः ? ॥ २९ ॥

चन्द्रलेखा—कुमार ! न जाणामि किं कहिस्सि कंचुई ? इइ उच्चम्मंइ मे हिययं ।

विदूषकः—'भोदि ! जं कहउ तं कइउ कंचुई, विचं खु पाणिप्रदणं !

(ततः प्रविशति कञ्चुकी । मुञ्चति च करं कुमारः ।)

कञ्चुकी—दिष्टया वर्धस्व । सर्वं यथावस्थितमेव निवेदितं मे राजराजाय । राज्ञापि सहर्षेण सांवत्सरिकः समाहूय पृष्टः । तेनाप्यथैवाऽऽसन्नकाल एव लग्नसमयो निवेदितः । ततो राजा सपरिजनः सान्तःपुरो विवाहसामग्रीं प्रति समाकुलीभूतः । तद् गच्छतु भवान् सवधूकः । भवदागमनोन्मुखोऽविधवस्त्रीजनस्तिष्ठतीति । किञ्च—

राजा समाकुलोऽसौ तिष्ठत्यधुनैव परिजनसमेतः । गन्तव्यं सह बध्वा त्वरतु भवान् ढौकते कालः ॥ ३० ॥ इति । हहहः ! विरूपमापतितम्, 'ढौकते लग्नम्' (इति पठति ।)

बन्धुमती—हयास ! पडिहयं खु ते वयणं ।

कुमारः—आर्ये ! कुतोऽस्य दोषः ? । यतः—

अवश्यम्भाविनो भावाः सूचयन्ति यथा तथा । अनागतनिमित्तानि दोषवान् योऽवधीरयेत् ॥ ३१ ॥

किञ्च—

प्राप्तं दर्शनमुत्सुकेन मनसा यत् काङ्क्षितं सर्वदा, लब्धं सर्वसुरातिशायि विधिवत् स्पर्शोरुसौख्यं ततः । कर्णौ शब्दकुतूहलाकुलतरौ वाक्यामृतापूरितौ, जातं जन्मफलं भवत्वखिलितं यद् भावि सज्जा वयम् ॥ ३२ ॥

कञ्चुकी—कुमार ! किमनेनामङ्गलवचनेन ? । तद् गच्छतु भवान् । त्वमपि वच्छे ! गच्छ, सज्जा भव ।

([सर्वे] परिक्रम्य निष्क्रान्ताः ।)

कञ्चुकी—अहमपि राजादेशं पौराणां निवेदयामि । (परिक्रम्य) भो भोः पौराः ! राजा समादिशति, यथा-वच्छाया विवाहसमयो वर्तते, तत् उच्छृतध्वज-पताकं कृतविपणिशोभं पुरं कुरुध्वम् । (परिक्रम्य अवलोक्य च) अये ! महती वेला वर्तते, महान्श्च निनादो राजकुले श्रूयते, ततो न विद्मः किमभूद् राजकुले ? । महती च मे वारा निर्गतस्य । ततो राजकुलाभिमुखमेव यास्यामि ।

(नेपथ्ये)

हा ! कण्टम्, धिगाहो ! कण्टम् ।

कञ्चुकी—(सशङ्कः) किमेतद् ? (इति कर्णं ददाति । पुनरपि कण्टगर्भमाकर्ण्य) अये ! राजध्वनिरिव लक्ष्यते, तत् किमेतद् स्यात् ? इति । ततो राजान्तिकमेव यास्यामि । (इति निष्क्रान्तः ।)

१ येन निमित्तेनास्माकं प्रियसखीति । २ तद् द्वयोरपि सापराधवोरहं समारचने करोमि । ३ आर्यपुत्र ! कृतः परिहासः, शतपरोधवीर्यता तव, तद् मुञ्च करम् । ४ कुमार ! न जाने किं कथयिष्यति कञ्चुकी ? इत्युत्ताम्बति मे हृदयम् । ५ 'इ मह हिं जे' । ६ भवति ! यत् कथयतु तत् कथयतु कञ्चुकी, वृत्तं खलु पाणिप्रदणम् । ७ हाहा ! प्रतिहतं खलु ते वचनम् । ८ विविधस्पर्शो जे ।

(ततः प्रविशति शोकापन्नः चित्रलेखाभिधानया राजमहिष्या सह राजा विलेपश्च परिवारः ।)

राजा — (दीर्घं निःश्वस्य) हा ! हतोऽस्मि मन्दभाग्यः । हे विधे ! अनार्य ! सर्वदा अकार्यरतस्यापि ते न युक्तमीदृशं वैशसमस्मिन्नवसरे विधातुम् । यतः —

वृत्त्यन्मत्तविमर्दमर्दितमणिप्रोत्कीर्णचूर्णाकुलं, व्रुट्यद्दारलतावितानविगलन्मुक्ताफलैरर्चितम् ।

क्षीवस्त्रीजघनस्थलोन्मिहतपतत्काञ्चीप्रदामाविलं, जातं मद्भवनं विवाहसमये तत् कं न विस्मापयेत् ? ॥ ३३ ॥

क्षिप्तैर्दिक्षु समन्ततः सुरभिभिर्वासैर्जगत् पूरितं, शृङ्गैश्चन्दनकुङ्कुमोदकभृतैस्तन्मज्जनैः क्षालितम् ।

आतोद्यध्वनिभिः सनूपुररवैर्व्याप्तं समस्तं तत, इत्थं विस्मितलोकलोचनकरः पुत्र्या विवाहः कृतः ॥ ३४ ॥

अवश्यम्भाविनश्च भावा भवन्तः कार्यविधानोलुक्तया भवितव्यतया समग्रसामग्रीकाः क्रियन्ते, अन्यथा क्वाप्य कुमारः ? कुतो वाऽस्मद्विद्वदानम् ? कथं वा विवाहानन्तरमेव कृष्णसर्पशिशुगर्भायाः कन्याभरणस्थगितपटलिकाया दास्ये-
हानयनम् ? कुतो वा चपलतया कुमारहस्तप्रक्षेपः ? केन वा प्रकारेण तद्दर्शनानन्तरमेव कुमारस्य पञ्चत्वगमनम् ? इति ।
अहो ! दुर्निवारता व्यसनोपनिपातानाम् । सर्वथा स्पृशन्ति संसारान्तर्वर्तिनं नियतभाविनो भावाः । चिरयति च तत्संस्कार-
वार्तान्वेषणार्थं प्रेषितः कञ्चुकी ।

(ततः प्रविशति कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी — देव ! वत्सयाऽपि कपूरचन्दनौऽगुरुकाष्ठचितायां चितायां सुद्रुतहुताशननीरन्ध्रभीषणप्रवृद्धज्वालावि-
तानावृतदेहया लक्ष्मीधरकुमारमालिङ्ग्याऽऽत्मा दग्धाः ।

राजा — कृतशाश्वतयशोमयदेहायास्तस्याः किं दग्धम् ? वयमेवात्रातर्कितोपनतातिदुःखाशनिवह्निना दग्धाः ।

चित्रलेखा — हाँ ! हय म्हि मंदभाङ्गी । हा हयास देव ! निष्करुण ! ण जुत्तं तुह परिसं ववहरिं । हा पुत्त !
लहिऊण अणुरायणिव्भरं तिहुयणे वि अइदुल्लहं भत्तारं न पूरिया अम्हाण मणोरहा । हा पुत्त ! कया हं तुमए दुक्खाण
भाङ्गी । (इति मूर्छिता पतति ।)

मदनिका — संमस्ससउ समस्ससउ सामिणी ।

चित्रलेखा — (समाश्रत्य दीर्घं निःश्वस्य च) अज्जउत्त ! किं तुमए एक खेव मह मंदभाङ्गीए धूया मच्चुमुहं गच्छन्ती ण
धरिया ? ।

राजा — अल्पमिदमुच्यते, इदमपि वक्तव्यं भवत्या—कुमारः किं न धृतः ? । किं कोऽपि केनचित् कथञ्चिद् मृत्युमुखा-
भिमुखं जिगमिषुर्विधारयितुं शक्यः ? । यतः —

मन्त्रैर्योगारसायनैरनुदिनं शान्तिप्रदैः कर्मभिर्युक्त्या शास्त्रविधानतोऽपि भिषजा सद्गन्धुभिः पालितः ।

अभ्यङ्गैर्वसुभिर्नयेन पटुना शौर्यादिभी रक्षितः, क्षीणे त्वायुपि किं क्वचित् कथमपि त्रातुं नरः शक्यते ? ॥ ३५ ॥

न शक्नोमि च ईदृशं कारुण्यं दृष्ट्वा क्षणमपि गृहे स्थातुम् । तद् गच्छ त्वम् । अहं तु पूर्वपुरुषगृहीतप्रव्रज्याग्रहणेन
स्वकार्यमनुतिष्ठामि । अपि च—

कृत्वा बन्धुमतीं विवाहमुखितां लक्ष्मीधरस्यानुगां, पुत्रस्यापि समस्तविस्मयकरं राज्याभिषेकं ततः ।

कर्ताऽस्मीति समीहितं समधिया तत् साम्प्रतं चेष्टयते, आर्ये ! किं करवाणि ? यन्न सहते देवं क्रमेणेप्सितम् ॥ ३६ ॥

१ विभक्त्यं सू, विभक्त्यं जे । २ मृत्युन्मत्तं जे । ३ ना-ऽमहं जे । ४ हा ! हतोऽस्मि मन्दभागिनी, हा हताश देव ! निष्करुण !
न युक्तं सवेदसं व्यवहृतुम् । हा पुत्रि ! लक्ष्म्याऽनुरागनिभं त्रिभुवनेऽप्यतिदुर्लभं भर्तारं न पूरिता अस्माकं मनोरथाः । हा पुत्रि ! कृताऽहं
त्वया दुःखानां भागिनी । ५ समाश्रितुं समाश्रितुं स्वामिनी । ६ आर्यपुत्र । किं त्वयैकेव मम मन्दभागिन्या दुहिता मृत्युमुखं गच्छन्ती न
धृता ? । ७ राजाभि जे ।

चित्रलेखा — हो ! हय मिह मंदभाइणी । (इति मूर्छिता पतति ।)

मदनिका — समस्ससउ समस्ससउ सामिणी ।

चित्रलेखा — (सामाधस्योत्थाय च) अज्जउत्त ! किमणेणं खए खारनिवेद(?वाड)णेणं ? । अज्ज वि मह असंजा-
यवलो पुत्तओ । ता उवरमउ एरिसाओ ववसायाओ अज्जउत्तो । (इति रोदिति ।)

राजा — अये ! स्त्रीणां रोदनेनैव स्नेहाविष्करणम्, नानुष्ठानेन ।

गलता नेत्रेण सदा कोमलमिव लक्ष्यते मनः स्त्रीणाम् । चेष्टासु तदेव पुनः वज्रकणीकायते नियतम् ॥ ३७ ॥

अपि च—आर्ये ! संसारविलसितमवहिता शृणु—

एतत् कार्यं परुन्मे नियतिपरिणतं चैषमोऽन्यद् विधेयं, एतत् त्वद्यैव कृत्यं झटिति निपतितं साम्प्रतं कार्यमेतत् ।

स्पर्धातस्त्यक्तखेदं जगति परिणतानित्यमेतान् पदार्थान्, विस्तीर्णं दीर्घहस्तो लिखति जनमनश्चित्रमुप्तः प्रमार्ष्टि ॥ ३८ ॥

शिशोस्तु—

यदुपात्तमन्यजन्मनि श्रुभमश्रुभं वा स्वकर्मपरिणत्या । तच्छ्रवयमन्यथा नो कर्तुं लक्ष्मीधरस्येव ॥ ३९ ॥

भद्रं भवतु भवत्यै शिशुरपि कल्याणभाक् सह जनेन । सच्छीलवांश्च रक्षोऽप्यहमपि मोक्षं प्रति यतिष्ये ॥ ४० ॥

(इति निष्क्रान्ताः [सर्वे] ।)

॥ प्रथमोऽङ्कः समाप्तः ॥

[समाप्तमिदं विबुधानन्दं नाम नाटकम्]

तओ राइणा गरुयसंवेगावण्हियएणं मंतिणो विमलमइस्स मुहं पलोइयं । तओ लद्धावसरेण भणियं मंतिणा-
महाराय ! णिसुयं जमणेण संसारसरुवं णिवेइयं ? । राइणा भणियं—किं सुएणं ? पच्चक्खं चेव दिट्ठमणुहविज्जइ य । तओ
तमायण्णिऊण भणियं मंतिणा—देव ! सुणसु—

संसारमहाडइगरुयविसयमायण्हियाए णडिण्हिं । इह अमुणियमुहयरसेहिं खिज्जियं जंतुहरिणेहिं ॥ ६९ ॥

किंच—

वियसंतदलउडुम्मिळ्ळुमालईसवलकुंतलकलावो । किं नरयवडणधरणेकपच्चलो जायइ पियाण ? ॥ ७० ॥
ईसीसिवलन्तउडुच्चिच्छिपेच्छियं सुंदरीण सवियारं । इह संभाविज्जइ किं कयाइ णरयग्गिणिच्चवणं ? ॥ ७१ ॥
जोच्चणमयणुम्मिळ्ळन्तपंडुगंडयलवयणससिविम्बं । णिच्चवणकारणं किं कयाइ णरयग्मितवियाण ? ॥ ७२ ॥
कोमलमुणालवेळ्ळहलवाहुलइयाजुयं ससिमुहीणं । किं होइ कयाइ वि णरयपडणपडिरुम्भणसमत्थं ? ॥ ७३ ॥
उत्तत्तकणयकलसोरुमिलियचकलियथोरथणवैट्ठं । वीसामत्थामं किं कयाइ भवजलधिबुड्ढाण ? ॥ ७४ ॥
सुविहत्ततिवल्लिगंभीरणाहिमज्जो वि सुन्दरंगीण । णियकम्मपरिणईए ताणं मणयं पि किं कुणइ ? ॥ ७५ ॥
णवघडणकंचिदामोरुभूसिओ वियडरमणपम्भारो । अट्ठोरणरयपायालवडणरक्खक्खमो किं सो ? ॥ ७६ ॥
रंभोरुगव्भसच्छहजंघाजुयलं पि पंकयमुहीण । कम्मवसयं णरं किं धरेइ णरयम्मि निवडन्तं ? ॥ ७७ ॥
इय पंकयदलचलणाओ सयलरुइरंगपत्तसोहाओ । किं होन्ति णरयसरणं भवम्मि नरनाह ! महिलाओ ? ॥ ७८ ॥

अवि य—

देहसुहत्थं तम्मसि एसो पुण णेय पुच्छइ कयाइ । होइ विरसावसाणो विडम्बणेकवसिओ णेहो ॥ ७९ ॥

किंच—

अइदुलहं मणुयत्तं विसमा कम्माण परिणइ दुरन्ता । लहिऊण विवेयमओ तं कीरउ जं असामण्णं ॥ ८० ॥
तओ सुणिऊण वियलियगुरुकम्मभारेण उम्मिळ्ळंतमुहविवेएणं भणियं राइणा—एवं कीरइ चि, किंतु—
अइविसमा पच्चज्जा विसया वियसंतविसतरुसरिच्छा । चित्तवियाराहारं आहारं ता णिरुंभेमो ॥ ८१ ॥

तओ गंतूण आयरियसमीवें, णिसुणिऊण जिणदेसियं धम्मं, काऊण अट्ठदिवसे सव्वाययणेषु अट्ठाहियामहिमं, दाऊण
अंध-किविणाइयारणं महादाणं पडिवन्नो अणसणं ति । ठिओ बावीसइ दिवसे पच्चदमाणसंवेओ अणसणविहिणा । तओ कालं
काऊण उप्पण्णो ईसाणे कप्पे सिरिप्पमे विमाणे सत्तपलिओवमाऊ ललियंगयाभिहाणो देवो चि । इयरो वि
सुबुद्धीं महारायमरणसोगसंवेगावण्हियओ सिद्धायरियसमीवे जहुत्तविहारं परिपालियसामायिओ कालं काऊण तत्थेव
ईसाणे कप्पे समहियदोसागरोवमाऊ इंदसामाणियत्तणेण समुववण्णो चि । ललियंगयस्स भवियच्चयाणिओएणं सयंपभा
णाम महादेवी ठितीखएणं चुया । तओ सो दइयासोयमोहियमई परिचत्तणिययवावारो गुरुसोयसागरावगाहो परिदेवमाणो
तेण पुव्वभवमंतिणा इंदसामाणियदेवेणमागतूणं भणिओ जहा—भो महींसत्त ! किमेवं महिलत्थचिंतापिसाइयाए अण्णा आया-
सिज्जइ ? । तओ तमायण्णिऊण भणियं ललियंगएण—“मिच्च ! सुणसु, सयलसंसारमुहाण कारणं महिलाओ, अवि य—

दोगच्चं पि ण णज्जइ विहवे लीलाण कारणमणग्घं । सयलमुहाण णिहाणं पुण्णेहिं जेणो जणं लहइ ॥ ८२ ॥

अण्णोण्णकज्जवइयरदूसहसंतावतावियं हिययं । णिच्चाइ णवर दइयासहर(रि?)समवल्लोयणजलेण ॥ ८३ ॥

के वं विलासा भुवणम्मि तस्स हिययस्स निव्वुई कत्तो । जस्स ण सममुहमुंहिया पिया य घरिणी घरे वसइ ? ॥ ८४ ॥

१ इय जे । २ कया वि सू । ३ “वडं” जे । ४ “जलहि” जे । ५ “व, सुणि” सू । ६ “य महादाणं” सू । ७ पच्चदमाणं जे । ८
महासामंत ! “किं” सू । ९ अणं अणो जे । १० वि सू । ११ “सुहवा” सू ।

जस्सऽणुक्कला पियदंसणा [य] मिये-मंजुभासणसयण्हा । सयल्लगुणाहाणं घरसिरि व्व घरिणी सुहं तस्स ॥ ८५ ॥

हिययद्वियदइयवसेण दुग्गओ णेइ दीहरं दियहं । रयणीए पिययमालावमुदयहियओ सुहं सुयइ ॥ ८६ ॥

किं बहुणा ? सव्वं चिय संसारमुहं समत्तजियलोओ । महिलायत्तं पत्तियमु मित्त ! मह तेण अणुवंधो ॥ ८७ ॥

लल्लकणिरयवियणाउ घोरसंसारसायरुव्वहणं । जीय कएण तुल्लिज्जंति जयइ सा पिययमा लोए ॥ ८८ ॥

इय णिब्भरगुरुसन्भावपसरवीसम्मवडिदयमुहली । अण्णोण्णजंपिणैहिं वि जयम्मि मिह्णुणाइ पावंति ॥ ८९ ॥

ता मित्त ! कत्थ मए एरिसं रइकेलिकुलहरं सयल्लमुहणिहाणं महिलारयणं पावियव्वं ? ” ति । तओ इंदसामाणिएण उवओगं दाऊण भणियं-मित्त ! मा विसायं वच्चमु, लद्धा मए तुहं महिला । ललियंगएण भणियं-कहं चिय ? । इंदसामा-
णिएण भणियं-सुणमु,

धायइसंडे दीवे पुव्वविदेहे वासे णंदिग्गामे णाइलो णाम गहवई । सो य अचंतदुग्गओ सयल्लजणपरिभूओ उयर-
भरणेकवावारपरायणो परिवसइ । तस्सेव भारियाए उवरोवर्गि कुरूवाओ सयल्लजणाणिट्ठाओ पयईए बहुभक्खिरीओ छ धूयाओ
जायाओ । तओ य सो दारिहेणं बहुधूयाजम्मेण सयल्लजणपरिहवेण य अचंतदुहिओ चित्तेइ-किं करेमि ? , कत्थ वच्चाभि ? ,
किं कयं मुकयं हेंइ ? ति मण्णमा(ण्णुम)णां चिट्ठति । अण्णया य कम्मपरिणइवसेणं आवण्णसत्ता भारिया संवुत्ता । तओ
तेण चित्तियं-जइ पुणरवि धूया इमीए होज्जा तो मए इमीए णाममेत्तेणावि वावारो ण कायव्वो । जाव य सो एवं चित्ता-
परायणो चिट्ठइ ताव य पमूया भज्जा । णिवेइयं तस्स धूयाजम्म ति । तओ सो वज्जवडणाइरित्तसंपाउप्पित्थहियओ
णिग्गंतूण घराओ देसन्तरं गओ । णागसिरी[ए] वि पुणरुत्तधूयाजम्मदुक्खियहिययाए पइगमणसोयमोहियमणाए
य सा धूया ण सम्मं पडियरिज्जति, ण य तीए तस्सा णामं पि कयं । तओ सा आउसेसयाए संवडिदया अचन्तदुक्खिया
णिण्णामिय ति लोए पसिद्धिं गया । दुहिया य दुहियकम्मकारिणी सयल्लजणपरिभूया जणणीए वि णयण-मणुव्वेय-
कारिणी संवुत्ता ।

अण्णया य सयज्झियाधूयाए हत्ये मोयए पेक्खिऊणं णियजणणी जाइया । तीए भणियं-कयपुण्णासि तुमं, भक्खिहि-
सि मोयए ? , पिया वि ते एवंविहो चेव मुहिओ आसि, ता मंदभाइणि ! वच्च रज्जुं गहाय अंचरतीरं(तिलयं) पव्व-
यवरं, तत्थ कट्ठाइं समुच्चिणंती पाविहिसि मोयए । तओ सा अकयपुण्णा गिरासा पियवयणमेत्तेणावि अणासासियपुव्वा
ओरुण्णमुही गलियवाहसल्लिा रज्जुं वेत्तूण णिग्गया गेहाओ । तओ दीहुण्णीसासे मुयन्ती तण-कट्ठ-पत्तहारेहिं समेया
संपत्थिया, पत्ता य तं पव्वयवरं । तस्स य सिहरे जुगंधरस्स अणगारस्स एगराइयं पडिममब्भुवद्वियस्स सुहपरिणामस्स
मुविमुदलेसस्स अपुव्वकरणारुहणकमेण खविययणघाइउकस्स उण्णणं तीया-ऽणागयवत्तुधुभासगं दिव्वं केवलणाणं ति ।
अहासणिहियदेवयाए य पत्थुया केवलमहिमा । समागओ पव्वयासण्णगाम-गगरजणवओ । तओ सा णिण्णामिया सह
तेण जणवणं तं पव्वयवरं समारुढा । वंदिओ य भयवं केवली सह जणेणं । भगवया पत्थुया धम्मदेसणा । णिदिज्जइ
विसयमुहं, पयडिज्जइ संसारासारत्तणं, दंसिज्जंति णरय-तिरिय-मणुय-देवलोयदुक्खाइं । तओ लद्धावसराए गरुयदुक्खोहपी-
डियाए भणियं णिण्णामियाए-किं भयवं ! मज्झ वि सयासायो अण्णो दुक्खिययो कोइ अत्थि ? । भयवया भणियं-किं
तुज्झ दुक्खं ? , तुमं ताव सच्छंदपयारिणी, अण्णे उण सत्ता कम्मपरिणइवसेण सव्वदा परायत्तमहावेयणाभिभूयविग्गहा ण
जाणन्ति रत्ति ण दियहं, परायत्ता एवं कालं गमेति । एवं बहुप्पयाराओ णरय-तिरियवेयणाओ समायणिऊण संवेगमुव-
गया । भिण्णो कम्मगंठी, अब्भुवगयं सम्मत्तरयणं, पडिवण्णो भावओ जिणदेसिओ धम्मो, गहियाइं जहासत्तिं अणुव्वयाणि ।
गहियकट्ठा, गया णिययगेहं, कयं तक्कालोच्चियमाहाराइयं । तओ पव्वड्ढमाणपरिणामा चिट्ठइ, सरइ य कालो, चरइ य
णाणाविहं तवो कम्मं । सा य अचन्तदुब्भगा कुरूवा य ण य केणेति पत्थिया, पत्ता य जोव्वणं । तओ तीए गरुयसंवेगमा-
वणाए पुणरवि अम्बरतिलयं पव्वयं समागयस्स जुगंधराणगारस्स समीवे पडिवण्णमणसणं ।

१ मिडं जे । २ एहिम्बि सू । ३ तुमं जे । ४ होठ ? ति जे । ५ “परिणयव” सू । ६ “जम्मं ति जे । ७ तस्याः । ८ “पुव्वे-
वक्का” जे । ९ उण्णन्तीया” सू । १० वत्तुभासगं जे । ११ “मुवागया जे । १२ केणइ जे ।

ता मित्त ! वचमु सिग्गं तीए समीवं । सा तुमं ददट्ठण णियाणाणुवंधं करिस्सइ” ति । एवं भणिऊण गओ इंदसामा-
णिओ णिययविमाणं । ललियंगओ य [? गओ] दाऊण उवओमं अंचरतिलयं पच्चयवरं । दिट्ठा णिण्णामिया अणसण-
ट्ठिया, दंसिया देवरिद्धी, कओ णियाणाणुवंधो तथा । तओ अणसणविहिणा खविऊणमाउयं उववण्णा ललियंग[य]स्स
सयंपभा णाम महादेवित्तणेण ।

तओ रइसागरावगाढस्स ललियंगयस्स कम्हि काले अइकंते चवणलिंगदंसणेण भयमुप्पणं । लक्खिओ य सुण्हिय-
यत्तणेणं सयंपभाए, पुच्छिओ य-सामि ! किमुव्वेवकारणं ? । तेण भणियं-सुंदरि ! संसारविलसियं, अवि य—

‘ये चिय णवपल्लवकुसुमगोच्छपेच्छादिया धित्तिं देंति । ते चिय कप्पतरुणो उव्वियणिज्जा महं जाया ॥ ९० ॥

जो चिय मणहरकरणंगहारसमतालगेयसंवल्लिओ । णट्टारम्भो सो चिय उव्वेवं जणइ हिययस्स ॥ ९१ ॥

ज चिय हियइच्छियसंपडन्तसयल्लिदियत्थमुहमुहया । तियसिदपुरी स चिय हारेयंदपुर व पडिहाइ ॥ ९२ ॥

इय जं जं चिय पुल्लमि सुयणु ! रमणीयगुणगगगवियं । सग्गे रइमुहमग्गे तं तं चिय अन्नहा जायं ॥ ९३ ॥

तओ तीए भणियं-किं चवणलिंगमुक्खलक्खियं ? । तेण भणियं-आमं । तीए भणियं-किं चित्ताए ? , एहि गच्छइ जंबुद्वीव-
धायइसंड-पुक्खवरद्वेसु भरहेरचय-विदेहेसु, तित्थयरजम्म-दिक्खा-णाण-वक्खाण-णेव्वाणभूमीओ वंदइ, वक्खार-
पच्चएमु य वाहिरएमु य णंदीसरवरादिएमु दीवेसु सासयपडिमाओ पुज्जइ । तओ ललियंगओ पंसंसिऊण सयंपभं
सभज्जाओ ओतिण्णो तिरियलोयं, जहाइ वंदिउमादत्तो तित्थयरे तित्थयरचेइयाणि य, काऊण य पूयं, दंसिऊण य णट्टविहिं,
गओ णिययत्थामं । तओ कइवयदिवसेसु पेच्छंतीए सयंपभाए इंदधणुं पिव सहसा अंसणमुवगओ ।

चुओ य समाणो इहेव जंबुद्वीवे दीवे पुव्वविदेहे वासे सीयाए महाणदीए उत्तरे कूले समुदासणपुक्खल्लवइ-
विज्जए लोहग्गले णयरे सुवण्णजंघस्स राइणो लच्छीए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्तेणं समुप्पण्णो, पडट्ठावियं च णामं
वइरजंघो चि ।

सयंपभा वि तैयणंतरमेव चुया वइरदत्तस्स णरवइणो धारिणीए देवीए धूयत्ताए संसुववण्णा, पडट्ठावियं च णामं
सिरिकंत चि । पत्ता य जोव्वणं । पिउणा य सयंवरं दत्ते तीए पुव्वभवभासओ जायसणेहाए वइरजंघो वरिओ,
वत्तो विवाहो, भुंजंति भोए । परिणओ य [? पुव्व] भवभा(व्भा)सेण जिणदेसिओ धम्मो । पिउणा य पुत्तस्स काऊण रज्जाहिसेयं
पव्वज्जाविहाणेणं सकज्जमणुचेद्वियं । वइरजंघस्स य सिरिकंताए भारियाए पुत्तो समुप्पणो, वडिहओ पत्तो य जोव्वणं ति ।

अन्नया य भवल्लहरसत्तमभूमियाए ठियस्स वइरजंघस्स सिरिकंताए भारियाए केसे उम्मोयंतीए कण्णासण्णागयं
अवंज्जमुहउज्जवसायवीयं समुव्विग्गाए दंसियं एगं पलियं । तओ तं ददट्ठण वियलियमोहंधयारेण राइणा [? भणियं]-सुंदरि !
किमुव्विग्गासि ? , धम्मतरुवीयमेयं पलियच्छलेणं समागयं ति, जओ—

अवणेइ कल्लसभावं सुंदरि ! ससिरोरुहस्स हिययस्स । कारेइ महं धम्मे जराए सरिसो सुही णत्थि ॥ ९४ ॥

परिहरमु विसयसंगं, उज्जमु असमंजसं, तवं चरमु । इय भणइ व णिहुयं सुयणु ! कण्णमूलागयं पलियं ॥ ९५ ॥

मज्जाइक्कमणरओ जोव्वणमहुवोहिओ जणियराओ । सणियं ओसरइ मओ सुंदरि ! निदाए वि(व) जराए ॥ ९६ ॥

वक्कायजोव्वणगरुयत्तणेण णिहुयाइं पयइधवल्लइं । सरसल्लिइं व सरए जराए जायंति हिययाइं ॥ ९७ ॥

इय जातगरुयसंवेगजणियपव्वज्जसज्जववसाओ । अच्छइ राया जा गलियवंधणो सहयरिसमेओ ॥ ९८ ॥

ताव य संजायमहामोहेणं अमुणियमहारायचित्तेण संसारमुलहेण दुरउज्जवसायववसिएणं रज्जकंखुएण भोगाहिलासिणा
पुत्तेण आसुजीवावहारिणा धूयप्पओगेणं रइहरपसुत्तो सह पियाए वावाइओ, मरिऊण उत्तरकुराए तिपलिओवमाऊ
तिगव्वुस्सुओ मिहुणत्तणेणं सह पियाए समुव्वण्णो चि ।

तत्तो य आउयमैणुवालिऊण मरिऊण अप्पकसायत्तणओ पुव्वज्जियपुण्णसम्भारत्तणओ य सोहम्मं कप्पे देवत्तेणं सह
भारियाए उववण्णो चि ।

तत्थ य भुंजिऊण भोए आउयसेसयाए चइऊण महाविदेहे वासे रसाहिहाणेस्स वेज्जस्स पुत्तत्तेणं समुप्पण्णो, पइट्ठा-
वियं च से णामं जीवाणन्दो ति । तीए रयणीए अणे वि चत्तारि दारया समुप्पण्णा, तं जहा-राइणो ईसाणचंदस्स
कणयमतीए भारियाए महिहराहिहाणो कुमारो, सुणासीरस्स मंतिणो सुणासीराए भारियाए सुबुद्धी, सायर-
दत्तस्स य सत्थवाहस्स अभयमतीए भारियाए पुण्णभद्दाहिहाणो, अवरो य धणयसेट्ठिस्स सीलचईए भारियाए गुणा-
यराभिहाणोपुत्तो ति । एते पंच वि सह बड्डिया, कलाओ य सह गहियाओ । अण्णो वि सयंपभाजीओ तत्थेव णयरे ईसर-
दत्तस्स पुत्तो केसवाभिहाणो जाओ, तस्सेव भित्तो छट्ठो ति । जाया तं सहपंसुकीलणेणं परोप्परपीई । वेज्जपुत्तेण य
जीवाणंदेण सिक्खिओ अट्ठंगो आउवेदो । तओ य महावेज्जत्तेणं पसिद्धो लक्खेइ जहट्ठियं वार्हि, उवलहइ गियाणे,
पउंजइ जहाजोग्गमोसहं, दिट्ठकम्मत्तेण य ण विसायमुवगच्छइ, उवसमेइ सण्णिवायपमुहे महावाहिणो ।

एवं च संसरंते संसारे, गच्छंतेसु दिवसेसु, वट्ठंते अण्णोणं वीसंभणयपसरे अण्णया भवियव्वयानिओएणं जीवाणं-
दस्स वेज्जस्स मंदिरे मुहासणत्थेहि पंचहिं वि वयंसएहिं गुणायराहिहाणो पुहइपालस्स राइणो पुत्तो दिट्ठविणियपणइणि
व चऊण रायसिहिं उक्खित्तपंचमहव्वयैहारो वारसंगविऊ चोइसपुव्वी पडिबण्णविबिहाभिग्गहो दिट्ठो महारिसि ति ।
सो य किमिक्कुट्टमहावाहिवेयणाभिभूअसरीरो वि णिप्पडिक्कम्मसरीरयाए णांहिलसइ चिकिच्छं, ण पत्थेइ ओसहं, ण चित्तेइ
वाहिसमणांवायं, ण अण्णेसइ वेज्ज, महासत्तयाए य अहियासन्तो विखि(ग)लिंदियवेयणं, छट्ठस्स पारणए कयाभिग्गहो
अप्पलेवं चउत्थं भिक्खट्ठाणं गोमुत्तियाविहाणेणं धरंधरेण अन्नेसंतो आहारट्ठी वेज्जघरमुवट्ठिओ । तं च दट्ठण जायविवेएणं
उम्मिल्लमुहइज्जवसाएणं महिहरकुमारेणं सपरिहासो भणिओ जीवाणंदो वेज्जपुत्तो जहा-भो जीवाणंद ! सब्बदा तुम्हेहिं
दुक्खज्जियइत्थेहिं संपइ विउसेहिं विय परोवगरणेहिं होयव्वं, ण अत्तणो हियमणुचिट्ठियव्वं, जओ तुम्हे सया महुयर
व्व दाणरुइणो, वेसाजणो व्व पलोवेह अत्थवन्तं, पच्छिमासादिवायरो व्व अत्थमणा ण एरिसाणं महामुणीणं संसारालम्ब-
णहेउभूयाए चिगिच्छियाए अप्पाणं मुहपरंपराए भायणं कुणह । तओ पडिबोहिउ व्व वक्कयमुच्छाविवेउ व्व दिट्ठमहाणिहि-
कलससमूहो व्व वियलन्तकम्ममहाभरपसरो जीवाणंदो भणि(चित्ति)उमादत्तो-अहो ! सोहणविवेओ रायपुत्तो, विम्भिओ
अहमेयस्स चरिएण, जओ अत्तेसणो मुणी, अक्खलो धैणइत्तओ, पियमज्जो अणईसाल्, सुसीलओ य जारजाओ, णिरोगो
सरीरी, मुही भोगासत्तो, अदरिहो विउसो, अवंचणो वणिओ, अपसत्थो वम्मणो, मुचरियरओ य रायउत्तो, पयइवियारत्त-
णेणं उप्पायवुद्धिं जणेइ लोए, ता सोमणमणेण भणियं, करेमि अहं एयस्स महामुणीणो संसारुत्तारणसेउभूयं तिगिच्छं ।
चित्तिऊण भणियं जीवाणंदेण-करेमि तिगिच्छं जइ तुम्हे ओसहाइसहाया होह । तेहिं भणियं-केण कज्जं ? भणसु । वेज्ज-
सुएण भणियं-सयसहस्समुल्लेणं [तेल्लेणं] कम्बलरयणेणं गोसीसचंदणेण य, सयसहस्सपागं तेल्लं तं मह 'चेवमत्थि, इयराणि
"दोन्नि वि महेस्सरसेट्ठिस्स वीहीए लब्भन्ति ।

गया ते दोण्णि लक्खे वेत्तूण सेट्ठिसमीवं । भणिओ य तेहिं सेट्ठी जहा-तुमं वेत्तूण दोण्णि लक्खे दीणाराणं अम्हाणं
कंबलरयणं गोसीसचंदणं पयच्छ । तेण भणियं-किं पओयणं ? । तेहिं जहिं(?)ह)द्वियमेव 'साहुतिगिच्छाणिमित्त'मिति
कहियं । तेण वि य वियलन्तकम्मणा उम्मिल्लिज्जंतमुहइज्जवसाणेणं चित्तियं-अहो ! एए वि जोव्वणपिसायौल्लिहियया
अपरिवक्कमणो भम्मकरणं पति उवट्ठिया ता किं पुण अहं मच्चुमुहजीहाए व जराए अभिभूयविग्गहो ण करेमि भम्मं ?, ण
किणेमि असारेण अधिरेण सारं सौसयं पुण्णरौसिं ? ति । इइ चित्तिऊण भणियं-अहो ! सोहणो तुम्हारिसाणं विवेओ, गिन्हह
कंबलरयणं गोसीसचंदणं च, कुणह तस्स महामुणीणो तिगिच्छं, मुल्लं च महं पुण्णमक्खयं, ण वज्जेणं सब्बसाहारणेणं धणेणं
पओयणं ति भणिऊण दाऊण य ओसहं, पवइहमाणसंवेगो य लहुक्कम्मयाए गंतूण य तहाविहाणं आयरियाणं सगासे,
पव्वज्जिऊण पव्वज्जं, भिंदिऊण मोहजालं, खविऊण य असेसकम्मं, पत्तो णिरावाहं भोक्खं ।

इयरै ये पंच वि वयंसया गया साहुसमीवे । दिट्ठो य काउस्सग्गट्ठिओ णग्गोहस्स हेट्ठओ साहु । आणियं च गोमडयं । 'भयवं !

१ 'यस्स पुत्त' जे । २ य जे । ३ 'यमारो जे । ४ 'गोइहिल' जे । ५ 'यामिहाणेण सु । ६ 'रावउत्तो जे । ७ 'धणवइसयओ
जे । ८ 'सुसीलो य जे । ९ 'चेयम' जे । १०-११ 'दोण्हि सु । १२ 'यान्निद्वेहा अपरि' जे । १३ 'सारयं सु । १४ 'रासिन्ति सु । १५
'च्छं ति, मुहं सु । १६ 'वि जे ।

अम्हे तुह धम्मविग्घं करिस्सामो' ति एवमणुजाणावेऊण तेह्णेण अब्भंगिओ साह । तओ उण्हयाए तेह्णस्स, अचिंतसत्तिचणओ ओसहाणं तेयावियलिंदिया सव्वे संखुद्धा । पच्छाइओ कंवलरयणेणं, तहिं च सीयलभावमुवगया सव्वे लम्मा । गहिऊण य वेज्जपुत्तेणं गोमयकडेवरे पक्खित्ता । गोसीसचंदणविलेवणेण आसासिओ । एवं बीयवाराए मंसमया तइयवाराए अट्ठिगया सव्वे वि अक्खणीया विगलिंदियाआलिंपिओ गोसीसचंदणेणं । जाओ य समासत्थो । अचिन्तसत्तिचणओ ओसहसामत्थस्स पउणो साह विहरिउमादत्तो ति ।

इयरे य पवड्डगाम्पतुहविवेया राजा य सिद्धत्तरियासमीयं । जंदिओ गुरु, उवविट्ठा य चळणंतिप, पुच्छिओ य णेव्वा-
णगमणपच्चलो धम्मो । तओ गुरु साहिउमादत्तो—“देवाणुप्पिया ! इह जीवेसु पहाणं जंगमत्तं, तत्थ वि पंचिंदियत्तणं, तओ वि मणुयत्तं, तहिं पि आरियखित्तं, तत्थ वि मुकुलुप्पत्ती, पुणो वि दीहाउयत्तणं, तहिं पि आरोगं, एत्थ [वि] विसि-
ट्ठरूवं, रूवे वि धम्मवुद्धी, तीए वि सुहगुरुजोगो, तत्थ वि तच्चयणासेवणा, पुणो वि विरतिपरिणामो, पुणो वि पवड्डमाणसंवेगया, तत्थ वि सव्वसंवररूवा पव्वज्ज ति । अवि य—

अइभीसणवहुविहजोगिलक्खगुम्मोहभवकडिळ्ळिम्मि । जइ कहवि कहिं पि कयाइ जंतुणो होइ मणुयत्तं ॥ ९९ ॥
तं पि अणारियखेत्तम्मि धम्ममुइवज्जियम्मि सैण्णाण । णियकम्मपरिणईए जियाण परिगलइ पसुसरिसं ॥ १०० ॥
आरियखेत्तं जाई कुल-रूवा-ऽऽरोग-माउयं बुद्धी । धम्मम्मि कहवि जायइ सुहगुरुजोगो उण दुलम्मो ॥ १०१ ॥
लहिऊण महामुणिसंगमं पि तच्चयणसेवणमहण्हो(णो) । ण हु लहइ कोपि तं पि हु पावइ पुण्णेहिं पुण्णेहिं ॥ १०२ ॥
इय सामग्गि लहिउं सद्धा-संजमविहाणगुणकलियं । आसण्णसिद्धियाणं जायइ विसएसु वेरगं ॥ १०३ ॥

तओ देवाणुप्पिया ! एसा कल्लणपरंपरा अणाइणिहणे संसारे ण कयाइ जीवेणं लद्धपुव्वा, लहिऊण य एयं खणं पि ण खमं पमायायरणं” । तओ मुणिऊण गुरुवयणं उवसन्तपच्चक्खणाचारणतइयकसाएहिं भणियं पंचहिं वि जणेहिं केसवाहिहाणेण य छट्ठेण—भयवं ! जइ एवं ता देहि अम्हाणं कम्मसेलासग्गि पव्वज्जं ति । भगवया य ‘तह’ ति भणिऊण पव्वाविया । विहरिऊण य जहुत्तविहारेणं कालं काऊण वारसमे अरुचुए कप्पे वावीससागरोवमाऊ देवत्तणेणं उववणा ति ।

भुंजिऊण य तत्थ भोए चुया समाणा इहेव जंबुद्धीवे दीवे पुव्वविदेहे पुक्खलावइविजए पुंडरिणिणीए णयरीए बहरसेणस्स नरवड्डणो धारिणीए देवीए पंच वि कमेणं समुववणा । तत्थ पढमो वेज्जउत्तो बहरणाहो, बीओ रायकुमारो बाहू, तइओ मंतिपुत्तो सुबाहू, चउत्थो सेट्ठिमुओ पीढो, पंचमो सत्यवाहपुत्तो महापीढो । एवं कमेण जाया बड्ढिया सह कलहिं । विवाहिया य कुल-रूवजोग्गाओ दारियाओ । केसवाहिहाणो चइऊण बहरनाभस्स सारही जाओ । भुंजंति भोए । सरइ संसारो ।

अण्णया य तेसिं पिया बहरसेणो दाऊण पुत्तस्स रज्जं उइण्णत्तिथयरणामकम्मपरिणामो ‘सयंबुद्धो कप्पो’ ति काऊण सारस्सयमाइचाइदसविहलोगतियपडिबोहिओ समुरा-ऽसुर-मणुयपरिसमज्झयारम्मि पंचमहव्वयमहापइण्णामंदिर-
मारूढो विहरिउमादत्तो । तओ विहरिऊण भोणेणं, लहिऊणापुव्वकरणं, आरुहिऊण य खवगसेहिं उम्मूलिऊण णिविड-
घणघाइकम्ममोहजालं उप्पाडियं तीया-ऽणाय-विप्पइट्ठभावुव्भासणं केवल्लणाणं बहरसेणेणं ।

बहरणाभस्स अणुभूयतीसपुव्वलक्खकुमारभावस्स अइकंतसोलसमंडलियराइणो तिथयरकेवल्लणाणुप्पत्तिदिवसे चेव आउहसालाए बइरतुम्बं सहस्सारं जक्खसहस्सेणं परियरियं उप्पण्णं चक्करयणं । जायाणि कमेण चोदस वि जक्खसह-
स्सपरियरियाइं महारियणाणि । उप्पण्णा य रयणसमिद्धा पत्तेयं जक्खसहस्सपरियरिया अक्खया णव महाणिहिणो । ओय-
वियं च बहरणाभेणं कमेण पुक्खलावइविजयं । कओ चक्खट्ठिरायाभिसेओ । परिणीयाइं चउसट्ठिसहस्साइं कण्णयाणं । जाओ वत्तीसहस्साणं मउडवद्धाणं राईणं रायाहिराओ । भुंजइ य बाहू-सुबाहू-पीढ-महापीढचउसहोयरसमेओ अइप्पिय-

१ तयोविं सु । २ ‘अवि य’ इति सुपुस्तके नास्ति । ३ प्रमादिनाम् । ४ कोइ जे । ५ सेट्ठिपुत्तो सुपीढो सु । ६ परियरिउं जे ।

संपज्जन्तपंचविहे कामभोए । एवं च रइसागरावगाढस्स पसाहियासेसमहिमंडलस्स पूरियपणइयणमणोरहस्स सेवन्तस्स साहुचलणे, करंतस्स णिवायणेसु पूजा-उत्तराणं, पालेयस्स दाण-सील-तपो-भावणारूवं चउच्चिहं धम्माणुद्धानं चक्रवृत्तिरणेणं गया चउवीसई पुच्चलक्खा ।

अणया य वइरणाहपुण्णाणुभावेण वियसार्वेतो भवियकमलायरे, अवर्णितो मोहेणिहं, तेलोकपियामहो जगगुरु अरहा सच्चवणु सच्चदरिसी पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरदिसाभूभाए समोसरिओ । विरइयं देवेहिं समोसरणं तिपागारो-ववेयं जोयणवित्थिण्णं । वइरणाभो वि उवलद्धतित्थयरागमणो हरिसवमुफुल्लोयणो चउसहोयरसमेओ सह सारहिणा गओ तित्थयसरसीवं, वंदिओ रोमंचकंचुइलेण, काऊण तिपयाहिणं उवचिट्ठो चलणंतिए । समुरा-उमुरपरिसमज्झयारे सिंघासणम्मि उवचिट्ठो जगगुरु धम्मं साहिउमाढत्तो जहा-जंतुणो मिच्छत्ता-उविरइ-पमाय-कसाय-जोगेहिं बंधन्ति अट्टपयारं कम्मं, तक्कम्मपरिवागवसेण य हिंडंति संसारकन्तारं, जह य सम्मइंसण-णाण-चरणसामग्गीसमणिया छिंदिऊण संसारणि-बंधणं कम्मपरिणइं गच्छंति मोक्खं । एवं च छिज्जंतेसु संसएसु, पयासिज्जंतेसु हिययभावेसु, साहिज्जंतेसु पुच्चभवेसु, केइ उवसंताणंताणुबंधिणो पडिवज्जंति सम्मत्तं, अण्णे खओवसमगएसु अपचक्खाणेषु अब्भुवगच्छंति देसविरइं, केइ पुण ववगयपचक्खाणावरणोदया पडिवज्जंति महापुरिससेवियं पच्चज्जंति ।

तओ लद्धावसरेणं पुच्चभवउब्भाससंजायसंवेगेणं परितणुयकसायपरिसेसियकम्मुणा ससहोयरेणं भणियं वइरणाहेणं-भगवं ! तुहाणुभावेणं पावियमसेसमिहलोयसंबद्धं मणुयजम्मफलं, कओ य जेट्टपुत्तस्स रज्जाहिसेओ, संपयं भगवया तिहुयण-सुरुणा णिज्जामएणं णिव्विण्णकामभोगा संसारं तरिउमिच्छामो । अमयकलसमुवरिपल्लत्थंतेण विय भणियं भगवया-देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि । त्ति भणिऊणं पच्चाविया पंच वि जणा वइर[? सेण]सामिणा सारहिसमेया णिय-रणहरेण त्ति । तित्थयरो य वइरसेणो सेलेसीविहाणेण खविऊण भवोपग्माहीणि चत्तारि वि कम्माणि सिद्धो । इयरे वि विहरिउमाढत्ता ।

वइरणाभेण य अहिज्जियं आप्याराइयं मुत्तं, पडियाणि चोइस वि पुच्चाणि, वद्धं च वीसहिं ठाणेहिं तित्थयरणा-मोत्तं कम्मं । ताणि य इमाणि, तं जहा—

तित्थयरगमणमायणिऊण हरिसिवहियओ ससत्तीए दाणाइए पयट्टइ, तित्थयरपडिमाण पडिजागरणं करेति, तित्थयरवण्णवायं च जहासत्तीए णिवारेइ, जहावट्ठियतित्थयरपरूवणं करेइ, एवमादि तित्थयरसु वच्छल्लं करेइ १ । सिद्धाण य सिद्धखेत्तेसु सिलाइएसु पडिजागरणं करेति, जहावट्ठियसिद्धपरूवणेण य सिद्धाणं वच्छल्लं करेइ २ । पवयणस्स य वारसंगस्स गणिपिडगस्स तथाहारस्स वा संघस्स अवणवायपडिघायणे पयट्टइ, तसुब्भासणं वा करेइ, सबहइ य जहा-वट्ठियं, परूवेइ अं सब्भावपरूवणाए, इच्चाइ पवयणस्स वच्छल्लं करेइ ३ । गुरुणं च अंजलिपग्माइणा आहारोसहाइणा य वच्छल्लं करेइ ४ । पच्चजाए वीसइवरिसिओ, वणं सट्ठिवरिसिओ, सुएणं समवायधरो, एवं तिप्पयारथविराणं जहासत्तीए पालणाइणा वच्छल्लं करेइ ५ । एवं अत्थओ बहुस्सुयाणं वच्छल्लं करेइ ६ । तहा तवस्सीणं च उववृहण-विणओसहाइणा वच्छल्लं करेइ ७ । अमिक्खणं च णाणे उवओगं करेइ ८ । तहा सम्मइंसणे ९, णाणाइए विणए १० अवस्स करणिज्जेसु इच्छा-मिच्छाकाराइएसु जोएसु ११ मूलत्तरगुणेषु य जहुत्ताणुद्धानेण य अणइयारे वट्ठति १२ । [तहा अप्पमाइत्तणेणं खणे खणे मुहज्झाणे वट्ठति १३ ।] अणवरयं च जहासत्तीए वारसविहतवविहाणे उज्जमति १४ । जइजणे य फामुयदाणेणं चायं करेइ १५ । सदा दसविहवेयावचरओ १६ । आयरिय-गुरु-थेर-बहु स्सुय-तवस्सिप्पभिईणं जहाजोग्गामोसहाइणा समाहिं उप्पाएति १७ । तहा पदिदिणमपुच्चणाणग्गहणं करेइ १८ । सुए य अचन्तमर्त्ति वित्थारेइ १९ । पवयणपभावणं च सैव्वत्थामेणं करेइ २० ।

१ मोहेणिदे जे । २ सिंघासणम्मि जे । ३ 'ण गणहरेण पच्चा' सु । ४ सामिसारहिं सु । ५ गणहरेणं ति जे । ६ य जे ।

७ सव्वत्थामं कं जे ।

इह एएहिं वीसहिं ठाणेहिं विमुञ्जमाणपरिणामो सयलजणसलाहणिजं तित्थयरणाम-भोत्तं कम्मं बंधइ । एयाणि य वड्डरणाहेण सव्वाणि वि ठाणाणि फासियाणि । बाह्णुणा य ओसह-आहाराइणा साहुजणवेयावचेणं उवज्जियं चक्कवट्ठि-फलं कम्मं । सुबाह्णुणा वि साहुवीसामणापेसत्तेण उवज्जियं अब्बन्तवाहुबलं ति । वड्डरणाभो य पइदिणं बाहु-सुबाह्णं पसंसं करेइ । तओ पीढ-महापीढेहिं संपहारियं जहा-जो उवयारपरायणो सो पसंसिज्जइ, अम्हे पुण ज्ञाण-उज्झयण-किलन्तदेहा ण पसंसिज्जामो ति । एयं च दुव्ववसियं णालोइयं गुरूणं, ण गरहियमप्पणा, वट्ठं च मायापचइयं इत्थी-विवागफलं कम्मं । एवं च चरिउण चोइसपुव्वलक्खे पव्वज्जाविहाणेणं दुच्चरं तवच्चरणं, पाओवगमणविहिणा पालिउण-माउयं छ वि जणा सव्वट्ठसिद्धे विमाणे तेत्तीससागरोवमाऊ उववण्ण ति ।

तत्थ य णिरावाहं सिद्धं व्व सुहमणुहविउण कमेण चुया । तत्थ पढमो वड्डरणाहो चइउण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भरहस्स दाहिणउद्दमज्झिमखंडे तइयाए समाए बहुविकंताए चउरासीपुव्वसयसहस्सेसु एगूणणउईए पक्खे य सेसे आसाढबहुलपक्खचउत्थीए उत्तरासाढजोगजुत्ते मियंके णाभिस्स कुलगरस्स मरुदेवासामिणीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए समुववण्णो ति । तीए य रयणीए भगवं समुप्पण्णो तीए चेव रयणीए वरपट्ठंकगया रइहरपमुत्ता एए चोइस महामुमिणे मरुदेवी पासइ, तं जहा-सुविहत्तितियं थोरोरुखंधं पीवरककुहं खामोयरं पलंबवालहिं सरयउव्वधवलदेहं कंचणकिंकिणि-मालापारियरियं वसहं । एवमण्णे वि गय-सीहाइए चोइस महामुमिणे दट्ठण सुहविबुद्धा । तओ णिहासेसकसायलोयणा मंथरमणहरवहलपमहलुम्मिहंतनेत्तसंपुडा भासरसि व्व तरणिमंडलं, धणसंपय व्व धणयं, चंदिम व्व चंदविम्बं, रइ व्व रइणाहं, सइ व्व मुराहिवई, सया सण्णिहिया समणुरत्ता य णाभिकुलयरमुवट्ठिया । कहिया य तीए जहाविहिं वसमाइया चोइस महामुमिणा पिययमस्स । तेणावि हरिस्ससियहियएणं आणंदवाहजलभरियलोयणेणं वहलुच्छलंतरोमंचेणं भणियं-मुंदरि ! फलियं मुकयपुव्वज्जियतरुणा, समिद्धाओ गुरुयणआसीसाओ, सुइओ ते चोइसहिं वि महामुमिणएहिं तेलोकउच्छेरयभूओ सयलजणसलाहणिज्जो मुरा-उमुर-गरिंदमउढमणिमसिणियपायवीढो पुण्णरासी पुत्तो, ता देवि ! पुण्णा अम्हाण मणोरहा, जाया जयस्स वि णयणणेव्वुती । तओ तमायण्णिउण वियलियहिययावेया समूससियसरीर-मणोरहा हरिसवियसिय-फुल्ललोयणा अभिणंदिउण पियवयणं पुत्तजम्मुब्बु(१)स्सु)यहियया मरुदेवासामिणी परं संतोसमुवगया ।

एत्थंतरे चलियासणागणं सोहम्ममुराहिवइणा अहिणंदिओ नाहिकुलगरो जहा-भो रायाहिराय ! सयलजय-चूडामणी तेलोकपियामहो पयडियसंसारमोक्खपढो परहियएकरओ उज्झिउण सव्वट्ठविमाणमुहं पणट्ठमुहविवेए खिली-भूए मोक्खपढे भरहवासे तुहकुलणहयलमियंको पढमवरधम्मचक्कवट्ठी तित्थयरो समुववण्णो । एवमभिणंदिउण कुलगरं, पसंसिउण य महुरवग्गुहिं थुइसंबद्धाहिं मरुदेवासामिणीं गओ सट्ठाणं मुराहिवती ।

मरुदेवासामिणी वि तप्पभिइं चेव उदयपव्वयन्तरियचंदविं व पुव्वदिसा समुम्मिलंतकंतिदित्तिपसरा ईसीसिपंडु-गंडयला ससीह व्व गुहा, अमयगग्ग व्व ससिलेहा जाया य सविसेसामयप्पयाणमणोरहा । अणुदिणं पव्वड्डमाणमुहउज्झ-वसायजणियधम्माहिलासा पच्छण्णगग्गा गग्गं वोहुमादत्ता । णाहिकुलगरो वि मोक्खपायवाऽमोहवीएणं पुत्तसम्मवप्प-भावेणं अहिययरं मिहुणपुरिसाहिणंदणीओ जाओ । जाया य सविसेसमुहकप्परुक्खाणुहावा । सव्वत्थोवसन्ततिरिय-मणुय-वेराणुबंधा इक्खगग्गु । तओ वोलीणेसु नवसु मासेसु अट्ठमेसु राइदिणसु चेत्तस्स बहुलउट्ठमीए अट्ठरत्तसमए उत्तरा-साढजोगजुत्ते मियंके अणुणियवेयणाणुभावा तेलोकाणंदहेउभूयं पुव्वदिस व्व तरणिमंडलं मरुदेवासामिणी मुहंमुहेण दारयं [१ दारियं च] पसूया । जायं च तक्खणमेव उवसन्तरयं पसण्णदिसावल्यं मणहरमुहालोयं गयणमंडलं । किंकर-करतालाणवेक्खाओ जायणिग्गोसाओ य दुंदुहीओ । किंच जणायणचवकारकारी विज्जुज्जोयाहिओ सव्वलोए खणमेत्तमुज्जोओ वियम्मिओ ।

तओ जर-रुहिर-कलमलकलंकरहिए जाए तिलोयणाहे अहोलोयवत्थव्वाओ चलियासणाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ समागयाओ, तं जहा—

१ 'पसारणे जे । २ 'बलन्ति स । ३ 'दुच्चरन्तव' स । ४ मरुदेवीसा' जे । ५ भास व्व त' स । जे । ६ 'सुमुयहि' स । ७ सामिणी स ।

भोगंकरा भोगवर्द, सुभोगा भोगमालिणी । मुक्छा इच्छामि य, पुष्कला अणिदिया ॥ १०४ ॥

तओ 'णमोत्थु ते जगप्पदीवदाइए !' इच्छामिहुरचम्मूहिं तित्थयरजेणणीं अहिणंदिऊण तित्थयरं च, 'अम्हे देवाणुप्पिण ! अहोलोयवत्थव्वाओ दिसाकुमारीओ तित्थयरजम्माणुहावेणं इहागयाओ, तं मे ण भेतव्व 'मिइ भणिऊण पासम्मि खंभ-सहस्ससियं पासायं विउव्वंति । तओ संवट्ठगपवणेणं भवणस्साऽऽजोयणं तण-कट्ट-सकराइयमवणेन्ति । पुणो खिप्पमेव उवसंघरिऊणं, तित्थयरमभिवंदिऊण तयासण्णट्टियाओ तित्थयरचरियमेव गायंतीओ चिट्ठंति । पुणो उड्डलोयवत्थव्वाओ अट्ट दिसाकुमारीओ आगच्छंति, तं जहा—

मेहंकरा मेहवर्द, सुमेहा मेहमालिणी । तोयधारा विचित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥ १०५ ॥

एयाओ वि तेणेव विहिणा समागंतूणं अन्मवडलयं विउव्वित्ता मंदं मंदं समंतओ आजोयणं सलिलेणं रयपडलमुव-समेन्ति । पुणो पुष्कवडलयं विउव्वित्ता जल-थलयवासप्पभूयाणं विंडु(ट)ट्टाईणं दसद्वण्णाणं कुसुमाणं जाणुस्सेहप्पमाणं पुष्कवासं वासंति । तहेव गायमाणीओ चिट्ठंति । एवं च पुव्व-दक्खिणा-वरुत्तररुयगवत्थव्वाओ अट्टट्ट दिसाकुमारीओ गहियायरिस-भिंमार-तालियं-चामराओ तित्थयररस जणणिसहियस्स अप्पऽप्पणेसु दिसाभागेसु गायंतीओ चेट्ठंति । तओ विदिसिरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि विज्जुकुमारीसामिणीओ समागच्छन्ति । ताओ वि दीवगहत्थाओ तहेव चिट्ठंति । तओ मज्जरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारिप्पहाणाओ समागंतूणं भगवओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जे नार्भि कप्पंति, रयण-वडरगम्मे य वियरए णिहणन्ति । तओ विउव्वियकयलीहरसीहासणम्मि जणणिसहियस्स भगवओ मज्ज-णा-ऽलंकाराडयं काऊण कयरक्खाविहाणाओ तहेव गायन्तीओ चेट्ठंति ।

एत्थंतरम्मि सोहम्महिवडणो सोहम्मवडंसेयगयस्स रइसागरावगादस्स अच्छरसयसहस्सपरिवारस्स सच्चाए सह रइसुहकेलिमणुहवन्तस्स गरुयमउव्वेवजणणं सीहासणं चलयं । तओ चलयसीहासणुप्पित्थहियओ दट्टोट्टभिउडिभासु-रुम्भडगंडयलुलसंतमुहमंडलो रोसवैसातंविस्सु (पु)ल्लपासपेसियऽच्छिच्छोहो जायावेओ मुराहिवती दप्पुद्धुरेण विण्णत्तो वज्जाउहेणं जहा—देव ! सण्णिहिण वि अम्हारिसे किंकरयणे सिंघासणाकंपावेणं किमेवं अप्पा आयासिज्जइ?, ता विया-रिऊण देवो देउ ममाऽऽएसं 'किं कीरउ?' चि । तओ मुरिंदेणं पउत्तो ओही । उवल्लदं जंनुदीवे भरहस्स दाहिणखंडे इक्खागभूमिए णाहिकुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए पढमतित्थयरस्स जम्मं ति । तओ वियैलियमाणसावेओ पमोय-पूरियसरीरो गंतूण सत्तट्ट पैयाणि मिलियकरकमलमउलिणिहियधरणिजाणुत्तिमंगो 'णमो त्थु देवाहिदेवाणं' ति भणिऊण थुंविउमादत्तो—

जय णिम्मलगुणवित्थारभरिय ! भुवणुचरंतजसणिवह ! भवभोयाण मुरचिय ! सरणमसरणाण तं णाह ! ॥ १०६ ॥

भरहम्मि संभवन्तेण णाह ! मोहंधयारपडहच्छे । संपइ पयासियैो ते चिरस्स संसार-भोक्खपहा ॥ १०७ ॥

जेहिं तुह दंसणं होइ णाह ! पुण्णाइं ताइं तैइं दिट्ठे । तौ णूण कहिं पि तुमं दिट्ठो किल तेण "दीसिहिसि ॥ १०८ ॥

इय थोऊण मुरिंदो सेसाण मुराण बोहणणिमित्तं । आपसं देइ तओ तुरियं हरिणेगवेस्सिस्स ॥ १०९ ॥

तओ आपसाणंतरमेव घंटाणिगायप्पओगेणं विवा(वो)हिया विवुहा, समागया य णाणाविहयौण-वाहणारूढा । सको य मुराहिवर्द चउविहदेवनिकायसमेओ समागओ इक्खागभूमिं । भणिओ य हरिणेगवेस्सिपडिहारो जहा—दाऊण जणणीए उवैसोवणिं आणेहि जिणिंदं । तेणावि आपसाणन्तरमेव आणिऊण समप्पिओ मुराहिवडणो । इत्थट्टियं च जिणिंदं णि-व्वणिऊण भणियं मुराहिवडणा-भो भो मुरा-ऽमुरा ! उवहसियमुरलोयख्वरिदिं पेच्छह बालगस्स वि जिणिंदस्स देहसोहं । तओ एवमभिणंदिऊण थुणिउमादत्तो—

विहडंति तक्खणुक्खुडियबंधसंधार्णवंदमंदाइं । तमपडलाइं रविम्मि व तइं दिट्ठे णाह ! पावाइं ॥ ११० ॥

१ 'जणणी' सू । २-३ 'चेट्ठंति' जे । ४ 'तालियं(ट)ट्टाईणं' सू । ५ 'वज्जे' सू । ६ 'कसाकपिफुल्लपास' जे । ७ 'रजणे सिंहास' जे । ८ 'जम्मन्ति' सू । ९ 'विलसियं' जे । १० 'पयाइ' जे । ११ 'थुणित्ठ' जे । १२ 'या एभिरस्स' सू । १३ 'तह दि' जे । १४ 'तौ' जे । १५ 'दीसिहिसि' सू । १६ 'जाण' जे । १७ 'भोवणी' सू । १८ 'गपदमं' जे ।

अणिमिसणयणसहस्सेहिं जिण ! णियन्तस्स तह वि ण हु तिची ।

किं एस गुणो तुह णाह ! किं व णयणाण मह दोसो ? ॥ १११ ॥

तुह णाह ! दंसणुच्छलियवहलरोमंचकंचुइल्लाइं । हरिस्समुयाइं मायंति णेय अंगेसु अंगाईं ॥ ११२ ॥

ज्झत्ति वियलंतगुरुकम्मभारपसरन्तमुहविवेयाण । तुह दंसणं सुराहिविणिवंधणं किंपि भवियाणं ॥ ११३ ॥

णामं पि तुह ण जाणन्ति णाह संसारसायरुत्तरणं । बहवे मह उण जिण ! दंसणं पि जायं असामण्णं ॥ ११४ ॥

णिच्चवइ तुह महायस ! कहा वि आसंघिओरुसोक्खाइं । हिययाइं सइ मुरच्चिय ! दंसणमत्तुलं ति कह भणिमो ? ॥ ११५ ॥

तइ दिट्ठे ज्झत्ति समूससन्ति वियलन्तपावपसराण । भवियाण भवभउप्पित्थहित्थहिययाइं अंगाईं ॥ ११६ ॥

इय वज्जियवालसहावचरिय ! बालो वि मुणियपरमत्थो । अब्भुद्धरणं भुवणस्स णाह ! दे कुणसु करुणाए ॥ ११७ ॥

तओ धुणिऊण तियसणाहो 'णेमि अत्तणो विउच्चणल्लेद्धिं सफलत्तणं' ति मुणिऊण पंचहा अप्पाणं विउच्चवेइ । अवि य—

गहियजिण-चामरा-छ(१५५)च-वज्जकयपंचदेहणिम्माणो । वचइ य सुराहिवई जिणरुवणिगुणकखणिओ ॥ ११८ ॥

तओ पयपैदुपडह-भेरि-ज्झल्लरि-मइलुडामकंसालमाला-संख-कलकाहलाराववहलगुंदलुडामपूरियणहन्तरालसंवट्ठपयट्ठदे-वकयकलयलचेलुक्खेवभरियभूवणो पयट्ठो चउच्चिहदेवणिवहो अहिसेयणिमित्तं मंदराभिमुहं, वचइ य जिणरुवाल्लो-यणत्थसम्मददुडामवलियतियपेसियउच्छिच्छोहो कहकहवि सच्चवियसरीरावयवविम्वयुफुल्ललोयणो तित्थयरचरियसंबद्ध-कहालवुच्छलियवहलहलबोलो । पत्तो य णिविसउद्धेणेव सुरगिरिं ।

दिट्ठो य गंधमायण-विज्जुप्प-म-मालवंत-सोमणसचउपव्वयगयदन्तयपरियरिओ णाणाविहरयणरासिविच्छेरिओ मेरुगिरी । सो य मूले दससहस्सवित्थिण्णो, अहो य जोयणसहस्समवगाहो, णवणवइजोयणसहसु(स्सु)स्सिओ, भूमीए भइसालवणपरियरिओ, उव्वरिं च पंचसु जोयणसएसु णंदणवणसंजुओ, णंदणवणाओ उव्वरिं वासट्ठिसहस्सेहिं पंचस-याहिएहिं सोमणसाभिहाणवणालंकरिओ, सोमणसाओ छत्तीससहस्सोवलग्गिऊण जोयणसहस्सवित्थिण्णसिहरे पंडगवणमंडिओ । पंडगवणस्स य म(व)हुमज्झदेसभाए चत्तालीसजोयणैसिया, मूले वारसजोयणवित्थिण्णा, उव्वरिं चउजोयणवित्थरा चूलिया । सा य चउसु वि दिसामु पंचसयायामाहिं आयामद्धवित्थिण्णाहिं चंदसंठाणसंठियाहिं कुमुओ-यरधवलाहिं पंडुकंबल-अइपंडुकम्बल-रत्तकंबल-अइरत्तकंबलाहिहाणाहिं सिलाहिं परियरिया । पुब्बा-उव्वरामु सिलामु "दोण्णि दोण्णि सीहासैणाइं, दक्खिणुत्तरामु य एकेकं ।

तओ गहियतित्थयरा पंडुकम्बलाहिहाणं सिलमल्लीणा सुरणिवहा । अंकणिवेसियतित्थयरो य उव्विट्ठो सीहासणे सुराहिवई । तओ पयवहुविहाउज्जगरुयसैइभभरियमहिहरविवरकुहरुच्छलंतपडिरिवावूरियसुहियणीसेसतिहुयणं वेल्लहलणचिरसच्छरसतोसपयट्ठकरणंगहारं मिलियलयगेयतालं उच्छलियवेषुवीणाकिन्नरगेयरवं उक्कुट्ठिसीहणायाउलं जयजयसहपूरियणहंगणं वसइसिंहुंच्छलन्तजलपम्भारावूरियमहिहरकुहरविवरं कयं वत्तीसमुरिंदेहिं पत्तेयं कणयकलसट्ठसंह-स्सेणं सब्बोसहिसणाहेणं खीरोयवारिणा विहीए मज्जनयं । विलित्ता-उलंकिओ य सच्चाए धुणिउमाहत्तो—

कह कीरउ मंडणयं तुह पहु ! अम्हारिसेहि भत्तीए ? । भूसन्ति तुहंगाई जयभूसण ! भूसणाई पि ॥ ११९ ॥

जं जं चिय किल कीरइ तं तं चिय तुम्ह देहसोहाए । कणयासण्णट्ठियपिचलं व ण हु रेहइ जिणिंद ! ॥ १२० ॥

तओ एवमभिणंदिऊण सव्वालंकारविभूसिओ देवदुंगुलुच्छाडयसरीतो वरपारिजायकुमुममालालंकिओ णिहिंसगुट्ठ-दिव्वमुहयरसो णीओ जणणिसमीवं जयगुरु । अभिणंदिया य जणणी मुरिंदेण—

१ किम्ब सू । २ णाममि सू । ३ वाणति जे । ४ 'तुलन्ति' सू । ५ 'लदिसक' जे । ६ 'पडपड' जे । ७ 'भुण्णो जे । ८ 'पेच्छिय' जे । ९ 'वित्थरिओ जे । १० 'णसुया जे । ११ दोण्णि दोण्णि सू । १२ 'सणाणि जे । १३ 'वसइसहभरि' जे सू । १४ 'सिगुण्ण' जे सू । १५ 'सएण' सू । १६ 'इयुल्लहाइ' सू । १७ लंकरिओ जे ।

धण्णा सि तुमं देविद्वंद्विणं ! जयसलाहणिज्जा सि । गन्धम्मि जीए तेलोकधम्मधुरधारओ धरिओ ॥ १२१ ॥

इय सयलजीववच्छल ! जयगुरु ! संसारसायरुद्धरणे । तइ गाहेण सणाहं भरहं अम्हे वि दूरत्वा ॥ १२२ ॥

एवमभिगंदिऊण सित्यररररहियं जमणिं, गरिरिऊण ररररररिणं, गया सट्टाणेसु तियसा ।

विउद्धा य मरुदेवा सामिणी, पेच्छइ य दिव्वालंकारभूसियं वालयं, पयइत्थं च वालियं । पेच्छन्ती य तं मिहुणं पुण्णेरविभागसुयगं जणणी अबन्तविम्हयमुवगया, साहियं च जहाविहमेव दइयस्स । तेणावि भणियं-पुव्वमेव मए तुह साहियं जहा-तेलोकवंदणिज्जो भविस्सइ ते पुत्तो, पुण्णेरयाणं च विभागो मिहुणगेणेव सिट्ठो, जओ एक चिय कुच्छी, तिहि-गक्खत्ताइयं एकमेव, तहावि देवाण वि विम्हयजणणो विसेसो । पइट्ठावियं च णामं पढमवसहसुइणदंसणेण ऊरुव-सहलंछणेण य उस्सहसामी । सो य तियसंगुट्ठणिहिच्चमुहरसासायणेणं बुभुक्खोवसमं करेइ, ण पाययपुरिसो व्व पओहरपपणं ।

एवं च वडहन्तस्स भगवओ णाहिकुलयरुच्छंगयस्स 'कप्पो' ति काऊण गहियइक्खुल]ट्ठी वंसठवणत्थं समागओ मुरिदो । भगवया वि ओहिणा मुणिऊण पसारिओ इक्खुलट्ठिगहणत्थं हत्थो । तओ मुरिदेण समण्णिऊण इक्खुलट्ठि वंदि-ऊण भयवन्तं इक्खुवंसो ति कया वंसठवणा ।

एवं च सरन्ते संसारे वडहंते भयवन्ते अणोवमसरीरे अणया एगं मिहुणं तालरुक्खअहे कीलिउं पयचं । ताव य भवियव्वयाणिओएणं परिणयतालफलेणं णिवडिऊण पइओ मम्मपएसे मिहुणगपुरिसो, अकालमच्चुपहावेण य मओ । तम्मि मए सा मुद्धहरिणि व्व अमुणियकरणिज्जा अवियाणियमरणसहावा किंकायव्वविमुहिया ठिया, अवराणि य मिहुणगाणि परिवारिऊण ठियाणि । पुव्वि च मयमिहुणकलेवराणि महाविहंगमेहिं तक्खणमेव समुहमज्झयारे पक्खि-प्पन्ति, संपयं तस्साणुहावस्स वियलणेण अपुव्वकालमच्चुमरणदंसणेण य कोह-भय-विम्हयऽक्खित्तसरीरा अमुणियसब्भावा तं उवहसियरूवतियसंगणारिद्धिं जणमण-णयणुच्छवभूयं मिहुणगा वेत्तूण णाहिकुलगरमुवट्ठिया । तेणावि 'उस्सहसा-मिणो पणइणी भविस्सइ' ति संगहिया ।

अणया य समुल्लसंते जोयणे, विभज्जमाणेसु सरीरावयवेसु भोगसमत्थं णाउं भयवन्तं बहुदेवैयणपरियरिओ अच्छरसमूहसंजुओ पालंतो पुव्वट्ठिइं विवाहणिमित्तं समागओ मुराहिर्वइ सपरिवारो । सयमेव विवाहकम्मं [? करेइ भय-वओ, कारवेइ य] सच्चपमुहेण य अच्छरायणेण देवीए सुमंगलाए सुणंदाए य । तओ महया विमदेणं अच्छरगिरुग्गी-यमंगलरवेण पइयणाणाविहाउज्जसदुद्धुल्लियपडिरवपहरियणहंगणाओएणं महयारम्भेणं भयवओ सुमंगलाए सुणंदाए सह कारियं पाणिग्गहणं । गओ सट्ठाणं मुराहिर्वइ । सुंजइ य भोए भयवं । अणवरयं हीयमाणेसु मुहाणुभावेसु, पवडहंते कसायपसरे, गच्छंतेसु सहत्तणं पुरिसेसु, विलंघिज्जंतीसु तीसु वि डंडनीईसु मिहुणगा उस्सभसामिमुवट्ठिया । भणियं च तेहिं जहा-देव ! असमंजसीहूया मिहुणायारा, लंघिज्जन्ति पुव्वट्ठीओ, ण गणिज्जन्ति हकाराइयाओ डंडणीईओ, तओ जमेत्थ पत्तयालं तं देवो सयमेव वियारिऊण उवइसउ । भयवया भणियं-राया डंडधरो मज्जायाइक्कमणिरोहयारओ होइ ति, सो य कयाभिसेओ मंतिसमेओ चउरंगवल्लसमणिओ अप्पडिहयसासणो होइ, णऽण्णहा । तेहिं भणियं-तो भयवं! तुमं चेव अम्हमणाहाणं णाहत्तणं कुणसु ति । भगवया भणियं-कुलगरो तुम्हाणं देहि ति । तओ कुलगरमुवट्ठिया । तेणावि ख्व-विण्णाणाइसयऽहियएणं 'तुम्हाणमुसहो सामिओ' ति भणियं, गच्छइ य तस्साविलंबियं रज्जाहिसेयं कुणह । गया य ते उदयणिमित्तं । एत्थंतरे य मुरिदेणं 'कप्पो' ति काऊण महया विभूईए कओ भगवओ रज्जाभिसेओ, महारायजोगो [य] मउडाइअलंकारो । गओ य सट्ठाणं मुराहिर्वइ । समागया य कमलणीदलपुडगहियसलिला मिहुणगा । पेच्छन्ति य विम्हयऽक्खित्तहियया हरिसभरिज्जन्तलोयणा कयरज्जाहिसेयं देवदुगुल्लच्छाइयदेहं बहल्लोसी-सचंदणुहामविलित्तसरीरं विविहमउडपट्ठवंधाइअलंकारालंकियं भगवन्तं । तओ 'अम्हाण एस सामिओ' ति भणिऊण 'ण एयस्स उत्तिमंगजोगं सलिल'मिइ चित्तिऊण य पल्लत्थियं भगवओ चलणकमले कमलरयपिजरियं मज्जनसलिलं ।

१ 'इ रयणविहसियं वालयं, जे । २ 'इक्खु(क्ख) वंस' सु । ३ तम्मि समए सा सु । ४ 'देवण' जे । ५ पुज्जणीओ जे । ६ डंडणीओ जे ।

तओ सकाएसेणं आगतूण धणाहिबड्ढा वेस्समणेण बारहजोयणआयामा णवजोयणवित्थिण्णा 'एत्थ विणीया पुरिस' ति काऊण कयविणीयाभिहाणा सुविभत्तिय-चउक्क-चच्चरा सत्तलपासायमालालंकिया इंदणीलपउमराया-इमणिमयभित्तिप्पभापहयंधयारा मणि-कंचण-धण-कणगसमिद्धा णयरी णिविट्ठा ।

एत्थंतरे य देवीए सुमंगलाए सच्चट्टविमाणाओ बाहु(ट्ट) पीढो य चविऊण कुच्छिसि मिहुणत्तणेणं समुववण्णा । पसूया य सुमंगला णवणं मासाणं अट्टमाणं राईदियाणं । जायं मिहुणगं । पइट्ठावियं च णामं एकस्स भरहो, बीयाए बम्भी । सुणंदाए य देवीए सुबाहु(ट्ट) महापीढो य चविऊण सच्चट्टविमाणाओ मिहुणत्तणेण समुववण्णा । पइट्ठावियं च णामं एकस्स बाहुबली, बीयाए सुंदरी । पुणो वि देवी सुमंगला एगूणवण्णं पुरिसजुयल्लाणि सुहंसुहेण पसूया ।

अण्णया य वरगइंदारूढो भगवं विण्णविओ मिहुणपुरिसेहिं जहा-भगवं ! अब्भुवगयवच्छल ! उवरग्गिणा ण सम्मं परिपागमुवेइ कप्पतरुकप्पिओ आहारो । तओ भणियं भगवया जहा-तिम्मिऊण हत्थपुड-कक्खाइसेएण पागं णेऊण कुणह उवओगं । तहा अज्जीरन्ते पुणरवि विण्णवियं जहा-देव ! किंपि महाभूयं रुक्खयंससमुब्भूयं रुक्खविणासणकारणं जायं । तओ भगवया तमायणिऊण भणियं जहा-एस अग्गी सणिद्धकालाइकमणपडिबोहिओ पडिरुक्खकालत्तणजाय-स(सा)मत्थो तुम्हमाहारपरिवागहेऊ समुवट्ठिओ, ता पासाणि छिंदिऊण गेण्ह एयं, कुणह जुत्तीए एयस्स संगहं । गय-खंभसमालदेण भगवया मट्ठियं मग्गिऊण करिण्णुंमत्तल्लाहारे णिम्मविओ सहियम्मओ कुंसे, भणिया य मिहुणगा जहा-एवमादीणि णिम्मविऊण पुहविपरिणाममयाणि कप्पतरुफलसाहणाणि एएमु य उदयसमणियपक्खित्तफलाइणो जुत्तीए पएऊण अग्गिणा कुणह जहासुहेणमुवओगं । तओ य ते मिहुणगा लद्धुवएसा तहेव करिउमाढत्ता, जाओ य तेसिं सुहपरिवागत्तणेणं आहारस्स अच्चन्तपरिओसो ।

एवं च अवस्संभाविचणओ तस्स भावस्स रविणेव कमलवियासो, महुमासेण व सहयाराइकुसुमुग्गमो, 'कप्पो' ति काऊण उप्पाइयाइं सयभेयाइं पंच सिप्पाइं, तं जहा-कुंभयारो चित्तयरो लोहारो तंतुवाओ कासवओ । एयाणि र्थ सिप्पाणि सयभेयाणि पसिद्धिं गयाणि । गहिया य आसा हत्थी गावो रज्जसंगहणिमित्तं । जाया य चउप्पयारा रायाणो, तं जहा-उग्गा भोगा राइण्ण(णा) खत्तिया य । दंसिया य लोग्गणीती । पेयट्ठाविया य जहाजोगं दंडणीईओ । लाइयाओ णट्ट-गेयाइयाओ बाहत्तरिकलाओ भगवया भरहस्स । तेण वि य चउव्विहवुद्धिगुणोववेएणं भाणिऊण य णिययपुत्ताण य पउत्ताओ । सिक्खविओ य बाहुबली उस्सभसामिणा गय-तुरय-पुरिसाइलक्खणं ।

तं च कलालक्खणाइयं बहुहा विभज्जन्तं परिगलियसेसं संपइ केणावि "किंपि निवद्धं, तं जहा-णट्टं भरहेणं, पुरिस-लक्खणं समुहेणं, गंधव्वं चित्तरहेणं, चित्तयम्मं णग्गइणा, आउवेओ धणन्तरिणा, आसलक्खणं सालिभदेणं, जूयं विहाणेणं, हत्थिलक्खणं बुच्चुहेणं, णिउद्धं अंगिरसेणं, इंदजालं सवरेणं, इत्थिलक्खणं कच्चायणेणं, सउणजाणं सेणावड्ढा, सुमिणलक्खणं गइंदेणं, सुयारसत्थं णलेणं, पत्तच्छेज्जं विज्जाहरेहिं । इच्चेवमाइएहिं अण्णेहि य संपय-पुरिसाण सगासमाणीयं कला-पुरिसलक्खणाइ सेसं । अवि य—

सा णत्थि कला तं णत्थि लक्खणं जं न दीसइ फुडत्थं । पालित्तयाइविरइयतरंगमइयासु य कहासु ॥ १२३ ॥

पुणो भगवया बंभीए दरिसिया अक्खरलिबी । तीए लिबीए 'पढमं बंभीए दरिसिय' ति काऊण बंभी चेव नामं जायं । तओ पच्छा बम्भिप्पभिईओ अट्टारस लिबीओ जायाओ, तं जहा-बंभी हंसी उड्डी दोमिली जक्खी खसाणिया आयरिसी भूयलिबी गंधव्वी णंदीणैयरा सण्णामत्ता परकम्मी यच्चरी खरोट्ठी खंडवियडा जवणी पोक्खरी लोयपयास ती(त्ति) ।

वामेण य हत्थेणं जगपियामहेणं सुंदरीए गणियमुवइट्ठं । तं च संपयं चउणउयट्ठाणसयणिप्फणं सीसपहेलियापज्ज-वसाणं संववहाराणुगयं, तं जहा-अक्खं दहं सयं सहस्सं देहसहस्सं लक्खं दसलक्खं कोडी दसकोडीओ कोडिसयं दसकोडिसयं

१ समुप्पन्ना जे । २ अट्ठणं राईं जे । ३ मिहुणत्तेण सु । ४ च से णामं जे । ५ नाणि सुहेण सुहं पसूया जे सु । ६ आहारगस्स सु । ७ सहमेयाइं पंच सिप्पायाइं जे । ८ व सु । ९ पयट्ठाविया जे । १० उड्ढं जे । ११ किंचि निं जे । १२ णंदीयरा जे । १३ खवविण जे । १४ दससहं जे ।

कोटिसहस्रं दसकोटिसहस्रं कोटिलक्षं दसकोटिलक्षं । अथो उद्धृतं पुष्पंगादीर्हि संखा कीरइ । तत्थ चउरासीर्हि लक्खेहि पुष्पंगं । तं चेव वेमियं एक्कं पुष्पं । तस्स उ परिमाणं सत्तरि कोटिलक्खा छप्पणं च सहस्सा कोडीणं । तं चेव चउरासीर्हि लक्खेहि गुणियं तुडियंगं भवइ । तस्स इमं परिमाणं—पणरस मुष्णा, तथो चउरो, मुष्णं, सत्त, दो, णव, पंच य ठवेज्जा । एवं चउरासीसयसहस्रगुणिया सव्वट्ठाणा कायव्वा, तथो तुडियायओ भवंति । तेसिं इमं जहासंखं परिमाणं—तुडिए वीसं मुष्णा, तथो छ तिणिण एक्को सत्त अट्ट सत्त नव चउरो य ठवेज्जा । एवं पत्तेयं पत्तेयं चउरासीर्हि लक्खेहि गुणियाणमुत्तरोत्तराणं इमाणि संखाभिहाणाणि दट्ठव्वाणि, तं जहा—अड्डंगे अड्डे अववंगे अववे हुहुयंगे हुहुये उप्पल्ले उप्पले पउमंगे पउमे णल्लिगं णल्लिणे अत्थणिउरंगे अत्थणिउरे अउअंगे अउए नउअंगे नउए पउयंगे पउये चूलियंगे चूलिया सीसपहेलियंगे सीसपहेलिया । एवं चउण[उ]यं संपयं ठाणसयं संववहारविसयं ति ।

एवं कएसु सिप्पेसु, उप्पाइयासु य कलामु, पयडिए पुरिसाइलक्खणविहाणे, उवइट्टे गणिए, पयडिए लोयव्वहारे पढमरज्जा-वसरे एगा मणुस्सजाई दुहा विहत्ता भगवया, तं जहा—जे भयवंतं परिवारेऊण ठिया ते खत्तिया रायाणो, सेसा उण पयतिलोओ । सिप्पुप्पत्तीय तिहा जाया, तं जहा—खत्तिया कलाजीविणो य वइसा, सेसा सुहा । पुणो पच्छा गुणाहिय-सावय-भरहवइयरेणं माहणुप्पत्तीए चउहा वण्णविभागो संवुत्तो । पुणो एएसिं चेव संजोएणं तिणिण वण्णा, तं जहा—माह-णेणं खत्तियाणीए पहाणखत्तिओ, एवं खत्तिएणं वइसीए पहाणवइसो, वइसेणं मुदीए पहाणमुहो । तहा माहणेणं वइसीए संवंधो (? अंवट्ठो) । खत्तिएणं मुदीए उग्गो । पुणो माहणेणं मुदीए णिसाओ । पुणो वि पच्छाणुपुव्वीए मुदेणं वइसीए अमवं (? अयोगवं) । वइसेणं खत्तियाणीए मागहो । खत्तिएणं माहणीए मु(सू)ओ । तहा मुदेणं खत्तियाणीए खत्ता । वइसेणं माहणीए वइदेहो । मुदेणं माहणीए चंडालो । उग्गेणं खत्ताए सोदागो । वइदेहेणं खत्ताए वइणावो । अंवट्ठीए मुदीए वा णिसाएण जाओ वौक्कसो । निसायु(यी)ए मुदेण जाओ कक्कडओ । एवं वण्णविभागो पुर्व्वि, पच्छा बहुभेदो जाओ ।

एवं च पयट्टे गिहिधम्मो, पत्ते य कुलायारे, पज्जत्तसंपज्जंतेसु य कामभोगेसु, मुडिए लोए, संसरंते संसारे, परिफुडं लक्खिज्जंतेसु सव्वेसु ऊसु, अण्णया भयवं पुत्तपरिवारिओ सयलजणसमेओ सहयारमंजरीरेणुरंजियसयलदिसिमंडले विसट्ट-कमलायरुच्छलियधुलिपडलपिंजरियणहयले महुमासे कीलानिमित्तमुज्जाणं गओ । पवत्ता य भरहइणो सयलकुमारा विचित्तकीलाहिं कीलिउं । किं दोगुंदुगदेवा वि एवं चेव कीलिउं उयाहु अण्णह ? ति जाणणत्थं भयवया पउत्तो ओही । परिच्छिदंतेण य ओहिणा उत्तरोत्तरं देवमुहं अवलोइयं अत्तणा उवभुत्तं अणुत्तरविमाणमुहं । तथो वियलियगुरुमोहवंधणो चित्तिउमाहत्तो—“अहो ! कट्ठं अण्णाणं, गरुओ मोहप्पसरो, दारुणो कम्मविवागो, विसमा विसयेच्छा, चंचलाणि इंदियाणि, दुब्बिवारो चित्तप्पसरो, सव्वंकसो कामो, अपासवंधो णेहाणुबंधो, सव्वहा असारो संसारो, एत्थ गया संसारिणो जीवा ण मुणन्ति अत्तणो हियं, ण पेच्छन्ति दारुणं कम्मविवागं विसयमुहलेसौणुगयचित्ता, ‘णत्थि इओ अण्णं विसिट्ठयें’ ति मण्णमाणा दुक्खपडियारेसु चेव कयमुहज्झवसाया इंदियाणुकुलेसु वावारेसु पयट्ठंति । तेसिं च अण्णोण्णमोहियमतीणं मुहाहिलासीणं दुक्खपरिहरणसीलेणं सव्वा चेट्ठा दुक्खेक्कहेउत्तणेणं परिणमति । अण्णं च अहो ! पहावो संसारविलसियाणं, जेण अहं पि अणुहयाणुत्तरविमाणमुहो अवियण्हो तुच्छेसु मणुयकामभोगेसु दुक्खपडियारहेउभूएसु तेचीमुहं वंछामि । अजायचउसायरसलिलतण्हाछेयस्स पुरिसस्स सिण्हतुसारसलिलेण तण्होवसमो भविस्सति ? ति किं केण संगयं ?, सव्वहा संसारविलसियमेत्थावरज्जति । पणट्ठविवेया संसारिणो” ति । जाव य भगवं संसारपरम्ममुहो वियलन्त-कम्मरासी संजायमोहविवरो विपच्चमाणत्तित्थयरणामकम्मोदओ एवं चित्तेइ ताव य चलियासणाऽऽगया अट्ठ(नव)विहा लो-गंतिया, तं जहा—

सारस्सय १ माइबा २ वण्ही ३ वरुणा ४ य गइतोया ५ य ।

तुसिया ६ अब्बावाहा ७ अग्गिबा ८ चेव रिट्ठा ९ य ॥ १२४ ॥

आगतुं य ते भगवन्तं महुरवगृहिं धुणिउमादत्ता—“जय रायाहिराय-तियसिंदमउलिमणिमसिणपायपीढ ! तिय-संगणावयंसमंजरीरयरंजियचलणजुगल ! चिरणट्ठभरह्वासमोक्खपहुम्भासणसयण्ह ! पढमवरधम्मचक्कवट्ठि ! परमेसर ! सिद्धिवहुवरंगणाजणियाणुराय ! भयवं ! जगपियामह ! कयसयलजयववत्थ ! सवभावपावियतियसिंदरज्जाहिसेय ! पयासियाऽसेसाऽऽयार-कुलधम्म ! संपइ कुणसु भरह्वासदुहियजणऽब्भुदरणं । गया य वीसं पुव्वलक्खा कुमारवासे, रज्जम्मि य तेवट्ठी । ‘दुग्गइगमणहेयवो तुच्छा य इमे कामभोगा’ एवं च जाणंतस्स भगवओ खणमवि ण खमं पमायचरणं । ता लैहं चेव संसारसायरुत्तरणजाणवत्तं तित्थं पवत्तेहि” । एवं धुणिउणं गया सत्थामं लोगन्तिया ।

तओ एयमायणिउणं अहिययरजायसंवेगो णंदणवणाओ भवणमधिगतो । तत्थत्थेण य आहूया महारायाणो, कओ भरहस्स रायाहिसेओ, दत्ताणि य पत्तेयं पत्तेयं बाहुबलिपमुद्दाणं पुत्ताणं विसयखंडाणि । दिण्णं च संवच्छरियं महादाणं ।

समागओ सपरिवारो तियसाहिवती । कओ मुणिपत्थिवाहिसेओ । सज्जियं सिवियारयणं, आरूढो भुवणगुरु । उक्खित्ता सिविया पुण्वि मणुएहिं, पच्छा तियसा-ऽसुरिदेहिं । समाहयाइं विविहमंगलतूराइं, कओ जयजयारवो तियसा-ऽसुर-मणुयवेदेहिं, समुद्धुओ चेलुक्खेवाउलो चमरसंघाओ । पत्तो महया सम्महेणं सिद्धत्थवणं, ओइण्णो य भुवणणा-हो । जयजयरवुकुट्टिगच्चिणो हलवहलगुंदलुदामुच्छलियभरियणहन्तरालमहिहरकुहरो खिप्पामेव तियसिंदपडिहाराएसेणं कलयलो उवसंतो । तओ भयवं चेत्तवहुलट्ठमीए परिणयप्पाये वासरे उत्तरासाढाजोगजुत्ते मियंके अवणियकुसुमाभरणो णिहियतियसिन्ददेवदसो कयवज्जसंणिहाणपंचमुट्ठिलोओ सकधरियसण्हकिण्हकुडिलगकेससेसो सदेव-मणुया-ऽसुरपैरि-समज्जयारम्मि छट्ठभत्तेणं ‘सव्वं मे अकरणिज्जं पावं’ ति चरित्तमारूढो । तओ पच्छा चत्तारि सहस्सा स्वत्तियाणं गरुय-वहुपसायाऽऽवज्जियहियया णिसिज्जमाणा वि भरहेणं, पडिक्कलज्जंता वि वंधुयणेणं, चइउण रायसिरिं, उज्झिउण पुत्त-कलचाइयं, छिदिउण य णेहपासे तेलोक्कगुरुपमाणओ ‘जा गती भगवओ सा अम्हाणं पि’ एवं पइण्णामंदरमारूढा । गओ य विम्हयावूरियहियओ णिक्खमणमहिमं काउण सोहम्माहिवई ।

तओ भयवं चउसहस्सपरिवारिओ विउलं महिमंडलं विहरिउमादत्तो । विहरंतो य आहारट्ठी अविण्णायभिक्षा-भिक्ष-यरसरूवेणं लोएणं कण्णा-वाय-नुरगादिएहिं णिमंतिज्जमाणो गहियमूणव्वओ लिंभगगहणकालमासाइयमणपज्जवणाणो चउणाणी नगर-पट्टणाइयं विहरंतो अदीणमाणसो परिचत्तो लुहावेयणापरिगएहिं आसाइयकंद-मूल-फलाइएहिं भरहभय-गहियरणाणिवासेहिं पवत्तियपढमतावसलिंगेहिं चउहि विं समणसहस्सेहिं ।

तओ भयवं णमि-विणामीहिं कच्छ-महाकच्छपुत्तेहिं अणासाइयसामिपसायपुहइसंविभागेहिं गहियमंडलग्गेहिं सेविउ-मादत्तो । अणया य धरणिंदो वंदणागओ संजमियजडाकडप्पे गहियफरमंडलग्गे कयवक्कोर्डट्टरूप दट्टणं पुच्छइ-भो किंनिमित्तं भगवन्तं णिस्संगमोलग्गाह ? । तेहिं भणियं-भोगत्थिणौ । नागिंदेण भणियं-कुओ भगवओ चत्तविसयमुद्दाओ संपयं विसयाहिलासो ? । तेहिं भणियं-तहा वि अम्हेहिं ण अण्णो कोइ दिट्ठपुव्वो, एयसयासाओ चेव जं होउ तं होउ । त्ति भणिउण तुण्हिक्का ठिया । एयमायणिउण धरणिंदेण चित्तियं-भयवं ताव वायामेत्तेणापि अकयपरोवयारो, अमोहा य महापुरिससेवा, विहत्तं सयलं भरहऽद्धं, तो देमि एएसिं पण्णत्तिपमुद्दाणं महाविज्जाणं अडयालीसं सहस्सं, कुणंतु एए महा-विज्जावलेणं वेयड्हस्स पणुवीसइजोयणुच्चस्स पण्णासं वित्थिण्णस्स दसजोयणव्विक्खंभासु दाहिणुत्तरसेटीसु णगरणिवेसं काउणं विज्जाहरचक्कवट्ठित्तणं । चित्तिउण य एयं चेव भणिया णमि-विणामी । तेहि य पुणरुत्तं भण्णमाणेहिं णमिउण भगवन्तं गहियाओ विज्जाओ । गओ णिययं च थामं धरणिंदो । ते वि य विज्जाहिं लोभिय गहियजणवया गया वेयड्हपव्वयवरं । निवेसियाइं च णमिणो[णा] दक्खिणसेटीए पण्णासं नगराइं, विणमिणा वि उत्तरसेटीए सट्ठि । गया य विज्जावलेणं विज्जाहरचक्कवट्ठित्तणेणं पसिद्धिं । भुंजंति भोए ।

१ एयं च जाणंतस्स जे । २ लहुवं चेव जे । ३ “वुक्किट्ठ” जे । ४ “संणिहाणं” जे । ५ “परिसामं” जे । ६ पविक्खलिं” जे । ७ मि सु । ८ “भोच्छरिणं” जे । ९ वेय जे ।

इओ य भयवं संपुण्णमियं कवयणो लायणजलपवाहपूरियमहियलज्जन्तो संवत्स(च्छ)रमणसिओ गओ विहर-
माणो गयउरं । पविट्ठो य आहारट्ठी सेज्जंस्स भवणं । दिट्ठो य सेज्जंसेण । तओ तहंसणसमणंतरमेव ईहापूहं कुणमा-
णस्स समुपण्णं जेइस्सरणं । मुमरियाणि णिण्णामियापमुहाणि भगवया सह गयाणि अट्ठ भवन्तराणि । उवल्लो य
उस्सहस(रि)पुण्णमहियस्स वट्ठणस्स चक्रवर्तिणो सारहित्तेणं अप्पा, तो वियाणिओ तेण सह पच्चज्जापरि-
याओ, उवगओ [य] फामुयभिक्षादाणविही । ताव य तपुण्णाणुहावेणं उवगया य गहियइक्खुरसभरियकल्ला केई
कुट्टुम्वियपुरिसा । तओ हरिसभरिज्जन्तलोयणेण गिरंतवुभण्णरोमं चकुड्ढेणं पवड्ढमाणपरिणामकटणं कयत्थ-
मप्याणं मण्णमाणेणं उक्खित्तो भवपंजराओ अप्पणो व्व इक्खुरसकल्लो, भणिओ य भयवं-सुज्जति एस आहारो
भगवओ, ता गेण्ह एयं, कुणह पारणगविहीए मज्झमणुगेहं ति । एवं भणिए भगवया कओ अंजली । पल्लत्थिओ
णिययजसनिवहो व्व भुवणयले रसकल्लो निच्छिदे करयल्लुयले । जाव य कओ भगवया पारणगविही ताव य गहयले
किंकरतालणवेक्खाओ वज्जियाओ देवदुंदुहीओ, मुक्कं कुमुभवरिसं, पडिया रयणवुट्ठी, कओ जयजयारवो मुरा-उमुर-
गणेहिं, पसंसिओ सेज्जंस्सरवई । अवि य—

भवणं धणेण, भुवणं जसेण, भयवं रसेण पडहत्थो । अप्पा निरुवमसोक्खे, सुपत्तदाणं महग्घवियं ॥ १२५ ॥

वट्ठो 'तेणेव वली हरिणा जण्णम्मि पुहइदाणेणं । सेज्जंस्सो उण सिट्ठो सुपत्तरसदाणमेत्तेण ॥ १२६ ॥

कयं च भगवओ पारणगुदेसे चाउरंतयं । पैयट्ठाविओ दाणधम्मो । तहेव लोओ चाउरंताइयं करिउमादत्तो ।

भुवण्णाहो वि बाहुवलिंरायदाणीए तक्खसिल्लावाहिरियाए एकराइयं पडिमं ठिओ । निवेइयं रयणीए चेव
बाहुवल्लिओ तण्णिओइयपुरिसेहिं भगवओ आगमणं । बाहुवल्लिणा वि मंतियं-कल्लं सच्चिड्ढीए तेलोकपियामहं भुवण-
गुरुं वंदामि त्ति । एवं चित्तयंतस्स पभाया रयणी । कयमुचियकरणिज्जं । महया रिट्ठीए वंदणत्थं णिग्गओ । ताव य भुवणगुरु
अपडिवदत्तणओ अण्णत्थ गओ । भगवंतं अण्णत्थगयं जाणिऊण बाहुवल्लिणा अप्पाणं गिदिऊण भुवणगुरुवल्लणकंतपएसे
सव्वरयणमयं सहस्सारं धम्मचक्रं कयं ।

सामी वि बहली अडम्बइल्लं जोणेगविसयं सुवण्णभूमिं 'चे अण्णे य णाणाविहमेच्छजाइदेसे धम्ममुइविज्जिए
गहियविहिहाभिग्गओ णाणाविहतवचरणरओ वरिससहस्सं विहरमाणो संपत्तो पुरिमतालस्स नगरस्स पुच्चुत्तरे दिसौभागे,
सगडमुहाभिहाणे उज्जाणे गम्भोहवरपायवच्छायाए अट्ठमेणं भत्तेणं पडिमं ठिओ । तत्थ य ज्झाणंतरियाए वट्ठमाण-
माण[स]स्स पवड्ढमाणमुहज्जवसाणस्स अपुच्चकरणकमेणं आरुहिऊण खवगसेहिं खैवियघण्णयाइक्कम्मचउक्कस्स उप्पण्णं
दिब्बं केवल्लणं । उप्पण्णे य अणंते णाणे चलियासणगएणं सोहम्मवइणा कया केवल्लमहिमा । विरइयं समोसरणं ।
उवविट्ठो भुवणगुरु । पत्थुया धम्मकहा । परुवियाणि पंच महव्वयाणि । पव्वाविया य चउरासीइं गणहरा ।

इओ य 'निवेइया भरहस्स चारपुरिसेहिं भगवओ केवल्लणाणुप्पत्ती । तयणंतरमेव आउहसालावालेणं आउहसा-
लाए निवेइयं समुपण्णं चक्रयणं । तओ भरहो चित्तिउमादत्तो-कस्स पुण पुच्चयरं महिमा कायव्व ? त्ति । एवं चित्तिऊण
सयमेव विल्लिओ-अहो ! दूरेण विपलम्भिओ संसारसहावेणं, जओ कहिं ताओ भुवणगुरु सयलजगज्जुद्धरणसमत्थो ?,
कहिं चक्रं अणेगजीवविइवणसहावं इहलोयमेत्तपडिवदं ?, ता पूएमि तायं, तम्मि पूइए सयलं चक्राइयं पूइयं चेव । एवं
चित्तिऊणैमव्वट्ठिओ केवल्लमहिमाकरणणिमित्तं । दिण्णा य आणत्ती महापडिहाराणं । सज्जीकयं जाण-वाहणादियं ।
विण्णत्ता मैरुदेवासामिणी इमं-“भयवइ ! तुमं सव्वकालमुवल्लंभपरायणा महि(ह)मासि जह-‘किल मह पुत्तो वासारत्ते
आसारधाराजलपव्वालिओ, सिसिरे य हिमकणुच्छित्तसिसिरमारुयाहयवेविरसरीरो, गिम्भैयाले य चंडदिवसयरक-
करालियविग्गहो सयाकालदुक्खमणुहवइ ।’ ता आगच्छउ सामिणी, पेच्छउ अत्तेणो पुत्तस्स महं च रिद्धिविसेसं ” । एवं
भणिऊण आरोविया गयवरखंधोवर्ति । उच्चलिओ महाचडयरं वंधुयणपरियरिओ भरहाहिवो । आसणत्तणओ य विणीय-

१ जाइसरणं जे । २ अप्पाणो । विं स् । ३ 'गकट' जे । ४-६ पारणविं स् । ५ 'गहन्ति स्' । ७ 'णाणुवे' जे ।
८ 'तेणेव' जे । ९ पारणमुदेसे जे । १० पयट्ठाविओ जे । ११ यवनविषयम् । १२ 'च' इति सुपुस्तके न । १३ दिसालोए स' जे ।
१४ सविऊण ण' जे स् । १५ निवेइयं स् । १६ 'ण अण्णु' जे । १७ मरुदेवी' जे । १८ गिम्भैयाले जे । १९ 'णो सुयस्स मुहं च
रिं' जे । २० उवविओ स् ।

णयरीए पुरिमतालस्स लहुं चेव पत्तो भरहाहिवो तमुहेसं जत्थ सामी समोसढो ।

दिट्ठो य दूराओ चेव पणयजणऽबुद्धरणसमत्थो अभयदाणपवत्तो हत्थो व्व भयवओ धम्मदओ । अवलोइयं च सहस
त्ति कणयकिंकिणीजालमालाकयकोलाहलेणं पवणवमुच्छलियेवलियवेविरधयवडसमुहेणं अयत्तपत्तजयणाहसंगमुदुधुयवेल्लह-
लभुयासहस्सेणं व णचन्तं महिमंडलं तिपायारोववेयं छत्तचयसणाहं असोयत्तरपायवाहिद्वियं तियसा-ऽमुरविरइयं समवसरणं ।
दट्ठण य सहसोवयंतियसा-ऽसुरिंदुव्विहियभूसणकलावपहासंघाउत्थइयतरणिमंडलं "विम्भउफुल्लोयणो देहभरुव्वरन्त-
परिओसो भरहाहिवो मरुदेवासाभिणीं सपणयं भणिउमाढत्तो-अम्ब ! पेच्छ भुवणगुरुणो जयभूसणस्स रिद्धिविसेसं,
एयं च मह णियन्तस्स तणाओ तणुअयरी णियसंपया पडिहाइ । णिसुओ य मरुदेवासाभिणीए मुरा-ऽमुर-गर-विज्जाहर-
जयजयारवो, णिसामिया य अमयमती विवं पल्लायन्ती जणमण-सवर्णिदियविसेसे तिथयरवाणी । तओ णिसामिऊण
वाणीं वियलिओ कम्मरासी, ववगयं मोहजालं, उल्लसिओ सुहाणुभावो, पणट्ठं तिमिरं, पेच्छउमाढत्ता विम्भयजणए भय-
वओ अइसयविसेसे । आहत्ता चित्तिउं—“अवस्सं तिहुयणऽबुद्धिओ मह पुत्तो, कइमण्णहा चिवेइणो विवुहा सुस्ससापरायणा
भविस्संति ? ति । एरिसाण य तिहुयणपडिवोहणणिमिच्चं करुणावज्जियदिययाणं भवसंभवं कुणंताणं उवगरणणिमिच्चं
जणणि-जणयाइयं । एवं च ठिए को णेहपडिवंधावसरो ? ता दुट्ठु कयं मए पुव्वि जं णेहमोहियाए विलवियं । संसारे
संसरंताणं कम्मवसगाणं जीवाणं सव्वो सव्वस्स पिया माया बंधू सयणो सत्तू दुज्जणो मज्झत्थो ” ति । एयं च चित्तयंतीए
उत्तरुत्तरमुहऽज्झवसायारुदसम्मत्ताइगुणट्ठाणाए सहस ति पावियाऽपुव्वकरणाए पत्ता खयगसेदी, खवियं मोहजालं, पणासि-
याणि णाण-दंसणावरणं-उत्तरायाणि, समासाइयं केवल्लणाणं । तयणन्तरमेव सेलेसीविहाणेणं खचियकम्मसेसा गयखंधारुदा
चेव आउयपरिक्खए अंतगडकेवल्लित्तणेणं सिद्धा । “इमीए ओसप्पिणीए पढमसिद्धो ” ति काऊण कया देवेहिं महिमा ।
विष्णाओ य एस वुत्तं तो भरहाहिवेणं तियसा-ऽमुरसयासाओ । तओ विम्भय-सोय-कोऊहलभरियमाणसो दूराओ चेव
उज्झियरायविंधो सपरिवारो य पायचारी पत्तो समोसरणं, पविट्ठो य पुव्वदुचारेणं । सीहासणोवविट्ठो दिट्ठो भुवणगुरु ।
तिपयक्खिणीकाऊण य धुणिउमाढत्तो—

जय मोक्खपहपयासय ! जय जय संसारजलहिवोहित्थ ! । जय घोरणरयपायालवडणपडिरुम्भणसमत्थ ! ॥ १२७ ॥

जय विसयविसमहोसहि ! जय घणकम्मद्वगंठिणिद्ववण ! । जय सयलभुवणभूसण ! जय वज्जियऽवज्जसम्भाव ! ॥ १२८ ॥

जय सैजलजलहरोराल्लिरुयमुइमुइयमहुरणिग्घोस ! । जय सयलल्लिन्नसंसय ! संसियकयसासयमुहेस ! ॥ १२९ ॥

जय गरुयभवभयुप्पित्थसत्तसत्ताणदाणदुल्ललिय ! । जय भुवणभरियजसगुणणिहाण ! जय णिज्जियाणंग ! ॥ १३० ॥

जय ज्ञाणाणल्लेपयवियणीसेसविसेसपावसम्भाव ! । जय पणयैनागवड्ढण ! जय जय जयवंधव ! मुणीस ! ॥ १३१ ॥

जय कोहकसण ! जय माणमलण ! जय मायमहण ! मुणिगाह ! ।

जय लोहग्गाहणिग्गाह ! जय मिच्छुच्छायणसयण्ह ! ॥ १३२ ॥

जय तियसा-ऽमुर-गरणाहमउल्लिमणिहिहसमसिणकयपीड ! । जय कयसयलसुसंगय ! जय धम्मपयासियपयत्थ ! ॥ १३३ ॥

इय सो(थो)ऊण ससंभमभत्तिभरुच्छलियवहलरोमंचो । णरणाहो जयणाहस्स चल्लजुयलं समल्लीणो ॥ १३४ ॥

तओ भगवया पत्तुया धम्मकहा, परुवियाणि पंच महव्वयाणि, पव्वाविया उस्सभसेणपमुहा चउरासी गणहरा ।
उस्सभसेणगणहरेण य भरहस्स पंच पुत्तसयाइं, सत्त य, णत्तुयसयाइं, बम्भी य, तम्मि चेव समोसरणे पव्वावियाणि ।
तओ य भगवं बोहंतो भवियकमलायरे विहरिउमाढत्तो ।

इओ य भरहाहिवो समुप्पन्नचोइसमहारयणो अणेयणरणाह-सामन्तचक्कपरियरिओ अत्थाइयामंडवे मुहासणत्थो
विष्णत्तो सुस्सेणाहिहाणेणं णर(?)सेणा)वइणा जहा—“देव ! विष्णायसयलसत्थऽत्थस्स अवगयलोयववहारस्स पैरिच्छियराय-
णीतिसारस्स भैवओ उवएसप्पयाणं चवलत्तणं, तद्वा वि जं भवओ ममोवरि बहुमाणो तेण भण्णसि-देव ? पदिदिणमसंखियप-
यावो दसमु वि दिसामु वित्थारियतेयप्पसरो मूरो णेइ मुहेण वासरे । तेयरहियस्स उण हरिणदिययस्स पंडरउट्ठियस्स मयलंचल-

१ 'यववलिय' जे । २ 'अपत्तपत्तं जय' जे । ३ 'सुरिंदुव्विहियभू' जे । ४ 'विम्भउ' जे । ५ 'विसेसो' जे । ६ 'विय' जे । ७ 'एयं' जे ।
८ 'य निज्जिय' जे । ९ 'सयल' जे । १० 'लविहुणियणी' जे । ११ 'यनागबंधण' स् । १२ 'लोहग्गाहणिग्गाह' जय मि' जे । १३ 'परिक्ख-
यरायनीयसार' स् । १४ 'भयवओ' जे स् ।

णस्स विय कत्तो दो वि दियहा तहट्टिया चेव लच्छी ? । अणवरयसत्थग्गहणेण य करयलाणीव बहलकज्जलवाहंसुयपब्बालियाइं सामोहवंति सत्तुसीमंतिणीणयणाणि । अन्नं च देव ! मुल्लवज्जियाए एगाराइयाए वेसाए वि बीओ गायगो चि लज्जायरं, किं पुण कुलक्कमागयगुरुवइट्ठाए सयलजणविण्णायाए पुंहुतिलच्छीए बीओ भचारो ? चि । ता देव ! मत्तमायं गमयजलासारारद्धदुड्डिणाइं दप्पुद्धुरतुरगस्वरवुराहउच्छलियधूलिधवल्लाइं गिसियकरवालकरपकपाइक्कविज्जुच्छडाडोवभामुराइं चलियरहवरोहदलियमेइणीवीहजणियणिहायासवाइं पाउसारंभदिणाणि व भरहवासम्मि वियरंतु तुह बलाइं, अवि य—

जाव ण दप्पुद्धुररहियतुरियतोरवियतुरयसंधाया । भरहम्मि पढम्मि उ जंति सुसरा रहवरुग्गयाया ॥ १३५ ॥

जाव ण अरुयमउप्पिमग्गडिमुच्छलन्तमत्तलिले । पेच्छन्ति दुरुम्मिउंतलोयणे मत्तमायंगे ॥ १३६ ॥

जाव ण स्वरसुरस्वयकययपडलुच्छलियमलियससिहरे । वाहिजंते तुरए तुरियं सत्तू तुह णियंति ॥ १३७ ॥

इय जावं फारकरवालभामुरे तुज्झ पक्कपाइक्के । भरहम्मि संचरंते णियंति ण हु, ताव तुह सत्तू ॥ १३८ ॥

तत्रो एयमायणिकाण काऊण य चकपूयं भरहादिवेण ताडाविया णीसेसदिसापसाहणत्थं मेरी । उच्चलिओ यै एकमुदंकिं महिमंडलं काउं चकपहपहेणं भरहादिवो । दिण्णं च पुर्व्वि पुव्वदिसासाहणुज्जएणं पुव्वदिसाहिहुत्तं पयाणयं । पत्तो अणवरयपयाणएहिं मागहत्तियाहिद्वियं गंगामुहालंकरियं पुव्वसागरं । तत्थ य चउत्थेणमारोहिऊण सुदिट्ठयं जक्खं, अणुण्णाए य तेणं अवगाहिऊण वारहजोयणाइं रहेण समुदं, तत्थद्विएणं गहिओ णियणामंकिओ सरो । मुक्को य धणुसंधाणेणं समुदाहिमुहो । पडिओ य मागहत्तियाहिद्विणो णागकुमारस्स भवणे । दट्ठूण य तं सरं कुविओ मागहत्तियाहिद्वि । दट्ठोद्विभिउडीभयंकरेण भणियं णागकुमारेणं—को उण एसो अपत्थुयपत्थओ जो मह भवणे सरपक्खेवं कुणइ ? चि । तओ णामंकियसरमवल्लोवि(इ)ऊण वाइयं णामं । विण्णायं च जहा—समुप्पणो पढमभरहादिवो भरहादिहाणो चकवट्ठी । तओ य सच्चडारयणं सरं गहेऊण समागओ चकवट्ठिसमीवं । दिट्ठो य भरहादिवो । सम्माणिओ अबुट्ठाणाइणा । समप्पियं चूडारयणं सरो य । भणियं च तित्थाहिद्विणा—अहं तव पुव्वदिसावालो । तओ अणुमण्णिओ भरहणरिदेणं । कया तस्सउट्ठदेवसिया पूया । गओ चकमग्गणुलग्गो वरदामाभिहाणं समुददक्खिणत्तित्थं । तत्थ वि य तेणेव क्रमेण वरदामत्तित्थादिवेणं पूइओ रयणदाणाइणा । पुणरवि गओ पद्दास(सं) अवरदक्खिणं तित्थं । तओ तेणेव विहिणा अवरसमुदत्तित्थादिवइपूइओ सिंधुदेवि बलभरकंतं काऊण, बहुरयणसमेयं सिंधुदत्तं कणयं सिंधुदेवी [य] ओयवेत्ता, पुणो वेयइहगिरिकुमारं देवं वसीकाऊण सुसेणेण सेणावइणा चम्मरयणप्पओएण उत्तारियवल्लवाहणो सिंधुणिकवुडं पसाहेइ । तओ तिमिसगुहाए किरिमालयजक्खाणुमओ सेणावती दंडरयणेणं तिमिसगुहमुहमुग्ग्याडेउं, कायणिरयणेण एणूणवण्णाससंखाणि मंडलाणि तरुणरविमंडलसण्णिहाणि तमणिण्णासणसमत्थाणि आलिहिउं, उम्मुग्गणिमुग्गाओ णदीओ संक्रमेण लंवेउं पविट्ठो उत्तरखंडं भरहखेत्तस्स जेउं भरहादिवो । चिलाएहिं यसद्धिं पयट्ठमाओहणं । ते य पराजिया मेहकुमारे आराहंति । तेहिं आहत्तं वरिसिउं मुसलप्पमाणधाराणिवाएणं । चकवट्ठिणा य अहो चम्मरयणमुवरि लत्तरयणमळिभतरे य ठिओ(१) ठाविओ) संधावारो । तत्थ य साली पुव्वण्हे वाविया अवरण्हे पचन्ति, काऊण आहारत्थमुवणमइ । तओ आभिओ गियदेवेहिं पेळिया मेहमुहा । तव्वयणेण य सिद्धा चिलाया । सेणावइणा य साहिओ उत्तरसिंधुणिककुडो । तओ वावत्तरि जोयणाणि चुल्लहिमवन्ते उवरिहुत्तं सरं पक्खिवइ । तओ सरविलिहियणामदंसणवोहिओ चुल्लहिमवन्तगिरिकुमारो देवो आगंतूण रयणाइं पयच्छइ । पुणो भरहनाहो उसभकूडे सणामं आलिहिऊण, सुसेणसेणावइणा ओयवियं गंगाणिक्खुडं । तओ भरहादिवो गंगाकूले सेणाणिवेसं काऊण गंगदत्ताया सह वरिससहस्सं भोगे भुंजमाणो ठिओ । तयणंतरं च वारस वासाइं णमि-विणमीहिं सद्धिं पयट्ठमाओहणं । पराजिएण विणमिणा इत्थीरयणं, णमिणा वि नाणाविहाणि रयणाणि उवट्ठवियाणि । तओ खंडप्पवायगुहासामि णट्ठवालयं जक्खं वसे काऊण णीति । खंडप्पवायाए गुहाए णिम्मयस्स बलभरकंतगंगाकच्छप्पएसस्स उवट्ठिया णव महाणिहिणो णागकुमारादिट्ठिया, तं जहा—णिसणो पंडुओ कालो

१ वाहसुहं मुहण्णालिनाइं सू । २ उवइं जे । ३ दप्पुद्धुरं जे । ४ 'खयधूलिपडलुच्छलिय' जे । ५ 'व परकर' जे । ६ य चकमुदं' सू । ७ अहं च तव जे । ८ 'वो । तिमिसगुहाए चिला' जे । ९ रयणाइयं ९' जे । १० गंगदेवता सह जे ।

महाकालो भाणवो संखो सव्वरयणो महापउमो पिङ्गलो । एए आगंतूणं णव वि णागकुमारा भरहाहिवं वयंति—भो महासत्त ! तुह पुण्णाणुहावावज्जिया अम्हे गंगामुहमागहत्तिथाहिवासिणो समागया ।

ता देसु रमसु भुंजसु जहिच्छियं 'णेवुएण हियएण । अम्हे लहिऊण तुमं अक्खयणिहिणो महाभाग ! ॥ १३९ ॥

पुणो ओयवियं दाहिणं गंगाणिक्खुडं सेणावडणा । तओ एएण कमेण वसीकयलक्खंडं भरहसिद्धी सट्ठीवाससहस्सेहिं पत्तो य महया सम्मदेणं बिणीयणयरीए । बारसहिं वरिसेहिं रायाहिसेओ । तओ णिरुवियं च 'भरहाहिवेणं—को मम भाउआणमागओ ण व ? ति । दिट्ठा य सुंदरी आवंडुरक्खामकवोला । तओ तं दट्ठण भणियं 'भरहाहिवेणं—किमेवम-वत्था इमीए ? । कंचुडणा भणियं—देव ! आयम्बिलेणं । तओ पयणुराएण मुक्का पव्वइया य भगवओ समीवे । तओ णिव्व-चित्थिमहारायाहिसेएणं 'भरहाहिवेणं अट्ठाणउडभाउयाणं पेसिओ दूओ । भणियं च—

जइ इच्छह रायसिरी तो मह आणाणुवत्तिणो होह । अह बहुमन्नह तायं ता लम्माह तस्स मग्गेणं ॥ १४० ॥

तओ मुणिऊण 'भरहसंदेसं सव्वे जणयं तित्थयरमुवट्ठिया । उस्सभस्सामिणा वि समणुसासिऊण पडिबोहिया, पव्वाविया य । पुणरवि 'भरहाहिवो मंतिसमेओ मंतिउमादत्तो—'भरहं विजियं, उच्छाइया रिवू, पसरिया जए आणा, जं करणिज्जं तं कहह मज्झ, सज्झं किमवसेसं ? । एत्थंतरम्मि लद्धावसरेण सुवुट्ठिणा भणियं—“एवमेयं, किंतु—

वेरमुवघायजणए उवयारी बंधवो सया होइ । कज्जावेक्खाए जओ मित्ता-उमित्तत्तणमववत्था ॥ १४१ ॥

ता देव ! जो एस बाहुबली महाबलपरकमो बलावलेवावमणियासेससप्पुरिसोडीरो सो किं बंधुत्तणेण तुम्ह वट्ठइ ? उयाहु अण्णह ? ति । तत्थ जइ ताव पुव्वपक्खो ता सोहणं, अह अण्णह ति तओ किं विजियं 'भरहस्स ? , किं वा रिवूण उच्छाइयं ? , कहं वा अखलियत्तणं आणाए ? , महंतो मह वियप्पो तच्चिट्ठिएण जणिओ, ता वियारिऊण भणउ देवो ” । भणियं 'भरहाहिवेणं—लक्खिओ तुह भावावेओ, ता पेसिज्जउ तस्स अज्जेव दूओ, णिव्वडउ तस्स ववसियं । ति भणिऊण सदाविओ सुवेगाभिहाणो दूओ । सिक्खविऊण पेसिओ बाहुबलिसमीवं । तओ [? गओ] गामार्ग-खेड-मडंवाइयाई लंघेऊण तक्खसिलं, पत्तो य बाहुबलिवुंणस्स दुवारं । महापडिहारजाणाविओ य पविट्ठो अत्थाइयामंडवं । पायवडणुट्ठिओ य उवविट्ठो भुमयाइट्ठे जहारुहे आसणे । थेववेलाए य भणियं बाहुबलिणा—

“जस्स कुसलेण कुसलं सयलस्स वि होइ जीवलोयस्स । किं कुसलं तस्स महाजसस्स मह बंधुणो सययं ? ॥ १४२ ॥

जा णिज्जिऊण परमंडलाई एकायवत्तविच्छुरिया । सा रज्जिसिरी केणावि अमलिया धरइ तह चेव ? ॥ १४३ ॥

बहुआणा चउसायररसणालंकारधरणिमणीए । किं तह 'चेव वियम्भइ माल व्व सिरेहिं वेपंती ? ॥ १४४ ॥

जस्स कएण तुलिज्जंति सील-मायार-कुलववत्थंभा । सो पहुपेमारंभो भण कम्मि मुजायकम्मम्मि ? ॥ १४५ ॥

इय परियणेण जुत्तस्स तस्स दियहा मुहेण वचंति । बहुपत्थणिज्जविहवस्स बंधुणो गुरुपयावस्स ? ॥ १४६ ॥

किंच—

अज्ज गुणभायणमहं रायसिरी अज्ज णवर मह सफला । जं दुव्विणीयपत्थुयकहाए णियभाउणा सरिओ ॥ १४७ ॥

ता दूय ! कहसु किमम्हारिसाणं पि सरणकारणं महारायस्स ? ” । इय भणियावसाणे सुवेगो भणिउमादत्तो—“किमेव-माइसइ कुमारो ? । जओ देवस्स खणमेत्तं पि ण फिट्ठइ कुमारो हिययाओ । 'संगंमावसरो' ति कलिऊण पेसिओ ण कोई देवेणं ति । जं पुण आइट्ठं तुम्हेहिं 'सरीराइकुसलण्णेसणं' ति तत्थ—

अणवरयं सेविज्जइ मुर-नरपमुहेहिं जस्स पावीढं । तुम्हारिसा य बंधु तस्स [य] 'कुसलं ? ' ति का संका ? ॥ १४८ ॥

'एकायवत्तणं रायलच्छीए, चउसमुइपज्जंताउणापरिसक्कणं च' भणंतेहिं तुम्हेहिं अणेयसंकप्पुप्पाइयवियप्पो परमेसर-समीववत्ती पिमुणजणो णिरवयासीकओ उभयसिद्धीए । णेहट्ठाणं पुण सया गुणगणो बंधुयणो य । ता कुमार ! महाराया-भिसेयावसरे वि तुम्हे णागय ति जेणियउकंठेणं देवेणं पेसिओ म्हि अणागमणिमित्तजाणणत्थं ” । दूयवयणावसाणे भणियं बाहुबलिणा—सहवासपरिहवासंकाए णागया अम्हे । जं च आणा अम्हारिसेमु खलइ तं अलंकारो, ण परिहवो राइणो, जओ—

जा समुरा-उमुर-किण्णार-विज्जाहर-णरसुरेहिं वेप्पन्ती । सा आणा बंधुमु खलइ णवर थेवो अलंकारो ॥ १४९ ॥

१ निखुएण जे । २ 'री ओयंडुरखाम' जे । ३ 'उ अज्जेव सू' । ४ 'ग-गगरा-उडइ-मडं' जे । ५ 'भवणस्स' जे । ६ 'चेव' जे । ७ 'संगमा' जे । ८ 'भो क' सू । ९ 'अणिउकंठेण' जे ।

बंधुणेहो उण भाउयवुत्तेणं सब्वजणपरिगओ । अहवा परमत्थबंधवो सो, जओ—

जो उवएसं पावम्मि देइ सो वेरिओ ण संदेहो । जो कुणइ धम्मबुद्धिं सो तस्स जणो परमबंधू ॥ १५० ॥

एवं च पियगुणत्तणं पि जइ होइ तो होउ ” । त्ति बाहुबलिवयणावसाणे भावगरुयं दूओ भणिउमाहत्तो—

“कुमार ! सोहणमेयं जइ बंधुत्तणेण आणा खलइ तुमम्मि, तहा वि पिसुणजणो अण्णहा वियप्पेइ । येज्जइ य तस्स आणाए वट्ठिउं, जओ तुह जेट्ठभाउओ सो । किंच—

मुचरियचरिओ चाई कयण्णुओ दूरणिग्गयपयावो । णीसेसोवहिकेयारकासओ सत्थणिम्माओ ॥ १५१ ॥

जो सययं रायमहादुमस्स छायाणिसेवणसयण्हो । सो सिरिफलाइं भुंजइ परपरिणइणिब्वियाराइं ॥ १५२ ॥

जं च सहोयरुग्घट्ठणं कयं सो महारायस्स दोसो चिय ण होइ । जइ णाम सूरुग्गमेण सेसतारयाण तेओ अवहीरइ किमेस सूरस्स दोसो ? । ते य परमेसरेण भणिया वि ‘भुंजइ जहिच्छं मज्झ सिरि’, णवरं ते संपयमसहमाणा सयमेव- निग्गया किं तत्थ महारायस्स ? । अवि य—

अमयमयसिसिरिकिरणं चंदं णिब्ववियसयलजियल्लोयं । णं सहंति हत्थिदसणा कमला वि ये जिययदोसेणं ॥ १५३ ॥

अण्णं च गुणपियत्तणं महारायस्स दूसंतेणं अप्पा ताव खलत्तणेण ठविओ । जओ—

संतं पि हि वयणिज्जं परस्स ण भणंति सज्जणा णिययं । इयरे भुत्तूण गुणे दोसमसंतं पि पयडेन्ति ॥ १५४ ॥

अण्णं च जइ णाम तुमए रायगुणा ण णाया, तं णाम—

जइ कहवि णाम जबंधर्हि चंदो ण चेव सचविओ । किं तस्स सिरि पयडा भुक्कालोयं ण भूसेइ ? ॥ १५५ ॥

किंच महाराय ! भाउणा होऊण दोमुग्घट्ठणपयडियखलत्तणेणं तुमए लज्जाविया अम्हे ।

जं तस्स भाउओ तं सि कुमार ! एण किण पज्जचं ? । किं फलमिमिणा भणिएणंणत्थपिसुणत्तणफलेणं ? ” ॥ १५६ ॥

ति दूयवयणावसाणे धीरत्तणपूमियकोवेण भणियं बाहुबलिणा—“रे दूय ! तस्साहं भाउयत्तणेण सोहणो त्ति । तुम्हा- रिस चिय जाणंति एरिसं जंप्पिउं जे महारायसंवडिहया, ता तुज्झ को दोसो ?, जओ—

धीरपरिग्गहारुयं जाणइ चक्कम्मिउं कुलपमुओ । आया-णयहरे पहुवरम्मि संवडिहओ य सया ॥ १५७ ॥

विणयपडिभग्गपसरं दूय ! भणंतेण साहियं सीलं । सीलेण णिययजाईं पहुणो य गुणित्तणं विमलं ॥ १५८ ॥

किंच—महं पि बाहुबलिणो तुम्हारिसेहिं अणत्थो कीरइ त्ति किं केण संगयं ? ” । तओ णियसामिपरिहवुत्तेयविओ दूओ भणिउमाहत्तो—

“सच्चो वि जाणइ हियं अप्पा सब्वस्स वल्लहो होइ । किंतु विणासणकाले विवरीयमई नरो हेंवइ ॥ १५९ ॥

तं, जं मह जाई सीलं च दूसियं तत्थ तुज्झ ण हु दोसो, जओ महारायबंधवो तं सि त्ति । जं पुण भरहाहिवस्स दोमुग्घ- ट्ठणं कीरति तं सब्वहा तुह ण जुचं । किंच तुम्हारिसेहिं गहिया दोसा वा गुणा वा महारायस्स कत्थ लगंति ?, जओ—

बहुमण्णन्ति सइंदा वि जस्स समुरा-उमुरा णरगणिन्दा । गुणणियरं का गणणा उ तस्स तुम्हारिसजणेणं ? ॥ १६० ॥

जेणइहिया होंति समा व तेहिं किं एत्थ संयुणंतेहिं । णिंदंतेहिं व तुम्हारिसेहिं जणपूरणनरेहिं ? ॥ १६१ ॥

ता किं बहुणा विगत्थिएणं ?, रज्जं वा मोत्तूण पलायमु, मुर-णर-विज्जाहरपडिच्छियं वा आणं पडिच्छमु त्ति, ण अण्णहा तुह जीयैस त्ति, अवि य—

तं बाहुबली णामेण णवर कत्थइ अदिट्ठमाहप्पो । जो पुण परबलमल्लणो सो अण्णो कोइ बाहुबली ” ॥ १६२ ॥

तओ तव्वयणाणान्तरमेव सयलं खुहियं रायचक्रं । भणियं च मुहडेहिं—रे रे दुरायार ! दूअ ! अम्ह समक्खं अहिविस्-

१ जुज्जइ जे । २ ण हसंति जे । ३ व अत्तदोसेणं जे । ४ मोत्तूण जे । ५ लज्जविया जे । ६ एणं णत्थि पिसुं जे । ७ धीरत्तणं जे । ८ तस्साहमभाउत्तणेण जे । ९ बहुणो सु । १० होइ जे । ११ जीविताया । १२ दूय ! जे ।

विऊण महारायं अज्ज वि पाणे धारेसि ? ता संपयं एस ण होसि, करेहि जं करणिज्जं । ति विज्जुच्छडाडोवमामुरं कड्हियं मंडलमं भडेहिं । तओ करवारियकलयलेणं भणियं बाहुबलिणा—किमणेण वावाइएणं ? अक्खओ किल दूओ । त्ति भणिऊण णीसारिओ अत्थाइयामंडवाओ । संदिट्ठं च भरहाहिवस्स जहा—“जणयदिण्णामंडलमेत्तसंतुट्ठस्स मज्झ पंचाणणस्स विय अत्तणो विणासाय ण जुत्तं कोवविबोहेणं ति, तुज्झं पिउणा चेव दिण्णं विसयखंडं । केवलं तु भवया भाउए णिव्वासेऊण मंडलपरिमाहो कओ, किमेत्तिएण चेव गव्वमुच्चहसि ? ।

ता जइ इच्छह रज्जं सिरिं च तह जीवियं च कित्तिं च । तो वज्जिय वज्जसमं मह मगं वियरसु जहिच्छं ॥ १६३ ॥

अविवाउओ अहं भाउयसिरीए ” । भणिऊण विसज्जिओ दूओ । एत्थन्तरम्मि कालणिवेयएण पैदियं—

अवरंगणासमागमपयडियराओ दिणक्खए सूरु । कमसोसरन्तकरसंगसामदेहं दिवं मुयइ ॥ १६४ ॥

उवसंहरइ सैं चिय तेयं अवलत्तणं लहइ सूरु । णियचेट्ठ चिय धीराण णवर हेउं विणासम्मि ॥ १६५ ॥

जं आसि दुरालोयं फुरियपयावस्स मंडलं रविणो । उवत्तिज्जइ सायम्मि, तेयरक्खा जए गरुई ॥ १६६ ॥

परिलिंदिउं ण तीरइ पुत्तिं जो गरुयवडिइयपयावो । सो चेव आकलिज्जइ सायमवत्थाकलणहेऊ ॥ १६७ ॥

दइयविरहे वि जा धरइ जामिणी तीए मतिलणमणग्गं । इय कलिऊण व दिवसो सह रविणा सायमत्थमिओ ॥ १६८ ॥

रविणा विणा तमोहेण णहयलं मइलियं णिरवसेसं । णिहुओ ता होति खलो परस्स खलियं ण जा लहइ ॥ १६९ ॥

एकेण विणा रविणा सायमवत्थंतरं जयं णीयं । लद्धखणेण तमेणं, तेयंसी सव्वहा जयइ ॥ १७० ॥

इय वियलियगुरुतेओ जइ जाओ कालपरिणइवसेण । अत्थमइ परं सूरु वि मइलणं ण सहइ पयावी ॥ १७१ ॥

तओ बाहुबली विसज्जियसयलसामन्तलोओ उट्ठिओ अत्थाणमंडवाओ । दूओ वि भग्गमच्छरुच्छाहो णिग्गंतूण तक्खसिलाओ अणवरयपयाणएहिं पत्तो भरहाहिवरायहाणिं विणीयणय्परिं । विण्णायवुत्तंतेणं भरहाहिवेणं धोसियं बाहुबलिहुत्तं पयाणयं । पइया सण्णाहमेरी । रयणीए चरिमजामम्मि य णिहाविरमुट्ठियस्स भरहाहिवस्स पदियं वंदिणा—

जग्गइ जइ वि पयावो तुज्झ सया भुवणरक्खणसयण्हो । तह वि कमलायरस्स व महइ जणो तुज्झ पडिवोहं ॥ १७२ ॥

सूरुग्गमेण णासन्ति तारया, होइ णिण्हो चंदो । किं किं ण करेइ जए तेयफुरणं वियंमंतं ? ॥ १७३ ॥

एतै वि बहुपदीवा सूरुग्गमजायनिफुरपयावा । णज्जयंति, पसिद्धमिणं ‘गुणाहिओ इयरमंतरइ’ ॥ १७४ ॥

वियसंतु पणयकमलाई देव !, मउलंतु वेरिक्कुमुयाइं । सूरस्स व तुह बोहेण होउ भुवणं पि रमणिज्जं ॥ १७५ ॥

इय मागहधुइविरमम्मि णवर मुत्तुट्ठिएण तुरिएण । अग्गक्खंधम्मि गयं पहुणा सम्मइभीएण ॥ १७६ ॥

तयणंतरं च महया सम्मइणं पयट्ठो खंधावारो । अणवरयपयाणएहिं पत्तो बाहुबलिदेससीमा ।

इओ य बाहुबली कयसयलकरणिज्जो सोहणदिवसे पयाणाभिमुहो तित्थयरधुणणत्थं पविट्ठो देवहरब्भंतरं, धुणिउ-
माहत्तो—

जय [जय] तेलोकेकल्लमल्ल ! परमत्थसत्तुविदवण ! । लोया-ज्जोयपयासणसमत्थ ! संपत्तवरणाण ! ॥ १७७ ॥

णाहो तुमं, तुमं चिय सरणं सयलस्स जीवल्लोयस्स । भवियाण वंधवो तं सि णाह !, तं चेव भवमहणो ॥ १७८ ॥

तुम्ह चलणाण जयगुरु ! णीसेसपसत्थलक्खणधराण । भवमहणाण महायस ! गोहमहामाणमलणाण ॥ १७९ ॥

जयमङ्गलाण मंगलधराण संसारवासमुकाण । गरुयगरुयाण मुणिवइ ! णमो णमो णिकलंकाण ॥ १८० ॥

इय गरुयभत्तिभरणिब्भरेण भावेण भुवणणाहस्स । काऊण धुइं णामेयसामिणो चलइ बाहुबली ॥ १८१ ॥

१ ‘जिज्जन्ति’ सू । २ ‘हणन्ति’ सू । ३ पण्ययं सू । ४ सव जे । ५ वीराण जे । ६ पणइक्कं जे । ७ अणवरयपं जे ।
८ तयलोके जे ।

णिग्गओ य चउरंगवलसमेओ रायहाणीए, पत्तो णिययदेसपज्जंतं । आवासिओ संगामजोगापप्सासणभूमिभागे ।
सिक्खविऊण पेसिओ भरहाहिक्खस्स दूओ । तेण य लद्धावसरेण य विण्णत्तो भरहाहिवो जहा—“महाराय !

जेण पैवत्तो सि तुमं पहेण सप्पुरिसणिदिओ एस । किच्चावसाणदुहओ, विजयत्थी किं बुहो कुणइ ? ॥ १८२ ॥
विहवो ता दूरे चिय सुपुरिस ? जीयं पि ते णसामणं । णरणाह ! इमम्मि तुहं णवरमसाहारणो अयसो ॥ १८३ ॥
किंच ण याणसि एयं पीई जह सज्जणस्स एकरया । दुक्खं विसंघडिज्जइ दुक्खं चिय विहडिया घडइ ॥ १८४ ॥
कज्जमवसाणविरसं होही णरणाह ! साहियं तुज्झ । कुसलं गयाहिवणो सीहविरोहम्मि किं होइ ? ॥ १८५ ॥
जो णिज्जिऊण भरहं कह कहयि समज्जिओ जयपयोवो । बाहुबलिणो भडेहिं मा वेप्पउ सो जसो एहिं ॥ १८६ ॥
पिउणा ‘दिन्नेणं चिय होई कयत्थो बली य बंधुं य । किं तुज्झ एत्थ णट्टं?, भरहाहिव ! होसु जसभागी ॥ १८७ ॥
बाहुबलिम्मि णराहिव ! अणुणिज्जंतम्मि णिज्जियं भरहं । इहरा बंधुच्छायणमयस चिय केवलं पडियं” ॥ १८८ ॥
इय भणिऊण सविणयं दूओ पुण भणइ सामिसंदिट्ठं । हीणुत्तिमाण मज्झे केणिह जुज्जेण जुज्झामो ? ॥ १८९ ॥
तओ तव्वयणावसाणे भणियं भरहाहिवेण—

“अप्पाणमप्पण चिय लहुया सलहन्ति जं तयं जुत्तं । इहरा गुणाणुवेक्खो को अण्णो ते पसंसेउ ? ॥ १९० ॥
सुपुरिसमग्गुत्तिणं तुह राया णवर भासिउं भुणइ । पडिक्खणमणदिआजं अम्हे ण य ज्ञाविया गुरुणा ॥ १९१ ॥
रे दूय ! वयणमेत्तसारेण किं बहुणा पलविणं?, सूर-कायरणं विसेसो फलेणं चेवे णिव्वडइ ति” । पुणो भणियं—
उत्तिमजुज्जेण जुज्झामो । दूएण भणियं—“जइ एवं ता किमणेण जणक्खणमफलेणं कएणं ? । ण तुह बलं मह पुरिसेहिं
तीरइ ओवग्गिउं, ण य तुह भडेहिं मज्झ बलं ति । ता तुमं पि तायस्स पुत्तो, अहं पि । णिव्वडउ दोण वि परक्कमो । पेच्छंतु
दो वि बलाई सक्खीभूयाई । जुज्झं पुण तिविहं—

दिट्ठीए उत्तमं, मज्झिमं तु बाहाहिं तह य वायाए । णिसियासि-तौमराईहि होइ अहमं जणविणासि” ॥ १९२ ॥
तओ तव्वयणाणंतरं भणियं महारायाहिराएणं—दिट्ठीजुज्झातिणा उत्तिमजुज्जेण जुज्झामो । ति भणिऊण विसज्जिओ
दूओ । साहियं णीसेसं बाहुबलिणो ।

अह जयदुप्परियल्लं अग्गक्खंधम्मि दारुणं समरं । सेणावइप्पमुहाणं भडाण जायं धरेऊण ॥ १९३ ॥
भरहाहिव-बाहुबलिणो उत्तिमजुज्जेण जुज्झिउं पयट्ठा । तत्थ य—
पढमं दिट्ठीजुज्झं, वायाजुज्झं, तहेव बाहाहिं । मुट्ठीहि य डंडेहिं य सब्बत्थ वि जिण्णई भरहो ॥ १९४ ॥

एत्थंतरम्मि गुरुपरिहवावूरियहियएण चक्रवर्त्तिणम्मि जणियविण्यपेणं भरहाहिवेण सुमरियं चकरयणं । सुमरियाणं-
तरमेव हत्थम्मि ठियं । तओ उमयबलेसु समुट्ठिओ हाहारवसदग्गभिणो महंतो कलयलो । मुक्कं च जालामालाउलीकय-
णहयलं चकरयणं । णियसोत्ते ण पहरइ । परिअंचिऊण बाहुबलिं पुणरवि तस्स चेवे हत्थम्मि ठियं । दिट्ठं च हत्थद्वियं
चकरयणं बाहुबलिणा । तओ कोवाणलुब्धिज्जन्तणयणराओ भणिउमादत्तो बाहुबली—

“किं चुण्णेमि सचक्कं णिट्ठद्वयजन्तददपरिग्गहियं । सबलं तुमं णराहिव ! पयडेउ बलं तु बाहुबली ॥ १९५ ॥
णयमज्जायाचलियम्मि संपयं को गुणो व्व तइ णिहए ? । दाहुज्झिताऽहिगहणेण मंतिणो किं पि सामत्थं ? ॥ १९६ ॥
धिद्धी अहो ! अक्कजं जं खैलविसयाण कारणे एस । मुंचइ उइयपरिहवो आयारं पोरुसं सच्चं ॥ १९७ ॥
ता छट्ठेमि सैंइ चिय हयविसए जाण कारणे लोओ । णियबंधुम्मि वि पहरइ निरवेक्खो मुक्कमज्जाओ ॥ १९८ ॥
विस-विसयाणं दोण वि भणंति अचंतमंतरं विउसा । सइ भुत्तं हणइ विसं विसया सरिया वि बहुसो वि ॥ १९९ ॥
ण गणेइ णिरयविणयाओ णेय लज्जं ण शोरवं ण कुलं । विसयविसमोहियमई कज्जा-ऽकज्जं ण लक्खेइ ॥ २०० ॥

१ पयसो जे । २ जीव पि सयलसामं सू । ३ दुक्खं पि संपडिं जे । ४ विहडिया सू । ५ पयासो । सू । ६ दिण्हेण सू ।
७ कोइ जे । ८ बंधुण । जे । ९ जेय जे । १० बलन्ति सू । ११ तुमम्पि सू । १२ गहम्मि सू । १३ जेय जे । १४ बलु विं जे ।
१५ सवे जे ।

पसुसरिसो होइ णरो विसयमुहासापिसायसचविओ । मूढो अंधो व्व सया हियमहियं वा ण याणेति ॥ २०१ ॥
 णायरइ धम्मचरणं, णिंदइ गुरुदेवयं, भयं मुयइ । ण गणेइ णेह-गोरव-लज्जं, ण य विणय-मज्जायं ॥ २०२ ॥
 जं परलोयविरुद्धं लोओ ववहरइ मुक्कमज्जाओ । तत्थ णिमित्तमणज्जा विसया विसभोयणसमाणा ॥ २०३ ॥
 विसयाणे पसादो सो दूसियगुरुसीलसज्जनगुणाण । परिहरइ हियं, अहियं बहुमण्णइ जं ज्जणो मूढो ॥ २०४ ॥
 इय एवमादि भणिऊण सुवहुयं णिंदिऊण खलविसए । णिन्मच्छिऊण भरहं बाहुबली कुणइ अप्पहियं ॥ २०५ ॥

तओ णियत्तविसद्विसयाहिलासो उम्मिद्धमुहऽज्जवसाओ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं काऊण विहिणा कयसामाइओ
 'संजायाइसयं णिययसहोयरपरिसमणइसओ कहं दच्छामि?' ति चित्तिऊण गहियमूणव्वओ तुलियपंचमद्वयभारो तत्थेव
 पडिमं ठिओ बाहुबली । तओ संजायपच्छायावेणं गरुयसंवेगाखित्तहियएणं णियचरियलज्जिएणं पाएम्मु पडिऊण
 भरहाहिवेणं भणिउमाढत्तो—

“मा मुयसु तं महायस ! मज्जायऽक्कमणलज्जियमणज्जं । चत्तं णियसयलसहोयरेहिं पावाधमं पावं ॥ २०६ ॥
 तइ णिग्गएण सुपुरिस ! णिकइयवणेहभावभरिएण । वंधुरहियस्स मज्झं रज्जमकज्जं व पडिहाइ ॥ २०७ ॥
 मज्झं ण एस दोसो अवराहो एस दोसमूलाए । सव्वाणायारधराए रायलच्छीए पावाए ॥ २०८ ॥
 पंडिच्चं जाई पोरुसं च कुल-सील-गुणवत्थंभो । विहैडंति जीए संगेण दुक्कयं णवर संठाइ ॥ २०९ ॥
 ण सहेइ सीलसारं, वंधुं परिहरइ, सुपुरिसं इणइ । णाणापयारवंचणसंमुज्जया जा सया लोए ॥ २१० ॥
 ण गणेइ कयं णगुणे दक्खिणं णावबुज्झइ कयाइ । ण य पोरुसं ण विज्जं ण य लज्जं णेय मज्जायं ॥ २११ ॥
 जा असमंजसकरुणुज्जया सया जा खलत्तणफला य । सा रायसिरी माणुणयाण कह सम्मया होई ?” ॥ २१२ ॥
 इय णिंदिऊण सुइरं रायसिरिं गरहिऊणमप्पाणं । भरहाहिवो सदुक्खं विणीयणयरिं अणुपविट्ठो ॥ २१३ ॥

तओ अणुसोइऊण सुइरं, निंदिऊणमप्पाणं, भाविऊण संसारसहावं, गरहिऊण रायलच्छि, संवेगभावणया परितणुइ-
 ऊण सोगावेयं, मंतिवयणाणुरोहेणं भोए भुंजिउमाढत्तो ।

इओ य संवच्छरं जाव दुकरं कायकिलेसमणुहवंतस्स बाहुबलिणो तच्चंतपीडियहिं वंभि-सुंदरीहिं भणिओ कहावसरे
 तेलोकवंधु जगपियामहो भगवं उस्स-भसामी जहा-भगवं ! वहुणि दिवसाणि बाहुबलिणो दुकरं तवचरणं चरन्तस्स, ण
 य से मोहंधयारखणमावरणंतरायविहडणेणं केवलणाणं समुप्पज्जइ, ता साहेउ भगवं किमज्ज वि पुणमंतरायकारणं ?
 ति । भगवया भणियं—खीणवहुक्कम्मो बाहुबली, किंतु मोहणीयावयवोदए वट्ठइ, ण य तस्सोदये वट्ठमाणस्स केवलणाण-
 मुप्पज्जइ, तस्स मोहणीयावयवमाणोदओ वट्ठइ, सो य तुम्ह वयणाणंतरमेवोवसमं गच्छइ ति, ता सिग्घं वचह बाहुबलि-
 समीवं । तओ ताओ भगवयाएसेणं गयाओ बाहुबलिसमीवं । भणिओ य ताहिं बाहुबली-भयवं ! वी(वि)इयसंसारसहा-
 वस्स समतण-भणि-लेट्ठ-कंचणस्स चत्तसयलसंगस्स ण जुत्तं गयवरारोहणं ति, ता सयमेव वियप्पिऊण हत्थीओ ओयरह
 तुब्भे । ति भणिए वंभि-सुंदरीहिं बाहुबलिणा चित्तियं—कचो मे वल्लिलयावियाणावणद्धदेहस्स उभयपामुट्ठियुब्भद्वम्मि-
 यस्स गयारोहणं ? ति, ण य इमीओ भगवयो समीवाओ समागयाओ अण्णहा जंपंति, ता किमेत्थ भविस्सइ ? । ति चित्त-
 यंतेण सहसैम्मइयाए वियाणियं “माणहत्थी णाम जत्थाहमारुढो । ” सो य धम्म-ऽत्थ-काम-विणयाण विग्गहेउ । कोहु-
 व्वओ वि माणमूलो । माणमहागहगहियस्स पुरिसस्स न विणओ, ण गुरुजणाणुवत्तणं, ण विज्जागमो, ण परमत्थालोयणं,
 ण संसार-भोक्खचिन्ता, ण परमत्थदंसणं ति । अवि य—

लायण्णं रूयं जोव्वणं च महिलागुणा य सोहग्गं । माणंसिणीण माणेण णिययमंगे विलिज्जन्ति ॥ २१४ ॥
 माणमहागहगहिओ अवमणियसेसपुरिससोडीरो । मरइ रणम्मि परत्थं निरत्थयं कुणइ मणुयत्तं ॥ २१५ ॥
 माणमयमोहियमई तं तं चिय कुणइ जेण बहुवियणे । पुरिसदेसिवसेणं गिरणुसओ घंघले पडइ ॥ २१६ ॥

१ 'ण एस दोसो द' जे । २ 'माडत्त जे । ३ विववेति सु । ४ 'द, पोरुसं द' जे । ५ 'समुज्जया सु । ६ 'गुज्जया सु ।
 ७ होउ जे । ८ अणुपविट्ठो सु । ९ 'सम्मइयाए जे । १० 'सो धम्म' सु ।

ण गणेइ गुरु ण गणेइ मायरं णेय गोरवं ण भयं । ण य लज्जं ण य णेहं ण वंभवं णेय मज्जायं ॥ २१७ ॥
 ण कयं णावकयं चिय ण य मिचं णेय कुल-गणायारं । अत्थो निरत्थओ चिय माणव्वहियस्स पुरिसस्स ॥ २१८ ॥
 इय मूलमणत्थाणं सव्वाणं होइ एस हयमाणो । तं हयमाणो पुरिसो कल्लाणपरंपरं लहइ ॥ २१९ ॥
 अवि य—

जीवाइपेयत्थऽवभासणेकववसायनिच्छियमइत्तं । बहुविहपवित्तसत्थऽत्थवित्थराराहणं होइ ॥ २२० ॥

तं पि पसण्णे गुरुयणमणम्मि बहुविमलसत्थणिम्माए । पयडियसमतण-भणि-लेट्टु-कंचणे सममुह-दुहम्मि ॥ २२१ ॥
 होइ गुरु मुपसण्णो तच्चित्तराहणेण विणएण । तस्स विणयस्स विग्घं करेइ माणो वियम्भन्तो ॥ २२२ ॥
 माणगहियस्स चित्तं जायइ 'एसो वि माणुसो चेव । ता किं कएण एयस्स होइ दीणत्तणफलेणं ?' ॥ २२३ ॥

एवं चित्तिऊण पुणरवि चित्तियं—किमणेणाऽबुहजणाइण्णेण मग्गेण ? चि, ता गच्छामि भगवओ समीवं, पेच्छामि य विमलुप्पणणाणाइसए गिययभाउणो, अणाइणिहणाण जंतूणं कालभूयमहल्लयविवक्खं चि । विभाविऊण वियलिय-गुरुमाणपव्वएण वक्खयमोहपडलेणमवणिऊण मायवल्लीए सह वल्लिवियाणं समुबल्लिओ भगवओ समीवं । एत्थंतरम्मि वियलियमहाकम्ममोहजालस्स माणमेत्तावरियदिव्वणाणस्स खवगसेटीए कमेणुप्पणं तीया-ऽणागय-[संपय]पयत्थुभा-सगं दिव्वं केवलं णाणं । गंतूण सामिसमीवे केवलपरिसाए आसीणो चि ।

अणया य भरहपुत्तो मिरीयी दिवसयरकरनियरताविओ मज्झण्णदेसयाले मल-जल्लाविलसरीरो अहिणवलोयपरिया-विउत्तिमंगो पदिदिणं जायणापरीसहपराजिओ वायालीसदोसरहियभिव्खासोहिमचयन्तो गिम्हुम्हवालयकिलामिय-चलणकमलो भागवयं कुलिंगं परिकप्पिऊण अहामुहं विहरिउमाढत्तो ।

अणया य भरहचकवट्टिणा अवसेसतित्थगर-चकवट्टिपण्हकइणावसाणम्मि पुच्छियं—किं भयवं ! अत्थि कोइ इमीसे परि-साए तहाविहो जो तित्थयरत्तं पाविहि ? चि । भगवया भणियं—अत्थि तुह चेव पुत्तो मिरीई, सो य अद्वचकवट्टीणं पढमो 'पोयणाहिर्वइ तिविट्टु णामेणं, पुणो विदेहे चकवट्टी, पुणो वि कालेण वंधिऊण तित्थयरणामं अपच्छिमो वद्धमाणा-हिहाणो तित्थयरो भविस्सइ । तओ तमायणिऊण भरहचकवट्टी उवणीयणाणाविहाहारो साहुणो णिमंतेइ । भणिओ य भगवया—साहुणमकप्पणिज्जो एस आहारो, जओ आहाकम्मिओ आहडो रायपिंडो य । तमायणिऊण विमणदुम्मणेणं भणियं भरहाहिवेणं—भयवं ! किं मए कायव्वं ? । भणिओ तिलोकगुरुणा—मा संतप्प, गुणाहियाणं देहि चि । तओ असमंज-सपरिहरणत्थं कागणिरयणेण धिज्जाइयाणमुप्पत्तिं काऊण विणिओइयाहारो अणुणायभरहच्छेत्तसाहुपयारो मिरीई(इ)-वंदणत्थं गओ । वंदिओ य गुरुकंहिउग्घट्टणपुव्वं मिरीई । मिरीचिणा वि 'तित्थयरो अपच्छिमो भविस्सामि' चि जाणि-ऊण कयमुत्तुणत्तणं, गहिओ माणत्थंभेण, तप्पचयं च वद्धं णीयागोयं । भगवओ समीवे समइविरइयलिंणो य विहरिउ-माढत्तो । उवसामेइ बहुविदेहिं पयारेहिं पाणिणो । उवसन्ते य पव्वज्जमुवट्टिए जयणाहस्स सीसत्तणेण उवणेति ।

अणया य भवियव्वयाए तौरिसभावस्स गेलण्णावसरे कविलमुणिणा पुच्छिओ—भयवं ! कहिं पुण गिरुवाओ मोक्खमग्गो ? । तओ सहसकारेण जहट्टियमेव णिवेइयं—भयवओ समीवे । पुणो वि कविलमुणिणा भणियं—भयवं ! इह पुण किं णत्थि चेव मोक्खो ? । तमायणिऊण गेलैन्नपडियरणकंखुणा समुइण्णकम्मणा पणट्टिविवेएणं अणालोइयाऽऽगामिय-दुहपरंपरेणं भणियं दीहयरसंसारकारणं मिरीइणा—कविला ! एत्थं पि मोक्खमग्गो अत्थि चि । तओ एएण दुब्भासिएणं अप्पा संसारसागरे पवाहिओ चि ।

इओ य भयवं विहरमाणो अवणेतो मोहतिमिं, पैणासंतो संसए, अणुग्गहेतो पाणिणो, छउमत्थकालवरिससहस्मूणं पुव्वलक्खं उप्पणदिव्वणाणो चउतीसाइसयसमणिओ विहरिऊण गओ अट्टावयपव्वयवरं । तत्थ य माहवहुलतेरसीए दससहस्सपरिवारो चोइसभत्तेणं उवरयमणो-वाय-कायजोगो सेलेसीविहाणेणं खवियभवोपग्गाहिकम्मंसो सिवमयलमणुत्तरं पत्तो ।

१ "पयत्थुम्मा" सू । २ "एयणा" सू । ३ भरहनाहेणं जे । ४ "ओइओ आहारो जे । ५ "कहिओग्घट्टणपुव्वि जे । ६ "या भवि" सू ।

७ तौरिसस भाव" सू । ८ "वे" किं पुण सू । ९ गेल्लहप" सू । १० अवणेतो जे । ११ पयासंतो जे ।

इओ य भरहो पालिऊण जहोचियं रायसिरिं, भुंजिऊण भोए, काऊण अट्ठावए सच्चतित्थयरसरूवसणिहाइं चेइ-
याइं, णिम्मविऊण अट्ठपयपरिच्छिण्णं अट्ठावयं, परूवियसकं गुलिमहिंदूसवो, अण्णया उसभसोमिनिव्वाणगमणायण-
णजायसंवेगहिययविणोयणत्थं सह अंतेउरियाजणेणं मज्जिउं पयत्तो । तओ मज्जिऊण विविहकीलाहिं, मोत्तूण सरवरूच्छं, स-
व्वावयवणिरूवणत्थं आयंसहरं पविट्ठो समाणो णिरूविउमाहत्तो सरीरावयवे । सणियं च णिरूवंतस्स वियलियं गुत्थलरयणो
समवलोइओ अंगुट्ठो । तओ तं असोभमाणं पेच्छिऊण चित्तियं—किमेस अवरावयवो [? व] ण सोहइ ? चि । चित्तियन्तेण
‘ववगयाहरणो’ चि विण्णाय (यं ?) । तयणंतरं च वियलियं मोहं धयारं, विहडियं कम्मवडलं । तओ चित्तिउमाहत्तो—
“एयस्स हयसरीरस्स पयतीए सव्वामुइपहाणाहारस्स मंस-सोणिय-मज्ज-समेज्ज-मुत्त-पुरि(री)साइमलभरियस्स चिन्तिज्जन्तं
किंचि सोहणं ति, आगंतुगकिंचिमाहरणसोहालंकिओ एस छज्जइ, ण अण्णह चि । अवि य—

चित्तिज्जन्तमणिट्ठं गन्भाहाणाइ कारणमिमस्स । सैंवड्ढणं पि उवरट्ठियस्स जं तं कहं भणिमो ? ॥ २२४ ॥

ण्हाण-विलेवण-भोयण-अच्छायण-पालणेहिं परियरिओ । विहडइ तह वि हु हयदुज्जणो व्व देहो ण संदेहो ॥ २२५ ॥

णिच्चमणिचे अमुइम्मि दुग्गाहे मंस-सोणियावासे । देहम्मि वि पडिबंधाउ व्विसमा कम्मदंदोली ॥ २२६ ॥

जस्स कैएणं तम्मसि णिच्चमकज्जाइं कुणसि रे जीव ! । मुत्त-पुरीसाहारस्स रोगणिलयस्स पावस्स ॥ २२७ ॥

चिन्तिज्जन्ताऽणिट्ठा तस्सेसा पावपरिणइं णिययं । अमुइ व्व भूइपुंजो व्व होइ ‘किमियाण णिवहो व्व ॥ २२८ ॥

आगंतुगभूसणभूसियस्स णिच्चपरिसीलणीयस्स । चित्तिज्जंतं किं किं पि सोहणं हयसरीरस्स ? ॥ २२९ ॥

पइसमयं चिय विसरइ बल-मेहा-रूव-जोव्वणगुणेहिं । आउ-वलेणं च तहा तेण सरीरं ति किं भणिमो ? ॥ २३० ॥

इय णिग्गुणे सरीरम्मि णवरि एसो गुणो जए पयडो । जं सव्वदुक्खमोक्खं मुट्ठं धम्मं समज्जिणइ ॥ २३१ ॥

एवमाइवेरग्गभाविमणो णिदिऊण सरीरं, परिहरिऊण रायसिरिं, सणियं सेसालंकारं मोइउमाहत्तो । जओ जओ
सरीरावयवाओ अवणेइ भूसणं सो सो ण तहा छज्जइ चि मुट्ठुयरं वेरग्गमोइणो । तओ पवड्ढमाणसंवेगस्स पइसमयं
उत्तरोत्तरासाइयज्झाणाइसयस्स भवन्तरग्गभासाऽऽसाइयमुहपरिणामावसेसियकम्मरासिणो अपुव्वकरणं, खवगसेही, समु-
प्पणं ‘केवलनाणं । कया सकेणं लिंगाइपडिवत्ति चि । पुत्तो य आइच्चजसो महया विभूइए अहिसित्तो पिउणो रज्जे ।

भरहो वि केवली भवोपग्गाहीणि कम्माणि उवभुंजिऊणं सोक्खं कम्मक्खयलक्खणं मोक्खमणुपत्तो ।

आइच्चजसो वि रयणाणुभावत्तणओ अलड्ढक्कवट्ठिवएसो भुंजिऊण सयलं वमुमर्ति, पालिऊण जिणोवएसियं
धम्मं, अहिसिचिऊण णियमुयं महाजसं कुलक्कमागए रज्जे, सैंमासाइयसव्वणुभावो सिद्धिमुक्खओ ।

महाजसो वि तेणेव कमेण रज्जमणुपालिऊण अइच्छलं रज्जे अहिसिचिऊण ‘तेणेव विहिणा सिद्धिपुण्णिपहिओ
संवुत्तो ।

अतिवलेण य अन्तकाले बलभइस्स संकामिऊण रज्जधुरं सकज्जमणुचिट्ठियं ।

एवं तेयवीरिय-जलणवीरिय-अम्बुवीरिय-सच्चवीरिय-महावीरिया वि परिवालिऊण कुलक्कमागयं [? पुहइ],
भुंजिऊण रायसिरिं, अंते चइऊण भोगे सव्वकम्मक्खयं काऊण सिद्धिं (इ) चि ।

इति महापुरुषचरिते प्रथमतीर्थकरऋषभस्वामिचरितं प्रथमचक्रवर्ति-

भरतेश्वरचरितं [च] सैंमाप्तम् ॥१-२॥

१ ‘सामिणो नि’ सू । २ विहडियं जे । ३ सोहणन्ति सू । ४ संवड्ढणं जे । ५ परिचरिओ सू । ६ ‘बंधो उ विसमा कम्मदुदोली
सू । ७ कएणन्तम्मसि सू । ८ किमियाणं जे । ९ ‘समय चिय जे । १० ‘केवल नाणं सू । ११ समासासियं सू । १२ तेणेव जे ।
१३ ‘वीरिय-महावीरिय-सच्चवीरिया वि जे । १४ सिद्धि ति जे । १५ समाप्तमर्ति जे ।

[३ अजियसामिचरियं]



अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे दाहिणमज्झिमे खंडे विणीया णाम णयरी । तत्थ य जियसत्तू णाम राया । विजया णाम भारिया । भुंजंति भोए । सरइ संसारो ।

इओ य उस्सहसामितित्थयरस अइकन्तस्स अइकंता पण्णासं कोडिलक्खा सागरोवमाणं । तओ पुब्बज्जियपुण्ण-पम्भाराइसओ समासाइयतित्थयरणामकम्मो चइऊण मणुयदेहं, उवभुंजिऊण सिद्धिसुहसमाणमणुत्तरोववाइयमुहं, विजए विमाणे अणुपालिऊण तेत्तीसं सागरोवमाइं दीहमाउं, परहिण्णओ ओहिण्णाणावगयपरमत्थो वैसाहमुद्धतेरसीए चित्ता-णक्खत्ते विजयाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णो । कयं च सुरिंदेण गम्भाहौणोचियं कज्जं । दिट्ठा विजयाए तीए चेव रयणीए चौदस महामुमिणा । कहिया जहाविहिं दइयस्स । आणंदिया य तेणं पुत्तजम्मेणं ति । तओ पडिपुण्णेसु णवसु मासेसु अट्ठमेसु राइंदिएसु माहस्स सुद्धमीए रोहिणिणक्खत्तम्मि उववण्णो भगवं । कओ देवेहिं मेरुसिहरम्मि जम्मा-मिसेओ । भगवम्मि समुप्पण्णे 'ण केणइ जिओ जणउ' ति कलिऊण अम्मा-पितीहिं अजिओ ति णामं कयं । चइहओ य सह कलाहिं । विवाहिओ य अणुरूवं कण्णयं । विइयपरमत्थो वि कम्मट्ठिं अणुवत्तेन्तो भोगे भुंजिउमादत्तो ।

तओ अणुपालिऊण कुमारभावं, सिद्धिं गए जणयम्मि पालिऊण रज्जसिं पुब्बंगाहिण्हिं एगहत्तरिपुब्बलक्खेहिं गएहिं, संयंबुद्धो वि लोयंतियपडिवोहिओ^१ दिण्णसंवच्छरियमहादाणो संसारसुहविरत्तहियओ सिद्धिबहुसंगमसुओ माहस्स सुद्धणव-मीए मिगसिरणक्खत्तम्मि पडिवण्णो सामाइयं सहस्संभवणुज्जाणम्मि । अणुकमेण य जहुत्तविहारेणं बारस वरिसाणं पव्व-ज्जापरियायं पाउणिऊणं महस्सेणवणुज्जाणम्मि सत्तच्छयतरुवरस्स हेट्ठओ पोसस्स सुद्धेकारसीए रोहिणिणक्खत्ते ज्ञाणंत-रियाए वट्टमाणस्स अपुव्वकरण-खवगसेढीपकमेणं उप्पणं केवलं णाणं । चलियासणागएण य महिंदेण कया केवलमहिमा । विरइयं समोसरणं । परुवियाणि चत्तारि महव्वयाणि । पव्वादिया य भगवया पंचाणउं गणहरा । पत्थुया धम्मकहा, तं जहा—

पंच गतीओ—णरयगती तिरियगती मणुयगती देवगती मोक्खगति ति । तत्थ णिरयगतीए सत्त पुढवीओ, तं जहा-रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमप्पहा महत्तमप्पहा । तत्थ रयणप्पभाए असी-उत्तर[? जोयण]लक्खवाहल्लाप अहोवर्णिं पत्तेयं भोत्तूण [? जोयण]सहस्सं भवणवासिभवणंतरिया णिरया हवन्ति । तत्थ य तेरस पत्थडा, णिरयाणं च तीसइं लक्खा, उस्सेहो सत्त धणूणि तिणिण रयणीओ छ चेव अंगुलाइं ति, सागरोवमां ठिई । बीयपुढवीए वत्तीमुत्तर[? जोयण]लक्खवाहल्लाप एकारस पत्थडा, पणुवीसइं लक्खा णिरयाणं, उस्सेहो पण्णरस धणूणि अट्ठभागो य बारस य अंगुलाइं, तिणिण सागरोवमां ठिती । तइयपुढवीए अट्ठावीमुत्तर[? जोयण]लक्खवाहल्लाप णव पत्थडा, पण्णरस लक्खा णिरयाणं, उस्सेहो ऐकत्तीसं धणूणि धणुयचउभागाहियाणि, सत्त सागरोवमां ठिती । चउत्थ-पुढवीए बीमुत्तर[? जोयण]लक्खवाहल्लाप सत्त पत्थडा, दस लक्खा णिरयाणं, उस्सेहो बावट्ठिधणूणि धणुहज्जज्जमहियाइं, दस सागरोवमां ठिती । पंचमपुढवीए अट्ठारमुत्तर[? जोयण]लक्ख वाहल्लाप पंच पत्थडा, तिणिण लक्खा णिरयाणं, उस्सेहो पणुवीमुत्तरसयं धणूणं, सत्तरस सागरोवमां ठिती । छट्ठपुढवीए सोलमुत्तर[? जोयण]लक्खवाहल्लाप तिणिण पत्थडा, पंचूणं लक्खं णिरयाणं, उस्सेहो अट्ठाइज्जाणि सयाणि धणूणं, बावीससागरोवमां ठिती । सत्तमपुढवीए अट्ठुत्तर [? जोयण]लक्खवाहल्लाप एगो पत्थडो, पंच णिरया, तं जहा—कालो महाकालो रउरवो महारउरवो अपइट्ठाणो ति, उस्सेहो पंच धणुसयाणि, तेत्तीसं सागरोवमां भवट्ठिती । जं जीए भवधारणिज्जं सरीरं तं चेव दुगुणं उत्तरवेउच्चियं ति । तत्थ गच्छंति पंचिंदियतिरिय-मणुया महाकूरकम्मकारिणो रोहज्जवसाणा तिब्बयरसंकिलिद्धपरिणामा अणंताणुबंधिकसायवट्ठिणो

१ 'हाणोचियं करणिज्जे जे । २ दिण्णं संवच्छरियं महादाणं जे सु । ३ च तीसं जे । ४ 'माणिं ठिती जे । ५ ऐकत्तीसं जे । ६ वत्तिणो जे ।

मिच्छत्त-उणा(णा)णमोहियमइणो विरइपरम्महा मज्जाइपेमायाऽऽसेविणो उक्कडजोगा महारंभा महापरिग्गहवत्तिणो पंचि-
दियवहपरिणया मंसरसाइसेवणेकरया अमुहलेस्सा परवसणाभिणंदिणो ति । अवि य—

जं अणुहवंति दुक्खं तं सीसउ कह णु तुम्ह वायाए ? । तददुक्खमुक्खपिमुणो सद्दो बिय तारिसो णत्थि ॥ १ ॥

तत्तो उव्वट्ठिऊणं चउरासीजोणिलक्खभेएमु तिरिएमु णाणाविहवेयणाहित्थहियया पैरायत्तपाणा अत्ताणा असरणा
सी-उण्हवेयणाउरसरीरा लुहा-पिवासाकिलंतदेहा सकयकम्मवत्तिणो संसारकन्तारे अणुपरियट्ठन्ति ति । अण्णे वि
तिरिय-मणुय-देवा अट्ठज्झाणोवगया कोह-माण-माया-लोभवैट्ठिणो णिस्सीला णिच्चया मुहपरिणामरहिया संसारस्सयरा
माया-विति-पुत्त-कलत्तणेहणियलिया तिरिएमु उववज्जंति । जे पुण पैययीए भइया मंदकसाया धम्मरुचिणो दाणसीला
ईसीसिमुहज्झवसाया ते मणुएमु उववज्जन्ति । जे उण धम्मज्झाणवसगा महादाणाइपसत्ता सीलव्वयाणुट्ठाणपरायणा अप्प-
कसाया ते देवेमु उववज्जंति । जे उण असेसकम्मक्खयकारिणो ते मोक्खगतिवत्तिणो हवंति ति ।

एवं च मुणिऊण के वि संसारजलधिपोयभूयं मोक्खतरुणो अमोहवीयं सम्मत्तरयणं पडिवण्णा, अण्णेहिं देसविरती,
अण्णेहिं सब्वसंवररूवचारित्तमब्भुवगेयं ति । अण्णे उण गरुयकम्मभराऊरियसरीरा लहिऊण वि अकारणबंधवं तेलोक्खगुरुं
सव्वण्णुनेयारं ण जाणन्ति परमत्थं, ण उम्मूलेति मोहवट्ठिं, ण दलेति मिच्छत्तपडलं ति । अवि य—

सामण्णे बिय परिणतिवसेण जीवत्तणे अणादीए । आसंसारं वहिया केई भविय बिय ण होन्ति ॥ २ ॥
भवियत्तणरासिगया "केई हयपावपरिणइवसेण । कालमणन्तं पि पुणो तसत्तणं जेय पावंति ॥ ३ ॥
तसभावे वट्ठता वि केइ पंचिदियत्तणमपत्ता । किमि-कीड-पयंगार्इमु चेयं केइत्थं अच्छन्ति ॥ ४ ॥
जइ कह वि केइ परिणइवसेण पंचिदियत्तणमणुणं । पावेति पावभरगरुयपेळिया ण उण मणुयत्तं ॥ ५ ॥
मणुयत्तणं पि जायं दुक्कयकम्माण मेच्छजोदीमु । आरियखेत्तविहूणाण ताण ताणाय ण हु होइ ॥ ६ ॥
आरियखेत्ते कुम्भो व केइ मणुयत्तणं जइ लहेज्जा । मणुयत्तं तं पि हु सुक्कपण्णपवणुद्धुयसमाणं ॥ ७ ॥
मणुयाउयं पि दीहं णासइ दारिदुक्खतवियस्स । धम्मरहियस्स दुलहं णट्ठं रयणं पिव समुदे ॥ ८ ॥
कम्मभरपीडियाणं मणुयाणं धम्मपरिणती दुलहा । जइ होइ धम्मबुद्धी मुहगुरुजोगो ण संपडइ ॥ ९ ॥
लद्धे गुरुम्मि पयडे णीसेसपयत्थभासणपैतीवे । विरतिपरिणामरूवं विवेयरयणं ण उच्छलइ ॥ १० ॥
पयइविरसम्मि संसारसायरेऽन्तेहिसाररहियम्मि । कह कह वि दिव्वजोएण केइ जीवा जइ लहन्ति ॥ ११ ॥
इय लहिऊणं वि एयं सम्मं ण कुणंति जं जहाभणियं । सम्मत्तं "पि हु केई वमंति संसारणिम्महणं ॥ १२ ॥

किंच—

किं कुणउ कम्मवसगाण पाणिणं देसणा जिणाणं पि ? । अंथलयपयासो जेय होइ दिणयरसैएणं पि ॥ १३ ॥
इय परिसम्मि संसारसायरे दूरमुज्झियविवेए । केसिं च सउण्णाणं च गोयरे होइ तित्थयरो ॥ १४ ॥
दट्ठूण वि तित्थयरं वयणं आयणिणऊण तस्स पुणो । काण वि ण होइ विमला तत्तेमु जहिट्ठिया बुद्धी ॥ १५ ॥
इय बहुविचित्तरूवे संसारे संसरन्तपाणिगणे । धण्णाण कह वि जायइ दुलहा सम्मत्तपडिवत्ती ॥ १६ ॥

इय एवं दुलहा सम्मत्तपडिवत्ती, लद्धा वि सा पुणो परिचडइ । एवं भयवं देविद-णरिदवंदिओ बोहिंतो भवियकमलायरे,
पयडेतो संसार-मोक्खपहे, दरिसेंतो विसमकम्मविवागं, साहेंतो जहट्ठियं धम्मं कोसंभीए णयरीए उत्तरदिसाए समवसरिओ ।
विरइयं देवेहिं समोसरणं । तम्मज्झम्मि असोयपायवस्स हेट्ठओ उवविट्ठो सीहासणे तिलोयगुरु । सक्कीसाणकरुद्धुयचाम-

१ "फावसे" जे । २ "जोगमहा" सु । ३ "जं चोरासी" सु । ४ परपाणा सु । ५ "वत्तिणो जे" । ६ माया-पिति" जे । ७ पयइए
जे । ८ धम्मज्झवसाणव" जे । ९ "गयन्ति सु" । १० केई इह पावं जे । ११ चेय केइत्थं अच्छन्ति सु । १२ "जाइए जे" । १३
"पडेवे जे" । १४ "इन्तिआसार" जे । १५ "ण य ए" सु । १६ पि जं केई सु । १७ "सणम्मि सु" ।

रजुयलो सदेव-मणुया-ऽसुराए परिसाए धम्मं कहेइ । ताव य समागयं बम्भणभेज्ज-प्पइयं, तिपयाहिणीकाऊण उवविट्ठं चलणं-
ति । कहन्तरे पुच्छियं बम्भणेण-भगवं ! कह शु एयं ? । भगवया भणियं-देवाणुप्पिया ! सम्मत्तप्पभावो । बम्भणेण भणियं-
कहं चियं ? । भगवया भणियं-सोम ! केत्तियं एयं ? , सम्मत्तप्पभावेण उवसमन्ति वेराइं, पणस्सन्ति बाहिणो, बिलिज्जन्ति
अमुहकम्माइं, सिज्झइ समीहियं, वज्झइ देवाउयं, सण्णेज्झं कुणन्ति देवयाओ, सिज्झन्ति पाणिणो ति । तओ एयमायण्णि-
ऊण भणियं बम्भणेण-भयवं ! एवं एयं, ण अण्णह ति । भणिऊण बम्भणो तुण्हिको ठिओ । एत्थंतरे य सेसजणवोहणत्थं
पुच्छिओ भयवं गणहारिणा-किमणेण पुच्छियं ? , किं वा भयवया साहियं ? ति । भयवया भणियं-सोम ! सुण,

अत्थि इहेव णाइदूरम्मि सालिग्गामो णाम अग्गाहारो । तत्थ दामोयरो णाम बम्भणो परिस्सइ । सोमा से भारिया ।
ताण पुत्तो मुद्धभट्ठो । तेण य विवाहिया सिद्धभट्ठधुया सुलक्खणाऽभिहाणा । पत्ताणि जोव्वणं । भुंजन्ति अत्तणोणु-
रूवे भोए । कालंतरेण ताण उवरया जणणि-जणया । ताणं च वियलिओ पुव्वविहवसंचओ । अत्तणो य किलेसाऽसहुत्तणेण
दुक्खेण भोयणं संपज्जइ ति । तओ एवमेयं सीयंतयं घरं पेच्छिऊण संजायवेरग्गो असाहिऊण घरिणीए सहवासपरिभव-
मसहमाणो देसंतरं गओ बम्भणो । जाणिओ य एस पुत्तन्तो सुलक्खणाए जणपरंपरेण ।

पइगमणेणं अच्चंतसोयावूरियहियया वेरग्गामग्गोइण्णा निव्विण्णा संसारवासेणं जाव चिट्ठइ ताव य तप्पुण्णाणुहावेण
विय साहुणिपरिवारिया वासारत्तगमणत्थं सुलक्खणाए घरे वेसहिं मग्गिऊण बिउला णाम गणिणी ठिया । सुलक्खणाए
य अणवरयं धम्मदेसणासवणेणं ववगयं मिच्छत्तपडलं, उवगयं सम्मत्तं, पडिवण्णा जीवादिपयत्था जहिट्ठिया, गहिओ य
संसारसायहत्तारणसमत्थो जिणएसिओ धम्मो, जाओ कसायाण उवसमो, उप्पणं विसयवेरग्गं, निव्विण्णा जम्म-भरण-
परंपराए, अणुकंपापरा जीवाणं, परलोयणिच्छियमती जाय ति । अणवरयं साहुणिमुस्ससापराए अइकंतो वासारत्तो गया
य अणुव्वयाणि दाऊण गणिणी ।

उवागओ विट्ठदविणजाओ तीए भत्तारो । कयं जहोचियं । पुच्छिया य-सुंदरि ! कहं कहं मह विओए ठिया सि ? ।
तीए भणियं-पिययम ! तुह विरहपीडियाए उवागया गणिणी, तहंसणेण य ववगयं तुह विरहदुक्खं, उवलद्धं च जम्मफलं
सम्मत्तलाहेण । तेण भणियं-सुंदरि ! केरिसं सम्मत्तं ? । तीए वि साहिओ जिणदेसिओ धम्मो । पुण्णाणुहावेण उवगओ
तस्स । पडिवण्णं सम्मत्तरयणं तेणावि । उववण्णो य कालकमेणं तेसिं पुत्तो । जाओ य लोयवाओ-अहो ! सावगाणि
एयाणि, परिचत्तो कुलकमागओ धम्मो ।

अण्णया य मुद्धभट्ठो पुत्तं गहेऊण सिसिरे गओ पच्चूसे बम्भणपरिसाउलं धम्मग्गिट्ठियं । तओ तेहि य संपहारिऊण
समागओ भणिओ-सावगो तुमं, ण तुह अम्ह सयासे अवगासो अत्थि । भणिऊण धम्मग्गिट्ठियं वेदिऊण ठिया । उवह-
सिओ य सो "तेहि ति । एत्थंतरम्मि मुद्धभट्ठेण संजायाणुसए ण विलक्खीभूएणं 'जइ ण जिणएसिओ धम्मो संसारसा-
यरप्पहाणो, णेय अरहा तित्थयरो य सव्वण्णु, ण य सम्मत्त-गाण-चरणाइं मोक्खमग्गो ति, ण य सम्मत्तं पुहवीए अत्थि
चि, ता मह पुत्तो एत्थ डज्झउ' ति भणिऊण सो पुत्तो तीए चेव खाइरंगारभरियाए वेदियाए पक्खित्तो ।
तयणंतरं च "उद्धाइओ हाहारवसइग्गिभणो महंतो कलयलो 'हा ! दड्ढो दड्ढो ति अणज्जेण अप्पणो पुत्तो'
ति भणमाणा खुहिया बम्भणाण परिसा । एत्थन्तरम्मि य अहासणिहियवाणमंतरदेवया[ए] सम्मत्ताऽणुहावाखित्तहिययाए
कमलसंपुडे छोदूण अवणीयजलणप्पहावाए रक्खिओ ति । तीए विराहियसामण्णाए केवलिणा पुच्छिएण साहियं जहा-
सुलहवोहिया तुमं, किंतु सम्मतुब्भावाणाए उज्जुत्ताए होयव्वं । तओ सा सम्मतुब्भावणपरायणा मुणिऊण ओहिणाणेण इमं
वइयरं तयासणे ठिया । रक्खिओ तीए एयाण पुत्तो, एयासिओ सम्मत्तप्पहावो । पेच्छिऊण एयं विम्हउप्फुल्लोयणो
उवसंतो समूहो । भणिओ बम्भणीए भत्तारो-ण तए सोहणमणुचिट्ठियं, जओ जइ कह वि देवयाए असणिहाणेणं पुत्तो

१ भार्या-पतिकम् । २ साहियन्ति जे । ३ तेण विं सू । ४ घरणीए सू । ५ वसइ सू । ६ 'वरयधम्म' जे । ७ 'रत्तरण' जे ।
८ तहंसणेण जे । ९ 'गुभावओ उव' जे । १० तेहिन्ति सू । ११ उद्धाइओ सू ।

जलणे डउझेज्ज ता किं ण होज्ज जिणदेसिओ धम्मो ? त्ति, ता 'किमणेणं बालचरिएणं ? । त्ति भणिऊण य उवसन्तजणं भत्तारं च सम्मत्तथिरीकरणत्थं एसा वम्भणी गाहेऊअ इह भह समीवागय त्ति ।

तौओ एवं देवाणुप्पिया ! वम्भणेण पुच्छियं, मए वि सम्मत्तप्यहावो साहिओ । एयं च आयण्णिऊण थिरीभूयं सम्मत्तं । अण्णेहि वि परिसागएहिं पडिवणं त्ति ।

भयवं एएण विहिणा पुच्चंगूणं पुच्चलक्खं पालिऊण पव्वज्जापरियायं, तं बारसँवामुणं केवलपरियागं च अणुपालेत्ता सम्मेयसेलसिहरं गओ । तत्थ य चउसहस्ससमेओ मासं पाओवगओ णिदधुयभवोवगाहिकम्मलेसो सिद्धिमुवगओ त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए तइयमहापुरिसस्स अजियसामिणो चरियं समेत्तं ॥ ३ ॥

[४ सगरचक्रवर्तिचरियं]

खंडिज्जइ विहिणा ससहरो वि सूरस्स होति अत्थमणं । हयदिक्खपरिणइए कवल्लिज्जइ को ण कालेणं ? ॥ १ ॥

एकेकमुच्चिणंतो विण्णो व्व णराण कालजोएणं । जलणो व्व हयकयंतो जुगवं अह णेउमुज्जुत्तो ॥ २ ॥

अत्थि इहेव जम्बुदीवे दीवे भारहे वासे अउज्झा णाम णयरी । विविहवण्णरयणोहभवणुज्जला, सप्पुरिसहियय व्व तुंगपायारोववेया, महिलामणाण वग्गाहखाइयावरिया ।

अह एको चिय एसो दोसो व्व गुणो व्व एत्थ णयरीए । जं जत्थ व तत्थ व जह व तह व वचंति सइ दियहा ॥ ३ ॥

तत्थ सेसणरवइमउडमणिणिहसमसिणियपायवीहो दरियारिमइणो कामिणीकडक्खविक्खेवलक्खो सयलगुणगणाहो दक्खिणमहोयही दाणसीलो धम्मरुई णीसेससत्थणिम्माओ सव्वकलापारओ आयारकुलहरं विणयावासो मज्जायाणि-
म्माओ वियक्खणो कयण्णु सव्वस्स मित्तो सुमित्तो णाम णरवई । तस्स य णीसेससुरा-सुर-विज्जाहरिंदुंदरीवंदस्स-
व-गुण-सीलेहिं विजयवई विजयवती णामेण भारिया । तीए य सह तस्स समइकंतो कोई कालो ।

अण्णया विजयवतीए रयणीए चरिमजामम्मि दिट्ठो सीहकिसोरो वैयणेणोवरं पविसंतो । संत्तुद्ध-हित्थहियया वेविरसरीरा य उट्ठिया सयणिज्जाओ । भणिया य पिययमेणं-सुंदरि ! किमकंड एव विउद्धा खरपवणुद्धुयदीवयसिह व्व वेविरसरीरा दिसाओ अवलोएसि ? । तीए सादियं जहद्वियं पिययमस्स । तेण वि य [? भणिया]-सुंदरि ! वीसत्था होहि, भविस्सइ ते दप्पुद्धुराऽरिगइंदकुंभत्थलेकदारणपच्चलो पुरिससीहो पुत्तो । तओ दइयवयणेणं आसासिया आगंदिया य पुत्तलंभेणं ति । तओ पडिपुण्णेसु णवसु मासेसु अद्धमेसु राइदिएसु सुइंसुहेणं सयलक्खणोववेयं पसविया पुत्तं ति । कयं णरिदेणं तिहयणच्छेरयभूयं वद्धावणयं । पडिवावियं च से णामं सयरो त्ति । सो य पंचभाइपरियरिओ कमेण वडिइउं पयत्तो । उवणीओ कलागहणकाले कलायरियस्स । गहियाओ वावत्तरिकलाओ । तओ णीसेसकलाणिम्माओ गहियसयल-
सत्थऽत्थो विवाहिओ अणंगवइपमुहाओ अट्ठ दारियाओ । सुमित्तेण य सयरं रज्जे अहिसिंचिऊण परलोयविहाणेणं सकज्जमणुचिट्ठियं ।

समुप्पण्णं च आउहसालाए जक्खसहस्सपरिवारियं चकरयणं । णिवेइयं सयरस्स । तेणावि कया अट्ठ दिवसे महिमा । उप्पण्णाणि य कमेण चोइस वि रयणाणि । तत्थ एगिंदियाणि सत्त, तं जहा-चकं छत्तं चम्मरयणं मणिरयणं कागणि-
रयणं खग्गरयणं दंडरयणं ति । सत्त पंचिंदियाणि, तं जहा-हओ हत्थी सेणावई गहवई पुरोहिओ वड्ढइरयणं इत्थीर-
यणं ति । ओयवियं च पुव्वकमेण वत्तोसेहिं वरिससहस्सेहिं भरह्खेत्तं । उप्पण्णा य णव गिहिणो । णिवत्तिओ रायाहि-
सेओ । संजाया वैचीसं सहस्सा णरवईणं, चउसट्ठी सहस्सा अंतेउरियाणं । उप्पण्णा य सहस्संसु-सहस(स्स)क्ख-स-
हस्सबाहु-दइच्चयपमुहाणं पुत्ताणं सट्ठिसहस्सा । एवं च विसयमुहमणुहवंतस्स तस्स चउसट्ठिसहस्संतेउरोवभोगेणं उव्वाय-
तणुणो इत्थीरयणोवभोगेणं पुण्णवस्स वचन्ति दियहा, सरइ संसारो ।

अण्णया य मुहासणत्थो सहस्संसुपमुहेहिं विण्णत्तो पुत्तेहिं जहा-“ताय ! वसीकओ तए पडिक्खो इंदियगणो य, पसाहियं भरह्वासें कामिणीवयणकमलं च, पयासिओ दिसामुहेसु णिम्मलो जसपन्नारो गुणगणो य, णीया किचिसरिया मयरहरतीरं आणा य, पणासिओ दोससमूहो पिमुणवग्गो य, णीओ समुण्णइं कोसो वंधुयणो य, वित्थारिओ पयइगरुओ

जिणदेसिओ धम्मो पयावो य, पाविया अत्तणो खवसिरी सीलसंपया य, तइ णिज्जिए भरहवासम्मि भुंजन्ता तुह सिरी,
पयासिता अत्तणो परक्कमं, तायाणुणाया जहिच्छं विहरामो त्ति । अवि य—

सा णवर सिरी हेक्खज्जिया वि मैहमहइ जीवलोयम्मि । वेत्तूण बला मुइरं जा भुज्जइ पुत्तवग्गेणं ॥ ४ ॥
भुंजन्ता वि जहिच्छं तसमा लभयन्ति संपयं पिउणो । जणणीए थणं मुइरं पि सहइ पुत्तो चिय पियंतो ॥ ५ ॥
होइ जणसलहणिज्जो पिया वि पुत्तेहिं भुंजमाणीए । खरपवणुद्धुयधयचंचलाए सैइ रायलच्छीए ॥ ६ ॥
पुत्तेहिं जस्स भुज्जइ रायसिरी मंडलग्गणिम्माया । सो चिय णवर कयत्थो कयपुण्णो सो चिय जयम्मि ॥ ७ ॥
गुरुचलणकन्ता पाउया वि परिभोगओ जणति णिंदं । लच्छी उण तन्विरहा वयणिज्जं कुणइ जणयस्स ॥ ८ ॥
पुण्णधणाणं धम्मो लच्छी पुत्तेसु गुणमहग्गेसु । इयराणं पुण अयसो वेरं च रिणं च संकमइ ॥ ९ ॥
जा जीवन्ताणं चिय भुज्जइ पुत्तेहिं वंधुवग्गेहिं । सा लच्छी देइ धिइ, मयस्स उण णत्थि उ विसेसो ॥ १० ॥
इय तुज्ज धिरंभुयखंभणिमियणीसेसभुयणभारस्स । भुंजामो भुवणसिरीं भेमिमो भुवणंतरालेसु ॥ ११ ॥
किंच—

इय एवं जंपताण ताणमायणिउण णिम्मविओ । मुक्ककुसुमेहिं समयं खूरसहस्सेहिं जयसदो ॥ १२ ॥
विण्णत्तो अत्थाणद्विएहिं सप्पुरिससंकहावसरे । राया विम्वयवियसंतणयणवत्तं सपुत्तेहिं ॥ १३ ॥
तो भणइ नरवरिंदो धण्णो इं जस्स पुत्तपुत्तेहिं । भुज्जइ लच्छी गुणवन्तएहिं पुत्तेहिं य जहिच्छं ॥ १४ ॥
अण्णा उ णिंदणिज्जा लच्छी जा पुत्त-बंधुपरिहीणा । अप्पंभरिणो सउणा वि पुत्त ! किं ताण जीएणं ? ॥ १५ ॥
रमह जहिच्छं भुवणंतरेसु, भुंजेइ संपयमुयारं । को कुणउ तुम्ह विग्घं ?, सिग्घं भरहं परिब्भमह ॥ १६ ॥
इय एवमणुणाया पिउणा, काऊण तस्स चलणेसु । पणिवायं महिजायं मुइरं दालिदलणेसु ॥ १७ ॥

तयणंतरं च गुरुजणाऽणुणाएहिं सट्ठीहिं पि सहस्सेहिं पय्यं पयाणतूरं । उग्घोसियं पच्चूसगमणं । एत्थंतरम्मि उप्पाया
दीसिउं पयचा, तं जहा-दाहिणा महासदा, केउसयाउलं तरणिमंडलं, दिट्ठमज्झविवरं रयणियरविम्बं, चलिया वसुमती,
जाया दिसादाहा, अवि य—

केउग्गमकयविवरोयरस्स विवं दिणम्मि दिणमणिणो । लक्खिज्जइ णहसिरिचलणनिवडियं जेउरं व णहे ॥ १८ ॥
ओदीसइ ससिर्विवं विवरंतररत्तवाहिरावयवं । अत्थक्कुडियणिंतोहकलिलवंभंडखंडं व ॥ १९ ॥
हिंसंति जयतुरंगा य रहसंनिच्छूद्धधूममलकलुसं । अणवरयद्वियमुहलोहकमलछायाविभिण्णं व ॥ २० ॥
इय तइया भयजणणा णराण संपट्टियाण भुवणम्मि । सयरहमंगपिसुणा मुदारुणा आसि उप्पाया ॥ २१ ॥

तओ अेगणिउण अवसउणपरंपरं कयकोउयमंगलोवयारा भवियव्वयाणिओएणं कम्मपरिणइरज्जुसंदाणिया दिसामुहप-
साहणत्थं पिउणाऽणुणाया थीरयणवज्जं इयररयणोववेया महया चडयरेणं रह-गय-णर-तुरयचउरंगवलोववेया पसत्थे तिहि-क-
रण-णक्खत्ते सोहणे लम्मे चलिया कुमार । पेसिज्जंति जहारुं पसाया, कीरन्ति मंगलाइ, पढन्ति वंदिणो, गलगज्जंति गय-
वरा, हिंसंति तुरंगवरा, कलयलन्ति पक्कपाइका । एवं महया हलबोलेणं णिग्गया रायहाणीओ कुमार । आवासिया विविचे
भूमिभाए । दिट्ठो य अहाफामुए पएसे सज्जायवावडो मुत्तिमंतो व्व पुण्णरासी एगो साह । सहस्संसुपमुहेहिं वंदिऊण
पुच्छिओ-भयवं ! जाणामो संसारासारत्तणं, बुज्झामो कडुयविवागत्तणं विसयाणं, कस्स वा सगणविण्णाणस्स एयम्मि परिव-
सन्तस्स ण फुरइ विवेयरयणं ? ति, तथा वि पाएण ण वज्झकारणमंतरेण एरिसा विवेयबुद्धी होइं ति, ता साहेउ भयवं जइ
ज्ञान-ऽज्झयणादीणमइव्व णावरोहो, अम्होवरि वा अणुग्गहो ति, किं ते संसारहेउणो णिव्वेयकारणं ? ति । अइसयणाणिणा

१ दुक्खे पिया वि जे । २ सहसहइ स् । ३ सय रां स् । ४ पुण्णवराणं जे । ५ धिरमुयखंभणिमियं जे । ६ भेमिमो भुवणं स् ।
७ सूरिस् जे । ८ निव्वुडं जे । ९ अगिणिज्जं जे । १० होज्ज ति, जे ।

भयवया अकिलिहृणिसग्गोवणसं परमणलियमकाहलमणवज्जं भणियं-सोम ! जइ कोऊहलं ता मुणमु मह णिव्वेयकारणं, णिव्वेयस्स करी भवियाण एसा कह ति । भणिउणं कहिउमाढत्तो—

भवसायरम्मि णियकम्मजणियदुक्खोहवसणपडहत्थे । तियसा वि समत्था होन्ति णेय निवडन्तमुद्धरिउं ॥ २२ ॥
णियचरियावज्जियगरुयकम्मदूसहविवागणिम्मविया । जीवाण पयतिविरसा अइदुक्खपरंपरा होइ ॥ २३ ॥

महाराय ! इओ य अण्णभवंतरम्मि अहं णाण-विण्णाणसमेओ वरुणवम्माऽहिहाणो खत्तिओ आसि । मह पिउणो कुल-विहवाणुरुवसीलसारा सीलवई णाम कण्णगा उवणीया, विवाहिया य सा मए । पत्ताणि जोव्वणं । सा य अन्नहकया-भिहाणत्था उकडयाए मोहस्स, उम्मगपरयाए जोव्वणस्स, गिरवेक्खयाए वम्महस्स, अचिन्तसत्तिचणओ कम्मपरिणईए, उभयकुलमइलणपरायणा परलोगपरम्महा अगणियकलंकमया अवहत्थियणिययकुलायारा सइरिणी संबुत्ता । तओ मए अइकंतोवणसपयाणत्तणओ 'अपडियार' ति कलिउण उवेक्खिया ।

अण्णया य विहिणिओएणं अइवलपरक्केण रूवसंपउवेयणवजोव्वणगुणाणुवत्तिणा सीह्णामेण पल्लिवइणा अम्ह गामो अवक्खंदं दाऊण गहिओ । तओ हयविहए गामम्मि सा दुरायारिणी सीहपल्लिवइमुवट्टिया । भणिओ य तीए पगव्वभव-णेणं जहा—“अज्जउत्त ! तइ दिट्ठमेत्ते चेव मह समूससियं हियएणं, वियसियं णयणजुयलेणं, फुरियं वाहुलइयार्हि, वृद्धो गिरं-तरं सयल(? लंग)मंगेसु रोमंचो, जाईसराइं व लोयणाणि जम्मन्तरणेहमणुसरन्ति ति । अवि य—

पेम्माणुरायरसिप दिट्ठे गुरुणेहनिम्भरे दइए । किं किं ण करेइ जणो समत्थिओ पंचवौणेण ? ॥ २४ ॥

ता जइ महोवरि अज्जउत्तो माणुराओ सकोउहल्लो साणुकंपो वा तओ अज्जउत्तमहं सयंवरं वरेमि” । ति भणंती ए[सा] अवलंबिया सेणावइणा पढमं हियएण, पच्छा करयलेणं । तयणंतरं च गइऊण सीलवईं पडिग्गहियधण-धण्ण-सुवणसारो गओ णिययपल्लि पल्लिवई । तत्थ य तेणं सा सब्बन्तेउरपहाणा सब्बस्ससामिणी कया । अणवरयपवड्ढमाणा-ऽणुरायाण तक्कालोचियविसयमुहमणुहवन्ताण वच्चंति दियहा, सरइ संसारो । सा वि अइमाया-कूड-कवड-चाडुपरायणा हिययमणुपविट्ठा पल्लिवइणो । चित्तियं च णेण—

तं किं पि माणुसं महियलम्मि संपडइ विहिणिओएणं । चिन्ताहियाइं जम्मि उ णराण जायंति सोक्खाइं ॥ २५ ॥

“णेहव्वरियं सम्भाविणव्वरं” रूय-गुणमहग्गवियं । सममुह-दुक्खं जस्सऽत्थि माणुसं सो मुहं जियइ ॥ २६ ॥

इओ य अहं पि तीए अवहरियाए ववगयअंधयारो व्व संजायविवेउ व्व लद्धि(द्ध)महाणिहाणो व्व ददमूससिओ । चित्तियं च मए—

णवरमिह ते कयत्था ते चिय धण्णा य जीवलोयम्मि । जे मोहणोसहीणं रमणीण ण गोयरे पडिया ॥ २७ ॥

तइ वि हु परिलहुयं चिय जमिमीए पेलवाए संबंधो । ण गओ मोहावत्ते जं अयसकलंकिओ “णेय ॥ २८ ॥

तओ अहं महाराय ! ववगयसण्णिवाओ व्व पुणरुत्तलद्धजम्मो व्व जहामुहं संसारमुहमणुहविउमाढत्तो । अण्णया य णीसेसाउहल्लमाहप्पो चिणिज्जियासेसजुवाणवग्गो विमुमरियसीलवइवइयरो तव्भाउणा मित्तवम्मेण दुव्वोलिओ जहा—
“जाणियं तुह वीरियं, परिण्णायं च सव्वाउहेसु कुसलत्तणं, जेण जियंतस्स चेव तुह भज्जा सत्तुणा अवहरिय ति । किंच—

संसारपूरणेणं जायइ जाएण एत्थ किं तेण ? । जस्स ण भरेइ भुवणन्तराइं किच्ची वियंमंती ॥ २९ ॥

दट्ठोद्विभिउडिभासुरकरालधाराफुरन्तकरवाले । पविसन्ति माणखंडणभएण रणसंकडिल्लम्मि ॥ ३० ॥

पवणुडाइयमीसणजालोलिकरालिह्ण ह्यवहम्मि । माणव्वंसणभीया सहसा सलहत्तणमुव्वेति ॥ ३१ ॥

पवणुच्छलन्तदूसहमहल्लकल्लोलभीसणारावं । मयरहरं पि हु पविसन्ति ण उण माणं विराहेति ॥ ३२ ॥

इय पिययमं पि सिद्धिल्लेति अहव अत्थं म्रियंति णियदेसं । माणव्वंसं न कुणंति कह वि जे होति सप्पुरिसा ॥ ३३ ॥

१ “रूवा सील” जे । २ दिट्ठमेत्ते स् । ३ “वाणेहि ?” स् । ४ णेहऽव्वहियं जे । ५ “रेरायु” जे । ६ “मयंधारो व्व जे । ७ णेव जे ।

परिहवानं च एस महंतो परिहवो जं जियन्तस्स गियमज्जा वि बला अण्णेण हीरइ” ति । तओ महाराय ! सुणिऊण मए एयं समुप्पण्णा मेहती अरती । चित्तियं च मए—ण तीए कोइ दुस्सीलत्तणं मुणइ, मह परिहवो उण सच्चजणविण्णाओ, ता एयमेत्थ पत्तयालं जं सा दुरायाणिणी गियबलपरक्कमेण अण्णेण वा “केण वि उवायन्तरेणं मोयावेऊण पल्लिवइसया-साओ समप्पेमि एएसि । ति चित्तिऊण गहिययेवदविणजाओ गिग्गाओ गियमक्काओ । चित्तियं च मए—अहयेगागी, कूरकम्मकारिणो वैहवे चोरा, दुग्गमा अडवी, विसमो पल्लिणिवेसो, ता गियरूवमवलम्बिऊण जेहोचियमणुचिद्वामि । तओ अहं लंघिऊण संसारविसमं महाडइ थेवदिवसेहिं चैव विसममंगप्पवेसं संपत्तो केसिणाऽहिवयणदाहं व विसालं, हिम-गिरिसिहरं व दुग्गमग्गाहिद्वियं, मुणिगणचित्तं व कयपरलोगसंपयं, कयंतरायहार्णि व भीसणं, नियइं पिव दुल्लंघं, वेसायणधरं व दुव्विणीयालयं, दुस्सीलमहिलं व भिण्णसज्जायं, कालजिग्भाऽहिदाणं पल्लिं संपत्तो । पविट्ठो य अब्भंतारियं । कया पाणवित्ती । इओ तओ भमन्तो एगो(?) विहिवसणिओएण पविट्ठो एक्कम्मि घरे । दिट्ठा य तत्थ परिणयवया इत्थिया । अब्भुट्ठिओ य तीए, भणिओ य—उवविसमु ति । अहं पि तीए नमिऊण उवविट्ठो आसंदियाए । पुच्छिओ अहं तीए—पुत्त ! कओ आगओ सि ? । मए भणियं—अहं सयणपरिहवाओ इहं आगओ ति, ता इहइं चैव अच्छिउमिच्छामि । तीए भणियं—पुत्त ! चिट्ठमु इहइं, अहं ते ण्हाण-भोयणाइणा अक्खुणं करिस्सामि ति । णामं च मए णायं सुमित्त ति । तओ अहं तीसे घरम्मि भोयणाइणा णिच्चित्तो पसारयं काऊण ववहरिउमादत्तो ।

अण्णया य सुमित्ताए वच्छलत्तणेण मह वावारोवउत्ताए सुइरं मं णिज्झाइऊण इंगियागारकुसलाए लक्खिऊण अण्ण-हिययत्तणं साणुकंपं भणियं—किं पुत्त ! सुमरसि पिट्ठओ माणुसाणं ?, उयाहु वेराणुबंधो हिययसंतावकारि ? ति, जेण दीहुण्णीसाससोसियं अहरं ते लक्खेमि, सुइरं च अंतो किं पि झाइऊण दट्ठोद्विउडिभामुरमाउहं पंलोएसि, ता सौहमु जइ ण रहस्सं, अहं च तुह दुक्खेण दुक्खिया जणणिसमाणा, ता वीसत्थो साहमु, जेण विण्णायकजसख्वा जुवइजणो-चियमुवयारं करिस्सं । तओ महाराय ! मए तमायणिऊण पप्फुल्लवयणकमलेण भणियं—साहु अम्बा !, साहु लक्खिओ मह अहिप्पाओ, तं किं पि णत्थि जं तुहाकहणिज्जं, विसेसेण एस वइयरो तुह साहेयव्वो, किंतु लज्जापराहीणो ण सक्कुणोमि एत्तियं कालं तुह साहिउं, संपइ तुमए मह दुक्खदुक्खियाए सयलमुवलक्खियं ति साहिज्जइ । तओ मए गिरवसेसो सीलवइवइयरो साहिओ । भणियं च तीए—पुत्त ! ण सोहणमणुचिद्वियं, जओ एगागी तुमं, विसमदुग्गट्ठिया पल्ली, वलवन्तो पल्लिवई, दूरे तुम्ह गामो, माया-कूड-कवडभरिओ पयईए चैव जुवइजणो विसेसेण दुस्सीलो ति, तहा वि मोह-णमणुचिद्वियं जं मह साहियं ति, जओ तीए अहमहिप्पायं जाणिस्सामि । ति भणिऊण महुरक्खरेहिं बहूहि य हेउ-दिट्ठंतेहिं सम्मं ठविऊण आदत्तो सीलवईए सह घरगमणसंबंधो, कीरंति कालोचियाओ कहाओ, ‘बुब्भंति लोयवावारा ।

अण्णया य सुमित्ताए भैणिया सीलवई—कहिं वा तुम्ह णिवासो ?, कहिं वा सीहसमागमो ?, केरिसो वा तुम्ह वंधुवग्गो समुरवग्गो वा ?, भत्तारो किं जुवाणो ण व ? ति, एयस्स पल्लिवइणो तं पिया उयाहु पुच्छपइणो ? ति । तओ कुडिलसहावत्तणओ महिलाणं, अवि(वी)सासत्तणओ पेम्मसहावाणं, भवियव्वयाए तस्सभावस्स, ण जहद्वियं कहियं । भणियं च तीए—“किं मुद्धे ! ण याणसि ?,

बंधुयणो समुरहरं जणणी सहपंसुकीलिओ भत्ता । एएहिं जुया जुवईहिमावया संपया चैव ॥ ३४ ॥

तौ सुमिते ! जहा तहा खविज्जए कालो, किं वा अण्णं करेइ इत्थिजणो परायत्तो असरणो ?” ति । सुमित्ताए भणियं—अत्थि एयं जइ कहिं पि णिस्सरणोवाओ होइ तओ सोहणं ति । इयरीए वि गोवियवियाराए भणियं—कुओ एत्तियाइं भग्गायेयाइं अम्हाणं ? । ति भणिए गया सुमित्ता गिययभैवणं । कहिओ मह एस बुत्तंतो । मए चित्तियं—एयं पि तीए संभाविज्जइ ।

१ महंती जे । २ “बलेण पर” जे । ३ कंणइ जे । ४ बहवो सु । ५ अहोचियं सु । ६ कसणां सु । ७ विसम्म सु । ८ “घरम्भ सु । ९ अब्भंतं जे । १० तस्यै नत्वा । ११ सुयं सु । १२ साहेसु जे । १३ उब्भन्ति सु । १४ भणियं—सीलवति । कहिं सु । १५ तौ जे । १६ “भयं जे ।

जीवावेइ मरंतं अण्णं मारेइ मरइ सह तेण । को मुणइ जुवइचरियं विसेसओ सीलरहियाणं ? ॥ ३५ ॥

अण्णदिवसम्मि सुमिन्ताए कवडेण भणियं जहा—आगया तुह समुरकुलपउत्ती । सीलवईए वियेण्णिऊण कवडयाए जलभरियलोयणजुयलाए भणियं—किं सचं ? साहसु केरिस ? ति । सुमिन्ताए भणियं—सामण्णेणाऽऽगया जहा—तुह भत्ता तुहण्णेसणपरो चिट्ठइ । इयरीए भणियं—“एयं पि होज्ज जं मह दइओ इहाऽऽगमेज्ज, अहं पि एएहिं चेव लोयणेहिं पेच्छेज्जा, ता सुमिन्ते !

कुणसु मह बंधुकज्जं, लेहं पेसवसु तस्स मह पइणो । जह एसा तुह दइया णिकिब ! सइ चिट्ठइ रुयन्ती ॥ ३६ ॥

जणविकखाओ सि तुमं मुहडो, ईह एरिसी मह अत्था । एत्ताहे किं भण्णइ ? जं जुत्तं तं करेज्जामु ॥ ३७ ॥

तओ एयमायण्णिऊण अण्णायपरमत्थाए भणियं सुमिन्ताए—सीलवइ ! जइ एवं गरुओ तुह अणुबंधो णियदइए ता पियं ते णिवेएमि, चिट्ठइ मह घरे तुह हिययदइओ, कुणसु जमुचियं ति । तयणंतरं च सीलवतीए ‘चिरं जयसु’ ति भणंतीए आलिङ्गिऊण चलणवडणुट्टियाए ल्हसियं णियंसणं, गलियं उत्तरिज्जं, बाहन्तरियं पण्णुल्लणयणजुयलं । भणियमिमीए—दहमुकंठिया, आणेह अज्जं ‘चेव मह दइयं, णिव्वसु विरहाणलपयवियं मह हिययं, गओ पल्लिवई जक्खजत्ताणिमित्तं जाव नागच्छइ । ति भणिऊण मह ‘दिण्णं पारिओसियं कडयजुयलं । आगंतूण साहिओ मह एस वइयरो सुमिन्ताए । अत्थमुवगए भ्रुवणपईवे दिवसयरे सुमिन्ताणुमगलगो भयतरलफुरियवामलोयणो पविट्ठो तीए भवणं ।

इओ य सा महाऽऽगमणहल्लफला परियणं इओ तओ पेसिऊण सदुक्खं णीसइं रोइउमादत्ता, संठविया य सुमिन्ताए । कयमुचियकरणिज्जं । गया सुमिन्ता । पेसिओ ‘हं भवणभन्तरं, समालिङ्गिऊण णिवज्जाविओ महरिहे सयणिजे ।

एत्थंतरम्मि तीए चेव बाहिंतो समागओ बाहिं पल्लिवई । तओ किल समाउलीभूया भ्रुयंगी ‘हा ! कट्ठं हा ! कट्ठं’ ति भणंती अर्द्धितरमुवगया । भणिओ य अहं तीए दाऊण थणोवरि करयलेण पहरं जहा—इयास ! इओ सि, आगओ पल्लिवती, ता णत्थि ते सरणं, पविससु य सयणीयस्स हेट्ठओ । अहं हित्थहियओ णिलुको सयणीयतले । णिग्गया य सा बाहिं । गहिऊण कंठे पल्लिवईं अर्द्धितरमुवगया । णिसण्णा णियसयणीए । भणिया य सा पल्लिवइणा जहा—सामिणि ! किमकंड एव दासजणो बाहित्तो ? जं वा ते दासजणेण कायव्वं तं तत्थद्वियस्सेव किं न आइहं ? जेण जक्खजत्तं तुज्झ आणाए भंजिऊण तुरियमिहागओ म्हि, ता आइसउ सामिणी जं मए कायव्वं ति । तओ तीए लद्धपणयाए भणियं—किं ण याणसि तुमं मुद्धो ? जहा अहं विएसओ समागया तुह वयणामयमुइया जीवामि ति, णत्थि मे अण्णं विणोयकारणं ति, कल्ले वि तुमं मए ण दिट्ठो ति णागया णिहा, सीयन्ति अंगाइं, ण रोयए भोयणं, तओ मए तुमं सदाविओ । ति भणमाणी अवगुहा पल्लिवइणा । पुणो वि भणियमिमीए—अज्जउत्त ! जइ पुण मह भत्ता णियकम्मरज्जुपासावयासिओ इह आगच्छेज्ज ता किं कुणइ तस्स अज्जउत्तो ? । सीहेण भणियं—सह दविणजाएण तुमं समप्पेमि । तओ तीए कूरकम्मकारिणीए हकं दाऊण भणियं—जइ वि ण वल्लहा सि अहं तुज्झ तहा वि ण जुत्तमणुरत्तजणपरिच्चायं काउं सप्पुरिसाणं, अहवा बला णिन्तस्स समप्पणं जुत्तमेव तुम्हारिसाणं । एयमायण्णिऊण भणियं पल्लिवइणा—मुंदरि ! किमेवं जंपसि ? किं मेहं बलपरकमं ण याणसि ? तुह वल्लहो काऊण मए एवं भणियं, अण्णहा कयंताओ वि तुमं रक्खिउमिच्छामि, किमंग पुण मण्णाओ ? । तीए भणियं—वद्धमूलस्स वइरतरुणो कारणं महिलाओ, सो य तुहऽऽच्चंतवेरी, जइ तुमं पावेइ तओ तं नत्थि जं न कुणइ, तं पुण पुरिसोहमत्तणओ एवं जंपसि । तओ संजायमच्छरेण भणियं—जइ पुणो अहं कह वि तं पावेमि तओ जं करेमि तं तुमं चेव पेच्छसि । तयणंतरं लद्धावसराए भणियं—जइ एवं ता एस तुह ‘पडिपंथी सेज्जाए हेट्ठओ चिट्ठइ ति । तओ दट्ठोद्विभित्तमासुरेण गहियस्सग्गेण सहिऊण य पुरिसे कडिहओ अहं केसेसु गहिऊण । बावाइज्जमाणो य धरिओ दुद्धमहिलाए—अविण्णायदुक्खवावायणं पि उवयारो चेव इमस्स, ता तहा वावाइज्जइ जहा ण पुणो वि भोगाहिलसणं कुणइ ति । तओ अहं महाराय ! पल्लिवइपुरिसेहिं थूणाए सरीरुक्खत्तिएण

१ वित्तज्जिऊण जे । २ एव एवं (१४) पि सु । ३ इय जे । ४ मण्णइ सु । ५ चेय जे । ६ दिण्ण सु । ७ ‘जुवल जे । ८ इ महमव’ जे । ९ आगच्छेज्जा जे । १० मह परं सु । ११ साहम्मत्त जे सु । १२ परिपंथी सु ।

णिययवम्मेण वद्धो । णिग्गया य पुरिसा । तयणंतरं तम्मि सयणिज्जे मह समक्खं सच्छंदयारीणं अणेयविब्बोयसमेयं रइमुहमणुहवंताणं वीसंभत्तणओ समागया णिहा । चित्तियं च मए—“एयाणि ताणि विहिणो विलसियाणि, एसा सा कम्मपरिणई, अहवा महिलामोहियाणं केत्तियं एयं?, जओ—

णरयदुवारं वसणेककुलहरं सयलपरिहवावासो । महिलायणसंबंधो चारगबंधो व्व पुरिसाणं ॥ ३८ ॥

अत्थं वयंति, सेवंति खलयणं, जीवियं पि तोलेन्ति । माणब्भंसं पि कुणंति माणिणो जुवइसंगेण ॥ ३९ ॥

तं णत्थि चिय भुवणे वि मुवुरिसा दूरणिमायपयावा । महिलासंगेण सया विडम्बणं जं ण पावेंति” ॥ ४० ॥

तत्थ य मए महाराय ! णायं जहा—सरीरवेयणाओ अहिया माणसी पीड ति, जओ तच्चइयरदंसणुट्टियचित्तपीडाए ण विण्णाया सैरीरुक्कत्तण-बंधणपीड ति । एवं च चित्तयंतस्स बहूणि अट्टदुहट्टाणि भवियव्वयाणिओएणं मूसएहिं आगंतूण मह भक्खिया बंधणबंधा । मोक्कलो जाओ । उद्धाओ कोहप्पसरो । गहियं तस्स खग्गं । आकडिडऊण ढक्किओ पल्लिवई । तयणंतरं च ससम्भंतो उट्ठिओ सयणीयाओ । पाडियं च मए खग्गप्पहारेण तालफलं व तस्स सिरं । भयसम्भन्ततरल्ल-लोयणा य भणिया सा मए दुरायारिणी—पु(१)धुत्ति ! तुरियमग्गओ ठासि(२)हि) अण्णहा संपयं ण हवसि ति । तओ इत्थी-सभावत्तणओ वेविरसरीरा अग्गओ टिया । अहं सदेसाहिमुहं मोत्तूण मग्गलग्गो अडवीए गंतुं । आगच्छइ य सा मह पिट्ठओ वत्थावयवे मग्गसंलक्खणत्थं मुयंती ण मए संलक्खिया । विसमत्तणओ पव्वयस्स, घणत्तणओ कडयतरूणं, संखु-द्धत्तणओ हिययस्स, येवे चेव भूमिमाए अडकंते जीवियासा विय वियलिया रयणी । समुग्गओ तीए मणोरहो व्व भुवण-पदीवो दिणयरो ।

तओ तच्चिधोवलक्खियमग्गाणुलग्गो सेणासमेओ समागओ वग्घाऽहिहाणो पल्लिवइपुत्तो । दिट्ठाणि य अम्हे एकम्मि वणनिग्गुंजे णिलुक्काणि । भणियं च तेण—अम्ब ! तुह कयाहिण्णाणाऽणुसारेण समागया इह अम्हे । वावाइज्जमाणो अहं पुणरवि तहेव णिसिद्धो । खाइरेहिं खीलएहिं खीलऊण मं, वेत्तूण तं दुरायारिणिं, गओ पल्लिवइपुत्तो । अहं अणावेक्ख-णीयमक्कत्थंतरमणुहवंतो चिट्ठामि । चित्तियं च मए—कहं मए अभिण्णाणं कीरमाणं नोवलक्खियं ? ति । अहवा—

जोयणसयाओ तह समहियाओ लक्खेइ आमिसं सउणो । सो चेव मरणकाले पासाबंधं ण लक्खेइ ॥ ४१ ॥

जं जेण जहा जइया मुहममुहं वा समज्जियं कम्मं । तं तस्स तहा तइया तयाणुरूवं फलं देइ ॥ ४२ ॥

किं कस्स केण कीरइ संसारे पयतिणिग्गुणे विरसे ? । परिणमइ सकम्मं चिय अण्णो पर पडइ वयणिज्जे ॥ ४३ ॥

तओ, अहं महाराय ! तिच्चयरवेयणाउलसरीरो समीहियाऽसंपज्जंतमरणो वि जाव तग्गयावत्थो चिट्ठामि ताव य तमुहेसं वणदवो विव पिंगलप्पभाभामुरो वाणरज्जहसमेओ समागओ जूहाहिवई । तेणावि तयावत्थं मं पलोविऊण णिसिद्ध-जूहेण एगागिणा चेव तुरियतुरियं गिरिसिहराभिमुहं गमणमणुट्टियं । थेववेलाए चेव समागओ । आगंतूण य चाविऊण दसणेहिं मूलयं सब्बखीलयाट्टाणेसु निच्छूढं । तयणंतरं चेव अचिन्तसत्तित्तणओ ओसहिप्पहावस्स णिग्गया सइं चेव सव्वे वि खीलया । बीएण य ओसहिस्खंडेण वणरोहणं कयं । अहं च तक्खणमेव निस्सल्लो ववगयवेयणो य जाओ । चित्तियं च मए—वचामि समवणं, अहवा अपुण्णापइण्णस्स ण जुत्तमेयं । कया य महुरेहिं फलेहिं पाणवित्ती । समासत्थो य चित्तिउमाहत्तो—

लल्लकमुक्कबुक्कारपहरणिब्भिन्नमुहडसंयाए । मरणं पि रणम्मि वरं भडाण ण हु खलजणुप्फेसा ॥ ४४ ॥

असमाणियकज्जधुरो कहं णु पेच्छामि मित्तवयणाइं ? । णियमज्जायमपत्तो कयाइ किं रविरहो वलइ ? ॥ ४५ ॥

एवं च चित्तयंतस्स थेववेलाए समागओ गहिउमाकंटयंदंडो सो चेव जूहाहिवई । पक्खित्तो य अग्गओ मह डंडो । गहिओ हत्थेण मए । तओ सो मं पलोएऊण गंतुमाहत्तो । लग्गो मग्गओ । आरूढो य सो विसममेगं गिरिसिहरं । तत्थट्ठिण्ण य तेण महया सडेण बुक्कारियं । समुच्छलिओ गिरिगुहाविवरभट्टिउव्वसंतो महंतो पडिरवो, संखुद्धो य समं-तओ रण्णुहेसो, संरद्धा मयारिणो, खुहिया गयजूहाहिवइणो, पणट्ठाणि हरिणवंदाणि, संपग्गियाणि वरादेहिं णियजूहाणि,

१ मुपुरिसा जे । २ सरीरुक्कत्तणपीड जे । ३ “एणं आ” स्तु । ४ मोक्कलो जे । ५ मूलियं सब्बखीलियं स्तु । ६ खीलया जे । ७ वण-रोधनम् । ८ “यंदवो थेव जूहावती” जे । ९ खुद्धा गय” जे ।

समुद्रीणा सउणसंधाया । एवं च गुरुमयविम्बलपाणिगणे जायम्मि रण्णुदेसे तं सहमायणिऊण पडिरवायारं बुकारं
मुयंतो वेगुद्धाइयदीहसासाउलो उल्लालियदीहलंगूलो संपत्तो वाणरज्जुहाहिर्वई । गहिओ य तेण अक्खंदं दाऊण मह
समीववत्ती ज्जहाहिर्वई । तेण महं मुहं पलोइयं । तओ मे तयणंतरमेव तेण तिक्खकंटएण महया दंडेण आहओ उत्तिमं-
गम्मि मह जीवियदायगस्स सत्तू । पहाराणंतरं चे विणिग्गयगयगजुयलो णीहरंतदीहजीहो बुकारं मुयंतो पडिओ
धरणिवट्ठे । तयणंतरं च दंडणिवायभीएणेव मुक्को जियजीविण । त च ववगयपागमवल्लोइऊण वाणरवइणा गहिऊण
चलणजुयले पक्खित्तो एकम्मि छिण्णटंकाऽयडे । पुणरवि [आ]गंतूण मह समीवे साहेतो व्व हिययपरिओसं, सूपन्तो व्व
पडिदाणुज्जुयमप्पाणं किंपि हियएण विसुरंतो अग्गओ चिट्ठिउमाडत्तो । तओ मए जंपियं—महापुरिस ! कयं तुमए जं मह
करणिज्जं, ण य जीवियदाणाओ वि अवरदागमत्थि । एवं च भणिए मया लाइओ अहं तेण मग्गे । पविट्ठो य पल्लि ।
जाणिऊण य सयलवुत्तंतं सुमिन्नासयासाओ पविट्ठो अहं रयणीए पल्लिवइगेहं । वावाइओ य मए पल्लिवइपुत्तो वग्घो ।
वेत्तूण य तं दुरायारिणिं पयट्ठो सगामाभिमुहं ।

ताव य अंतरे समासाइओ वीरयाभिहाणेण अवरेण पल्लिवइणा । तत्थ य एगागिणा तस्स बलं सव्वं परम्मुहीकयं ।
तओ पल्लिवइवीरएणं भजंतं गियबलं पेच्छिऊण भणियं—साहु अहो महापुरिस ! साहु, ता किमेएहिं ? जइ अत्थि
पोरुसअहिमाणो तो मह सम्मुहो ठासु एगं मुहुत्तं, जेण णासेमि ते पोरुसावलेवं, अइवा एगागी तुमं विदेसत्थो य, ता
तए पराजिण्णावि ण णिव्वडइ माहप्यं ति । एयं मए समायणिऊण भणियं—“सोहणो समुल्लावो पल्लिवइविरुद्धो, जइ
फलेणं पि एयं तइ चेय ता जुज्जइ जंपिउं, अण्णहा लहुयत्तणफलेण किमणेण ?, णिव्वडियफलस्स वि किमणेणं ? ति,
जओ पुरिसस्स भुएसु वीरियं, ण वायाए; पुरिसस्स फुरणं चेव अन्तरंगो सहाओ, किमणेणं वहिरंगेणं सहाएणं ? ।
अवि य—

विहडन्तदिव्व-जायन्तवसण-वियलन्तवंधुवग्गाण । गियफुरणं चिय धीराण होइ वसगम्मि मुसहाओ ॥ ४६ ॥

समुहमिलिएकमेकाण कह णु आसण्णसंसयसहाओ । जायइ रणम्मि विसमे भडाण मोत्तूण गियविरियं ॥ ४७ ॥

गियसत्तिवज्जियाणं घरमहिलापालणे वि संदेहो । किं पुण जयसिरिगहणं हडेण जेऊण पडिक्खं ? ॥ ४८ ॥

सण्णहणं दुमं आउहं च कज्जं कुणंति^१ धीरस्स । धीरत्तणरहियाणं णराणमप्पव्वहणिमित्तं ॥ ४९ ॥

इय होइ सहावो सुपुरिसाण गियओ परकमो चेव । ता पहरसु जइ सामत्थमत्थि अइवा समोसरसु” ॥ ५० ॥

तओ तमायणिऊण वीरएण चिन्तियं—भावगरुओ समुल्लावो, ता पुच्छामि एयं “किं कारणमिहागओ ?, को वा सि
तुमं ?” । चित्तिऊण भणियं—भो महापुरिस ! आवज्जिओ अहं एएण तुह वीरत्तणेणं, ता उवसंहर संरंभं, साहसु जहट्ठियं को
सि तुमं ?, किं वा गिमित्तमिमीए महाडवीए पविट्ठो सि ? । ति भणिऊण मुक्कं पल्लिवइणा चावं । उवविट्ठो वच्छच्छायाए
एसो । अहं पि चावमोयारेऊण तयासण्णे उवविट्ठो । साहियं मए जहट्ठियं चेव वीरस्स । तेण वि य मं पसंसिऊण भणियं—
“ण तए एसा दुरायारिणी समीवे वि धरियव्वा, जओ—

वसणसयसंकडिल्लम्मि खिवइ संसारसायरे महिला । जीवंतं चिय पुरिसं मयं पि णरए दुरुत्तारे ॥ ५१ ॥

दंसेइ गरुयसव्वावणिब्भरं पेम्मपरिणइं महिला । गियजाइपव्वएणं अण्णं चिय किं पि चित्तेइ ॥ ५२ ॥

कुणइ वियारं अविणट्ठिया वि हाल व्व महिलिया लोए । जं पुण कुणइ विणट्ठा तं किर कह तीरए वोत्तुं ? ॥ ५३ ॥

इय कूड-कवड-भाया-पवंच-विब्बोय-कामभरियाण । णामं पि जे ण गेण्हंति णवर महिलान ते धण्णा” ॥ ५४ ॥

इय एवमाइ बहुयं भणिऊण य णीओ पल्लिं दंसिऊण य अत्तणो कुलीणत्तणं एगागिणा पल्लिवइणा गियगामवा-
हिरियाए ।

पत्तो सि तुमं गामं, वीससणीयं ण चेव महिलानं । अहमवि कयववसाओ गियकज्जसमुज्जओ जाओ ॥ ५५ ॥

१ य णिग्गं सू । २ एवम्मए सू । ३ क पुण जे सू । ४ “ति वीरस्स । वीरत्त” जे । ५ सुपुरिसाण जे । ६ हो मं जे ।
७ वीरसत्तेणं जे । ८ “ट्ठो य च्छायाए सू ।

एवं भणिऊण सो महाणुहावो ससरं सरासणं भंजिऊण ण याणामि 'कथं इ गओ' ति ।

भणिया य सा मए दुरायारिणी जहा—वच्चमु सबंधुणं गेहे । तीए भणियं—ण तुमं मोत्तूण मह कोइ अत्थि, जइ तुमं मं परिचयसि तओ अहं उब्बंधिऊणं अत्ताणं वावाइस्सं । ति भणिऊण य उब्बंधिउमादत्ता । णिवारिऊण य तं, चित्तियं मए—

एयं पि अत्थि अण्णं पि अत्थि तं णत्थि जं इहं णत्थि । अण्णोणविरुद्धां पि होन्ति महिलामणे विउले ॥ ५६ ॥

तओ एवं चित्तिऊण मए सा समप्पिया णिययबंधुणं ।

अहं पि तिच्चयरसंवेगावुरियसरीरो पवहदभाणसंवेयातिसओ तहाविहाणमायरियाण समीवे गहिऊण सामण्णं, पालिऊण पव्वज्जापरियायं, मरिऊणं देवलोगं गओ ।

चइऊण तओ अंधविस्सए असोयचंदस्स राइणो असोयमहो णाम पुत्तो समुप्पण्णो । वड्हिओ सह कलार्हि । परिणाविओ य पिउणा कण्णासयं । अण्णया य उज्जाणगएणं दिट्ठो पढमवए पव्वइओ । तं च दट्ठण समूससियं हियएण, वियसियं लोयणजुयलेणं, णिव्वाणिमुक्कगयाणि अंगोवंगाणि, पैणमिऊण य उवविट्ठो तयासण्णे । पुच्छियं मए—भयवं ! किमंग पुण तुमं दट्ठण अण्णहाहो अहं ? ति, ता साहेउ भयवं जइ ते विण्णाणगोयरो ति । भयवया भणियं—सोम ! सुणसु, तुमं मए महिलासहाओ पल्लीओ समासासिऊण णिययगामं पाविओ ति । मए भणियं—कहं चिय ? तओ भयवया जहट्ठिओ सीलवईहरणवइयो वीरयधनुभंगावसाणो य सव्वो साहिओ । ता महापुरिस ! 'एरिसाणि सच्छं-दचारिणो विहिंविस्सियाणि, विसमा कम्मपरिणई, दुरन्तो रमणीण पसंगो, दारुणो मोहविवागो, संसारणुवत्तिणो कसा-या, णरयगमणेकहेऊ विसयाहिलासो, दुज्जओ रइणाहो, पावा पावपरिणई, असारं जोव्वणं, तरलं जीवियं, चंचला सिरी, मुइणयसमो बंधुसमागमो, दारुणो संसारवासो, दुलहं मणुयत्तणं, दूरगोयरा पुणो वि एरिसा धम्मसामग्गि' ति चित्तिऊण धम्मघोसायरियसमीवे पव्वज्जमणुपालिऊण देवलोगं गओ ।

पुणरवि इहेव भारहे वासे इंददत्तस्स पुत्तो पुरंदरदत्तो नाम समुप्पण्णो । जोव्वणगएणं य मए स्तिरिपव्वयमणु-चरन्तो उस्सहसेणाहिहाणो दिट्ठो साहू । तेण य उप्पण्णाऽइसएणं मुणिऊण पुव्वभवमुप्पण्णवेरग्गो चित्तिउमादत्तो, कहं चिय ?—

वरमिह खाइरअंगारतावियं लोहणिम्मियावयवं । उवगूहिऊण मुत्तं महिलं ण उणो सरायमिणं ॥ ५७ ॥

इच्चेवमहं दिट्ठदोसो विसएसु, विसेसेण महिलामु, मोत्तूण तणं पिव रज्जं तस्संतिए पव्वइओ । ता तुमं पि जइ जाणसि विसयमुहं विरसं, विसमाओ दुट्ठमहिलाओ, संसारं च दुरंतं, ता छइसु जा न छट्टेन्ति । तओ अहं संजायवेरग्गो तस्सऽन्तिए पव्वइओ । तेण य सह विहरंतो इहाऽऽगओ । तेण य भगवया उप्पण्णदिच्चणाणेण एत्थ सिद्धवडे पणहऽह-कम्मेणं सिद्धगती समासाइया । ता तेण स्तिरिपव्वए सिद्धवडो चि भण्णति । ता एयं मह महाभाग ! पव्वज्जाकारणं ति साहियं तुम्ह । एयं चाऽऽयणिऊण तुम्हेहिं पि ण कायव्वो इत्थीसु वीसम्भो ।

माउं जाति समुदो, पुणो पयांरेण 'केज वि मुमेरु । सो णत्थि चिय भुवणे वि कोइ जो मिणइ जुवइमणं ॥ ५८ ॥

तओ एयमायणिऊण य पसंसिऊण मुणिं वंदिऊण य गया णिययावासं ति । तत्तो वि दाऊण पयाणयं भारहं वासं विहरिउमादत्ता । कहं ?—

उज्जाणेसु सरेसु य पुलिणुच्छंगेसु सोणसरियाणं । विविहेसु काणणेसु य पव्वयसिहरंतरालेसु ॥ ५९ ॥

गाम-नगरा-ऽडईसुं मडंब-कव्वड-विसालदुग्गेसु । वियरन्ति दिन्ति भुंजन्ति जन्ति भरहं महासत्ता ॥ ६० ॥

वियरन्ति धणं, भुंजन्ति संपयं, खल्लयणं णिसुम्भन्ति । पूरंति तहऽत्थिमणोरहे य भरहे वियम्भन्ता ॥ ६१ ॥

पूरंति पूयणिज्जे गुणिणो धी(वी)रा कयण्णया धीरा । णित्ति पयावं भुवणंतराईं सइ साहससहाया ॥ ६२ ॥

१ एयं जे । २ 'ण य अ' जे । ३ पयविऊण सु । ४ 'ण मए सु । ५ 'ण साहिऊण पु' जे सु । ६ खाइरंगार' जे सु । ७ केज इ जे । ८ भरहं जे ।

भुवणुवरंतजसणिवहणिम्मियासेसधवलाजिणभवणं । विहरन्तं चिय पत्ता तुणं अट्ठावयं सेलं ॥ ६३ ॥

अह पेच्छिउं पयत्ता णिज्जरसंकारताररचमुहलं । वियडतडुम्भडमणिकिरणरंजियाऽऽसा-धरावलं ॥ ६४ ॥

णंदणवणमणहरकयनिवेसविज्जाहरिद-मुरकलियं । णाणाविहमणिविरइयवहुविहजिणभवणचंचइयं ॥ ६५ ॥

चारणमुणि-विज्जाहर-मुरा-ऽमुरा-ऽणेयणरवरिदेहिं । जंतिंतेहिं सतोसं [च] वंदणऽत्थीहिं रुद्धपहं ॥ ६६ ॥

डज्जंताऽगरु-कप्पूरवहलधुवुच्छलन्तसंगीयं । पयपडुपडह-मदल-काहल-संखाऽऽउलसणाहं ॥ ६७ ॥

जयजयरव-मंगलगीयसह-धुइ-थोत्तजणियहलवोलं । विम्हयजणणं अट्ठावयं ति पेच्छन्ति मुरसेलं ॥ ६८ ॥

तओ पेच्छिऊण सयलपेच्छणिज्जाऽऽवासं अट्ठावयं पुच्छियं णायगेहिं—को एस पव्वओ?, केण वा जिणभवणा-लंकिओ? चि । तयणंतरं च सुबुद्धिपमुहेणं मन्तिगणेणं जंपियं जहा—एस भरहचक्रवर्तिणा आदितित्थयरस्स उस्सभ-सामिणो पुत्तेणं जिणभवणालंकिओ, 'एत्थ य सिद्धो भयवं जगप्पियामहो उस्सभसामि' चि कलिऊण तव्वंसपभवेहिं अण्णेहिं पि मुरा-ऽमुर-गर-विज्जाहरिदेहिं अणवरयमेस सेविज्जइ, ता दट्ठवो एस 'सिद्धिखेत्तं' ति काऊण तुम्हेहिं पि । तओ एयमायणिऊण समारूढा पव्वयसिहरं । दिट्ठाणि चउवीसं 'जिणालयाणि पत्तेयं सव्वजिणाणं णिययमाण-वण्णपडि-महिं कलियाणि । ताणि य भत्तिविहवाणुरूवं वंदिऊण पूइऊण य मंतियं तेहिं—जमेत्थ करणिज्जं तं सव्वं भरहचक्र-वर्तिणा सयं चेव कयं, ता अम्हे वि किंचि एत्थ तहाविहमच्छरियभूयं करेमो ।

तओ चिंतयंताण समुप्पण्णा बुद्धी जहा—एस पव्वओ बहुअच्छरियणिवासो सव्वकंचणमओ णाणामणिविरइयजिणभवणो पउमरायमयसाणुणियरइयावयवो महोसहिसंकुलो, ता एस 'दूसमादोगचजणेण विलुप्पइ' चि जइ केणइ उवाएण रक्खिज्जइ ता रक्खणत्थमुज्जमं करेमो चि, जओ दाणाओ पालणं सेयं । ति चित्तिऊण गहियं दंडरयणं सहस्संसुणा । समंतओ य अट्ठावयस्स खाइयाणिमित्तं खणिउमादत्तो धरणिमंडलं । तओ अचिन्तसत्तिचणओ दंडरयणस्स, बहुत्तणओ सयरपुत्ताणं, वज्जरिसहणारायसंधयणत्तणओ य तेहिं ताव खयं धरणिमंडलं जाव भवणवट्ठणागकुमाराण भवणभेओ कओ । तयण-तरं च अउव्वधरणिभेउप्पित्थहियओ 'किं किं किं?' ति भणमाणो विम्भमुम्भंतलोयणो सव्वत्थ पेच्छियच्छोहो वसुहाविवरुग्ग-यवहलणीसासधुमुप्पीलो समाउलीभूओ णागलोओ । तओ त(स)माउलं पेच्छिऊण णाइणिसमूहं हित्थहिययं विणिग्गओ णागलोयाओ जलणप्पहाहिहाणो णागिंदकुमारो । णिग्गंतूण य तेण रोसवससविसेसाऽरुणलोयणेणावि णियमिऊण कोहप्पसरं भणियं—'भो ! भो ! किमेयमाडत्तं तुम्हेहिं?, जेण भवणवइभवणाइं सासयाइं पि गुरुविसअवज्जणिवायसरिच्छेहिं दंडघाएहिं जज्जरीकयाणि, जेणाऽहिवियडफणुम्भडमणिकिरणभीय व्व भंदं भंदं पविसंति रवियरा मणिजालगवक्खविवरं-तराऽऽलोयणेणं, लद्धावयासो तुम्ह दंडो व्व दीसिउं पयत्तो आयवो, तुम्हे य ठिइलंघणुज्जए पेच्छिऊण रवियरा वि मज्जा-याइकमं काउं ववसिया, ता सव्वहा तुम्हारिसाणं ण जुत्तमेयं । अवि य—

अप्पवहाए णिययं होइ वलं उत्तुणाण भुवणम्मि । णियपक्खवलेणं चिय पडइ पयंगो पदीवम्मि ॥ ६९ ॥

होइ विणीओ गरुओ, गुरुत्तणं संपयाए पढमंगं । अविणीओ वि हु लहुओ, लहुत्तणं आवईए पयं ॥ ७० ॥

एसा वि जए लच्छी सोहइ मग्गट्टियाण पुरिसाण । इयराणं पुण सिग्घं णासइ आसयविणासेणं ॥ ७१ ॥

जे होतिं महापुरिसा ते ठिइमंगं कुणंति ण कया वि । उवल्लदो किं केण वि मग्गुत्तिणो रहो रविणो? ॥ ७२ ॥

जे होतिं सच्चन्ता ते संतो ते महायसा भुवणे । जे णेति सिरिं मुपइट्टिएण सप्पुरिसमग्गेणं ॥ ७३ ॥

सगुणेहिं चिय पुरिसा पयडा चूडामणि व्व विक्खाया । सयलजणसलहणिज्जा वुम्भंति सिरेण भुवणम्मि ॥ ७४ ॥

इयरे जं किंचि गुणं लहिऊण समुच्छलंति तुच्छया । दुब्बलपक्खपरिग्गहगहिया सलह व्व भुवणम्मि ॥ ७५ ॥

१ जिणाऽऽययणाणि जे । २ सह जे । ३ चित्तताण जे । ४ तुम्हेहिं जे । ५ 'राय(ऽव)लोय' जे । ६ आवईए जे । ७ 'ति गहणु' जे । ८ 'च्छलंततुच्छया' जे ।

इय गियचरिण्हिं चिय पुरिसा णज्जन्ति कुल-गुणसमेया । मज्जाइकमणेणं जेणं लहुएन्ति अप्पाणं ॥ ७६ ॥

अण्णं च तुम्हे सय्यरस्स चकवट्ठिणो पुत्ता, ता तुम्हाण ण जुत्तेमेयं । जाओ—

ते पुत्ता जे पिउणो चिण्णेण पहेण सति पवज्जंति । तेसिं गुणगहणेणं पिया वि सलहिज्जइ जयम्मि ॥ ७७ ॥

दुस्सीलेहिं सुएहिं पि लहइ वयणिज्जयं पिया सययं । किरणा तवंति भुवणं लोओ खरस्स रुसेइ ॥ ७८ ॥

इय जाव ण भज्जइ मंदिरस्स चूला उ सासया रम्मा । वीसमउ ताव तुम्हं समुज्जयं दंडरयणमिणं ॥ ७९ ॥

कज्जं कुणंति गिययं उवरोहं नेय कस्सइ जणंति । गुणवन्तयाण कप्पो भमराण व होइ कमलेसु” ॥ ८० ॥

एयं गुणिऊण जण्हुकुमारो भणिउमाहत्तो—ण एस पयासो तुम्ह भवणभंजणणिमित्तं कओ अम्हेहिं, किंतु अट्ठा-
वयं फरिहाए रक्खिउं, ता जइ दंडगउरवेणं तुम्ह भवणोइइवो जाओ ण एत्थ अम्हाण तणुओ वि दोसभाओ, ता
उवसंहरसु संरंभं, ण पुण एरिसं करिस्सामो चि । उवसमिओ जलणप्पहो गओ भवणं ति । तओ गए णागिदे भणियं
जण्हुणा—कओए स दुल्लंघो अट्ठावओ किं पुण पैसा फरिहा पायालोयरगंभीरा रिक्ता ण सोहइ चि, ता कीरउ इमीए जल-
भरणोवाओ । एवं भणिऊण जण्हुणा गहियं दंडरयणं । दंडरयणेण विचारियं गंगायडं । पयट्ठा महल्लकल्लोलमालाउला
दंडरयणाणुसारेण गंगा । भरिया य तीए खाइया । तओ संजायविवरंतरे पविट्ठं धाराहिं जलं णागकुमारभवणेसु ।
तं च तहा णागकुलाउलं णागलोयं पेच्छिऊण भणियमेगेणाहिणा जहा—महाराय ! किमेस जलपम्भारो अविण्णायपुब्बो
णागभवणेसु वियंभइ ? चि । कहं ?—

भयविहडियाण जाओ उब्भडकल्लोलपेल्लियथिराणं । अह गिरवसाणदुसहो कुट्टम्भभंगो भुयंगाण ॥ ८१ ॥

दीसइ पायालयलं जलरयवुब्भंतणाइणिसमूहं । पुक्कारुट्ठियजलणुच्छलन्तभीसणजलुप्पीलं ॥ ८२ ॥

भरियजलभवणविवरं हाहारवणीहरंतपडिसइ । मुणिऊण णागलोयं णागेंदो भणइ तो रुसिओ ॥ ८३ ॥

“सन्ति सय्यरस्स पुत्ता दुस्सीला जेहिं दंडरयणेणं । खणिऊण धरावीडं पायालयलं जलाउलियं ॥ ८४ ॥

सामं कयं चिय मए पुब्बि बलगव्वियाणमणुचिण्णं । तं तेसिमण्ह चिय परिणमियं आसयवसेण ॥ ८५ ॥

माणुण्णयाण वि फुडं सामं गरुयत्तणं पयासेति । दंडसहाणं इहरा णराण हीणत्तणं कुणति ॥ ८६ ॥

दो चेव णवर गीतीओ होन्ति पुरिसाण गुणमहग्घाण । सामं व विणयपिसुणं दंडो व्व पयाववित्थारो ॥ ८७ ॥

एतेहिं मह समक्खं दिट्ठं सामं ति विणयगुणकलियं । दरिसेमि संपयमहं दंडं पुण जं ण पेच्छंति” ॥ ८८ ॥

इय भणिऊण सरोसं णयणविसा सद्धिया महाधोरा । णागकुमारा बहवे भणिया मारेह सय्यरसुए ॥ ८९ ॥

“तेहिं पि तक्खणं चिय णीसरिऊणं जलन्तणयणेहिं । तह दिट्ठा सय्यरसुया जह दीसंत चिय ण दिट्ठा ॥ ९० ॥

एवं च जणसमूहाओ भूतिकूडाउवसेसेसु जाएसु सय्यरसुएसु हाहारवो समुच्छलिओ कडयसणिवेसम्मि । सुहियं
सेण्णं, णासंति कावुरिसा, धाव(?) रन्ति सप्पुरिसा, अकंदइ महिलासमूहो, समाउलो मन्तिवग्गो, वुण्णो परियणो, विसण्णो
कंचुइयणो । “किमेयं ? किमेयं ?” भणंता सहाविया महासामन्ता । “किमेत्थ करणिज्जं ?, कत्थ वच्चाओ ?, किं(कं) भणाओ ?,
केण सद्धिं जुज्झाओ ?, कस्स कहेमो ?, कं सरणं पवज्जाओ ?” । एवं समाउले सयलखंधावारे समुच्छलिओ अंतेउरे
महंतो उल्लोलो । कहं ?—

हा हा ! कयन्त ! णिइय ! णिच्चमकज्जुज्जओ सि जइ वि तुमं । तह वि अणज्ज ! न जुज्जइ मग्गुत्तिण्णं इमं काउं ॥ ९१ ॥

हा देव्व ! किं व एयं ? एकपए चेव सच्चहा णासो । किं होज्ज पैस सुइणो मोहो वा इंद्यालं वा ? ॥ ९२ ॥

किं सच्चं चिय एयं हवेज्ज मइविब्भमो व्व माय व्व ? । इय चिंतिऊण हिययं ण जाणिमो कह णु संठविमो ? ॥ ९३ ॥

इय दुसहदुक्खसंतावतावियं पययथणहरुच्छंणं । मुच्छाविरमे खिज्जइ मुइरं अंतेउरं सयलं ॥ ९४ ॥

अेवि य—

तत्स्वप्नवेहन्वागयदोन्वल्लपसाहणुज्झियाभरणा । ओमुयइ पुव्वणिविडं पि काइ चलवल्लयसंघायं ॥ ९५ ॥
 रसणादामं कीए वि णिच्छुब्भइ तोडिऊण धरणीए । वियडणियंयुव्वभडसाहिकामगयसारसंजवणं ॥ ९६ ॥
 अणवरयकराहयगरुयणिविडयणवट्टसंठिओ हारो । तह तुट्ठो जह खुत्ताडवसेसवरमोत्तिओ जाओ ॥ ९७ ॥
 खिचइं चलचलणखेवेण का वि पुणरुत्तजायदोप्पणा(व्वल्ला) । णेउरजुयलं मिउमंजुसिजिरं हंसमिहुणं व ॥ ९८ ॥
 मुमुमूरिज्जइ कीए वि सहसा ओसारिऊण कंठाओ । विमलमणिपयणिवेसो वि कंठेओ रयणणिम्मविओ ॥ ९९ ॥
 अणवरयणिन्तणीसासदीणमुहवाहधोयतंबोलो । अहरो हिमहयपंकयगयदलकरणिं समुव्वहइ ॥ १०० ॥
 पुणरुत्तजायमुच्छागमेण धरणीए कुन्तलकलावो । सोलन्तो कहइ व वेयणाए दुसहत्तणमउव्वं ॥ १०१ ॥
 इय दुसह-गरुयदुक्खोहजणियतावाहिं रायरमणीहिं । तह विलवियं सकरुणं जह रुणं सावयगणेहिं ॥ १०२ ॥

एवं कयमहारावे अन्तेउरियाजणे, किंकायव्वमूढे मन्तियणे, वैवगयपैयाववसरे महासामंतजणे, वुण्णे परियणे, विसण्णे सेण्णंसिविरे, खुहिए वणियवग्गे, भणियं मंतिणा सुवुद्धिणा-भो भो सेणावड्ढो ! महासामंता ! किमेत्थं णिप्फलेणं विलविणं ? जमेत्थं कायव्वं तं तेहिं चेव जीवियमोद्धेणं कयं ति, जओ जलभरियस्वाइयपरिवेसत्तणओ दुग्गमो जाओ अट्टावओ, "तेसिं च महापुरिसाणं अग्निदाणमेत्तेणावि अम्हे ववगयाडवसरा संवुत्ता, ता खणमवि इह चिट्ठिउं ण खमं, दिज्जउ अज्जेव पयाणयं ति । तओ 'सव्वाणमणुमयं' ति दिण्णं पयाणयं । आवासिया य विवित्ते पएसे । कयभोयणादिवा-वाराण य सयरमुयविणासचिन्ताए व विच्छायमंडलो पच्छिमासार्वावल्मी जाओ दिवसयरो । तयणंतरं च पाणियं पिव दाउं णिवुट्ठो अवरसमुद्धे ।

तओ मिलिया सामन्त-महासामन्तसमेया सयलमंतिणो मंतिउमाहत्ता-"कहमेयमसम्भावियउव्वं कज्जं णिवेइज्जउ राइणो ?, जओ लज्जाकरमेयं पुरिसाणं जं समीववत्ती परो वि अण्णेण ण वावाइज्जइ किं पुण सामिसालो ?, कहं वा तस्स वावायणं जीवन्तेहिं चेव अण्णस्स साहिज्जति ?, किंच संसारंतरगयाणं एवंविहाणि विहिणिओएणं कज्जाणि समावडन्ति जाणि ण कहिउं, ण गोविउं, ण हियएण धरिउं पि तीरन्ति ।

तं किं पि पडइ कज्जं पुव्वज्जियदुट्ठदिव्वजोएणं । मरणे वि जेण गरहा जीयं पुण पावपरिणामो ॥ १०३ ॥
 चित्तेउं पि ण तीरइ किं पुण कहिउं विसालवंसस्स । भरहाहिवस्स एयं कज्जं हेयदिव्वणिम्मवियं ? ॥ १०४ ॥
 ता अम्हं पि सइं चिय जालोलिकरालिए हुयवहम्मि । जुत्तं पयंगमरणं, ण उणो सुयमरणवज्जरणं ॥ १०५ ॥
 अहवा संपइ किं तेण दुट्ठकालेण बालचरिएणं ? भवियव्वमेवमेयं तेसिं णासोऽम्ह गरहा य" ॥ १०६ ॥

एवं च मंतयंताण तेसिं समागओ एगो पविच्चाय[य]वेसधारी वंभणो । भणियं च तेण-भो ! किमेवमाउलीभूया तुम्हे ?, मुंचह विसायं, अंगीकरेहं ववत्थंभं, संसारगोयराणं जंतूणं किच्चियं एयं ?, अण्णं च किल 'कहं सट्ठिसहस्साणमेग-समयम्मि मरणं ?' ति विम्बिया तुम्हे एयं पि ण जुत्तं, जओ विचित्ता कम्मपरिणई, "तं णत्थि संविहाणं संसारे जं ण संपडइ", जस्स जेत्तिया पुत्ता तस्स तेत्तिया विवज्जन्ति, को एत्थ विम्हओ ?, ता तहा अहं साहेमि णरवड्ढो जहा सो वि दुक्खसागराओ अप्पाणं संघारेइ । त्ति भणिऊणं णिग्गओ खंधावेरणिवेसाओ । पत्तो य सयररायहार्णि । विण्णाओ य तेण भरहाहिवो सयलसामन्तोववेओ अत्थाइयामंडवे सुहासणत्थो चिट्ठइ त्ति ।

तओ महया सहेण भणियं वंभणेणं-भो भो त्रिणिजियाऽसेसमहीमंडलदूरणिग्गयपयावरिबुगइंदलणेककेसरि ! पणयसुरा-ऽसुर-विज्जाहरिंदमसिणियपायपीड ! तुह भुयारक्खिओ वि भरहे अहयं मुट्ठो मुट्ठो त्ति, अब्बंभणं अब्बंभणं च

१ "इ गयचल" जे । २ हार इत्यर्थः । ३ व्यपगतप्रतापप्रसरे । ४ "पयावावसरे" सू । ५ "णे सिविरे" सू । ६ किमेत्थं जे । ७ तेसिं त्वावि महा" जे । ८ "साविलम्भी" जे सू । ९ "तीवरो वि" सू । १० अण्णेण वावा" जे सू । ११ हयवेव" सू । १२ इडवत्थंभं, सू ।

घोसियं । तओ अमुयपुब्बं सयलरज्जे वि सइं सोऊण भणियं भरहाहिवेणं—सिग्घं सदावेह वंभणं, पुच्छह य केण मुट्ठो ? कहिं वा पएसे ? किं वा गहियं ? ति । तयणंतरमेव उवरोवरि गया पडिहारा, दिट्ठो वम्भणो, भणिओ य—ओ महापुरिस ! मा कूवेहि, वाहित्तो तुमं सयलतेलोकरैक्खणक्खमेण महाराइणा, ता वीसत्थो होहि, संपणं ते समीहियं, पुण्णा मणोरहा, सणियं समागच्छसु त्ति । तओ तमायण्णिऊण सदुक्खं विणिवेशियपयणिक्खेवो पव्वायवयणपंकओ परालियणयणजुयलो विलुलियसिरोरुहो खामकवोलो पराहीणअंगुवंगो पडिहारदेसियमग्गो पविट्ठो रायत्थाइयामंडवं वंभणो । भणिओ य राइणा—उवविससु त्ति । पणमिऊण य चक्कवट्ठिं उवविट्ठो पुरओ । पुच्छिओ य राइणा—भट्ट ! किमेवमुच्चिओ ? वीसत्थो साहसु, किं ते णट्ठं ? किं कंचणं ? उयाहु माणिकं ? अहो चउप्पयं दुपयं वा ? केण वा मुट्ठो ? किं वा केणइ परिहविओ ? उयाहु लुहापरिगयसरीरो ? किं वा दोगच्चकलंकदूसिओ ? अहो धम्मचारिणी पत्थेसि संताणणिमित्तभूयं पुत्तजम्मं ? किं वा कोइ तुह सरीरवाही ? सत्तुणा वा केणइ अभिद्धुओ ? दाइओ वा कोइ तुमं कयत्थेइ ? अण्णं वा किं पि समीहियं ण संपज्जइ ? त्ति, ता साहेसु जहट्ठियं चेव, जेण तुह विण्णायाऽभिप्पाओ अवणेमि तुह सरीरपीडं जहासत्तीए त्ति । तमायण्णिऊण भणियं वंभणेण—“महाराय ! सुणसु जमहं विण्णवेमि ।

तुह पैहु ! पयावपालियभुवणयले वसइ णिव्वुओ लोओ । तत्थ ससंका जायन्ति देव ! सइ लोयपाला वि ॥ १०७ ॥
इय एरिसम्मि भरहम्मि पमुइए जणवयम्मि वसमाणो । पत्तो वसणमसज्जं तमहं साहेमि णरणाह ! ॥ १०८ ॥

अत्थि अवन्ती णाम जणवओ पमुइओ सब्बोवदवरहिओ । तत्थ य आसभहो णाम गामो सयलगामगुणकलिओ । तत्थाइं जहुत्तयारी वेयऽज्झयणपरायणो अग्गिहोत्ताइगुणजुत्तो णिवसामि । अण्णया य पुत्तं वंभणीए भलावेऊण गामन्तरं वेयज्झयणणिमित्तं गओ । तत्थ य पढन्तस्स चित्ते अरती समुप्पण्णा । चित्तियं च मए—किमेयमरतीए कारणं ? ति, ता गच्छामि सगिहं । गओ य गेहं जाव दूराओ चेव हयविहयं घरं पेच्छामि । चित्तियं च मए—किमेयं ? ति । पवेसे य फुरियं वामलोयणेणं, मुक्कुरुक्खे य वाहरइ वायसो । तओ अहं पविट्ठो विमणो णिययभवणं । जाव वंभणी मं पेच्छिऊण ‘हा पुत्त ! हा पुत्त !’ त्ति वाहरन्ती धस त्ति पडिया धरणीयले । तओ मए चित्तियं—विणट्ठो मह कुलवदणभूओ सुओ । तयणंतरं च अहं विगयपाणो व्व णिवडिओ धरणीयले । मुच्छाविरमे य काऊण हाहापलावं अकयपाणविची चेव रयणीए णिवण्णो । एत्थंतरे य जग्गतस्स वि मे णामं गहेऊण भणियं देवयाए जहा—ओ भट्ट ! किमेवमुच्चिओ पुत्तमरणेणं ? ता संपाडेमि ते पुत्तं जइ मह वुत्तं करेसि । मए भणियं—करेमि जं भयवती किंचि सक्कणिज्जमाइसइ । तओ देवयाए भणियं—आणेहि तुरिओ अण्णेसिऊण अग्गि सोहणाओ घराओ जत्थ ण कोइ गेहे वावण्णो । तओ अहं अजायविवेओ अमुणियसक्काऽसक्को सब्बत्थऽण्णेसिउं पवत्तो । पुच्छामि य पतिगेहं जाव सब्बो वि संखादीयाइं मरणाइं साहेइ । तओ मए आगंतूण साहियं देवयाए जहा—णत्थि चेव संसारे तं भवणं जत्थ मरणाइं बहुसो ण जायाइं ति । पुणरवि भणियं देवयाए—जइ एवं ता जं गिरुवहवं गेहं तओ आणिज्जउ । ताव ‘तारिसं पि णत्थि’ पुणो वि मए कहियं । भणियं च देवयाए —

किं अत्थि कोइ भुवणम्मि जस्स जायंति जेय पावाइं । णियकम्मपरिणईए जम्मण-मरणाइं संसारे ? ॥ १०९ ॥

मरणम्मि वंधवाणं लोओ णिदेइ णवर संसारं । परिदेविऊण सब्बो कुणइ पयत्तेण घरकम्मं ॥ ११० ॥

किं कोइ तए दिट्ठो णिसुओ आसंकिओ व्व हियएण । जस्स ण होहेन्ति जए जम्मण-मरणाइं पावाइं ? ॥ १११ ॥

इय एरिसम्मि पयईए णिग्गुणे दूसहम्मि संसारे । किं जायइ कोइ गुणो साहसु परिदेविणेत्थ ? ॥ ११२ ॥

इय एवं [मं] भणिऊण सा गया देवया णियं ठाणं । अहमवि परिदेवंतो समागओ जत्थ तं देव ! ॥ ११३ ॥

तओ अहं महाराय ! हयकयन्तेण मुसिओ कत्थइ परिचाणं अलहंतो भमिऊण भरहवोसं वुण्णहरिणो व्व तुह सया-समागओ, तुम्हं च तं णत्थि जं ण सिज्जइ, संपयं भुवणविवरे परिब्भमइ तुम्ह अखलिओ पयावो, गया कित्ती दिगन्तरेसु,

१ तुमं तेलोक्कं सू । २ रक्खणेण मं जे । ३ णो य । मं जे सू । ४ रायणा सू । ५ संपज्जइ सू । ६ पैहु ! जे । ७ अग्गिहुत्ता जे । ८ वाइसो सू । ९ होहेन्ति जे । १० ‘तं वुण्णं’ जे ।

आणं कुणंति समुद्राऽमुर-नर-विज्जाहरिंदा, अपडिहयं पोरुसं, महन्तं बलं, अपरिमियं वीरियं, अपडिहओ जसो, अणुवमो चाओ, असाहारणं सरणागयवच्छलत्तणं, अण्णसरिसा दीणाऽणाहसमुद्धरणसीलया, ता देव ! असरणो सरणागओ देवस्स, दीणमब्भुद्धरणं च सहजायं महापुरिसाणं, तओ काऊण करुणं मह देउ देवो पुत्तं ति, अवि य—

जेऊण हयकयंतं मज्झ सुयं देसु देव ! सयराहं । तुह पोरुसं महायस ! जेणाऽमलियं पवित्थरइ ॥ ११४ ॥
कज्जं विणा वि भुवणे अब्भुद्धरणं कुणंति जे धीरा । ते वंदणिज्जचरिया वरपहु ! तुम्हारिसा विरला ॥ ११५ ॥
दीणाण समुद्धरणं, भयम्मि रक्खा, गुरुम्मि तह विणओ । दप्पुद्धुराण समणं, दाणं दारिद्वतवियाण ॥ ११६ ॥
सव्वस्स पियंवयया, बंधुसिणेहो कयण्णया सच्चं । सप्पुरिसाण महायस ! सययं चिय होइ, किं भणिमो ? ॥ ११७ ॥
ता महाराय ! कुणसु मह परिचं पुत्तदाणेणं” । ति भणिण [? भणियं राइणा—] “किं गहगहिओ सि, वायच्छंदिओ सि, उम्मचो सि, पराहीणो सि, अण्णायपरमत्थो सि, वालो सि, गयचेयणो सि, जेणेवं वाहरसि ? ।

सो णत्थि चिय भुवणे वि कोवि जां खलइ तस्स माहप्पं । सच्छंदचारिणो सव्ववेरिणो हयकयन्तस्स ॥ ११८ ॥
सीयन्ति सव्वसत्थाइं तत्थ, ण कमंति मंतिणो मन्ता । अट्ठिपहपररणम्मि तम्मि किं पोरुसं कुणइ ? ॥ ११९ ॥
ण बलेण तस्स केणइ पडियारो, णेय तंतजुचीए । आसेहिं रहवरेहिं य, अत्थो वि णिरत्थओ तत्थ ॥ १२० ॥
इय अप्पडियारे हयविहिम्मि संसारवत्तिणो जीवा । वट्ठंति तरस आणाए, एत्थ को कीरउ उवाओ ? ॥ १२१ ॥
किंच—

जइ तस्स होज्ज एक्कस्स चेय संसारगोयरगयस्स । मरणं ण उणो अण्णस्स जंतुणो हयकयन्ताओ ॥ १२२ ॥
ता जुज्जइ रोयण-पिट्ठणाइयं काउमस्स लोयस्स । एक्कस्स जओ मह परिहवो ति सयलम्मि जियलोए ॥ १२३ ॥
अह पुण समुर-गरा-ऽमर-विज्जाहर-किण्णरिंदपमुहाण । सामण्णं चिय मरणं ता इमिणा किं पलत्तेण ? ॥ १२४ ॥
मज्झं च भरहस्सेचे सट्ठिसहस्सा सुयाण विहरन्ति । को कुणउ ताण ताणं कवल्लिज्जन्ताण कालेण ? ॥ १२५ ॥
मा रुयसु, मुंच सोयं, कज्जं चित्तेहि, कुणसु अप्पहियं । जाव ण तुमं पि एवं कवल्लिज्जसि कालरत्तीए” ॥ १२६ ॥

एयमायणिऊण भणियं वंभणेणं—महाराय ! मह पुत्तसोयाऽभिभूयस्स भोयणं पि ण रोयइ किमंग पुण करणिज्जं ? ।
राइणा भणियं—“संपयं चेव तुमए णिवेइयं जहा—सव्वो वि लोओ ववगए बंधुयणम्मि णियकज्जपरायणो चिट्ठइ ति, तुमं पुण एगागी चेव किमाउलो सि ?, जओ अवहत्थियसयलवावारो एवं विलवसि । अवि य—

सव्वस्स वि एस गई होही कालेण जीवल्लोयम्मि । णियकम्मऽज्जियवसगस्स जंतुणो किं थ रुणेणं ? ॥ १२७ ॥
सव्वस्स एस मच्चू विओयकरणम्मि पच्चलो धणियं । संजोयं ण उ णो कुणइ पालणं पावपरिणामो ॥ १२८ ॥
दुक्खं अवणेइ फुडं राया जो तस्स गोयरे पडइ । एसा उण देवेहिं वि ण तीरए णिययमवणेउं” ॥ १२९ ॥
इय एवमाइ बहुयं भणमाणं चक्कवट्ठिणं विप्पो । पडिभणइ सच्चमेयं भरहहिव ! जं तुमे कहियं ॥ १३० ॥
णाऊण सव्वमेयं णरवइ ! संसारविलसियमसारं । सोयं णऽरिहसि काउं जमहं साहेमि तं देव ! ॥ १३१ ॥
एयं कह सद्धेयं सांहिप्पंतं मए वि णरणाह ! । अहवा तं णत्थि चिय संसारे जं न संपडइ ॥ १३२ ॥
हय-गयवर-वररइसंजुया वि ते चेय तुम्ह णरणाह ! । पुत्ता जुगवं पत्ता पंचत्तं विहिणिओएणं ॥ १३३ ॥

एत्थंतरम्मि सामन्त-महासामन्त-मन्तिपमुहा महामंतिणो अण्णे य कुमारसण्णवत्तिणो पादुया पच्छाइयउत्तिमंगा विमणदुम्मणा भग्गमच्छरुच्छाहा अकयसरीरपडिकम्मा चिंताभरसीयंतदेहा किंकायव्वमूढा पविट्ठा राइणो अत्थाइयामंडवं ।
पणमिऊण य रायं जहारिहं उवविट्ठा चलणऽन्तिए । तओ राया अणासंकणीयं असंभावियउच्चं तं वयणमायणिऊण, दट्ठूण य कुमारपरिवारं दुम्मणं थंभिउ व्व लिहिओ व्व मूढो व्व संजायमुच्छागमो व्व चरडिउ व्व णिच्चलणयणो पडक्खणं पडिव-

जंतो सुण्णत्तणं भणिओ बंभणेणं जहा-देव ! पाययपुरिसो व्व अवीयपरमत्थो व्व णीओ व्व अमुणियसंसारसहावो व्व किमेवमवत्थिओ ? संसारे णिवसंताण केत्थियं एयं ? ता पुच्छमु को एस वुत्तंतो जेण पुत्ताण चेव सट्ठिसहस्सा बलमज्झ-यारम्मि ठिया वणदवेणेव हयकयन्तेण दड्ढा ? ता महन्तमेयमच्छरियं पुच्छउ महाराओ । तओ तमायण्णिऊण विमुक्क-पाडुयहाहारवं कंदन्तअंतेउरजणं रोयन्तपरियणं विलवन्तवारविलासिणिसमूहं मुच्छिज्जन्तकुमारमायरं विरसन्तकंचुडिणियरं धाहावैतपडिहारसमूहं ताडिज्जन्तविलासिणियणहरुच्छंभं तुट्ठंतहारं वियलंतरसणं गलंतणेउरं पडन्तकडयं भिज्जन्तवलयं तोडिज्जंतसिरोरुहं मुमुमूरिज्जंतअंगयं मुज्जंतवावण-खुज्जयं समुच्छलियगुरुदाहारवुच्छलियपडिरवभरियदसदिसं भरहाहिवो सबलवाहणो पाययपुरिसो व्व विलविउमादत्तो, कहं ?—

हा हा अहो ! अकज्जं जं मज्झ सुया हयास ! रे दिव्व ! । सव्वे वि पदीवा इव दुण्णायपवणेण विज्झविया ॥ १३४ ॥

किं तेसिं समयं चिय आउणिबंधो ? उयाहु हयदिव्व ! । किमकालमरणसंकालुयत्तणं तुज्झ वीसरियं ? ॥ १३५ ॥

एकम्मि वि मज्झ सुयम्मि तुज्झ हयपण्णागाऽहिव ! ण जाया । करुणा णिकरुण ! कहं सव्वे चिय जेण णिट्ठविया ? ॥ १३६ ॥

दट्ठण सयलरयणाणि णवर रयणरहितो उवाअअ । तुहेहिं वि सह पुत्ता ण रक्खिया दुट्ठभुयगाओ ? ॥ १३७ ॥

सेणावइ ! तुज्झ बलं देवाण वि पचलं रणमुहम्मि । तं कत्थ गयं संपइ अइविसमे मह सुयाऽवसरे ? ॥ १३८ ॥

किं ण कैया चिय तइया संती तुमए पुरोहिय ! विसिद्धा ? । किं रक्खा ण कय चिय वइहइ ! तुमए वि पुत्ताण ? ॥ १३९ ॥

गयवइ ! तुमं पि कह णिप्फुरो व्व जाओ सि मह सुयावसरे ? । णागो समुज्जलंतो किं णागेणावि ण हु णिहओ ? ॥ १४० ॥

पवणजवेण वि तए आसरयण ! णिव्वाहिया कह ण पुत्ता ? । किं कागणिरयण ! तए ण पडिप्फुडिओ विसहरऽग्गी ॥ १४१ ॥

किं किं ण छिण्णमहिणो सीसं तुमए वि खग्गा ! तव्वेलं ? । दंड ! तुमाहितो चिय एस अणत्थो समुप्पण्णो ॥ १४२ ॥

किं चम्मरयण ! तुमए ण छाइओ विसमविसहरो तइया ? । किं छत्त ! परित्ताणं सुयाण ण तए समायरियं ? ॥ १४३ ॥

महिर्विंवा णिग्गायमेत्तविसमणयणग्गिसीसमहिवइणो । किं चक्क ! तइ ण छिण्णं जेण सुया मज्झ णिट्ठविया ? ॥ १४४ ॥

एवं च रयणाणि गरहन्तं विलवन्तं च भरहाहिवं बम्भणो भणइ-किं महाराय ! संपयमेवमेवाऽणुसासेतो अम्हारिसाण वि अणुसासणिज्जो जाओ ? , अवि य—

परवसणम्मि सुहेणं संसाराणिचयं कहइ लोओ । णियबंधुयणविणान्ते सव्वस्स चलंति बुद्धीओ ॥ १४५ ॥

धी ! संसारो, जहियं उवइसइ जणो परस्स वसणम्मि । सो चिय तव्वेलं चिय रुयइ संकरुणं रुयावैतो ॥ १४६ ॥

तुम्हारिसा वि पुरिसा जइ [? य] णिसुम्मंति दड्ढसोएणं । ता कत्थ थिरं होही धीरत्तमणिदियं भुवणे ? ॥ १४७ ॥

किं पम्हुट्ठो सि तुमं जं संपइमेव तइ समाइट्ठं ? । ‘हयविहिवसगेण जए जह सुयसोओ ण कायव्वो’ ॥ १४८ ॥

एक्कस्स वि सुयरयणस्स मरणदुक्खं तु सहिउमसमत्थो । किं पुण सट्ठिसहस्साण सज्जमेयं महाराय ! ? ॥ १४९ ॥

किंतु महावसणेणं णिचं णिव्वडइ सत्तगुणसारो । वज्जणिवाए वि पडिच्छिरस्स गिरिणो व्व माहप्पं ॥ १५० ॥

वसणम्मि ऊसवम्मि य एक्कसहावा हवन्ति सप्पुरिसा । जारिसओ चिय उयए अत्थमणे तारिसो सूरु ॥ १५१ ॥

सप्पुरिसि चिय वसणं सहन्ति गरुयं विणिग्गायपयावा । धरणि चिय सहइ जए वज्जणिवायं ण उण तंतू ॥ १५२ ॥

‘होइ गरुयाण वसणं ण उणो इयराण’ सुप्पसिद्धमिणं । ससि-सूर चिय वेप्पंति राहुणा ण उण ताराओ ॥ १५३ ॥

सप्पुरिसि चिय णिव्वडइ आचया ण उण पययपुरिसम्मि । लक्खिज्जइ मल्लिणं ससहरम्मि ण उणो विडप्पम्मि ॥ १५४ ॥

कुणइ वियारं कालो वि णेय पुरिसाण गुणमहग्गाण । सिसिरत्तणं ण सिसिरो वि कुणइ जलणस्स पहवन्तो ॥ १५५ ॥

१ जविहवपरमत्थो=अवीयपरमत्थो, अविवितपरमार्थः । २ कय जे सु । ३ तए न च पडिखलितो जे । ४ विवरणं जे सु । ५ सबलुणं रुयावैतो जे । ६ सच्चमेयं जे सु । ७ उदए जे ।

वसणम्मि समावडिप पयइं ण हु कह वि सुपुरिसो मुयइ । राहुमुहगहियमुको वि तवइ सरो धरावीढं ॥ १५६ ॥
 इय मुणिऊण महायस ! संसारं विरसदुग्गममसारं । चइऊण सोयपसरं धीरा ! धीरत्तणमुवेहि ॥ १५७ ॥
 तुम्हारिसाण वरपहु ! सुमुणियसत्थऽत्थवित्थरऽत्थाण । मोत्तूण गियविवेयं को अण्णो देउ उवएसं ? ॥ १५८ ॥

इय एवं भणिऊणं वंभणेण भणिओ महामन्ती जहा—साहसु जहट्टियं वुत्तंतं मारायस्स । तयणंतं च सुवुद्धिणा
 उट्ठिऊण विण्णवियं जहा—“देव ! सुणसु विण्णत्तियं” ति भणिऊण साहियं जहट्टियं गिरवसेसं जहा अट्ठावयस्स स्वया
 खाइया, जहा य गंगा पवाहिया, जहा रूसिऊण भुयंगहिबइणा णयणऽग्गिगा दड्ढा सेंट्ठि पि सहस्सा तुम्ह पुत्ताणं,
 ता महाराय ! तत्थ ण वलं, ण आउहं, ण मन्तो, ण तन्तो, ण विज्जाइयं अण्णं पि किंपि पवइ च्चि, एवं च ववत्थिप
 जैमम्हेहि कायव्वं तमाइसउ देवो, जओ देव ! ण जुत्तमम्हाणमेरिसं साहिउं । ण हि मरणमन्तरेणमम्हाणं सुद्धी होइ च्चि ।
 ता केण उण मरणेणमेस कलंको समोसरइ ? विचारिऊण सयमेव देवो समाइसउ । देवस्स उण सोओ ण काउं जुत्तो,
 जओ—

समवत्ती एस जमो, एसस्स ण वल्लहो जए कोइ । वेसो वि गत्थि सुंपुरिस ! सदेव-मणुयामुरे लोए ॥ १५९ ॥
 णावेक्खइ एस वलं, ण दुव्वलं, णेय ईसरमैणड्ढं । ण य विउसं, ण य मुक्खं, ण य सयणजुयं, ण एगार्गि ॥ १६० ॥
 ण जुवाणं, ण य वालं, ण परिणयं, णेय मज्झिमं, ण खलं । ण य सज्जणमवि मुंचइ पावमई रोइपरिणामो ॥ १६१ ॥
 संपज्जन्तसमीहियकज्जाण वि एस सयलदेवाण । अवहरइ जीवियं, माणुसेहिं किं कीरइ इमस्स ? ॥ १६२ ॥
 विहिणो वसेण वट्ठंति देव ! देवा वि देवलोयम्मि । ‘अमर’ च्चि णाममेत्तेण, जेण आउक्खयमुवेति ॥ १६३ ॥
 विहडन्ति चंडमारुपगोल्लिया गज्जिऊण घणिवहा । उज्जोविऊण णासइ तव्वेलं चेव विज्जुलया ॥ १६४ ॥
 मुरवइचावं वियलइ खणमेत्तं भूसिऊण गयणयलं । संघा वि तक्खणं चिय फिट्ठइ कालाणुभावेण ॥ १६५ ॥
 पयडेइ ससहरो चिय अणिचयं तिहुयणस्स तदियहं । वोलेति जस्स दिव्वा एक्कसरुवेण ण हु दो वि ॥ १६६ ॥
 मुरस्स वि धरणि-गहंतरालविप्फुरियगरुयतेयस्स । एक्कदिणे चिय गिययं उदय-ऽत्थर्मणाइं जायंति ॥ १६७ ॥
 इय जाणिऊण सयलं संसारमणिचयाए बहु ! गहियं । उवसमसु मुंचसु धुवं सोयं भवकारणमणिट्ठं ॥ १६८ ॥
 किंच—

जो एस देव ! सोओ सो सोओ सयलपावपमरस्स । अबुहेहिं सयाऽऽयरिओ परिहरिओ पंडियजणेणं ॥ १६९ ॥
 वाहीण परं ठाणं, मूलं अरतीए, सोक्खपडिक्खो । अण्णाणपढमच्चिंधं णरयदुवारं गुणविणासो ॥ १७० ॥
 बाहेइ सयलकज्जाइं एस, परिहरइ उत्तमंविवेयं । धम्म-ऽत्थ-काम-मोक्खाण विग्घडेऊ महापावो ॥ १७१ ॥
 अवहरइ ठिइं, परिहरइ पोरुसं, चयइ कुलववत्थम्भं । सोयमहागहगहिओ पुरिसो किं किं ण आयरइ ? ॥ १७२ ॥
 धीरत्तणं पि छट्ठिन्ति, देन्ति दुक्खस्स णवरमप्पाणं । कज्जा-ऽकज्जं ण मुणंति सोयगहिया जए पुरिसा ॥ १७३ ॥
 ते णवर महापुरिसा जे य अणज्जेण सोयपसरेण । ण वसीकया कयाइ वि जाणियसंसारपरमत्था ॥ १७४ ॥
 सोएण समं ण वसंति देव ! लच्छी जसो य किच्ची य । सोक्खं च रई लीला विसएसु मणो गिरावरणो ॥ १७५ ॥
 इय चयसु सोयपसरं, णरवति ! चिन्तेसु सयलकम्माइं । सोयावणेण तए भरहं दीणत्तणमुवेइ” ॥ १७६ ॥

एवं सुवहुमणुसासिऊण मन्तिणा पुणो भणियं जहा—“देव !

तं गत्थि जं ण जाणसि तिलतुसमेत्तं” पि तिहुयणे देव ! तह वि किल किं पि भणसि ‘सोयावत्थं ति’ कलिऊण ॥ १७७ ॥

खरपवणपहयकुवल्लयदलजललवतरलचंचलतरेसु । संजोय-जीय-जोव्वण-धणलव-णेहेसु को सोओ ?” ॥ १७८ ॥

१ ‘सो हणइ जे । २ सट्ठिम्पि स्र । ३ जमम्हेयं का’ स्र । ४ सुपुरिस । जे । ५ ‘मणइठं जे स्र । ६ जुवाणं जे । ७ दिवइ
 जे । ८ ‘मणादि स्र । ९ ‘विधेय स्र । १० ‘मेत्तम्पि स्र ।

तओ तमायणिऊण भणियं भरहाहिवेणं—“सच्चमेयं जं तुम्हेहिं वुत्तं । असारो चेव एस संसारो, जओ सुमिण-
यसमा वंधुसमागमा, गिरिणइपूरसमाणं जोव्वणं, छायासमा लच्छी, कुसग्गजललवच्चलं जीवियं, सक्कावसच्छहो
पेमाणुबंधो, माइंदजालसण्हो कुहुम्बसण्णिवासो, गयकण्णचंचलो विहवसारो । ता जाव ण उत्थरइ जरपिसाइया, जाव
ण वसीकरेइ मच्चुबंधालो, जाव य पपत्तिरला ण दंसइ विचारं रायलच्छी, जाव य ण परिहायइ इंदियप्पसरो, जाव ण
छट्टेति विसया, जाव य वसे वट्टइ सरीरयं, ताव य विवेइणा चइऊण सयलमण्णं अणवरयं कायव्वमप्पहियं । ण य
धम्मऽणुट्ठाणं मोत्तूण अण्णं अत्थि अप्पहियं, जओ णिग्गुणो एस संसारो, समासण्णाओ आवईओ, सयासण्हिओ मच्चू,
दारुणो विसयपरिणामो, विसमा कम्मपरिणई, घोराओ णरयवियणाओ । अपरिचत्तविसयाणं च पाणिणं अवस्सं णरय-ति-
रिएसु वासो, णिस्संगाणं च सग्गा-ऽपवग्गेसु । सव्वस्स वि अवस्संभावी विओओ रायलच्छीए विसएहि य । ता जाव ण
छट्टेति ता वरं मुक्काइं एयाइं । परकीएसु य एसु को पडिबंधो ? । ता ठविऊण भागीरहं रज्जे करेमि महापुरिससेवियं
धम्मं, चएमि अथिरं असारं अपरिचयं रायलच्छि, जाव अम्हे वि अखलियगतिपसरो ण संभालेति मच्चू” ।

इय एवं जाव वेरग्गमग्गमणुसरंतो णिव्विण्णसंसारवासो राया अप्पाणमणुसासेंतो संसारसहावं, पणइवग्गस्स ‘तुम्हाणं
पि वयगहणेणं चेव सोही होहि’ चि भणंतो जाव चिट्ठइ ताव अट्ठठावयसमासण्णजणा हाहारवं करेता संपत्ता रायंगणं ।
भणियं च तेहिं—महाराय ! परिच्चायाहि परिच्चायाहि । तओ तमायणिऊण भणियं राइणा—किमेयं ? ति । तयणंतरं च पडिहा-
रेहिं पवेसिया गामलोया । णिवेइयं च तेहिं पायवडणुट्ठिएहिं जहा—देव ! जा सा खाइया कुमारेहिं भरिया उदयस्स तमुदयं
तत्थ अमायन्तं पासेसु विसप्पिउमारद्धं, भरिऊण खाइयं थलपहेसु वियंभिउं पयट्ठं, तेण य वियम्भमाणेणं खाइयाऽऽसण्णगाम-
णगराइ सव्वमाउलीकयं, तओ ‘तं देवो चेव परं णिवारेइ, ण अण्णो’ चि कलिऊण आगया देवचलणन्तियं, अणिवारिज्जंतं
च बहुं विणासेइ, तओ दयं काऊण तं णिवारेउ देवो चि । तओ पुत्तपुत्तस्स भागीरहस्स दिण्णो आपसो भरहाहिवेण
जहा—वच्छ ! जणाणमाउराणं करेहि परिच्चाणं, दंडरयणेणं णेहि जलोहं सायरं, रक्खंतो णगर-णिवेमुज्जाण-दीहिया-पुक्ख-
रणाइयं भवणवासीणं च भवणाणि, दिट्ठो य पमायाऽऽचरणविवागो वच्छेणं, तओ सव्वकज्जेसु अप्पमाइणा होयव्वं, देव-
दाणविदाणं उवरोहपरेण होयव्वं ति । एवमाइ बहुं अणुसासिऊण पेसिओ भागीरहो । णिग्गओ य भरहाहिवं पणमि-
ऊण, ‘महापसायं’ च भणिऊण, पडिच्छिऊण य आणत्तियं सिरेणं ति । पुणो विणयगाहणत्थं सदाविओ सयरेणं भागीर-
हो । पविट्ठो रायसयासं । पुणो पणमिऊण उवविट्ठो चलणन्तिए । भणिओ य सयरेण जहा—“ते वच्छ ! मुकुलप्पत्ती पट्ट-
त्तणं विहवो अहिणवजोव्वणं, अण्णससरिसा रूवसंपया, कलामु पगरिसो, सत्थऽत्थपारगत्तणं, आउहेसु कुसलत्तणं, दढपहा-
रित्तं, अणुवमं वीरियं, अण्णमरिसं पोरुसं, णिग्गयपयावत्तणं, एयाणमेगं पि उम्मग्गपवत्तणसमत्थं, किं पुण समवाओ ? ।
एयाणि ते सव्वाणि समुइयाणि । जहा एएहिं ण सुट्ठ वसीकीरसि तहा जइयव्वं । अवि य—

उत्तमकुलप्पसुई, रूवं रमणीण हिअयमुकुमालं । सत्थऽत्थखेयखिण्णा मती य, भुयव्वलमलं वच्छ ! ॥ १७९ ॥
तिहुयणसलाहणिज्जा लच्छी, आणा य णरसिरुव्वूदा । एयाणेकेकं पि हु सुदुज्जयं, किं पुण समूहो ? ॥ १८० ॥
सुर-ऽग्गिरयणतेयाऽविणिज्जिओ दूरवियरियपयावो । जोव्वणतमो वियम्भइ मोहसहाओ धरणिमग्गे ॥ १८१ ॥
जो उण सयलणरीसरपरिणामाऽसज्झदारुणो भुवणे । लच्छीमओ महायस ! पुरिसं लहुएइ सयरहं ॥ १८२ ॥
पुव्वकयकम्मपरिणइवसेण विहवो कुलं वलं रूवं । एयाइं कह वि जायन्ति जइ वि गुणिणो गुणा ण उणो ॥ १८३ ॥
चइऊण गरुदप्पं विणयं सिक्खेसु, णम्मयं भयसु । विणओणयाण पुत्तय ! जायंति गुणा महग्गविया ॥ १८४ ॥
विणयुज्जुयाण किच्ची विउसाऽऽणणपहयसदजयपडहो । धम्मो अत्थो कामो कलाओ विज्जा य विणयाओ ॥ १८५ ॥
विणएण लब्भइ सिरी, लद्धा वि पलाइ दुव्विणीयाण । णीसेसगुणाहाणं विणओ चिय जीवलोयम्मि ॥ १८६ ॥
इंदियजएण विणओ, विणएण गुरु, तओ वि सत्थऽत्थो । तत्तो वि गुरुविवेओ कज्जा-ऽकज्जेसु होइ फुडो ॥ १८७ ॥
होन्ति विवेएण गुणा भुवणंभितरविदत्तमाहप्पा । गुणवन्तयम्मि जायइ जणाणुराओ असामण्णो ॥ १८८ ॥

तं णस्वि जं ण सिज्झइ जणाणुराएण तिहुयणे सयले । तम्हा सिक्खसु विणयं कल्लणपरंपरामूलं ॥ १८९ ॥

एवमादियमणुसासिऊण भागीरहं, निदिऊण लेच्छी, पसंसिऊण विणयं, कहिऊण पमायाचरणविवागं, भरहाहि-
वेण पेसिओ भागीरहो समप्पिऊण दंडरयणं, भणिओ य-एएण दंडरयणेण काऊण पचाहं णेहि जलसंधायं
समुदं ति ।

तओ काऊण पणामं पडिच्छिऊण आगं णीसरिओ भागीरहो । पत्तो य अणवरयपयाणएहि अट्ठावयं । पणमिओ
दूरत्थेण चेव अट्ठावओ । दाऊण गागाण बलिबिहाणाइयमणुजाणाविऊण गंगं दंडं गहेऊण कओ जलपवाहो । तओ
दंडखायाणुसारेण पयट्ठो खाइयाभरिउच्चरिओ गंगानलपवाहो सायरामिमुहं । तओ सा गंगा हिमवंतकुलपव्वयाओ
पस्सिया, रेयकूळमिहिं निदिऊण पिण्यस, संभ्रमायणमुलंघिऊण पयट्ठा दंडकयपदेण भागीरहेण सायरं पराणिया ।
दट्ठण य अट्ठिसमूहं गागकोवऽग्निदइसेसं भागीरहो गंगानलपवाहेण सायरं पराणेऊण चित्तेइ-अहो ! मए सोहणं
कयं जं मयसरीराणं अट्ठीणि गंगापवाहेण सायरं पराणियाणि, अण्णहा दंक-कागाइएहिं चलण-चंचूपहारेहिं असुइट्ठाणेसु
बहुएसु धोलन्ताइं लहुत्तणं पियामहस्स संपाडेति । एवं च चिंतयंतो तण्णिवासिणा जणेणं जलावायविमुक्केणाऽभिणंदिओ ।

गंगा पदमं जण्हुकुमारेणं आगिय चि जण्हवी, तओ भागीरहेण समुदं पाविय चि भागीरही भणति । सयर-
सुयअट्ठिपवाहपसिद्धीए य लोओ तह चेव अट्ठियाइं पवाहेइ । सुसायुसलिलत्तणेण य सेवणिज्जा बहुयाणै जाय चि ।

एवं च भागीरहो पाविऊण सायरं गंगानलपव्वारं, णिव्वविऊण अट्ठावयपव्वयाऽऽसण्णलोयं, काऊण गंगाए
लोयपसिद्धिं, समागओ सयरपियामहस्स सयासं । पणमिओ य भरहाहिवो । तेण वि य जाणिऊण रज्जपालणसहं वसुं-
धराधरणसमत्थं च भागीरहं, मंतिऊण सामन्त-महासामंतेहिं सद्धिं, अहिसित्तो रज्जे भागीरहो । अप्पणा य मुणिऊण
संसारासारत्तणं, अवलोइऊण कम्माण विसमत्तणं, बुज्झिऊण कट्टयविवागत्तणं विसयाणं, जाणिऊण अथिरत्तणं रायल-
च्छीए, सुट्ठियायरियसयासे कुमारसहगयमहासामन्तेहिं सद्धिं गहिया णीसेसकम्मणिज्जरणभूया मोक्खणपरपउणपयवी
कुगइगमणमग्गाला सग्गारुहणसोवाणपंती मुकुलुप्पत्तिलया अमोहवीयभूया पव्वज्जा । अहिज्जियाणि वारस वि
अंगाणि । दसविहं च समणधम्मं अब्भसिऊण तिगुत्तिगुत्तो पंचहिं समीहिं समिओ जहुत्तविहारेण विहरिऊण, उप्पाडिऊण
तीयाऽग्गागयपयत्थुअसाणं सासयमेगविहं केवलवरणाण-दंसणसरूवं दिव्वं णाणं, णाऊण य आउयसमहिआइं भवोपग्गा-
हीणि वेयणीय-णाम-गोत्ताइं, तओ गंतूण समुग्घायं आउअसमाणीकाऊण वेयणीयादीणि कम्माणि सेलेसीविहाणेणं अजर-
अमर-अणावाह-अणंतसोक्खं मोक्खं पत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिण वीयचक्रवर्तिणो सगराऽहिहाणस्स चरियं समत्तं ॥ ४ ॥

[५ संभवतित्थयरचरियं]



उपज्जन्ति पयाणं पुण्णेहिं महीए के वि सप्पुरिसा । कप्पतरुणोंकुरा इव हियइच्छियदिष्णफलणियरा ॥ १ ॥

अत्थि जम्बुदीवदाहिणडढभरहमज्झखंडम्मि जणमण-णयणहारिणी फरिहासमेया महासालोक्सोहिया तुंगरयण-
भवणमालालकिया सुविहत्तितिय-चउक्क-चच्चरा पणट्टसयलोवदवा, अल्लदप्पसरेहिं कुवुरिसेहिं परिहरिया, सया रयणप्पहोहामि-
यकालवक्खतिमिरपहावत्तणओ कुसीलाहिं दुरुज्झिया, जुवाणरूवोहामियमयरद्धयाऽल्लदप्पसरा, अप्पचावयासेहिं दोसेहिं
अण्णत्थ सावयासेहिं वज्झिया, सयल्लेणायरवेप्पमाणेण गुणगणेणाऽहिद्विया सावत्थी णाम णयरी । तत्थ जहत्थणामो
विजियारी णाम णरवई सया मुईओ य परिवसइ सयल्लमहिमंडलस्स परिपालणसमत्थो ।

तस्स य पुंहुविसवत्ती सेणा णामेण रायवरमहिती । रूव-गुणाऽऽवज्जियसयल्लपरियणा भत्तुणो दइया ॥ २ ॥

ताण अण्णोण्णाणुरायवड्ढन्तपेम-वीसम्म-पणयाणं रायसिरीमणुहवंताण वचन्ति दियहा, सरति संसारो ।

इओ य धायइसंडे दीवे एरवण वासे खेमपुरी णाम णयरी । विउलवाहणो णाम राया । तेण महादुब्भिवक्खम्मि
सवालवुड्डस्स संघस्स असण्णाइणा उवग्गहं काऊणं उवज्जियं तित्थयरणामकम्मं । पुणो मुणिऊणाऽसारं संसारं, गयक्कण-
चंचलं जाणिऊण रायलच्छि, उज्झिऊण भोए, सयंपभायरियसमीवे काऊण महापुरिससेवियं कम्मणिज्जरणहेउभूयं
पव्वज्जं, पोसिऊण वीसाए अण्णयरहेहिं ठाणेहिं तित्थयरणामकम्मं आययंअवसाणे य आणयक्कप्पम्मि उववण्णो ।

तत्थ य उववुंजिऊण भोए आयमणुवालिऊण फग्गुणसुद्धऽट्ठमीए मिगसिरणक्खत्तेण चुओ सेणाए कुच्छिसि
समुववण्णो । तीए चेव रयणीए सेणा महादेवी मुहपमुत्ता पासिऊण गयादिए चोदस महामुमिणे विवुद्धा समाणा
साहेइ जहकमं दइयस्स । विजियारिणा य समासासिया जहा-‘पिए !

गन्धम्मि तुज्ज पसयच्छि ! पेच्छणिज्जो सुराण वि महप्पा । होही सो णवर मुओ जस्स गुणा जयमद्दग्वविया’ ॥ ३ ॥

वड्ढन्तयम्मि गन्धम्मि जम्मि भवणम्मि वरणिहाणाणं । रट्ठम्मि पुरवरण य मुहाण तह संभवो जाओ ॥ ४ ॥

तओ णवसु मामेसु पडिपुण्णेसु अद्धट्ठमेसु राईदिणसु मग्गसिरसुद्धऽट्ठमीए मिगसिरणक्खत्ते मुहंमुहेणं सयल्लक्खणो-
ववेयं सेणा महादेवी दारयं पसविया । चलियासणाएण य सोहम्माहिवाइणा पुव्वकमेण कओ मेरुसिहरम्मि जम्माहि-
सेओ महया विच्छट्ठेणं ति ।

काऊण य अहिसेयं देविंदो चउणिकायपरियरिओ । कुंडलजुवलाऽऽहरियं पच्छा जणणीए अप्पेइ ॥ ५ ॥

पेच्छइ य तो जिणिंदं णिहाविरमम्मि सा अलंकरियं । तुट्ठा साहइ पइणो रूवा-ऽलंकारविम्हइया ॥ ६ ॥

णिज्जियसयल्लसुरा-ऽसुर-णर-विज्जाहरमणोहरं रूवं । दट्ठण परं तोसं समागओ जिणवरस्स पिया ॥ ७ ॥

तओ पसत्थे तिहि-णक्खत्ते गुणणिक्कणं भगवओ णामं कुणति । ‘गन्धम्मि जिणिंदे णिहाणाइयं बहुयं संभूयं, जाय-
म्मि य रज्जस्स सयल्लस्स वि मुहं संभूयं’ ति कलिऊण संभवाहिहाणं कुणति सामिणो । कयाइं जहोचियाइं करणिज्जाइं ।

१ ‘लज्जाऽऽवर’ सू । २ ‘ओ परि’ सू । ३ ‘पुहवीसवत्ती सेणा णाम राय’ जे सू । ४ ‘णाइव’ जे । ५ ‘यसा(स्ता)वसाणे सू ।
६ ‘मणोरमं’ जे ।

अह भगवं पि पंचधाइसमेओ वडिहउं पयत्तो । तिहि य णाणेहि जाणइ जहिद्विए सव्वपयत्थे तहा वि 'लोयट्ठी ण लंघणीय' ति काऊण कलायरियं बहुमण्णेइ । परिणाविओ पिउणा ख्व-कुलोववेयं दारियं ।

भगवं पि सम्भवजिणो अजियस्सामिणो सागरोवमाणं तीसेहि लक्खेहि कोडीणमतिगएहि समुप्पण्णो । तस्स य आउयं सट्ठि पुव्वलक्खा । तस्स य पंचदस पुव्वलक्खे कुमारभावमणुपालेतस्स पिउणा रज्जं दाऊण सकज्जमणुट्ठियं । तओ भगवया 'लोगट्ठीमणुपालेन्तेण चोयालीसं पुव्वलक्खे चउरंगहिए रज्जं पालिऊण समुइण्णतित्थयरणामकम्मणुणा लोयंति-यपडिवोहिणं दिण्णसंवच्छरमहादाणेणं लोयहियत्थं भग्गसिरपुण्णिमाए मिगसिरसंमीवचारिणि ससहरे कम्मसेलवज्जासणि-भूया सयलमुरा-अमुर-गरिदसमक्खं छट्ठभत्तेणं णरवतिसहस्ससमेणं गहिया पव्वज्जा सहसंबवणुज्जाणम्मि पच्छिमैपोरसीए ।

तओ भगवं गहियमूणव्वओ । जहुत्तविहारेणं चोदस वासाइं विहरिऊण कत्थियबहुलपंचमीए मिगसिरजोएणं सरलपाय-वस्स अहे उप्पाडियं दिव्वं णाणं । केरिसं ?—

एगं कप्पियभेयमप्पडिहयं सव्वणुच्चिंधं फुडं, सव्वेसिं च तमाण णासणपरं लोयाण जं लोयणं ।

जायं पासति वुज्झती य सययं णाणाविहाणि दधुयं, उप्पाय-ट्ठि-णासवंति विउलं दव्वाणि जं केवलं ॥ ८ ॥

तयणंतरं च चलियं सीहासणं सोहम्माहिवइणो । संखुद्वेण पउंजिओ ओही । विण्णायं जहा-भरहवासम्मि संभवजिणिंदस्स उप्पण्णं दिव्वं णाणं । तओ दंटापओएणं योहिया मुरा । समागओ य ते वेत्तूणं भगवओ समीवं । विरइयं समोसरणं, कइं ? ति—

तत्थ चाउकुमारे, जोयणंतरं भूमिपएसे अवणियं तण-सक्काराइयं, कओ य समो भूमिभागो । पुणो मेहकुमारेहि मुरभिणा सलिलेण पसमिओ रयुग्घाओ, मुक्का य पंचवण्विंटट्ठियकुसुमवुट्ठी । विरइयं कलधोय-चामीयर-रयणमयं वरपागार-तियं, अंतो य चउम्मुहं सीहासणं । बाहिं च महंतो धम्मज्झओ धम्मवरचकं च । तओ भयवं पविसइ पुव्वदुवारेणं तियसिंद-पडिहारपडिहयसम्महेणं, पयाहिणीकाऊण सीहासणं, भणिऊण य 'णमो तिस्थरस्स' उवविसइ पुव्वाभिमुहो । सेसामु य दिसामु तप्पडिरूवाणि हवन्ति तिण्णि रूवाणि । पव्वावियं भगवया दुरुत्तरं सयं गणहराणं । तओ तयणंतरं च पुव्व-दुवारेण पविसिऊण पुव्वदाहिणाए अगेईए दिसाय पढमगणहरो केवल-मणपज्जव-ओहिणाणिणो चोदसपुव्वधरा सेससाह, तेसिं पिट्ठओ कप्पवासिदेवीओ साहुणीओ य ट्टियाओ । पुणो दाहिणदारेण पविसिऊण दाहिणपच्छिमाए णेरइयदिसाए भवणवइ-जोइसिय-वाणमन्तरमुराणं देवीओ धम्मकहाखित्तहिययाओ ठियाओ । पुंणो अवरदुवारेण पविसि-ऊण पच्छिमुत्तराए वायव्वाए दिसाए भवणवइ-जोइस-वाणमन्तरदेवा भगवओ वाणिमुइयहियया चिट्ठंति । तओ उत्तर-दारेण पविसिऊण पुव्वुत्तराए ईसाणीए दिसाए कप्पवासिदेवा णरगणेहि णारीजणेण य धम्मसवणणिमित्तं ठाणमभिगय ति । एवं चउमु विदिसामु तियं तियं पइट्ठियं ।

तओ भगवया पत्थुया धम्मकहा, जहा जीवा मिच्छत्ता-उविरति-पमाय-कसाय-जोगेहि बंधिऊण अट्ठविहं कम्मसंघायं हिंडंति चाउरंतं संसारकन्तारं, जहा य सम्मत्त-णाण-दंसण-चरणेहि गच्छन्ति गिरावाहलक्खणलक्खियं मोक्खं ति । तमा-यणिऊण भणियं पढमगणहरेणं-भयवं ! केरिसं मिच्छत्ताइयं संसारकारणं ? ति । तओ भयवया भणियं—

तत्तेसु मिच्छत्ताभिणिवेसो मिच्छत्तं, तच्च अभिगगहिया-उणभिगगहियभेयभिण्णं, मिच्छत्तपुग्गलोदयजणिओ चित्त-परिणामो । कागमंसाइएसु विरइपरिणामाभावो अविरती, अपच्चक्खवाणकसाओदयकसायजणिया चित्तपरिणई । पमाओ

१ लोयट्ठिइ=लोयट्ठी, लोकस्थितिरित्यर्थः । २ भगवा लो' सु । ३ लोमट्ठिइमं जे । ४ 'समीवे वा' सु । ५ पोरिसीए जे । ६ 'विहाणेणं चोदस वाससयाइं वि' सु । ७ चउसमाण नासणयरं जे । ८ ओवणं जे सु । ९ 'रं पुव्वं' सु । १० पुण जे । ११ 'मुत्तरवायं' जे सु ।

पंचहा, तं जहा-मज्जपमओ दित्थयप्पणाओ देसाए विगहा णिहा । कसाया कोह-माण-माया-लोभा । जोगो तिहा-
[मणजोगो वडजोगो कायजोगो य ।] मणजोगो चउहा, तं जहा-सच्चमणजोगो असच्चमणजोगो सच्चा-ऽसच्चमणजोगो
असच्चा-ऽसच्चमणजोगो । एवं चिय वडजोगो वि सच्चाइओ चउहा । कायजोगो सत्तविहो, तं जहा-ओरालियकायजोगो
ओरालियमिस्सकायजोगो वेउव्वियकायजोगो वेउव्वियमिस्सकायजोगो आहारगकायजोगो आहारगमिस्सकायजोगो
कम्मइयकायजोगो ति । एवं पण्णरसविहेणं जोगेणं मिच्छत्ताइवंधकारणसमेएणं जीवा वद्ध-पुट्ट-णिकाइयकैम्मं णिव्वत्तंति ।
एवं सामण्यपच्चयबंधो ।

विसेसबंधो उण एसो-णाणीण दंसणीण य पडणीययाए, तहा णाणंतराएणं दंसणंतराएण य, णाणोवघाएणं दंसणो-
वघाएण य, णाणस्स तह दंसणस्स य णाणीण दंसणीण य पओसयाए, णाण-दंसणणिहवणेण य भूयो भूयो कीरमाणेणं
णाणदंसणंतराइयाइं दुवे वि कम्माइं अचासणाए वंधइ । भूयाण णिरणुकंपो णिस्सील-व्वओ कोहणसीलो दाणज्झवसायरहिओ
गुरुपडणीओ असायावेयणिज्जं कम्मं समुच्चिणइ । एस एव विवरीयगुणकलिओ सायावेयणिज्जं कम्मं वंधइ । अरहंताणं
सिद्धाणं चेइयाणं तवस्सीणं सुयस्स गुरूणं साहूणं संघस्स पडणीययाए दंसणमोहणीयं कम्मं वंधइ, जस्स उदएणं अणंतं
संसारकन्तारं परियट्ठति ति । तिक्कसायुकडो बहुमोहपरिणओ राग-दोस-कसायसंजुओ चारित्तमोहणीयं कम्मं वंधइ दुवि-
हचरित्तगुणपाति । अचंतमिच्छाइट्ठी महारंभपरिग्गहो तिक्कलोहो णिस्सीलव्वओ पावमई महारोहपरिणामो णिरयायुयं
णिवंधइ । उम्मगादेसओ मग्गणासओ गूढहियओ मायावी ससल्लो तिरियाउयं णिवंधइ । पयतीए तणुकसाओ दाणरुत्ती
पयइभइओ सील-संजमविहूणो मज्झिमगुणेहि कलिओ मणुयाउयं णिवंधइ ति । बालतवेण अकामणिज्जराए अणुव्वय-
महव्वएहिं सम्मदंसणसमेओ जीवो देवाउयं कम्मं णिव्वत्तेति ति । मण-वयण-कायवंधो मायासीलो तिहिं गारवेहिं
पडिबद्धो अमुहणामकम्मं वंधइ ति । तप्पडिक्कखेण सुहं वंधइ ति । तित्थयर-वयण-गुरू-साहूणमवण्णवादी भाणयद्धो
जातीमयपरायणो परपरिभवणसीलो अत्तुकरिसणरूई णीयागोयं कम्मं वंधइ । तप्पडिक्कखसेवणपरायणाए उच्चागोयं कम्मं
समज्जिणति । पोणवहाइसु रओ सव्वस्स विग्घयारी लाहविग्घायहेउभूयं अंतरायं समज्जिणइ । तस्स पुण अट्ठपयारस्स
कम्म[स्स] वंधगा आउवंधकालम्म जीवा हवंति, अणया य आउयवज्जाणं सत्तहं कम्माणं वंधगा । मोहस्स बंधे ववगए
छन्विहबंधगा । केवल्लिणो उवसंतमोह खीणमोहा य एगविहबंधगा ।

एवं भगवया परुविऊण कम्मणियाणं, पडिबोहिऊण भवियकमलायरे, विहरिऊण भरहखेत्तं, जणिऊण जंतूण
सम्मत्तं, उवसामेऊण चरित्तमोहणीयं, आउयसेसमवगच्छिऊण संपत्तो सम्मेयसेलसिहरं । तत्थ य मासं पाओवगओ
सेलेसीविहाणेण खविऊण चत्तारि भवोपग्गाहीणि कम्माणि चेत्तस्स सुद्धपंचमीए मियसिरजोयजुचे मियंके समणसहस्स-
संजुओ अवावाहं सुहमपुपत्तो ति ।

ववगयभवजालो दुट्ठणट्ठाऽवबंधो, सयलजयसमगं पत्थिओ सुद्धभावो ।

विमलगरुयरुवं णाणमासज्जणन्तं, विगयसयलदेहो तक्खणेणं पि सिद्धो ॥ ९ ॥ ति

इति महापुरिसचरिए संभवतित्थयरचरियं सम्मत्तं ति ॥ ५ ॥

[६ अभिणंदणसामिचरियं]

संसारम्मि असारम्मि केइ ते णेवर होंति सप्पुरिसा । जाण परमत्थकज्जुज्जयाण जम्मो सलहणिज्जो ॥ १ ॥
अत्थि पुंहरिं मज्जे पुरी अओज्झ चि णाम विक्खाया । सुंदरतुलियसमग्गा लग्गा सग्गा-उपवग्गेसु ॥ २ ॥
अह वसति तीए लोओ विणयगुणसमज्जणेकसत्तहो । पढमाभासी सरलो पियंवओ णिग्गयपयावो ॥ ३ ॥

तत्थ णयरीए जहत्थणामो णराहिवो संवरो णाम । तस्स य मायारहिया सिद्धत्था णाम अग्गमहिंसी सयल्लगु-
णणिहाणं । ताण य रज्जमुहमणुहवन्ताण वचन्ति दियहा, सरइ संसारो ।

अण्णया य महादेवी महरिहे सयणीए सुहपमुत्ता रयणीए चरिमजामम्मि चोइस महामुमिणे पासिऊण विउद्धा
समाणी साहइ जहाविहिं दइयस्स । तेण वि य पुत्तजम्मेणाऽणुसासिया, तुद्धा य । तीए चेव रयणीए पुव्वभवऽज्जियतित्थ-
यरणामकम्मोदयमुहपरिणामो विजयविमाणाओ परहियकरणुज्जओ वइसाहमुद्धछट्टीए पुणव्वसुणक्खत्ते चुओ तियसिंदसो-
हियगव्वम्मि संभूओ । जणणीए पीडणत्तेत्तो संवड्हिओ । अट्ठंगेसु गज्जसु माप्पेसु भट्ठमेसु राइदिणसु माहस्स मुद्ध-
वीयाए पुणव्वसुणक्खत्ते उववण्णो जगगुरू । संभवजिणाओ य दसहिं कोडिलक्खेहिं गणहिं समुववण्णो ।

कओ अहिसेओ मुरिंदेण । 'भगवम्मि गव्वत्थे कुलं रज्जं णगरं अभिणंदइ' चि तेण जणणि-जणएहिं विचारिऊण
गुणनिष्फण्णं अभिणंदणो चि णामं कयं ।

संवड्हिओ य विहिणा कमेण तो जोव्वणं समणुपत्तो । भुंजइ य गामधम्मो कयदारपरिग्गहो भयवं ॥ ४ ॥
अद्धुट्ठधणुसैयाणि य उच्चत्तेणं ति सो महाभागो । निम्मलवरकणगल्लवी फुल्लुप्पलगंधणीसासो ॥ ५ ॥
अद्धत्तेरसलक्खा पुव्वाणऽभिणंदणे कुमारत्तं । छत्तीसा अट्ठं चिय अट्ठंगा चेव रज्जम्मि ॥ ६ ॥
तो भुंजिऊण भोए, रज्जं परिवालिऊण सो विहिणा । लोमंतिय-मागहधुट्ठकलयलो लेति चारित्तं ॥ ७ ॥
माहस्सं मुद्धवारसितिहीए समुरा-ऽमुरिंदपच्चक्खं । णिक्खमइ महाभागो सहसम्भवणम्मि उज्जाणे ॥ ८ ॥
अह चउणाणसमेओ छउमत्थो अट्ठदस य वासाइं । विहरन्तो संपत्तो पियालतरुणो महाछायं ॥ ९ ॥
तत्थट्ठियस्स गुरूणो ज्ञाणन्तरियाए वट्ठमाणस्स । ववगयकम्मचउक्कस्स केवलं अह समुप्पण्णं ॥ १० ॥
चलियाऽऽसणागणं य तियससमेणं वरमुरिंदेण । विरइज्जइ भत्तीए तिहुयणगुरूणो समोसरणं ॥ ११ ॥

पव्वावियं च भगवया सोल्लमुत्तरं सयं गणहराणं । पत्थुया धम्मकहा । बुज्झंति पाणिणो, छिज्झंति संसया, वियलइ
कम्मरासी जंतूणं । तओ अट्ठंगूणं पुव्वलक्खं पव्वज्जापरियायमणुपालिऊण, पंचासपुव्वलक्खे सव्वाउयमणुपालिऊण,
णाऊण आउयसेसमप्पणो पत्तो सम्मेयसेलसिहरं । तत्थ य मुहुभकिरियमप्पडिवातिज्झाणमणुपवेसिऊण पुणो उवरयकिरि-
यमणियट्ठियज्झाणविसेसमासाइऊण खविऊण भवोवग्गाहीणि सिद्धिमणुपत्तो चि ।

इति महापुरिसचरिए अभिणंदणसामिचरियं समत्तं ॥ ६ ॥

[७ सुमतिसामिचरियं]

उप्पज्जन्ति पयाणं पुण्णेहिं जणम्मि ते महासत्ता । जे गियजसेण भुवणं भरन्ति गिब्वियजियलोया ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे पुक्खलावईविजए संखउरं णाम णयरं गिब्वरमणिजं पमुइयजणावकिण्णं । तत्थ य राया विजयसेणाहिहाणो । तस्स सुदंसणा णाम सयलन्तेउरपहाणा अग्गमहिंसी । तस्स य तीए सह विसयमुह-
मणुहवन्तस्स दोगुंदुयदेवस्स विय गच्छंति दियहा, सरइ संसारो ।

अण्णया य कीलाणिमित्तं अप्पप्पणो विहवेणं उज्जाणम्मि गिग्गओ णयरलोओ । तीए य सुदंसणाए करेणुयारूढाए दिट्ठा तण्णयरनिवासिणो णंदिसेणस्स भज्जा सुलक्खणाहिहाणा अट्ठहिं वट्ठहिं परियरिया । पुच्छिया य तीए—का एस ? चि, कस्स वा भज्जा ? काओ वा एआओ कण्णगाओ जेहिं परियरिया ? । तओ परियाणिऊण कंचुइणा जहिट्ठियं साहियं जहा—सामिणि ! एसा णंदिसेणवणियस्स भज्जा सुलक्खणाहिहाणा, तीए दुवे पुत्ता, तेहि य चत्तारि चत्तारि एकेकेण य विवाहियाओ, तओ एयाहिं परियरिया जहाणुरूवं विसयमुहमणुहवइ । तओ सुदंसणाए तमवलोइऊण अणवचत्तणेण य अत्तणो महन्तवेरग्गमुप्पण्णं । चित्तियं च णाए—

किं ताण जए मणुयत्तणेण ? किं जीविण विहवेण ? । जाण ण जायइ तगओ गुणनिलओ सइ मुहावासो ॥ २ ॥

जम्मो निरत्थओ तीए जीए महिलाए मम्मणुल्लारो । रमिऊण धूलिववलो पुत्तो णारुहइ अंकम्मि ॥ ३ ॥

अण्णोण्णकज्जवइयरकज्जभरारुहणेंचंपियं हिययं । ऊससइ णवर मणुयाण तणयमुहयंदसच्चवणे ॥ ४ ॥

दोगच्चं पि ण णज्जइ, ण गणिज्जइ आवई वि गरुययरी । हिययस्स गिब्वुइकरो जाण मुओ गुणगणाहारो ॥ ५ ॥

इय एवमाइबहुआइं तणयगवाइं ति सा विचिंतंती । संपत्ता गियमवणं परमुहा सयलकज्जेसु ॥ ६ ॥

समागंतूण य भवणं पेसियाओ सहीओ, पडिया य णीसहा सयणिजे । ग कुणइ सरीरपडिकम्मं, णाऽऽलिहइ चित्त-
यम्मं, ण कुणइ सुय-सारियाण पडिजागरणं । तओ एयावत्थं जाणिऊण समागओ राया । भणिया य—सुंदरि ! किमेवं ठिया सि ? मइ भिच्चयणे किं समीहियं तुह ण संपज्जइ जेणेवं चित्तापिसाइयाए अप्पा आयासिज्जइ ? केण खंडिया तुह आणा ? केण वा विरुवं पलोइया सि ? साह सुंदरि ! कस्स सुमरियं कयंतें ? । तओ एयमायणिऊण भणियं सुदंसणा-
ए—अज्जउत्त ! तुमम्मि साहीणे को मह आणं खंडइ ? चि, किंतु गिब्विण्णा अहमप्पणो जम्मेणमकयत्येणं ति । तओ राइणा सदुक्खं वयणमायणिऊण चित्तियं—किं पुण अचन्तगिब्वेयकारणं देवीए भविस्सति ? चि पुणो पुच्छामि । सुंदरि ! किमेवं गुरुचिताए अम्हारिसो परियणो आउलीकीरइ ? साहेसु किं ते उव्वेवकारणं ? ति । तओ साहिओ उज्जाणगमणवइयरो महारायस्स । साहिऊण य भणियं—जइ महं सन्तेसु विज्जा-मंतोसहिवेज्जेसु तुमम्मि अणुकूले ण होइ पुत्तुप्पत्ती ता णिस्संसयं चएमि निरत्थयं सरीरयं ति ।

संसारसारभूओ पुत्तो चिय होइ सयलजियलोए । जस्स ण जायइ एको वि तस्स मणुयत्तणं विहलं ॥ ७ ॥

तओ तमायणिऊण भणियं राइणा—सुंदरि ! किमेवमाउलीभूया ? चीसत्था होदि, साहारेसु अप्पयं, कुणसु पाण-
'वित्ति, अहं पुण देवयाराहणाइणा तहा तहा करिस्सामि जहा देवीए पुज्जन्ति मणोरह चि । भणिऊण संठविया महादेवी ।

अण्णया य छट्ठोववासेण ठिओ । आराहिया य कुलदेवया समागया चरिमजामम्मि मुहपमुत्तस्स । भणिओ य देवयाए जहा—महाराय ! किमेवमुच्चिग्गो सि ? भविस्सइ सब्बलक्खणधरो दियलोयचुओ तुज्ज पुत्तो । चि भणिऊण गया देवया ।

१ 'ए खंडउरं सू । २ 'ए विसयं सू । ३ एयाओ जे । ४ 'ओ अहमुहा' जे । ५ 'णचंपियं सू । ६ 'वित्ति' जे । ७ छट्ठो-
वासेण जे सू । ८ 'इ ते सब्ब' जे सू ।

साहिओ य मुइणओ देवीए । तुट्ठा य सा ।

अण्णया य मुहपमुत्ता महादेवी रयणीए चरिमजामम्मि वयणेण पविसन्तं सीहकिसोरं पासिऊण भीयभीया तुरियं समुट्ठिया । साहिओ जहाविहिं दइयस्स । तेण वि य समासासिया पुत्तजम्भेण, भणिया य—सुंदरि ! पुंवि चैव देवयाए साहिओ भविस्सइ ते सीहो व्व उत्तमसत्तिसंपुण्णो पुत्तो, कुणमु सविसेसं गुरु-देवैयाण य पूयं ति । तओ तीए तद्विसाओ चैव वडिइउमादत्तो गम्भो । समुप्पण्णो य दोहलो जहा—देमि अभयप्पयाणं सव्वसत्ताणं, घोसावेमि अमारिं सव्वरज्जे, करेमि सव्वाययणेसु अट्ठाहियामहिमं ति । तओ संपाडिओ सविसेसं भत्तुणा दोहलो । पमुया य सा मुहेणं सव्वलक्खणोववेयं दारयं ति । मुकाइं वंधणाइं, कयं महावद्धावणयं, दिण्णं महादाणं ति । पइट्ठावियं च से णामं पुरिस्सीहो चि । वडिइओ य कालकमेणं । गहिओ कलाकलावो । वियाणियाणि सयलसत्थाणि । विवाहिओ अट्ठ कण्णगाओ सव्वलक्खणोववेयाओ उत्तमकुलप्पमुयाओ मुरुवाओ सयलकलापारगयाओ । तओ अजत्तसंपज्जंतसयल्लिदियैत्थो विसय-मुहमणुहवन्तो अण्णसरिसेणं कुलेणं सीलेणं रूवेणं विण्णाणेणं कलाकलावेणं सत्थत्थपारगत्तणेणं सयलजगमणाणंदणो लोयच्छेरयभूओ णयरचच्चराइप्पु परिव्वभमतो रज्जमुहाइं अणुहवन्तो चिट्ठइ चि । अवि य—

जत्तो चिय णिज्जियरूवरइमणाणंदणो परिव्वभमइ । तत्तो चिय वज्जियपरियणाओ धावन्ति रमणीओ ॥ ८ ॥

पेसवइ जओ पैम्मल-धवल्लुज्जल-दीह-वंक-सविल्लासं । दिट्ठिं दिट्ठप्पसरो तत्तो चिय धावइ अणंगो ॥ ९ ॥

एभेय कइ वि गौररगतं ति जं जं जणं पलोइइ । सो सो चिय मण्णति णवर तिहुयणव्वमहियमप्पाणं ॥ १० ॥

ओणवइ मोरकुल्लाए परियणं कइ वि जं पसंगेणं । सो जियइ चि गणिज्जइ जणेण जणमज्झयारम्मि ॥ ११ ॥

कत्तो वच्चइ ?, किं कुणइ ?, कं समालवइ ?, कं पलोइइ ? । तव्वावारपरायणमुहीओ दियइ पि रमणीओ ॥ १२ ॥

उसवन्ते उवसन्तं, [च] संचरंतम्मि तम्मि कुइणीसु । हल्लप्फलेइ णयरं सयलं तदंसणसयणं ॥ १३ ॥

रूवेण रमणिसत्थो, विउसयणो सेमुसीविसेसेण । विणएण गुरु, आराहियाइं सीलेण सव्वाइं ॥ १४ ॥

इय अच्छेरयभूओ सलहिज्जइ सो जणेण मुहरासी । मुहपरमाणुविणिम्मियसव्वावयवो पुरिस्सीहो ॥ १५ ॥

अण्णया य उज्जाणे कीलानिमित्तमुवगणं दिट्ठो फामुए पएसे विणयणंदणायरिओ साहुयणपरियरिओ । दिट्ठे य तम्मि समूससियं हियणं, णिव्वुयाणि अंगाणि, आणंदजलभरियाणि लोयणाणि । चित्तियं च णेण—को उण एसो महापुरिसो पढमे जोव्वणे भंजिऊण पसरमखलियपसरस्स कामएवस्स पडिक्खणो समणत्तणं ?, तौ पुच्छामि ताव एयं धम्मविसेसं । ति चित्तिऊण समागओ तस्स समीवं । वंदिया गुरु साहुवग्गो य । तेहिं च धम्मलाहिओ उवविट्ठो गुरुस्सीहो । येववेलाए भणियमणेण—भयवं ! तुह परिचाएणेव वियाणियं जहा—असारो एस संसारो, विसमा कम्मपरिणइ, विसं संसारमुहं ति, ता साहेहि केरिसो संसारुत्तारणसमत्थो धम्मो ? चि । भयवया भणियं—“सोम ! मुण—

धणो सि तुमं सुंदर ! जो जोव्वण-रूव-संपयासहिओ । धम्मम्मि कुणसि बुद्धिं पुव्वज्जियपुण्णपव्वमारो ॥ १६ ॥

ता किं बहुणा ?, मुणमु—चउव्विहो धम्मोवाओ, तं जहा—दाणं सीलं तवो भावणाओ । तत्थ दाणं चउव्विहं—णाणदाणं अभयदाणं धम्मवग्गहकरं अणुकपादाणं च । तत्थ णाणदाणेण जीवा वंध-मोक्खं वियाणंति, हेउवादेयभूए पयत्थे णाऊण त हेयं परिहरन्ति, गेहंति गेहणिज्जं, किं बहुणा ?, इहलोयमुहाण परलोयमुहाण य भायणं जीवो णाणाओ होइ चि । तम्हा णाणदाणं देन्त-गेहंताणमुभएसिं पि मुहावहं ति । तओ णाणपुव्वतमभयदाणं । तं पुण पुडवि-जल-जलण-मारुय-वणस्सईणमेगिदि-याणं तहा विगल्लिदिय-पंचिदियाण पाणिणं सम्ममण-वयण-कायजोगेहिं अहिंसापरिणामो कायव्वो, जओ सव्वजीवा णि-व्वरदुहत्ता वि जीविउमिच्छन्ति, तम्हा ताणं जीवियमेव पियं, कुसलेणं तं चैव दायव्वं ति । धम्मोवग्गहकरं च दाणं देयं,

१ देवयायणं जे सू । २ पारगाओ । तओ जहुत्तसं जे । ३ त्थो सयलमुहं जे । ४ पम्हलं जे । ५ आलवइ जे । ६ किं सू । ७ ता जे । ८ हिं चिय धं जे ।

जेण 'दिण्णेण उवट्ठंभिओ धम्मट्ठाणे पविचिं कुणइ । तं पुण असणं पाणं ओसहं वैत्थं पत्तं ति । एयं पुण दायव्वं ति तव-संजमनिरयाणं, जे तेषुवग्गहिया धम्मचरणमविग्गेण कुणंति । तं च दायगमुद्धं गाहगमुद्धं कालमुद्धं भावमुद्धं दाय-व्वं ति । तत्थ दायगमुद्धं जो दाया सद्धारोमंचियसरीरो देस-काल-भावण्णु अट्ठमयट्ठाणरहिओ णाओवगयं असणाइफामुयं इह-परलोयासंसारहिओ एगंतेण णिज्जरावेक्खी दाणं देइ ति तं तस्स बीयमिव मुखेत्ते वावियं बहुफलं होइ ति । जो पुण जीवाण पीलाकरं दाणं देइ सो अप्पाणं गाहगं च संसारे अणोरपारे पाडेइ ति । तहा गाहगमुद्धं जो परिचत्त-गिहावासो खंति-मइव-उज्जवोवेओ मण-वयण-कायमुत्तो जिइंदिओ पंचमहव्वयभारदिण्णखंधो गुरुमुखसपरायणो सज्झाय-ज्झाणरओ अममो अकिंचणो कुक्खीसंबलो पंचविहायाररओ इह-परलोयासंसारहिओ सब्बत्थापडिबद्धो परीसहो-वसग्गामग्गो एयारिसम्मि दाणं बहुफलं होइ । जं पुण सारंभाणं गिहत्थाणं दाणं तं णिरत्थयं वंधहेउयं च । कालमुद्धं पुण जं विसिद्धे काले साहुउवभोगावसरे दिज्जइ तं कालमुद्धं । जहा अवसरे वुट्ठं किंसीवलाण उवयारं करेइ, ण अप्पाणत्थ, एवं दाणं पि विण्णेयं ति । भावमुद्धं पुण जो दाया दाणं पयच्छंतो कयत्थमप्पाणं मण्णेति । 'देमि' ति तुट्ठे, दिज्जमाणे वि तुट्ठे, दिण्णे वि तुट्ठे, णक्कोडीपरिमुद्धं दाणं देंतो चित्तेइ-अहो ! अहं कयत्थो जेण मए साहुणमसणाइयं अज्ज पय-च्छियं ति । अणुयंपादाणं पुण तित्थयरेहिं वि न कहिंचि पडिसिद्धं । एसो उ दाणमइओ ।

सीलमइओ उण धम्मो पंचमहव्वयपरिपालणं खंति-मइव-उज्जव-संतोस-चित्तविरीकरणं खण-लपडिबुज्झणया सब्ब-जीवेसु मेत्ती, एगंतेण णिरीह[? च]णं ति ।

तवोमइओ उण धम्मो सवाहिर-उग्गिभतरस्स तवस्स जहासंभवमणुट्ठाणं ति ।

भावणामइतो उण वारस वि भावणाओ सम्मं भावेयव्वाओ, तं जहा-सब्बेसु वि ठाणेसु अणिच्चया १, जिणिंदसा-सणेण विणा असरणया २, बंधुवग्गस्स वि एगत्तणं ३, सयण-परियण-सरीराण सयासाओ अप्पात्तणं ४, देहस्सासुइत्तणं ५, संसारासारत्तणं ६, कम्मस्साऽऽसवो ७, संवरो य ८, कम्मस्स निज्जरणं ९, लोगस्स पंचत्थिकायमयत्तणं सण्णिवेसो वा १०, जिणेहिं धम्मस्स सुकहियत्तणं जीवादिपयत्थत्तचिन्ता ११, वोहीए सुदुल्लहत्तणं १२ । ति वारस वि भावणाओ अहोणिसिं चित्तियव्वाओ ति । इय एसो चउव्विहो धम्मो संसारुत्तारणसमत्थो ति ।

धण्णा पावंति जए चउव्विहं धम्ममासयविमुद्धं । सावय ! जिणपण्णत्तं संसारुत्तारणसमत्थं" ॥ १७ ॥

तओ एयमायणिउण पुरिससीहेण भणियं-भयवं ! सोहणो धम्मो भयवया कहिओ, ण एस घरवासमणुसरंते-हिं तीरइ सम्ममणुट्ठेउं, ता विरत्तं मे चित्तं भवपंजरओ तुह दंसणेण य विसेसओ धम्मसवणेणं ति, ता अणुग्गहेउ भयवं मं पव्वज्जादाणेणं ति । भयवया भणियं-सोहणमेयं, किंतु गुरुयणं आपुच्छसु ति । पुरिससीहेण भणियं-एवं करेमि । ति भणिउण गओ णिययभवणं । थेववेलाए चेव आपुच्छिउण गुरुयणं समागओ गुरुसमीवं । उवविट्ठो गुरुणो पायमूले । [गुरुणा] भणियं च-सोम ! दुलहं मणुयत्तं आरियं खेत्तं आरोगया गुरुजणसमागमो धम्मचरणबुद्धी, तं सब्बं पि तुमए पत्तं, किंतु थेवमेत्थऽत्थि वयणीयसेसं, तं सुणसु । पुरिससीहेण भणियं-भयवं ! भणसु । तओ आयरिया कहिउ-मादत्ता—

संसारविसमसायरभवजलवडियाण संसरन्ताणं । जीवाण कह वि जइ होइ जाणवत्तं व मणुयत्तं ॥ १८ ॥

तत्थ वि वोही जिणदेसियम्मि धम्मम्मि णिक्कलंकम्मि । पव्वज्जापरिणामो उ मुकयपुण्णस्स जति होति ॥ १९ ॥

सा पुण दुप्परियट्ठा पुरिसाण सया विवेयरहियाणं । वोढव्वाइं जम्हा पंचेव महव्वयवराइं ॥ २० ॥

राईभोयणविरई उ णिम्ममत्तं सए वि देहम्मि । पिंडो उग्गम-उप्पायणेसणाए सया मुद्धो ॥ २१ ॥

इरियोदिपंचसमिद्धिं तीर्हिं गुत्तीहिं तवविदाणम्मि । णिच्चुज्जुत्तो अममो अर्किचणो गुणसयावासो ॥ २२ ॥
 मासाइया उ पडिमा, अणेयरूवा अभिग्गहा बहुया । दब्बे खेत्ताणुगया काले भावे य बोद्धवा ॥ २३ ॥
 जावजीवममज्जणमणवरयं भूमिसयणमुद्धिदं । केसुद्धरणं च तहा, णिप्पडिकम्मत्तणमउव्वं ॥ २४ ॥
 गुरुकुलवासो सययं, खुहा-पिवासाइया य सोद्धवा । वावीसं पि परीसह तंहोवसग्गा य दिव्वादी ॥ २५ ॥
 लद्धावलद्विची, सीलंगाणं च तह सहस्सा उ । अट्टारसेव णिययं बोद्धवा आणुपुव्वीए ॥ २६ ॥
 तरियव्वो य समुदो वाहार्हिं इमो महल्लकल्लो । णीसायवालुयाए चावेयव्वो सया कवल्लो ॥ २७ ॥
 चंकमियव्वं णिसिउग्गखग्गधाराए अप्पमत्तेणं । पायव्वा य सहेलं हुयवहजालावली णिययं ॥ २८ ॥
 गंगा पडिसोएणं [च], तोळ्णीओ तुलाए मुरसेलो । जैइयव्वं तह एगागिणा उ भीमारिदुट्ठवलं ॥ २९ ॥
 राहावेहविणिम्मियचकट्टियलक्खमग्गपुत्तलिया । विंधेयव्वाऽवस्सं उवसग्ग-परीसहे जेउं ॥ ३० ॥
 तिहुयणजयप्पडाया अगहियपुव्वा तहेव गहियव्वा । इय एवमाइ साहूण दुकरा होइ पव्वज्जा ॥ ३१ ॥

तओ एयमायण्णिऊण भणियं पट्टवयणकमलेण पुरिस्ससीहेणं—भयवं ! एवमेयं, किंतु विइयसंसारसद्वावाणं वेरग्ग-
 मग्गमणुगयाणं संसारविजोगुज्जयाणं ण किंचि दुकरं ति । भयवया भणियं—एवमेयं, किंतु तं चेव संसारसरूवं 'सुंदरं' ति
 मण्णमाणो महामोहमोहियमई ण चिंतेइ तस्स सरूवं, ण मण्णेइ आवइं, ण गणेइ लज्जं, ण आलोएइ विवागं, ण णिरूवेइ
 असारयं, ण पेच्छइ कुलं, ण गणेइ सीलं, ण सेवेइ धम्मं, ण बोहेइ अयसस्स, ण रक्खइ वयणिज्जं, सब्बहोमहामोहमोहियम-
 ती तं तं कुणइ जेण जेण एसो इह-परलोए य किलेसभायणं होइ ति । तमायण्णिऊण भणियं पुरिस्ससीहेणं—भयवं ! तस्से-
 वंविहस्स संसारस्स णिहणणे अयमेवोवाओ जं सब्बदुक्खणिज्जरणेउभूया पव्वज्ज ति । भयवया 'एवमेयं' ति भणिऊण
 पसत्ये तिहि-णक्खत्ते पव्वाविओ । अहिज्जिओ आगमो, उवज्जियं च तेण वीसाए अण्णयरहेहिं ठाणेहिं तित्थयरणाम-भोयं कम्मं
 ति । तओ काऊण पव्वज्जाविहाणं, विहरिऊण जहुत्तविहारणं, अणसणविहिणा काऊण कालं उववण्णो 'वेजयंते विमाणे ।

तत्थ जहामुहमाउयमणुवालेऊण साएए णयरे मेहस्स रण्णो मंगलाए भारियाए सावणमुद्धवीयाए महाणक्खत्ते
 वेजयंतदाहिणविमाणाओ चुओ उवल्लद्वचोइसमहामुविणाए गव्वम्मि उववन्नो । तओ ववगएसु णवसु मासेसु
 अद्धऽट्ठमेसु राइदिएसु वइसाहमुद्धऽट्ठमीए महामु ससहरे वट्टमाणे मुहंसुहेणं सब्बलक्खणोववेयं मंगला दारयं पसूया ।
 कओ पुव्वकमेण मुरगिरिम्मि सोहम्महाविइणा जम्माभिसेओ । कयं च भगवओ पिउणा जहत्थं सुमइ ति णामं ।
 तओ पंचधाइपरियरिओ बड्ढिउं पयत्तो । पत्तो य कालकमेण जोव्वणं । लोयाणुवचीए य कयदारसंगहो
 अच्छिउमाहत्तो ।

इओ य अभिणंदणाओ अइकंतेहिं णवहिं कोडिलक्खेहिं सागरोवमाणं सुमती समुप्पण्णो । तओ सुमतिसामी
 दस पुव्वलक्खे कुमारभावमणुपालिऊण, अउणत्तीसं च लक्खे वारसपुव्वंगाहिए रज्जमणुवालिऊण, संसारं चइउ-
 कामो लोयन्तियपडिबोहिओ वइसाहमुद्धणवमीए गहियपंचमहव्वयभारो विहरिउमाहत्तो । विहरन्तो गाम-गगराइयं पत्तो
 तमेवोज्जाणं जत्थ भयवया संसारुत्तारणपच्चला गहिया पव्वज्जा । तओ चेत्तस्स मुद्धएकारसीए महामु वट्टमाणे मियंके
 पियंगुतरुणो छायाए वट्टमाणस्स खवगसेदीए कमेणं खवियघणघातिचउक्कस्स समुप्पण्णं दिव्वं णाणं । तं च केरिसं?—

सागरोभयभेयमप्पडिहयं लिंणेण दूरज्जियं, सब्बागासपहेयमक्खयवरं सब्बणुविंधं फुडं ।

मुत्ता-ऽमुत्तपयत्थभासणखमं जीवाण साभावियं, पत्तं पत्तवरेणऽणंतणिहणं लद्धीजुयं केवलं ॥ ३२ ॥

तओ समुप्पण्णवरदिव्वणाण-दंसणो पडिबोहेतो भवियकमलायरे पत्तो चंपाणयरिं । विरइयं देवेहिं पुव्वुत्तरदिसाए
 समोसरणं । समागया चउर्व्विहदेवनिकायसहिया जणवया । पव्वावियं च भगवया सत्तुत्तरं सयं गणहराणं । पत्थुया
 धम्मकहा । परुविज्जइ सम्मत्त-णाण-चरणरूवो मोक्खमग्गो, णिदिज्जइ संसारो, जुगुंच्छिज्जंति मिच्छत्ता-ऽविरइ-पमाय-

१ 'वाहि पंच' जे सु । २ तहेव उवसग्ग दि' जे । ३ जेतव्वम् । ४ 'हामोहि' सु । ५ 'वेजयंतविमा' जे । ६ 'रुग्ग' (म्हू) 'ल्ल' सु ।
 ७ 'पत्तो य च' जे । ८ 'विहदा देव' जे सु ।

कसायाणुद्वाणाणि, साहिज्जन्ति परभवविरुद्धायरणाणि, छिज्जन्ति संसया, बुज्झन्ति पाणिणो, वेप्पन्ति सम्मत्त-णाण-
चरण-देसविरुद्धो, दंसिज्जइ कहुयविवागत्तणं विसयाणं, परुविज्जइ चउगइसंसारसागरो, वियारिज्जन्ति एग्गिदि-
यादीणं पाणिणं दुक्खसंदोहं ति । एत्थंतरम्मि लद्धावसरेणं भणियं गणहरेणं—

“भयवं ! केणिह कम्मेण पाणिणो परिभमन्ति संसारे । उव्वियणिज्जामु गतीसु ? णाह ! तं साहसु जहिच्छं ॥ ३३ ॥
अच्छिणिमीलणखणसुहविवज्जिणं भीसणांम दुप्पेच्छे । गच्छन्ति केण कम्मेण णाह ! बहुवेदणे णरए ? ॥ ३४ ॥
केण व कम्मेण पुणो तिरियगतिं पाउणंति बहुदुक्खं । एग्गिदिय-विगल्लिदिय-पंचिदियतिरियसयभेयं ? ॥ ३५ ॥
सम्मच्छिम-गन्धम-कम्मभूमिखेत्तादियाइभेयाए । मणुयगतीए जायंति केण कम्मेण सुरणाह ! ? ॥ ३६ ॥
भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाइभेयसु । किव्विसिय-आमिओगिय-सुरिंद-सामाणियसुरेसु ॥ ३७ ॥
उप्पज्जन्ति भमंता जीवा संसारसायरं घोरं । कम्मेण केण ? तं साह देव !, छिंदेह संदेहं ॥ ३८ ॥
जायइ पुरिसो इत्थि व्व तह णपुंसो व्व केण कम्मेण ? । अप्पाऊ, तह दीहाउओ व्व, भोगाण वा भोगी ॥ ३९ ॥
सयलजणणयणहारिं देवकुमारो व्व जम्मणमणिट्ठं । जायइ रूवं जंतूणं ? साह जयणाह ! संसारे ॥ ४० ॥
केण व रूवविहूणो, सुहओ, तह दूहवो व्व संसारे । मेहावी य, दुमेहो, बहुदुक्खो, अप्पवियणो य ? ॥ ४१ ॥
सत्थत्थणिच्छियमई चउविहवुद्धिप्पसंगणिम्माओ । सयलकलापत्तट्ठो केणेह वियक्खणो होइ ? ॥ ४२ ॥
कम्मेण केण जायइ सयलकलावाहिरो अविष्णाणो । हलभूइसमो मुखो ? विज्जा वा णिप्फला केण ? ॥ ४३ ॥
केण व सफला विज्जा ?, कैयणासो होइ कह व जंतूणं ? । कह व ण णासइ सुकयं ? साहसु संसारवोहित्थ ! ॥ ४४ ॥
णिकडिठ्ठयासिदट्ठोड्ढिउडिल्लकमुक्कवुक्कारे । भीमे रणंगणे पात्रिया वि लच्छीह केण चला ? ॥ ४५ ॥
केणं धिरत्तणं सा उवेइ कम्मेण मुणियपरमत्थ ! ? । वंक्कमुहो पूइमुहो कुंटो मंटो य वडभो य ? ॥ ४६ ॥
केण पयाण धिरत्तं अधिरत्तं वेह जायइ कयत्थ ! ? । अंधो बहिरो मूओ बहुरोगी केण कम्मेण ? ॥ ४७ ॥
णीरोओ केण पुणो अक्खयदेहो अल्लसंठाणो । संपुण्णंगोवंगो ? णिकारणबंधव ! कहेहि ॥ ४८ ॥
होइ धणड्ढो केणिह ?, दोगच्चं वा वि दारुणं केण ? । होइ जयपायडजसो, केण अकिची जणे भमइ ? ॥ ४९ ॥
सयलजणसलहणिज्जो य गेज्झवक्को य कम्मणा केण ? । केण अणाएओ पुण कम्मेणं जायइ जयम्मि ? ॥ ५० ॥
णिच्चुव्विग्गो, हीणिदिओ य, जायइ अणन्तसंसारी । केण परिचो व पुणो संसारो जायइ जियाण ? ॥ ५१ ॥
एवं ति पुच्छिओ गणहरेण भयवं समत्थदिट्ठत्थो । अह साहिउं पयत्तो सदेव-मणुया-उसुराए परिसाए ॥ ५२ ॥
कुणिमाहारपसत्ता आरंभपरिग्गहेसु गुरुएसु । पंचिदियवहजुत्ता रोइमहापावपरिणामा ॥ ५३ ॥
एए गच्छन्ति सया णरयं कंडुज्जु(ज्ज)एण मग्गेण । अण्णे वि महापावा सोयरिया तह य रायाणो ॥ ५४ ॥
अट्ठज्झाणोवगया परदुक्खुप्पायणम्मि य पसत्ता । बहुमोह-उप्पाणपरा जीवा तिरियत्तणमुवेति ॥ ५५ ॥
अप्पकसाया दाणेकसंगया खंति-मइवसमेया । पयतीए भइया जे य होंति ते जंति मणुयत्तं ॥ ५६ ॥
बालतव्ववियदेहा दाणरुई सील-संजमसमग्गा । जे होंति सम्मदिट्ठी ते जीवा जंति दियलोयं ॥ ५७ ॥
असहो खंतिसमेओ सुसहावो अप्पमोहगुणकलिओ । जीवो जायइ पुरिसो विरुंसे संसारकन्तारे ॥ ५८ ॥
अलिर्यउम्भक्खाणरओ णियडिमहाकवडवंचनाकुसलो । साहसपावणिसेवी महिलाभावत्तणमुवेइ ॥ ५९ ॥
जो तुरय-वसह-महिसाइयाण णिल्लंछणं सया कुणइ । उक्कडमोहो य सया जीवो संदत्तणमुवेइ ॥ ६० ॥
एग्गिदियाइजीवाण घायणे मंसभक्खणे णिरओ । मज्जपसत्तो य तहा अप्पाऊ जायइ मणुस्सो ॥ ६१ ॥
सील-दय-खंतिजुत्ता दयावरा मंजुभासिणो पुरिसा । पाणवहाउ णियत्ता दीहाऊ होंति संसारे ॥ ६२ ॥

१ “जोयस” सु । २ भागी जे । ३ विज्जा से जिं जे । ४ कह णासो सु । ५ “त केण जा” सु । ६ उ जे । ७ विरसो जे ।

८ “गमक्खाणणिरओ जे । ९ “णिवेसी म” जे ।

साहूणमेषणिज्जं दन्वं सइ खेत्त-कालगुणजुत्तं । देन्तो पावइ पुरिसो भोगे कालोचियाअण्ते ॥ ६३ ॥
 परमणिखुवदंसणमुहाइ जो णेय पत्थइ कयाइ । ण य णिंदइ परखुवं पुरिसो सो होइ खुवस्सी ॥ ६४ ॥
 जो उण खुवमएणं समाउलो णिंदइ य परखुवं । सो होइ कुरूवो माणुसत्तणे हुंडसंठाणे ॥ ६५ ॥
 पढमाभासी महुरो पियंवओ विणय-खंतिसंणो । जणमण-णयणाणंदो मुहओ सव्वत्थ सो होइ ॥ ६६ ॥
 सव्वस्स वंचणपरो कूरो कुल-खुवगव्वि दुस्सीलो । सव्वस्समुव्वेयकरो य दूहवो जायइ मणूसो ॥ ६७ ॥
 णाणुवगारे वट्टइ णाणीणं विणय-दाणसंजुत्तो । अज्झावयणे व सुमे वट्टन्तो होइ मेहावी ॥ ६८ ॥
 पडिणीय-अन्तराइय-णाणुवघाए य वट्टइ अभिक्खं । अवमण्णेन्तो य सया सुयजेदं होइ दुम्मेहो ॥ ६९ ॥
 दंड-कस-सत्थ-रज्ज-गय-तोमर-खग्ग-भोग्गरादीहिं । दुक्खं उप्पाएंतो जीवाणं होइ बहुवियणो ॥ ७० ॥
 पयतीए तणुकसाओ अणुकपा-दाण-सीलगुणकलिओ । जीवाण रक्खणपरो होइ सुही जीवलोयम्मि ॥ ७१ ॥
 अणवरयणाणदाणेण संजुओ होइ बहुमुओ लोए । मुखो उण विवरीओ अप्पहियं पि हु ण याणेइ ॥ ७२ ॥
 जो सुयबहुमाणपरो विणयुज्जुत्तो गुरूण भत्तिगओ । सो पावेइ जहिच्छं विज्जं तीए फलं चेव ॥ ७३ ॥
 जो उण णिंदइ गुरुं णिण्हवइ य गोरवं विमग्गेतो । तस्स जइ कह वि विज्जा होइ, फलं ण उण से देइ ॥ ७४ ॥
 जो मायावी पिमुणो वंचणसीलो तहा कयग्गो य । तस्सुवकयं पणस्सइ, विवरीयगुणस्स संठाइ ॥ ७५ ॥
 जो उवघाए वट्टइ परस्स लच्छी कहंचि पत्ता वि । तस्स पलायइ दुक्खज्जिया वि धणसंपया विउला ॥ ७६ ॥
 जो पयइभइयाए जह कह वि जतीजणे पयच्छेइ । फामुयदाणं तस्स वऽथिरा वि लच्छी थिरा होइ ॥ ७७ ॥
 जो दट्ठण जइजणं अणं काणच्छिज्जण सदभावो । णिब्बोल्लइ माइलो सो वंक्रम्हो णरो होइ ॥ ७८ ॥
 तवतणुयंगाण सया जो पुरिसो भणइ विप्पियमहणो । सो पूइमुहो जायइ कुंटो पुण पेहिघाएणं ॥ ७९ ॥
 मंटा वडभा य सया साहूणमणज्जकारिणो होति । विच्छोयकारयाणं ण पयाण थिरत्तणं होइ ॥ ८० ॥
 पक्खीण सावयाण य विच्छोयं ण य करेइ जो पुरिसो । जीवेसु य कुणइ दयं तस्स अवचाइं जीवन्ति ॥ ८१ ॥
 जो पररंधाइ अदिट्ठयाइ दिट्ठाइ जंपइ अणज्जो । छायाभंसपसत्तो जंबंधो होइ जियलोए ॥ ८२ ॥
 अमुयं पि सुयं भासइ, तह य विरुद्धाइ कहइ लोयस्स । पिमुणो परतच्छिओ सो बहिरो होइ मूओ य ॥ ८३ ॥
 डहणं-डंकण-घायण-छेयणेहिं दुक्खं जियाणं पकरेंतो । बहुरोगी होइ णरो, विवरीओ जायइ अरोगो ॥ ८४ ॥
 जो कुणइ महापावो जंतूणं कह वि अवयवविणासं । सो चिय तयंगविगलोऽसंपुण्णंगो य पावीओ (?) ॥ ८५ ॥
 जो देइ फामुयं अवसरम्मि साहूण ओसहाइयं । सो होइ धणइहो महियलम्मि किच्ची थिरा तस्स ॥ ८६ ॥
 जो कुणइ अंतरायं परस्सणासं जणस्स अवलवइ । सो पावइ दोगच्चं सयलजणपरिहवमुयारं ॥ ८७ ॥
 गुरूसाहुवयणकारी दढव्वओ सच्चसंघणापरमो । सो गज्जवओ जायइ, पावमई होइ विवरीओ ॥ ८८ ॥
 जो जणइ य जणपेीहं णिच्चुन्विग्गो य हीणदेहो य । पडणीओ जिणसंचे अणंतसंसारिओ भणिओ ॥ ८९ ॥
 संकाइसल्लरहियं सम्मत्तं जस्स होइ भुवणम्मि । तस्स परिचो जायइ संसारो मुक्कयकम्मस्स ॥ ९० ॥
 जस्स उण णाण-दंसण-चरणाइं मणे जहुत्तकारिस्स । तस्स णरस्सावस्सं हवन्ति सग्गा-ऽपवग्ग चि ॥ ९१ ॥

१ सोहेइ सु । २ 'ज्वेकरो जे । ३ उप्पाएंतो जे । ४ 'णयरो सु । ५ 'इ बहवि वि' सु । ६ पडिधा' जे । ७ 'ण य क' सु ।
 ८ अंतराइ सु । ९ 'पीलं निच्चु' जे ।

इय एवमाइ कहिऊण, सुरगुरू विहरिऊण य जहिच्छं । पडिबोहिऊण भविण, पत्तो सम्मेयसिहरं ति ॥ ९२ ॥

मासियभवेण तहिं सेछेसिविहाणजोगगुणकलिओ । सिद्धो णिदधुयकम्मो मोक्खं पत्तो अणावाहं ॥ ९३ ॥

एवं चत्तालीसं पुव्वलक्खे सव्वाउयं परिवालिऊणं तिसयधणूसिओ सुमतिसामी सम्मेयगिरिसिहरे सेछेसिं
पडिवज्जिऊण सिद्धिं पत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिण पंचमस्त सुमतिसामिणो चरियं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

[८ पउमप्पहसामिचरियं]



पुब्बज्जियपुण्णविषयमाणवसजायगरुयमाहप्पा । ते केइ जए जायन्ति जेहिं भुवणं महग्घवियं ॥ १ ॥

तओ सुमत्तितित्थयराओ सागरोवमकोडीणं णवहिं सहस्सेहिं समइकन्तेहिं पउमप्पभो अड्ढाइज्जसयधणुस्सिओ समुप्पणो । कहं ? भण्णइ—अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कोसंबी णाम णगरी । सा य धण-जण-कण-रयणसमिद्धा सयलोचदवविचज्जिया सया मुइया । तीए णयरीए पुहइभारधरो धरो णाम णराहिवो परिवसइ ।

तस्स य अलंघणीया घरिणी मज्जायकारणमणग्घं । धरणीए सुसीमा इव पिया सुसीमाभिहाण ति ॥ २ ॥

तीए चोइसवरमुमिणमुइओ पुण्णरासिसंभूओ । पउमप्पभाभिहाणो गेवेज्जाओ चुओ जाओ ॥ ३ ॥

तत्थ माहवहुलस्स छट्ठीए चित्तामु चुओ । कत्तियवहुलवारसीए चित्ताजोयजुए मियंके जाओ । कओ य पुब्ब-कमेणेव सोहम्महाविइणा जम्माहिसेओ । 'गम्भत्थे य भगवम्मि जणणीए पउमसयणीयम्मि दोहलो आसि' ति तेण भगवओ जहत्थमेव पउमप्पभो ति णामं कयं । तओ वडिहउं पयत्तो । कयं च लोइयैट्ठिमणुयत्तेण भगवया दारपरिग्गहाइयं । गया कुमारभावे अट्ठट्ठेमा पुब्बलक्खा । पुणो वि एकवीसं पुब्बलक्खा पुब्बलक्खदं च सोलस य पुब्बंगाणि महारायभावेणं ।

तओ संसारं चइउकामो लोयन्तियपडिवोहिओ छट्ठभत्तेणं कत्तियस्स बहुलतेरसीए महाणक्खत्ते कयसामाइओ विहरिउमादत्तो । विहरिउण य छम्मासे णग्गोहवरपायवच्छायाए आसाइयं च(?) चेत्तस्स पुण्णिमाए चित्ताजोगजुत्ते मियंके उप्पणं दिव्वं णाणं । पच्चाविया पंचाणउइं गणहरा । विरइयं देवेहिं समोसरणं । समागया सपउरा जणवया । पेच्छंता य दंसेति एकमेकस्स समोसरणं विमुक्कासेसतिरियवेराणुबंधे(?) धं । कहं ? ति—

कंडुयइ कण्णमूलं मओ मइंदस्स कंधरदंते । वीसत्थो वियडुब्बडकडारभासुरसडकडप्पे ॥ ४ ॥

तियसा-उसुरणिम्मलमणिमयूहदेहप्पभाकिलम्मन्तो(?) न्तं) । 'पेलवमही सिंहडेण पेच्छ पच्छाइयसरीरं ॥ ५ ॥

वीसम्भजणियपसरो आसो महिसस्स लोयणदन्तं । कंडुयइ तिक्खगवलग्गभागदेसम्मि मउलच्छो ॥ ६ ॥

दूमेइ फणिंदफणं सकायभाएण मूसओ उवह । तित्थयरवाणिमुहिओ णिच्चलसवणेकगयचित्तो ॥ ७ ॥

णिच्चलमुहग्गसंठियमूसयपोयम्मि उवह मज्जारं । उवसन्तवेरबंधं धम्मकहायणणयसत्तं ॥ ८ ॥

उवपियइ मयसिलिम्बो पंडुइयपओहराए वग्घीए । अवियाणियनि(?) मि)यपोयाए छीरमासाइयगुणाए ॥ ९ ॥

काऊण करं कंटे कडारकेसरसहस्स केसरिणो । णिच्चलसवणो मुहियस्स करिवरो मुणइ जिणवार्णि ॥ १० ॥

तुंडग्गुन्नाविणिग्गयभीसणदादस्स पोंडरीयरस । जिणवयणमुइयवसहेहिं पेच्छ संदाणियं देहं ॥ ११ ॥

अंकागयसालूरो गोमुणहो मुणइ जिणवरिंदस्स । सच्चवसभासाणुगयं देवा-उसुरमणहरं वार्णि ॥ १२ ॥

१ 'णो । भण' सु । २ 'ओ पुब्ब' सु । ३ 'यत्थिइ' सु । ४ 'गहय' सु । ५ 'ट्ठमपुब्ब' जे । ६ णं दिव्वं जे । ७ 'गय' सु । ८ 'पेलवमहि, सुकुमारं सर्पमित्यर्थः । ९ गोमुणओ जे ।

इय मुक्कवेरवंधा जस्सऽणुहावेण होंति तिरियगणा । तस्स इमं जयइ जए सीलगुणद्धं समोसरणं ॥ १३ ॥

इय पलोएन्ता समोसरणं उवागया अर्द्धितरं । दिट्ठो सीहासणसंठिओ भुवणगुरू पयासयन्तो संसार-भोक्खपहे । पणमिऊण उवविट्ठा चलणंतिए धम्मं मुणिउमादत्ता ।

तओ भगवया साहिओ चउगइओ संसारसायरो, कहियाओ य अणुकमेण णरय-तिरिय-मणुय-देवगतीओ । तओ भणियं गणहरेणं-भयवं ! केइविहा देवा ?, देवाण किमाउयं ?, किं मुहं ?, किं देहपरिमाणं ?, का विमाणसंखा ?, के वा देवगतिं वञ्चंति ?, केत्तिया वा एकसमएणं उप्पज्जंति ? । इच्चेवमादि देवसंवद्धं पुच्छियं गणहरेणं । भयवं कहिउमादत्तो-

तत्थ देवा चउम्मेया, तं जहा-भवणवइणो वन्तरिया जोइसिया वेमाणिया । तत्थ भवणवइणो दसप्पयारा, तं जहा-असुरकुमारा णागकुमारा उवहिकुमारा सुवण्णकुमारा भणियकुमारा दीवकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दिसाकुमारा वाउकुमारा । आउयमुक्कोसं [साहियं] सागरोवमं, जहणं पुण दस वाससहस्सा । भवणसंखा पुण सत्त कोडीओ वाक्खि लक्खा भवणाणं ति ।

वाणमन्तरा अट्ठमेया तं जहा-किण्णरा किंपुरिसा महोरगा गंधन्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसाया । आउयं उक्कोसेणं पलिओवमं, जहण्णेणं दस वाससहस्सा । भवणाणि य असंखेयाणि ति ।

जोइसिया पंचमेया तं जहा-चंदा आइच्चा गहा णक्खत्ता पइणतारग ति । तत्थ चंदाणमाउयं उक्कोसेण पलिओवमं वासलक्खाहियं, जहण्णेण पलिओवमचउभागो; देवीणं पुण अट्ठपलिओवमं पण्णासवाससहस्साहियं उक्कोसेणं, जहण्णेणं पुण पलिओवमचउभागो । आइच्चाणं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्साहियं, जहण्णेणं पलिओवमचउभागो; देवीणं वि उक्कोसेणं पलिओवमस्सऽद्धं वासाणं पंचसया, जहण्णेणं पलिओवमचउभागो । गहाणं पलिओवमं उक्कोसेणं, जहण्णेणं पलिओवमचउभागो; देवीणं उक्कोसेणं पलिओवमस्सऽद्धं, जहण्णेणं पलिओवमचउभागो । णक्खत्ताणं च आउयं उक्कोसेणं पलिओवमद्धं, जहण्णेणं पलिओवमस्स चउभागो; देवीणं वि जहण्णुक्कोसएहिं चउभागो चेव । ताराणं उक्कोसेणं पलियचउभागो, जहण्णेणमट्ठभागो; देवीणं जहण्णुक्कोसएहिं अट्ठभागो चेव, केवलमुक्कोसपक्खे समहिओ ति । जोइसियाणं य असंखेयाणि विमाणाणि ।

सोहम्मे दो सागरोवमाणि आउयमुक्कोसेणं, वत्तीसं लक्खा विमाणाणं । ईसाणे दो सागरोवमाइं, अट्ठावीसं लक्खा विमाणाणं । भवणवइ-वाणमन्तर-जोइसिय-सोहम्मीसाणाणं सत्त य रयणीओ देहप्पमाणं । सणंकुमारे सत्त सागरोवमाइं ठिई, वारस लक्खा विमाणाणं, छ रयणीओ देहप्पमाणं । माहिंदे साहिया सत्त सागरोवमाइं ठिती, छ रयणीओ देहप्पमाणं, अट्ठ लक्खा विमाणाणं । भंभलोए दस सागरोवमाइं ठिती, पंच रयणीओ देहप्पमाणं, चत्तारि य लक्खा विमाणाणं । लन्तए चोदस सागरोवमाइं ठिती, पंच रयणीओ देहपरिमाणं, पंचाससहस्सा विमाणाणं । सुक्के सत्तरस सागरोवमाइं ठिती, चत्तालीसं च सहस्सा विमाणाणं, चत्तारि य रयणीओ देहप्पमाणं । सहस्सारे अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती, चत्तारि रयणीओ देहप्पमाणं, छ सहस्सा विमाणाणं । आणए एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती, तिण्णि य रयणीओ देहप्पमाणं । पाणए वीसं सागरोवमाइं ठिती, तिण्णि य रयणीओ देहपरिमाणं । चत्तारि सयाइं विमाणाणं दोण्हं पि आणय-पाणयाणं । आरणे एकवीसं सागरोवमाइं ठिई, तिण्णि य रयणीओ देहपरिमाणं । अच्चुए वावीसं सागरोमाइं ठिती, तिण्णि य रयणीओ देहपरिमाणं । तिण्णि य सया विमाणाणं आरण-ऽच्चुयाणं ति । हेट्ठिमहेट्ठिमए मेवेज्जए तेवीसं सागरोवमाइं ठिती, हेट्ठिममज्झिमए चउवीसं, हेट्ठिमउवरिमए पंचवीसं । तिसु वि एगारसुत्तरं सयं विमाणाणं । मज्झिमहेट्ठिमए छवीसं सागरोवमाइं ठिती, मज्झिममज्झिमए सत्तावीसं, मज्झिमउवरिमए अट्ठावीसं । तिसु वि सत्तुत्तरसयं विमाणाणं । उवरिमहेट्ठिमए एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती, उवरिममज्झिमए तीसं, उवरिमउवरिमए एगवीसं । तिसु वि सयमेगं विमाणाणं । हिट्ठिम-मज्झिम-उवरिममेवेज्जगेसु जहुत्तरं हीणाओ दोण्णि रयणीओ देहप्पमाणं ।

अणुत्तरोववाइयविमाणेसु चउसु वि एगत्तीसं सागरोवमाइं ठिती जहण्णेणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं । मन्वद्विमाणे जहण्णुक्कोसा तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती । एगा रयणी देहपरिमाणं ।

सामण्णेणं देवलोयगामिणो जीवा हवन्ति दाणरुइणो अमायाविणो बालतवरया जीवाण दयावरा वय-सीलमहणुज्जया विसेसेणं णाण-दंसण-चरित्तुज्जया अणुत्तरोववाइयपज्जवसाणेसु देवलोएसु गच्छन्ति चि । तत्थ य एगंतेण रइसागराव-गाढा अमृणियकालाइक्कमा मुहंसुहेण जहुत्तमौउयं भुजंति, अवि य—

वीणा-वेषुमणोहरकलरवमुत्तिमुहयमुच्छणुच्छलियं । तियसंगणाहिं गिज्जइ बहुविदसर-करणरमणिज्जं ॥ १४ ॥

ललियंगहार-लय-ताल-करण-रत्न-भावशब्दित्यपभोयं । विविहाहिणयपयासियपमोयसुरसुंदरीणइं ॥ १५ ॥

वरपारियायमंजरि-मंदारुच्छलियकुसुमरयधवल्लो । गोसीसचंदणुवृद्धपरिमलो वाति गंधवहो ॥ १६ ॥

द्वियइच्छियसंपज्जन्तविविहरसपुट्टिपोसियसरीरो । आहारो वि मुहयरो सुराण सइ जणियमाहणो ॥ १७ ॥

देवंगळाइए महरिहम्मि सयणम्मि तूलिकलियम्मि । कालं गमेति त्रियसा द्वियइच्छियजायविसयमुहा ॥ १८ ॥

पीणुणय-गरुडपओहराहिं वित्थिण्णरमणपुलिणाहिं । तियसंगणाहिं समयं रमन्ति सइ रइणिहाणाहिं ॥ १९ ॥

जत्तो लीलावसमंथरुज्जयं देइ दिट्ठिविच्छोहं । तत्तो तियसविलासिणिजयगेयरवो समुच्छलइ ॥ २० ॥

इय विसयमुहं जं किं पि होइ संसारसायरे विरसे । तं तियसाणं, विसयाउराण मणुयाण तं कत्तो ? ॥ २१ ॥

किंच—

जं किं पि मणुयलोए दीसइ अइसुंदरं भमंतेहिं । तं सग्गेणुवमिज्जइ 'सग्गो सग्गो इमो चेव' ॥ २२ ॥

एगसमएण एगो व दो व तिणि व संखेय-असंखेया वा सुकयकम्मकारिणो देवलोयं गच्छन्ति ।

तओ तमायणिऊण भणियं गणहरेण-भयवं ! एवमेयं ण अण्णह चि । एत्थंतरम्मि उट्ठिओ भयवं समोसरणाओ । विहरंतो य गाम-णयराइयं, अवणेन्तो मिच्छत्ततिमिरं भवियाणं, पत्तो सम्मेयसेलसिहरं । मग्गसिरवहुलेक्कारसीए महामु वट्ठन्ते ससहरे सेलेसीविहाणेणं खवियभवोवग्गाहिकम्मंसो सिद्धिमणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए पञ्चमपहस्स छट्ठस्स तित्थयरस्स चरियं समत्तं ॥ ८ ॥

[९ सुपाससामिचरियं]

:—: X :—:

तओ पउमप्पभाओ सागरोवमाणं णवहिं सहस्सेहिं कोडीणं गयाणं सुपासो समुप्पण्णो । सो य पियंगुमंजरीणिभो दोष्णि धणुसयाणि उच्चतेणं, वीसपुव्वलक्खाउओ त्ति । कहं ? भण्णइ—

जे संसारालंकारकारणं महियलम्मि ते केइ । उप्पज्जंति सरूवेण पुण्णरासि व्व सत्पुसि ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कासी णाम जणवओ पउरजण-धणसमाउलो पमुइयगामिणयजण-जणियहलवोलो अज्जत्तसंपज्जन्तसासच्छेत्तरमणिज्जो, अवि य—

सइ जत्थ व तत्थ व जह व तह व संपडइ भोयणमणग्गं । दारिदघरेसु वि पंधियाण दहि-सालि-कूरेण ॥ २ ॥

तत्थ य वाणारसी णाम णयरी । तहिं च रिद्धिदिमिज्जिचकुजेरविहर, दंदि जणवया । तत्थ य दरियारि-मइणो भुवणभरिउव्वरियजसपव्वारो किच्चिमहाणइणिग्गयपेवाहो समुप्पणयभुयसिहरो दूरविणिग्गयपयावो सयलजणा-णंदकरो सुपइट्ठियचरिओ सुपइट्ठो णाम णवई । तस्स विणिज्जियरतिरूवविग्गमा आयारकुलहरं विणयावासा सयलजणाणंदयारिणी पुहइ व्व खमाए पुहई णाम महादेवी । तीए य कवोलुच्छलियवहलजुण्हापवाह एव मुहपक्खाल्णं, कण्णन्तखलियलयणं जुवलपेव णीलुप्पलं, विलासहसियच्छेय एव चंदणंगराओ, णीसाससमीरणविसेसा एव सुगंधिणो पडवासा, अहरुच्छलियकंतिसमूह एव पुसिणमंडणं, मिउ-मंजुभासियाइं चेव वीणाविणोओ, बाहुलयाओ चेव लीला-मुणालाणि, इत्था एव विलासकमलाणि, यणकलसा एव णिम्मलदप्पणा, णियदेहप्पहा चेव आहरणं, कोमलंगुलिराग एव जावयरसो । एवं च सा अवयवेहिं भूसिया संचालिणि व्व थलकमलिणी मंडइ भवणोवरदं ति । एवं च तीए सह विसयमुहमणुहवन्तस्स सुपइट्ठियराइणो अइकंतो कोइ कालो ।

अणया सा रयणीए चरिमजामम्मि सुहपमुत्ता चोइस महामुभिणे पासिऊण विउद्धा समाणी साहेइ दइयस्स । तेण वि य अहिणंदिया पुत्तजम्मव्वुदण्ण । तओ गेवेज्जाओ चुओ तम्मि चेव रयणीए भववयमुदुपंचमीए विसाह-जोगजुत्ते मियंके पुहईए गव्वे समुव्वूओ, संवडिइओ य । सुहंसुहेण पस्रया जेट्ठस्स मुदवारसीए विसाहारिक्खम्मि । 'भगवम्मि य गव्वभगए जणणी जाया सुपास' त्ति तओ भगवओ सुपास त्ति णामं कयं । कओ पुव्वकमेणेव सोहम्मा-हिउणा जम्माभिसेओ । वडिइओ य । विवाहिओ य ।

पंच य पुव्वलक्खा कुमारभावमणुपालिऊण, चोइस य पुव्वलक्खे वीस य पुव्वंगाइं रज्जमणुवालिऊण य, लोगन्तियपडिबोहिओ जेट्ठस्स मुदुतेरसीए विसाहाणक्खत्ते पइण्णामंदरमारूढो । जहुत्तविहारेण य विहरिऊण पियंगु-तरुच्छायाए पियंगुमंजरीसामदेहो णव मासे लउमत्थभावमणुवालिऊण फग्गुणवहुलछट्ठीए दिव्वं णाणं संपत्तो । चिरइयं देवेहिं समोसरणं । पव्वाविया य तेणउई गणहरा भगवया । पत्थुया धम्मकहा । संबुज्जंति पाणिणो । तं जहा—

चइयव्वं मिच्छत्तं, णिराकरणीया चत्तारि कसाया, उज्झियव्वा अविरती, णाणुद्वेयं पमायाचरणं, णिरुंभियव्वा सावज्जा मण-वइ-कायजोगा, गहियव्वाणि सम्मत्त-णाण-चरणाणि, जिंदणीओ विसयाहिसंगो, अहिलसणीओ कम्मक्खओ त्ति । तमायण्णिऊण भणियं गणहारिणा-भयवं ! एवमेयं, ण संदेहो, किं पुण किंभूयं कम्मं जस्स खओ य अहिलसणीओ ? । भगवया भणियं—“सोम ! सुण, णाणावरणाइयाणि अट्ठ कम्माणि मूलभेयओ हवंति । उत्तरभेएण पुण णाणावरणीयं

पंचमेयं । दरिसणावरणीयं णवमेयं । वेयणिज्जं दुमेयं । मोहणीयं अट्ठावीसमेयं । आउयं चउम्मेयं । णामं वायालीसमेयं । गोत्तं दुमेयं । अन्तराइयं पंचमेयं ति । एवमेएसि कम्माणं खएणं अचन्तो अणावाहरूवो मोक्खो पाविज्जइ" ति । एवमायणिउण भणियं गणहरेणं-एवमेयं, ण अण्ह ति । तओ भयवं काउण भम्मदेसणं, पडिबोहिउण पाणिणो, विहरिउण भरहखेत्तं, वीसइं पुव्वलक्खे आउयमणुवालिउण फग्गुणवहुलसत्तमीए मूलणक्खे सम्मेयसेलसिहरे सिद्धिमणुपत्तो ति ॥

इति महापुरिसचरिए सुपाससामिसत्तमत्तित्थयरचरियं सम्मत्तं ॥ ९ ॥

[१० चंदप्पहसामिचरियं]

:÷:×:÷:

सुपासतित्यराओ णवहिं सागरोवमकोडीणं सएहिं गएहिं चंदप्पभदेहसोहो चंदप्पहो दिवड्ढधणुसयमुच्चतेणं दस-
पुव्वलक्खाउओ समुप्पण्णो त्ति । कहं ? भण्णइ—

उप्पज्जइ भवपंकम्मि कोइ परहियणिबद्धववसाओ । तप्पंकंकविमुको कमलं पिव णिम्मलच्छाओ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंदमंडलं पिव कलाणुगया चंदउरी णाम णयरी । तत्थ य णिहयपडि-
वक्खमहासेणो महासेणो णाम राया परिवसइ । तस्स य संपुण्णसव्वलक्खणा लक्खणा णाम महादेवी । तीए सह
विसयसुहमणुहवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया उवट्ठिए वसन्तमासे वियसिएसु काणणंतरेसु, समुच्छलिए परहुयारवे, वियंभिए मयणसरपसरे, पयट्ठामु
णयरचचरीसु, मज्जाइकमसमुज्जए तरुणियणे, सहयारमंजरीरयरुद्धपहियणपहपसरे, णिब्भरे महुमाससमए वियंभमाणे,
अवि य—

वणरोईए कुणंतो वसन्तमासम्मि मंडणं तिलयो । सहयारमंजरी फुडइ मच्छरेणं व छउयंगी ॥ २ ॥

सहयारपल्लवग्गम्मि महुहुणंतम्मि मयरकेउम्मि । पवसियवहुवहणत्थं किच्च व्व समुट्ठिया कलिया ॥ ३ ॥

पहियघरिणीए दट्ठुं जलियं पिव पल्लवेहिं सहयारं । डहणमएणं व सित्तं हियं णयणंसुसल्लिणेणं ॥ ४ ॥

सहयारवणे दइयं अपेच्छमाणी उ वरहुया वरई । रत्तासोयं पविसइ चियं व मरणेक्कववसाया ॥ ५ ॥

जेणउहियं सुरयसुहं तम्माणं जो धरेइ अह तं पि । मारइ मयणणरिंदो इय परहुयडिडिमो भणइ ॥ ६ ॥

णीसाहारो सहयारदंसणे, किंसुयम्मि अइकिसिओ । होइ असोए ससोओ, वसन्तमासम्मि पहिययणो ॥ ७ ॥

सच्चं चिय कुमुमसरो रइणाहो जेण कुमुममासम्मि । सरवहुअयाए णूणं दुव्विसहो होइ तरुणियणे ॥ ८ ॥

इय एरिसे वसन्तम्मि पमुइयासेससारजियलोए । पेच्छइ सुइणे सयणम्मि लक्खणा णीसहपमुत्ता ॥ ९ ॥

एवं च रयणीए चरिमजामम्मि चोइस वि महामुभिणे पासिऊण विवुद्धा समाणी साहेइ दइयस्स । तेण वि य
अभिणंदिया पुत्तजम्मेणं ति । तओ तीए चेव रयणीए वेजयंतविमाणाओ चुओ मुत्तिमन्तो व्व पुण्णरासी चेत्तस्स बहुल-
पंचमीए विसाहणक्खत्तम्मि समुब्भूओ । पुणो पडिपुण्णे काले पोसस्स बहुलवारसीए लक्खणा सयललक्खणोववेयं
सुहेणं दारयं पसूया । पिउणा य 'चंदप्पहसमाणो' त्ति कलिऊण चंदप्पहो त्ति णामं कयं भगवओ । बडिडओ य कमेणं ।
तओ अड्ढाइज्जेसु पुव्वलक्खेसु कुमारभावमणुवालिऊण, रज्जं च अद्दसत्तमे, तओ लोयन्तियपडिबोहिओ, कहं ?—

णर-णरय-तिरिय-सुरलोयभवविसालम्मि दुहजलोइम्मि । एकलकसायकरिमयरपावपंकम्मि दुप्पेच्छे ॥ १० ॥

मिच्छचुव्वमडवीयिम्मि कम्मकलोलसयकडिडम्मि । सइरोय-सोयकहुयालयम्मि दारिइमयरम्मि ॥ ११ ॥

जम्मण-मरणुप्पेहडतडपडणमयाउलम्मि विसमम्मि । अन्तट्ठियमहिहरगरुयसिहरवसणम्मि विरसम्मि ॥ १२ ॥

इय एरिसम्मि संसारसायरे विसयसोत्तपडियाण । जीवाण कुणसु तं णाह ! तित्थमउलं दुहत्ताणं ॥ १३ ॥

जं कोहुव्वमडगुरुवेयवज्जियं माणपव्वयविहीणं । माया-मयवाहलियारहियं सहियं बहुगुणेहिं ॥ १४ ॥

गुरुलोहविवररहियं मोहमहावत्तवज्जियमणगं । कुगइगमणेक्कपचलपहपरिहरियं मणभिरामं ॥ १५ ॥

१ 'राइए अकुणता व' जे । २ तिलया जे । ३ 'ण विसित्तं सु' । ४ चियम्मि म' सु । ५ तरुणियणे सु, तरुणियणे-तरुदर्शने ।
६ जीवाण जे ।

गिरवायेणेव्हुइपुरं सिग्गमविग्गेण जेण पावेति । जं परवाइमतीणं दूरम्मि ठियं महाविसयं ॥ १६ ॥

इय तं पयडेसु जण महाणुभावेहिं पुब्बमायरियं । तित्थं जयणाह ! तुमे तेलोक्कविदत्तमाहपं ॥ १७ ॥

इय एवमाइ लोयंतिएहिं लोयग्गमणववसाओ । पडिबोहिओ महप्पा णिओयवचीहिं देवेहिं ॥ १८ ॥

एवं लोयंतियदेवेहिं पडिबोहिओ पण्णामंदिरं पोसस्स बहुलतेरसीए समारूढो । तिण्णि य मासे छउमत्थपरियाय-
मणुपालिऊण पुण्णागपायवस्स छायाए चेत्तमुद्धपंचमीए अणुराहाणकवचे केवलमणुपत्तो । पव्वाविया य अट्टासीई गण-
हरा । विरइयं देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा भगवया । साहिओ संसारसहावो, पयडिओ मोक्खमग्गो । तओ
छद्दावसरेणं भणियं गणहरेणं-केरिसो उण मोवखो ? किं वा सखं मुत्ताणं ? । भगवया भणियं-मुणसु ।

इह सोहम्माइया उवरोवरिद्विया बारह देवलोया, तेसिमुवरि णव गेवेज्जाणि । पुणो पंच महाविमाणाणि । सव्व-
द्विमाणाओ उवरिं बारसेहिं जोयणेहिं सिद्धी । सा य अचंतणिम्मला, बहुमज्झदेसभाए अट्ट जोयणाणि बाहल्लेणं, बहु-
मज्झदेसभावाओ कमेण य हीयमाणा मच्छियपत्ताओ पेरंतेमु तणुययरी । तौचो य ईसिपवभाराए पुहवीए उवरिं जोयणं,
तस्स य चउभाओ, तस्स वि छब्भाए सिद्धाणमवगाहो चि । धणूण तिण्णि सयाणि तेचीसाणि धणुतिभागो य उक्को-
सा सिद्धाणोगाहणा । अट्ट समया णिन्तरं सिज्जंति । उक्कोसेणं समएण अट्टुत्तरं सयं सिज्जइ चि । तत्थ य सिद्धा अजरो-
अमरा उवउत्ता दंसणे य णाणे य साईयमपज्जवसाणं कालं चिट्ठंति । अत्रि य—

कम्मक्खयसंभूयं अचंतकेतसासयं सोवखं । जह अणुहवंति जीवा मोक्खे तं^१ भे णिसामेह ॥ १९ ॥

सव्वद्विमाणाओ बारसजोयणपहम्मि वरसिद्धी । माणुसखेत्तपमाणा उम्मुहसियछत्तसंठाणा ॥ २० ॥

सा य बहुमज्झदेसे अट्टेव य जोयणाणि बाहल्लं । पेरंतेसु य तणुई मच्छियपत्ताउ तणुअयरी ॥ २१ ॥

उत्ताणयसियछत्तायाराए तीए जोयणतुरीए । जो छब्भाओ तत्थ य सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ २२ ॥

पुणं च तह पविचं पहाणकल्लामंगलमुदारं । लोयुत्तरं मुहं ति य परमपयं सासयं भणियं ॥ २३ ॥

अजरममरं^२ अरोगं अकिलेसं सव्वलदंदपरिहीणं । अच्छेज्जं अब्भेयं अणुत्तमं तं अणावाहं ॥ २४ ॥

जमगोयरे अभव्वाण, भवियलोयस्स गोयरीभूयं । तं मोक्खपदं संसंति दिव्ववरणाणिणो सययं ॥ २५ ॥

सम्महंसण-णाणेहिं सैमियियं जं चरित्तमारूढा । ते पाउणंति मणुया अट्टभैव्विमतरे णियमा ॥ २६ ॥

जे सीलमारवहणुज्जया सया तह तवम्मि उज्जुत्ता । ठइयामवदाराऽऽरम्मवज्जिणो गुत्तिगुत्तिछा ॥ २७ ॥

अट्टं रोहं ज्ञाणं चइऊणं धम्म-मुक्कझायारो । मुहपरिणामा णिज्जियमोहा विच्छिण्णकामा य ॥ २८ ॥

समतण-कंचण-मणि-छेट्टुभावभावेहिं भावियसरीरा । बारसविहे तवम्मि य कम्मक्खयकारणऽगयविया ॥ २९ ॥

तित्थयरवयणपंकयविणिग्गयाऽऽगमविसारया धीरा । अंगाण बारसणं पुब्बाण य णिच्छयविहणू ॥ ३० ॥

लहिऊण केवलं स्वयंसेद्धिइ कमेण खीणकम्मंसा । सेलेसिं गंतूणं मुणओ परमं पदं जन्ति ॥ ३१ ॥

उक्कोसेणऽट्टसयं सिज्जति समएण मुक्कबंधाणं । विरहो जहण्ण समओ, उक्कोसो होइ छम्मासा ॥ ३२ ॥

आरोहंति जिणिंदा छ च्चेव य दस उ पंच य विवुद्धा । समएणं सिद्धिपहं दियलोयचुयाण अट्टसयं ॥ ३३ ॥

उक्कोससरीरा^३ दोणि जंति चत्तारि हेट्ठिमा समए । अट्टेव उ मज्झिमया समानदेहा उ सिद्धिगतिं ॥ ३४ ॥

एरंडफलं अग्गी जहा सहावेण होंति उड्ढगती । तंथ सिद्धाण मुणेज्जह कम्मविमुक्काण लोयग्गे ॥ ३५ ॥

ण परेण होइ गमणं लोयग्गोओ उवग्गाहाभावा । तत्थेवावट्ठाणं पुणागमणकारणाभावा ॥ ३६ ॥

सम्मत्त णाण दंसण मुहुमत्तं वीरियं च उग्गाहो । अगखुयलहुयाऽवाहा अट्ट गुणा होंति सिद्धाणं ॥ ३७ ॥

दंडहम्मि जहा बीए पहवइ य ण अंकुरो चि मुपसिद्धं । तह कम्मवीयदाहे भवंकुरो णेय संभवइ ॥ ३८ ॥

१ 'यिखुइ' जे । २ 'त्वम' । ३ 'एतो वि ई' जे । ४ 'उक्कोसोगाहणा' स् । ५ 'रा' अमरा जे । ६ 'तम्मे' स् । ७ 'जोयणाणि' स् ।
८ 'र' मरोग जे स् । ९ 'समिइय' जे । १० 'भवऽव्वेतरे' जे । ११ 'सेद्धिकमेण' जे, सेद्धिकमेण स् । १२ 'दोण्ह' स् । १३ 'तह' जे ।
१४ 'ग्गा होउव' स् ।

घणसंरोहविमुक्तं अहियं जह भाति मंडलं रविणो । तह अट्टकम्ममुक्का सिद्धा दिप्पंति लोयंते ॥ ३९ ॥

जह अण्णोण्णावाहं दीवाण पभाओ होन्ति एगट्ठं । एगत्थाऽवट्ठाणे य तह अमुत्ताण का चिंता ? ॥ ४० ॥

चंदा-ऽऽइच्चा सययं खेचं भासंति परिमियं लोए । लोया-ऽल्लोयपयत्थे सिद्धा भासंति णाणेणं ॥ ४१ ॥

तिणि सए तेत्तीसे धेणुत्तिभागो य एस उक्कोसो । होइ जहण्णवगाहो सतिभागा तत्थ रयणि चि ॥ ४२ ॥

तिरिपरिहितो मणुया, तेहिंतो वि हु णरेसरा मुहिया । तत्तो अकम्मभूमा, तत्तो वि सिद्धा अणंतगुणा ॥ ४३ ॥

जोहत-अन्तरावय्या [य] कण्ठवासी जहुत्तरा मुहिया । तेहिंतो मेवेज्जा, तत्तो वि अणुत्तरा देवा ॥ ४४ ॥

तेसु वि सच्चद्विमाणवासिणोऽच्चन्तसोक्खपडिबद्धा । तत्तो मुहियतरागा लोए सच्चुत्तमा सिद्धा ॥ ४५ ॥

इय एस समक्खाओ मोक्खविही लेसओ मुविहियाणं । फुड-वियड-पायडत्थो वित्थरओऽण्णत्थ दट्ठच्चो ॥ ४६ ॥

किंच सिद्धाण गुणदारेण सद्दो एको वि ण पयट्ठइ चि, जओ सिद्धे संठाणाएसेण ण दीहे ण हस्से ण वट्ठे ण तंसे ण चउरंसे ण परिमंडले । वण्णाएसेणं ण कण्हे ण णीले ण लोहिए ण हालिदे ण सुकिले । गंभाएसेणं ण मुरहिगंधे ण दुरहिगंधे । रसाएसेणं ण तिच्चे ण महुरे ण अंबिले ण कट्टए ण कसाए । फरिसाएसेणं ण मउए ण कक्खडे ण गरुए ण लहुए ण जिद्धे ण लुक्खे ण उण्हे ण सीए । तहा ण पुमं ण इत्थी ण णपुंसए ण सरीरी ण संगट्ठी ण रुहे चि । जइ वा कम्मक्खयाऽहिलावेणं सिद्धाण गुणा भांसियन्वा, तहा हि-स्त्रीणपंचविहणाणावरणिज्जे स्त्रीणणवविहदरिसणा-वरणिज्जे स्त्रीणदुविहवेयणिज्जे स्त्रीणदंसणमोहे स्त्रीणैचारित्तमोहे स्त्रीणचउव्विहाउकम्मे स्त्रीणमुहणामे स्त्रीणामुहणामे स्त्रीणउच्चागोए स्त्रीणणीयागोए स्त्रीणपंचविहंतराए चि । तओ परुविउण मोक्खसरूवं, विहरिउण महिमंडलं, सम्मेय-सेलसिहरे भदवयवहुलऽट्ठमीए सैवणसमीवमुवगए ससहरे समणसहस्सपरिवुडो असेसकम्मक्खयलक्खणं मोक्खम-णुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए अट्ठमतिथयरस्स चंदप्पहसामिणो चरियं समत्तं ॥ १० ॥



[११ पुष्पदंतसामिचरियं]

तओ चंदप्पभाओ सागरोवमकोडीणं णउईए समइकन्ताए धणुसयमुच्चतेणमुच्चिदो पुष्पदंतो समुप्पणो । कहं ?
भणइ—

ते के वि जए जायन्ति पुव्वपुष्पाणुहावगुणकलिया । जाणुप्पत्तीए इमो मुणिवुओ होइ जियलोओ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव भारहे वासे कायंदी णाम णयरी अबंतं मणभिरामा । तत्थ य सुग्गीवो णाम णराहिवो । तस्स य अबंतसुंदरी रामा महादेवी । तीए य सह विसयमुहमणुहवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया य उवट्टिए बालवसन्ते उम्मिल्लमाणामु सहयारमंजरीसु फग्गुणबहुलणवमीए रामा सुहपसुत्ता रयणीए चरिमजामम्मि चोदस महासुमिणे पासिऊण विउद्धा समाणी साहेइ जहाविहिं दइयस्स । तेण वि आसासिया पुत्तजम्मउवुदणं । तीए चेव रयणीए वेजयन्तविमाणाओ चुओ रामाए कुच्छीए समुव्वुओ । जाओ य मग्गसिरबहुलपंचमीए मूलणक्खत्तेणं । पइट्ठावियं च से णामं पुष्पदंतो चि । वडिडओ सह कलाहिं ।

कमेणं पण्णासं पुव्वसहस्सा कुमारभावमणुवाल्लिऊण, तावइया चेव रज्जं भोत्तूण अट्ठावीसं च पुव्वंगोइं, लोयंतियपडिबोहिओ पइण्णामंदरमारुढो । चत्तारि य मासे छउमत्थपरियायमणुवाल्लिऊण कत्तियमुद्धतइयाए मूलगए ससहरे केवलवरणाणमणुपत्तो चि । पव्वाविया य एकासीतिं गणहरा भगवया । चिरइयं देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा । बुज्झंति पाणिणो । तओ एणं चेव कमेणं विहरिऊण पुव्वणं दुवे लक्खा भरहखेत्तं, संबोहिऊण भवियकमलायरे सम्मेयगिरिसिहरे भइवयमुद्धणवमीए मिगसिरणक्खत्ते सिद्धिमणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए णवमतित्थयरस्स पुष्पदन्तस्स चरियं सम्मत्तं ॥

॥ महापुरिसा ११ ॥

[१२ सीयलसामिचरियं]

—:—:—:—

सागरोवमकोडीणं णवहिं गयाहिं पुण्फदन्ताओ सीयलो जाओ चि । कहं ? भण्णइ—

णिज्जियसेसुवमाणा परहियसंपाडणेकववसाया । जायंति महापुरिसा पयाण पुण्णेहिं भुवणम्मि ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे भदिलपुरं णाम णयरं । तत्थ य राया द्ढरहो णाम । तस्स य णंदाए सह महादेवीए विसयसुहमणुहवंतस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अण्णया य वैसाहकिण्हछट्टीए चरिमजामम्मि णंदा सुहपमुत्ता चोइस महासुभिणे पासिऊण विउद्धा समाणी साहेइ जहाविहिं दइयस्स । तेण वि समासासिया पुत्तजम्मेणं । तओ तीए चेव रयणीए पाणयकप्पाओ चुओ समासाइयति-
त्थयरणाम-गोत्तो समुप्पण्णो णंदाए कुच्छिसि । जाओ य कमेणं माहस्स किण्हवारसीए पुव्वासाढाहिं । पइट्ठावियं च से णामं सीयलो चि । कमेण य संवड्ढिओ ।

तओ कियन्तमवि कालं कुमारभावमणुपालिऊण, रज्जं च अणुपालिऊण, माहस्स किण्हतरसीए आसाढाहिं लोयन्ति-
यपडिबोहिओ पच्चक्खदिट्ठविलयं पिव णणइणिं रायलच्छि परिहरिऊण पडिवण्णो समणत्तणं । अणुकमेण य विहरिउं भरह्खेत्तं, अहियासेऊण बावीसं परीसहे, विहाडेऊण मोहजालं, उम्मूलेऊण अंतराण्ण सह णाण-दंसणावरणमासाइयं सासयमेगविहमण्डिवादि अणागयपयत्थसैवभावभासयं आसाढकिण्हसत्तमीए पुव्वासाढाहिं केवलणाणं । विरइयं देवेहिं समोसरणं । पच्चावियां छहत्तरिं गणहरा । पत्थुया धम्मकहा । बुज्झन्ति पाणिणो । छट्ठेति विसयसंगं, उज्झन्ति राय-
सिरिं, सिद्धिलेति णेहपासे, विज्झवेति कोहमिं, लंघंति माणपच्चयं, छिंदंति मायाकुंडंगी, परिहरंति लोहणारोट्टं च बहवे पाणिणो । किंच—

उप्पण्णम्मि अणंते णट्ठम्मि यं छाउमत्थिए णाणे । देवेहिं समोसरणे रइए सिंघासणसणाहे ॥ २ ॥

तत्थुवविट्ठो अणिमित्तवच्छलो भुवणभूसणो भयवं । धम्मं दोग्गइधरणेकपच्चलं साहइ पयाण ॥ ३ ॥

सुर-मणुया-ऽसुरतिरिओववेयपरिसाए साहइ जिणिंदो । जह संसारज्जहट्ठे भमंति जीवा अपारम्मि ॥ ४ ॥

मिच्छत्त-कसाया-ऽविरति-गुरुपमाण जोगसंजुत्ता । बंधन्ति विविदकम्मं भमंति भवसागरे जेण ॥ ५ ॥

सम्मत्त-णाण-चरणेहिं सम्ममाराहिएहिं जह मोक्खं । पावेंति समियपावा जीवा तह साहइ जिणिंदो ॥ ६ ॥

सम्मत्तऽणुहावेणं देवत्तं तह सुमाणुसत्तं च । पावेंति केइ जीवा जिणिंदधम्माणुहावेणं ॥ ७ ॥

मोत्तूण सयण-धण-परियणाइयं तह निसंगभावेणं । विहिणा चारित्तधुरं धरिऊणं जंति सिद्धिगतिं ॥ ८ ॥

इय साहेइ जिणिंदो समुरा-ऽसुर-तिरिय-मणुयपरिसाए । धम्मं सोग्गइमग्गं दोग्गइमग्गमलं विहिणा ॥ ९ ॥

एवमणुकमेणं काऊण धम्मदेसणं, विहरिऊण महिमंडलं, पुव्वलक्खमाउयमणुपालिऊण सम्मेयगिरिसिहरे वैसाह-
किण्हवीयाए पुव्वासाढाहि णेव्वाणमणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए दसमतित्थयरस्स सीयलस्स चरियं सम्मत्तं ॥ १२ ॥

—

१-पाणइक्कं जे । २-राएण जे । ३-सच्चयमां जे । ४-या गणं सू । ५-गिं लुपति मां सू । ६-कुड्ढो जे । ७-उ जे ।
८-असुरणसामुरतिरि जे सू । ९-धुरुपमां जे सू ।

[१३ सेज्जंससामिचरियं]



सागरोवमसणं छावट्टीएण वरिसलक्खेहिं छब्बीसाए वरिससहस्सेहिं ऊणाए सागरोवमकोट्टीए गयाए तओ सीयलाओ सेज्जंसो समुप्पणो त्ति । कहं ? ति, भण्णाति—

सुहकम्मकंदवावियविसट्ठसुहकिसलयाण गरुयाण । पुरिसाण संभेवो ताण जाण उवमा ण संभवइ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे सिंचपुरी णाम णयरी । तीए णयरीए विण्हू णामेण णराहिवो । तस्स य सयलंतेउरपहाणा सिरी णामेण महादेवी । तीए य सह विसयसुहमणुहवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया य समागओ गिम्हो । तओ दुग्गायसप्पुरिससरीरं व अणवरयं तणुइहोइ सरसलिलं, पच्छण्णपावसैंकह व्व हिययं उइइ मही, अवि य—

झिज्जइ रयणी वइहंति वासरा तवइ मंडलं रविणो । उण्हो खरो य पवणो कालो भण किं ण दंसेइ ? ॥ २ ॥

देसु जलदं देहम्मि, हारमाहरसु, किरसु कप्पूरं । चंदणरसेण सिंचसु, णलिणीदलसत्थरं कुणसु ॥ ३ ॥

मंदंदोलणउक्खेवक्खेवपवणेण खेयमवहरसु । इय पसरिउं पैयत्ता उल्लावा परियणे पैहुणो ॥ ४ ॥

झंझापवणुद्धुयधूलिपडलपसरन्तरुद्धदिसियके । गिम्हे णडिया मायण्हियाए पडियाण पन्थारी ॥ ५ ॥

कासारोयरसेसम्मि पंककलुसे जलम्मि तदियहं । कह कह वि णेइ गुरुसेरभीण जूहं पि मज्झण्हं ॥ ६ ॥

इय एरिसम्मि गिम्हे तण्हासन्तावतावियसरीरा । उज्झन्ति णेय णिइं हरिणा वाहं पि दट्ठणं ॥ ७ ॥

तओ एरिसम्मि काले वट्ठन्ते जेट्ठस्स किण्हल्लट्टीए सवणणक्खत्ते सिरी सुहपसुत्ता रयणीए चरिमजामम्मि चोइस महासुमिणे पासिऊण विउद्धा साहेइ जहाविहिं दइयस्स । तेण वि पुत्तजम्मेणाभिणंदिया ।

इओ य समासाइयतित्थयरणाम-गोत्तो भगवओ जीवो महासुद्धाओ चइऊण तीए चेव रयणीए सिरीए गव्वम्मि समुप्पणो । जाओ य फग्गुणस्स किण्हवारसीए सवणेणं । पइट्ठावियं च से णामं सेज्जंसो त्ति । पुव्वकमेणेव वडिहओ विवाहिओ य ।

तओ लोयन्तियपडिवोहिओ फग्गुणवहुलतेरसीए सवणेणं आरूढो पण्णामंदरं । पालिऊण छउमत्थपरियायं तओ असोयरुक्खस्स अहे ज्ञाणंतरियाए वट्ठमाणस्स उप्पणं तीया-ऽणागवत्तुब्भासणं वइसाहकिण्हणयमीए सवणेणं केवलं ति । विरइयं देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा । बुज्झंति पाणिणो, छिज्जंति संसया । उवदिट्ठाणि भगवया महापयाणि, तं जहा-उप्पणो इ वा विगए इ वा धुए इ वा । तओ तयणुसारेणं विसिट्ठवओवसमलद्धिसंपण्णेहिं गणहरेहिं विरइयाणि आग्यारइणि वारस वि अंगाणि । पत्थुया धम्मकहा । साहिओ सम्मत्त-णाण-चरणरूओ मोक्खमग्गो^१ । उवइट्ठं सच्चो-णुरूवं सम्मत्तं । तं च दुभेयं-णिसग्गसम्मदंसणं अहिगमसम्मदंसणं च । परुविया जीवा-ऽजीवा-ऽऽसव-संवर-बंध-निज्जरा-

१ "ओ य से" जे । २ संभवताण सू । ३ विट्ठ सू, विट्ठ जे । ४ "संक व्य जे । ५ "खेयव" सू । ६ पणत्ता जे । ७ पवणो सू । ८ उवदिट्ठाणि जे सू । ९ अंगाइ जे । १० "ग्गो ति । उ" जे । ११ सन्वाणुं सू ।

मोक्खपज्जवसाणा सत्त पयत्था । सिद्धा य दुविहा जीवा-संसार[स]मावणा सिद्धा य । तत्थ संसारिणो दुविहा-तसा थावरा । तत्थ थावरा पुढविकाइया आउकाइया वाउकाइया तेउकाइया वणस्सइकाइया । तसा उण वेइंदिया किमिया-दओ, तेइंदिया पिशीलिकादओ, चउरिंदिया भाच्छियादओ, पंचांदिया तिंरिया मणुया देवा णेरइया य । अजीवा-खंधा खंधदेसा खंधप्पसा परमाणुपोग्गला । धम्मत्थिकाओ धम्मत्थिकायदेसो धम्मत्थिकायस्स पप्सो । एवमधम्मत्थि-काओ वि । आगासत्थिकाओ वि एवं चेव दट्ठवो । आसवो कम्मप्पवेसोवाओ, सो उण हिंसादीणि पावाणुद्वाणाणि । संवरो पुण पावकम्मणिरोहो । बंधो मिच्छत्ता-उविरइ-पमाय-कसाय-जोगेहिं कम्मवग्गणाणं गहणं । णिज्जरा आया-वणाईहिं अमुहकम्मविणिज्जरणं । मोक्खो असेसकम्मक्खयलक्खणो चि ।

एवं विहरिउण भरहस्सेत्तं, दाउण हेत्थावलम्बणं संसारपंकवुत्ताण भवियसत्ताणं, पत्तो य भयवं सम्मेयगिरि-सिहरं । तत्थ य सावणवहुलतइयाए सवणणक्खत्ते चउरासीति वरिसलक्खे आउयमणुपालिउणं सिद्धो चि ॥

इति महापुरिसचरिए सेज्जंसस्स एकारसमैस्स
तित्थयरस्स चरियं समत्तं ॥ १३ ॥

[१४-१५ तिविट्टुवासुदेव-अयलबलदेवाण चरियं]

—:×:—:

सेज्जंसतिथयरकाल एव तिविट्टु णामेण अद्धक्कवट्ठी असीइधणुमुओ चउरासीवरिसलक्खाऊ समुप्पण्णो । कहं ?
मण्णइ—

मणयं पि णेय विसइइ सूरु तेयस्सिणं वियंभन्तं । जेण मल्लिउं मियंके पच्छा भुवणं पसाहेइ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे पोयणपुरं णाम णयरं । तत्थ य राया पसाहियासेसदिसावलओ
पयावई णामेण परिवसइ । तस्स य महादेवी सव्वंगमुंदरी मिगावई णाम, अवि य—

मणिकिरणकरं वियकुसुमदामसंवलियपम्हपम्भारो । घणसण्हकिण्हणिद्धो णिज्जियसिहिकुंतलकलावो ॥ २ ॥

सयलकलालयससिविम्बेविम्हयुग्मारकन्तिपडहत्थं । वयणं मयणुम्मिल्लंतपंडुगंडयलैराहिल्लं ॥ ३ ॥

अण्णोण्णपीडणुव्मडपरिणाहाओअरुद्धवच्छयलं । उवरिपहोलिरहारं अलद्धविवरं थणावीदं ॥ ४ ॥

णिज्जियसेसुवमाणं मणिमयकडयुच्छलन्तहलबोलं । परिणाहपीवरावं दुराहयं(?) बाहुजुयलं से ॥ ५ ॥

अहमहमियवडुदंतेहिं रमण-थणेहिं तथा परिकखविओ । जइ मुट्ठिमेत्तगेज्जो मज्झो खामोयरगुणेण ॥ ६ ॥

णवघडणकंचिदामोरुभूसिओ वियडरमणपम्भारो । मयणकलहंसरमणेकजोग्गपुल्लिगत्यलुच्छंणो ॥ ७ ॥

णिच्छल्लियरम्भागम्भसच्छहं पीणजायपरिणाहं । वररमणभवणखंभं थिरोरुजुयलं मणभिरामं ॥ ८ ॥

सायडिदयकलहंसालिमणितुलाकोडिरयणवेंचइयं । आकिद्धसंभिवंधणगूढसिरं चल्लणजुयलं से ॥ ९ ॥

इय मणहरसव्वंगाए भूसियासेसभूसणगुणाए । भुंजइ इमीए सदिं राया हियइच्छिए भोए ॥ १० ॥

एवं च राइणो विसयमुदमणुइवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अण्णया य मिरिइंजीवो संसारमहिंढिऊण अणंतरभवे महासुक्काओ चुओ इमीए गम्भम्मि समुप्पण्णो । दिट्ठा य
तीए रयणीए सत्त महामुमिणा । साहिया दइयस्स । तेण वि समासासिया पुत्तजम्मेणं । तओ पुण्णेसु णवसु भासेसु
अद्धमेसु राइंदिपसु सुहंसुहेण दारयं पसूया । कयं वद्धावणयं । मुक्काणि सव्वबंधणाणि । तस्स य पट्ठीए वंसतियं
दट्ठण माया-पितीहिं तिविट्टु चि णामं कयं । तस्स य जेट्ठमाउओ अयलो णाम बलदेवो चि । सो य तिविट्टु
वज्जरिसहणारायसंधयणो महावल-परकमो सव्वमेव लोयं अभिभवन्तो वडिदउमादत्तो । उम्मुक्कवालभावो य विक्कमेक्क-
रसिओ सुहडावलेवं वडिदउमादत्तो । अवि य—

तूसइ वीरकहामुं पसंसई साहसेकरसिए उ । दट्ठण य सोडीरं अहियं रोमंचमुव्वइइ ॥ ११ ॥

एवं अणवरयं वीरकहं पसंसंतस्स आणंदियजणणि-जणयस्स विणिग्गयसाहुकारस्स सयललोयचमकारकारिचेट्ठियस्स
समुप्पण्णा बुद्धी-किमहं जुवइजणो व्व अणिग्गयपयावो अविण्णायलोयवला-उवलो घरमेत्तवावारो चिट्ठामि?, ता
णिग्गंतूण घराओ पयडेमि पोरुसं, पयासेमि भुयवलं, तोलेमि अप्पाणयं, अवणेमि णीसेसाणं वलाहिमाणं । इति
चित्तिऊण आउच्छिऊण य जणणि-जणए आरुहिऊण य रहवरं कइवयवलसमेओ णियभुयदंडसमेओ कयविक्रमंगरक्खो
विणिओइयणियवोहमंती अवमण्णियासेससोडीरो महिमंडलं भमिउमादत्तो ।

१ 'विम्हयुग्मार' जे । २ 'लरेहि' जे । ३ 'वद्धतेहि' जे । ४ 'जुवलं' जे । ५ 'मिरीजी' ख । ६ 'महसु' ख । ७ 'अयलो' ख ।

८ 'अवि य' इति खपुस्तके नास्ति । ९ 'भुवणं' जे ।

दिट्ठो य तेण सच्छंदविहारिणा पव्वयासणपएसे पउत्थजणवओ तहट्ठियदेवउल-विहारा-SSराम-गाम-णयरो अणहवरमवणणिरंतरो वरपोमिणिसंडमंडिओ पोवखरिणी-दीहियेराहिल्लो उव्वसिओ देसो । तं च तहाविहं दट्ठण पुच्छिओ गिययसारही-कहेहि, केण उण दोसेण अयमचन्ताहिरामो उव्वसिओ देसो ? । तेण भणियं—“सामि ! सुणसु, इहाSSसअपव्वयगुहाए विणिज्जियासेसमत्तमायंगो दुव्विसहचवेडाभामुरो पवणवसाSSगयल्लुगंधपणट्टमयजूहो घणरवुप्पित्थपहयैलंगूलमैहीवीहो असोढसिघणाओ परिवसइ सीहो । तेण य वावाइज्जंतेसु णरसमूहेसु, भक्खिज्जन्तेसु चउप्पएसु, उचासिज्जंतेसु गाम-णयरेसु, गहियमहामओ उव्वसिओ एस देसो” चि । तओ तमायण्णिऊण भणियं कुमारेण—दट्ठओ एस महासत्तो विक्रमेक्करसिओ, चोएसु तस्स सम्मुइं रहवरं ति । भणियं सारहिणा—किमणेणमणत्थडं-डेण ? , ण अम्हाणमणेण देसेण वसिएण उव्वसिएण वा पओयणं, ण य सीहेण वावाइएणं ति । तमायण्णिऊण भणियं कुमारेण—“नणु एयं चेव पओयणं जं परविक्रमासदणं ति । किं वा फलमवेक्खिऊण घणरवायण्णेण रूसइ मयाहिवो ? , अवि य—

अणवेक्खिऊण कज्जं, जसं च जीयं च जे पयट्ठन्ति । कज्जारंमेसु सया ताण सिरी देइ सण्णेज्जं ॥ १२ ॥

किं तुमं इमाओ वि मयाSSमिसुल्लिहडाओ सीहसावयाओ भयासंकं कुणंतो मं लज्जावेसु ? चि । ता किमिमिणा ? , चोएसु रहवरं” ति । तओ सारहिणा चोइओ रहो सीहगुहासम्मुहो । पत्तो य गुहादारदेसं । आयण्णिऊण य रहवर-णिग्घोसं ईसीसिगयजूहासंकाए उम्मिल्लियं लोयणजुयं सीहेण । तओ पेच्छिऊण माणुसं पुणरवि जायावल्लोयणसम्मि-ल्लियं लोयणजुयलं । तओ अवट्ठंमं पेच्छिऊण भणियं कुमारेणं—भो भो महासत्त ! अवट्ठंमेणेव साहियं तुह पोरुसं, पयडइ य परिहरियगोयरैवहो असेसवीरपुरिसोव्वसियणिज्जणो तुह परकमं देसो, ता महं जायतिरिक्खदयस्स वि अस-हियपरकमस्स तुह बल्लवल्लोयणकोउहलाउलस्स इहागमणं ति, ता उट्ठेसु, दंसेसु गिययपरकमं, चयसु अलियणिइं । तओ तमायण्णिऊण धुणिऊण कडारकेसरसड्डम्यायं पहयणंगूलवरणिहरधरणियल्लो उण्णामियSSगकायदेसो वित्थारिय-मुहकुहरो वियम्मिउमाढत्तो । तओ तमुट्ठियं दट्ठण चित्तियं कुमारेण—एस ताव तिरिओ गिराउहो भूमिगओ य, ता ण जुचं मह आउहं धरेउं रहवरारुडस्स य एएण सद्धिं जुट्ठेउं ति । एयं चित्तेन्तो ओइण्णो रहवराओ । भणिओ य सारहिणा—कुमार ! ण जुत्तमेयं भवओ, जइ वि महाबल-परकमो भवं तहा वि एस सीहो जाइपच्चपणेय अवहत्थियसेसपुरिसवीरिओ, विसेसेण एस चि, ता आरुहसु रहवरं, कुणसु सण्णाइं, गिण्हसु कालोचियमाउहं ति, वावाइएण एएण पओयणं, ण उण एरिसेण विहाणेण जारिसं तुमए आढत्तं ति, ता कुमारो अणुयत्तउ मह वयणं ति । तमायण्णिऊण भणियं कुमारेण—सव्वहा तुह वयणं मए सव्वकालमणुयत्तियं, इण्हि पुण तुमए अणुयत्तणीयं । ति भणिऊण हकारिओ सीहकिसोरो, भणिओ य—रे रे दुट्ठेतिरिक्खजोणिय ! एस संपयं ण “होसि चि । तओ रेरेकाराणन्तरमेव सीहेणं अवलेवेण सज्जिओ कमो । ताव य कुमारेण उभयकरयलगहियअहरुत्तरोट्टउडेण फालिओ मज्जेणं “चेय सीहकिसोरो । तओ फालिओ चेव अमरिसेण चडप्फडिउमाढत्तो । तहापरिफुरंतो य भणिओ सारहिणा जहा—रे सीह ! मा एवं चडप्फडसु, ण य तुमं पाययपुरिसेण वावाइओ, किंतु पुरिससीहेणं ति ता मा संतप्प । तमायण्णिऊण य ववगयरोसप्पसरो चिवण्णो सीहो । पसंसिओ कुमारो सारहिणा । वसाविओ य देसो । अप्पणा महिमंडलं विहरिउमाढत्तो ।

अणया य संखउरणगरावासियस्स कुमारस्स सारहिणा उज्जाणगएणं गुणचंदाहिहाणो चउण्णाणी वैहुसाहुपरि-वारिओ संसए छिंदंतो लोयाणमवणेन्तो मोहणिइं अहाफामुए पएसे दिट्ठो चि । तओ तं दट्ठण समुप्पणविम्हओ हरिसवमुप्फुल्लोयणो कोउहलावूरिज्जंतहिययवियसमाणणयणजुयल्लो पत्तो साहुसमीवं । वंदिया य रोमंचकंचुड्डेण

१ “मरेहो जे । २ “ण य भ” जे । ३ “वणगूल” जे । ४ “महंवेडा” सु । ५ “पयसति” जे । ६ “सिमय” जे । ७ “रतणो अ” जे । ८ “जुट्ठेउं” जे । ९ “तिरियओ” जे । १० “होहि । तं” जे । ११ “चेव” जे । १२ “अदरोसेण” जे । १३ “बहुक्कणपरिवारिओ” सु ।

गुरवो । उचविद्वो य चलणन्ति ए धम्मं सोउमादत्तो । पुच्छिओ य कहावसाणे जहा—“भयवं ! अचंतकूरकम्मकारी णर-तिरियवावायणपसत्तो अम्ह सामिणा वावाइओ गिरिगुहाए वसंतो सीहो चि । सो य अचन्तवल-परकमो अवमणिय-सेससप्पुरिसो उदो चेव फालिओ कुमारेणं । तहागओ वि रोसावेसेण फुरफुरन्तो 'चेव चिद्वइ, ण जीवियं परिचयइ । तओ मए भणिओ जहा—भो महासत्त ! पुरिससीहेण तं वावाइओ, ण सामण्यपुरिसेणं । ति मुण्डिऊण पंचत्तमुवगओ । ता साइ भगवं ! किं सो तिरिक्खभावे वि परिफुडविण्णाणो लक्खेइ किं पि भणियमुंयाउ ण व ?” चि । तओ तमा-यण्डिऊण भणियं दिव्वणाणिणा—महासत्त ! मुणसु महंती कहा तए पुच्छिय चि ।

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे इत्तस्सागभूमि । तत्थ णाभी कुलगरो । तस्स य मरुदेवीए भारियाए समुप्पण्णो उस्सहसामी तित्थयरो । तस्स य उप्पण्णदिव्वणाणस्स पुत्तस्स भरहचक्कवट्ठिणो सुओ मिंरिई समुप्पण्णवेरग्गो पव्वइओ, जहुत्तविहारी विहरइ ।

अण्णयाँ अचिन्तसच्चित्तणओ कम्मपरिणईए, अवस्सभावित्तणओ तस्स भावस्स, जाणन्तस्स वि उम्मग्गदेसणापरिणाम-फलं तस्सुम्मग्गदेसणापरिणामो संवुत्तो । पयट्ठविद्यं च तेण कुलिगं भागवयदरिस्सणं । उवसंते य सीसत्तेण साहूण समप्पेइ । ‘गिलाणपडिजागरंति एगं पव्वावेमि’ चि चिन्तयन्तस्स उवट्ठिओ कविलाहिहाणो रायपुत्तो । साहिओ य तस्स साहुधम्मो । भणियं च तेण—जइ एवं ता कीस तुमं एवंविहलिंगधारी संवुत्तो ? । तेण भणियं—कविला ! एत्थं पि अत्थि धम्मो, साहुदंसणे वि अत्थि चि । तओ एएण दुब्भासिएण वदं दुहविवागं कम्मं । पव्वाविओ य कविलो । चिद्वइ तस्संतिए । सरइ संसारो । मिरीयी वि चउरासीपुव्वलक्खे आउयमणुवालिऊण, चइऊण अणसणविहिणा तस्स य दुब्भासियट्ठाणस्स अपडिकंतो, मरिऊण बम्मलोए कप्पे दससागरोवमाई(वम)द्विईओ देवो समुप्पण्णो ।

कविलो वि गन्धत्यविण्णाणरहिओ केवलं तकिरियाणुट्ठाणपरायणो विहरति । अण्णया तेण आसुरी णाम पव्वाविओ । तस्स य सो कविलो आयारमेत्तं उदिसिऊण, अण्णे य बहवे सीसा पव्वावेऊण य, सदरिसणाणुगय-चित्तो मरिऊण बम्मलोगं चेव गओ । तेण य उप्पत्तिसमणंतरमेव उवउत्तो ओही, उवल्लदो पुव्वजम्मवुत्तन्तो । चित्तियं च णेण जहा—मज्झ सीसो विसिट्ठविण्णाणरहिओ, ता एयस्स उवइसामि तत्तं । ति चित्तिऊण ओइण्णो मत्तलोए । आगास-त्यपंचमंडलकोवट्ठो तत्तं उदिसिउमादत्तो, तं जहा—अव्वत्ताओ तिमणपरिणामप्पहाणाओ वत्तं पव्वइ चि । तओ तस्सुवप्पेणं सद्विठतंतं संजायं ति ।

मिरीयी वि देवलोगाओ चविऊण कोल्लागसन्निवेसे कोसिओ णाम बम्मणत्तणेण समुप्पण्णो । तत्थ य असीर्ति पुव्वलक्खे आउयमणुवालिऊण, अन्ते य परिच्चायगत्तणेणं विहरिऊण, कालं च काऊण मओ । मरिऊण अजहण्णुकोस-द्विईओ सोहम्मे कप्पे समुप्पण्णो ।

तओ य चइऊण चेइए सण्णिवेसे अग्गिज्जोओ णाम बंभणो समुप्पण्णो । तत्थ य चउसट्ठि पुव्वलक्खे आउयम-णुवालिऊण अन्ते परिच्चायओ होऊण मओ । मरिऊण य ईसाणे कप्पेऽजहण्णुकोसद्विई देवो समुप्पण्णो ।

तओ य चइऊण मंदिरे णगरे अग्गिभूई णाम बंभणो संवुत्तो । तत्थ य छपंचासे पुव्वलक्खे आउयमणुपालि-ऊण अन्ते परिच्चायगत्तणेणं मरिऊण सणंकुमारो मज्झिमट्ठिईओ देवो समुप्पण्णो ।

पुणो सणंकुमाराओ चविऊण सेयवियाए णयरीए भारद्वाओ णाम बंभणो समुप्पण्णो । तत्थ य चोयालीसं पुव्वलक्खे आउयमणुवालिऊण अन्ते य परिच्चायगत्तणमणुवालिऊण पंचत्तमुवगओ । मरिऊण मार्हिदे कप्पे मज्झिमट्ठि-ईओ देवो समुप्पण्णो ।

तओ वि पुओ पुणो संसारमार्हिडिऊण रायगिहे णगरे थावरो णाम बंभणो समुप्पण्णो । तत्थ य चोत्तीसं पुव्व-लक्खे आउयमणुवालिऊण पज्जन्ते परिच्चायगत्तणेण मरिऊण बंभलोए मज्झिमट्ठिईओ देवो समुप्पण्णो ।

१ चेय जे । २ उवाहु=उवाड, उताहो । ३ मिरीयी जे । ४ 'या य अ' सु । ५ 'एणं ति ए' जे । ६ च-जइ जे । ७ दुभासि' जे । ८ अजहण्णु' सु । ९ चविऊण जे । १० चोत्तीसं जे ।

तओ वि चैविऊण चउणइसंसारकन्तारं परिब्भमिओ । भमिऊण य अणंतरमवे तहाविहं किं पि कम्मं काऊण रायणिहे णगरं विस्सणंदी राया, तस्स भाया विसाहभूई जुवराओ चि । तस्स य जुवरायस्स धारिणीए महादेवीए पुत्तो विस्सभूती णामेण जाओ । सो य देवकुमारोवमसरीरो जुवाणो दोगुंदुयदेवो व्व णाणाविहकीडाविणोयेणं गयं पि कालं ण लक्खेइ । तत्थ य णयरे पुप्फकरंडयं णाम उज्जाणं बहुविहकुसुमसमिद्धं । तत्थ य सो विस्सभूती जुवरायपुत्तो णाणाविहाहिं कीडाहिं अन्तेउरसमेओ कीडइ चि ।

इओ य राइणो पुत्तो विसाहणंदी उज्जाणवाहिरगओ तप्पवेससमूसुओ चिट्ठई । तेसिं च कुलायारो 'जत्थ एगो कीलइ तत्थ वीएण ण पविसियच्चं' ति । तस्स य जणणीदासीओ पुप्फनिमित्तं पविट्ठाओ तं विस्सभूइं विलसन्तं पेक्खिऊण साहेति रायऽग्गमहिंसीए जहा—जुवरायपुत्तो 'चेय एत्थ पुहतीए एक्को जीवइ जस्सेरिसं विलसियं, राय-पुत्तो पुण विसाहणंदी जणवओ व्व ओहयमणसंकप्पो पुप्फकरंडयपासेमु तम्मन्तो चिट्ठति । तओ एयमायणिऊण रायऽग्गमहिंसीए रूसिऊण तहा भणिओ राया जहा तेण पडिबण्णं, भणिया [य]—

मा संतप्पमु सुंदरि !, जीयं रज्जं च मह तुहायत्तं । दासोवरि किं रोसेण देवि ! आएसजोगस्स ? ॥ १३ ॥

हेसिऊण कीस किज्जइ सरिसपयं पेसणस्स जो जोगो ? । ता तह करेमि सामिणि ! जह तुह पुत्तो मुहं लहइ ॥ १४ ॥

एवं च महादेविं परिसंठविऊण, राइणा संपहारिऊण सह मंतिणा, आहणाविया पयाणभेरी । तओ समाउलीभूया महामंतिणो । चित्थियं च—किमेयमिति । तओ तमायणिऊण विस्सभूइणा विण्णविओ राया—देव ! किं पयाणपयो-यणं ? ति । भणियं च राइणा— पुत्त ! अत्थि पचंतणराहिवो पुरिससीहो णामेणं, तेण य विकारं दंसेऊण हओ अम्ह देसो, अकन्ते अम्ह मंडलं, कओ अम्हाण महंतो परिसयो, ता 'ण जुत्तं कलंकिएणं जीविएणं' ति कलिऊण य तच्च-वायणणिमित्तं दिण्णं ये पयाणयं ति । तओ तमायणिऊण भणियं कुमारेण—जइ एवं ता अच्छउ देवो, कुणउ महाऽऽप-सेणं पसाओ, अवणेमि तुम्ह पसाएण तस्स बलाबलेवं, दंसेमि दुण्णयस्स फलविवागं । ति भणिए दिण्णो आदेसो राइणा कुमारस्स ।

तेण य 'महापसायं' काऊण दिण्णं पयाणयं महया चडयरेणं, पत्तो य देसंतरं । जाव य सच्चमेव सुत्थं पेच्छइ । पेसिओ दूओ पुरिससीहस्स जहा—समागओ कुमारो विस्सभूई देसदंसणत्थं, ता कुणसु जहोचियं । गंतूणं य दूएण साहियं सव्वं । तेण विण्णायकुमारागमणेण पेसिया वीसंभत्थाणीया महत्तमा, भणिया य ते—मह वयणेण विण्णवेइ कुमारं जहा—'अइभूमिं समागओ कुमारो ता अलंकरेउ अम्ह नयरमागमणेणं ति, कुणउ पसायं दंसणेणं' ति । एवं च गंतूण विण्णचे समागओ णयरं । कयं सव्वं जहोचियं । पट्टओ सविहवेणं । सविसेसं च दिण्णं जं पुत्तिं च दिज्जंतं । समासादियजहि-ट्ठकज्जो य चलिओ सणगराभिमुहं ति ।

इओ य राइणा जिययपुत्तो विस्सणंदी विस्सभूइणिग्गमणाणंतरमेव भणिओ जहा—पविसमु पुप्फकरंडयं, अच्छमु जहिच्छं ति । विस्सणंदी य जियअन्तेउरसमेओ विचित्तीकालाहिं कीलिउमारदो । इओ य विस्सभूती अण-वरयपयाणएहिं समागओ णयरं । पविसिउमाहत्तो पुप्फकरंडयं । ताव य वारिओ पडिहारेणं जहा—देव ! कुमारो विस्सणंदी सह अन्तेउरेण इह चिट्ठति, ता ण जुत्तं देवस्स इह पविसिउं । तओ तमायणिऊण चित्थियं कुमारेण—पचन्त-ववएसेण अहं णीणिओ पुप्फकरंडयाओ, पवेसिओ य विस्सणंदी, ता तायस्स ण जुत्तेमेवं मायाए ववहरिउं । तज्जिया विस्सणंदिपुरिसा, भणिया य—तुम्ह बलेण एस कुमारो अभिरमइ, ता किं तुम्हाण कीरउ ? ति । तेहिं भणियं—केरिसं पुण तुम्ह बलं जेजेवं जंपह ? ति । तेण वि य मुट्ठिपहारेण पहओ कविट्ठो, आयंपिओ सह धरणिबट्ठेणं, पडियाणि य जिस्सेसाणि फलाणि धरणीए । भणियं कुमारेण—अत्थि तुम्ह दुण्णयणिच्चहणस्स वीयं महाराउ चि, तस्स बलेणं चेव जीवह । चि भणिऊण वेस्समावण्णो । चित्थियं च णेणं—

विसयाण कए पुरिसा विडम्बणं तं जयम्मि पावन्ति । जं साहिउं ण तीरइ वेवंतुप्पित्थहियएहिं ॥ १५ ॥

१ चइऊं जे । २ 'ण' । सो सू । ३ 'इ' ति । ते' जे । ४ चेव जे । ५ 'रुसं' जे सू । ६ 'व पारं' सू । ७ 'यं किमेयं ?' ति जे । ८ 'या-कि' सू । ९ 'न्ता महिउ' सू । १० 'ण य दू' जे । ११ 'तमेयं' जे ।

मोत्तुण पक्खवायं सुइरं कलिऊण सच्चुदीए । भोएहिं सुहं जइ होइ किंचि ता साहसु फुडत्थं ॥ १६ ॥

अवि य—

जोव्वण-मयणुम्मत्तेहिं विसयत्तण्हाविमोहियमणेहिं । जं कीरइ इह पुरिसाहमेहिं तं गिरयगइमूलं ॥ १७ ॥

लहिऊणं मणुयभवं सोग्गइगमणेककारणमणगं । माणिकं पिच दुलहं विसयपसंगेण हारवियं ॥ १८ ॥

मणुयत्तणं विवेयं मुकुलुप्पत्ती विसिट्ठसंसमी । लज्जं गुरुयणभत्तिं च चयइ विसएहिं वेळविवो ॥ १९ ॥

विसएहिं हीरं सणो लेसिं पुरिसइमाण विरसेहिं । परिगलियसुहविवेयत्तणेण ते होन्तेऽसप्पुरिसा ॥ २० ॥

साहीणे मोक्खपइहे सुहपरिणामे य गियसमुत्थाणे । मूढत्तणेण लोओ विसए पत्थेइ बहुदोसे ॥ २१ ॥

विसयसुहलालसाणं सुमग्गमंदाऽऽयराण पुरिसाण । अमुणियसारविसेसाण गलइ हत्थद्वियं अमयं ॥ २२ ॥

किं तह मोहियमइणा विरसे संसारसागरे घोरे । विसयसुहाऽऽसाणडिण्णं खिज्जियं स्त्रीणपुण्णेणं ? ॥ २३ ॥

पुरिसाण णमो जे गिज्जिणन्ति संसारसायरे घोरे । मय-मयणवाणजणणेकपचले जुवइविज्जोए ॥ २४ ॥

इय उज्झिऊण विसए पावे पावाणमासवे घोरे । साहेमि अण्णमणो हु पुच्चपुरिसज्जियं धम्मं ॥ २५ ॥

एवं च गरुयसंवेगावणाहियओ दूरज्झियविसयसुहादिलासो परिच्छिण्णसंसारसहावो पडिवण्णसप्पुरिसचरिओ विजयसीहाऽऽयरियसमीवे पडिवण्णो पव्वज्जं । तओ अहिज्जियमुत्तऽत्थो पडिवण्णो पंकलविहारित्तणं ।

अण्णया य विस्सणंदी संखउरं विवाहणिमित्तं गओ । विस्सभूती वि अणगारो तम्मि चेव नगरे विहरंतो समागओ । पविट्ठो मासस्स पारणए भिक्खाणिमित्तं णगरं । दिट्ठो य विहरमाणो विस्सणंदिपुरिसेहिं, पचभिण्णाओ । दट्ठण य तेसिं समुप्पण्णो मच्छरो, वियम्मियमण्णाणतिमिरं । अण्णाणंधयारमोहियमईए मुक्का अहिणवपसुया गावी । तीए समुहाणओ णोल्लिओ, पडिओ य । कओ हलबोलो विस्सणंदिपुरिसेहिं । भणियं च णेहिं—कहिं गयं तं तुज्झ कविट्ठपा-
ठणवलं ? ति । पचभिण्णाया य जहा—एए विस्सणंदिसंतिया पुरिसा । तयणन्तरमेव साहुणो पणट्ठो विवेओ, परि-
गलिओ उवसमो, पज्जलिओ कोहमी । धाविऊण य गहिया गावी सिंगगेहिं, भमाडिया सीसोवहिं, तणपूलियं व्व पक्खित्ता धरणीए । भणियं च णेण—“रे रे कापुरिसाहमा ! कोलहुयसमसीसिया होऊण मं उवहसह ? । किं छुहापरिगय-
दुब्बलसरीरस्स वि भुयगाहिवइणो मुहकुहरे अंगुलिं पक्खिवित्तं कोइ समत्थो ? ति । किंच—

किं कीरइ मह तुम्हारिसेहिं गोमाउ-साणसरिसेहिं । गहकल्लोलसमेहिं पयडियमुहमेत्तसारेहिं” ॥ २६ ॥

एवं च सुइरं चित्ति(?) भणि)ऊण गरुयाहिमाणवसगेण कोहपच्छाइयविवेगेण कओ गियाणाणुवंधो, तं जहा—जइ इमस्स दुक्करस्स तव-चरणस्स अणुचिण्णस्स होज्ज फलं तओ अहं अतुलबल-परकमो एसकालं हवेज्ज ति । एवं च बंधिऊण गियाणं, इमस्स ठाणस्स अपडिक्कंतो विहरित्तं किं पि कालं, कालमासे कालं काऊण महासुक्के देवलोए उक्कोसट्ठिईओ देवो समुप्पण्णो ।

तत्थ य भुंजिऊण जहिच्छिए भोए, चइऊण देवलोगाओ पोयणपुराहिहाणे णयरे पयावइस्स णराहिवस्स भिगाव-
ईए भारियाए पुत्तत्तेणं समुप्पण्णो । तस्स य राइणो “रिचुपडिस्सत्तू णामं पसिद्धं । पच्छा धूयाए पडिलग्गो, तओ ‘पयाए
णियधूयाए चेव पइ’ ति लोएणं पयावइ ति णामं कयं । तस्स पयावइणो विस्सभूई अणगारो महासुक्काओ चवि-
ऊण पुत्तो समुप्पण्णो । दिट्ठा य जणणीए सत्त मुमिणा । णेमिच्छिण साहियं—पढमो वामुदेवो भविस्सइ ति । जाओ य
सोभणे दिवसे । संवडिइओ जोव्वणमणुपत्तो ।

इओ य सो विस्सणंदी कुमारो रायसिहिं उवभुंजिऊण मओ समाणो संसारमाहिंदिऊण गिरिसमीवे सीहत्तेणं समु-
प्पण्णो, अइवल-परकमत्तणेणं पसिद्धिं गओ । वावाइओ य तिविदुवाणा । अमरिसाऽऽवुरियसरीरस्स य समुप्पण्णं जाइ-
स्सरणं । सरियाऽऽन्तरा जाती । जाणियं तस्स वलं । अग्गओ अहिमाणप्पसरो । वियलिओ मच्छरो । परिचत्ता पाणवित्ती
सीहेणं ।

एयं तुह कहियं जं तए सीहचरियं पुच्छियं ति । तुमं च कुमारस्स अचंतसिणेहाणुगओ । इमो कुमारो इमीए ओसण्णिणीए चरमतित्थयरो बद्धमाणाहिहाणो भविस्सइ ति । तुमं पि इमस्स चेवे पढमगणहरो गोयमाहिहाणो भविस्सइ ति । ता एस कुमारो तए अबन्तमणुवत्तियव्वो । अइवल-परकमो य एसो, नेयस्स अण्णपुरिसासंका कायव्व ति ।

तओ वंदिऊण अणगारं गओ णिययमावासं सारही । दिट्ठो कुमारो । उवविट्ठो तस्स चलणन्तिए । ठिओ किंचि कालं । ताव य समागतूण पडिहारेण णिवेइयं जहा-देव ! महारायसयासाओ समागओ छेहारिओ दुवारे चिट्ठइ ति । तमायण्णिऊण भणियं कुमारेण-तुरियं पवेसेह । आपसाणंतरमेव पवेसिओ पडिहारेण । खित्तो छेहवाइएण छेहो । वाइओ जहा-लेहदंसणाणंतरमेवाविलम्बियं आगतव्वं कुमारेण । कुमारेण य तयणंतरमेव दिण्णं पयाणयं । पत्तो पोयण-पुरं । दिट्ठो ताओ । पायवडणुट्ठिओ य आलिङ्गिऊण पिउणा मणुसासिओ जहा-पुत्त ! तुम्हासिणां पयाण पुण्णेहिं उप्पज्ज-माणं णिमित्तमेत्तं जणणि-जणया, तुमए णाहेण सजाहा पुहती, ता ण जुत्तं तुह सयलसंसाराभूतस्स एयं ववहरिउं, जओ तुम्हायत्तं मह रज्जं कोससंचओ जीवियं च, एवं च ण तए पुणो वि सीहवइयरसरिसमणुचिट्ठियव्वं ।

इओ य आसग्गीवो णाम णराहिओ महाबल-परकमो सयलणराहिचूडामणिभूओ । सव्वे रायाणो तस्स णिदेसव-त्तिणो भयभीया चिट्ठंति । तेण य 'मच्चू भयाण भयं' ति कलिऊण पुच्छिओ अविस्वादी नेमिचिओ जहा-कओ सया-साओ मह मरणभयं ? ति । तेण वि य सम्मं णिमित्तबलेणमवलोइऊण साहियं जहा-जो महाबल-परकमे सोहं घाइस्सइ ति, तुह दूयं च विट्ठंसइस्सइ तस्स तए आसंकियव्वं । ति भणिए नेमिचिणं राया सीहं चारिएहिं गवेसावेइ, जाव णिसुओ जहा-वावाइओ पयावइसुएणं वाहाहिं चेव पहरणवियलेणं ति ।

तओ राइणा भउव्विग्गेण संपहारिऊण पेसिओ पयावइसमीवं दूओ जहा-तुमं परिणयवओ, ता णियपुत्ते महाऽऽ-एससंपाडणणिमित्तं सिग्घं पट्टवसु । गओ अणवरयपयाणएहिं दूओ । संपत्तो पोयणपुरं । गओ रायदुवारं । जाणावियं च पडिहारेण राइणो पेक्खणयसुहमणुहवन्तस्स जहा-देव ! आसग्गीवसंतिओ दूओ समागओ, किं कीरु ? ति देवो पमाणं । तओ राइणा पवड्डमाणरसाइसए कोउहलाउले कुमारपट्टे रंगयणे उवसंघरावियं पेक्खणयं । णिमाओ रंगभू-मीओ राया । उवविट्ठो अत्याइयामंडवं । पवेसिओ दूओ, पडिओ पाएसु, उवविट्ठो जहारिहे आसणे । राइणो वयणेणं उप्पियं जहोचियं पाहुडं । मुहुत्तमच्छिऊण य पुच्छिओ राइणा महारायस्स सरीरकुसलं ति । तेण वि 'कुसलं' ति भणिऊण साहिओ महारायसंदेसओ । पडिच्छिओ सिरेण य पयावइणा । चितियं च हियएणं-महाबलो अस्सग्गीवो दुराराहो तिकखडंडो य, अदिट्ठमया मह पुत्ता, विसेसेणं तिचिट्ठु ति, ता ण याणामि किमेत्थ पत्तयालं ? ति चित्तिऊणमावासं पेसिओ दूओ । कयमुचियकरणिज्जं ।

इओ पेक्खणयमंगवइयरकुलियहियएण तिचिट्ठुणा पुच्छिओ परियणो-को उण एसो जस्साऽऽगमणेण भग्गं ताएण पेक्खणयं ? । जाणिओ एस कुत्तन्तो णियररियणाओ । चितियं च-कहिं पुण सो वच्चइ पावो ? , अवणेमि तस्स सेवापुव्वं कोउहलं, पच्छा सामिसालस्स । ति चित्तिऊण उवरक्त्ताविओ, जाव महया पवंचेण सम्माणिऊण पयावइणा विसज्जिओ णिग्गओ णयराओ । साहियं कुमारस्स । कुमारेणावि णियपुरिसेहिं विट्ठंसाविओ, ओहयविहओ कओ । गहियसव्वसारो सीसदेसे य दिण्णपायप्पहारो गुरुवेयणाऊरियसरीरो मुको पुरिसेहिं । पयावइणा वि णाऊण पुणो वि णीओ सकीयं पट्ठणं, पूइओ सक्कारिओ य । पयावइणा भणियं च-ण तए महारायस्स साहियव्वं । तणावि पडिबणं । पुणरवि पेसिओ ।

इओ य पुव्वगएहिं तप्पुरिसेहिं साहियं महारायस्स जहा-देव ! तुम्ह संतिओ दूओ पयावइपुत्तेण अचंतं कयत्थिओ ति, संपयं देवो पमाणं । तओ कुविओ अस्सग्गीवो । खुहिया सहा गज्जिउमादत्ता, कहं ?—

उवमडभिउडिभयंकरणिडालवट्ठं तु जललराइणं । फुसिऊण को इ परिमलइ करजुयं रोसफुरियऽच्छो ॥ २७ ॥

णिहियसंदट्ठाधररोसवसारज्जमाणगंडयलं । वयणं खरदिणयरमंडलं व कस्सइ दुरालोयं ॥ २८ ॥

१ 'व यणं' सू । २ 'स्तइ ति सू, स्सति ति जे । ३ 'केहाणतरं' सू । ४ 'अस्सग्गीव' जे । ५ 'ण अण्णियं जे । ६ 'गमणे भं' सू । ७ 'तस्सावेवा' जे । ८ 'व य मं' जे । ९ 'ते । पया' सू । १० 'तेण वि जे ।

ददोद्विण्णित्तदसणोहकिरणजालच्छलेण वचंती । कोइ निरुंमइ कोहमिडाहभीयं व णियवौणी ॥ २९ ॥
 रोसवसाउरणिंतुदुगरुयणीसाससोसिओदुडो । कोइ भडो चलयग्गेण वसुमइ चालइ चलन्तो ॥ ३० ॥
 अमरिसवसेण कस्सइ गुरुकोवभरेण रुद्धकंठस्स । अन्तो चिय परिघोलइ दरखलियफुडऽखरा वाणी ॥ ३१ ॥
 वारंवारमहोरणविणिवेसकयं पि फुरियउदुडो । कोइ भडो गुरुरोसेण कुणइ पल्लित्थियाबन्धं ॥ ३२ ॥
 इय गरुयपरिहवागयकलंकपक्खालणेकरसिण्हि । रुह रुह वि संठविज्जइ अप्पा सुहदेहिं तव्वेलं ॥ ३३ ॥

तओ महाराणा भणियं—किमणेणं कावुरिसवेट्टिणं गज्जिणं ? ता आसणमेव णिहसट्ठाणं, संपयं चेव नज्जइ मूर-कायराणं विसेसो, ण एत्थ कालक्खेवो कायवो दिवसण्णेसणेणं ति, ता संपयं चेव देमि पयाणयं । भणिऊण दिण्णो आदेसो पडिहारस्स जहा—ताडावेहि पयाणमुयसं भेरिं, पयत्तावेसु हत्थिसादणं, संजत्तावेसु आसवदं, जोत्तावेसु रहवरे, चलउ अंतेउरं, होउ गमणसज्जो समत्तो खंधावारो । चि भणिऊण सयं गमणसज्जो ठिओ राया । ताव य अवसउणा दीसिउं पयत्ता, तं जहा—अयंडम्मि चेव गहियं राहुणा रविमंडलं, दिवसओ चेव णिवडंति तारयाणुग्घायया, भीसणजलाउलमुदकुहरां भुब्भुयइ भल्लुंकी, उकासमाउला गयणपेरन्ता, कुणंति कोलाहलं विरसमारसंता वायसा, उच्छलंति णिहाया, जाओ महीकंपो, पडिओ पहाणकुंजरो, विसण्णं आसरयणं, बलामोडीए य जायइ णराहिवइणो विमणत्तणं ति । किंच—

जे केइ अमुहभावा जयम्मि कलुसत्तणेण सुपसिद्धा । ते तस्स तया सव्वे वि संजुया पायडा जाया ॥ ३४ ॥
 एवं चावसउणपरंपराखलियगमणावसरो वि महाराया अगणिऊणमवसउणसंधायं णियइपराहीणयाए णिग्गओ णयराओ । तयणंतरं च समाउलीभूओ खंधावारो, उबलिओ य जहाजोग्गन्ति ।

इओ य पयावइणा णिसुयं जहा—आसग्गीवेण विण्णं पयाणयं, गहियो विग्गहो, गुरुकोवावुरियसरीरो पयट्ठो अणवरयपयाणएहिं । तओ 'ण याणामि केरिसमवसाणं ?' ति समाउलो चित्तेण पयावई पविट्ठो मंतिसहं । समागया उवहसियवहस्सइमइविहवा मन्तिणो । विण्णाओ य एस वुत्तंती तिबिट्ठुणा । गंतूण विक्रमावलेक्खविण्णं भणिओ जणओ जहा—ताय ! किंमेवमाउलत्तणेणं गरुयत्तणं णिज्जइ पडिवक्खो ? किमम्हाण करिस्संइ आसग्गीवो धोडयग्गीवो ? चि, ता अलं मंतिण, कीरउ सोहणे दिवसे तस्समुं पयाणयं । ति भणिऊण उट्ठविओ ताओ अत्थाइयामंडवाओ । पयावइ-णा 'संवच्छरियं सदावेऊण गणिओ दिवसो, सोहियं पत्थाणैल्लगं । तओ समुचलिओ जयजयरवापूरियणहंगणाभोय-मंडलो पयावई सह तिबिट्ठुणा । अणुकूलो य सउणसंधाओ । हेसियं वरतुरणं । मुल्लुल्लियमकंडगहियमएण मयगलेणं ति । गओ य अणवरयपयाणएहिं नियदेसपज्जन्तपएसं । आवासिओ सपुत्तो पयावई णराहिवो ।

विण्णाओ य एस वुत्तन्तो आसग्गीवेण । संखुदो य एसो हियणं । सुमरियं नेमित्थियचयणं । विसण्णो चित्तेण । समागओ तयासण्णदेसं । समावासिओ विविचपदेसे अवट्ठमं काऊण । पुणो वि पेसिओ सिक्खविऊण दओ आसग्गीवे-ण पयावइणो । भणियं च गंतूण दूएण जहा—आणवेइ महाराओ किं तुह इमेणं दुरज्जवसाएणं ? केरिसो अग्गिणा सह तणाणं विरोहो ? ता अज्ज वि मुंचमु इमं ववसायं, कुणमु महारायचलणसेवणेणं दीहाउयमत्तणं ति, जीवंतु तुह बंधवा । ऐयं सुणिऊण पयावतिसमीववत्तिणा तिबिट्ठुणा भणियं—

रे रे दुस्सिक्खिय ! दुट्ठ ! दूय ! अज्ज वि किमेत्थ वायाए । पयडिज्जइ णियपुरिसाभिमाणचरियं सयं चेव ? ॥ ३५ ॥

भुयडंडाउहरणभूमिरिखुवलेसुं वसइ समग्गेसुं । धावंतु मग्गण चिय किमेत्थ दूएण कायव्वं ? ॥ ३६ ॥

अप्पा सलहिज्जइ केत्तियं व पडिवक्खदूसणपरेहिं । णिल्लज्जिमाखिलक्खेहिं दूय ! दूरज्जियगुणेहिं ? ॥ ३७ ॥

इय कित्तियं च भण्णउ ? पडिवयणमसोहणं ण सिक्खविद्या । गुरुणा, जं पुण जोग्गं तुम्हाण तमेत्थ 'देच्छिहि' ॥ ३८ ॥

१ 'विअय' सु । २ 'वाणी' जे । ३ 'महोदण' जे । ४ 'ओ राइ' सु । ५ 'ताडावेह' जे । ६ 'याण' समुग्घा जे । ७ 'रा उच्छुवइ' जे । ८ 'वृणता' जे । ९ 'किमेयमा' जे । १० 'स्सए आ' जे । ११ 'पयाण' ति जे । १२ 'संवच्छरं स' जे । १३ 'णयलमं' जे । १४ 'मुल्लु' जे । १५ 'एवं' जे । १६ 'एच्छिहि' जे ।

एवं च सावद्वंभं भणिऊण विसज्जिओ दूओ । णिग्गच्छंतो पुणरवि भणिओ तिविट्ठुणा जहा—दूय ! भणसु णिय-
सामी, किमेत्थ कालक्खेवकारणेणं दूयसंपेसणेणं ? पयडपरकमो तुमं विणिग्गयपयाओ दंडसंपओववेओ बलभरदलिय-
महीवीडो केणावि अपरिमलियपुरिसयारो, ता किं बहुणा ? तहा तए रणभूमीए परिसक्खियव्वं जहा ण मलिज्जइ
चिरसंचिओ जसुग्गयाओ । संदिसिऊण पट्टविओ दूओ । गओ णिययमावासं । पडिहारजाणाविओ य पविट्ठो रायसमीवं ।
दिट्ठो य महासाओ । पयण्णणुदिण्णं य सत्तं जहट्ठिं चैय तिविट्ठुसंदिट्ठं सिट्ठं ।

सुणिऊण आसग्गीवेण भणियं—एवंविहा चेव वयणमेत्तसारणमुल्लावा हवन्ति, ता आसण्णो चेव रणभरो, एत्थ
णिन्वडइ सुवुरिस-कावुरिसाणं सख्वं । ति भणिए भणियं दूएणं पइरिके जहा—देव ! किं तं जं ण याणसि ? को वा
विवेओ अम्हारिसाणं ? तहा वि देव ! तुम्हारिसाणुहावेण चेव जं मए परिच्छिण्णं तं भणामि देवाणुमतीए । चि विण्णविण्णं
भणियं महाराणं—भणसु, को दौसो ? चि । तओ दूओ भणिउमादचो—“ देव ! अणुकूलभासिणो पियंवया य राईणं
भवन्ति सव्वे वि अणुजीविणो, जे उण परिणाममुहावहं मुहकडुयं फुडक्खरं जंपंति ते विरला चेव, अहवा ण सन्ति चेव
चि । ता देव ! अतीवबल-परकमोववेओ तिविट्ठु, गरुओ अवट्ठंभो णियभूयाणं । जस्स य णियभुयवलं तस्स चेव बलं ।
किमेएहिं सुबहुवेहिं वि वायसेहिं चिय भक्खणमेत्तसाएहिं पुरिसेहिं कीरइ ? चि । ता देवो तं चेव सहायं काऊण परिमलउ
पडिवक्खाहिमाणं ति । विरोहो उण तेण सद्धिं अणत्थस्स मूलं ति मह मयं, संपयं देवो पमाणं ” । ति भणिऊण ठिओ
दूओ । आसग्गीवो वि सुमरियणेमिच्चियवयणो अवसउणजणियहिययावेओ दिट्ठपडिवक्खावट्ठंभो विसण्णणिय-
सामन्तपरियणो अप्पाणं गयजीवियं पिव मण्णमाणो केवलं कइयवजणियावट्ठंभो भणिउमादचो—रे दूय ! किमेव-
माउलीहूओ ? पेच्छसि सिग्गमेव तस्स बलं, ति भणिऊण ‘वीसमसु’ चि विसज्जिओ दूओ । कयसुचियकरणिज्जं ।
सम्माणिया महासामन्ता । संवग्गियाऽणुजीविणो । दिण्णं महादाणं । समाहया संगामभेरी । सण्णद्धा मुहडा । कया
सारिसज्जा मयगला । गुडिया तुरंगमा । समाहयाणि समस्तूराणि । णीहरिओ महया विमहेणं आसग्गीवो चि ।

विण्णाओ य एस वुत्तन्तो तिविट्ठुणा जहा—समागओ आसग्गीवो समरभूमिं । तओ तक्खणमेव दुप्पेच्छो जाओ,
कइं ?—

रोसवमुब्भडसंगलियरायरज्जन्तगंडवासं से । वयणं सविसेसारुणरायं दुप्पेच्छयं जायं ॥ ३९ ॥

उब्भडभिउडिभयंकरणिडालवट्ठं पि जललंवालिदं । पयतीए तस्स सोमं पि श्चत्ति जायं दुरालोयं ॥ ४० ॥

गरुयामरिसवियंभियअपरिफुडवण्णवयणविण्णासो । तव्वेलं चिय जाओ तिविट्ठुणो रोसपिमुणो से ॥ ४१ ॥

इय सविसेसुकरिसाणं पुहइपालाणमूमुयमणाण । संगामणिमित्तं सुवुरिसाणं दिण्णो समाएसो ॥ ४२ ॥

एवं च तिविट्ठुणा गहियसंगामोवगरणेणं महया सम्महेणं दिण्णं पयाणयं संगामभूमीए समुहं ति । तओ समा-
हयाणि संगामतूराणि । पलम्बियाणि चिंघाणि । इकारिया एकमेकं मुहडेहिं मुहडा जुज्झिउं पयत्ता विचित्तजुज्झेहिं ।
एवं च कइ वि वासरा महया सम्महेणं पयट्ठमाओहणं ।

अ(त)ओ पडन्तेसु मुहडेसु, भमन्तेसु सुण्णासणेसु तुरंगमेसु, भज्जंतीसु गयघडासु, संभारिज्जंतेसु सामिसम्माणेसु,
उच्छलंतेसु साहुकारेसु, भज्जंतेसु कायरेसु, जससे सुसज्जएसु मुहडेसु, समुल्लसंतेसु पुरिसकारेसु, एकम्मि दिवसे जायं
पहाणजुज्झं दोणं पि णायमाणं । तओ जुज्झिऊण सव्वाउडेहिं ओहामिज्जन्तेण आसग्गीवेण गहियं चकरयणं करयलेणं ।
भमाडिऊणं चे संपेसियं तिविट्ठुणो । तं च देवयाणुहावेण भवियव्वयाणिओएण य पयाहिणीं काऊण ठियं दाहिण-
करयले तिविट्ठुणो । तेणावि अमरिसवसावूरियहियएणं पेसियं आसग्गीवस्स । तेणावि चक्खेण तालफलं व पाडियं
सीसं पडिवासुदेवस्स चि । उच्छलिओ जयजयारवो । तुहेहिं य तियसाऽसुरेहिं मुकं कुसुमवरिसं । साहुकारिओ सयल-
जणेणं । भणियं च मुरसमूहेहिं—एस पदमो वामुदेवो समुण्णो चि ।

१ पायव्वं जे । २ चैव जे । ३ सुपुरिसं जे । ४ दोसु जे । ५ भणिउ ठिं जे । ६ सुणिऊण पराकरिया तुरं जे । ७ महा-
विं जे । ८ ल्वाविदं स्र । ९ च पेसिं जे ।

तेणावि ओयवियं दाहिणद्धं भरह्वेत्तस्स । समुप्पण्णाणि सत्त रयणाणि । परिग्गहिया वत्तीसं सहस्सा जुवतीणं ।
जाओ य सोलससहस्साणं महाणरवईणं रायाहिराओ । समुप्पण्णा महाणिहिणो । समुक्खविऊण य वाममुण्णं धरिया
कोडिसिला । जाओ महाराओ पणयासेसणराहिवो चि ।

एवं च सरन्ते संसारे, समुप्पज्जन्तेसु त्रिविधभोएसु, अयलस्स विभावेन्तस्स सेज्जेसत्तित्थयरवयणं, समागओ धम्म-
घोसायरिओ, तस्स समीवे पडिक्कणं समणत्तणं, खविऊण कम्मसेसं जाया सिद्धिगइ चि ।

वासुदेवस्स वि भोए भुंजन्तस्स अइकंतो को इ कालो । तस्स य अतिवल-परकमत्तणओ अवमणियसेससप्पुरिसस्स
अइकूरज्जवसाइणो गलियं सम्मत्तरयणं । अइकसायुकडयाए य तेण बद्धं अप्पट्टाणे णरए आउयं ति । पालिऊण
जुलसीतिवरिससयसहस्साइं सव्वाउयं कालमासे कालं काऊण उववणो अहे सत्तमाए अप्पट्टाणे णरए तेत्तीससाग-
रोवमाऽऽणू णारगो चि । अओ उत्तरं वैद्धमाणत्तित्थयरचरियाहिगारे कहिस्सामो चिं ॥

इह महापुरिसचरिए तिविट्ठुचरियं पढमवासुदेवस्स [अयलवलदेवस्स य]
चरियं समत्तं ति ॥ १४-१५ ॥

[१६ वासुपुञ्जसामिचरियं]

:÷:×:÷:

सागरोवमाणं चउष्ण्णाए गयाए सेज्जंसजिणाओ वासुपुञ्जो समुप्पण्णो । सो अउणसत्तरि धणूणि समूसुओ पउमगम्भगोरो वोहत्तरिवरिसलक्खाउयमणुवालिऊण सिद्धिं पत्तो त्ति । कहं ? भण्णइ—

मुत्त व्व पुण्णरासी जयम्मि जायन्ति ते महासत्ता । जम्मेण जाण जायन्ति णिव्वुया सयलजियलोया ॥ १॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपा नाम नयरी बहुजण-धण-कणगसमिद्धा । तीए पणयासेसभूवाल-मउडमसिणियपायवीदो वसू णाम णराहिवो परिवसति । तस्स य सयलंतेउरप्पहाणा जया णामेण अग्गमहिंसी । तीए य सह विसयसुहमणुहवन्तस्स अक्कंतो कोइ कालो ।

अण्णया य महासुक्काओ चविऊण जेट्ठस्स सुद्धद्वमीए सयभिसाणक्खत्तजुत्ते रयणिमुहत्तिलए ससहरे जयाए कुल्लीए समुप्पण्णो समासाइयत्तियरणाम-गोत्तो तित्थियरेणं(रत्तेणं) ति । दिट्ठा य तीए चेव रयणीए चोइस महासुमिणा । साहिया जहाविहिं दइयस्स । तेण वि समाइट्ठं पुत्तजम्मं ति । तओ संबड्ढिओ गम्भो । पसूया य सुहेणं फग्गुणकिण्ह-चउइसीए सयभिसाणक्खत्ते । कओ देवेहिं पुव्वकमेण जम्माभिसेओ । कयं जहत्थमेवाहिहाणं वासुपुञ्जो त्ति ।

तओ कुमारभावमणुवालिऊण, किंचि कालं कयदारपरिग्गहो रायसिरिमणुवालिऊण, फग्गुणस्स अमावासाए सय-भिसयाणक्खत्ते लोयन्तियपडिवोडिओ ओहिनाणावगयसंसारसहावो मुणिऊण सयलं असारं संसारं संवत्थरदिण्णमहादाणो तियसिद्ध-णरिंदपरिसामज्झगओ पडिवण्णो समणत्तणं । विहरिऊण किंचि कालं छउमत्थपरियाएणं माहस्स सुद्धवीयाए केवलणाणमणुपत्तो त्ति ।

तओ केवलिपरियाएणं विहरिऊण, दरिसिऊण संसार-भोक्खपदे, णिव्वविऊण वयणामएणं सयलजियलोयं, चंपाणयरीए आसाहमुद्धचोइसीए सयभिसयाणक्खत्ते सेलेसीविहाणेणं खवियभवोवग्गाहिकम्मंसो सिद्धि मणुपत्तो त्ति ।

इति महापुरिसचरिए वासुपुञ्जतित्थयरस्स बारसमस्स चरियं सम्मत्तं ति ॥ १६ ॥



[१७-१८ दुविट्टुवासुदेव-विजयबलदेवाण चरियं]

:—:×:—:

संपयं वासुपुज्जतित्थयरे दुविट्टुचरियं भण्णति—

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे चारवती णाम णयरी । तीए बंभो णाम णराहियो परिवसइ । तस्स य राइणो पहाणा सयलंतेउरम्मि वसुमती णाम अग्गमहिंसी । तीए य सह विसयमुहमणुहवन्तस्स राइणो अइकन्तो कोइ कालो ।

अण्णया य वसुमतीए भारियाए कुच्छिसि समुण्णो गम्भो, संवहिदो य । कालकमेण पसूया । पट्टावियं च से णामं विजओ चि । पुणो वि गच्छंतेसु दिवसेसु, सरन्ते संसारे, वसुमतीए दिट्ठा सत्त महामुमिणा । साहिया दइयस्स । तेणावि समाइट्ठं-भविस्सइ ते पुत्तो सयलणरचूडामणिभूओ चि । तओ पडिपुण्णेसु णवसु मासेसु अइउट्टमेसु राइंदिणसु पसूया सुहेणं । कयं वद्धावणयं णरिदेणं । पट्टावियं च से णामं दुविट्टु चि । पत्ता दुवे वि कुमारभावं । साहिया कलाओ । कयदारपरिग्गहा य कीलिउं पयत्ता केसव-बैलएवा ।

अण्णया य उज्जाणगएहिं दिट्ठो अहाफासुए पएसे साहुजणपरिवारिओ मज्झिमवए वट्टमाणो णीसेसगुणाहाणं परिहरियासेसदोससंगो सव्वंगावयवसंपुण्णदेहसोहो पियदंसणो मुरूवो "तेजस्सी गज्जवको मुकुलै-जाइप्पसूओ ससमय-परसमयविद् कालण्ण देसन्नु विण्णायसयलदेसायारो महुरवको हेउ-आहरणकुसलो अप्पडिसाई सव्वेसिमकारणवच्छलो पंचविहआयारधरो जियकोह-भाण-भावा-लोहो पडिगमागारसरणसो छयीसगुणजुत्तो परिसाए मज्झदेसम्मि धम्मं वागरमाणो विजयायरिउ चि । तओ तं दट्ठूणं भणिओ बलएवेण दुविट्टुकुमारो जहा-कुमार ! पेच्छसु एयं महापुरिसं परिचत्तरायविहवं पि रायसिरीए समद्धासियं पिव लविस्सज्जमार्णदेहसोहं ति, ता गच्छामो एयस्स चलणन्ति-यं, करेमो अत्तणो जम्मं सफलं । ति भणिऊण गया तस्स चलणंतिए । वंदिओ भयवं आयरिओ, सेससाहु य । धम्मलोहिया सपरिवारेहिं आयरिएहिं । उवविट्ठा चलणंतिए । किंचि बेलमच्छिऊण धम्मदेसणाए भणियं विजण्ण-भगवं ! किं पुण एयस्स संसारस्स परिचाए कारणं भगवओ ?, ण ताव दोगच्चपरिहवो, लक्खणाणि" चेव साहन्ति पुह-इपालत्तणं ति, णे यावि परपरिहवो, ण हु एरिसाओ आगीओ परिहवट्ठाणं ति, ता साहेउ भयवं उव्वेक्कारणं ? ति, जइ अणुग्गहबुद्धी अम्होवरि चि । तयणन्तरं भणियं भगवया-सोम ! सुण । इह वसंतस्स संसारो चेव णिव्वेयकारणं सचेय-णस्स, जओ भणियं—

केण ममेत्थुप्पत्ती ?, कह व इओ तह पुणो वि" गंतव्वं ? । जो एत्तियं पि चित्तेइ एत्थ सो को ण णिव्विण्णो ? ॥१॥
अवि य—

लच्छी बहुच्छल चिय, जीयं बहुवसणसंकडकडिल्ले । पहियं जियाण तह जोव्वणं पि विरसम्मि संसारे ॥ २ ॥
जो वि पियसंगमाओ मुहाहिमाणो हवेज्ज जंतूण । सो वि विओगाणलसंगदूसिओ देइडमाणहओ ॥ ३ ॥
वाहिसयपीडियाणं जियाण जर-मरण-सोयतवियाणं । दोगच्चपरिहवुव्वेवियाण भण कह ण णिव्वेओ ? ॥ ४ ॥
इय एरिसम्मि संसारसायरे गुरुकिलेसवहुलम्मि । जायइ विवेयकलियाण णिच्छियं णवर वेरम्गं ॥ ५ ॥
ता महाभाग ! संसारो "चेय णिव्वेयकारणं सहिययस्स । जं पि विसेसउत्थिणा पुच्छियं तुमए सो विसेसो संसारसहावो चेव, तहा वि जइ कोउहलं ता सुणसु—

१ कोलिय जे । २ "बलदेवा जे । ३ "वासुय" जे । ४ तेवस्वी जे । ५ "लप्पम" सू । ६ "जुवो परिसाम" जे । ७ "ण बलदेव-भणिओ पुयि" जे । ८ "गसोह जे । ९ "साहियो जे सू । १० "णि साह" सू । ११ ण वा वि जे । १२ अगीओ सू आगिओ=आगी-ओ, आगत्य इत्यर्थः । १३ य जे । १४ दग्धमानहृदयो दग्धमानसो वा । १५ चव जे ।

अत्थि पुव्वविदेहे रिद्धावती णाम णयरी । तीए सुरिंददत्तो णाम राया । तस्स य कणकप्पभा णाम महादेवी । तस्स य तीए सह विसयसुद्धमणुहन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया तस्संतियं [? अहं] चंदउत्तो सिरिगुत्तराणो पुत्तो हसिऊण जणयसगासाओ समागओ । सो य असे-सकलापारओ अणेयकोऊहलभरिओ मंते तंते जोइसे वेज्जए स्र्धारसत्ये कुसलो मुरुवो मेहावी सुभगो कवी नेय-वीणा-विणोयपेसलो सुसहाओ विणयसंजुओ पियभासी, किं बहुणा ? नयरउच्छेरयभूओ । सो य राइणा सबहुमाणं पडि-च्छिओ, भणिओ य-सोहणं कयं जमिहागओ सि, एयं पि ते णियं रज्जं ति । दिण्णो कुमारजोग्गो आवासो । कयमुचि-यकरणिज्जं । जंति दियहा । सरति संसारो ।

अणया य राइणो सुरिंददत्तस्स धूया देवदत्ता णाम रयणीए पच्छाहरयं पविसंती डका भुयंगमेण । तओ तय-णंतरमेव सैमुच्छलिओ महंतो कलयलो रायउले । वाहिप्यंति गारुडिया, पउंजिज्जंति जोगा, लिहिज्जंति मंडलाइं, छडिज्जइ उदयं । समाउलीहयं णयरं । विसण्णो णरवई सपरिवारो । ण य मणयं पि उवसमो विसवेगस्स कुमारीए । तओ दिज्जंति डिडिमा, घोसिज्जइ णयरं जहा-जो कुमारिं पणवेइ, जं चेव पत्थेइ तं चेव दिज्जइ ।

एत्थंतरम्मि णिसुयं चंदउत्तकुमारेणं । 'किं किमेयं ?' ति पुच्छिए साहियं तस्स चेव संतिएण दासेण जहा-देव ! समाउलो णरवई, डका कुमारी भुयंगमेणं, ण य केणइ उवाएण उवसमइ विसवेगो पेक्खन्ताणं मंतियाणं, दिज्जं-तेसु मणिसलिलेसु, पउंजिज्जंतेसु विविहजोगेसु धारिया कुमारी, विसण्णो राया, तओ संपयं देवो पमाणं । ति सुणि-ऊण णिरुविया कालवेला, जाव 'अज्ज वि ण हवइ !' ति भणिऊण 'अवस्सं जीवावेमि' ति णिग्गओ णिययभवणाओ कइयणियपुरिससमेओ । गओ गउलं ।

साहियं णरवइणो महन्तएणं जहा-देव ! एस कुमारो मन्तविसए कुसलो सुणिज्जइ, समागओ य एस केणइ अहि-प्पाएणं, ता अण्मत्थेउ एयं देवो । तओ राइणा भणिओ कुमारो-जइ अत्थि किं पि मंतफुरणं ता एस अवसरो, जओ जीवावेसु मं सपरियणं, देसु महं कुमारीए जीवियं ति, एएणं च कएणं किं ण कयं ? ति । एवं भणंतो राया लम्भो जंघासु । तओ कुमारेण भणियं-अलं विसाएणं, अहं सयमेव एएण णिमित्तेणं समागओ गेहाओ, ता पेच्छसु मन्तसा-मत्थं । ति भणिऊण कुमारेण कयं चलणसोयं । अचंतसुतीभूएण य अण्णा कवचिओ । गहियं सलिलं दाहिणहत्थेणं । अभिमंतिऊण घचित्तं कुमारीए सैम्महं, एवं बीयं वारं तइयं च । जाव तइयवाराए कओ अंगुक्खेवो कुमारीए । ऊससियं च सह राइणा परियणेण य । पुणो छंटिया सलिलेजं, हकासमणंतरमेवोत्रविट्ठा । पलोइयं च तीए दिसायकं । पुच्छिया कुमारेण-किं तुह बाहइ ? ति । तीए भणियं-दहं सीएण भिण्ण ति । तओ जणएण परामुसियं निडालवट्टं, पुच्छियं च-ण ते सीसं गरुयं । तओ ईसि पलोइऊण न जंपियमिमीए । पुणरवि ज्ञाणं काऊण सित्ता सलिलेणं । तयणंतरं च भणियं कुमारीए-सीयं मे बाहइ ति । अण्णा संठभिओ । कुमारं च सुइरं जिज्झाइऊण सविसेसं संठयियमोदणयं । पुणो पुच्छि-या जगणीए-पुत्त ! किं तुह बाहइ ? ति । तीए भणियं-दहं सीएण भिण्ण ति । तओ जणएण परामुसियं निडालवट्टं, पुच्छियं च-ण ते सीसं गरुयं । कुमारीए भणियं-ताय ! थगत्यगेइ हिययं समाउलं, भमइ लक्खसुण्णा दिट्ठी, ण चेयन्ति अंगमंगाइ, ण जाणामि किं मह बाहइ ? ति । तओ कुमारेण भणियं-अज्ज वि ण सम्ममुत्तरइ गिरवसेसं विसं, ता समा-ससउ महाराओ, अइकंतो एस एयाए अणत्थो । ति भणिऊण पुणो जवियाइं मन्तउक्खराइं । झाइओ अमयरसप्पवाहो कुमारीए उवरिं । चवगओ गिरवसेसो विसवेगो । भणियं च कुमारीए-ताय ! 'अहिणा डका डक' ति एत्तियं चेव मए जाणियं, पुणो तयणन्तरं किं दियसो ? उंशउ रयणी ? किं तुह ? किं वा सुहं ? किं वाहि ? किं वा अग्निंतरे ? किं पि ण जाणियं ति । राइणा भणियं-पुत्त ! तुह जीवियं, मज्झ, जणणीए य एएण महापुरिसेण दिण्णं, ण एयस्स एकमाणुस-दाणेगावि पडिउवयारो कीरइ ति, णिकारणवच्छलो एस, सप्पुरिसाणुद्वाणपरो य । एयं च भणंतस्स महाराण्णो वयणमक्खिऊण भणियं कुमारेण-किमेवमादिसइ महाराओ ? किमेत्थ मए कयं महारायस्स ? जओ ण णियजीवि-

१ सुभारं जे सु । २ समुच्छिअत्थि जे सु । ३ 'य चेव तस्संतियं' जे । ४ समुहं जे । ५ 'वट्ट' जे । ६ पुत्त ! जे । ७ एक्-अणत्थो सु । ८ उगाडु जे । ९ 'तरे किंम' ण जाणियन्ति । सु ।

वपय्याणेण उक्कगरियं, ण आरोविओ अप्पा संसण, ण गिसियासिसंक्रडगया पस्वलं भंजिऊण आणिया पयत्तिचवला रायसिरी । तावेवं एयं । ति भणन्तो पलोइओ रायपुत्तीए पढमसमागमदुईए विव सणिद्धाए हिययाऽऽवेयपिसुणणसम-
त्थाए साहिलासाए दिट्ठीए कुमारो । गमियं च विविदकहाहिं जामिणीसेसं ।

पहाए णिग्गओ हिययं गहेऊण कुमारीए णियहिययविणोयणत्थं कुमारो मेहाओ । भओ णिययभवणं । पमुत्तो किंचि कालं तहंसणमुक्खियजायविसेसवम्महुच्छाहो । कयं उच्चियकरणिज्जं । ठिओ अत्थाइयामंडवे । समागया वीसं-
भत्थाणीया वयंसया । पुच्छिओ तेहिं ओलुग्गवयणकमलो उव्वेयकारणं । तेण वि साहिओ कुमारीसप्वइयो । जग्गिया य जामिणी णीसेस ति । इमिणा मणागं भरुयं उच्चिमंगं, अट्ठाणि अंभाणि, णिहाउरत्तिणि लोयणाणि । तो तेहिं भणियं-
सोहणं संजायं जं जीवाविया कुमारी ।

तओ वयंसयसमेओ किंचि कालं अच्छिऊण कुमारो विसज्जिऊण वयंसए, आरुह्मिऊण बलहियं णिवण्णो सयणिजे । तं चेव कुमारिं चितयन्तो निरुद्धासेसपाइयपवेसो अवहत्थियासेसरणिज्जो जोमी व झणोवगओ चिट्ठइ । ताव य बीयहिययभूएण सदेसाओ सह समागएणं मन्तिमुएण पसण्णचंदेण पविसिऊण भणिओ जहा-कुमार ! किमेवमव-
त्थो वि महं जैहट्ठियं ण साहेसि ? । कुमारेण भणियं-“मित्त । किं साहेमि ?, वाणी चेव एवंविहे विसए पयट्ठिउं ण उच्छइ । मया वितियं-“किमेवंविहेणं वइयेणं साहिएणं ?, कयाइ सयमेव उवसमो भविस्सइ” ति । जाव अतीवाव-
मण्णिज्जमाणो वर पंचवाणो मज्झोवरिं सयवाणो वर संवुत्तो, ता किं करेमि ?, जण्ण सक्केमि अप्पाणयं संभरिउं । कस्स-
ऽण्णस्स मए तुमं विहाय साहियव्वं ?, केण वा अण्णेण मज्झ उवइसियव्वं ?, कस्स वा अण्णस्स मह सन्तिया पीड ? ति । ता साहेमि तुहं-अज्महं राईए रायधूयाजीवावणनिमित्तं गओ । जीवाविया य सा मए दुट्ठोस्सस्स । तीए पुण महं आसत्थाए णयणसरपहरधोरणी पेसिया । तेहि य “दिट्ठिपहारेहिं तहा सल्लिओ जहा ण जाणामि किंचि वि करणिज्जं, ण रोयए भोयणं, णाऽऽगच्छइ णिहा, ण रती सयणिजे, ण बार्हि, ण एगाणिणो, ण परियणपरिगयस्स ति । किं बहूणा ?

दुल्लहलम्भम्मि जणे जस्स अवुण्णेहिं होइ अणुबंधो । गिरिसरियासल्लिलेण व पइदियहं तेण सुसियव्वं ॥ ६ ॥

लज्जापरव्वसा सा, अहं पि देसंतरागओ इहइ । एवंविहा अवत्थ ति मज्झ, को तीए वज्जरउ ? ॥ ७ ॥

दुल्लहजणाणुराएण गरुयपेमाणुबंधपसरेण । एवंविहम्मि काले सल्लिज्जइ मित्त ! मरणं पि” ॥ ८ ॥

एयं सुणिऊण पसण्णचंदेण संक्रन्तदुक्खभारेण जंपियं-कुमार ! किमेवमाउलीभूओ ?, जहा तीए तुह एरिसी अवत्था जगिया तहा तक्केमि तए वि तीए एरिसी अवत्था कया चेव, ता मा संतप्य, इच्छइ सा तुमं ति । कुमारेण भणियं-“ण याणामि इच्छइ ण व ति, मज्झं पुण एरिसी अवत्था, अवि य—

गरुयपियसंगमासावियंमणुदामरणरणुप्पित्थं । मह हिययं ईण्हि मित्त ! ण याणिमो कह णु संठविमो ?” ॥ ९ ॥

पसण्णचंदेण भणियं-वीसत्थो होहि, अहं तहा करिस्सं जहा तुहं तीए सह संगमो होइ ति । एवं भणिऊण णिग्गओ मेहाओ । गओ हट्ठदेसे । गहिया तेण मोल्लेण वीणा । वीणं गेण्हिऊण गओ साउल्लामिसुहं । दिट्ठा कुमारीए चेडीहिं वीणा । पुच्छिओ य-किमेस विकाइ ? । तेण भणियं-विकाइ । चेडीहिं भणियं-अम्हसन्ती कुमारी गेण्हइ मोल्लेणं जइ दंसणणिमित्तमप्पेसि । तेण भणियं-लेंहुं आणेयव्वा । तहिं भणियं-आणेमो । समप्पिया वीणा । चेडीओ गयाओ कुमारीसमीवं । दंसिया वीणा । तीए भणियं-केत्तिएण मोल्लेण लब्भइ ? । तहिं भणियं-ण अम्हेहिं पुच्छिओ । तओ कुमारीए पेसिया चेडी मोल्लपुच्छणत्थं । तेण भणियं-जइ अहं सयं देक्खामि कुमारी ता कुमारीए जहा पडिहायइ तहा चेव पयच्छामि । तहिं(१ तीए) जैहट्ठियं चेव साहियं । सहाविओ कुमारीए गुरुविरहसोसियंभीए रणरणयविणोयणत्थं ति । तओ पायवडणुट्ठिओ य उवविट्ठो दिण्णासणे । पुच्छिओ कुमारीए-कओ तुमं ? । तेण भणियं-विवित्तमादिसउ जेण सुव्वं साहेमि । तओ तयणन्तरमेव पलोइयाइं पासाइं । दूरीहओ परियणो दिट्ठिममुञ्चन्तो ठिओ ।

१. “मो पुल्लओ जे । २. उव्वेयका” जे । ३. “रुडिऊ” जे । ४. जहट्ठिय जे । ५. सवारउ जे । ६. “ज्ज अहं जे । ७. णययपहा” जे । ८. “लोहयो जे । ९. इण्हि मित्त ! ण यणिमो जे । १०. तुमं जे । ११. एयं जे । १२. लहु जे । १३. कुमारी जे । १४. जहट्ठिय जे ।

तओ पसण्णचंदेण भणियं—‘देवि ! किं भणामि ?, जं न सकेमि, जओ अहं सिरिगुत्तस्स पुत्तेण चंदगुत्तेण सह समागओ । तस्स य रयणीए तुम्ह दंसणेण एरिसा अवत्था जा सयलवयणाणमगोयरे, जओ ण देइ चित्तं सेवयज-णस्स, ण वोळ्हावेइ वयंसयजणं, ण खेळइ गूढचउत्थ-विंदुमईहिं अक्खर-विंदुचुआइणा, ण चित्तकम्मविणोयमभिलसइ, ण सयणीयं, ण दन्तवलहीए रइं वंधेइ, ण य अहोभूमियाए, णाहिलसइ भोयणं, केवलं तुह कदामेत्तजीवियासो चिट्ठइ । ता संपयं देवी पमाणं’ ति । कुमारीए चिन्तियं—हयास वम्मह ! जइ वि मह एरिसी अवत्था कया तहा वि सोहणमणुचिट्ठियं, जं तस्स वि एरिसी अवत्थ ति । एवं चित्तिऊण भणियं कुमारीए—भणसु किं कीरउ ? । तेण भणियं—जह मह वयंसो सामिसालो एरिसाओ पलयन्तिकपरियावाओ उव्वरइ तं कीरउ । ‘को उण उवाओ ?’ ति भणियं कुमारीए । तेण भणियं—

दड्ढस्स हुयवहेणं सो चेव जहोसहं महग्गवियं । तह तुह दंसणविहुरे पुणो वि तुह दंसणं चेव ॥ १० ॥

तीए भणियं—कहं पुण अणिदिण्ण विहिणा अम्हाण समागमो भविस्सइ ? ति । एत्थंतरम्मि कुमारीए वीयहिय-यभूयाए वसन्ततिलयाए जंपियं जहा—णवमीए वाहिरियाए भगवतीए जत्ता भविस्सइ ति, तत्थऽम्हे गच्छिस्सामो तुमं पि कुमारं गेण्हिऊण तत्थ चेवुज्जाणे सण्हिओ भवेज्जसु ति ।

एत्थंतरम्मि जणणीए कुमारीए अवत्थं मुण्डिऊण सदाविओ वेज्जो । तेण य वेज्जेण सह समागया जणणी । गिग्गओ सो वीणं मोत्तूणं । गंतूण य साहियं कुमारस्स । तुट्ठो चित्तेण । समासत्थो जाओ । कया पाणविची । पुच्छि-यं—कया नवमि ? ति । साहियं पसण्णचंदेण जहा—चउत्थे दियहे । कह कइ वि समागया णवमी । गओ य पडमं हियणं, पच्छा सरीरेणं । दुग्गाए उज्जाणमज्झमागे एकम्मि पएसे सव्वं परियणं मोत्तूणं पसण्णचंदेण सह गवेसिउ-माढत्तो सव्वेसु कयलीहरेसु लयामंडवेसु य, जाव लीलावती कुमारी वसन्ततिलयाए समेया एकम्मि माहवीलयामंड-वमज्झदेसे दिट्ठा । पलोइया सा तेणं वालऽग्गाओ जाव गहऽग्गं ति, किह ?—

घणिसण्हकहमुसिणिद्धपसदिलाऽऽलंविकुंतलकलावा । लीलाकुवलयमारुयलुलिपालयजगियमुहसोहा ॥ ११ ॥

जरढायवदूरसमूससन्तवरसेयसलिलचित्तलियं । वयणं वियसियकमलं व मणहरं जललवाल्लिदं ॥ १२ ॥

परियविम्बाऽऽयम्भिरमहरदलं कोमलं ति वहमाणा । वम्महविलासमंजुसर्षणमुदं व छउयंगी ॥ १३ ॥

मुसिणिद्धनिविडमणहरविरइयवरसंखसच्छहतिलेहं । वहमाणी माणुदधुरसिरोहरं भूषणुच्चिडिमं ॥ १४ ॥

कोमलमुणालसच्छहभुयजुयलुम्भडविलासेराहिल्ला । कंकेलिपल्लवाऽऽयंवदत्थववहत्थियऽच्छरसा ॥ १५ ॥

उत्तचकणयकलसोरुसच्छहं पवरहारहारिल्लं । रइवल्लहगुरुसीडासणं व थणवदुमुव्वहइ ॥ १६ ॥

तिवलीतरंगकयमज्झदेसभाएण अग्घइ महग्ग्या । घणजहणकैलणतोलणमणविहिखेत्तंगुलिपएसा ॥ १७ ॥

रमणेण रमणचट्टणसहेण णदिपुलिणदेसवियडेणं । रइवल्लहवम्महरइहरेण दूरं महग्गविया ॥ १८ ॥

रम्भागम्भसमुम्भत्रलायणापसाहियाहिं जंवाहिं । रमणभरमुव्वहन्ती णेउरकयमणहरालावा ॥ १९ ॥

कुम्मुण्णएहिं गहमणिविरायमाणेहिं गूढगुप्फेहिं । चलणेहिं चवलवलपोमिणि व्व संकं जगन्तेहिं ॥ २० ॥

इय सव्वंगविणिम्मियमणहरसोहन्नितं जिणऊण । मण्णे मयणेण जए निकज्जं उव्विमयं चावं ॥ २१ ॥

अवि य—

मयणग्गितवियतणुतावसोसियासेसणलिणिदलनियरा । पव्वायसरसकोमलमुणालवलयावल्लिसणाहा ॥ २२ ॥

अविरयकयचंदणसलिलसेयसन्तमुणियगुरुतावा । मुत्ताहारविराइयपयोहरुच्छंगकयकमला ॥ २३ ॥

सिसिरजलइंदोलणवसपसरियसुरहिगंघ्रपैडिवासा । विरहग्गितावसोसियकवाल्लतलपंडुगंडयला ॥ २४ ॥

पिययमदंसणतण्हासंतावुचवियदेह-चलणेहिं । असमंजसं कुणंती पुणरुत्तं णलिणिसत्थरयं ॥ २५ ॥

१ तुह जे । २ एरिसी जे । ३ “चउत्थ-वि” जे । ४ ण य स” जे । ५ एण जे । ६ “यावओ जे । ७ “वज्जहसण्हसु” जे । ८ “रइसमुदं जे । ९ “सरेहिणा जे । १० “कलसतो” जे । ११ “वेहिगुत्त” जे । १२ “पडवा” जे ।

किं एही? देही दंसणं? ति अज्जेव अम्ह सो सुहवो । अणुसंघन्ता तं चिय कहियं पि हु पियजणालावं ॥ २६ ॥
 कंठमन्तरपसरन्तपंचमुग्गारकायलिपलावा । लीलुलालियकुवलयदीहरदलठइयमउलउच्छी ॥ २७ ॥
 खगमेकमुग्गहिययत्तेण ठाऊण रुद्धावारा । णीसहदेहा पडिया सहस चिय सहियणुच्छंणे ॥ २८ ॥
 पसरन्तदीहनीसाससोसियाऽहरदलंतराला सा । अपडिक्कुडक्खरालावमुगियगुरुवियणसंतावा ॥ २९ ॥
 इय दूरवियंभियमयणवाणवसपसरपडियविलासा । रमणीअयरा जाया तक्खणमणुकंपणिज्जा वि ॥ ३० ॥

एयावत्थं दट्ठण कुमारेण समासासिओ अप्पा, वितियं च-इमीए एवंविहं संतावं जणंतेणं मयणेणं तवियदेहेणावि मंहं न किंचि अवरद्धं ति । पुणो वि परोप्परालावं गिह्यपयसंचारो समासणो होऊण मुणिउमारद्धो । जंपियं च लीलावतीए वसंततिलयमुदिसिऊण जहा-पियसहि ! जं जगस्स तस्स कायव्वं तं तुमं चेव अणुह्यवइयरा जाणसि, ता जहावसरं तए सव्वमणुद्वियव्वं, अहं पुण ण सक्कुओमि अचओ अंगाणं पहविउं, तहा वि जं करियव्वं मए तं भणसु । वसंततिलयाए भणियं-‘पियसहि ! सव्वमहं कालोचियं करिस्सामि, तुमए पुण पिययमाणुकूलाए होयव्वं, जओ—

रूढपणयं पि पेम्मं विहडइ पडिकूलयाए महिलाणं । इय भाविऊण सुंदरि ! पियाणुकूलं ववहरेज्जा’ ॥ ३१ ॥

कुमारीए भणियं-को एत्थ वियारो? अणुकूलत्तणं वम्महणेव सिक्खावेया, अहं पुण तुमं एत्तियं पुच्छामि ‘किमेस पलयकालसरिसो संतावो तम्मि दिट्ठम्मि उवतमिस्सइ? उवाहु ण व? ति । वसंततिलयाए भणियं-‘पियसहि ! मुदे ! मुणसु,—

परिचितिओ वि सहसा अंगं गिन्ववइ पिययमो णवरं । अणं पि य किं पि रसंतरं तु दिट्ठो उण जणेइ ॥ ३२ ॥

अहवा पेच्छइ चेव पियसही येववेलाए जं एत्थ होही’ । एत्थन्तरम्मि ‘किं किं?’ ति भणन्तो सहसा पायडीहओ कुमारो । लज्जिया सह सहीए कुमारी । वितियं च कुमारीए-हा ! इमिणा हिययचोरेणं सव्वं दिट्ठं गिसुयं च अम्ह चरियं ति । ताव य वसंततिलयाए अब्भुट्ठिओ, ‘सागयं’ च भणिऊण उवणीयं आसणं । उवविट्ठो कुमारो । येववेल्मच्छिऊण भणियं कुमारेण वसन्ततिलयमुदिसिऊण जहा-किमेसा तुह सही अम्ह दंसणेण तुण्हिका ठिया?, ण जुज्जइ घरमाण-यस्स कुलीणाणं उवयाराकरणं ति, जओ—

जइ वि ण णेहो ण य पणयपसरसव्भाववडिडउल्लावो । तह वि अपुव्वागमणे इयरो वि समाउलो होइ ॥ ३३ ॥

वसन्ततिलयाए भणियं-कुमार ! सुकुमारा कुमारी इहागनणेण दिणयरकरणिवाएण य मणयं पीडिया ण सकइ जहुत्तमुवयारं काउं, ता ण एत्थ कुमारेण छलगवेसिणा होयव्वं । एयं मुणिऊण भणियं कुमारेण-सुंदरि ! किमेत्थ छलं?, ण अम्हे उवयाराऽन्थिणो, किंच—

उवयारो होइ परम्मि सुयणु !, अह सहइ सो तर्हि चेव । सव्भावपेसले पुण जणम्मि सो कइयवे पडइ ॥ ३४ ॥

महिदाणं पि हु सुंदरि ! ण तहा तुट्ठिं जणेइ हिययस्स । पियसव्भावोप्पियखइरवीडयं जह मुहावेइ ॥ ३५ ॥

तओ एयम्मि अवसरे वसन्ततिलयाए उट्ठिऊण कलहोयतलियाए तंबोलं कणूरसणाहं समप्पियं, कुमारीए सहत्थगुत्था य वउलमालिया । तओ कुमारेण कया कंठदेसे ‘कुमारीए सहत्थगुत्थ’ ति कलिऊण वउलमालिया, आचीलं मोत्तूणं समाणियं तंबोलं । पलोइयं च ईसीसिलज्जोणयाए [कुमारीए] अवंगदेसेण कुमाराभिमुहं । कुमारेणावि दिट्ठं तीए वयणकमलं ति । तेणावि पसण्णचंदहत्थेणं दावाचियं तंबोलं कुमारीए । तीए वि तस्स हिययं च गहियं ।

एत्थन्तरम्मि समागओ कुमारसंतिओ पडिहारो । भणियं च तेण जहा-“देव ! राइणा पेसिओ कंचुई आवासे चिट्ठइ, भणियं च तेण जहा-‘लहुं चेव सदावेह कुमारं, जओ अक्कमइ सोहणा वारा’, तओ अहं तुरियं समागओ, एवं च ठिए कुमारो पमाणं” ति । भणियं च [कुमारेण]-गच्छम्ह । तयणंतरं च गिम्माओ कुमारो । भणिया य पसण्णचंदेण

१ अवरिक्कुं जे । २ ‘जओ’ इति सुपुस्तके नास्ति । ३ ‘ण य ज’ जे । ४ एवं सु । ५-७ कुमारीए जे । ६ च तेण(तीए, ईति) जे । ८ एवं चिट्ठिए जे ।

वसन्ततिलया जहा-तए पुणो अम्ह आशसे समागतव्वं । ति भणिऊण निग्गया उज्जाणाओ । पत्ता णियेयमावासं । दिट्ठो कंचुई । अब्भुट्ठिओ य । पायवडणुट्ठिण य भणियं कंचुइणा-कुमार ! राया समादिसइ जहा-सोहणमणुट्ठियं कुमारेण जमिहागओ सि, ता पडिच्छमु जीवियाओ वि अब्भहिअयरं अम्ह कुंमारि, विवाहदियहं पुण गवेसिऊण कहिस्सामो । कुमारेण भणियं-जं राया आणवेइ "तं चेव कीरइ ति । दिण्णं कंचुइणो तंबोलं । गओ कंचुई ।

इओ य कुमारी सह सहीहि किंचि वेलं अच्छिऊण गया णिययभवणं गरुक्कयणोऽऽयल्लयहियया । विण्णायवुत्तताए य वद्धाविया वसन्ततिलयाए जहा-"पियसहि ! धीरा होहि, एत्थ कज्जे 'देवो चेव अक्खणिओ । अवि य—

चंदस्स चंदिमाए, रईए मयणस्स, कमल-कमलाण । जेण कओ संजोओ अज्ज वि सो चेव मुयणु ! विही ॥ ३६ ॥
अणुकूलो जइ कस्स वि हवेज्ज सहि ! मुक्कयपरिणइवसेण । तो ववहरइ जहिच्छं पिउ व्व दिव्वो ण संदेहो ॥ ३७ ॥
तस्स य अणुकूलत्तणं पिव संपयं लक्खिज्जइ । भणिया य अहं जहा-"अम्ह गेहं समागतव्वं" ति । ता पियसहि ! आलिहमु किं पि दूसहपियविरहवियणाविणोयणत्थं अवत्थासंख्यणं चित्तयम्मं" ति । तओ वेत्तूण चित्तफलहियं लिहिया रहंगी, 'समागमूय' ति अंसाहियं चेव णज्जइ । लिहिया य वसन्ततिलयाए हेट्ठओ गाहा—

आमुयइ महइपुल्लिणं कमलं अल्लियइ विसइ सरसलिले । रसइ कलुणं वराई चैकादी पियविओयम्मि ॥ ३८ ॥
वीयदियहे य वेत्तूण चित्तवट्ठियं तंबोलाइयं [च] गया कुमारभवणं । दिट्ठो य मयणवाणसंतावतावियदेहो वि सविसेसरमणिज्जो कुमारो । गया कुमारसमीवं । भणिया य कुमारेण-अइभूमिसमागमेणं परिखेइयं मुणालकोमलं समीहं सुंदरीए, ता समादिसमु किं कीरइ ? ति । तीए भणियं-कुमार ! कुंमारीए तुम्ह समीवं सरीरपउत्तिणिमित्तं पेसियेअं अहं, चित्तवट्ठिया य । [? तओ समप्पिऊण चित्तवट्ठियं] भणियं च तीए-एसा चक्कवाई मए विणोयणिमित्तं लिहाविया, इयं" च गाहा मए अवत्थासूयणत्थं लिहिया । पेच्छिऊण य भणियं कुमारेण—

"णिययावत्थं साहइ एस चिय णवर नीसहसरीरा । अज्जत्तगहियणिवडियमुणालवलयए चंचूए ॥ ३९ ॥
ता तुम्ह सहीए असरिसं विण्णाणं, परिण्णुडो पयडिओ भावो, सोहणा रेहा, पयरिसं गया भावणा, तुज्ज वि असाहारणं कवित्तणं । अहवा तीए संवडिदयाए केचित्तं पयं ?, होन्ति चिय आगरम्मि रयणाइ" ति । तओ कय-सम्माणा पेसिया वसन्ततिलया णिययभवणं ।

एवं च अण्णोण्णगेहणिययपेसणेणं वड्ढंते पेम्माणुवंधे, पसरन्ते सन्भावणयपसरे, अण्णया समासणे लग्गे तहाविह-भवियच्चयाणिओएणं कुमारी लेप्पमयकामएवऽब्बणं कुणंती तहिं "चेव उज्जाणे जहा कहिंचि गएण कुमारेण अविण्णा-यलेप्पेकम्मविसेसेणं 'अण्णपुरिसासत्त' ति दिट्ठा । दट्ठूण चित्तियं-धिरत्थु महिलाविलसियस्स, जेण एवंविहे वि मज्झो-वरि पेम्मपसरे तहा वि अण्णमभिलसइ, ता किमिमीए संपयं विवाहियाए ?, ण एत्थ अच्छन्तएहिं परिहरित्तं तीरइ, ता अकहिऊण महारायस्स अण्णत्थ वच्चामि, ण एवंविहसंतावुत्तावियसरीरो खणं पि इह सक्केमि चिट्ठिं । ति चित्तिऊण रयणीए चेव कइवयपुरिससमेओ णिग्गओ णयराओ । गच्छंतो य चित्तिउमादत्तो—

परपुरिससंगमुप्पुसियसीलसाराए तीए किं कज्जं ? । हियय ! समाससमु तुमं तीए रेह चिय अउव्वा ॥ ४० ॥
किं सीलवज्जियाए इमीए ?, रे हियय ! मुयसु अणुवंधं । ते धण्णा जे सइलोयणाण लक्खत्तणमुवेति ॥ ४१ ॥
दे हियय ! कुण पसायं, उल्लेहइ ! चय पम्ममुहं दइयं । परिणयविबसरिच्छं अहरदलं पावइ सउण्णो ॥ ४२ ॥
लज्जाविर्धे म्हि तुमए परम्मुहे सम्मुहेण "रे हियय ! । धण्णो होही तीए बाहापरिरंभेणऽक्खणिओ ॥ ४३ ॥
कह णु ण लज्जसि रे हियय ! मूढ ! तं तारिसं पि चित्तेन्तो । चक्कलियपीणयणवैट्ठचड्डणं पावइ कयत्थो ॥ ४४ ॥

१ 'णो समाग' सु । २ 'गयावासं जे । ३ कुमरी जे । ४ पुणो ठवेऊण जे । ५ 'त की' सु । ६ कुमरी जे । ७ 'पाऽऽयल्लि' जे । ८ 'देवो अवस' जे । ९ 'अम्ह गेहमागतव्वं जे । १० 'असाहिण' जे । ११ 'सरइ सु । १२ 'वच्चाइ जे । १३ 'कुमरीए जे । १४ 'वा ह, वि' जे । १५ 'य गा' सु । १६ 'वेत्तूजाणे जे । १७ 'लेप्पमयकम्म' सु । १८ 'वियम्ह तु' जे । १९ 'हे जे । २० 'दमणुक्क' सु । २१ 'वट्ठ' सु ।

मयसु भयंतं, दयं पि मयसु मणयं पि मुकसज्जायं । मज्झं मुट्ठीगेज्झं तीए को पावइ अउण्णो ? ॥ ४५ ॥
 रे हियय ! फुडं भणिमो 'रत्ते रंजिज्झइ' ति जुत्तमिणं । एयं तुज्झ ण जुत्तं 'रमणं रामेही सउण्णो' ॥ ४६ ॥
 पच्चवत्थदिद्वैविलियं दूरं परिहरसु पिययमं हियय ! कस्स ण हरेइ हिययं ऊरुजुयं तीए सुकुमालं ? ॥ ४७ ॥
 इय संतपणा-विहरणसमुत्तिस्सलेवहियहियणं ! कुमरेण णेय णाओ दीहो वि पढो विचिचेण ॥ ४८ ॥
 एवं च बहुप्पयारं हियणं चितयंतो पविट्ठो महाडंडं । पुणो वि पुब्बवुत्तं चितंतो गंतुमादत्तो, अवि य—
 अणुकूले पडिक्कलं परम्मइ सम्मुहं चलसहावं । पेम्मं महिलाहिययं, ण याणिमो 'कह णु संठविमो ?' ॥ ४९ ॥

तओ पेक्खिउमादत्तो महाडंडं । सा य णारायणमुत्ति व्व पयडियविस्सरूवा, दुस्सीलघरिणि व्व सयावराहा, सार-
 यच्छेत्तभूमि व्व करिसयसंकुला, सरयसिरि व्व 'पोण्डरियमण्डिया, तियसा-उसुरमहियसमुद्वेल व्व सकमला, विणिह-
 यहरिणक्खसपुरि व्व मयाहिवसमाउला, दाणवाहिवतणु व्व वियरियहरिणहा, गंगेय-उज्जुणसमरभूमि व्व वियंभिय-
 सिहडिंसिलीमुहा, भारहकह व्व समुल्लसियभीम-उज्जुणा, जहिं च रूरुवन्ति विरुया, मुब्बुयन्ति भल्लुंकीओ, धुरुदुरन्ति
 वराहा, सुसुयन्ति सप्पा, गुल्लुल्लेति गयवरा, मज्जन्ति महिसा, चरन्ति चमरीओ, गज्जन्ति गंडया, भज्जन्ति भीरुया, रज्जन्ति
 रुरुया, मयमुंदिया मयारिणो, विद्वन्ति वग्घा, सप्यन्ति ससया, लीलन्ति लावया, तैम्मन्ति तिचिरा, मुक्ककेकारवाई
 मोरमंडलाई । एवमादि पेच्छंतो महाडंडं लंघिऊण कइहि वि पयाणएहि पत्तो चंपं णयारिं । तत्थ य समरसीहो णाम
 णरवइ परिवसइ । आवासिओ य विवित्तपदेसे । दिट्ठो य सोहणे दिवसे राया । ओलग्गिउमादत्तो ।

इओ य तम्मि णिग्गवे राइणा गवेसाविओ । पुच्छिओ य तयासण्णज्जो—किं णिमिच्चं कहिं वा गओ रीयपुत्तो ?
 चि । तेहिं वि अगाववुत्तंतेहिं जहट्ठियं चेव 'ण याणिमो' चि साहियं णरवइणो । उवल्लेदो य एस वुत्तं तो रायकुमरीए
 जहा—णीं णज्झइ कहिं पि केण वि पओयणेणं गओ चंदउत्तकुमारो चि । तओ एयमायणिऊण सहस चि मुच्छिया ।
 पडिवाइया सत्थहियया य परिदेविउमादत्ता । कहं ?—

इहा णाह ! कत्थ सि गओ ?, किं किं एयं ? ति मज्झ वि ण सिट्ठं । गिवसंतीए वि मए हियए चित्तं चिय ण णायं ? ॥ ५० ॥
 णाह ! ण जाणामि अहं दोसं जेणेह उज्झिया तुमए । अहं तायस्स ! ण मज्झं, किमहं तुमए परिचत्ता ? ॥ ५१ ॥
 सगुणं व विग्गुणं वा महाणुभावेहिं जं समायरियं । पालन्ति तं तह चिय जइ ण वि सीले विसंवयइ ॥ ५२ ॥
 अज्ज वि णाह ! ण याणसि ममं पि दूरेण सीलउगगियरो । धम्माराहणयाए धम्माण गवेसणं जुत्तं ॥ ५३ ॥
 ता मइमोहो व्व 'तुहं, अहंवा तं णाह ! विप्पलदो सि । केणावि अइण्णेणं, भत्तं कह अण्णहा चयसि ? ॥ ५४ ॥
 दोसा गुण व्व जे केइ कप्पिया पियजगम्मि णेइवसा । परिणामे ताण पुणो गिव्वहणं अण्णहा होइ ॥ ५५ ॥
 णाओ सि तुमं सामिय !, ममं पि जाणिहसि दीहकालेण । मोत्तूण तुमं जम्मंतरे वि जइ अण्णहा होज्जा ॥ ५६ ॥
 इय केत्तियं व भणिहिसि णाह ! चत्ताइं तुह विओयम्मि । विसयमुहाइं महायस ! सहियाइं विलासकज्जेहिं ॥ ५७ ॥

एवं च बहुविहं विलवन्ती सट्ठीहिं भणिया—'सामिणि ! किमणेगमरणविलविण्ण ?, गँओ सो तुमं मोत्तूणं ण णज्झइ
 केणावि पओयणेणं । तुमं पुण एचित्तं एवंविहं च वोत्तुं केण सिक्खविद्या ? । ता सामिणि ! कयं तुमए मरणाओ वि
 अम्महियं अइदुकरं पदमजोव्वणम्मि विसयपरिचयणं तस्स य अगायपमत्थस्स कए' चि । एत्थंतरम्मि णाऊण एयं
 वइयरं समागया जणणी । जाणिओ य पण्णारिसेसो कुँमारीए । भणिया य—पुत्ति ! किमेवमाउलीहया ?, जओ सो
 "चेव आगमिस्सइ तओ सोहणं, अहं णाऽऽगच्छइ तओ जो 'को वि तओ वि सुंदरयरो तस्स तुमं पिया संजोइस्सइ, ण हु
 कण्णायत्ता वरा, पिया ते जाणिस्सइ संजोगं ति । तीए भगियं—'अम्ब ! किमेत्थ जाणियव्वं ?,

१ अहण्णो जे । २ रज्जिज्झति ति जे । ३ वित्त जे । ४ ववि जे । ५ चित्तयतो जे । ६ दयं । सा जे । ७ सरयं जे ।
 ८ पोहरीयं जे । ९ वियसिं जे । १० रुक्कति जे । ११ मुदया जे । १२ तमन्ति जे । १३ ववि जे । १४ 'सि णिग्गओ रा' ख ।
 १५ रायडणु ति जे । १६ 'दो एस ख । १७ ण जाणिवइ जे । १८ तुमं जे । १९ अणज्जेयं जे । २० गओ तुम ख । २१ कुम-
 रीए जे । २२ चेव समागमिं जे । २३ कोइ जे । २४ जाणइस्सइ जे ।

साहेजसु अंव ! तुमं एयं तायस्स णवर विण्णत्तिं । लम्माहिइ इमम्मि भवे सो वा अग्गि च्च मह हत्थे ॥ ५८ ॥

एवं च गुरुदुक्खपीडियाए परिहरियपुरिसदंसणाए बहुप्पयारं पि भणमाणीए ण कओ विसयाहिसंगम्मि मणो । ठिया य सद्धम्मपरायणा । कओ य सुच्चयागणिणीए सह संगमो । परिणओ "जिणएसिओ धम्मो । धम्मप्पहावेण य ववगओ सोयप्पसरो, उल्लसिओ सुहो परिणामो । जिणप्पणीयभावणाहिं अप्पाणं भावेमाणी चिट्ठइ च्चि ।

इओ य तत्थउच्छंतस्स चंदउत्तस्स, समरसीहस्स राइणो समरकेसरी णाम पुत्तो सइवायरियउवप्सेण मन्त-
मम्मसन्तो पमाण य मंतदेवयाए छलिओ । गहवसेण य तं णत्थि जं ण कुणइ ।

उम्माइ हसइ धावइ रोवइ णचइ य परिहणं सुयइ । संतावेइ परियणं जगणिं जणयं च सो दुहिओ ॥ ५९ ॥

एत्थन्तरम्मि चंदउत्तस्स कुमारस्स अग्गओ भणियं णरवतिणा सदुक्खं-मरणाओ "वि गरुययरं दुक्खं जं एवंविहो पुत्तो च्चि । तओ तमायणिऊण भणियं चंदउत्तेणं जहा-णेह कुमारं, पेक्खामो च्चि । तओ रायाएसेणं आणिओ रोज-
पुत्तो महया किलेसेणं । कयं चलणसोयं चंदउत्तेण । कवचिओ अप्पा । आलिहियं मंडलं । पउत्तो मंतजावो । आविट्ठो रायउत्तो । भणिओ य-आसणं वंधमु, आहारं पडिच्छसु च्चि । तओ एवंविहमुवयारं काऊण मोयाविओ गहाओ रायउत्तो, समासत्थो जाओ । चितियं च राइणा-एस महापुरिसो च्चि, उवयारी य महाकुलप्पसुओ य मज्झ समीवं च आगओ, ता एयस्स जं कीरइ तं सव्वं थेवं । ति चिन्तिऊण संकप्पियं-देमि एयस्स नियरज्जस्स अदं सोहणे दिवसे च्चि । एवं च जाव राया कयववसाओ चिट्ठइ ताव य भवियववयाणिओएणं महादेवीए रायकुलाओ णिक्खमंतो सदाविओ चंदउत्त-
कुमारो । पविट्ठो य मुद्धहिययत्तणेणं । कओवयारो य पविट्ठो "गेहम्मंतरे । विविचे य भणिओ महादेवीए जहा-"अज्ज-
उत्त ! पढमदंसणाओ चेव मह हियए तुमं पविट्ठो । तदिवसाओ य आदत्तं ण याणामि भोयणं, ण णिहं, ण सुहं, ण दुहं, ण रत्तिं, ण दिवसं, ण वार्हिं, ण अब्बिन्तरं, 'एस गओ, एस पविट्ठो, एयं भणियं, एयं च ववसियं' ति तुह वाचारपरायणा तुह वयणमेत्तकयजीवियासा चिट्ठामि च्चि, किंच-

किं रयणीए ? दिवसेण किं व ? किं वोभएण ? ण हु जत्थ । दइएण समं जायइ समागमो जीयणाहेणं ॥ ६० ॥

किं बहुणा वायावित्थरेण ? सीलं कुलं च तुह कज्जे । चत्तं, चयामि णियजीवियं पि जइ होसि पडिक्कलो ॥ ६१ ॥

सुंजसु सुहय ! जहिच्छं, देमि धणं, णरवइ पि तुह कज्जे । अणुक्कलेमि महायस !, लेच्छी पडिक्कलइ अहव्वो ॥ ६२ ॥

जे होन्ति महापुरिसा ते परकज्जुजया सया होन्ति । णियकज्जं पुण तं ताण जं परत्थाण णिव्वहणं ॥ ६३ ॥

इय जइ भयसि भयंतं तो सव्वं सुहय ! सिज्झइ अयंढे । अह अण्णह च्चि सुंदर ! पत्तिय 'मारेइ य मरन्तं' ॥ ६४ ॥

तओ एयं सुणिऊण थंभिओ व्व णि(लि)हिओ व्व "विम्हिउ व्व णट्ठचित्तो व्व किं पि कालमच्छिऊण रायपुत्तो भणिउमादत्तो-

ण हु अम्ब ! तुम्ह दोसो, मज्झं चिय पावपरिणइ एस । जेण जणणीसमाणा तुमं पि एवंविहं भणसि ॥ ६५ ॥

मज्झ ण तुमं, ण राया, ण य भोया, णेय एत्थ वसियव्वं । एएण णिमित्तेणं किंच व्व महं समुप्पण्णा ॥ ६६ ॥

किं कीरइ नं जीवंतएहिं जेणं किएण तहियहं । आमरणन्तो जायइ मणम्मि गरुओ चमकारो ? ॥ ६७ ॥

अम्ब ! खेमेजसु, गच्छामि एस पावो अभिण्णमुहराओ । जह तुज्झ कुलं विमलं ति होइ तह तं कुणेज्जासि ॥ ६८ ॥

एवं भणिऊण णिग्गओ । गओ णिययमावासं । साहिओ एस वुत्तंतो पसण्णचंदस्स । तेणावि भणियं-सुंदरमणु-
ट्ठियं, किंतु जहट्ठियं चेव अहं साहेमि णरवइणो । तओ मए भणियं-ण जुत्तमिणं, जओ वावाइजइ सा वराइणी, ता एत्थ पत्तकालं जं देसपरिचाओ च्चि । वयंसएण भणियं-ण जुत्तमेयं, जओ सा दुरायाणिणी णरवइ अण्णहा वुग्गाहिस्सइ च्चि ।
तओ मए भणियं-जं होउ तं होउ, अवस्स गंतव्वं । ति भणिऊण दिण्णं पयाणयं । गया देसन्तरं ।

१ "ओ सु" सू । २ जिणदेसिं जे । ३ सोयणं सू । ४ णि गुरुवर जे । ५ रायउत्तो जे । ६ "सोयणं च" जे । ७ "हो य मे" जे । ८ "ओ य म" सू । ९ चिट्ठि जे । १० विम्हिउओ व्व जे । ११ तुज्झ जे । १२ सव्वेज्जसु सू ।

इओ य राइणो तीए साहियं जहा—अहं तेण रायेउत्तेण पत्थिया, ण य मए अणुमयं, तओ सो विलक्खिमाए चइ-
ऊण तुमं गओ चि । एयं सुणिऊण णरवइणा णिउणं गवेसावियं । जाव य जीए चेढीए वाहितो रायउत्तो तीए चेव
जहट्टियं साहियं जहा—इमीए अम्ह सामिणीए बहूणि दिवसाणि ममं भणंतीए रायउत्तवाहरणणिमित्तं, अणुबंधे य मया
सहिओ, ण य इमीए तेण महाणुभावेण वयणमणुद्वियं, गओ य सो महाणुभावत्तणमवलम्बमाणो चि । तओ राइणा गवे-
साविओ, ण य उवलद्धो चि । एस वुत्तंतो अम्ह पुरिसेण पिट्ठओ समागएण सव्वो साहिओ चि ।

तओ अहं ओहयमणसंकप्पो पत्तो रयणपुराहिहाणस्स णयरस्स वाहिरियं । आवासिओ विविचे पएसे । पुच्छिओ य
एको कुलपुत्तओ णरवइणो णामं गुणा य । तेणावि साहियं जहा—रयणसेहरो णाम णरवती सुहसेवणिज्जो गुणपक्ख-
वादी चाई कयण्णुओ संविभागसीलो य । तेण चितियं—सोहणं जइ देवमणुकूलं भविस्सइ । तओ रायउत्तो कयकर-
णिज्जो कइवयपुरिसपरिवारिओ वेसरीए समारूढो गओ रायंगणं । पडिहारेण जाणाविओ जहा—देव ! देसन्तराओ
रायउत्तो समागओ पडिहारभूमीए चिट्ठइ देवदंसणत्थं, संपइ देवो पमाणं ति । राइणा भणियं—पविसंमु चि । तओ
पविट्ठो । पायवडणुद्विओ य उवविट्ठो रायाइट्ठम्मि आसणे । कयसम्माणो य पुच्छिओ पउत्तिं । तेणावि ‘पिउणो रोसेण
तुम्ह समीवेसुवागओ म्हिं’ चि साहियं । राइणा भणियं—सोहणमणुचिट्ठियं जमिहागओ सि, एयं पि तुह निययं चेव
रज्जं । ति भणिऊण कयसम्माणो विसज्जिओ । ओलगिउमादत्तो । सरइ कालो ।

अणया राइणो नियमज्जाए पुत्तस्स रज्जात्थिणीए विसं संपउत्तं । तं च मए मन्तजोगवलेण पल्लट्टियं । पउणो उव-
रुद्धो य राया । एत्थंतरम्मि राइणो पुत्तेण मणिरहेण सदाविओ अहं । मेत्ती य तेण सह जाया । ण मए णायं जहा—
राइणो पुत्तेण विसं पउत्तं । राइणा विण्णाओ अहं जहा ‘मह पुत्तेण सह संगओ’ चि । तओ राइणा अहं गिसिद्धो जहा—
इमेणं दुट्ठायारेणं पुत्तेण सह समागमो ण कायव्वो । तओ मए वि पडिवण्णं ति । तयणन्तरं च अहं तस्स संठवणत्थं
तग्गेहं गओ । ताव य राइणा तव्वावायणत्थं पेसिया पुरिसा सण्णद्धवदपरियरागारा । तओ अहं पि तत्थेव सण्णद्धो ।
वावाइया य अम्हेहिं ते पुरिसा केई, केइ तत्थ णट्ठा । अत्थमिओ य भयवं दिवसयरो । तओ अहं सह तेण रायउत्तेण
णिग्गओ णयरओ । गओ सो नियममाउलस्स समीवं ।

अहं पि तं ओउच्छिऊण गओ रयणभूमिं कइवयपुरिसपरिवारिओ । पत्तो रयणागरं । खणाविया मए रयणभूमी ।
पत्ताणि रयणाणि । जाव किलागमिस्सामो तावे य अवक्खंदं दाऊण एगेणं पच्चन्तिएणं उडालियाणि रयणाणि । णीयो
“बंधेउं गियं पल्लिट्ठाणं । तओ मुक्को महया किलेसेणं । ते य पुरिसा मं णिप्फलं मुणेऊण दुमं व सउणगणा गया दिसो-
दिसिं । अहं एगागी संबुत्तो । पत्तो य एगं पट्ठणं । तत्थं य हट्ठमज्झदेसम्मि चचरे केहएणं कहाणयं कहन्तेणं पट्टियं
गाहाजुयलं—

वच्चइ जहिं जहिं चिय भोगेपिवासाए विणडिओ पुरिसो । पावइ तहिं तहिं चिय पुण्णेहिं विणा पर किलेसं ॥६९॥
धम्मो सुसेविओ होइ कारणं अत्थ—काम-मोक्खाणं । तेण विणा किं सिज्झउ ? कारणओ कज्जसिद्धि चि ॥ ७० ॥
एवं च मए आयणिऊण चितियं—एवमेयं, ण एत्थ संदेहो, ता करेमि अहं धम्मं ! ति चिन्तयन्तो गओ “णगरवा-
हिरियं । दिट्ठो य मए उज्जाणे फामुए पदेसे विजयसेणायरिओ समुप्पण्णओहिणाणो परिसंए मज्झगओ धम्मं
देसंतो । तं च दट्ठणं मह समुल्लभियं वीरियं, ववगयं मोहपडलं, वियम्भिओ मुहपरिणामो । गँओ य अहं तस्स समीवं ।
वंदिओ य भयवं मए । दिण्णासीसो उवविट्ठो चलणंतिए । भयवया मह चित्तं णाऊण भणियं मं उदिसिऊण—

मा संतप्पमु मुवुरिस ! पुव्वज्जियकम्मपरिणई एसा । जीए णडिज्जन्ति जिया “दोग्गइ-दोगच्चदुक्खेहिं ॥ ७१ ॥
मए भणियं—भयवं ! किं पुण तं कम्मं जं मए अण्णाणंवेणमणुद्वियं ? । भयवया भणियं—मुणसु,
इओ तइयभरम्मि संखउरणिवासी तुमं वंभणो । णिमंतिओ मँहयालदिवसेसु पुण्णभहेणं सेट्ठिणा । समागओ य मँज्झ-

१ “यपुत्ते” जे । २ “ओ एको जे । ३ “ससमेओ जे । ४ “सउ ति जे । ५ “वमहमाय” जे । ६ “म्हिं साहि” जे । ७ “ए
विण्णायं जे । ८ “मज्झ पु” जे । ९ “यारपु” सु । १० “अहन्तस्स सु । ११ “आपुच्छि” जे । १२ “व अव” सु । १३ “वधिरुज्जं जि” जे ।
१४ “एव ह” जे । १५ “कहेणं जे । १६ “गमुहासाए जे । १७ “एयं जे । १८ “धम्मन्ति सु । १९ “ओ वाहि” सु । २० “सामज्झ”
जे । २१ “ओ ह तं जे । २२ “दुग्गहं जे । २३ “महालदि” जे । २४ “मज्झण्ण” जे ।

ण्णकाले वणियस्स मेहं । ताव य तत्थ चेव छट्ठस्स पारणए साह मल-जल्लविलदेहो सेयसलिलसित्तगतो भिक्खं पविट्ठो । दट्ठण य तेण वाणियगेण अब्भुट्ठिओ, पडिलाहिओ गओ य । एत्थंतरम्मि भणियं तए-अहो ! कट्ठमण्णार्णं, जेण तुम्हा-रिसा विवेइणो मुञ्जंति, जओ किमणेणं सुवजाइणा सोयवज्जिएणं लोयायारवाहिरेणं ? ति । वणिएण भणियं-भट्ट ! किमम्हाणमेयाए चिंताए ? घरमागयस्स अवस्स दायव्वं ति । तए भणियं-दिण्णउ दायं, किंतु णिप्पलं ति । वणिएण भणियं-भट्ट ! मा एवं भण, जओ एसो बम्मयारित्तिणेणं सया सुई, बम्मं धरेन्तो बम्मणो, सब्बसत्ताणुग्गाहपरायणो कुक्खीसंबलो णिम्ममत्तो चत्तपुत्त-कलत्तबंधणो । एयं सुणिऊण भणियं तए-किमणेण वेयविहाणुट्ठाणवज्जिएणं ? ति । वणिएण भणियं-तुमं जाणसि ति । तओ तुमए वडं अवोहिवीयं कम्मं । तहाविहजीववायणपरायणेहिं जण्णाइकम्माणु-ट्ठाणेहिं काऊण पंचिंदियादीण जीवाण वहाइयं, तण्णिमित्तं च बंधिऊण णरयवेयणिज्जं कम्मं, कालं काऊण उववण्णो रयणप्पभाए समहियसागरोवमाऊ णारगो ति । तत्थ य—

हण छिंद भिंद भंजसु फालसु मज्जेण खिवसु कुंभीए । पुव्वकयकम्मकुविएहिं णरयपालेहिं विहविओ ॥ ७२ ॥

दीणो दीणायारो परव्वसो पुव्वकम्मदोसेण । चिरमणुभविऊण तहिं वियणं हरिणो समुप्पण्णो ॥ ७३ ॥

तत्थ वि छुट्ठा-पिवासा-सीया-ऽऽयववियणतावियसरीरो । दट्ठण मुणिं अहवीए कम्मविवरेण उवसंतो ॥ ७४ ॥

तत्तो वि^१ मरिऊण अणसणविहिणा इहं समुप्पण्णो । ईहं पि—

तकम्मसेसयाए ण होति तुह परिणयाइं वि मुदाइं । एहिं कुणसु महायस ! धम्मं सोक्खाण वीयं ति ॥ ७५ ॥

एवमायणिऊण मए भणियं-एवं कीरउ ति । साहिओ य तस्स संबंधी वड्यरो परिसाए भगवया । साहियं च सुणिऊण तओ मए सेंदिं संबुद्धा बहवे पाणिणो, संबुज्झिऊण पव्वइया य ।

एयं मज्झ वेरग्गाकारणं जं तुम्हेहिं पुच्छियं । बलएव-वासुदेवेहिं भणियं-भयवं ! सोहणं वेरग्गाकारणं ति, एरिसो^२ चेव एस असारो संसारो, एत्थ य अण्णाणदोसेण परिकिलिस्सन्ति पाणिणो, णं मुणंति परमत्थं, ण पेच्छन्ति आवइं, ण जाणंति सोग्गाइमग्गं, ण गेण्हंति कल्लणपरंपराकारेणं अणवज्जं पि जिणदेसियं धम्मं ति । तओ एवं भणिऊण बलएवेण दुविट्ठुभाउणा गहियाइं जहासत्ति वयाइं । पालिओ जिणएसिओ धम्मो । कया तित्थस्स उब्भावणा । सुहपरिणाम-परिणओ अच्छिऊण किंचि कालं गिहवासे पव्वइओ तस्सेव धम्मायरियस्स सगासे । तव-संजमरओ विहरिऊण भरह-खेत्तं, खवगसेदिविहाणेण उप्पाडिऊण केवलं, सेलेसिविहाणेण य णिरुंभिऊण जोगे सिद्धो वैलएवो ।

दुविट्ठु वि महाबल-परकमगन्विओ सद्धम्मपरम्मुहो णिहओ णिरणुकंपो वावाइऊण तारयाहिहाणं पडिवासुदेवं तप्पेसियहत्थगयचकेणं, भरहदं भुंजिऊण, भोगासत्तमणो सब्बहा सुहपरिणामरदिओ कालं काऊण णरए उववण्णो ति ॥

इति महापुरिसचरिए दुविट्ठु[वासुदेव-विजयबलदेवाण] चरियं सम्मत्तं ॥१७-१८॥

१ 'वाचार' जे । २ मइ । किं जे । ३ 'फलन्ति' स्यु । ४ मइ । मा जे । ५ 'परेहिं' जे । ६ वि य मरिऊणं अणसणविहिणेह-
इ स्यु । ७ इहं पि स्यु । ८ एयमां जे । ९ कहिं बहवे संबुज्झिऊण पव्वइया । एं जे । १० तुम्हेहिं जे । ११ 'सो एस संसा' स्यु ।
१२ ण मुज्जंति जे । १३ 'णं जिण' स्यु । १४ अणदेवो जे ।

[१९ विमलसामिचरियं]

:÷:×:÷:

एवं च वासुपुज्जतित्थयरकाले दुविट्ठ अद्वचकवटी सत्तरिधणुप्पमाणो चउहत्तरिवरिसलक्खाउयमणुवालिऊण गओ ।

इओ य वासुपुज्जाओ तीसाए सागरोवमाणं समइकन्ताए विमलाहिहाणो तित्थयरओ सट्ठिधणुणि ऊमुओ षण्णास-
वरिसलक्खाउओ समुप्पण्णो ति । कहं ? भण्णइ—

परहियकज्जेकरया चिंतामणि-कप्पपायवग्गहिआ । उप्पज्जंति पयाणं पुण्णेहिं जए महापुरिसा ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे कंप्पिल्लं णामे णयरं संपुण्णं धणरिदीए । जत्थ य पुरिसवग्गओ सुरूवो
गुणवंतो य, विणय-लज्जाधणो महिलायणो । सव्वगुणगणोववेयं णयरं ।

अह तत्थ णवर दोसो जं भणिमयभित्तिकिरणपडइत्थे । कुहणीमुहे ससंको संचस्इ विलासिणीसत्थो ॥ २ ॥

तत्थ य राया कयवग्गओ सुकयकम्मपरिणामो व्व मुत्तिमन्तो परिवसइ । तस्सं साम्मा णाम महादेवी । तीए सह
विसयसुइमणुहवन्तस्स [तस्स] अइकन्तो कोइ कालो ।

अण्णया वइसाहसुद्धवारसीए सहस्सारकप्पाओ चुओ सँामाए उवलदचोइसमहामुमिणाए गग्गे समुप्पण्णो ति ।
पुणो अइकंतेसु णवसु मासेसु साइरेगेसु माहस्स सुद्धतइयाए उत्तरमैइवयासु जाओ । तहेव कओ जम्माहिसेओ सुरिंदेणं ।
पइट्ठावियं च से णामं जेहत्थं विमलो ति । णाणतियसमेओ संवडिंओ ।

कयदारपरिग्गहो य कुमारभावमणुवालिऊण पच्छा पुहइल्लिच्छि माणिऊण लोयन्तियपडिबोहिओ माहस्स सुद्धतेर-
सीए णिवखंतो । अणुपालिऊण छउमत्थपरियागं जंबुरुक्खस्स छायाए खवगसेदीए कमेणं खवियघणघाइचउको
केवलं संपत्तो । विरइयं देवेहिं समोसरणं । पव्वाविया भगवया गणहरा । मिलिया य परिसा । साहइ धम्मं सोग्गइणि-
बंधणं ति । तत्थ य समुरा-ऽसुर-णर-तिरियपरिसमज्झयारम्मि भणियं भगवया जेहा—

सम्मइंसणसुद्धं णाणं चरियं च तिणिण एयाइं । मिलियेँइं मोक्खमग्गो, ण अण्णहा एस परमत्थो ॥ ३ ॥

एयाणमुत्तरोत्तरलाभे पुव्वस्स णिच्छिओ लाभो । भयणिज्जो होइ फुडं ति पुव्वलाभे अं इयरस्स ॥ ४ ॥

जीवस्स कम्मपरिणइवसेण सयमेव अह सुणंतस्स । होइ णिसग्गाऽहिग्गमा दुविहा सम्मचपडिवत्ती ॥ ५ ॥

सम्मत्तस्स सरूवं जीवादिपयत्थतत्तसद्वहणं । जीवादओ पयत्था परमत्था सत्त मोक्खंता ॥ ६ ॥

सागारो अणगारो उवओग्गो चेयणाए वावारो । तल्लक्खणा य जीवा तव्विवरीया अजीवा उ ॥ ७ ॥

रूवा-ऽरूवित्थणओ ते दुविहा, तत्थऽरूविणो भणिया । धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगासा अ, रूविणो पोग्गला होन्ति ॥ ८ ॥

कम्मस्स पवेसो आसवो ति, तस्सेव संवरो रोहो । होइ कसायणिमिच्चा जौ ठिइ सा कम्मणो बंधो ॥ ९ ॥

णिज्जरणं पुण तवसा कम्माणं साडणं विणिदिट्ठं । णाणावरणादीणं कम्माणं जो खओ मोक्खो ॥ १० ॥

णाणं पंचपयारं मइणाणं तत्थ आइमं भणियं । तं इंदिय-णोइंदियभेएणं छव्विहं होइ ॥ ११ ॥

१ 'म पुरं सं' जे । २ 'स्स य सम्मा णा' सू । ३ 'वा विसाह' सू । ४ सम्माए सू जे । ५ जहट्ठिय वि' सू । ६ णाणाइसयस' सू । ७
'अच्छिभपुवालिऊण लो' सू । ८ 'यं च भं' जे । ९ 'जेहा' इति सूपुल्लके नास्ति । १० 'याणि जे' । ११ 'व जे' । १२ 'जा डी सा जे' ।

एकेकं पुण चउहा अवग्गहेहाइभेयओ भणियं । सुयणाणं होइ पुणो णाणं गंथत्थमणुसरओ ॥ १२ ॥
 ओहीणाणं दुविहं-भवपच्चइयं खओवसमियं च । पढमं णेरइयाणं देवाण य, बीयमण्णेसिं ॥ १३ ॥
 मणपज्जवणाणं पुण मणुयाणं गुणविसेसजुत्ताणं । रिजु-विउलमतीभेयं जणमणपरिचिन्तियपयासं ॥ १४ ॥
 सासयमप्पडिवादी एगविहं केवलं तु णिदिट्ठं । एयं पंचपयारं णाणं भणियं समासेणं ॥ १५ ॥
 चरणं पि होइ दुविहं-देसे सव्वे य होइ णायव्वं । पढमं गिहीण, बीयं जईण पेत्तेय बहुभेयं ॥ १६ ॥
 पंच य अणुव्वयाइं गिहीण, सिक्खावयाइं चत्तारि । तिण्णि य गुणव्वयाइं, बारसभेओ समासेणं ॥ १७ ॥
 मूलुत्तरगुणभेओ जइधम्मो होइ, तत्थ मूलमिणं । पंच य महव्वयाइं णिसिभोयणविरइच्छाइं ॥ १८ ॥
 पिंडविसोही-पडिलेहणाइओ उत्तरो समक्खाओ । एयाइं सम्मणाणाइयाइं साहेति परमपैदं ॥ १९ ॥

एवमाइ भगवया साहिओ मोवस्समग्गो । पडिबोहिया बहवे पाणिणो पयट्ठाविया सोग्गइमग्गे जिणदेसिए धम्मो ।
 एवं च कमेण विहरिऊण भरहखेत्तं, पालिऊण केवलपरियायं, सेलेसीविहाणेणं खविऊण भवोपग्गाहीणि चत्तारि
 कम्माणि सट्ठि वरिसलक्खा आउयमणुवालिऊण सम्मेयगिरिसिहरे सिद्धिमणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए विमलतित्थयरस्स चरियं सम्मत्तं ॥

महापुरिस १९ ॥

[२०-२१ सयंभुवासुदेव-भद्रबलदेवाण चरियं]

:—:X!—:

विमलतित्थयरकाले सयंभू वामुदेवो भद्रो य इन्द्रदेवो समुत्पण्णो । ते य एण्णास्सरिअल्लसवाउया सद्विधणु-
मुयदेहा य । तत्थ य बलदेवो सिद्धो । इयंरो य णरयगामी संवुत्तो । कहं ? भण्णति—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे [१ चारवई णाम णयरी । तत्थ य रुद्धो णाम णरादिवो परिवसइ ।
तस्स य पुढवी णाम महादेवी । तीए सह सयल्लिदियसंपुण्णं विसयमुहमणुहवंतस्स समुत्पण्णो सयंभू णाम पुत्तो । सयंभुणो
जेठभाया भद्रो च्छि । ते य दो वि भायरो अइकंतकुमारभावा अहिणवजोव्वणत्था] गीतेसु कुसला, सत्येसु गहियत्था,
चावम्मि णिच्चला, करवाले कराला, असिबेणुपवेसम्मि सुपइट्टिया, चित्तडण्डे विचित्ता, चकम्मि पंचाला, भोग्गरम्मि
मुमुभूरियारिणो, सुलम्मि जणियसत्तुमुला सव्वजणाणुमया वियरंति । एवं च भरहखेत्तं वियरंतेहिं दोहिं वि बलदेव-
वामुदेवेहिं दिट्ठो चउणाणी संखउरवाहिरुज्जाणावासिओ मुणिचंदो णाम अगगारो । तं च दट्ठण बलएवेण भणियं-
पेच्छामो एयं महामुणिं, करेमो अत्तणो जम्मं सफलं ति । तओ सयंभुणो तयणुरोहेण भणियं—एवं कैरेमइ । एवं च
भणिऊण गया साहुसमीवं । वंदिओ य मुणी । धम्मलाहिया मुणिणा उवविट्ठा चलणंतिए । कहावसाणे य भणियं
बलएवेण—भयवं ! पढमजोव्वणम्मि किं भोगपरिचायकारणं ? ति साहेउ अम्हाणं भयवं, अवणेउ कोऊहलं । तओ
भयवया भणियं—सोम ! जइ अणुबंधो ता सुणसु संसारविलसियं । ति भणिऊण सव्वपरिसाए णियचरियं
साहिउमाहचो—

अत्थि जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सोरियपुरं णाम णयरं । तत्थाहं दंडवम्मुणो पुत्तो गुणधम्मो णाम परि-
वसामि । गहियकलाकलावो य णरवइणो पुरजणस्स य अचंतं मणाभिप्पेओ ।

अण्णया य 'वसन्तउरसामिणो ईसाणचंदस्स धूयाए कणगंमईए सयंवरो' च्छि सोऊण महया चडयरेणमहं
गओ । पत्तो, आवासिओ वाहिरियाए । पविट्ठो य सयंवरांमंडवे । अण्णे य बहवे रायउत्ता । तओ अहं रायधूयाए णिदाए
दिट्ठीए ईसीसिवलन्तदच्छिपेसियच्छिच्छोहहिययगयभावं पिसुणन्तीए पलोईओ । विण्णायं तं मए जहा—इच्छइ च्छि ।
तओ पच्चूसे सयंवरो भविस्सइ च्छि गओ णिययमावासं । अण्णे वि रायउत्ता सट्ठाणेसु गया । "एत्थन्तरम्मि रयणीए
पढमजामम्मि समागया एगा परिणयवया दासचेडीहिं पैरिवारिया इत्थिया । तीए समप्पिया चित्तवट्टियाए लिहिया
विज्जाहरदारिया । "तीए य हेट्ठओ अहिप्पायस्यया गाहा—

तुइ पढमदंसणुप्पणपेम्मैवसविणडियाए मुदाए । कह कह वि संठविज्जइ हिययं हियसव्वसाराए ॥ १ ॥

तओ तयणन्तरमेव उप्पियं तम्बोलं समालहणयं च कुमुमाणि य । सव्वं च गहियं सबहुमाणं कुमारेणं । दिण्णं च
तीए कण्ठाहरणं पारिओसियं । भणियं च तीए—कुमार ! भट्टिदारियाएसेणं किंचि वत्तव्वमत्थि, ता विविचमादिसउ कुमारो ।
तओ कुमारेणं पासाइं पलोइयाइं, ओसरिओ परियणो । तओ भणिओ तीए—कुमार ! कुमारी विण्णवेइ जहा—इच्छिओ
मए तुमं, किंतु जाव य मैह कोइ समओ ण पुण्णो ताव य तए अहं ण किंचि वत्तव्वा, किंतु मए तुइ परिग्गहे चेव
विट्ठियव्वं ति । मए भणियं—एवं भवतु, को दोसो ? च्छि ।

तओ पच्चूसे सयलणरवईपच्चक्खं लच्छीए व्व महमहस्स महं तीए उप्पिया वरमाला । विलक्खीभूया सैयलरा-
याणो गया णिययट्ठाणेसु । तओ सहीहिं सा भणिया—पियसहि ! को एयस्स तए गुणो दिट्ठो जेण समप्पिया वर-

१ 'रो णर' सु । २ बलदेवेण जे, एवमन्यथापि । ३ 'गा य तं जे' । ४ 'करेमइ' सु । ५ 'ओ मुं' सु । ६ 'गुण सं' सु ।
७ 'सियन्ति' सु । ८ 'दडधम्मणो पुत्तो गुणधम्मो जे' । ९ 'अचवंतेणाडमि' सु । १० 'गवईए जे' । ११ 'एत्थंतरे रयं' जे । १२ 'परिवारिया
जे' । १३ 'तीए हे' सु । १४ 'पेम्मार' जे । १५ 'य अप्पियं जे' । १६ 'मह समओ कोइ ण' सु । १७ 'इत्थमक्खं जे' । १८ 'सव्वरा' जे ।

बीयदियसे पच्चसे कयसयलकरणिज्जो गओ भइरवायरियदंसणत्थं उज्जाणं । दिट्ठो य वग्वकत्तीए उवविट्ठो भइरवायरि-
ओ । अणुट्ठिओ य अहं तेणं । पडिओ य अहं चलणेसु । औसीसं दाऊण मियकत्तिं दंसिऊण भणियं तेण जहा-उवविससु चि ।
मए भणियं-भयवं ! ण जुत्तमेवं अवरणरवतिसमाणत्तणेण मं खलीकाउं, अवि य ण तुम्ह एस दोसो, एस इमीए एवंवि-
ट्ठणरवईसयसेवियाए रायलच्छीए दोसो चि, जेण भयवन्तो वि सीसजणे ममम्मि गियआसणप्पयाणेणं एवं ववहरन्ति,
भयवं ! तुम्हे मज्झ दूरट्ठिया वि गुरवो, अहं पुण गिययपुरिसुत्तरीए उवविट्ठो । येववेलाए भणिउमादत्तो-भयवं ! कय-
त्थो सो देसो णयरं गामो पएसो वा जत्थ तुम्हारिसा पसंगेगावि आगच्छन्ति, किमंग पुण उदिसिउं ति, ता अणुग्गहिओ
अहं तुम्हागमणेणं । जडहारिणा भणियं-गिरीहा वि गुणसंदाणिया कुणंति पक्खवायं भवियजणे, ता को ण तुम्ह गुणे-
हिं समागरिसिओ ? चि, अवि य तुम्हारिसाण वि समागयाणं गिक्किचणो अम्हारिसो किं कुणउ ?, णे हु मया जम्मप्पे-
भित्ति परिग्गहो कओ, दविणजाएणे य विणा ण लोगजत्ता संपज्जइ चि । ऐवमायणिऊण भणियं मए-भयवं ! किं
तुम्ह लोमैजत्ताए पओयणं ? तुम्हासीसाए चेव अत्थिचं लोयस्स । पुणो भणियं जडहारिणा-महाभाय !

गुरुयणपूया पेम्मं भत्ती सम्माणेसंभवो विणओ । दाणेण विणा ण हु गिच्चडंति सच्छम्मि वि जणम्मि ॥८॥

दाणं दविणेण विणा ण होइ, दविणं च धम्मराहियाणं । धम्मा विणयविट्ठणाण, मागजुत्ताण विणओ वि ॥९॥

एयमायणिऊण भणियं मए-भयवं ! एवमेवेयं, किंतु तुम्हारिसाणं अवलोयणं^१ चेव दाणं, आपसो चेव सम्माणं,
ता आइसंतु भयवन्तो किं मए कायव्वं ? ति । भणियं भइरवायरिण-महाभाग ! तुम्हारिसाणं परोवयारकरणतद्धिच्छा-
णं अत्थिजणदंसणं मणोरहपूरणं ति, ता अत्थि मे बहूणि य दिवसाणि कयपुव्वसेवस्स मन्तस्स, तस्स सिद्धी तुमए
आयत्ता, जइ एगदिवसं महाभागो समत्तविग्गपडिघायहेउत्तणं पडिवज्जइ तओ महं सफलो अट्ठवरिसमंतजावपरिस्समो
होइ चि । तओ मए भणियं-भयवं ! अणुग्गहिओ इमिणाएसेणं ति, ता किं मए कहिं वा दिवसे कायव्वं ? ति आइसंतु
भयवन्तो । तयणंतरमेव भणियं जडहारिणा जहा-महाभाग ! इमीए^२ किण्हचउइसीए तए मंडलग्गवावडकरेण णयरु-
त्तरवाहिरियाए एगाणिणा मसाणदेसे जामिणीए समइकंते जामे समागन्तव्वं ति, तत्थाह^३ तिहिं जणेहिं समेओ चिट्ठि-
स्सामि चि । तओ मए भणियं-एवं करेमि ।

तओ अइकंतेसु दिवसेसु समागया जामिणी मुउइसीए । अत्थंगयम्मि भुंयणेकलोयणे^४ दिणयरे उत्थरिए तिमि-
रप्पसरे मैया विसज्जियासेससे^५ व्वेयेणं 'सिरो महं दुक्खइ' चि पेसिया वयंसया । तओ एगाणी पविट्ठो सोवणयं । परिहिओ
पट्टजुगस्स पट्टो । गहियं मंडलगं । णिग्गओ णयराओ परियणं वंचिऊण एगाणी । दिट्ठो य मए भइरवायरिओ मसाण-
भूमीए, अहं पि तेहिं । भणिओ य अहं जडहारिणा-महाभाग ! एत्थ भविस्सन्ति विभीसियाओ, ता तए इमे तिण्णि वि
रक्खियव्वा अहं च, तुज्झ पुण जम्मप्पभिइं अविण्णायभयसरूवस्स किमुचइ ? चि, ता तुहाणुहावेण करेमि अहं साहणं
ति । तओ मए भणियं-भयवं ! वीसत्थो कुण, को तुँह सीसवालं पि णामेउं समत्थो ? चि । एयमायणिऊण गहियं
मडयं, जालिओ तस्सै मुहे अग्गी । पत्थुयं मंतजाय(व)पुव्वं होमं ।

तओ आरहन्ति सिवाओ, किलिकिलन्ति वेयालमाणा, हिंडंति महाडाइणीओ, उट्ठंति महाविभीसियाओ, सरइ
मन्तजावो, ण खुब्भन्ति तिण्णि वि जणा । जाव य अहं उत्तरदिसाए गहियमंडलगो चिट्ठामि ताव य बहिरंतो तिहु-
यणं पलयम्भरसियाणुकारी भरन्तो महिहरकुहराई समुच्छलिओ भूमिणिहाओ । सहसा समासण्णमेव विहडियं धरणि-
मंडलं । समुट्ठिओ सीहणायं म्रियन्तो कालमेहो व्व कालो कुडिलकसिणकेसो पुरिसो । तस्स य^६ सीहणाएणं पडिया ते

१ 'ओ अहं सु' । २ आसियं जे । ३ जुत्तमेयं जे । ४ 'इसेवि' जे । ५ 'या चेव गु' जे । ६ जहाहा' जे । ७ भइ-
वं सु । ८ 'माकहि' जे । ९ ण य म' जे । १० 'प्पमि धरि' सु, 'प्पभिइ' 'प्पमि' । ११ 'ण विणा सु' । १२ एयमा' जे । १३ 'म-
यत्ताए जे । १४ माग' जे । १५ 'सम्मो जे । १६ मियं जे । १७ 'चेव जे । १८ उगतणं जे । १९ 'कण्ह' जे । २० तिहिं समेओ
जे । २१ मुक्खे' जे । २२ दिवसयरे जे । २३ मए जे । २४ 'वयजणे सि' जे । २५ 'ओ अहं जहाहा' जे । २६ तुह सीसाव वि वा'
जे । २७ 'स्स वयणे अ' जे । २८ तिहं जे ।

तिणि वि जणा दिसायाला । भणियं च तेगं—रे रे दिव्वंगणाकामुय ! सइवायरियाहम ! ण विण्णाओ अहं तए मेहणा-
याहिहाणो खेत्तपालो इहं परिवसंतो ? , महं पूयमकौऊण मंतसिद्धिं अहिलससि ? , एसो संपयं चेव ण होसि, एसो वि
तुमए ^१वियारिओ रायउत्तो अणुहवउ समीयस्स अविणयस्स फलं । तओ मए तं दट्ठण भणियं—रे रे पुरिसाहम ! कि-
मेवं पलवसि ? , जइ अत्थि ते पोरुसं ता किमेवं पलविणं ? , अहिमुहो समागच्छ जेण दंसेमि ^२ते गज्जियस्स फलं ति,
पुरिमस्स हि भुएसु वीरियं, ण सहददरे ति । तओ एसो अमरिसिओ बलिओ मज्झ सम्मुहं । अणाउहं च दट्ठण मए
समुज्झियं मंडलगं । संजमीकयं परिहणयं सह केसपासेणं । पयट्ठं दोण्ह वि बाहुजुद्धं । लग्गा जुज्झितं विविहकरणेहिं
कत्तरिप्पहारेहिं । एवं च जुज्झताणं मए पाडिओ सो दुट्ठवाणमन्तरो । सत्तप्पहाणत्तणेण य वसीकओ । भणियं च तेण—
भो महापुरिस ! मुंचसु तुमं, सिद्धो ^३हं तुह इमीए महासत्तायाए, ता भण किं तुह कीरइ ? , ति, मए भणियं—जं एस जइहारी
समीहइ तं तुमं कुणसु जइ सिद्धो । तेण भणियं—एयस्स तुहावट्ठमसिद्धमन्तस्स सइं चेव सिद्धं सव्वं, तुह पुण किं कीरउ ?
ति । मए भणियं—मज्झ एत्तिण पओयणं जमेयस्स सिद्धिं ति, तहा वि जइ सा मम भज्जा कह वि वसत्तणं मैहं
णिज्जउ ति । तेण उवओगं दाऊण भणियं—भविस्सइ सा तुहं कामरुवित्तणपसाएण, तुमं पुण मज्झाणुहावेण कामरुवी
भविस्ससि । दाऊण वरं गओ वेयालो ।

इयरेण सिद्धमन्तेण भणियं—“महाभाग ! तुहाणुहावेण सिद्धो मंतो, संपन्नं समीहियं, जाया ^४‘दिव्वदिट्ठी, उल्लसियं
अमाणुसोच्चियं वीरियं, समुप्पण्णा अण्ण चिय देहप्पहा, ता किं भणामि तुमं ? , को भुविणे वि तुमं मोत्तूण अण्णो एवं-
विहं भेमां परोवयारेकरसियं पडिवज्जइ ? , अहं तुम्ह गुणेहिं उवकरणीकओ ण सक्कुणोमि भासितं ^५‘गच्छामि’ ति
सकज्जणिट्ठुरया, ^६‘परोवयारतप्परो सि’ ति अत्थेणं चेव दिट्ठस्स पुणरुत्तं, ^७‘तुम्हायत्तं जीवियं’ ति ण नेहभावोच्चियं,
^८‘बंधो सि’ ति दूरीकरणं, ^९‘णिक्कारणं परोवयारित्तणं’ ति अणुवाओ कयग्घालावेसु, ^{१०}‘संभरणीओ अहं’ ति आणत्तियादाणं” ।
एवमादि भणिऊण गओ भइरवायरिओ सह तेहिं सीसेहिं ।

अहं पि पक्खालिऊण सरीरं पविट्ठो णिययमावासं । मुको पट्टसाडओ, ठिओ अत्थाइयामंडवे । गओ य कणगमंती-
भवणं । पयत्ता गोट्ठी । पढिया तीए पहेलिया—

पयडरूवहो [पयडरूवहो] सिद्धमंतस्स,

को अंगए ठाइ तहो सयलु लोउ ^{११}“जिंदणह लग्गहो । पुच्छंतह सप्पणउं जाइआइं बहुजणियरूवहो ।

जमु जोईसरु अण्णणिहिं, भज्जइ किंपि कैरेवि । तं फुडवियहुं कित्तणउं इयरु, किं जाणइ कोइ ? ॥ १० ॥

मए लहिऊण भणियं—किं । मए पढिया ^{१२}“हियालिया—

जइ सिक्खविओ सीसो जईण रयणीए जुज्जइ ण गंतुं । ता की(सी)स भणइ अज्जो ! मा कुँप्पसु दो वि सरिसाइं ॥ ११ ॥

तीए भणियं—दिव्वणांणी खु सो । पुणो वि तीए पढिया ^{१३}“हियालिया—

जइ सा सहीहिं भणिया दइओ ते दोसमग्गणसयण्हो । ता कीस मुद्धडमुही अहिययरं गव्वमुव्वहइ ? ॥ १२ ॥

मए भणियं—जेण वैल्लह ति ।

तओ अहं उट्ठिऊण गओ णिययमावासं । कयमुचियकरणिज्जं । अत्थमिण भुवणेकपदीवे दिणैयरं पेसिया वयंसया ।
गया जाममेत्तरयणी । गहियं मए मंडलगं । माणुसचक्खुण अगोयरीभूयं रूवं काऊण गओ कणगमईभवणं ^{१४}“ । सा य
ठिया धवलहरोवरिभूमियाए, पासेसु दुवे दासचेडीओ चिट्ठन्ति, बाहिं पि जामइल्लगा । वीयभूमियाए एगदेसे ठिओ ^{१५}“
अहं । ताव य तीए भणिया एगा जणी—हले ! ^{१६}“कित्तिया रयणी ? । तीए भणियं—दुवे पहरा किंचूण ति ।

१ दिसापाला जे । २ “कारिऊ” । ३ वेयारिओ जे । ४ ते एय(य)गंज” जे । ५ अहं जे । ६ जइहा” जे । ७ महाऽऽणि” जे ।
८ दिव्वा दि” जे । ९ सुइणे जे । १० मंतं महं परो” सू । ११ “मि । स” सू । १२ अणुवाए जे । १३ “गव्वहम” जे । १४ अत्थेण जे ।
१५ निहणहं सू । १६ अपणिहि सू । १७ करेइ सू । १८ डुकित्तियउं इयरु सू । १९ अस्याः प्रहेलिकायाः प्रतीतराणि न परिहाय-
न्ते । २०-२३ पहेलिया जे । २१ संकसु जे । २२ “णो सु(सी)सो सू । २४ वल्लहे णि जे । २५ दिवसयरे जे । २६ “ण । ठिया सू,
“ण जाव य ठिया जे । २७ “ओ हं जे । २८ कित्तिया जे ।

तओ तीए मग्गिओ ष्ठासाडओ । पक्खालियं अंगं, ल्हियं पट्टमुण । कओ अंगराओ । गहियं सविसेसमाभरणं । परिहियं पट्टमुयं । विउरुच्चियं विमाणं, आरूढाओ तिण्णि वि जणीओ । अहं पि एककोणम्मि समारूढो । गयं च उत्तरदिसाहुत्तं मणो व्व सिग्घं विमाणं । ओट्ठणं च सरतीराए णंदणवणस्स मज्झयारदेसे । तत्थ य असोगवीहियाए हेट्ठओ दिट्ठो मए विज्जाहरो । कणगमती य णीसरिऊण विमाणाओ गया तेस्स समीवं, पणमिओ य । तेण भणियं—उवविसमु । बेववेलाए य अवरओ वि तिण्णि जणीओ तहेव समागयाओ । ताओ वि पणमिऊण तयणुमतीए उवविट्ठाओ । बेववेलाए यं अण्णे वि आगया तत्थ विज्जाहरो । तेहिं च समागंतूण, पुच्छुत्तरदिसाभाए भगवओ उस्सहसाभिणो चेइयहरं तत्थ गंतूण पुवं कयं उवलेवण-सम्मज्जणाइयं । गओ सो विज्जाहरो तत्थ । ताओ वि चत्तारि जणीओ गंतूण य तत्थ कीए वि वीणा, अण्णाए वेणु गहिओ, अवरए आट्ठं कायलीपहानं गेयं । एवं च विहीए कयं भुवणगुरुओ मज्जणयं । विलित्तो गोसीसचंदणेण । आरोवियाणि कुसुमाणि । उग्गाहिओ धूओ । पयट्ठियं णट्ठं । विज्जाहरेण भणियं—अज्ज कीए चारओ ? । तओ उट्ठिया कणगमती, समारूढा णच्चिउं । णच्चन्तीए अ इमीए एगा किंकिणी सगुणा तुट्ठिऊण गया । गहिया सा मए, संगोविया य । गविट्ठा य तेहिं साऽऽयरेण णोवलद्धं चि । उवसंघरियं च णट्ठं । विसज्जियाओ तेण गयाओ नियेसु ठाणेसु दिक्करियाओ । कणगमई वि समारूढा विमाणं सह दासचेडीहिं । अहं पि तहेव समारूढो । समागयं कणगमईभवणं विमाणं ।

णिग्गंतूण अहं गओ णिययभवणं । अलक्खिओ चेव पविट्ठो निययभवणं । जामसेसाए रयणीए पमुत्तो । उट्ठिओ य समुट्ठिए सूरिए । कयमुच्चियकरणज्जं । समागओ य मंतिपुत्तो मह मित्तो मइसागराहिहाणो । तस्स मए समप्पिया किंकिणी । भणिओ य सो मए जहा—कणगमतीए मह समीवगेतस्स उप्पेज्जसु, भणेज्जसु य 'पडिया एसा मए लद्धं' चि । तेण भणियं—एवं करेमि चि ।

गओ अहं कणगमतीगेहं । दिट्ठा सा मए । उवविट्ठो दिण्णासणे । उवविट्ठा य सा मह समीवे पट्टमसूरियाए । पत्थुयं सारीहिं जूयं । जिओ अहं । भणियं कणगमतीए गहणयं किंकिणी मइसागरेण । पच्चभिण्णाया य सा इमीए । भणियं च तीए—कहिं एसा लद्धं ? चि । मए भणियं—किं कज्जं ? । तीए भणियं—एवमेव । मए भणियं—जइ कज्जं ता गेण्हसु, अम्हेहिं पडिया एसा लद्धं चि । तीए भणियं—कहिं पएसे लद्धं ? चि । मए भणियं—कहिं तुह पडिया ? । तीए भणियं—ण याणामि । मए भणियं—एसो मइसागरो णेमिच्चिओ सव्वं भूयं भव्वं च जाणइ चि, इमं पुच्छ जेत्य पडिय चि, एसो चेव साहिस्सइ चि । पुच्छिओ कणगमतीए मइसागरो । तेण "वि य महाहिप्पायं णाऊण भणियं"—सूवे निवेयइस्सामि चि । तीए भणियं—एवं ति । गओ य अहं तीए सह पासएहिं खेळ्ळिउं" निययावासं ।

तओ अत्थमिए सूरिए गयाए जाममेत्ताए रयणीए तहेवाहं एगागी गओ कणगमतीए भवणं । दिट्ठा तहेव सा मए । पुणो वि तीए तहेव पुच्छिऊण रयणिं विउरुच्चियं विमाणं । समारूढाओ य तिण्णि वि जणीओ तत्थ । अहं पि तहेव । पत्ताणि तमुदेसं । पुच्छक्रमेणेव णवणाणंतरं समारूढो णट्ठविही । वीणं वायंतीए य कणगमतीए पडियं चल्णाओ णेउरं । गहियं च मए । गच्छंतीए पलोइयं, णोवलद्धं चि । पुणरवि समागया विमाणेण णियंभवणं ।

अहं पि पत्तो जामसेसमेत्ताए रयणीए णियंभवणं । मुत्तो उट्ठिओ य ण य केणइ उवलक्खिओ । विउट्ठो य पहाए" । समागओ मइसागरो । समप्पियं तस्स णेउरं । सिक्खविऊण लहुं चेव गओ अहं सह तेण वयंसएणं कणगमतीभवणं । अब्भुट्ठिओ य कणगमतीए, दिण्णमासणं, उवविट्ठो अहं । उवविट्ठा य सा मह समीवे । पत्थुया गोट्ठी गृहचउत्थएहिं । पडियं च तीए—

१ तस्समीव जे । २ य समागया अण्णे वि तत्थ जे । ३ काए जे । ४ 'णू' अव' सू । ५ धूयो जे । ६ 'गवइ' जे । ७ य जे । ८ 'गवतोम' सू । ९ 'गयस्स अण्णे' जे । १० कइ जे । ११ जय्य य प' जे । १२ वि महा' सू । १३ 'य पच्छुत्ते णि' सू । १४ 'उ । तओ सू । १५ णियम' जे । १६ 'सेसाए जे । १७ णिययं भवणं । मुत्तुट्ठिओ जे । १८ 'ए । आगओ जे ।

खरपवणाहयकुवलयदलतरल जीवियं च पेम्मं च । जीयाण जोव्वणं धणसिरी ये,

मए भणियं—

धम्मं दयं कुणह ॥१३॥

तयणंतरं कणगमतीए किंकिणीलाभसकियाए पुच्छियं मइसागरमुहिसिऊण जहा—पलोइयं जोइसं भवया ? । तेण भणियं—पलोइयं, अण्णं पि तुह किं पि णट्ठं । तीए भणियं—किं तयं ? । तेण भणियं—किं तुमं ण याणसि ? । तीए भणियं—जाणामि अहं जहा णट्ठं, किंतु उदेसेणं ण याणामि अत्थ णट्ठं ति, तुमं पुण जाणसु ‘किं तयं ?, कहिं च णट्ठं ?’ ति । मए भणियं—मज्झ अण्णेण साहियं जहा—दूरभूमीए णेउरं चलणाओ कणगमतीए पडियं, तं च जेण गहियं सो मए जाणिओ, ण केवलं जाणिओ तस्स हत्थाओ मए गहियं । तओ कणगमई किंकिणीवुत्तंतेणेव खुदा आसि, संपयमणेण वुत्तंतेण सुट्ठसमाउलीहूया जहा—अहं जाणिया अण्णत्थ वच्चन्ती, ता ण याणामि ‘किं पडिवज्जिस्सं ?,’ को वा एस वुत्तंती ?, किमयं सच्चं चेव णेमिच्छिओ ?, अहंवा जइ णेमिच्छिओ तो केवलं जं णट्ठं तमेव जाणउ, कइं पुण मज्झ तत्थ णट्ठं अयं इहट्ठिओ चेव जाणइ पावेइ य ?, ता भवियव्वमेत्थ केण विं कारणेणं, अयं च इमेसु दिनेसु लहं चेवमह मेहे समागच्छइ, जिहासेसकसायलोयणो य, ता केण वि पओएणं अयमेव मह भत्ता तत्थ गच्छइ ति मह आसंक ति । एवं च चित्तिऊण भणियं कणगमतीए—कहिं पुण तं णेउरं जं तुम्हेहिं जोइसवलेण संपत्तं ? ति । तओ मह मुहं पलोइऊण मइसागरेण कडिहऊण समप्पियं । गहियं च कणगमईए । कणगमतीए भणियं—कहिं पुण तुम्हेहिं एयं पावियं ? ति । मए भणियं—कहिं पुण एयं णट्ठं ? ति । तीए भणियं—जहा इमं मह णट्ठं तहा सइं चेव अज्जउत्तेण दिट्ठं ति । मए भणियं—मेज्झअण्णेण साहियं, अहं पुंण अमुणियपरमत्थो ण याणामि जं जेहावुत्तं ति । तीए भणियं—किमणेणं णट्ठवयणेणं ?, किं बहुणा ?, सोहणमेयं जइ सइं चेव अज्जउत्तेण दिट्ठं, अहमण्णेण केगावि साहियं तओ ण सोहणं ति, जओ जलणपवेसेणावि मह णत्थि सोहि ति । मए भणियं—किमेत्थ जलणपवेसेणं ? । तीए भणियं—सयमेव विण्णाही अज्जउत्तो, जहा एत्थियं विण्णायं तहा सेसं पि जाणिस्सइ ति । एवं भणिऊण सखेया चिंताउरा य वामकरयलम्मि इत्थं णिमेऊण ठिया । तओ अहं येववेलमच्छिऊण काऊण य सामण्यकहाओ मइसागरेण सद्धिं हसावेऊण य अण्णकहालावेण कणगमई गओ णिययमावासं ति ।

पुणो पुव्वकमेण य जाममेत्ताए रयणीए गवी कणगमतीए मेहं ति । दिट्ठा कणगमती सह दासचेडीहिं विमणा किं पि किं पि अकुडक्खरं मेन्तयन्ती । उवविट्ठो य अहं ते(? ता)सिं समीवे अणुवलक्खिओ । तओ येववेलाए भणि-यैमेगीए दासचेडीए जहा—सामिणि ! कीरउ गमणारंभो, अइकमइ वेला, रुसिही सो विज्जाहरादिवती । तओ दीहं णी-ससिऊण भणियं कणगमतीए जहा—“हला ! किं करेमि ?, मंदमाइणी अहं तेण विज्जाहरणरिंदेण कुमारभावम्मि णेऊण समयं गाहिया जहा—जाव तुमं मए णाणुब्बाया ताव तए पुरिसो णाहिलसणीओ । पडिवज्जं च तं मए । जण-याणुरोहेण विवाहो वि अणुमणिओ । अणुमया य पिययमस्स । अहं ”पि गुण-रूवाखित्तहियया तप्परायणा जाया । जाणि-ओ य विज्जाहरवइयरो मह भत्तुणा । ता ण जाणामि ‘किंपज्जवसानमेयं भविस्सइ ?’ ति सासंकं मह हिययं । किं वा एस मह दइओ तम्मि विज्जाहरकोवजलणम्मि पयंगत्तणं पडिवज्जिस्सइ ? ति, उँवाउ सो मं चेव वावाइस्सइ ?, किं वा अण्णं किं पि भविस्सइ ? ति । सव्वहा समाउलीहूया इमेणं देहेणं ण याणामि ‘किं करेमि ?,’ दुट्ठो विज्जाहरो णियवल्लुत्तो य । ददमणुरत्तो य भत्तारो ण छट्ठेइ अणुवंधं, गरुओ जोव्वणारंभो बहुपच्चवाओ य, गरुयाइं जणय-समुत्ताइं, विसमो लोओ, अइकुडिला कज्जगई, तौ एयाए चिंताए दहं समाउलीहूय मिह । पुणो तमायणिऊण भणियं दासचेडीए—जइ एवं ता अहं चेव तत्थ गच्छामि, साहिस्सामि य जहा—सिरं दुक्खइ ति, तओ जाणिस्सामो ‘किं सो पडिवज्जिस्सइ ?’ ति । कणगमईए मुहरं चिन्तिऊण भणियं—एवं होउ ति ।

१ ‘हिसिउ जहा जे । २ हत्थओ स्स । ३ ‘गवती स्स । ४ इ जे । ५ ‘गवतीए जे । ६ पलोएऊण जे । ७ कइ जे । ८ कइ पुण तुम्ह इमे णं जे । ९ मज्झ णेण जे । १० पुण परं जे । ११ जहावलं जे । १२ मत्ततो जे । १३ ‘मतीए स्स । १४ वु स्स । १५ वयाहु जे । १६ ता इमोए जे । १७ ‘गवतीए स्स ।

तयणंतरमेव कृपागमतीए विउरुडिसं निमाणं । मए चितियं-सोहणं कयमिमीए जं ण गय चि, अहमेव तस्य
संतुण अवणेमि विज्जाहरणरिंदत्तणं, केडेमि पेक्खणायसदं, दूरीकरेमि जियलोयं । ति चितयंतो सह तीए दासचेडीए
आरुतो निमाणेकदेसे ! मयं तदेव तं निमाणं तमुदेसं ।

जाव थे उसहसाभिणो णवणं काऊण णटं समारद्धं ताव य सा दासचेडी संपत्ता तमुदेसं । णीसरिऊण विमाणाओ
उवचिद्धा एगदेसम्मि । पुच्छिया य अवरेणं विज्जाहरेणं-“किमुखरे तुमं समागया ?, कहिं च कृपागमइ ? चि । तओ
तीए भणियं-ण सोहणं सरीरं कृपागमइए तओ अहं पेसिय चि । तं सोऊण भणियं विज्जाहरणरिंदेण-तुम्हे करेह पे-
क्खणयं, अहं तीए सोहणं सरीरं करिस्सामि । [चि] जंपिण संतुद्धा चेडी । सज्जिओ मए परियरो, सणाहीकयं च खग्गार-
यणं । ताव य उवसंहत्तिओ णट्ठिही । णीसरिओ देवहरयाओ विज्जाहरो । गहिया चेडी केसपासम्मि, भणियं च तेण-
रे दुट्ठवेडि ! पढमं तुह चेव रुहरिप्पवाहेण मह कोहग्गिणो होउ णिच्चवणं, पच्छा जहोचियं करेस्सेमि तुह सामिसालीए ।
तं चाऽऽयण्णिऊण भणियं चेडीए-तुम्हारिसेहिं सह संगमो एवंविहवदयरवासाणो चि, ता कुणमु जं तुज्झ अणुसरिसं, एयं
अम्हेहिं पुच्चमेव संकप्पियं ति, ण एत्थ अच्छरियं । तयणंतरं च ददयरं कुविणं भणियं विज्जाहरेणं-किमेवं पलवसि
उम्मत्ता इव ?, संभरमु इट्ठदेवयं, गच्छमु वा सरणं ति । तओ भणियं चेडीए—

एसो चिय मुर-विज्जाहरिंद-णर-तिरियवच्छलो भयवं । उसहो तेलोक्कगुरु सरणायवच्छलो सतिओ ॥ १४ ॥

सरणं अँडतीए महं को होज्ज अमाणुसाए घोराए ? । तह वि अकारिमंभीरो चि अज्जउत्तो महं सरणं ॥ १५ ॥

एयं च सोऊण भणियं विज्जाहरेणं-साहमु को सो तुह अज्जउत्तो ? चि । मए चितियं-सोहणं पुच्छियं, महं पि
संसओ चेव । तओ भणियं चेडीए—

जेण समक्खं चिय णरवईण गुण-रूच-विक्रम-बलेण । सोहग्गजयपडाय व्व सुयणु मह सामिणी गहिया ॥ १६ ॥

जेणं चिय गरुयगुणेण सयलसत्थत्थभावियरसेणं । दूरे वि ठिओ णाओ तुमं ति केणइ पओएणं ॥ १७ ॥

जेण तुमं दिट्ठो चिय ण होसि भुवणम्मि साहसधणेणं । तेगमहमत्तणो कीरमाणमिच्छामि किल रक्खं ॥ १८ ॥

“एवमायण्णिऊण दट्ठोद्विउडिभासुरेण भणियं विज्जाहरेण-तस्स णराहमस्स सरणेणमवस्सं णत्थि ते जीवियं ।
ति भणमाणेण विज्जुच्छडाडोवभामुरं कडिदयं मंडलग्गं । णिलुक्को तच्चपणं तैरुयरंतरेसु सब्बो वि परियणो । एत्थं-
तैरम्मि मए पयडीहोऊण हसिऊण य भणियं-रे रे विज्जाहराहम ! कावुरिस ! इत्थीजणमज्जेक्खी ! जुवईणं उव्वरिं
खग्गं कडिदंतो ण अँज्जसि अत्तणो पंचभूयाणं ?, अँहं पि एवंविहपुरिसेसु खग्गं वावारेन्तो लज्जामि चि, तहा वि एवंविहे
वदयरे किमणं कायव्वं ? ति, णिस्सेसयं संपयं ण होसि चि, अभिमुहो बलमु । चि भणंतेणं कडिदयं परियराओ
मंडलग्गं । सो वि गहियाउहो बलिओ मज्झ सम्मुहो । पयट्ठा भमिउं परोप्परं छिदऽण्णेसणपरायणा । भीओ तस्स
परियणो दासचेडी य । तओ ओहरियं तेग ममोवरि मंडलग्गं । वंचियं तं मए दक्खत्तणेणं । तह चेवाभिमुहो ठिओ ।
उल्लालियखग्गारयणो पुणो मए वाहिओ “जंवादेसम्मि खग्गापहारो । लग्गं च ईसीसि मंडलग्गं । तओ उल्ललिओ सो
उव्वरिहुत्तं । घत्तिओ पहारो मम सितोहराए । मए वि उव्वरिहुत्तं वाहियं मंडलग्गमलक्खमेव । ताव य तस्स सह भुयाए
पडियं भूमीए खग्गारयणं । गहियं वामहत्थेण तेण दक्खयाए । पुणो वि घत्तिओ वामहत्थेणेव ममोवरि पहारो । मए “वि
वंचिऊण तयणंतरमेव उल्लालिऊण खग्गारयणं छिणं सीसं विज्जाहरस्स पडियं धरणीए ।

तव्वात्रायणांतरमेव भीओ परियणो आसासिओ मए । ताओ तिण्णि वि कृणागाओ मह समीक्खमल्लीणाओ ।
भणियं च तिहिं वि जणीहिं-सोयात्रियाओ अम्हे इमाओ विज्जाहरपिसायाओ, ता संपयं तुमं अम्हाण गती । मए

१ य फुयं उं सू । २ णीहरिं जे । ३ किमुखरे जे । ४ “हरिदेण तुम कं जे । ५ मया जे । ६ “सपारं जे । ७ णी-
हरिओ जे । ८ णिच्चवणं सू । ९ “संगमो जे । १० “देवया जे । ११ अववीए जे । १२ “मवीरो जे । १३ तुमं सू । १४ “य दा-
सचेडीए जे । १५ एवमां जे । १६ तहवत्तं जे । १७ “तरे मए जे । १८ लज्जिओ सि अत्तं सू । १९ अहं एं सू । २० ममोवरि
२१ जपदे सू । २२ वि चित्तिं सू ।

भणियं—कस्स संतियाओ तुम्हे ? । ताहिं भणियं—रायधूयाओ । तमायणिऊण मए भणियं—कस्स राइणो ? । [१ एगाए भणियं—]अहं दुल्लहरायस्स संखउरसामिणो कण्णगा चेव चिट्ठामि, एयस्स भएणं णेच्छिओ मए विवाहो । मए भणियं—किं णेहजेणियं उयाहु अण्ह ? ति । तीए भणियं—“कुओ णेहो ?, किंतु अहं रयणीए कोट्ठिमतलम्मि मुत्ता अवहरिया अणेणं विज्जाहरेणं, तओ अहं जिब्भं कड्ढिऊण वावाइउमादत्ता । तओ तेणं भणियं—मेहेमि तुमं जइ मह वयणं करेसि । मए भणियं—केरिसं ? । तेण भणियं—मए मुक्काए भत्ता इच्छियव्वो । तं च मए पडिवणं । भणियं च तेण—मह समीवं पइदिणं रयणीए समागन्तव्वं, तुम्ह(हा)गमणमिचित्तं च चित्तियं चेव विमाणं भविरसइ ति । एवं णियमिऊण अहं तत्थेव सयणीए मुक्का । आगच्छामि य पइदिणं एयस्स समीवे । सिक्खविया य वंसं वाएउं । निम्मवियं च उस्सहसामिणो पढमतित्थयरस्स देवहरयं विज्जाहरेणं । एयाओ वि तिणि वि जणीओ जिब्भं काऊण एवं चेव मुक्काओ । सिक्खवियाओ य आलाव-वीणाइयाओ कलाओ । विलसइ सो पइदिणमेवं अम्हेहिं सदिं सरीरमफुसंतो” । तओ मए ‘सोहणं’ ति भणिऊण विसज्जिया । गया य णियएणं चेव विमाणेणं सद्धानं ति । इयराओ वि दोणि वि जणीओ साहिऊण नियजणय-णयराइयं तदेव गयाओ ।

अहमवि सह चेडीए^१ समारूढो तम्मि विमाणे । समागयं कणगमतीभवणं विमाणं । ओइण्णाणि अम्हे । उवसंहरियं विमाणं । दिट्ठो अहं कणगमईए । दंसणाणंतरमेव भणियं तीए—किं वावाइओ दुदुविज्जाहरो ? । चेडीए भणियं—सुट्ठु जाणियं सामिणीए । कणगमतीए भणियं—अज्जउत्त ! ण जुत्तमेवं भवओ ववहरिउं, जओ विसमो सो विज्जाहरो । मए भणियं—अहं पुण किंसमो तुअ पडिहामि ? । दासचेडीए भणियं—“तामिणि ! किं भणामि ?, इत्थीजण-पसंसणं पि एयस्स ‘जिंद’ ति, ‘धोरो’ ति चेडाए चेव विण्णायस्स पुणरुत्तया, ‘महावल-परक्कमो’ ति पयडियं विज्जाहरभार-णेणेव, ‘तुहाणुरायजिब्भरो’ ति सामिणीए सयमेव विण्णायं, ‘उदारचरिउ’ ति चइऊण रज्जं गच्छंतेणेव पयडियं । उवरिं किं भणामि ?, एयस्स जं उचियं तं सइं चेव सामिणी जाणिस्सइ” । ति ठिया चेडी । तओ एवमायणिऊण भणियं कणगमईए—“हला ! किमेत्थ जाणियव्वं ?, पुब्बामेव वरमालाए सदिं समप्पियं हिययं, संपयं अहमणेणं णियजीवियमो-ल्लेणं वसीकया । संपयं देहस्स जीवियस्स य एस एव मे पडवति ति । काहमवरस्स करिएवयस्स ? । सव्वहा अणुकूलो सुरूवो उवयारी पिओ य, णिरेसवत्तिणी अहमिमस्स” । ति भणिऊणं कणगमती सलज्जा अहोमुही ठिया । तओ मए भणियं—“सुंदरि ! किमणेणं जंपिणं ?, ण मए अउव्वं किं पि तुह णिमित्तं कयं, जओ किं थेवो परिहवो ‘णिययभज्जा परवस’ ति ?, तओ णियपरिहविसोहणत्थं सव्वं मए चेट्टियं ति । अवि य—

लंघिज्जइ मयरहरो, अप्पा खिप्पइ भिगुम्मि घोरम्मि । पइसिज्जइ गुरुजालाकरालिए हुयवहे जलिए ॥१९॥

दुक्खज्जिओ चइज्जइ तणं व तुलिऊण अत्थसंघाओ । अप्पा दिज्जइ अयसस्स खगधाराए व जहिच्छं ॥२०॥

लंघिज्जइ सुहिवयणं, ण गणिज्जइ गुरुदेणो कुलं सीलं । लज्जा वि परिचइज्जइ सह वंधुयणेण णीसकं ॥२१॥

किं बहुणा ?, हयसंसारसायरुव्वहणदुक्खपडिवंधो । आयामिज्जइ दइयस्स कारणा माणुसस्स जए ॥२२॥

ता सुंदरि ! थेवमिणं, तुज्ज कए किं ण कीरइ जयम्मि ? । अहवा सुपसिद्धमिणं दुक्खेहिं शिणा ण सोक्खाइं” ॥२३॥

एवं च अहं कणगमईए सह णेहराज्जिणं जंपिऊण तत्थेव^२ पमुत्तो । ताव य तस्स विज्जाहरस्स चुल्लभाउणी सह कणगमईए आगासम्मि अवहरिओ, पुणो अहं समुद्गमज्जे पक्खित्तो । तओ दिव्वजोएण पडणाणन्तरमेव पुव्वभिण्णवोहित्तसमासाइयफलइणो सत्तरत्तेणं लंघिऊण जल्लणिहिं समासाइया तीरा । “तीए य किंचि वेलं समाससिऊण कह कह वि भैहया किलेसेण कयलिकलादिएहिं कयपाणविची “गिरिणीतीरे^३देसम्मि अच्छिउं पयत्तो । ‘ज य तम्मि पएसे माणुसस्स संचारो’ ति तओ मए चिन्तियं—“किमेयं तीरं उयाउ दीवं ?, किं वा कोइ पव्वयवरो ? ति । एवं संकप्प-विकप्पसमाउलो

१ ‘ज.गया उ. अण्ण’ जे । २ वाइउ जे । ३ आलादीणां सु जे । ४ ‘ए आरूढो जे । ५ वीरो जे । ६ ‘मरणेण, दु’ जे । ७ एयमा’ जे । ८ पुव्वमे’ जे । ९ ‘ण जं पियवी’ जे । १० ‘यण कु’ जे । ११ दुक्खेण जे । १२ ‘व य पमु’ सु । १३ तीए किंचि सु । १४ महाक्खे’ जे । १५ गिरिणी तीर’ जे । १६ ‘तीरम्मि सु । १७ किमेव जे । १८ उयाहु जे ।

गओ येवं भूमिभागं, जाव णादिदूरदेसम्मि दिट्ठो तावसक्केमारगो । गओ अहं तस्स समीवं । वंदिओ य सो मए । दिण्णा मह तेण आसीसा । पुच्छिओ य सो मए-भयवं ! को उण एसो पएसो ? ति । तेण भणियं-जलणिहितीरं । पुणो मए भणियं-कैहिं पुण तुम्ह आसमपदं ? । तेण भणियं-इओ णादिदूरम्मि । मए भणियं-गच्छम्ह तुम्ह आसमं ति । तओ अहं तेण णीओ आसमं । दिट्ठा य मए कणगमती । अहं पि तीए । तओ गरुपपोयावूरियसरीरेण भणियं मए-सुंदरि ! कैह तुमं तस्स चुक ? ति । तीए भणियं-पक्खित्ता अहं तेण पव्वयवरे, तओ य ईह संपत्ति ति ।

तओ अहं [तं] समासासिऊण गओ कुलवइसमीवं । वंदिओ भयवं । तेणावि दिण्णा आसीसा । उवविट्ठो तस्स समीवे । कुलवइणा भणियं-पुत्ति ! क्विमेसा तुह घरिणी ? । मए भणियं-आमं । कुलवइणा भणियं-“इयं मए अइकंत-तइयदियहम्मि बाहिं णिग्गएणं एगाणिणी चेव दिट्ठा, णोक्खलक्खिओ अहं इमीए । तओ पासाइं अवलोइऊण भणिय-मिमीए जहा-भयवतीओ ! वणदेवयाओ ! परिणीया केवलमहं भत्तारेणं, ण ये तस्स मए किं पि उवयरियं, तेण उण मज्झ णिमित्तं किं किं ण कयं ?, पलोइया मए तिग्गि दिणे मयरहरतीरा, णोक्खल्लो दइओ, ता तेण विरहियाए मह जीविणं ण पओयणं, तस्स सरीरे भलेज्जह । ति भणिऊण विरइओ पासओ । समारूढा बंधदेसम्मि जाव अप्पाणं किल सुयइ ताव य अहं हाहारवसदगन्धिणं ‘मा साहसं मा साहसं’ ति भणमाणो धाविओ तेयभिमुहं । संखुद्धो य एसा । पलोइओ अहं । विलिया मेल्लिऊण पौसयं उवविट्ठा तरुवरस्स हेट्ठओ । मए समीववत्तिणा होऊण समासासिया-पुत्ति ! किं णिमित्तं तुमं अप्पाणं वावाएसि ?, किं तुह भत्ता केगइ समुदम्मि पक्खित्तो जेण तस्स तीरं पलोएसि ? । तओ तीए ण किंचि जंपियं । केवलं मुत्ताहलसच्छदेहिं धूलेहिं” अंसुबिंदहिं रोविउमाडत्ता । तं च रुयतिं पेच्छिऊण मह अतीवकरुणा संवुत्ता । पलोइयं च मए दिव्वाणागेण जाव जाणिओ समुदपक्खिणपज्जवसाणो णीसेसो वइयरो । भणिया य एसा मए जहा-पुत्ति ! एहि आगच्छ आसमपयं, होसइ तुह तेण सद्धिं समागमो तइयदिग्गम्मि, वीसत्था होहि । तओ आसासिऊण आणिया आसमपयं । कैराविया कह कह वि महया किलेसेजं किंपि पाणवित्ति । भक्खियाणि बाहजल-पक्खालियाणि कइवि तरुफलाणि । तओ “पोराणकहाहिं विउत्ताण संजोयणे कह कह वि णीया कप्पसमाणा दो वास-रा । अज्जं पुण एसा मरणेक्कवसाया परिहरियसयलवावारा बइएहिं उवरक्खिज्जमाणा धरिया जाव य तुमं समागओ” ति । मए भणियं-भयवं ! अणुग्गिहीओ म्हि, दिण्णमिमीए जीवियं महं च ।

तओ अहं कुलवइसमीवाओ उट्ठिओ । गओ तीए समीवं । भणियं च मए-सुंदरि ! एयाणि ताणि सच्छंदचारिणो विहिणो विलसियाणि, एसा कम्माण परिणई, एवंविहवइयरभएणं चत्तणियघर-कलत्ता मुणिणो सुंणारण्णाइं समासयन्ति, एवंविहवइयराणं च गोयरीहोन्ति भोगाहिलासिणो, ता वीसत्था होहि । ति भणिऊण वेत्तूण य कणगममतिं गओ गिरि-सरियं । मज्झिओ य विहिणा । कया तत्थेव कयलातिएहिं फलेहिं पाणवित्ति । वाहिच्चो कुलवइणा भोयणणिमित्तं । मए भणियं-भयवं ! कया पाणवित्ति, भगसु कुंठवति । पेसिओ मुणिकुमारओ ।

तओ य अहं तत्थेव कणगमतीए सह णुवण्णो । पुणो वि तेणेव विज्जाहरभाउणा तह चेव सह कणगमतीए अवहरिओ । गयणयले णेऊण पुणो वि पक्खित्तो समुदे । कणगमती “य तत्थेव अण्णपासम्मि । समुत्तिण्णाणि य दो वि विहिणिओएण पुणो वि तत्थेव मिलियाणि । भणियं कणगमतीए-अज्जउत्त ! किमेयं ? । मए भणियं-सुंदरि ! विहिविलसियं । तीए भणियं-“अज्जउत्त ! मा एवं भणसु, जओ—

देवस्स मत्थए पाडिऊण सव्वं सहन्ति कैपुरिसा । “देवो वि ताण संकइ जाणं तेओ परिण्फुरइ ॥ २४ ॥

ता मा मुयसु महायस ! उच्छाहं भुगनिग्गयवावं(?) व ! । ईह मज्झत्थो तं जाव ताव सत्तू परिण्फुरइ ॥ २५ ॥

१ कुमारो जे । २ कह सु । ३ कह जे । ४ इह जे । ५ एगाणिणी जे । ६ य मए सु । ७ पलोइओ य मए तिग्गि दिणे मय-रहरतीराए, णोक्खल्लो जे । ८ सुभदे” सु । ९ तयाभि” जे । १० “हा एसा सु । ११ पासाइव सु । १२ “हिं अंसुबिंदहिं रोविउ” जे । १३ इयती जे । १४ करविया सु । १५ पोराणयक” जे । १६ सुंणारण्णाइं जे । १७ कुलवति सु । १८ वि जे । १९ कपुरिसा जे । २० देवो जे । २१ इय जे ।

तं कथं वयं तद् देव ! पोरुसं गुरुयसत्तुनिद्वल्लं ? । जेण सहज्जइ सह पोरुसेण दुक्खेण सिञ्छोली ॥ २६ ॥
 अम्हारिसेहिं किं एत्थ णाह ! संसारपूरणफलेहिं ? । तुम्हारिसा त्रि एवं सहन्ति जं तं महादुक्खं ॥ २७ ॥
 ण कयं विहल्लद्वरणं, एगच्छत्ता य मेदणी ण कया । सुणिज्जणदुप्परियल्लं च णाह ! ण कयं तवचरणं ॥ २८ ॥
 विसया त्रि णेय भुत्ता मणोरमा तरुणरमणिसहिण्ण । दुल्लं लद्धिऊण इमं मणुयत्तं किं मुहा णेसि ? ॥ २९ ॥
 तुज्झ कएण महायस ! उत्तम्मइ मह मणो, मैणं कुणसु । वेरिविणासणपिसुणं, तुज्झ सुहेणं अहं सुहिया ॥ ३० ॥

तओ ऐवं कणगमतीए वयणमायणिऊण मए भणियं—सुंदरि ! किं करेमि ? , जेण अदिट्ठो चेव 'देवो व्व विय-
 रइ सत्तु, ता संपयं तहा करिस्सं जहा एवं ण कुणइ । त्ति जंपिऊण अहं रयणीए 'णिवकुणो ठिओ । ताव य समागओ
 विज्जाहराहमो । उट्ठिओ य अहं । 'रे रे विज्जाहराहम ! कावुरिस ! रोणहसु आउहं, संपयं ण होसि'त्ति भणिऊण कडिद-
 वं मंडलगं मए, तेणावि । संखुदो य एसो भणिओ य मए—अरे पहरसु संपयं जेणाहं पि पहरासि । तओ संखुदच-
 णओ ण किंचि जंपियं तेणं । तओ मए गहिओ केसप्रासे । उट्ठालियं मंडलगं । भणिओ य सो मए—अरे महापाव !
 एरिसेणं बलेणं मद समीवमल्लीणो सि ? , ता साहसु किं तुह संपयं कीरउ ? त्ति । तेण भणियं—जं वेरियाणं ति । मए
 भणियं—सुंदरि ! एसो सो गहिओ तुह 'वेरिओ विज्जाहराहमो, उज्झयमणेणाउहं, अंणाउहाणं च असिक्खिओ मह करो
 पहरिउं । तओ केणगमईए समीववत्तिणीए ठाऊण भणियं—दयास ! केणेसा तुह बुद्धी दिण्ण ? त्ति । तेण भणियं—भाउ-
 ज्जायाए अहमेवं कारिओ म्हि । तओ एयमायणिऊण मए भणियं—अणत्थपरंपराए कारणं महिलाओ, ण एत्थ संदेहो ।
 तओ 'ण पुणो त्रि तए एरिसं कायव'ं ति ददं णियमिऊण मुको विज्जाहसे । अहं त्रि समागओ कुलवत्तिसमीवं ।
 तेणावि बहुं आसासिओ, णीओ य वसिमं ति ।

तत्थ य णगरासणे दिट्ठो मए ऐंको महामुणी । वंदिओ य मए । कया धम्मकहा । भणिया य मए कणगमती
 जहा—सुंदरि ! असारो संसारो, विसमा कम्मगई, बहुपचवाओ धरवासो, चलाणि इंदियाणि, अइकुडिला पेम्मगती, को
 जाणइ 'केरिसमवसाणं ?' ति, ता वरं सैंइ चेव छट्ठिऊण एयाइ पव्वज्जामो महापुरिसचरियं ति । तीए भणियं—अज्जउत्त !
 सोहणमेयं, किंतु अहिणवं जोव्वणं, विसमो विसमसरो, ण य जहिच्छं भाणियं विसयसुहं, ण य जाणिज्जइ 'केरिसम-
 वसाणं ?' ति, ता असयनार्णि पुच्छिऊण जहोच्चियं करिस्सामो त्ति । मए भणियं—'सुंदरि ! जुत्तमभिहियं, किंतु 'अहिणवं
 जोव्वणं' ति जं वुत्तं तत्थ—

बुद्धसहाओ णवजोव्वणे वि धीरेण सुंदरो होइ । इयराणं पुण बुद्धत्तणे वि णिव्वडइ तारुणं ॥ ३१ ॥
 कैपुसिसाणं विसमो विसमसरो, ण उण धीरपुसिसाणं । मंसम्मि खग्गधारा तिण्हा, ण उणाइ वज्जम्मि ॥ ३२ ॥
 अणवरयजहिच्छियसंपडन्तभोगेहिं लालिओ जीवो । सग्गम्मि, ण उण तिच्ची जलणस्स व हव्वणिवहेणं ॥ ३३ ॥
 जाणिज्जइ अत्रसाणम्मि सुयणु ! भोगेहिं णिच्छिओ णरओ । चत्तेहिं तेहिं गमणं जायइ सग्गा-उपवग्गेसु ॥ ३४ ॥

जं पुण भणियं 'अइसयनार्णि पुच्छिऊण जं करणिज्जं तं करिस्सामो' सोहणमेयं, जइ अन्तराले अणं किं पि ण होइ" ।
 त्ति भणिऊण वंदिऊण य 'मुणिवरं पविट्ठो हं णयरे । वैहिं ठविया सा । मए य इओ तओ परिब्भमन्तेण जइयरदेव-
 याए पात्रियं मंडयाण मुल्लं । कारावियाओ य दो मंडय-कुक्कुडियाओ । गओ अहं जत्थुदेसे मुक्का कणगमती । दिट्ठा
 सा मए । अब्भुट्ठिओ य अहं तीए । कया पाणवित्ती । ठियाणि विविताए पायवच्छाए । लविस्खओ य मए भावो
 कणगमतीए जहा—मुण्हियय त्ति । तओ मए चितियं—सुमरियं माणुसाणं भविस्सइ । तयणंतरं च अहं गओ सरीर-
 विताए । समागओ य पेच्छामि प्रायवंतरिओ । सा य—

१ तह जे । २ 'णिट्ठवणं' सु । ३ अम्हारिसेण सु । ४ मयं सु । ५ एय सु । ६ देवो जे । ७ निज्जुओ जे । ८ कीरइ जे ।
 ९ पहरिओ जे । १० गिरउहाणं जे । ११ कणगमतीए सु । १२ तुज्झ जे । १३ पि जे । १४ आपुच्छिऊण णीओ व' जे । १५
 एणो जे । १६ वयं जे । १७ 'वरियाइ' तीए जे । १८ कीराण जे । १९ कावुरिसाणं जे । २० अन्तरालम्मि किं पि अणं ण जे ।
 २१ मुणि प' जे । २२ बाहि ठिया सा जे । २३ मुणं हियवे ति जे ।

आलिहइ चित्तकम्मं कंठे घोलेइ पंचमोग्गारं । बाहजलभरियणयणा दिसाओ हरिणि व्व जोण्डे ॥ ३५ ॥
वामकरोवरिसंठियमुहपंकयमुकदीहणीसासा । अभणन्त चिय साहइ मयणवियाराउरं चित्तं ॥ ३६ ॥

तओ मए चित्तियं-किंमेयं ? अहवा ण पारेइ मह विओयम्मि एगाणिणी चिट्ठिउं ति, ता जइ मह दंसणे समाउला भविस्सइ ता मज्झोवरिं णेहो, अह संवरिस्सइ आगारं ता ण सोहणं । ति चित्तिऊण मए दंसिओ अप्पा दूरत्थो । संवरिओ मयणवियारो । गओ अहं तीए समीवं । भणिया सा मए-सुंदरि ! सुमरसि णियमाणुसाणं ति जेणुव्विग्गा विय सद्धिज्ज-सि ? । तीए भणियमायारं गोविऊण-“अज्जउत्त ! तुमम्मि साहीणे किं माणुसेहिं ?

रणं पि होइ वसिमं जत्थ जणो हिययवळुहो वसइ । पियविरहियाण वसिमं पि होइ अडईए सारिच्छं” ॥ ३७ ॥

एयमायणिऊण चित्तियं मए-“उवयारोप्पायमिमीए जेपियं, ता ण सोहणमेयं, जओ-

वीसंभजणियगहिए पखुदसम्भावपेमपसरम्मि । उवयारो कीरइ माणुसम्मि कत्तोच्चयं एयं ? ॥ ३८ ॥

उवयारेहिं परो चिय विप्पइ अग्रन्ति ते तर्हि चेव । इयरम्मि पवत्तन्ता पेमाभावं पयासेन्ति ॥ ३९ ॥

ता सव्वहा भवियव्वमेत्थ केणइ कारणेणं” । ति मुणिऊण उट्ठिओ तीए समीवाओ । गओ य णिल्लक्खमेव आरा-
ममज्झयारे चेव येवं भूमिभायं । जाव समागओ एको पुरिसो । पुच्छिओ य अहं तेण जहा-किमेत्थ संपयं पि चिट्ठइ
कुमारो ? । मए भणियं-को एस कुमारो ? । तेण भणियं-राइणो ईसाणचंदस्स णयरसामिणो गुणचंदाहिहाणो
मैज्झहसमए समागओ आसि, तओ अहं तेणेय कज्जेण पेसिओ, समागओ य, अओ पुच्छामि ति । मए भणियं-
गओ कुमारो समासोऽयइत्थलाओ ति । तेण भणियं-किं घडिया सा तस्स ? । मए भणियं-ण केवलं घडिया, णीया
यै सा भवणं । तेण भणियं-सोहणं, महंतो अणुवंधो दिट्ठमेत्तीए चेव उवरि कुमारस्स । ति भणिऊण गओ सो । चित्तियं
मए-धिरत्थु संसारविलसियाणं, धिरत्थु महिलासहावाणं । अवि य-

ण गुणेहिं णेय रूवेण णोवयारेण णेय जीएणं । वेप्पइ महिलाण मणो चवलो पवणुद्धुयधओ व्व ॥ ४० ॥

तओ मए चित्तियं-जावेसा महिलावियारं ण दंसेइ ताव इओ णाइदूरे माउलगगेहं, तत्थ मोत्तूण एयं जहोच्चियं करिस्सं ।
ति चित्तिऊण गओ तीए समीवं । भणिया य सा मए जहा-एहि गच्छामो । तीए भणियं-पच्चूसे गेमिस्सामो । मए
भणियं-सत्थो लद्धो, संपयं चेव वच्चामो । तओ सा परम्मुदी हियएणं मह भएणं उच्चलिया । गयाणि अम्हे चउहिं
“दियहेहिं तीए माउलगस्स गेहं । पच्चभिण्णाया य सा । तओ बहुं विसुरिऊण पुणजायं पिव मण्णमाणेण अब्भंग-ग्हाण-
भोयणादीहिं कयमुच्चियकरणिज्जं । साहिओ मए विज्जाहराइओ सव्वो वुत्तंतो । तेण भणियं-किं ण संभाविज्जइ संसारे ?
ति । तओ अहं तीए चेव रयणीए णिग्माओ पच्छिमजामे । गओ य तस्स आयरियस्स समीवं जस्संतिए धम्मो णिमु-
ओ । पव्वइओ य तस्सन्तिए । ता एयं मह णिव्वेयकारणं ति ।

बलदेवेण भणियं-भवयं ! सोहणं णिव्वेयकारणं, भवन्ति य एवंविहाणि विहिणो विलसियाणि । एवं भणिऊण
मोहपयडीओ अभिमविऊण गहियाणि जहासत्तिं अणुव्वयाणि, थिरीकयं सम्मत्तं” । ते य वामुदेव-बलदेवा पसंसिऊण
वंदिऊण य मुणिवरं सट्ठाणे गया । उवरओ य तेसिं पिया ।

पेसिओ दूओ उप्पण्णचक्रयणेणं पडिवासुदेवेणं मेरयाभिहाणेण सय्यंभुणो । पडिहारणिवेइओ य पविट्ठो सय्यं-
भुणो अत्थाइयामंडवे । पायवडणुद्धिओ य उव्विट्ठो जहाऽऽइट्ठम्मि आसणे । येववेलाए य पुच्छिओ दूओ जहा-किं
कुसलं मेरयणरवइणो ? । तेण भणियं-कुसलं ति, किंतु देवो भणइ-

पुहईए “दोन्नि पइणो एयं लज्जाकरं मुवुरिसाण । ता मज्झ बलं तुल्लिउं आणं पुहइं व णिण्हाहि ॥ ४१ ॥

१ किमेयं ? सू । २ भणियं मायायारं जे । ३ ‘पेम्म’ जे । ४ अपक्वति जे । ५ उव्विट्ठो सू । ६ एयो जे । ७ मज्झणवत् सू ।
८ तेण अ कं सू । ९ ‘साइओ इट्ठं’ जे । १० यं समवणं जे । ११ गच्छामो जे । १२ दियहेहिं जे । १३ ‘त्तं । बलदेववासुदेवा
५ जे । १४ दोण्डे सू ।

एवं सुणिऊण भणियं वामुदेवेण-

किं णत्थि तस्स कज्जं गियजीएणं? ति तेण संदिसइ । ता भणसु दूय ! वच्चसु, आंगच्छउ जाउ जमणयरं ॥४२॥

एवं भणिऊण विसज्जिओ दूओ गओ य । सव्वं जैहट्ठियं^१ चेव साहियं मेरयस्स । तेणावि नियइरज्जुसमाकरिसि-
एण दिण्णं पयाणयं । गओ अहिमुहं सयंभू वि सह भद्दाहिहाणेण बलदेवेणं ति । आवडियमाओहणं महया समरसंघ-
ट्ठेणं । अभिभविओ मेरओ । तेणावि पेसियं चकं । तं पि गंतूण सयंभुणो वामुदेवस्स इत्थम्मि ठियं । तेणं वि य
तस्स तेणेय चक्केय छिण्णं रिरं^२ उग्गुट्ठो मइज्जएणव्वो^३ । समद्धासियं च भरहं । सट्ठि वासलक्खा भुत्तं भरहं । मरि-
ऊण य गओ णरए । बेलदेवेणावि उज्झिऊण गामधम्मे गहियं समणत्तणं तस्स महामुणिणो समीवे जस्सन्तिए पुर्व्वि
धम्मो णिसुओ । विहरिऊण जहुत्तविहारेण, खविऊण य अप्पट्ठियं कम्मं सिद्धिमणुपत्तो त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए सयंभुणो अद्धचक्खवट्ठिणो [भद्दबलदेवस्स य]

चरियं समैत्तं ॥ २०-२१ ॥



१ एय जे । २ आगच्छसु सु । ३ जहट्ठि । सु । ४ य काहेय वरवट्ठो ते जे । ५ दिण्ड सु । ६ अहिमुहो सु । ७ तेण
य जे । ८ जयारवो जे । ९ बलदेवो वि सु । १० पुक्कव सु । ११ समत्त सु ।

[२२ अणंतइतित्थयरचरियं]

:-:X:-:

विमलतित्थयराओ मामारोवमेहिं णवहिं समइकन्तेहिं अणंतइजिणो समुप्पन्नो तित्थयरो । सो य तीसइवरिस-
लक्खाओ पाणासधणुमुओ । कहं ? भणइ—

दूरे पंचासत्ती, दंसणमवि जस्स दुल्लहं होइ । संसारुत्तरणसहं णामं पि हु सो जए जयइ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे अउज्झा णाम णयरी जण-धण-कणगसमिद्धा । तत्थ य सहजावबल-पर-
कमो सीहसेणो णाम णराहिवो परिवसइ । तस्स य सत्त्वन्तेउरप्पहाणा सत्त्वजस्सा णाम महादेवी । तीए य सह
विसयमुहमणुहवन्तस्से अइकन्तो कोइ कालो ।

अणया य सावणकिण्हपंचमीए सत्त्वजस्सा मुत्ता चोदस महामुमिणे पासिऊण विउद्धा, सैमासासिया य पुत्तजम्मेणं
राइणा । तीए य रयणीए सहस्साराओ रेवइजोगजुत्ते मियंके चविऊण समासाइयतित्थयरणा-मोत्तो समुप्पणो सत्त्व-
जस्साए कुच्छिसि, संवडिओ कमेण । पडिपुण्णेषु णवमु मासेमु अद्धमेसु राईदिणसु वइसाहकिण्हतेरसीए रेवइजोग-
जुत्ते मियंके मुहंमुहेण पसूया दारयं । गम्भत्ये य भगवम्मि पिउणा 'अणन्तं परबलं जियं' ति तओ जहत्थं अण-
न्तइजिणो चि नामं कयं भुवणगुरुणो । पुव्वकैमेण य संवडिओ, विवाहिओ य । संसारं चइउकामो संबोहिओ लोयं-
तिएहिं । कहं ?—

"कं पेच्छसि णाह ! तुमं गुणमिह संसारसायरे विरसे ? । जेणउच्छसि पाययजणवओ व्व परिजाणियजहत्थो ॥ २ ॥

चिदंतु णाम सामिय ! पुत्त-कलत्तेहिं मोहिया पुरिसा । परमत्थमैपेच्छंता वद्धा णेहाणुबंधेण ॥ ३ ॥

ऐसो बिय परमत्थो जं दीसइ भुज्जइ य संसारे । एवं कयववसाया भमन्ति संसारकन्तारे ॥ ४ ॥

जं पुण वरपहु ! तुम्हारिसा वि बंधन्ति कह वि पडिबंधं । जाणंता खैलसंसारविलसियं तह य मोक्खपहं ॥ ५ ॥

ता विरमसु णाह ! तुमं एत्तो विरसाओ भैवसमुदाओ । अम्हे णिमित्तमित्तं जाणसि तं चेव गहियत्थो ॥ ६ ॥

परमत्थेमुहं तं मुणसि णाह ! दुक्खाणि एत्थ संसारे । एवं च जं विहीरसि खैलं पि तं केण कज्जेण ? ॥ ७ ॥

"दे कुणसु पसायं, मुयसु णाह ! लोयाणुवैत्तिणिं चेदं । तइ मज्झत्ये सामिय ! हुंमाइगमणुमुयं भरहं ॥ ८ ॥

इय भणिओ य विहाणुजएहिं लोयन्तिएहिं देवेहिं । पडिबोहिओ विबुद्धो वि भुवणणाहो परत्थम्मि ॥ ९ ॥

तओ लोयन्तियपडिबोहिओ परहिण्णकरो वइसाहकिण्हचउइसीए रेवइणक्खत्ते पडिवण्णो चारिचं । पुणो विहरि-
ऊण छउमत्थपरियाएणं, आरुहिऊण खवगैसेदी, उप्पाडियं तीया-उणागैयवत्थुअभासगं केवलणाणं वइसाहकिण्हचउइसीए ।
विरइयं देवेहिं समोसरणं । पव्वाविया गणहरा । पत्थुया धम्मकहा । दंसिज्जंति संसार-मोक्खपहा, पयडिज्जंति कम्मणो
दारुणविवागा, कहिज्जइ विसयविरसत्तणं, दंसिज्जइ संसारासारत्तणं, णिदिज्जइ हँयपावपरिणइ, साहिप्पंति सइविरसाओ
णैरयवियणाओ, णिरुविज्जंति तिरिण्णसु णाणाविहाइं दुक्खाइं, वज्जरिज्जंति मणुयाण सारीर-भाणसाओ पीडाओ, वियारि-
ज्जइ देवाण वि ईसा-विसायणडियाणं मुहाभावो, दिज्जइ णिरवाओ सम्मदंसण-णाण-चरित्तमइओ मोक्खपहोवएँसो चि ।

एवं च बुज्झंति पाणिणो, उज्झंति मिच्छत्तविसं, छड्ढंति कसाए, परिहरंति पमायठाणाइं, पेहंति मोहपसरं ।
चप्पेति विसयविसहरे, लंपंति अविरतिपरिणामं, चप्पेति कसाए, जाणंति संसारविलसियं, मुणन्ति जहद्विण भावे,

१ अणंतजिणो सु । २ 'मो । सो सु । ३ पचासत्ते जे । ४ 'बलकयधम्मो सा' जे । ५ 'स समइकन्तो जे । ६ 'सा चोह'
सु । ७ समासाइया पुत्त' सु । ८ चइऊण सु । ९ पडिपुण्णेषु जे । १० अणंतजिणो सु । ११ 'कमेणय सं' सु । १२ कि सु । १३
'भवेच्छंता सु । १४ एत्तो जे । १५ खलु संसार' जे । १६ 'अवकटिताओ' जे । १७ 'त्यसहं जे । १८ खलं सु । १९ हे सु । २० 'व-
सियं सु । २१ 'दोगहं' जे । २२ 'सेहिं जे । २३ 'गयपयसु' जे । २४ आसाहकिण्हचउइसीए । वि' जे । २५ पत्थुदा(स) सु । २६ नि-
क्खत' जे । २७ निरय' जे । २८ 'ऐसो । एवं व' सु ।

अंगीकरेति सप्पुरिसचेट्ठियं, पयट्ठंति कुसलाणुट्ठाणे, छिंदंति मोहजालं, भिंदंति कम्मगंठिं, मुसुमूरन्ति कम्मसंचयं, विहा-
 डेति अण्णाणतिमिरं, धुणंति मायाकूडजालं, णिव्ववंति मयणाणलं, रुंमंति इंदियपसरं, जाणंति सब्बभावाणिचयं ।
 किंच-अथिरं जीवियं, तरलं जोव्वणं, कुडिला पेम्मसती, चैला लच्छी, मुविणयसमं मुहं, वंधणं गिहवासो, विसं विसया,
 विप्पओगावसाणा समागमा, कुगइहेयवो आसवा, अणत्थपउराणि इंदियाणि^१, विसमो विसमसरो, दारुणा मोहणिदा,
 अपज्जवसाणा मुहपिवासा, अणत्थवहुला जुवइसमागमा, अत्थो अणत्थो, अमुणियपरमत्था कम्मपरिणई । अवि य-
 एत्थ मुज्झंति पाणिणो, ण गणेन्ति आवइं, ण कलंकं, ण दुग्गइगमणं, ण कुलं, ण सीलं, ण सुयणसमागमं, ण
 धम्मं, ण मज्जायं, ण महापुरिसचरियं, ण अत्थणासं, ण परिहवं, ण पोरुसं, ण कज्जा-कज्जं, ण भक्खा-उभक्खं, ण परि-
 हरणिज्जं, ण गेज्झं, ण कुलकमायारं, ण विणयं ति । सब्बहा कम्मपरिणईए मोहिया तं तं कुणंति जेणाऽणादिंयं संसार-
 कन्तारं परियट्ठंति । लह्ठिऊण वि बहुभवदुल्लहं मणुयभवं संसारुत्तारणसमत्थं ण कुणंति जिणदेसियं धम्मं ति ।

एवं तित्थयरवयणाओ मुणिऊण संसारसहावं, काऊण मोहविवरं केइ पडिवण्णा मोक्खतरुवीयममोहं सम्मत्तं,
 अण्णे देसविरेइं, अवरे सब्बसंवररूवं समणत्तणं ति ।

तओ भयवं पि विहरिऊण भरह्खेत्तं, काऊण परहियं, णाऊण आउअसेसं, गंतूण सम्मेयगिरिसिहरं, चेत्तस्स
 मुद्धपंचमीए रेवइणकवत्ते खविऊण भवोवग्गाहीणि चत्तारि कम्माणि सिद्धिगतिं गओ ति ॥

इति महापुरिसचरिए अणन्तइतित्थयरचरियं सेम्मत्तं ति ॥ २२ ॥

१ 'गंठी जे । २ चपला जे । ३ 'ण, दारुणा सु । ४ 'णादसंसा' जे । ५ विरेइ जे । ६ समणत्तं ति जे । ७ 'पुण्य' सु ।

८ अणंततित्थ' सु । ९ परिसमत्ता जे ।

[२३-२४ पुरिसोत्तिमवासुदेव-सुप्पभवलदेवाण चरियं]

—:X:—:

अणंतइतित्थयरकाले पुरिसोत्तिमो अद्धक्कवट्ठी समुप्पणो । सो य पण्णासधणुमुओ तीसइवरिसलक्खाउ महावल-परकमो चि । तस्स चरियं संपयं ति ।

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे चंदउरं णाम णयरं । तत्थ राया-पयाणं सोमो सोमो णाम णराहिवो परि-वसइ । तस्स चंदप्पभा णाम महादेवी । तस्स तीए सह विसयमुहमणुहवन्तस्स समुप्पण्णा दुवे पुत्ता । जेद्वस्स सुप्पभो, वीयस्स पुरिसोत्तिमो चि [१णामं] । गाहिया कलाओ, विसेसेणाऽऽउहं ति । तत्थ पुरिसोत्तिमो महावल-परकमो पर-सिरिगहणुज्जुओ । तेसिं च पिया पुरिसोत्तिमं रज्जे अहिसिंचिउण सकज्जाणुट्ठाणपरो पंचत्तमुवगओ । सुप्पहवलदेवो य परमसम्मदिट्ठी अहिगयजीवा-ऽजीवो उवलद्धपुण्ण-पायसब्भाओ अवगयजिणवयणसारो भोगपरम्महो भाउणो उवरोहेण गिहवासे परिवसइ ।

इयरो य पुरिसोत्तिमवासुदेवो सबलावलेवेण सूरपरम्महिं गियच्छायं निंदन्तो, पडिर्विवेणावि चलणणहम्मालग्गेण लज्जमाणो, सिरोरुहाणं पि भंगेण दूमिज्जंतो, चूडामणिलग्गेणावि वीयच्छत्तेणं पीडिज्जंतो, देवप्पणामेणावि सिरोवेयण-मणुहवंतो, जलहरधरिणानि चावेण खिलंतो, आल्लेस्सुणुइपदीहिं वि अणमंतेहिं डज्जमाणतैणु, परिमियमंडलतुट्ठं सूरं पि उवहसंतो, धरणिधरहरियकमलं सागरं पि ण बहुमणंतो, हिमवन्तस्स वि चमराणि असहमाणो, समुदसंखेहिं पि सेंतावं समुव्वहंतो, अणवरयधणुगुणाकरिणेण कयकिणं वामभुयं भुयंगभोगेभीसणं समुव्वहंतो लोए सुहडत्तणेण पसिद्धिं गओ ।

इओ य महु केदवो य दुवे भायरो महावल-परकमा समुप्पणचकरयणत्तणेण तणमिव सयलं जियलोयं मण्णमाणा भुंजंति भरहस्संडं । तेहिं णिमुओ पुरिसोत्तिमो । पेसिओ तस्स दूओ । समागओ य पुरिसोत्तिमेस्स समीवं । पडिहारजाणाविओ य पविट्ठो अत्थाइयाए । पायवडणुट्ठिओ उवविट्ठो समाइट्ठे आसणे । पुच्छिओ य पट्ठणा—किं कुणंति महु-केदवा ?, केण वा कज्जेण तुमं पेसिओ ? चि । दूएण भणियं—“महाराय ! विण्णवेमि । बहूणि” दिवसाणि सवितस्स महुरायस्स । किल तुम्ह बलेण उच्चाविया पुहई, कयत्थियाओ पयतीओ, दैवाविया करं णराहिवइणो, पीडिया देव-मुणिजणा, कयत्थिया पैउरजणवया, पीडियं अम्ह मंडलं । ता ण जुत्तं तुह एवं चवहरिउं, जओ—ण लंघंति मज्जायं रयणायर व्व महापुरिसा वडन्ता पुरिसोत्तिमसइ पुहईए, ता किमेएसिं पयाणं कयत्थिज्जइ ? । तच्चितापीडिएणमहं सामिणा पेसिओ तुह समीवं ति, किंच—

गच्छंती तुह भवणं ण रायलच्छी जणेइ मह दुक्खं । एकर्त्तणेण दोहं पि किंतु भिचा ण चिद्वन्ति ॥ १ ॥

णिव्वडइ णेहभावो परोप्परं घरसिरीए संक्रमणे । किंतु मुहडावलेवं ण सहन्ति महाभडा मज्झं ॥ २ ॥

जइ कह वि तए डिम्भत्तणेणमसमंजसं पि वंवरियं । विवरोक्खं मज्झ पुणो वि मुयमु, को तुज्झ रुसेइ ? ॥ ३ ॥

इय केत्तियं व भण्णसि ?, वड्डउ पीई परोप्परमणग्या । मुयमु सिर्णि परगहियं, दोसो बालत्तणे पडउ” ॥ ४ ॥

तओ एयमायण्णिउण भणियं पुरिसोत्तिमेणं—

रे द्य ! ण यौगसि चियै वोचुं, दट्ठुं पि णेय जाणासि । जेण अवालस्स महं बालत्तणपेच्छिरो जाओ ॥ ५ ॥

अहवा ण तुज्झ दोसो, दोसो तुह सामिणो अणज्जस्स । जेणऽप्पणो विणासत्थमेव तं पेसिओ इहई ॥ ६ ॥

१ अणमंतेहिं स्स । २ तीसवं जे । ३ भाउणोवरो स्स । ४ पुरिसोत्तिम स्स । ५ पुहइवईहिं जे । ६ अणमणंतेहिं स्स । ७ तणो स्स । ८ रघणियकं जे । ९ सेंतावमुव्वं जे । १० भीममुव्वं जे । ११ मसमीव स्स । १२ ण चितयतस्स स्स । १३ दाविया जे । १४ पैरजणं जे । १५ सि अयाणं कं जे । १६ ज्जइ ति । ताचितं जे । १७ एणं मह स्स । १८ तणे य दो स्स । १९ ववहरिउं जे । २० वणसि जे । २१ धिय स्स जे ।

पुण्वि तुह विवरोक्खं गहिया लच्छी उ संपयं मूढ !। मेण्हामि तुह गियन्तस्स होमु कज्जुज्जओ तुरियं ॥ ७ ॥

तओ एयमायण्णिऊण भणियं दूएण—

किं बहुणा भणिएणं ? एसो मह सामिओ तुह समीवं । संपत्तो बलभरमिलियणयर-गामा-ऽड्ड-मडंबो ॥ ८ ॥

चलियम्मि तम्मि पयलइ पडुम्मि महिमंडलं गिरवसेसं । अकन्तफणावलओ जायइ विहडप्फडो सेसो ॥ ९ ॥

सहमुच्छलन्तजलणिवहचालिउप्पित्थवलियकरिमयरा । पलयकरिणिं विलम्बन्ति तक्खणं चेव मयरहरा ॥ १० ॥

सहसुद्धादयवरतुरयखुरपुटुच्छलियधूलिमलियंगो । होइ ससंको सको वि जम्मि चलियम्मि णरणाहे ॥ ११ ॥

मत्तकरिकरडनिज्जरगलन्तमयसलिलबहुलवालिदं । जायइ सहस चिय दूहिणं ति चलियम्मि धरणीए ॥ १२ ॥

णिसियकरवालभामुररविकिरणालिदजायतडिखंडं । चलियवरपक्कपाइकभामुरं होइ मेहिवीढं ॥ १३ ॥

होति ससंका चलियम्मि जम्मि भुवणम्मि लोयपाला वि । तस्सऽज्जियणिम्मलगुणजसस्स मणुएसु कौ संका ? ॥ १४ ॥

इय कुणसु मज्झ वयणं होसि सुबुद्धिं चि, तुह पैहु ! जियंतु । सइ वंधवा य मित्ता, तुमं पि गिरुवदवसरीरो ॥ १५ ॥

तओ एयमायण्णिऊण भणियं पुरिसोत्तिमेणं—रे रे वयणमेत्तसार ! मुहचवल ! किमेवमप्पा पसंसिज्जइ णिळ्ळिज्जि-
मावलग्गेणं तए ? अवि य—

वयणं वयणं चिय होइ केवलं सैयलअत्थपरिहीणं । णिव्वडइ भुयवलेणं जयम्मि पुरिसाण माहप्पं ॥ १६ ॥

इय एवमाइ बहुयं भोसिऊण पेसिओ दूओ । दिण्णं पयाणयं सोहणे दिवसे पुरिसोत्तिमेणं ति ।

इओ य दूयवैयणुत्तेयविएहिं गियइरज्जुसंदाणिएहिं मल्ल-केटवेहिं गियवलसमेएहिं दिण्णं पयाणयं ति । मिलिया अवरोप्परं, समावडियं जुज्झं । जुज्झन्ति महाभडा । दिज्जन्ति साहुकारा । उच्छाहिज्जन्ति परोप्परं मुहडेहिं मुहडा । हुंहु-
ल्लन्ति मुण्णासणा तेरंगा । णञ्चन्ति कबंधाइ । घांसिज्जन्ति बांदियणेण गामावलीओ । वियम्मन्ति गयघडाओ । तोरविज्जन्ति पक्कपाइका । मुमरिज्जन्ति सामिसालपक्काया परिहवा य । मुमरिज्जइ आउहं इट्ठदेवया य । पयासिज्जइ पोरुसं जसो य ।
णिव्वडइ खग्गधारा किच्ची य । वेप्पइ पडिक्खसिरी गयघडा य । णिज्जइ दिसामुहेसु पडिक्खलो पयाओ य । पैतिदियहं वड्डइ संगामो रणुच्छाहो य । दिज्जन्ति महादाणाइ खग्गपहारा य । धावन्ति करिकुम्भस्थलुच्छलियरुहिरधारहिं मंडल-
माइ मइलणाओ य । एवं च गरुए समरभरे छिज्जन्तेसु करिवरसिरेसु, फालिज्जन्तेसु तुरयतिएसु, लूयमाणसु भुयामु,
तओ दारुणे रणे, भीए कायरजणे, हरिसिए मुंहडजणे, पयट्टे बहुजणमरणे, पवत्तं पहाणजुज्झं । हकारिओ पुरिसो-
त्तिमेणं महुचकहरो । वैलिओ य तस्साभिमुहं । भणिओ य पुरिसोत्तिमेणं—एस अवसरो पुरिसत्तणस्स, ता कुणसु
आउहं, पैयासेहि आउहेण गियवलं, किमेत्थ वायाए ? चि । एवं भणंतो गहिओ अगवरयसरधोरणीए मट्टुणा । तेणै वि
दक्खत्तणगुणेण पडिहया सरेहिं चेव सरा । तओ खलिऊण सरेहिं सरे मट्टुणो “छिण्णो चावस्स गुणो । गहियं तेण
कोत्तं” । घत्तियं पुरिसोत्तिमाभिमुहं । तमेतं मुमुंटीए कयं सैयसकरं । पुणो गहियं खग्गरयणं । तं पि खैरप्पहयं सह
अंगट्टएणं धरणीए णिवडियं । पुणो गरुयामरिसवैसरज्जन्तलोयणेणं गहियं चकरयणं । तं पि तस्स रज्जं पिव पुँरिसो-
त्तमस्स करयलेऽवलग्गं । तओ दट्ठण हत्थट्ठियं चकरयणं पुरिसोत्तिमेण भाणयं—पेच्छंतु मुहडा, अवलोयन्तु तियसा,
र(इ)क्खंतु दाणवा, एस संपयं ण होसि । चि भणिऊण मुक्कं चकरयणं । छिण्णं सीसं मट्टुणो । केटवो वि तस्स भोया
सेणावडिणा वावाइओ । ओयवियं भरहड्डं । भुंजइ भीए । सुप्पहवलदेवेणावि गहिऊण सामण्णं, पालिऊण पव्वज्जापरि-
यायं, उप्पाडिऊण केवलं, “सिद्धिसमिद्धी समद्धासिया ॥

इति महापुरिसचरिए पुरिसोत्तमअट्ठचकवट्ठि[?—सुप्पभवलदेव]चरियं सैम्मत्तं ॥ २३-२४ ॥

१ महिवेढ जे । २ का गणना जे । ३ बहु जे । ४ सयलसयं जे । ५ बहु जे । ६ भाणिऊण सु । ७ “वयणुत्तविएहिं सु ।
८ वुल्लुल्लेति जे । ९ तुरंगमा सु । १० “क्खो निक्खपावो जे । ११ पदसमय जे । १२ सुहडमणे सु । १३ जुद्ध जे । १४ चत्तिओ
तस्साभिमुहो जे । १५ पैयासेह जे । १६ तेणावि जे । १७ सरो सु । १८ छिण्णो य धणुहस्स जे । १९ कुत्तं जे । २० सयसिक्करं जे ।
२१ सुहपं जे । २२ “ण णिव” सु । २३ “वयवज्जत” सु । २४ पुरिसोत्तिमकरं विलग्गं जे । २५ अवलोयन्तु जे । २६ माडओ
जे । २७ सिद्धी समं जे । २८ “पुरप” सु । २९ परिसमत्तं ति जे ।

[२५ धम्मतिथयरचरियं]

— × —

अणंतइजिणतिथयरओ चउहिं सागरोवमेहिं गएहिं वीसवरिसलक्खाउओ पणयालधणुणि ऊमुओ धम्माहिदाणो तिथयरओ समुप्पण्णो ति । कहं ? भणइ—

अब्भुद्धरणसमत्था जयम्मि जायंति ते महासत्ता । जेहि परिगलियपावाइं तक्खणं होंति भुवणाइं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रयणणाहिपुरवरं । तत्थ राया गियपयावकन्तभुवणयलो अणवरयणि-
इयसत्तुप्पसरो भाणु व्व भाणू णाम णराहिओ परिवसइ । तस्स य गहियमुव्वया सुव्वया णाम भारिया । तीए सह
विसयमुहमणुहवन्तस्स अइकन्तो कोइ कालो ।

अणया वेइसाहमुद्धपंचमीए पूसजोगम्मि चोइसमहासुमिणस्सओ वेजयन्तविमाणाओ चविऊण सुव्वयाए कुच्छिसि
समुप्पण्णो समासाइयतिथयरणाम-गोत्तो ति । संबड्ढिओ य गव्भो । जाओ य माहमुद्धतइयाए पुस्सणक्खत्ते । भगवम्मि
गव्भत्थे 'अतीव जणणीए धम्मकरणदोहलो आसि' ति तओ धम्मो ति णामं कयं तिहुयणगुरुगो । कओ य जम्माहि-
सेओ पुव्वकमेणेय सुरिदेणं । कयसयलकरणिज्जो कयपव्वजावसाओ संबोहिओ लोयंतिएहिं । पडिबण्णो माहस्स चउत्थीए
पूसम्मि णक्खत्ते समणत्तणं । पालिऊण छउमत्त्वपेरियायं फग्गुणमुद्धदसमीए पूसजोगम्मि केवलमणुपत्तो ति । विरइयं
देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा । बुज्झंति पाणिणो । उज्झंति विसयमुहं । लमंति सोग्गइमग्गे । छिंदंति मोहजालं ।
अब्भुवगच्छंति महापुरिससेवियं समणत्तणं, केइ पुण अणुव्वयाइं ति ।

एवं च पडिवोडिऊण भवियकमलायरे, पल्लविऊण दुविहं पि धम्मं, जेदस्स मुद्धपंचमीए पूसजोगम्मि सम्मेय-
गिरिसिहरे सव्वदुक्खविमोक्खं मौक्खमणुपत्तो ति ॥

इति महापुरिसचरिए धम्मतिथयरचरियं सम्मत्ते ॥ २५ ॥

::—:—::

[२६-२७ पुरिससहिवासुदेव-सुदंसणबलदेवाण चरियं]

धम्मतिथयरकाले पुरिससीहो पणयालधणमुओ वीसइवासलक्खाउओ समुप्पणो । तस्स चरियं ति-

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे कोसम्बी णाम णयरी । तत्थ य जहत्थणामो सिवो णाम रौया परिवसइ । तस्स महादेवी सुजसा । तीए सह विसयसुद्धमणुहवन्तस्स समुप्पणो पुत्तो जहत्थणामो सुदंसणो चि । पुणो वि सत्तमुमिणसंसुओ समुप्पणो पुत्तो अणुगयत्थाहिदाणो पुरिससीहो चि । पत्ता य दुवे वि जोव्वणं । कलाओ गाहिया, विवाहिया य ।

अण्णया विहडियपच्चन्तणरवइदप्पसाडणमिचित्तं पिउणा सुदंसणो पेसिओ । पुरिससीहो उण णियभाउणा सह कैइवयपयाणयाइं गंतूणं तत्थेव मिथेयाविणोएण परिमियतुरयवलसमेओ जाव चिट्ठइ ताव य पिउसयासाओ समागओ लेहो जहा-लेहदंसणाणंतरमागन्तव्वं ति । तओ वाइऊण सयमेव लेहं पुच्छिओ लेहवाहगो जहा-किं दुक्खइ तायस्स ? । तेण भणियं-दाहज्जरो । तओ तक्खणमेव दिण्णं पयाणयं । पत्तो य वीयदियेहे । अकयभोयणाइसरीरपडिक्कम्मो पविट्ठो णयरं । दिट्ठं च महारायसोगावणं जणसमूहं परिचत्तणिययवावारं सुत्तं व कयधुच्छागमं व वाहिगदियं व पडिसिद्धदेव-उल्लधुयवेले चत्तसयलमहूसवं ति । तत्थ गच्छंतेण इमा गाहा निमुया ।

माया पिया य पुत्ता भज्जा सयणो य णेहपडिपुण्णो । जम्मे जम्मे चिय "होंति णवर को तेसु पडिबंधो ? ॥१॥

तओ सोऊण एयं रौयउत्तेण अणिट्ठमासंकियं । कमेण संपत्तो पडिसिद्धसयलणिग्गम-पवेसं णिहुयसंचरन्तपरियणं भज्जणदारं ति । उत्तरिऊण तुरंगाओ पडिहारपणमियचलणजुओ पविट्ठो अर्द्धभतरं णाणाविहओसहिगंधसमिद्धं पत्थुयसंति-क्कम्मं पच्चन्तमक्खणं पीसिज्जन्तओसहं दिज्जन्तदाणं समाउलंतेउरं विसण्णमंतिमंडलं मूढवेज्जगणं पल्लत्थकंचुइजणं ति । पविट्ठो पिउसमीवं । दिट्ठो य महाराया गरुयमहाजरडज्जमाणसरीरो । पडिओ चलणजुयले । त्रियणापरव्वसेणावि उँववि-सिऊण पिउणा उँवज्जओ । पुच्छिओ य-पुत्ते ! अतीवविदाणो सि ? । साहियं च समीववत्तिणा पुरिसेण जहा-महाराय ! तिण्णि दिणाणि" उदयस्स वि पीयस्स कुमारें ति । तओ तमायणिऊण भणियं राइणा-पुत्त ! किं मैह दुहियस्स अँहिय-यरं दुक्खमुप्पाएसि ? , जाणामि पुत्त ! तुमं जणयवच्छलं तहा वि तुम्हारिसाण पीडा पीडेइ सयलं भुरणमंडलं, पुत्त ! तुम्हायत्तं मह रज्जं कोसो जीवियं च, जहा महं तहा सयलपुहईए, ण हि थेवपुण्णाणं तुम्हारिसा भुँक्खालंकारहेयवो सँय-लजियलोयरक्खणक्खमा अलंकरेन्ति वंसं, जम्म-परिग्गहं च करेताणं णिमित्तमेत्तं जणणि-जणया, तुह जम्मेणेव कयत्थो, जीविण्णावि मह थेवं पओयणं ति, ता गच्छमु कुणमु आहाराइयाओ किरियाओ, तइ निरुहवे अहं पि पाविस्सामि णियं पयइं ति । तओ पुणरुत्तेण णरवइवयणेण गओ पुरिससीहो णिययमावासं । कया पाणवित्ती ।

पुणो तयणंतरमेव पविट्ठो राउलं । ताव य जणणिपडिहारीए अग्गओ होऊण विण्णत्तं जहा-कुमार ! परिचायाहि परि-चायाहि जीवन्ते चेव महाराए किं वयसियं देवीए ? । तओ सँसंमओ उट्ठिओ कुमारो । दिट्ठो य जणणी परियणमाउच्छ-माणा, तहा हि-पुत्त सारिए ! किं रुयसि ? , 'दूरं गया अहं संपति तुहं' ति किं निरत्थयं वाहरसि पूसय ! ? , किमणुगच्छसि भवणकलहंसिए ! ? , वच्छे वप्परिए ! दहं पालिया सि, सँहि चंदलेहे ! जीवियाओ वि दइया, पुँत्ति ! अंतेउरदुँवारवालिया सि, ण कओ मंदउण्णाए सारसमिहुणगस्स विवाहो, ण दिट्ठो पियंगू त्रियसमाणा, खमेज्जमु पायप्पहारं असोय ! , मुयसु मह मग्गं कुरंगि ! जणणिवच्छले ! , किं मं पज्जाउलं करेसि हरिणिण ! ? , किं मं पयाहिजीकरेसि घामयूरिए ! ? चि । एँवविह-पलावाउलाए जणणीए सगासं गओ । भणियं च अणवरयगरुयदुक्खोहगलियवाहुप्पीलेणं कुमारें जहा-अम्ब ! तुमं

१ वीसइलक्खा" सु । २ णराहियो जे । ३ "णामा जे । ४ कइ वि प" जे । ५ मिमगा" जे । ६ दुक्ख ता" जे । ७ "दियसे जे । ८ "मुच्छागयं सु । ९ पुत्तो जे । १० होइ जे । ११ रायपुत्तेण जे । १२ परिवारजण जे । १३ अट्ठिऊण सु । १४ अवगूहो जे । १५ पुत्ता जे । १६ "णि दवस्स वि जे । १७ महं जे । १८ अण्णहियवरं जे । १९ अम्हारिसाण" जे । २० भवणा" सु । २१ सयलर-क्खणक्खमा जे । २२ ससंभेता । जे । २३ सहिए जे । २४ पु" जे । २५ "दुयारपालिया जे । २६ एवविहवहुपलावाउ" जे ।

पि ममं संभारं परिजयसि ?। ततो देसिहउण पुत्तं भविसेसमुक्कबोहाए भणियं-पुत्त ! न तए मह विग्घो कायव्वो, जओ उवरयम्मि तारिसे भत्तारे ण मं संफुसइ रायसिरी, ता किं मए मयसरिसाए जीवन्तीए ?, पावियं च सयलं मणुयभवफलं, जओ पत्तो तेलोकचूडामणिसरिसो भत्ता, बद्धो महादेविपट्ठो, पीयं छीरं तुम्हारिसेहिं पुत्तेहिं ति । एवं भणन्ती गिवडिया पुत्तस्स चलणजुयले । “पुत्त ! ण तए कुलोच्चियमायारं कुणंतीए किंचि भणियव्वं ति । जाव य एस सुहरासी इह चेव चिट्ठइ ताव वरं अत्ताणं हुयासणे गिव्ववेमि । परलोयं णए पुण पइम्मि दुस्सइसंतावाणलपलीविय-देहाए किं करिही जलणो मुपज्जलिओ वि ?” ति भणिउण गिग्घया जणणी ।

तओ णीसहंगो गओ पिउसमीवं । णट्ठचेयणेण य किंकायञ्चमूढेण दिट्ठो महासंतावतावियदेहो जणओ । तं तहाविहं पेच्छिउण मुक्को धरणीए चेव अप्पा । एत्थंतरम्मि महाराएण जाणिउण गरुयसोयभरियसरीरं पुत्तं समीवम्मि ठविउण भणियं-“पुत्त ! किमेवमप्पा सोयभेहोवहिम्मि पडन्तो उवेक्खिज्जति ?, तुम्हारिसा हि भुवणस्स आलम्बणं ति । किं भणामि ?, सयलवयणाणं अगोयरीभूओ” तं सि । तहा वि ‘कुलप्पदीवो सि’ [त्ति] समुज्जोइयभुवणरस य अपुक्खलं व, ‘पुरिससीहो सि’ [त्ति] सइ गुरुविदेइणो गिंद व्व, ‘तुह इमा पुहइ’ ति लक्खणलक्खियचक्कवट्ठिपरस पुणरुत्तं व, ‘गेण्हमु सिरि’ [त्ति] सिरीए सयं गहियस्स विवरीयं, ‘बोढव्वो रायभरो’ ति भुवणयल्लुव्वुदभरस्स अजोगं व, ‘परिक्खियव्वओ पयाओ’ ति दीहरभुयदंडगलरक्खियभुवणस्स पुणरुत्तं व, ‘ण कायव्वं चावलं’ ति पढम-जोव्वण एव गिरुद्धसयलिंदियस्स गिरवकास व्व वाणी, ‘उच्छेयणीया अरिणो’ ति तुह पयावस्सेव सा चित्तं” ति भणंतो णरवई पंचत्तमुवगओ । तयणंतरं च सुरो वि णरवइसोएणेव अहोमुहो पल्लत्थो दाउं जलंजलिं व उवगओ समुह-म्मि । रायाणुगमणपत्थियाए आयवसिरीए मुत्तंतो कमलवणसंडो ‘उच्छाइओ सोएण व तमणियरेणं भुवणयलं । तओ णाउण लोयन्तरीभूयं पियरं पाययपुरिसो व्व महया सदेण ससामन्तो सपुरोहिओ ससचिवो संतेउरो पुरिससीह-कुमरो रोइउमाढत्तो । पढायो य रयणी । कयं अग्गिसकाराइयं सयलं” चिय करणिज्जं । गहिओ महासोएण रायउत्तो । पेसियाओ सिग्घयैरगमा-SSगमसमत्थाओ उट्टेज्जुंयलीओ गियभाउणो समीवं ति ।

एवं च गच्छंतेसु “दिवसेसु, कहिज्जंतेसु महापुरिसचरिएसु, गिंदिज्जंते पयतिविरसे संसारे, भाविज्जंतीए अणि-चयाए, गरहिज्जंते विहिणिओए, दसिज्जंतासु रायदेवयासु, मंदं मंदं सिद्धिहीए सोयप्पसरे, एत्थंतरम्मि समागओ बलदेवो षसीकाउण पचन्तणरवती । समागए य जेट्ठभाउए पुण्णवीहओ सोयप्पसरो । तहेव पवत्तो हाहारवो राउले सयलपुरे य, लोयस्स वयणेसु लिहियाणि व परिदेवियाणि, पढमदियेहम्मि व ण दिज्जंति बालाणं पि थणया । एवं च सुइरं गिंदिउण विहिंजिलसियं, कयं मज्जणाइयं दोहिं वि जणेहिं । कहियं णीसेसं जहावत्तं परोप्परं, चिट्ठंति सोयाउरा ।

एत्थंतरम्मि विण्णायरायमरणवुत्तंतेणं निस्सुम्भणरवइणा पडिवासुदेवेण पेसिओ दूओ । पडिहारजाणाविओ य पविट्ठो । दिट्ठा दुवे वि बलएव-वासुदेवा । पडिओ चलणकमलेसु । उवविट्ठो य जहाविट्ठे आसणे । पुच्छिओ य पुरिससीहेण निस्सुम्भस्स पउत्तिं । साहिया दूएण णीसेस ति । भणियं च दूएण-“उवरयं रायं सोउण पेसिओ अहं महाराइणा तुम्ह समीवं, जहा-बाला तुंम्हे मा परिहविज्जह ति केणंइ, तण्णिमित्तं पेसिओ अहं ति । भणियं च महा-राइणा जहा-आगच्छह मह समीवं, भुंजह जेहिच्छं मज्झ सिरि, महत्तणकारेण य ण सक्केइ परिहवं कोइ काउं ति । तयत्यमहं पेसिओ” ति । तमायण्णिउण भणियं पुरिससीहेण-“सोहणं कयं जमिहागओ सि, बोढव्वो चेव निस्सुम्भेण अम्ह पउत्ती, किंतु एयं ण जुत्तमुत्तं जं ‘तणकारो’ ति । एयं दुव्वसियं तस्स “केणावि आरोवियं हिययम्मि । किं सो ण याणइ अत्तणो सामत्थं अम्ह वा वलं ? ति, जेणेवं जंपति” ति । एयं सुणिउण भणियं दूएण-कुमार ! मा एवं जंपसु,

१ “वाहयेवाए जे । २ जीवमाणीए जे । ३ भण्णियं पि” जे । ४ हुवासणम्मि जे । ५ “महोर्गहम्मि जे । ६ “मि ! तुम सय” जे । ७ “ओ । तहा हि-कुं” जे । ८ गेण्ह सु । ९ चवलत्तं ति सु । १० उच्छाइयाए सो” जे । ११ “सीहो कुं” जे । १२ “रा रय” सु । १३ “लं उच्चियं कं” जे । १४ “वरं समागम” जे । १५ “जुवलीओ जे । १६ दिवहेसु जे । १७ वरे का” जे । १८ “दिवहे व्व” जे । १९ तुम्हे जे । २० केण वि सु । २१ जहत्थियं सु । २२ तणागारो सु । २३ केणइ जे ।

महापुरिसो खु सो उत्तमवलसंपण्णो पयावकन्तणीसेसमुवणमंडलो तुम्होवरि दयं काऊण एवं जंपइ, अण्णहा क 'कज्जं तुम्हारिसेहिं तस्स ? । एवमायण्णिऊण भणियं वामुदेवेण—“अरे दय ! किमेवमुम्मत्तो व्व वाहरसि ?, ता किं तैस्स अम्हे करुणाए पयं ? ति, ण उण सो “चेव अम्हाणं ? ति, ता तस्स विणासणकालो समुट्ठिओ तेणं जंपइ चि । ता किं बहुणा जंपिणं ?, एसो अहमुच्चलिओ तैस्स दप्पसाडणणिमित्तं, ण अण्णहा तस्स पोरुसावलेवो अवेइ । ण चेव महं सोयावेया-वगयस्स अण्णो उवाओ सोगवेया इगमे, ता गच्छ तुमं । एसो अहं तस्संतियं पत्तो” । चि भणिऊण विसज्जिओ दूओ गओ । कहियं णिसुंभणरवइणो । तेणावि दिणं पयाणयं । इओ य पुरिससीह-सुदंसणेहिं सह मिलिओ । पयट्ठमाओहणं ति । अवि य—

विसहन्ति देन्ति पहरं, माणं वड्ढेन्ति, नेन्ति पडिवक्खं । भिदन्ति गयघडाओ वीरधणा साहसहाया ॥ २ ॥

भेल्लन्ति सीहणायं हकारियएकमेकपडिवक्खा । अग्गक्खंधपवत्तणैणिज्जियणियसिण्णसत्पुसि ॥ ३ ॥

मुक्कणिरन्तरसरणियरविहयपडिवक्खलक्खियववत्था । तह जुज्झंति समत्था जह किच्ची भमइ भुवणम्मि ॥ ४ ॥

इय गरुयसमरभरपसरणेकववसायपावियसयत्था । विहडंति केइ पावेति जयसिरिं लद्धसकारा ॥ ५ ॥

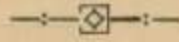
एवं च गरुए संगामप्पसरे वियम्भिण दरोहामियं णिएऊण णियवलं उट्ठिओ सइं चेव णिसुम्भणराहिवो । पहरिउं पत्तो परवले । तहा विहयविदेवियं रिउवलं जहा मोत्तूण लज्जं, अमाणिऊण कलंकं, सिदिलिऊण पोरुसं, अव-हत्थेऊण सामिपसाए, लंघिऊण णियमज्जायं, वीसरिऊण कुलकमं, मरणभीरुणो महाभेयंहित्थहियया भज्जिउं पयत्ता सुहडा । तयणन्तरं च णाऊण ओहामियं ईसीसि मंभीसन्तो णिययसेणं उच्छाहिय एकमेकवलं पहरिउं पयत्तो पुरिस-सीहो । तओ सुहडा वि तं दट्ठणमवलंविऊण पोरुसं, जाणिऊण अप्पाणयं, काऊण अवट्ठंमं, कयरणुच्छाहा पलयाण-लज्जालाणिहाओ व्व णिवडिया सत्तुसेणो । तओ तं दट्ठणं भणियं णिसुंभेण जहा-महासत्त ! किमणेणं गिरत्थएणं वावाइएणं पत्तसरिसेणं णिस्सारेणं पाययपुरिसवलेणं ? ति, तुह मह जएणं जओ, पराजएणं पराजओ चि, ता वल मह सम्मुहं ति । ऐवं भणंतेण संधिओ सरो । तमायण्णिऊण भणियं पुरिससीहेणं—[? सोहणं] समालत्तं, जइ णिन्वहणं पि एरिस्सं चेव ता सुंदरं । ति भणंतेण तेणावि अप्फालियं गंडीवं, संधिओ सरो । जुज्झउमारद्धा परोप्परं । एत्थन्तरम्मि च्छिदं लहिऊणं छिण्णो गुणो सह जीविण विय णिसुम्भचावस्स । छड्डियं तेण णिग्गुणं कलत्तं व चावं । महियं खमारयणं । धाविओ समुहं । तं पि अणवरयमुक्कसरधोरणीए खंडाखंडीकयं । तओ दढयरं रुसिऊण सुमरियं चकरयणं । सरणाणन्त-रमेव समारुद्धं दाहिणकरयले । यत्तियं तयाभिमुहं । तं च पयाहिणीकाऊण पुरिससीहं ठियं तस्सेव करयले । तेण वि तक्खणमेव कोवावूरियहियएण मुक्कं णिसुम्भाभिमुहं । णिसुंभिओ णिसुंभो चकरयणेणं ति । तओ वावाइऊण पडि-वामुदेवं, ओयविऊण भरहद्धं, भुंजिऊण [? रज्जसिरिं], पुरिससीहो कालगओ । सुदंसणो वि पडिवज्जिऊण चारिचं, खविऊण अट्ठविहं कम्मं, सिद्धिमणुपत्तो चि ।

॥ इति महापुरिसचरिए पुरिससीह-सुदंसणाण चरियं सेंमत्तं ॥ २६-२७ ॥

—:X:—

१ किं तस्स तुम्हेहिं ? ति । एवमायं जे । २ किमुम्मत्तो सु । ३ तस्स वि अम्हे जे । ४ चेव जे । ५ तस्स उवावणणिं सु । ६ चेव जे । ७ “णिज्जियणियसेण(इ स)सत्तु” जे । ८ जयसिरी जे । ९ विहडिउं जे । १० “मवधीया भ” जे । ११ एवं जे । १२ पडि-सम्मत्तं जे ।

[२८ मधवचक्रवट्टिचरियं]



धम्मस्स य सन्तिस्स य अन्तरं तिणि सागरोवमाइं पायहीणपलिओवमहीणाइं । एयम्मि अन्तरे चक्रवट्टिदुगं समुप्पणं । तस्स य जहकमं चरियं साहिप्पन्तं णिसामेह—

अत्थि जयपायडगुणा सावत्थी पुरवरि त्ति विक्खाया । तुंगमणिभवणसिहरोवरुद्धरविरहपहा रम्मा ॥ १ ॥

परिवसइ तीए णिग्गयपयावणिज्जियसमत्थमहिवेढो । उव्वडभुवणभारो मधवं णामेण णरनाहो ॥ २ ॥

पणयासेसणराहिबमणिमउडणिहसमेसिणियपयवीढो । सुंदेस्तुलियकंदप्पदप्पदप्पुद्धुरोहो ॥ ३ ॥

पणइकमलाण सूरु, सज्जणकुमुयाण ससहरो रुइमं । रिबुजलणैसलिलवाहो, मइमं सत्थत्थणिम्माओ ॥ ४ ॥

संदो त्ति परिहरिज्जइ परजुवइजणेण णिप्फलगुणैणं । बंधु व्व आयरिज्जइ जो भिच्चयेण तदियहं ॥ ५ ॥

विणयाऽऽवज्जियगुरुयणणिहित्तीसत्तणेण जो वइइ । गव्वं, ण रज्जभावेण भुवणपरियोलिरजसोहो ॥ ६ ॥

पैरिहलिओ दोसेहिं अवियासेहिं ति णीरसो काउं । कत्थइ अलद्धायेण जो मणोहेण आयरिओ ॥ ७ ॥

इय तेण गुणणिहाणेण पुहतिकण्णावयंससरिसेण । सा णयरी पालिज्जइ पालियणीसेसंभुअणेण ॥ ८ ॥

वायालधणुमुयस्स पंचवरिसलक्खाउयस्स तस्स किं जायं?—

एवं च विविहवररमणिसंगमुहियस्स णरवरिंदस्स । आउहसालाए ददं उप्पणं चक्रवरयणं ॥ ९ ॥

चक्राणुमगलगेण णरवरिंदेण णिज्जियं भरहं । उप्पण्णा णव निहिणो चोइहरयणेहिं संजुत्ता ॥ १० ॥

चउसट्टिसहस्साणं जुवईणं सो पइत्तणं कुणइ । वत्तीससहस्सा णरवतीण आणाए वट्टंति ॥ ११ ॥

पंचेव पुव्वलक्खा आउं परिवालिऊण सो विहिणा । काँउं जिणउवइदं धम्मं सम्मत्तपरिसुद्धं ॥ १२ ॥

काऊण पवयणुच्छप्पणाइयं दाण-पूयणुज्जुत्तो । जिणविर्व-भवण-न्हाणाइएहिं अण्णेहिं वि गुणेहिं ॥ १३ ॥

कालं काऊण तओ उववण्णो वरविमाणरमणिजे । कप्पे सणंकुमारे सुरिंदसामाणिो जाओ ॥ १४ ॥

॥ इति महापुरिसचरिए मधवओ चरियं समत्तं ति ॥ २८ ॥



१ 'मणिपय' स्रु जे । २ 'णवारिवाहो जे । ३ परिहरिओ जो दोसेहिं सावयासेहिं णी' स्रु । ४ 'भुवणेण जे । ५ जायं ? ति स्रु । ६ चोइसर' जे । ७ काऊण जिणपणीयं ध' जे । ८ 'विबण्हवण-न्हा(१णा)वाइ' स्रु । ९ 'यं परिसमत्तं २८ ॥ जे ।

[२९ सणकुमारचक्कवट्टिचरियं]

ओहामियणियरूवो समुरा-सुर-मणुयतिहुयणम्भहिओ । णामं सणकुमारो तस्स य चरियं णिसामेह ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरं णाम णगरं णाणाविहमणिभवणभित्तिप्पहोहामियंभयारं उजुंगपायारोववेयं पायालोयरगंभीरफरिहोवसोहियं कमलिणीसंडमंडियदीहियासयरमणिज्जं । तम्मि य णयरे णिहय-पडिसनू वीससेणो णाम णराहिओ । तस्स य महादेवी सहदेवी । ताणं च पुत्तो सणकुमारो सव्वंगावयवमुंदरत्तणेण उवहसियसुरा-सुररूवरिद्धी सयलकलापारओ । तस्स य भित्तो सूरमुओ कालिदिणंदणो महिंदसीहो ति । तस्स य तेण सह विसयमुहमणुहवन्तस्स वच्चइ कालो ।

अण्णया विचित्तयाण कम्मपरिणायस्स, अवस्संभावित्तणओ तस्स भावस्स, णिग्गओ आसवाहणियाए सणकुमारो । वाहिऊण बहुविदे आसे सह महिंदसीहेण, कीलिऊण य विचित्तकीलाहिं समारूढो एकम्मि पाहुडागए आसे । विवरीय-सिक्खे तम्मि य आरुहिऊण मुक्को आसो धाविउं पवत्तो पंचमधाराए । तओ उज्जाणसिरं गंतूण संजमिया रज्जू जाव य सो विवरीयसिक्खत्तणओ मुट्ठुयरं धाविओ । पुणो वि ददयरं समायहिदया रज्जू, तओ सो ददयरं धाविओ । एवं च णियन्तस्स सयलणरवइसमूहस्स सव्वमज्झयाराओ एगागी कयंतंकरणेणेव तुरंगमेण अवहरिओ । कइं?—एसो वच्चइ, एस जाइ, एस गओ, एसो अदंसणमुवगओ ।

लग्गो अविण्णायवुत्तंतो वीससेणो य सपरियणो मग्गओ । गच्छइ य तुरयसुरुक्खयपयवीओ पलोएन्तो णरवई । ताव य पलयकालुच्छलिण्णेव पवणेण उच्छलिओ रओ । तेण रुद्धा दिसिवहा, खलिओ दिट्ठिपसरो, समीकया धरणीए णिणुणयपपसा, भग्गा तुरयसुरपद्धई, समाउलीहया सामन्ता, विसण्णा मन्तिणो, वुण्णा मग्गोवएसया । एत्थंतरम्मि विण्णत्तो महिंदसीहेण णरवई—“देव ! अवहिओ विही एवंविहवइयरसामग्गीउप्पायणम्मि, अण्णहा कहिं कुमारो ?, कुओ वा एस एवंविहो आसो ?, कत्तो वा एयम्मि समारूढं कुमारस्स ?, केण वा पओएणं अवहरणं कुमारस्स ? । तयणन्तरं च एवंविहपवणुत्थंभणसमुच्छलियरयणिहाएण भग्गाणि पयाणि, ण णज्जए पुव्वुत्तराइओ दिसैवि-भागो । ता देव ! पडिकुले इमम्मि वम्मीओ वि मेरू, गोपयं पि समुदो, उत्सवो वि वसणं, वसिमं पि रण्णं, धरं पि गोत्ती, बंधुजणो वि वेरिओ, समं पि विसमं, ता कुणउ पसोयं मह देवो, “देउ देवो पयाणयं णियणयराभिमुहं ति । अहं पुण थेववलसमेओ कुंमारं लहिऊण समागमिस्सामि देवमवमणिऊणं ति, अवि य—

विप्फुरइ ताव देवो विहडण-संघडणकरणतल्लिच्छो । जा ण तुलिज्जइ साहसधणेहिं णिहसेक्कसारेहिं ॥ २ ॥

ता तुंगो मेरुगिरी, मयरहरो ताव होइ दुत्तारो । ता विसमा कज्जगई, जाव ण “धीरा पवज्जंति ॥ ३ ॥

काऊण पणं जीयं तुलाए जे णिक्खिवंति अप्पाणं । ते साहन्ति सकज्जं, संकति देवो वि ताण फुडं ॥ ४ ॥

इय जे णिच्छियमणो अवहत्थियमुहजसोहसोडीरा । विण्णायगुणविसेसा ताण सिरी देइ सण्णिज्जं” ॥ ५ ॥

एवंविहवहुपयारेहिं णियत्ताविऊण णरवतिं णियवलसमेओ महिंदसीहो पेंविट्ठो महाडई । सा य—

वेसाहियउं जैइ सिय केणइ अलद्ध मेज्झ, जुवइचरिउ जैइ सिय अइकुडिलमैग्ग, सालवाहणत्थाणि जइ “सिय कइसयसैकुल, महासैरु जइ “सिय पोण्डरीयसमाउल, वरणयरु जइ सिय दीहसालोळिकिय, बाहुवल्लिमुत्ति जइ “सिय

१ गायेय जेपुस्तके नास्ति । २ “णीसंड” सू । ३ “सिक्खे आरुहिऊण तम्मि मुक्को सू । ४ पयत्तो जे । ५ “तववाणेणेव सू । ६ लग्गइ अ” जे । ७ “सुरस्सय” जे । ८ लग्गा जे । ९ अहिओ विहा ए” जे । १० दिसाभागो सू । ११ “य, देउ सू । १२ देउ पया” जे । १३ कुमारो ल” सू । १४ धीरा जे । १५ पवट्ठो जे । १६ जइ सो के” जे । १७ मज्झा जे । १८ “जइ धी अहं” जे । १९ “मग्गा जे । २० सिवा जे । २१ “संकुल” जे । २२ “सर जे । २३ सिया जे । २४ “संविद्या जे । २५ सिया जे ।

महासत्तोहिद्विय, अहिंस जइ 'सिय बहुमय, जिणपवयणु जइ 'सिय बहुसावयाहिद्विय, जिणवाणि जइ 'सिय सन्ध-
सत्ताणुगय, कालिंदीजलपवाहु जइ 'सिय हरिबलमलियणाग[य] ।

एवंविहाए य अडवीए सणकुमारणेसणपरस्स परिगलियं सेणं, एगागी संवुत्तो महिंदसीहो । पुणो वि
साहससहाओ गिरिकंदरोयरेसुं महाणिगुंजेसु सीहकिसोरगुहासुं च अणोसिउं पयत्तो ।

कहं ?—

धावइ तहिं तहिं चिय जत्तो जत्तो कहिंचि णिसुणेइ । सहं अलविस्खयं चिय गय-मय-हय-महिंस-चमरीणं ॥ ६ ॥

जियसजलजलहरोरालिमत्तमायंगगजियं सोउं । 'आणवसु, 'जिय' भैणंतो धावइ भैयवज्जिओ सहसा ॥ ७ ॥

आयणिऊण गरुयं सीहस्सोरालिरुंजियमसज्जं । तम्मायचित्तो धावइ एसो मह सामियणिणाओ ॥ ८ ॥

करिथोरकरायट्टियमोडियसाहोहसल्लइवणम्मि । पइसइ महिंदसीहो णरिंदसीहं विमग्गेन्तो ॥ ९ ॥

मुहलमयूररवाहियगुरुसोउव्वरियधीरववसाओ । केसरिदरीसु मग्गाति कुमरं भयवज्जिओ मइमं ॥ १० ॥

इय हुंहुल्लइ रणम्मि तरुकडिल्लम्मि साहससहाओ । एको चिय दूरुज्झियभय-णिहा-खेय-गुरुवियणो ॥ ११ ॥

अवि य—

कस्स ण दलेइ हिययं मयरंदाभोयरंजियदियंतो । सहयारमंजरीरयसणाहगंधुधुरो पवणो ? ॥ १२ ॥

णववियसियकुडयंभोमिस्सकणयरंजियदियन्ता । विमग्गहुमासागमदियहा भण कं ण मारेन्ति ? ॥ १३ ॥

उव्वेलेइ समीरो खरखरकराहयाण णलिणीण । पंकोवरिदरल्लियाइं येवसल्लियाइं पत्ताइं ॥ १४ ॥

खरपवणुधुययरयणिवहरंजियासामुहाण कलुसाण । को चुकइ जीवंतो उद्धुंधुलयाण दिवसाण ? ॥ १५ ॥

मुक्केकल्लुपुडिं गयदरमलियकलम्बकेसरसणाहा । पवणंदोलणल्लज्जलन्तयणमुकरवमुहला ॥ १६ ॥

कस्स ण दलन्ति हिययं दियहा घोरम्मि पाउसारंभे ? । दूरेण विरहविहुरा, साहीणपियस्स 'वि जणस्स ॥ १७ ॥

सन्धस्स जणंति फुडं उकंठाकोमलाइं हिययाइं । पविरलजलजलहरजणियवरिसदियहा उ सरयम्मि ॥ १८ ॥

उव्वेवं जणइ मणे विरहीणं पिकसालिगंधडो । पवणो सत्तच्छयगंधगन्धिणो णवर पसरंतो ॥ १९ ॥

को सहइ ताण पसरं जणिउकंठाण सिसिरदियहाण । जेहिं अणज्जेहिं कओ णलिणिविणासो तिष्ठवणम्मि ? ॥ २० ॥

काऊण मालईए मलणं पसरन्तमुरहिगंधाए । कुंदाण कया रिद्धी अमुणियगुण-दोससारंहेहिं ॥ २१ ॥

उत्थम्मियहिमकणसिसिरपवणपसराण जणियकंपाण । वीहेइ ण को भण महियलम्मि हेमन्तदिवसाण ? ॥ २२ ॥

इय एरिसम्मि घोरम्मि उयुसमूहम्मि साहससहाओ । अडईए हुंहुल्लइ सणकुमारं विमग्गंतो ॥ २३ ॥

एकं संवच्छरं जीव परिहिंदियं महाडईए गुरुवराहाए दुस्सहसिंधेणिजायाए वियरियवग्गपोयाए गुल्लुलेन्तगयसमू-
हाए जहिच्छपेरिसकिरमयजूहाए दूरुज्झियमाणुससंचाराए वियरियचैमारिसत्थाए चित्तयसमाउलाए चिण्णोरुसइलाए
हुंहुल्लियविरुयग्गाए गंडयसमुत्तासियमहिंसवदाए चकिउंभमंतसावयगणाए संसाराणोरपाराए जमणयरिभीसणाए
देवमतिगुंविलाए चि ।

तओ एवंविहमहिंदन्तो महाडई एकम्मि दिवसे गओ येवभूमिभागं णिल्लखो चेव दिसाओ पलोएन्तो चक्कमिउं
पयत्तो । ताव य णिसुओ सारस-कलहंस-भारंडादीणं कोलाहलो, ओलुंखिओ य सरसलिलसीयलेण मारुएण, अग्गाइओ य
कमलाण मासलो गंधो । तओ पयट्ठो तयाभिमुहं । ऊससियं पिव हियएण, बला समागच्छति धरंतस्स वि आणंदवाहस-
लिलं लोयणेसु । तओ चित्तिउमाहत्तो-किमेयं ? ति, अहवा दिट्ठो मए रयणीए चरिमजामम्मि सुंमिणो तस्सावस्सं
फलेण होयव्वं । ति चित्तो पयट्ठो सरवराभिमुहं । ताव य णिसुओ गेयरवो, समायणिओ महुरो वेणुविवरणिग्गओ

१-४ 'हिद्विया जे । २ सिया बहुमया जे । ३-५-७ सिया जे । ६ 'गुग्गा जे । ८ 'गाया जे । ९ 'हाए अडईए सु ।

१० कहं ? ति-जे । ११ जिउ जे । १२ भवन्तो सु । १३ सययं सु । १४ सामियणिणाओ जे । १५ 'वणाजिसरसकणियार' जे । १६ व जे ।

१७ जाव हिं जे । १८ 'सीहनिनाए जे । १९ 'परिसंक्षिप' सु । २० 'यमरिपुच्छाए जे । २१ दिन्नरुहसहाउलाए जे । २२ 'वज्जोअ(त)सा' सु । २३ 'शुठलाए सु । २४ 'बाइकोला' जे । २५ आडुचिओ जे । २६ सुमिणओ जे । २७ चित्तयंतो जे ।

सवणाणंदयारी सरो । तओ हेरिसपफुल्लोयणो जाव गच्छति येवं भूमिभागं ताव चलवलय-णेउररवाउलवररमणिमज्ज-
यारम्मि संठियं पेच्छति सणंकुमारं । जाव य विम्वउफुल्लोयणो असंभावणिज्जासंकापरिगओ चिट्ठति ताव य पढियं
बंदिणा सणंकुमारस्स णामं—

जय वीससेणणहयलमयंक ! कुरुभवणलमाणक्खम्भ ! । जय तिहुयणणाह ! सणंकुमार ! जय लद्धमाहप्प ! ॥२४॥

जय खयरिंदविलासिणियणवट्टुच्छंगसंगदुल्लिय ! । जय निज्जियविज्जाहर ! पावियवेयड्डपहुभाव ! ॥ २५ ॥

एकेण वि जेण जए जेऊणं मुरसमक्खमसियक्खं । णीओ दिंयंतरेमुं किच्चीए समं गुरुपयावो ॥ २६ ॥

दप्पं दलिऊण पुणो अस्सणीवेगस्स गुरुपयावस्स । वेयड्डे पुण विज्जाहरिंदभावो परिट्ठविओ ॥ २७ ॥

अवि य—

ण तहा णियमाहप्पेण दूरणिव्वडियनिम्मलगुणा वि । जह सम्माणेण तुहं गुणिणो जयपायडा होन्ति ॥ २८ ॥

एके असिम्मि झीणे अण्णे उण जलहि-वणकयावासा । इयरे तुह पउरदयस्स णाह ! सरणं गया रिउणो ॥ २९ ॥

विद्वियवेरिवग्गस्स तुज्झ णरणाह ! खग्गवसिरीए । चवलत्तणवयणिज्जं सिरीए एहिं समुफुसियं ॥ ३० ॥

लहिऊण तुमाहिन्तो पणतीहिं धणं णिकाममायारिओ । तेण ण तुहं महायस ! गव्वेण मओ समल्लीणो ॥ ३१ ॥

जे केइ गुणा भुवणम्मि णाह !, रिद्धीओ जाओ, जा किच्ची । "रूयं कलाओ लडहत्तणं च तइ णवरमल्लीणं ॥ ३२ ॥

तइ दिट्ठे जयभूसण ! 'ण संति तुंम्हारिस' ति पडिहाइ । साहेइ संभवं सुवुरिसाण तुह दंसणं चेव ॥ ३३ ॥

दिट्ठे तुमम्मि परितुलियरूवकंदप्पल इमाहप्पे । चत्तं रईए णियदइयगारवं तिहुयणमैणग्गं ॥ ३४ ॥

इय तिहुयणचूडामणिणरिंद-विज्जाहरिंदणयचलण ! । कुरुकुलणहयलभूसण ! सणंकुमारीसर ! णमो ते ॥ ३५ ॥

तओ 'सणंकुमारो' ति एवं कयणिच्छओ महिंदसीहो पमोयावूरियसरीरो अउव्वं रसंतरं अणुदवन्तो गओ
सणंकुमारदंसणवहं । दूराओ चेव सणंकुमारेण परियाणिऊण अब्भुट्ठिओ । पायवड्डणुट्ठिओ य अवज्जहो सबहुमाणं ।
दुवे वि जणा विम्वयपमोयावूरियसरीरा उवविट्ठा दिण्णासणेसु । विज्जाहरिंदलोओ य सवियको उवसंतगेयाइकलयलो
पासेसु अल्लीणो । तयणंतरं च पुंसिऊण आणंदजलभरियलोयणाणि भणियं सणंकुमारेण—कहं तुमं एत्थ समागओ ?,
कुओ वा एगागी ?, कहं वा अहं तुमए एत्थ परियाणिओ ?, कहं वा महाराओ मह विओयम्मि पाणे संभारेइ ?, कहं वा
अंव ? ति, कहं वा तुमं एगागी चेव पेसिओ ? ति । एवं पुच्छिए सव्वं जहावत्तं साहियं महिंदसीहेणं । तओ
मज्जाविओ वरविलासिणीहिं महिंदसीहो । कयमुचियकरणिज्जं भोयणाइयं । पुणो भणियं महिंदसीहेणं—देव ! जइ
मज्झोवरि सपसाओ कुमारो ता साहेउ मज्झं 'कहं तुमं तेण तुरंगमेण अवहरिओ ?, केहिं वा गओ ?, किं वा अम्ह विओए
संपत्तं ?, कत्तो वा तुह एरिसा रिद्धि ?' ति । तओ एयमायणिऊण सणंकुमारो चित्तिउमादत्तो, कहं ?—

‘ण हु किं पि अकहणिज्जं मित्ते सब्भावणेइमइयम्मि । मिण्णे वि देहमेत्तेण जस्स चित्तेण ण वि भेओ ॥ ३६ ॥

तह वि ण जुज्जइ णियचरियसाहणं मुद्धवंसजायाण । 'णिस्सारा होंति गुणा साहिप्पन्ता सइं चेव ॥ ३७ ॥

ता एत्थ एयं पत्तयालं बउलमतीए कहावेमि' । ति चित्तिऊण भणिया बउलमती जहा—पिए ! महिंदसीहस्स
"णिस्सेसं मह वइयरं विज्जासामत्थेणं विण्णायसब्भावा साहसु, महं पुण णिदाए पुम्मन्ति लोयणाणि । [ति] भणिऊण
णिवण्णो रइहरम्मि । बउलमती उण साहिउमादत्ता णियदइयचरियं ति—

१ हरिमुफुल्लं जे । २ मियंक । जे । ३ रूयं जे । ४ जइभू जे । ५ तुम्हारिस ति स्सु । ६ महाय जे । ७ पुंसिऊण जे ।
८ कहं स्सु । ९ निस्सारो होति पुणो साहिप्पन्तो सइं जे । १० नीसेसं जे ।

“अत्थि तया तुम्ह णियन्ताण चेव अस्सरयणेण अवहरिओ कुमारो । पवेसिओ य तेण धोरारवदारुणं महाडडं । बीयदियहे वि तहेव धावन्तस्स आसस्स जाओ मैज्झण्हसमओ । खुहा-पिवासाउलेण य आसेण णिल्लालिया जीहा । उद्ध-
द्विओ चेव सासाऊरियगलो थक्को, उत्तरिओ य कुमारो, छोडिया पट्टाढा, ओयारियं पट्टाणं, जाव धुम्मिऊण
णिवडिओ आसो, विमुक्को ‘अकज्जकारि’ चि कलिऊण व पाणेहि । तं चुँकपेसणं मोत्तूण गओ कुमारो । उययण्णे-
सणपरायणो य हिंढिउमादत्तो । ण कहिं पि आसाइयमुययं । तओ दीहद्धाणयाए मुकुमारयाए य मज्झण्हकालत्तणओ य
दवदुद्धयाए य रण्णस्स अतांवेहल्लोहलीहूओ । तओ य दूरदेसम्मि दट्टूण सत्तच्छयं पहाविओ तयाभिमुहो । पत्तो य
तस्स छायाए, उवविट्ठो, पडिओ य लोयणैजुयलं भंजिऊण धरणीए ।

एत्थंतरम्मि तप्पुणाणुहावेण तण्णिवासिणा जक्खेण आणिऊण सिसिरं सलिलं सित्तो सब्वंगेसु, आसासिओ ।
लद्धचेयणेण य पीयं सलिलं । पुच्छिओ य—को तुमं?, कत्तो वा एयमाणियं सलिलं? ति । तेण भणियं—अहं जक्खो
एत्थ णिवासी, सलिलं च माणससरवराओ मए तुह णिमित्तमाणियं । तओ कुमारेण भणियं—एस मह संतावो परं माण-
ससरमज्जणेण अवगच्छइ चि । तं सोऊण भणियं जक्खेण—अहं संपाडेमि भवओ मणोरहपूरणं । ति भणिऊण काऊण
करयलसंपुडे णीओ माणससरं । मज्जिओ विहिणा । तत्थ य पुव्ववेरिणा असियक्खेण सह जुद्धं संवुत्तं । वसीकओ य
सो दुद्धरक्खसो चि ।

तओ जिणिऊण रक्खसं पच्छिमदिसागयम्मि दिवसयरे उच्चलिओ सरवराओ अज्जउत्तो । गओ य येवं भूमिभागं ।
दिट्ठाओ य तत्थ णंदणवणमज्झगयाओ मणोरमाओ अट्ट दिसाकुमारीओ व्व दिव्वाओ इत्थियाओ । पलोइओ तार्हि
सिणिद्धाए दिट्ठीए अज्जउत्तो । तेणावि पुण चित्तियं—‘काओ पुण इमीओ?’ चि पुच्छामि उवसप्पिऊणं । ति चित्तिऊण
गओ ताण समीवं । पुच्छियं महुरवाणीए एकं कण्णयमुद्दिसिऊण—काओ पुण तुम्हे?, किं णिमित्तमिमं सुण्णमरणमेलं-
करियं तुम्हेहिं? । तार्हि भणियं—महाभाग ! ईओ णातिदूरम्मि अम्ह पुरी, ता तुमं पि तत्थेव वीसमसु । चि भणिऊण
पयट्ठाविओ अज्जउत्तो । अत्थमिओ य भुवणपदीवो दिवसयरो । पत्तो य णयरिं । णयाविओ तार्हि कंचुइणा रायभवणं ।
दिट्ठो य रौयणा, अब्भुट्ठिओ य, कयमुच्चियकरणिज्जं । भणिओ य तेण जहा—महाभाग ! मह इमीओ अट्ट कण्णगाओ,
एएसिं च तुमं चेव जोगो चि, पैरिणयसु इमीओ । अज्जउत्तेणावि ‘तह’ चि पडिवज्जिऊण सब्वमणुचिट्ठियं । तओ
वत्तो विवाहो । वद्धं कंकणं ।

सुत्तो य रइभवणम्मि तार्हि सद्धिं वरपल्लंके जाव णिहाविरमम्मि भूमीए पेच्छइ अप्पाणयं । चित्तियं च “णेण-
किमेयं? ति । पेच्छइ य करे कंकणं । तओ अविस्सणमणो गंतुं पयट्ठो । दिट्ठं च “रेणमज्झम्मि दिव्वं भवणं” । पुणो तेण
चित्तियं—इमं पि इंदयालप्पायं भविस्सइ चि । गओ य तयासण्णे इत्थीए करुणसरेणं रुयंतीए सहं णिसामेइ । पविट्ठो
भवणं गयभओ । दिट्ठा य सत्तमभूमीए दिव्वा कण्णया करुणसरेण रुयन्ती, भणन्ती य ‘कउरवकुल्लणहयलमय-
लंछण ! सर्णकुमार ! अण्णजम्मम्मि वि महं तुमं चेव णाहो होज्जसु’ । चि भणन्ती पुणो वि रोविउमारदा । णियणा-
मासंकिण पुच्छिया अज्जउत्तेण—किं तुमं तस्स सर्णकुमारस्स होहि जेण तस्स तए सरणं पडिवण्णं? । तीए भणियं—
“मज्झं सो भत्ता मणोरहमेत्तेणं ति । जओ अहं अम्मा-पितीहिं तस्स पुव्वं उदयदाणेण दिण्णा । ण य वत्तो विवाहो चि ।
ताव य अहमेगेणं विज्जाहरकुमारगेण कुट्टिमतलाओ इहं आणीया । गओ य सो इमम्मि विज्जाविउच्चियम्मि धवलहरे
मं मोत्तूणं कहिं पि” । जाव एयं जंपइ सा कण्णया ताव य तेण विज्जाहराहमेणं आगंतूण उक्खित्तो गयणमंडलं अज्ज-
उत्तो । तओ सा हाहारवं कुणमाणी मुच्छापराहीणा णिवडिया धरणिवट्ठे । ताव य मुट्ठिप्पहारेण वावाइऊण तं दुद्ध-
विज्जाहरं समागओ अक्खयसरीरो तीए समीवं अज्जउत्तो । समासासिया सा, विवाहिया य ।

१ धोरारवदां जे । २ मज्झण्हो । ३ चुं जे । ४ मुक्कपेसणं जे । ५ “वकालोहली” सु । ६ “णजुयं” सु । ७ पुच्छिओ तेण—को सु ।
८ मणोरहं । ति जे । ९ कण्णसुं सु । १० “मलंकव” सु । ११ इओ य णां जे । १२ राइणा जे । १३ परिणसु जे सु । १४ “मि
वरं” जे । १५ तेण जे । १६ रण्णमज्जे जे । १७ “णं” । तओ तेण सु ।

वेववेलाए य समागया तस्स भइणी । वावाइयं च दट्ठण भाउयं कोवमुवगया । पुणो वि सुमरियनेमिच्चियवयणा अज्जउत्तं विवाहणिमित्तमुवट्ठिया । सा वि तयाणुमतीए तहेव विवाहिया ।

जाव थेववेलाए चंदवेग-भाणुवेगेहिं पुत्तेहिं सह पेसिओ रहवरो सण्णाहो य । भेणियं तेहिं जहा-देव ! असणि-वेगो विज्जाबलेण जाणियपुत्तमरणवुत्तन्तो तुम्होवरिं समाच्छति, तेण अम्हे रहो य पेसिया, अम्ह पिया "वि तुम्हं चल्णसेवाणिमित्तमेस संपत्त एव ति । तयणंतरं च समागया चंदवेग-भाणुवेगा । अज्जउत्तसहायणिमित्तं संज्झावलीए दिण्णा पण्णत्ती विज्जा । तओ अज्जउत्तेण असणिवेगं जेऊण समदासियं वेय्हडरज्जं । तओ चंदवेगकंचुइणा साहि-ओ असियक्खवुक्खवेरसंबंधो, जहाँ-“तए अण्णभवम्मि तस्स भज्जा अवहरिया । सो य तस्सोएण उम्मत्तमणुभविऊण विचित्तयाए कम्मपेरियागस्स संसारे भमन्तो खखसेसु उववण्णो । तुमं च सरवरागओ अणेण उवल्लदो । तओ परा-जिओ देवेण दुट्ठरक्खसो ति । एयं तुम्ह वेरं” ।

एयं च अम्ह णेमिच्चिएण साहियं जहा-तुम्ह कण्णयाणं सो भत्तारो भविस्सति जो असियक्खं जुद्धे पराजिणि-स्सइ । तयत्थं च अम्हेहिं पडिजागरिओ उवल्लदो य । विवाहियाओ य अट्ठ जणीओ रण्णमज्झम्मि, संपयं अम्ह सामिणो चंदवेगस्स सयं धुयाणं तं पि विवाहेउ देवो । ति भणिए पडिवण्णं अज्जउत्तेण, विवाहियाओ य । पसाहिऊण वेय्हडं, काऊण जिणाययणेषु अट्ठाहियामहिमं, इहइं कीलाणिमित्तं समागओ । जाव तुमं मिलिओ ति । एयं तुह मित्तस्स उद्देसेण चरियं” ति ।

एत्थंतरम्मि उट्ठिओ मुहपसुत्तो रइहराओ सणंकुमारो । गया य महया चडयरेण वेय्हडं । विण्णत्तो य अवसरं लहिऊण भहिंदसीहेणं जहा-कुमार ! दुक्खेण तुह जणणि-जणया कालं गमेति, ता तँइसणेणं कीरउ पसाओ अम्हारि-सज्जणस्स । ति विण्णत्ताणंतरमेव गओ महया सम्महेणं हत्थिणाउरं । आणंदिया जणणि-जणया, णायरजणो य । उप्प-ण्णाणि य चक्काइयाणि चोइस महारयणाणि । ओयवियं भरहं । उप्पण्णा णव णिहिणो । जाओ य णिग्गयपयावो चक्कवट्ठि ति ।

अण्णया य सोहम्मवडेंसए ठिओ सको देवराया इंदसामाणियपमुट्ठाणं देवाणं पुरओ 'रूपपसंसं सणंकुमारस्स करिउमाढत्तो । कहं ? ति—

इच्छावसेण जायइ देवाणं जं मणोहरं रूपं । तं तस्स विणा तीए जायं पुण्णाणुहावेणं ॥ ३८ ॥

णिज्जियससुरा-ऽसुरतिहुयणस्स लहुईकओवमाणस्स । अणुहरइ दाहिणदं तस्स फुडं चामभागस्स ॥ ३९ ॥

णिम्माणकम्मणिम्मियसुरइयसंथाणसण्णिवेसादी । तस्सऽग्यंति जहंगाईं तह अणंगस्स कह भणिमो ? ॥ ४० ॥

रूपं णिज्जियससुरा-ऽसुरिंदमाहप्पमुज्झियवियारं । चरियमसेसगुणीणं गुणेण पारंगमं जायं ॥ ४१ ॥

इय मुणिऊण पसंसं सुरिंदविहियं तया गरिंदस्स । दोण्णि य सुरा असूयाए आगया णरवइसगासं ॥ ४२ ॥

तओ समागया दोण्णि सुरा गरिंदभवणे पडिहारभूमिदेसं । भणिओ य "तेहिं पडिहारो जहा-महासत्त ! जाणा-वेहि महारायस्स जहा "दोणि बम्मणा दूरद्धाणकिलन्ता तुह दंसणमेत्तत्थिणो "दारे चिट्ठेति, जइ भणह ता पविसंतु, अह गत्थि अवसरो ता वच्चामो सदेसं" ति । तओ एयमायण्णिऊण पडिहारेणावि विणयपुक्खं अम्मंगियस्स णरवइणो विण्णचं । तओ महाराइणा भणियं जहा-अहं अट्ठए वायामभूमीए "ठिओ, तहा वि जइ उच्चावल ति ता पविसह । ति भणिए णरवइणा पेसिया पडिहारेणं । पविट्ठा णरवइसमीवे । दाऊण जहाजोग्गमासीसं उवविट्ठा दिण्णासणेसु । पलोइयं

१ भणिओ जे । २ य सू । ३ "हा-एयस्स अण्ण" सू । ४ "परिणामस्स जे । ५ एयं सू । ६ जहा-दुक्खे" सू । ७ तँइसणे की" सू । ८ रूपं जे । ९ वेसाइं जे । १० गुणगुण" जे । ११ तेहिं जे । १२ दोण्हि सू । १३ वारे जे । १४ विओ सू ।

विम्हउण्णुल्लोयणेहिं परोप्परं वयणकमलं । विम्हिया य अउव्वरूवालोयणेणं । तयणंतरं च पसण्णवयणकमलेण भणियं
णरवड्ढा जहा—पत्थेह जेणऽत्थिणो, जेण संपाडेमि तुम्ह समीहियं ति । एयं सोऊण भणियं वंमणेहिं जहा—महाराय !
ण हु अम्हे केणइ अत्थिणो, किंतु तुह रूवालोयणकोउड्डेणं समागया, ता पलोइयं विणिज्जियतेलोकरूवमाहप्पविम्भमं
रूवं, जायं णयणाण सफलत्तणं, अणुहूयं संसारणिवासस्स फलं, ता गमिस्सामो । तओ तमायण्णिऊण भणियं णरिंदेण
जहा—येववेलाए समागतूण दद्ववो अहं तुम्हेहिं, वच्चह संपयं ति । तेहिं पि पडिबज्जिऊण तहा कयं, णिग्गया
रायभवणाओ ।

पुणो राइणो मुत्तुट्ठियस्स सव्वालंकारविभूसियस्स अत्थाइयामंडवगयस्स उभयपासट्ठियवारविलासिणिकैरगहियचा-
मरुक्खेवविज्जिमाणस्स पडिहारजाणाविया पविट्ठा रायभवणं । उवविट्ठा दिण्णेसु आसणयिसेसेसु । आलत्ता महाराइणा ।
ते ये पुण वि परोप्परमुहमवलोइऊण ईसीसिमिलाणमुहकमला अहोमुहा ठिया । पुणो भणियं राइणा—किं तुम्हे अणि-
मिस्सच्छमवलोइऊण मह रूवं अवरोप्परं च जोइऊण अहोमुहा ठिया ? । तेहिं भणियं जहा—“महासत्त ! अम्हे ताव देवा,
तुज्झ रूवं सुरिंदेण अत्थाइयामज्झगएण पसंसियं, तओ तव्वयणमसदहंता इह समागय ति । पलोइयं च तुज्झ रूव-
मम्हेहिं, जाव ण सुरिंदेण तुह रूवं संपूणं वणियं ति । ण केवलं सुरिंदेण, अण्णेणावि ण वण्णिउं तीरइ ति । किंतु असा-
रो संसारो, खणरमणिज्जं सयलं संसारविलसियं, जओ जा तुह रूवसंपया तम्मि अवसारे अम्हेहिं दिट्ठा तीए सयभागो
वि ण संपयं ति । अवि य—

लायण्ण-रूव-जोव्वण-सरीर-संययण-कन्ति-सोहाओ । जीवाण जीवियं तह बलं च पतिसमयमोसरइ ॥ ४३ ॥
जा तुह देहच्छाया णिज्जियसुर-भणुय ! तम्मि समयम्मि । पेच्छंताण खणेणं सा एहिं दूरमंतरिया ॥ ४४ ॥
खणपरिणामसहावे लायण्णे जोव्वणे य रूवे य । अणुबंधकारणं किं पि णत्थि थेवं पि कुसलाणं” ॥ ४५ ॥
इय सोऊण जहत्थं वयणं देवाण जायसंवेओ । वियलियमोहतमोहो णरणाहो तत्थिमं भणइ ॥ ४६ ॥
“इच्छामो अणुसट्ठिं सुरवर ! परकज्जसज्जवयसाय ! । रूवाहिमाणगहणिग्गहो उ संबोहिओ तुमए ॥ ४७ ॥
पयतीए णिग्गुणो चिय देहो देहीण णत्थि संदेहो । भरिओ मुत्त-पुरीसाइयस्से मेज्झस्स कलुसस्स ॥ ४८ ॥
वस-मंस-रुहिर-‘फोफस-कलमलभरियस्स दुरहिगंधस्स । अविवेड्ढो इमस्स वि मंडण-परिकम्मणक्खणिया ॥ ४९ ॥
उप्पत्तिकारणं उणे इमस्स देहस्स जं जयपसिद्धं । तं चित्तियं पि चिउसाण भायणं होइ लज्जाए ॥ ५० ॥
अणवरयजणणिभोयणवियारसंवड्ढियस्से देहस्स । मेज्झस्स मुइत्तणकारणेण तम्मन्ति बालजणा ॥ ५१ ॥
अमुइणिहाणे देहे सव्वामुइसंगमेकणिव्वडिए । चित्तिज्जन्तं पि ददं मुइत्तणं तस्स कह होउ ? ॥ ५२ ॥
परिसीलणीयरुदरे रोग-जरा-मरणपीडिए णिच्चं । खणविसरारुसहावे देहे कह कीरउ थिरासा ? ॥ ५३ ॥
इय जह जह चित्तिज्जइ देहस्स थिरत्तणं मुइत्तं च । तह तह विहडइ सव्वं पवणुच्छित्तं व सरयम्भं” ॥ ५४ ॥

एवं च सविसेसदेववयणजायसंवेगो पवसितदेवाभिणंदिओ, परम्मुहो विसयमुहाणं, विरत्तो य रायलच्छीए, णिदइ
चक्रवर्त्तित्तणं, ण बहुमण्णेइ णव णिहिणो, ‘पावकम्मायाणं’ ति दुगुंछइ य चोइस महारयणाणि, उवरोहमेत्तकयाहारपरि-
ग्गहो तहाविहधम्मायरियमवेक्खमाणो चिट्ठिउं पयत्तो ।

१ कोउड्डेणं जे । २ “तुम्हेहिं जे । ३ अत्थाइया” जे । ४ “वरपरिव” जे । ५ वि जे । ६ तुम्हे जे । ७ तुह जे ।
८-९-१० तुम्ह स्स । ११ “स्स मज्झम्मि क” जे । १२ “फोफसकलिम” स्स । १३ पुण जे । १४ “स्स मज्झस्स । देहस्स सु” स्स ।

एत्थंतरम्मि समागओ विहरमाणो चोदसपुव्वी अणेयसमणपरिवारिओ विजयसेणायरिओ । आवासिओ बाहिरि-
-ए । लद्धा पउत्ती । णिग्गओ पायचारी राया वंदणणिमित्तं । वंदिओ य भगवं भत्तिभरोणयसिरेणं । धम्मलाहिओ
गुरुहिं । उवविट्ठो चलणन्तिए । पत्थुया भगवया धम्मकहा । यण्णिज्जइ संसारासारत्तणं, णिदिज्जंति भोया, साहिज्जति
अथिरत्तं देहस्स ।

तओ लद्धावयासेण गरुयसंवेगावुरिज्ज[माण]माणसेण भणियं सणंकुमारेणं-भयवं ! एवमेयं जहा तुम्हेहिं साहियं,
एरिसो चेव एस संसारो, अवसाणविरसा भोया, चवला इंदियगई, दारुणो विसयपसंगो, अणुसमयं विसरणसीलं
सरीरं, एगन्तदुप्परियल्ला पावपेरिणतीहेउया रायसिरी, ता करेन्तु मे अणुग्गहं गुरु, इच्छामि तुम्हेहिं निज्जामगेहिं
संसारमुत्तरिउं ति, देतु मे णीसेसपावपव्वयवज्जासर्णि पव्वज्जं ति । तओ गुरुहिं वहुं आसासिऊण पव्वाविओ । विहरिउ-
मादत्तो । सिक्खियाणि य णीसेसाणि अंगाणि । गहियत्थो एकल्लविहारित्तणं पडिवण्णो ।

अण्णया य विहरमाणस्स पुव्वकम्मोदणं जुगवं रोगायंका समुव्वूया, तं जहा-सीसवेयणा, कण्णमूलं, लोयणाणं
कोवो, दन्ते धुणन्तओ, सिरोहराए गंडमाला, वच्छत्थले तोडो, बाहुम्मि अवबाहुयं, हत्थेसु कंपो, पोटे जलोयरं, पट्टीए
सूलं, पाउम्मि अरिसापीडा, अण्णत्थ काइयानिरोहसंतावो, ऊरुसु धैट्ठोरुयत्तं, जंघासु रंघणी, चलणे रप्फओ, सव्वसैरीरे
य कुट्टरोगो, बलक्खओ य । एवं च सव्वरोगेहिं पीडिओ सम्मं अहियासेमाणो विहरइ । ताव य आगंतूणं सोहम्माहि-
वइणा वंदिऊण भणिओ-भगवं ! अहं 'ते अचन्तपीडाकारिणो रोगे अवणेमि । तओ ईसिं विहसिऊण भणियं भगवया-
किमचन्तेणमवणेसि उयाहु इहभवे ? । सोहम्माहिवइणा भणियं-अचंतविणासणं रोगाणमसेसकम्मक्खएण संभवइ,
अहं पुण इत्तिरियकालमवणेमि । तओ तमायण्णिऊण भगवया गहिया खेलोसही । तीए य उव्वट्ठिऊण वामहत्यतज्जणी
जाव मुण्णे(सुव्वण्ण)वण्णा पुराणरूवाओ वि अहि[य]यरी संवुत्ता । भणियं च भगवया-भो महासत्त ! पुव्वकयकम्मदोसेण
वाहिणो समुव्वभवंति, तेसिं च कम्माणमुइण्णाणं सम्मं अहियासणाए खओ होइ, ण देवसत्तिपसमणेण, ता जाइं पुरा सइं
'चेव उव्वज्जियाइं कम्माइं मिच्छत्ता-उविरइ-पमाय-जोगेहिं पाणिणं विविहवेयेणुप्पायणपओएहिं ताइं सइं 'चेव वेइयव्वाइं,
ण अण्णहा मोक्खो, मोक्खत्थिणो य अम्हे त्ति, ता कयं जं तए करणिज्जं, रोगोसहं तु मए पत्थुयमेव, ण अण्णहा
अचंतिओ रोगोवसमो होइ । त्ति भणिओ वंदिऊण य भयवंतं गओ सत्थामं सको त्ति । चितियं च भगवया-

रे जीव ! तैइं सइं चिय रइया दुक्खाण एस रिंछोली । अमुणंतेणाणत्थं धण-जोव्वण-जाइमत्तेणं ॥ ५५ ॥

परलोयणिप्पिवासा तं तं कुव्वंति मोहिया जीवा । णर-णरय-तिरियभावे जं जं अहियत्तणे पडइ ॥ ५६ ॥

ण हु होइ कैह वि णासो रे जीव ! समज्जियाण कम्माणं । ता सहसु जं समावडइ दुक्खजायं अणुव्विग्गो ॥ ५७ ॥

सैव्वस्स वि एस गई जं कयमण्णस्स रागवसएणं । तं परिणमइ सइं चिय पुव्वज्जियकम्मदोसेणं ॥ ५८ ॥

अण्णो तुमं सरीराओ णीरुओ अक्खओ अमुत्तो य । रोगहरं पुण देहो रे जिय ! मा खिज्जसु तैयत्थं ॥ ५९ ॥

रोगणिमित्तं पावं, पावणिमित्तं तु अमुभया जोगा । अण्णाणमोहियमती ताण णिमित्तं तुमं चेव ॥ ६० ॥

कम्मक्खएण मोक्खो, तस्स खओ अणुहवेण तवसा वा । उभयं पि संपति महं गुणो वि दोसो त्ति अबुहाण ॥ ६१ ॥

पुणरवि तए खिय इमं खवियव्वं जं पुरा समायरियं । सवसेण वरं खवियं बहुणिज्जरमप्पदुक्खं पि ॥ ६२ ॥

इय उइयसव्वरोगो वि मुणिवरो सहइ णिज्जरापेही । -म्मं कम्माण गेती भावेन्तो तह य संसारं ॥ ६३ ॥

१ 'परिणहेवा रा' जे । २ पुण्णेइओ जे । ३ 'निरोहो, क' सु । ४ 'यदोष' जे । ५ 'सरीरो जे । ६ ते पीडाकारिणं रोगं अव' जे ।
७ 'पसवणेण सु । ८-१० चेय जे । ९ 'वेयणुप्पाएहिं जे । ११ 'तियरोगो' जे । १२ तत्ति जे । १३ कह व जे । १४ सव्वेसु [वि] एस सु ।
१५ तत्तथं सु । १६ गई जे ।

एवमणुसासिऊणमण्णां सम्मं भावणाभाविओ, अहियासेन्तो रोगपरीसहं, भावेन्तो जिणवयणं विहरमाणो
समद्वासिओ आउयसेसयाए, परिजाणिऊण य थेवावसेसमण्णं, उम्मं संखिदिऊणमण्णां, पाओवसविदिणा चइऊण-
माउयं, समुप्पणो सणकुमारे कप्पे सत्तसागरोवमाउ चि ॥

इति महापूरिसचरिए सणकुमारचक्रवर्त्तिचरियं सम्मसं ॥ २९ ॥

[३०-३१ संतिसामितित्ययर-चक्रवट्टिचरियं]

धम्मतिथ्यराओ तिहिं सागरोवमेहिं पउणपल्लिओवमूणेहिं संती तिथ्यरो चक्कवट्ठी य समुप्पण्णो । केहं ?—

गुणिणो मुकुलसमुद्भवपरकजसमुज्जया महासत्ता । ते केइ जण जायंति जेहि भुवणं अलंकरियं ॥ १ ॥

अस्थि इहेव जंबुदीवे दीवे वेयइहपन्वयवरे उत्तराए सेदीए रहणेउरचक्कवालपुरं णाम णयरं । तन्थ य राया अमिततेओ परिवसइ । तस्स य सुतारा णाम भणिणी । सा य पोयणाहिइणो सिरिविजयस्स दिण्णा । अण्णया य अमियतेओ पौयणपुरं सिरिविजय-सुतारादंसणत्थं गओ । पेच्छइ य पमुइयं ऊसियधयवडायं सब्बं पि पुरं, विसेसेण राउलं ति । तओ विम्हउप्फुल्ललयणो ओइणो गयणयलाओ रायभवणंगणे । अब्भुद्धिओ य सिरिविजएणं । कयमुचिय-करणज्जं । उवविट्ठो सिंघासणे । पुच्छियं अभियतेएणं उच्छक्कारणं । तओ सिरिविजओ साहिउमाहत्तो जहा-

“इओ अट्टमे दिवसे पडिहारणिवेइओ समागओ एओ नेमिच्चिओ । दिण्णासणो उवविट्ठो य । पुच्छिओ य मए—किमागमणपओयणं ? । तओ तेण भणियं—महाराय ! मए निमित्तमवल्लोइयं जहा पोयणाहिइणो इओ सत्तमे दिवसे मैज्झण्हसमए इंद्रासणि उवरिं पडिस्सइ । तं च कण्णकट्टयं सोऊणं मंतिणा भणियं—तुज्झ उण उवरिं किं पडिस्सइ ? । तेण भणियं—मा कुप्पह, मए जहा उवल्लं निमित्तेण तहा साहियं, ण य मह एत्थ कोई भावदोसो, मज्झं च तंमि दिवसे हिरण्वुद्धी उवरिं पडिस्सइ । एवं च तेण भणिए मए भणियं—कहिं तए एवेविहं निमित्तमागमियं ? । तेण भणियं—‘अहमयल्लसामिणिक्खमणकाले सह पिउणा पव्वइओ । तत्थ मए अहिजियं अट्ठंगं पि निमित्तं । तओ अहं पत्तजोव्वणो, पुव्वदत्ता कण्णा, भाउगेहिं उप्पादाविओ, कम्मपरिणइवसेण य तओ मए सा परिणीया । तओ मए सव्वणुपणीयनिमित्ताणुसारेण पलोइयं जाव पोयणाहिइणो विज्जुणिवाओवइवो ’ चि ।

एवं च तेन सिद्धे एगेण मन्तिणा भणियं जहा-राया समुदमज्जम्मि वहणे कीरउ, तत्थ किल विज्जू ण पहवइ ।
अण्णेण भणियं-ण दिव्वणिओओ अण्णहाकाउं तीरइ, जओ एकस्स वंभणपुत्तस्स समागयम्मि रक्खसवारयम्मि पेच्छि-
ऊण जणणी रुयन्ती करुणयाए एकेण भूएणं समासासिऊण जणणिं णीओ तच्चारगदिवसम्मि गिरिगुहं । तत्थ य
पुव्वट्टिएणं अयगरेण खइओ, ता एवं दुप्परियल्लमाउयं जंतूणं तुट्ठं पाळेउं ति । पुणो वि अवरेण मंतिणा भणियं-पोयणा-
हिवइणो व्हो समाइट्ठो णेमिच्छिएणं, ण उणो सिरिविजयंमहाराइणो त्ति, सत्त दिवसे अवरो कोई पोयणाहिवई
परिकप्पिज्जउ । त्ति मंतिऊण वेसवणजक्खो मिलिऊण रज्जे अहिसित्तो ।

सत्तमे दिवसे मज्झिम्मेसंमयस्मि समुष्णओ मेहो, फुरियं विज्जुलयाण, गज्जियं जलहरेणं । तओ समन्तओ फुरिऊण विज्जुलयाण पडिऊण जक्खहरे जक्खपडिमा विणासिया । अहं च पोसहसालाए सत्तरत्तोसिओ अहिणंदिड पेउरेहि पुणो वि अहिसित्तो रज्जे । पृउओ य णेमिच्चिओ । ता एयं वद्धावणयकारणं ” ति ।

एयं च मुणिऊण भणियं अम्मियतेएणं—अरिसंवादि णिमित्तं, सोहणो रक्खणोवाओ कओ त्ति ।

तयणंतरं च सिरिविजओ सुताराण सद्धिं बाहिरुज्जाणं गओ। तत्थ य कणयच्छविं मयं पासिऊण भणियं सुता-
राण जहा-पिययम ! सोहणो एस मओ, ता आणेहि एयं मह खेळणमिच्चं। तओ सयमेव पहाविओ राया। पलाणो
य मओ, बेवभूमिण येँ गयणंगणे उप्पइओ। ताव य कुँइयं महादेवीए जहा-हं देव ! कुक्कुडसप्पेण खइया ता परिचायउ

१ कहं ? ॥ णमो सुयदेवयाए भगवईए ॥ अत्थि इं जे । २ माथेय जेपुस्तके चरित्रस्यास्याऽऽदापुपठ्यते । ३ पोद्दिणपुरं सु ।

४ मज्झणं सु । ५ इंद्रासणि सु । ६ तस्सि सु । ७ पिक्खवणं सु । ८ सहि जे । ९ पोइणं सु । १० यराइणो सु । ११

*समय उपपन्नो सु । १२ पदरेण जे । १३ अमित सु । १४ य तयनन्तरमुपपन्नो सु । १५ कविय सु ।

मं देवो ति । एवं सुणिऊण तुरियं समागओ । ताव य सा पंचत्तमुवगया । राया य तीए सद्धिं चियाए पच्छिओ । जल्लिउ-
मादत्तो जलणो । ताव य थेववेलाए समागया दुवे विज्जाहरा । तत्थ एगेण अभिमंतिऊण सलिलं सित्ता चिया । णट्ठा
वेयालिणी विज्जा अट्ठासं काऊण । समासत्थो राया । भणियं च तेण-किमेयं ? ति । भणियं विज्जाहरेण जहा-“अम्हे
पिया-पुत्ता अमियतेयस्स परिग्गहे वट्ठामो, जिणवंदणणिमित्तं गया आसि । आगच्छंतेहि य णिमुओ सुत्ताराए असणि-
घोसेण जिज्जंतीए अकंदणसदो । अम्हे य जुज्जसज्जा सुत्ताराए भणिया-जहा महाराया वेयालिणीए विज्जाए बेल-
विओ जीवियं ण परिचयइ तहो गंतूणं उज्जाणं सिग्गं करेह । तओ अम्हे पिया-पुत्ता इहं आगय ति । दिट्ठो य तुमं
वेयालिणीए विज्जाए समं चियाख्खो । णट्ठा य सा दुट्ठविज्जा । तओ उट्ठिओ तुमं” ति । अवहरियं च सुत्तारं णा-
ऊण विसण्णो राया । भणिओ य तेहि-बोसत्थो होहि, कहिं जाइ सो पावो ? ति संठविऊण गया विज्जाहरा ।

विण्णाओ य एस वुत्तंतो अमियतेएण । गया य चमरच्चं णगरिं अमियतेय-सिरिविजया असणिघोसन्ति-
यं । पट्ठविओ य बहिं ठिण्हिं चेव असणिघोसस्स दूओ । पलाणो य सो । पहाविया पिट्ठओ । दिट्ठो य अयलस्स
उप्पण्णकेवलस्स समीवे असणिघोसो* । आगिया सुत्तारा तत्थेव एगेण अमियतेयावेज्जाहरंण ।

तओ उवसन्तवेरा केवलिसमीवे धम्मं सुणंति । लद्धावसरेण य पभणियं असणिघोसेण जहा-“ण मए दुट्ठभावेण
अवहरिया सुत्तारा, किंतु विज्जं साहिऊण आगच्छन्तेण मए दिट्ठा इयं, ण सक्केमि य तं परिचइउं पुच्चसिणेहेण । तओ
छलेण वामोहिऊण सिरिविजयं वेयालिणीए विज्जाए, घेतूणं सुत्तारं समागओ अहं । ता खमियच्चं तुम्हेहिं अट्ठभावेस्स
महं” ति । तओ एयमायणिऊण अमियतेएण भणियं-भगवं ! किं पुण कारणं एयस्स इमीए उवरिं सिणेहो ? ति ।
तओ केवली कहिउमादत्तो—

“इहेव भरहे मगहाजणवए अचलग्गामे धरणिजट्ठो णाम विप्पो । तरस्स य कविल्लाहिहाणा दासचेडी । तीए
पुत्तो कविल्लो णाम । तेण य कण्णाहेडएण वेया सिक्खिया । गओ य देसंतरे रयणपुरं णाम णयरं । तत्थ य राया
सिरिसेणो । तरस्स दुवे भारियाओ-अभिणंदिया सिहिणंदिया य । सो य कविल्लगो अज्झावगमल्लीणो । तेण य
‘बम्मणो’ ति कलिऊण णियधूया दिण्णा सच्चभामा णाम ।

सो य कविल्लगो कयाइ वासारत्ते संज्ञासमए मंदमंदप्पयासे वरिसंते देवे वत्थाणि कक्खाए पक्खिविऊण समा-
गओ । तओ सच्चभामा से भारिया अवराणि वत्थाणि घेतूणं उवट्ठिया । तेण भणियं-अत्थि मैह पहावो जेण
वत्थाणि ण तीमंति । तीए विण्णायं जहा-णूणमयमवसणो समागओ, ण य कुलीणाणमेयं जुज्जति, ता णूणमकुलीणो
एस । मंदसिणेहा जाया ।

अण्णया य धरणिजट्ठो कविल्लस्स समीवं समागओ । सच्चभामाए पिया-पुत्ताणं विरुद्धमायारं पासिऊण
जहट्ठियमेव पुच्छिओ धरणिजट्ठो । तेणावि जहट्ठियमेव साहियं ति ।

सच्चभामा य णिविण्णा गया सिरिसेणस्स रण्णो समीवं जहा-मोयावेह मं कविल्लसगासाओ, पच्चज्जाणुट्ठाणेणं
धम्ममहं करेमि ति । महाराएण भणिओ कविल्लो ण मुयइ, भणइ य जहा-ण सक्कुणोमि तीए विरहिओ खणमवि
जीविउं ति । तओ तमायणिऊण भणियं राइणा जहा-इह चेव ताव विट्ठमु जाव कविल्लं पत्तियावेमि ।

अण्णया य राया णियपुत्ते अणंगसेणागणियाणिमित्तेण जुज्जंते पासिऊण तेलपुडविसोवओमेण कालग्गओ ।
तयणंतं च अभिणंदिया सिहिणंदिया दुवे वि भज्जाओ, सच्चभामा य माहणी, तेणेव विसप्पओएण कालग्गयाओ ।
चत्तारि वि जणाइ देवकुराए जुगलत्तेण समुप्पणाइ । तओ वि सोहम्ममे कप्पे गयाणि । तत्तो वि चविऊण सिरिसेण-
जीवो अमियतेओ, अभिणंदियाजीवो सिरिविजओ, सच्चभामाए जीवो सुत्तारा समुप्पणा । सो य कविल्लो

१ अण्णसदो जे । २ ‘ए सह विज्जाए चि’ जे । ३ ‘सो । णाया जे । ४ देसंतरं सु । ५ णियया धूया जे । ६ वच्चप्पमा णाम
णाम जे । ७ मे जे । ८ तिम्मति जे । ९ तालउट्ठं सु ।

तिरिपसु आहिडिऊण तहाविहमणुद्वाणं काऊणं असणिघोसो समुप्पणो । तओ सुतारं सच्चमामामाहणीजीवं पासिऊण पुव्वसिणेहेण अहरिऊण गओ” ति ।

पुणो वि अमियतेएण पुच्छियं-भयवं ! किमहं भविओ ण व ? ति । केवल्लिणा भणियं-भविओ तुमं, इओ य णवमे भवम्मि तित्थयरो भविस्ससि, एसो वि सिरिविजओ तुह पढमगणहरो भविस्सइ ति । तओ एयमायणिऊण अमियतेय-सिरिविजया हरिसावूरियसरीरा वंदिऊण भगवंतं गया णिययणगरं ति । भुंजन्ति भोए ।

अणया य दोहिं वि जणेहिं उज्जाणगएहिं विडलमति-महामतिणो चारणसमणा दिट्ठा । तयन्तिए धम्मं सोऊण आउयं परिपुच्छियं । चारणसमणेहिं वि ओहिणा आभोएऊण साहियं जेहा-छवीसइं दियहे आउयं ति । तओ तेहिं समागतूण कया अट्टाहियामहिमा, अप्पणो पुत्तेसु य रज्जपुं संकामेऊण अभिणंदण-जगणंदणसमीवे पाओवगमण-विहिणा कालं काऊण पाणए कप्पे वीससागरोवमाउदेवत्तेण उववण्णा ।

तत्थ य अणुहविऊण रत्तासागरावगाढा सव्वाउयं इहेव जंबुदीवे दीवे पुव्वविदेहे रमणिज्जे विजए सीयाए महाणंतीए दाहिणे कूले सुभगाए णयरीए थिमियसागरस्स राइणो वसुंधरी-अणंगसुंदरीणं महादेवीणं गम्मे कमेण कुमारत्तणेण समुववण्णा । अमियतेओ अपराजिओ, सिरिविजओ अणंतविरिओ । तत्थ वि दमियारि-विज्जाहरं पडिसत्तुं वावाएऊण कमेण बलदेव-वासुदेवत्तणं पत्ता । तेसिं च पिया पव्वज्जाविहाणेण मरिऊण असुर-कुमारत्तणेण चमरो समुप्पणो । अणंतविरिओ य आउयमणुवालिऊण णिवद्धेणरयाउओ कालं काऊण गओ पढम-पुढविं, वायालीसवाससहस्सा ठिती । तत्थ तिच्चाओ वेयणाओ अणुहवइ । तस्स य पुत्तसिणेहेण चमरो गंतूण वेयणोवसमं करेति, सो संविग्गा सम्मं अहियासइ । अपराजिओ य बलदेवो भाउयवियोयदुक्खिओ णिक्खित्तपुत्त-रज्जभरो जयहरगणहरसमीवे णिक्खंतो । चइऊण य पव्वज्जाविहाणेण आउयं अच्चुए इंदत्तणेण उववण्णो ।

इओ य अणंतविरिओ उव्वट्ठिऊण णरयाओ वेयइहे विज्जाहेरत्तणेण उववण्णो । तत्थ य अच्चुयसुरिंदेणं बोहिओ पव्वज्जं काऊण अच्चुए देवत्तणेण उववण्णो ।

अपराजिओ य देविंदाउयमणुवालिऊण चुओ समाणो इहेव जंबुदीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणईए दाहिणे कूले मंगलावईविजए रयणसंचयपुरीए खेमंकारो राया, तस्स भज्जा रयणमाला, तेसिं पुत्तो वज्जाउहो” कुमारो जाओ ति ।

इओ य सिरिविजयजीवो देवाउयमणुवालिऊण तस्सेव पुत्तत्तणेण उववण्णो । पइट्ठावियं च से णामं सह-स्साउहो ति ।

अणया य वज्जाउहस्स जलकील्लेमणुहवन्तस्स बलदेवकालवेरिओ दमियारी संसारमाहिडिऊण पुणो वि विज्जाहरत्तणेण समुववण्णो विज्जुदाढाहिहाणो, तेण य तस्सुरिं महापव्वओ पक्खित्तो, पाएसु य णागपासेहिं बद्धो । वज्जाउहेण य अणाउलेण चैव पव्वओ मुट्ठिपहारेहिं पक्खित्तो, णागपासा य पाएहिं चैव तोडिय ति ।

तओ य अच्चुयदेविंदेणं ‘तित्थयरो भविस्सइ’ ति तित्थयरभत्तीए धुओ पसंसिओ य । अणया य पोसहसालाए ठिओ पुणो वि तहेव देविंदेण पसंसिओ जहा-धम्माओ ण सैंको देवेहि वि चालेउं वज्जाउहकुमारो ति । तओ एगो देवो तमसइहन्तो समागओ । आगंतूण य विउँन्विओ पारावओ । सो य भयसम्भन्तो वज्जाउहमल्लीणो, माणुसमासाए ‘सरणागओ’ ति भणमाणो । वज्जाउहेण य दिण्णे सरणे ठिओ तयासण्णे । तयणंतरं च समागओ ओलावगो । तेणावि भणियं जहा-महासत्त ! एस मए लुहाकिलन्तेणं पाविओ, ता भुं च एयं, अण्णाहा णत्थि मैम जीवियं ति । तओ तमायणि-ऊण वज्जाउहेण भणियं-“ण जुत्तं सरणागयसमप्पणं, तुज्झ वि ण जुत्तमेयं, जओ—

१ जहा पणुवीसइ जे । २ ‘णदीए जे । ३ कुमारत्तेण समुप्पण्णा जे । ४ असुरत्तणेण सु । ५ ‘दैनिरमा’ जे । ६ पुढवीए, वा’ जे । ७ सहस्सट्ठो । तं जे । ८ भाउविओए दुं सु । ९ ‘हरत्तेण जे । १० ‘हो विज्जाहरकुमारो जे । ११ कावमणु’ जे । १२ सक्का जे सु । १३ विडव्विओ सु । १४ मह जे ।

हेतूणं परपाणे अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं । अप्पाणं दिवसाणं कएण णासेइ अप्पाणं ॥ २ ॥

जह जीवियं तुह पियं गिययं तह होइ सब्बजीवाणं । गियजीवियाण जीवाण रक्ख जीयं सजीयं व ॥ ३ ॥

दुक्खस्स उव्वियन्तो हंतूण परं करेसि पडियारं । पाविहिसि पुणो दुक्खं बहुययरं तण्हित्तेण ॥ ४ ॥

खणमेत्तं तुह तिच्ची अण्णो पुण चयइ जीवियं जीवो । तम्हा उ ण जुत्तमिणं चड्ढफडन्तं विवाएउं ॥ ५ ॥

इय एवमणुस्सट्ठो रण्णा महुरक्खरेहिं सो सउणो । पडिभणइ-भुक्खिओ हं, ण महं धम्मो मणे ठाइ ॥ ६ ॥

तओ पुणरवि भणियं राइणा-भो महासत्त ! जइ भुक्खिओ तुमं ता अण्णं देमि तुह मंसं । पडिभणइ सउणो-णिय-वावाइयमंसदुल्लिओ हं, ण य रोचइ मज्झ परवावाइयं मंसं ति । राइणा भणियं-जेत्तियमेत्तं पारावओ इहं तुलइ तेत्तियं देमि णियदेहाओ, उक्कत्तिऊण मंसं तुमं खाहि । तओ तुट्ठो ओलावओ । पडिबण्णं राइणो वयणं । आणिओ णाराओ । पक्खित्तो एकम्मि पासम्मि पारावओ । वीए पासे—

उक्कत्तिऊण देहं राया जह जह य पक्खिवइ मंसं । तह तह य होइ सउणो गरुययरो देवमायाए ॥ ७ ॥

दट्ठण तयं राया हाहारवमुदलपरियणसमक्खं । आरुहइ सइं चिय वरतुलाए णियजीयणिरवेक्खो ॥ ८ ॥

इय तुलियदेवमायं रायं दट्ठण विम्भिओ देवो । दंसेइ णियं लुवं मणि-कुंडलभूसियसरीरं ॥ ९ ॥

अणुसासिऊण रायं देवो, तह संसिऊण गियमायं । हरिसाऽऽवरियहियओ विम्भियमणसो गओ सहसा ॥ १० ॥

अण्णया य वज्जाउह-सहस्साउहा पिया-पुत्ता खेमंकरतित्थयरगणहरसमीवे संजायवेरग्गा सहस्साउहमुयं बलिं रज्जे अहिसिचिऊण पव्वइया । पव्वज्जापरियागं परिवालिऊण, पायवोवगमणविहिणा [१ कालं] काऊण, ईसिपव्वभारसि-हरम्मि दो वि जणा उवरिमगेवेज्जे एगचीससागरोवमट्ठीया अहमिंदा देवा जाया ।

तो तं अहमिंदसोक्खमणुहविऊण चुया समाणा इहेव जंबुदीवे दीवे पुव्वविदेहे पुक्खलावइविजये पुंडरिगि-णीए णयरीए घणरहो राया, तस्स दुवे महादेवीओ पउमावती मणोरैमा य, तासिं गव्भे जाया । वज्जाउहो मेहरहो, सहस्साउहो दडरहो ति । वडिइया, कयं कलागहणं । मेहरह-दडरहाण य पुव्वभवव्भासओ परिणओ जिणदेसिओ धम्मो । जाया य अहिगयजीवादिपयत्था मुस्सावगा ।

अण्णया य पिउतित्थयरसमीवे दो वि जणा गियपुत्तं रज्जे अहिसिचिऊण, दाऊण उरं परिस्सहाणं, पव्वइया । तत्थ य मेहरहेणं अहिज्जियमुत्तत्थेणं वीसाए अण्णयरैहिं ठाणेहिं समज्जियं तित्थयरणाम-गोत्तं कम्मं । तओ संलेहणासंलि-हियदेहा विहिणा कालं काऊण अणुत्तरोववाइएसु देवेसु उववण्णा । तत्थ य अणुहविऊण सुरलोयसुहं मेहरहकुमारो चइऊण सब्बद्विमाणाओ तित्थयरत्तणेणमुववण्णो ति ।

इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे मज्झिमखंडे हत्थिणाउरं णाम णयरं । तं च पायालसण्णिहाए खाइयाए, गय-णयल्लग्गेणं पायारणिवेसेणं, णाणामणिविणिम्मिण्हिं धवलहरेहिं विराइयं । तत्थ य वीससेणो णाम राया विणिज्जि-यपरवलवीससेणो । जस्स य परक्को चेव सैहाओ, विवेओ चेव मन्ती, पयाओ चेव पुरस्सरो, लज्जा खंती य विणि-ज्जियासेसजुवइसत्थमंतेउरं, बोहो सब्बाहिगारी । किंच-विणोयणिमित्तं सामंतमंडलं, पयावाऽऽविकरणनिमित्तं पडि-वक्खो, विणयणिमित्तं गुरुजणो, बुद्धिपयडणणिमित्तं सत्थाइं, सहजकोसल्लणिमित्तं कलाकलावो, वियड्ढवोहण-णिमित्तं कामिणीसत्थो ति । तस्स य राइणो सयलन्तेउरप्पहाणा रूवेण देवि व्व देवी अहराणाम अगमहिंसी ।

१ हेतूण य पं सू । २ 'सं' । तेण भणियं-णिययां जे । ३ तथा सू । ४ 'कोण्डल' सू । ५ 'रममती य सू । ६ 'वरएहि जे ।

७ सहायो सू । ८ 'विक्खरण' सू । ९ 'बोहणमिच्चं सू ।

तस्स य तीए सह विसयसुहमणुहवन्तस्स अइगच्छइ कालो, जंति दियहा, सरति संसारो । अण्णया य समागओ पाउ-
सकालो । किंविसिद्धो य ?—

कसणघेणयइयगयणंधयारपम्हुट्टसयलजियलोए । विज्जुणयणेहिं गियइ व्व पाउसो पहियघरिणीओ ॥ ११ ॥
गज्जइ पलयघणसरं, वरिसइ धाराहिं मुसलमेत्ताहिं । विप्फुरइ विज्जुला दिट्ठणट्टजियलोयकरणिट्ठा ॥ १२ ॥
सिहिकेयारवमुहलियवणंतरुप्पिथपहियघरिणीहिं । अणवरयणितवाहोहपिच्छलं कीरइ पउट्ठं ॥ १३ ॥
णवपूरपूरियाओ बहंति तडवडणकलससलिलाओ । गिरिसरियाओ सहेलं पूरियकच्छन्तरालाओ ॥ १४ ॥
इय पाउसम्मि सलिलोहसैमियणीसेसमदिरउग्घाए । भइवयसिएयरसत्तमीए गम्मे समुप्पण्णो ॥ १५ ॥
देवीए चरिमजामम्मि लद्धसुमिणाए देवलोगाओ । तिहिं णाणेहिं समग्गो तियसिंदसमचिओ भगवं ॥ १६ ॥

धरिऊण य णव साहिए मासे सुहंसुहेण सव्वलक्खणोववेयं दारयं पद्धया । पुव्वकमेणेय कओ अहिसेओ । ‘गम्भ-
त्थेण य भगवया सव्वदेसे संती समुप्पण्ण’ ति काऊण सन्ति [त्ति] णामं अम्मा-पितीहिं कयं । वडिडओ सह कलार्हि,
विवाहिओ य । पिउणा पुत्तं रज्जे काऊण सकज्जमणुद्वियं ।

रज्जपालणुज्जयस्स य आउहसालाए समुप्पण्णं चक्करयणं । चक्काणुसारिणो(णा) य पुव्वकमेणेय समद्धासियं छक्खं-
डं पि भरहं । समुप्पण्णा णव महाणिहिणो । समद्धासियाइं चोइस वि रयणाइं । चक्कवट्ठित्तणेण य गमेऊण किं पि
कालं । धम्मवरचक्कवट्ठित्तणं जीवदयापरिणामहेउं तिथयरत्तं, असमंजसहेउभूयं रज्जं ति । तस्स पुण महाणुभावत्तणेण
दो वि अविद्धाइं । अवि य—

अण्णोणविरुद्धाइं वि महाणुभावत्तणेण रज्जं च । तह धम्मचक्कवट्ठित्तणं च समयं चिय वसन्ति ॥ १७ ॥
खुग्गं च खत्तधम्मत्थसारपरवलमरट्टगिट्ठवणं । खंती य सयलजीवाण संतिहेऊ असामण्णा ॥ १८ ॥
धारग्गऽग्गिविणिग्गयफुल्लिगफुट्ठंतसत्तुणिट्ठवणं । चक्कं, च जीवरक्खणचिच्चं समयं चिय वसन्ति ॥ १९ ॥
लद्धपसराइं तम्मि य इत्थीरयणाइयाइं रयणाइं । उवसम-त्रिवेय-संवर-मुत्तीओ तह चिय वसन्ति ॥ २० ॥
इय णव णिहिणो जह पर-सकज्जवावारसाहणग्गविया । जिवसन्ति तत्थ, तह मुत्तया वि समतण-मणिसरूवा ॥ २१ ॥

एवं च तित्थयरणामसहियमणुवालेऊण चक्कवट्ठित्तणं ‘पंचवीसवरिससहरसाइं, समुद्धणतित्थयरणाम-गोत्तो सयंबुद्धो
वि लोयंतियपडिबोहिओ, जेद्वबहुलतेरसीए उज्झिऊण तणमिव चक्कवट्ठित्तणं, पडिवण्णो संसारसांयरुत्तरणदोणिकपं
पव्वज्जं ति । कयसामाओ य विहरिऊण किंचि कालं संपत्तो जत्थ य सामाइयं पडिवण्णं तमेव उज्जाणं । तत्थ य
सहयारपायवस्स हेट्ठओ ज्ञाणंतरियाए वट्टमाणस्स खवगसेटीए कमेणं गिहलियघणचाइचउकस्स समुप्पण्णं तीया-ऽणागय-
वट्ट-माणपयत्थुम्भासणं दिव्वं णाणं ति । तं च केरिसं ?—

णीसेसावरणक्खयसमुम्भवं भुवणभासणसमत्थं । सामण्ण-विसेसमयं एगविहं केवलं णाणं ॥ २२ ॥

तयणंतरं च कयं देवेहिं समोसरणं । पव्वाविया गणहरा । पत्थुया तण्णिस्सारं धम्मकहा । वण्णिज्जइ सम्मईसण-
चारित्तमतिओ मोक्खमग्गो, गिदिज्जइ मिच्छत्ता-ऽवरिइ-पमाय-कसाय-जोगणिमित्तं कम्मं, बुज्झंति पाणिणो, पडिवज्जन्ति
सम्मत्तं, लेन्ति अणुव्वयाणि, अब्भुवगच्छन्ति मेहव्वयाणि, छिंदति णेहपासं, अवणेंति मोहंवेल्लि, णिहणंति राग-दोसम-
ल्ले, अद्दासिंति लहुयकम्मत्तणेण जिणदेसियमविसंवाइ मोक्खमग्गं ति ।

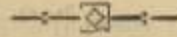
१ अदकतो कोइ कालो खू । २ ‘यगोत्तवगयं’ जे । ३ ‘सल्लिय’ खू । ४ ‘मणुचिंठिय खू । ५ किय जे । ६ पंचविंसद्वारि’ खू ।

७ ‘सामरदोण’ जे । ८ ‘ए भगवया धम्म’ जे । ९ महावयाणि जे । १० मोहवल्ली जे ।

एवं च बोद्धंतो भवियकमलायरे, पयासेंतो संसार-भोक्खमग्गे, वियारेन्तो संसारासारत्तणं, पंचवीसवरिससहस्साणि पालिऊण परियागं परिकखीणसव्वकम्मंसो समुग्घायविहिणा समीकरेऊण सहाउऽऽणा वेयणिज्जं सम्मेयसेलसिहरे सेलेसिविहाणेण खविऊण भवोवम्माहीणि आउय-णाम-गोत्त-वेयणिज्जाणि जमगसमगं सिद्धिपुरिं समणुपत्तो चि ।

तस्स य भगवओ पणुवीसवाससहस्साइं कुमारभावे, ताणि चेव मंडलियत्तणेण, तत्तियाणि चेव चक्रवर्त्ति[णे]णं, तप्पमाणाणि चेव परियाओ । सन्वाउयं लक्खं वासाणं ति ॥

॥ इति महापुरिसचरिए संतिसामिणो चक्रवर्त्तिस्स तित्वयरस्स चरियं समत्तं ॥ ३०-३१ ॥



भाष्यार्थः - आचार्य श्री बुद्धिस्तोत्र जी महाराज

[३२-३३ कुंधुसामितित्थयर-चक्कवट्टिचरियं]

गामेवर्गिक - भाषाते भी सुविधितान्तरं यो चेतः × — ÷

पुण्णेहि पुण्णरासि व्व केइ कालवमेण जायन्ति । जाणुप्पत्तीए चिय भरहमिणं जायइ सणाहं ॥१॥

संतिसामिणो पलिओवमदे समइकंते तयणंतरं कुंधुजिणो समुप्पणो । कहं? भणति-

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे दासे दाहिणमज्झिमखंडे हत्थिणाउरं णाम णयरं । तत्थ विणिज्जियासेसधूर-
वग्गो सूरो णाम णराहिवो । तस्सोहामियसुरसुंदरीरूवविब्भमा सच्चसिरी विय सिरी णाम महादेवी । तस्स य तीए सह
विसयमुहमणुहवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया य सजलजलहरोरालिगब्भिणे गयणयले, समन्तओ विज्जुच्छडाडोवभासुरासु दिसासु, मरगयमणियंकुरस-
च्छहेणं हरियंकुरपूरेण समद्धासिए महिमंडले सावणवहुल्लणवमीए सुहपसुत्ता सा सिरी रयणीए चरिमजामम्मि चोदसम-
हासुमिणे चक्कवट्टि-तित्थयरजम्मसंख्यगे पासिऊण विउद्धा । साहिया य जहाविहिं दइयस्स । तेण वि य पुत्तजम्मेण
समासासिया । तैप्पभिइं चेव वडिडउमाडत्तो गम्भो । तओ णवणं मासाणं अद्धमाणं राइदिणाणं सुहंसुहेणं वैइसाहवहुलच-
उइसीए कित्तियासमासण्णे ससहरे दारयं पमुया । पुव्वकमेणेय कओ सुरिंदेण जम्माभिसेओ । पिउणा य कयं वद्धावणा-
इयं उचियकरणिज्जं । 'मुमिणे य थूमं दट्टण जणणी विउद्ध त्ति, गम्भगए य कुंधुसमाणा सेसपडिवक्खा दिट्ठं' त्ति कौऊण
कुंधु त्ति णामं कयं भगवओ । पुव्वकमेणेय वडिडओ । विवाहिओ चक्कवट्टी जाओ । सो य पंचत्तीसधणूसुओ उत्तत्तकणग-
गोरो पुव्वकमेणेय तित्थयरचरियाविरुद्धं चक्कवट्टित्तणमणुहविऊण तप्परिचायजायबुद्धी सयंबुद्धो वि लोयंतियपडिबोहिओ,
अवि य—

जय अपुण्णभव ! भुवणेकणाह ! णाहत्तणं तद्दा कुणसु । जह जंतूण ण जायन्ति कम्म-भवसंभवुमेया ॥२॥

णीसेसभयविमुक्को तुमए जह चक्किणा कओ लोओ । तह धम्मचक्कवट्टित्तणेण णिव्ववसु जयणाह ! ॥३॥

कह सीसउ तुम्हउम्हारिसेहिं सब्भाव-णागरहिणहिं ? । तह वि णिओया णिल्लज्जिमाए किल भण्णसि जिणिंद ! ॥४॥

इयरजणसम्मयमिणं चइउं संसारकारणमणिट्ठं । सत्ताण णिव्वुइकरं तित्थं तित्थेसर ! विहेसु ॥५॥

जयणाह ! तुम्ह सरिसा परहियकज्जेकदिण्णववसाया । डोहिनति जए भण केत्तिय व्व कप्पदुदुमम्भहिया ? ॥ ६ ॥

संसारसायरुत्तरणपच्चलं भव्वमलमणावाहं । जेव्वाणगमणकज्जं भगवं ! तित्थं पवत्तेहि ॥७॥

णिरवायगुणसमिद्धे भयवं ! जिण ! तेइ पयट्टिए तित्थे ! तरिहिंति भवसमुदं बहवे तुम्हाणुहावेण ॥८॥

इय मुणिय सयल्लेदिण्णेयभाव ! जम्मंतरज्जियगुणोह ! । भवियजणुद्धरणमलं तित्थं तित्थंकर ! विहेहि ॥९॥

एवमभिणंदिओ वंदीहिं व लोयन्तिएहिं समुज्जओ चइऊण चक्कवट्टित्तणं पडिवण्णो चारित्तं वइसाहवमावासाए त्ति ।

तओ विहरिऊण कंचि कालं वइसाहवहुलतइयाए कित्तियासमासण्णे मियंके उप्पणं दिव्वं णाणं ति । विरइयं
देवेहिं समोसरणं । पच्चाविया गणहरा । पत्थुया धम्मकहा । तओ पंचाणउइं वाससहस्साइं सब्वाउयमणुवालिऊण सम्मे-
यसेलसिहरे सब्बदुक्खविमोक्खलक्खणं मोक्खं पचो त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए "कुंधुसामिणो चक्कवट्टिस्स तित्थयरस्स चरियं समेतं ॥३२-३३॥

१ 'कुरुपूरेण जे । २ 'तापमिये सु । ३ 'वैवाह' सु । ४ 'णाक्ख' सु । ५ 'चरियं' सु । ६ 'मसरेच्छा जे । ७ 'ल तत्त्वमलं'
जे । ८ 'कजे जे । ९ 'तह जे । १० 'लमुण्णेय' सु । ११ 'करेहि जे । १२ 'कुंधुवक्कव' सु । १३ 'परिसमतं ति ।

[३४-३५ अरसामितित्थयर-चक्कवट्टिचरियं]

—:X:—

गम्भाहाणाउ चिय चिंघेहि णिवेइया महासत्ता । जायंति केइ ते जेहि 'निच्चुयं जायइ जयं पि ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंघुदीवे दीवे दाहिणद्धमज्झिमखंडे द्दत्थिणाउरं णाम णयरं । तत्थ विणिज्जियासेसपडिवक्खो अचंतल्लसंपयाण सुदंसणो सुदंसणो णाम णराहिवो । तस्स य विणिज्जियरइल्लवक्खिभमा देवी व देवी महादेवी । तस्स य तीए सइ चित्तमग्गमणुहवन्तस्स अइकन्तो कोइ कालो ।

अणया य वियरिण बालवसन्ते, ववगयसिसिरमारुयप्पसरपंकयदाहे, समुब्भिण्णामु णवचूयमंजरीसु, समुच्छलिण परहुयारवे, वियंभिण वउलामोए, वियसिए माणिणीमाणभेयदक्खे कणियारवणे, एवंविहे य बालवसंते फग्गुणमुद्धवीयाए गेवेज्जाओ चैविऊण वाससहस्सकोडीए ऊणे पलिओवमचउर्माए कुंथुजिणाओ गए देवीए कुच्छिसि उवलद्धचोइसमहामुभिणाए उवण्णो । वडिहओ य गम्भो । अइकन्तेसु साइरेगेसु णवसु मासेसु मग्गसिरमुद्धदसमीए रेवडणक्खत्ते जणणीए वियणमणुप्पायणन्तो भगवं समुप्पण्णो । पड्डावियं से णाम भुंभिणम्मि महारिहाउरदंसणत्तणेणं अरोत्ति । वडिहओ य । समासाइयं चक्कवट्टित्तणं ।

पसाहियमहिमंडलो य दिट्ठविलियं 'पिव पणइणिं परिहरिऊण रायलच्छि वडिवण्णो समणत्तणं मग्गसिरमुद्धकारसीए त्ति । अणुपालिऊण य छउमत्थपरियागं कत्तियवहुलवारसीए समासाइयं दिव्वं णाणं । समागओ पोइणीखेडं णयरं । पच्चाविया गणहरा । विरइयं देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा । साहिज्जइ संसारसरुवं, पयडिज्जइ मोक्खसोक्खं, भिंदंति कम्मगंठि जंतुणो, अवणंति मोहजालं, विहाडेंति आवरणंधयारं, पडिवज्जंति जिणसासणं ति । ताव य बहुपडिपुण्णपोरिसीए समुट्ठिओ समोसरणाओ भगवं । उवविट्ठो य तित्थयरपायवीडे पढमगणहरो । तहेव धम्मं साहिउमादत्तो ।

एत्थंतरम्मि समागओ एगो दाम्मणओ । वंदिओ य तेज गणहारी । सबहुमाणं च धम्मलाहिओ गुरुणा । तयणंतरं च समागओ वणिओ । तेणावि वंदिऊण भणियं—

भयवं ! अहमतीवधूयादुक्खदुक्खिओ तच्चितासायरावगाढो 'किं कायवं ?' ति मूढो अहोणिसिं जायहिययावेओ तुम्हंतियं समल्लीणो । मज्झ य भगवं ! एगा धूया खोहामियासेसजुवइसत्था । तीए य समुल्लसन्ते जोव्वणोरम्भणवलायणपवाहे जह जह समागच्छंति वरया तह तह लज्जमाणेव मह हियए पविसइ । चित्तियं च मए—

विहवाण वयत्थामं होइ कुलकलंककारणमणयं । मुत्तिमती विव चिंता धूया धण्णाण ण हु जाया ॥ २ ॥

किंच जणणि-जणयाण पढमं चिय एरिसी चिंता—

सुकुलुगओ मुरूवो कलामु परिणिट्ठिओ विणीओ य । विहवी वेण जउत्तो समचित्तो होइ जइ दइओ ॥ ३ ॥

अह कह वि दिव्वजोएण जाइ जइ दूहवा व विहवा वा । पवसियपइ व्व णिययं तो वयणिज्जाण सा खाणी ॥४॥

एवं च चिंतासमाउलो भणिओ तज्जणणीए-अज्जउत्त ! किमेवं चिंतापैराहीणो व्व लक्खिज्जसि ? त्ति । मए भणियं-सुट्ठु लक्खियं । तीए भणियं-कहमु किं चिंताकारणं ? । मए भणियं-एकं ताव असारसंसारणिवासो, वीयं घरवासणिवंधणं, तयं एसा तैव धूय त्ति, ता एसा पत्तकाला दिज्जउ कस्सइ कुलीणस्स । तीए भणियं-अहमेत्थ गम्भाहाणाओ पैमिइ केवलं किलेसभायणं, कण्णाणं दाणं पतिं तुमं कारणं ति, ता समप्पिज्जउ कस्सइ जो तुम्हाणुमओ, केवलं जहा अहमच्चन्तदुक्खभायणी ण होमि तहा अज्जउत्तेण करणिज्जं ति ।

१ जेच्चुयं सू । २ 'ए य मा' सू । ३ चइऊण जे । ४ 'मागाए जे । ५ सुइणम्मि सू । ६ पिव पणइणो जे । ७ णाण । पच्चाविया सू । ८ 'रण, पडि' सू । ९ वावणो जे । १० 'णारमे जे । ११ वए मुरूवो सम' जे । १२ 'परायणो ल' सू । १३ तुह जे । १४ पमिंति जे ।

‘पाडेइ महावत्ते पियरं धूया पओहरारम्भे । वड्ढंती अणुवरिसं सरियं व्व तडं ण संदेहो’ ॥ ५ ॥
एवमहं भणंतो समुट्ठिओ आसणाओ । गओ वीहिमग्गं । दिट्ठो य संखउराओ समागओ एगो सत्थवाहो । वेत्ते
य परोप्परालावे जायै परोप्परं साहम्मियत्तणेणं पीती ।

अणया य तेण संखउरणिवासिणा उसहदत्ताहिहाणेण मह गेहमतिगतेणं दिट्ठा मह समीवे उवविट्ठा पियदं-
सणा । तओ तं दट्ठण सुइरं णिज्झाइऊण चित्तिऊण य किं पि किं पि हियएणं भणियं उसहदत्तेण जहा—किमेसा तुह
धूया कणा ? । मए भणियं—आमं, केण पुण कारणेणं तुमए णिज्झाइऊण किं पि हियएणं चित्तियं ? ति । तेण भणियं—
“मुणसु कारणं ति, अत्थि मह पुत्तो वीरभदो णामं । सो य वालभावे चेव साहुसगासाओ कलामु सुपइट्ठिओ । जाणि-
यं सइलक्खणं, अहीयाणि य छंद-अलंकार-“देसी-णिघंटाईणि सत्थाणि, परिणयाणि य, जायं कइत्तणं, बुज्झइ परकव्व-
गुण-दोसे । तओ सो मुकुलुप्पचीए रूवित्तणेणं कलागहणेणं विज्जाहिगमेण य णेच्छइ जं व तं व कण्यं दिज्जमाणं पि
विवाहेउं ति । तओ मए चित्तियं जइ परमेसा मुरूवा जइ कलामु णिउणा ता जोमा” ति । तओ तमायणिऊण मए
भणियं—अहं पि इमीए एवंविहवरणेसणक्खणिओ चिट्ठामि, जओ एसा वि मह धूया एवंविहा चेव, णेच्छइ य जं व
तं व वरं ति । ता भयवं ! अम्ह दोण्ह वि बहु-वरणेसणुज्जयाणं मिलियं चित्तं । दिण्णा य मए णिययधूया । समागओ
वीरभदो । वत्तो विवाहो । कयमुचियकरणिज्जं । अच्छिऊण य कइ वि दियहे वेत्तूण वहुयं गया णियगपट्ठणं ति ।

अणया य मए णिसुयं जहा—रातीए चरिमजामम्मि ण णज्जइ कहिं पि गओ वीरभदो वासभवणाओ । एगा-
णिणि चइऊण मह धूयं पियदंसणं ति । एगेण वोंमणेण तस्स पउत्ती साहिया । ण य सो सम्मं णिवेएइ । ता साहसु
भगवं ! फुडत्थं किं तस्स दंसणं भविस्सइ उयाहु ण व ? ति । गणहरेण भणियं—मुणसु अवहिओ,

णिग्गओ” गेहाओ तुह जामाउओ एवं परिभाविऊण जहा—मए कयं कलागहणं, जायं कवित्तणं, सिद्धा णाणाविहा
मन्ता, जाणिया गुलियापओया, अहिणवं जोव्वणं, पगरिसो सव्वविण्णाणेषु, एवं च मह गुरुयणभीरुयस्स सव्वं चेव णिर-
त्थयं ति, ता देसंतरं व्वामि ति । णिग्गओ अद्रफालाणि काऊणं गेहाओ । तेण य गुलियापओएणं सामवण्णो कओ
अप्पा । तओ आहिंदिओ गामा-उगर-णगर-मडम्बादीणि ठाणाणि । कत्थइ वीणाए, कत्थइ चित्तकम्मेणं, कहिंचि पत्तच्छे-
ज्जणिउणयाए, अणत्थ कइत्तणेणं, अवस्त्य मुरवाइयम्मि आउज्जे कुसलत्तणेणं, सव्वत्थ लद्धजओ ति ।

तओ य सो गच्छन्तो गओ सिंचलदीवं । तत्थ य रयणपुरं णाम णयरं । तहिं च रयणागरो णाम णराहिओ ।
तत्थ सो संखस्स सेट्ठिस्स आवणोसरियाए उवविट्ठो । सुइरं णिज्झाइऊण णेणं सेट्ठिणा पुच्छिओ—पुत्त ! कुओ तुमं ? ।
तेण भणियं—जंबुदीवाओ रूसिऊण गेहाओ णिग्गओ, आगच्छंतो इहमागओ देसदंसणकोउएणं ति । संखसेट्ठिणा
भणियं—ण सुंदरमणुट्ठियं, जओ अविणयवासो जोव्वणं, चंचलाणि इंदियाणि, पयतीए पिमुणसहावो लोओ, दूरं देसंतरं,
विसमा कज्जगती, मुकुमारसहावो तुमं, तहा वि सोहणमणुट्ठियं जमिहागओ सि ति । गओ य सभरणं सेट्ठी तं वेत्तूणं ।
ज्हाया य दोणि वि जणा । णियत्थाणि य सोहणाणि वत्थाणि । जहाविहिं भुत्ता य । णिग्गया तम्बोलं सम्माणन्ता ।
भणिओ य सेट्ठिणा वीरभदो—अपुत्तस्स महं तुमं पुत्तो, ता णियगेहे व्व चिट्ठसु तुमं, देसु दाणं, भुंजसु जहिच्छिए
भोए, अत्थि मे एगं जम्मं तुह भुंजंतस्स देतस्स य दविणजायं ति । वीरभहेण भणियं—ताय ! कयपुण्णो हं जं तुमं
आणावसित्तणं मए पावियं ति, धण्णा हु गुरुणमाणाभायणं भवन्ति । एवं च तेसिं पिय-पुत्तत्तणेण गच्छन्ति दियहा ।

तत्थ य राइणो रयणायरस्स धूया पुरिसवेसिणी अणंगसुंदरी णाम । संखस्स य सेट्ठिणो विणयवती धूया ।
सा य तैयन्तिए पतिदिणं व्वइ । पुच्छिया य भणिणी वीरभहेण विणयवई जहा—कत्थ तुमं व्वसि ? ति । तीए

१ वत्तो जे । २ “लावो जे । ३ “या साहम्मत्तणेणं सु । ४ “देसि-णिघंटाइयादीणि जे । ५ वावणेण जे । ६ उक्क ण जे । ७
“ओ तुह जे, “ओ तुह गेहाओ जा” सु । ८ रयणागरो जे । ९ तयेतियं जे ।

जहद्वियं साहियं । वीरभदेण पुच्छियं—केण उण विणोएण सा गेहे चिट्ठइ ? चि । तीए कहियं जहा—कयाइ वीणाविणो-
देणं, कयाइ पत्तच्छेज्जाणुद्वाणेण, कयाइ चित्तकम्मक्खणिआ दिवसं पि णेइ, कयाइ पेक्खणयविहिण्ण, कयाइ बिंदु-
मति-अक्खरचुय-बिंदुचुय-पण्होत्तरविणोएणं ति । तेण भणियं—जइ एवं ता अहं पि तत्थागमिस्सं । तीए भणियं—ण
तत्थ बालगस्स वि पुरिसस्स पवेसो । तेण भणियं—अहं तहा करिस्सं जहा ण णज्जइ पेरिचिएणं पि जहा पुरिसो चि ।
पविट्ठो य भगिणीए सद्धि अणंगमुंदरीए भवणं । दिट्ठा तेण सा पिययमकुवियं हंसियं लिहंती । पुच्छिया विणयवई—
का एस ? चि । तीए भणियं जहा—अम्हं सयज्झिया बहूणि दिवसाणि तुम्ह दंसणूमुया मए आणिय चि । तीए
भणियं—सोहणंमणुद्वियं ति । तओ पेच्छिऊण वीरभदेण भणियं—तुमए हंसिया विरहाउरा लिहिउमाहत्ता, तीसे य
विरहाउराए ण एरिसी दिट्ठी होइ । अणंगमुंदरीए भणियं—गेहसु चित्तवट्ठियं, आलिहसु अ जारिसा दिट्ठी संठाणं च
विरहिणीए होइ चि । तओ वीरभदेण लिहिया हंसिया । अवि य—

पव्वायवयण-बाहोहणयण-पक्खउडविहडणंसयण्हा । पडिरुद्वसव्वचेट्ठा झायन्ती किं पि हियएणं ॥ ६ ॥

दुसहपियविरहवियणाणीसहचंचउडगहियविसखंडा । अभणन्त चिय साहइ सोयावेणं सचेट्ठाए ॥ ७ ॥

लिहिऊण य दंसिया अणंगमुंदरीए । 'अहो ! विष्णाणाइसओ, अहो ! भावसूयगा अवस्था हंसियाए' एवं च
सुइरं जिज्झाइऊण पसंसिऊण य पुणो भणियं अणंगमुंदरीए—किमेत्तियं कालं णागया तुमं ? ति । वीरभदेण भणियं—
गुरुयणसंकाए । अणंगमुंदरीए भणियं—संपइ पतिदिणमागतव्वं तुमए, किमण्णासु वि कलामु अत्थि परिस्समो ण व ? चि ।
विणयवईए भणियं—दियहेहिं सयमेव जाणिही सामिणी । तओ 'सोहणं संलत्तं' ति अवऊढा विणयवत्ती । तुज्झ एस अवराहो
जमेत्तियं कालं णाणीय चि । णामं च पुच्छियं । सयमेव वीरभदेण साहियं—वीरभइ चि । तओ पूइयाओ तंबोलाइणा ।
गयाओ य णिययभवणं । अवणियं जेवत्थं । कओ पुव्ववेसो । गओ दट्ठाहिमुहं । भणिओ य सेट्ठिणा वीरभहो—पुत्त !
कत्थ गओ सि तुमं ? जेणाहं तुहण्णेसणणिमित्तमागयाणं णिव्विणो देतो उत्तरं ति । तेण भणियं—ताय ! बाहिरुज्जाणे
ठिओ म्हि । सेट्ठिणा भणियं—सोहणं ति ।

वीयदियहे वि तहेव पविट्ठो । वीणाविणोएण य अणंगमुंदरी चिट्ठति । वीरभदेण य भणियं—विरसा एसा तंती,
जओ एत्थ माणुसवालो पविट्ठो, किं च तुमए सज्जगामो आलत्तो, तत्थ य सज्जो चउमुइसमेओ भवति, तत्थ वि संवादी
विवादी अणुवाई वाई जहा होइ तहा तंती छिवियव्वा । इव्वेवमादि भणिए समप्पिया वीणा अणंगमुंदरीए । वीरभदेण य
उव्वलिया तंती, दंसिओ माणुसवालो, तमवणेऊण चलिया तंती, संजोइया वीणाए, वाइया वीणा, महुंरं गमयविसुद्धं
णिसायसरं दोहं मुइणमुकरिसेणं कायलीपढाणं तंतीसराणुवाइयं तहा गीयं जहा अक्खित्ता अणंगमुंदरी सह परिसाए ।
तमायभिऊण चितियं अणंगमुंदरोए—किं जम्मेणमिमीए विणा ?, जओ देवाण वि दुल्लहं एरिसं रूवं णीसेसकलाणुगयं
ति, अवि य—

रूवं मुकुलपत्ती कलामु कुसलत्तणं विणयजुत्तं । पट्मालवणमगव्वो न होइ बेवेहि पुण्णेहिं ॥ ८ ॥

'पुहतीए णिकलंकं रयणं णत्थि' चि मुव्वइ पवादो । दट्ठणमिमं एसो णिरत्थओ संपयं जाओ ॥ ९ ॥

ता एवमणंगमुंदरी वीरभदेणं अण्णेसु वि पत्तच्छेज्जाइएसु कलाविसेसेसु विष्णाणाइसयं दंसंतेण तहा कया जहा
अण्णं ण जानइ, ण पेक्खइ, ण अण्णेण सह अभिरमइ । सव्वमेव वीरभइयं वाहरति चि ! अवि य—

सा चेय ठोइ हियए अणम्मि वि चित्तियम्मि तं चेव । वाहरइ मुण्णहिययत्तणेण सुविणे वि सा "चेव ॥ १० ॥

१ तत्थ यं सु । २ परिचरणं जे । ३ दिट्ठा य सा जे । ४ मणुचिट्ठियं सु । ५ णित्तण्णा जे । ६ ए भणियं च अहो !—
जे । ७ गुरुयणं सु । ८ बाहि उज्जाणाट्ठो जे । ९ व्वो य पुण्णरहिण गुणा कतो ? ॥ जे । १० होइ जे । ११ चेय जे ।

वीरभदेण यणाऊ ण वसीभूमणंगसुंदरिं साहियं सेट्ठिणो जहा—अहं कयमहिलाणेवच्छो विणायवतीए सद्धिं कण्णतेउरं पविसामि, ता तुमए ण विस्सरेयव्वं, जह य अणत्थो ण होइ तहा करिस्सं, तुमए वि जइ राया णियधूयं देइ तो पढमं पडिसेहिऊण आयरेण देन्तस्स पडिच्छियेव्वं ति । तमायणिऊण सेट्ठिणा भणियं—तुमं जाणसि बुद्धीए अब्भहिओ, केवलं जहा सरीरे कुसलं हवइ तहा कैरेयव्वं ति । वीरभदेणं भणियं—उद्दुयचित्तेण ण होयव्वं, कइवयदिय-हेहिं पेच्छइ चेव ताओ जमेत्थं णिप्पज्जइ चि । सेट्ठिणा भणियं—पुत्त ! तुमं चेव जाणसि ।

इओ य राइणो अत्थाणे कहा जाया जहा—एओ जुवाणो जंबुदीवाओ समागओ संखसेट्ठिणो मेहे चिट्ठइ, तेण य विण्णाणेणं कलामु कुसलत्तणेणं कइत्तणेणं पण्हत्तरगोटीए सव्वं पि णयरं अक्खित्तं, जो य तेण पुलइओ णयणेहिं, आलविओ, जेण सह परिहासो कओ, जस्स णामं गेण्हति, जेण सद्धिं पण्हत्तराइणा खेळइ सो य अप्पाणं कयत्थं ति मण्ण-ति । तओ तमायन्निऊण राइणा भणियं—को उण सो जातीए ? । तेहिं भणियं—देव ! सम्मं ण णज्जइ किंतु कुलप्पसूएण होयव्वं ति । तओ तमायणिऊण णियधूयाचिन्ता जाया—एवंविहो भत्ता तीए जइ रुचइ ता सोहणं हवइ चि ।

इओ य वीरभदेणं अणंगसुंदरी एगागिणी पुच्छिया जहा—“कीस तुमं लहिऊण सयलसामग्गिं ण भोए भुजसि ?, पिययमरहियाण केरिसा भोग ? चि,

देवाण वि दुल्लहमिणं लहिऊण य सुयणु ! एरिसं रुवं । तत्थ वि य जोव्वणं जूरणं जुवाणाण पसयच्छि ! ॥११॥
जीयं णिरत्थयं होइ सुयणु ! पियसंगमेण रहियस्स । इह जोव्वणं पहाणं तत्थ वि पियसंगममुहाइं ॥ १२ ॥
उत्तट्टमयसिल्लिबच्छि ! कीस मूढत्तणेणमंतरसि । अत्ताणं पियसंगममुहाण जणपत्थणिज्जाण ? ॥ १३ ॥
एएण पुरिसपे(वे)सत्तणेण ओ ! तह कयत्थिया सि तुमं । सव्वस्स जह कयत्था वि सोयणिज्जा जए जाया ॥१४॥
तुह दुक्खदुक्खियाए मज्झं ता सुयणु ! साहसु फुडत्थं । सयलमुहाण णिहाणं पियसंगो कीस ते चत्तो ? ॥ १५ ॥
जस्स न सुहेण मुहियं दइयं, ण य दुक्खदुक्खियं होइ । समसम्भावसिणेहं ण जस्स किं तस्स जम्मेण ? ॥ १६ ॥
इय एवमाइमहुरक्खरेहिं तह कह वि तेण सा भणिया । जह उज्झिऊण लज्जं सम्भावं कहिउमादत्ता ॥ १७ ॥

अणंगसुंदरीए भणियं—

“पियसहि ! कस्स केहिज्जउ सम्भावो ? कस्स सीसउ सख्वं ? । चित्तणुओ जणो सो ण कोइ जो जाणइ विसेसं ॥ १८ ॥
सव्वं जं भणसि तुमं मणुयत्तं रुव-जोव्वण-विलोसा । पियविरहियाण जायइ णिरत्थयं णिरवसेसं पि ॥ १९ ॥

किंच—

मयणवियारो वियरइ णिरंकुसो जोव्वणम्मि सविसेसं । मयणाहि-पंचमुग्गारभावसंभुकिओ णिययं ॥ २० ॥
किंतु रमणीण सोक्खं रमणायत्तं ति तेण तैदियहं । तच्चित्तराहणतप्परहिं रमणीहिं होयव्वं ॥ २१ ॥
तं सहइ कलाकुसलम्मि रुव-जोव्वण-महागुणगविए । ण हु जम्मि वि तम्मि वि माणुसम्मि रइकेलिविरसम्मि ॥ २२ ॥
सच्छंदविहरणं वज्जिऊण जइ कह वि परवसो अप्पा । कीरइ ता तम्मि जणे दोसो वि गुंणे जहिं पडइ ॥ २३ ॥
इय णिग्गुणे जणे चाइकोडिकरणं ण सुंदरं जेण । तेण मए परिकलिऊण पुरिसवेसत्तणं गहियं ॥ २४ ॥
तओ लद्धावसरेण भणियं वीरभदेणं—अणंगसुंदरि ! किमेवं जंपसि ? ,
विउलं भरहं, पुरिसाणमंतरं, मा हु वहह णियगव्वं । लोए एस पवाओ, ‘बहुरयणा चेव पुहइ’ चि ॥ २५ ॥

अणंगसुंदरीए भणियं—तुह दंसणेणावगयं मए एयं ति, पुव्वं पुण णियकलावलेवेण अण्णइ चिय मणो आसि ।
वीरभदेण भणियं—किं संपयं जइ कोइ तुह कलाहिओ जुवाणो लब्भइ ता इच्छसि तुमं विसयसंगं ? । तीए भणियं—

१ ‘उरे सु’ । २ ‘यव्वं ति जे’ । ३ ‘कायव्वं जे’ । ४ ‘कइहि चिय दियं जे’ । ५ ‘णिप्पज्जइ जे’ । ६ ‘ऊणं सुयं जे’ । ७ ‘गाये-
यं सुपुस्तके त्रयोदशीगाथाऽनन्तरमुपलभ्यते । ८ ‘उज्झियाण लज्जा जे’ । ९ ‘कहिउज्जइ सु’ । १० ‘विलासो सु’ । ११ ‘तद्विषयं जे’ । १२ ‘गुणो
अहिं होइ जे’ । १३ ‘सि ? , विउला पुहती बहुरयणा य, सोहणस्स रमत्थि (?) । अणंगं जे’ ।

इच्छामि जइ तुहाणुखं ख्व-भोव्वण-कलाहियं पेच्छामि त्ति । तओ तयणन्तरमेव साहिओ णिययवुत्तन्तो गेहणिगम-
णाओ अणंगसुंदरीदंसणपज्जवसानो, साहिओ य अत्तणो तीए उवरि अणुराओ त्ति । तओ एयमायण्णिऊण अणंगसुंदरी
गरुयविम्हयहरिसविसेसफुल्लणयणा भणिउमाडत्ता जहा-फलियं मेह पुव्वज्जियमुकयतरुणा, संजायं पुरिसपे(वे)सत्तणवय-
विसेसस्स फलं ति, ता किं बहुणा?, जीविय-सरीरादियं सब्बं तुम्हायत्तं, जं जाणसि तं कुणसु त्ति । वीर-भदेण भणियं-
अत्थि एयं, किं पुण तहा कीरइ जहा परलोयावाओ ण होइ? त्ति । तीए भणियं-तुमं चेव संपयं जाणसि त्ति । पुणो भणियं
वीर-भदेण-ण संपयमहमागमिस्सामि, तुमए पुण तहा तहा महाराओ भाणियव्वो जहा मह पिउणो संखसेट्ठिस्स तुमं
विवाहणिमित्तं पयच्छइ त्ति । एवं च सिक्खविऊण णिगगओ वीर-भदो । गभ्रो सभवणं ।

इओ य अणंगसुंदरीए सदाविया जणणी । भणियं च तीए अग्गओ जहा-अम्ब ! जइ मए जीवन्तीए पओयणं ता,
तह विण्णवेसु तायं अंब ! तुमं कह वि वीर-भदस्स । जह अज्जं चिय मं देइ संखसेट्ठि समाहूय ॥२६॥

तओ एयमायण्णिऊण तुहाए जणणीए भणियं-पुत्त ! को एत्थ संदेहो?, तुह वराहिलासेण अचन्तणेव्वुओ होही
तुह जणओ, किंतु केरिसो सो वरो? त्ति तुमं जाणसि । तीए भणियं-अम्ब !

विण्णाणाइगुणग्ववियपरियणायंतसयलभुवणेण । जो तेणं चिय णज्जइ जयम्मि सो गुणमहग्गविओ ॥२७॥

तओ संठविऊण धूयं गया तेलोक्कसुंदरी महारायसमीवं । साहिओ एस वुत्तन्तो राइणो । तेणावि भणियं-णिमुओ
मए जहा-कोइ सब्बकलाकुसलो ख्वोहमिपवामएओ जुवाणो जंबुवीवाओ समागओ संखसेट्ठिओ गेहे चेट्ठइ, ता सदावेमि
संखसेट्ठि । ति भणिऊण विसज्जिया महादेवी । सदाविओ संखसेट्ठी । सिक्खविओ वीर-भदेण जहा-सदाविओ तुमं दिक्क-
रियादाणणिमित्तं, तए विअ वट्ठंमं काऊण पडिच्छियव्वा, ण अण्णह त्ति । गओ सेट्ठी बहुवाणियगसमेओ पडिहारजाणाविओ ।
पविट्ठो । दिट्ठो य राया कालोचिण्ण दरिसणिज्जेण । कयपणामस्स य राइणा दवावियमासणं । उवविट्ठो काऊण पसायं
ति । भणियं राइणा-भो सेट्ठि ! तुह घरे जंबुवीवाओ समागओ जुवा मुणिज्जइ, सो य किल सब्बकलाकुसलो विणीओ
य विणिज्जियासेसरुवविहवो त्ति । सेट्ठिणा भणियं-देव ! अत्थि जुवा, कला-गुणोववेयत्तणं तु लोओ भणइ, अम्हे उण
ण संम्मं जाणामो । राइणा भणियं-किं तुह णिदेसवत्ती ण व? त्ति । सेट्ठिणा भणियं-देव ! तस्स सयलं पि णयरं गुणा-
वज्जियमाणसं वसे वट्ठइ, सो उण विणीयत्तणेण मह परियणस्स वि णिदेसे वट्ठति, किमंग पुण महं? ति । राइणा भणियं-
जइ एवं ता णियधूयमहं देमि, गेण्हसु तुमं ति । सेट्ठिणा भणियं-देव ! ण मयाणं सीहेण सह संजोओ सुंदरो होइ,
ता देव ! सामिसालो तुमं, अम्हे पुण तुम्हं पयाओ, एवं च ठिए किमेवमाइसइ महाराओ? । राइणा भणियं-किं तुज्झ
वियारेण?, जमिहमाइसामि तुमए अवियारं कायव्वं ति, तुमं पुण तमेव पुच्छाहि । सेट्ठिणा भणियं-एवं कीरइ त्ति ।
विसज्जिओ सेट्ठी । कहिओ वुत्तन्तो वीर-भदस्स ।

पुणो वि सद्विऊण राइणा दिण्णा अणंगसुंदरी । पडिच्छिया य सेट्ठिणा । कयमुचियकरणिज्जं । महासम्महेण
वत्तो विवाहो । जाया परोप्परमचन्तपीई । रूसन्ति विओयकारिणो णयणा णिमेसस्स वि । कया वीर-भदेण अचन्त-
साविगा, कहिओ जिणएसिओ धम्मो, लिहिया य सयमेव तित्थेसरपडिमा, पडिलिहिया साहू साहुणीओ य, लाइओ
इच्छा-मिच्छाइओ सावगजणोक्खिओ ववहारो । कुणंति पइदिणं देववंदणाइयमायारं, गायंति वेरग्गशीयाओ, पढन्ति णाणावि-
हाइं कुलयाइं । भुंजंति भोए, सरइ संसारो । अण्णया य चित्तियं वीर-भदेणं जहा-“ण सकेइ मह विरहदुक्खं थेवं पि
सहिउं अणंगसुंदरी, अवि य—

थेवं पि विरहदुक्खं ण सहइ, गरुयं पि चट्ठणं सहइ । वट्ठइ सोमालिम-जरहियाउ दइए समप्यंति ॥२८॥

१ मह सुक्यं सू । २ तुहायत्तं जे । ३ “णायन्तं” जे । ४ विणिज्जियसेसं सू । ५ संपयं जां सू । ६ तुह जे ।

ता एत्थ पत्तयालं जहा-गच्छामि चेत्तूण एयं गिययदेसं” । ति चित्तिऊण भणिया अणंगसुंदरी जहा-पिए ! ण तुज्झ सयासाओ वि किं पि अवरं पिययरं महं अत्थि, किंतु जणणि-जणया मह विओए अब्बन्तदुक्खिय त्ति, ता दट्ठण-महं सिग्घं समागच्छामि, तुमं पुण इहेव चिट्ठसु त्ति । अणंगसुंदरीए भणियं—सोहणं भणियं तुमए जइ तहाविहं चेव मज्झ वि चित्तं जारिसं तुम्ह कटिणं त्ति, महं पुण चित्तं ण सहइ थेवं पि विओयं सहितुं त्ति, किमहं करेमि ? । अवि य—

सुहय ! तुमाओ अहियं गिययं चिय वल्लहं महं जीयं । तइ गच्छन्ते गच्छइ तयं पि, ता कीस मं सुयसि ? ॥२९॥
‘तुह उंण णत्थि सिणेहो’ णायमिणं णाह ! तुम्ह चेट्ठाए । होतम्मि तम्मि पिययम ! पवसणवुद्धि चिय ण होइ ॥३०॥

णिकइयवम्मि पेम्मे पिययम ! विरहो अलद्धमाहप्पो । अह विरहो, ण हु णेहो; सारसमिहुणेण दिट्ठंतो ॥ ३१ ॥

को णाह ! तुज्झ दोसो कयकइयवपेम्मेलोयवेवविओ । इय एव मज्झ विसओ परिणामे णवर जाणिहिसी ॥ ३२ ॥

तओ तमायणिऊण वीरभदेण भणियं—

मा कुप्प मज्झ सुंदरि !, णाहं चइउं तुमं समत्थो मि । तुह गमणोवाओ चिय एस मए पत्थुओ सुयणु ! ॥ ३३ ॥

खणमेत्तम्मि वि विरहम्मि जस्स जीयं पि सल्लतुल्लमिणं । कह छड्डिज्जइ तं सुयणु ! माणुसं भण जियंतेहिं ? ॥३४॥

इय बहुविहं भणंतेण तेण सम्भावणेहपसरेण । सा संठविया तह जह मोत्तुं माणं समुच्चलिया ॥ ३५ ॥

साहिओ य गिययाहिप्पाओ वीरभदेण महारायस्स । णिब्बंघे कए मुक्को महाराएणं अणंगसुंदरीए सद्धिं त्ति । कया सामग्गी । सज्जीकयं जाणवत्तं । गणियं लग्गं । चडाविओ णंगरो । मुक्कं जाणवत्तं । समुद्धुओ सीयवडो । संजचो कण्हारो । पणमिओ राया महादेवी य तीरद्विण्हिं दोहिं वि जणेहिं । लग्गो अणुकूलो मारुओ । गम्मए जंबुदीवा-भिमुहं । दीसंति णाणाविहा जलयरा । अवि य—

करिमयरुत्तासियतिमिसुहविउणयरजायकल्लोले । कल्लोलमलत्थल्लियसंखउल्लुच्छलियहलबोले ॥ ३६ ॥

हलबोलवल्लियगरुययरमच्छपरितुट्टजाणजणविहे । जणणिवहवियम्मियविहसंकहालावविच्छडे ॥ ३७ ॥

इय एरिसे समुद्धम्मि वहइ जा जाणवत्तमणुदियहं । ता सत्तमम्मि दियहे वियम्मिओ मारुओ चंडो ॥ ३८ ॥

मारुएण य समुच्छलिएण संखुद्धो मयरहरो । उच्छलइ य महाकल्लोलणोल्लियं जाणवत्तं । ताव य भग्गं पैरयाणं, तुट्ठाओ रज्जुओ, दलिओ कूआखम्भो, फट्ठो सीयवडो, अवसीहयं जाणवत्तं । ताव य पवलमारुयत्तणओ, संखुद्धयाए मयरहरस्स, अणवसित्तणेण जाणवत्तस्स, सामग्गीविरहाओ य विसणत्तणओ णिज्जामगाणं, तहाविहकम्मपरिणतिसामत्थेण य भमिऊण तिष्णि दिणे अप्पंपरीह्याण य जाणारूढाणं सह जीवियासाए विवणं जाणवत्तं । पुव्वबंधवा विव विउत्ता सच्चपाणिणो । समासाइयं च फलहगमणंगसुंदरीए वीरभदेण य । तओ अणंगसुंदरी पंचरत्तेण खित्ता तहम्मि समुद्ध-कल्लोलेहिं । तओ सा बंधुविओएणं विएसगमणेणं बहणभंणेण पियविप्पओगेणं धणक्खएणं जलकल्लोलणोल्लणेणं छुहावि-यणाए गरुयदुक्खसंदोहवत्तिणी तीरं पत्ता चित्तिउमादत्ता—“एयाणि ताणि विहिणो त्रिलसियाणि, अवि य—

अइवल्लहे वि चइऊण जणणि-जणए समागया सद्धिं । दइएण णवर सो वि हु विओइओ दइद्विण्वेण ॥ ३९ ॥

ता किं मए जियंतीए मंदभायाए संपयं कज्जं ? । णियबंधु-दइयरहियाय ताण लंछणणिमित्तमेत्ताए ॥ ४० ॥

हा कत्थ महं दइओ अणोरपारम्मि गुरुसमुद्धम्मि । पडिओ जीविहिइ महंभीसणकरिमयरगहणम्मि ?” ॥ ४१ ॥

सा बहुविहं रुयन्ती दिट्ठा तत्थागएण एकेण । तावसकुमारगेणं गुरुकरुगाभरियहियएणं ॥४२॥

णीया य तेण आसमपयं । दंसिया कुलवड्ढो । कुलवड्ढा वि सुइरं निज्झाड्ढण भणिया-पुत्ति ! वीसत्था अच्छसु, भविस्सति तुह भत्तुणा सह समागमो ति । तओ सा पडिजागरिया तावसेहिं कइवयदियहा जाव पुब्बावत्था जाय ति । ताव य कुलवड्ढा पेच्छिऊण तीए रुव-लायणाइसयं 'समाहिपरिपंथिणीयं तावसकुमाराणं' इति चित्तिऊण भणियं जहा-पुत्त ! इओ णाइदूरे पोमिणिखेडं णाम णयरं तत्थ य विसिट्ठलोओ परिवसइ, तहिं च तुह भत्तुणा सह समागमो भविस्सइ, ता तहिं वच्च तुमं ति । तीए भणियं-ताय ! जं तुमं आणवेसि । तओ वुइडतावसजुगलसहाया पेसिया पोमिणिखेडं । मुक्का य तेहिं णयरवाहिरियाए । 'अम्ह एत्थ गत्थि पवेसो' ति भणिऊण गया तावसा ।

१ य णयरवाहिरियाए एगागिणी दिसोदिसि पलोयन्ती जूहपरिब्रमं व्व मुद्धमइं चिट्ठति । ताव य समागया सुव्वया गणिणी साहुणीसमेया । तीए य दट्ठण साहुणीओ समूससियं हियणं । वीसत्था जाया । मुमरियं जहा-मह एयाओ पडिलिहियाओ पिययमेण दंसियाओ ति । गंतूण य तीए पुव्ववत्थेण विहिणा सम्मं वंदियाओ । चेइयाणि य वंदावियाओ सिंघलदीवे । गणिणीए भणियं-पुत्ति ! कहिं सिंघलदीवे चेइयाणि ?, कहिं वा तुममेगागिणि ? ति । तीए भणियं-सव्वं भयवतीए साहिस्सं वीसत्थ ति । ताव य गणिणीए कया सरीरचिन्ता । पविट्ठा तीए सह णयरिं । अणंगमुंदरीए रुवाखित्तहियओ सयलो वि णयरलोओ परोप्परं भणिउमादत्तो-का उण एसा ?, कुओ वा समागया ?, कस्स वा संव्वे वट्ठ ? ति । पत्ता य पडिस्सयं गणिणी । दिट्ठा य तत्थेवऽच्छंतीए तुह धूयाए पियदंसणाए, पप्फुल्लोयणाए य पुच्छिया । वंदियाओ य जहाजोगं साहुणीओ पियदंसणाए य । साहिओ वीर-भइसंगमाइओ गणिणीए दंसणपज्जव-साणो सव्वो चिय अत्तणो वइयरो । पियदंसणाए पुच्छियं-केरिसो वण्णेण ? । अणंगमुंदरीए भणियं-सामो ति । पियदंसणाए भणियं-सव्वमणुहरइ मह भत्तुणो मोत्तूण सामत्तणं ति । गणिणीए भणियं-बहुयणा वसुंधरा, अण्णो कोइ भविस्सइ तहाविहो ति । पुणो अणंगमुंदरी अभिहिया जहा-पुत्त ! वीसत्था चिट्ठसु पतिसमागमं मोत्तुं सव्वं तुह एत्थ-मत्थि, एसा य पियदंसणा तुह वहिणिसरिसा, ता इमीए सद्धिं सद्धमाणुट्ठाणपरायणा चिट्ठसु ति । अणंगमुंदरीए भणियं-अच्चन्ताणायारपरेणावि विहिणा सोहणमेयमणुट्ठियं जं तुह दंसणं ति । किंच-

सद्धमे पडिवत्ती गुरुचलणाराहणं च जिणसेवा । सज्जायवावडत्तं ण होन्ति बेवेहिं पुण्णेहिं ॥ ४३ ॥

ता भयवति ! संसारे सुलहा पियविप्पओया, दुलहो जिणदेसिओ धम्मो, अवस्संभाविणी आवया, दुलहा तुम्हारि-समुरुसामग्गी, ता एरिसेहिं चेवं णिमित्तेहिं पाएण लोओ धम्मवुद्धिं करेइ, ण अण्णह ति, ता कयत्था अहं जं पाविया तुम्ह चलणकमलसेव ति । पियदंसणाए भणियं-सहि अणंगमुंदरि ! पियसमागमेण वियं समूससियं मह हिय-एणं, अण्णह चिय मह अप्पा पडिहाइ तुह समागमेणं ति, किं बहुणा ?, ण वंधुविओयदुक्खदुक्खियाए अप्पा आयासे-यव्वो ति । अणंगमुंदरीए भणियं-पियसहि ! वक्कयं मह वंधुविरहदुक्खं तुह दंसणेणं ति । एवं ताओ अण्णोणदंस-णावियणाओ,

समयं पढंति समयं सुयंति समयं कुणंति करणिज्जं । चिट्ठंति अहोरत्तं णिच्चं चिय साहुणिसमीवे ॥ ४४ ॥

इओ य वीर-भदो फलगलग्गो कल्लोलेहिं उव्वुड्ढिणिवुड्ढं करंतो सत्तमे दिवसे रइवल्लहाहिहाणेण विज्जाहरेण दिट्ठो गहिओ य । णीओ वेयइहसिहरं । समप्पिओ णियजायाए मयणमंजुयाहिहाणाए पुत्तत्तणेणं ति । पुच्छिओ य समुइव-डणवुत्तं । तेणावि साहियं जहा-जबुदीवं सिंघलदीवाओ पत्थिओ सह जायाए, अंतराले य विवणं जाणवत्तं, अओ एगागी तुम्हेहिं कैयंतमुहाओ व्व कडिडओ अणोरपाराओ समुहाओ ति, ता ण जाणामि 'का य अवत्था मह जायाए ?' । विज्जाहरेण विज्जाए आमोएऊण कडियं-तुह दुवे वि जायाओ पोमिणिखेडे णयरं सुव्वयागणिणीए सगासे पढं-तीओ तवन्नरण्याओ चिट्ठंति । एवं कहिए वीसत्थो जाओ वीर-भदो । समुहाओ उत्तिण्णमेत्तेणं चेव अवणीया साम-त्तणकारिणी गुलिया । जाओ य पुव्वसहावो वण्णो ति । परिणाविओ य वज्जवेगस्स वेगवतीए भारियाए रयण-प्पहाहिहाणं धूयं । पयासियं च अत्तणो णामं बुद्धदासो ति । अच्छइ य तत्थ सह तीए विज्जाहरोचिए भोए भुंजंतो ।

१ कइ वि दिं जे । २ रुव-लायणां जे । ३ इ ति । तीए भं सु । ४ पुत्त ! कइ जे । ५ चिय जे । ६ य कयसियं सु ।
७ करंतो जे । ८ साहिओ जे । ९ कयताओ व्व सु ।

अणया य विज्जाहरलोयं महता सम्महेणं गच्छंतं पेच्छिऊण पुच्छिया रयणप्पभा बुद्धदासेणं जहा—कहिं एसो विज्जाहरलोओ पत्थिओ ? । तीए भणियं—सिद्धाययणे तित्थेसरज्जाए, तत्थ सासयाओ जिणपडिमाओ वंदिज्जन्ति, तण्णिमित्तं सव्वे विज्जाहरा जत्तं कुणंति । तओ सो वि सह भज्जाए विसेमुज्जलणेवच्छो सव्वालंकारविभूसियसरीरो वेयड्डसिहरं समारूढो । तत्थ दिट्ठं सासयरयणमयपडिमासणाहं देवउलं । तं च तेण भत्तिभरणिब्भरेण पयाहिणीकयं, वंदियं च । दंसेइ य णिययजायाए णाणाविहे विज्जाहरीण वावारे, अवि य—

वेरुलियदेहलीपहविलित्तसंकाए का वि ण हु कुणइ । आंययणगोमुहं णीलमैणिपवरचंदणरसेण ॥ ४५ ॥

वररयणकोट्टिमे णालिणिकमलगहणेकजायववसाया । भग्गणहग्गा मुद्धा हासट्ठाणं जुवाणाणं ॥ ४६ ॥

फलिहन्तरियपहाए वि जहुज्जुयं चेव धावमाणीए । पडिभग्गगमणपसराए पेच्छ हलबोलिओ अप्पा ॥ ४७ ॥

बेलवइ मुद्धजायं वारं वारं समुत्थयसरीरो । कसणमणिकिरणणिवहेण सुयणु ! विज्जाहरजुवाणो ॥ ४८ ॥

णिव्ववइ पेच्छ चीणंसुएण मुद्धा पयंसंकाए । वरपउमरायकिरिणोहउज्जलं ओ पईव वेलविया ॥ ४९ ॥

हरियमणिकिरणविच्छड्डजायजवयंकुरेकबुद्धीहिं । दूरेण परिहरिज्जइ तम्मलणभएण मुद्धाहिं ॥ ५० ॥

णियवण्णरयणणिम्मियजिणपडिमापहपरोप्परच्छुरिया । तित्थेसरा ण णज्जंति रूवओ मुद्धजुवतीहिं ॥ ५१ ॥

इय अच्छेरयकलियणिग गरुगवेयड्डसेलसिहरस्सि । पेच्छइ णं वत्तीसअंगहारेहिं संजुत्तं ॥ ५२ ॥

अट्टुत्तरसयकरणोवसोहियं तह य पिडिबंघेहिं । पउमाइएहिं कत्थइ सोलससंखेहिं चंचइयं ॥ ५३ ॥

चउरेयगागयरसं चउव्विहाडिणयसोहियं रम्मं । णवणट्टरससमेयं चउव्विहाउज्जसज्जमिणं ॥ ५४ ॥

तय-वितय-घणं सुसिरं ति तत्तमोघं तहाणुणं तिविहं । लय-त्तालसमं गेयं पि तत्थ सुइमणहरमणयं ॥ ५५ ॥

इय पेच्छिउं जहिच्छं पेच्छणयं णयण-जम्मणाणंदं । तह वंदिऊण पडिमाओ सम्मकरणेण भत्तीए ॥ ५६ ॥

तओ वंदिऊण सासयाइं चेइयाइं समागओ णिययभवणं । भणियं च णियजायाए पुरओ जहा—ण कयाइ अम्हेहिं एरिसमुवलविलयं ति, एयस्स दंसणेणमहमत्तणो जम्मं कयत्थमवगच्छामि । भणियं च तीए—कहिं तुम्ह जम्मो ? जेण न दिट्ठं ति । तेण भणियं—सिंचलदीवे वत्थव्वो, अम्हं च कुले बुद्धो कुलदेवय चि, महं च वाणिज्जणिमित्तं गच्छन्तस्स समुदमज्जे विवण्णं जाणवत्तं, कंठगयपाणो उच्चारिओ विज्जाहरेण, गहिओ य पुत्तत्तणेणं, परिणाविओ तुमं ति । तीए भणियं—तेणेव णोवलविस्वया जत्ता पइवरिसं भवन्ती वि । जाया य तेसिं परोप्परं अबन्तपीती । ण सहंति थेवं पि विरहं ।

समयं सुयन्ति समयं भमन्ति समयं कुणंति कज्जाइं । समयं वचइ कालो विओयरहियाण दोणं पि ॥ ५७ ॥

एवं च विसयसुहमणुहवन्ताणं तेसिं गच्छंति दियहा, सरइ संसारो ।

अणया य बुद्धदासेण भणियं—गच्छम्ह भरहद्धं कीलाणिमित्तं । तीए भणियं—एवं करेम्ह । तओ विज्जाए दोण्हि वि गयाणि पोमिणिखेडं णयरं । णिवइयाणि य राईए चरिमजामम्मि साहुणिपडिस्सयस्स बाहिं । भणिया य तेण जहा—चिट्ठमु तुमं जाव अहं छिविऊणमुययमागच्छामि । तीए भणियं—सिग्गमागच्छमु चि । तओ सो गंढूणं थेवं भूमि-भागं १ ठिओ तत्थेव णिलुको तीए रक्खगणिमित्तं । जाव थेववेलाए सा विज्जाहरी अणागच्छंतम्मि तम्मि एगागिणी हरिणि व्व दिसाओ पलोइउमाढत्ता । तयणंतरं च इत्थीसहावओ अंधारत्तणेण य रयणीए भयवेविरसरीरा मुक्कधाहं रोवि-उमाढत्ता । णिमुओ सडो पडिकमणणिमित्तुट्टियाए गणिणीए । उग्घाडिऊण य बलाणयकवाडं पुलइया, दिट्ठा य रूवोहा-मियसयलजियलोया अहिणवुत्तिमण्णजोव्वणा करुणं सदुक्खं दीणं रुपन्ती कयलीपत्तं व वेविरसरीरा एगागिणी रमणी । दट्ठण य पुच्छिया—पुत्ति ! किं निमित्तमेयं सदुक्खं रुपसि ? कुओ वा एगागिणी इह समागय चि । तओ तीए रुपन्तीए चेव साहियं जहा—भगवइ ! भत्तुणा सह वेयड्डाओ अहं समागया, सो य मं इहं मोत्तूण पाणियकज्जेण गओ, तस्स य महती वारा गयस्स, ण य सो सायत्तो मह विओगमेदहमेत्तं सहिउं समत्थो चि, ता केण वि कारणेण होयव्वं ति अइ-

१ आयपणं सु । २ मलियवरवदणं सु । ३ वेयड्डइइसिं सु । ४ चउमेणोयसरि(१२)सं जे । ५ कंठगयं जे । ६ तो गं

७ धिओ सु । ८ भाहा सु । ९ पुत्त । जे ।

उत्तम्मइ मे हिययं, ता भगवइ ! छिज्जंतीव मे बंधणाइं, सीयंति अंगाइं, ण पेच्छन्ति लोयणाइं, फुट्टइ सीसं, ण बहंति पाया, ण सकेमि पाणे भारिउं, ता परिचायउ भयवई । तओ भणियं गणिणीए—पुत्त ! पविससु ता पडिस्सए, समागमिस्सइ ते भत्ता इहेव चिट्ठंतीए, ता वीसत्था होहि, वक्कयपाया रयणी, ण एत्थ णयरे दुट्ठबुद्धिपुरिसो अत्थि जेण अकुसलमासंकिज्जइ, जइ यं थेववेलाए णांगमिस्सइ ते भत्ता ता गवेसइस्सामि अहं ति, तुमं पुण पविसिऊण पडिस्सयं वीसत्था चिट्ठसु चि । एवं महुरवयणेहिं संठविऊण पवेसिया ।

अवकंतो य सो जुवाओ पविट्ठं जाणिऊण गिययजायं ति । कओ य तेण वावणगवेसो । चिट्ठइ य तिणि विजायाओ पतिदिणं पेच्छन्तो । अक्खिच्चं च णयरं तेण वामणगरूवधारिणा । को वि मेएण, अण्णो चित्तकम्मेण, अवरो वीणाविणोएण, एवं च तेण सव्वकलापारेण जो जस्साहिप्पाओ तमणुयत्तमाणेण सव्वमेव णयरं वसीकयं । राया वि ईसाणचंदो हयहियओ कओ ।

इओ य सा विज्जाहरी पुच्छिया पियदंसणाए अणंगसुदरीए य जहा—केरिसो तुह भत्ता ? । साहियं तीए जहा—मुखो । तओ एगीए वण्णेण विसंवयइ, वीयाए सिंघलदीववत्थव्वत्तणेण उवासगतणेण य । तओ य सा गणिणीए अणुसासिया तहेव तहिं सद्धि पढन्ती तवचरणरया चिट्ठति । ताओ य तिणि वि जणीओ सरिसाओ, वएणं रूवेणं विण्णाणेणं सीलेणं समसुह-दुक्खत्तणेणं ति । जाओ य लोयवाओ जहा—तिणि वि तवचरणरयाओ, गेयाइए विण्णाणे ण एए (? या) सिं कोइ सरिसओ चि, ण य पुरिसेण केणइ सद्धि जंपन्ति चि ।

अण्णया य रायत्थाणीए कहा पयट्टा जहा—एत्थ णयरे पडिस्सए अतीवरूवस्सिणीओ तिणि जुवईओ पयावइणो सम्माभासफलं [व] चिट्ठन्ति, ण य ताओ कोइ पुरिसो बोल्लावेउं समत्थो चि । तओ भणियं वामणणेण—अहं परिवाडीए बोल्लावेमि, पेच्छइ मह सामत्थं । ति भणिऊण कइवयपढाणैरवरइपुरिसाहिट्ठिओ गओ साहुणीपडिस्सयाभिमुहं । लग्गाओ य णयरलोओ मग्गओ । तओ पविसंतेहिं ठविओ वारिम्म वारवालिओ । सिकखाविया य तेण सहेज्या जहा—तुम्हेहिं कहाणयं तत्थगएहिं अहं पुच्छियव्वो चि । एवं संपहारेऊण गओ पडिस्सए । पडिओ पाएमु वामणओ, भणियं च तेण—

साहेइ दंसणं चिय देव ! तुहं वीयराययमणयं । अन्तोक्कलसमणाणं ण एरिसा सोमया भणिया ॥ ५८ ॥

पायवडणुट्ठिणं पुणो वंदियाओ गणिणीपमुहाओ अज्जाओ । भणियं च—

परवावारनियत्ताण णवर एयाण जीवियं सफलं । सयलमुहवीयभूया धम्ममती जाण विप्फुरइ ॥ ५९ ॥

तओ एवमादि एसंसिऊण उवविट्ठा देवउलमंडवम्मि । समागयाओ य गणिणीए सद्धि वामणयकोउयाखित्तहिययाओ पियदंसणा-अणंगसुंदरि-अणंगमइसमेयाओ सव्वाओ साहुणीओ, उवविट्ठाओ य । भणियं च वामणेणं—जाव राया मुहासणत्थो भवइ ताव इह चेव ठिया केणइ विणोएण चिट्ठामो चि । तओ महल्लएहिं भणियं जहा—साहेहि किंचि सकोउयं कहाणयं ति । तेण भणियं—किं कहाणयं साहिज्जउ उयाहु वित्तगं ? ति । तेहिं भणियं—को उण विसेसो ? । तेण भणियं—अं चिरंतणपुरिसचेट्ठियं अचन्तमपक्कखं तयं कहाणयं, जं पुण संपयं चेव वित्तं, अज्ज वि साहणाणि पक्कखाणि तं वित्तयं ति । तेहिं भणियं—वित्तगं चेव सकोउयं साहेसु । वामणेण भणियं—अवहिया मुणइ जहा—

अत्थि तामलित्ती णाम णयरी । तत्थ य उस्सहदत्तो णाम सेट्ठी । तस्स पुत्तो वीरभट्टो णाम । अण्णया य उस्सभदत्तो पोमिणिखेडं णयरं गओ । तत्थ तेण सागरदत्तस्स भूया पियदंसणा णाम दिट्ठा । पुत्तत्थं जाइया । वत्तो य विवाहो काल-विहवाणुरूवो । गया य सणगरं वहुं वेत्तुणं । अण्णया य रयणीए चरिमजामम्मि उदयच्छिवणिमित्तं

उट्ठिओ वीरभदो । उट्ठेणेण य कइयवपमुत्ता परिहासपुब्बं उट्ठविया पियदंसणा । तीए भणियं—किं मं कयत्थसि ?, सिरं मे चाहइ ति । तेणं भणियं—कस्स तुमए अब्भइयं दिट्ठं ? ति । तीए भणियं—तुज्झ चेव । किं तं ? । जं महुरा वाणी । किं ? किं) महं साऽपुब्बा [अण्णेसिं] णासि ? ति । तीए भणियं—आसि अण्णस्स, ण उण मज्झोवरिं ति । एवं च कोऊण परिहासं उट्ठिओ, कयमुत्तियकरणिजं । तओ परिणयप्पायाए रयणीए सुहपमुत्तं पियदंसणं जाणिऊण उट्ठिओ वीरभदो । परिहियाओ छक्खणाओ पाणहियाओ । पैरि[णि]हियाइं अट्ठप्फालाइं । णिग्गओ गेहाओ ति । तओ भणियं वामणेणं जहा—राउले उस्सरो भविस्सति, ता गच्छम्ह ।

एत्थंतरम्मि लज्जं मोत्तूण भणियं पियदंसणाए—साहेहि ताव कहिं पुण सो गओ ? ति । वामणेण भणियं—ण अम्हे परमहिहाहिं सद्धिं संलावं करेम्ह । तीए भणियं—जाणियं तुह लोयाओ चेव संदत्तणं, ता चइऊण कइयवं भणियं फुडं साहसु, तुह वयणे मह जीवियं ति । पुणो भणियं वामणगेण—पच्चूसे कहिस्साम्मि । ति भणिऊण णिग्गओ पडिस्सयाओ । कहियं जहट्ठियं राइणो पच्चइयपुरिसेहिं । विम्हिओ राया । पुणो पच्चूसे तेणेव विहिणा गंतूणं बोद्धाविया अणंगसुंदरी । तइयदिवसे अणंगमइ ति । विम्हिओ राया वामणगवइयरेणं ति । तओ एस वामणओ तुज्झ जामा-उओ, तिण्ह वि जणीणं भत्ता ।

पेयं सुणिऊणं वंदिओ गणहरो वामणेणं । भणियं च—भयवं ! सव्वं सव्वमेयं जं भयवया समाइट्ठं, ण तहा अहं सुमरामि जहा भगवया साहियं ति । एवं साहिऊण उट्ठिओ गणहरो ।

गओ य वामणगेण सद्धिं सागरदत्तो पडिस्सयं । दट्ठूण तिणि वि जणीओ विम्हउप्फुल्ललोयणाओ सहस ति समागयाओ वामणगसमीवं ति । सागरदत्तेण भणियं—एस तुम्ह भत्ता । तहिं भणियं—कहिं चिय ? । तेण जहिट्ठियं साहियं । विम्हियाओ सह गणिणीए तिणि वि जणीओ । वामणेण य अन्तो पविसिऊण अवणीयं वामणत्तणं । कओ य वेसो जारिसो अणंगसुंदरीए दिट्ठो ति । तयणंतरं च सो वि अवणीओ, ठिओ साहाविण्ण रूवेण । पच्चभिण्णाओ पियदंसणाए अणंगमतीए य । गणिणीए भणियं—धम्मसील ! किमेयं ? ति । “तेणावि य णिययाभिप्पाओ साहिओ जहा—कीडाणिमित्तमहं गेहाओ णिग्गओ, तओ मए एवं कीडियं ति । गणिणीए भणियं—

वच्चइ जहिं जहिं चिय वेत्तुं धण्णो सुधम्मपच्छयणं । पावइ तहिं तहिं चिय सुहमउलं णत्थि संदेहो ॥ ६० ॥

दुक्खददुयाण सुहवावडाण जीवाण जीवलोगम्मि । हांति जहिच्छं भोगा सुपत्तदाणाणुहावेणं ॥ ६१ ॥

पुणो भणियं—गंतूणं तित्थयरं पुच्छम्ह “किमणेण जम्मंतरे कयं ?” ति । तओ वीरभदो सभज्जाओ समुरेण य सागरदत्तेण समेओ गणिणीए सद्धिं गओ तित्थयरसमीवं । वंदिऊण य पुच्छिओ भयवं—भयवं ! किं मए पुच्चभवे सुहमायरियं ? ति । भयवया भणियं—सुणसु मज्झ वयणं ति,

इओ ‘पंचमे भवे पुव्वविदेहे उज्झियरायसिरिपरिभोगस्स गहियपव्वज्जस्स उवचियतित्थयरणाम-भोत्तस्स चाउम्मासियस्समणसमचीए पारणगणिमित्तं पविट्ठस्स रयणपुरणिवासिसेट्ठिपुत्तेण तए जिणयासाहिहाणेणं विउलेण अण्ण-पाणेण पारणगं दिण्णं । तप्पुण्णाणुहावेण ये वंभलोए उववण्णो ति । तत्थ य भुंजिऊण भोए चुओ समाणो जंबुदीवे दीवे एरवए वासे कंपिल्लणयरे महि(हे)सरस्स पुंत्तत्तेण उववण्णो । तप्पुण्णाणुहावेण य संजायरिद्धि-रूवाइ-सओ सावगत्तणं पालिऊण अच्चुए उववण्णो । तओ चुओ इहभवत्तणेणं उववण्णो ति । तओ सुपत्तदाणाणुहावेण बहुभवेसु भोगा जंतूणं हवंति ति ।

१ काठं १^१ सू । २ उट्ठिया सू । ३ परिहियाइं जे । ४ समुत्तावं जे । ५ एवं सू । ६ तुमाणं जे । ७ तेण वि जे । ८ तइए सू । ९ य बहुभवेसु भोगा जंबुवण्णो ति तत्थ जे । १० पुत्तत्तणेणं जे ।

एवं साहिणं भगवत्ता बहूणं सम्मचल्लुगयं, वियाल्लो कम्मरासी, अब्भुवगयं वयगहणं, कया सुपत्तेसु दाणाइयुद्धिं चि ।

एवं अरतित्थियरो बोद्धिज्जं भवियकमलायरे, विहरिज्जं केवलपरियाणं सम्मेयसेलसिहरं गंतुणं सिद्धो चि ॥

इति महापुंरिस्सचरिए अरत्थियरस्स [चक्कवट्टिस्स य] चरियं सैमत्तं ॥ ३४-३५ ॥

+ :- : X : - - +

[३६-३७ पोंडरीयवासुदेव-आणंदवलदेवाण चरियं]



णमो सुयदेवया ॥

अरतित्थयरानंतरं पुंडरीओ अद्वचकवटी समुप्पणो जहा तहा भण्णति—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कंप्पिल्लपुरं णाम णयरं विणिज्जियतियसा-ऽमुर्दिणयरसोहं सुविभत्त-
तिय-चउक्क-चचरं । तत्थ य राया महासीहो(सिवो) णामं । तस्स णंदिणीए महादेवीए आणंदपुत्ताओ उवरिं सत्तमहा-
सुमिणसुइओ पोंडरीओ समुप्पणो अद्वचकवटी । ते य आणंद-पोंडरीया एगूणतीसधणुसुया पंचसद्विवरिससहस्साउया
महावल-परकमा भुंजंति भोए ।

पुंडरीएण य बलिणो पडिवासुदेवस्स महासंगामे तस्संतिएणेव चक्केण तालफलं व पाडियं सीसं । कओ जयजया-
रवो गहयले समुरा-ऽमुरेहिं नरेहिं । ओयवियं भरहद्धं । चक्काइयाइं समुप्पणाइं सत्त महारयणाइं । जाओ य सोलसण्हं
रायसहस्साणं महाराओ । जाया य वत्तीसइं सहस्सा वरजुवईणं । भुंजिऊण य भोए आउयमणुवालिऊण पुंडरीओ
अहोगामी संबुत्तो ।

आणंदो य तहाविहाणं आयरियाणं सगासे पव्वज्जाविहाणेणं खवियकम्मंसो अरतित्थयरतित्थे सिद्धि-
मणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिए पोंडरीयवासुदेव-[आणंदवलदेव]चरियं समत्तं ॥ ३६-३७ ॥

-:-+:-:-

[३८ सुभूमचक्रवट्टिचरियं]



कयसमकएण ण हु होइ णिब्बुई तेयणिज्जियजयाण । वायामेतुत्तविओ वि जेण पंचाणणो दलइ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे हेत्थिणाउरं णाम णयरं । तस्स य समीवाडइमज्झदेसम्मि तावसासमो । तत्थ य जमो णाम कुलवई ।

इओ य एगो वंभणदारओ ववगयजणणि-जणओ उच्छण्णसयलसयणो सत्थेण सह वचंतो सत्थाओ परिब्भट्ठो परिब्भमंतो य तवोवणं गओ । दिट्ठो य णेण कुलवती । समासासिओ आसीसाइणा कुलवइणा । संजायवेरग्गो य पञ्चा-विओ । जाओ य तावसाण्णदाणओ जत्तस्स सीसो णामेण अग्गिउ त्ति अओ जमयग्गि त्ति पसिद्धिं गओ ।

इओ य दोण्हं देवाणं सावग-तावसभत्ताणं धम्मपरिक्खावुद्धी जाया । सावगेण भणियं—जो तुम्हं पहाणो तवस्सित्त-णेण सो परिक्खिज्जउ । जमयग्गी य महातवस्सी घोरतवचरणरओ । गया य तस्संतियं । सउणरूवं काऊण धम्माओ चालिओ । सो य अणहियधम्मैसत्थत्थपरमत्थो तेसिं तिरियंचाणं वयणेण 'अपुत्तो' त्ति काऊण भज्जाणिमित्तं मि-हिलाणयरीए मिहिलाहिवइणो उवट्ठिओ । भणिओ य मिहिलाहिवई जहा—तुह सयं धूयाणं, ता मज्झ पयच्छमु एकं दारियं ति । तेण तवभएण भणियं जहा—जा चेव तुमं इच्छइ सा चेव मए तुहं पडिवण्ण त्ति । 'पंचतु(१०)वोवहएणं रेणुयाए फलं दंसियं । तीए य इत्थो पसारिओ । तेण य सा 'अहिलसिओ' त्ति काऊण रायाणुमतीए तवोवणं णेऊणं संवड्ढिया विवाहिया य ।

तीए य वहिणी हत्थिणाउरे णयरं कत्तविरिणं अज्जुणेणं विवाहिया ।

रेणुयाए य पुत्तो समुप्पणो । पिउणा य कमागओ परद्ध दिण्णो, परसुरामो त्ति णामं कयं ।

अणया य सा रेणुया हत्थिणाउरं गया वहिणीए पाहुणिय त्ति । तओ रंजसिरिलोहियाए मणुणयाए विसयाणं, चंचलत्तणओ इंदियाणं, अचिन्तसत्तित्तणओ कम्मपरिणईए वहिणिवइणो संपलग्गा । जमयग्गिणा य सपुत्ता हत्थिणाउराओ तावसासमं णीया । विण्णायवुत्ततेण य परसुरामेण माऊए सिरच्छेओ कओ । कत्तविरिणं य समा-गंतूणं परसुरामविरोक्खं वावाइओ जमयग्गी । परसुरामेण य जणयमरणपवणसंदीवियकोहग्गिणा वावाइओ कत्तविरिओ, अण्णे वि खत्तिया तम्मच्छरेण सत्त वारा वावाइया पुहतीए ।

कत्तविरियभारिया य तारा आवण्णसत्ता पलाणा एगत्थ तावसासमे भूमिहरए पसूया । जाओ य से दारओ उप्पण्णदसणो । 'धरणिमंडलं दाढाहिं गर्हितो समुट्ठिओ' तओ 'सुभूमो त्ति णामं कयं । तत्थेव संवड्ढिओ । तावससमीवे य सत्थग्गाहणं कयं ।

जोव्वणमणुपत्तेण य पुच्छिया जणणी—अंव ! को उण मज्झ पिय ? त्ति, केण वा कारणेण अहं भूमिहरगोयरो चिद्धामि ? । तओ एवं पुच्छिया जणणी दीहुण्हमुक्कणीसासा अणवरयपयट्ठवाहोहा रोविउं पयत्ता । तओ विम्भय-कोव-संकप्पावूरियमाणसेण दइयरं पुच्छिया जणणी । सा य तववयणेण अहिययरं जायदुक्खा सुइरं 'रोविऊण साहिउमाह-त्ता—पुत्त ! दुक्खभरदुक्खियसरीरा ण सकेमि साहिउं, ण य धरिउं गरुयमैण्णुभरपेहियं वाहुप्पीलं ति, तहा वि मुणसु—

१ दाहिणउरं जे । २ 'ममत्थपरं' सू । ३ पंचकुब्जोव' जे, पंचतत्त्वोपहतेन पंचतत्त्वोपहतेन वा, मथं मांसं मत्स्यं मुद्रा मैथुनं चेति शास्त्रानां पंच तत्त्वानि । ४ 'उरं णाम णयरं गया जे । ५ रायसिरं' जे । ६ संलग्गा सू । ७ 'ण्णदाणो(१०) सू । ८ सुभूमो सू । ९ संकमावू' सू । १० रोडऊण जे । ११ 'मणुत्थंभर' सू ।

तइ गम्भगए पुत्तय ! जअयग्गिसुएण परसुरामेण । तुज्झ पिआअरुणेणं रंभाखंभो व्व परसुहओ ॥ २ ॥
 पडियम्मि तम्मि पुत्तय ! हादारववहलवहिरियदियन्तं । अंतेउरं परुणं तह जह वणदेवेयाहिं पि ॥ ३ ॥
 तव्विणिवायाणंतरमरिवहणुज्जयजलन्तपरसुम्मि । तह सेसखत्तिएहिं पि तम्मि सलहत्तणं पत्तं ॥ ४ ॥
 परसू य तस्स पुत्तय ! अहियं पज्जलइ खत्तियासण्णे । विणिवाएइ कयंतो व्व णिहओ तक्खणं चेव ॥ ५ ॥
 अहमवि गम्भस्स दहं संरक्खण-तप्परायणा भीया । अडवीए तवोवणकुलवइस्स सरणं गया दीणा ॥ ६ ॥
 तेण वि करुणागयमाणसेण विण्णायवइयरत्तणओ । काऊण भूमिहरयं एवं संरक्खिया पुत्त ! ॥ ७ ॥
 जाओ सि तुमं पुत्तय ! कुलवइणा रक्खिओ बहुपयारं । संवडिहओ कमेण य एहिं तं कुणसु जं जुत्तं ॥ ८ ॥

तओ तमायण्णिऊण वइयरं गैरुयजायहिययावेएणं सुभोमेणं [पुच्छियं—] अम्ब ! काहं पुण सो मह जणयवावायगो चिट्ठइ ? । तीए भणियं—पुत्त ! आसण्णम्मि णयरम्मि चिट्ठइ, तेण य किल संखाजाणत्थं विणिवाइयखत्तियदाढाणं थालं भरियं, साहियं च तस्स नेमित्तिएणं जहा 'जो एयाओ पायसीहूयाओ सीहासणोवविट्ठो भक्खिस्सति सो तुज्झ वहगो' ति, तेण वि कओ सत्तागारमंडवो, ठवियं च तस्स मज्झदेसम्मि सीहासणं, तयासण्णे य थालं ति, 'जेमावेइ पदिदिणं बंभणे, रक्खावेइ य तं सत्तागारमंडवं ति । तओ तमायण्णिऊण असहंतो जणयवेरियं भुयवलत्थंभिओ य गओ णयरिं । विट्ठो य सत्तागारमंडवो, अवि य—

सीहासणे णिसण्णो तुरियं विदवियरक्खयसमूहो । उदयधराहरसिहरे व्व दिणयरो वडिहयपयावो ॥९॥
 लहुविग्गहो वि तेएण जिणइ जेयव्वमरिवलमवस्सं । किं तमनियरं सुरो ण हणइ तव्वेलजाओ वि ? ॥१०॥
 सीहासणे णिविट्ठो पेच्छइ थालम्मि ताओ दाढाओ । परमण्णसण्णिहाओ विणिवाइयतुल्लसंखाओ ॥११॥
 अह भक्खिउं पयत्तो देवयकयपायसो व्व भोगाओ । रयणुज्जोइयभुयणो फणि व्व तव्वेलदुप्पेच्छो ॥१२॥
 तौ साहियं तुरंतेहिं हित्थियएहिं परसुरामस्स । आरक्खियपुरिसेहिं हयविहएहिं चे तव्वेलं ॥१३॥
 जह "देव ! कोइ बालो केसरिपोओ व्व णिब्भओ धणियं । वित्तासिऊण अम्हे उवविट्ठो आसणे पवरे ॥१४॥
 तइ ताओ दाढाओ जाओ ठेवियाओ पवरथालम्मि । [..... ॥१५॥
] । अइदारुणो सुराण वि दुप्पेच्छो बंभणायारो" ॥१६॥

अह तव्वयणाणंतरमवहारियवरणिमित्तसंदिट्ठो । कुविओ समागओ तम्मि मंडवे परसुरामो ति ॥१७॥
 सीहासैणे णिविट्ठो दिट्ठो रुट्ठेण परसुरामेणं । लीलाए भुंजंतो सीहो व्व पसंतवावारो ॥१८॥
 अह दट्ठण "सुभूमं णिब्भयमविसंकमुज्झयाडोवं । तो भणति परसुरामो सककसो णिट्ठरं वयणं ॥१९॥
 "रे रे बंभणसिसु ! वडुय ! केण दिण्णं वरासणं एयं ? । जेण "निसण्णो, विज्जइ दुण्णयणिट्ठवणपी(वी)यं ते" ॥२०॥
 एसो य मज्झ परसू खत्तियवावायणम्मि दुल्ललिओ । चिलिसाइ-कुरुवैहेणं विसेसओ डोडुजाईए ॥२१॥
 तुह छिविउं पि ण जुज्जइ णरउट्ठियं, किं पुणो उ भक्खेउं ? । 'बंभणवडुओ' ति तुमं लक्खिज्जसि जइ इमं सचं ॥२२॥
 मज्झ भुओ वरखत्तियदुहमणिहारणेकदुल्ललिओ । लज्जइ सो सोत्तियबंभणेसु दीणेसु पहरंतो ॥ २३ ॥
 अह खत्तियजाईओ भयकयबंभणसमुज्जलायारो । सुकुलुग्गयाण संपइ ददयरमणुकंपणिज्जो सि ॥ २४ ॥
 चइऊणमसुइमेयं णरट्ठि विउसेहिं गरहियं एयं । भुंजह विविहाहारं मह सत्ते मोरकुल्लाप ॥ २५ ॥
 अह जुज्झिउं पि सामत्थमत्थि भुयवलपरकमत्तणओ । तह वि "धिण चिय मुकाउहम्मि मह कीरै तुमम्मि ॥२६॥
 जे समुहागयदट्ठोद्विभिउडिओहरियमंडलग्गेसु । पहरंति दहं पुरिसेसु णवर ते होति सप्पुरिसा" ॥ २७ ॥

१ देवएहिं जे । २ अडवीए जे । ३ एणं सू । ४ गुरुजाय" सू । ५ पुत्तय ! सू । ६ जमावेइ सू । ७ "सणोवविट्ठो पेक्खइ थालट्ठिवाओ दा" जे । ८ भक्खियं जे । ९ "सो य भो" जे । १० तो जे । ११ ति सू । १२ थवियाओ जे । १३ "सणोवविट्ठो जे । १४ सुभोमं जे । १५ विसण्णो सू । १६ ति जे । १७ "वट्ठेण वि विट्ठे" जे । १८ षण जे । १९ किज्जइ जे ।

इय एवमादि बहुयं भणमाणं णिट्ठुरं परसुरामं । पडिभणइ तं 'सुभूमो वयणमणग्यं भरसहं च ॥ २८ ॥
 तह चेव पवरसीहासणट्ठिओ णिब्भओ अणुत्तालो । रिबुवयणमसहमाणो जुत्तिघडन्तं इमं भणइ ॥ २९ ॥
 "परिदिष्णासणगहणं ण जुत्तमेयं परकमधेणाणं । किं कोइ कुणइ केसरि-करीण मयजूहसामिचं ? ॥ ३० ॥
 काऊण दुक्कयं होइ लज्जिओ णवर सप्पुरिसवग्गो । तं पुण तं चिय साहसि दाढाहिं थालणिमियहिं ॥ ३१ ॥
 दाढाओ माणुसेणं दुप्परियल्लाओ भक्खिउं मूढ ! । मह पायसं विइण्णं ति देवयाए पसाएणं ॥ ३२ ॥
 ण य होमि वंभणो वि हु तुह वडणुज्जयमती इहं आओ । संवडिडिओ मि आसमपयम्मि तेणेरिसागारो ॥ ३३ ॥
 णियहत्थ चिय सुहडाणमाउहं णारसिंहदिट्ठंतो । कावुरिसहत्थपत्तं वज्जं पि णिराउहमवस्सं ॥ ३४ ॥
 सेसवियप्पा ण हु संभवन्ति पुरिसम्मि धुयवत्थंभे । किं बालो चिय सूरुओ ण हणइ घणतिमिरपत्थारिं ? ॥ ३५ ॥
 ता कुणसु पोरुसं, गेण्ह आउहं संपयं चिय ण होसि । दिट्ठिसमणन्तरं सुवुरिसाण महकज्जणिप्फत्ती ॥ ३६ ॥
 जं णिहओ तइ समरंगणम्मि खत्तियणरो महावल्लवं । अज्जुणकयाहिदाणो सहस्सवाहू मेहाधीरो ॥ ३७ ॥
 तस्सज्जुणस्स पुत्तो वरवाहूहो(?) व्व पुणरहं जाओ । णिहणामि वैडरियं तं णिस्सं जइ विससि पायालं ॥ ३८ ॥
 णिकरवत्ता तइ पुहई वाराओ सत्त किल कया एसा । तुहकयतिउणेण महं पसमइ कोवाणलो णवरं" ॥ ३९ ॥
 इय भणियमेत्तपज्जलियकोवाणलज्जोतिओ परसुरामो । सज्जीवचंडकोयंडवाणणियहं तओ मुयइ ॥ ४० ॥
 पडिखलिया तेणं चिय थालेण सरा सुभोमणरवइणा । गेण्हइ य परसुरामो वि परसुयं कोवपज्जलिओ ॥ ४१ ॥
 जो पुर्वि खत्तियदंसणिधणुव्विडिमतेज्जिओ जलइ । सो णिप्पमो त्ति कलिऊण पुलइओ परसुरामेण ॥ ४२ ॥
 णिज्झाइऊण सुइरं 'किं किं एयं?' ति आउलमणेण । तह णिप्पमो वि मुक्को वरपरस्स परसुरामेण ॥ ४३ ॥
 गंतूण चलणदेसम्मि सो सुभूमस्स पडति भूमीए । असमाणियसामियपेसणो व्व लज्जाए सप्पुरिसो ॥ ४४ ॥
 दट्ठूण य तं परसुं अह [य] सुभूमो वि कोहपज्जलिओ । गेण्हइ तं चिय थालं आउहकज्जम्मि व्हसज्जो ॥ ४५ ॥
 अह तं पि तेण गहियं होइ सहस्सारमवितहं चकं । तेएण पज्जलन्तं तो मुक्कं परसुरामस्स ॥ ४६ ॥
 तेणाक्कि तक्खणं चिय जालोलिकरालिएण चक्केण । तालफलं पिब छिण्णं पडइ 'सिरं परसुरामस्स ॥ ४७ ॥
 पडियम्मि परसुरामम्मि तो सुंभूमेण तेस्स रोसेण । वाराओ एकवीसं कया मही वम्मणविहूणा ॥ ४८ ॥
 भोत्तूण भरहवासं छक्खंडं वडिडऊण य पयावं । औउयस्खयम्मि पत्तो अहोर्गतिं तह सुभूमो त्ति ॥ ४९ ॥

इति महापुरिसचरिए सुभूमि(म)चक्रवर्तिचरियं सैमत्तं ॥ ३८ ॥

—::—::—

१ सुभूमो जे । २ 'धरणं' सू । ३ किं कुणइ कोय केसरि' सू । ४ धुयवत्थंभो सू । ५ महावीरो जे । ६ वहरवत्तं निस्सस्यं
 अह वि पायाले जे । ७ 'जोविओ जे । ८ कोवप' जे । ९ सिरं णवर धरणीए सू । १० सुहोमेण सू । ११ तस्स रामस्स जे । १२
 वाराए सू । १३ आउक्खयम्मि जे । १४ परिसमत्तं जे ।

[३९-४० दत्तवासुदेव-णंदिमित्तबलदेवाण चरियं]



अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहं नाम णयरं । तत्थ य राया अंगिसिरो(हो) नाम । तस्स वसुमती नाम भारिया । णंदिमित्तो नाम बलदेवो समुप्पण्णो, तस्सोवरिं सत्तमहामुमिणसूइओ दत्तो समुप्पण्णो । ते य दोण्णि वि छल्लीसधणुमुया भुंजंति भोए । तस्स य सत्तू पल्हाओ नाम महाबल-परक्कमो ।

अणया य दत्तस्स पल्हायस्स य पयट्टमाओहणं । तओ कुविणं पल्हाएण दत्तविणासणत्थं पेसियं देवयापरि-
ग्गहियं चक्कं, तं च पैयाहिणीकाऊण दत्तस्स मुकलत्तं पिव मुट्ठीए ठियं । तओ दत्तेण कोवाणलपूरियमाणसेण तस्सेय
विणासणत्थं पेसियं । तओ सकम्मपरिणामेण विय विणिवाइओ पल्हाओ । ओयवियं दत्तेण भरहद्धं । तओ बावीस-
वरिससहस्से आउयमणुवालिऊण सकम्मचोइओ अहोगामी दत्तो संवुत्तो ।

णंदिमित्तो य बलएवो कम्मक्खयं काऊण सिद्धो ति ॥

इति महापुरिसचरिए वासुदेवदत्तस्स णंदिमित्तबलएवस्स चरियं समत्तं ॥ ३९-४० ॥

[४१ मल्लिसामिचरियं]

÷—×—÷

अरतित्थयराणंतरं मल्लिसामी वाससहस्सकोडीए समइकन्ताए पणपणवाससहस्साऊ पणुवीसधणमुओ जहा समु-
प्पणो तहा भण्णति—

देवायत्ते जम्मम्मि कह णु गरुयाण फेरइ माहपं ? । ववसायसहाया तं कुणंति ते जं जणब्भहियं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे अववरविदेहे खेत्ते मंदरस्स पच्चत्थिमेण, सीयाए महाणदीए दाहिणेणं, णिसहस्स
कुलपव्वयस्स उत्तरेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, सीओयावणमुहस्स पुव्वेणं सिलावतीविजयं बहु-
णयर-कैव्वडोवसोहियं । तत्थ य वीयसोया णाम णयरी णाणाविहरयणपासाओववेया । तत्थ य बलो णाम राया,
धारिणी अगमहिसी । तीए महासुइणसुओ महाबलो णाम पुत्तो समुप्पणो । पंचभोईपरिबुडो बडिडओ, पत्तो य
जोव्वणं । विवाहिओ कमलमिर्रि भज्जं, भोए भंजेइ ।

अणया य बलो विण्णायसंसारसहायो महाबलं रज्जे अहिसिंचिऊण तहाविहाणं आयरियाणं सयासे पव्वज्जा-
विहाणेणं खवियकम्मो मोक्खं गओ त्ति ।

महाबलो वि राया सहपंमुकीलणजायगरुयवीसंभेहिं छहिं धेयंसएहिं समेओ रज्जं पालेइ । तओ सरंते संसारे,
गच्छंतेमु दिवसेमु, सत्तण्ह वि जणाणं जिणवयणं भावेमाणानं समुप्पणपुत्तभंडाणं वेरग्गसमावण्णाणं संकेओ जाओ
जहा—सत्त वि जणा सममुहमुहिया समदुक्खदुक्खिया, जयेगो काही तमेव णिव्वियारं सव्वेहिं पि कायव्वं ति ।

एवं च कयसंकेयाणं परितणुयविसयाणं आयरिया समागया । तयन्तिए णिसुओ जिणएसिओ धम्मो । समुप्पण-
वेरग्गा य पव्वइया सत्त वि जणा, अहिज्जियं मुत्तं, समुज्जया य तवोकम्मे । महाबलो य तेसिं छण्ह वि जणाणं
मायाए अहिययरं तवोविहाणं करेइ । णिव्वचित्तियं च तेण इत्थीविवागफलं मायापचइयं कम्मं, वद्धं च तित्थयरणा-
मगोचं ति । जहुत्तविहारं विहरिऊण संलिहियदेहा कालं काऊण सत्त वि जणा समुप्पण्णा वेजयन्ते विमाणे किंचूण-
तेत्तीससागरोवमाऊ, महाबलो य संपुण्णतेत्तीससागरोवमाओ त्ति ।

तओ पालिऊण अणुत्तरविमाणाउयं पढमं छ वि जणा चुया, उववण्णा य उचिएसु स्वत्तियकुळेसु जंबुदीवे दीवे
भारहे वासे ।

तओ महाबलजीवो महिलाए णयरीए कुम्भो णाम णरवती, तस्स पहावतीए भारियाए उवलदचोदस-
महासुविणाए फग्गुणमुद्धचउत्थीए अस्सिणिमुवगए ससहरे चैइऊण विमाणमुहं परलोयकज्जुज्जओ कुच्छिसि सैमुववण्णो
त्ति । तओ णवण्हं मासाणं अट्ठमाणं राइंदियाणं मुंपडिपुण्णाणं सुहंसुहेण मग्गसिरमुदेकारसीए अस्सिणिणक्खत्ते
पसूया पहावती । इत्थीविवागमायापेच्चइयकम्मोदणं य अवस्समणुहवियव्वेणं तित्थयरणाभोयणं वि य तब्भावाणु-
हावेणं अच्छेरयभूओ इत्थीलिंगेणं तित्थयरो समुप्पणो । तम्मि य गव्वगए जणणीए वियसियमल्लरासी भयरंदाभोया-
यडिदयभमरउलो सुइणे दिट्ठो त्ति, अओ मल्लि त्ति णामं कयं ।

संवडिडओ कमेणं जोव्वणमणुपत्तो । आगया य वरया छ वि जणा । मल्लिसामिणा य ओहिणा अवगयपरमत्थे-
णं दवाविओ अप्पा पिउणा छण्ह वि जणाणं । काराविओ य महामंडवो । तस्स य मज्झदेसभाए अत्तणोऽणुरुवा कण-
यमती समाराविया पुत्तलिया । तीए य सिरदेसविर्वेरे पतिदिणं जमाहारमाहारेइ तं तत्थ थेवं थेवं लुहावेइ । तओ णिरुविए

१ कुरइ जे । २ सुहावयस्स सु । ३ "वक्खवो" सु । ४ "सुमिण" जे । ५ "धाक्प" जे । ६ वएंसएहिं सु । ७ "सुमिणाए" जे ।
८ "णिगए" सु । ९ चविऊण सु । १० समुप्पणो जे । ११ सुहपडिं सु । १२ "पव्वयकम्मोवणं" सु । १३ "रकम्मोदणं" जे । १४
"वेरेण पं" जे ।

लग्गदिवसे समागया छ वि जणा । आवासिया पचेयं दिण्णावासा । सदाविया य मंडवेस्स मज्झयारे । उग्घाडियं
सिरोछेड्डणयं कणगमयपुत्तलियाए । उ(त)यणंतरं च बहुदेवसियाहारगंधेणं समाउलीहूया सपरिवारा छ वि जणा । भणियं
च तेहिं—कओ एस अइदसहो गंधो ? । मल्लिसांमिमहंतगेण भणियं जहा—इमीए पुत्तलियाए उत्तिमंगविचरेणं पति-
दिणमाहारेण मल्लिसामिसमाएसेणं पक्खिप्पमोणेणं महाहारविवागेणमेस एवंविहो गंधो संभूओ । तओ ते गंधमसहमा-
णा गिग्गया मंडवाओ । सदाविया मल्लिसामिणा । दिण्णासगोवविद्धा भणिया मल्लिसामिणा जहा—“दिद्धा एसा कणग-
मयपुत्तलिया तुम्हेहिं, एसा अतीवसुखा वाहिं, अन्तो उण एवंविहा अमणुण्णगंधं ति । ता एवंविहेसु अमणुण्णेसु
सव्वासुइपहाणेसु भहिलाण सरीरेसु किमत्थि सोहणं ? । को वा विउसाण तेसु अणुराओ ? ति । अवि य—

जणणि-जणयाणममुइं णीसंदं पाविउण जो पढमं । पच्छा कलले-उच्चुय-मंसपेसिबूहकभूप्पणो ॥ २ ॥
जणणिकयाहारविपौरकलुसकयपाणवित्तिदियहं । अमुइम्मि गव्ववासे मुत्त-पुरिसाऽऽमयासब्भे ॥ ३ ॥
संवड्ढिओ कमेणं अमेज्झमज्झम्मि तकयाहारो । भरिओ अमुत्त-पुरीस-भेय-मंस-ऽट्ठि-रुहिराण ॥ ४ ॥
वैस-फेफसं-उंत-कालेज्ज-मज्ज-वीमच्छपिच्छलुत्तपुरिओ । देहो दुग्गंधपवाहणयरणिद्धवणसारिच्छो ॥ ५ ॥
तयमेत्तवज्झसारो अन्तो मुत्तं-उंत-विट्ठेपडहत्यो । कणयमयस्स सरिच्छो भज्झामेज्झस्स कलुसस्स ॥ ६ ॥
अमुइम्मि गलियवहुळिड्डयम्मि मूलुत्तरुज्झयगुणम्मि । देहीण हयसरीरम्मि को गुणो सइ कयग्गम्मि ? ॥ ७ ॥
मुइरं चिन्तिजंतं पि हयसरीरम्मि णत्थि तं किं पि । अवलम्बिउण जं फुरइ रायचित्तं मणुस्साण ॥ ८ ॥
इय णिव्वियारकणए विपरिणई होइ परिसाहारे । किं पुण मंस-ऽट्ठिय-रुहिरचिलिचिले हयसरीरम्मि ॥ ९ ॥
किंच—

जैलकलुसकलिलभरियंडसच्छडे लोयणम्मि रीयंधो । सच्छप्पयकमलदलद्विबभमुप्पेक्खणकवणिओ ॥ १० ॥
रुहिरमंसपेसीदलगावम्मावछाइए अहरे । परिणयविम्वफलुप्पेक्खणम्मि राईण विण्णाणं ॥ ११ ॥
समसिहरद्वियराईए दसणववपसजायभावाए । सियकुसुमकोपलुप्पेक्खणेण राओ परिफुरइ ॥ १२ ॥
मंस-ऽट्ठि-सिरा-चम्मावव(न)दसंपत्तभुयकरायारे । कंकेल्लियापलुवविण्णाणं णागरहियाण ॥ १३ ॥
कलिलाविलमंभुग्गेयपिंडखंडम्मि सिहिणजुयलम्मि । उत्तचकणयकलसोवमाणमण्णाणणडियाण ॥ १४ ॥
मुत्तंतामुइणिरुभरियदीयसरिसम्मि उँवरवियरम्मि । तिवलीरेहालंकियमुट्ठीगेज्जं ति^१ पडिहाइ ॥ १५ ॥
अमुइविणिग्गमणिद्धमणविवरदेसम्मि गुरुणियम्बम्मि । कंदप्पकेलिरइहरसरिच्छवुद्धी अहव्वाण ॥ १६ ॥
इय दीहद्विणिवेसियचम्मसिराजालचरणजंघासु । वरकमलदलंगुलिकरिकरोरुकरणी दुरन्ताण ॥ १७ ॥

अण्णं च—

विसयविसमोहियाणं रायमहागहपणद्वसण्णाणं । होइ पडणं णराणं अवस्स बहुवेयणे णरए ॥ १८ ॥

भणियं च—

अच्छड्डियविसयमुहो पडइ अविज्झायसिहिसिहाणिवहे । संसारोवहिवलयामुहम्मि दुक्खामारे णिरए ॥ १९ ॥
पे(पा)यकन्तोस्तथलमुहकुहुरुच्छलियरुहिरगंडसे । करवत्तुक्कचदुहाविरिकविक्किण्णदेहत्ये ॥ २० ॥
जंतंतरभिजंतुच्छलन्तसंसदभरियदिसिविरे । डज्झंतुव्विडिमसमुच्छलंतसोसद्विसंधाए ॥ २१ ॥
मुक्ककंदकडाहुकडंतदुकयकयन्तकम्मंते । सुलविभिण्णैक्खित्तुददेहणीयंतपग्गारे ॥ २२ ॥
वदंधयारदुग्गंधवंधणायारदुद्धरकिलेसे । छिण्णकर-चरणसंकररुहिरवसा दुग्गामेप्पवहे ॥ २३ ॥

१ 'यमज्ज' सु । २ 'छड्डयं' जे । ३ 'वाए । आहारगं' सु । ४ 'सामिणो महं' जे । ५ 'माणेणमाहारं' जे । ६ 'अइवखा' जे ।
७ 'महिलासं' जे । ८ 'सु रागो' ति जे । ९ 'लवडयं' सु । १० 'सिबूहं' जे । ११ 'मुप्पण' सु । १२ 'विहारं' सु । १३ 'वच-कोप्पसं' जे ।
१४ 'कालेय-मं' सु । १५ 'विदपं' सु । १६ 'जलजलसं' सु । १७ 'रायटो' सु । १८ 'रुहिरद्वमं' जे । १९ 'अवरवियरम्मि' जे । २० 'दु
सु । २१ 'करिणी' सु । २२ 'पेक्कतो' जे । २३ 'विभिण्णक्खि' सु । २४ 'मपवाहे' जे ।

गिद्धमुहगिद्धउक्खित्तबंधगोमुद्धकंदिरकबंधे । ददगहियतत्तसंडासयग्गविसमुक्खुडियजीहे ॥ २४ ॥
 तिकलंकुसग्गकट्टियकंटयक्खग्गजज्जरसरीरे । णिविसंतरे पि दुल्लहसोक्खे चक्खेवदुक्खम्मि ॥ २५ ॥
 इय भीसणम्मि णरए पढंति जे गरुयैविसयरायंधा । णारीण मणहुरुल्लावल्लोणयणेहिं वेलविया ॥ २६ ॥
 अण्णं च—

किं ण सरह जमणुत्तरविमाणमज्झट्टिएहिं सरिसेहिं । अम्हेहिं समणुहूयं परमत्थमुहं महग्गवियं ? ॥ २७ ॥
 दुक्खपडियारहेउम्मि तम्मि को विसयसंभवे सोक्खे । अणुबंधं कुणति णरोऽवसाणविरसम्मि संसारे ? ॥ २८ ॥
 जह गरुयतरणिसंतावताविओ पाविऊण सच्छायं । तग्गहणे ववगयदाहवेयणो मण्णइ मुहं ति ॥ २९ ॥
 अइदुसहसिसिरमारुयमुलुंकिओ पाविऊण पज्जलियं । जलणं पयद्वसीओ णट्टविवेओ मुहं मुणइ ॥ ३० ॥
 उंवरग्गिदे(१दा)हतवियाण कइ वि जइ भोयणं पि संपडइ । तो उवसन्तलुहाणं मुहमबुहाणं ति पडिहाइ ॥ ३१ ॥
 पामाए कररुहुल्लिहण-जलणपरितावणेहिं जं सोक्खं । तं तल्लाहे उवसमइ तत्थ कत्तोच्चियं सोक्खं ? ॥ ३२ ॥
 इय विण्णायसरूवा चइउं संसारहेउणो विसए । सिवमयलमरुयसोक्खं दुक्खविमोक्खं समज्जिणइ” ॥ ३३ ॥
 मुणिऊणममयभूयं ति मल्लितित्थयरमुहरसं वयणं । गल्लिओ मिच्छत्तमो पवणेण व मेहपत्त्यारी ॥ ३४ ॥
 अण्णुवगयसम्मचेहिं तेहिं भणियं-पणासिओ मोहो । तइ अम्हाणं गुरुणा पयडियसिवसोक्खमग्गेणं ॥ ३५ ॥
 इय जाव गरुयसंवेगभावपसरन्तमुहविवेयाणं । पसरइ परमत्थकहा पत्ता लोयन्तिया ताव ॥ ३६ ॥
 “जय जयवच्छल ! संसारसायरुत्तरण-त्तारणसमत्थ ! । तित्थं तित्थंकर ! करहि देव ! देवा-ऽसुर-गरत्थं ॥ ३७ ॥
 देविंद-चकि-चलदेव-वामुदेवत्तणाई पावेन्ति । जस्सऽणुहावेण णरा कमेण मोक्खं पि गयदुक्खा ॥ ३८ ॥
 अण्णो चिय कोइ महीय होइ सोहाणुणो पयट्ठंते । तुह भुवणेसर ! तित्थम्मि सोक्खसम्मत्तचीयम्मि ॥ ३९ ॥
 ता फुरइ मोहतिमिरं, ताव चिय णरय-तिरियगतिगमणं । ता मिच्छलंछियजणो, जा तुह तित्थं ण वित्थरइ ॥ ४० ॥
 तइ पयडिएण तित्थेण णाह ! णिरवायसोग्गपदेण । लंघंति मुहेणं चिय जीवा भवसायरमणंतं ॥ ४१ ॥
 छिंदइ विसमं पि विसं, अंगं निव्ववइ कोहतवियाणं । अवणेइ कलुसभावं, तित्थं तित्थंकर ! कयं ते ॥ ४२ ॥
 इय तित्थेसर ! करुणाए णाह ! णियकज्जसज्जओ होसुं । दुहियजणअण्णुद्धरणं जयम्मि तित्थं पयट्ठेसु” ॥ ४३ ॥
 एवं लोयन्तियदेवसंभुओ जणियजणमणाणंदो । दाऊण महादाणं णाहो पडिबज्जति चरिचं ॥ ४४ ॥
 पव्वज्जादिवसे चिय संभा(पा)वियदिव्वकेवल्लुज्जोओ । पव्वावेइ छ वि जणे अण्णे वि य गणहरणिमित्तं ॥ ४५ ॥
 ऊणं वाससैहस्सं सव्वाउं पालिऊण परियायं । सेलेसिविहाणेणं सिद्धो सम्मेयसेलम्मि ॥ ४६ ॥

इति महापुरिसचरिए मल्लिसामिणो चरियं सेंमत्तं ॥ ४१ ॥

—

१ “मुक्खुडिय” सु । २ “तर(र)णिरा” जे । ३ “बंध करेइ ण” जे । ४ “अणुलं(र) मुह” णिओ सु । ५ “उंवर” जे । ६ “हियवो वि” सु । ७ “सपत्तिओ” जे । ८ “मु” । तह यं जय” जे । ९ “सएयं स” जे । १० “परिसमत्तं” जे ।

[४२ मुणिसुव्वयसामिचरियं]

:÷:×:÷:

मल्लिसामिणो चउप्पण्णलक्खेहिं समइक्कन्तेहिं वासाणं तओ मुणिसुव्वयसामी तीसवाससहस्साऊ वीसइधणूमुओ य समुप्पण्णो । कहं ? भण्णति—

भुवणोयरम्मि वियडे भुवणव्भुद्धरणजायववसाया । उप्पज्जंति सइं चिय ते जेहिं जयं महग्ववियं ॥ १ ॥

अत्थि भारहे वासे रायगिहं णाम णयरं मुविहत्ततिय-चउक्क-चचरं कंचणभवणरयणोवसोदियं संचरन्तवेरविलासिणीरमणिज्जं विलसन्तमणहरजुंयाणजणगणाहिरामं धुव्वन्तभयवडौडोवचारुचामीयरदेवउलमालालंकिं सव्वायारकुलहरं, धम्मस्स आवासो, रइइयरइहरं, णिहीणं अक्खओ णिहि त्ति । तत्थ य विणिज्जियासेसपडिक्खो सयलपयाणं पणइण य मित्तो मुमित्तो णाम णरवई । तस्स य वियसियपउमाणणा पउमावती अगमहिंसी । तीए सद्धि राइणो विसव्वमुहमणुहवन्तस्स वच्चन्ति दियहा, सरइ कालो । अण्णया य—

गुरुसजलजलहरोरुद्धरकरणिकरसमयरयणिम्मि । अणवरयथोरधारामुहलियवप्पीइयसयम्मि ॥ २ ॥

कसणवणभामुरोरुपसरियासेसवहिरियदिसम्मि । विज्जुज्जोउज्जोइयकाणण-महि-महिहर-णहम्मि ॥ ३ ॥

खगविज्जुपदीवपणट्टवहलपुणरुत्तमिलियतिमिरम्मि । मियलोय(?) संपुग्घाडणाहि णिच्चं रमंतम्मि ॥ ४ ॥

इय एरिसम्मि काले सावणमासन्तपोणिमतिहीए । सवणम्मि य णक्खत्ते पेच्छइ पउमावती मुमिणे ॥ ५ ॥

तओ कमेण पेच्छिऊण चोइस वि महामुमिणे पउमावती विउद्धा । साहिया य पट्टवयणाए महारायस्स । तेण वि य समाणंदिया पुत्तजम्मेणं ति । भणिया य—मुंदरि ! भविस्सति ते पुत्तो तेलोक्कचूडामणिभूओ सयलणरा-उमरकिरीडमणि-मसिणियपायवीहो । तेण य वयणेण आणंदिया पउमावती अहिययरं परिओसमुवगया । तीए चेव रयणीए पाणयाओ विमाणाओ वद्धतित्थयरणामकम्मोदओ देवो चइऊण पउमावईए गव्वम्मि उववण्णो । वडिहओ य कमेणं गव्वो ।

तओ णवणं मासाणं अद्धट्टमाणं राइंदियाणं [समइक्कंताणं] जेट्टस्स बहुलट्टमीए सवणणक्खत्ते मुहंसुहेणं पक्खया पउमावती । जाओ य णिरुव्वमपियंगुसरीरो दारओ । कओ य मुरिंदेण जम्माहिसेओ । 'गव्वत्थेण भगवया मुणि व्व जणणी सोइणवया संजाय' त्ति काऊण भगवओ मुणिसुव्वओ त्ति णामं कयं । वडिहओ य कमेणं कयदारपरिमाहो अच्छिउमाहत्तो ।

तओ पालिऊण रज्जं मुणियसंसारसहावो जेट्टवहुलणव्वमीए कयसामण्णो विहरिऊण(?) रिओ) महियलं । रायगिह-वाहिरुज्जाणचंपगहेट्टट्टियस्स समुप्पण्णं दिव्वं णाणं वइसाहवहुलट्टमीए ।

तयजंतंरं च उप्पण्णदिव्वणाणो वोहंतो भवियकमलायरे धम्मं वागरमाणो गओ भरुयच्छं णयरं । चिरइयं देवेहिं समोसरणं पुव्वुत्तरे दिसाभाए । उवविट्ठो तम्मज्झयारम्मि देवविरइयसीहासणे भुवणगुरु । साहेइ जहट्टिए जीवादिए पयत्थे । एत्थन्तरम्मि समागओ णयराहिवती जियस्सत्तू नाम राया । सो य वंदिऊण भयवन्तं उवविट्ठो चलणंतिए ।

ताव य गणहरेण पुच्छियं—भयवं ! मुर-णर-तिरियगणपडहत्थम्मि समोसरणे एयम्मि किंपरिमाणेहिं भविय-जणेहिं अब्भुवगयं सम्मत्तं ? ति, परिचीकओ संसारो ?, भायणीकओ अप्पा जहुत्तरमुहाणं ? । भयवया भणियं—ण केणइ अउव्वेणं अस्सरयणमेगं मोत्तूणं ति ।

१ 'वरमणिर' जे । २ 'जुवाण' जे । ३ 'डाहोवं चार' जे । ४ 'सयय' सु । ५ 'मिलियलोय' सु । ६ 'संपुग्घाडणाहि' जे ।

७ 'णिच्चि' सु । ८ 'मुइण' जे । ९ 'णो' । तओ णवणं सु ।

तओ तमायणिऊण भणियं राइणा-कोऊहलपूरियसरीरा विज्जवेमि अस्सस्स वुत्तंतं, साहेउ भुवणगुरु । भयवया भणियं-भणसु । तेण भणियं-“एयम्मि अस्सरयणम्मि समारूढो वंदणनिमित्तं समागओ अहं । तओ दट्ठूण समो-सरणाडोवं अवइण्णो अस्साओ पायचारी संवुत्तो । ताव य सयलजणमणाणंदयोरिणी सजलजलहरोरालिगंभीरं संसार-चारगमोयावणकालघटं व सोऊण भगवओ वौणी आणंदजलभरियलोयणो णिच्चलकणजुयलो समुद्धसियरोमकूवो मउ-लियच्छो ठिओ कंचि कालं अस्सो । पुणो सणियं धम्मसवणदिण्णोवओगो समागओ समोसरणेतोरणपएसं । तत्थ य अउव्वरसविसेसमणुहवन्तो हिंसिऊण महुरसरं, पाडिऊण धरणियले अग्गिमजंघाजुयलं, ठविऊण सह सिरोहराए सिरं महियलद्धन्ते, साहेतो व्व हिययगयभावं कयपणामो तहट्ठिओ चेव अच्छिउमादत्तो । तओ तमेवविहं पेच्छिऊण विम्भिया अम्हे कोऊहलपूरियसरीरा समागया भगवओ समीवं । ता साहेउ भुवणगुरु किमेयं ?” ति । भयवया भणियं-सोम ! मुणसु,

अत्थि ‘पोमिणिखेडं णाम णयरं । तत्थ जिणधम्मो णाम सेट्ठी परिवसइ । तस्स य मित्तो सायरदत्तो सव्व-णयरप्पहाणो अपरिमियविहवत्तणेण विणिज्जियवेसमणो परोवयारी दीणा-उणाहवच्छलो चिट्ठइ । सो य पइदिणं जिण-धम्मसावगसमेओ गच्छइ जिणालयं, पज्जुवासेइ साहुणो, सुणइ धम्मं । अण्णया य आयसियसगासे जिमुया गाहा जहा-ओ कारवेइ पडिमं जिणाण जियराग-दोस-मोहाणं । सो पावइ अण्णभवे भवमहणं धम्मवररयणं ॥ ६ ॥

तओ तस्स वयणं पविट्ठं सव्वणविवदे, परिट्ठियं हियए, गहियं परमत्थवुद्धीए । तओ तेण काराविया जिणपडिमा कंचणमयी । महया विहवेणं णिव्वत्तिया पइट्ठावणविही ।

तेण य णयरवाहिरियाए पुत्तिं कारावियं रुद्धाययणं । तत्थ य पवित्तयारोयणदियहे लिंगपूरणणिमित्तं पुव्वसंचिया धियाइघडया मढाओ पव्वइएहिं णीणिउमादत्ता । ताव य तेसु घडेसु हेट्ठओ उदेहिया पिंडपिंडेसु लग्गा । तं च ते पव्वइयगा मग्गपडियं संचरन्ता विहवेन्ति उदेहेति । तओ सो कारुण्हियओ पोत्तंतेण साहरेइ । ताव य एकेण जडहा-रिणा उदेहियापुंजयं पाएण दलेऊण भणियं-सेयवडो विव जीवदयावरो संपयं संवुत्तो त्ति । तओ सो वणिओ विलक्खीहूओ परमायरियसमुहं पलोइउमादत्तो । तेण वि तव्वयणमव्वहीरियं ति । तओ तेण चित्तियं-ण एएसिं जीव-दयापरिणामो, ण मुहो अज्झवसाओ, ण धम्मचरणाणुट्ठाणं सोहणं ति । तओ उव्वरोहकयकज्जो अपत्तसम्मत्तरयणो महा-रंभसमेओ पयतीए दाणरूई, किंतु समुवज्जियविहवरक्खणपरायणो गिह-पुत्त-भंड-भज्जाइएसु कयममत्तो—

कइया वच्चइ सत्थो ? किं भंडं ? कत्थ केत्तिया भूमी ? । को कय-विकयकालो ?, णिव्विसइ(ई) किं केहिं केण ? ॥७॥

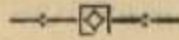
एवं अज्झवसायपरायणो मरिऊणभिहं घोडगत्तणेणमुववण्णो त्ति । एत्थ य मह वयणमायणिऊण पुव्वभवकय-पडिमाणुहावेण लद्धं सम्मत्तरयणं, भिण्णो कम्मगंठी, भायणीकओ अप्पा जहुत्तरमुहाणं ति । एयस्स पडिवोहणत्थं अहमेत्थ समोसरिओ त्ति ।

राइणा भणियं-भयवं ! कयत्थो एस, पत्तमणेण जं पावियव्वं, सयलजणसलाहणिज्जो एसो संपयं संवुत्तो त्ति । तयणंतरं च सो आसो बहूहिं सलाहिज्जमाणो णयणसहस्सेहिं पलोइज्जमाणो राइणा खोमेऊण सच्छंदपयारो कओ त्ति ।

भयवं पि विहरिऊण महियलं, तीससहस्साउयस्स सेसं मुणिऊण, गंतूण य सम्मेयैगिरिवरसिहरं सेलेसिविहाणेण खवियभवोवग्गाहिसेसकम्मंसो फग्गुणकिण्हवारसीए सिद्धिमणुपत्तो त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए मुणिसुव्वयतिस्थयरचरियं सैमत्तं ॥ ४२ ॥

[४३ महापउमचक्कवट्टिचरियं]

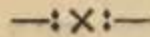


मुणिसुव्वयसामिकाले [महा]पउमचक्कवट्टी समुप्पण्णो । सो य^१ वीसइधणुसुओ तीसवरिससइस्साउओ । तस्स चरियं भण्णइ—

अत्थि इहेव जंजुदीवे दीवे भारहे वासे^२ वाराणसी नाम नयरी । तत्थ पउमो^३ नरादिवो । तस्स य जालाए महादेवीए चोदसमहासुमिणदंसणसंसूइओ महापउमो नाम पुत्तो समुप्पण्णो । तस्स य पिउणा समप्पियं रज्जे पाले-
तस्साऽऽउइसालाए उप्पण्णं चक्कयणं । ओयवियं भरहं पुव्वकमेण । तओ भोत्तूण भरहं छक्खंडं पि कमेण वहिइऊण पयावं, होऊण चोदसरयणादिवई, वत्तीसणरवइसइस्साण य नाहो, चउसट्टिसइस्साणं च रमणीणं नवमहागिही^४ य सामिओ, पालिऊण ये निययाउयकालं सकम्मपरिणामेण कालगओ^५ त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए महापउमचक्कवट्टिचरियं समत्तं ॥ ४३ ॥

पारमार्थिक — आचार्य श्री सुविद्यारामजी, बलराम



[४४-४५ रामबलदेव-लक्ष्मणवासुदेवाण चरियं]

:—:×:—:

मुणिसुव्वय-णमीण अंतरे राम-लक्ष्मणा समुप्पणा । तेसिं च चरियमिणमो साहिपंतं णिसामेह—
भसणकयत्थो साणो, सीहो उण हणइ कोइओ संतो । णियवीरियाणुसारेण पसमणं होइ गरुयाण ॥ १ ॥
ण सहइ माणव्भंसं इयरो इयरं पि, किं पुण महप्पा ? । णियभज्जागयपरिहवकलंकिओ किं पि ववसेइ ॥ २ ॥
अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे अउज्झा णाम णयरी सयलणयरगुणोववेया । तीए य दसरहो णाम
महाराया परिवसइ । तस्स य तिण्णि भज्जाओ, तं जहा-कोसला केकई सुमिच्चा य । तत्थ कोसलाए रामभहो
पुत्तो, केकईए भरहो सत्तुग्घो य, सुमिच्चाए लक्ष्मणो य कुमारो । दसरहेण य रामस्स रज्जाहिसेए समप्पिए
केकईए केणइ ववएसेण रामो सलक्ष्मणो वणं पेसिओ, भरहो य रज्जे ठाविओ चि । रामेण य वणगमणाएसो
रज्जाहिसेओ व्व पप्फुल्लवयणकमलेणं सम्मं पडिच्छिओ, अवि य—

‘पुत्त ! पडिच्छसु लच्छि, गच्छसु य वणं’ ति दसरहाएसे । णिसुयामि सारिसेओ चिय मुहराओ सहइ रामस्स ॥ ३ ॥
पिउणो पडिच्छिऊणं आपसमणाउलो पहट्टमणो । सविणयलक्ष्मणसहिओ रण्णम्मि गओ मभज्जाओ ॥ ४ ॥
अह वसइ तत्थ जणवज्जियम्मि रण्णम्मि जायपरिओसो । सीया-लक्ष्मणपरियणपरिपालणमेत्तसंतुट्ठो ॥ ५ ॥
लंकाए रौवणो भुवणतावणो रक्खसीहिं विज्जाहिं । बलवमकज्जायरणेण दूसिओ कलुसियचरित्तो ॥ ६ ॥
सुप्पणहाए कयणिग्गहाए वयणेण रामभज्जाए । परिणइवसेण रायं कालकरायडिहओ कुणइ ॥ ७ ॥
मारीय-भयकयाराववंचणा वंचिऊण ते दो वि । णियबल-कित्ती-रक्खसैखयंकरी अवहिया सीया ॥ ८ ॥
रक्खसमायं णाऊण दुक्खिया राम-लक्ष्मणा धणियं । सीयाहरणविसण्णा हाहारवमिलियतवसियणा ॥ ९ ॥
णिहयस्वरदूस्सणवला जहाउवुत्तंतपीडिया णिययं । किंकायव्वविमुहिया मिलिया सुग्गीवहरिवइणो ॥ १० ॥
हंतूण वाणरवइं वालिमणाउहममि(मे)यवलकलियं । सीयावत्तणिमित्तं रामो पेसेइ हणुयन्तं ॥ ११ ॥
सो वि कमिऊण सायरमणहो लंकाए णंदणवणम्मि । अह पेच्छइ तिग्गडाए आसासियणिंव्वुई सीयं ॥ १२ ॥
तो सीयाणुण्णाओ वणं मलेऊण रक्खसिंदं पि । पलिवियलंको तुरियं समागओ राहवा जत्थ ॥ १३ ॥
अह णायकज्जसारो रामो सह लक्ष्मणेण गुणणिहिणा । सुग्गीववलसमेओ लंकाभिमुहो सैमोत्थरइ ॥ १४ ॥
तो कमिऊण समुदं लद्धविहीसणवलो बलाणुगओ । आवासइ आसण्णे सुसेलसिहरम्मि लंकाए ॥ १५ ॥
अह रामणो वि परवलमसहंतो णीइ तस्स पचोणिं । अलसायंतपलोइयरामबलो भणइ तव्वेलं ॥ १६ ॥
मज्झ वि रिउणो, तत्थ वि य तावसा, ते वि लंकमहिहविउं । चिट्ठंति, किं ण दीसइ अहो ! जियंतेहिं अच्छरियं ? ॥ १७ ॥
तो सुग्गीवादीणं वाणरविज्जाहिं बलसमिद्धाणं । रक्खसविज्जावलगव्विण्हिं जुद्धं सैमावडियं ॥ १८ ॥
पल्लत्थिओ पहत्थो रणम्मि बलवन्तएहि मुहडेहिं । वाणरविज्जावलगव्विण्हिं, तह कुंभयण्णो वि ॥ १९ ॥
मेहणिणाओ वि हओ अहलं काऊण दुग्गमं सत्तिं । णागपासे विपासिय णैयविहले रक्खसे काउं ॥ २० ॥
अह रामणो वि विज्जाहिं गव्विओ दुज्जओ दुरालोओ । सह लक्ष्मणेण जुद्धेण संपलमो णिरावेक्खो ॥ २१ ॥
तो ताण बलसमिद्धाण पहरणो(ण)णोण्णच्छिणगत्ताण । कायरजणदुप्पेच्छं आसि रणं दौरणं अतुलं ॥ २२ ॥
अह रामणेण गहिऊण पेसियं चकमाउहमणग्गं । गंतूण तं पि हत्थम्मि संठियं लक्ष्मणकुमारे ॥ २३ ॥
तो लक्ष्मणेण चक्रेण तेण खलदससिरस्स कूरस्स । छिणं तालफलं पिव सीसं धरणीए पल्लत्थं ॥ २४ ॥

१ तेसिं चरियं भणमाणं णिसां जे । २ णाम रामा सु । ३ लक्ष्मणकुमारो जे । ४ रामणो जे । ५ ‘समयंकरी सु । ६ हणुयन्तं जे । ७ य सु । ८ ‘णिउव्वं जे । ९ राहवो जे । १० समुत्थं जे । ११ सहावडियं जे । १२ कुम्भकण्ठो जे । १३ अफलं जे । १४ विपासिय सु । १५ णयणहले जे । १६ दारुणमुहं सु । १७ छिणं जे ।

णिहयम्मि रक्खसिंदम्मि लद्धसीएहिं पत्तविजएहिं । तो राम-लक्खणेहिं रज्जम्मि बिहीसणो ठविओ ॥ २५ ॥
 टप्पणचकराणेण समुदेवेण भग्गसोयनियं । रामेण य मुणिसुदवयतिथम्मि समजियं पुण्णं ॥ २६ ॥
 काऊण संजमं सो, खविऊण य कम्मसंचयं विहिणा । पत्तो अणंतसोक्खं मोक्खं णित्थिणसंसारो ॥ २७ ॥
 वारसवाससहस्साउया य सोलसधणमुया दो वि । एक्को सिद्धिं पत्तो, 'वीओ णरयं गओ णवरं ॥ २८ ॥
 इय साहियं समासेण वित्थरो पउमचरियपमुहेसु । चरिएसु स विण्णेओ पुढवायरिएहिं णिद्धिओ ॥ २९ ॥

इति महापुरिसचरिए राम-लक्खणचरियं समैत्तं ति ॥ ४४-४५ ॥

-:-+:-:-

[४६ णमिसामिचरियं]

÷—×—÷

वासाणं छहिं लक्खेहिं समइकंतेहिं मुणिसुव्वयाओ णमी समुप्पण्णो पण्णरसधणूओ दसवाससहस्साऊ । तस्स य चरियं भण्णति—

पुव्वज्जियमुकयमहाफलोदसंभारभाविआवयवा । ते होन्ति कप्पवरुणो जेसि छाया वि णिव्ववइ ॥ १ ॥

अत्थि जंबुदीवे दीवे भारहे वासे महिला णाम णयरी । सा य वैहुजण-कणगसमिद्धा सुविहत्तितिय-चउक्क-चच्चरा सप्पुरिसावासभूया । तीए य णीसेसारिसंगामलद्धजओ विजओ णाम णैराहिर्वई परिवसइ । तस्स य सयलंतेउ-रप्पहाणा वप्पा णाम महादेवी । तीए सह विसयमुहमणुहवन्तस्स अइकंतो कोइ कालो ।

अणया य आसोयपुण्णिमाए अवरातियविमाणओ चुओ उवलद्धचोदसमहासुमिणाए वप्पाए गव्वे समुप्पण्णो देवो त्ति । संवड्ढिओ य गव्वो । तओ सावणवहुलेकारसीए जाओ । 'गव्वमगयम्मि य भगवंते णमिया नीसेसरिउणो' तओ णमि त्ति णामं कयं भगवओ । वड्ढिओ कमेणं ।

तओ णाऊण संसारसहावं आसाढवहुलणवमीए लोयन्तियपडिबोहिओ दिण्णसंवच्छरियमहादाणो पडिबण्णो समणचणं ति । तओ आसाढवहुलणवमीए मिहिलाए चेव वउलतरुहेट्ठओ खवगसेदीखवियमोहेणीयस्स उप्पण्णं दिव्वं णाणं । विरतियं देवेहिं समोसरणं । पत्थुया धम्मकहा । तओ छिज्जंति संसया, वुज्झंति पाणिणो । केइ तत्थ सम्मचं पडिबज्जन्ति, अण्णे देसविरेई, केइ पुण सव्वविरेइ ति ।

एवं विहरिऊण भैहिमंडलं, बोहिऊण भवियकमलायरे, सम्मेयगिरिसिहरे वइसाढवहुलदसमीए सिद्धिं पत्तो त्ति ॥

इति महापुरिसचरिए णमितित्थयरचरियं संमत्तं ॥ ४६ ॥

१ वासाणं छहिं लक्खेहसम(हिम)इकंतेहिं मुणिसुव्वयाओ । तो उप्पण्णो य णमी पसासयन्तो य तेजोक्क ॥१॥ [सो य पण्णरसधणू स्स । २ वहुपण स्स । ३ णराहिवो जे । ४ भगवम्मि ण स्स । ५ मोहस्स स्स । ६ विरेइ जे । ७ महियल जे । ८ परिसमत्त जे ।

[४७ हरिसेणचक्रवर्तिचरियं]

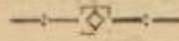


१ णमिचरियाणंतरं हरिसेणस्स दसवाससहस्साउयस्स पणारसधणुसुयस्स चक्रवर्तिणो चरियं भण्णति—

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे रायगिहं णाम णयरं । हरिसेणो णाम राया । तस्स य विसयसुहमणु-
हवन्तस्साऽऽउहसालाए चक्रयणं समुप्पण्णं । तेण वि चक्रमग्गाणुसारिणा पुव्वकमेण य ओयवियं छक्खंडं पि भरहं ।
उप्पण्णाणि य चोदस वि महारयणाणि, णव महाणिहिणो, वत्तीसइं सहस्सा मउडवद्धाणं राईणं, चउसट्ठिं सहस्सा रमणी-
णं ति । सो य भोत्तूण भोए संजायवेरगो तणमिव रायलच्छि उज्जिऊण, पडिवज्जिऊण सैमणत्तं, उप्पाढेऊण केवलं
णमितित्थम्मि सिद्धिमणुपत्तो चि ॥

इति महापुरिसचरिय हरिसेणचक्रवर्तिचरियं खेत्तव्यं ॥ ४७ ॥

[४८ जयचक्रवर्द्धचरियं]



हरिसेनाणंतरं जयणामस्स तीस[वास]सदस्साउयस्स चोदसधणुमुयस्स चक्रवर्द्धिणो चरियं भणति—

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे वाणारसी णाम णयरी । तत्थ य जओ णाम णरवती परिवसइ । तेण उप्पणचकरयणेण तदेव भरहं विजियं । सणामंकिओ कओ उस्सहकूडो पव्वओ । वसीकया कमेण दिसावाला । वि-
गयवेरिपक्खं कयं भरहं भुत्तं च । णमित्थिम्मि चहंते अणुप्पणे णेमिकुमारे असेसदुक्खक्खयलक्खणं संपत्तो
मोक्खं ति ॥



इति महापुरिसचरिए जयचक्रवर्द्धचरियं समत्तं ॥ ४८ ॥

[४९-५०-५१ अरिट्टणेमे-कण्हवासुदेव-बलदेवबलदेवाण चरियं]

+ :- : X : -- +

संपयं अरिट्टणेमि-कण्ह-बलएवाणं परोप्पराणुबद्धं चरियं भण्णइ—

तत्थ य पंचसु लक्खेसु समइकंतेसु णमिजिणाओ अरिट्टणेमिकुमारो समुप्पण्णो । सो य हरिवंसे । अओ पढमं हरिवंसस्स उप्पत्ती भाणियन्वा ।

ते केइ होंति भुवणोवरम्मि कप्पतरुणो महासत्ता । जेसिं पारोहो वि द्हु परहियकरणक्खमो धणियं ॥ १ ॥

समइकंते सीयलजिणम्मि तह णागए य सेयंसे । एत्थन्तरम्मि जाओ हरिवंसो जह तहा सुणह ॥ २ ॥

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कोसंबी णाम णयरी । तीए य विणिज्जियासेसत्तुमंडलो वयणोढामि-
यमियंक-कमलो जहत्थणामो सुमुहो णाम णरणाहो परिवसइ । अणया य सो णिययसामन्तस्स वीरयाहिहाणस्स
पाहुणओ चंपं गओ । वीरेण य तस्स कयमुचियकरणिज्जं । दिट्ठा य सुमुहेण वीरयस्स भज्जा पहावती णाम
भोयणवेलाए परिसकंती । सो य तं दट्ठूण तीए रुव-जोव्वण-लायणाखित्तमाणसो चित्तिउमादत्तो ।

‘पयतीए जइ वि कुट्ठिआ वलचिआ जइ वि पुव्वहससा । तह वि मुहाण णिहाणं महिला रयणं महियलम्मि ॥ ३ ॥

एसा उण सव्वावयवमुंदरा जइ महं ण संपडइ । ता किं इमिणा रज्जेण ? मज्झ जम्मेण वि ण कज्जं ॥ ४ ॥

सो जम्मो जो मणुयत्तणम्मि, तं माणुसं जहिं विहवो । सो विहवो जत्थ पियं, तं च पियं जस्स य पिण्हिं ॥ ५ ॥

ता एसा मह दइया इमीए जइ वल्लहो अहं होज्जा । ता रज्जं जम्मं जोव्वणं च सव्वं चिय कयत्थं ॥ ६ ॥

एवं च बहुवियपं चित्तिउण पलोइया विम्हउप्पुल्ललोयणेणं राइणा । तीए वि गुरुणेहणिम्भरपिसुणाए दिट्ठीए
सुइरं णिज्झाइओ राया । अवि य—

तह कह वि सयण्हं तीय पुलइयं णेहमुहरसुम्मीसं । जह पढमदंसणे चिय धुत्तीए समप्पिओ अप्पा ॥ ७ ॥

तओ ‘मं इच्छइ’ ति मुणित्ठण राइणा किंचि अलियावराहं दांऊण वीराहिहाणस्स महासामन्तस्स उडालिया
गामा । लूढा अंतेउरम्मि पभावती । गओ य राया णियर्यणयरिं ति । भुंजइ तीए सह कालोचिए भोए । अवि य—

चइऊण कुलं सीलं मज्जायं रज्जकज्जमणुदियहं । अप्पाणं पि य राया तीए समं रमइ मूढमणो ॥ ८ ॥

सा वि णरणाहसंगमसविसेसमुहल्लिजायपरिओसा । वीसरिउं पुव्वपइं विलसइ रइसागरोगाढा ॥ ९ ॥

इओ य वीरयसामंतो णाऊण पहावतीवुत्तंतं झंपिओ मोहजालेण, ‘किं कायव्वं ?’ ति मूढो, ‘सव्वं मुण्णं’ ति
मण्णमाणो, समुल्लसियपियविरहवेयणो सैमोत्थओ तमपिसाइयाए, गहिओ अरइए, समद्धासिओ उव्वेवेणं, समाल्लिगिओ
सोएणं, गोयरीकओ रणरणएणं, पम्हुट्टविवेओ अविण्णायकज्जा-ऽकज्जो तं चेव पहावतिं चिन्तेन्तो वाहरंतो य, संकप्पुप्पे-
क्खाऽऽणियरूवत्तणेण य तीए चेव सह भासन्तो, एवं पतिदिणं पवइदमाणमोहपसरो पणट्टसण्णो गहिओ महागहेणं । तओ
कहिंचि रुयइ, कहिंचि एगागी चेव हसइ, कहिंचि गायइ, कहिंचि णचइ चेव गयलज्जो, परिचत्तं परिहणयं । अवि य—

हसइ परिओसमुण्णं, णचइ डिंभेहिं दिण्णसमतालो । वचइ लक्खेण विणा, रुयइ सदुक्खं मुहा चेव ॥ १० ॥

जेण व तेण व भुत्तो, वसिओ भूमीए हत्थपौउरणो । कत्थइ अप्पडिबद्धो निस्संगो वरमुणिसरिच्छो ॥ ११ ॥

सो जं जं चिय पेच्छइ तं तं चिय पियेयम ति वाहरइ । चेयणमचेयणं वा परव्वसो ववगयविवेओ ॥ १२ ॥

इय कित्थियं चे भण्णइ ? जे केइ दुहस्स हेयवो भणिया । ते संभवन्ति गिययं णराण रमणीज संगेण ॥ १३ ॥

एवं च सो वराओ परिम्भमंतो य देवजोएण । तत्थ गओ जत्थऽच्छइ पहावतीसंगओ सुमुहो ॥ १४ ॥

१ भुण्णोवरम्मि जे । २ कोसंबी ख । ३ णामेण णराहिओ जे । ४ य जे । ५ तीए पुलइउं जे । ६ अवराह ख । ७ काऊण जे ।
८ ‘वनयरं जे । ९ वीरसा’ ख । १० ति मोहिओ, स’ जे । ११ समुच्छओ जे । १२ ‘पाउरणे ख । १३ ‘गो मुणियस’ ख । १४
‘वस’ ति ख । १५ व जे ।

तओ गवक्खयसंठिएहिं दोहिं वि जणेहिं दिट्ठो धूलीए धूसरो छट्ट-उट्टम-दसम-दुवालसाइणा अणामोगतवचर-
णेणं परिमुत्तियमंस-सोणिओ विवसणा जरेचीरोवालेयसरोरा गहियखप्परा दीणो वडरीणं पि अणुकंपणिज्जो तण्हा-
कुहाकिलन्तदेहो । तं चेव तहाविहं दट्ठण राइणा भणियं—किं पिए ! परियाणसि एयं ? । तीए भणियं—कहं ण परि-
याणिस्सं ? मण्णिमिच्छा चेव एयस्स ऐरिसिया अवत्थ चि । तओ राइणा गरुयसंवेगुव्विग्गेण भणियं—

मुंदरि ! अमुंदरं चिय कयं मए रायमोहियमणेण । निम्मलजसा-उकलंके कुलम्मि मसिकुच्चओ दिण्णो ॥ १५ ॥

धेवं जीयं तरलं च जोव्वणं कम्मपरिणती विसमा । घोराउ महाणरएमु सुयणु ! वियणाओ मुव्वन्ति ॥ १६ ॥

एयस्स कह णु पावस्स होज्ज पुण संचियस्स गित्थरणं ? । एयाए महं चिंताए सुयणु ! अप्पा वि पम्हुट्ठो ॥ १७ ॥

तओ एयमायणिऊण पभावतीए भणियं—अज्जउत्त ! एवं एयं, अतीवअसोहणमणुट्ठियं अम्हेहिं । एवं च महा-
संवेगसमावण्णाणं दोण्ह वि जणाणं विज्जुणिवाएणमंवहरियं जीवियं ति । समुप्पण्णाणि य दो वि हरिवरिस्से
अविउत्ताणि ।

इयरो वि वराओ तीए पंचत्तमुखायाए गिरासीभूओ अणिच्च(? च्छ)यपुव्वं चेव छट्ट-उट्टम-दसमादित्तवोविसेसेण
खवियदेहो आउक्खएण चइऊण देहं बालतवप्पहावेण उव्वण्णो वाणमंतरदेवत्तणेणं । तं च दट्ठण अत्तणो दिव्वं रूवं
चित्तियं तेण—किं मए जम्मंतरे कुसलमणुट्ठियं जेणेरिसं दिव्वसंपयं पत्तो म्हि ? । अवहिणा य समालोएत्तेणमुवल्लदो पुव्व-
भवो । विण्णायाणि य भोगभूमीए समुप्पण्णाणि दो वि जगाणि । विण्णायसरूवस्स य उद्धाओ कोवप्पसरो, कुरिय-
मवयारकरणपच्चलं हिययं चित्तियं च तेणं—

“किं चुण्णेमि रसन्तं निट्ठुरकरंजंतपीलियं दुट्ठं । निम्मज्जायमणज्जं जुँवलं पि समुज्जयमकज्जे ? ॥ १८ ॥

एयाणि समुप्पण्णाणि भोगभूमीए भोगजणणत्थं । अवकरिऊण वि मज्झं पुणो वि ‘भोग’ चि विहलमिणं ॥ १९ ॥

आउमणवत्तणीयं सुहभाई होइ भोगभूमीए । ता तह करेमि संपइ जह दुक्खपरंपरा होइ ॥ २० ॥

”पीडिज्जंतो वि मओ मयारिणा किं व कुणउ बलहीणो ? । सत्तविहूणो सव्वस्स सहइ गुरुपरिभवमसज्झं ॥ २१ ॥

कह सहइ परिभवं सो जो सइ सत्तीए कह वि परियरिओ ? । बलमण्णपरिहवो वि य, तेओ तिमिरं व किं हणइ ? ॥ २२ ॥

किं तुंगिमाए तालस्स दुट्ठपक्खीहि विहयसीसस्स ? । परपरिहवं सहंतस्स होइ किं गरुयया लोए ? ॥ २३ ॥

भोगाण भायणमयं आउं ण चलेइ भोगभूमीए । ता तह भुंजउ भोए जह दुक्खपरंपरं लहइ” ॥ २४ ॥

परियाणिऊण चंपाए ओहिणा णरवइं मयं सहसा । वेत्तूण रुक्खसहियं तं जुँवलं तत्थ संपत्तो ॥ २५ ॥

चित्तेइ तेण गहिण्ण होइ जइ कह वि भायणमवस्सं । भोगाण तो गिरत्थयमिमं ति देवत्तणं मज्झ ॥ २६ ॥

ता पालेउ णिवद्धं जहट्ठियं आउयं पि रज्जं पि । तत्थ य दोग्गाइजोग्गं कम्ममवस्सं सइ कुणइ ॥ २७ ॥

रज्जमकज्जावासो, दारं णरयस्स, मुकयपडिपंथो । दुक्खपरंपरहेऊ, पुणरुत्तमणत्थसंबंधो ॥ २८ ॥

जो कोउएण इच्छइ दट्ठं णरए दुहेकणिम्माए । एकदियहं पि रज्जं सो कुणउ अचेयणो निययं” ॥ २९ ॥

इय चित्तिऊण एयं कोवेगाऽऽपरिओ सुरो धणियं । रज्जवत्तएसमुहिओ दुक्खाण परंपरं लेंहउ ॥ ३० ॥

तओ चंपाए णयरीए उवरिं गयणत्थो उवइसिउमादत्तो, भणिओ य पुरजणवओ रायण्णेसणपरायणो किंकायव्वं-
विमुहिओ—तुम्हाणमेस राया मए करुण(णा)समावण्णेगमिहाणीओ, ता तुम्हेहि एस सव्वायरेण पडिजागरणीओ, एयस्स
य आहारो सया मंस-मज्जाइणा, विचिचेहि य मंसरसभोयणेहि एयस्स सरीरस्स सम्मं होइ । चि भणिऊण समप्पिओ ।

१ “बीरोमालि” जे । २ एसा अवत्थ जे । ३ “कुव्वओ सू । ४ वि हु अणिट्ठो जे । ५ “मवहियं जे । ६ “तवोविसेसखावि” सू ।
७ समुव्वण्णाणि जे । ८ णेणं जे । ९ “करुणप्रीत्यं” सू । १० जुणलं जे । ११ पीडिज्जंतो सू । १२ परंपरा सू । १३ सुज्जं जे ।
१४ “वहेहो जे । १५ व्हइ सू । १६ चंपापुरीए उ” जे । १७ “व्वणिम्माहिओ जे ।

तेहि य संसरसाइणा णेरयगतिगमणहेउणा उवयरिओ । भोत्तूण य आउयमज्जायाए पवरभोए, संचिऊण य बहुदुग्गाइ-
भववेयणिज्जं कम्मं, कालं काऊण तह गओ जहा वीरगस्स परिओसो समुप्पज्जइ ति । तव्वंसपभवेसु य संखाईएसु
यएसु सोरियाहिहाणस्स राइणो सोरियपुरे दस पुत्ता समुप्पण्णा, तं जहा—

समुद्विजओउखोहो यिमिओ तह सायरो य हिमवन्तो ।

अणल्लो घरण्णो सह पूरण्णो य अमिचंद वसुदेवो ॥ ३१ ॥ ति ।

कण्णादुयं च अवरं कोन्ती मही य । तओ एवं हरिवंसपभवा दस दसारा ।

इओ य इक्खागवंससंभवो सोमपभो णाम राया । सो य सकेण संचोइओ जहा—मुणीणं वयणं कुरु । तप्पभिद वंसो
वि कुरु ति षड्विओ । तव्वंसपभवेसु य संखातीएसु गएसु सयधणू णाम राया संवुत्तो । तस्स य पुत्तो संतणू णाम राया
संवुत्तो । तस्स दुवे पुत्ता—गंगेओ विचित्तवीरिओ य । तत्थ गंगेओ कुमारवम्भयारी संवुत्तो । विचित्तवीरियस्स
उ तिण्णि पुत्ता समुप्पण्णा, तं जहा—धयरट्ठो पंडु विदुरो य । तत्थ य गंधारराइणो धूया गंधारी णाम । सा य धयरट्ठेण
परिणीया । तस्स य तीए सह विसयसुहमणुहवन्तस्स दुज्जोहणाइयं सयं पुत्ताण समुप्पणं ।

इओ य हरिवंससमुम्भवाओ दसारभइणीओ कोन्ती मही य । ताओ दुवे वि कुरुवंससंभवस्स पंडुस्स दिण्णाओ ।
ताण य [कोन्तीए] जुहिट्ठिल-भीमसेण-अज्जुणाहिहाणा तिण्णि पुत्ता समुप्पण्णा, महीए णउल्लो सहदेवो य । धय-
रट्ठ-पंडुइ य दुज्जोहण-जुहिट्ठिल्लाण पत्तेयं पत्तेयं णिययरज्जाइं दिण्णाइं । ताण य रोप्परं बालप्पभित्तिं मच्छरो
समुप्पण्णो ।

इओ य कुसुमपुरे णयरे जरासंधो महाबल-परक्कमो राया । तस्स य सव्वे वि राइणो आणं पडिच्छंति । तेण
य दसाराण आणत्ती पेसिया जहा—सीहरहं वसे काऊण सिग्घं मह समीवे आणेह, जो सीहरहं अतीवदप्पुद्धुरं
वसे काही तस्स मए धूया दायव्वा । एयमायणिऊण वसुदेवो कंससारहिसमेओ समुद्विजयाइए भायरे समा-
सासिऊण सीहरहवसीकरणत्थं रहमारुहिऊण कंसं च सारहिं काऊण विणिग्गओ, पत्तो सीहरहसमीवं । तेण य
सह पयट्ठमाओहणं । तओ अणवरयधणुं पुच्छिण्णपाणसंसाइयपरवलो विचलो कओ सीहरहो पाडिओ रहाओ ।
तओ विरहो भूमिगओ कंसेण सारहिणा अवयरिऊण रहाओ संजमिओ सीहरहो । समप्पिओ गंतूण जरासंधस्स
राइणो । दाउमाढत्ता वसुदेवस्स णिययधूया । तओ भणिओ वसुदेवेणं जहा—एस कंसेण संजमिओ ण मए, तओ
एयस्स धूयादाणं जुज्जइ ति । जरासंधेण तमायणिऊण भणियं जहा—एस किल वणियजातीओ, ता रायधूयाए ण
जुज्जति वणियघरपवेसणं । तयणंतरं भणियं वसुदेवेणं जहा—एस उग्गसेणस्स णरवइणो पुत्तो, जणणीए दोहमाकलंक-
इसियाए उग्गसेणणामंक्रियंगुत्थलयसमण्णिओ मंजूसाए जउणाजले पवाहिओ, दिट्ठो य पच्चूसमागएणं वणिणं,
गहिओ पुत्तत्तणेणं, संवडिहऊण य महं समप्पिउ ति । तओ णामंक्रियंगुत्थलजायणिच्छएणं जरासंधेणं दिण्णा णियय-
धूया विसयखंडं च । तेण य कुविण णियपिया उग्गसेणो 'अहमणेण जले पवाहिजंतो उवेक्खिओ' ति जाय-
कोवेण संजमिओ । जीवजसाए य सद्धिं कंसो भोगे भुंजइ ।

इओ य सोरियपुरे सव्वो पउरजणसुंदरीजणो वसुदेवरूपाखित्तियओ मज्जायमइकमिउमादत्तो । जाणिऊण
उम्मगापैवत्तं सयलं पुरं पउरेहिं मिलिऊण य विण्णत्तो समुद्विजओ जहा—देव असमंजसीहूयं वसुदेवदंसणेण पुरं ।
अवि य—

रूवेण दिव्वरूवेण सयलगुणसारपत्थणिज्जेणं । तरुणियणयण-मणपसरहारिणा देवकुमरं व ॥ ३२ ॥

वसुदेवं चिय पेच्छंति सयलगारीओ चत्तवावारा । तह कुणसु देव ! जह ठाइ पट्ठणं णिययमम्ममि ॥ ३३ ॥

“एसो वच्च एसो व जाइ एस(से)स णिग्गओ मग्गं । पियसहि ! धावसु धावसु जाव य दूरं ण बोलेइ” ॥ ३४ ॥

१ शिरयसमणं जे । २ संतणो नाम जाओ । तस्स जे । ३ “पुणच्छिण्ण” सु । ४ “सचाइय” जे । ५ जरासिधुस्स णरवइणो जे ।

६ “पवित्तं” सु । ७ “वसीक्यं पुरं वसुदेवेणं ति । अ” जे । ८ भावेयं जे पुस्तके नास्ति ।

इय जाणिऊण चरियं सोहग्गं रुवसंपयमुवारं । वसुदेवं गेहे चिय समुद्विजओ णिरुंभेइ ॥ ३५ ॥
 अह जाणिऊण एयं निग्गंतूणं छलेण भवणाओ । भासा-रुवविवजयकुसलो परिभमइ भुवणयले ॥ ३६ ॥
 पत्थिज्जन्तो जुवईजणेण, णरवरसएहिं धुवंतो । अत्तेरयं कुणंतो सकोउओ भमइ लीलाए ॥ ३७ ॥
 कत्थइ वरिओ विज्जाहरीहिं गरुयाणुरायरत्ताहिं । सोहभागुणिहाणो कत्थइ णरणाहकुमरीहिं ॥ ३८ ॥
 इय 'ओहामियरइरुववम्मह' दूरणिग्गयपथायां । वसुदेवो दागुंदुयसुसगलीलं विलंबेइ ॥ ३९ ॥
 तरुणियणपत्थणिज्जा वाससयं विहरिऊण लीलाए । परिणेइ 'रोहिणिं' सो सयंवे भाउयसमकवं ॥ ४० ॥
 परियाणिऊण भाउहिं णवहिं कंसेगमाणिओ निययं । निययपुरं सुसुंदरिजणियावेओ सविहवेणं ॥ ४१ ॥
 जणिओ पुत्तो तह रोहिणीए अइवल-परकमोवेओ । ससि-संख-कुंदधवलो बलएवो परवलमसको ॥ ४२ ॥
 कंसेण तस्स दिष्णा पित्तियधुया य देवती णामं । जीवजसाए हसिओ अइमुत्तमुणी य मत्ताए ॥ ४३ ॥
 तेण य कोवावुरियहियएणं मुणिवरेण सा सत्ता । जो देवतीए गम्भो सो तुह पइणो विणासाय ॥ ४४ ॥
 जं जह कह वि णिवद्धं जियाण कम्माण परिणइवसेण । पैरिणमइ तं तह चिय, कत्थ जई? कत्थ सावो? चि ॥ ४५ ॥
 तेण वि णियजीयभयाउरेण भइणीए धाइया जाया । छ एपुत्ता विहलमणोरहस्स ते रक्खिया सव्वे ॥ ४६ ॥
 छट्ट-उट्टमाइणा तोसिएण हरिणेभमेसिणा दिष्णा । सुलसाए मरन्तवियाइणीए, जे ते हया तिस्सा ॥ ४७ ॥
 अह सत्तमम्मि गम्भे कण्हो णामेण वासुदेवो चि । उप्पण्णो कयपुण्णो गोट्टे गोपाइओ विहिणा ॥ ४८ ॥
 तत्थट्ठिएण पूयण-रिट्ठासुर-केसि-मुट्ठियादीया । णिहया सह चाणूरेण तयणु कंसासुरो णिहओ ॥ ४९ ॥
 अह वियलिणमु पंचमु वासाणं णमिजिणाउ लक्खेसु । उप्पण्णो कयपुण्णो समुद्विजएण य सिवाए ॥ ५० ॥
 कत्थियकिण्हदुवालसिचिचामु चुओ चि तामु य पमुओ । सावणसियपंचमि तह तिहोए वरलक्खणोवेओ ॥ ५१ ॥
 'सव्वाणि अरिट्ठाणि य पलयं पत्ताणि तम्मि जायम्मि' । तुट्ठेहिं कयं णामं अरिट्ठणेमि चि जणएहिं ॥ ५२ ॥
 पुव्वकमेणं सव्वं जम्मण-महिमाइ होइ दट्ठव्वं । संवड्ढिओ कमेणं कलाहिं सह जोव्वणं पत्तो ॥ ५३ ॥
 णिहए कंस्सम्मि तओ सव्वे वि य जायवा भेउव्विग्गा । महुंराउरीए चलिया सहसा रयणायरहिमुहं ॥ ५४ ॥
 कुविओ य जैरासंधो जीवजसावयणकोविओ संतो । तो पट्टवेइ सेणं तुरियं बल-केसवविणासे ॥ ५५ ॥
 सेणाहिवई कालो उ तत्थ कालेण चोइओ संतो । कुणइ पइणं मूढो, "मोहेज्जइ" को ण कालेण? ॥ ५६ ॥
 "जत्थ गया तत्थ गया मारेयव्वा उ" जायवा णिययं । अह गरुयभउव्विग्गा जलणपवेसं कुणंति तहिं ॥ ५७ ॥
 अग्गिपवेसो वि मए तयणुकुट्टिएणऽवस्स कायव्वो । मयरहर-महाडइगमणमणुमयं कीरइ अवस्सं ॥ ५८ ॥
 इय सो काऊण सइं इमं पइणं ति मग्गओ लग्गो । हरिवंसदेवयाए विडम्बिओ डहइ अप्पाणं ॥ ५९ ॥
 हरिकुलदेवयपरिमोहियम्मि कालेण कैवलिए काले । अवरसमुदाभासम्मि संठिया जायवा सव्वे ॥ ६० ॥
 तत्थ य समुदपतिणा ओसारेऊण जलणिहिं दूरं । सक्काएसेण तओ धणएण विणिम्मिया णयरी ॥ ६१ ॥
 बारसजोयणदीहा वित्थिष्णा जोयणाइं णव सुहय्यो । तह सव्वकंचणमया णाणाविहरयणमरिया सा ॥ ६२ ॥
 जक्खवाहिवेण विहिया धण-कणगविहसिया पवरणयरी । जा उप्पण्णा रयणायरम्मि महुमहण वल्लहिया ॥ ६३ ॥
 सयलजणपत्थणिज्जा सिरि व्व साहारणा महाणयरी । सस्सोया वि असोया णिच्चुस्सवपमुइया णवरं ॥ ६४ ॥
 इय तीए धेणसमिद्धाए जायवा जौयजणमणाणंदा । कीलंति जहिच्छाए सुर व्व संपण्णविसयमुहा ॥ ६५ ॥
 तओ एवं णिवाइए कंसे, कुविए जरासंधे समद्धासिए जायवेहिं बारयैह्णिवासजलणिहितडे, कुलदेवयापयारि-
 यकयजलणपवेसम्मि कालसेणावडम्मि" कुविएण जरासंधिणा समइकंतं पभूए काले पेसिओ दूओ हरि-बलएवाणं ति ।

१ ओहामियं जे । २ रोहिणी जे । ३ भाइहिं सु । ४ वि जे । ५ परिणवइ सु । ६ बहिणीए जे । ७ जेगवेसिणा सु । ८
 "ण जम्मणमहिमाइयं तु होइ जे । ९ भओविग्गा जे । १० जरासंधो जे । ११ कवलिवइ सु । १२ कोण कां सु जे । १३ य सु ।
 १४ कवलिओ कालो सु । १५ "या । पायादेणऽवगुहं जंमुदोव व लवणेणं ॥ ६२ ॥ सा सव्वकंचणमया णाणाविहरयणमरिनिवेस । जक्ख-
 विहिवेण विहिया धण-कणगविहसिया णयरी ॥ ६३ ॥ जा उप्पण्णा रयणायरम्मि महुमहणवज्जहा धोणयं । सयलजणपत्थणिज्जा सिरि व्व साहारणा क-
 वरं ॥ ६४ ॥ इय तीए धणं जे । १५ जणधं सु । १६ जणियजणं जे । १७ "वदकमनिवास" जे । १८ "म्मि, समइकंते सु ।

तेण य लद्धावसरेणं समागतूण भणिओ 'वासुदेवो—“जरासंधेण संदिद्धमेयं ति, जं भो णेराहिवइ ! जं मह सेणाहिवइ पंचचमुवगओ सा ण चिन्ता, जओ सामिकज्जुज्जयाणं सुहडाणं मरणं वा जैओ वाऽवस्संभावी, किंतु तुम्हं रणधुरसमुद्धुराणं णियभुयबल-परक्कमेकदिण्हिययाणं ण जुत्तमेरिसं ववहरिउं, जओ ण हि मुपुरिसाण मायापवंचणेणं णिव्वडइ पुरिसयारो, मंडेइ वा दिसामुहाइ किञ्चित्तया, घोळइ वा दिसामुहेसु अक्खलिओ पयावो त्ति । तां जइ कालसेणावइस्स तुम्हेहि मायाए ववहरियं तस्स फलं संपयं भुंजह त्ति । एस सबल-वाहणो तुम्ह विणासणत्थमहं संपत्तो । ता कुणह जं करणिज्जं ति । अवि य—

लंघेइ जलणिहिमलं, गिरिसिहरं वा समारुहइ सिग्घं । वचइ सरणमणग्घं, तहा वि जीयं अवहरामि ॥ ६६ ॥

अण्णं च—

जइ त्रि करकलियकुलिसम्माघायणिदलियदाणवाहिवइ । वचइ सरणं तं णिहयसेसदणुय व्व सुरणाहं ॥ ६७ ॥

अह कह वि विसहरच्छिच्छडप्पहाविहयतिमिरपब्भारं । गैरुलभया द्दित्थभुयंगमं व पविसेह पायालं ॥ ६८ ॥

अह पउरिधणपज्जलियवहलजालाकलावदुप्पेच्छं । सैलह व्व गुरुपयावं हुयासणं विसह दुव्विसहं ॥ ६९ ॥

तह वि णिसियासिदाढाकरालसरणियरणहरपंसरस्स । तुम्हे मय व्व णासह विसमजैरास्सेधकेसरिणो” ॥ ७० ॥

तओ एयमायण्णिऊण वियंभिउम्भडामरिसवसा कलुसीकयं धिमिएणं वयणकमलं, ण उण भडाहिमाणं । अन्तो-विसंखलुच्छलियवहलकोवाणलारुणिह्ला वि णूविया अक्खोहेण दिट्ठो, ण उण रणिच्छा । गुरुकोवविसमुग्गारगग्भिणं परामुसियमयलेण वच्छत्थलं, ण उण सचरियं । गरुयावलेवपडिरोहजणियसेयंभुविंदुदंतुरियभालवट्टेण सबलीकओ वसुदेवेण मुहमंडलाहोओ, ण उण णियजमुग्घाओ । अवि य पियकलत्तं व साहिलासमवेलोइअमणाहिट्ठिणा मंड-लमं । उडामदप्पसहणियवलं पिव बलेणावलम्बियं मुसलं । पडिवक्खपक्खविवक्खेवदक्खमहिमुहीकया जयसिरि व्व हरिणा सारंगलट्ठी । पयइत्थं विय णिपयंपेतणुतुलियतेलोकधीरयंतैमरिट्ठणेमिणो चेद्वियं । रणरसविसट्ठोमंच-कंचुउव्वेल्लभंगफुडणापरम्मुहीकयमहिसेणं व पज्जुण्णेण णिययतणुं । समरतण्हावियण्णरहसेण णियगोत्तकिञ्चित्तवलि व्व दूरमारोविया दाहिणभुयलया संवेणं । अवसेसेहि “वि कुमारैहि भावियरेणरहसपसरियाणंदवाहजलगुरुयकुवलयावलि व्व पैहुम्मि णिवेसिया णयणमाला ।

तओ करणिवारियकलयलो समुद्धविजओ भणिउमाहत्तो—“भो भो दूय !

जइ कह वि गुणगणुप्पण्णादिण्णसण्णेज्झदेवयाए तुहं । सेणावइ त्ति णिहओ किम्मह माया तर्हि घडइ ? ॥ ७१ ॥

अण्णं च—

पुव्वपुरिसट्ठिया णेहसंतई णौसिहि त्ति कलिऊण । जइ ओसरिया ता दूय ! एत्थ किं भीरुणो अम्हे ?” ॥ ७२ ॥

तओ एत्थ पत्थावम्मि वित्थारियवयणवित्थरेण भणियं भोग्यणराहिवेण—दूय मुणसु—

तं दूओ त्ति अवज्झो, वीयं गेहोऽऽओ पुण सवासाओ । तेणेवं पि भणंतस्स तुज्झ खमियं जउभडेहि ॥ ७३ ॥

ता किं बहुणा पलत्तेण !, गच्छ, गंतूण भणसु णिययपहुं जहा—जमिह भवया काउमारदं तमविलम्बियं कीरउ” ।

त्ति भणिऊण विसज्जिओ दूओ” ।

णिग्गाए तम्मि विसज्जियासेसणरिद्वंदंसम्मदलियमणिमउडकिरणकब्बुरियदिसामुहत्थाणिमंडलो मंतिहरयमुव-गओ समुद्धविजओ । तत्थ य सुहासणासीणेण पडिहाराहूयभोग्यणरिदपमुहेसुं सुहणिसण्णेसुं णरिदेसुं भणियं समुद्ध-विजएणं जहा—एत्थ पत्थावे किम्महेहि कायव्वं ? ति ।

तओ तव्वयणावसाणे भणियं भोग्यणराहिवेणं जहा—“महाराय ! रायणीतीसत्थयारेहि चत्तौरि पदंसिया णया, तं

१ वसुदेवो जरासंधिपुसदिट्ठं सू । २ णेराहिव । जे । ३ जओ व संभावी सू । ४ तओ जइ सू । ५ ववहरिउं जे । ६ “कुल-साहिपाय” जे । ७ गरुडभयात् । ८ भवल व्व जे । ९ “पहरस्स” जे । १० “जरस्सेध” सू । ११ “वलोविभ” सू । १२ “पत(त)-णु” सू । १३ “तमं रिट्ठं” सू । १४ व सू । १५ “रणरसप” जे । १६ बहुम्मि सू । १७ णासिह सू । १८ गेहागओ पुण सवावो जे । १९ “ओ । विसज्जियम्मि विसज्जिया” सू । २० “वदं” जे । २१ “रि व संसिया” सू ।

जहा-सामो भेदो उवप्पयाणं दंडो चि । तत्थ जो पढमो णओ सो तेण सममग्धाण दूरओ विहडति, जओ सो अम्ह गोत्तकित्तायण्णणेणावि दंडाहयभुयंगमो च्च रोसवसविसंखलुच्छलियफारफुकारभीसणो हवइ । वीयणओ वि हु ण यडइ पउंजिउं, तेणाणेयसम्मानादाणाइणा समावज्जिओ सामन्तलोओ इच्छइ विहुरम्मि णियजीविण्णावि' तस्स रिणमोक्खणं काउं ति । उवप्पयाणं पि दूरमोसकं, कइं ? -तज्जणियपसायाणंतजायभंडारसारमणि-कणय-रयणपूरणैवियण्णीकओ सयलो वि पयइवग्गो, सो य उवप्पयाणेण चेत्तुं ण तीरण । तओ एवमवस्थियम्मि एत्थ चउत्थोवायस्स पत्थावो' चि मह मती । तहा अण्णेहिं पुण णीती-णयवियाणएहिमेयमभिहियं-बलवयाहिउत्तस्स विएसगमणं, तयणुपवेसो वा । एयं तु अच्चंतपोरुसप्पहाणभइयणाहिद्विएसु णिययबलमाहप्पावमणियमहिंदेसु राम-केसवेसुं साहीणेसु ण लब्भए काउं । तहा अम्ह उण मयमेवंविदं जहा—

आहिउत्तो जया पस्से ण किंचि मुहमप्पणो । जुज्झियव्वं तथा होइ, फुडमेसो उवक्कमो" ॥ ७४ ॥

तओ एयभणियाणंतरं 'साहु साहु' चि समत्तसामन्तलोएणाभिणंदिऊण भोयणरिंदवयणं भणियं च- अहो ! णीतिकुसलत्तणं, अहो ! वयणविण्णासो, अहो ! सत्थत्थावगाहणया, अहो ! वीरगरुत्तणं, अम्हाण वि एस अहिप्पाओ । चि भणिऊण पलोइयं णरिंदसमुद्विजयस्साहिमुदं । पहुणा वि बहुमणिऊण तं वयणं भणियं च- "ममं चिय हियण मन्तियं, कइं चिय ?—

दप्पियपडिक्खं पति सामो भीरुत्तणप्फलो होइ । तरुणजरस्स व जुंजइ समोसइं कोवकरणाय ॥ ७५ ॥

भेओ य कुडिलवंचणपणासितुत्तम्ममुहडमाहप्पो । पिमुणत्तणप्फलो होइ साहुपुरिसाण मज्झम्मि ॥ ७६ ॥

तह या उवप्पयाणं पि माणिणो मागमलगमुव्वहइ । गलियावलेवपिमुणो जेण सकप्पो तणीकारो ॥ ७७ ॥

तओ तस्स दप्पपरिसाडणं पति डंडो चिय पउंजिउं जुज्झइ । सो वि अहिमुहपत्थाणेणं, ण उण दुग्गासयणेणं । जओ दुग्गासयणेणं भीरुत्तणं णिव्वडइ, णियभूमिभाओ य हारिओ होइ । सम्मुहपत्थाणे उण तस्स मणचमकारो जायइ, सदेस-परिक्खणं कयं होइ, परिक्खिओ य सहायकिचमावहइ । अओ हेउवाएयपरियप्पणया दंडो ममं पि अहिमओ" । चि भणिऊण जहाजोग्गं सम्माणियं विसज्जियासेससामंतो अंतेउरमुवगओ राया । तत्थ य ललियविलासिणिकरयलसंवाहिया-वयवो मुहुत्तन्तरं णिहामुहमणुहविऊण विउडो । एत्थ पत्थावम्मि पडियं बंदिणा—

णिट्ठुरकरजालपहारविसममुमूरियारितमचको । सव्वजणोवरि जाओ सूरुो तुह पेंहु ! पयावो च्च ॥ ७८ ॥

तओ एयमायणिऊण कयमज्जण-भोयणावैसाणेणं णेमिच्चियाणुमयसोहणदिणमुहुत्तेण किंकरकरऽप्फालियरणभेरीस-इमुहलं कयं अत्तणो बल-दाम्मोयराणं च पत्थाणमंगलं ति । अवि य-णीहरंति कैरडयडपलोद्वहलमयजलोड्रियमहियलाओ मेहमालाओ च्च गेंदंमंडलीओ, कडिडज्जंति चैंडुलत्तणोसकवंकपरिसकिरारुसियफेंरुफुराविओद्वउडखलविलसियाइं व तरल-तुरययट्टाइं, सज्जिज्जंति घणघणासइतेंडुवियसिहंदिमंडला जलहर च्च रहवरुग्घाया, निग्गच्छइ य कुडिलैकोगिविग्गिरुम्मग्ग-लम्गरेड्रियजलणिहिजलं व पायालसेणं ति । एवमणवरयावूरिज्जमाणसाहणोववेओ आवासिओ बाहिरोवत्थाणयपरि-सरम्मि । तत्थ द्वियस्स य तप्पहियलेहवाहयाहूयमिलंताणुरत्तमामंतवेंकस्स समइच्छिओ दिवसो । पडियं च बंदिणा—

अत्थमइ अत्थगिरिमत्थयम्मि संपुण्णमंडलो सूरुो । तुह उण खग्गे णरवइ ! अत्थाया सूरसंदोहा ॥ ७९ ॥

तओ तमायणिऊण विसज्जियासेससेवयजणो रइहरमुवगओ राया । तत्थ य संज्ञावैस्सयाइयं काऊण करणिज्जं णिसैण्णो वरपलंके पत्थाणकहासंबद्धालावेहिं चेव किं पि वेलं गमेऊण णाइदूरोवविट्ठणरकलियवल्डईमहुरमणहरालत्ति-गेयमिलियसंगीयमुमुहागयणिदाविणोयमणुहविउमादत्तो । एत्थावसरम्मि य भइयणस्स के वावारा वट्ठिउं पयत्ता ?, अवि य—

१ "वि सामिणो रणमो" जे । २ "णययणाकओ जे । ३ एव पि अ" जे । ४ "प्पा बंदिमहि" स्र । ५ आहिउत्तो स्र । ६ ममं च हिं जे । ७ जुज्जंतमोसह स्र । ८ "पत्थाणेण तस्स चम" स्र । ९ "य सेसणरिदो (दे) विसज्जिऊण अन्तेउर" स्र । १० बहु जे । ११ "वसाणे जे" जे । १२ कडवइ स्र । १३ गयंद स्र । १४ चट्ठं स्र । १५ "फुरफुरा" जे । १६ "तट्ठितेव" जे । १७ "लब्धोणि" स्र । १८ "वक्कसाइविओ जे । १९ "वस्सव" स्र । २० णो पाके स्र । २१ पत्थाणसंबद्धकहालावेहिं चेव जे ।

ण पिबइ दिण्णं पि मां दइवाकरयत्तसपिण्णं पि भडो । पिबइदिण्णं-सम्माणजणियरिणमोक्खणसयणो ॥८०॥
 मयणाहि-पुसिणकलियं विलेवणं कोइ णेच्छइ तणुम्मि । रिबुपहरपेडिफलं णं मा होही समरमग्गम्मि ॥ ८१ ॥
 अण्णो गिम(म्म)जियकैयविसालधाराकरालखमालयं । सुसुरहिपखयमालोवमालियं कुणइ सयराहं ॥ ८२ ॥
 उण्णयविसालपेढालचकलुत्तुंगसिहिणपम्भारं । अहिलसइ णेय दइयं पियं पि णिहं व को वि भडो ॥ ८३ ॥
 संठियगुणं सुवंसं विणयवसोमुक्कदिणसम्भावं । कोइ पडियग्गइ भडो सरासणं गियकलत्तं व ॥ ८४ ॥
 सुपभोहरं सुलोहं णिबं परखंडणेक्ककयलक्खं । पयइकुडिलं पि कोणिं कोइ भडो भयइ वेस व्व ॥ ८५ ॥
 गुणणिग्गयस्स लोहिल्लयस्स परम्मभेयणसहस्स । वाणस्स दुल्लणस्स व कोइ फलं महइ वेत्तुं जे ॥ ८६ ॥
 इय गियमंदिरवाचारवावडो जाव होइ भडसत्थो । ता जामसंठिएणं विक्खियं तम्बचूडेणं ॥ ८७ ॥

तओ रायंगणे पडियं मंगलैपादणं—

परिलुलियतिमिरकेसांऽवमीलियायंवतास्या रयणी । परिणमइ चंदइओवेहोयपिमुणा पणइणि व्व ॥ ८८ ॥

तओ णिदालमुम्मिल्लंतलोयणो जंभालमुक्खलणुक्खेल्लमाणभुयलओ पढमपडिउद्धपिययमामुण्णइयवामपासो पडिबुद्धो
 राया । कयमिद्धदेवयापूयणाइयमवस्सकैरणिज्जं । सुहणिसण्णेणं च दिण्णा समाणत्ती गियणिओइयाणं जहा—दिज्जउ पया-
 णदक्क ति । अवि य—

अह मुरकराहउच्छलियदेवदुंदुहिणिणायसारिच्छो । रायंगणे पयाणयदक्कासहो समुच्छलिओ ॥ ८९ ॥

तओ ढकारवमायणिऊण पडिबुद्धो सयलो वि सामंत-तलवग्गसंदोहो ति । तओ य किं काउं पयत्ता ?, अवि य—

सिहिलिऊण दइयं पिहुंगुण(पियंगु)दलसालयं, कोइ सिहिणघणफलहेरवच्छविसालयं ।

णंदणं व विरहुग्गयतावपणासयं, सामिकज्जि बहुमण्णइ णवर पचासयं ॥ ९० ॥

अण्णाए कंठवेल्लइयं, मोइज्जइ कइ वि ओमुहेल्लयं पि । सुहडेण सामिकज्जए, दइयालइयसिणेहपासयं व ॥ ९१ ॥

विलुलियसिहिलकेसचट्टलीकयचंचलवालं, संठवेमु देवरतणुतरल[य]वालं ।

भणइ कोइ मह सुंदरि ! मुय माणल्लयं, वयणयं च मा वुब्भउ बाहजलोल्लयं ॥ ९२ ॥

उप्पन्तीए कवयं कीए वि 'रक्खासहं' ति दइयस्स । आलिंणिज्जइ बहुसो, गुणाण रज्जेइ जणो, ण रूवस्स ॥ ९३ ॥

जंतदइयमवयच्छिय कीए विसालयं, उंणवेवि सुहमुब्भउजणियविओलयं ।

दुण्णिमित्तसंकाए विसायवमुब्भए, वाहओ(ए) पडोलिज्जइ लोयणमज्जए ॥ ९४ ॥

सुपडित्थिरपरिसण्णयं, कोयि समारुहइ संसेए वि मिल्लियाण । ववसायं पिव तुरययं, सहाययं आवईए संसियाण ॥ ९५ ॥

को वि गलियकट्टयडपलोट्टियदाणयं, गुरुविपक्खभेयक्खमदीहविसाणयं ।

णिययपुरिसयारं पिव परभडमंजयं, आरुहेइ गुरुमयगलमइदप्पुज्जयं ॥ ९६ ॥

कीए वि शओ ति दइयओ, विरहभया हित्थवेविंगयाइं । अवलम्बियाइं तुरिययं, वयंसियाए व्व णैवर मुच्छयाए ॥ ९७ ॥

एवं विणिमायासेसभडयणो खणमेत्तमिलंतसामंतचक्रो पासपरिसंठियऽक्खोहप्पमुहसमत्तसहोयरो अण्णओ भोय-
 णरिंदाहिट्ठियचल-दामोयरो पयट्टो राया । कहिंवि करहुत्तासियवेसरणिवाडियविलासिणीजणहसावियभुयंगो, कहिंवि
 समयगलारुसियपलोट्टियमैटो, कहिंवि बडवादंसणविरुद्धदप्पुद्धुरतुंगमायडिदयारोहो, कहिंवि बहुसिडिगपरियालिय-
 खोरकलयलारावमुहलो वडइ 'संधायारो ति । कइवयपयाणएहिं च पत्तो सरस्सतीए तीरासण्णं सिणवल्लियाहिहाणं
 गामं ति । तत्थ य समयलसमरजोन्माभूमिभागम्मि आवासिओ समुदविजओ ति ।

१ 'पडिफ' (फलण) मा सु । २ 'करविसाल' सु । ३ 'विकुदयं तम्बचूलेण जे । ४ 'लवाडएण जे । ५ 'सा विमीजि' जे । ६ 'वहो-
 वपि' सु । ७ 'करणीय' जे । ८ 'णयडक्क' जे । ९ 'हरदच्छ' जे । १० 'वल्लइ पमोइ' जे । ११ 'इ णरो ण सु । १२ उण्णवेमि सु ।
 १३ णवर मुच्छयाए सु । १४ लपारो जे ।

इओ य सो दूओ जायववणजायकोवाणलो अर्रेणं चेव गओ मगहाहिवरायहारिणि । पडिहारणिवेइयागमणो य
प्रविट्ठो णरत्तइसमीवं । महियलमिलंतमउलिणा य पणमिऊण सविणयं करकमलकयमउलिणा जाणाविओ जायवणरिं-
वुत्तन्तो ॥ तेओ तमायण्णिऊण पलयपवणपज्जालिओ व्व स्वयकालाणलो, अयंडणिवडिओ व्व दीहरुकाडंडो, घणर-
त्ताणंतरफुरिओ व्व तडिच्छडाडोवो, पप्फुरियकिरणजालो व्व जिदाहदिणयरो सहसा दुइंसणो संवुत्तो । रोसफुरिया-
हरो य जंपिउं पयत्तो—कहमहं तेहिं परिहविजामि ? । त्ति भणिऊण उट्ठिओ 'सीहासणाओ । दवाधियरणपडहुच्छलन्त-
पडिरवो अवमणियणिमित्त-मुहुत्त-दियहो तक्खणं चेव णिग्गओ णिययमंदिराओ गंतुं पयट्ठो । उइइयधरियधवलायवचो
पासपहोलंतचंडुलचामरुग्गओ उहामवंदिदिण्णजयजयासदो पुरओ मिलन्ततलवग्गो अवमणियमंतिवयणविण्णासो
विणिग्गओ पुरव्वरीओ । तओ विणिग्गयं मुणिऊण णरवइं

णिग्गमरगलंतगंडयलदाणदुहिणमहाकयप्पवहा । अण्णेन्ति जलयतमवडलविग्गमा मयगल्लग्गया ॥ ९८ ॥

णीहरइ पवणधुयधयवडावलीवंकवलणमासलिओ । मंजीरकयज्झंकारमणहरो संदणणिहाओ ॥ ९९ ॥

णिज्जंति पउरडिंडीरपिंडपंडुरतरंगतरलिह्ठा । गंगासोत व्व तरंगमंगुरा चारुयतुरंगा ॥ १०० ॥

करकलियसेल्ल-वावल्ल-सत्ति-फारक्क-फारसंवलिया । उट्ठंति धणुगुणालंकालंतिणो (?) पक्कपाइका ॥ १०१ ॥

एवं च गच्छंतस्स मगहाहिवइणो उब्भट्ठप्पायसालिणो णिवडंति दीहरुकाडंडा, पवाइओ फरुससक्करुकेरभीसणो
मारुओ, रसिया दाहिणदिसाए लल्लकभल्लुया, पदीसियं सरमंडलम्मि कवंधविवं, दिवसओ चेव बहलतिमिरावलंविंयं
दिसावलंयं, अंतरियल्लोयणालोया णिवडिया पंसुवुट्ठी, केणइ पणोल्लियं व णिवडियमहोमुहमायवत्तं, मग्गमोच्छिदंतो
पगच्छिओ भुयंगमो । एत्थंतरे तन्निमित्तमंतिवरिज्जमाणो वि कालकरायडिहओ व्व भवियच्चयाए तारिसीए, परिकखी-
णयाए य सुकयकम्मुणो दीहरपयाणयलंविद्यदाणमग्गो कइवयादंणेहिं च संपत्तो सो वि सरस्सइए पएसं ।

तत्थ य पढमपेसियतुरयारोहणिरुवियजरसिंधुणो(?) आवासिउं पयत्तो । कहं चिय ? उच्चिज्जंतकट्टपंजरो खोट्टिज्जंत-
कुरवडओ भामिज्जंतंकडवडओ णिहोडिज्जंतदूसो गोविज्जमाणन्तेउरावासो पौयडपरिसंठियपिंडवासो आवासिओ मगहा-
हिवो त्ति । तओ अइच्छिओ दिवसो । अत्थंतमुवगओ सहस्सरस्सी । कयमुभयवलेहिं पि संज्झासमयकरणिज्जं । हरगल-
गवल-तमाल-कज्जलुज्जलायारेणमोत्थरियमंवरं तमसंघाएणं ति । तओ मूयलिज्जन्तकायालावे पसरंतघूयसंघाए घडिय-
विहडन्तचैकवायमिहुणे णीडणिलन्तासेसविहयसत्थे णवरं लद्धावसरपसरन्ततरच्छ-उच्छल्ले उत्थरइ वग्गवुंरुहुरारवो,
णीहरइ दरियमइंदरंजियसदो ।

परिसम्मि तमणियरभीसणे, मुव्वमाणसिवरसियभीसणे । अमुहसंसिउप्पायबहुलए, वणयरान मुव्वंतरोलए ॥ १०२ ॥

तओ उभयवलेहिं पि एकमेकासाइणत्थं पेसिया वंदिणो जहा—गोसम्मि जुज्झियव्वं ति । मुणियसमरसंकेएसु य
दोसु वि बलेसु किं काउमाइत्तो भइयणो ?—पूइज्जंति इट्ठदेवया, सम्माणिज्जंति सेवया, सज्जिज्जंति किवाणाइं, सच्चवि-
ज्जंति सरासणाइं, णियत्थिज्जन्ति सण्णाहा, संघडिज्जन्ति गुडोहा । एत्थावसरम्मि य समुदविज्जेएणं पणमिऊण जिण-
विम्भं, वंदिऊण वंदणिज्जे, पूइऊण पूयणिज्जे, दक्खिऊण दक्खणिज्जे, सम्माणिऊण सम्माणणिज्जे, बहुमण्णिऊण
भोयणरवइं, णिवेसिय सयलसहोयरगणं भणिओ बलाहिट्ठिओ दामोयरो एवं जहा—तुमं कारणपुरिसत्तणं कलिऊण कणिट्ठो
वि जेट्ठो, जेण वीयरएहिं तुज्झं चिय सिट्ठमद्ध-भरहाहिवत्तणं, अओ 'तुज्झेस वज्झो' त्ति मुणिऊण समरमग्गाम्मि परिस-
कियव्वं । ति भणिऊण विसज्जिया सणेह-सबहुमाणं । गया य रणरहमुवइयचारोमंचकंचुइज्जंततणुणो णियेयावासेसु ।
पमुत्तो य णरवइं । तओ समरुक्कंठियाण कह कह वि पभाया रयणी । ताव य—

१ तओ समां सू । २ तहिं पि परे सू । ३ सिहां सू । ४ उदयं जे । ५ 'चट्ठव' सू । ६ 'ओ पक्कमिल' जे । ७ 'णालं-
पिणो पक्क' सू । ८ मग्गओ छिदन्तो गओ भुयंगमो । एवं च तण्णिउत्तमंति सू । ९ दीहपयां सू । १० 'तक्क' (क) इयवडओ सू ।
११ पयव सू । १२ 'चकाय' जे । १३ 'पुरकारवो जे । १४ 'वयाइणा पं सू । १५ 'नियनिवाया' जे ।

जइ केस(सि)-रिट्ट-मुट्टिय-चाणूराई णिवाइया णाम । ता किं तेणं चिय तुज्झ गोव ! कंटा समुच्छलिया ?” ॥११७॥
भणिऊणायडिदयचंडचावचकलियमुक्कलगेहिं । भिण्णो सरेहिं पत्तलविचिचपुंसग्गसोहेहिं ॥ ११८ ॥

तओ केसवो वि ईसिवियसंतवयणकमलो 'णीलुम्मिल्लन्तदरदिद्वदसणच्छवी हेलावलइया(य)सारंगधनुवरो पयंपिउ-
मादचो—

भो भो मगहाहिव ! जंपिण किं कज्जमेत्थ बहवेण ? । वायाए भंडणं महिलियाण ण उँणो सुवुरिसाण ॥११९॥
अइरा णिव्वडइ चिय तुम्हऽम्हाणं च जो सलहणिज्जो । करगहियकंकणे दप्पणेण किं कज्जमइमूढ ! ? ॥१२०॥

एवं च भणिऊण सारंगधनुविणिग्गयवाणपसरेण विहलीकयमणोरहं काऊण तप्पहियसिलीमुहसमूहतडुणेहिं च
विद्धो सतुरंग-सारही मगहाहिवो, छिण्णमायवत्तं, णिवाडिओ धओ । तओ हुयासणेण च कोवाणलालिद्वदेणेण सुमरिय-
मग्गेयमत्थं । तं पि पज्जलियजलणजालाकलावकलियदिसामुहमागच्छमाणं दामोयरप्पहियधणगज्जिओरल्लिमुहलवरिसंत-
सलिलधाराणिवाएण विज्जवियं वारुणत्थेणं । एवं च विहलीकयासेसदिव्वत्थो मगहाहिवो संभरइ चकरयणं । आगयं
च तं सिहिसिहाजालभामुरं विलग्गं करयलग्गे । एत्थावसरम्मि य विसण्णा सिद्धा, विसायं गया गंधव्वा, अहोमुहा
ठिया किन्नरा, विसण्णाओ अच्छराओ । तओ रोसारुजलोयणिल्लेण बहणिमित्तं पेसियं वासुदेवाभिमुहं । तं च पंया-
हिणीकाऊण पज्जलियखयजलणजालाड्डालिदिग्गमं पलग्गं केसवकरयलम्मि । तओ हरिसिया सिद्ध-गंधव्वा,
उग्गीयं किन्नरगणेहिं, विमुक्कं कुसुमवरिसमच्छराहिं, फुरियं दाहिणभ्रुयसिहरेण, गज्जियं जयगइदेण, हेसियं वरतुरंगमेण ।
पेसियं च पहरिसुक्कुल्लोयणेणं बहणत्थं । णिवडियं च तस्स कंठदेसे । तओ तुट्ठंणाडिजालं मउलमाणलोयणदलं परि-
क्कुट्टियकमलं पिव पहरच्छिन्नमंडलं पिव णिवडियमुत्तिमंगं ।

तओ सिद्ध-गंधवेहिं मुक्का कुसुमवुट्ठी । कओ य जयजयारवो-जयइ महारायाहिराओ भरहड्ढचक्कवट्ठि ति । पल्लट्टा-
इं सिविराभिमुहाइं बलाइं । आवासिओ तत्थेव वासुदेवो । ठिओ कइवयदिणे । सोहणदिण-मुहत्तेणं च कओ राया-
हिसेओ । पणमिया य सेंमत्तसामन्ता । उवविट्ठा य समुद्विजयाणो जायवा । तओ तत्थेव पदेसे सयलजायवणेहिं-
दवंदेहिं कुरिओ आणंदो । कइं चिय ?—

अच्छुम्भडफुरंतमणिमउडवियम्मियतेयपसरयं, वेळिरवाहुडंडचलकंचणकिंकिणिजालमुहलयं ।

वेयवमुच्छलंतहारावलिभूसणरैणियपुव्वयं, छज्जइ जायवाणमाणंदसेम्मभडणचियव्वयं ॥ १२१ ॥

तओ भत्तिभरणिम्भरमाणसेहिं जायवणरिंदेहिं तत्थ भयवं णिवेसिऊण अरहंतासणयाहिहाणमाययणं कारियं ।
आणंदपुँरं च णिविट्ठं । अज्ज वि तत्थ पसिद्धं पच्चक्खमुवलक्खिज्जइ ति ।

तओ तप्पएसाओ वासुदेवो दाऊण भोयणरवइणो सविसयसमणियं मट्ठरं, पंडवाणं च तप्पडिवद्गामाहिद्वियं
हत्थिणाउरं, अण्णाण वि जं जाण जोग्गं तं ताण दाऊण पयट्ठो णमंतसामन्तमउलिमालामिलन्तचलणजुयलो य सदेसा-
भिमुहं । आवासंतो जहामुहमावासएसुं पत्तो णियवणैयरिं ति । तओ—

परियैम्मियपट्ठमुयवियाणओलम्बमोत्तिओऊलं । झल्लंतचारुचलचमरचूलहल्लन्तहारिल्लं ॥ १२२ ॥

उद्धणिवद्धुद्धयविंधकणिरकिंकिणिक्कलावरमणीयं । चीणंसुउज्जलुव्वेल्लिविविहवण्णाहिराहिल्लं ॥ १२३ ॥

पक्खित्तपउरकुसुमोवयारगंधधममिरभमरउलं । डज्जंतागरुपडिवद्धूमधूमलियधयचिंधं ॥ १२४ ॥

मयणाहि-पुसिण-वणसारपउरपरिमलियकयजलच्छडयं । ठाणट्ठाणे अहिमुहवरदलसंपुण्णकयकलसं ॥ १२५ ॥

इय जणियहट्ठसोहासमाउलं दारयापुरिं काउं । जणियाणुराय-कोहल्लमहिमुहं णिग्गओ लोओ ॥ १२६ ॥

तओ वासुदेवो वि मुणिरुवियतिहि-णक्खत्ताणुकूलो गोउरमुहं जाव संपत्तो ताव य पउरकोऊहलमिल्लेन्तपुरसुं-

१ लीलुम्मं जे । २ पयंपिउ पयतो जे । ३ हुणो सुवुरिसाण जे । ४ 'गससारही' स् । ५ 'पयाहिण' कं जे । ६ 'मं वल्लमं'
७ 'ग्गेहि' जे । ८ 'तनाडिजाल' जे । ९ 'विओ' स् । १० 'सामंतसा' जे । ११ 'णरिवेहि' स् । १२ 'रणिपु' जे । १३ 'समुम्भवण'
जे । १४ 'पुरवरं' च स् । १५ 'णयरे ति' स् । १६ 'वप्पिय' जे । १७ 'ल्लन्तमुदरी' स् ।

दरीदेहसंदाणियरायमगं रायमग्गुब्बडधन्तणिबिडसम्मइदप्पिओरुद्धतुरयारोहं तुरयारोहणिवारियगमारोहतिकखंकुसा-
यडिदयमयवरं गयवरगुग्गजिओरल्लिसदसंतत्थसंदणतुरंगदुग्गमं रायमगं कह कह वि गंतुं पयत्तो । ताव य धरियधवल्लुइड-
पुंडरीओवलक्खिओ चेडुल्लचामरकलावपरिद्धिओभयपासो 'पसेस चासुदेवो' ति भणंतीहि पुल्लउमाइत्तो पुरसुं-
दरीहि । कहं ?—

लीलावियंभणुक्खित्तवाहुकरमोडियंगुलियलाहि । मुइपवणपरिमल्लणीवहलभसलउलवल्याहि ॥ १२७ ॥

वम्मइवसमोद्दाइयल्लसंतपरिसिद्धिल्लकेसचासाहि । विसमुण्णमन्तसिद्धिणत्थल्लसंतोरुदाराहि ॥ १२८ ॥

कीरन्तकण्णकंडुयण्णसिणिग्गमीलियच्छिजुयलाहि । एककरधरियकोमलवडन्तसिचएकचासाहि ॥ १२९ ॥

इय तदंसणवडिदयविलासपिसुणाहि पवरतरुणीहि । विसइ पलोइज्जंतो कयाहिलासं महुणिहाइ ॥ १३० ॥

तओ बहुजणजणियंवेळावेळीए कहं कहं पि अइगओ णियमंदिराभिमुहं । तहि च दुवारुदेसणिम्मियमंगलकल्लसं
पलंबंतपच्चग्गुचुयपल्लवुवेळवंदणमालं ललियविलासिणीजणियकोमलालावमंगलमुदलं दियवरसमुग्गुद्धपुण्णाहसंवलियजैय-
जयासइं पविट्ठो निययमावासभवणं ति । तओ विसज्जियासेसरायलोओ कैडवयपाहुयमडपरिवारिओ कंचि वेलं गमेऊपा
णुवण्णो पल्लके ताव य परिणओ वासरो । पडियं च वंदिणा—

पल्लत्थिज्जइ करजालरज्जुसंदामिओ समुदम्मि । सलिलस्स कए पच्छिमदिसाए कलसो व्व दिणणाहो ॥ १३१ ॥

तओ कयजहोचियावस्सओ विसिद्धाहिद्वियविणोएण गमिऊण कंचि वलं पसुत्तो जहासुहेणं । एवं पसाहियसयल-
द्रिसायकस्स णिदलियदरियपडिवक्खस्स बोलीणा बहवे संवच्छरा ।

अण्णया य तरुणजणकयमणाणंदो समागओ महुसमओ । जैत्थ य वणंतराहोया उग्गायन्ति व्व महुयरविरुएहि,
णचंति व्व मारुयपल्लिरुवेळन्तपल्लवेहि, वाहरंति व्व बहल्लकोडलालावेहि, पज्जलन्ति व्व कुमुमियकिमुयवणेहि, धूमा-
यन्ति व्व पउरुल्ललंतकुमुमरणं । अण्णं च मंजरिज्जंति सहयारा, जालइज्जंति मल्लियाओ, पल्लविज्जंति कंकेल्लिवणाइं,
कोरेइज्जंति कुडयणिउरुम्बा, कुमुमिज्जंति कणियारणियरा, मउरिज्जंति पुण्णायपहयरा । जहि च—

पिययमसव्वायरपाणिपेळणुक्खिल्लवियडपरिणाहं । सहइ कैल्लकणिरकंचीकलावमुहलं णियम्बयडं ॥ १३२ ॥

करधरियरज्जुपेरंतणिसहदुग्गमविमुक्कसिकारं । मणिवल्लय-कुंडल्लम्भिडणमहुरपडिवद्धसंकारं ॥ १३३ ॥

सहियणपुच्छिअपियगोत्तचल्लणपडिरोहवडिदयविलासं । सहइ सलीलालसत्रिल्लियक्खरं लज्जियपल्लत्तं ॥ १३४ ॥

आवेयहल्लिरुम्भडरणंतमणिदाममहुरसंवलयं । सहइ कलमंदतारुच्छलन्तहिंदोलउग्गीयं ॥ १३५ ॥

इय णियदइएण समं समंदिरुज्जाणचूयगहणेसु । रमणीण वसन्तभरम्मि सल्लियंदोलियं सहइ ॥ १३६ ॥

अवि य—

सुरहिपरिमल्लदामपलोद्वियदाणओ, चूयमंजरीजालविणित्तविसाणओ ।

गयवतीण वित्थारियविरहदुहासओ, वारणो व्व पवियम्भइ माहवमासओ ॥ १३७ ॥

कयगुरुविरहुवेययं, भमंतमसलालियासमीवयम्मि । पडिएहिं संभमाउलं, पलोइया(यो) कुवियकालेसंकलो व्व ॥ १३८ ॥

एरिसम्मि य महुसमए एकम्मि दियहे बल-दामोयराण सुहणिसण्णाण णियघरसंबद्धालावमंतयन्ताणं भणियं
वासुदेवेणं—“भो हलाउह ! पेच्छ पेच्छ सयलजणाइरित्तववसियमरिट्ठणेमिणो । जेण ई” अम्हाणं महाचोज्जं । कुओ ?—
जेण तेलोक्खिइल्लण-रक्खणकल्लमो वि तहा वि ण णियवल्लमौहप्पमुव्वहइ, रुव-सुहवत्तणोइसियकामदेवो वि तह वि सल-
लियविल्लैसिणिपलोयणपरम्मुहो, सयलजणपत्थणिज्जसंपत्ताऽउव्वजोव्वणो वि ण जणियविसयाहिलासो । तओ जइ
केणइ विण्णासववएसेण विसयवागुरागोयरं णेउं तीरइ ता लेंडं होइ” ति । एत्थंतरम्मि य पडियं वंदिणा—

१ बडलं सू । २ 'यपोत्तावे' सू । ३ 'जयसह' जे । ४ कयवयपाहुयं सू । ५ किंचि सू । ६ सक्कसरा सू । ७ तथ सू ।

८ मारुवापं जे । ९ कुहरिज्जन्ति कुडं सू । १० कलिकणिरं जे । ११ सली(ली)ल्लोलयं सू । १२ 'सकलं व' सू । १३ व सू ।

१४ 'मानप्पमवि मुव्व' जे । १५ 'लासिणीयणपरं' जे । १६ लट्ठय जे ।

उच्छलन्तकलचचरिहंजियरसणओ, धवलमल्लिउम्मिल्लियदीहरदसणओ ।

चडुलपल्लवुवेळिरत्तरलियजीहओ, महुणिहाइ ! पवियम्मइ माहवसीहओ ॥ १३९ ॥

जह जह दाहिणपवणओ णराण परिमुसइ मासलंगयाइ । मयणग्गिणा समदियं तह तह संतावियाइं हिययाइं ॥ १४० ॥

एवं च बंदिणा पदियं णिसामिऊण भणियं वासुदेवेण-अहो ! सुंदरमुवत्थियं, ता मज्जणयववणसेण गिज्जन्तवस-
न्तचचरीसमणियं मणहरविलासिणीयणपरियरियं 'रुप्पा-सच्चासणाहमंतेउरमरिट्ठणेमिणो विलोहणं जणिस्सइ । चि
भणिऊण सदाविओ पडिहारो जहा-घोसावेसु णयरीए एवं 'कलं राया वसन्तचचरीपरियाउज्जमज्जणयकीलामुहमणुह-
विस्सइ, ता विविहवित्थरेण सयललोण्णावि णिग्गच्छियब्बं' ति । तओ 'जमाणवेसु(१सि)' चि भणिऊण निग्गओ
पडिहारो । संपादियं रायसासणं । ताव य अत्थमुवगओ दिणयरो । पदियं च बंदिणा—

अह दसहकिरणकलावजलियजालाविभम्मामाहण्यो । णहयलवणावसाणम्मि तरणिदोहो समोल्हाइ ॥ १४१ ॥

तओ एवमवगच्छिऊण उट्टिया हलहर-चक्काउहा । कयं संज्झाकरणीयं । विविहविणोपेहि य गमिया रयणी ।
पदियं कालाणवेयण—

करणहरपहरणिहलियतिमिरकरिकुम्भरुहिरत्तो व्व । उययधराहरसिहरम्मि सहइ सीहो व्व दिणणाहो ॥ १४२ ॥

तओ विउडो महुमहणो, कयमुचिय(यं) संज्झाइकरणिज्जं । ताव य सयलो सामन्त-तलवग्गलोओ पुरलोओ य
जहाविहविरइयणेवच्छो सभवणाओ चेव समइवियपियचचरीसणाहं णिग्गओ । वासुदेवो वि पासपरिट्ठियारिट्ठणेमी
निग्गओ, पेच्छइ य चचरिं । सा य केरिसा ?—

अलिउलचलपम्हउडवियासियसुमणदलो, उब्भडमहुमासो वि वियम्मइ भूसियमुवणयलो ।

उब्भिण्णचूयणवपल्लवकिसलयसइलए, 'को पिउ वेज्जेवि वचइ ?' कूविउ कोइलए ॥ १४३ ॥

जइ देइयविओए विवज्जइ ता कहे दुचरिउ, इय चित्तेंतो कलयंठिओ "तुह तुह" उच्चरिओ ।

इय एवचियंभियमणहरवहुविहचचरिओ, णिमुणंतु जणहणो लीलए चियरइ सच्चरिओ ॥ १४४ ॥

एवं च एकओ पहयमइल्लहाममुहलं, अण्णओ तालियमहल्लल्लरीवणकारं, एकओ लयाणुगउवेळिरसुंदरीयणं, अण्णओ
सुइसुहगिज्जंतगेयमहुरं, पेच्छिऊण चचरीसंघायं पारदं जायवणरिंदेहि मज्जणयं । जं च केरिसं ?—उब्भडमुयंगंसिकारभरि-
ज्जंतकणयसिगयं सिगयग्गविणिग्गिण्णघुसिगारुणजलच्छहं जलच्छडच्छोडियविलासिणीयणं विलासिणीयणवियणाविय-
मुकसिकारं सिकारायण्णणुप्पणतुरुणकोउहलं कोउहलक्खित्तसयलगरिंदलोयं ति । अवि य—

करकलियसिगयामुकणीरपहराउराण तरुणीण । अव्वत्त-मम्मणालावजंपियव्वाइं रेहन्ति ॥ १४५ ॥

दइयंजलप(प)हरुप्पणसंगमुब्भूयविब्भमविलासं । कीए वि जणियंतरपाणिकिसलयालोइयं सहइ ॥ १४६ ॥

कीए वि सलिलोल्लारुणसिचयच्छोच्छइयपीणपेरंतं । सिंदूरियवरकरिकुंभविब्भमं सहइ थणवट्ठं ॥ १४७ ॥

कीए वि सिंगउग्गिण्णजलविबेल्हत्थियं मुहं सदसा । आसारणहरविरल्लदलउहं सहइ कमलं व ॥ १४८ ॥

कीय वि विसद्वदरदलियमालतीमउलदंतुरो एस । पियमज्जणकीलाचिलसियाइं हसइ व्व धम्मिल्लो ॥ १४९ ॥

दरलहसियकंचिदामं कीय वि वियडे णियम्भविम्भम्मि । जोव्वणकरिणो रुंदंदुय व्व रेहइ णिमज्जंतं ॥ १५० ॥

इय जलकैयकीलाल(ला)लसाण जायवणरिंदयंदाण । जायं वडिइयवम्महविलासपसराण मज्जणयं ॥ १५१ ॥

एवं च विविहकीलाविणोयविण्णासेण णिव्वत्तेऊण मज्जणयं उत्तिण्णा जायवा । तओ वासुदेवेणारिट्ठनेमिणो
पयारणत्थं पेसियाओ रुप्प-सच्चा-जम्बवईसमणियाओ अट्ट अग्गमहिसीओ । आहासियाओ परिहासपुव्वयं मगयवा ।

१ 'रुम्भव' सु । २ 'रुप्पा' सु । ३ 'अत्थवणमुव' जे । ४ 'जह' सु । ५ 'दावो' जे । ६ 'एण व' सु । ७ 'उब्भरिल्ल' सु ।
८ 'मासु' सु । ९ 'वेचेवि वचइ ?' सुचइ कोइ' जे । १० 'दइओ विव वज्ज' जे । ११ 'चित्ते' तो सु । १२ 'ठिए' सु । १३ 'सिम्भर' जे ।
१४ 'संगमुब्भू' सु । १५ 'विवणरियं' सु । १६ 'कयलीला' सु ।

तओ भूभंगविभ्रमं भणिउमादत्ता जंबवई एवं जहा—“किं ते वंठसंठाणस्स अलियविणयाणुवत्तिणो जोव्वणुव्वहणेण ?, जओ विसयाहिसंगो जोव्वणस्स, परिमलं विसट्टकमलायराण, सिसिरत्तणं संपुण्णमयलंछणस्स उवलक्खिज्जइ फलं ति । अण्णहा सेलुस्समंडणं पिव गिरत्थयं, जओ कन्तारपुरिसो व्व अहिलसइ जोव्वणाहोयं मयरद्धओ । ण य कुलुम्मायाण अण्णो वि सहवड्ढिओ वंचिउं ज्जज्जइ, किं पुण जो मणुव्ववो ? । अण्णं च—

काममकामं सहसंसियं इमं जइ कुमार ! तं कुणसि । ता तइ अण्णस्स वि संसियस्स का होज्ज पचासा ? ॥१५२॥
करिणीरहिउ व्व करी, कन्तियरहिउ व्व जह निसाणाहो । तह होइ जोव्वणं सुवुरिसस्स रहियं पणइणीए ॥१५३॥

अण्णं च जं जणणि-जणएहिं पि संताणवित्थरणंनिमित्तं पयमायरियं तं तुह ण घडइं अण्णहा काउं, गुरुआणाइकमणं च ण जुत्तमेवंविहाण महाभायाणं । ता कमेण पत्तसंपुण्णपयरिसत्तणं ससि व्व सफलीकरेउ रोहिणीसमागमेणेयं दइया-पाणिगहणेणं जोव्वणं । अण्णहा रणपायवस्स व कुमुमुग्गमो गिरत्थओ जोव्वणारम्भो” ति । एवं च सप्पणयं जंबवतीत्रयणवहुमाणाणुरोहानामणेण भयवया वित्थियं—एवं चेव कीरंतं मज्झं पि परिचायकारणं भविस्सइ । ति कलिऊण परिहासपयारणापुव्वयं पि भणिऊण पडिवण्णं—एवं चेव कीरइ ।

अह विसयविरत्तेणावि भयवया एवमेव पडिवण्णं । सच्छासयाणुरोहेण सुवुरिसा किं व ण करंति ? ॥१५४॥

तओ तओ चिय पदेसाओ पयवज्जिराउज्जपेज्जालकंसालतालमुहलं दिसिदिसिविविक्खणपइणपिद्वापयसणाहं परोप्पराभिघाउच्छलंतपरिमलियकप्परपडलं कुंकुमक्खोयविवस्वेवस्वसियपेच्छयजणं णच्चिरविलासिणीयणरणंतरसणं विसे-सणेयत्थमलहंतखुज्जियायणं वद्धावणयं काऊण गिवेइयं महुमहस्स । तेणावि सयलतेलोकललामभूया वरिया उग्गसेण-धूया सच्चभामासहोयरा अचंतखुव-जोव्वणोहसियसुरसुंदरी रायमती णाम कण्णया । कया य त्रिवाहणिमित्तं मणि-कण-ग-रयण-करि-तुरय-वासाइया सयलसामग्गी । मेलिया य गिमंतगागयणरिंदभोयणनिमित्तं बहवे जीवादओ ति । भयवं पुण तेणेव ववएसेण संवच्छरियं महादाणं दाउमादत्तो, अवि य—

मणि-रयण-कणग-धण-धण्णथोरधाराणिवायवरिसेण । गिन्वाविज्जइ लोओ घणसमएणं व सयराहं ॥१५५॥

फलसंपत्तीए समत्तसाससंपायणेकरसिएण । दाणेण भुव्वणगुरुओ सरएण व गिन्वुओ लोओ ॥ १५६ ॥

जो जह जमेव पत्थइ तं तस्स तहेव दिज्जइ असेसं । तह इच्छियं विदिण्णं जह गेण्हंता ण लब्भंति ॥ १५७॥

जाहे य दिज्जमाणस्स कह वि गिण्हंतया ण दीसन्ति । ताहे रच्छामुह-चच्चरेसु पुंजिज्जइ धणोहो ॥१५८॥

रायपुरिसेहि य पुणो जो जं मग्गइ तहेव तं तस्स । घोसाविज्जइ तिय-चच्चरोरुपंथेसु पुणरुत्तं ॥ १५९ ॥

इय एवं गुरुगय-रह-तुरंग-मणि-रयण-कंचणसणाहं । ता दिण्णं जयगुरुणा अइच्छिओ वच्छरो जाव ॥ १६० ॥

ताव य समागओ विवाहस्स महसवदिवसो । आदत्ता विवाहसंजची । भयवं पि किले ‘परिणेमि’ ति परियण-कयाणंदसुंदरवयणं भणिऊण समारूढो सारहिणा पुरोवणीयं धुव्वंतधयवहुमंडं कलकगिरकिंकिणीसणाहं मणपवणदच्छपरि-हच्छतुरयपजुत्तं उभयपासपरिसंठिउदंडपुंडरीयं पासपरिसंठियविलासिणीकरकलियचडुलचामरसणाहं रहवरं ति । चोइओ सारहिणा वैदिकयजयजयासइमुहलं संदणो पयटो गंतुं । कहं ?—

पडुपवणदच्छपरिहच्छतुरयवेयावयड्ढिओ सहसा । गच्छइ जहिच्छियत्थामणिच्छिओ जयगुरुमणो व्व ॥१६१॥

पत्तो तमुदेसं जत्थ गिरुद्धा सस-पसव-संवराइणो चिट्ठंति । तेहिं च जाइसरमइकयाणुवत्तणेहिं भगवयागमणेणं समं चेव रसियं । तओ तं सहं समायणिऊण पुच्छिओ सारही—कस्सेसो घणगज्जिओरल्लिसरिसो खो ? । सारहिणा भणियं तुम्ह-किल विवाहमंगलावसाणे ‘एयाण मंसेण आणंददिवसो कीरहि’ ति मंतिऊण गिरुद्धा मे पाणिगणा । एयं”मुणि-

१ जोव्वणमहो य मय” जे । २ कतीरहिउ जे । ३ सुवुरिसाण जे । ४ “णमेयमाय” सू । ५ “इ सुवुरस ! गुरुआणा अण्णहा काउं, ण जुत्तमेवंविहाण(ण) महा” सू । ६ “गमणे भय” सू । ७ तहेव जे । ८ “हसमऊतव” सू । ९ किर जे । १० “परिद्विष” सू । ११ “मुहलस” जे । १२ एवं सोऊण सू ।

ऊण भयवया भणियं—“अहो ! अण्णाणं, अहो ! अंधत्तणं,

जह फोडा सीयेलिया विसं च जह महुरयं वियड्ढेहिं । तह पावदिणो वि इमो आणंददिणो पसिदिग्गओ ॥१६२॥
भणं च जइ एरिसो वि आणंददिवसो ता पावदिवसो उण केरिसो ? । जइ पाणादिवाएण विवाहधम्मो ता पावं
पुण केणोवाएण ? । जं च परमंसासणेण सपिंडपोसणं तमच्चन्तगरहियं । कहं ?—

णियमंसपोसणं जो ईच्छइ परमंसभक्खणं काउं । सो कालकूडकवलणपरायणो जीविउं महइ ॥ १६३ ॥

चेट्ठइ नियंगलट्ठिं परपाणप्पहरणेण जो मूढो । सो वालुयवर(ल)णम्मि वि दहत्तणे कुणइ णियवुद्धिं ॥ १६४ ॥

करयलधरियं दददसणकैट्ठियं मंसमहिलसन्तस्स । सुणयस्स माणुसस्स य को व विसेसो ?, मणसु सुय ! ॥ १६५ ॥

कर-चलण-णयण-वयणोवलक्खिया माणुसा कलिज्जंति । मंसासणेण ते चेय रक्खसाणं ण भिज्जंति ॥ १६६ ॥

दूरं कारुण-मुत्तणाइं लज्जा य होति मुकाइं । धम्मो दया य ण्णं मंसमसंतेण मणुएण ॥ १६७ ॥

इय मंसममुइंसभवसमुब्भवं दीसमाणममुइं च । को छिवइ करयलेणावि ?, दूरओ भक्खणं तस्स ॥ १६८ ॥

अण्णं च पहरिज्जइ णवणिसियस्वग्गग्गधाराणिवायणिइलियमत्तकरिकुम्भसंभवुच्छलियवहलमुत्ताहलपयरं चियभूमिभा-
यम्मि रणमुहे, ण उण भयसंभमेवभूयतरलतारयच्छिपलोइयासेसदिसिमुहे तरुवरगहणन्तरसच्छंदगच्छियव्वया-SSसीयणर-
सियम्मि अविरलदलकोमलतणंकुरकवलणोवचियदेहम्मि रणवड्ढिहए सावयगणे त्ति । तुज्झ वि बंधणमोयणेण धम्मो” ।
त्ति भणिऊण सारही मोयाविओ पमुगणो ।

तओ पल्लहावेऊण संदणं पविट्ठो पुरवरिं ति । विच्छिण्णणेहपासेण य आपुच्छिया समुहविजयाती वण्हिणो सिवा-
देवीपमुहो इत्थियायणो चल-दामोयराहिट्ठिया य जेट्ठ-कणिट्ठाइणो सहोयरा । तओ हरिणा कयपूओ पणामियमहलसीया-
रयणमारूढो लोयन्तियसुरगणपडिबोहिओ गंतुं पयचो । तओ वाहजलपहोलिरलोयणं पलोइज्जन्तो जायवणरिंदसुंदरीहिं,
सुणन्तो गुरुणेहगगयगिरं वंधुवग्गस्स, परिच्चइय सयलजणमणोरहाण वि दुलहं भोगसंपयं, अवहत्थिऊण कयसिणेहाणु-
बंधं वंधुयणं, अवमणिऊण गरुयाणुरायणिम्भरं रायमहं, खओवसमगयचारित्तमोहणीओ तहाविहपरिणामुल्लसंतजीव-
वीरिओ णिग्गओ नयरीओ । पत्तो य पउरपायवुप्पणपसूयपरिमल्ल्हीणभमिरभमरउलं रेचयमुज्जाणं । तत्थ य पमुक्कसयला-
हरणो वज्जियासेससावज्जो ‘णमो सिद्धाणं’ ति भणिऊण पडिवण्णसामाइओ विसज्जियासेसबंधुयणो धीवलसण्णाद्धवग्गहो
णियवलमाहप्पुप्पेहडविजियपरीसहवलो दूरज्झवस्सतवोविहाणेण परिसक्किऊण महिमंडलमागओ मणहरतरुवरविसट्ठन्त-
कुमुमं कुमुमकेसरुकरणिम्भरुच्छलियमयरंदं मयरंदुद्धन्तगंधालिद्धफुल्लंधयवद्धसंकारमुहलं उज्जयंतगिरिवरं । अवि य—

उदामसिलार्यडणिविडधडियपडिबद्धदडणियम्बयडं । जं विविहसिहरपसरियमेकं पि अणेयरूवं च ॥ १६९ ॥

फलसंपाडणिव्वचियसयलसउणयणजणियहरिसाइं । जम्मि उ मंदाणिखुविट्ठणेण णचन्ति च वणाइं ॥ १७० ॥

उट्ठं कुम्भडणिवडन्तकलरविट्ठाइं जम्मि सलिलाइं । णिवडणभयउम्भडुप्पणसोयपसरं रुयन्ति व्व ॥ १७१ ॥

इय तं रम्मत्तणतुलियसयलमुवणं महीहरुज्जंतं । पत्तो संपत्ताज्जंतदुक्खमोक्खं तिलोयगुरु ॥ १७२ ॥

अवि य—

जहिं समागमेकलालमुग्गयंगसेयसंभवंवुर्विदुदंतुरिज्जमाण-

पंडुगंडमंडलीविलासिदिव्वसुंदरीयणासिया मणो हरंति णिज्झरा,

जहिं च फालिओवला समुल्लसंतकंतभित्तिसंगया मेरायणीलकोमल-

च्छलंतपल्लवन्तवत्तिणो विमोहयंति णायरीयणं मणोहरा लयाहरा ।

जहिं च जच्चकंचणुच्चया[ति]चारुचूलचुंबियामरं समीहिओवणिज्ज-

माणसोक्खयं पि मंदरं विहाय कीलियव्वकारणम्मि एंति देवसंघा(घ)या,

१ सीयलया सू । २ करेइ पं सू । ३ “कडिहं जे । ४ “रं वज्जभू” जे । ५ “मुग्गय” सू । ६ “तरुवर” सू । ७ “पालद-
कुम्भय” सू । ८ “मल्लिगिडधवणपडि” जे । ९ मेरायणील मरकतनीलेयर्थः ।

जहिं च संपयं पि सव्वयाफलन्तरुक्खराइहेट्ठओ णिविद्वत्तुट्ठमाणचंग-

संगयंगगासणाहकंदरोयरोवमीयमाणजायरम्मओ विरम्मउ ॥ १७३ ॥ ति ।

तओ तमबन्तफोडुअवेणुमाणल्लियलेवाहा(ह)राहिराममारुहेऊणं अइदुद्धरधारणाधरणसमिद्धाणाणलपल्लुहासेस-
कम्मिधणगणेण जमिह उग्गतवविसेससोसियसरीराणं पि तवस्सीणमईवदुल्लं तं आसोयमासोवलक्खियम्मि अमावासा-
दिणे चित्ताणक्खत्तम्मि भयवयां समुप्पाडियं केवलनाणं । समुप्पणकेवलस्स य चलियासणागयासेसमुंरिद्वंदेहिं भत्ति-
बहुमाणनिब्भरं कया केवलमहिमा । समागया य हरिसवमुल्लसन्तपुलयपैडला बल-दामोयरपुरस्सरा जायवणरिंदा ।
कयकैरकमलमउलंजलीहिं पणमिऊण धुणिउमादत्ता, कहं चिय ?—

जय भव्वसत्तणेव्वाणकारणुव्वदपदमधम्मधुर ! । दुप्परियल्लसमुप्पणकेवललोइयतिलोय ! ॥ १७४ ॥

तेलोकमंदिरुप्पणददयरुद्धरणपचलक्खंभ ! । भवघणवणगहणकरालकवलणुदामदावग्गि ! ॥ १७५ ॥

गुरुकम्ममहापायवपरुडपारोहकड्ढगकरिंद । महमिच्छत्तघणंधारविहडुप्पणपचूह ! ॥ १७६ ॥

इय संसारायडपडणजणियभयणिब्भरं भवियसत्थं । अब्भुद्धर भुवणालंबभूय ! हत्थावलंबेण ॥ १७७ ॥

एवं च सुंरिद-णरिंदाइवंदिओ पवत्तेऊण तित्थं, जीवादिपयत्थवित्थरं पसंसेऊण धम्मं, दिवसयरो व्व विप्फुरिय-
किरणणुकारिणा वयणवित्थरेण पडिवोहिंतो भेव्वकमलायरे, सेंठावेन्तो मग्गम्मि विमग्गसंगयं मूढजणं, रायलच्छिसमा-
ल्लिगणजणियमयविसंदुलं परमत्थोवपसेण विगयमयं कुणंतो णरिंद्वंदं, जणंतो नियतणुदंसणेण सयलजणमणाणंदं, विह-
रिऊण कुसट्ठा-SSणट्ठ-कल्लिगाइणो जणवण, पव्वाविऊण भदिलपुरे सुलसामंदिरपरिवडिडए कण्हसहोयरे, बहुसमण-
गणपरिवुडो मुसावयाणुगम्ममाणमग्गो समागओ बारवइं पुरवरिं । तत्थ य णाइदूरप्पएसे चउव्विहसुरणिकाएहिं विर-
इयं समोसरणं । तं च केरिसं ?— जंबुहीवं पिव पवरपायारयणायरपरिक्खत्तं, अमरपूरवरं व सुंदरीजणसमाउलं, अचंतप-
मुइयचेट्ठियं पिवासोयाहिट्ठियं, मुकुमुमियणंदणवणं व चिदिण्णकुमुमोवयारं, पज्जलन्तं व्व(व) विविहमणिकिरणजालाक-
लावेण । अवि य—

रहसोवयंततियसिंद्वंदसम्मइणिइयुइलियकडयकेऊरकोडि-

पडिवद्वणिविडमणिणियरकिरणपसरुच्छलन्तसंवलयरवियरं,

परिमंदमारुयंदोलमाणसंवलयधवलधुयधयवहुब्भडाडोव-

घडियघणकणिरकिंकिणीजालबहलहलबोलवाउलिजंतदिसिवहं ।

वेल्लहलपल्लुवुवेल्लतरलल्ललन्ततारमुत्ताहलावलीलममच्छमणि-

गोच्छकिरणपच्छण[?-----]णियडपडिवद्वचामरं,

दिप्पन्तविमलकलहोयकणयमणिणियरघडियपायारतियसमु-

तुंगतोरणुव्वद्विधमालावियम्मिउदामसोह[?-----]संपण्णगोउरं ॥ १७८ ॥

विजियघणयसंकदमहिदिसमिद्धयं, धुव्वमाणणाणाविहमणिकिरणुद्धयं ।

मुकयजम्मजणसंसियलोयणलक्खयं, सहइ वरणिहाणं व तयं पच्चक्खयं ॥ १७९ ॥

तत्थ य मुरकरप्फालियदुंदुहीसइमुहले उवरिपरिसंठियुइंडुंडरीयमंडिप पासपहोलंतचेंडुलचामरकलावे पैरिक्खत्त-
कुमुमोवयारमयरंदोवरंजियदिसावलए मुर-णरविदिण्णजयजैयारवे उवविट्ठो भयवं । समागओ वंदणणिमित्तं जायवणरिंद-
यंदो सयलंतेउरपरियरिओ जायवसमणिओ जणहणो, तिपयाहिणं पणमिऊणोवविट्ठो णाइदूरे ।

तओ पत्थुया भगवया धम्मदेसणा सजलजलहराणुयारिणीए वाणीए जहा-सम्मइंसण-चरित्ताणि मोक्खकारणं ।
जहावट्ठियत्तसइहणा सम्मइंसणं । तं च णिसग्गओ, आगमाहिगमओ य । तत्तं च जीवादिणो सत्त पयत्था । ते य णाम-

१ "लयाहिरा" जे । २ "या उपादयं केवलं पाणं" सु । ३ "पउरा" सु । ४ "करयल्लमउ" सु । ५ "भवियक" जे । ६ "संठावन्तो" जे ।
७ "द्वंद्वे" जे । ८ "पुरि" व जे । ९ "संपुण्ण" सु । १० "चट्ठ" सु, एवमन्यत्रापि । ११ "पक्खित्तं" सु । १२ "जयरवे" जे ।

ठवणा-दब्ब-भोवणाविष्णासेण पमाण-णयवाएहि य 'अत्थि' ति जीवो विण्णेयं । चेयणो-सण्णा-विष्णाण-मति-धारणाइ-लक्खिओ संसारपरिभमणकारणराग-दोसाहिट्ठिओ हिंसा-उल्लिय-परधण-रमणीपसंग-परिग्गहाणुगओ कोह-माण-भाया-लोभाभिभूओ, वाय-मणो-कायजोगेहि सावज्जजोगजोइओ, मिच्छादंसण-भोहाईहि इंदियाणमकयणिग्गहो अट्टप्पयारं कम्मं बंधं ति । कम्मवसगओ य जीवो भामिज्जइ णारय-तिरियाइसुं । अओ दुल्लहं मणुयत्तं । मणुयत्तणे वि लद्धे आरियदेस-सामग्गिणा सम्मत्तं दुल्लहं । तहाविहकम्मपरिणामओ य लहिउण सम्मत्तं सव्वप्पयारमुज्जमो कुसलं पइ विदेयव्वो । तओ कुसलकरणुज्जयस्स जंतुणो अवस्सं संसारपज्जंतो हवइ ति ।

एयं चाऽऽयणिउण परिसाए वियलिओ कम्मरासी । पंडिवणं सम्मत्तं, अब्भुवगया 'केहिंनि दिक्ख्वा, गहियं सुसावगत्तणमण्णेहि ।

कहावसाणे य जहागयं पडिगयाए परिसाए ते जणहणभाउणो छ वि जणा अबंतदुच्चरतवचरणमुसियतणुणो जहा-वसरमागए भिक्खाकालम्मि घडियसंघाडया भिक्खाणिमित्तमइगया पुरवरिं । जुयंतरमेत्तपसराए दिट्ठीए महियलमव-लोयमाणा जहकम्मं विहरंतानमेकं णिययप्पहापरिवेसपरिगयं ससि-सूराणं व मुसिणिद्धसामत्तणोवलक्खियं तमालंरु-वराणं व जुवलयं पविट्ठं वसुदेवणरिंदमंदिंरं । तत्थ य संजयत्तणवियलियाहोयं भोयपरिचयणसंजणियणिराउलं आउल-पलोइज्जमाणइरियापदेसणं एसणामुद्धपरिग्गहदत्तावहाणं धम्मलोहउचारणमेत्तपविचीकयमंदिंरंणं जण्हुकण्णापुलिणोवगयं व कलहंसजुंवलयं लोयणपहमुवगयं देवईए । तओ दंसणमेत्तसमुप्पण्णाणंदणिभरमणाणुह्यअउव्वमवत्थंतरं पाविउण भणिया महणसिणी-हला ! पडिलाभमु णं साहुणो जहाविहिं । तीए वि संपाडियं जमाइट्ठं । वेत्तूण य पवयणुत्तेण विहिणा णि-ग्गया साहुणो ।

गच्छमाणे य दट्ठण हरिसवसविसट्ठपुलयपडलं भणिया इमीए रोहिणी एवं जहा-“सहि ! पेच्छ पेच्छ दुद्धरवयविसे-ससोसविततणूणं पि रुवपयरिसो लाइण्णाइसओ पयइपसणत्तणं सिरिवच्छालंक्रियसरीरया जहा, य एए तहा मह पुत्तया वि अणिमित्तवेरिएण जइ ण घाइज्जंतया आसि हयासकंसेण ताएहमेत्तोवलक्खिज्जमाणवओविहाया होता, धण्णा य सा जीए इमे पुत्तय” ति भणंतीए एत्थावसरम्मि य वीयं साहुजुयलयं आगमुत्तेण विहिणा तारिसरुवविसेसाइसय[मुव्वहंत]मुवट्ठियं तम्मि चेव पदेसे । दट्ठण य तं चिन्तियमिमीए-पाएण ण संपण्णं ति । पुणो भणियं-हला ! सव्वायरेण देसु ति । पुणो वि संपाडियं जमाणत्तं ।

गए य तम्मि वि तओ तइयं पि जुवलयं तमुहेसमलंकरेमाणमागयं । पुणो पैलोइउण सयमेव दाउमुवट्ठिया । दाउण य एसणामुद्धं जहाविहिमणप्पयाणं पणमिउणं अन्तोप[रि]णामियावचपरियप्पणाए सणेहपवियंभियव्वतव्वावणासम्मोहेण अप्पाणयं पि त्कालमकलयन्तीए अबंतकोउहलाउलिज्जन्तहिययसिट्ठं पि संदेहावणयणत्थं पहरिसुप्फुल्लोयणाऽऽगयाणं-दवाहजलग्गिणं भैणियमिमीए-भयवं ! ण मंदपुण्णाण गेहंगणे तुम्ह चलणकमलच्चणं संपज्जइ, तहा वि मम कोउहलमे-त्थावरज्जइ, जेणेत्य पुरवरीए साहुजणगुणाणुराई जणोअतिहिंसंविभागसीलो य, ता किं मम एस हिययस्स सम्मोहो ? किं वा ममं चेव कुसलकम्माणमव्वागमो ?, जेण 'तुम्हे आगमायारमुल्लंवेउण पुणो पुणो समागय ति, ददं मे कोउ-हलं ति । तओ तमायणिउण मुणिय पढमागयं सहोयरसंघाडयजुंवलयं भणियमेवेण जहा-“धम्मसीले ! ण य एरिसो सुसाहुण समायारो जेण तंदिवसं भिक्खं गहेउण पुणो वि तं चेव गेहमागैच्छिज्जइ, किंतु अम्हे एकोयरसमुव्ववा छ ज्जणा घाइज्जमाणा सत्तुणा कंसेण समाराहिण हुरिणेगवेसिणा भदिलपुरवरम्मि सुलसाहिहाणाए विवण्णावच-पसविणीए समप्पिया । संवड्ढिया य भयवओ सयासाओ मुंणिउण वुत्तंतं पडिवोहिया संता, एकम्मि चेव जम्मम्मि जम्मंतरासायणेण संजणियसंवेयाइसया 'अहो ! कम्माण विलसियं, अहो ! असारया संसारस्स, अहो ! दुरंतया 'विसय-

१ 'भाकओ वि' सू । २ 'णासण्यं जे' । ३ 'होति ति जे' । ४ एवं सू । ५ पडिवद इ) व' जे । ६ केहि पि जे । ७ मुसिम-णिद्ध' सू । ८ 'तस्यराणं सू । ९ 'लाहमेतमुवा' सू । १० 'जुवलयं जे' । ११ पुलोइउण सयं चेव जे । १२ भणित्तावता-मं' जे । १३ तुम्हे जे । १४ 'जुवलं जे' । १५ तदिवसं जे । १६ 'गच्छित्तं युज्जइ सू । १७ मुणिउण सू । १८ विसयाणं' सू ।

पसराणं' ति चित्तिऊण पव्वज्जमब्भुववण्ण" ति । तओ णिययहिययावेयवज्जरियावचसंसया तव्वयणायण्णपरिफुड-
पायडियपरमत्था मुणिऊण तं वयणं मुच्छासमुच्छाडयच्छिवत्ता थस ति धरणीयले पडिया । तओ अमयजलविंदुणीसंद-
सीयलेण मुणिकरणेणं पिर परिणोक्कीरुद्धजलेण समासत्था । तओ गलंतंमुसलिलपव्वालियकवोलयला जेहणि-
भरपण्डुइयपओहरोद्धन्तदुद्धधारोल्लियधरणियला अइकरुणवयणेहिं भणिउं पयत्ता, कहं ?—

मुयजुयलतियल्लियमेरिसं पि लहिऊण हो ! अहण्णा हं । इट्ठमणिट्ठेण विओइय म्हि हयदेव्व ! किं तुमए ॥१८०॥
मुइणे व्व रयणलंभो अभुत्तभोओ जहा विसंपडइ । अप्पत्ततप्फलासायणेण तह मज्झ तणयमुहं ॥ १८१ ॥
बहुपसविणी वि होऊण गम्भदुक्खाण भायणा णवरं । जाय म्मि ण उण मम्मणमणोहरिल्लाण तणयाण ॥१८२॥
विटो" व्व पोहंसंवद्धमेत्तसंपत्तफलरंसा अहयं । परिणामे पुण ऊसरलय व्व गलियप्फला जाया ॥१८३॥
वालत्तणम्मि कीलाविसेसमलिणाण सा जए धण्णा । अंगाण करयलामलणसोक्खमुवलक्खियं जीए ॥ १८४ ॥
तक्खणमेत्ताकारणरोसंधुइकियकउब्भडवियासा । सहई अणुणवन्तीए जीए मुयचुम्बियं वयणं ॥ १८५ ॥
इय मण्णुणिभरं कयपलावरुइरीए कहजगणीए । मोत्तूण साहुणो वाहकलुसियं कस्स णो वयणं ? ॥ १८६ ॥

एवं च परिदेवमाणा मूढ व्व थंभिय व्व मोहिय व्व आलिहिय व्व मुण्णपलोइओहय व्व सा भणिउं पयत्ता—जाय ! रुइरव-
णाहिरामेण मज्झ वलाएल्लेण विय तुम्ह मम्मणालावेण ण उप्पाइया सवणविवराण मुहासा, रुइरपसायणाजणियं च णोवलद्धं
तुम्हाणमंगपरिसंगमुहं, सयलकज्जकरणक्खमवओविसेससंपण्णाणं पि ण समासाइयं पुत्तजम्मफलं, केवलं णिम्मलजलमज्झ-
परिसंठियमहामणि व्व पलोयणामेत्तजणियफला जाया । ताव य जणरवाओ समायणिऊण आगया ते पढमगया
चउरो वि भायरो । तओ ते एक्केकुपुंजयपरिकप्पिया कित्तियामुत्ति व्व, साहीणमणोहिट्टिया पंचेदियत्थ व्व, गोरीमुय-
तणुविहाय व्व छम्मुहोवलक्खिया, सव्वे वि समं चेव पयइकारुणयापढाणवयणेहिं समासासिउमादत्ता, कहं विय ?—

को कस्स पिया पुत्तो व्व कस्स जणणि व्व कम्मवाहेण । भमिरे संसाररहट्ठट्ठए ? जेण तं मुणसु ॥ १८७ ॥
पुत्तो होऊण पिया, पिया वि होऊण पुत्तओ होइ । माया वि होइ धूया, धूया वि हु होइ जणणि ति ॥ १८८ ॥
सामी वि होइ दासो, दासो होऊण सामिओ होइ । संसारे णियकम्मावपसपरस्स जंतुस्स ॥ १८९ ॥
जेणऽण्णभवन्तरमुक्कयस्स वग्गी मुयस्स णिययस्स । मंसमसइ ति तुट्ठा अओ परं किं थ कट्ठयरं ? ॥ १९० ॥
पुत्तत्तणम्मि जो जेहणिभरं लालिओऽण्ण-पाणेहिं । आलिंमिओ य मलकलुसिओ वि परिचुंविउं वयणं ॥ १९१ ॥
सो विय अण्णभवन्तरसत्तुत्तणजायसरुयरोसेण । विणिवाइंओ समं मुणिसियासिधारापहारेहिं ॥ १९२ ॥
जेणत्तणम्मि जो हिययपहरिसुव्वेल्लेणेहरसियाए । पालिज्जइ वयणणिहित्थयणच्छीरेण पुणरुत्तं ॥ १९३ ॥
सो चेव विब्भमुब्भूयहावभावेहिं मयणणडियाए । रामिज्जइ पियदइयत्तणम्मि कयकम्मवसयाए ॥ १९४ ॥
जा दुहिय ति कलेऊण चुम्बिया सरसवयणकमलम्मि । स चेव पुणो जम्मंतरम्मि दइय ति जेहेण ॥ १९५ ॥
देयाइसुं 'जीय, निएसु, सामि ! सम्माणसु' ति भणिऊण । अणुचरिओ जो सामित्तणम्मिं विणओणयंणेण ॥१९६॥
सो चेव भिच्चभावं समागओ कम्मपरिणइवसेण । अन्तो पसरियगुरुमच्छरेण निब्भच्छिओ पेच्छ ॥ १९७ ॥
इय कम्मपरिणंइवसमचन्तवियम्भिंयैव्वयवसेण । णट्ठपेडयं व संसारविलसियं, किं थ वदवेण ? ॥ १९८ ॥

अवि य—

अण्णणवट्ठणावसविहायणिण्णुण्णएहिं णिम्मविया । मुक्खेहिं दुक्खलक्खा विचित्तभित्ति व्व कम्मगती ॥ १९९ ॥
णियकम्मतरणिपरियावजणियपरियत्तणाविचित्ततणु । अण्णोणवण्ण-रूवेहिं भमइ ककिंइओ व्व जिओ ॥ २०० ॥

१ हा । महमधण्णा । इ" सू । २ बहुपुत्तपसविणी होइऊण गम्भ ?) दुक्खाण सू । ३ बेटे सू । ४ रसा साह । ५ जे । ५ "पुइ-
किय" जे । ६ मुण्णहिययाए पलोइया साहुणो । भणिउं सू । ७ "मणोवट्टिया पं" सू । ८ माया धूया, धूया वि होइ जणणी सकम्मेहिं ॥ जे ।
९ "पुविंयं" सू । १० "ओ य समवे सु(इ)णिसियासियखगधाराहिं ॥ सू । ११ जणणिणित्तम्मि सू । १२ "सु विय सामि(वो) निएसु
सम्मा" सू । १३ "म्मि अइविणयमगे(ते)ण ॥ सू । १४ "णइए मच्चन्त" सू । १५ "यक्कव" जे ।

इतुं जीवाण घणं दहसोइइंभीसणाभोओ । वियरइ घोरकयन्तो विसंकलो मत्तहत्थि व्व ॥ २०१ ॥

इय सोयाओ कयकम्मपरिणइं भाविऊण "विणियत्ता । बहुसो चिय जणणि-सुयत्तणाइं सुलहाइं संसारे ॥ २०२ ॥

अण्णं च जंतुसंताणोवरि ओवयति मच्चुमइंदो, कण्ठिउमहिलएइं जरारववसी, पसरन्ति वाहिविहीसियाओ, अन्तो-
विचासणपच्चला पहवन्ति पैरीसहपिसाया ।

एत्थावसरम्मि य वसुदेवसमणिया म्णियवुत्तंता अन्तोवियम्भन्ताउव्वहरिसपंसरा समागया तमुहेसं बलदेव-
वासुदेवा । दिट्ठा य पसरियाणंदवाहभरनिम्भरेहिं सहोयरा । समागयम्मि य वासुदेवे सत्तमाहाहिट्ठिओ व्व गहंगणा-
होओ, सत्तरिसिपरिवारिओ व्व देवमग्गो, सत्तसरसमणिउ व्व गंधव्ववेओ, सत्तदीवोवगओ व्व जंतुहीवो तेहिं तव्वेलं
पवरपुत्तएहिं बहुपाययपरिणओ महादुमो व्व वसुदेवो रेहिउं पयत्तो । भणियं च वासुदेवेण जहा—"एस अम्हाणं
तिलोयविम्भयजणणो समागमो, कस्स एसो साहिप्पन्तो वि चित्तसंविर्त्ति [ण] जणेइ ? , केरिसा वा मइ रिद्धिसमुदये
भिव्खाभोइणो तुम्हे ? , किं वा ममेइणा रज्जेण ? , उच्चं च—

पियं पुत्त भाइ भइणी भज्जा सयणो व्व जो समासणो । भिच्चो व्वऽण्णमग्गो ण णंदए णंदमाणेणं ॥ २०३ ॥

वेसंभकुलहरं णिव्वियारसम्भावणिम्भराययणं । विहुरसहायं मित्तं च जत्थ णो चिट्ठति मुहेण ॥ २०४ ॥

पररिद्धिदंसणुप्पणसोयसामलियणिययवयणेण । पिसुणा य वियम्भियदुक्खजलणजालं ण डज्झंति ॥ २०५ ॥

इय सयलमंडलासंडपुहइलंभेण को गुणो मज्झ ? । एकोयरेहिं वि जहिं समं ण भुत्तं मए रज्जं ॥ २०६ ॥

अण्णं च—अज्जं चिय तुम्हाणं मज्झ य अहिणवसमागमजणिओ पढमजम्मदिवसो, अज्जं चिय मा पहवउ कंसारि-
विम्भमो व्व परोप्परविओओ" । एवं चाऽऽयणिऊण वसुदेव-हलाउहेहिं पि णेहपरवसयाए एवमेवाणुमणियं । तओ
साहुणो भणिउं पयत्ता, कहं ?—

"कह कह वि विसयवग्गुग्गवागुरासंगणिग्गया अम्हे । कहमिच्छामो पडिउं तत्थेव पुणो कुरंग व्व ? ॥ २०७ ॥

विरहमरणेण मरिऊण संगमाओ पुणव्वभविसेसो । एकम्मि चेय जम्मम्मि अम्ह जम्मंतरं जायं ॥ २०८ ॥

विरहो चिय वेरग्गस्स कारणं साहिमो परं सेयं । तं सयमणुहविऊणं कह णिव्वेओऽम्ह मा होउ ? ॥ २०९ ॥

णेहुच्छिच्छी सव्वायरेण जा जुज्जए जइजणस्स । कह तस्स चेय कीरइं संधाणं जाणमाणेहिं ॥ २१० ॥

ता अलमेत्थाणुबंधेण । एत्थ य संसारन्तरवत्तिणो जीवस्स कम्मवसगस्स सुलहा विओया, दुलहा समागमा,
चंचला इंदियतुरंगमा, दुप्परियल्ला विसयभुयंगमा, णल्लिणदलउडोवडियजललवचला लच्छी, जलणिहिवडियं व रयणं
पुणो दुल्लहं मणुयत्तं" । एवं च माया-वित्तं पि साणुणयं संबोदेऊण णिच्छिणासंसारवासपासा भयवओ समीवं चेव
गया विविहतवविसेसेहिं च समुज्जमंति ।

तओ तेसु गणसु समोसरणत्यस्स भयवओ जायवपरियरिओ वंदणणिमित्तमुवगओ वसुदेवो । वंदिऊण य जहाविहिं
जिसण्णो जहोचिए भूमिभाए । तओ कहंतरं जाणिऊण धरणियलमिलन्तमालयलाए पणमिऊण पुच्छिओ भयवं देवईए
जहा—भयवं ! कस्स उण कम्मणो फलं जं मम पुत्तएहिं सेह विओओ ? । तओ भयवया जलहरोरल्लिगहिरयराए भारईए
भणियं जहा—"देवाणुप्पिण ! इओ जम्मंतरम्मि तुज्झ सवत्तीए महामणिसंजुया मणिकडयविसेसा थवणत्थं समप्पिया ।
कालंतरेण य मग्गिया तीए । तुमए ईसावसेण अवणेऊण 'छ म्मणिणो पणट्ठ' चि भणिऊण न सम्मप्पियैो सवत्तीए । तीए
वि णिव्वियप्यं गहिया । ता एयमेत्थ फलं" ति ।

तओ एयमायणिऊण सोयवसगलन्तवाइम्भुर्विदुपव्वालियवयणाए भणियमिमीए—भयवं ! एइहमेत्तस्स वि दुक्कयस्स

एदहमेत्तो विवाओ ? । त्ति भणिऊण दीहुण्णीसासाणिलविलुलियालयाणणा किंचि अहोमुही टिया । पुणो भगवया भणियं—
“देवाणुपिण ! अलमुवेएण, एरिसो चेव एस संसारसहावो, सुणसु, गुरुरकम्मपयपभारवियम्मिउम्भडकल्लोलम्मि
जाइ-जरा-मरणान्तपयत्तावत्तपउरम्मि विविहवाहिवेयणुवेहिलोलवीयीविच्छडम्मि दुव्वारविरहविसट्टमच्छपुंछच्छडम्मि
दूसहसोयसमुद्धंतकरिमयरणियरम्मि निवडंताऽणंतहीरंतजंतुसंताणम्मि संसारसायरम्मि निवडियस्स जंतुणो दुल्लहं मणु-
यत्तणं । कहं चिय ?—

पुव्वाऽवरभायसमुदखित्तपरिभनणनिलियवडिऊणं । सुदस्सभिलादिदंतेण दुल्लहं होइ मणुयत्तं ॥ २११ ॥

तत्थ वि बहुदीवंतरविसेसपउरम्मि मणुयस्सेत्तम्मि । कहं कहं वि कम्मभूमीए कम्मवसयस्स उप्पत्ती ॥ २१२ ॥

तत्थ वि किरायत्तज्जिय-जवण-मुखंडोड-कीरवहुलम्मि । दुल्लहो आरियदेसम्मि संभवो होइ जंतूणं ॥ २१३ ॥

तत्थ वि य कोलि-उच्छंड-डोम्ब-चंडाल-भिल्लवाहुल्ले । होइ मुकुलम्मि जम्मो मुकम्मवहुल्लस्स जीवस्स ॥ २१४ ॥

तत्थ वि बहिरंधुम्भडउवदवुदामदुमियदेहस्स । दुक्खेहिं णिययपंचंदियत्तणं पावते पुरिसो ॥ २१५ ॥

तत्थ वि रूवांसिसमत्तविसयवासंगमोहियमणस्स । मुकयकरणम्मि सद्धा कहं कहं वि णरस्स जइ होइ ॥ २१६ ॥

अहं कहं वि होइ सद्धा धम्मायरिओ मुदुल्लहो होइ । संते धम्मायरिणं वि धम्मसवणं पति अवज्जा ॥ २१७ ॥

धम्मसवणायरम्मि वि संपण्णे होइ दुल्लहा बोही । संपत्ताए वि बोहीए दुल्लहा होइ विरइ त्ति ॥ २१८ ॥

विरतीए वि संपत्ताए दुल्लहा भवविरायसामग्गी । संहिंदियाइदुल्ललियलोलचित्तस्स जंतुस्स ॥ २१९ ॥

इय एवं कयपारंपरकमा कहं वि होइ सामग्गी । देवाणुपिण ! कयकुसलकम्मवसगस्स जीवस्स ॥ २२० ॥

ता भो भो ! भणामि सव्वे वोच्छिज्जंतु णेहपासा, पयहिज्जउ मोहो, सिद्धिलिज्जउ पमाओ, अवलंबिज्जउ धम्मज्जमो,
साहिज्जंतु इंदियभडा, मुमुमूरिज्जंतु विसयवेरिणो, संजमिज्जउ मणतुरंगमो, कीरउ सवाहिरुभंतरो तवविसेसो, तवुत्ताविय-
विणासियासेसकम्मया य पाणिणो पावन्ति सयलोवइवरहियं परमपयं ति ।

तओ तमायणिऊण देवतीए वियलिओ सोयप्पसरो । अण्णे य संबुज्झिऊण पव्वज्जमुवगया । अवरं सावगतणं
पडिवणं त्ति । तयणंतं च बहुपडिपुण्णपोरिसीए उट्ठिओ भयवं । गया य मुराऽमुर-गर-तिरियगणा जहागयं ठाणं ति ।
वासुदेवो वि वसुदेव-देवती-समग्गजायवसमन्निओ पविट्ठो णिययणयरिं ति ।

भयवं पि पुणो वि केणइ कालंतरेण विहरिऊण मेइणिं समागओ बारवत्तिं । विरइयं देवेहिं समोसरणं । उवविट्ठो
भगवं । पत्थुया धम्मकहा । समागया वंदणणिमित्तं जायवा । निविट्ठा णाइदूरे । लद्धावसरेण य पुच्छियं बलदेवैणं जहा-
भगवं ! केच्चिराउ कालाओ इमीए णयरीए अवसाणं भविस्सइ ? कुओ वा सयासाओ वासुदेवस्स य ? । भगवया भणि-
यं-सोम ! सुणसु, दुवालससंवच्छरावसाणे काले समइकंते मज्जपमायपरव्वसकुमारारोसियस्स दीवायणमुणिणो
सयासाओ बारवतीए दाइजणिओ विणासो त्ति । वासुदेवस्स णियभाउणो जैराकुमारसयासाउ त्ति ।

एवं च णिसामेऊण वेरग्गमग्गमुवगया जायवणराहिवे बहवे दिक्खमम्भुववण्णा, अण्णे सम्मत्तं ति । जराकुमारो
वि भयवओ वयणं णिसामेऊण ‘मज्जणिओ विणासो’ त्ति वेरग्गमग्गमुवगओ णिदिऊण णिययपुरिसयारं, अवमण्णेऊण
णिययजम्मं, छेड्डऊण सयणवग्गं, ‘धित्थु मम जीविणं’ ति कलिऊण पविट्ठो कायम्भवयवणं । जायवेहिं च मज्जपडि-
यारणिमित्तं पुरवरीओ रुइरा वि सयला मज्जविसेसा उज्झिया णेऊण गिरिकुहरकंदरेसु । दीवायणो वि तं चेव भय-
वया भणियं णिसामिऊण संजायगरुयसंवेओ पव्वयणिउज्जमेवोवगओ । सेसओ य जणवओ तवमुवकमिउमारदो ।

अण्णया य बहुकालंतराओ कुमारा बहुविहकीलाविणोएण कीलमाणा दहं पिवासाहिइया समागया तमुदेसं जत्थ ते
कायम्बरीविसेस त्ति । तओ तण्होवत्तियत्तणओ पइयकालाहिलासाओ य ‘अहो ! संजायं’ ति भणमाणेहिं पाउमोरुद्धा ।
तओ ते कुमारा मइरावसवोलिरायम्बलोल्लोयणा उदामपवियंभमाणमयपरव्वसतणुणो विसंखलुच्छलंतगीयपडिरवा
पयइंतविसट्ठणट्ठोवयाइ परोप्परव्वेल्लमाणेभ्यलयालिगणपरा णिम्भरमयमंथरं तम्मि वणंतराले कयकीलाविलासं परिम्भ-

मिउमादत्ता । परिभ्रमंतेहि य नेहिं दिट्ठो दीवायणो । दट्ठणं च मयवसपराहीणयाए रायपुत्तणसुलहतिव्वयाओ
य रे ! एसेस सो किल अम्हाण पुरवरी दहिस्सइ' चि भेणन्तेहिं रोसवसवियंमंतभिउडिभंगुरियभालमग्गेहिं दट्ठोद्वीसभं
वयण-वयणेहिं निहउदामदिण्णिणिट्ठुरमुट्ठि-पायप्पहारेहिं ददं कयत्थिऊण मुको । गया य णियणिहेलणाइं ।

ताव य कैस्सइ वयणाओ वियाणिऊणमेयं वुत्तंत बल-दामोयरा तप्पसायणत्थं तमुदेसमागया । दिट्ठो य 'नेहिं
सुहुयहुयवहजालाकलावो व्व रोसारुणियणयण-वयणो मुणी । पणमिऊण य सविणयं पसाइउमादत्ता-भयवं ! मयपर-
व्वसत्तणओ बालसहावत्तणओ य कुमारैहिं जमवरदं तमम्हाण स्वमेयव्व । तओ जाहं बहुप्पथारं भहुरवयणेहिं पि भण्ण-
माणो णो विरमइ कोवकरणाओ ताहे बल्लेण भणियं-कण्ह ! अलमलमेत्तिपण दीणादिरिचिभणिण, ण भयवओ भणि-
यमण्णहा होइ चि, करेउ जमणेण 'चित्थियं । तओ दीवायणेण भणियं-कण्ह ! मया पहम्ममाणेण पइण्णा पडिक्खणा जहा
तुमे भोचूण परं दुवे वि ण अणस्स सुणयमेत्तस्स वि जंतुणो मोक्खो, मम विणिग्गयकोवग्गिणा चारवती स्वयं गेमिस्सइ,
णेयमलियं भयवओ वयणं, णेय पइण्णा मम अण्णइ चि, ता गच्छह तुम्हे चि । तओ ते विसायवससामलियवयणकमला
गया णिययभवणाभिमुहं । तं च मुंणिऊण वइयरं लोया केइ पव्वज्जमुवगया, केइ छट्ठ-उट्ठमाइयं तवं काउमादत्ता ।

इओ य सो दीवायणो चरिऊण कट्ठं बालतवोविहाणं, कयत्थणौजणियाहिणिवेसो काऊणमणसणं कालगओ
समुप्पण्णो अग्गिकुमारणं भवणवासीणं मज्जे । अवहिप्पओण य मुणिऊण वुत्तंत समागओ चारवत्ति । जाव तवो-
विहाणकरणुज्जयस्स जणस्स मणयं पि छिइं ण लैहइ चि । एवमण्णेसमाणस्स गया एकारस संवच्छरा ।

तओ दुवालसमे संवच्छरे 'अम्हाण तवोविसेसेण पडिहयसत्ती कओ दीवायणो' [चि] निब्भओ होऊण जाण-
खाण-पाणाइणा उवललिउमादत्तो जायवजणो रइकीलापरायणो य । तओ छिइमासाइयं दीवायणसुरेण । ताव य
पुरविणौससंसिणो उप्पाया दीसिउं, पयत्ता, कहं चिय ?-विसट्ठहासा जायंति लेप्पमयरूवया, णिमिल्लुम्मिल्लुणयणा
चित्थभिचीओ, अंतोपज्जलियजलणाइं जलाइं, विसंति अंतो पुरवरी ए'य रणसत्ताइं, रत्तकुसुमंवरविलेवणो सुविणयम्मि
दीसइ जणवओ, पायार-गोउराइसु रसइ विरसं सिवा, पणट्ठाणि य चक्काइरयणाणि बल-दामोयराणं, पलयउप्पायपि-
सुणो पयत्तो संवत्तयपहंजणो, मुं(स)र-पासा-उसिवावडकरयलो दीसिउं पयत्तो कालाणलरूवी, भयविवलाइयं जणमंतो
पक्खिवंतो अणिलबल्लुम्मूलियमुज्जाणपायवगणमोच्छुहंतो सुरो । ताव य अट्ठसु वि दिसामुहेसुं पयत्तो कालो व्व कवल्लिउं
महाणलो । अवि य—

अह दीवायणकयकोवजलणजालाकलाववयणेण । आदत्ता कैवल्लेऊण पलयकालाणलेणं व ॥ २२१ ॥

णिवडंति णिविडविहडंतंतुंगसिहरमारुदपासाया । विविहमणिकिरणेरुइरा विमाणसंघ व्व वोमाहिं ॥ २२२ ॥

डज्झइ पज्जलियाणलकरालजालाधुंलुक्कियावयवं । मिहुणं मरणे वि हु णेहसीलआलिगणविओलं ॥ २२३ ॥

डज्झंति पमत्तुम्मत्तसत्तहत्थाउ सयलरमणीओ । पियदइयदेहणुंम्मिज्जमाणधूमद्वयप्पसरं ॥ २२४ ॥

इय डहइ णिइयं सयलजंतुसंताणसंकुलं विउलं । संभरियपुव्वकयतिव्वचेरुसिओ सुरो सहसा ॥ २२५ ॥

एयं च वेल्लइ व्व पहल्लिरूव्वेल्लपायवेसुं, पहावइ व्व दीहरवल्लिपासायपंतीसुं, विलसइ व्व कीलाहरेसुं, विलम्बइ
व्व तुंगतोरणेसुं, उग्गायइ व्व पंणसुंजियरवेणं, हसइ व्व विप्फुरियफुल्लिगुम्मारैहिं, कत्थइ मणोसिलापुंजो व्व,
अण्णओ गेरुयत्तुण्णिविहो व्व, एकओ कुसुमियकिंसुयुकेरो व्व पयत्तो सव्वओ डहिउं हव्ववाहो ।

तओ दट्ठण जलणजालाकलावकवल्लिज्जमाणि चारवइपुरवरिं समागया बल-दामोयरा विमुक्ककंदपरियणपरियौ-
लियं पिउभवणं । तओ देवइ-रोहिणिसमणियं वसुदेवं समारोवेऊण पजुत्ततुंगमे संदणवरम्मि आदत्ता णीणिउं ।

१ 'वरिं जे । २ भणमाणेहिं जे । ३ 'वयण-वयणेहिं' सू । ४ 'मुट्ठिपहरेहिं' सू । ५ कस्सव सू । ६ तेहिं सू । ७ चित्थं जे ।

८ दुवे अण्णस सुणयमेत्तस्स वि णत्थि मोक्खो सू । ९ गच्छिस्सइ जे । १० मुणिऊण जे । ११ 'जाहिजणिया' जे । १२ 'कुमारसु भव-

णवासिपुराणं' भाहे जे । १३ लहिं चि जे । १४ 'विणासणे उ' सू । १५ ए आव(र)णसत्ताइं सू । १६ सरं सू । १७ कयकेउं पं

सू । १८ 'किरिणं' सू । १९ 'लुल्लिकं(वा)कयं' जे । २० 'भूमिज्ज' जे । २१ पवरसुं सू । २२ 'गाल्लिउं' जे ।

जया य चोइज्जमाणा वि तुरया भवियव्वयाणिओएणं मणयं पि ण तरंति समायड्ढिउं, ण चलंति रहचक्काणि, ताहे सयमेव कह कह वि समायड्ढिउणे, अब्बत्थं सुणंता सव्वओ 'हा महाराय कण्ह ! हा बलदेव ! हा पुत्त ! हा वच्छ ! हा भाउय !' ति लोयविमुक्कउकंदणरवं सयलमंदिरोयरेसुं, संपत्ता गरुयवेगेण गोउरमुहं । तत्थ य 'इंदकीलया खल्लिउ' ति जाव रामो इंदकीलमवणेइ ताव मारुयपणोल्लियकवाडसंपुडेण पिहियं गोउरदारं । ताव य दीवायणामरेण भणियं जहा-भो कण्ह ! 'तुम्हे मोत्तूण परं दुवे वि ण य अण्णस्स सुणयमेत्तस्स वि मोक्खो' [त्ति] पुव्वमेव भणियं । तव्वयणाणंतं च पायप्पहरेण पाडियं कवाडसंपुडं केसवेण । तहा वि ण णीहरइ संदणो । इहावसरम्मि य भणिया ते वसुदेवेण जहा-जाय ! बलवं कयन्तो, दुल्लंघा कम्मगती, ता गच्छह तुम्हे, कयाइ तुमए 'बलएवेण वा जीवंतेण पुणो वि हरिवं-सस्स समुण्णई पइट्ठाणं वा होही । तओ पिउणो वयणं जिसामिऊण दीवायणस्स वि णिग्गया वाहजलपव्वालियाणणा दुवे वि जणा । एकम्मि य जिणुज्जाणम्मि जिसम्मिऊण विसायवमुच्छणमच्छरुच्छाहप्पसरा पेच्छिउं पयत्ता संपलग्ग-मविरलजालाकडप्पडिभग्गपसरं पुरजणकयकंदभीसणुब्भडचियं व दारयाउरिं । तओ बहवे जायवप्पहाणा तप्पणइणीपरि-गयकण्णंतेउरियायणो भवियपुरजणवओ य 'णमो जिणाणं' ति भणिऊण गहियपच्चक्खाणो 'ईइसी कम्मपरिणइ' ति कलिऊण कालगओ ।

इओ य राम-केसवा सोयसंगलन्तविसाया किंकायव्वमूढा गंतुं पयत्ता । भणियं च कण्हेण-पिइ-माइ-सयण-मुहि-बहुपुत्त-कलत्तविउत्तेहिं कत्थ गच्छियव्वं ? । ति भणिए भणियं बलेण-सच्चं अम्हाण पउररिबुचकसंकुलं महिमंडलं, एयावत्थगयाणं अहिलसइ हीणबलो वि पहरिउं रिउगणो, णवरमत्थि उवाओ, णिव्वासिएहिं तुमए दक्खिणोयहितडम्मि दक्खिणमहुराहिहाणं पुरवरिं णिवेसेऊण संठिएहिं जुहिद्विलादिपंडवेहिं संबहिदया रायहाणी, वसाविओ तयासण्ण-देसो, तत्थ गच्छम्ह ति, ते य अम्हाण परमबंधवा, ण य आवदीसुं बंधुयणं वज्जिऊण अण्णो समासाइउं जुज्जइ ति । मंतिऊण पाएहिं चिय पुव्वदक्खिणदिसाभायमुररीकाऊण घणपउरपायवं पविट्ठा कोसम्बवणं । केरिसं च ?—

णवरदवाणलणिइड्डमुक्कतरुणियरपविरलच्छायं । खरपवणपेत्तणोयेल्लिपडियतरुमूलवीहच्छं ॥ २२६ ॥

अणिमित्तरुसियवणमहिसमुक्कसुंकारभीसणारावं । दरियमइंदोरुंजियणिणायगुंजन्तगिरिकुहरं ॥ २२७ ॥

गुरुवग्गधुरुकायण्णुट्टिउकण्णवुण्णमयजूहं । उद्वयधूमद्वयधूमवडलपडिबद्धसव्वदिसं ॥ २२८ ॥

इय गलियपत्तसंपत्तिवच्छविच्छायणिप्फलाहोयं । णियकम्मपरिणइं पिव पत्ता कायम्बयारणं ॥ २२९ ॥

अवि य-ताण समाणदुक्खत्तणओ रेयइ व्व वीरियारावेहिं, आहासइ व्व संउणविरुएहिं, अम्भुट्ठइ व्व पवणुच्छ-लियवाउलीहिं, वेवइ व्वे लयामारुउव्वेल्लतरुसिहरेहिं, गरहइ व्व पउरसावयपलावेहिं । अणं च कुणरिंदोलमियं व फल-रहियं, भूययवयणं पिव णट्ठवाणियं, विरहिहिययं व दिण्णसंतावं, भीरुहिययं व भयवड्ढिउकंपं ति । तओ णैवज्ज(? णा)-माणा महियले, उवविसंता कटिणोवलवट्टेसुं, लद्धावलद्धभोइणो, गोवयंता णिययत्तणं, सुमरन्ता विवण्णं समग्गं बंधुयणं, मंदमंदपरिसकिणो पइखेयत्तीणगमणसत्तिणो पयत्ता गंतुं ।

तओ भणियं गोविंदेण-हलाउह ! दढतण्हाहिहूओ म्हि, ण य सक्कुणोमि सम्मं णीसहसरीरयाए पयं पि गंतुं । तओ बलेण भणियं-“वण ! एयम्मि चेय पएसे एयस्स बहल्लदलंतरपेयड्ढिउयच्छायपसरस्स छायासु चिद्वियव्वं जावाह-सुदयमैइरेणेव वेत्तूण समागच्छामि, ण य तुमए मणयं पि चित्तखेओ कायव्वो, ण सुमरियव्वं बंधवाणं, ण कायव्वो विसाओ, अवलम्बियव्वं धीरत्तणं, अवमण्णियव्वा आवया, कायव्वं कुलिसकटिणं व हियययं, जेण अणिचाओ सव्वा-ओ संपयाओ, देव्ववसयस्स य पाणिणो पउज्जमाणो वि विहलीहोइ पुरिसयारो । किं ण सुयं तया भगवया भणियं ?

१ 'जव्वत्ते सु' ख । २ 'इंदमालास' जे । ३ 'बलेण जे' । ४ 'कण्हे' जे । ५ 'अम्ह प' जे । ६ 'णोक्क' जे । ७ 'सुकार' जे । ८ 'पुट्टियुक्क' ख । ९ 'खइ जे' । १० 'सउणं विरुवेहिं ख' । ११ 'व्व रयमार' ख । १२ 'मूलव' ख । १३ 'णिमज्जमाणा ख' । १४ 'मा सव्वं वणु' ख । १५ 'पयट्ठिय' जे । १६ 'मइरेण वेत्तूणमामच्छामि ख' । १७ 'धीरत्त जे' ।

ति । एवं च मुहं ठवेऊण वणंतरालमुद्दिस्सिय 'भयवयीओ वणदेवयाओ ! एस भाया मे कणिट्ठो जीवियाओ वि इट्ठो तुम्ह रक्खणत्थं समप्पिओ' चि भणिऊण गओ ।

गए य तम्मि दामोयरो कोसेयवासेणऽत्ताणयमोच्छाडय पुवणो । जाव य छुहाकिलामियतणुणो तण्हावससू-
माणताल्ल-उट्टउडस्स कह कह वि खेयणीसहत्तणओ समागया जिदा । ताव य भवियव्वयाणिओएण उवत्तीणयाए आउणो
छुद्धयरूपधारी आगओ तमुद्देसं संवर-हरिणाइसत्तमण्णेसमाणो जराकुमारो । तओ तेणाउव्ववणंतराहिरामजणियमय-
भन्तिणा आयण्णायद्धिउम्मुक्केवाणेणं पहओ दाहिणचलणंतरे मम्मपएसम्मि जणइणो । ताव य पहारसमणंतरमेव
वेएणुट्ठिएण भणियं-केण पुणाहं गिरवराही पायतलम्मि पहओ ? , ण य मया कयाइ अमुणियवंसविसेसो णिवाइओ, ता
साहेउ 'को वा ? , किं वंससंभवो वा ?' । तओ तमायणिऊण जराकुमारेण भणियं-अहं खु हरिवंसुव्वभवस्स वसुदेव-
णरिंदस्स सुओ, पुहइमंडलेकल्लवीराणं हल्लि-केसवाणमेकोयरो जराकुमाराहिहाणो जिणयंदवयणाओ केसवपाणपरि-
रक्खणत्थं उज्झिऊण गियपुत्त-कलत्ताइयं सयणवग्गं अमुणियसयलमुहविसेसो वणाओ वणंतरं परिभमामि, ता साहि-
ण्यउ 'तुमं पुण को होऊण ममं पुच्छिसि ?' चि । तओ केसवेण भणियं-एहेहि महाभाय ! एस सो दामोयरो, ता
परिरंभसु ममं ति, सो इं किल तुज्झ भाया जणइणो जस्स कए दुक्खिओ कुसयणा-ऽऽसणेहि अरण्णमार्हिडिओ सो
य सयलो वि किलेसो धिक्कलो जाओ, ता सिग्गमागच्छसु चि ।

तओ तमायणिऊण जराकुमारो तं वयणं ससंभममासंकमाणो जणइणं दट्ठण दूरओ चेव सोयवसुम्मुकदीहधाहो
पसारिओभयभुयादंडो 'हा हा ! इओ मि' चि मंदभागो अच्चन्तकलुणपलावपुव्वयमवलंबिऊण कंठे [भणिउमादत्तो]-“कत्तो
तुममेत्थ ? चि, अहो ! मर्म महासाहसं, अहो ! असमिक्खियकारिया, अहो ! गिक्करुगया, अहो ! महापावकम्मफलं ति ।
संपयं कत्थ गच्छामि ? , कत्थ गओ सुज्झिस्सामि ? , कत्थ वा वचस्स सुगयं ? । जाव पयत्तिस्सइ तुज्झ संकहा ताव
ममं पि भाइवहसमुम्भवो अयसो चि । तुज्झ पाणपरिरक्खणणिमित्तमेव सरीरमुहं पि अगणिऊण भीसणवणंतरालमल्लीणो,
जाव अवस्संभाविचणओ भवियव्वयाए णिक्करुणेणं च विहिणा मए तमेवाणुचिद्धियं । कत्थ ते जायवणरवइणो ? , कहिं ताणि
महिलासहस्साणि ? , कत्थ बलएवाइणो सहोयरा ? , कत्थ वा कुमारपुरस्सरो पहाणपरिणारो ?” चि । तओ केसवेण
भणियं-“महाभाय ! अलमियरजणस्स व पलावेहिं, जेण निमुयं पुव्वमेव तुमए भयवओ वयणं । ता निमित्तमेत्तभूओ
तुमं, ण य तुज्झ भावदोसो । जओ संसारंतरवत्तिणो पाणिणो सब्वस्स वि सुलहमेयं-‘सुलहाओ आवयाओ, दुल्लहाओ
संपयाओ, वहुयं दुक्खं, थेवयं सोक्खं, णिवडंतिणो विओया, दूरवत्तिणो पियजणसमागमा’ । जेण पेच्छमु-विहिविहाणओ
सा तियसपुरिसरिच्छा चारवती, उवहसियदिसावालविब्भमा जायवणरिंदा, अवमणियसुरवइपरकमा महासामन्ता,
णिज्जियसुरविल्लसिणीस[म]मंतेउरं, दूरपडिक्कलियधणवइधणा धणरिद्धी, अप्पडिहयसत्ती चक्काउहो, सब्वमेक्कपए चेव
पणइं ति । अवि य—

सा चारवती मणि-रयण-कणयभवणोवहोयकलिया वि । हरियंदपुरि व्व खणेकदिट्ठणट्ठा सेमं जाया ॥ २३० ॥
वियडकडया वि माणुणया वि तुंगा वि ते तह णरिंदा । कडिणकुलिसाहया महिहर व्व हरिणा खयं णीया ॥ २३१ ॥
लीलाचलंतकलणिरमणितुलाकोडिमुहलपयकमलो । सो रमणियणो अमरीयणो व्व अहंसणो जाओ ॥ २३२ ॥
तं गरुयगइंद-तुरंगसंकल्लदामपक्कपाइकं । कह पेच्छह छायाखेइयं व जिमिसंतरे णइं ? ॥ २३३ ॥
मणि-कणय-रयणणिवहोवहुयधणवइधणोहसारा वि । सा मह रिद्धी माइंदजालजणिय व्व णिण्णट्ठा ॥ २३४ ॥
ते संख-चक्क-सारंग-खग्ग-गय-मोग्गाराउहविसेसा । संदम्मि मयणवाण व्व कह णिरंथीगया सब्वे ? ॥ २३५ ॥
पिइ-पुत्त-भाइ-भइणी-भज्जा-सयणो व्व(य) णेहपडिबद्धो । पाययपुरिसेहिं व कह उवेक्खिओ डज्झमाणो वि ? ॥ २३६ ॥
समरम्मि पउरभडभंजणक्खमं तारिसं बलं मज्झ । एकपए विय णइं पत्तमपत्तम्मि दाणं व ॥ २३७ ॥

१ 'सुदिसिऊण भ' जे । २ तुम्हाण र' जे । ३ 'खाइऊण पु' जे । ४ वण परि' सु । ५ होइऊण जे । ६ य किलेओ सु ।
७ ससंभममा' सु । ८ मम मासाहसं जे । ९ जणुणो जे । १० 'नासिणमंते' सु । ११ सय जे । १२ णिरंथीकया सु ।

णीसेसचित्तसंतावणासणो कोत्थुहो मणी एस । सामणपत्थरक्खंडविग्गमो पेच्छ कह जाओ ? ॥ २३८ ॥
इय जाणिऊणमग्गहाणमेवमतो चि बिहिवसपयटो । मोत्तूण सोयपसरं दिज्जउ कजे मणो धीरे ! ॥ २३९ ॥

ता मुणिऊण य एयं, अवहत्थिऊण सोयपसरं, अवलंविऊण हियएण उच्छाहं, समत्थिऊण मत्थयं, मोत्तूण सोयणियरं, गच्छ दाहिणमहुरं पंडवाणं सयासं जाव सल्लिआणयणणिमित्तं गओ हलाउहो णाऽऽगच्छइ 'मा सो वि भाइवहमणुचिद्विस्सइ' चि । ताव एयं कोत्थुहरयणं साहिण्णाणं 'तेसिमोप्पेऊण साहियच्चा अग्गहाण पउत्ती । मम वयणाओ भणियव्वपेयं जहा-जायस्सावस्सं पाणिणो मरणं, अथिराओ सव्वसंपयाओ, एवमवसाणं तुग्गहाणमग्गहाणं च दंसणं, ता खमियव्वमग्गहाणमविणयचेट्ठियं' । ति भणिऊण 'सिग्गयरं गच्छ, पराहुत्तणिमियचलणपयणिकखेवेणं च गन्तव्वं' ति भणिए गओ जराकुमारो ।

माहवो वि पउरपलोट्टमाणसोणियप्पवाहो वियणावसवियंभियाउव्ववेयणो तण्हासुसंततालु-उट्टउहो सिरणिमियकरं-जल्लिउहो 'णमो जिणाणं, णमो भगवओ रिद्धणेमिस्स जेण केवल्लणाणेण सयललोया-ऽल्लोयवत्तिणो दिट्ठा जीवाइणो पयस्था, धण्णा ते संबाइणो कुमारो जेहिं सहियमणुट्ठियं' ति [? भणंतो] पाउरिऊण णुव्वणो । ता समुदाइओ उदं जीवियंतकारी पंडजणो । तओ धीरम्मि कंतारकाणणम्मि दरमिलायच्छिवत्तो वाससहस्सावसाणे णिययाउयस्स काल-मुवगओ कण्हो चि ।

इओ य बलदेवो वि वेत्तूण सरवराओ णल्लिणिदलम्मि सलिलं अंतोवियंभिउहामहिययावेओ अणिमित्तसूयाणि-ट्टरिद्धपसरो समागओ तमुदेसं । 'पहकिलामियत्तणओ पमुत्तो' चि मण्णमाणो णिमिऊणेकपदेसम्मि तं जलं सिणेहाउल्लिय-माणसो णिस्सणो समासण्णपदेसे । जाव णियच्छए वयणकमलम्मि णीलमच्छियाओ समल्लियंतीओ । दट्टूण संभमुब्भू-यभयविसंसेविसयं करयलेणमवणीयं वयणाओ कोसेयसिचयं । दट्टूण य विमुक्कजीयं सहोयरं मुच्छावसमिलंतलोयणो णिवडिओ धरणीयले । समासा(स)सिऊण य रोसवसविमुक्कसीइणायमुहल्लियवणंतरालो ददपयव्वखेवकंपियमहीयलो जंयाणिहसमुसुमूरियपायवो कयमुयण्फोडणफुडियपडिरवो जंपिउं पयत्तो—

रे रे मिच्छाहम ! भीरु ! दीण ! णिल्लज्ज ! जुज्जइ किमेयं । विणिवाइउं इमं मेम सहोयरं हीण ! तुहं जंतुं ? ॥ २४० ॥

सुत्तुम्मच-पमचे वाले महिलायणे व्व जो पुरिसो । पहरइ णिंदियायरज्जिदिओ सो अदट्टव्वो ॥ २४१ ॥

जइ तुह भडावलेवो बाहुबलं वा तणुम्मि सामत्थं । अत्थि चि ता इओ एहि णिंदियायार ! णिल्लज्ज ! ॥ २४२ ॥

इय एवं दूसहसोयपसरपवियंभिउव्वमहावेओ । ता धाइ ता णियत्तइ पासम्मि पुणो समल्लियइ ॥ २४३ ॥

आगंतूण य समीवम्मि पयलंतबाहसलिलपव्वालियाणणो विमुक्कऽकंदणीसणो विल्विउं पयत्तो—हा महंकसंवडिइय ! हा कणिट्ठय ! हा तिहुयणेकधीर ! हा महारह ! । अवि य—

आसि भणंतो तं 'रोहिणेय ! महे वल्लहो सि अचत्थं' । तं तुमए संपइ कह णु वीरें ! विवरीयमायरियं ? ॥ २४४ ॥

आवइवडिओ अण्णो वि उज्झिउं णेय जुज्जइ भडाण । किं पुण सहोयरो वच्छलो य जेट्ठो पियासरिसो ? ॥ २४५ ॥

बालत्तणम्मि सरिसेहि कीलियं ताइं कीलियव्वाइं । एत्ताहे पम्हुसिऊण णवर एको चिय पउत्थो ॥ २४६ ॥

इय णेहणिग्गमरुप्पणसोहियं मेल्लिउं ममं रण्णे । णो जुज्जइ भुव्वणेकल्लवीर ! तुग्गहाण सविसेसं ॥ २४७ ॥

ताव य—

विगयच्छाओ आमेल्लियंवरो वियलियंसुपग्गमारो । हलहरसोएणं पिव रवी वि अत्थंततरं पत्तो ॥ २४८ ॥

तओ बलएवेण भणियं—“कण्ह ! कीस अज्ज वि णिहावसगओ ? , संज्ञासमओ बट्ठइ, ण य उत्तमपुरिसाणं संज्ञा-समए सुप्पति । भीसणमरणायेयं, तमपउरा रयणी, भमन्ति भीमसत्ताणि, रंजंति केसरिणो, धुरुहुरंति सददूला, धुरुकंति

गुरुवराहा, पसरंति तरच्छ-च्छभल्ला । किं तण ण भुणियमेयं 'पच्चवायबहुला रयणी?', किं ण पेच्छसि मं एकल्लयं अणाहं
असरणं जगिरं ? । कीस इयरपुरिसो व्व दीहणिदाहिलासी ? । किंचावसेसा णिसा, विलम्बिया जेद्वतारया, समागया
पुञ्चसंज्ञा, रविणा समद्दासियमुययसेलसिहरं, कीस ण बुज्झसि ?" । एवं च बहुप्पयारं सिणेहवहुलयाए गरहंतो रेण-
देवयाणं, णिवेययन्तो वणस्सईणं, उग्गयमओ व्व गहगहिओ व्व उग्गाए दिणयरम्मि 'भाउय ! किमिहट्टिएणं ? एहि
गच्छामो' चि भणिउण उप्पाडियं तं मयकलेवरं वलइयं खंधदेसे । तओ असमंजसणिमिज्जन्तजंयो विसममहीयल-
खलंतचलणो मुण्णपइणपयनिकखेवो परिग्गमिउं पयत्तो । तओ तस्स पायपहारो व्व मालणिवडियस्स, ऊसासओ व्व
गुरुप्पहाराउरस्स, खलो व्व सामलियदिसामुहमंडलो, वाहो व्व मुकजलधारासरणियरो, समागओ व्वणसमओ । जहिं
च फुट्टति सिलिधाइं, विसट्टति कंदलाइं, कुसुमिज्जंति कुडयणियरा, मैउलिज्जंति कयंवनिरुम्वा, वित्थरइ केयतीपरि-
मलो, सुव्वइ चिरवरहिणारावो, वित्थरइ कोइलकुलकलयलरवो, पसरइ भमन्तभमरउलकलरवो । अवि य—

कसणघणजलहरोलम्बमाणमहियलामिलतपेरंत । पेच्छइ णियसोय-विसायकंबलोच्छाडयं व णहं ॥ २४९ ॥

अणवरयथोरधाराणिवायपडिक्कल्लोयणालोयं । पेच्छइ पलोट्टणियवाहसलिलपेव्वालिं व जयं ॥ २५० ॥

वोसट्टकलंबुच्छलियवहलपरिमलमिलन्तगंधेणं । मुच्छिज्जइ विसपायवपस्यपवणेण व मुहुत्तं ॥ २५१ ॥

अहिणवविणित्तकंदलसिलिधपडिबद्धगंधवाहेण । अहियं पज्जालिज्जइ वणम्मि सोयाणलो सहसा ॥ २५२ ॥

रेल्लिज्जइ वेयवमुच्छलन्तकल्लोलकल्लुसियाहोया । जह तस्स तणू तह जलहरेण वमुहो जलभरेहिं ॥ २५३ ॥

दरदलियसिलिधदलुच्छलन्तपरिमलमिलंतमैसलउलं । हलिणो गुरुसोयाणलणिवद्धदधूमपडलं व ॥ २५४ ॥

णज्जइ रसंतसारंग-दददुरुदामवरहिणरवेण । रुंयइ व्व णीसहं तस्स सोयविवसं व महिवेदं ॥ २५५ ॥

इय तस्स दुत्थिउदामसोयवडिडयविसायपसरस्स । पैत्तो घणगहिरोरल्लिभीसणो पाउसो सहसा ॥ २५६ ॥

अण्णं च भेसइ व्व घणघणोरल्लिगहिरसहेणं, तज्जइ व्व समुम्भिण्णणवलयंगुलीए, णोल्लइ व्व पयंडपवणाहिघाएण,
वाहरइ व्व 'कौ को' चि कोइलालावेण । अवि य—

जा घोरघणघणोरल्लिगज्जियं सव्वओ णिसामेइ । ता कुंरियतरलतडिताडिउ व्व पक्खुलइ पुणरुत्तं ॥ २५७ ॥

जा धाइ धाहसहेण कंदरुदामदिण्णपडिसहो । ता रुंभइ निम्भरजलपयत्तपूरप्पवाहेण ॥ २५८ ॥

जा सिहिउलकोलाहलकयसम्मोहो पहाइ तयहुत्तं । ता पडइ "णिम्भरासारथोरधाराणिवाएहि ॥ २५९ ॥

जा कह वि कुडयकुसुमेसु लोलदिट्ठिं पणामइ मुहुत्तं । ता मुच्छाए व समयं रुंभइ भसलउलमालाए ॥ २६० ॥

इय जत्तो चिय पसरइ णलद्धीपसरतरलिया दिट्ठी । तत्तो चिय समहियदिण्णदुक्खपसरा णियत्तेइ ॥ २६१ ॥

एवं च कथइ अलद्धीसामो 'कथं गच्छामि ?' 'कं णियच्छामि ?', को वा मम सरणं ?, को मम परिचाणं करि-
स्सइ ?' चि चित्तयंतो परिग्गमंतो गुरुगयकैयसीयरोल्लियासुं गुहासुं, दरियमइंदरोहेसु कंदरेसु, वग्गधुरुहुरौरावधोरेसु
णिउंजेसु, चित्तयंच्छिक्कविल्लचित्तलासुं गिरिदरीसुं, तरच्छ-च्छहल्लुप्पेच्छेसु गुम्भगच्छेसु दिट्ठो संजायदेवत्तणपउत्तोहिणा
सिद्धत्थेण । दट्ठ्ठण य चित्तियमणेण-अहो ! दुव्वारा कैम्मपरिणई, अहो ! अथिरा रिद्धिसमुदया, जेण पेच्छह तं तहा-
विहवल्-परकमाणं वल-दामोयरणं परिसी अवत्थ चि, ता पडिवोहेमि एयं । [ति] चित्तिउण "विउरुक्खियं महम्महियवि-
व्भमाओ तुंगगिरियडाओ समुत्तिण्णं समम्मि चेव भूमिभाए भग्गं महासगडं संजोइज्जमाणमेक्केण पुरिसेण । तओ दट्ठ्ठण
हलाउहेण भणियं-भो ! चोज्जं !, सुदुग्गमाओ गिरियडाओ समोइण्णो तं कहं समम्मि चेव भूमिभाए सयहा विहडियं पुणो
वि संघडिउमच्छसि ?, अहो ! ते मोहया । देवेण भणियं-जइ एवं तो कहं ते भाया अणेयरणंगणेसु णिव्वुहसाहसो

१ अरण्यदेवयाइ सु । २ 'अण्णमणनिक्खेवो जे' । ३ पउरिज्जंति सु । ४ 'इ कलकोहलो कल्लमलो, पसं जे' । ५ 'पप्पालियं सु' ।
६ 'हा गिरिणईहि जे' । ७ 'भमरउलं सु' । ८ 'दलधूमं सु' । ९ रुंयइ जे । १० वत्तो सु । ११ कोक ति जे । १२ फुट्टियं सु ।
१३ रुंभइ सु । १४ निम्भरां जे । १५ कथइ णियं सु । १६ 'करसो' सु । १७ 'राव' सु । १८ 'यच्छित्तिलासुं सु' । १९ 'कम्मगं
जे' । २० विउरुक्खियं जे ।

सो कहमेककंडपहारेण विवण्णो ? , जया तुज्झ संघडिही तया मज्झ सयडं ति । तेओ तंवयगमवगणिऊण अण्णओ गओ । पुणो दंसिओ एकपएसम्मि एको वियडे सिलायलम्मि णल्लिणि रोवयंतो सिंचंतो मणुओ । पेच्छिऊण य पुणो भणियं हलहरेण—अहो ! ते बुद्धी, किं कयाइ सिलायडे पोमिणी जायइ ? , अह कह वि दिव्वजोएण जायइ ता जीविस्सइ कहं ? । एयमायणिऊण पुणो देवेण भणियं—जया एस तुज्झ भाया जीविही तया मम एस । ति भणंतस्स अण्णओ गओ । पुणो अण्णम्मि पएसे दिट्ठो दवदड्ढयाणुभूयमेकं दड्ढं महीरुडं सल्लिणेणं सिंचंतो णरो । भणियं च बलेण—दावाणलपुल्लुडमूलस्स एयस्स खण्णुयस्स कया पल्लुउग्गेओ भविस्सइ ? । देवेण भणियं—जया एस ते सहोयरो जीविस्सइ । पुणो वि अण्णओ गच्छमाणेण दिट्ठो गोवालदारओ गोसिररुडीए पुरयो पपच्छन्तो हरियतणंकुरे । तओ हलाउहेण भणियं—इमा तुह णिमंसियट्ठिसेसा कह जीविस्सइ ? , जेण तणंकुरेकं वडंतो किमत्ताणयं खेएसि ? , अहो ! ते मूढया, अहो ! णिव्विवेत्तणं, अहो ! ते अप्पगम्भया, सबयं चेव गोवो ति । तओ मुरेण भणियं—जया तुह सहोयरो ति ।

तओ तमायणिउं समागयचेयणारूवेण मुत्तुट्ठिण विय सब्बओ पैलोइऊण दिसाहोए, णिज्झाइऊण तं मयकलेवरं, 'किमेस केस्सवो सच्चयं चेव मओ जेणेस मम संबोहणत्थं बंधवो व्व ससिणेदं जंपइ ?' । एत्थावसरम्मि य पायडिय-सिद्धत्थरूवेण भणियममरेण—“ओ हलाउह ! अहं सो तुह सारही सिद्धत्थो भयवओ अरिट्ठणेमिणो पसाएण चरिऊण तवविसेसं देवो संजाओ ति । तया तुमए भणियमासि जहा ‘अहं तुमए पडिबोहेयवो’ तं च सुमरिऊणाहमिहा-गओ । ता महाराय ! किमेवमप्पा तुमए अलिकयं चेव आयासिओ ? । जेण पुलोएसु—

तुम्हारिसा वि सुवुरिस ! सोयपिसाएण जइ छलिज्जंति । ता पैत्तमंडलेहिं वि अण्णगरिंदेहिं का गणणा ? ॥२६२॥
अह तुम्हविहा वि हलीस ! कह वि सोएण वाउलिज्जंति । ता धीर ! धीरणिहसो णिरावलंबो कहं होही ? ॥२६३॥
तणुया वि तणुयचित्तस्स जंतुणो संपइ व्व विवइ व्व । परियत्तेइ वियारं ण उण महल्लस्स महई वि ॥ २६४ ॥
हि[य]याइं जाइं सोक्खम्मि सरसपोमदलकोमल्लिहाइं । ताइं चउवसाणे हांति कुलिसकट्ठिणाइं धीराण ॥ २६५ ॥
संचरियायारत्तणसमत्तसब्बावणूमिओ सहसा । वसणकसवट्ठए सुवुरिसाण णिव्वडइ भडनिहसो ॥ २६६ ॥
इय आवईए मुज्झंति णेय, वसणम्मि जंति ण विसायं । अण्णे वि सुवुरिसा, किं पुणाइ जे तुम्ह सारिच्छा ? ॥२६७॥

किंच ण सुमरसि तं तया कहंतरम्मि तुमए पुच्छिण सित्ठं भयवया वारवतीडाहप्पभिइ कण्हविणासावसाणं जाव ?” । तओ मेळिऊण मतयं समागयसणेइयाए समाल्लिगिऊण सिद्धत्थं भणियं सीराउहेण—एवमुवत्थिए किमियाणिं मए कायव्वं ? । देवेण भणियं—णिमुणमु,

हिंसा-उल्लिय-परधण[? गहण]-मेहुणाणं परिग्गहस्सेय । कुणमु विरइं हलाउह ! तह राईभोयणाओ य ॥ २६८ ॥
सुमरेसु समोसरणम्मि भयवया सयलसत्तहियकारी । कहिओ जीवादिपयत्थवित्थरत्थो तया धम्मो ॥२६९॥
संसारस्स सहावो अथिरा रिद्धी अणिच्चयं चेय । मुणिऊण कुणमु तं जेण होन्ति ण पुणो पियविओया ॥२७०॥
इयंसा समुण्णइं एरिसं च पडणं हलीस ! दट्ठण । कीरउ सब्बारम्भेण भासियं णेमिणाहस्स ॥ २७१ ॥

तओ हलाउहो णिसामिऊण “तं सिद्धत्थवयणं भणिउमाहत्तो जहा—पडिवणं जं तए भणियं, इमं च कण्हकलेवरं किं कीरउ ? । तं च णिसामिऊण सिद्धत्थदेवेण भणियं—तित्थयर-चकि-हलिणो पूया-सकारारह ति सब्बया, ता कीरउ इमस्स पूय ति । तओ सकारियं तं कलेवरं । ताव य णहंगणाओ तमुद्देसं समागओ भयवओ सयासाओ एको विज्जा-हरसमणो । दट्ठण य तं पहरिसवसविसट्ठपुल्लयपडलेण पडिवण्णा रामेण तस्सन्तिण दिक्खा । अतीववेरग्गाणुगओ तवं काउमाहत्तो ।

१ तओ इममवगं जे । २ पुलइऊण जे । ३ पत्तमेलेहिं जे । ४ सरसदलकोमल्लइ णेहेण । ताइं सु । ५ मया सु । ६ ईशाम् ।

७ तं वयणं सु । ८ कलेवरं जे ।

इओ य सो जराकुमारो पवियम्मिउदामसोयप्पसरो बाहजलपञ्चालियाणणो केणइ कालंतरेण संपत्तो दाहिणमहुरं ।
 गंतूण य रायभवणोवसंसिसीहदारं भणिओ पडिहारो-निवेएसु णरवइणो एवं जहा 'कण्ठसयासाओ दूओ समागओ' ।
 चि निवेइए तम्मि 'सिग्घं पवेससु' चि भणियं । पविट्ठो जरातणओ । राइणा कयजहोइयसम्माणो गिबिट्ठो वरासण-
 म्मि । सुहासणत्थो य पुच्छिओ जायवाणं बल-दामोयराणं च कुसलपउत्तो । तथो णिगूढाल्लमासहृथट्ठेण विय पज्ज-
 रियगरुयहिययालयेण अणवरयगलियंसुसलिलपेञ्चालियवयणकमलेण भयवया सिट्ठचारवईविणासप्पभिई तदंसणावसाणं
 जाव सिट्ठा पउत्ति चि ।

तओ तमायणिऊण छिण्णमूला इव महातरुणो बंधुणिहणसमुप्पण्णगरुयसोयप्पसरा मुच्छावसमैउलियच्छिपत्ता धस
 चि धरणियलम्मि गिबट्ठिया पंडवा । कुंती-महीपुरस्सरो य महिलायणो वि विलोवे काउमादत्तो । समण्णिओ य
 जरासुण्ण कोत्थुहमणी । साहिण्णाणं च तं मणिं सव्वेहिं "चि समालिगिऊण हियणं सममच्चत्थं परिदेविऊण
 कयं भयकिच्चाइ करणीयं । अतीयम्मि य संवच्छरे सयलसामन्ताणं समत्थिऊण गिबेसिओ निययरज्जे जराकुमारो ।

ताव य भयवओ सयासाओ धम्मघोसो णाम बहुसमणगणपरिवारिओ चरमदेहो चउण्णाणी सव्वभावविहण्ण
 महामुणी तत्थ य नेयरीए बाहिकेज्जाणम्मि समागओ । तं च मुणिऊणाऽऽगयं णिग्गया वंदणणिमित्तं सयलणरिंदवंदपरि-
 गया पंडुतणया । गंतूण य वंदिओ भत्तिभरोगमंतुत्तिमंगेहिं मुणिवरो । सुहणिसण्णाण य साहिउं पयत्तो भयवया भासियं
 णयभंगभंगुरं धम्मं, अणिच्चया असरणया एगत्तं संसारासारत्तणं सयलजयट्ठित्तिं, जहा जायवसीहाण पव्वज्जम्भुवगमो,
 गयसुकुमालचेट्ठियं ति । तओ तं णिसामिऊण पेरमसंवेगमम्भुवगया 'सरीरमसासयं' ति कलिऊण सयलसंसारमोवख-
 हेउं मोक्खमग्गं सामण्णं पडिक्खा [? पंडवा], कुंतीपमुहो य इत्थियायणो चि । णाणाविहुत्ताभिग्गधारिणो य तवमती-
 वदुकरं कौउमादत्ता । अहिज्जियसुत्तथा समदिगयकिरियाकलावा गामाणुगामं विहरिउमादत्ता ।

इओ य भयवं सुरसरियामलसलिलपक्खालिउभयतीरं किरायरमणिणयणकुवल्यमालचियदिसामुहं ससहरकर-
 फंससवज्जरियजायमाणहिमोययं हिमवंतोभयपासपरिसंठियं उत्तरावहं विहरिऊण, बोहेतो भवियकमलायरे, पैयासयन्तो
 सयलभावे ठावयन्तो सुर-णर-तिरिए सुहम्मि मग्गे, कुणंतो पइदिणं धम्मदेसणा विविहमणिमयसिलायडपडिबद्धणिय-
 म्वयडं विविहतरुमुक्ककेसरपैयं अणेयसत्थगणपरिवुयं समागओ उव्वज्जंतगिरिवरं ति । तत्थ य देवेहिं पायारतिओव-
 लक्खियं विरइयं समोसरणं । णिसण्णो भयवं । पत्थुया धम्मदेसणा । साहिओ पयत्थवित्थरो धम्मो । ताव य कइतरं जाणि-
 ऊण पढमगणहरेण चरयत्ताहिहाणेण भणियं-भयवं ! किं पुण कारणमिणं रायमतीए गुरुणेहाइसयस्स ?, जेण मणयं
 पि अज्ज वि ण मुयइ सोयप्पसरं, णाहिलसइ भोयणं, णाहिणंदइ सैरीरट्ठिं, ण रमइ सहीकढासुं । तओ भयवया भणियं—

इओ य अतीयणवमभवम्मि अहमासि पचन्ताहिवतिणो एक्कन्तविक्रमेकरसियस्स णियविहवोहूयणिधिबइणो धण-
 याहिहाणस्स सुओ धणणामो चि । तहिं चैं विज्झाडपंथविग्गमागयमुणिचंदसाहुसयासोवल्लदसम्मत्तेण पडिक्खणं
 समणत्तणं । पालिऊण य जहाविहिं णियाउणो परिणोमे समुप्पण्णो सोहम्मकप्पम्मि । तत्थ य उव्वज्जंतुण जहिच्छिओ-
 वणयपैरिभोयनिग्गरे भोए तओ चइऊण विमलकलहोयमणिमयसिहरे वेयड्ठे कंचणपुराहिबइणो विणिज्जियासेसमुरस्स
 सूरविज्जाहराहिबइणो चित्तगइ चि पुत्तो समुप्पण्णो म्हि । तत्थ य णियविज्जोज्जलविणिज्जियासेसविज्जाहरो विज्जाहरा-
 हिवत्तणं करेऊण परिसेसियासेसविसयमुहो दमवरमुणिसयासम्मि पडिक्खणसामण्णो कालं काऊणोववण्णो संपाडिय-
 सयलदियमुहम्मि माहिंदकप्पम्मि । तओ "चि परिभुंजिऊण सललियविलासिणीविलसियच्चाइं अववरविदेहे सीहपुर-
 वरम्मि पवरणरिंदाहिवती संजाओ अवराइयणामोवलक्खिओ चि । तत्थ वि य पयंडमुयदंडखंडियासेसपडिक्खं
 पुहइमंडलमखंडं भुंजिऊण, पाविऊण सामण्णं, गिरवज्जसंजमावज्जियतवविसेसो अहाउयमणुवालिऊण समुप्पण्णो आर-

१ "एपात्थि" सु । २ "मउलाविचण्ठि" सु । ३ पलावे सु । ४ वि आल्लि" सु । ५ णयरे णा" सु । ६ "हन्नाणे स" सु ।
 ७ "वत्त" जे । ८ "उज्जमप्पु" सु । ९ परं स" सु । १० करिडमां जे । ११ पयासंतो जे । १२ प्पसर जे । १३ सरीरट्ठो, ण सु ।
 १४ च विग्गमां सु । १५ "णमेण स" सु । १६ "पडिमो" जे । १७ वि भुंजिऊण सयलदियविला" सु । १८ "ण सामण्णे सु ।

णणामम्मि मुरलोए । तओ वि संपणसमत्थिदियमुहत्थं सोक्खमणुहविऊण इहेव भरहवासम्मि हेत्थिणापुराहिबणो पडिइयासेसमुहडदप्पमाहप्पस्स स्तिरिसेणणराहिबणो समुप्पणो संखगांतोवलक्खिओ पुत्तो । तत्थ वि य णमन्तसामन्तमउलिलालियचलणजुयलो समीहियन्महियंसंपणविसयमुहो परिगलियविसयकोउहलो मेळियरज्जफलो संजायसंजमुज्जोयावज्जियत्तिथयरमुहकम्मो णिययाउयक्खयम्मि संजाओ णिम्मलमणिमयक्खंभपडिवद्धमणहल्लोयलंबिरमुत्ताकलावम्मि फलिहमणिमयभित्तिसंकन्तपरियणम्मि पज्जलियामलमाणिकमंगलपतीवम्मि अमिलाणदल्लुल्लसियमंदारकुमुमोवयारम्मि संपणसयलमुहसमूहम्मि अवराइयैविमाणम्मि मुरो । तओ वि मुरमुहमणुहविऊण वत्तीससागरोवमप्पमाणं संपयं समुप्पणो म्हि । ता भो देवाणुप्पिया ! एस रायमतीजीवो सिट्ठपदमज्जन्तंरपभीति ममाणुचरो आसि । एयमेत्थ कारणं ति ।

ता णेहो च्चि णाम मूलं अणत्थाणं, साहा अमुहतरुणो, पल्लवुब्भेओ कुमतिसाहाए, कुमुमुग्गमो कुगइवल्लीए । सब्बहा वियारिऊण अप्पणो हियं छिंदियन्वा णेहपासा, सिद्धिलियन्वो पेमाबंधो, आमेळियन्वा सयणसंतती, परिहरियन्वा रागाइवडिणो च्चि । ता भो देवाणुप्पिया ! जिणवयणं—कम्मासवहेउणो 'दोण्णि—रोग-दोसे, दुंण्णि अमुहे—अट्ट-रोहे, 'दोण्णि य मुहे—धम्म-मुके, दोण्णि य जीवा-उजीवा पयस्था । तिण्णि दंडा, तिण्णि गारवा, तिण्णि गुत्तीओ, तिण्णि विराहणा, तिण्णि सल्लाणि । चउरो कसाया, चत्तारि विगहाओ, चउरो मैहव्वए । तहा य पंच कामगुणा, पंचउत्थिकाया, पंचेदियाणि, पंच किरियाओ, पंच गतीओ, पंच सैमितीओ, पंच आसवा, पंचेव य णिज्जराओ । तह छ जीवणिकाया, छे चिय लेसाओ । सत्त भयट्ठाणे, सत्तभेयं दुक्खं । अट्ट कम्माणि, अट्ट मयट्ठाणाणि । णवहा वंभमुत्तीओ । दसविहो जइम्मो । ता सयल-दुक्खमूलो संसारवासो । दुक्खं जम्म-जराइयं । णरय-तिरिओवलक्खियाओ वियणाओ । वियाणिऊणेवं सब्बहा सुबुद्धिणा तहा कायब्बं जहा सासयमुहफलकप्पयावलंभभूयम्मि जिणमए संपज्जइ नइ चि ।

एवं च सयलसत्ताणुग्गहकारिणो, पतिदिणं धम्मदेसणं कुणंतस्स, दिवसावसैणसमयम्मि विमलसिलायलोवविट्ठस्स, छट्ठोववासेणं अंतिमजोगट्ठितं संठियस्स णाम-गोत्त-वेयणीया-उउयकम्मेसुं सेलेसिचरिमसमयम्मि समयं चिय खयमइ-गणसुं, एकेणं चेव समणं भयवओ समणाणं पंचहिं सएहिं छत्तीसएहिं सहियस्स सावणमुदपंचमीए चित्ताणक्खत्तम्मि संपणं णिज्जाणगमणं ति ।

तौव चलियासणोहिप्पओयमुणिए जिणस्स णिज्जाणे । हरिणा करकमलंजलिमिलन्तललित्तिमंणेण ॥ २७२ ॥

मुचइ करयलसंवलियदल्लेउडुव्वेळ्ळेकेसरकलावं । परिमलमिलंतमैसलउलमुहलमुव्वरिं कुमुमवासं ॥ २७३ ॥

अंतोवियंभिउदामभावणाणुगयमणहरौलावो । वित्थरइ सयलमुरसत्थपसरिओ जयजयारावो ॥ २७४ ॥

संचलइ चलियणीसेसमुरगणणोणरुद्धपयपसरो । रहसवमुदयदारुच्छलन्तवच्छो तियसणाहो ॥ २७५ ॥

संचलइ सचणैवल्लिरिपरिमलियकवोलपत्तलेहालो । कयजयजयकलरवमहुरमणहरो तियसतरुणियणो ॥ २७६ ॥

उच्छलइ पडयपडुपडहरावसंवलियकाहलामुहलो । तियससइत्थाइयविविहवज्जिराउज्जणिग्गोसो ॥ २७७ ॥

इय आगंतूण विसट्ठभावभरणिभरो मुराहिबई । जयगुरुणो णियविहवेण कुणइ णेव्वाणदिणमहिमं ॥ २७८ ॥

कहं चिय ?—विमुक्कं मणिजालसंवलियसवलबंधणहरं जिणतणुम्मि कुंमैमवासं । णिम(म्म)ज्जियं पसरंतमुरहिपरिमलुव्वेळ्ळमंदाणिलेण महियलं, पसामियं ललियकरयलुच्छलंतगंधसलिलेण रयजालं, पैयप्पियं समंतओ डज्जंतकालाय-रुप्पंककप्पूरधूमवडलं, पइया विमइसैंदुदुच्छलंतपडिरवा विविहाउज्जविसेसा, गीयं समताण(ल)संचलंतवेणुवीणामणहरं मंगलगेयं । एवं च मुरविमुक्कजयजयारावापूरियदिसावलयं मलय-कालायरुदामलवलो-लवंगाइणा दारुणिवहेण सक्कारिऊण

१ हत्थिणाउरपुरां जे । २ 'समुप्पणं' सू । ३ 'यमुरविमा' जे । ४ 'हे' सू । ५ 'हि' सू । ६ 'वुब्भवो' सू । ७ 'इवेरिणो' जे । ८ 'दोण्णि' सू । ९ 'रागदोसा' जे । १० 'इहा' जे । ११ 'इहेव' मुहे जे । १२ 'महव्वया' सू । १३ 'समीओ' जे । १४ 'छ' लेसाओ सू । १५ 'व' तहा सुबुद्धिणा कायब्बं सू । १६ 'जाणम्मि विमलसिलयवोव' सू । १७ 'ताव य जलि' सू जे । १८ 'उडुम्मिह' सू । १९ 'भसरउत्त' सू । २० 'राहावो' सू । २१ 'संचरइ' जे । २२ 'णपाहि' सू । २३ 'उसुमदाम' सू । २४ 'य सल्लि(ली)ल्लर' सू । २५ 'पणयि' जे । २६ 'समुच्छलंत' जे । २७ 'विविहवज्ज' जे ।

भयवन्तं 'संपयमत्थमङ्गण जिणवरम्मि पणट्ठा अइसयविसेसप्पहा, वित्थरइ कुमयतमवडलपसरो, गिरिंभलो सयलतिय-
लोओ, अणाहा भारहवासभूमि' ति भणिऊण धरणिंरंखोलमाणहारलयं पणमिऊण वासवाइणो सुरगणा भयवन्तं
धुणिउमाहत्ता—

जय पणमंतसुरा-ऽसुर-गरिंदमणिमउलिलालियंघिजुय ! । भवसयसंगलियाणेयकम्ममाहप्पणिहलण ! ॥२७९॥
जय जम्म-करणकारणमुमुमूरण ! । अरिंदममवापंद ! । संसाराइणिवडन्ततिहुयणुदरणकयचित्त ! ॥ २८० ॥
जय मयणधणुगुणुमुमुककुसुमसरणियरपडिहयप्पसर ! । विविहणय-हेउसंपायभंगपडिभग्गकुमयमय ! ॥ २८१ ॥
जय विविहपंथपत्थारिभरियभुवणम्मि मूढममाण ! । काऊण दयं सम्मग्गदेसओ तं सि भवियाण ॥ २८२ ॥
जय गिययविसयपसरंतदुद्धरिंदियविवक्खकयभंग ! । विसमपरीसहणिहलियदुसहदहदप्पमाहप्प ! ॥ २८३ ॥
जय जणियसंथवेण वि हिययम्मि णकयपहरिसप्पसर ! । ण य कयतालणवित्थरियमच्छरुच्छाहदुप्पेच्छ ! ॥ २८४ ॥
जय णाण-दंसणालोयकलियकिरियाकलावविण्णास ! । भवभेमणकारणुहलणलदसासयमुहावास ! ॥ २८५ ॥
इय रिट्ठणेमि ! कम्मदुद्धणिट्ठवणणिट्ठुर ! जिणिंद ! । होजऽम्ह बोहिलाभो पुणो वि तुह पयपसाएण ॥ २८६ ॥
अवि य—

भवजलहिजलुत्तारणकारण ! सत्ताण दुहसयत्ताण ! । ताणं कुणसु विकम्मय ! कम्ममहापंकलुत्ताण ! ॥ २८७ ॥
दुद्धिंदियमुमुमूरण ! मूरण ! घणकम्मसेलगहणाण । चउविहकसायसोसय ! सम्मं गुणगारवग्घविय ! ॥ २८८ ॥
सयलसुरा-ऽसुरसम्मय ! मयवज्जिय ! जियपरीसहे-कसाय ! । मयणमहाभडेभंजय ! जयगुरु ! जयजयहि जोईस ! ॥ २८९ ॥

माणुम्मूलणपच्चल ! रागुग्गपलित्तसंगकयभंग ! । मय-मोह-मायसासय ! सासयमुहमुत्तमं पत्त ! ॥ २९० ॥
लोहा-ऽहिमाणणासय ! णासयसंसारवासवासंग ! । जिण ! जयदंसियसिवपय ! पएसु णमिमो स्तिवातणय ! ॥ २९१ ॥
अण्णाणवाहिणीजलपवाहवाहेण भवसयावत्ते । परिक्ख रक्खणक्खमतंरंड ! बुद्धंतमेत्ताहे ॥ २९२ ॥
इय जम्मे जम्मे चलणकमलभसलाइयव्वमम्हाण । जयगुरु ! जाएज पुणो वि तुम्ह गोत्ताणुहावेण ॥ २९३ ॥

एवं च महया विच्छट्ठेण णेव्वाणगमणमहिमं काऊण, गहिऊण सेसाणिमित्तमट्ठियाणि, वंदिऊणमुत्तिमंगेण भयवओ
भूई गया गियणिहेल्लाई सुरगणा ।

इओ य ते पंडवा दुद्धरधरियाभिग्गहविसेससोसवियतणुणो भयवन्तं दट्ठमिच्छमाणा समागया उज्जेतगिरिणो
बारहजोयणावसेसं भूमिभायं । जाव णेव्वाणमहिमागयपडिणियत्ताण सिद्ध-गंधव्व-विज्जाहराण णिसुओ णेव्वाणगमणसं-
बद्धो कहालावो । तं च सोऊण ताण गियतणुवणंतराले व्व संधुक्किओ बंधुविरहधूमो, पसरिया अरतीजालावडाली,
वित्थरिओ रणेरंणंगारणियरो, वियंभिओ बहलसोयाणलो, 'गिरिस्थिओ एस अम्हाणे किलेसो' ति मण्णमाणा संपत्ता
परिवियडकडयपडिरुद्धदिसिवहं तुंगसिहरग्गलंघियणहंगणं तट्ठाणसंठियाणेयसिद्धमुणिगणं लोयणालोयमेत्तपसमियपाव-
पसरं पसिद्धसिद्धायणघडियवियडकूडं सिद्ध-गंधव्व-किण्णरुग्गीयमुहलं सुरमुंदरीमुकमंदारकुसुमोवयारं सिरिसत्तुंजय-
गिरिवरं ति । आरुहेऊणं च गरुयवेरग्गसंपण्णमाणसेहिं जहाविहिं पडिवण्णमणसणं । तओ एगत्ताइभावणाभावणुज्जया-
ण पसरन्तमुहज्जवसायठियाण अउव्वमुक्कज्झाणाणलणिहदुद्धसयलकम्मिघणाण समुप्पणं अउव्वकरणविहिणा पंचण्ह वि
जणाणं केवलणाणं । तयणंतरं चै संपत्ता णेव्वाणं ति ।

इओ य सो हलाउहसाह गुरुरसंवेगमुहज्जवसायागयमाणसो छह-ऽट्ठम-दसम-दुवालस-ऽदमास-मासाइयं तवो-
विहाणमुज्जमतो गुरुणाऽणुणाओ एकल्लविहारमव्ववण्णो जत्थत्थमियणिवासी गामाणुग्गामं विहरितं पयचो । अण्णया य

१ 'ग भवियअ' जे । २ 'भवण' सु । ३ ताण वि कुणसु जे । ४ सुरण ! सु । ५ 'हविसाय ! जे । ६ 'जम्मेण' । सु । ७ 'वसवओ
सु । ८ ताण य णि' सु । ९ जालावडाली जे । १० 'रणसंकारणि' जे । ११ 'ण परिक्खिलेसो सु । १२ च पत्ता जे ।

मासोववासी पारणयणिमिच्चमेकम्मि णयरे जुगमिच्चेणिहिच्चलोयणपसरो गोयरचरियेमइगओ । तओ तं अच्चञ्चुयतवो-
विसेससोसियसरीरं पि अप्पडिहयरूवसंपयं, मलपडलपंककियं पि सुमणोहरकंतिसंतियं, असमंजसकेसुल्लुंचित्तिमंगं पि ण-
मिलाणल्लायण्णाइमयं, परिमलिणकुचेलालिद्धदेहावयवं पि ण्णुमियसोहग्गसमुदयं दट्ठण्ण रुवाइसयक्खिच्चचित्तो समइगओ
पुरसुंदरीयणो वम्महसरणियरपहाराउरो य किं काउं पयत्तो ?—कीए वि अणिमिसकंसिण-सिया-ऽऽयंविरेप्पहा पसरिया लोय-
णावली, कीए वि परिल्लुलियालयमणोहरो पैरामुसिओ कुंतलकलावो, कीए वि पायडियथोरथणयलं संलहसियमुत्त-
रिज्जं, कीए वि वियंभमाणवयणकमलुव्वेल्लियाओ [वेल्लियाओ] भुयलयाओ, कीए वि परिगलियणीविवंधपसिडिलं
संजमियं कडिल्लं । अवि य—

पसरंति मंथरं सुरहिपरिमल्लूणीभसलवलइल्ला । परिसिद्धभंतरमयणहुयवहा दीहणीसासा ॥ २९४ ॥

उण्णामिष्कभुयलयविसेससंजमणवावडकरम्मो । परिलोइ सदिलुव्वेल्लवंधणो कौतलुप्पीलो ॥ २९५ ॥

सहस चिय हंतवियंभमाणिण्वोल्लियाहरोट्टउडा । लीलाविणिवेशियसवणकुवलया वयणविब्वोया ॥ २९६ ॥

णिवडन्ति मउलिउव्वत्ततारयाऽवंगदिण्णसोहग्गा । परिविरलपम्हपेरन्तपसरिया दिट्ठिविच्छोहा ॥ २९७ ॥

वडंति ऊरुवेल्लन्तभंगमोटाइयव्वविहुराई । अप्पत्तसंगमालसविसेसददजूरियव्वाई ॥ २९८ ॥

दंसणपसरियसज्जसविसेसपरिसिडिलणीविविण्णासं । संधारिज्जइ केरकलियपल्लवं कह वि हु कडिल्लं ॥ २९९ ॥

पेढालमंडलामूलवियडपायडियथोरथणवट्ठं । णो लक्खिज्जइ ल्हसियावरिल्लमइसुण्णहिययाए ॥ ३०० ॥

इय तरुणियणपेवट्ठंतराममुदयंदंसणपयत्ता । पसरन्तहलहलरवा वम्महमेइरौयसलोव्व(ल्लुलोया) ॥ ३०१ ॥

एवं च पैवडन्ततरुणियणमयणमयरहरमयलंछणे दिसिदिसिसमागयजुवइजणावूरिज्जमाणरच्छामुदे गच्छमाणे
चलएवमहरिसिम्मि अणवेक्खिउण णियकुलकमं, अवहत्थिउण जाइमाहत्पं, पणोल्लिउण गिरिगरुयसीलपव्वभारं, सिदि-
लिउण विलपालंकारभूयं लज्जं, अवलंविउण चावलं, बहुमन्निऊण अकोलउत्तं, पसंसिउण णिल्लज्जयं, कलिउण
दुव्विलसियं, अहिणववियंभियाणुरायपरव्वसयाए पेम्मपराहीणसुण्णहिययाए तम्महुहिणिहिच्चलोयणपसराए णवजोव्वणुम्म-
इयमयणवाणाए एकाए पुरसुंदरीए अयडतडोवसंठियाए जलायड्ढणणिमित्तं कलसकलणाए णियवाल्लेस्सेय गलयम्मि
संदामिया रज्जु । जाव य क्वम्मि पक्खिवइ ताव पासपरिसंठियमहिलायणेण 'हा ! हया सि त्ति हयासे !' भणमाणेण
संवोहिया ।

"एयं च वइयरं जणरवाओ वियाणिउण सीराउहो चित्तिउमाहत्तो—“अहो महिला णाम अंसंकला गोत्ती, अहीवा
कज्जलसिहा, अणोसहो वाही, अपडियारा रक्खसी, जेण रयणिन्मरा गिरिणइ व्व लंघेइ उभयकूलाइं, कलुसीकरेइ स-
च्छायं, पहाइ उम्मग्गगमणेणं, पाडेइ णियडपरिसंठियं ति, जेण [य] पेच्छ मलजल्लोल्लियाणं कयसिर-तुंडमुंडणाणं अम्हारिसाणं
पि कए "परिसमकज्जमायरंति । अहवा को एत्थ एयाणं दोसो ?, ममं चेवै एसो पुव्वकयकम्मपरिणतिवसो पोग्गलाण
परिणामो । ता अलं णयरम्मि गामम्मि वा पवेसेण । अज्जप्पभित्तिमरणम्मि चेवै णिवासोऽणुचिट्ठियव्वो" । त्ति मंति-
उण णियत्तो गोयरचरियाओ । गओ तुंगियादिहाणगिरिवरादिट्ठियं सज्ज-ऽज्जुण-सरल-तमाल-तालगुं विलमरणगहणं ति ।

तत्थ य सुरसिद्धत्थकयरक्खाहि(वि)हाणो तवं काउमाहत्तो । ताव य पुव्वविणिवाइउव्वरियवेरिवग्गम्मि रायाणो
मुणिउण सवणपांपराओ विणासं जायवाणं, मरणं कंसारिणो, गिहीयदिक्खाविसेसस्स य वणणिवासो हलहरस्स, सव-
लवाहणा इंतुमुज्जया । एवं च मुणिउण सिद्धत्थो गय-वरालय-सीहाइरुविणो विउव्विउण सावयगणे कयरक्खाविहाणो
पडिजागरइ त्ति ।

१ "तनिमित्तलो" जे । २ "यमुवगओ" सू । ३ "कंतिसंतद" जे । ४ "जसुल्लुचि" सू । ५ "लाइग्गा" जे । ६ "कसल-सियाइविर" जे ।
७ परोपपरामुक्खिओ कौतल" जे । ८ कीय वि जे । ९ करथल्लिय" सू । १० "पवडत्त" जे । ११ "मयरा" सू । १२ "राखीव" जे । १३
पवडत्त" सू । १४ "ण कोलउ" जे । १५ "लसस गलए संदामिओ रज्जु" सू । १६ एव सू । १७ अतिक्खला जे । १८ "एयंविहमक" जे ।
१९-२० चेव जे । २१ "शुटिल" सू ।

अणम्मि दिणम्मि पयस्य-डकम्मयरपरिवारिओ रुक्खच्छेयणणिमित्तं वणच्छिदओ तमुद्देसमागओ जत्थ बलएव-
साहू सूरहिमुहसंठिओ काउस्सग्गेण चिट्ठइ । तओ दंसणसमणंतरमेव पणमिओ । 'धण्णो सि' चि भणमाणो पयत्तो
समीवपायवे छेत्तुं जाव य भोयणवेला । दरळिणपायवस्म हेट्ठओ चेव छायासु भोत्तुं पयत्तो [सह] कम्मयराइणा । तम्मि य
अवसरे 'अत्थि पिंडमुद्धि' चि मुणिऊण ओसारिऊण काउस्सग्गं अणाउरं पवयणुत्तेण विहिणा तओ 'सोहणं होहि' चि
वच्छल्लयागयमुहज्झवसाणोवगयहरिणाणुगम्ममाणमग्गेण कओ सयलकल्लाणयारी धम्मलाहो । वणच्छिदओ वि दट्ठण
मुणिवरं हिययन्मिभतरवियंभिउम्भडैभावणा-विणओ 'धण्णो हं' ति मण्णमाणो घेतूण पवरखंडखज्जयविसेसे दाउमब्भुज्जओ
ताव य काय-तालियागाएण भवियव्वयाए य तारिसीए अयंडपवणपणोल्लियणिवडिपणं दरळिणतरुणा विणिवाइया
मुहज्झवसाणा समयं चेय वणच्छिदय-[बलएव]-हरिणा । सुभभावणोवगयमाणसा य समुप्पण्णा बंभलोयकप्पम्मि कंतप्पहे
विमाणम्मि मुरवर चि । अओ उवरिं जं भणियं तमण्णासुं सवित्थरकहासुमवगंतव्वं ति ।

एत्थ मुरा-ऽमुर-सु(ण)रचंचरीयपरिमलियचलणकमलेहिं । भववणघणडहणकरालसिहिसिहाबंधसरिसेहिं ॥३०२॥
जेहिं भवुम्भवविसहरविसजलणकलावकवलियं भुवणं । णिव्वाविज्जइ वयणामओरुगलियंबुविंदहिं ॥ ३०३ ॥
अधोरदुत्तरुदामणिरयपायालमूलणिवडन्तं । उत्तारिज्जइ भुवणं सणाणहन्थावलंवेण ॥ ३०४ ॥
इय तेहिं सुव्वया-ऽरिट्ठनेमित्थंकरेहि चेंचइओ । सखेवओ महत्थो विसाहिओ एस हरिवसा ॥ ३०५ ॥

इति महापुरिसचरिए तित्थपररिट्ठणेमिचरियं णारायण-बलदेवचरिएहिं सह संमत्तं ॥४९-५०-५१॥

÷—×—÷

[५२ वंभयत्तचक्रवट्टिचरियं]

नेमो सुयदेवयाए ॥

उदओ सकम्मपरिणइवसेण बहुविहकिलेसल्लदो वि । होइ महापुरिसाणं पि शुणमसुहप्फलविवाओ ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंघुदीवे दीवे भारहे वासे गिरन्तरं वसंताणेयगाम-णयरा-SSयरो वि मुक्को कलिकालकलंकप्पभिइ-
दोसेहिं पंचालाहिहाणो जणवओ । तत्थ य तियसिंदाएसकारिवेसमणविणिम्मियविणीयणयरि व्व सयलगुणगणाइणं कंप्पिळ्ळं
णाम णयरं । तम्मि दरियारिमइणो खत्तियकुलणहयलमियंको पसाहियासेसल्लखंडभरहाहिवो व्वम्भयत्तो णाम चक्रवट्टी ।

तस्स य दीहत्तणेण बारहजोयणप्पमाणा, वित्थरओ णव जोयणांणं णव महाणिहिणो, तं जहा-णेसप्पो पंडुओ
पिंगलओ सव्वरयणो महापउमो कालो महाकालो माणवओ संखो च्चि । एएसिं पुण इमे णिओया-णेसप्पसवासाओ
गामा-SSगर-णयर-दोणमुह-मंडव-यट्ठण-खंधाराण णिवेसो । तह पंडुयाओ माणुम्माणपमाण-धण्ण-वीयाण समुप्पत्ती ।
पिंगलाहिंतो पुण जा काइ पुरिसाणं महिलाणं च रह-तुरय-करिवरादीणं आहरणविही सा समुप्पज्जइ । सव्वरयणाओ पुण
एसिंदिय-पंचेदियाईणि चोइस महारयणाणि । महापउमाओ पुण रुइरवणसंपण्णापवरंसुयउप्पत्ती । कालमहाणिहीओ
कालोइए विविहसिप्पविण्णासविसेसे । महाकालाओ मणि-भोत्तिय-रुप्प-सुवण्णादीण संभवो । माणवाओ जोहावरण-पह-
रण-दंडणीई^१ णयणीई^२ य संजायइ च्चि । संखमहाणिहीओ पुण करणंगहारोववेयणट्टविही चउव्विहकैवुप्पत्ती य ।

सो य संखमहाणिही^३ अइरुग्गए कमलायरवंधवम्मि दिणयरे समागतूणं कयदिव्वरूवाविसेसो धरणियललुलंततार-
हारो पणमिऊण विण्णवइ-अज्ज अमुगं णट्टविहिं दंसइस्सामि । च्चि भणिऊण पडिगए तम्मि तओ राया कयमज्जण-भोय-
णावसाणो मुपसाहियणियमंदिरत्थाणिमंडवतलम्मि णिसण्णो पेच्छणयविही पलोइउं पयत्तो । बहुविहकरणंगहारंविच्छ-
डं सयलदिट्ठिकलियं जहकमं संपाडिज्जंतचउव्विहाहिणयं चलंतचारुचारीविसेसयं संभाविज्जन्तवियम्भियभावाणुभावं
पेच्छिऊण कंचि वेलं जहारिहं सम्माणेऊण विसज्जियासेससंमन्तलोए संखमहाणिही वि गओ णिययणिवेसं । राया
वि कइवेयवहुपरिवारिओ उवहसियसुरसुंदरीयणगुण-सोहमंतेउरमुवगओ । कंचि वेलं पंडियगोटीविणोएण गमेऊण राया
पविट्ठो णिययावासभवणं । णिसन्तो पवरपल्लंके । ताव य—

णियजरदकिरणपसरंततावसंताविउ व्व सयराहं । अवरमहोवहिसलिलम्मि मज्जिउं विसइ दिणणाहो ॥ २ ॥

अह अणिवारियपसरन्ततिमिरपन्भारभरियमहिचिवरा । पैसरइ अंजणगिरिधूलिविन्ममा जामिणी सहसा ॥ ३ ॥

एवं च तमालदलसामलम्मि पसरिए तिमिरपैसरे पणट्टालोए अत्थमुवगए व्व जियलोए अप्पाणं पि करयलपरासुस-
णेण मुणिज्जइ । ताव य—

जाया य समुब्भज्जंतचंदिमादरपणोल्लियतमोहा । ससहरगम्भट्टियजणियपंडुवयण व्व पुच्चदिसा ॥ ४ ॥

उग्गओ य विमलदप्पणो व्व दिसाविलयाणं सयललोयणाणंदो चंदो । तओ पवडिइए चंदिमालोए समुप्पण्णो व्व
जियलोओ । ऊससियं गयणमंडलेणं । तयणंतरं च के वावारा वट्ठिउं पयत्ता ?—

गुरुभत्तिपणामियपैवरसिरकरंजलिमिलंतभालयलं । पणमिज्जइ जिणवरचलणकमलमिह भव्वलोएणं ॥ ५ ॥

साहूहिं दियससंजणियविहरणुप्पाइयाइयारेहिं । अणवरयं च पडिकमण-णिंदणादीणि कीरन्ति ॥ ६ ॥

तयणंतरंरैरिचिड्ढियसज्जायज्जाणवावडो अप्पा । संठाइ सदक्खक्खवियदुक्खलक्खो खमरिसीण ॥ ७ ॥

इय अवमण्णियससारदुक्ख-सोक्खाण मुणिगणिंदाण । संजणियायलसिवसोक्खलंभगरुयाहिलासाण ॥ ८ ॥

१ 'नेमो सुयदेवयाए' इति सूत्रस्तुके नास्ति । २ णव णिहिणो ख । ३ 'इ रायणीई य ख । ४ 'कतुप्पत्ती' जे । ५ 'ही पडिदिणं
मइयं' जे । ६ 'ण दिव्वं' ख । ७ 'रुववि' जे । ८ पेच्छणविहिं जे । ९ 'रवित्थरं स' जे । १० 'सामंतवियलोए' जे । ११ 'वयणहु'
ख । १२ पविण्ड ख । १३ 'पयरे' ख । १४ 'पवरतरक' जे । १५ 'परिण्णिव' जे ।

अणो उण घणघणसार-धुसिण-मयणाहि-अगरपंकिट्ठा । विसयमुहासालेसेण विण्णलद्धा किलम्मन्ति ॥ ९ ॥

कैहं चिय ?—

विच्छोल्लिज्जउ वहलंमुसलिलकलुसीकियामलकचोलं । वयणं णिज्जियचोसट्ठसस्सदलकमलसोहमं ॥ १० ॥

संजममु विमलमणिकुमुमदामसंवलिंयैरंमतरलिहं । परिल्लियविरललम्बालयालयं तैणुइधम्मेल्लं ॥ ११ ॥

तुहिणकणासारकिलंतकमलदलमव्वविम्भमं सुयणु ! । दीहरसासा आयासधूसरं वहसि अहरदलं ॥ १२ ॥

एयं ससंक्रमणिकुंभविम्भमं सरसचंदणजलोलं । सुण्णइयविमल्लहोरोवहोयमह कीस यणवट्ठं ? ॥ १३ ॥

इय किं सुंदरि ! कुविया सि ? साह मह कोवकारणं पसिय । दे ! कुणमु कह वि मह रमणलालसं सुयणु ! अत्ताणं ॥ १४ ॥

राया वि कयविनिहकीलाविणोयविण्णासो पस्सो । ताव य सुयणरिद्धिदंसणुप्पणमच्छरखलयणहियं व फुट्ठं पदा-
जालं, पहाया रयणी, घडियाई चकायमिहुणाई । पट्ठियं वंदिणा—

पैहु ! धुयकमल्लदलोहो मयरंदाभोयवासियदियंतो । लंघियमलचवणन्तो वित्थरइ पहायमुहपवणो ॥ १५ ॥

एयं णिसामिऊण पडिबुद्धो राया । कयं भोसकरणीयं । णिव्वत्तियसयलरायकज्जस्स भुत्तुत्तरसमवम्मि पुणो
पारद्धा णट्ठविही । एवं चाणेण विहिणा गच्छन्ति दियहा । अण्णया य संखणिहिणा विण्णत्ते जहा—णराहिव ! अज्ज
मह्यरीगीयणामं णट्ठविहिं दंसइस्सामि ति । राइणा भणियं—एवं भवउ ति । तओ अवरण्डसमये पारद्धा णट्ठविही ।
तत्थ इमं गीयं—

पवणुद्धुयकिसलइया भसलं गोमालिया पणोल्लइ व । पाडलपरिमलियंगउ, मा हु ममं संपयं समारुहमु ॥ १६ ॥

उल्लसंतकुमुं—मोहपरायपरत्तयं, लक्खिऊण णवमालियपाणपसत्तयं ।

गरहइ व्व कलकणिरपणामियचावयं, सिजिएहिं णियमहुयरिया भमरंधुयगाययं (?) ॥ १७ ॥

एत्थावसरम्मि य ओलगाकएण एका दासचेटी उप्पाडे—ऊण कुमुमकरंदयाओ हंस-मिय-मयूर-सारस-कोइल-
कुल्लेयविण्णासपरियप्पियं सयलकुमुमैसामिद्धसमिद्धं हरिमुल्लसंतपरिमलं सिरिबम्मदत्तराइणो सियकुमुमदामगंडं उव-
ट्ठवेइ । तओ अउव्वविच्छित्तिणिम्मवियं तं कोउहलेण कुमुमदामगंडं पलोएमाणस्स इमं च मह्यरीगीयमायणमाणस्स
समुप्पणो मणम्मि वियप्पो—अण्णया वि मए एवंविहसंगीओवलक्खया णाडयविही दिट्ठउव्वा, एयं च “सिरिदामकुमुम-
गंडं ति । एवं च परिचितयंतेण सोहम्मसुरकप्पे पउमगुम्मे विमाणे सुरविलासिणीकलिज्जमाणणाडयविही दिट्ठा ।
सुमारिओ अत्तणो पुव्वभवो । तओ मुच्छावसमउलमाणलोयणो मुकुमारत्तणणीसहवेविरसरीरो तक्खणं चेव धरायलम्मि
णिवडिओ ति ।

ता पुलएउं णिचलसरीरमालेक्खलिहियसारिच्छं । सहसा सव्वत्तो चेय परियणो संभमविओलो ॥ १८ ॥

हा हा ! किमयंडवियंभमाणे—चेयणकारणमियार्णि ? । मलयरस-सिसिरघणसारसुरहिणा णीरणिवहेण ॥ १९ ॥

परिसिप्पइ करकयचडुलचामरुप्पणमिउसमीरेण । पडिवाइज्जइ पुणरुत्तपोत्तसंपायजणिएण ॥ २० ॥

इय णरवइसम्मोहेण वाउलो जाव परियणो होइ । अंतेउरं समंता ता तत्थ लहुं समल्लीणं ॥ २१ ॥

सोयाउलियहियं च हाहारवसइवहिरियदियन्तं उर-सिर-पोट्ठपिट्ठणादीहिं अकंदिउं पयत्तं । तओ विसण्णेसुं अमचा-
हिट्ठिएसुं सेवएसुं, किंकायव्वमूढेसुं सामन्तलोएसुं, अणवरयसरसचंदणजलदाल्लिगणेण चिरस्स सिसिराल्लिगणेण य सत्थो
जाओ । समागया चेयणा । सरुवओ य विणिम्मियासणाबंधणधरणियलणिहित्तेक्करजणियंगहारो बीयपाणिपलहत्थियवय-
णकमलो, सलिलुत्तारियकल्लुयालओ व्व परिवेवमाणो, पुणो जोगि व्व कयणिचलावयवणिवसो जाहे किं पि झाइउं पयत्तो
ताहे साणुणयं परियणेण भणियं—णरवर ! किं कारणमेवं अप्पाणयमायासिज्जइ ? । तओ व्वमयत्तणराहिवेण सुमारिय-
पुव्वभवमाइवइयेण तयण्णेसणकज्जरहस्सं गोवमाणेण संलत्तं—एवमेव पित्तोदण मह सम्मोहो जाओ । पुणो पुणो तं

१ “कह चिय ?” इति सूत्रस्तके नास्ति । २ “यतरंग” सू । ३ “तणुग” जे । ४ “हारोविहोय” सू । ५ “वहु” सू । ६ “एव” सू ।

७ “गोसगकर” सू । ८ “पवणुदव” जे । ९ “गोमालइ पणोल्लइ” सू । १० “हस्तइयान्तगतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ११ “कय” सू । १२

“मसमिद्ध” जे । १३ “एव” सू । १४ “सियकुमुमदामगंडं ति जे । १५ “गवेयत्तका” सू । १६ “संजाय” जे । १७ “कडुयालओ जे ।

चेय सुमरमाणस्स मुच्छाओ समागच्छंति ।

तओ विसज्जिएसु समत्तसोमंताइलोएसुं, विरलीहूपसु पाडुएसुं, अलीणो चिन्ताजलणिहिं—कहं पुब्बभवसहोयरेण सह दंसणं होहि ? चि, सो वि बहुययरतवचरणतणुईकयकम्मपसरो सुदेवत्ते सुमाणसत्ते वा भविस्सइ, तहिं पि जइ इइ भारहवासे संभवो ता जइ पायालंबणोवाएण तइसणं भवेज्ज । चि चित्तिऊण भणिओ गियहिययणिच्चिसेसो वरधणू णाम महामचो जहा—लंबेऊण इमे तिणि सिलोगेदे घोसावेसु णयरम्मि तिय-चउक-चचरेसुं—जो एएसिं सिलोयाणं चउत्थं पाययं पूरेइ तस्स राया गिययरज्जइ देइ चि । एवं च पतिदिणं पवत्तमायोसणं । लंबिओ बहुसु पएसेसु पायओ ।

एत्थावसरम्मि य चित्तो णाम अणगारमहरिसी गामाणुगामं विहरमाणो समागओ कंपिल्लपुरवें । संपत्तो मणो-रमं णाम उज्जाणं । तत्थ य एकम्मि विविचे पएसे अहाफासुयम्मि भूमिभाए ठविऊण पत्ताइयमुक्करणं परिसंठिओ काउस्संगेण पडिमाए । जाव धम्मज्झाणोवगओ चिट्ठइ ताव य उज्जाणवालो गियकम्मवावडमणो पडिउमादत्तो लंबिय-पाययसिलोयद्वाणि—

दासा दसण्णए आसि, मिया कालिंजरे णगे । इंसा मयइतीराए, चंडाला कासभूमिए ॥ २२ ॥

देवा यं देवलोयम्मि अम्हे आसि महिड्डिया ।

तओ अणवरयमायणमाणस्स महरिसिणो बहुप्पयारं वियप्पं कुणमाणस्स सचित्तसंविचीए सुमरिओ पुब्बभवइयरो । सुमरणांतरं च मुच्छावसणिमीलियच्छिजुयलो पवणुद्ध्युवालकयलीदलमिव वेविरावयवो झत्ति महीयलम्मि णिवडिओ । तयावत्थं च पलोइऊण उज्जाणवालो ससंभमुब्भूयभात्तिणिभरयाए पयइकरुणयाए य समागतूण गिययंमुयसमीरणासासियं काऊण धरणियलमिलंतुत्तिमंगो पणमिऊण भणइ—भयवं ! किं तवचरणविसेसणीसहत्तणओ किं वा पढपरिस्समेणं णिवडिया तुम्हे ? किं वा जो अम्ह णरवइणो वाहिविंथारो सो तुम्हाण वि ? । तओ समासत्थचित्तेण मुणिणा भणियं—को तुम्ह णराहिवस्स वाही ? । भणियं च तेण—भयवं ! सो वि खणखणवियम्भन्तमुच्छापयंपमाणवरतणू ण गणेइ पणइणीजंपियाइं, ण बंधुसंधारणाए सुहं, ण सुहिसमागमेणं पि, ण गुरुयणवयणेणोवसमो, ण मलयसलिलसेएण समस्सासो, ण पियकलत्ता-लावेणावगमो, केवलं चउदिसिं मुण्णतरलतारयं पलोएइ, इमं च पुण एत्थ चोज्जं जं तालियंटसिसिराणिलेणावि मुच्छ-मावइइ, सरसचेंद्रेणजलेणावि परियप्पए, खणं खणं च सोयजलणजालाकरालियमिव तणुकंपेहिं अत्ताणयं विहुणेइ । इमं च णिसामिऊण मुणिणा भणियं—देवाणुप्पिया ! किं णिमित्तं पुण तुमं एए तिणि सिलोयदे पुणो पुणो पढसि ? , किमेत्थ किं पि कारणमत्थि, किं वा णत्थि ? चि । तओ एयं^१ सुणिऊण पहरिसविसट्टंतवयणकमलेण भणियमेएण—भयवं ! एस राइणा पायओ लंबिओ, जो एयस्स चउत्थमइं पूरेइ तस्स राया गिययरज्जस्स अइं पणामेइ, ता भयवं ! तुम्ह चलैणकमला-णुहावओ ममं पि लच्छिसमालिगणसुहं संपज्जउ चि, काऊण पसायं पूरइ पाययं ति । मुणिवरेण भणियं—“गंतूण देवाणु-प्पिया ! इमं भणसु—

इमा णे छट्ठिया जाती, अणमण्णेण जा विणा” ॥ २३ ॥

तओ सो एयं लिहिऊण पत्तयम्मि पण्णुलवयणपंकओ गओ पत्थिवत्थानिं । राया वि पइदिणं आपाययालंबण-दिणाओ सयलदिवसं “चेव पवरपंडियसहासु संठिओ अणेयसत्थत्थमुणियपरमत्थकइयणेण समं कच्वालावविणोएण चिट्ठइ । तओ लद्धावसरेण य ‘अम्हाणं पि कच्चं मुच्चउ’ चि भणिऊण णिहुओ संठिओ । लद्धाएसो य पडिउं पयत्तो—

“इमा णे छट्ठिया जाई, अणमण्णेहिं जा विणा” ।

तओ समायणमाणो “चेव णरवई मुच्छापयंपतरलियतणुविहाओ णिमिलंतलोयणो मउलावियवयणकमलो पुणो वि धरणीयलम्मि णिवडिओ । तओ खुहिया सहा, उच्छलिओ हलहलारावो । रोसारुणियलोयणेहि य रायपुरिसेहिं ‘एयस्स

१ “सामन्तलो” सु । २ “रज्जस्स अइं जे” । ३ “सु सपायओ जे” । ४ “वरम्मि जे” । ५ “स्सग्गस्स पं” सु । ६ “वि जे” । ७ “विसेसो सो” सु । ८ “तओ सत्थ” सु । ९ “पुसाहारणाए” सु । १० “चदणेणावि” सु । ११ “एव” सु । १२ “चलणाणुहा” सु । १३ “गंतु” सु । १४-१५ “चेय जे” ।

वयणासणिणा मोहमइगओ णरवइ' चि भणमाणेहि पुणो पुणो कर-चलणचेवडाचमदणातीहि दं ताडिओ भणिउ-
मादत्तो-ण खलु मम कव्वकरणम्मि अब्भुवगमो, किंतु मम दुरासापिसाइयाकूडमंतो व्व लोहभुयंगमकरंडउ व्व एस
रिसिणा मम दिण्णो पाढविसेसो । ताव य सिसिराणिलजलदापओण समासत्थो राया । णिवारिओ पयपहारातीण
उज्जाणवालो, भणिओ य-किमेयं तुमए कयं सिलोयद्धमणेण वा केणइ? । भणियं च तेण-पत्थिव ! ण मए कयं,
रिसिणा मे पणामियं । रौइणा भणियं-कहिं कहिं सो मुणिवरो? । इयरेण भणियं-मणोरमुज्जाणे । तओ रौइणा मउडं
विणा कडय-केऊरालंकाराइयं दिण्णं पारिओसियमुज्जाणवालस्स । दाऊण पयट्ठो गियविहवसमुदएण साहुणो समीवं ।
कहं?—

सरहसमिलंतसामंतपोत्तवहल्लुफुसन्तवाहजलो । वरवारविलयकरकलियचारुचमरुद्धुयकलावो ॥ २४ ॥

चारुयकरिणिल्लालमगजंतेउत्तहविपारो ! पासपरिट्ठियगंडयलगलियमयगलमिलंतभमरउलो ॥ २५ ॥

परिमंदंजुंमंजीरघोससंगलियसंदणसमूहो । चलचमरकयाणणसोहतरलतोरवियहयथट्ठो ॥ २६ ॥

पाइकचलणचप्पणविसंखलुच्छलियवहलहलवोलो । वरवंदिसइमुव्वंतचकिगुणगणकयासंसो ॥ २७ ॥

इय णयराओ णीहरइ बलभरुइलियकुवलपट्ठंतो । सिसिरो व्व वेरिकमलायराण भरहाहिवो सहसा ॥ २८ ॥

अवि य—

उब्भट्ठपुंडरीयपरिपंडुरफुडडिंडीरपिंडओ, दरियतुरंगवगिरुवेल्लियगहिरतरंगचंडओ ।

गुरुकरिमयरपहरपक्खोहियणरवरदच्छमच्छओ, कयकलोलवहलवलजलभरपूरियधरणिकच्छओ ॥ २९ ॥

वंदिणजयकलोलओ, वेलाउलए व्व साहुमूलयम्मि । अल्लियइ भरहणाहओ, रयणायरओ व्व रयणएहिं जुत्तओ ॥ ३० ॥

पत्तो य सपरिओसो साहुसमीवम्मि । मणिमउडणिहसमंसिणियपायपंकएण पणमिओ । पणामुट्ठिओ य धुणिउमादत्तो—

जय विच्छट्ठियसंसारवासवासंगकारणाणन्त ! । जय सयलवंधुनेहोहणियलणिहारणसमत्थ ! ॥ ३१ ॥

जय दुद्धरधरियतवोविहाणकयतणुयकम्ममलपडल ! । गुरुयाभिग्गहधारणकिसीकयाणंगसंगुग्ग ! ॥ ३२ ॥

दुव्वारकसायकिलिस्समाणभव्वाण कयपरित्ताण ! । हिययपसरन्तज्ञाणग्गिदड्ढविसयासवावंध ! ॥ ३३ ॥

इय पुण्णवत्तीपमुहेण मणहरंतेउरेण परियरिओ । पणओ णमन्तसामन्तमउलिमालं महीणाहो ॥ ३४ ॥

पुणो पुणो बहुभवसंभूयसंभरियसिणेहपसरो छिण्णमुत्तावलोगलंतमुत्ताहलविब्भमाइं मुयन्तो दूसहपियविओयज्जेणि-
याइं णयणेहिं बहलंसुसलिलाइं परुणो णराहिवो । तओ देवीहिं संलचं-णरणाह ! किमेयमकयपुव्वं तुम्हाण ववसियं ? ।
तओ संवरियवाहपसरेण भणियं राइणा-देवीओ ! एस मे भाया होइ । तहिं भणियं-कहं चिय ? । पत्थिवेण भणियं-
एस चेव भयवं तुम्हाण साहइस्सइ । तओ णमन्तकणकुवलयरयारुणियचलणजुयं पणमिऊण देवीहिं पुच्छिओ साहु-
भयवं ! जहट्ठियं सीसउ अम्हाणं ति । तओ सजलजलहरवाणुयारिणीए भारहीए भणिउमादत्तो साहु-संसारम्मि वि-
कारणमण्णेसियव्वं, जेण मुच्चउ,

बहुजाइ-जरा-जम्मण-भरणुव्वत्तणपरंपराकलिए । बहुविहविहडण-संघडणजणियपियविरहसंजोए ॥ ३५ ॥

सुर-मणुय-तिरिय-णारयसकम्मपरिणामजणियजम्मम्मि । राय-विरायंतरसंपडन्तमुह-दूहविसेसम्मि ॥ ३६ ॥

पिय-माय-भाय-भइणी-भज्जामायण्हियाए णडिएहिं । बहुसो पैरिहिंडंतेहिं तम्मियं जंतुहरिणेहिं ॥ ३७ ॥

इय बहुसो संसारम्मि वियरमाणाण कम्मवसयाण । मुट्ठि-सत्तु-मित्त-पुत्तत्तणाइं जीवाण जायन्ति ॥ ३८ ॥

अण्णं च—

भूय-भविस्समाणघणपाणिदुहुब्भडणिविडभुव्वणए, पयणुकुसमालग्गजलविंदुचलोवमम्मि जीविए ।

कुवियकयंतवियडमुहकंदरकवलियजंतुणिवहए, बहुयस्वाहिविविहसंजोयविणासियसुहसमूहए ॥ ३९ ॥

ओ दीसइ गोसग्गए, दिणावसाणम्मि णेय सो पुणो वि । अच्छउ ताव पओसओ, विचित्तचरिओ हु एस जियलोयओ ॥४०॥

ता एरिसम्मि असारे संसारवासं ण दुद्धहा पिइ-भाइ-पुत्ताइसंबंधा । जहा य एस मे बंभयत्तराया सहोयरो संजाओ तहा साहिप्पमाणं णिसामेह—

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे सुदंसणो णाम जणवओ । तत्थ मज्झमईणिण्णयातीरम्मि सिरिद्धो णाम गामो । तत्थ सेंडिल्लायणो णाम बंभणो । तस्स जस्समती णाम दासी । सा य तस्स इच्छाणुवत्तिणी विणीया य । तओ तेण विणीयत्तणजणियगुणगणाणुरायक्खित्तहियएण स चेय भारिया कया, अहवा—

एस चिय पेम्मगती अणवेक्खियदोस-गुणवियारम्मि । णियडम्मि लहं लमति वड्ढि व्व वियंभियप्पसरा ॥ ४१ ॥

एवं च वचंति दियहा । जाया य तीसे अम्हे दुवे वि जमलत्तणेण । अइकन्ता बालभावं, जोव्वणं समणुपत्ता । तओ अम्हेहिं सो सेंडिल्लायणो विणयवित्ति कुणमाणेहिं तोसिओ भणति जहा—णिप्फण्णेसुं सालिप्पमुहेसु धणविसेसेसुं तुम्ह जणणीए मत्थयधोवणेण मोक्खणं करिस्सामि, तुम्हाण वि मुकलत्तसंजोयणं ति । तओ तेण अम्हे विसयमुहासाप-डिवंधेण णडिज्जमाणा ण गेणेषु रत्ति ण दिणं, ण सीयं ण उणं, ण मुहं ण दुक्खं, ण लुहा ण पिवासा, ण वडलं, ण परिस्समो मलपडलपंककियत्तणुणो उदुंधुलणिवदुद्धसिरोरुहा कट्ठित्तणफुडियस्वरफरुसकर-वरणा सव्वायरेण कम्मं काउमादत्ता । तत्थ भुंजामो, तत्थ य वसामो ।

अणया य सरयसमयम्मि दूरुणमन्तजलहरंधारियदिसं वियडतडिच्छडाडोवुत्तत्थपंधियं अणवरयणिम्मरासारधोर-धाराणिरुद्धलोयणालोयं दिसिविदिसिमुखाक्खंडमंडियणहंणं बहुपयभरावूरिज्जमाणणिण्णयं पवत्तं वडलं, जेण खड्डोलओ वि जलणिही, बहोलिया वि महाणदी, णियडं पि दूरंतरियं, अप्पाणयं पि परायत्तं लक्खिज्जइ । तओ अम्हे दुद्धरजलधारा-धोरणीसमुद्धयसरीरा पहम्ममाणा वडलेण गुरुच्चित्तल्लखलियगमणमग्गा छेत्तासण्णपरिसंठियं णग्गोहमहातरुयरमल्लीणा । णिसण्णा तस्स मूलम्मि दो वि जणा । तओ अम्हाण जियलोउ व्व अत्थमइगओ सहस्सकिरणो, कम्मपरिणइ व्व पसरिया संज्ञा, खलमुहमंडलं व अंधारियं णहयलं, कालरत्ति व्व पवियंभिया तिमिरपत्थारी । तत्थ य जिहावसमउलमाणलोयणा पेलोइं पयत्ता । तओ तव्विहभवियव्वयाणिओएणं वडकोडराओ णिग्गंतूण डको हं भुयंगमेण । सो वि मण्णेहमूढमाणसो उवलम्भणिमित्तं इओ तओ पक्खित्तकरयलो खइओ तेणेवाहिणा । तओ अम्हे किंकायव्वविमुहिया दुद्धरविसपसरन्त-विसपसरायत्ततणुणो आवेयवेल्हन्तथोरीकयजीहाविहाया मउलमाणलोयणा वयणन्तरेणीसरन्तलालाविला पण्डचेयणा संजाया जणणीए व णिवडिया महियलुच्छंगे, विमुक्का जीविणं ति ।

णियविसमकम्मकन्तारगहणपडिओ कुरंगपोओ व्व । को कुं वियकालकेसरिकमागओ चुक्कए जंतु ? ॥ ४२ ॥

मुह-दुक्खपरिणइवसविसेसंपायणेकरसियाण । कम्माण पलायइ को व अत्तणो संविदत्ताणं ? ॥ ४३ ॥

जं जत्थ जेण जइया पावेयव्वं मुहं व दुक्खं वा । करहं व रज्जुगहियं वला तहिं गेति कम्माइ ॥ ४४ ॥

इय एव अम्ह णियकम्मपरिणतीवसवियम्मिए मरणे । णिययभवियव्वयाए असमज्जियकुसलकम्माण ॥ ४५ ॥

एवं च णिययाउयावसाणे कालं काऊण समुप्पण्णा कालिंजरादिहाणे णगवरे मैतीए [गन्धम्मि] जमलत्त-णेणं, जाया य जहकमेण । अह तव्विहतिरियत्तणजाइम्मि वि जणियलोयणाणंदं अच्चन्तमणहरं जोव्वणं अम्ह संजायं । तओ जणणीए समयं वियडगिरिणिगुंजोयरेसुं जैच्छंदलीलं विहरामो । तओ अणम्मि "दिणे वेत्तामतीणतीए तण्हुण-परिस्समायासियसरीरा सव्वओ य तरलतारयं पलोएमाणा समोइण्णा जलं पाउं । पीयाणन्तरं च समुत्तरंताणं परि-णिविडकुडंगंतरियत्तणुणा पुव्ववेरिण्णेव चंडकोयंडायैडिडउम्मुक्केवाणेणं समयं चेव मम्मपएसम्मि पहया लुद्धएणं । तओ ददप्पहारत्तणओ वयणविणिन्तरुहिरप्पवाहा स्वरवियणावसवेवन्ततणुणो विरसमारडिऊण णिवडिया महीए । तओ मुच्छाड्यमहाकिलेसमणुहवन्ता विमुक्का जीविणं ति ।

१ "पुत्ताइणो सं" जे । २ तीए जे । ३ तुम्हाण जे । ४ गमेम जे । ५ दिसिविदिसि ख । ६ तस्स पायमूत्तम्मि ख । ७ ताव य अम्हाण जे । ८ णहंतराल जे । ९ "माणमग्गालोयणा जे । १० पलोविडं ख । ११ "रनीहंतकुजाला" जे । १२ उद्ध" जे । १३ मग्गाः । १४ वच्छंद" ख । १५ दियहे जे । १६ "यमुक्के" ख ।

अद्वयसदृचणओ मया समाणा विविहफल-कुमुमसुहृण् मयंगतीरद्वहोवकंठे समुप्पण्णा एकाए हंसीए जमलचणेण
गन्धम्मि । जाया य जहाणुकमेण, संपत्ता जोच्चणं । तओ तम्मि चेव महद्वहे कीलमाणाण जन्ति अम्ह दियहा ।

अण्णाया य तहाविहभयियच्चयाणिओएण पावकम्मयारिणा साउणिएण एकाए चिय पासियाए ज्ञात्ति 'दो वि
येण्हिऊण करयलवलणुवेलिअकंधरापओएण विणिवाइया समाणा समुप्पण्णा कासिगाविसए 'वाराणसीए गयरीए
महाधनसमिद्धस्स सयलपाणाहिवइणो भूयदिण्णणामस्स अण्हियाए मायंगयरीणीए गन्धम्मि जमलमुयत्तणेण ।
जाया य कालकमेण । कयाइं णामाइं-मज्झ चित्तो, यम्भयत्तस्स संभूओ चि । मज्जन-भोगणाइहि परिवहट्ठमाणा
जाया अद्वरिसा ।

तत्थ पुरवरीए अभियवाहणो णाम राया । तेण य पहाणावराहसंभाविओ सच्चओ णाम पुरोहिओ संजायतिव्व-
कोवेण य दिवसावसाणे पच्छणवज्जत्ताए समप्पिओ अम्ह पिउणो भूयदिण्णस्स । तओ संवुत्ते बहलंधयारे मुयसिणे-
हेण भणिओ अम्ह पिउणा-जइ मह एए वाले गेयाइसयलकैलाकलावपारए कुणसि तो पच्छणभूमिद्वैरपरिसंठियं परि-
रक्खेमि अहयं, अण्णाहा णत्थि ते जीवियं ति । पुरोहिण्णावि जीवियत्थिणा तहेव पडिवणं । तओ समप्पिया अम्हे ।
पयत्तो सिक्खवेउं ।

तओ अम्हाण जणणी गोरवेण ण्हाण-भोगण-चलणसोयणाइयं तस्स सरीरस्थिइं निव्वत्तेइ । वचंतेसु य कइवय-
दिवसेसु बलवत्तयाए इंदियाणं, दुन्निवारयाए मयरकेउणो, आसण्णयाए पेम्मसमुदयस्स, चट्ठुलाए महिलासहावाणं, तस्से-
य संपलमा । एवं च अम्ह णेहाणुगयमाणसेण जाणमाणेणावि ताव ण किंचि जंपियं जाव अम्हे सयलकैलाकलावपारगा
संजाय चि । तओ पच्छा मारिउं ववसिओ मम(अम्ह) पिया । तओ अम्हेहि 'उवज्झाओ' चि काउं णासाविओ संतो पच्छा
हत्थिणाउरे णयरे सणंकुमारस्स चक्रवर्तिणो अमच्चत्तमुवगओ ।

अम्हे उण रूव-जोव्वण-लायणाइसयगुणसंजुया 'वाराणसीए चेव तिय-चउक्क-चचरेसुं विजियकिण्णरमिहुणमहु-
गेयज्जुणिणा सयलं पुरलोयं विसेसओ महिलायणं गोरीदिण्णकण्हरिणं व वसमाणेमाणा जहिच्छं विलसामो । तओ
पुरचाउव्वेजेहि रायाणं विण्णविय निवारिओ अम्ह णेयरीपवेसो । अण्णाया कोमुइमहसवम्मि सुहसयलजणवयाणंदसुं-
दरं रइयरइरणेवच्छं बहुपेच्छणयं पेच्छामु जाव णिययं संकोहल्लं ताव य कोलहुवाणं व अण्णकोलहुयरसियं भंजिऊण
वयणं विणिग्गयं गेयं । तओ पच्छाइयत्तणुणो एक्कपएसम्मि भौइउं पयत्ता । गीया य इसा गाहा—

जो जम्मि चेव जायम्मि होइ णियकम्मपरिणइवसेण । सो रमइ तहिं चिय तेण अभयदाणं पसंसंति ॥ ४६ ॥

तओ तमायणिऊण सुइमुहयगेयं समंतओ परिवारिया पेच्छयजणेणं कड्हिऊण वरिद्धां पलोइया पच्चभिण्णाया य ।
तओ 'इण इण इण' चि भणमाणेहि णिच्छूदा णैयरीओ । तओ "जइ कह वि राया जाणिही" तो णिस्संसयं 'मत्तीयआणा
लंछिय' चि कैलिऊण पाणावहारं करिस्सइ" चि तओ पलाणा अम्हे । गंतूणं च जोयणमेत्तभूभागं गुरुणिव्वेयमाणसा
कयमरणववसाया गिरिचरमेणं समारूढा ।

तत्थ य विमलसिलायलणिविट्ठो सयलसुमुणिगुणगणालंकिओ उवसमाणुहावागयहरिणउलसेविज्जमाणचलणसमीवो
सुर-सिद्ध-विज्जाहरऽच्चियचलणजुवलो भम्ममाइसमाणो दिट्ठो साहू । कहं ? जहापाणिणो अणिग्गहियकाम-कोह-लोहाइणो
विसंखलपयत्तपंचिदियप्पसरा सदाइसयलविसयवासंगसंगया अमुहकम्ममज्जिणन्ति, जह य समज्जियासुहकम्मणो दुरु-
त्तरणरयणिवड्डिया कर-चरण-कण्ण-णासावकत्तण-त्तणुच्छेयण-भेयणाइयाओ वियणाओ अणुहवंति, जह य तिरियत्तणम्मि
हहणं-ऽकण-फालण-वाहणाइयं दुक्खमणुहवंति, जह य कयमुकयकम्मणो समुप्पण्णा मुरगणेसुं समीहियमेत्तसंपत्तसय-
लिंदियमुहप्पसरं पवरसुरमुंदरीजणियमणहरइमुहविसेसं सोक्खमणुहवन्ति, जह य णिट्ठवियदुद्धकम्मद्विइपमुक-

१ दोण्हि वि सु । २ वाणारसीए जे । ३ संवत्ते सु । ४ कलापारए सु । ५ 'हरसंठियं जे । ६ 'कलापारगा जे । ७ 'वत्तणमु'
जे । ८ वाणारसीए जे । ९ गयरीए प' सु । १० वकोउहल्लं जे । ११ गाहयं जे । १२ पुरीओ जे । १३ तओ सु । १४ कलिउं जे ।

कम्मकलंकपंका जाइ-जरा-मरणसोयप्पसररहियं सिवमयलमैरुयमक्खयं मोक्खं पावेति । तत्थ य गयाणं ण पहवन्ति जम्म-जरा-मरणाणो उव्ववा, णण्णाहा पाणिणो मुहं ति ।

एवं च धम्ममुव्वसन्तं साहुं दट्ठण संजायामलवेरग्गा पडिबुद्धा अम्हे । अवगओ य भगवया पणीओ धम्मो । तओ वि साहुसिद्धाओ मुमरिऊण अट्ठपवयणमायाओ, उव्वहारिऊण पव्वयासण्णणिवेसाओ रयहरण-पडिग्गाहाइयं [पव्व-इया] । तओ छट्ठ-उट्ठम-दुवालस-मास-उट्ठमासखमणाइयं तवोविसेसं कुणमाणा गामाणुगामं विहरिउमाहत्ता । सिद्धो य साहुहिं जणियाणुकंपेहिं छळीवकायरवत्थपाइओ सभायारो । विहरमाणा य संपत्ता हत्थिणाउरं णयरं । ठिया जिणुज्जाणम्मि ।

अणया माँसखवणावसाणे पारणयणिमित्तं संभूओ पविट्ठो णयरं ति । उज्झियधम्मियमण्णेसमाणो मेहाणुगेहं पत्थिओ । दिट्ठो य णिययगेहाओ णिग्गाएण गामंतरं गंतुकामेण राइणो पुरोहिण । 'अमंगलं' ति कलिऊण ददं कसप्पहारेण ताडिओ । तओ तवसोसियत्तणओ सत्तस्स, छुहाकिलामियत्तणओ सरीरयस्स, सीह(द)त्तणओ जंघियाणं, वेवमाणसरीरो धस चि धरणीयले णिवडिओ । ताव य 'हा ह' चि भणमाणो मिलिओ तहिं जणवओ । 'अहो कह पेच्छ खैलीकओ महातवस्सी?, अहवा जइ एयस्स तवसामत्थं होन्तं ता एसो पुरोहिओ तक्खणं चेय विणासं पाउणंतो । णिरत्थओ एयस्स दुक्कतवपरिकिलेसो' चि । तओ पडवाएण व ताण वयणेण संपत्तचेयणो कुविओ पुरोहियस्सुवरिं । कोवकरालिज्जमाणदुप्पेच्छच्छेण य विमुक्का तण्णिहणणणिमित्तं तेउलेसा । सो ण दीसइ चि, 'णगरे डज्जमाणे सो वि डेज्जिस्सइ' चि परियालियं णयरं । बहलधूमेपडलए णिरुद्धो जणाण लोयणप्पसरो, वियंभियमंधयारं ।

तओ णौयरा मुणिऊण महरिसिणो कोवविलसियं सपरियणा पसाएउं पयत्ता । सणंकुमारराया वि पसायणत्थं तत्थाऽऽगओ । जाहे पसाइज्जमाणो वि ण पसज्जइ ताहे जणरवाओ मुणिऊण वइयरं गओ हं तस्स समीवं । जिणधम्म-भणिण विहिणा सामपुव्वयं मया भण्णमाणो कह कह वि उव्वसमं गओ, समासत्थो चित्तेणं, समागया संवेगवासणा । 'अहो दुक्कयं कयं' ति भणंतो उट्ठिओ तप्पएसाओ । गया य तमुज्जाणं । तण्णिमित्तवेरमाइसएहि य णिव्विण्णजीविएहि विरत्तसंसारवासेहिं कयं पाओवगमणं ।

ताव य सणंकुमारचक्रवट्ठिणा मुणिऊण पुरोहियवुत्तंतं कयगरुयकोवेण संजमिऊण दददीहरज्जुपासेहिं पेसिओ अम्ह समीवं । 'किमेयस्स कीरउ ?' चि पुच्छियं । तओ पुँलोइओ अम्हेहिं पच्चभिण्णाओ य- 'अए ! एस सो सच्चो अम्ह उवज्जाओ' चि मोयाविओ भणिऊण रायपुरिसे—

पावं कुणमाणस्स वि ण कैया वि कुणन्ति साहुणो कह वि । ईहे कीरन्तं पावं पुणो वि समहिट्ठए पुरओ ॥४७॥

तओ अहिययरं संभाविज्जमाणसंसारसहावा पयत्ता धम्मज्झाणं झाइउं । एत्थावसरम्मि य विहरमाणो समागओ एत्थ एगो साहु । ठिओ तम्मि उज्जाणे । ताव य साहुसमागमणमुणियवुत्तंतो विणिग्गाओ सपरियणंतोउरो राया वंदण-णिमित्तं । वंदिओ साहु । गिसण्णो पायमूलम्मि । पत्थुया धम्मदेसणा । कहिओ जीवा-उजीवाइपयत्थवित्थरो धम्मो । कहावसाणम्मि य पुच्छिओ भरहाइण चक्रहराणं विहववित्थरो । साहिओ साहुणा पवयणाणुसारेणं । वंदिऊणोवविट्ठो राया, महिलारयणं सुँणंदा, सुभद्धा पमुहं च अंतोउरं । चक्रहराणुमइणा णियभत्तित्तणओ य णिज्जियमुरविलयाविला-समखिलामलपैओगसंनुयं णट्ठविहिमुवदंसिय णमंसिऊण य महामुणिं गयमंतोउरं । अम्हे वि समाहिणा कालं काऊण सोहम्मे कप्पे णल्लिणिगुम्मे विमाणे उववण्णा देवत्तणेण । तत्थ य पवरविलासिणीकडक्खक्खित्तमाणसाणं जहि-च्छिर्येणंदियविसयमुहमणुहवामो ।

१ 'कम्ममलकलंक' जे । २ 'मरुयम' सू । ३ संजाया धम्मवुरि जिण्णासा, पडिबुद्धा य अम्हे सू । ४ मासखमणा' जे । ५ 'ओ जंघियाणं च खीणयाए वेवमा' सू । ६ तओ 'हा' सू । ७ खलीओ जे । ८ तवस्स 'साम' सू । ९ 'तवकिलेसो' सू । १० 'डज्जिहि' ति जे । ११ 'धूमवट्ठेण णि' जे । १२ णायरया जे । १३ फलोइओ जे । १४ कयाइ जे । १५ इय सू । १६ सुणंदापमुहं जे, सुमहा-पमुहं सू । १७ 'पओगयं णट्ठ' सू । १८ 'याणिदियमिदियमुहं अह अणुहं' जे ।

तत्तो य णिययाउयक्खणं जुओ समानो हं पुरिम्भत्तालणयरे गुणपुंजयाहिहाणस्स सेट्ठिणो णंदाए परिणीए समुप्पण्णो कुच्छिम्मि, जाओ कालक्केमेण, संघट्ठिओ देहोववण, संपत्तो जोव्वणं । तओ अहं अणहेसु वि सयल्लिदियत्थेसु, साहीणेसु वि विसओवभोगेसु, असज्जमाणो सोऊण धम्मं साहुसमीवम्मि पव्वजेमब्भुवगओ । विहरमाणो य इहइं संपत्तो । एत्थट्ठिण य उज्जाणवालवयणाओ पाढविसेसं मुणिऊण जातीसरणमुप्पण्णं । ता ण याणामि 'छट्ठीए जातीए विओओ कहमैम्ह जाओ ?' ति ।

धंभयत्तेण भणियं—“भयवं ! अहं जाणामि । तम्मि अवसरे साहुणो सयासाओ भरहाहिर्वणं चकहराण रिद्धिवण्णणमायण्णिऊण सुणंदासणाहं अंतेउरं पुंलोइऊण धीदुव्वलयाए 'सलाहणीओ चकवट्ठिविहवो ममं पि एस संपज्जउ ति जइ इमस्स तवस्स किंचि सामत्थमत्थि' [ति] हियण चित्तिऊण कयं णियाणं ति । तओ ण पडिक्कंतो तैयज्जवसायाओ, ण जिंदिओ णिययाहिप्पाओ, ण गरहियं हियण, णियाणवलवचणओ कालं काऊण इहइं समुप्पण्णो । परिणयं छक्खंडभरहादिवचणं । संपत्ता मुरवरसमाणा रिद्धी । ता तुम्हाणं पि अज्ज वि अहिणवं जोव्वणं, कालो रइविलासाणं, कीरन्तु सकामा कामा । ते य संजणियसयल्लिदियत्था संपज्जंति संपयं साहीणे ममम्मि सैहोयरे । वेत्तूण रह-तुरय-गई-दाइयमदं पुइइरज्जस्स विलसिज्जउ जहिच्छं, लालिज्जउ तवविसेससोसियं सरीरमण-पाणाईहिं, पीणिज्जंतु सयल्लिदियत्था, सेविज्जंतु सदाइणो विसया, संतोसिज्जउ भयवं मयरद्वओ । पच्छा वयपरिणामम्मि पुणो वि पव्वज्जं शेण्हसु ति । अण्णं च—

को तीए गुणो मणुयाण मणहराए वि रायरिद्धीए ? । जत्थ परमत्थबंधवज्जणस्स सोक्खं ण संजणियं” ॥४८॥

तओ एयमायण्णिऊण साहुणा भणियं—“भो णरादिव ! संझारायजलवुव्वुओवमे जीवियम्मि कस्स विवेइणो भोयणं पि रोयउ ?, रमियव्वयं तु मणहरभोएहिं दूरे विय ताव चिट्ठउ ति । अण्णं च—

तैणसिहरलग्गसिण्हातुसारतरला इम विय जणेइ । लच्छं पवरवियप्पाण धूणभसइ व्व वेरभं ॥ ४९ ॥

घणघडियविहडियण्णवण्णरायाण तैणुइजुवईण । मुरधणुरेहाणं पिव पडिबंधं कुंणउ को व बुहो ? ॥ ५० ॥

अणभिप्पेयम्मि वि संघटंति” विहडंति सम्मए वि जणे । चलविज्जुविलसियाइं व णेय पेम्माइं वि धिराइं ॥५१॥

इय मुणिऊणेवंविहमसारसंसारविलसियं सहसा । अथिरम्मि विसयसोक्खम्मि भणह कह कीरउ धिरासा ? ॥५२॥

तहा जं भणियं ‘अज्ज वि अहिणवं जोव्वणं’ ति तं णियच्छसु—

जिणवयणमुणियतत्ताण सयलकिरियाकलावसंजत्ति । संजणइ जोव्वणे चेव संजमो बलसमत्थाण ॥ ५३ ॥

‘कालो रइविलासाणं’ ति जं भणियं तं पि मुच्चउ—

बहुसुक्कंपंकरुहिरालयम्मि बीभच्छदंसणिज्जम्मि । पमुहरसिए रइसुहे विरामविरसम्मि को राओ ? ॥ ५४ ॥

जं भणियं ‘कीरंतु सकामा कामा’ तत्थ वि मुणसु कारणं ति—

खणसंघटंत-विहडंतकयपरायचकारणमुहासा । बहुजणियविप्पलंभा छलंति कामा पिसाय व्व ॥ ५५ ॥

जं च भणियं ‘ते य मैमम्मि सैहोयरे साहीणरजे संपज्जन्ति’ ति—

रज्जं पि चलं जइ कह वि जणइ जणियाहिमाणसोक्खाइं । एकम्मि चेव जम्मम्मि णेइ णिहणं भवसयाइं ॥ ५६ ॥

जं च भणियं ‘विलसिज्जउ जहिच्छं’ ति—

के व विलासा पसरियसहावदुग्गंभगंधदेहाणं । मणुयाण कारिमाणियसरीरसोहाण मणुयत्ते ? ॥ ५७ ॥

जं च भणियं ‘लालिज्जउ सरीरयं’ तं पि मुच्चउ—

देहेण गिसण्णासण्णावाहिवियणाकयंतकलिण । धुवमद्धुवेण लब्भइ मोक्खसुहं किं ण पज्जत्तं ? ॥ ५८ ॥

‘पीणिज्जंतु सयल्लिदिय’ ति जमुल्लवियं तं पि मुण—

१ “उज्जमुवगओ सु । २ छट्ठियाए जे । ३ “मम्हाण जाओ जे । ४ सुमदास” सु । ५ फलेएक्क चिदुव्व” जे । ६ तत्संज्जव” सु । ७ साहीणं जे । ८ ममं पि सु जे । ९ सैहोयरे जे । १० तणुणसिहग्गसिण्हा” जे । ११ तयणु(णुय)उ” सु । १२ कुणइ जे । १३ “ति ण घटंति स” जे । १४ ममं पि सु जे ।

कह कह वि पराहेतो (यत्तो) पयत्तसोक्खानमिदियत्थाण । अण्णायत्तं कयकुसलकारि को मुयइ मोक्खसुहं ? ॥ ५९ ॥

‘सेविज्जंतु सदाइणो विसय’ त्ति जं भणियं तं पि णियच्छ—

परिभोयमेत्तसंकंतविसविवायं व तक्खणं जंतु । आसीविसो व्व विसया सेविज्जंता खयं णंति ॥ ६० ॥

जं च भणियं ‘संतोसिज्जउ भयवं मयरद्धओ’ तं पि सुव्वउ—

जस्स ण संतोसो वरविलासरसियाहिं सुरपुरंधीहिं । सो च्चेय कह णु मयणो माणुसेभोगेहिं तिप्पीही ? ॥ ६१ ॥

जं च भणियं ‘वयपरिणामे पव्वज्जं गेण्हसु’ त्ति तत्थ वि अत्थि कारणं—

जे अत्थ-काम-धम्मा काउं तरुणत्तणम्मि कीरंति । परिणयवयस्स ते चेवैं हांति गिरिणो व्व दुल्लंघा ॥ ६२ ॥

अवि य—

जलणस्स दारुणिवहेहिं णेय, जह्ज जलणिहिस्स सलिलेहिं । तह संतोसो ण हु होइ जंतुणो कामभोगेहिं ॥ ६३ ॥

अण्णं च—

जत्तेण सेविया वि हु जायंति पमायल्लद्दमाहप्पा । भोया भोय व्व फणीण जंतुणो जीयणासाय ॥ ६४ ॥

पढमं जणंति सोक्खं साउत्तणजणियमणहरं भोयौ । किपाकफलासाइयरस व्व पच्छा विणासंति ॥ ६५ ॥

आइम्मि सयल्लरसवंजणेहिं जुत्तं पयडिदयपमोयं । पाणहणं परिणामम्मि विसयसोक्खं विसण्णं व ॥ ६६ ॥

इय अत्थिरेहिं पत्थिव ! इमेहिं संसारहेउभूएहिं । तुज्झ वि भोएहिं ण किंचि कारणं कुणमु जइधम्मं” ॥ ६७ ॥

तओ पयमायणिकुण वम्मयत्तेण भणियं-भयवं ! मया बहुकिलेसेहिं पैविया इमे भोया, ण सक्कुणोमि परिचइउं ।

साहुणा भणियं-कहं तुमे दुक्खेहिं लद्धा ? । णरवइणा भणियं-भयवं ! संजोय-विप्पभोयाइयं जमणुभूयं मए, जं दिट्ठं, जं वा णिसुयं, तं जइ वि साहिप्पमाणमप्पणो लाहवमुप्पाएइ तहा वि तुम्हारिसेमु साहिप्पंतं ण जणेइ लाचवं, ण परिचइए लज्जं, ण कुणइ अचवायं, ण संजणइ अपसं ति । अवि य—

णियअणुहूयं जइ वि [हु] साहिप्पंतं जणेइ लहुयत्तं । तुम्हारिसेमु वरमुणि ! तं चिय गुणकारणं होइ ॥ ६८ ॥

ता मुंणमु संपयं ति—

इहेव कंप्पिल्लपुरवरे विणिहयासेससत्तुसंताणो अणिप्फलकोव-परिओसो अम्ह पिया बंभो णाम राया आसि । तस्स अच्चंतुत्तिमवंससंभूया महारायाणो चतारि आसि मित्ता, तं जहा-कासीविसयाहिओ कडओ, गयपुरवती करेणुदत्तो, कोसलविसयौहिर्वइ पुण्फचूलो”, चंपाहिर्वइ दीहो ति । ते य अच्चंतमित्तत्तणओ विओयभीरुयाए सैमुदयाए चेव परिवाडीए चउमु वि रज्जेमु संवच्छरमेवकेकं विविहकीलाविलासेहिं चिट्ठंति । सरइ संसारो ।

तओ अण्णया बंभराइणो चुलणाए महादेवीए चोदसमदासुंविणसंमुइयचक्खट्टिणामो संभूओ अहं गव्वम्मि । जाओ कालक्रमेण । वडिहओ देहोवचणं कला-गुणेहिं च । तओ वारससंवच्छरमेत्तस्स कालगओ मे पिया । कयं पिउ-वयंसएहिं मैयकिच्चाइयं । तओ कडयाइणो पिउमित्ता परोप्परं भणिउं पयत्ता एवं-जाव एस वंभयत्तकुमारो सारीर-बलोववेओ होइ ताव परिवाडीए अम्हाणमेकेको इमं रज्जं परिवालउ । ति भंतिऊण सैम्मएणं दीहो ठविओ । अण्णे उण सरज्जाइ गया ।

गएमु य तेसु सो दीहराया परिवालेइ सयलसामग्गियं रज्जं । पुव्वपरिचियत्तणओ समुप्पण्णपहुत्तणाहिमाणओ य पडियग्गाए रह-तुरय-गइंदाइयं, पलोएइ भंडारं, णियच्छए सयलाणि ठाणाणि, पविसइ अंतेउरं, मंतेइ समं मह जण-णीए । तओ दुण्णिवारयाए इंदियाणं, बलवत्तणओ मयरकेउणो, दुद्धरत्तणओ मोहपसरस्स, रमणीयत्तणओ जोव्वण-विलासाणं, अगणिकुण मह पिउणो पडिक्खणं, अवमणिकुण वैयणिकुणं, विम्हरिकुण सुकयमणेयमुव्वयारं, उज्झिकुण

१ ‘सभोगेण जे । २ च्चेय जे । ३ विसया जे । ४ आयम्मि सु । ५ पयइइ पं सु । ६ ‘रकारणित्तेहिं जे । ७ भाविया सु । ८ तुमए जे । ९ साहिप्पमाणं जे । १० इत आरम्भ ६७ माथापयन्तः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ११ सुव्वउ जे । १२ ‘वाहिओ जे । १३ ‘लो, चउत्थो दीहपट्ठो ति जे । १४ समुदया चेव जे । १५ ‘सुमिणं जे । १६ मयकिच्च । तं सु । १७ समएणं सु । १८ सरज्जं जे । १९ वयणायं जे ।

य चारित्यं, अवलंबित्वा णिल्लज्जयं, मेइलित्वा णियकुलकमं, बहुमण्णिऊण कुलकलंकाववायं, खंडित्वा निम्मलसीलप-
सरं, संपलमो समं मह जणणीए । अहवा—

एस चिय जेहगती किं कीरउ जं कुलुमायाणं पि ? । महिलासंगो मइलेइ साडयं तेहघडउ व्व ॥ ६९ ॥

तिलसंबद्धत्तणकयसणेहपसरा खलत्तपरिजामा । महिला चकियसाल व्व कस्स णो मइल्लं कुणइ ? ॥ ७० ॥

परपेरिया सलोहा अगणियणिययाववायसंदोहा । तेहियकुसि व्व महिला खलस्स वयणं पणामेइ ॥ ७१ ॥

इय अगणियणिययकुलकमाण पम्मुकलज्जियव्वाण । खलमहिलाणं ण हु णवर कुवुरिसाणं पि अहममो ॥ ७२ ॥

एवं च पवड्डमाणसणेइं पसरन्तविसयमुहरसाणं गच्छन्ति वासरा । एवं च अम्ह पिउणो समाजवओवड्डिएण वीयहिययभूएण धणुणामेण मंतिणा अवितहं मुणिय चित्तियं च णेणं जहा—अविचेयवाहुल्लत्तणओ मेहिलियाणं मोहपर-
व्वसत्तणओ य घडउ णाम, जं पुण पडिक्खणमंगीकरेऊण अयसमसिमुहमक्खणं दाहेणावि एयमणुचिट्ठियं तमेत्थ चोज्जं, अहवा दूणिवारया कलिविलसियाणं ति, ता जो एवंविहं पि अकज्जमायरइ तस्स किमण्णमकायव्वमत्थि । त्ति चित्तिऊण मंतिणा वरधणू णाम णिययमुओ महमचंतसिणेहाणुरायरत्तो एकंतम्मि णिवेसिऊणमेवं भणिओ जहा—
पुत्त ! एसो कुमारो बालसहाओ ण मुणेइ पयइकुडिलाइं महिलाविलसियाइं, ता एयववएसेण पडिबोहणत्थं नेण्हिऊण कोइलाए सह कायं गच्छ कुमारसमीवं, भणसु य तं जहा 'एसो विजाइसमुब्बओ दुरायारो वायसो परपुट्टाए सह मया पाविओ, ता एयस्स णिग्गहो कीरउ, ण य वण्णसंकरो पम्मुणा उवेक्खियव्वो' । त्ति भणिऊण पेसिओ वरधणू । गओ सो । संपाडियं जमाइत्तं । तओ कुमारो कोउहलेण सहत्थेण ददवद्धपरहुत्तपक्खपेरन्तं वेत्तूण परहुयाहिद्वियमरिट्ठं बाल-
त्तणमुहकेलित्तणओ रायउत्ततरलत्तणओ य अंतेउरमज्जेणं पयट्ठो गंतुं, भणिउं च पयत्तो जहा—अण्णो वि जइ विजातीए एवंविहं करिस्सइ सो वि एयारिसि अवत्थं पाँविहि त्ति, मुणंतु अमुयपुव्वा जंतुणो । तओ तं मुणिऊण [दीहेण] भणियं—देवि ! अहं काओ, तुमं कोइल त्ति । तीए संलत्तं—बालो कुमारो कीलणयविसेसेहिं कीलइ त्ति, ण य एयस्स वियणो । तओ वीयदियहम्मि भहकरिणीए सह संकिण्णगयं गहेऊण एवमेव भणंतो पेमयावणं मज्जेणमइओ, कहं ?—

जा करिणि छेळती पुण रायं बंधइ विजोयिहत्थिम्मि । सा एव कीरिही पुण मुणेउ अमुणो जणो वयणं ॥ ७३ ॥

पुणो वि एयमायण्णिऊण दीहेण भणियं—पिए ! मारिज्जउ कुमारो, मेमम्मि साहीणे^१ अण्णे तुह पुत्ता भविस्संति, अहवा जे मम पुत्ता ते किं ण तुह पुत्त ? त्ति, दोसु वि रज्जेसु तुमं चेय सामिणी । तओ रइणेहपरव्वसत्तणओ पैरिसिं पि हियणावि अचित्तणीयं पडिसुयमिमीए । अहवा—

हिययाइं जेहरसियाण कमलदलकोमलाइं महिलाणं । ताइं चेव विरत्ताण होन्ति करवत्तकडिणाइं ॥ ७४ ॥

भणियं च तीए—जइ कह वि तेणोवाएण मैरिज्जउ जहा जणाववायदोसो रक्खिज्जइ । 'को उण सो उवाओ ?' त्ति चिरं चित्तिऊण 'हुं मुणियं, कुमारस्स विवाहधेम्मो कीरउ त्ति, विवाहसामग्गीए सह वासहरपरियण्णाए पवरजैल-
द्धयंदणिज्जहयसणाहं अणेयवायायणणिहित्तमत्तवारणयविहसियं गूढजणियणिग्गाम-पवेसं करेसु जउहरं, तत्थ मुहपमुत्तस्स हुयासणं दाहामो' त्ति मंतिऊण ममं चिय मैउलस्स पुप्फचूलादिहाणस्स धूया वरिया । पारद्धा सयलसामग्गी । एवं च कीरमाणं मैइपयरिसत्तणओ लक्खिऊण अमचधणुणा विण्णत्तो दीहराया जहा—एस मह पुत्तो वरधणू सयलकलाकला-
वकुसलो रज्जधुरधरण-वट्ठावणसमत्थजोगो य वट्ठइ, अहं पुण वयपरिणयत्तणओ ण सक्कुणोमि खैंडफटं काउं, परलोयस्स वि मे कालो वट्ठइ, ता तुंमेहिं अणुण्णाओ इच्छामि णिययहियागुट्ठाणं काउं । तओ एयमायण्णिऊण दीहराइणा चित्तियं—
एत्त मेहामंती मायामंतपओयकुसलो मह सयासाओ णिग्गओ अणत्थाय होहि । त्ति चित्तिऊण कइयवोवयारविइय-

१ मणिऊण णियकुलकमं संपलमो सु । २ खलन्तपं सु । ३ जणइ जे । ४ तेण जे । ५ महिलाणं जे । ६ दूणिवार सु ।

७ पाक्खिस्स, जे । ८ असुदपुव्वा सु । ९ पयवणं सु । १० विजायहं सु । ११ ममं पि सां सु जे । १२ जे उण तुह मुया भं सु । १३ एरिसियं हिं सु । १४ मारिज्जइ सु । १५ 'धम्मं करेमो' त्ति जे । १६ 'जालंयवदं' सु । १७ माउलमस्स जे । १८ मतीए पयं सु । १९ खडिफटं जे । २० 'तुमए जे । २१ महामइ जे ।

सामपुव्वयं भणिओ—तुमए विणा किमम्हाणमेएण रज्जेण पओयणं?, का वा हिययस्स णेव्वुती?, को वा सयत्थो? ति,
ता अलं कत्थइ पउत्थेणं, किंतु ईइइं ठिओ चेव पवा-सययन्तपयागाइणा धम्ममावज्जमु ति । इमं वाऽऽयण्णिऊण धणुणा गंगा-
णदीगीरम्मि मल्ली पवा काट्ठिआ । तत्थ पंगिय-परिच्चायादीण पयागमणपाणं दिज्जिउं पयत्तं । दाण-माणोवयारगहिएहि
य पच्चइयपुरिसेहि दुगाउयपमाणा सुरंगा खाणिया जाव जउहरं । इओ य सा वहु रंभा(भ)म्महियरूवा गियपरियणसमेया
संपत्ता अम्ह पुरवरं ।

अह विरइयणववहुवेसरइरणेवच्छलंछणुच्छुरिया । दिट्ठा वडिदयकोडल्लणिम्भरं पुरपुरंधीहि ॥ ७५ ॥

तओ कयकिच्चिमसंभेमेण दीहराइणा महया विभूतीसमुदएण पवेसिया णयरं । तओ चलंतचलणणेउररवुच्छलियमु-
हल्लणच्चंतविलासिणीयणो जणसम्मएण वारिज्जमाणो व्व संचरंतमंदमंदमावासट्ठाणमइओ जण्यत्तिआजणो । जहारिहं
च कओ सयलो वि पायपक्खाल्हाओ उवयारो । तओ पहाणसंवच्छरियवयणाओ कयविहिमंगल-कोउओवयारं जहारिहि
वत्तं पाणिग्गइणं । विवाहाणंतरं च विसज्जिए सेयले वि जणसमूहे पेसिओ” अहं वासभरणं सह वहुए । दिट्ठं च तं मए
जउहरं सुरविमाणावारमणुगिरंतं । तओ तत्थ पासणिसण्णववहुसमणियस्स विसज्जियासेसमेव्वलोयस्स वेसम्मणिम्भरं
वरधणुणा सह मन्तयन्तस्स समदियं गयमदं जामिणीए । ताव य विंताणलेजेव दारद्वियतणुणा समंतओ पलीवियं वास-
भरणं । उच्छलिओ हाहारवो, “कइयं पुरजणवणं, संपलग्गं समंतओ जउभरणं ।

अह डज्झइ” जलणुदामजलणजालाकलावदुप्पेच्छं । पुरजणकयदाहकारदारुणं जउहरं सहसा ॥ ७६ ॥

जाव य किंकायव्वमूढमाणसेण पुच्छिओ वरधणू “किमेयं?” ति, ताव य महामच्चेण कयपुव्वसंकेया सण्णाद्ववद-
कवया भेतूण सुरंगादुवारं समागया “कहिं कहिं कुमारो?” ति भणमाणा सोलस पच्चइयपुरिसा । तओ तं गिसामिऊण
जाहे अविस्संमंतो तेसिं ण पडिसंलावं देइ वरधणू ताहे तेहिं भणियं जहा-अम्हे महामच्चेण धणुणा कयसंकेया पे-
सिया, इमं च ते साहिष्णाणं, इमं च वइयरमणागयं मुणिऊण सुरंगापओएण अम्हे गियमिया, जा सा कुंमारस्स माउल-
धूया सा लेहपेसणेण गिवारिऊण एसा काइ अण्णा [? आणिया], ता इमाए पडिवंधो ण कायव्वो, लहुं गिग्गच्छह
ति, सुरंगादुवारम्मि तुरंगजैयलं धरियं चिट्ठइ, तत्थऽवल्लिऊण अण्णाणं रक्खह ति, जाव को वि संपज्जइ अवसरो ।

तओ एयमायण्णिऊण अकयवियारो वरधणू साइयपरिच्चायउवट्ठणाणाविहगुलियाविसेसे गेण्हिऊण भणइ-
कुमार ! ण एस कालो विलम्बियव्वस्स, सिग्गमागच्छमु । ति भणिऊण कुमारेण समयं पुणो वि जणणिउयराओ व्व
विणिग्गओ सुरंगोयराओ । दुवे वि पत्ता दीरदेसं । आरूढा मणपवणदच्छेमु तुरंगमेसु । सादियं जहावट्ठियं मम वरधणु-
णा विवाह-कण्णाइयं सयलं पि दीहराइणो ववसियं । पयट्ठा तोरवियतुरंगमा गंतुं । गया य पण्णासजोव्व(य)णमेत्तं भूमि-
भागं । तओ दीहदाणखेएण गिचेट्ठा गिवडिया तुरंगमा ।

तओ वैल्लइयाए जीवियस्स “एस एवोवाओ” ति परियण्णिऊण पाएहिं चेव गंतुं पयत्ता । पत्ता य कोट्टगाहिहाणं
गामं । इहावसरम्मि तण्हुण्हैयल्लुहाकिलंतेण मया वरधणू भणिओ जहा-सिग्गं मैममण्ण-पाणाइयमण्णेसमु दहं परिसंतो”
ति । तओ तमायण्णिऊण भणियं महामच्चतणएण-“सुंदरं केणावि भणियं जहा—

णत्थि पंथखेयाउ परा वयपरिणई, जेय रुंददारिदसमो वि हु परिहवो ।

मैरणयाहि ण हु जायइ अण्णभयं परं, वेयणा वि ण लुहाए समा किर जंतुणो ॥ ७७ ॥

जोव्वणसिरि सोहमायं, अहिमाण परकमो” कुलं सीलं । लज्जं बलावलेव तो, खणेण एका पणासेइ” ॥ ७८ ॥

१ “गमेइणा रं” जे । २ इहट्ठिओ च्चेय जे । ३ धम्ममहिज्जमु जे । ४ “हि पंगियपुरिसेहि दुगा” सू । ५ “पुरंधीहि” सू । ६ “भवेण जे ।
७ पारिज्ज” जे । ८ “वत्तियजणो” सू । ९ सयलम्मि जणं जे । १० “ओ वासभरणं संपलग्गं । उच्छ” जे । ११ कइियं सू । १२ “वएण, जह व” सू ।
१३ “इ आणुहम” जे । १४ “व्वियुदियमा” जे । १५ कुमारमाउ” सू । १६ “जुवलं चि” सू । १७ अण्णाणं जे । १८ दुवारदेसं जे ।
१९ बाण्हाए सू । २० “जुच्छुइयाए” सू । २१ महमं जे । २२ “तो । तओ” सू । २३ मरणभवाहि जे । २४ “ओ रक्खणाइ । सज्ज जे ।

एत्यावसरम्मि य 'ण कालखेयस्सावसरो' ति 'कलिऊण पविट्ठो गामं । मम तर्हि चेव संठियस्स ल्हं समागओ गामगंडयं गेण्हिऊण । तओ दीहरसिहावसेसं केसं काऊण मुंडावियमुत्तिमंगं मज्झ । परिहोविय थोरकासाइयवत्थं जुयलं, चउरंगुलपमाणपैट्टवंत्रेण सिरिवच्छलंछणं छाइऊण वच्छत्थले, अप्पणा वि परियत्तिऊण वेसंतरं वरधणू मं गहेऊण पविट्ठो गामव्भंतरं ।

ताव य एकदियवरमंदिराओ पेसिएण णिगंतूण दासचेडएण भणिया अम्हे-एह भुंजह ति । एयमायण्णिऊण गया तत्थ अम्हे । गिसण्णा पवरासणेमुं रायाणुरूपडिवत्तिजणिओवयारा भुत्ता गरुयविच्छड्डेणं । भोयणावसाणम्मि य अम्ह पुरओ आगंतूण णाइपरिणयवया एका पवरमहिला सयलालंकारालंक्रियसरीरं विमुक्ककमलालयं व भयवई लच्छि बंधुमइजणियाहिहाणं कण्णायमुदिसिऊण पहरिसविसट्टवयणकमल मज्झुत्तिमंगम्मि अक्खए पक्खिवइ, मुरहिकुमुमदाम-सणाहं च पवरसिचयजुंवलं समप्पेइ, भणइ य-एस ईनाए कण्णयाए वरो ति । एयं चाऽऽयण्णिऊण भणियं मंतिमुएण-भो ! किमेयस्स अण्हिगयवयणस्स मुंक्खवड्डयस्स जगियापरेण अप्पणं खिजावेह तुब्भे । वरसामिएण भणियं-“सामि ! मुक्खउ, अत्थि किंचि विण्णवियव्वं, अहवा ललुइयव्वं, अहवा जाइयव्वं, जेण अम्हेहिं अण्णया पुच्छिएण णेमिच्छिएण साहियं जहा-इमाए बालियाए सयलपुहइमंडलाहिवाई भत्ता भविस्सइ । ‘कह अम्हेहिं सो मुणियव्वो ?’ ति भणिए तेण भणियं-जस्स दंसणेण भविस्सइ बहलपुल्लमुब्भेओ सवाइसलिलं च लोयणजुयलं बालियाए, पट्टपट्टोच्छा-इयसिरिवच्छलंछणो य जो समित्तो भुंजिही भोयणं सो इमाए भत्त” ति । भणिऊण पणामियं मज्झ करयलम्मि दाण-सलिलं । भणियं च वरधणुणा-भो एस जम्मदरिहो ‘डोडो मए सेंमं पडणत्थं पैयट्टो, कुओ पुहइमंडलाहिवत्तणमिम-स्स ? । धैरसामिणा भणियं-जो वा सो वा होउ, पणामिया मए बाला । तओ तम्मि चेवै दिणे जहाविहववित्थरेण वत्तं पाणिग्गहणं । तण्णिहिं तर्हि चेव णिवसिया अम्हे । पहाया रयणी । भणिओ अहं वरधणुणा-भो सहयर ! किं मुहासीणो सि ?, किं वा ते विम्हरियं ‘दूरं गंतव्वं ?’ । ति वैहित्तेण मया बंधुमतीए सिट्ठो सव्भावो जहा-इं वम्भयत्तो ति, ण साहियव्वं कस्सइ, वीसत्थाए चिट्ठियव्वं जावाइमागच्छामि । तओ एयमायण्णिऊण अविरलंसुगलिय-वाहजलकलुसियकवोलमंडला पणमिऊण भणिउं पयत्ता-

मुण णियकुलणहमंडलमियंक ! गुणकिरणपसरियप्पसर ! । वियसावियमणकुवलय ! खणं पि मा पम्हुसेज्जासु ॥७९॥

तइ समयमिमं वच्चइ मह हिययं, असरणं ममं मोत्तुं । सोक्खं च सोक्खदायय ! इमाण तत्ति वहेज्जासु ॥८०॥

एसा य सरसकोन्तलकलाववेणी तुहऽग्गओ रइया । ताव ण मोत्तव्वा जा पुणो वि ण तुमं मए दिट्ठो ॥ ८१ ॥

तह कज्जलं पि रविकिरणदलियकुवलयदलुज्जल्लिसेसु । णयणेसु ता ण लग्गइ पुणो वि णो जा तुमं दिट्ठो ॥८२॥

तुह विरहे कीरन्तं पि मज्जणं संजणेइ अद्वियरं । अंगाण हिययवइदंतगरुयरणरणयसंतावं ॥ ८३ ॥

इय मह वड्ढियतुहविरहजलणजालाकरालियं हिययं । तह कायव्वं णिव्वाइ जह पुणो संगसलिलेण ॥ ८४ ॥

तओ तं दंसियणेहणिव्वरं समासासेऊण निग्गया अम्हे । परिवियडपयविकखेवं गंतुं पयत्ता । संपत्ता य अन्तिमं गौममेगं । तत्थ य सलिलपाणणिमित्तं वरधणू गाममइगओ । मुहुत्तंतराओ य आगंतूण मं भणति जहा-“गामसहासुं पयत्ता संकहा जहा, ‘किंलें अतीयदिणे कंप्पिल्लपुरवराओ पलाणा वम्भयत्त-वरधणुणो, हेइडजउहरम्मि य पलोएतेहिं ण दिट्ठाइं अट्ठियाइं, दिट्ठा सुंरंगा । तओ दीहराणा बंधाविया सयला रायमग्गा’ । ता एह उम्मग्गेण वच्चामो” । ति पयट्ठा विसमुम्मग्गोदुग्गणिवेसेण अम्हे । पत्ता य सरल-साल-तमाल-बउलाइमहातरुसंडमंडियं मणहरकुमुमफलोववेयं महाडविं । तओ तीए महाडवीए गच्छमाणाणं वाहिउं पयत्ता मं पिवासा । मुणिऊंणं च तण्हावसवियणाऽऽवियज्झं वरधणू मं उवविसाविऊण बहलपत्तलदलसमूहस्स णग्गोहपायवस्स हेट्ठओ गओ जलाणयणणिमित्तं । ताव य दिणाव-

१ चित्तिऊण जे । २ 'हाविओ जे । ३ 'जुवलय जे । ४ 'पट्टयव' जे । ५ 'जुयलं जे । ६ इमे क' ख । ७ मुक्खवड्डयस्स ख । ८ 'यव्वं, जे । ९ ओशो ख । १० सह जे । ११ पयतो ख । १२ परवइणा जे । १३ चेय दियहे जे । १४ वाहिएण जे । १५ विक्खेवा ख । १६ गामं । तत्थ ख । १७ किर जे । १८ दइड जउहरं, पलोयतेहिं ख । १९ 'दुग्गवेसेण जे । २० 'ऊगायवं पिवा-सावियणावसग्गं वर' ख ।

साणसमयम्मि दिट्ठो मए दूरदेसत्थो जमभट्ठेहिं व दीहरोइणो पुरिसेहिं पढम्ममाणो य । तेहिं चालक्खिओ 'पैलायह' ति मह सण्णं काउं पयत्तो, कह ?—

फुल्लंति वसंते सयलविडविणो चूय ! तं पि फुल्लेहि । तुह कुसुमपरिमलं णेय मुद्धभमरा वियाणंति ॥८५॥

तओ अहं वियाणिऊण चरधणुकयपलायणसण्णं हिययन्मिभतरवियंभमाणभयपसरो सहसा समुद्धिऊण णग्गोहतुरु-
तलाओ तुरियपयणिकखेवं पलाइउं पयत्तो । पडिओ मुद्धग्गमं कंतारं । केरिसं च ?—

वियडगिरिकूडसंकडतडणियडघडंतणिविडविडवोहं । भीसणभमन्तसावयविमुक्कपुकारलल्लकं ॥ ८६ ॥

करिकुलकैरकडिहयभग्गपडियतरुणियरुद्धसंचारं । तरुसाहणिहसणुग्गयदवग्गिडज्झंतकंतारं ॥ ८७ ॥

दुप्पियवराहंतुग्गघायंविक्किण्णणिण्णयातीरं । वणमहिसरवायण्णमइंदरवभेसियैकुसं ॥ ८८ ॥

इय णिम्भरवीरीगहिणल्लरिउडणणिहट्टारारं । णियक्कमपडिहं पिव भमामि भीमं महारण्णं ॥ ८९ ॥

अवि य—

रसंतमत्तचूययं, धमध(द्ध)मेन्तवाययं । कणंतखुल्लसावयं, जलंतघोरपावयं ॥ ९० ॥

करं कमालमालियं, खगावलीकरालियं । वृगोहकूरसदयं, तरच्छसत्थरोदयं ॥ ९१ ॥

भमंतभीमसंवरं, मइंदभिण्णकुंजरं । भमंततत्थरोज्झयं, सियालवद्धजुज्झयं ॥ ९२ ॥

करेणुदारियासयं, सुभीमभक्खिओसयं । वहतलोहियारुणं, किरायरावदारुणं ॥ ९३ ॥

इय भीसणं वणं जणियमणभयं देव-दाणवाणं पि । पेच्छामि हच्छसच्छं वीभत्सं(च्छं) तं महावच्छं ॥ ९४ ॥

एवं च णिम्भरभयभरुभंतविच्छुब्भमाणपयविच्छोहो, लुहा-तण्णुहणीसहत्तणओ पंकखुत्तं व दुक्खेणुक्खिवंतो चलण-
जुवलयं, दंडददम्भसूइतिक्खलग्गसंगलियवहलरुहिरधारो कह कह वि गंतुं पयत्तो । आहारयंतो तित्त-कसायत्तणविरसे
कंद-मूल-फलविसेसे, अणेयपण्णूरकसायकलुसियं पियंतो गिरिणदीसलिलं, णिवसंतो विसमगिरिगुहाकंदरेसुं, दीहरपरि-
स्समिधणसंधुक्कियसोयजलणजालाभुल्लुकिओ परिब्भमंतो पेच्छामि तंतियदियहम्मि तावसमेगं । दंसणमेत्तेणेव तत्तेयमस-
हमाणं व पणट्ठं मे परिस्समाइयं भयं । समासत्थो चित्तेणं । जाया जीवियम्मि पचासा । उवसण्णिऊण सविणयम-
भिवायणं कयं । पुच्छिओ य-भयवं ! कत्थं तुंम्हाण आसमपयं ? ति । एयवयणाणंतं च णीओ आसमपदं । दंसिओ
कुलवती । धरणियललुलन्तकुंतलुत्तिमंणेणं सविणयं पणमिओ कुलवती । तेणावि जणियतिवलीभंगविसमिगभालवट्टेण
समुष्णमंतभूलयं पलोइऊण भणिओ हं-वच्छ ! केहिंतो आगमणं ? , बहुपचवायमरणं, पयतिकूरा सावयगणा, विस-
मत्तणओ दुल्लंघा पंथा, मुकुमालसिणिद्धच्छवी य देहाहोओ लैक्खिज्जसि, ता 'कहमिणं ?' ति साहिज्जउ फुडं । तओ
मए सव्वं जहावत्थियमवितहं सादियं । तव्वयणाणंतं च 'सागयं सागयं' ति भणमाणेण पडिरद्धो हं कुलवड्ढा ।
भणिओ य जहा-हं तुह जणयस्स वम्मराइणो चुल्लमाउ त्ति, णिययं चेव आसमपयं भवओ, जहामुहं चिट्ठसु त्ति ।
मुणिऊण तस्स चित्तासयमच्छिउं पयत्तो । ताव य समागओ जलयकालो । तत्थाहमज्जण सयलाओ धणुव्वेयाइयाओ
महत्यविज्जाओ गुणाविओ ।

अण्णया य सैमागयम्मि सरयकाले ते तावसरिसओ फल-कुसुमै-समिधियणिमित्तं गच्छंति रण्णपरिसरेसुं । तओ
अहं पि कोउहल्लेण एकम्मि दिवसे "णिरुम्भमाणो वि कुलवड्ढा गओ तावसेहिं सैममरणं । सरसफल-कुसुमसमिद्धाई
च काण्णयाई चक्खुलोत्तणओ पलोएमाणो विहरिउं पयत्तो । दिट्ठं च मया तत्थेक्कपणसम्मि तक्खणं विमुक्कं चिय करिणा
मुत्त-पुरीसाइयं । दट्ठण य चित्तियं मए-अवस्सासण्णेण करिणा होयव्वं । तओ तरलत्तणओ सहावस्स, सुलहत्तणओ
जोन्वणकीलियव्वाणं णिवारिज्जमाणो वि तावसेहिं लम्भो गयवरमग्गओ । अह 'एसो इमो' ति पलोयणक्खित्तमाणसो

१ 'हाइणा णित्तपुरि' जे । २ पैलायहि जे । ३ करयविडव' जे । ४ 'यविकिण्ण' जे । ५ 'वग्गदं' सू । ६ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जे-
पुस्तके नास्ति । ७ दवइ(दि)इहमुद्दयग्गलग्ग' सू । ८ आहारयो सू । ९ 'लुल्लुकिओ' जे । १० तद्वदिवसम्मि जे । ११ दुमं आस' सू ।
१२ आसमं । दं' जे । १३ कहि ते आ' सू । १४ लक्खिज्जइ जे । १५ समागए जे । १६ 'मयामिधेणुणिमित्तं' सू । १७ णिहम्भ-
माणो जे । १८ सहमं जे ।

गओ पंचजोयणप्यमाणं भूमिभायं । दिट्ठो य मए महाकरी । केरिसो य ?—

गंडसेलसंगलियमुणिज्झरदाणओ, उण्णयग्गमाउब्भट्ठदंतविसाणओ ।

वियडथोरसिलकक्खडपायपेइट्ठिओ, महिहरो व्व मह गोयरए परिसंठिओ ॥ ९५ ॥

वियडकवोलयलागयं, भमरउलं दाणसलिलचमरयं व । अंसावलग्गकिसलयं, वहमाणो कयलियाविलासयं व ॥ ९६ ॥

एवं च अप्पाणयं व सयलपरिवारविरहियमेकल्लमुब्भियं पलोएमाणस्स तं गयवरं वड्ढियं कोउहलं । पयत्ता इच्छा जहा—एएण करिणा समं खेळामि । चि चित्तिऊण तओ मए गंभीर-तार-महुरविसेसोवसेंसी रुंदसइओ कओ । आय-ण्णणानंतरं च वलिऊण पलोइओ हं करिणा । तओ उब्भट्ठेतंढवियकण्णजुयलो दूरसमुण्णमियविसमभग्गवालग्गो करवि-मुक्कसुंकारणियरो गलगज्जियविणिज्जियसजलजलहरो कयंतो व्व तमदाणमुदाइओ सरहसं । सिग्घत्तणओ गतिविसेसस्स संपत्तो ममंतियं । पसारियकरग्गभागो य कह कह वि मं जाव ण पावेइ ताव मया तस्स पुरओ पिंडलीकाऊण पविस्स-त्तमुत्तरीयं । तेणावि तक्खणं चेव चेत्तूण कौटिलियसौंदर्येण त्विचं णहमंडलाहिमुहं । जाव अमरिसिंहुत्तणओ मह कलणाए दसणेहिं किल पडिच्छइ चि ताव मया परियंचिऊण गहिओ बालग्गहाए । सतुरियं चलंतस्स य चलणंतर-विणीहरिण मए छिको करेण चलण-करग्गेसुं । तओ तस्स रोसपरिवसत्तणविंदाणसुण्णवेज्जस्स करजुयलसमुक्खय-पक्खिक्खत्तपंसुपिहियलोयणालोयस्स से वलग्गो हं कण्णपत्तो । तओ(जा)व य करेण संफुसइ ताव य इच्छत्तणओ हं एककरकलियवालहिंदंओ ज्ज चि समागओ धरणियलं । एवं च तेण करिणा समं कीलायमाणस्स सहस ज्ञेय सयलं [अं]धारियं दिसावल्यं, पसरन्तणिब्भरासारथोरजलभारारुद्धलोयणवहं तक्कालाक्खियणियतणुविहायं वासिडं पयत्तं ।

तओ सो निट्ठुरवासजलप्पवहकरालियसयलदेओ ददपरिस्सममंदायमाणचेट्ठो य चिरसमारसिउं पलाणो गयवरो । अहमवि पयट्ठो पडिवहेणं गंतुं । पयत्ताओ णिब्भरजलयासारत्तणओ य समागयसलिलपूराओ गिरिणइओ, अलक्खिय-णिण्णुणयविहायं जायं धरणिमंडलं । तओ हं विम्हरियपुब्बा-डवरदिसाविहाओ इओ तओ परिब्भमन्तो समोइण्णो भरिय-मेकं गिरिसरियं । बुब्भमाणो य तीए समुत्तिण्णो णवर वीयदियहम्मि पेच्छामि तडनियडसणिविट्ठं पुराणपडियभवणं-खंभभित्तिमेत्तोवलक्खियं जिण्णपुरवरं । तदंसणम्मि य हिययन्निभतरवियंभिउब्भट्ठकोउहलविसेसो दिसिदिसिणिहिचिदिट्ठि-विच्छोहो समंतओ हं पलोएमाणो पेच्छामि पासपरिमुक्खेडय-खग्गमेक्कं वियडवंसकुडंगं । तं च दट्ठूण चित्तियं मए—‘अहो ! रमणीयया खग्ग-खेडयाणं, ता पेच्छामि ताव केरिसं ?’ ति चेत्तूण खेलिउं पयत्तो । खेलमाणेण य बाहियं तम्मि वंसकु-डंगे । एकप्पहारेणेण णिवीडिया वंसाण सट्ठी, वंसंतरालसंठियं च णिवडियं दरफुरंतोदुडमेकं मणोहरायारं सिरकमलं । दिट्ठं च मए ससंभंतेण । ‘हा धिरत्थु मे ववसिएणं’ ति गिदियमत्तगो बाहुवलं, बहुसो अप्पा उवलद्धो । पच्छायावपर-देण य पलोयमाणेण दिट्ठमुदणिवद्धचलणं धूमपाणलालसं कबंधं । समहियं च अधिई जाया । पुणो य पलोयमाणेण दंस-णमेत्तपहयपहपरिस्समप्पसरं पवरपायवाहिट्ठियं मणोहरतरुसंडमंडियं पलोइयं पवरमुज्जाणं ।

तओ हं रम्मत्तणपलोयणक्खिक्खत्तमाणसो पविट्ठो तमुज्जाणं । तत्थ य समन्तओ असोयपायवपरिक्खत्तं पविरलकय-लीहरंतरदरदिट्ठकुमुमविडवं दिट्ठं दिणयरकरणियरविहडियपुंडरीयप्पहोहसियसोहं सत्तभूमियं पासायभवणं । दट्ठूण य वलग्गो जहक्कं सत्तभूमियासुं भूमियासुं । पेच्छामि य सियसिचओच्छाडयं मणहरमणिमयपल्लंक्कसयणीयं । दिट्ठा य तत्थ सुरविलय व्व सव्वंगमुंदरा एका पवरमहिल्ला । सा च केरिसा ?—मुहुयहुयासजतेयरासि व्व दिप्पमाणा, विज्जाहरसुंदरि-व्व परिगलियविज्जा, आलेक्खगय व्व चिंताविणिचलतणुप्पयारा । ॥ अवि य—

सरयससिर्विब[? पडिर्विब] मुहकमलया, कमलदलकंतकण्णंतगयणयणिया ।

सरसणचदाडिमीकुमुमसमअहरिया, दसणकरभञ्जलियासेसदिसिणियरिया ॥ ९७ ॥

१ ‘परिट्ठिओ जे । २ ‘वत्तु(इ)विय’ सु । ३ ‘कोडलाय’ जे । ४ ‘संवत्तणओ जे । ५ ‘गल्लम’ जे । ६ ‘णिवडिया’ सु । ७ ला । तओ सा तिहुयणतेयरासि जे । ८ ‘पगलिय’ सु । ९ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति ।

कणयमयकलसघणथोरथणहारिया, तवियतवमुणिजणाणं पि मणहारिया ।
 दिमलगंडयलसंकन्तससिविम्बिया, तवियकलहोयसिलवियडमुणियम्बिया ॥ ९८ ॥
 मुट्ठिगेज्जेण मज्जेण रेहंतिया, कसिणतणुरोमराईविरायंतिया ।
 गहिरणाहीणिहाणोवसंसोहिया, कणयमयविज्जुपुंजाभवरदेहिया ॥ ९९ ॥
 मालईमालमुकुमालभुयजुचलिया, कयलिगम्भोरु(?) व)माणोरुजुयसललिया ।
 मयणधणुकुडिलभूजुयलमुमणोहरा, अहिणवासोयपल्लवसमारुणकरा ॥ १०० ॥
 तुलियतियसिंदवहुणियरसोहग्गिया, तरुणजणिवहमणजणियमयणग्गिया ।
 णिययमुंदेरपडिभग्गरइमाणिया, अमयरससरिसलायण्णमुहखाणिया ॥ १०१ ॥
 रत्तहामरसदलचलणतलरेहिया, [.....] ।
], रुइरवरवण्णकुमुमोहकयसेहरा ॥ १०२ ॥

इयमणुचमरुवधरी पयत्तओ णिम्मिया पयावड्ढा । देवमणविम्हयकरी अह दिट्ठा बालिया एका ॥ १०३ ॥

उवसप्पिऊण पुच्छिया मए—सुंदरि ! का सि तुमं ?, को वा इमो पएसो ?, किं वा एगाणिणी ?, किं वा सोयकारणं ? । तओ तीए भणियं—महाणुभाव ! महंतो मेतीओ वइयरो, ता तुमं चेव कुणसु पसायं, साहसु जहट्टियं, को तुमं ?, कहिं च पयट्ठो ?, किं वा पओयणं ? । तओ सोऊण तीसे महुरस-विणयवयणविण्णासं समावज्जियमाणसेणावितहं भणियं मए—सुंदरि ! अहं खु पंचालाहिवड्ढो बंभणराहिवस्स तणओ बंभयत्तो णाम । तओ तव्वयणाणंतरमेव आणंदवाह-सलिलावूरियणयणजुवला हरिसवमुच्चइयचारोमंचकंचुइज्जंतदेहा सहस चिय समन्वुट्ठिया, पहरिसुप्फुल्लपसण्णवयण-मंडला य पडिया मह चलणेमुं, अइकलुणगग्गयक्खरं च रोइउं पयत्ता भणइ—

मह ललियवयणकुवलयवियसावैय ! कुमुयससहरायार ! । मह असरणाए सरणं सुंदर ! जमिहाऽआओ^१ सि तुमं ॥ १०४ ॥

णीसेसलक्खणालंकिओरुकर-चलणतणुविहाएण । सिट्ठं चिय तुह सिरिवच्छलंछणा दंसणेणऽम्ह ॥ १०५ ॥

सारीरणिमित्तेहि य फुरंतलोयण-भुयाविसेसेहिं । तह वि यं संदेहावणयणत्थमिह पुच्छिओ सि मए ॥ १०६ ॥

इय उत्तमकुलसंभव ! अमयमयाणंददिण्णसंदोह ! । णाह ! अणाहाए महं कुमार ! सागयमिहं तुज्झ ॥ १०७ ॥

तओ एवमादीणि बहुविहाणि भणिऊण रुयमाणी कारुण्णगहियहियएण समुण्णामिऊण वयणकमलं 'मा रुव्वउ'^२ ति भणमाणेण संठविया, भणिया य—सुंदरि ! का सि तुमं ?, कुओ वा ?, केण वा समाणीया ? । तओ करयलपुसिय-पप्फुल्लवयणकमला भणिउं पयत्ता—“कुमार ! अहं खु तुह माउलगस्स पुप्फुचूलराइणो धूया । तुम्हं चेव विदिण्णा विवाह-दिवसं पडिच्छमाणी अणेयमणोरहाउलिज्जमाणसा णिययघरुज्जाणदीहियापुलिणम्मि कीलमाणी देव्वहएण दड्ढविज्जा-हरेण णट्ठुम्मत्तयाहिहाणेण इहाऽऽणिया । जाव य अहं गुरु-बंधव-सहोयरसोयग्गिसंपलित्ता अलद्धपडियारा अप्पणो भागइयाइं उवाल्हमाणी चिट्ठामि ताव तुमं मम परियप्पियहिरण्णवुट्ठिविम्भमो सहस चिय समागओ दिट्ठो य मए । ता संपयं जाया 'जीवियपच्चासा, संपण्णा य चिरचितिया मणोरहा, जं तुम्हेहिं सह दंसणं जायं' । भणिया य सा मए—सुंदरि ! अह सो उण कहिं मह सत्तू ?, जेण से परियाणामि वलविसेसं । तीए भणियं—सो हु मह दिट्ठिमसहमाणो गओ एकम्मि वंसकुडंगम्मि बद्धुदणिययचलणजुयलो अहोमुहवयणमंडलो बहलधूमपाणेण विज्जं साहिउं सिद्धविज्जो य मह पाणिग्गहणं करिस्सइ, अज्जं किल से विज्जासिद्धी भविस्सइ । ऐयं च सोऊण पुप्फवतीए सिट्ठो तण्णिहणणवइयरो । सहरिसं च भणियं तीए—अज्जउत्त ! सुंदरमणुट्ठियं, जं सो दुरायारो णिहणंमुक्खणीओ । तओ सा मए गंधव्वविवाहेणं परिणीया । अहिणवसिणेहणिग्भरं च गिवसिओ तीए समयं । पमृत्तो य सुहेण ।

पहायसमयम्मि य णिसुओ मए केसिंचि दिव्वविलयाणुकारी मणहरालाओ । पुच्छिया य सा मए—सुंदरि ! कस्स उण

१ मईओ जे । २ 'वय' । ससहरायार(?) रार)सारिच्छ । असरणाए णाह । सरणं सु । ३ 'ओ त सि ॥ जे । ४ हु जे । ५ 'णप-कवा भ' जे । ६ अत्तो जे । ७ जीवियपच्चासा सु । ८ कुणिस्सइ जे । ९ एवं जे । १० 'णमणीओ जे ।

एस सवो ? । भणियं च तीए संभंताए-अज्जउत्त ! एयाओ खु तस्स तुह वेरिणो णट्टुम्मत्तयस्स भइणीओ खंड-
विस्साहाणामाओ विज्जाहरकुमारीओ तण्णिमिच्चं विवाहोक्खरणं चेत्तूण समागयाओ, ता तुम्हे ताव ओसंक्कह लहुं, जावाहं
तुह गुणसंक्कहालाववइयरेण भावमेयासिमुवलहामि, जइ सिं तुम्होवरि गुणाणुराओ भविस्सइ, तओ हं पासायस्सुवरि
रत्तंमुयपडायमुब्भिस्सांमि, अण्णहा सियपडायं ति, तं च मुणिऊण गंतव्वं तुमए । भणिया य सा मए-मुंदरि ! अल-
मलं संभमेण, किं मह इमाओ काहिंति ? । तोए भणियं-ण अणामि एयाहिंतो भयं, किंतु जो एयासिं संवंधो सहोयराइओ
णहंगणचारी भइसमूहो मा सो तुम्हाणुवरिं विरुज्झिही ।

तओ हं तच्चित्ताणुवर्त्ति कुणमाणो ठिओ विवित्तप्पएसे । गया य पुण्फवत्ती । दिट्ठा य मए णादचिरवेलाए मंद-
मंदंदोलमाणा धवलपडाय । कलिऊण संकेयाहिप्पायं सणियसणियमवक्कंतो तप्पएसाओ । पयत्तो गिरिणिउंज-
संजणियपरिस्समो वियडवणंतारालमाहिंदिउं । दिट्ठं च मए सयलमुहवणराइसंडमंडियमेक्कं महासरवरं । तं च पलोएमाण-
स्स गुरुविम्हयक्खित्तमाणसस्स चिंता मे समुप्पण्णा-अहो ! मंदबुद्धित्तणं णिणयाणं, जेण इमं मुसुरहि-सीयल-साउसलिला-
सयं मोत्तूण खारत्तणदोसदूसियम्मि अणवरयवडवाणलविलुप्पमाणललिलम्मि जलणिहिम्मि णिवडियाओ । एवं च अहं
तस्स महासरवरस्स दंसणेण वडुहन्तकोऊहलो पहरिस्समावणयणत्थं मज्जिउं पयत्तो जहाविहिं । मज्जणुत्तिणो य णाणा-
विहणेवच्छविरइयविहवेसायणगोटीणिविट्ठविहमणुयमंडलीओ णियच्छंतो संपत्तो उत्तरपच्छिमतीरलेहं ।

दिट्ठा य तत्थ मए मणहरजोव्वणावूरिज्जमाणसयलदेहावयवा एका पवरकणया । चितियं च मए-अहो ! इमम्मि
चेव जम्मे जायं मह दिव्वरुवविलयादंसणं, अहो ! मे पुण्णपरिणई, अहो ! एयावडणो विण्णाणपयसिओ, जेणेसा रुक्ख-गुणणि-
हाणमुप्पाइया । तओ अहं पि मणयं पुंलोइओ तीए सणेहणिवभरवियसंतपम्हपसराए दिट्ठीए । पुणरुत्तं णियच्छिऊण
पलोइयाइं पासाइं, लज्जिया विच संजाया । पुणरवि णिप्फंदणिहित्तलोयणप्पसरमाणंदजलभरियतरलतायं अप्पाणयं
पिव पैणामयंतीए ससेयजणियससज्झसं पुंलोइओ । पुलोइऊण पत्थिया तप्पएसाओ णिययवेडीए समयं किं पि भंतयंती ।
अहं पि अण्णओमुहं तं चेरं णियच्छमाणो गंतुं पयत्तो, जाव दिट्ठा मए तीए चेव पेसिया एका दासवेडी, तुरियपयणि-
क्खेवं समागतूणं मह समप्पेइ पवरवत्थजुवलयं कुमुम-तंबोला-डलंकाराइयं च, भेणइ य-“महाभाय ! एसा जा तुम्हेहिं
दिट्ठा महासरवरतीरम्मि तीए पेसियमिमं, भणिया य जहा ‘हला वणकिसलइए ! एयं महाणुहावं णियदंसणपणा-
मियसयलजणसुहसमूहं अम्ह तायमंतिणो मंदिरे सयणीयत्थिइं कारेसु त्ति, जहावट्ठियं च से साहमु’ । त्ति भणिऊण
सबहुमाणं तीए पसाहियालंकारिओ णागदेवामच्चमंदिरमुवणीओ । भणिओ य णाए मंती-एस तुम्ह सामिणो धूयाए
सिरिकंताए सयणणिमिच्चं पेसिओ, ता मज्जण-भोयणाइणा परमोवयारेण सगोरवमुवचरि[ज्ज]उ । त्ति भणिऊण गया
वणकिसलइया । तेण य महामचेण णियसामिसरिसोवयारेण सबहुमाणमुवचरिज्जमाणो हं तत्थेव वुत्थो ।

पहायसमयम्मि य समुग्गए सहस्सकिरणम्मि तेण मंतिणा पवरवासविलेवणाइणा समलंकिओ हं । कज्जदिसं दरि-
सयंतेण णीओ णियणरवइसमीवं । णरवइणा वि जहादंसणमेव सहसमवुट्ठिऊण सायरमवयासिओ, द्वावियं नियय-
समीवम्मि महरिहमासणं । णिविट्ठो य पढमोवविट्ठम्मि मए । कया तंबोलाइया पडिवत्ती । सणेहसोरं च भणिउं पयत्तो
एवं जहा-“महाभाय ! सोहणमणुट्ठियं तुम्हेहिं जं णियपायपंक्कहिं पत्तिक्कीकयं मेहंगणं, समुहयंदंसणेणाणंदियमम्हाण
णयणकुवल्लयजुयं, तरणिकिरणाणुयारिणा णिययलायणणियरेण तियासियं मम वयणारविंदं । अहवा—

णापुण्णभाइणो मंदिरम्मि णिहल्लियसयलदालिदा । बहुवणविहमणिसवलमणहरा पडइ वसुहारा ॥ १०८ ॥

संपाडियसयलसमीहियत्थविन्थारवड्डियाणंदं । कस्स च पुणेहि विणा पवरणिहाणं धैरमई ? ॥ १०९ ॥

अहिजाईसयलकलाकलावकलियं हिओवएसेयरं । संपडइ मंदनायाण णो सुमिच्चं कलत्तं च ॥ ११० ॥

१ खु तुह स्स । २ उवसक्कह स्स । ३ एयायं स्स । ४ ‘सुरिदणमाण’ स्स । ५ पलोइओ जे । ६ पणामंतीए जे । ७ पलोइओ ।
पलोइ जे । ८ चेव जे । ९ भणियं च स्स । १० ‘ए वासयनिमित्तं जे । ११ ‘सायरं च स्स । १२ धर(रं) एइ स्स । १३ ‘सरय जे ।

इय होइ मंदपुण्णाण णेय तुम्हारिसेहिं पुरिसेहिं । दंसणमेकस्स ताव परिचओ दूरओ चेव" ॥ १११ ॥

एवमाइयं च सायरं बहुप्पयाराइयं भणमाणस्स अइकन्ता काइ वेला, समागओ मज्झणसमओ । समं चेव णिव्व-
त्तिया भोयणविही । गिरुवियं मम वासभवणं । तत्थ द्विओ य हं भणाविओ मंतिणा एवं जहा—अम्हारिसेहिं तुम्हाणऽण्णं
विसिद्धयरं ण किं पि काउं तीरइ, ता पडिच्छइ इममम्हाण धूयं सिरिकंताहिहाणं कण्णयं । ति भणियावसाणम्मि पडि-
वण्णं मए । एवं च णेमिच्चियणिरुवियपहाणदियहम्मि जहाविहववित्थरेण वत्तं पाणिग्गहणं, सज्जियं वासभवणं । गिसण्णो
तीए समयं पवरसयणीए । अहिरमिऊण जहिच्छं पमुत्तो जहासुहं । एवमइकन्ता कइ वि वासरा ।

अण्णयां य रमियावसाणसमयम्मि पुच्छित्था नए गिरिकंता जहा—^१किं पुण पओयणमुदिसिऊण तुमं मह एकल-
वियारिणो पणामिया ? । तीए भणियं—^२अज्जउत्त ! सुव्वउ संपयं, एस अम्ह ताओ वसंतपुराहिवइणो णरसेणराइणो
पुत्तो । एस य रज्जम्मि संठिओ समाणो दरियदाइयपरिपेळिओ कंचि कारणमाकलिऊण इमं गिरिदुग्गमल्लीणो सबल-
वाहणो । अणेयदुट्ठपरिवालिओ य हंतूण गाम-णयराइयं जणियणिययपरियणविची दुग्गवलेणं बहुयरभिळ-पुल्लिंद-सवर-
परिवालिओ पल्लिं काऊण परिसंठिओ । एवमइकंतो कोइ कालो । जाया य अहं सिरिमतीए देवीए चउणं पुत्ताणमुवरि
धूया । अइकन्ता बालभावं । अतीववल्लहा पिउणो । एकया य दारारूढजोव्वणविलासा पायवडणं काउं गया । दट्ठण
भणिया हं—पुत्त ! मह विरुद्धा सयलणरवइणो, कस्स तुमं पयच्छामि ? , ता तुमं चेव एत्थ सयंवरा, जमिह पल्लीए
भदागिती विसिद्धायारं लोयणाभिरुइयं च समागयं च पेच्छसि सो मह साहेयव्वो । चि भणिऊण विसज्जिया मि ।
तओ तप्पभिइमहमणवरयं पल्लीओ गिम्मातूण महासरवरतीरदेसपरिसंठिया गयागयं पुरिसवग्गमवल्लोएमाणा चिट्ठामि
जाव तुम्हे मह मुकयकम्मपरिणइवसेण दिट्ठिगोयरमइगया । दट्ठण चित्तियं मए—संपडियं समीहियं, जइ विही अणु-
वत्तइस्सइ । चि मुणिऊण पेसिया तुह समीवं वणकिसलइया । मया वि गंतूण सिट्ठो तुह दंसणवइयो जणणीए ।
तीए वि अम्ह पिउणो । पिउणा वि अहं तुम्हाणुजणियगरुयायरं पणामिय चि । तओ उवरि तुम्हे गहियत्था" । तओ
महं तीए सिरिकंताए समयं सयलकामगुणियं विसयसुहमणुहवन्तस्स गच्छंति दियहा ।

अण्णया य सो पल्लिणाहो णिययवल्लसमुइओ गओ विसयं हंतुं । अहं पि तेणेव समं गओ कोउदळेण । पयत्ता य ते
गामे हंतुं । अहं पि परिब्भममाणो संपत्तो अग्गिमगामं । ताव य दिट्ठो मए तम्मामवाहिरासण्णकमलसरतीरम्मि गहि-
रवरवणणिउंजंतरालविणिग्गओ सहस चिय वरधणू । सो वि मं पच्चभियाणिऊण असंभावणिज्जदंसणं संभाविऊण
विमुक्कदीहधाहो अवलंबिऊण कंठभायम्मि रोइउं पयत्तो । कह कह वि संठविओ मए । पुणजायजम्म व्व गिसण्णा
वियडविडवन्तरालछायामुं । सुहणिसण्णाणं च पुच्छियं वरधणुणा—कुमार ! तया तुह तीए मया कयाए पलायणसण्णाए
पणट्ठेण तुमए किं पावियमवत्थंतरं ? तमम्हाण सौहिज्जउ गिरवसेसं ति । तओ मया जमणुहूयं तं सयलं पि साहिऊणं
पडिमणिओ वरधणू—तुमं पि साहसु जं मह विउत्तेण सुहं दुक्खं वा समणुभूयं । तओ वरधणुणा भणियं—कुमार ! सुव्वउ,
तया हं णग्गोहतणो छायामु तुमं ठवेऊण जलण्णेसणणिमित्तं पत्थिओ । दिट्ठं च मए महासरवरमेकं ।

पटुपवणपयत्तपिच्चुच्चसंचल्लवीलीविलुत्थल्लमच्छच्छडाहच्छपुच्छप्पहाराउलुव्वेल्लकल्लोलयं,
परिसरपरिसंठिबाणेयकारंदंतुडोह-संखोहसंलुदगंभीरणीरोहदीसंतमज्झद्वियाणंतजंतुप्पयारालयं ।
मुमुरुहिपरियत्तमदाणिलुबे(व्वे)ल्लकल्लोलहल्लन्तकंदोहोसट्ठगंधलुदालिमालाकउदामवट्ठंतकोलाहलारोलियं,
तडरुहणिवडंतपप्फुल्लफुल्लप्पयारुल्लसंतुडुल्लंधुयावदसंगीयझंकारपज्जुत्तपेज्जालपज्जुत्तयं ॥ ११२ ॥

अवि य—

१ 'रं भणमा' सू । २ पि कारणं काउं जे । ३ 'या रमणीयसमयम्मि जे । ४ किं पओय' सू । ५ तुम्ह नहया' सू । ६ साहि
प्पउ जे । ७ 'ण भणिओ वरधणू—तं अण्णऽणुहूयं साहसु । तेण भणियं—कुमार ! सू । ८ हस्तचिह्नद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति ।
९ लण्डकेऽस्मिन्नायवरण एकोनवारवारिश्च, द्वितीयस्मिन् पञ्चवारिश्च, तृतीयेऽष्टवारिश्च, तुल्यं च चरणे द्वाववारिश्चदक्षराणि वर्तन्त इति
विप । १० दण्डकच्छन्दोजातिविशेषरूपोऽयं दण्डकच्छन्दोविशेषो ज्ञेयः ।

पाणाविहङ्गदुमसंडमंडललीणसुवहुकारंडं । तीरद्वियकलचकाय-हंस-सारसकयालावं ॥ ११३ ॥
 पवणाइयचटुलतरंगपसरिउडामणिम्मल्लतुसारं । वियसंतसरसतामरसरेणुपिंजरियणीरोहं ॥ ११४ ॥
 कण्हा(ल्हा)रसरसकेसरपयत्तगंधागयालिहलबोलं । कल्लोलतालणुदल्लियपंडुविसखंडमंडियं ॥ ११५ ॥
 इय सयलजंतुसंताणजणियमुहसंपयं सरं सहसा । दिट्ठं जलणिहिक्खियारविम्भमं झत्ति णरणाह ! ॥ ११६ ॥
 तओ तं तरलाण(णि)लुब्बेल्लियचटुलवीलिसंवालिउच्छलंतजलतरंगसंजणियाडिण्डीरपिण्डं सलिलकीलागयवणकरिकुल-
 परिमलियपरिवियडतीरतरुवरतलं अणेयसस-पसय-मिय-वराह-रु-सरह-सम्बरसहस्सोवरिमुज्जमाणपेरन्तं दिट्ठं पल्लुसमु-
 होवमं महासरवरं । ॥ ११७ ॥

तं च पलोड्ढण 'जीविओ मि'त्ति मण्णमाणो तुम्ह णिमित्तं भरिऊण सलिलस्स णलिणिदलविणिम्मिए दोण्णि पुडए
 'अण्णणा किर पियामि'त्ति समुण्णाडिओ करयलंजली ताव य मुमरियं तुम्हाण । वितियं च मए—

'भिद्धी ! दुत्तरवसणायडम्मि पडियम्मि थंभतणयम्मि । तण्हण्हपहपरिस्समपरव्वसावयवदेहम्मि ॥ ११७ ॥
 पडणिल्लुरियमुकुमारचलणपडिभग्गमणपसरम्मि । दरियारिभयपलाणम्मि मग्गिरे अत्तणो ताणं ॥ ११८ ॥
 रे रे कयग्य ! णिग्घण ! अलज्ज ! पम्हुट्टसामिसम्माण ! । णियजीयकज्जसंजणियमुदपिवासासविण्णास ! ॥ ११९ ॥
 जं मोत्तुं गरुयपिवासवणविसंटुलविणीसहं कुमरं । इच्छसि तेणेय विणा वि जीविउं सलिलपाणेण ? ॥ १२० ॥
 इय एवं परियडिडयचित्तासंजणियसोयसंतावो । मोत्तूण सलिलपाणं विणिग्गओ सरवराहेतो ॥ १२१ ॥

गरुयद्धानसंजणियैखेयालसो य तुह समीवं जाव गंतुं पयत्तो ताव य सहस चिय सण्णद्धवद्धपरियरायारेहिं कयंतदूएहिं
 व ताडिओ भडेहिं, ददयरपयपहरगन्धिभणं च वद्धो णिदयं । 'रे रे वरधणु ! कहिं कहिं वम्भयत्तो ?' ति पुणरुत्तं भण-
 माणेहिं णीओ णिययसामिणो सयासं । सो य मं दट्टूण अम्भुट्टिऊण सरहसं 'जयउ जयउ भट्टिदाराउ' ति जयकारो(रं)
 कओ(काउं) भणिउं पयत्तो जहा-महाभाय ! अहीयं मया तुह तायस्स समीवे, भाया तुमं मम, अइं च ओलग्गिउं पैयट्टो
 कोसलविसयाहिवइं, ता साहिप्पउ कत्थ कुमारो ? । मया भणियं-ण याणामि । तओ तेण वारिज्जमाणेहिं पि ददयरं
 तेहिं ताडिओ अहं । ताडिज्जमाणेण पयपहारवियणावियज्जेण भणियं जहा-जइ अवस्सं तुम्हाण णिव्वंधो, ता कुमारो
 खइओ पुड्डिणा । तेहिं संलत्तं-दंसेहि तं पदेसं । तओ असमंजसणिहित्तपयणिकखेशो समागओ तुह दंसणगोयरावसरं ।
 'पलायसु' ति कया तुम्ह सण्णा । मया वि परिव्वायगदिण्णा पक्खित्ता वयणम्मि गुलिया । तप्पहावेण य णिमीलियं व
 लोयणजुवलयं, पणट्टो व्व चेट्टाविसेसो, 'णिरुद्ध व्व ऊसासा, णिवडिओ धरणिगले । तओ 'मओ' ति कलिऊण समु-
 जिऊण मं गया ते पुरिसा । चिरवेलाए य अवणिया मए वयणाओ गुलिया । उट्ठिओ तप्पएसाओ गवेसिउं पयत्तो
 तुम्हे । अपेच्छमाणो य ददयरं परितप्पिउं पयत्तो, कइ ?—

तुह पट्टु ! पंयपरिस्समखुहा-पिवासोहपव्ववाइलं । कुच्छियसयणा-ऽऽसण-सावया-ऽहिभयकारणं कलिउं ॥ १२२ ॥
 कइ होही ?, कं भणिही ?, को दाही तस्स भणियमेत्तेण ? । कत्थ व वसिद्धी ?, करस य णियच्छिही वयणयं मुट्टो ? ॥ १२३ ॥
 एसो पेच्छामि अहं, एस कुमारो ण, खण्णुओ एस । 'एसो सदेइ ममं' मुहा पलोएमि पासाइं ॥ १२४ ॥
 विदेयमहिजणियसंचरणमुक्कतरुपत्तमरमरासहं । 'एसो' ति तम्मुट्टो झत्ति मज्झ धेवंति णरणाइं ॥ १२५ ॥
 इय मज्झ को कहेही 'एस कुमारो' ति ?, अह 'सइं वेव । पेच्छिस्सामि' ति भमामि एवमेवं च वितंतो ॥ १२६ ॥
 एवं च तुहविओयपसरियदीहरणीसासायाससोसियसरीरो पत्तो कइ कइ वि किलेसेण एक्कं गामं । तत्थ य दिट्टो मेए
 एक्को परिव्वायओ । कयं च से अभिवायणं । तेण भणियं-वरधणू विव लक्खिज्जसि । मया भणियं-अयवं ! कीस

१ 'पिवासा' (सऽ) समीपं स्तु । २ 'व' खेयमाणसो व स्तु । ३ पयत्तो जे । ४ तुह स्तु । ५ 'जुवलयं' जे । ६ 'णिरुद्ध' लो व्व णिव ।
 स्तु । ७ ददमहं परि जे । ८ अहं, अह कुमारो जेव स्तु । ९ 'विरुद्ध' जे । १० उयति जे । ११ मया स्तु ।

मूढो सि ? । तओ तेण मह सवहे कुणमाणेण सिद्धं जहा—हं तुह तायस्स पियमित्तो वसुभागेणाम, ता वीसत्थो होऊण साह 'कुमारो कत्थ चट्टइ ?' ति । मया वि तस्स सच्चमवितहं साहियं । तओ सो विसायसामलियमुहमंडलो मह सोहिउं पयत्तो जहा—पलाणो अमच्चधणु, तुह जणणी य कोसलाहिवइणा पाणवाडए पक्खित्ता । ऐयं चाहमसणिपडणाइरित्तं तस्स वयणं सोऊण णिव्वचित्तियइंदूसवो व्व इंदुओ धस ति वसुहायलम्मि णिवडिओ । समासत्थस्स य तुह विरहजलणजालाक[व]लियंगस्स महाखण खारो व्व, मालणिवडियरस पायप्पहारो व्व, समरंगणपाडियमुद्धस्स ऊसासउ व्व, वियम्मिओ जणणि-जणयावमाणणुम्भवो सोयपयरिसो । भणिओ हं वसुभागेण—वरधणु ! अलं परिदेविण, ण कायव्वो खेओ, ण परितप्पियव्वं तुमए, कस्स वा विसमदसापरिणामो ण होइ ? । मया भणियं—महाभाय ! किं मम परितप्पिण कीरिही, कह ?—

जस्स परिओस-रोसा वि णिप्फला जंति जंतुणो भुवणे । उच्छुपसूयस्स व णिप्फलेण किं तस्स जम्मेण ? ॥ १२७ ॥

तओ काऊणं मह हेउ-उँयाहरणाईहि समासासणं, दाऊण बहुविहे गुलियाजोगे तुम्हाणमण्णेसंणत्थं पेसिओ म्हि ति । अहं पुण परिव्वायगावेसं काऊण कंप्पिल्लपुरमइगओ । तत्थ य मए सव्वलोयस्स अहिगमणीयं अवलंबियं कावालियत्तणं ।

॥^१ केरिसं च ?—

मार्गदर्शक — आचार्य श्री तुषिभित्तमह श्री फाटन

णरसिरकवालमाला-मयूरपिच्छुद्धचिंधयाहरणं । उम्भडविचित्तचीरीपच्छाडयवच्छवीभच्छं ॥ १२८ ॥

बहुविहविहंगतणुपिच्छलंछणुच्चइयसिरिकयामेलं । करयलताडियक [— — —] यडमरुयारावभीसणयं ॥ १२९ ॥

मयवसपहोलिरायंवमउलि[य]व्वत्ततारयाणयणं । मग्गाणुलमाकलकलियकायलीकोमलग्गीयं ॥ १३० ॥

इय सयललोयलोयण-भणाण संजणियचोच्च-माहण्यं । अवलम्बिज्जइ कावालियत्तणं किं पि कलिऊण ॥ १३१ ॥

एवं च जहकमं परिव्वमन्तो गओ पाणवाडयं, 'भिच्छाणिमित्तं परिव्वमिउं वराघरिं पयत्तो । तओ तेहिं पाणेहिं भयवं ! किमेयं ?' ति पुच्छिण मए संलत्तं—एसो मायंगीए भयवईए विजाए साहणणिमित्तं कप्पो ति ।

एवं चे तत्थाणवरयं वियरमाणस्स संजाओ एको आरक्खियपुत्तो मह मित्तो । सो य मए अण्णादिणम्मि भणिओ—गच्छ वरधणुजणणिं भण जहा—तुह सुयस्स पियमित्तेण कुंडिल्लणामेण पायवंदणं संदिट्ठं, भणियव्वा य—ण चित्तखेओ कायव्वो, अइरा चेय किलेसोवसमो भविस्सइ ति । साहियं च तेण गंतूण जं मया संदिट्ठं । वीयदिणम्मि य सइं चिय गओ हं । दिट्ठा मए । पणमिऊण अंतोणिहित्तगुलियं पणामियं से माहुल्लिंगं । अवगओ तण्णदेसाओ । खइयं च तं तीए माहुल्लिंगं । तप्पहावओ णिवडिया धरणिवट्ठे, जाया य णिच्चेट्ठा, पणट्ठा ऊसासाइणो । तओ तेहिं गंतूण सिद्धं राइणो जहा—अमच्चपणइणी लोयन्तरमइगया । राइणा भणियं—करेह सकारं ति । पेसिया णिययपुरिसा । दिट्ठा य तेहिं । काउमाहत्तं रायसासणं । भणिया य ते मए—जइ इमाए वेलाए कुणह सकारं तओ तुम्हाणं राइणो य ण सोहणं । ति मुणिकुण पेसिया रायपुरिसा मायंगमयहरेण । गणमु य तेमु भणिओ मया णिययमित्तो जहा—किण्णचउइसी इमा, अवसरेणेव संपडिया इमा महामच्चपणइणी सयलसपण्णलक्खणा, जइ तुमं सहायकिच्चं कुणसि ता करेमि अहं मंतसाहणं, सिद्धे य मंते जमेवमेकवत्थुं चित्तिज्जइ तमेव संपडइ । तओ मित्तेण मे रहस्सम्मि जहावट्ठियं भणिओ पाणमयहरो । पडिस्सुयमणेणं । ताव य समागया रयणी । णीणिया देवेहिं पि तेहिं मह जणणी । सरिसा चेय गया विवित्तं दूरमेकं दिसाभायं । तओ मए अलियाडम्बरं काऊण समालिहियं मंडलं, अचिया वलि-कुंमुमाईहिं दिसावाला, ठाविया दक्खिणसिरा, पूइया चलणेमुं, पज्जालिओ जलणो, समंतजायं च पक्खित्ताओ आहुईओ, निव्वत्तो चरु । भणिया य दुवग्गा वि ते मए जहा गेण्हिऊण चरु कुमुमाईं च वचह णयरवासिदेवयाणं माउयाणं च काऊण अचणं समागच्छह ति । गया य ते ।

१ साहियं जे । २ एव सु । ३ 'णमुद्धस्स ऊ' सु । 'णपाडियस्स ऊ' जे । ४ 'उदाहरणेहिं सु । ५ 'सणे पे' सु । ६ हस्तद्वया-
न्तरेण पाठो जेतोसके नास्ति । ७ मय परिव्वमं जे । ८ भिच्छाणिं जे । ९ च ते पाणवाडयं पियं जे । १० दुवग्गेहिं जे । ११
'कुमुमेहिं सु ।

तओ गणसु तेसु । मया अण्णा विदिण्णा से गुलिया । तयणुहावओ य सुत्तविउद्ध व्व समुट्ठिया वियंभमाणा ।
णिवडिओ हं चलणजुवलए । जाणाविओ अण्णा । पयत्ता रोविउं । मए भणियं—ण एस कालो रोवियव्वस्स, एहि लहुं
अव्वकमामो त्ति । गयाणि य तुरियपयणिकखेवं उत्तराभिमुहं जौयणमेत्तं भूमिभायं । पत्ताणि य कच्छाऽहिहाणं गामं ।
तत्थ य मह पिउणो वयंसो देवस्सम्मो णाम बंभणो । तस्स य गेहम्मि ठविऊण समासत्थाए सिट्ठो कुमार ! तुहसंतिओ
वुत्तन्तो । सोऊण ये मए णिरुंभमाणा वि बहलंसुसलिलपडिरुद्धलोयणप्पसरा पलाववहुलं च परिदेविउं पयत्ता ।
कह ?—

पप्फुल्लकमलकोमलदलज्जलालोयल्लियमुहंविम्वा ! । अहिणवविसट्ठकंदोदपत्तकंतिहणयणजुया ! ॥ १३२ ॥
मणहरलायणाऽऽउण्णविमलगंडयलमंडलाहरणा ! । चरियाणुदय ! मुदय ! कुमार ! मुकुमारचलणयला ! ॥ १३३ ॥
कीलाए बाहिविणिग्गयस्स परिदेविरी दहं जाऽऽसि । स चिय जणणी मरणस्स कारणं पेच्छ विहिचरियं ॥ १३४ ॥
मुकुमालफंसमणोहरम्मि वसिऊण महरिहे सयणे । कह वोच्छिसि कटिणकुसारसकरिहे महीवट्ठे ? ॥ १३५ ॥
कं भणिहिसि तण्हण्डामिलाणदेहो लुहापरिस्संतो । वरधणुविरहे दीहरपवासदुक्खाण मज्झगओ ॥ १३६ ॥
बालत्तणम्मि तुह चेलिय-कीलियव्वाइं संभरेऊण । सहस त्ति जं ण फुट्ठइ हिययं तं णूण वज्जमयं ॥ १३७ ॥
सरिऊण अत्तणो पाणवाडयावासदासभावत्तं । अप्पाणो वि ण रोयइ किं पुण मह भोयणं भोत्तुं ॥ १३८ ॥
इय चंडालणिवासो धणुणिण्णासो ण मे तहा डहइ । जह भरिऊण पवासं कुमार ! बहुसो तुहं हिययं ॥ १३९ ॥
तओ सा एवं विप्पलावे कुणमाणी कह कह वि समासत्थीकया । भणिओ य मए देवस्सम्मो—एसा मह जणणी 'तुह
णिकखेवो' त्ति सोहणं दट्ठवा, जावाहमागच्छामि । एवं च तेण पडिवण्णं । तओ हं काऊण जणणीए पणामं णिग्गओ
तप्पएसाओ । परिब्भमंतो समागओ इहइ । जायं च तुमए सह मह दंसणं ति ।

एवं च वीसंभणिब्भरं मंतयंताण अइकंता काइ वेला । ताव य समागओ एको मणूसो गामार्हितो, भणिउं च पयत्तो—
“महाभाय ! ण कत्थइ हिंडियव्वं तुम्हेहिं, जेण तुम्हाणं समानरूव-वओविसेसं पडे लिहिऊण पुरिसजुवलमाणीयं कोसला-
हिवइणो निउत्तपुरिसेहिं । दंसिऊण य भणियं तेहिं—एवंविहसूविणो एत्थ दोणिण पुरिसा समागय त्ति । एवं च पेच्छि-
ऊण समागओ तयंतियाओ अहं । दिट्ठा य तव्विहरूवोवलक्खिवा तुम्हे । संपयं जं वो अहिमयं तं कुणह ” । त्ति भणिऊण
विगए तम्मि दो वि अम्हे वणगइणंतंरालेण विवलायमाणा समागया कोसंविं ।

तत्थ य णंगरवाहिरुज्जाणम्मि दिट्ठं दोहं सेट्ठिसुयाणं सागरदत्त-बुद्धिलणामाणं पयत्तं कुक्कुडवारं । पणीकाऊण
सवसहस्सं संपलगं कुक्कुडजुज्झं । पहओ सागरदत्तकुक्कुडेणं बुद्धिलकुक्कुडो । पुणो बुद्धिलकुक्कुडेण सागरदत्त-
कुक्कुडो पहओ, भग्गो य पराहुत्तं सागरदत्तकुक्कुडो, ण याहिमुहं कीरमाणो वि समदिलसइ जुज्झिउं । तं च
णिप्पडिमुहं दट्ठण भणिओ मए सागरदत्तो—भो ! कीस पुण एसो मुजाई वि भग्गो कुक्कुडो, ता पेच्छामि णं जइण
कुप्पह तुम्हे । तओ सागरदत्तेण भणियं—भो महाभाय ! पेच्छ, ण य मह एत्थ दव्वलोहो, किंतु अहिमाणेमेत्थावरज्झइ ।
एत्थावसरम्मि य पलोइओ वरधणुणा बुद्धिलकुक्कुडो । दिट्ठा य चलणेसु णिवट्ठा लोहमुई । लक्खियं च बुद्धिलेणं
णिहूयं । तेण य पडिवण्णं वरधणुणो अदलक्खं । अणुवलक्खं च साहिओ एस वइयरो मह वरधणुणा । तओ मया
बुद्धिलकुक्कुडस्स कडिहऊण मुई भेडिओ सागरदत्तकुक्कुडस्स । पराजिओ तेणं । परितुट्ठो सागरदत्तो । पप्फुल्लव-
यणपंकओ 'एह अम्ह गेहं गच्छामो' त्ति भणिऊण अम्हे वलइऊण “संदणवरम्मि पयत्तो णिययवरहुत्तं सायरदत्तो, पविट्ठो”
णयर्हि ।

अम्हे हि कोउहल्लुल्लसन्तदिट्ठिपसरा पलोएमाणा णयग्गिवाहिणोव[वण]मणहरपरिसरप्पएसे, णियच्छमाणा पायाल-
मूलावल्लमापरिहाविसेसं धवलकर(वि)मीसउवलक्खियं चेतप(फ)णामंडलोयमं पायारपरिवेसं, अवहोवासावसंतज्झंतवडु-
लचामरं[पत्ता]गोउरदारं । पविसप्राणेहि य णिसुओ खरमारुयाहयुच्छलिपजलणिहिस्स वमहंतो जणकलयलारवो । पेच्छ-

१ य मे णिरुंभमाणा जे । २ 'हविष' जे । ३ 'तवयण' जे । ४ सोत्तिवसि सू । ५ चलणकी जे । ६ तुमे सू । ७ तुम्हे
सं सू । ८ 'तराले विव' सू । ९ णयग्गिवाहाटि सू । १० तुप्पमे जे । ११ 'जमेव [ए]त्था' सू । १२ 'यं चैव पडि' सू । १३ सुह
भिडिओ जे । १४ एहि जे । १५ संदवामेम् सू । १६ 'हो नयर' । गओ निययभववं । समाट्ठो ण तेण निययपुत्तिओ जे ।

माणा [य] सरयम्भविम्भमुत्तुंगधवलभवणोवसोदियं पउरयरजणसमूहोवरुद्धणिग्गम-पवेसं तिय-चउक-चच्चरोयरपयत्तपेच्छण-यमिलियजणसमूहं मइरामयखल्लियविलासिणिचलणणेउरारावमिलन्तइंसउलं सइपयत्तसवाणंदविरइयतूररवावरियसवणविवरे पविट्ठा सागरदत्तभवणं । समाइट्ठो य तेण णिययपुरिसो जहा-दंसेमु एयाण महाणुहावाणं वासभवणं । णीया य तेण अम्हे सहरिसं । दंसियं च मणहरसेज्जा-ऽऽसणोवयरणसंपुण्णमावासभवणं । 'एत्थ णिवसह' ति भणिऊण गए तम्मि तओ अहमच्चंतरमणीयत्तणओ पवड्ढमाणकोउहलो पुलोइउं पयत्तो समचउरंससंठाणं कयवालिबिरइयेदयालयलं(?) मरगयम-यमयरमुहोवलक्खियपणालणिवहं बालकयलीहरन्तट्टियलयामंडवपरिखित्तभवणोववणं घरदीहियासंचरंतभवणकलहंसकय-कलरवं भवणवाचियासमुग्गयकुसुमतुरुपरिमल्लोणरुट्ठाऽल्लिमुहलियं [वासभवणं] । ठिओ एकं मुहुत्तंरं । ताव य समागंतूण भणइ एगो सायरदत्तपेसिओ पुरिसो जहा-उट्टेह, मज्जण-भोयणाइयं ठिइं णिव्वत्तह ति । तओ तस्स साय-रदत्तस्स पियं कुणमाणेहिं कयं सव्वं पि करणीयं । एवं चै तस्स पीतिपुरस्सरमुवचरन्तस्स तण्णेहाणुरायपडिबद्धा ठिया कइवयदिणाणि ।

अणया य बुद्धिलपेसिओ दासचेडो सैमुट्टवेऊण वरधणुं विवित्तम्मि किं पि भणेऊण गओ । तम्मि य गए वरधणुणा मज्झ साहियं जहा-जं तं मह बुद्धिलेण अदलक्खं पडिवण्णं तप्पवेसणत्थं चत्तालीससहस्सीओ हारो एयस्स हत्ये पेसिओ । दंसिओ उग्घाडेऊण करंडयं पुलोइओ मए । तं च पलोयमाणेण दिट्ठो मए वंभयत्तणामंकिओ लेहो । तं च दट्ठण मए भणियं-कस्सेसो लेहो ? । वरधणुणा भणियं-को जानइ ? , वहवे खलु वंभयत्तणामोवलक्खिया पुरिसा भवन्ति, किमेत्थ चोज्जं ? ।

एवं च जाव परोप्परमालावो वट्ठइ ताव तिपुंडेमंडियतणु समागया वच्छा णाम परिव्वाइया । अक्खय-कुसुमाइयं च पक्खिबिऊण उत्तिमंगम्मि 'पुत्तय ! वाससहस्सं जीवह' ति भणन्तीए एकन्तम्मि वाहित्तो वरधणू । तेण य समं मंतिऊण किं पि पडिगयाए पुच्छिओ मए वरधणू जहा-किमेसा जंपइ ? ति । वरधणुणा भणियं-"एयाए इमं संलत्तं जहा-जो सो तुम्हाण बुद्धिलेण रयणकरंडयम्मि हारो पेसिओ तेण सह लेहो समागओ तमोप्पह ति । मया भणियं-एसो तु वंभयत्तरायनामंकिओ दीसइ, तां साहइ अनुवरोहेण 'को सो वंभयत्तो राय ?' ति । तीए भणियं-वच्छ ! सुव्वउ, किंतु ण तए कस्सइ साहियव्वं । अत्थि इहेव णयरीए सेट्ठिधूयां रयणवती णाम कण्णया । केरिसा य ?—

सुसिलिट्ठसंगयंगुलिदलाऽऽविहावियसिराविहाविहं । उव्वहमाणी सुसिलट्टमुण्णयं गूढचलणजुयं ॥ १४० ॥
राओ लायण्णऽमल(ले) तणुम्मि तीसे ण लद्धसंठाणो । संलग्गो पयजुवलम्मि बाल(पाय)सेवाहिलासो व्व ॥ १४१ ॥
मासलनिगूढदडगुण्फजायसुकुमारसुंदरायारं । अणलक्खियरोमालक्खपिण्डियं जंघियाजुवलं ॥ १४२ ॥
अण्णोणसंगयामूलमिलियथोरोरुवित्थयणियम्बं । मणहरसहावगंभीरणाहिपरिमंडलावत्तं ॥ १४३ ॥
वेल्हलवाहुलइयावलम्बिकरपल्लवाऽऽव्व(व)लावयवं । सुपसत्थतिलेहाहरणहारिवरकंधरद्धंतं ॥ १४४ ॥
वरणयरिं च सुवित्थिण्णदीहरच्छंजणुज्जलालोयं । अप्पडिमदंतसोहोवहसियं वणकणेरु व्व ॥ १४५ ॥
मुहुयहुयासणडज्झंतहव्वपडिबद्धधूमवडलं व । उव्वहमाणी अंसावलम्बि यणचिहु[र]पव्वभारं ॥ १४६ ॥
णिम्मलमालयललुलन्तचटुलपरिघोलिरालयद्धन्तं । संपुण्णगंडमंडलमणोहरुम्मिल्लमुहसोहं ॥ १४७ ॥
सियतलणसिचयसंजणियकंचुउच्छइयसिहिणपरिणाहं । ससिलेह-पवरधवल्लभसन्ततीपिहियपरिवेसं ॥ १४८ ॥
इय चक्कावल्लिपरियलियकंधरं वयणयं समुव्वहइ । सेविज्जंतं ससिसंकिरोहिणीपरियणेणं व ॥ १४९ ॥

सा य रयणवती आवालभावाओ चेव मया समं जणियवेसंभसव्भावाणिज्जरा रहस्सकहापरायणा चिट्ठइ । सव्वस्स य णियपरियणस्स मज्झम्मि मं चेव वल्लहं मण्णमाणा अहिरमइ संकहासुं । अणया य णाइचिरदिणगयाए दिट्ठा मए किं पि हिययरायमत्थं ज्ञायमाणा पवरपल्लं कियापल्लत्थतणुलया एककरकिसलयपेरासुसियसवणमंजरी वामसुओवहाणीकय-वयणमंडला अणिमिसोवलक्खिज्जमाणयणकुवलया पुरओ संकप्पलिहियं पिव पेच्छमाणा किं पि हिययरायमत्थं ज्ञाय-माणी आलेक्खलिहिय व्व संठिया । तं च तहाविहं अणुहूयमवत्थंतरं "तीसे दट्ठण कंपमाणहियैया गया इ तीए समीवं । भणिया य मए-पुत्ति रयणवइ किं चित्तेसि ? ति । तओ तीसे परियणेण मह साहियं-अज्ज बहुदिणाणि

१ 'ओ पलोइतो' तं विवाहरामभवणं ठिओ मुहुत्तंरं । ताव य जे । २ च पडिणिणुवयरेवमाणा तण्णेहा' जे ! ३ समुट्ठावे' जे । ४ पुल्लओ जे । ५ 'इमंविद्या च' जे । ६ मया सु । ७ 'करंडम्मि सु । ८ ती जे । ९ 'या सयलगुणमणोववेया रह व्व रूप-सोहम्प-सहवेदि रयणवइ णाम । सा य आवालभावाओ जे, (१४९ गाथानन्तरम्) । १० 'परिसुसियसमण' सु । ११ तीए जे । १२ 'हियैया सु ।

वट्टेति, णालवइ सहियणं, ण वाहरइ चिरपरिचिणं पंजरसुण, ण चारेइ भवणकलहंसणिवहे, ण परिन्ममइ भवणुज्जाणपायवेसं,
 ण मज्जइ घरदीहियासु, णालिहइ चिचवट्टिपारि, ण संजणइ पत्तच्छेज्जं, ण बहुमण्णए आहरणविसेसं, णो कुणइ वीणा-
 विणोयं, णोहिणंदइ सरीरट्टिइं, णाहारमभिलसइ चि, केवलंमंतोणिरुम्भमाणुव्वेवणीसासणिहित्तसूइयावेया थलगयमच्छ-
 त्यल्लिय व्व तल्लुव्वेल्लं कुणमाणा अम्हाण मणुव्वेवमावहइ । तओ मए भणिया-पुत्ति !

कीस उणो तुम्ह(इ) मुहकमलपरिमल्लणीपेल्लियालिउला । पसरंति गरुयपरियावसंसिणो दीहणीसासा ? ॥ १५० ॥

एवं कीस वियंभियहिययावेउल्लसंतसेउल्लं । वयणं मिलाणलायण्णकंतिपसरं समुव्वहसि ? ॥ १५१ ॥

परिमंदमारुउव्वेल्लचट्टुल्लचूयग्गपल्लवालोलं । किं दीहरसासाऽऽयासधूसरं वहसि अहरदलं ? ॥ १५२ ॥

एयं लसंततवणिज्जपिंजरप्पहविहाचियकवलं । पुलयविमुक्कमणि(? णी) कणयकुंडली(लं) कीस कण्णजुयं ? ॥ १५३ ॥

परियलियमुइ[ल]मणियाणुरावसंवलियकंठपरिणाहो । णारुइ कीस रमणो व्व सुयणु ! थणमंडलो(ले) हारो ? ॥ १५४ ॥

कीस मुहाऽऽवलणुव(व)त्तणीमहोमुकसिदिल्लडहाइं । अविलक्खपरित्ताणाइं सुयणु ! सीयंति अंगाइं ॥ १५५ ॥

परियणपुरओ सुंदरि ! पलावलज्जावियाए तुह कीस । जायंति तुलियदरमलियकमलसोहाइं हसियाइं ? ॥ १५६ ॥

इय सुयणु ! साह मह सयल [? णियय] वुत्तंतमचित्तं कल्लिउं ।

सुहिहिययम्मि विरित्तं होइ दुहं स(मु)यणु ! सुहवोज्जं ॥ १५७ ॥

एवं च बहुप्पयारं भण्णमाणा वि ण किंचि देइ पडिसंलावं, तहेव चिट्ठइ । तओ मए करयलेण परामुसिऊणमुत्ति-
 मंगं, पुसिऊण सेयसलिल्लोल्लं वयणणल्लिणं भणिया य-पुत्ति ! किमेयं जोगिणि व्व जोगम्भासरया चित्तेसि ? । सा वि
 हु असाहणीयमत्तणो वियारमुवलक्खिऊण लज्जोणयवयणमंडला ईसीसि विहैसिऊण णिवडिया मह उच्छंगे । तओ
 मया णियपाणिपल्लवेण परामुसिऊण अंसप्पएसे सामपुव्वयं पुच्छिज्जमाणी लज्जापरव्वसत्तणओ जाहे ण किंचिं समुल्ल-
 वइ ताहे तीए चेव बालसही पियंगुलया णाम छाया व्व खणं पि पासाओ णोवरमइ वीयं पिव हियवयं, तीए भणियं-
 भयवइ ! एसा खु लज्जापरव्वसत्तणओ ण तरइ साहिउं, अहं तुह साहामि-अत्थि इओ य अतीयकइवयदिणम्मि इमीए
 भाउयस्स बुद्धिलसेट्ठिणो सागरदत्तसेट्ठिणा समं सयसहस्सपणियं कुक्कुडवारं । तत्थ पेच्छियव्वयकोउहल्लत्तणओ
 गयाए दिट्ठो अमरकुमरो व्व मणोहरंतणू, मयरकेउ व्व जणियमयणपसरो, मयलंछणो व्व संजणियजणमणांदो,
 मयरायरो व्व णिव्वडियसिरिवच्छासओ, वणसमओ व्व णिव्ववियमहियलो, सरयसमओ व्व वियसावियकमलायरो,
 हेमंतसमओ व्व परिमलियसयलसासो, सांसरसमओ व्व संकोडियवेरिवयणकमलो, वसंतमासो व्व रमणीयदंसणिज्जो,
 णिदाहसमओ व्व संतावियधरणिहरो एको पवरजुवाणो । सो य अणिमिसलोयणाए चिरं पलोइओ । तप्पभिइं किं पि
 ज्ञायमाणी ण कीलइ अंदोलण, ण कुणइ संगीययं, दीहरपरिस्समणीसह व्व सयणीयम्मि मुयइ अत्ताणयं, परिमंदचंद-
 णदाहिं पि परितप्पए, कमलदल्लिका वि मुच्छमावहइ(इ), दरफुरंताहरपुडा रोमंचकंचुचइयबाहुलइया सेयसलिल्लग-
 लियंगारायरंजियपच्छयणवडा विउज्झए, णिदाविरामम्मि वि कह कह वि, आहासिया वि [ण] पडिसंलावं देइ । तं च
 मे सोऊण लक्खिओ से मयणवियारो, भणिया य सा मए बहुप्पयारं । तओ कह कह वि सव्भावमुव्वगया, भणइ य-
 भयवइ ! तुमं मह जणणी, अहवा पहाणसही, अहवा इट्ठदेवयं, तं किं पि णत्थि जं ण होहिसि चि, ता किं तुम्ह वि
 अकहणीयमत्थि ?, जो इमाए पियंगुलयाए सिट्ठो सो मह विमुक्ककुमुमचावो व्व कुमुमाउहो सहसा हिययमइगओ, किं
 बहुणा ?, जइ तं कइवयदिणम्भितरम्मि ण संजोएसि ता अवस्समहमप्पाणयं साहारिउं ण पारेमि चि । एयमायणिऊण
 भणिया सा मए जहा-वच्छे ! धीरा होहि, तहाऽणुट्टिस्सं जहा तुह समीहियं संपजिस्सइ । तओ सा पढमजलविंदु-
 पव्वालिय व्व वसुमती निव्वुया संजाया । अतीयदिणम्मि य साहियं मए तीए जहा-दिट्ठो मए वम्भयत्तो । एय-

१ णाऽऽणंदइ सु । २ केवलं किं पि ज्ञायमाणा चिट्ठइ ति । तओ मए सकलं पि सहोह कदिये वइयरं पच्चुत्तरंतीए पुच्छिया जाव ण
 पडिलावं देइ तहेव चिट्ठइ ति । तओ करयलेण परामुसिऊणुत्तिमंगं, पुत्तिं जे, (१५७ गाथानन्तरम्) । ३ विहरिऊण जे । ४ "चि उल्लवइ सु ।

५ "तणू एको पवरजुवाणो । तप्पभिइं चेय तग्गवमणा अणाविक्खणीयमवत्थारमणुहवती चिट्ठइ ति । एवं च मए सोऊण लक्खिओ से मयणवि-
 यारो । तहाविहवयणविण्णासेण य भयंतीए कडाविया सकलं पि वियवाहिप्पियं । भणिया य सा मए जहा-वच्छे ! धीरा होहि, तहा" जे ।

६ मया सु ।

मायणिऊण य पच्चुज्जीवियं पिव अत्ताणयं मण्णमाणा पप्फुल्लवयणकमला भणिउं पयत्ता-भयवड् ! तुम्ह पसाएण सव्वं सुंदरं भविस्सइ, किंतु तस्स विस्सांसणणिमित्तमेयं हारं रयणकैरंडयम्मि पक्खिविऊण पेसिहि, इमं च वग्गमयत्त-णामंक्रियं लेहं ति । अणुद्वियं च तं तहा कैलं मए' । ता महाभाग ! एसो लेहवड्यरो । मए समप्पिओ तीए पडिलेहो' ।

एयं च वरधणुणा साहियं गिसामिऊण अदिट्ठाए वि रयणवतीए पयट्ठिओ तीए उवरिं दंसणाहिलासो, पयत्तं हिययम्मि कोऊहलं, वियम्मिओ मयणसंतावो । तहंसणसमागमोवायमण्णेसमाणस्स य गयाणि कइयदिणाणि । णवरि य अण्णदिणम्मि समागओ वरधणू संभंतो बाहिराओ, भणिउं च पयत्तो जहा-कुमार ! इहणयरिसामिणो कोसलाहिवेण अम्हाण गवेसणाणिमित्तं पेसिया पच्चइयपुरिसा, पारद्धो य इमिणा उवकमो, पयत्तो णयरीए हलहलारवो । मुणिऊण एयं वड्यरं सायरदत्तेण गोविया भूमिहरयम्मि अम्हे । समागया रयणी । भणिओ मए सागरदत्तो जहा-तहा कुणसु जहा अम्हे अवकमामो । एयं चाऽऽयणिऊण पणामिओ णेण सयलपहरणा-ऽऽवरणाइपज्जुत्तो पवरसंदणो । समारुहिऊण य तत्थ अम्हे विणिग्गया ससिणेइं तेणाणुगम्ममाणा णयरीओ । गया येवं भूमिभागं । अणिच्छमाणं पिकह कह वि णिव्व-त्तिऊण सागरदत्तं पयट्ठा अम्हे । णयरि[वाहिरि]यज्जक्खा[य]यणुज्जाणपायवन्तरालपरिसंठियमुपडिपुण्णाण्यपहरणविसेस-रहवराहिट्ठिया दिट्ठा कुमुमाउहविरहिया रइ व्व एका पवरमहिला । तओ तीए सायरमब्भुट्ठिऊण भणियं-किमेत्तियाओ वेत्ताओ तुम्हे समागय ? ति । तमायणिऊण मए भणियं-सुंदरि ! के उणो अम्हे ? । तीए भणियं-सामि ! तुम्हे खु वग्गमयत्त-वरधणुणो । मया भणियं-कहमेवमवगयं तुमए ? । तीए भणियं-“जइ एवं ता अवहिण सोंयेव्वं,

आसि इहेव णयरीए तुलियधणवईधणसमुदओ धणपवरो णाम सेट्ठी । तस्स य रयणसंचया णामं पणइणी । जाया य "तीए अइमट्ठपुत्ताण उवरिं वल्लहा जणणि-जणयाणं । अइकंता वालत्तणाओ । अण्णया य विग्गमेककुलहरे सयल-जगाहिलसणीयम्मि संपत्ते जोव्वणे अपरितूसमाणा णिययकुल-रूव-विहवुत्तमेसुं पुरिसविसेसेसुं अचन्तरूव-सोइग्ग-सैत्तसंपण-पुरिसमिच्छमाणी पयत्ता इं बहुजणसंपाडयजहासमीहियवरप्पयाणं एयं पवरजक्खमारुहिउं । अण्णया य गरुयाराहणपरि-तोसिएण पच्चरुलं चेव भणिय म्हि भववया जक्खेण जहा-वच्छे ! अलं विज्जिएण, अइरा चेव मज्झ वयणाणुहावओ तिसमुदपज्जंतपुहतिपती तुह भत्ता भविस्सइ । पुणो मया भणियं-भयवं ! कइं पुण सो मैए मुणेयव्वो ? । तेण भणियं-पयत्ते बुद्धिल-सागरदत्ताण कुक्कुडवारे जो समागच्छिही अण्णसरिसागिई सिरिवच्छभूसियवच्छत्थलो सयललक्खणो-व्वेओ पहाणेकणियसहायाहिट्ठिओ सो तुह पइ ति मंतव्वो, सहियायणपासम्मि पडिच्छमाणीए य तुह तेण समं पढमं दंसणं भविस्सइ ति ।

ता पवरजक्खवयणेण लक्खियेालक्खलक्खणावास ! । पहु वंभयत्त ! सिरिवच्छलंछणयवियवच्छयल ! ॥१५८॥
तुह पहु ! पैउत्तिपायडणमीयमगसाए कस्सा ण सिट्ठं । जेण सैंइ चिय तेणेवमुच्चसे छट्ठिउं लज्जं ॥ १५९ ॥
तुम्हाणुवायवड्ढंतमयणजल्लं ममं कलेऊण । णिव्ववमु णिययमुहसंगसिसिरसलिलेण णरणाह ! ॥१६०॥
इय किं बहुणा ? , ण हु एस अवसतो दयजंपियव्वानं । मोत्तुं पहुत्तणं भणसि ति जं तं ण लहुयत्तं" ॥१६१॥

"एयं च समायणिऊण तीए वयणं वियंभियाणुवायपसरमब्भुवगयं मया । समारुद्धो तीए सह रहवरं । पुच्छिया य सा मए-कुओहुत्तं गंतव्वं ? । रयणवतीए भणियं-अत्थि भगवापुरम्मि मह पिउणो कणिट्ठमाया धेणवद्धो णाम सेट्ठी, सो ये तुम्हऽम्हाण मुणियवड्यरो अवस्समागमणं अहिलसइ, ता ताव तत्थ गमणं कीरउ, उत्तरकालम्मि पुणो जहिच्छा तुम्हाण । तओ रयणवईवयणेण पयट्ठो तत्तोमुहं । ठिओ सारहिकजम्मि वरधणु । गामाणुगामं च गच्छमाणा णिग्गया कोसंबीजगवयाओ । पत्ता य णिविडगिरिक्कुडसंकडिलं महाडइं । तत्थ य "कंदय-सुकंदयाहिहाणा दुवं चोर-सेणावडणो । ते य दट्ठण रयण-कणयणियरोव्हसियं रहवरं अप्पणिवारा य वरजुवईसमणिया अम्हे 'हेलासज्ज' ति कलिऊण पयत्ता अभिद्विउं, पयत्ता पहरिउं, कइं ?—

१ जत्ताणं सू । २ विस्ससणं जे । ३ 'करडम्मि' सू । ४ कळे मवा जे । ५ महाणुहाव जे । ६ एवं सू । ७ 'वक्खियणुजा' सू । ८ पुण सू । ९ होयव्व सू । १० 'न परिणी जे । ११ तीमे सू । १२ 'मयसंपुण्ण' जे । १३ मण सू । १४ 'दलकुडवारे जे । १५ 'या लक्खणाण आवास' सू । १६ पवति' जे । १७ सम जे । १८ एवं जे । १९ भयसत्थवाहो णाम सू । २० हु जे । २१ कवय-सुयव्वया' जे ।

दद्वोट्टभीमफुडभिउडिभंगभंगुरियभालभंगिछा । ‘हण हण हण’ चि गण्भसदपम्मुकहकरवा ॥ १६२ ॥

आयण्णाकडिदयमुक्ककटिणगुणघायघडियटंकारा । वित्थरियपउरणाराय-मल्ल-वावल्लसंघाया ॥ १६३ ॥

हेलाए चिय मुक्कदयंद-चका-ऽसिछिणवाणोहा । पम्मुकधीरसुहडाहिमाणणिहसा खणे भग्मा ॥ १६४ ॥

इय भंजिऊण पडिभग्माऽणेयभडमच्छरं पि पउरवलं । रहसेण णिसण्णो संदणम्मि सकलत्त-मित्तो हं ॥ १६५ ॥

पवरपवणपरिच्छूट व्व जिण्णतणपत्थारी दूरं पणोल्लिया चोरसेणा । भग्माए य चोरसेणाए भणिओ हं वरधणुणा जहा-कुमार ! दहं परिस्संता तुब्भे मुहुत्तं तरं णिदामुहमिहेव रहवरद्विया सेवह ति । पडिक्कणं च तं मए । णुवण्णो सह अहं रयणवर्हए ताव य समइच्छिया रयणी । जाया पुव्वदिसाऽरुणा । पाविऊण गिरिणैदिं थका तुरंगमा । पडिबुद्धो हं, उट्टिओ वियम्भमाणो, पुलोइयाई पासाई, ण दिट्ठो वरधणू । ‘पाणियणिमित्तमोइण्णो’ चि बाहित्तो ससंभमं । पडिवयण-मल्लहमाणेण य परामुसियं रहधुरग्गभायं । दिट्ठं च तं बहललोहियालिद्धं । ‘वावाइओ वरधणु’ चि कलिऊण गरुयवि-यम्भमाणसोयप्पसरो ‘हा ! हओ मि’ चि भणमाणो णिवडिओ रहुच्छंगे । लद्धचेयणो य ‘हा ! भाइ वरधणु !’ चि भणमाणो विप्पलावे काउमादत्तो ! कइ कइ वि संत्ताविओ रयणवर्हए ।

“ते पडु ! मया वि ण मया अहवा ते चेव णवर जीवन्ति । मरणेण जाण णिव्वहइ सामिमुह-मित्तकज्जोहो ॥ १६६ ॥

मरणं पि ताण छज्जइ जयम्मि असमं महाणुभावाण । कुंदेंदु-कासविसओ जाण जसो भमइ भुवणम्मि ॥ १६७ ॥

तस्सेय णवर सहलं जयम्मि मरणं महाणुभावस्स । जस्स पैह जणियगुणाणुरायसोयं समुव्वहइ ॥ १६८ ॥

इय सव्वस्स वि मरणे साहीणे तस्स किं ण पज्जत्तं । जस्स पैहु-मित्तकज्जुज्जयस्स संपडइ मरियव्वं ?” ॥ १६९ ॥

एवं च भणमाणो मोत्तूण सोयप्पसरं भणिया मए रयणवर्ती जहा-सुंदरि ! ण णज्जए फुडं ‘किं वा मओ ? किं वा जीवइ ?’ चि, ता अहं मग्गओहुत्तं वच्चामि अण्णेसिउं । तीए भणियं-अज्जउत्त ! ण एस अवसरो पैच्छाहुत्तं गच्छियव्वस्स, कुओ ?-जेणाईयेगागिणी, चोर-सावयाइणं च भीसणमरणं, कलत्ताहिभवणं च परिभवद्वाणं माणिणो, अण्णं च इह णियडव-त्तिणा वसिमेण भवियव्वं, जेण परिमलियकुसकंटया दीसइ वणत्थली । पडिक्कणं च तदेव तं मए । पयट्ठाणि भग्गहाविस-याहिमुहं । पत्ताणि य तव्विसयेसंघिसंठियं एकं गामं ।

तत्थ य पविसमाणो हं गामसहामज्झसंठिएणं दिट्ठो गामठक्कुरेणं । दंसणाणंतरमेव ‘ण एस सामण्णो’ चि कलि-ऊण सोवयारं कयपडिवत्तिणा पूइओ णीओ णियघराहिमुहं । विदिण्णो आवासो । मुहणिसण्णो य भणिओ हं तेण जहा-हो महाभाय ! सोव्विग्गो विय लक्खिज्जसि । मए भणियं-मज्झ भाया चोरेहिं सह भंडणम्मि ण णज्जए किम-वत्थन्तरं पत्तो ? , ता मए तयण्णेसणणिमित्तं तत्थ गंतव्वं ति । तेण भणियं-अलं खेएणं, जइ इहाडवीए भविस्सइ तौ अहं लहिस्सामि । चि भणिऊण पेसिया णिययपुरिसा, गया य । पच्चागएहि य सिट्ठं मज्झ तेहिं जहा-ण अग्गेहिं कोइ कहिंचि सच्चविओ, केवलं पहारणिवडिओ एस पाणी पाविउ चि । तव्वयणायण्णणम्मि य ‘णूणं विणिवाइओ’ चि परियप्पिऊण गुरुसोयाउलिज्जंतमाणसस्स समोत्थरिया सव्वरी । णिवसिओ दइयाए सममहं । ताव य एकजामसे-साए जामिणीए सहसा तम्मि गामम्मि णिवडिया चोरधाडी । सा य मह पहारकेंडुयाविया भग्मा परम्मुहा । अहिणंदि-ओ हं सयलगामाहिट्टिएण गामपहुणा । नोसम्मि य आउच्छिऊण गामठक्कुरं तत्तणयसहाओ पत्थिओ रायगिहं । पत्तो जहाणुकमेणं ।

तत्थ य णयरवाहिरियाए एकम्मि परिव्वाययासमे ठवेऊण रयणवर्हं दूराओ चेव धवलपासायमालोवलक्खिज्जमाणं णीलुप्पलपरिगयकमलसरादिट्ठियं सत्तसाला-पत्ता-भंडवपडिवज्जंतपंथियजणं अहिणवकीरन्तदेवउल्लपक्खिट्ठसंचयोवरुद्धपंधवि-त्थारं कुक्कुडरडियविहाविज्जंततयजणावासं णियच्छंतो बाहिरियाजणवयं पविट्ठो णयरब्भितरं । पविसमाणेण दिट्ठमेक-

१ आयण्णकडिउम्मुक्कं जे । २ ‘णदी जे । ३ ‘छुहिं’ सु । ४ वहु सु । ५ ‘वहु’ सु । ६ भणंतीए जे । ७ फल्लाहिमुहं गं जे । ८ ‘हमेयाइणी सु । ९ ‘वसंघिट्ठियं जे । १० ‘तो गहिं’ जे । ११ ‘कट्ठया’ सु । १२ ‘वहं पविट्ठो णयरब्भितरं । पविसमाणेण य दिट्ठमेकम्मि पएसे वीसयम्मविणिमियं [विम] एकं धवज्जहरं । दिट्ठाओ य तत्थ पवरसुंदरीओ । ताओ य मे दट्ठण पिमुं जे, (१७३ भाषानन्तरम्) ।

म्मि पएसे अणेयखंभुभूयसोहासमुययं विस-ससहर-हास-कासधवलं अचन्तरमणी[या]उव्वणिग्गम-पवेसं एकं धवलहरं । दिट्ठाओ य तत्थ पवरसुंदरीओ, केरिसाओ य ?—

अमिलाणसरसचंपयपल्लयदलगम्भगोरवणाओ । सुसमाहियभालयलुलसंतललियाल्लुआओ ॥ १७० ॥

कसशुव्वल-धवलुव्वेल्लदिट्ठिविच्छोहविम्भमिल्लाओ । कण्णावयंसमंजरिपिंजरियकवोलपासाओ ॥ १७१ ॥

परिवियडणियम्भवत्थलवलग्गकंचीकलावसोहाओ । उतुंग-पीण-पीवरसिहिणभरोणमियमज्झाओ ॥ १७२ ॥

इय एरिसाओ मणहरजोव्वणणिव्वडियवरविलासाओ । सिरि-लच्छीओ व दिट्ठाओ तत्थ वरसुंदरीओ मए ॥ १७३ ॥

ताओ य मं दट्ठण पिभुणियगरुयरायणिम्भरमुण्णामिष्कभुमयाविलासेविकिखत्तकडक्खविकखेवाओ भणिउं पय-त्ताओ—जुत्तं किमिणं तुम्हारिसाण वि महाणुभावान भत्ताणुरत्तं जणमुज्झिऊण परिम्भमिउं ? । संलत्ताओ ताओ मए—को सो जणो ?, कस्स वाऽणुरत्तो ?, केण वां उज्झिओ ?, जेणेवं तुम्हे समुल्लवहं ति । तर्हि भणियं—आगच्छह अणुवरोहेण ताव तुम्हे, वीसमहं मुहुत्तयं । तमायणिऊण य पविट्ठो हं मंदिरिम्भितरं । कयमज्जण-भोयणाइओवयारावसाणम्मि य मुहणिसण्णस्स महं भणिउं पयत्ताओ जहा—महाभाय !

अत्थि इहेवै भरहे विविहमणिसिलासंघायुम्भडपडिवद्धवियडकडयम्मि उतुंगसिहरवइयरपडिभग्गरविरहतुरंगपसरम्मि णिज्जरज्जरज्जंकाररवावुरियदिसामुहम्मि सिहरकाणणंतरालकुमुमियपवरतरुसंडमंडियम्मि लयाहरंतरमुर-सिद्धकामिणी-रइकीलाणिमित्तपरियप्पियकुमुमसयणीयम्मि मारुयपहम्मंतरुंदकंदरुग्गयगहिरुच्छलंतसइसोहम्मि वेयड्डगिरिवरम्मि दा-हिणसेढीए सिवमंदिनं णाम णयरं । तत्थाणेयविज्जाहरमउल्लिमालच्चियवलणजुयलो जलणसिहो णाम राया । तस्स अचन्तहिययदयिया विज्जुसिहा णाम पणइणी । तीए अम्हे दुवे धूयाओ, जेट्ठो य अम्हाणं सरोयरो णट्ठुम्मत्तो णाम । परिवड्ढियाइं कमेण । अणया य अम्हाण जणओ पवरपासायतलम्मि अगिराय-अगिसिहाहिहाणेहिं खयर-मिचेहिं समयं पीइसमुप्पणमणहरालावपसरं पासणिसण्णेहि य अम्हेहिं उवसंपज्जमाणो णिसण्णो गोट्टिसंक्काए । णवरि य विविहमणिमयमउडकिरणपडिभिण्णसंवलियरवियरसवलीकयणहंगणं १ वियडवच्छुच्छलंतहारावलिक्खुरियकिरण-णियरं गइवसपसरन्तमारुयविंसंखलुच्छलियसिचयग्गपल्लवं विमाणोयरगिसण्णमुरसुंदरीविलासपलोइज्जंतमहिमंडलं विवि-हकरि-तुरयाइपरियप्पियवाहगारुहं भत्तिभरणिग्भरवियविम्भ(म्मि)यजयजयारवावुरियदसदिसाओ(भो)यं २ अट्ठावय-पव्वयाभिमुहं जिणवरवंदणणिमित्तं गच्छंतं पेच्छइ मुरा-ऽमुरसमूहं । तं च गच्छमाणं पेच्छिऊण ताएण भणियं—अम्हे वि जिणवंदणत्थं वच्चामो । ति भणिऊण सवयंसो अम्हेहिं समयं पयट्ठो विमलकरवालसामलणहयलेणं । पत्तो य जहकमं तमट्ठावयसेलसिहरं । ओइणो णइयलाओ समयमम्हेहिं । तर्हि च पेच्छामु तिहुयणतेयं पिव संपिडियकलहोयकमल-दैरदलियदलणिहिप्पन्तकुमुमपसरं दिव्वाऽयरुदरदइडमहमहन्तमुरहिसमुच्छलियपरिमलं कयभव्वहलहलारावमुहलियवित्थि-ण्णजयइमग्गं सिद्धाययणणिवहं । तर्हि च—

कत्थइ परियप्पियतार-महुर-परिमंदठाणयालग्गं । कलकंठकलियकायलिमणोहरं गिज्जए नेयं ॥ १७४ ॥

कत्थइ बहुविहकरणं-उगहार-करवट्टणाहिराहिल्लं । दीसइ णट्ठं णिव्वडियफुडरसाहिणयसंजुत्तं ॥ १७५ ॥

कत्थइ णिवडइ(?) णिविड)घटंतावरोहसम्मइमडहियायामो । सुव्वइ णखिरहल्लीसमंडलीतालकयसइ ॥ १७६ ॥

कत्थइ णाणाविहखूवसेसविरइयसमुम्भडाडोवो । कयकेलितालमुहलो णच्चइ बहुभूयसंघाओ ॥ १७७ ॥

इय कत्थइ विविहाउज्जवज्जिराऽसंखसंखसंवलियं । मुरजणियजयजयरवं जिणाहिसेयं णियेच्छामु ॥ १७८ ॥

१ "सखित्तं" सू । २ वा धरिओ जे । ३ "व भारहे वासे वेयड्डे गिरिवरम्मि दा" जे । ४ इत्थदयान्तगतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ५ पेच्छए जे । ६ जहकमेण जे । ७ "दलमलियदलणि" सू । ८ "ह" । अहं तम्मि सुविवाहाउउव्वं जे, (१७८ गाथायाम्) । ९ निय-च्छामो ॥ ततो मुरवइसव्वारं जे, (१८० गाथान्तरम्) ।

अवि य—

सुरवइवरहत्थपलहत्थसोवणकुम्भुच्छलन्तऽच्छखीरोयगीरेण पव्वालिउदाममाणिकसोमाणपंतीसमुत्तिण्णदीहप्पवाहोहयं,
पउरसाललपेत्थुण्वेत्थुसत्ताणउन्निमण्णगोच्छलन्तालिमालाकउदामसं तारसंसदसंपुण्णणीसेसवित्थिण्णवोमंतरालोयरं ।
अलहुपवणणोल्लणऽन्निमट्टसंघट्टफट्टन्तवोमिदणीलुम्भडुम्भूयसाहप्पहोहं विगितुद्धूमोलिजालं व संछाइयासेसणिण्णुणयं,
पिहुलयरपयत्तणीरोहवाहेण वोच्छिण्णहेमच्छलट्टकसंजायभिचीमु

दीसंतणाणाविहाणेयमाणिकसोहासमुम्भासियासेसभूमंडलं ॥ १७९ ॥

किंच—

मार्गचक्रोक्त आचार्य श्री लुविमितामर जी महाराज

कयवहुजणरावमासल्लिं, सजलघणावलिसददिण्णसंकं ।

वियडकडतडोज्झरेमु भरन्तं, जिणवरमज्जणयं सुसाहु दिट्ठं ॥ १८० ॥

एवं च सुरवइसव्वायरणिवत्तियजिणाभिसेयं पेच्छिऊण, अन्तोवियम्भन्तभावणिम्भरं पणमिऊण तिहुयणगुरुणो
विविहमणिमए पडिमाविसेसे, थोउं पयत्त म्ह, कह?—

उच्छरन्तसंसारभट्टुम्भडदलणयं, दुण्णिवारकुमुमाउहपहरविमाणयं ।

जणियसंजमुज्जल्लविणिजियकम्मयं, दुहसयत्तभवियायणमणकयसम्मयं ॥ १८१ ॥

गुरुवम्महमयमलणयं, दुहसंसारुदलणयं । णमिमो भवभयजोहयं, सयलजिणाण कमोहयं ॥ १८२ ॥

तओ एवमादिणा थुइसंबद्धेण थोऊण जिणवरपयपंकए, काऊण पयाहिणं, जाव 'एकपएसम्मि उवविसामि' त्ति
चित्तिं ताव पवरासोयपायवस्स हेट्ठओ गिसण्णं विगैयरति-रायपसरं कोह-भय-माण-मायमहणं गिरवज्जसंजमुज्जोयसज्जि-
यमइं दुट्ठिदियदलिउदामदप्पपसरं दुट्ठकम्मणिट्ठुरणिट्ठवणकयचेट्ठियं संसारुच्छेयणजणियसमुच्छाहणिच्छयं दिट्ठं चारण-
समणजुवलं । दंसणमेत्तेणेव उवसप्पिऊण पणमियं सायरं । पणमिऊण य निसण्णाण पयजुवलसमीवम्मि पत्थुया तेहिं
धम्मदेसणा, कह?—

इह जाइ-जरा-जम्मण-मरणवत्तणपरंपराकलिए । जलकल्लोल व्व भमंति जंतुणो भवसमुदम्मि ॥ १८३ ॥

परलोयणिम्भया दुल्लहं पि लद्धूण माणुसं जम्मं । अण्णाणमोहिया ण य कुणंति धम्मम्मि णिययमणं ॥ १८४ ॥

पूण ण पेच्छंति इमं जाइ-जरा-विविहवाहिदसणिळं । कयविविहजंतुसंताणघायणं मच्चुमुहकुहरं ॥ १८५ ॥

जेण जहिच्छं सच्छंदविलसिउम्मग्गामिणो मूढा । अच्छन्ति चत्तपरलोयकयहियायरणवावारा ॥ १८६ ॥

बहुदुक्खलक्खसंजणियवियणसंतावतारयमणयं । गुरुयणवयणं घोट्ठेति नेय अगयं व दिज्जंतं ॥ १८७ ॥

जस्स किलिस्संति कए विसयमुहासाहिल्लासलोहेण । तं पि सरीरं खणभंगिपवणविहुयं व जिंवफलं ॥ १८८ ॥

तह जोव्वणं पि पवियसियसरयकोज्जयपमूयसारिच्छं । तन्विरमे उण विसया मयणुम्मच्छं पि छड्ढेति ॥ १८९ ॥

जाव पियत्तणसंजणियचौडपरियम्महिययपरिओसा । णियदइया वि हु वयपरिणयाण विवरम्मूहा होइ ॥ १९० ॥

जइ ण कओ वेरग्गो मणुयाण जरापराहवेणं-पि । ता तरुणिजणयसंभावणाए भणियाण वि ण जाओ ॥ १९१ ॥

इय जो वि भाइ भइणी भज्जा सयणो व्व जेहपडिबद्धो । ण हु मच्चुगोयरगयं सो वि परिचाइउं तरइ ॥ १९२ ॥

अणं च—

णिम्भरमयड्ढवियलियकवोलमूलावलग्गदाणेहिं । दुज्जयजोहेहि व वारणेहि ण य वारिउं तरइ ॥ १९३ ॥

बहुलयरखरुक्खयखमायलुद्धूयधूलिपसरेहिं । तुरयारोहेहिं वि णिसियसेल्ल-खग्गुग्गहत्थेहिं ॥ १९४ ॥

१ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । २ भयवयवो" सू । ३ "माइयुइ" जे । ४ विगयरावपसरं संसारुच्छेयणजणियं जे । ५ संसारवोच्छेयजणियमच्छरुच्छाहं सू । ६ "जुवलं" जे । ७ "जुयलं" जे । ८ हस्तद्वयान्तर्गतं वाथा जेपुस्तके नास्ति । ९ चाडव" सू ।

बहुजणियमुहडसंघट्टणिहसणिव्वदसमरभारेहिं । सावरण-पहरणेहिं वि रहेहिं रहियग्गजोहेहिं ॥ १९५ ॥

णिसियासिहत्थवग्गंतफाणुकारमुकहकेहिं । पाइकाण वि णिवहेहिं सव्वओ रुद्धपसरेहिं ॥ १९६ ॥

उवएसकयरसायणविज्जा-मंतोसहप्पयाणेहिं । उव्वरिउं ण हु तीरइ मरणाओ सुरा-उसुरेहिं पि ॥ १९७ ॥

इय अद्धुवम्मि जीए धुवे विणासम्मि सव्वदेहीण । को णाम बालिसो जो उवेक्खए अप्पणो अँप्पं ? ॥ १९८ ॥

ता भो भो देवाणुप्पिया ! खणभंगुरं सरीरं, सरयव्वविक्खमं जीवियं, तडिविलसियाणुयारि जोव्वणं, किंपागफलोवमा भोगा, संक्षारायसमं विसयसोक्खं, कुसग्गलगजललवचंचलौ लच्छी, मुलहं दुक्खं, दुलहं मुहं, अणिवारियप्पसरो मच्चुत्ति । एवं ववत्थिए छड्डिज्जउ मोहप्पसरो, रुंभिज्जउ सयल्लिदियत्थो, भाविज्जउ संसारसरूवं, कीरउ जिणवरप्पणीए धम्मो मणो ति ।

तओ एयमायणिऊण महियलमिलन्तभालवट्ठेण पणमिऊण मुणिवरे 'भयवं ! एवमेयं' ति भणिऊण मुणिगुणाणु-कित्तणवरावणा जहागवं पडिगया सुरभणा । लद्धावसरं य भणियं अम्हाण पिउमित्तेण जहा-भयवं ! एयाणं पुण बालि-याणं को भत्ता भविस्सइ ? । तेहिं भणियं-एयाओ भाइवइयस्स पणइणीओ भविस्सन्ति । तओ एयमायणिऊण मुणिवयणं चिन्तावससामलियमुहमंडलो राया अहोमुहं संठिओ । एत्थावसरम्मि य भणियमम्हेहिं जहा-ताय ! संपयं जेवँ साहियं मुणिवरेहिं संसारसरूवं, सिद्धा विसयपरिणई, ता अलमम्हाणमेवँविहविवायावसाणेण विसयमुहेणं । पडिवणं च तं ताएण ।

एवं च वल्लहयाए भाउणो सिट्ठिलियणियसरीरमुहप्पसराओ तस्स चेय मज्जण-भोयणाइयं सरीरट्ठिं चित्तयंतीओ चिट्ठम्ह, जावण्णादिणम्मि तेणऽम्ह भाउणा भमंतेण पुहइमंडलं दिद्धा तुम्ह माउलयस्स धूया पुष्फवती णाम कणया । तं-रूवाइसयसोहमाक्खित्तमाणसो अवहरिऊण आगओ । तदिट्ठिमसहमाणो य विज्जं साहिउं गओ । अओ उवरिं तुम्हे मुणि-यवुसंतां ।

ता हो महाभाय ! तम्मि अवसरे तुम्ह सयासाओ समागतूण पुष्फवईए भणियाओ अम्हे, सामपुव्वयं साहिओ भाउणो वुत्तंतो । तमायणिऊण वियम्भउम्भडसोयप्पसराओ वडलंसुसलिलमयिलियकबोलमंडलाओ "रोविउं पयत्ताओ । पुणो कह कह वि णिवारियाओ तीए, भणियाओ य—

संसारव्विग्गमहाडईए भमिरस्स जंतुहरिणस्स । कस्स ण जायं भीसणकयन्तवाहाओ मरियव्वं ? ॥ १९९ ॥

कस्स व समग्गसयल्लिदियत्थसंजणियसयलसोक्खाइं । जायन्ति णिययकम्माणुहावओ णेय मणुयस्स ? ॥ २०० ॥

अच्चन्तणेहणिक्खमपरव्वसासंघजणियपसरस्स । इट्ठविओगा जायन्ति देव्ववसओ ण कस्सेह ? ॥ २०१ ॥

इय सुंदरीओ ! कलिउं असारसंसारकारणमियार्णि । सिट्ठिलिज्जउ सोओ मुलहमेरिसं सव्वसत्ताण ॥ २०२ ॥

अणं च सुमरिज्जउ मुणिवरभणियं भवियव्वमचित्तहमेरिसेणं चेव, कीरउ पडिधिरं हिययं, पडिवज्जिज्जउ बंभयत्तेण सह संबंधो ति । तमायणिऊण य पयत्ताणुरायपसरहिं सरहसं पडिवणमम्हेहिं । तओ अइरहसत्तणओ पुष्फवतीए तुम्ह संकेयणिमिच्चं अण्णा चेय चालिया पढाया । तइंसेणेण य तुम्हे ण याणिमो कत्थइ पउत्थ ति । अपेच्छमाणीहिं अम्हेहिं पुलोइओ तुमं विविहवणकाणणंतरालेसुं, पुणो य ललियलयाहरेसुं, तओ वियडगिरिकुहरंतरेसुं, पुणो परिमलमिलन्तभमर-उलदलमुहलियकमलसरेसुं, तओ णाणाविहगाम-णगरोइएसुं । जाहे ण कहिंचि दिट्ठो ताहे विसणवयणाओ इहमागयाओ अम्हे । णवरि य किंचावसेसत्तणओ भागहेयाणं अप्पत्तियहिरणवुट्ठिविक्खममेत्थ संजायं तुम्हेहिं सह दंसणं । ता हो महाभाग ! सुमरिऊण पुष्फवइवइयरं कीरउ अम्हाण समीहियं ।

एयमायणिऊण य सरहसं पडिवणं मए । णिव्वत्तिऊण य गंधव्वविवाहं जहाणुकमं तार्हि समयं जणियविविहकी-ल्लैविणोयं पुव्वणो पवरपल्लंके । कह ?—

१ 'पुकार' सु । २ 'सहिण' जे । ३ अण्णा जे । ४ 'सा रायलच्छी जे । ५ भजिज्जउ सु । ६ 'वरमणिए जे । ७ एवेत्यर्थः ।

८ वल्लहाए जे । ९ 'रूवाइ' जे । १० 'रोइउं' ११ 'राइसु जे । १२ लाविणोएणं पुव्वणो पवरपल्लंके । मुहेण य पढाया रयणी । तओ गोस्समयम्मि भणि' जे, (२०६ गाथानन्तरम्) ।

गाढाणुरायपरिरंभवससमुल्लसियधुसिणसंवलिओ । सेयच्छलेण मयणो घणाणुरायं व पयडेइ ॥ २०३ ॥
 रहसकयग्गहकटिणदरमउल्लिउन्विहल्लदलउडप्पसरं । महमहइ कुसुमदामं समंथरं मच्छरेणं व ॥ २०४ ॥
 अवियण्हदइयकयवाहचुंवणुब्भट्टजावयरसो वि । अहियं विरायइ चिय सहावज्जणियारुणो अहरो ॥ २०५ ॥
 इय गरुयवियंभंताणुरायसंजणियरमणि(ण)विण्णासो । मुत्तो दइयाहिं समं कयाहिलासी अहं तत्थ ॥ २०६ ॥

गोससमयम्मि य भणियाओ मए एवं-गच्छह ताव तुम्हे पुण्णवइसमीवं, तीए समं ताव अच्छियव्वं जाव मह रज्जलम्भो होइ ति । 'एवं चेव कीरइ' ति भणिऊण गयाओ ताओ । गयासु य तामुं जाव पलोएमि पासाइं ताव ण तं धवलहरं, नेय सो परियणो । चित्तिं च मए-एसा सा विज्जाहरी माया, अण्णाहा कहमेयं इंदयालविम्भमं ताण विलसियं ? । ताव य मया सुमरियं रयणवतीए । तयण्णेसणणिमित्तं च गओ आसमाहिमुहं जाव ण तत्थ रयणवई, नेय अण्णो कोइ ति । तओ 'कं पुच्छामि ?' ति कलिऊण पुलोइयाइं पासाइं, ण य कोइ सच्चवियो । एत्थावसरम्मि य वियम्भिओ सोयप्पसरो, पवट्ठिओ रणरणओ पसरिया अरई-“अहो महं विसमदेसावत्थाणिवडियस्स वि ण तहा रयणवइविओय-दुक्खं वाहइ जहा वरधणुमरणं ति । भणियं च—

दइयाविओयदुक्खं पुहईलंभो वि नेय णासेइ । ववगयरज्जदुहं पुण सुमित्तलंभो पणासेइ” ॥ २०७ ॥

एवं च चित्तयन्तस्स समागओ एको कल्लाणागिती णाइवपरिणओ पुरिसो । पुच्छिओ य सो मए-हंहो महाभाय ! एवंविहरूवणेवच्छविसेसा अदीयदिणम्मि अज्ज वा णं दिट्ठा एत्थ एका पवरंमहिला ? । तेण भणियं-पुत्तय ! सो तुमं रयणवईए भत्ता ? । मए भणियं-आमं । तेण भणियं-कल्लं खु सा अवरणहेलाए विमुक्ककल्लुणदीहणीसणं सयलजणजणिय-दुक्खपसरं रुयमाणी णिसुया मए, कह ?—

हा सामिय ! कत्थ गओ सि उज्झिउं मं अणाहियं एक्कं । सत्थजणविप्पहणं पिययम । विण कारणा रुइरिं ॥ २०८ ॥
 तुज्झ विओए पिययम ! अहियं उत्थरइ जणियभयपसरो । छिहं दट्ठुं णरणाह ! दुसइसोओ पिसाओ व्व ॥ २०९ ॥
 तुज्झ कयम्मि सहियणो सयणो तह परियणो कुलं सीलं । पिइ-भाइ-भाइवग्गो तणं व कलिऊण मुकाइं ॥ २१० ॥
 एहि पसायं काऊण कीस कुवियो सि मह अहण्णाए ? । जइ वि मए अवरद्धं तह वि हु तुम्हेहिं खमियव्वं ॥ २११ ॥
 इय एवं बहुसो तीए रुणसहेण जणियकारुणो । 'किं किं ति कारणं रुयसि पुत्ति !' भणिरो गओ पांसं ॥ २१२ ॥

पुच्छिया सा मए-पुत्ति ! का सि तुमं ? , कुओ वा समागया ? , किं वा सोयकारणं ? , कहिं वा गंतव्वं ? । तओ तीए दरसिद्धम्मि य पच्चभिण्णाया भणिया य-मह चिय णत्तुई होइ ति । मुणियवुत्तंतेण य मया तीसे चुल्लपिउणो गंतूण सिद्धं । तेण वि जणियविसेसायरं पवेसिया णिययमंदिरं । अण्णेसिया सव्वओ तुम्हे, ण य कहिंचि दिट्ठा, ता संपयं पि सुंदरमणुचिट्ठियं जमागयत्थ । एवं चालविऊण णीओ हं तेण सत्थवाहमंदिरं । कयसव्वायरोवयारं च रयणवतीए सह वत्तं पाणिग्गहणं । ठिओ तीए समयं विसयमुहं भुंजमाणो ।

अण्णाया य 'वरधणुणो दियसओ' ति पयप्पियं भोज्जं, भुंजंति बंभणादिणो, जाव सयं चेव वरधणु जणियवंभण-वेसो भोयणणिमित्तमागओ । भणिउं च पयत्तो जहा-भो ! साहिज्जउ तस्स भोज्जकारिणो जइ मज्झ भोयणं पयच्छह ता तस्स परलोयवत्तिणो वयणोयरम्मि उवणमइ ति । सिद्धं च तेहिं तमागंतूण मज्झं । विणिग्गओ हं सरहसं । पुंल्लइओ सो मए पच्चभिण्णाओ य । पहरिसविसट्ठपुल्लयमवयासिओ मए । पविट्ठा मंदिरं । असइहणीयमवत्थंतरमणुहवमाणा ठिया मुहुत्तं । णिव्वत्तमज्जण-भोयणावसरम्मि य पुच्छिओ मए वरधणु णिययपउत्तिं साहिउं पयत्तो जहा—

“तीए रयणीए णिदावसमुवगयाण तेम्हाणं पिट्ठओ धाविऊण निविडकुडंगंतरियतणुणा एक्केण चोरपुरिसेणेक्केण शेय बाणेण समाहओ हं । पहारवियणापरायत्तत्तणओ गिवडिओ महियलम्मि । अवायमीरुत्तणओ ण साहियं तुम्ह ।

१ इसावडियस्स जे । २ अइयं जे । ३ 'रविल्लया ! जे । ४ पांसं ॥ २११ ॥ गओ तीए पांसं । पुच्छिं खु जे । ५ तीए जे । ६ तुम्हे जे । ७ वयणम्मि खु । ८ पुलोइओ जे । ९ तुम्हाण अभिउत्तो हं चोरेहिं, कुडंगंतरियतणुणा समाहओ हं बाणेण । पहारविं खु ।

चोलीणो रहवरो तमंतरालं । अहमवि पेरिनिविडतरुयरंतरालमज्जेण सणियं सणियमवकममाणो कह कह वि संपत्तो तं गामं जत्थ तुम्हे णिवसियाइं । साहिया तग्गामाहिवइणा तुम्ह पउत्ती । समुप्पण्णहिययतोसो य संपत्तो इहइं । पउणो पहारो । भोयणपत्थणाववएसेण य समागओ इहइं जाव दिट्ठा तुम्हे” ति । एवं च अवियण्णानुरत्तचित्ताण जंति दियहा ।

अण्णया य मंतियमम्हेहिं परोप्परं एवं जहा—केत्तियं पुण कालं पमुक्कपुरिसयारेहिं अच्छियव्वं ? । भणियं च—

विसमदसावडियस्स वि जहकमं जणियपुरिसयारस्स । जइ ण फलइ संपत्ती किच्ची उण तह वि संपडइ ॥ २१३ ॥

आवइपडियस्स वि मुवुरिसस्स उव्वहइ तह वि ववसाओ । विरहियववसायं पुण लच्छी वि ण महइ अहिलसिउं ॥ २१४ ॥

एवं च चित्तयंताण णिग्गमणोवाऊमुयमणार्ण—

पत्तो य मलयमारुयमंदोलिज्जमाणतरुगहणो । वियसन्तसरसपाडलपडहच्छोच्छइयभूसा(भा)ओ ॥ २१५ ॥

मंजरियपउरसहयारधूलिधूसरियणहयलाहोओ । रुंदन्तमत्तमहुयर[— —]रवावूरियदियन्तो ॥ २१६ ॥

कोइलकुल[कल]कलरववित्तट्ठपणट्ठपंथियजणोहो । कुरवयपसूयपरिमलवाउलियमिलंतभसलउलो ॥ २१७ ॥

इय बहुपायवपफुल्लसरसकुमुहपरिमलुग्गारो । अणिमित्तुकंठियतरुणमणहरो माहवो सहसा ॥ २१८ ॥

स(ए)रिसम्मि य महुसमए, एकदिणम्मि पयत्ते मयणमहुसवे, विविहुज्जलविसेसणेवच्छालंकिए कीलाणिमित्तं विणिग्गयम्मि णयरजणवए, जहाभिरुइयं पयत्तम्मि णिग्गरे कीलारसे, णवरमेक्कसरियं चेय दिट्ठो करडयडकोडराविडि-[?म]दाणगंडत्थलो कुम्भत्थलरंखोलमाणमुक्कतिक्खंकुसो णियकरयल(लु)त्थल्लियाहोमुहणिवडियाहोरणो ददविणिदल्लियरुंदंइयविसंखलचलन्तचलणो मयपरव्वसत्तणओ भंजिऊणाऽऽलाणस्समं वियरिओ रायहत्थी । विणिग्गओ रायंगणाओ । तओ समुच्छलिओ रायंगणम्मि इलहलारावो । विरसमुक्कइयं जणवएणं । विवलाणो “दिसोदिसिं जणवओ । भग्गाओ कीलागो-ट्टीओ । एवं च पयत्ते इल्लोहलए एक्का ॥ तवणिज्जपिंजरुज्जलसरीरच्छवी पुण कुंतलुप्पीलपल्लत्थिउम्मत्थधम्मेल्ला मयण-करिक्कुंभविग्गमुहभूयइरथणमंडला परिवियडणियम्बालग्गकलकणिरकंचीकलावा, ससंभमुग्गन्तपुलइयव्वएहिं कुवलपद-लावलिं व विक्खिरन्ती, छिण्णवालकयलीदलं व वेविरोक्कुयला, ॥ भयभरपरिगलियगमणवावारा ‘कत्तो सरणं ?’ ति विमग्गमाणा पडिया मत्तकरिणो दिट्ठिवहम्मि बालिया । तओ समुल्लसिओ हाहारवो, कूवियं से परियणेणं ।

एत्थन्तरम्मि य दरगहियाए तीए, पुरओ ठाऊण हकिओ मए वारणो । मुयाविया एसा । सो वि हु वारणो मोत्तूण तं बालियं रोसवसविसमवित्थारियणयणजुयलो सम्मुहपसारियउग्गढथोरथिरहत्थो तडुवियायडिइयसवण-पेरन्तो ज्झत्ति मह समुहं पहाविओ । मए वि संपिडिऊण उवरिल्लं पक्खित्तमहिमुहं । तेणावि णिग्गरामरिसवसंपराहीण-तणुणा वेत्तूण तमुवरिल्लं घल्लियं गयणंगणसमुहं, णिवडियं धरणिमंडले । जाव किल्लं परिणमइ ति ताव मया वि दच्छत्त-णओ समारुहिऊण कंभराहोए णिवद्धं आसणं, तालिओ तिक्खंकुसेण, अण्णालिओ कुम्भभाए वसमाणिओ रायहत्थी ।

एत्थावसरम्मि य समुच्छलिओ ‘साहु साहु’ ति जणकलयलो । ताव य पलोयणणिमित्तुग्ग्याडियवायायणकवाड-संपुडं सहस्सलोयणं व संजायं पुरवरं, विज्जुलयासंवलिय व्व धवलमेहावली लक्खिज्जइ संचरंतीहिं तरुणीहिं पासायमाला । तओ मह गुणापुरायक्खित्तेण पुरजणसमूहेणं विमुक्कमुवरिं कुमुमवासं, पक्खित्तो पउरपोत्तवाडो, ‘जयइ कुमारो’ ति पडियं बंदिणा । मए वि इत्थिसिक्खापेओएहिं सपेसलपरिसकियव्वएहिं सुमहुरभणियव्वयविणोएण मेल्लाविओ मच्छरं गय-वरो । समाणीओ य आलाणखंभट्ठाणं । समप्पिओ पीलुवइणो ।

ताव य समागओ तमुदेसं णरवई । दट्ठण य तं तारिसमणणसरिसचेट्ठियं गरुयैविम्हयवियम्मियमणचमकारो लक्खिऊण सयललक्खणालंकियतणुविहायं मं भणिउं पयत्तो—को उण एसो?, कुओ वा आगओ?, कस्स वा तणओ? ति । तओ भणियं वरधणुणा—

१ परिणियडतं सू । २ तुम्हे जे । ३ जइ वि ण फलसंपत्ती किच्ची उण जे । ४ “ण समागओ मयरद्वयपरमसुही महसमओ । तओ एकम्मि दिणे पयत्तो मयणमहुसवो । विविहुज्जलविसेसणेवच्छालंकिए कीलाणिमित्तं विणिग्गयम्मि णयरजणवए मयपरव्वसत्तणओ जे. (२१८ गायानन्तरम्) । ५ दिसोदिसिं सू । ६ पयत्तम्मि सू । ७ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ८ ठाऊण जे । ९ वेत्तूणमुत्तरीयं पं जे । १० फिर गच्छइ ति जे । ११ “पओएणं जे । १२ “यविग्गमवि” सू ।

साहंति असिद्धं पि हु चरियाइं कुलं महाणुभावाणं । किं कहइ केयई निययपरिमलं भमरविलयाणं ? ॥ २१९ ॥

कालायसं ण साहेइ ढङ्गमाणं वणंधयारे वि । मूयल्लियं पि पुरिसं निययगुण चिय पयासेन्ति ॥ २२० ॥

एत्थावसरम्मि य रयणवतीए चुल्लताएण साहिओ सयलो वि राइणो वइयरो । तमवगच्छिऊण तुट्ठेण राइणा भणियं-
को वा सीहकिसोरयं वज्जिऊण मत्तगए निवारेइ, ता सोहणमेषुट्ठियं जमिहागओ सि, नियणिहेलणं चिय एयं भवओ ।
भणिऊण ण्हाविओ निययमज्जणयम्मि । वित्थरियं रयण-कणयमैयथाल-कच्चोलादीहि । भुत्तं सरिसएहिं चेय, कहं ?—

बहुविहविहत्ति-वज्जण-समास-सदहियपरिसेल्लेण । अहिगयवागरैणेण व ताणं निन्वावियं हिययं ॥ २२१ ॥

सयल्लिदियत्थसंजणियमुहरसेल्लेण भोयणेण ददं । नियदइयमाणुसेण व भुत्तेण अइति सोक्खाइं ॥ २२२ ॥

एवं च भोयणावसाणम्मि दिण्णा मह निययधूया । सोहणदिण-मुहुत्तेण य वत्तं पाणिग्गहणं । जहामुहं ठिया तत्थ
अम्हे केइवदिणाणि । अण्णया य एका णाइपरिणयवया पवरमहिला समागतूण मह समीवम्मि भणिउं पयत्ता जहा-
“कुमार ! अत्थि” किं पि भणियव्वं, ण एसो लज्जावसरो, ता अवहिण सोयव्वं, अत्थि इहेव णयरीए वेस्समणो णाम
सत्थवाहो । तस्स धूया स्तिरिमती णाम । सा य मए बालभावाओ पालिया, जा तुमए हत्थिसंभमाओ रक्खिया । तीए
हत्थिसंभमुवरियाए उज्जिऊण भयं ‘जीवियदायउ’ ति मुणिऊण तुमं पलोइओ साहिलासं । तओ अचंतमुंदरत्तणओ
रूवाइसयस्स, निम्भरत्तणओ ‘जोव्वणपयरिसस्स, पसरियत्तणओ मयरकेउणो, समुप्पणो तीए तुज्जुवरिमणुराओ । तओ
तप्पएसे चेय पलोएमाणी थंभिय व्व लिहिय व्वे टंकुकीलिय व्व निच्चलणिहत्तलोयणप्पसरा खणमेकं संठिया । बोलीणे
हत्थिवइयरे जहागयं पडिगए सयलज्जणवए कह कह वि परियणेण भण्णमाणी गया निययं मंदिरं । तत्थ च णकयमज्ज-
ण-भोयणा विणिवारियासेसपरियणा गणिजालयसकल्लिहियवयवक्कमला महाजिहाणाहिट्टियं पिव तं चेव दिसं पलो-
एमाणा, जत्थ सो हत्थिसंभमवइयरो तदिसागयं पवणं पि बहुमण्णमैणा, तओ ‘अइचवले ! किमेयं ?’ ति गरहिया व
लज्जाए, ‘ण इमं जुत्तं’ ति उवाल्द व्व विणएणं, ‘विमुक्का बालभावेणं’ ति उवहसिय व्व मुदयाए, ‘जहिच्छमच्छसु’ ति
आमंतिय व्व कुमारभावेणं, ‘णाऽयं कुलकमो’ ति विमुक्क व्व समायारेणं, ‘गुरुयणपडिवत्तिमूढ’ ति लज्जाविय व्व मय-
रकेउण ति । ॥ ॥ अवि य—

दंसणरसवसपसरन्तणिम्भरावूरमाणपुंजइओ । संजमिऊण व सयल्लिदिहं दिण्णो मणो तिस्सा ॥ २२३ ॥

आयण्णायडिदयकुमुमचाव[—]पउमपउरपहरेण । सरपंजरे व्व काउं समप्पिया मयरइंघेण ॥ २२४ ॥

तव्वयणदंसणमुयणिहत्तियणयणवयणवित्थारो(रा) । दासत्तणोवणीय व्व गरुयपेम्माणुराएण ॥ २२५ ॥

दाऊण निययजीवियसव्वस्सपणेण णूण गहिया सि । इय कलिऊण(? लिउं) विकीय व्व निययहियएण सयरहं ॥ २२६ ॥

असमंजसवल्लणुवेल्लविसमपल्लत्थतरलहारेण । तुट्ठेण समाउच्छिय व्व गहिऊण कंठम्मि ॥ २२७ ॥

पुसिऊण लोयणे पुच्छसु ति अविसेसा(?सेसया)णुए ! दइयं । त्कालागयसंगलियवहलवाहेण भणिय व्व ॥ २२८ ॥

पाणेहिं समं गिद्धारयामि धीराभिमाणयं मुदे ! । सासच्छलेण निम्भच्छइ व्व उव(ण) मयरइंघेण ॥ २२९ ॥

इय चेत्तालेक्खागयरुवसमुप्पणपुल्लयपडलिल्ला । उव्वहइ समालिगणचित्ता सोक्खं व सा बाला ॥ २३० ॥ ॥

एवं च एयारिसमवत्थंतरं पेच्छिऊण पुच्छिया सहियणेणं जाहे ण किंचि” पडिसंलावं देइ ताहे मए भणिया-
पुत्ति ! कीस संपयमयंढे चिय अंसंभाविणी संजाया ?, जेण ममं पि अवह(?ही)रसि वयणं, अक्खिवसि चक्खु, णूमेसि हिययभावं,
अवलम्बसि चित्तसंतावं, गोवेसि कलमलं, णाइक्खसि रणरणयकारणं ?, ता अलं तुह समीवद्विण्ण, अण्णत्थ गच्छिस्सामि ।

१ ‘मणुचिट्ठिय जे । २ ‘मयादीहि बाल’ सु । ३ ‘रणेणं व ताण सु । ४ ‘यमणूसेण जे । ५ कद वि दि’ सु । ६ अम्ह सु ।
७ किंचि भ’ जे । ८ जोव्वणस्स सु । ९ व्व कीलिय व्व जे । १० ‘माणो सु । ११ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेउस्तके नास्ति । १२ ‘वि
वि मुक्कसंलाव जे । १३ अववभाविणी सु । १४ अण्णओ सु ।

त्ति भणिऊण जावाहं उट्टिया ताव सविलेक्खहसियं काऊण भणियं तीए—किं किं पि तुम्हाण वि अकहणीयमत्थि ? किंतु लज्जा एत्थावरज्जइ, ता सुव्वउ, जेणाहं हत्थिसंभमाओ रक्खिया सो हु तव्वेलाणंतरमेव रइरहिओ कुसुमवाणो व्व पविट्ठो मह मणं, ता किं बहुणा ? जइ तेण सैमं ण घडति विही ता महमवस्स मरणं सरणं ति । तओ एयमायण्णिऊण साहिओ मए तीए पिउणो वइयरो । तेणावि अहं तुह समीवं पेसिया । ता पडिच्छमु इमं वालियं” । पडिवणं च तं मए । सोहणदिण-मुहुत्तम्मि य जहाविहववित्थरेण णिव्वत्तं पाणिग्गहणं । वरधणुणो वि सुवुद्धिणामेणामच्चेण णंदाहिहाणं दाऊण [कणं] कयं विवाहमंगलं ।

एवं च दुवग्गाण वि तत्थ मणहररइमंदिंरंतट्टियाण एकया महुरवीणाविणोएण, पुणो मणहरालावेण, अण्णया गीय-कलौकलवेण, कयाइ दुरोयरकीलाहिं, पुणो पण्होत्तर-विंदुमई-सुहासियाईहिं च विणोयटाणेहिं सुहमच्छमाणाण गच्छंति वासरा । कहं?—

पवणंदोलियपरिमंदंदिंरुज्जाणविविहतकसंडे । तरुसंडंखुडियकुसुमुच्छलन्तवरसुरहिगंधम्मि ॥ २३१ ॥
गंधंधलुद्धमुद्दालिजालचलचलणविहुयमयंरंदे । मयंरंदोर्जियमवणदीहियासच्छसलिलम्मि ॥ २३२ ॥
सलिलतरंगंतट्टियधयरट्टविरावजणियसुइसुहए । सुइसुहयरहंगरावाणुवद्धकयसहप(?)रिवरम्मि ॥ २३३ ॥
इय भवणुज्जाणे विविहपायवुप्पत्तिपत्तिसोहम्मि । छायाभेत्तपणासियसयलहुहावासदोसम्मि ॥ २३४ ॥
अवि य—

झंकारमुहलभमरउलचलणजज्जरियजरदकुसुमम्मि । कोइलकुलकवलीकयपरुदसहयारमउरम्मि ॥ २३५ ॥
चटुलचओरुब्भडचंचुचुंवियाहव्वामोरियमउलम्मि । चंपयपरायपिंजरकविंजलालीयणस्सम्मि(?) ॥ २३६ ॥
परिणियडदाडिमीफुडियफलवल्लमान्तकीरणियरम्मि । कइकरयलकंपियणिविडपडियजंवूफलोहम्मि ॥ २३७ ॥
एक्केकमकुवियकवोयपोयपक्खालिपहयकुसुमम्मि । कुसुमरयारुणपरिभमिरसारियाराचमुहलम्मि ॥ २३८ ॥
उम्मयपारावयविहुयपक्खविविखत्तकुसुमरेणुम्मि । परिणयपूयफलविडव[?]विघडियदलणागवल्लिम्मि ॥ २३९ ॥
घणफलियणालिपरीफलणिवहत्थवयवित्थरिल्लिम्मि । विविहविहंगागयंतुंडखंडिय(?)खंडखज्जुरे ॥ २४० ॥
उग्गयमयवरहिणधुयसिंहंडि[?] वंदम्मि तंडवन्तम्मि (?) । मुहमहुरिणितकेयासहयरिकयसोक्खपसरम्मि ॥ २४१ ॥
इय पवणपयल्लियवालकयलिदलणियरचंचलिल्लिम्मि । गिम्हम्मि दिणद्धे वि ङ्गलद्धरविकिरणपसरम्मि ॥ २४२ ॥
किंच—

कुमुयायरे व्व णोदिण्णतरणिकरणिकरमज्झपसरम्मि । रहुसुयवले व्व संठियणीलंजणसंजुयंतम्मि ॥ २४३ ॥
जलणिहिपुलिणे व्व पवाल्युग्गमंकुरपयत्तसोहम्मि । सव्वोसहिकुसुमफलोववुण्णअहिसेयकलसे व्व ॥ २४४ ॥
आलेक्खहरे व्व विचित्तवण्णसंपडियसउणसोहम्मि । णरणाहे व्व समुप्पण्णणियडचित्तासणिल्लिम्मि ॥ २४५ ॥
पुण्णयायायडिदयघणसिलिम्मूहे गरुयसमरमग्गे व्व । कयघणसोहे इंदाउहे व्व बहुवण्णसोहम्मि ॥ २४६ ॥
इय दंसणलोहक्खेवरुद्धसयलिदियत्थपसरम्मि । मायंदियालिओ(ए) विव जणलोयणमणहरिल्लिम्मि ॥ २४७ ॥

एवं च कयविविहकीलाविणोयपसरं कीलमाणाण अइकंता कंइ वासरा । उच्छलिया सव्वओ अम्हाण पउत्ती । पेसिओ दीहराइणा मगहाहिवइणो दूओ जहा—अपिज्जन्तु चंभयत्त-वरधणुणो ति । पडिवणं च तं तेण तस्स पुरओ । पुणरवि मग्गओ अम्हेहिं सैमं मंतिउं पयत्तो—किमेत्थ करणीयं ? । मए भणियं—भो ! किमेत्तियाए चिंताए ? , अम्हे-वाणारसिं णयरिं कइयराइणो समीवे गच्छिस्सामो ति ।

एवं भणिऊण पत्थिया अम्हे । सणियसणियं च व्वमाणा पत्ता वाणारसिं । गओ वरधणू तस्स समीवं ।

साहिया मह पउत्ती । हरिसिओ एसो । तओ सबल-वाहणो णिग्गओ सिणेहणिग्गभरयाए सम्मुहो । अहमवि मुणिऊण
समुहं चेव पयट्ठो तस्स । ओइण्णो सो वाहणाओ । समाइच्छिओ अहयं, आरोविओ अण्णयरवाहणम्मि । जणियहिययाणंदं
पवेसिओ जहाविहवेण णिययपूरवर्त्ति । अणवरयपवड्ढमाणसिणेहपसरेणं णिययधूया कडयावई णाम वालिया हय-गय-
रह-णाडय-धण-कणयाइणा संजुत्ता मज्झं पणामिया । अणुकूलदिणे वत्तं पाणिग्गहणं । विसयमुहमणुहवन्तस्स सुहेण
वच्चन्ति दियहा । तओ दूयसंपेसणेण समागओ सबलो वि पुण्फचूलराया, महामच्चो य धणू, तहा करेणुदत्तो, अणे
य चंदसीह-गंगदत्त-तुडियदत्त-सीहराय(या) [समागया] । वरधणुं सेणावई अहिंसिचिऊण पेसिओ दीहराइणो
उवर्त्ति । पत्तो य अणवरयपयाणएहिं वरधणू । एत्यावसरम्मि य पेसिओ दीहराइणा कडयराइणो दूओ । भणिउं
च पयत्तो जहा—

सहवड्ढियाण संजणियभोयण-उच्छायणेहिं अविसेसं । आजम्मं पडिवणं णिव्वहइ महाणुभावाण ॥ २४८ ॥
एक्कगामे विसए व्व अहव णयरम्मि जो समुप्पण्णो । दट्ठणं विसे तं मुहि व्व मण्णन्ति सप्पुरिसा ॥ २४९ ॥
तइ पुंण समयं आपंमुकीलणप्पभिइ जाव अज्ज दिणं । एक्केकमाविसेसं वसिया मो कीस पम्हरियं ? ॥ २५० ॥
इय अच्छउ पम्हरियं ण केवलं णिययजाइदोसेण । मँज्झस्थयं पि मोत्तूण सत्तुभावं गओ जेण ॥ २५१ ॥
तओ एयं सोलुउं जंपियं मुणेऊण कडयराया भणिउं पयत्तो जहा—“ भो दूय !
सच्चं जं तुह पट्ठणा भणियं सह वड्ढिया य रमिया य । अम्हेच्चइओ सह बंभराइणा णउच्छए को वि ॥ २५२ ॥
किंतु—

परलोयपउत्थे तम्मि मंतिउं तं सि जोग्गकलणाए । बंभणराहिवतणयं वालं किर पालिउं मुक्को ॥ २५३ ॥
णवरि ण वालं एक्कं रज्जं संतेउरं परियणं च । तुह पट्ठणा पालंतेण भूसियं दूय ! नियगोत्तं ॥ २५४ ॥
इय सामण्णं पि हु दूय ! परकलत्तं महाणुभावाण । दट्ठं पि णेय जुज्जइ अच्छउ दूरेण रमियव्वं ॥ २५५ ॥

ता हो दूय ! तुह पट्ठणा विम्हरिऊण अत्तणो विलसियं अम्हे चिय उँवालद्धा । अहवा उचियमेयं सविवेयस्स ” ।
त्ति भणिऊण पेसिओ दूओ । अप्पणा वि अणवरयपयाणएहिं गच्छमाणो संपत्तो कम्पिह्लपुरवरं । तओ णिरुद्धसयल-
जणणिग्गम-पवेसं समन्तओ पसरियरह-तुरय-गईदँवदेण रोहियं चउपासओ । बंभयत्तो वि केइ सामेण, “केइ
भेएणं, “केइ उवप्पयाणेणं तस्स णरवइणो सवसे कुणंतो संपत्तो । सँमारोहियं समंतओ चउरंगवलेणं णयरं ।
इओ य सो दीहराहिवो णिग्गओ अहिमुहं ससेण्णो । अन्निमट्ठमुभयचलाणं पि समरं । ॥ ॥” कह ?—

णवरि य विमुक्कलल्लकहकपोक्कं विकोसकरवालं । कोंडलियचंडकोयंडमुक्कणारायणियरिल्लं ॥ २५६ ॥
घडियतुरंगोरत्थलपाडियपाइक्कभरियमहिमग्गं । पासल्लागयपाइक्ककोत्तिणिव्वट्ठियतुरंगं ॥ २५७ ॥
गरुयगयचंडसोण्डगलग्गणिकडिउव्वमडमडोहं । भडहच्छमच्छरुच्छाहच्छिणगयसोण्डदंडग्गं ॥ २५८ ॥
घडियघणसंदणारुद्धमुहडपम्मुक्कपहरणुव्विडिमं । णीहरियणिविडवहुवाणजालसंच्छ(छि)ण्णत्त-धयं ॥ २५९ ॥
ता तं कडिदयवाणासणुच्छलंतोरुवाणजालिल्लं । सेण्णं दीहरिदस्स सहरि(रह)सं कडयणरवइणा ॥ २६० ॥
चटुलयस्वरसुक्खिचरेणुपडिभग्गदिट्ठिपसरेण । णाणाविहणेव्वु(व)च्छुच्छहंतघणतुरयसेण्णेण ॥ २६१ ॥
घणघडियगयघडारुद्धणिविडपयवीढचमदियभडेण । धुयसीमुच्छालियचमरतुरयकडिदयरहोहेण ॥ २६२ ॥
परिदुद्धं(द्ध)समुहं(मुह)घण(इ)न्तणिविडभडणिवहपहरणिल्लेण । वावल्ल-भल्लवित्थयपहरविणित्तंतमुप्पन्तं ॥ २६३ ॥ “

१ “मुहं भुजमाणस्स मु” जे । २ “एहिं गंतु वरं” जे । ३ सविसेसं सू । ४ “ण तव्वि(संवि)एसे मुहि जे । ५ पुण सू । ६ विम्हरियं
जे । ७ मण्णन्ति पि य मोत्तुं सत्तु[सि]भावं सू । ८ एवं सोलुउं जंपियं जे । ९ भणिउं तह वड्ढिया सि मुत्ता य । अ” जे । १०
अम्हे इउं सह बंभराइणा णेच्छए सू । ११ उवलद्धा सू । १२ “दवदेण जे । १३-१४ के वि जे । १५ समारोविउं जे । १६ अहिमुहो
जे । १७ हस्तदयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति ।

तो ताण तहि जायं परोप्परोहरियपहरणुग्घायं । समरं घटंतगयघड-रह-तुस्युप्यंक(क्कंप)पाइक्कं ॥ २६४ ॥

इय तं आवाए चिय कडयणराहिवलं असाहारं । भग्गं भग्गुब्भडसमरमच्छरं दीहसेण्णेण ॥ २६५ ॥

एवं च विमुक्कलज्जमच्छरिल्लुम्मि भग्गे कडयसेण्णे तयणंतरं निम्भरमयं धगयगलियगंडदाणोहदुदिणे खरखुरुक्ख-
यखमायलुच्छलियधूलिधूसरियदिसामुहोत्थरियतुरए समुहागयरहवररहंगयगयगासद्वहिरियमहियले 'मर मर मर'
त्ति लल्लक्कपेम्मुक्कपोकपउरम्मि पाइक्कयक्के णिदयं समोत्थरिए दीहसेण्णे अमरिसवसवियम्भंतभीमभिउडिचिच्छोहो
हेल्लालियकरकलियपहरणो समुट्ठिओ वंभयत्तो । तओ मुणिऊण वंभयत्तां समरुज्जयं चलियं सयलं पि वंभयत्त-
सेण्णां । पुणरवि पयट्टमाओहणं—

ता गरुयगइंदघट्टणमन्तयणमेहमंडलिल्लेण । बहुवण्णरइयरगइंधजणियसुरचावसोहेण ॥ २६६ ॥

णिकडिंदयणिसियफुरन्तखग्गसोयामणीसणाहेणं । मुहडुब्भडकयपोकारगज्जिओरल्लिमुहलेण ॥ २६७ ॥

पवणुव्वेल्लियमोरंगलत्तकयवरहितडुविल्लेण । तुरयमुहुच्छालियसेयचडुलचामरबलाएण ॥ २६८ ॥

आयण्णायडिंदयणिसियवाणधाराणिवायणियरेण । उदामपाउसेण व वलेण पहुवंभयत्तस्स ॥ २६९ ॥

इय पेल्लिज्जइ संजणियणिफुरं गिंम्मधूलिचडलं व । सहसा तं दीहणराहिवस्स सेण्णां खणद्धेण ॥ २७० ॥

तओ भग्गे सेण्णम्मि, समन्तओ वित्थरिए वंभयत्तवले, 'ण अण्णो उवाउ' त्ति अवलंबिऊण धीरत्तणं, उररीकाऊण
पोरुसं, अंगीकाऊण धीरपुरिसचोदिय, 'अण्णहा वि ण भोक्खो' त्ति कलिऊण समुहमुवट्ठिओ दीहणरवई । तओ समुहमुवट्ठियं
पेच्छिऊण दीहं अन्तोसंधुक्कियकोवजलणजालाकरालेणावि सामपुव्वयं चेव भणियं वंभयत्तेण जहा-भो ! 'तुमं अम्ह
पिउणो किल मित्तो' त्ति कलिऊण सयलसामंतेहिं समण्णियं तुह रज्जं पालणत्थं, ता पालियं तुमए एत्तियं कालं,
संपयं समण्णियण गच्छिज्जउ जहिच्छियं, खमियं तुज्झ मए त्ति । तओ दीहो वि एयमायण्णिऊण सामरिसं उल्लविउं
पयत्तो, जहा—

वणियाण वंभणाण य कैरसणियाण य कमागया वित्ती । विक्कमभोज्जा जायइ पुहई पुण णरवर्दिदाणं ॥ २७१ ॥

जा वेप्पइ खग्गं भंजिऊण रिउणो सिरम्मि दुक्खेहिं । सा रायसिरी अणहेण भणसु कइ मुंचइ समेण ? ॥ २७२ ॥

एवं च जंपमाणेणं चकलियचावुम्मुक्कवाणजालेण समोच्छओ वंभयत्तो । तेणावि तट्टणेहिं विणिवारिऊण तप्प-
हियवाणजालं विद्धो ससारही । तओ पहाराणंतरुप्पणकोवपसरेण अणवरयविसज्जियाणेयवावळ-भल्ल-मुग्गर-मुमुंदि-
प्पहारणियरेण उच्छाइओ से लोयणप्पसरो । एत्थावसरम्मि य 'ण अण्णपहरणसज्जो' त्ति कलिऊण सुमरियं चक्कं,
वल्लमां च किरिणजालाकलावकलियतरणिमंडलं व करयलगे । पेसियं च रोसारुणियलोयणिल्लेण तस्स वडणत्थं ।
विणिवाइओ दीहणरवई । 'जयति चक्कवट्ठि' त्ति समुच्छलिओ कलयलो ।

एत्थंतरम्मि य कयपुरवरहट्टभंणोवसोहो समागओ दंसणत्थं पुरजणवओ, पुइओ राइणा जहारुहं । अण्णस्स वि
जं जस्स जोग्गं तं तस्स काऊण पुरवरमइगंतुं पयत्तो । तओ वंभयत्तां पविसमाणं पेच्छमाणेण पुरजणवण्ण कयाओ
मुहक्कमलमइयाओ व्व गवक्खावलीओ, महिलामइयाओ व्व पासायमालाओ, भूसणमइय व्व रायमग्गा, हलहलारावमइयं
व पुरवरं ।

अवि य—

काहिं पि वामकरयलमणिदप्पणविफुरन्तपन्तीहिं । दइयससिमंडलिल्लहिं तक्कलणं पोण्णिमाहिं व ॥ २७३ ॥

काहिं पि सरसजावयरसरंजियचरण-करयल्लिहिं । णलिगीहिं पिव कमल्लुलसंतवालायचिल्लहिं ॥ २७४ ॥

काहिं पि संगमुच्छलियमेहलादामखलियगमणाहिं । करिणीहिं पिव संकलसंदाणियचलणपसरहिं ॥ २७५ ॥

काहिं पि समुब्भडरुइरमणहंरिदाउहंवरधरीहिं । अच्चुण्णायगरुयपओहरहिं पाउसदिसाहिं व ॥ २७६ ॥

१ 'क्कपोक्क' जे । २ 'यिह' जे । ३ 'कारि' जे । ४ 'रिपुणो' जे । ५ 'मुचउ सतेण' ख । ६ 'चक्किलिया' जे । ७ 'वणसोहो' जे ।

काहिं पि समुग्गयचलणकणिरमणिणेउरारविह्माहिं । सरयसिरीहिं पिव कणिरहंसकयकलयल्लिह्माहिं ॥ २७७ ॥
 काहिं पि थोरथणमंडलंतकचिण्णतरलहाराहिं । घरसरसीहिं व चक्कायमिहुणसमहिद्वियतडाहिं ॥ २७८ ॥
 काहिं पि विविहमणिमयविचिचवद्धुद्धकिरणजालाहिं । घरपरिचयवसमग्गाणुलग्गयवरहिणाहिं व ॥ २७९ ॥
 इय बंभयत्तपत्थिवदंसणसंजणियकोउहल्लाहिं । पुरसुंदरीहिं कीरइ पुरंधिमइयं व तं णयरं ॥ २८० ॥

तओ सयलजणजणियकोउहल्लपसरो पलोएन्तो पुरवरं दुवारदेससंठावियमंगलकलसाइसामग्गियं पविट्ठो णिययमंदिरं ।
 कओ सयलसामंतेहिं महाचक्रवट्टिरज्जाहिसेओ । पसाहियं चिरंतणचक्रवट्टिकेण छक्खण्डं पि भरहं । समागयं पुप्फवती-
 पमुहं सयलं पि अंतेउरं । एवं च संजायसमुच्चियचक्रवट्टिपरिवारोववेयस्स मे गच्छन्ति दियहा ।

अण्णया य महुयरीगीयाहिहाणणट्टमहिदंसणुजयस्स संजायं जाईसरणं । अओ उवरिं गड्ढियेत्था चेव तुम्हे त्ति ।
 ता भयवं इमिगा वइयरेण दुक्खेण संपत्ता मए भोया, ण सक्कुणोमि परिचइउं, किं बहुणा जंपिण्ण ? त्ति । तओ
 एयमायणिऊण 'विचित्ता कम्मगति' त्ति कलिऊण ठिओ तुण्हिको महरिसी । बंभयत्तो वि संतेउरो पणमिऊण मह-
 रिसिं पविट्ठो णयरं । भयवं पि अणगारो अणेयतवोविसेससोसवियकम्मपरिसो सुहज्जवसाणसंठिओ अउब्बकरणप्प-
 ओणेण समुप्पाडिऊण केवलं मोक्खमुवगओ त्ति ।

इओ य तस्स बंभदत्तचक्रवट्टिणो संपण्णजहासमीहियविसयमुहं रज्जमणुवालयंतस्स गओ कोइ कालो । एगया य
 समागयाए भोयणवाराए समागतूणमेगेण दियाइणा भणिओ णरवई जहा-हो महाराय ! अज्ज मह एरिसी इच्छा जइ
 चक्रवट्टिभोयणं भुंजामि, 'तं च अण्णत्थ ण संपज्जइ' त्ति कलिऊण तुमं पत्थिओ सि त्ति । तओ तमायणिऊण बंभयत्ते-
 ण भणियं-ण इमं मह भोयणं तुम्हे भोत्तुं खमा, जओ चक्रवट्टिस्सेव इमो आहारो परिणामं गच्छइ, ण अण्णस्स त्ति ।
 बंभणेण भणियं-जइ तुम्हविहाणं पि महाणुभावाण अण्णमेत्तस्स वि कए एत्तियमालोवियच्चं ता णिरत्थया रायलच्छी,
 णिप्फलं छक्खंडभरहाहिवत्तणं, वहवे इह समुज्झिऊण कालवसमुवगया णरवइणो, तुज्ज विण इमा सासय । त्ति भण-
 माणस्स बंभणस्स समुप्पण्णामूएण पडिवण्णं जहा-भुंजमु त्ति । तओ भुंजाविओ सपुत्त-धूया-णत्तुओ बंभणो । भोत्तूण
 बंभणो गओ णिययावासं । ताव य अत्थंतरमुवगओ सहस्सकिरणो, समागया रयणी । दरपरिणयम्मि य आहारे
 अच्चंतजणियउम्मायप्पसरो अणवेक्खियपिडि-माइ-धूया-वहिणिवइयरो गुरुवम्महमयपणट्टिविवेओ पयत्तो परोप्परमकज्ज-
 मायरिउं बंभणपरियणो जाव परिणामं गओ आहारो । पहाया रयणी । मुणिओ एस वइयरो सयललोएण । लज्जिओ
 बंभणपरियणो । बंभणो वि लज्जाए लोयाण वयणं पि पुलोइउमपारंतो णिग्गओ णयराओ । चित्तिउं च पयत्तो-पेच्छ
 कहमहमणिमित्तवेरिणा बंभयत्तेण भोयणमेत्तस्स कए विरुद्धायरणं कारिओ ? त्ति चित्तयंतस्स संजाओ अमरिसो ।
 'केण उण उवाएण पच्चु(१३)वयारो णरवइणो कीरइ ?' त्ति ज्ञायमाणेण कओ बहूहिं अ(१३)वयरियच्चविण्णासेहिं
 गुलियाधणुविक्खेवणिउणो वयंसो । कैयसब्भावाइसयस्स य साहिओ णिययाहिप्पाओ । तेणावि पडिवण्णं सेरहसं ।

तओ अण्णया णिग्गच्छमाणस्स णरवइणो भित्तिथलंतरियतणुणा अमोहवेहत्तणओ गोलियाए समकालं चेय तेण
 ताडिऊण फौडियाणि अच्छीणि । तओ तं पुत्तंतमवगच्छिऊण समुग्गउग्गकोवग्गिणा णिहणाविओ सपुत्त-बंधवो पुरोहिओ ।
 अण्णे वि णिहणावेऊण वहवे बंभणा राइणा भणिओ मंती जहा-एयाण अच्छीणि थालम्मि पक्खिविऊण मैम पुरओ
 ठेवेहि, जेणाइं णिययहत्थाणं पि ताव परामुसमाणो सुहमुप्पाएमि त्ति । मंतिणा वि मुणिऊण तस्स कम्मवसत्तणओ
 तिव्वमज्जवसायविसेसं वेत्तूणं लेमुंरुडयतरुणो वहवे फेलट्टिया पक्खिविऊण थालम्मि णिवेइया पुरओ । सो वि हु णर-
 वई 'कयत्थो म्हि'त्ति मण्णमाणो कयरोइज्जवसाओ परामुसंतो दियहमइवाहेइ । एवं च अच्छिववएसपणामिज्जमाणफल-

१ सिरिबंभदत्तं जे । २ 'महिगदणु' सु । ३ 'यत्थ च्चेव तुम्हे वि जे । ४ णयरिं सु । ५ 'ण उपा' सु । ६ 'गवेलाए सु ।

७ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ८ कयसंभावस्स जे । ९ सरहस्सं सु । १० पाठियाणि जे । ११ मए जे । १२ ठेवेह सु ।

१३ लेमुंरुडय' जे । १४ फलमट्टिया सु ।

द्विलयविसेसं परामुसमाणस्स अइकन्ताइं केइवयदिणाणि सत्त वाससयाइं सोलमुत्तराइं । तओ खीणम्मि आउए तहद्विय-
पवड्ढमाणरोइज्झवसाणो वेय कालं काऊण समुप्पणो महात्तमाए गिरयपुडवीए अपइट्ठाणे णरए तेत्तीससागरोवमाऊ
णारओ त्ति ।

साम्बलिक - आचार्य श्री सुविज्झित्तार जी कविराज

एयं च मुणिऊण अण्णेणावि साहुणा णियाणं न कायच्चं ति ॥

एत्थ समप्पइ चरियं पयडं सिरिबम्भयत्तणरवड्ढणो । बारसमचकिणो कयणियाणवलवत्तणुफालं ॥ २८१ ॥

इति महापुरिसचरिए सिरिबम्भयत्तचक्खवट्ठिणो चरियं परिसमत्तं ॥ ५२ ॥

[ग्रंथाग्रम्-९७००]



[५३ पाससामिचरियं]



उप्पज्जइ को वि महाणिहि व्व परहियपसाहणुज्जुत्तो । णिइलियगरुवविघोवसग्गवग्गो महासत्तो ॥ १ ॥

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे तुंगुब्भट्टभवणोववणमणहरं परमरिद्धिसमुदओववेयजणसंकुलं पुरवरं णामेण पोयणपुरं । तत्थ य ससहरो व्व दरियारिकमअसकोइवविधासपसरो अरविंदो णाम णरवती । तैस्साणेयसत्थपर-
मत्थाहिगमविमुद्धबुद्धी अहिगयजीवादिपयत्थवित्थरुप्पणसम्मइंसणो विस्सभूती णाम पुरोहिओ । तैस्सोभयलोय-
हियाणुवत्तिणी अणुंधरी णाम भारिया । तीए सँह जहाविहवं विसयमुहमणुहवन्तस्स समुप्पणा जहकमं कमढ-मरुभूइ-
णामा दोणि पुत्ता । वड्ढिया य देहोवचणं, संपत्ता जोव्वणं । णिव्वत्तियाइं पाणिग्गहाणइं, जेद्वस्स वरुणाए सँह, कणि-
ट्टस्स य वसुंधराए । एवं च जाइ कालो ।

अणया य सावयभम्मज्जयमई कालं काऊण विस्सभूई गओ मुरलोयं । सा वि हु अणुंधरी तच्चिरहओ सोयाण-
लाउलिज्जमाणसा तहाविहवयविसेससोसवियतणु चइऊण घरावासं णिग्गया समानी परलोगं गय त्ति ।

तओ ते कमढ-मरुभूइणो काऊण पिति-भादीण मयकरणाइयं ववगयसोयपसरा संवुत्ता । संठिओ जेद्वो 'णिहधम्मम्मि ।
कणिट्टो उण जिणवयणभावियमती णउच्चन्तेमासत्तविसयपसरो सयलसत्थत्थवियारणिउणो परम्महो संसारविलसिय-
व्वेसुं, णिप्पिवासो विसयतप्पाए जणियपोसहोववेओ रयणिदिणं पि बहुसो जिणभवणम्मि चेय गमेइ । तओ तस्स सा
भज्जा वसुंधरा मणहरजोव्वणुब्भेयभूसियावयवसोहा विसलय व्व सयलजणमणमोहणी संजाया ।

तं च तारिसरुवं पेच्छिऊण कणिट्टस्स पणइणि जेद्वभाउणो कमढस्स दुण्णिवारत्तणओ मोहप्पसरस्स, णिव्विवेयत्तणओ
विसयविलसियाणं चलयं चित्तं, समुप्पणो तीए उवरिं अणुराओ, वियंभिओ अयज्जायरणाहिलासो । जेण अंगीकाऊण
णियकुलकलंकाववायं, उररीकाऊण दुग्गइदुहपरंपरं सवियारविब्भममालकिउं पयत्तो । एवं च पइदिणं भणन्तेण साणुराय-
मावज्जियं तीए चित्तं । अहवा—

घडियं पि विघडइ चिय पेम्मं दूरदियं पि संघडइ । भणिइविसेसपउत्ता वाणी दूइ व्व ण हु चोज्जं ॥ २ ॥

सा वि हु वसुंधरा अविण्णायविसयमुहसंभोया 'पियच्चत्त' त्ति कलिऊण दुद्धरत्तणओ वम्महपसरस्स संपलग्गा
कमढस्स । एवं च परोर्परं पवड्ढिओ पेम्मपयरिसो । मुणियमेयं वरुणाए । तं च तारिसं दट्ठमपोरयंतीए ईसाव-
सुप्पणपउरमच्छराए सिट्ठं जहावदियं मरुभूइणो । तेणावि असद्वहमाणेण अवहीरियं तीए वयणं । पुणो पुणो वि सा-
हमाणीए चित्तिउं पयत्तो मरुभूती—

‘ण भणियमेत्तं चिय हियमदिच्छुणा तं तदेव चेत्तव्वं । जाव ण दिट्ठं पच्चक्खमप्पणा किमिह मह कज्जं ?’ ॥ ३ ॥

परियप्पिऊण य चित्तम्मि एवं ‘गामंतंरं गच्छिस्सामि’ त्ति ताण पुरओ वोत्तूण णिग्गओ णियमंदिराओ । पओसम्मि
जणियजरकप्पडवेसो दीहरद्धानसंसियपरिस्समो परियत्तियरुव-भासाविसेसो आवासयपत्थणत्थमुवत्थिओ कमढपु-
रओ । तेणावि बहलतमत्तणओ बहुलपओसस्स, अवियारपउरत्तणओ मइविसेसस्स, जणियकारुणभावेण भणियं-
मट्ठ ! ईहालंदिए सच्छंदं णिवसमु त्ति । तओ पमुत्तो मरुभूई । वियाणणुज्जुत्तचित्तेण य मुणियं जं जहावदियं तं ताण वव-

१ कोइ जे । २ तस्स य जेयं सु । ३ तस्स य लोयं जे । ४ समं जे । ५ णिहधम्मो सु । ६ 'नविस्सासत्तप्पसरो सु ।

७ भणी (णिइ)विसेसपउत्ता वां सु । ८ 'रं वड्ढिओ पेमं सु । ९ 'पारंतीए सु । १० इहालंदिए सु ।

सियं ति । तओ तं दट्ठुमसहमाणो अन्तोसंवडिदयकोवजलणजालाकरालियहिययावेओ लोयाववायभीरुत्तणओ कह कह वि संवरिऊण चित्तवियारं णिग्गओ तप्पपसाओ । गओ राइणो समीवं । साहियं जहावट्ठियं । णरवइणा वि समुप्पण्ण-कोवेण समाइट्ठा णिययपुरिसा एवं जहा-णियकुलकलंककारिणमेयं कम्मदं दुरायारं रासहम्मि समारोविऊण पहायविर-सडिण्डिमुत्तालतालणपसरं पुरवराओ णीणह चि । णिव्वत्तियं च तं तेहिं राइणो समाइट्ठं ।

तओ सो कम्मदो तहाविहविडंबणुप्पण्णामरिसपसरो किं पि काउमपारन्तो णिग्गओ णयराओ । गओ गरुयवेरगुप्पण्ण-परलोयहियायरणचित्तो वणं । गहियपरिव्वायगल्लिओ य समाइत्तो कट्टयरमण्णाणतवमायरिउं । तं च वइयरं वियाणिऊण समुप्पण्णपच्छायाओ मरुभूई खामणाणिमित्तं कम्मदसमीवं गओ । णिवडिओ तस्स चलणेसु । तेणावि समुप्पण्णकोवा-इसण्ण विम्हरिऊण परिव्वायगतणं, सुमरिऊण तज्जणियविडम्बणाणुसयं पायवडियस्सेव मरुभूइणो मुट्ठाणोवरि विमुक्का समासण्णदेसट्ठिया चेत्तूण महासिला । पहारविहलत्तणजणियचेयणस्स य स चेय समुप्पाडिऊण पुणो वि पक्खित्ता ।

तओ गुरुवायघुम्मिरुव्वन्तवयणरुहरो तिक्कवियणाविसट्टमहट्टज्झवसाणो मओ समाणो समुप्पण्णो समुब्भट्ठुत्तंगि-रिणिविडसंकडिळ्ळिम्मि महल्लपल्लुल्लसियसल्लइल्लिम्मि विविहवणसंडमंडियपयंडदंडयारण्णम्मि पवरकरिणीज्झमज्झम्मि एकाए पवरकरिणीए गव्वम्मि । जाओ कमेणं । णिव्वडियसयलदेहविहाओ य संपत्तो जोव्वणं । जाओ सयलकैरिणीण जूहाहिवो । जणियविहिरइसंभोयपसरकयकीलाविसेसो सच्छंदं वियरिउं पयत्तो । कह ?—

अण्णोण्णकीलणुप्पण्णपेम्मसंजणियरइरसविलासो । लीलापरिसकणगइविसेससंजणियसोहग्गो ॥ ४ ॥
करिणिकरग्गुल्लूरियकोमलपल्लवपयप्पियाहारो । णियसोडग्गपरासुसियपणइणीदेहपरिणाहो ॥ ५ ॥
वियडकवोलत्थलगलियवहलमयसलिलपरिमलुग्गारो । अबन्तगहिरसरसलिलमज्जणुल्लसियकयकीलो ॥ ६ ॥
इय सच्छंदपयप्पियविहरणसंजणियहिययपरिओसो । रमइ जहिच्छं बहुकरिणिपरिगओ तत्थ करिणाहो ॥ ७ ॥
इओ य तस्स अरविंदणरवइणो अणैयैणग-णगर-पट्टण-मडम्ब-दोणमुहपरिक्खित्तं पउरकरि-तुरय-पाइक्क-पणयाणन्तसा-मन्ताहिट्ठियं रज्जमणुवालयंतस्स गच्छन्ति दियहा ।

अण्णया य समागए सरयसमए पासायैसंठिओ बहुविहकीलाविलासणिग्गं कीलिउं पयत्तो सह पियाहिं । केरिसाहिं च तहिं ?—

कसिणधणकुंतलुप्पीलकलियधम्मेल्लकुमुमदामाहिं । मयणाहिपरिमलुग्गारगारवग्गवियसोहाहिं ॥ ८ ॥
मइरामयमउलावियपहोलिरायम्बलोयणिट्ठाहिं । अविरलसेयलवावज्झमाणदंतुरियमालाहिं ॥ ९ ॥
अहिलसियरइसमागममंथरवित्थारियंगभंगहिं । मासलमलयरसालिद्धपीणथणमंडलिट्ठाहिं ॥ १० ॥
संकंतमहुरसामोयमुहयसंजायवयणपवणाहिं । ववएसजंपियुप्पाइउब्भडाणंगसंगाहिं ॥ ११ ॥
णीसेसकलाहिगमुल्लसन्तसोहग्गुणमहग्गहिं । लीलापलोयणोप्पियपियहिययासंसियव्वाहिं ॥ १२ ॥
इय एरिसाहिं पावियवम्महवियणाविंज्झहिययाहिं । पवरंतेउरतरुणीहिं दिण्णमण-णायणसोक्खाहिं ॥ १३ ॥

एयारिसाहिं च णियपणइणीहिं समयं कीलमाणेण पलोईयमच्चुच्चमुण्णमन्तमुरचावचारुच्चंचिल्लियं पप्फुरियतरलतडि-विलसिउब्भासियं केलासगिरिसिहरविग्गं महग्गकूळं गयणंगणे । तं च दट्ठूण भणियं पत्थिवेण-अहो ! पेच्छ पेच्छ "सिप्पिविणिम्मियस्स व पवरमंदिरस्स अबन्तरम्मया जलहरपडलस्स । चि भणमाणस्स चेय जराजज्जरियरुवपसरं व माणुसं अण्णारिसं जायं । तओ तं तारिसं णियच्छिऊण य लहुकम्मत्तणओ खओवसममुवगयं चारित्तमोहणीयं, विरत्तो संसारवाससंगाओ, खओवसमं गए य जाणावरणे समुप्पण्णं ओहिणाणं । परियणपडिबोहणत्थं च भणिउं पयत्तो, कह ?—

१ "व्वमंतवय" जे । २ करिण सु । ३ "यणसर" जे । ४ "यम्मि सं" सु । ५ "विदाग्गदग्गभिः । ६ "इयं भरियसयल्लणहतरालं पप्फुरि" जे । ७ सिप्पिउप्पाइयस्स सु । ८ "सं दट्ठूण लहुकं" जे ।

चोज्जमिणं तं तारिसवित्थारियत्तरत्तडिविलासिद्धं । परिगलियं कइ खगगलिपसोहमियमुपइ घगजालं ? ॥१४॥
 सव्वाण वि एस गती जयम्मि भावाण संभवन्ताण । संसारे बहुविहदुक्खलक्खवसोक्खपसरम्मि ॥ १५ ॥
 जेण जुवाणत्ते णियसुरूपसोहग्गमव्विण्ण ददं । परिसक्किज्जइ उम्मुहवित्थारियेणयणमग्गेण ॥ १६ ॥
 तेणेय जराजज्जरपरिणामोअलुतगुविहोएण । अग्गंसाऽऽसत्तकरेण णीसइ वेविरंणेण ॥ १७ ॥
 णयणाइं जाइं लीलापलोयणोप्पियमयाइं तरुणीण । आसि पुणो वयविरमम्मि ताइं अण्णारिसाइं व ॥ १८ ॥
 सव्वा जे आसि कलुल्लसन्तगंअव्वलालसा सुइरं । सण्णाविहावियत्था वयपरिणामम्मि ते चेय ॥ १९ ॥
 जो आसि भमिरभमरंजणुज्जलो कसणकेसपव्वभारो । सो चेय विसयवोसट्ठकासकुसुमप्पहो होइ ॥ २० ॥
 'इय सव्वस्स वि वयपरिणइए जायंति जंतुणो भावा । एयारिस' ति कल्लिऊण तेण धम्मज्जमो जुत्तो ॥ २१ ॥

अण्णं च—

जीवो अणादिवहुभवकालज्जियगरूपकम्मसंताणो । परिभमइ दुहसयावत्तदुग्गमे भवसमुद्दिम्मि ॥ २२ ॥
 णरयम्मि णिययकयकम्मवसपरव्वसपणामियप्पाणो । अणुहवइ विविहसत्थाहिपायसंजणियवियणाओ ॥ २३ ॥
 तिरियत्तणे वि वाहण-डहण-ऽकण-कणकप्पणादीणि । अणुहवइ विविहदुक्खाइं खु-प्पिवासापरिस्संतो ॥ २४ ॥
 भाणुस्सम्मि वि दारिद्वदोस-दोहग्गदूसियावयवो । जम्मं विसयासासंपडंतदुहिओ समागमइ ॥ २५ ॥
 अह कइ वि विसयसंपत्तिपत्तसोक्खो खणं सुही होइ । पियविरह-ऽप्पियजणसंपओयजणियं दुहं लहइ ॥ २६ ॥
 देवत्तणे वि दट्ठं महिड्डि-सक्काइणो मुरसमूहा । जणियाहिओग्गमीसावसाइयं लहइ बहु दुक्खं ॥ २७ ॥
 इय एरिसम्मि वित्थयदुहणियरपरंपराविसालम्मि । संसारे सविवेयस्स कस्स वा होज्ज ण विराओ ? ॥ २८ ॥

तओ एवंविहं परियत्तियरसभावन्तरं णरवइं दट्ठण भणिउं पयत्तो सयलो वि सुंदरीयणो जहा-अज्जउत्त ! किमे-
 यमयंडे चेव तुम्हाण एरिसमसमंजसं जंपियं ? जेण दरिसियरसंतरायारो पल्लट्टियरुओ विव लक्खिज्जसि, कहिं गया ते
 तुह तरलतारउव्वत्तलोललोयणा दरफुरन्तपम्हपडला पलोइयव्ववियारा ?, कहिं वा विलासकयभूमंगविम्ममुग्गेयभूसणप-
 रम्महो भालमग्गो ?, कहिं वा चवपसंजंपिउप्पणवहुपियप्पयप्पवारपउराइं पवरजंपियव्वाइं ?, कहिं वा हिययन्निभतरपवियंभि-
 उम्भडुकंठसिट्ठलट्ठसंठाणो रमियव्वाहिलासो ? ति, ता केण वा दंसियं तुम्हाण विलीयं ?, केण वा कयमाणाखंडणं ?,
 केण वाऽवरदं ? । ति भणमाणस्स दइयाजणस्स भणियं णरवइणा-ण खलु तुम्हाण केणावि पडिक्कलमायरियं,
 किंतु सव्वमेयमवितहं संसारविलसियं संभाविज्जइ, जेण कम्मपरिणइव्वसगयस्स जंतुणो पिओ वि अप्पिओ, अणुकूलो
 वि पडिक्कलो, सुयणो वि दुज्जणो, भित्तो वि सत्तू, संपया वि आवया, कलत्तं पि गोत्ती, रज्जं पि मच्चु ति । कइ ?—

जह पवरचित्तिभित्ती सल्लिउप्पुसिया ण देइ परभायं । तह जर-भरणाळिद्धं तणू वि सोहं ण पावेइ ॥ २९ ॥
 जह णिणयाओ उवहिम्मि ण य णियत्तन्ति णिवडियाओ पुणो । तह ण पुणो पल्लट्ठति तणुम्मि रुवाइसोहग्गं ॥३०॥
 जह उग्गओ रवी णहयलम्मि ण खणं पि णिच्चलो होइ । तह तारुणं जीवाण होइ ण थिरं मुहुत्तं पि ॥३१॥
 मारुयविहट्टियं णेय होइ जह तरुदलं खणं पि थिरं । तह विविहवाहिकलियं जियाण जीयं जए ण थिरं ॥३२॥
 जह सुसियपायवे णेय होन्ति वेल्लहलपल्लवुप्पीला । विसयविलासा जायन्ति णेय तह परिणए देहे ॥ ३३ ॥

१ "यगमणम" जे । २ "हाणेण सु । ३ "तो ॥ २१ ॥ इत्थेवमादि बहुहा अणिव्वाइभावणामगं भावयन्तो भणिओ सयलत्तेतरयुंदरी-
 हिं जहा-अज्जउत्त ! किमेयमयंडे चेव तुम्हाण एरिसमसमंजसं जंपियं ? जेण दरिसियरसंतरायारो व पल्लट्टियरुओ इव लक्खिज्जसि, परिहरियसय-
 ल्हावभाओ हिययम्मि किं पि चित्तयंतो चिट्ठसि, ता केण वा दंसियं तुम्हाण विलीयं ? केण वा जे, (२८ भाषानन्तरम्) । ४ तुम्ह के सु ।
 ५ "वसमुवगयस्स जे ।

जह हव्ववहस्स सिहा णिब्बाणा ण य पुणो वि पज्जलइ । तह चेद्वा वि हु सयल्लिदियाण विगया ण संघइइ ॥३४॥
 जह पब्बाया कुमुमाण मालिया णेय लहइ परिभोयं । तह विसइच्छं वयपरिणयंगलट्ठी ण पावेइ ॥ ३५ ॥
 जह पवणपेल्लिओ मुकदारुछारो दिसोदिसिं विगओ । ण मिलइ पुणो वि तह बोलियं खु मणुयाण माणुस्सं ॥३६॥
 इय सलिलबुबुयुम्भडसंझाराओवमम्मि जीयम्मि । विसयमुहेसु थिरासा कह कीरउ जाणमाणेहिं ? ॥३७॥

एवं च पडिबोहिऊण पणइणीपमुहं सयलं पि परियणं, काऊण णिययतणयस्स रज्जाहिसेयं, परिचइऊण तणं व
 रायलेच्छि णिग्गओ णयराओ विमेलमइसहाओ गिहीयसमणलिंगो अइदुकरतवोविसेससोसविचणियतणु गामाणुग्गामं
 विहरिउमाहत्तो । केरिसो य ?—

मण-वयण-कायसयल्लिदियत्थगुत्तो विहावियमुहत्थो । विमलगुणकिरणणिदलियपावतिमिरो मियंको व्व ॥ ३८ ॥
 णीसेसकलुसणिदलणजायमुहदंसणाहिंरामिल्लो । णहमग्गो व्व विरायइ विमुक्कघणपंकपम्भारो ॥ ३९ ॥
 तवणहरपहरदारियसयलमयट्ठाणलद्धमाप(ह)प्पो । पंचाणणो व्व वियरइ वम्महमायंगणिम्महणो ॥ ४० ॥
 इय एवं णवविहवम्भपालणाभिग्गहमाकयणियमो । लद्धाणुण्णो विहरइ एकलुविहारपडिमाए ॥ ४१ ॥

एवं च विहरमाणस्स सम्मेयसेलवंदणणिमित्तमुप्पण्णा मती । पयट्ठो सागरदत्तसत्थवाहेण समयं । पणमिऊणं च
 भणिओ सागरदत्तेण-भयवं ! कहि पुण तुम्हेहिं गंतव्वं ? । मुणिणा भणियं-वंदणणिमित्तमट्ठावयगिरिं । सत्थवाहेण
 भणियं-भयवं ! केरिसो उण तुम्हाण धम्मो ? । तओ मुणिणा सम्मत्तमूलो पंचमहव्वयाइओ साहिओ जतिधम्मो, पंचाणु-
 व्वयाइओ गिहत्थधम्मो [य] । तं च सोऊण वियलिओ कम्मरासी, पणट्ठं मिच्छत्ततिमिरं, उल्लसिओ धम्मज्जमो, गहियं साव-
 यत्तणं । एवं च पइदिणं धम्मकहामुण्णैवावडस्स जंति दियहा । वइइ सत्थो । कमेण संपत्तो तं महाडइं जत्थ सो वणकरी ।

तत्थ य पलोइयमेकं महासरवरं, जं च पडिच्छंदयं पिव णहाहोयस्स, अदायमंडलं पिव तिलोयलच्छीए,
 भुवणपुण्णसम्भारं पिव सलिलरुवेणोवट्ठियं, तुहिणसेलसिहरं पिव विण्णीणकयावट्ठाणं(?), मियंकविम्बं पिव रसभावपरियणं,
 णिग्गामण[भ]ग्गं पिव जलणिहीणं, मणितलिणं पिव धरणिचिलयाए, फलिहगिरिजालं पिव जलयरपरिगयं, विमलस-
 लिलत्तणओ अंतोविहाविज्जमाणसयलसरुवं तरलाणिलुब्बेहिरजलतरंगसीयरासारपडिवज्जन्तसुरचावखंडमंडियं, अवि य-

अणवरयपयत्तुकलियसंकुलं जोव्वणं च रमणीयं । उकंठियं च कोमलमुणाललइयापरिक्खित्तं ॥ ४२ ॥
 भारहचरियं पिव जायपंडु-धयरट्ठपक्खविक्खोहं । विंझारणं च वियम्भमाणवरपुंडरीओहं ॥ ४३ ॥
 मयरद्धयं च संठियमयरमुहुम्मारणिग्गयवियारं । कंसवलं पिव भसलउलभीयमुहकुवलयावीहं ॥ ४४ ॥
 कंदु(?) कंदुवणमंडलं पिव णायसहस्सोवहुत्तपयणिवहं । मलयगिरिं पिव [व]हुयरचंदणवणसिसिरपरिवेसं ॥ ४५ ॥
 वालचरियं च तडरुहसंठियहरिजलणिवायकयकीलं । दिव्वं च अणिमिसालोयदिण्णदिट्ठीवियारिहं ॥ ४६ ॥
 इय सयलजंतुसंताणदिण्णणिब्बाणकारणं दिट्ठं । वैरकमलसंडमंडियमणोहरं सरवरं तत्थ ॥ ४७ ॥

तओ तस्स पलोयणामेत्तेणावि पणासियपहपरिस्समपिवासाइसओ सेमावासिओ तथासण्णम्मि सयलो वि
 सत्थो । पयत्तो रंधण-पयणाइमायरिउं । एत्थावसरम्मि य सो वणकरी सयलकरिणीपरिवारिओ सच्छंदकयजहा-
 विहारो सल्लिलपाणणिमित्तमागओ सेंसरवरं । समोइण्णो सलिलमज्जम्मि । पीयं च पउरणीलुप्पलकमलपरिमलालिद्ध-
 भमरउलगेयमुहलं सरजेलं, कडिइयं च णियकरुल्लूरियदीहरयरकंदपडिवद्धदरदलउडुब्बेलकमलकेसरपरायपिंजरीकय-
 भिसिणीवलयं, पक्खित्तं च थोरयरकरमुंकारमारुउच्छित्तसिसिरसीयरासारवइयरसित्तकरिणिगतं पउरणीरं, कवलियं
 च कोमलमुणालियावलयपरिक्खित्तसरसिंघाडउम्भं जलरुहवियाणं ति ।

१ 'लच्छी' जे । २ 'विमलसहावो नि' जे । ३ 'विहरिउं पयत्तो' । तओ अण्णया कयाइ एकाविहारित्तणेण विहरमाणस्स सम्मेयं जे,
 (५१ वायान्तरम्) । ४ 'णविवावडस्स' जे । ५ 'हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जे पुस्तके नास्ति । ६ 'अह सयलं' जे । ७ 'वणकं' सू । ८ 'एव' ॥
 एवं पलोयं' सू । ९ 'समासाविओ' सू । १० 'सयलं' सू । ११ 'सरं' सू । १२ 'जलं, कवलियं च कोमलं' जे ।

एवं च तर्हि करिणीर्हि समं कयवहुविहकीलाविलासो समुत्तिष्ठो सरवराओ वणकरी । वलम्भो पालिसिहरं । पलो-
इयाइं पासाइं । मच्चुणो व्व दिट्ठिगोयरम्मि णिवडिओ सत्थो । तओ दंसणसमणंतरमेव सहस चिय कौडलियसौडेंदंड-
ग्गभाओ उब्भडकयकंठगज्जिओरल्लिवहिरियदिसामुहो णिकंपपरियडतट्टवियकणजुयलो गुरुयर्वेउक्खित्तपयणि-
क्खेवो गिलंतो व्व तं दिसावल्लं पहाविओ सत्थाहिमुहं करिवरो । दिट्ठो य सरयसमओ व्व कोमलारुणुव्वेल्लपुक्खरो,
विण्णुकुमारो व्व कैयतिवतीविलासपत्तरो, घणसमओ व्व णिययवित्थारोत्थयणहंमाणो सयलसत्थेण । पलोचणानंतरं
च मुहा-उमुहकम्मवसय व्व पाणिणो विगया सव्वओदिसं पंथिया । मुणिवरो वि अवहिप्पओएण मुणिऊणाऽऽसयं ठिओ
तत्थ पडिमाए । तेणावि हु करिणा सयलकरिणीयणपरिवारिण असमंजसं दरमलिऊण सयलसत्थरित्थं
णिज्झायमाणेण दिट्ठो सो महामुणी । पहाविको तैत्तोऽभिमुहं । तं च तारिसं गयभय-हास-रोसप्पसरं पलोएमाणस्स
वियलिओ मच्छरो, विगओ मारणाहिलासो, वित्थरिया अणुकंपा, समुल्लसिओ तप्पहावओ संवेओ त्ति । तओ
तमालेक्खगयं पिव पलोएऊण करिवरं मुणिणा संवरिओ काउस्सग्गो । दिट्ठो णिच्चलइयसयलदेहविहाओ अंजणगिरि-
वरो व्व पासपरिसंठिओ वणकुंजरो । तप्पडिबोहणत्थं च अब्बन्तमुहसंजणणीए भार्इए भणिउं पयत्तो जहा—

भो भो मरुभूइ ! किं ण सुमरेसि मं अरविंदणामाणं णरवइं अप्पणो वा दियोइसंभवं पडिवण्णजिणमयं मणुय-
जम्मं जेण एवंविहं पयोवइवयारिणं कम्ममायरसि ? । तैओ एयमायणिऊण मुणिणा भणियं वियप्पंतेण सुमरिया
पुव्वजाइं कैरिणो । सुमरणान्तरं च धरणियलमिलंतुत्तिमंणेण पणमिओ मुणी । मुणी वि मुणियचित्तविती भणिउं
पयत्तो, कह ?—

“लब्भन्ति लोललोयणल्लडप्पहुब्भासियावयंसाओ । दइयाओ रुव-सोहग्गसालिणीओ, ण जिणधम्मो ॥ ४८ ॥
लब्भन्ति विविहमणि-कणय-रयणभवणोवहोयसंजुत्ता । रिद्धिविसेसा, ण उणो कर्हि पि जिणैभासिओ धम्मो ॥ ४९ ॥
लब्भन्ति रुइरकरि-तुरय-संदणुदामपकपाइका । णिव्वाणकारणं ण य कर्हि पि जिणैभासिओ धम्मो ॥ ५० ॥
लब्भन्ति खवियपडिक्खपक्खलक्खा वि रज्जसंभोया । ण उणो संसारायडपडणुद्धरणक्खमो धम्मो ॥ ५१ ॥
लब्भन्ति रूव-सोहग्गकलियविण्णाणणाणविज्जाओ । ण उणो भवजलहिनिबुद्धमाणजणतारणो धम्मो ॥ ५२ ॥
लब्भन्ति मणहरोवणयपवरसुरसुंदरीसैणाहाइं । इंदत्तणाइं, ण उणो णरेहिं मोक्खप्फलो धम्मो ॥ ५३ ॥
इय सैव्वं चिय लब्भइ जयम्मि जं किंचि होइ दुल्लभं । एकं मोत्तुं करिणाह ! वीयरगुग्गयं धम्मं ॥ ५४ ॥

ता हो महागइंद ! जइ मुणिओ तुमए अप्पा ता मुच्चउ सयलसत्तोवइवो, सिट्ठिलिज्जउ पमायविलसियं, अबलंवि-
ज्जउ सप्पुरिसचरियं, वेप्पउ “पंचाणुव्वयाइओ सावयधम्मो” । त्ति भणमाणस्स ‘पडिच्छामि’ त्ति सण्णाविहावणाणिमिच्चं
चालियं उत्तिमंगं, पसारियं करमं । मुणिणा वि मुणिऊण भावत्थं पणामिओ से सयलो वि सावयधम्मो । गहिय-
धम्मसारो य गओ जहागयं गयवरो ।

एत्थावसरम्मि य करिचरियविम्हइयमाणसो सह स्तागरदत्तेण ‘अहो ! मुणिणो पहावो’ त्ति भणमाणो सम्मिलिओ
सयलो वि सत्थो, णिवडिओ मुणिणो चल्लेणजुयलेसु, पडिवण्णो वइवेहिं धम्मो, गहियमण्णेहिं अणुव्वयाइयं । दिण्ण-
पयाणओ गओ तप्पएसाओ सत्थो । मुणिवरो वि गंतुण अट्ठावयं बंदिऊण जहाविहिं भयवन्ते पयत्तो संजमुज्जोय-
मायरिउं ।

सो वि हु करिवरो गहियसम्मत्तसारो चक्खवेक्खियमहियलविण्णमंदपयसंचारो । छट्ट-उट्टमाइसवचरणकरणुज्जओ
रसपरिचायपरिणयमई परिचत्तसयलणियज्जहसंगो गिम्हुम्हायवपरियावविसेससोसवियणियतणु वरजइ व्व समियाइ-

१ ‘ग्गभाओ’ सू । २ ‘पयविकखेवो’ जे । ३ कलत्रपदीयिजसप्रसरः । ४ ‘ग्गो पलोइओ सवल’ सू जे । ५ ‘ऊण सयं’ सू । ६
तत्तोवमुहं जे । ७ पुत्तोयमां जे । ८ भारहोए भणियं पं जे । ९ द्विजातिसम्भवम् । १० तओ तमां सू । ११ करिणा सू । १२-१३
‘गदेसिओ’ जे । १४ ‘वयं’ जे । १५ ‘सहायाइं’ सू । १६ ‘सव्वं पि य’ सू । १७ ‘पंचमहाणुज्जं’ सू । १८ ‘णकपल्ले’ जे ।

संजमुज्जुत्तमाणसो फामुयसेज्जा-ऽऽसण-भत्त-पाणणिरओ धम्मज्झाणणिहिच्चित्तो गमेइ कालं ति ।

इओ य सो कमढपरिच्चाइओ सहोयरवावायेणेणावि णोवसन्तकसाओ समहियपयट्ठञ्जवसाणो णियआउयपरि-
णईए कयपाणपरिच्चाओ समुप्पणो कुक्कुडसप्पभावेणं । संजायसरीरोवचण सयलसत्तसंहारकारी पयत्तो पुहईए पय-
रिउं । परिब्भमंतस्स य तस्स णिवडिओ दिट्ठिगोयरम्मि सो सल्लिहाहारणिमित्तमागओ वणकरी । पीयं च रवियर-
परियावणाफामुयं सलिलं । णिग्गच्छमाणो य भवियव्वयाए खुत्तो महल्लचिक्खल्लम्मि । णित्थामत्तणओ णिग्गंतुमपारं-
तो गयवरो पुच्चभवुप्पणकोवाइसएण य समुप्पइऊण कवल्लिओ कुंभभायम्मि कुक्कुडभुयंगमेणं । तओ मुणिऊण तच्चि-
हविहाणमत्तणो गयवरो मुमरिऊण गुरुदिण्णोवएसं काऊण चउच्चिहाहारपच्चक्खाणं भाविउं पयत्तो, कह ?—

सव्वेण वि मरियव्वं जाएण जिएण केणइ निहेण । सयलम्मि जीवल्लोयम्मि णूणमेस चिय जयठिई ॥ ५५ ॥
ता मरियव्वं जैइ तह विवेइणो होइ जेण जायन्ति । ण उणो पुणो वि कुगतील्लंभुम्भडियाइ दुक्खाइ ॥ ५६ ॥
तं तारिसं खु मरणं णवरं धम्माणुहावओ होइ । धम्माण वि जिणधम्मो णारय-तिरियुग्गदुहदल्लणो ॥ ५७ ॥
संपत्तो सो यै मए पुंवि मुकयाणुहावसेसेण । सयलसुरा-ऽसुर-सिवसोक्खहेउभूओ जिणपणीओ ॥ ५८ ॥
ता वोसिरांमि तिविहेण कसाए हासच्छकयं चेयं । राग-दोसे अरई दुग्गुच्छं चेव विसयासं ॥ ५९ ॥
एवं संकाईए दोसे तिणिण वि णिरागरेऊण । परत्तिथपसंसासेवल्लंछणं छड्डिऊण दहं ॥ ६० ॥
संगं सबाहिरऽब्भितरं तहा अट्ठ-रोइझाणे य । आराहिऊण दंसण-णाण-चरित्ते महासत्तो ॥ ६१ ॥
धम्मज्झाणोवगओ णमो जिणाणं ति मुहसमिद्धाणं । सिद्धाईणं च तहा पुणो पुणुचारणसयण्हो ॥ ६२ ॥
इय विहिणा करिराया कालं काऊण तत्थ मुद्धमती । उववण्णो मुरलोमुत्तमम्मि सहस्सारकप्पम्मि ॥ ६३ ॥

एवं च मणि-रयण-कणयभवणोवसोहिए णिम्मलफलिहभित्तिथलणिहिच्चणियडपडिर्विवे दसद्धवररयणविप्फुरिय-
किरणुज्जोइयम्मि सुज्जप्पहविमाणम्मि समुप्पणो दियवराहिहाणो सत्तरससागरोवमाऊ मुरवरो । तत्थ य सयलसमी-
हियसंपत्तिपत्तसोहं विसयमुहमणुहवन्तस्स गओ कोइ कालो ।

सो वि हु कुक्कुडभुयंगमो अहाउयक्खएणं कालं काऊण समुप्पणो विचित्तवियणाउराए पंचमाए णरयपुडवीए
सत्तरससागरोवमाऊ चेय णारओ चि ।

तत्थ य छिदण-भिदण-विदंसण-खल्लेरोहणादीणि । कर-चरण-कण-जीहोद्व-णासियाछिदणदुहाणि ॥ ६४ ॥
तह कूडसामलीविलइयव्वकयकुंभिपायपउराइ । करवत्तदन्तफालणदुहाइ इय एवमादीणि ॥ ६५ ॥
उवभुंजन्तस्स तर्हि णिविसं पि ण होइ पाववसयस्स । वीसांमो अहियं कमढजंतुणो णिरयमज्झम्मि ॥ ६६ ॥
इय पावपरिणइं भाविऊण मणुएहिं मणुयजम्मम्मि । तं कायव्वं ण य होति जेण णिरयाइ दुक्खाइ ॥ ६७ ॥

इओ य सो मुरवरो णियआउयावसाणम्मि दियलोयाओ चुओ समाणो समुप्पणो इहेव जंबुदीवे दीवे
पुव्वविदेहे खेत्तम्मि सुकच्छविजए वेयड्ढणगवरम्मि तिलयणामाए णयरीए विज्जुगतिणामहेयस्स खैयरहि-
वणो कणयतिलयाहिहाणाए वरग्गमहिसीए उदरम्मि पुत्तत्तणेणं । जाओ कालक्रमेणं । पइट्ठावियं च णामं किरणवेगो
चि । वडिडओ देहोवचएणं कला-गुणेहिं च । संपत्तो जोव्वणं । तओ सो विज्जुवेगस्खयीसरो पणामिऊण णिययपुत्त-
स्स रज्जं पवण्णो सुयसागरगुरुसमीवम्मि पव्वज्जं ।

सो वि हु किरणवेगो मुररायविच्छड्डिक्खिंमं भुयवल्लदल्लियासेसपडिवक्खलक्खं सुदरं रायलच्छिं भोत्तूण दाऊण
किरणतेयणामस्स णिययपुत्तस्स रज्जं पवण्णो मुरगुरुमुणिणो समीवम्मि पव्वज्जं । अहिज्जियं मुत्तं, अब्भुवगओ

१ 'पारयंतो जे । २ कह इह वि जे । ३ हु जे । ४ वोसिरांमि स् । ५ चेव जे । ६ तिण्ह स् । ७ मुरलोए उत्तमसहसा' जे । ८ मणि-कय स् । ९ 'उरोवगईणि जे । १० वीसांमो स् । ११ सहरा' स् । १२ 'ज्जमेणं भु' जे ।

किरियाकलायो । पवणो जहकमं एकल्लविहारित्तणं । अणया य आगासगमणेणं गओ पुक्खरवरदीवदं । तस्य वि
णाणाविहतवचरणणिरओ कणयगिरिसणिगासम्मि ठिओ पडिमाए । पडिदिणं च मुत्तावलि-भुरवमज्झ-समंतभइ(१)यं
तवोविहाणं कुणन्तस्स गच्छन्ति दियहा ।

इओ य सो कुक्कुडसप्पणारओ खविऊण णिययाउयट्ठिइं तओ णरयाओ उव्वट्ठो समाणो तस्स चेय कणयगिरिणो
णियडणिउंजम्मि समुप्पणो कसिणंजणसरिसदेहच्छवी जोयणप्पमाणतणुविहाओ गुंजदरायाणुयारिणयणजुयलो अबन्त-
भीसणालोओ अणेयसत्तन्तयारी महोरगो ति । अइकंतो सिमुत्तणाओ संपत्तो महल्लभावं ।

अणया य तेण महाहिणा इओ तओ आहारत्थं परिब्भममाणेण दिट्ठो सो किरणवेगो महरिसी कणयगिरिणि-
वेसम्मि पडिमाए संठिओ ववगयरइ-राय-रोस-परीसहत्तणओ श्रायन्तो परमत्थं ति । ताव य पलोयणमेत्तुप्पणसिहिसिहा-
जालभासुरणयणजुयलेणं पुव्वभवम्भत्थवेरकारणेण य त्रियडदददादौविडिचियवयणकुहरेण तक्खणं परिवेदिऊण सयलंगा-
वयवे खइओ बहुप्पएसेसु ति । सो वि महामुणी मेरुणिहायलभीरंसंपत्तिसत्तजुत्तो णिप्पयंपसमुद्वन्तधम्मज्झाणपरिवड्ढ-
माणमुहज्झवसाणो चइऊण पूइदेहं समुप्पणो अच्चुयणामम्मि पवरसुरलोए जंघुदुद्दुमावत्ते विमाणम्मि पवरदेवत्तणेणं ।
केरिसो य ?—

वरमउड-कडय-कुंडल-मुत्ता-मणिभासलुज्जलाहरणो । रंखोलिरहारावलिभूसियवच्छत्थलाहोओ ॥ ६८ ॥

सररुहदलदीहरणपणकुंडलसंपत्तिसत्तजुत्तो । सरयासभो व्व समुल्लसंतमुहपंकयामोओ ॥ ६९ ॥

वोसट्टकमलदलभाससरिसमुकुमारतणुविहायाहिं । सव्वत्तो चिय रेहइ परियरिओ मुरपुरंधीहिं ॥ ७० ॥

णाणाविहवज्जसमुल्लसन्तरुइरोगेयराहाहिं । णट्टविहीहिं समन्ता सोहइ समहिट्ठिओ धणियं ॥ ७१ ॥

इय तम्मि विमाणे हिययचित्तिउप्पणसयलसंभोओ । बावीससागराऊपमाणकालो मुरो जाओ ॥ ७२ ॥

एवं च पवरसुरमुंदरीसविब्भमच्छिच्छडप्पहाहिसित्ततणुविहायस्स जहासमीहियसंपज्जन्तसयलविसयसोक्खपसरस्स
जहासुहं वचइ कालो ।

सो वि हु महाफणी बहुविहसत्तसंघायणज्जियपउरपावपभारो परिब्भमन्तो पव्वयकडयतडम्मि संपलगावणदव-
जालावलीपुल्लददेहो मओ समाणो समुप्पणो धुमाए णरयपुट्टवीए सवायधणुसयप्पमाणदेहायामो सत्तरससागरोवमाऊ
णारयत्तणेणं । तहिं च बहुप्पयारं दुक्खमणुहविउं पयत्तो, कइ ?—

जणियविहंमुग्गायजाणमुणिर्यपुव्वययरवेरसंवंधो । विउरुव्वियणाणाविहणारयकयरूपडिवदो ॥ ७३ ॥

उब्भट्टपहरणसंपायपउरणिव्वट्ठियंगपभारो । मुमरावियजम्मन्तरकयदुक्कयचरियवित्थारो ॥ ७४ ॥

अणोण्णावडणधटंतमच्छरोहरियपहरेणोयलो । पुणरुत्तट्ठिय-संगलियसयलदेहाविहाइल्लो ॥ ७५ ॥

इय पावपरिणतीवसेणिमिसं पि णलद्धुक्खवीसामो । पचइ अहोणिसं सव्वओ वि दुहजलणजालाहिं ॥ ७६ ॥

सो वि हु किरणवेगजीवदेवो उव्वमुज्जिऊण समग्गसंपणविसयसोक्खं णिययाउयपरिणईए तओ चुओ समाणो
इहेव जंघुदीवे दीवे अवरविदेहे खेत्ते सुगंधिविजए सुहंकराए पुरवरीए वज्जवीरिओ णाम णरवई, तस्स लच्छिमती
णाम भारिया, समुप्पणो तीए गव्वम्मि । कयं च से णामं वज्जणाहो ति । अइकंतो बालत्तणाओ । संपत्तो रूव-
सोहग्ग-बलसमुदयाहिट्ठाणसालि जोव्वणं ।

तओ सो वज्जवीरिओ भोत्तूण बहुयं कालं रायलच्छि णिव्विण्णविसयमुहपिवासो दाऊण वज्जणाहस्स रज्जं
सह पणइणीए पव्वज्जं पव्वणो ति ।

१ 'मुरयमज्झसमंतभइयं' जे । २ 'तवोविसेसं' जे । ३ 'दाविट्ठियं' जे । ४ 'धोर' जे । ५ 'मुत्तावलिमा' जे । ६ 'जुयल' जे ।

७ 'णो' तमपहाए णरयपुट्टवीए अहदाज्जधणुसयप्पमाणदेहायामो बावीससागरोवमाऊ स्स । ८ 'वक्कपुव्ववेर' स्स । ९ 'रणायलो' जे । १० 'स-
गिविसं' पालद्धुक्खविसामो जे ।

तस्स वि हु वज्जणाहरस अणेयसामन्ता-ऽणंतमड-पुरोहिय-महामंति-भिच्चपरियालियस्स विजयागामाए पवरग्ग-
महिंसीए समं वसीकयासेसदुदन्तपडिवक्खं रज्जमणुवाल्यंतस्स गओ कोइ कालो । समुप्पणो से चक्काउहो णाम
पुत्तो । संपत्तो जोव्वणं । दट्ठणं च संपत्तजोव्वणं चक्काउहं चित्तियं वज्जणाहेण जहा—धिरत्थु मे अलियपुरिसत्तणावले-
वस्स जीविण जो हं ॥ अज्ज वि पुव्वपुरिसुव्वदधम्मधुरुद्धरणपरम्मुहो विसयलवलेवोवलित्तो परत्तहियं णायरामि ।
त्ति चित्तिऊण वाहिता सयलसामन्ता-ऽमच्च-पुरोहियपमुहा णिययाणुजीविणो कुमाररज्जाहिसेयणिमित्तं सिट्ठो णियया-
हिप्पाओ । एत्थावसरम्मि य भणियं कुमारचक्काउहेण ॥ जहा—ताय ! अज्ज वि अणहं जोव्वणं, अप्पडिहयसत्ती
इंदियप्पसरो, अभग्गदप्पं सारीरं बलं, समग्गसामग्गीया रायलच्छी, ता किमेयं अपत्थावविलसियं तायस्स ?, जेण
मुव्वउ—

दारिदोस-दोहग्गदुम्मणो दिण्णगरुयणिव्वेओ । इच्छियविसयासासंपडंतपैरियडिहियविसाओ ॥ ७७ ॥

तत्थ वि वयपरिणामम्मि गलियसयल्लिंदियत्थमाहप्पो । दिक्खाविहाणधुरैधरणपच्चलो होइ जइ को वि ॥ ७८ ॥

तुम्हाण पुणो अज्ज वि जोव्वण-ल्लायण-रूव-सोहग्गं । भूवणम्मि अण्णसमं बलसामग्गी तह च्वे ॥ ७९ ॥

इय एवं चक्काउहवयणाणंतरविण्णसंलावो । वज्जाहिवो पयंपइ गज्जियधेणगहिरणिग्घोसो ॥ ८० ॥

“भो भो चक्काउह ! जं तुमए भणियं जहा ‘अज्ज वि अणहं जोव्वणं’ ति तं मुव्वउ—

संज्झम्भराय-जलबुव्वुओवमे जोव्वणम्मि मणुयाण । को पडिवंधो बहुवाहिवेयणोवइविट्ठम्मि ? ॥ ८१ ॥

जं च भणियं ‘अप्पडिहयसत्ती इंदियप्पसरो’ ति तत्थ वि अत्थि कारणं, जेण—

अणहे चिय सामत्थम्मि जंतुणो जुज्जए समुज्जमिउं । वियलम्मि इंदियत्थे काउं ण य तीरण किं पि ॥ ८२ ॥

तहा जमुल्लवियं ‘अभग्गदप्पं सारीरं बलं’ तं पि णिसामिज्जउ—

कह कीरउ तम्मि बले कुमार ! हिययम्मि सासया बुद्धी । जं रोयणियरकलियं खणेण विवलत्तणमुवेइ ? ॥ ८३ ॥

जं च समुच्चरियं ‘सैमग्गसामग्गीया रायलच्छि’ ति तं पि सैमायणिज्जउ—

एयाए महियले कमलिणीदलोवगयणीरतरलाए । लच्छीए पयारिजंति णिव्विवेय चिय जयम्मि ॥ ८४ ॥

अण्णं च जारिसा रायलच्छी तारिसा मुव्वउ—जा ण कलइ कुलकमं, ण सुमरइ परिचयं, ण मण्णइ कुलुग्गयं, ण
पलोएइ रूवं, ण णियच्छइ सीलं, णाणुयत्तइ विसेसैमुयत्तणं, णायरइ धम्मणियरं ति ।

॥ अत्रि य—

दरदंसियमवणोववणकाणणुप्पाइउव्वमडमुहासा । गंधव्वणयरसोह व्व पेच्छमाणस्स वि पलाइ ॥ ८५ ॥

बहुविहगयंदण्डयलगलियमयसलिलपंकस्तुत्त व्व । अहियं पक्खलइ महाणरिंदिगुरुमंदिरेसुं पि ॥ ८६ ॥

अणवरयकमलसंचरणलग्गणालग्गकंटयं व खणं । कत्थइ पयं णिवेसइ, ण णिम्भरं अज्ज वि खणं पि ॥ ८७ ॥

संपण्णभूल्लददंडकोसमंडलवियासपउरम्मि । दियसावसाणकमलं व मुयइ मणुयं महियलम्मि ॥ ८८ ॥

इय दिणयरमुत्तीए च बहुविहसंकंतिलदपसराए । एयाए को ण तविओ जयम्मि लच्छीए सच्छंदं ? ॥ ८९ ॥ ॥

अण्णं च तरलतडिलय व्व अथिरा आउसंपत्ती, कुमुमवियासविम्भमं जोव्वणं, णीरुम्मिसरिसा विसयसंभोया, जलणि-
दिनिवडियरयणं व दुल्लहं मणुयत्तणं । कहं वा दुल्लहं मणुयत्तं ? मुव्वउ—

जह मुविणयम्मि रोरस्स रयणलंभो तुडीए संपडिओ । सो चिय णिदाविरमम्मि दुल्लहो तह व मणुयत्तं ॥ ९० ॥

जह पाविउं ण तीरइ परमाणुचओ दिसा(सो)दिसिं विगओ । गुरुयरपवणाइद्धो तहेव विगयं खु मणुयत्तं ॥ ९१ ॥

१ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेउस्तके नास्ति । २ सरीरकलं जे । ३ ‘पविणयद्वि’ सू । ४ ‘रधवल्ल’ जे । ५ ‘घणघोरणि’ जे । ६ असम-
सामग्गीया जे । ७ समादण्ण’ जे । ८ कुलुग्गयं सू । ९ ‘सणुव्वं, णाय’ जे । १० हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेउस्तके नास्ति ।

अह जलहिम्मि णिहिचे[ण] कह वि कुम्मेण लद्धमुवरितलं । तह लद्धं मणुयत्तं मए णिवुट्ठेण संसारे ॥ ९२ ॥
इय जुय-समिलादिद्वंद्वलुहे पावियम्मि मणुयत्ते । जो ण कुणइ धम्मं सो खिवेइ णियभायणे छारं ॥ ९३ ॥

ता हो चक्काउहकुमार ! जह मणीणं चेरुलियमणी, पक्खीणं व पक्खिराया, कमलं व सेसकुसुमाणं, गोसीसं व चंदणाणं, इंदो व मुरगणाणं, चंदो व तारयाणं, सूरु व गहगणाणं, सोक्ख्खाणं व सिवसुहं, तहा मणुयत्तं सैव्वजंतूण पहाणं ति । तत्थ वि सुव्वउ—

लद्धे वि हु मणुयत्ते खेत्ताइसमग्गजोयजुत्ते वि । जायइ पुणो वि दुलहो जयम्मि जिणैभासिओ धम्मो ॥ ९४ ॥
लद्धे वि तम्मि कयपुव्वकम्मदोसेण मोहियप्पाणो । ण य उज्जमंति विसयासपासखेसेण पडिवद्धा ॥ ९५ ॥
अह उज्जमन्ति जइ कह वि मुणियत्ता वि कलियपरमत्था । मुज्झंति पुणो संसारवागुरासंगसम्मूढा ॥ ९६ ॥
इय भाविउं तुमं वरकुमार ! मा कुणमु मज्झ पडिवंधं । संसारे किसलयचंचलम्मि जीयम्मि मणुयाणं ॥ ९७ ॥

एयं च समायण्णिऊण पडिवण्णं राइणो वयणं कुमारेण । तओ णरवइणा जहावित्थरं कओ चक्काउहकुमारस्स रज्जाहिसेओ । सम्माणिओ सयलो वि सामन्ताइओ सेवयजणो । एत्थावसरम्मि य तमुदेसमुब्भासयन्तो पँहाणियरेण, पडि-
बोहंतो भवियलोयं, पँयच्छंतो मिच्छत्तंधयारे णाणावलोयं, सयलमुर-णर-तिरियसेविज्जमाणचलणजुवलो, धुव्वमाणो मुणि-
गणेहिं झाइज्जमाणो जोगिसत्थेहिं, समागओ खेम्भकरो णाम जिणवरो । विरूयं देवेहिं समोसरणं । णिसण्णो तत्थ भयवं । पत्थुया धम्मदेसणा ।

तओ भयवंतं समवसरणत्थं मुणिऊण णिग्गओ वज्जणाहणरवई । धम्मदेसणावसाणम्मि य करकमलकयंजलिमि-
लंतभालवट्टेण पणमिऊण भयवंतं णराहिवेण भणियं जहा-भयवं ! णिविण्णो हं संसारवासाओ, ता भयवं ! काऊण
पसायं देह महं समणत्तणं ति । तओ भयवया भणियं-सोहणं देवाणुप्पिया !, मा पडिवंधं करेहिं ति । एत्थावसरम्मि य
महाविच्छड्डवद्धारियणिक्खमणमहिमो पडिवण्णो तित्थयरसमीवे समणलिंगं । अहिगयसमत्थसत्थस्थो य णाणाविहतवो-
कम्मसोसवियसरीरो एकल्लविहारपडिमापडिवण्णो अणुण्णाओ य गुरुणा विहरिउं पयत्तो, कह ?—

छक्कायरक्खणपरो खंती-मिदु-मदवादिधम्ममणो । पंचासवपम्मुको पंचेदियणिग्गहविहण्णु ॥ ९८ ॥
जिणवयणभावणाकयतिगुत्तिगुत्तो पयत्तमुहझाणो । परदिट्ठिविसयवासंगमोहविवरम्मुहो धीरो ॥ ९९ ॥
एकल्लय-उक्कुट्टयाऽऽसणोरु-वीरासणप्पयारेहिं । तह एकपाससयणत्तणादिअच्छुग्गकयणियमो ॥ १०० ॥
इय एवंविहदुकरणाणाविहतवविसेसमुसियप्पा । पणमिज्जमाणचलणो विहरइ गामाणुगामं तु ॥ १०१ ॥

एवं च विविहतवोविहाणणिरओ समुप्पण्णगयणंगणलद्धी संपत्तो अणेरगुणगणकलियजण-धणसमिद्धं सुकच्छं णाम विजयं ति ।

इओ य सो विसहरणारओ तओ णरयाओ उव्वट्ठिऊण कइ वि भवग्गहणाइं परिब्भमिऊण जलणगिरिसमीवे अच्च-
न्तमीमाडईए संजाओ सवरगोत्तम्मि अणेरजीवन्तयासी कुरंगयणामो वणयरत्ताए । अड्कंतो बालभावाओ, पत्तो जोव्वणं,
पयत्तो पतिदिणं बहुयरजीवोवमहेणं णियवित्तिं कप्पिउं । एवं च गच्छंति दियहा ।

सो वि हु वज्जणाहमुणिवरो अप्पडिवद्धविहारेण पतिदिणं परिब्भमंतो संपत्तो तं महाडइं । [१सा य केरिसा—]
गिरिणियर(ड)णिज्जरुल्ललियसलिलसंसेयवडिडयतरुहिं । हसइ व्व विसयकुसुमु(म)ट्टहासहसिरी गहगणोहं ॥ १०२ ॥
महुमत्तकामिणीवयणविब्भमुट्ठिभणपल्लवोहेण । सहइ वणलच्छिसंचरणलग्गजावयरसेणं व ॥ १०३ ॥
मासललवंगपल्लवसेज्जापक्खित्तपुप्फपयरिह्ठा । वणदेवयाविणिम्मियरइहरकरणी समुव्वहइ ॥ १०४ ॥
णिब्भरमयंधगयगलियमंडमयसलिलवडिडएणं व । एलावणेण करिदाणसुरहिणा सहइ सव्वत्तो ॥ १०५ ॥

१ 'सो कह कुम्मेण ति लद्धमु' जे । २ 'सयलज' जे । ३ 'णवेसिओ जे । ४ 'पहा'पहयरेणं पडिबोहयतो स । ५ 'पणासयतो मिच्छंध-
यारं णाणावलोणं, सयल' जे । ६ 'महिमा पयण्यो जे । ७ 'ट्टिऊण जलणमि' स । ८ 'इस्तद्वान्तगतः पाठो जे'पुस्तके नास्ति ।

इय चटुलचलियकइचलणचप्पणोवडियदाडिमफलोहा । अडई बहुवणयरघोरकहकहारावदुप्पेच्छा ॥ १०६ ॥

ऐयारिसाए महाडईए समुज्झियसत्तभयट्ठाणो गिरिकुहरकंदैरोयरेसुं णिसीयन्तो संपत्तो जलणगिरिसमीवं । ताव य अत्थंतरं गओ दिणयरो, उत्थरिओ तमणियरो, दुज्जणवयणं व अंधारियं भुवणमंडलं, गहगणकिरणदंतुरा णिसियरि व्व वित्थरिया जामिणी । तओ जत्थत्थमियनिवांसियत्तणओ संठिओ जलणगिरिणो कडए एकदेसम्मि सयलजंतुसन्ताणवज्जिए अहाफामुयम्मि भूमिभाए काउस्सग्गेणं ति ।

एत्थंतरम्मि चिलिचिलन्ति पिङ्गलाओ, घुघुयंति घूया, भूँभूयंति भल्लुयाओ, किलिकिलन्ति डाइणीओ, पुँरु-
घुरंति सददूलाया, रुरुयंति चित्थया, गुलुगुलंति मयगला, रंजन्ति केसरिणो, कहकहन्ति अच्छहल्ल चि । एवंविहेणावि
मणसंखोहकारिणा णजायचित्तसम्मोहस्स सुहज्जवसाणेण विमुज्जमान[माण]सस्स पहाया जामिणी । मुणिणो कम्मव-
डलं व फुट्टं पहाजालं, सुहज्जवसाओ व्व समुग्गाओ किरणमाली । तओ रवियरपरियावणाविगयजायजंतुम्मि महियळे
चलिओ तप्पएसाओ जुयन्तरणिहिचदिट्ठी मुणिवरो ।

एत्थंतरम्मि य सत्तघायणत्थं विणिग्गाएण [कुरंगएण] दिट्ठो महामुणी । 'पारद्वीए अवसउणो' चि कलिउण पुन्वम-
वन्मत्थसमुप्पणकोचाणुवंधेण य कट्ठिणगुणधणुम्मकेकवाणप्पहारेण पाडिओ सयरहं । 'णमो जिणाणं' ति भणमाणो
णिसणो धरणिमंडलं, सुमरिओ अप्पा, कयं जहाविहिं पच्चक्खाणं । तओ चउव्विहाराहणासंपत्तो भावियसयलभा-
वणाहिप्पाओ कयसमत्तजंतुसंताणस्वाम्णाविहाणो सुहज्जवसाणोवगओ परिचइउण सरीरं समुप्पणो मज्झिमगेवेज्जयम्मि
ललियंगयाहिहाणो सुरवरो । तत्थ जहासमीहियसंपज्जन्तसयलविसयसोक्खस्स गच्छइ कालो ।

सो वि हु पावकम्मकारी कुरंगओ एकप्पहारोमुद्धं विणितरुहिरपब्भारभासुरं महामुणिं विवण्णं पलोएउण 'अहो
अहं महाधणुहरो' चि मण्णमाणो ददं परिओसमुवगओ । कयवहुसत्तोवघाएण य कयपाणवित्तिणो वच्चन्ति दियहा । अणया
य कालक्केमेण मओ समाणो समुप्पणो रोरम्मि णरए । जहिं च ण उवमा दाइस्स, ण सीयस्स, ण दुग्गंधाणं, ण
फरुसाणं, ण सयलदुक्खाणं ति । अवि य—

सुरगिरितणुप्पमाणो कालायसगोलओ जेहुक्खित्तो । सहसा सो वि विलिज्जेज्ज तक्खणं तिक्खतावेणं ॥ १०७ ॥
तत्थियमेत्तो चिय लोहपिंडओ सीयलम्मि पक्खित्तो । सो वि विलाइ खणेण य सीयस्स वि" एयमुवमाणं ॥ १०८ ॥
कत्थइ उम्हाहिहओ कत्थइ सीएण संकुइयदेहो । तत्तो वि ण लहइ चिय खणं पि ताणं सकम्मवसो ॥ १०९ ॥
इय तत्थ समुप्पणस्स तस्स गुरुपावपसरवसयस्स । वच्चइ कैलो णरयम्मि दुक्खलक्खेहिं खवियस्स ॥ ११० ॥

इओ य सो वज्जणाहसुरवरो पालिउण णिययाउयं चुओ तयन्तियाओ इहेव जंबुदीवे दीवे पुन्वविदेहे खेत्ते
पोराणपुरवरम्मि कुलिसबाहू णाम णरवई, तस्स सयलंतेउरपहाणा सुदंसणा णाम अग्गमहिंसी, समुप्पणो तीए
गन्धम्मि । समइच्छिए पसवसमयम्मि जाओ कमेणं । पइट्ठावियं च से णामं कैणयरहो । वडिदओ देहोवचएणं कलाक-
लावेण य । संपत्तो जोव्वणं । एत्थावसरम्मि य कुलिसबाहुणरवई मुणिउण रज्जधुराधारणक्खमं कणयरहं कुमारं सम-
प्पिउण तस्स सयलसामन्तसहियं रज्जं पन्वज्जं पवणो चि ।

तस्स हु कैणयरहणरवइणो वि णिययवलमाहप्पुप्पेहडुप्पणपयावपसरं खवियासंखपडिवक्खपक्खं रज्जमुहं भुंजमाणस्स
संजायं चउइसरयणाइसामगियं पवरचक्कवट्ठिलंछणं पुब्बिं जहाविहिं कयमुकयकम्माणुहोवओ छक्खंडभरहाहिवत्तणं ति ।
ता वियाणिउणेवं अण्णेणावि जंतुणा कायव्वो कुसलकज्जुज्जमो, अवहत्थियव्वा पावकम्ममैमई, निब्भच्छियव्वो विसयवा-
मोहो, ण होयव्वं मयणपरव्वसेणं, ण कायव्वमिंदियाणुकूलत्तणं, परिहरियव्वा राग-दोसाइणो, आयरियव्वं जिणैवरमयं

१ तओ तीए महाडईए समुं जे । २ 'दरेसुं' सू । ३ 'वात्तणओ' सू । ४ 'भुब्भुवन्ति' सू । ५ 'घुरुरति' सू । ६ 'ति' गयवरा,
६' जे । ७ 'णाहिप्पाओ' सू । ८ 'रोखम्मि' जे । ९ 'जहा' खिलो सू । १० 'य' सू । ११ 'उम्हाहिहओ' जे । १२ 'कालो' रोरम्मि-
सू । १३ 'कणयणाहो' जे । १४ 'कणयणाह' जे । १५ 'हावेणं' छ' जे । १६ 'ममती, निब्भत्थियव्वो' सू । १७ 'जिणमयं' जे ।

ति । एवं च कुसलकज्जुज्जयस्स जंतुणो तं णत्थि सुहं जं ण संपज्जति, ण उणो अण्णह चि । कह ?—

ण य कुसलकम्मकज्जुज्जमं विणा होंति जीवलोयम्मि । सोक्खाइं हिययचितियमणोरहुप्पाइयासाइं ॥ १११ ॥
जह हिययन्निमंतरगुरुपयत्तकज्जुज्जओ वि गइवियलो । पावइ ण इच्छियदिसं धम्मेण विणा तहा जंतू ॥ ११२ ॥
तेल्लणिमिच्चं पीळेइ वालुयं जह व कोइ मइमूढो । तह धम्मेण विणा केइ सोक्खकज्जे किलिस्संति ॥ ११३ ॥
जह ऊसरम्मि वविऊण कोइ मूढो विमग्गए साली । तह णाणुचिण्णधम्मो मग्गइ सोक्खाइं भोचुणं ॥ ११४ ॥
जह अमुणियसइत्थो कव्वं काऊण महइ मइमूढो । तह अकयकुसलकम्मो इच्छइ परमेसरसुहाइं ॥ ११५ ॥
इय एवं हियए भाविऊण सव्वेण जीवलोयम्मि । कायव्वो सोक्खं मग्गिरेण धम्मज्जमो पढमं ॥ ११६ ॥

एवं च सुकयधम्माणुहावेण जंतुणो सुरवराइयाइं सयलसोक्खाइं । तस्स वि हु कणयाहचकवट्ठिणो निययरज्जमणुवा-
लयन्तस्स गच्छइ कालो । अण्णया य पासायतलोवरिसंठिएण वंदणणिमित्तमागओ उप्पय-निचयं कुणमाणो देवसंघाओ
दिट्ठो । तं च दट्ठूणं मुणिऊण जिणवरमागयं विणिग्गओ वंदणत्थं गय-रह-तुरय-पाइक-सयलंतेउर-समत्तसामन्ताणुगम्म-
माणो कणयाहचकवट्ठी । तिपयाहिणेण वंदिऊण तित्थगरं णिसण्णो णाइदूरसंसियाए णरपरिसाए । धम्मकहासवणुसुयं
च परिसं जाणिऊण भयवया पत्थुया धम्मदेसणा, कह ?—

जीवाण बंध-भोक्खा गया-SSगइं चेय जीवलोयम्मि । भुवणस्स य संठाणं दीवादीणं पमाणं च ॥ ११७ ॥
णारय-तिरिय-णरा-SSमरगतीहिं जम्मो सुहं च दुक्खं च । देहस्स 'ठिइं तह चेय पुण्ण-पावाण परिणामो ॥ ११८ ॥
आसव-संव-निज्जर-छज्जीवणिकार्यसंठिइं चेव । इय एवमादिजीवाणुयंपयारी कहइ धम्मं ॥ ११९ ॥
अह मुणिऊण भयवओ कहन्तरं पणमिऊण कणयाहो । कम्माण णाम-भेए पुच्छइ हरिसुच्छलियदेहो ॥ १२० ॥

तओ तमायणिऊण भयवया भणियं—देवाणुप्पिया ! सुव्वउ, संखेवओ इह ताव दुविहा जीवा । ते वि हु परिब्भ-
मन्ता संसारकंतारम्मि निययहिया-इहियाणुट्ठाणत्तणओ बंधंति कम्मं । तं च अट्ठप्पयारं ति विण्णेयं, तं जहा—णाणावर-
णीयं दंसणावरणीयं वेयणीयं मोहणीयं आउयं णामं गोत्तं अन्तरायं ति । एयाओ मूलद्वकम्मपगडीओ, उत्तरप-
गडीओ पुण सुव्वंतु, तत्थ य पंचप्पयारं णाणावरणीयं, णवप्पयारं दरिसणावरणीयं, दुविहं वेयणीयं, अट्ठावीसविहं
मोहणीयं, चउप्पयारमाउयं, वाएत्तालीसभेयं णामं, दुप्पयारं गोत्तं, पंचविहमंतरायं ति । ऐएहिं कम्मेहिं मोहिओ जंतू ण
मुणइ किच्चं, णाकिच्चं, ण गम्मं, णागम्मं, ण भक्खं, णामक्खं, ण पेयं, णापेयं, ण हियं, णाहियं, ण पुण्णं, ण पावं ति । सव्वहा
एयस्स वसगओ तं तमायरइ जेण बहुविहदुक्खकल्लोलपउरे णिवडइ भवसायरे ति । ता भो भो णरणाह ! अण्णकहाप-
त्थावम्मि पुच्छिएण मए समासओ तुम्हाण सिट्ठो कम्मभेओ । वित्थरओ" पुण अण्णओ गन्तव्वो ति ।

तओ सोऊण भयवया पणीयं धम्मं समुप्पण्णभवभयुव्विग्गमाणसो पणमिऊण जगणाहचलणजुयलं पविट्ठो णयरं ।
भयवं पि गओ जहाविहारेणं ति ।

अण्णया य निययणिहेलणत्थस्स णिसण्णे(णस्स) सीहासणम्मि चकिणो सुमरन्तस्स भयवओ वंदणणिमित्तमागयसुर-
वरसमूहस्स महारिद्धिवित्थरं समुप्पण्णा पुव्वभवसुमरणा । तओ सुमरिऊण सुरलोएसुं अच्चुत्तमसंभोयसंजुए अत्तणो
कीलाविलासे चित्तिउं पयचो, कह ?—

तं रुवं तं सुहवत्तणं च देहस्स सा सुहसमिद्धी । ते संभोया सुरलोयवत्तिणो मज्झ जे आसि ॥ १२१ ॥
एत्थं पुण कल-मल-रुहिरपउर-पित्तं-उत्त-मुत्तबीभच्छे । धिद्धि ति दुरहिगंघेसु मणुयभोगेसु कह पत्तो ? ॥ १२२ ॥
खणभंगुरम्मि भुवणे भावा सगडाइणो जियाण जहा । जंति विणासं अइरक्खिओ वि देहो तहा अयिरो ॥ १२३ ॥

१ विणा वि केइ सु जे । २ 'यकमणु' जे । ३ 'य-णिवए' सु । ४ 'ण वियाणिऊण मुणिवर' सु । ५ 'ए परि' सु । ६ ठिइं
जे । ७ 'संघठिइं जे । ८ 'यंजणाय' जे । ९ एतेण कम्मेण मो' सु । १० 'ओ उवाणेवप्पयारं कम्मं ति । तओ जे ।

हय-गय-रहवर-पाइकचकपञ्चुत्तपहरणेहि पि । काऊण परिचरणं य य तीरं संतुषो करणे ॥ १२४ ॥
 उत्तुंग-पीण-पेढालसिहिणतडवियडेमंडणिट्टेण । मणयं ण होइ ताणं कयंतजीहावलीढस्स ॥ १२५ ॥
 सुहि-पुत्त-मित्त-बंधव-सन्निहिय-सहोयरस्स ण हु रक्खा । पडियस्स मच्चुणो वयणदन्तजन्तन्तरालम्मि ॥ १२६ ॥
 परिमंदमारुउव्वेल्लकयल्लिदलतरलजीवियव्वम्मि । इह माणुसम्मि जम्मे कह व सयणो कुणउ रायं ? ॥ १२७ ॥
 धि ! चेसिं मणुयाणं जे मणुयमैवं पि णाम लद्धूण । विसयाहिलासवेलवियमाणसा णेति णियजम्मं ॥ १२८ ॥
 ते पुण जयम्मि धण्णा जे जिणवरभासियं मुणेऊण । अणिगूहियणियसामत्थमुज्जया धम्मचरणम्मि ॥ १२९ ॥
 इय केचिरं व किंपागफलसरिच्छम्मि तुच्छभोयमुहे । सत्तेण चिट्ठियव्वं असारसंसारवासम्मि ? ॥ १३० ॥

एवं च भाविऊणं चित्तेणं परिचइऊण णियचावरिल्लपल्लवावल्लमां पिव तणं सयलं पि हु रज्जवित्थरं पवणो तित्थ-
 यरपायमूलम्मि सैमणत्तणं । अवगओ मुत्तत्थो, अब्भसियं तवोकम्मविहाणं । गरुयवयविसेसाणुट्ठाणणिट्ठवियकिल्लिडकम्मो
 अरहन्त-सिद्ध-चेइयाइकयवच्छल्लयाइविसेस-पवयणपहावणापज्जवसाणसोलसकारणसमावज्जियतित्थयरणाकम्मो गामा-
 णुगामं विहरमाणो संपत्तो खीरणगवरोवल्लिखयं खीरवणं णाम महाडइ । संठिओ तम्मि खीरमहागिरिम्मि खूराहि-
 मुहो आयावणापडिमाए ति ।

इयो य सो वणयरकुंरंगयजीवणारओ तओ रोरवणरयाओ उव्वट्ठो समाणो तम्मि खीरपव्वयगुरुगुहोयरसंठियाए
 सीहीए पोट्ठम्मि सीहत्तणेणमुववणो । जाओ कमेणं । पत्तो य महावलसामगियं वओवुड्ढिं । अणेयजीवसंघायमारणणि-
 स्सओ [संयुत्तो] ।

अणया य अदीयदिणम्मि णासाइयकवल्लग्गहो छुहावमुल्लसियमारणाहिलासो संपत्तो किं पि सत्तमण्णेसमाणो जत्थ
 सो महामुणी । तओ पुव्वभव्वमत्थवेरकारणुप्पणुग्गकोवपसरो धुयकंधरुव्वेल्लमाणकेसरसडाकडप्पो पुणरुत्तं पुंल्लच्छडच्छो-
 डियधरणिमंडलो गहिरगुंजारवावूरियगिरिकुहर-काणणंतरालो सहसा समोवइओ मुणिणो तणुम्मि । मुणिणावि 'मह मार-
 णाहिलासी सीहो' ति कलिऊण कयं णिरागारं पच्चक्खणं ताव य सैमुव्वहंतधम्मज्झाणो परिचइऊण देहं संपत्तो पाण-
 यकप्पे महप्पहे पवरत्रिमाणे वीससांगरोवमट्ठिई मुरवरो ति ।

सो चि सीहो णिययाउयक्खयम्मि मओ समाणो^१ पंकप्पहाए [ण]रयपुढवीए समुप्पण्णो दससांगरोवमाऊ णारओ
 ति । तओ कालकमेण खीणम्मि तव्ववाउए उव्वट्ठो समाणो किंचूणदससांगरोवमाऊ संसारे परिभमिऊण तहाविह-
 भवियव्वयानिओएण संजाओ वंभणकुले । तत्थ वि परिणइवसेण जायमेत्तस्स ज्ञेय खयं गओ 'पिइ-माइ-भाउयपमुहो
 सयलो चि सयणसत्थो । तओ अचन्तकरुणापवणमाणसेण जणवण जीवाविओ वालभावम्मि केहो चि से णामं कयं ।
 अइकंतो सिमुत्तणाओ, संपत्तो जोव्वणं । तओ सयलजणस्सिज्जमाणो कह कह वि संपज्जंतभोयणमेत्तचित्ती वेरग्गमग्ग-
 मुव्वसओ चित्तिउं पेयत्तो, कह ?—

जइ कह वि अणजम्मम्मि पवरधम्मो मए सयं काउं । ण य तिण्णो संवड्ढियमोहमहापसरदोसेण ॥ १३१ ॥
 अच्छउ ता धम्मो गुरुदुहोदसंपायपसरणिइल्लो । मज्झत्थया वि ण मए कया समत्तम्मि जियलोए ॥ १३२ ॥
 जेण महं पुंवि मुकयपावसंपत्तिपसरियाइसओ । वइडेइ हिययदाहं बाहं दहदुक्खसंदोहो ॥ १३३ ॥
 अहियं कुरुव-दोहग्ग-दुसहकयसामियावमाणस्स । दारिइस्स य पुरिसस्स होइ सोक्खं भरन्तस्स ॥ १३४ ॥
 ता जइ मरिउं ण य कह वि तीरए सच्चवियल्लवाए पुणो । अम्हारिसाण रोरान घडइ काउं मणं धम्मे ॥ १३५ ॥
 इय एवं चिंताजलणजालपज्जलियहिययसम्भावो । होइ केहो धम्मनिमित्तगहियवणवक्कलावसणो ॥ १३६ ॥

१ 'हमंडिल्लेण सु' । २ 'भवम्मि णाम सु' । ३ 'सवणं सु' । ४ 'समुव्वहंतधं' सु । ५ 'सागरठिं सु' । ६ 'ओ संसारमाहिंजिऊण
 कणंतरभवे तहाविहं कम्मं काऊण संजाओ वंभणकुले । तत्थ य पावपरिणजीवसेण सु' । ७ 'पी-माइ' सु । ८ 'कमटो सु' । ९ 'पवत्तो जे ।
 १० 'कमटो सु' ।

एवं च गहियऽण्णाणियऽब्भुवगयदिक्खविहाणो कंद-मूल-फलादीहि संकणियपाणविची जणियवम्भव्याभिग्गो
पंचगिपमुहं बहुप्पयारं तवोचिसेसं चरिउं पयत्तो ।

गम्यन्ति - आवागं भी सुविमलमणं यो भगवान्

इओ य सो कणयाहचकीसरसुरवरो भुंजिऊण सव्वओ जहासमीहियसंपज्जंतसुरवरभोए अहाउयक्खयम्मि चुओ
समाणो समुप्पणो—

इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे अत्थि विविहतस्संडमंडिओ सव्वओ वियसंतकमलायरुच्छलंतमयरंदपिजरिज्जं-
तदिसामंडलो, अहिणवविसट्ठकंदोत्तपरिमलंधलियफुलंधुयावद्धसंकारो, अच्छिको कलिकालविलसिएणं, अणालिज्जो
पावपसरेण, अदिट्ठो दुब्भिक्खदोसेण, अणायरिओ दुक्कयपरिणईए, परिहरिओ परचक्खिभमेणं कासी नामेण जणवओ ।
तत्थ य सयलजणजणियसुहसंभोयभोया चाणारसी नाम णयरी । जे(जा) य केरिसा?— सकप्पकूक्ख व्व सप्पुरि-
सेहिं, ससेलतुंग व्व पायारसिहरेहिं, पच्चूससंश व्व पडिचुद्धलोया, जलहिबेल व्व कलयलरवावूरियजयन्तरा, हरिवंसकह
व्व बालकीलाहिरामा । जा य पियालाविणा वि सव्वाहिहासिणा, मुरुवेणावि परदारपरम्मुहेण, सत्तप्पहाणेणावि परलोय-
भीरुणा, अहिगयगारुडेणावि भुयंगसंसग्गभीरुणा पुरलोएणाहिट्टिया । तीए दूरन्तरियपुव्वपुरिससच्चरिओ गियभुयवलो-
ज्जल्लवज्जियधरणिमंडलो अपडिप्फलियसत्तिन्नओ अणेयणमन्तसामन्तमउडमणिकिरणविच्छुरियपायपीढो राया नामेण
आससेणो ति । तस्स सयलजणसीयलेणावि वेरिसंतावकारिणा, थिरेणावि अणवरयभमणसीलेण, त्रिमलेणावि कल-
सीकयारिवणिवावयणमंडलेण, ससहरुज्जलेणावि जणियजणाणुराइणा जसेण भूसियं भुवणमंडलं । जम्मि य ललिय-
करपंकयाभिरामा पैणइणि व्व परिसेसियणपुरिससंभोया णिच्चलालिगणसोक्खमुवगया रायलच्छी । तस्स वणमाल व्व
सीरपाणिणो, बेल व्व जलणिहिणो, दाणलेह व्व दिक्करिणो, लय व्व पवरपायवस्स, जोणह व्व ससहरस्स, कुमुमुमाइ
व्व महूसमयस्स, णलिणि व्व सरवरस्स, तारयापंति व्व णहाहोयस्स अलंकारभूया वम्माहिहाणा सयलंतेउरपहाणा
अगमहिंसी । तस्स राइणो इमीए सह विसयमुहमणुहवन्तस्स गच्छंति दियहा ।

इओ य सो कणयाहचकिमुरवरो तओ पाणयमुरलोयाओ णिव्वाणगयस्स रिट्ठणेमिणो चोलीणेमु तेयासी-
एमु वरिससहस्सेमु अद्धमसयाहिणमु विसाहाणक्खत्तसंठिए मियंके चुओ समाणो समुप्पणो वम्माएवीए कुच्छिसि ।
दिट्ठा य णाए तीए चेव रयणीए पमायसंमयम्मि चोइस महासुमिणा, केरिसा य?—

अह विमलमहामणिघडियवियडपल्लंकलदुसुहणिहा । वम्माएवी पेच्छइ सहसा चोइस महासुमिणे ॥ १३७ ॥

वियडकवोलमंडलोगलियमुणिज्जरदाणसलिलयं, मयगंधंधलुदफुलंधुयकयसंकारमुहलयं ।

दीहरथोरसोडदंडुब्भडकुम्भघटंतसोहयं, पेच्छइ गोसयम्मि सुहकरिवरयं ससिकिरणराहयं ॥ १३८ ॥

सरयसरियव्विभुभुयसमुब्भडमणहरंगयं, जलणुज्जलियजच्चतवणिज्जसमुज्जलसंगममयं ।

दूरुत्तंगसेलसरिसुणययणकउहग्गभारयं, उम्मुहमुहपलोयणालोइययं वरसुरहिजाययं ॥ १३९ ॥

विसयविसट्ठकणयकमलुज्जलचलकेसरसदोहयं, बालमियंककुडिलदहदाहकरालियवयणभाययं ।

रंजियसहभरियसधराधरकंदरदिणारावयं, वणयरपउरजणियभयभीसणयं मयरायरुवयं ॥ १४० ॥

सरसुफुल्लविमलकमलोयरवोसवियाऽऽससंसियं, सुरकरिकरविमुक्कणीरुग्गमपसरकयाहिसेययं ।

करयलकलियकणयकमलोयरकेसरपिजरिल्लियं, रयणिविरामयम्मि सिरिभयवइयं अइमणहरिल्लियं ॥ १४१ ॥

१ "संडमंडि(ओ), अच्छिको कलिकालविलसिएण, परिहरिओ परचक्खिभमेण कासी नाम जणवओ । तत्थ सयलजणजणियसंभोया
अमरेसरपुररि व्व पवरलोयाहिट्टिया चाणारसी नाम णयरी । तीए य अणेयणमन्तसामन्तमउडमणि" जे । २ "वारिधणिया" जे । ३ पणयणि सु-
४ दिग्गजय । ५ "समयम्मि गय-वसह-सीह-सिरे-कुमुमुदान-सवि-दिणयर-अय-कुम्भ-सरवर-भयण-जलणिहि-रयणरासि-हुयासणवसाणा चोइस महा-
सुमिणा । एवावसरम्मि य चलिया" जे, (१५२ गाथानन्तरम्) ।

पउरपयत्तमंदमयरंदमेणुज्जलदलविसेसयं, परिमलमिलियभसलचलपक्खयदप्पियगम्भकोसयं ।
 मुरतरुकुमुमकेसरकरविणिमाणि(१णी)यसरूचयं, मुमुरहिगंधगम्भिणुम्भासिययं वरकुमुमदामयं ॥ १४२ ॥
 पसरियकिरणजालसंवलयसमुज्जलकेसरालयं, सिद्धिफुरियचंदिमुद्धमविहाधियक्खवरसोह्वयं ।
 महुमयमुइयणिहुयमयमहुयरसंसियमज्झवासयं, जामिणिणालिणियाए सेयम्भुरुहं पिव चंदविम्बयं ॥ १४३ ॥
 उययधराहरोरुसिरविरइयचूलामणिसमाणयं, दिणमयरायरुद्धपरिसंठियरयणणिहायकूडयं ।
 उम्भडभुवणभवणउम्भासणविमलपदीवसंगयं, विच्छयसच्छगयणसररुहयं सहसा [वर]पयंगयं ॥ १४४ ॥
 पवणुव्वेल्लकणिरकलकिंकिणिमणहररावमुहलयं, सयलदिसामुहेसु रंखोलिरचलचूलाविलोलयं ।
 णिम्मलकिरणविविहमणिसवलियदीहरडंडभूसियं, सधरणहन्तरालमाणं व ज्ञयं सहसा समूसियं ॥ १४५ ॥
 थलपंकयवियासकोसोयरलद्धणिवेसदेसयं, मुरतरुकुमुममालउरगलियरयुज्जलकंठवासयं ।
 सरसविसट्टकमलदलणिवडणिसम्मणपिहियवयणयं, तिहुयणमंगलेक्कयमंदिरयं वरपुणकुंभयं ॥ १४६ ॥
 कत्थइ विमलचंद-कुंदप्पह-सारस-हंसचड्डियं, कत्थइ वरुणकिरणसरमुग्गयकमलकेरमंडियं ।
 कत्थइ फुडियजुवलउव्वेल्लिरदलणीलायमाणयं, णयण(१णा)लोययम्मि क(व)रकमलसरं जलणिहिसमाणयं ॥ १४७ ॥
 णिम्मलफुरियफलिहभित्तिथलवित्थयसोहवाहयं, पडपरिवेसपसरधवलीकयसयलधराविहाययं ।
 भवणं मणिविचित्तखंभुद्धिभयकणयणिवंधरिद्धियं, सिहरकुंगुखलियवारिहरभरोल्लियविविहचिंधयं ॥ १४८ ॥
 णाणामणिमयूहवित्थरियपहापडिभिणणीरयं, लहरम्मिल्लविमलमुत्ताहलणियरणिहिचत्तीरयं ।
 गुरुकरिमयरपहरणिहारियविद्धुमविडविराहयं, वेलायडविसालतरुमणहरयं वरणीरणाहयं ॥ १४९ ॥
 मरगय-पोमराय-कक्केयणघणमणिणिवहदीचयं, दिसिदिसिवित्थरन्तपहपयरिसवद्धसुरिंदचावयं ।
 रयणुच्चल्लेण दूरोहयकुलगिरिमिहरतुंगयं, धरणणिमित्तयम्मि धरणीए धरावरयं व संगयं ॥ १५० ॥
 विमलसणिद्धलुद्धसंवद्धियवहलसिहाकलावयं, चिरहिच(य)धूमवडलपडिवद्धपहापरिवेसथावयं ।
 मुहयरमंदमारुयंदोलणकयमंडलणिवेसयं, सोमप्पहविसेसपरिसप्पिरयं मुहुयं हुयासयं ॥ १५१ ॥
 इय एवं पुंन्वि मुकयकम्मजम्माणुहावओ वम्मा । पेच्छइ जामिणिविस्मम्मि पवरमुहसंसिणो(णे) मुमिणो(णे) ॥ १५२ ॥

एत्थावसरम्मि चलियासणा सुराहिचइपमुहा सयलमुरगणा समागया वाणारसिं । विमुक्का हिरण्णवुद्धी, पड्याइं
 तूराइं, कओ जयजयारवो, पक्खित्तं कुमुमवासं । पणमिऊण जिणजणणिं पडिगया मुरसमूहा । ताव य मुहपडिबुद्धाए
 साहियं जहाविहिं दइयस्स । तेणावि मुणियसत्थत्थाहिप्पाएण भणिया जहा-मुंदरि ! सयलतेलोक्कवूडामणीभूओ
 संसारोयडणिवडन्तजंतुसंताणलग्गणक्खंभो तियसिंद-णरिंदाइवंदिओ पुत्तो ते भविस्सइ । तओ अहिणंदिऊण राइणो
 वयणं पवणचलियकुवलयदलविलासाणुयारिणा फुरंतेण वामलोयणेण पविट्ठा अंतेउरं देवी । एवं च जहासमीहियम्भहिय-
 संपज्जन्तसयलमुहसंभोयाए वचंति दियहा । परिवड्डइ गम्भो । गवरि य णंदेणवणालि व्व मुरतरुणा, महापुरिसवच्छ-
 त्थलि व्व सिरिवच्छमणिणा, विहावरि व्व सेलंतरियससिणा, दप्पणसिरि व्व संकंतवयणसोहा अचन्तसंपण्णसोहसमु-
 दया दीसिउं पयत्ता ।

ताव य चलियासणागयाहिं दिसाकुमारीहिं पतिदिणं दिसिदिसिणिवेसिज्जन्तविमलमणिमंगलपदीवम्मि संपुण्ण-
 कलसाहियदुवारदेसम्मि पच्चम्मालिहियपत्तु(१त्तु)ज्जलभित्तिभायम्मि उवरिसियंविद्याणपज्जन्तावसत्तमुत्ताकलावम्मि सिय-
 भूइरक्खापरिक्खित्तंसेज्जासमीवम्मि सिरोभागासण्णणिवेसियफलिहमणिमयणिहाकलसम्मि मंतोसहिवलयणिवज्जमाण-
 सयणीयम्मि वासभयणम्मि पडियग्गिज्जमाणए चम्माएव्वीए कमेण संपुण्णो पसवणसमओ । पोसमासस्स किण्हदस-
 मोए विसाहाणक्खत्तम्मि य पसत्थवेला-मुहुत्तजोए दिणयरं व जलहरावली सयल[लोय]लोयणीणंदजणयं तणयं पसूय वि ।

१ 'मनामुज्जलदलविशेषकम् । २ 'राजमिण्डंत' जे । ३ 'चंदणय' सु । ४ 'व्व सययंतरिव' जे । ५ 'वविवाणियप' जे । ६ 'पुण्णे पसवसमए पोसस्स मासस्स किण्हचउइसोए वि' सु । ७ 'णाणंदं तणयं' सु ।

अह चलियासणमुरणाहवुत्तहरिणाणणेण पहायाए । उच्छलइ सव्वओ फुडरणंतघंटाए टंकारो ॥ १५३ ॥
 घंटासदायण्णजिणजम्मणमुणियवइयरो सहसा । सयलो वि विविहक्खिथरविरइयणेवच्छसच्छाओ ॥ १५४ ॥
 संपत्तो पहायुहामघडियपट्टपट्टहपडिरवणिजाओ । मुरणाहमंदिरस्थाणमंडवं मुरगणो अत्ति ॥ १५५ ॥
 इय सोहम्माहिवाइ सह सेसमुरा-ऽसुरेहिं परियरिओ । पत्तो तिहुयणगुरुणो गयरिं पफुल्लमुहसोहो ॥ १५६ ॥

ताव य लद्धमुराहिवाऽऽणत्तिहरिसिण्ण हरिणेगेमेसिणा गिययाणुहावसोवियसयलजणपरियणेण अवहरिऊण
 समप्पिओ मुराहिवाइणो जयगुरु । तओ पंचप्पयारपरियप्पियसरुवेण हरिणा कैरयलंजलिमायं णिव्वण्णेऊण भयवन्तं, वंदि-
 उं णहमणिमिलंतचूलागणिपहापरिसं, पत्थिओ तियसगिरिसमुहं मुरवती । पयट्टो य पयडकडयपडिबद्धकुलसेल-महाण-
 तिमणहरं पेच्छमाणो महोवडिक्खिमलजलदप्पणाधमाणं जंबुदीवं, संपत्तो पसरंतमणिसिलायडपडिबद्धतुंगसिहरोवइयणिज्झ-
 रण्णवाहं मणहरवरकप्पपायवुप्पण्णमणिकुसुममुच्छुच्छलन्तमंदमयरंदं पासपरिसकन्तसयलगहयककिरणकब्बुरियमणिसिलायलं
 विज्जाहरवरमुंदरिसंचरणावल्लमावल्लणारत्तयरंजिज्जमाणमेहलाकलावं सासयजिणिदमणिभवणमंडियवियडणियंवप्पएसं सिह-
 रचूलियामु लक्खिज्जमाणरक्खामणिकिरणकंतिराहिलं,

चंदमणिसलिलणिज्झरण्णमियमंडलसंदंइयणकडयपट्टमारं ।

पज्जलिओसहिजालाकलावपसरियणहाहोयं ॥ १५७ ॥

वियडणियव(यं)यडालमाविमलविप्पुरियफलिहमणिमयधवलप्पहावल्लयवडिदउम्भडसोहं ।

उव्वहमाणं भवणम्मि पसरियं गिययकित्ति व ॥ १५८ ॥

वोसट्टवियडमुरतरुमणिगोच्छुच्छलियकेसरच्छायं । अवलम्बन्तसव्वंगयरयणरिद्धिं व(?) ॥ १५९ ॥

धारन्ते उद्धुट्टन्तुंगिमारुदरविरहतुंगं । अप्पाणं पिव गयणम्मि पसरियं सिहरसंदोहं ॥ १६० ॥

संगोवयंतं(व)घणगहिरगज्जिरं वियडकडयपडिलज्जं । जलहरपडलं पिव सइपरिट्ठियं पवरकरिज्जं ॥ १६१ ॥

णिम्मलसरिकिरणकलावविब्भम(मं) भरियं(य)कंदरदयं(दंतं) । पारयरसं वहन्तं पसरुच्छलिय(यं) गियजसं व ॥ १६२ ॥

[अह] तिहुयणमंदिरधरणक्खं(खं)भभूयं मुराहिवो सहसा । पत्तो मुरगिरिसिहरं मुरकयजयहलहलारावं ॥ १६३ ॥

तओ ओवइओ सरहसं मुराहिवो सह मुरवरेहिं मुरगिरिसिहरम्मि । तत्थ वि परिवियडम्मि फलिहमणिसिलायडम्मि
 पलोइयं पवणधुयचट्टलधयवडालिद्धसंचरन्तमुररामायणमणहरं उवरिहुत्तोवडन्तणहणिण्णयाजलप्पवहसरिसतोरणक्खंमं अव-
 होवासट्ठियगुरुमइदुब्बडफलिहगिरिक्खिभमं सीहासणं । तत्थ य मुरवरकरुलं वियमंदारपल्लवुल्लसंतकुसुमपयरो मुरपहायवज्जि-
 राउज्जसइसंवलयजयजयारवो सह जयगुरुणा गिसण्णो मुराहिवो । संठाविओ भयवं उच्छंगे । आसीणम्मि य मुराहिवे—

ता मणिमयकलमुब्भू(ब्भ)डवयणन्तरणिन्तपिहुपवाहिलं । तियसेहिं से णिहिचं कयजयरवपवरखीरजलं ॥ १६४ ॥

सयलमुरा-ऽसुरकरखित्तविसमवेउद्धुरा विरायन्ति । कयजयरव व्व कयरवविणिज्जितजलणिब्भरा कलसा ॥ १६५ ॥

भुवणगुरुणो णहट्ठियसियवसहविसाणपसरिओ सहइ । पयपम्भारो गुरुफलिहसेलसियणिज्झरोहो व्व ॥ १६६ ॥

अच्चन्तललियलायणमणहरे जिणतणुम्मि ससिधवल्लो । ओवयइ तियसकामिणिलोयणणिवहो व्व जलणिवहो ॥ १६७ ॥

धरणिणिहितं परिसंठिउद्धघणकुसुमकेसरालिद्धं । जायं जिणतणुसंक्रमपसरियपुल्लयं व खीरजलं ॥ १६८ ॥

जायं सवियडकलपु(मु)च्छलन्तकणयप्पहोहपडिभिण्णं । संझारुणजोण्हावडलविब्भमं पवरखीरजलं ॥ १६९ ॥

दीसंति जिणतणुच्छलियकन्तिपडिभिण्णकडयपडिबद्धा । मज्जणजलप्पवाहावल्लगसेयालकलिय व्व ॥ १७० ॥

मारुयपहल्ल(ल्लि)रुवेल्लमज्जणोययपवेविरुप्पडिमो । चलइ व्व तियसपव्वयफुरंतमणिसिहरपम्भारो ॥ १७१ ॥

१ "गवेसिणा जे । २ करयजलं" मू । ३ पेच्छमाणो जंबुदीवं सहसिं वच्यतो णहवलम्मि—अह तिहुयणमंदिरधरणक्खंभभूयं मुराहिवो
 सहसा । पत्तो मुरगिरिसिहरं मुरकयजयहलहलारावं ॥ (गाथा-१५३) । तओ ओवइओ सरहसं मुराहिवो सह मुरवरेहिं मुरगिरिसिहरम्मि
 तत्थ वियडम्मि, पलोइयं सीहासणं । तओ तम्मि मुरवरमुच्यंतमुराहिकुसुमपयरो मुरपहि(ह)यवजिराउज्जसइसंवलयजयजयारवो सह जयगुरुणा उवविट्ठो
 मुराहिवो । संठाविओ भयवं उच्छंगे । आसीणम्मि य मुराहिवे खीरोवडिहपवरणीरपरिपुण्णकयमयामलकलसेहिं महया विभुइए कओ भयवओ
 मुरा-ऽसुरेहिमाहसेओ ति । अह सव्ववारपसरंततियसं जे, (गाथा १७३) ।

उट्ठकतडुज्जरपडणपवणपडिपेड्डिया विहुव्वन्ति । कणयरसारुणभुयइंदकन्तिकविला जलप्पवहा ॥ १७२ ॥

इय सव्वायरपसरन्ततियसणिव्वत्तियाहिसेयस्स । कीरइ णेवच्छ-विलेवणाइओ पूयसकारो ॥ १७३ ॥

तओ हक्खुचसुरसुंदरीयणसुरहिकालायरुप्पंककप्परधुवपसरेणं सव्वभूयगुणगणुक्कित्तेणुच्छलियवहलपुलयपडहत्थेण चल-
णयलमयूहावलमिलंतमउडरयणकिरणेण महियलरंखोलमाणतरलहारेण पणमिओ हिययन्मिन्तरवियंभमाणभावपसरं
सुराहिचेण । णेऊण विमुक्को जणणिसयणीयुच्छंमम्मि । जहागयं पडिगया सुरसमूहा ।

ताव य पहाया रयणी । पडिबुद्धा कमलिणि व्व भयवती चम्माएवी । पेच्छइ य सरसचंदणालिद्धेमुद्धदेहच्छविं
वोसट्टमुरपायवुव्विडिममणिकुसुमजणिउत्तंसं अण्णसरिसं वालयं । एत्थावसरम्मि य समुप्पणतणयं देवि जाणिऊण
सरहससंचरणपक्खलियमणिणेउररणंतक्कंकारमुहलो इओ तओ कंचुईसंचरणसम्मदणिदलियणिवडन्तखुंजय-किरात-
वामणो मैयपहोलिरविलासिणीयणपुण्णवत्तहरणविलुप्पन्तपुरजणवओ मंदरसंखुद्धजलहिगंभीरणंदिसइसंवलियकलकाहलो
पसरिओ मंगलज्झुणी रायभवणम्मि, पयत्तं वद्धावणयं, केरिसं च ?—

वीसत्थसुरकराइयदुंदुहिगंभीरविम्भमुब्भेयं । परिमंदमइल्लुहामकाहलासंखसंवलयं ॥ १७४ ॥

मंगलगेयुव्वासियवडन्तपडुपडहल्लयगमाणायं । गयविहल्लविलासिणिज्जणजणिउव्वडविलासं ॥ १७५ ॥

पुरसुंदरिगुरुसम्मददलियमणिमेहलाकलाविहं । छणणेवच्छपसाहियमल्लन्तकिराय-वामणयं ॥ १७६ ॥

इय संगलन्तसामन्त-मन्ति-पुरवुद्धवडिदयामोयं । परिवडिदयं समन्ता वद्धावणयं णरिंदयरे ॥ १७७ ॥

तओ सम्माणियासेससामन्तलोयं विदिण्णवद्धावयजणपारिओसियं पूइयदेवयाइयं णिव्वत्तं वद्धावणयं । गच्छन्ति
दियहा । पासो त्ति गुरुयणेण पड्डावियं णामं । णवरि य सरयसमओ व्व पडिबुद्धपंकयमुहो, कमलसरो व्व कुवल्लय-
दल्लुज्जलो, जह जह वडिदउं पयत्तो तह तह ससहरस्सेव वड्डइ कलापयरिसो, तरणिमंडलस्सेव पणट्ठो तिमिरणियरो ।
अवि य—

दिप्पंतपंचमीचंदचारुणा ललियभालमग्गेणं । रेहइ कसणुव्वेत्तंतघडियकुडिलालयग्गेण ॥ १७८ ॥

वोसट्टसरसतामरसधवलचलकसणपम्हलिल्लेहिं । णयणेहिं णियंतो धवलइ व्व भवणंगणाऽऽहोयं ॥ १७९ ॥

वयणेण सरसवियसंतकमलपम्हउडपरिमलिल्लेण । वेलवइ भमिरपरिल्लंतमालियं मुद्धभमराण ॥ १८० ॥

चलणेहिं संख-कुलियं(सं)-ऽकुसाइकयलक्खणेहिं भणइ व्व । अभणंतो वि भविस्सं तिलोयणाहत्तणपहुत्तं ॥ १८१ ॥

इय सयलसुरिंदुहाममउलिमालचणं पि चलणाण । साहइ दुंदुहिणसदविम्भमिल्लेहिं भणिएहिं ॥ १८२ ॥

एवं च सिरिवच्छलंछणघवियवियडवच्छत्थलस्स अचन्तसोमदंसणत्तणजणियजणमणाणंदस्स भयवओ पास-
यंदस्स वियम्भिओ जोव्वणारंभो । केरिसो य ?—

तेल्लोक्कजणमणोहरणपक्खल्लम्मिल्लणिययमाहण्यो । लहइ परमायसोहं सरियावडणोऽमयरसो व्व ॥ १८३ ॥

सयलजणणयणजुवल्लय-मणकुमुयाणंदणे सुहालोओ । सयलकलासंपण्णो पओससमयस्स व मियंको ॥ १८४ ॥

कुसुमप्पसवो वरकप्पपायवस्सेव पयरिसुप्पण्णो । खैरोदओ व्व वियसंतसरसतामरससंडस्स ॥ १८५ ॥

वहुलास-विलासट्ठाणमणहरो वरहिणो कलावो व्व । सुरधणुराओ व्व समुण्णमन्तणवजलयवडलस्स ॥ १८६ ॥

इय अइसंधियसुरस्स-भुयवल्लुत्तप्पदप्पमाहण्यो । पवियंभिओ समुव्वडमणोहरो जोव्वणारंभो ॥ १८७ ॥

तओ पसरिए सयलजणलोयणमुहए जोव्वणारंभे, वियम्भिए णीलकुवल्लयपम्हल्लुज्जललोयणप्पसरे, विसट्टे सरसविय-
संतसिरीसकुसुमकेसरप्पडे तणुप्पहापयरिसे जओ जओ लीलासंचरणकमलालंकियं कुणइ महियलं तओ तओ कुवल्लयावलि

१ "सपुत्तल्लय" सु । २ "लिद्धदेह" सु । ३ "कुज्ज" सु । ४ "महपहोलिरे" सु । ५ "इसेयताम" जे । ६ व्व गणणं सु । ७
"उल्ल" सु । ८ "मउडना" जे । ९ इत्तइयान्तर्गतः पाठो जेतुस्तके नास्ति । १० "सुरोवओ" सु ।

व्व चित्थरइ सयलजणलोयणमाला ।

एवं च कयाइ गयसिक्खाविणोएणं, कयाइ जच्चतुरंगवाहणीए, कयाइ जोयौण खेड्डेणं, कयाइ विविहकलाकोसल्लेणं, कयाइ सत्थत्थवियारेणं कीलमाणस्स तस्स सुहसंपयाए व्व जोव्वणाहोओ, जोव्वणेणं व वम्महवियासो, वम्महेणं व सोहग्गाइसओ, सोहग्गाइसएण [व] रुवसमुदओ, रुवसमुदएणं व कलाकलावो, कलाकलावेणं पिव चिवेओ, चिवेएणं पिव कुसलट्ठाणं भूसिज्जइ । सह भयवया भूसिओ सयलो वि जियलोओ चि ।

एत्यावसरम्मि य सयलगुणगणालंक्रियसविसेसीकयरुवसोहग्गाइसयस्स भयवओ पसेणइणा अच्चन्तसोहग्गासा-
लिणी पहावती णाम निययधूया पणामिया । ॥ जा च केरिसा ?—

सहइ सवणेकवासावसंतसियदंतपत्तयाहरणा । उइएंदुमंडलालोयमणहरा पुण्णिमणिसि व्व ॥ १८८ ॥
जच्चतवणिज्जपव्वत्ततणुकयज्जोयपिंजरावयवा । संचारिमि व्व कलहोययडियधीउल्लिया सहइ ॥ १८९ ॥
कसिणुज्जल-ललियच्छिच्छडप्पहावरियभूसणकलावा । सोहइ संज्ञायवभिण्णफुडियणील्लप्पलालि व्व ॥ १९० ॥
पाउससिरि व्व पढमुण्णामन्तपीवरपओहराहरणा । वरपोंडरीयवोसट्ठलोयणा सरयलच्छि व्व ॥ १९१ ॥
माहवसिरि व्व णिम्मियकोमलकंकेल्लिपल्लवुत्तंसा । उव्वेल्लसरसकरकम्ममणहरा महुमहसिरि व्व ॥ १९२ ॥
णिव्वत्तरोइतिलयावलम्बिणी(?) सिसिरवासरालि व्व । उव्वमडसवणाइरणो[व]लक्खिया रिक्खपंति व्व ॥ १९३ ॥
इय रुइरुवसोहग्गसंगयं उमाया विसालच्छी । णिह व(व्व) तरुणजणम(ग)णमउलावियलोयणप्पसरा ॥ १९४ ॥
अणां ज—

जीए पवालारुणविप्फुरंतकमलोवमम्मि चलणजुए । लायणाणिज्जियाए व सिरीए कुसुमच्चणं जणियं ॥ १९५ ॥
वित्थिण्णत्तणनिज्जियसुरसरियापुलिणवियडरमणार्हि । उल्लसइ वयवमुव्वेल्लजयपडाय व्व रोमलया ॥ १९६ ॥
गरुयणियं वयवडुब्बिण्णसिहिणवट्ठन्तरालमल्लीणो । मज्झो पीडिज्जंतो व्व जीए स्वामत्तणं पत्तो ॥ १९७ ॥
लायणोययसंपुण्णमणहरं सहइ थोरथणवट्ठं । वम्मइणरिंदरायाहिसेयकयकलसजुयलं व ॥ १९८ ॥
सहइ देहावियवम्महधणुसोहाविबमं भुयावलयं । अण्णोण्णणिव्वडन्तोवमाणगुणलद्धमाहप्यं ॥ १९९ ॥
विवायंओ बहल्लुसंतसियदसणकिरणसंवल्लिओ । जीए फुडकुसुमगब्बिमणपल्लवसोहाहरो अहरो ॥ २०० ॥
इय तोए समं पत्थिवसुयस्स सुररिद्धिविबममवल्लिसं । वत्तं पाणिग्गाहणं सुहतिहि-णक्खत्त-जोयम्मि ॥ २०१ ॥
एवं च णिव्वत्ते पाणिग्गाहणे सयलसुहसमिद्धिसंभोयणिव्वरं विसयसुहसुव्वंजमाणस्स गच्छंति दियहा ।

अण्णया य पासायस्स उवरिभूमिभाए णिसण्णेण पासयंदेण वायायणंतरालेण पलोइयं णयरीए सम्मुहं जाव
दिट्ठो सयलो वि पुरोजणवओ पवरकुसुम-वल्लिपडल्लयविहत्थो वार्हि णिग्गच्छन्तो । तओ पुच्छियं भयवया जहा—किं
पुण कारणं एस जणवओ पत्थिओ?, किं कोइ छणो?, किं वा ओवाइयं? ति । तओ सिट्ठं एकेण पासवत्तिणा पुरिसेण-
ण एवंविहं एत्थ किं पि कारणं, किंतु कोइ महातवस्सी कडो णाम किल एत्थ महापुरीए वार्हि समागओ, तस्स वंदण-
स्थं पत्थिओ इमो जणवओ चि । तओ तमायणिज्जण जणियकोउहलविसेसो भयवं पि पत्थिओ । गओ जत्थ सो
कंडो । दिट्ठो य पंचमगतवं तप्पमाणो । तओ तिण्णाणसंपण्णत्तणओ मुणियं भयवया एकम्मि अग्गिकुंडे पक्खिचाए
महल्लरुक्खसोडीए डज्झमाणं णायकुलं । तं च तहाविहं कलिऊण अच्चन्तकौरुण्णोववण्हियएण भणियं भयवया—अहो !
कट्टमण्णाणं ति, जेण सुव्वउ—

जह लहइ पायवो णेय अप्पयं मूलपसरवइरितो । तह धम्मो धम्मत्थीण होइ ण विणा दयाए फुडं ॥ २०२ ॥

१ "वाहयालीए" जे । २ "जोयण" सु । ३ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति । ४ उव्वसइ सु । ५ "तुहाविहव" जे । ६ "णत्त-
ट्ठमा" सु । ७ "भूमिवाणि" जे । ८ "ट्ठो वपत्तीपुरओ जण" जे । ९-१० कमवो सु । ११ "कारुण्णावण्ण" जे ।

जह बीएण विणा होइ नेय सयला वि सासनिफत्ती । तह धम्मत्थीण ण होइ पुण धम्मो दयाए विणा ॥ २०३ ॥
 जह रहवर-तुरय-भोइदसंकुलं साहणं विणा पहुणो । सोहं ण देइ, धम्मो दयाए रहिओ तह जतीण ॥ २०४ ॥
 जह णयरं ण लहइ वियडगोउरहारविरहियं सोहं । धम्मज्जुयाण ण लहइ तहेव धम्मो दयाए विणा ॥ २०५ ॥
 जह सलिलं वारिहरुणतीए ण विणा कहिं पि संपडइ । तह धम्मो पाणिदयाए विरहिओ नेय संपडइ ॥ २०६ ॥
 इय सव्वभूयदयदानकारणो जो जयम्मि सो धम्मो । जत्थ ण दया मुणिज्जइ जयम्मि सो केरिसो धम्मो ? ॥ २०७ ॥

तओ एयमायण्णिऊण कढेण जंपियं जहा—पत्थिवसुयाणं रह-तुरय-कुंजरार्इण परिस्समो धम्मो, धम्मं पुण जइणो वियाणन्ति । ताव य भणिओ भयवया एक्को णिययपुरिसो जहा—रेरे ! एयं खोडिं दरदड्डं कुंहाडेण फोडेसु चि । तओ 'जमाणवेसि' चि भणमाणेण दोफालीकया खोडी । विणिग्गयं महल्लं णागकुलं । तत्थ पुलइओ ईसीसि डज्जमाणो एक्को महाणागो । तओ भयवया णिययपुरिसवयणेण दवाविओ से पंचणमोकारो पचक्खाणं च, पडिच्छियं तेण । ताव य कय-णमोकार-पचक्खाणो कालगओ समाणो समुप्पणो णागलोयम्मि सयलणागलोयाहिवचणेणं ति ।

एत्थावसरम्मि य समुच्छलिओ 'साहु साहु' चि कलयलो—अहो ! परिण्णाणं पत्थिवसुयस्सं, अहो ! विवेयया, अहो ! सत्थत्थावगमो, अहो ! पयतिपसण्णत्तणं, अहो ! बम्भाववोहो चि । तभायण्णिऊण विलिओ परिच्चायओ काऊण कट्टयरमण्णाणतवं कालगओ समाणो समुप्पणो मेहकुमारमज्झम्मि भवणवासित्तणेणं मेहमाली णाम । भयवं पि पविट्ठो णयरिं । एवं च सुहमच्छंतस्स जंति दियहा ।

अण्णाया य समागओ मलयमारुयपहल्लिरुवेल्लमाणतरुलयावलओ णिवडंतपाडलाकुमुमपडलपच्छाइयमहिमंडलो उब्भिण्णसहयारमंजरीधूलिधूसरिज्जमाणणहयलाहोओ महुमयमुइयमहुयरसंकारमुहलियदियंतरालो कोइलकुलकलरवायण-णुत्तत्थपंथियजणो कुरवयकुमुमुकेरवाउलिज्जमाणमुद्धफुल्लंधुओ वसन्तमासो चि, अवि य—

सहयारमंजरीपुंजपुलयणुप्पणकामउल्लाळे । कोमलमलयाणिलचलतरंगियाणंगकेउम्मि ॥ २०८ ॥
 महुमत्ततरुणिगंडूसेयकंटइयवउलविडवम्मि । कंकेल्लिचलणतालणरन्तमणिणेउररवम्मि ॥ २०९ ॥
 वियसंतकुरवउकेरपरिमलल्लीणभमिरभमरम्मि । अविरलकुमुमुग्गयधूलिधूसरिज्जंतदिसिवलए ॥ २१० ॥
 महुमत्तमहुयरीमहुरजणियसंकारवहिरियदियंतं । उव्वेल्लपल्लवंतल्लिणीकयकोइलालावे ॥ २११ ॥
 गयवइयायणजीवोवहारहरिसियमणोहविल्लम्मि । कुमुमधणुसइसारिच्छभमरुयतत्थपदियम्मि ॥ २१२ ॥
 विरहभयदलियपंथियहियवारुणफुडियकंसुवच्छवए । दियहम्मि वि रायंताहिसारियाजणियपत्थाणे ॥ २१३ ॥
 उव्वेल्लमाणरइसायरोरुरेल्लियतणुत्थलीविडवे । अणवरयकुमुमसरपहरपडणकयविहुरविरहियणे ॥ २१४ ॥
 इय णवणलिणुव्वेल्लियवियासपसरियपरायर्पिजरिण । संपत्ते महुसमयम्मि तरुणजणवम्महुल्लाळे ॥ २१५ ॥

एयारिसम्मि य वसन्तमासम्मि उज्जाणवालो भयवओ समीवं वसंतसमयसंखययं सहयारमंजरी धेत्तूण [१ समु-वट्ठिओ] । समण्णिया य दरदलियकुमुममयरंदर्पिजरिज्जमाणतणुविहाएण भयवओ मार्यदमंजरी । भयवया भणियं—ओ ! किमेयं ? । तेण भणियं—भयवं !

महुपसरेणं व मओ मयपसरेणं व जोव्वणविलासो । सोहं पावइ जह तह तुमए बहु ! माहवारंभो ॥ २१६ ॥
 जेण सुव्वउ—

जायं पवणंदोलणदरविहुयंकोल्लधूलिधवल्लिं । महुमत्तकामिणीकयकडक्खसोहं असोयदलं ॥ २१७ ॥
 पइदिणपरियडिदयरायनिभरं कुरवयं वियासिल्लं । ऊससइ वडिदयरंसं उज्जाणसिरीए हिययं व ॥ २१८ ॥
 दीसइ णंदणलच्छीए मंदमयरंदलग्गभमरिल्लं । पडिवडमरगयदलं कण्णाहरणं व कणियारं ॥ २१९ ॥

१ 'गयं' सू । २ कोहाडेण जे । ३ 'स्स, अहो ! सत्थ' जे । ४ ति । तओ तम्मि महरद्वयपरमवंधवे समागए वसंतमासम्मि उज्जाणवालो जे, (२१४ माथानन्तरम्) । ५ 'ख' सू ।

उवणेइ मुरयमुडियस्स कुमुममयरंदकयगुणायामं । महुसमओ धणुयट्ठि व्व कुमुमचावस्स चूयलये ॥ २२० ॥
 वित्थरइ दइयकयकोवकामिणीजणियडिययवेयल्लो । माणतरुमंगपवणो व्व सव्वओ परहयासवो ॥ २२१ ॥
 तिलउज्जलम्मि वियसियवउलासवमुरहिपरिमलिल्लम्मि । णंदणसिरीए सुव्वइ मुहम्मि गीयं व भमररुयं ॥ २२२ ॥
 उब्भिण्णमंदमायंदमंजरीजालपरिमलुप्पीलो । दाणामोउ व्व वसन्तहत्थिणो पसरइ दिसासु ॥ २२३ ॥
 इय पेच्छसु महुसमयं पैहु ! तुह जणियाणुरायवल्लिहिं । पल्लवियं पिव कामिणिविलासलोलच्छिवत्तेहिं ॥ २२४ ॥

तओ वसन्तवणणुप्पणपउरकोउहलो वसंतकीलाणिमित्तविरइयमणहरणेवच्छो पुरजणपयट्ठावियमहाळणो दिसि-
 दिसिपसरन्तचचरिवहुपडिरुद्धमहाजणो णचंतवरविलासिणिसमासण्णमिलियभुयंगलोओ खोरदुव्वयणइसाविजंतसिडिं-
 सत्थो वंदिसमुग्घुदुजयजयासइमुहलो पयट्ठो विविहकयकीलौविलासणिन्भरं णिययनंदणाभिमुहं । दिट्ठं च मलयमारुयंदो-
 लिज्जमाणतरुणां तरुणुब्भिण्णदरदलियकुसुमुब्भट्ठिगिण्णमयरंदं मयरंदपरिमलल्लीणभमिरभमरउलवद्धंकारं झंकारायण्ण-
 णामुण्णवुण्णुकण्णइयमाणिणिजणं उज्जाणं । दिट्ठं च—

सयलजणचित्थियफ(फ्फ)लसंपायणजणियणंदणविलासं । उउसिरिसण्णेज्जपल्लुकुमुमवरपायवुप्पीलं ॥ २२५ ॥
 मारुयविहुउब्भट्ठुडियकुमुमकेसरपरायपिंजरियं । तरणिपरिमासविरहियविसट्ठकमलायरुच्छंगं ॥ २२६ ॥
 अविरयपसरियपच्चगदलउलुव्वेल्लचंपयपसूयं । अमुणियपरोप्परालोयमिहुणपरिभुत्तलयजालं ॥ २२७ ॥
 मुरविलयापुलइज्जन्तकप्पतरु[.....]लयाजालं । कणिरकलहंसलंधियथलणलिणिमुणालियावल्यं ॥ २२८ ॥
 महुयरपल्लत्थियपल्लवाइमुत्तयवियासियपसूयं । महुमुइयणिप्फुरट्ठियकुमुमोयरसि(स)त्तस(भ)सलउलं ॥ २२९ ॥
 णिविडतरुविडवपहयरपडिप्फुलिज्जन्ततरणिकिणोहं । वित्थरियविविहतरुकुमुमणियरकेसरपराइलं ॥ २३० ॥
 केयइपसूयपसरन्तरेणुधवलियणहंगणाहोयं । ससिजोण्हापव्वालियदिसासुहं सियपओसं व ॥ २३१ ॥
 इय लोयणपाणिप्पसरसिट्ठकुमुमोहपल्लवार्हितो । उउलच्छीहिं व विलासिणीहिं तरुणो परिग्गहिया ॥ २३२ ॥

तओ तम्मि उज्जाणवणम्मि विलासिणीहिं समायरिज्जंति पिययम व्व रयभमरउलमाणलोयणपायवुप्पीलो, उव-
 विसिज्जइ पिययमुच्छंणे व्व किलित्तत्तणओ रयणिन्भरम्मि पायवमूले, णवरिय कयग्घो व मारुयपहल्लिरुव्वेल्लपक्खिरिय-
 पसूयपसरेण पविट्ठो भयवं पवड्ढमाणकीलाणिन्भरो णंदणवणं ।

दिट्ठं च तत्थ मणिमयभित्तिच्छण्णसंपडंतपायवपडिविम्बं उचुंगधवलसिहरग्गमग्गलंधियणहंगणं पवणधुयधवलधयवडु-
 व्वुण्ण-पहयपयट्ठरविरहतुरंगमं विविहमणिकिरणपडिवद्धमुरचावचंचेल्लियं वणसिरिसहत्थविकखेवविरइयकुमुमोवयारसोहं
 सेवाणिमित्तसमागयमुरकामिणीमुरलोयसरिसंकीरंतसयणीयं एक्ककोणंतरालपरिसंठियकिण्णरमिहुणसुव्वन्तगीयं जक्ख-
 हिवविलासिणीविदिण्णपज्जलियमंगलपदीवं वणभवणं ति ।

तम्मि य सयलजणलोयणमुहए अवयरिऊण निययजाणाओ णिसण्णो कणयासणम्मि । अइरमणीयत्तणओ य सव्वओ
 पलोइउं पयत्तो । पलोयमाणस्स य णिसण्णा चित्तभिचीए दिट्ठी । ‘किमेत्थ लिहियं?’ ति परियप्पमाणेण णाणावल्लोएण
 मुणिऊण भयवओ अरिट्ठणेमिणो चरियं चित्तिउं पयत्तो—“एयस्स णवरमविण्णायमयणसरपराहवस्स अखंडिओ
 जसो, जेण ण मुणिओ कुत्रियकामिणीकडैक्खविकखेववहलो दुक्खसंदोहो । अण्णे उण बहुविहवसणकिलिस्समाणा
 णिवडंति भयसयावत्तवहुलम्मि संसारसायरे । [ता] पउरदुहपंपरापडिवद्धगोत्तिगेहाओ व्व इमाओ जुज्जइ गेहवासाओ
 णिज्जांतु” ति ।

१ ‘जायव’ जे । २ बहु ! जे । ३ ‘लावियास’ सू । ४ उज्जाणं । (२३१ गायानन्तरम्) तओ तम्मि उज्जाणम्मि पविट्ठो भयवं
 पवड्ढं जे । ५ ‘सकीरंत’ सू । ६ मुणियं भयं सू । ७ ‘वखलपक्खवहुलो जे ।

तो मुणियरसे वि रसंतरा णियन्ती गयालिमाल व्व । ण रमइ दिट्ठी दइयाण वयणकमलम्मि तस्स फुडं ॥ २३३ ॥
 तं चिय विलासमंडलमेणोहरिल्लं पि तुंगथणवट्ठं । पोम्मलपरिणामविहावणाए अण्णं व परियत्तं ॥ २३४ ॥
 तं चिय णियम्बविम्बं पवियडकडिचडियकंचिराहिल्लं । बहुविहवचोमलभायणं व चित्तं ण रामेइ ॥ २३५ ॥
 इय जाओ पवणुद्धुयकिसलयपरितरलसयलविसयमुहो । सिद्धिसमागममुहलंभणिम्भरोवायतल्लिच्छो ॥ २३६ ॥

णवरि य मोक्समुहसंगमुसुयं जाणिऊण भयवंतं समागया लोयंतियसुरगणा, चलणमिलंतुत्तिसंगा य पणमिऊण भणिउं पयत्ता-भयवं ! ण अम्हाणमेसोवपसो, किंतु 'लोइयट्ठिति' चि कलिऊण भण्णसि चि, ता पसरउ केवलपरकमो-जल्लावजियमपडिहयं तुम्हाण सासणं, णिव्वाउ दुइजलणजालावडालिणिवडियं सयलं पि तिहुयणं, पवचिज्जउ विमुद्ध-दंसणमग्गावयारदिणसुपरिभोयजत्तिउयत्तं तित्थं, णिण्हउ पयपायवस्स व तुम्ह वयणफलं सयलजियलोओ, सुम-रिज्जउ य जम्मंतरतवावजियसुरलोयपाणयवियम्भियं । एवं च विणओणयसुरगणवयणविण्णासपडिवोदिज्जमाणो विणियत्तसंसारवासंगवामोहो णिहारससमओ व्व पडिभग्गमहुमासच्छणो परियत्तो णयरीसमुहं । पविट्ठो सुहज्झाणं व णिययमंदिरं ति । तओ अत्थंतरमुवगओ दिणयरो ।

॥ २३७ ॥ णवरि य परिभाविज्जीवलोय[स]विसेसल्लदपरमत्थो । सरो वि मुक्कभवणो मणो व्व अत्थंतरं पत्तो ॥ २३७ ॥
 परिहाइ समं पंकयसिरीए पप्फुरियवासच्छाया । विहडइ रहंगसंगो मणोरहो दुग्गायाणं व ॥ २३८ ॥
 जह जह जायइ वियलन्तकिरणपसरो मुलोयणो लोओ । तह तह देइ रहंगाण जलमयाणं पि संतावं ॥ २३९ ॥
 परिसण्हकिरिणपम्हउडपरिययं मुहविलोयणालोयं । दीसइ समुदसलिलम्मि कणयकमलं व रविविम्बं ॥ २४० ॥
 पविसइ सायरसलिलम्मि तुंगगिरिसिद्धि(र)लन्निरग्गिकरो । मज्जणकयाहिलासो व्व सणिय सणियं दिवसणाहो ॥ २४१ ॥
 दिणदइयचुंवणायम्बिउव्व(ड)डं पच्छिमाए अहरं व । पेच्छंति उरत्थायंतमंडलं भाणुणो विम्बं ॥ २४२ ॥
 थोवणिबुद्धन्तायम्बविम्बवियलन्तवासरच्छाओ । राहुवयणे व्व अत्थायलम्मि सरो समुत्थाओ ॥ २४३ ॥
 इय अत्थंतरपत्तम्मि सयलजियलोयबंधवे सरे । सोएण व सयलदिसाण होन्ति कसणाइं वयणाइं ॥ २४४ ॥

तओ अत्थंतरमुवगए दिणयरम्मि ॥ २४५ ॥ णहणिण्णयाकणयकमलपरायरायि व्व समुच्छलियां संज्ञापहा, दिणुम्भडपहर-च्छेउच्छलियसोणियप्पवाहो व्व संजाओ पच्छिमदिसाहोओ । एवं च कणयगिरिधाउणियरो व्व णहजलणिहिविदुदुमप्पहा-णिवहो व्व वारिहरतरुपल्लवुप्पीलो व्व पसरिओ संज्ञाराओ, रयणिवहुदिण्णभुवणभवणपदीवकज्जलसिह व्व पसरिया-तिमिरपत्थारी, रविविरहमुच्छि[या]ए व्व भुवणलच्छीए समुच्छलिया कसिणिमा, णिहलियसंज्ञाविदुदुमवणं गयउलं व समोत्थरियं तिमिरवडलं, मिच्चिविहुरलद्धावसरो खलयणो व्व समुम्मिळो तारयाणियरो । ताव य दीसिउं पयत्ता उयया-यल्लफलिहकडयच्छवि व्व चंदप्पहा, लद्धपसरा य पसरिया मंदं मंदं ससियेरा,

णवरि य उर्य[य]धराहरसंचुण्णियधातुकदमायम्बं । ससिविंवं लक्खिज्जइ दिसागयंदेक्कम्भं व ॥ २४५ ॥
 उव्वहइ दरुग्गायससिमयूहपडिहयसमुम्भडतणा(मो)हं । पुव्वदिसायोवुल्लसियसच्छकसणावरिल्लं व ॥ २४६ ॥
 संपुण्णमयं णिव्वडियमंडलं सहइ णहसरोवगयं । अंतोणिहुयट्ठियलीणभसलकमलं व ससिविम्बं ॥ २४७ ॥
 उययार्हितो जह जह आरुहइ णहंगणम्मि पसरिल्लो । करतालणाभएण व तह तह विवलाइ तमणियरो ॥ २४८ ॥
 इय ससियरपडियग्गियपणट्ठतिमिरं मुहुम्भडालोयं । अण्णमयं पिव जायं भुवणं दीसन्तसम-विसमं ॥ २४९ ॥

१ 'मणोरहिल्लं पि सु' । २ 'लविसयसंगमुहो' । ३ 'तुम्ह सा' सु । ४ 'वस्सेव सु' । ५ 'निद्धासमओ जे' । ६ 'हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो ज्ञेयस्तुके नास्ति' । ७ 'या संज्ञाविदुदुमवणं गयउलं व समो' जे । ८ 'फलियकडया छवि जे, फलिहकडयविम्ब [व्व] चंदप्पहा सु' । ९ 'यरा । तओ चंदिमाविद्यापसरभूसियम्मि भुवणाभोए, परियट्ठिए कामिणीपियबंधवे पओसमए, मणहरइसुहपरिभोयविस्सविसेसु सयलसत्तो[ए]ए-अह एरिसे पओसे सिद्धि' जे, (२५४ गाथायाम्) ।

तओ उइयम्मि कुमुयायरबंधवे भियंके पुंजिज्जइ व्व दमच्छायासुं, णिलुकइ व्व गिरिकुहरकंदरेसुं तिमिरसंधाओ । तओ तिमिरपहराउरस्स सयलजियलोयजंतुणो अमयरसच्छड व्व समुच्छलिया चंदिमा । जा य पल्लविय व्व धवलधयवडेसुं, पडिफलिय व्व तरुणिगंडमंडलेसुं, वित्थरिय व्व कुमुयसंडेसुं, परिवडिडय व्व पासायसिहरेसुं, वियसिय व्व सच्छसलिलासणसुं ति । एवं च चंदिमावियासपसरियम्मि भुवणाभोए परियट्टिए कामिणीपियबंधवे पओससमये कामिणीण के वावारा वट्ठिउं पयत्ता ?—

जं जं चिय सहिकयदइयसंकहो कुणइ पत्तविच्छित्तिं । उप्पसइ तं तह चिय सेओ तोसेण व मुहम्मि ॥ २५० ॥
दिट्ठी पल्लइ ता ण पेसिया दइयमंदिराहेन्तो । जा ण पलोयइ दइ व्व सम्मुहं पिययमं झत्ति ॥ २५१ ॥
गलइ तरुणीण वम्महसरपहरवियल्लियं व हिययाहिं । माणग्गहणं ससियरमउलावियधीरपत्थाणं ॥ २५२ ॥
जायन्ति मुह(हु) चिय दइयदंसणुच्छलियपुलयकटिणाइं । ण उणो मुणन्ति अंगाइं गलियमाणं पियाण मणं ॥ २५३ ॥
रमणुल्लसन्तवियलन्तकन्ति(न्त)पसरन्तसेयपुलइल्लो । पियदंसणम्मि जाओ रयावसाणे व्व तरुणियणो ॥ २५४ ॥
दइयाहिं दिण्णमयवसमउलावियलोयणाइं वेप्पन्ति । अहरा वारुणिचसय व्व दसणकरकुमुमसंवलिया ॥ २५५ ॥
णिकारणकलहविलक्कविकुवियणगणियसहीण संलावो । मयमंथरं णिसम्मइ तरुणियणो सयणचट्ठम्मि ॥ २५६ ॥
इय एरिसे पओसे सिद्धिवहसुयमणस्स जयगुरुणो । मणयं पि ण लहइ च्चिय अवयासं कइ वि पंचसरो ॥ २५७ ॥

एवं च विरायरसन्तरुत्तिण्विसयाहिलासस्स परमत्थमुणियवम्महविडम्बियव्वस्स परिगलियपिययमाणुरायस्स संसारसरुववियारणापेसत्तचित्तस्स समइच्छिओ पओससमओ । विसज्जियासेसपरियणो य पुवण्णो पल्लंके । परिचायकारणुप्पणमुहज्जवमाणस्स य से अट्ठंता रयणी । ताव य पच्छिमदिसाए फलं व णहतरुणो विलंबियं ससिबिंबं, महसमणं व लंबिया जामिणी, पच्चूससमणं मंडणं व वियंभिया दियसलच्छीवयणम्मि अरुणप्पहा, उययसिहरे व्व अत्थमत्थयम्मि जायमायंविं ससंकविम्बं ।

अह विगयचंदिमालोयमउलिरामुककुमुयगहणेहिं । गम्मइ अरुणकरालियकमलवणं भमरवंदेहिं ॥ २५८ ॥
वित्थारिओ पओसम्मि णिम्मलेणावि जो भियंकेण । सो चिय रविणा विहओ राएण य चक्कवायतमो ॥ २५९ ॥
णिव्वुदचंदिमाजलकंसिणे वि विलाइ गयणमग्गम्मि । रविणो खुप्पन्तं पिव भएण पंकम्मि गहचकं ॥ २६० ॥
उवसंततारयाणियरकणयररपिजरुभडच्छायं । दीसइ सिद्धिमलविंभममुययट्टियतरणिमायासं ॥ २६१ ॥
ता विप्फुरंतकरजालवियडपडिपुण्णमंडलाहोओ । उब्भासइ भुवणं णेय तिक्कतावं जणेइ रवी ॥ २६२ ॥
मयरंदपडलपवभारपसरैवसउल्लसन्तपम्हाइं । परिमलमिलन्तभमराइं कमलसंडाइं वियसन्ति ॥ २६३ ॥
घडइ एक्केकमं चंचुकोडिकोमलमुणालियावलयं । संगमसंगयगुरुसोक्खपसरमुहियं रहंगजुयं ॥ २६४ ॥
इय बालायवपडिभिण्णइसमुहल्लम्मि गोससमथम्मि । जायंति तरणिमंडलवियाससोहावियजयम्मि ॥ २६५ ॥

तओ तरणिमंडलप्पहाविहसियम्मि महियले जायम्मि दलियकमलवणसंडसोहम्मि दिणलच्छिमुहे पडिबुद्धो जम्भायन्तवयणदसणप्पहाविहसियमुहमंडलो भयवं । पवण्णो य सविणओणयविण्णत्तगुरुज्जाणुमण्णिओ पणामियजण-चित्तियाडरित्तदाणविसेसो दिक्खाविहाणमव्वुवंगंतुं ।

तओ ससंभमुम्महमणुवपलोइज्जमाणदेहाहोया समागया भगवओ पायसमीवं सुरा-ऽसुरगणा । ताव य जायं सुरा-ऽसुरमयं व तिहुयणं । सुरा-ऽसुरविमाणपेल्लणाभएण पडइ व्व णहयलं, सुरकराहयगहिरवज्जिराउज्जमुहलं रसइ व्व तिहुयणं । एत्थावसरम्मि य कयविहदेवंगुल्लोयवियाणयालंकिं उवणीयं महल्लं सिवियारयणं । समारूढो तत्थ भगवं । तओ समुच्छलिओ जयजयारवो । एवं च समारूढस्स भगवओ समुक्खित्तौ णरगणेहिं पच्छा सुरगणेहिं

सिबिया । गओ बाहिरुज्जाणं । ओइण्णो सिबियारयणाओ । विमुकालंकारासयलसंगो य पोतस्स बहुलेकारसीए
आसाढणक्खत्तम्मि पवण्णो दिक्खं । गया थोऊण जहागयं सुरगणा ।

भयवं पि दिक्खणान्तरुपणमणपज्जवणाणो अणेषअच्चुग्गाभिग्गहविसेसमल्लिजमाणकम्मपरिसो विहरन्तो
महिमंडलं णिययचलणफंसपविचीकयपुहइपेरन्तो पत्तो य पत्तलतरुसंडमंडियं एक्कं णयरसणपरिसंठियं तावसासमं । ताव य
अत्थाओ दिणयरो, पसरियं बहलतिमिरं । तओ तप्पएसम्मि कूवासण्णद्वियेवडपायवहेट्टओ ठिओ अगणियगरुओ-
वसग्गभयविसेसो भयवं पडिमाए त्ति ।

इओ य सो मेहमाली अवहिप्पओएणं मुणिऊण अत्तणो वइयरं, सुमरिऊण पुच्चभववेरकारणं, समुप्पणत्तिव्वाम-
रिसो पलोयन्तो समागओ जत्थ भयवं । तओ दंसणाणंतरवियंभियामरिसपसरो पयत्तो विविहोवसग्गेहिं किल
भेसविउं, कह ?—

वियडदददाडभामुरकरालमुहकंदरोयरिल्लेहिं । केसरिवंदेहिं गहीरुंजिओरल्लिदुसहेहिं ॥ २६६ ॥
करडयडकोडोरोयलियवहलमयसलिलसित्तगत्तेहिं । कयकंडसइणिवभरभरन्तभुवणं गँइदेहिं ॥ २६७ ॥
घणघग्गररवचित्तय-तरच्छ-दच्छ-उच्छमल्ल-पुल्लोहिं । भल्लुंकिमुक्कफेकारवैहुलबहुसावओहेहिं ॥ २६८ ॥
तहसंदयणवियरालकालवेयालघोररुवेहिं । हाहा-कहकहामुकहककयसंदसहेहिं ॥ २६९ ॥
णिसियासि-कोंगि-वावल्ल-भल्ल-णारारणियरवरिसेहिं । दिसिदिसिपडन्तवहुभिंदिमाल-हल-मुसल-चकेहिं ॥ २७० ॥
इय अण्णेहिं वि एवंपयारपायडियभयगरिल्लेहिं । जाहे मणयं पि मणो कहं पि ण य जाइ संखोहं ॥ २७१ ॥

तओ घणयरवडन्तघणमंडलुंघायसंघट्टफुटन्तपडिरवं परितरलविफुरन्तफुडयरतडिच्छडाडोवं सव्वओ सुरचावचा-
रुचित्तचंचेल्लियणहंगणं अणवरयथोरधारप्पहारपसरैजज्जरियभराहरं विमुकं भयवओ उवरिं जलवैरिसं । केरिसं च—

॥ २७२ ॥ जायं फुरन्ततडितरलदंडचंडप्पहुज्जलालोयं । खणदिट्ठणद्विणवडिय[?प]वियडघणमंडलं गयणं ॥ २७२ ॥
महियलमिलन्तजलदीहधारसंपायभरियमहिविवरं । जायं णवपाउस[?लच्छ]पुलयपडलं व धरणियलं ॥ २७३ ॥
उडुंति णेय जलपायवियलसंकुडयपेहुणप्पसरा । पायवसाहावियडन्तराललिहिय व्व विहगगणा ॥ २७४ ॥
जायन्ति कसणपसरन्तवियडघणवहलघणतमप्पसरा । सुरकोवजलणपसरन्तधूमकलुस व्व णहमग्गा ॥ २७५ ॥
खणणुमियगहयक्कं खणदिट्ठपणद्वदीहदिसियक्कं । पीडिज्जइ व्व जलहरपडिवेल्लणणिवभरं गयणं ॥ २७६ ॥
पसरइ सव्वत्तो चिय रववहिरियधरणिमंडलाहोयं । पहिययणवज्जवडलं व गज्जियं जलयवट्टाण ॥ २७७ ॥
उड्डेइ सरुच्छंगाहिघणरवुत्तत्थविहुयपक्खउडं । हंसउलं सहसा माणसुमुउप्पणगमणमणं ॥ २७८ ॥
परियड्डेइ समुव्वेल्लकुडयकेसरपरायपरिमलिओ । भुचणगुरुणो वियम्मियज्ञाणसिंहिं महुण(र)वणपवणो ॥ २७९ ॥
सुरचावासणवियम्ममाणकयविग्गहे जयगुरुम्मि । कुडयकुसुमट्टहासेहिं उवह गिरिणो हसंति व्व ॥ २८० ॥
इय घडियघणघणुव्वेल्लविसरविप्फुरियतारयं गयणं । जायं मुत्ताहलवडणगग्गिणं सायरजलं व ॥ २८१ ॥
एवं च दरदलियकंदलदलोयरभमिरभमरउलमुहलम्मि पसरन्तपूरपवाहुब्भडणिवडन्तवियडगिरियडम्मि गिरिणिदि-

गहिरावत्तन्तरणिवडियपरिव्वमन्तसावयसमूहम्मि तियमुप्पाइयाणा(णे)यपरिकंतपकमेहगुविलम्मि उप्पहपरत्तविसंखलुव्वे-
ल्लजलणिहिसलिलविग्गमुल्लालम्मि गज्जन्तजलयसंघ[?ट्ट]णोवडियमइंदसंघायरुद्धप्पवाहम्मि गिरिणिणयाणिवयन्तेके-
कमावलोयणाविहलहीरन्तमहिससत्थम्मि ॥ २८३ ॥

१ 'यधयपा' जे । २ 'यधेहिं' सू । ३ 'बहल' सू । ४ 'वासिक्कुभि' सू । ५ 'उणपोसवंपट्टकु' सू । ६ 'रवज्जरिय' सू । ७ 'वरिस' ।
त च केरिसं ! जे । ८ 'हस्तइयान्तगंतः पाठो जेउस्तके नास्ति ।

णवरि य मुचइ जलपहिं पलयसोसियसमुदभरणसहं । उल्लसियासणिभीसणफुल्लिभाकर्णेणिभ्रमं सलिलं ॥ २८२ ॥
 वित्थरइ णहयले धवलमेहमालौवियाससारिच्छो । पवणप्पहओ दरदलियपसरिओ सीयरुकेरो ॥ २८३ ॥
 मारुयपडिप्पफलिज्जंतवहुमुहा चिप्फुरन्ततडितरला । मुचंति भुवणगुरुणो घणेहिं सूल व्व धारोदा ॥ २८४ ॥
 जा आसि जलयमग्गे पढं रूपप्पहा पुणो विज्जु । स चिय तिहुयणगुरुणो तणुम्मिसा भाइ जलधारा ॥ २८५ ॥
 अमरकयघणरवुम्भडपडन्तजलधाररयभरं पढमं । णिवडइ तणुम्मि पढुणो पच्छा सलिलं वमुमतीए ॥ २८६ ॥
 अण्णणवण्णजलहरसुरचावच्छेयविदुमायम्भं । सायरकलोलणिहं खिप्पइ गुरुणो घणेहिं जलं ॥ २८७ ॥
 पसरियजुयन्तविभ्रममारुयपलहत्थतुंगतरुगहणं । उद्धट्टियसोडालक्खलक्खिहीरन्तगयजूहं ॥ २८८ ॥
 इय घणभीसणगज्जियरवतिहुयणजणियपलयपडिसंकं । पसरइ गुरुणो मुहझाणविहडणत्थम्मि गुरुवासं ॥ २८९ ॥

एवं च वियम्भिण तियससंजणियगरुओवसग्गे पैवट्टिए पउरथोरणीरधाराणिवाए तओ पवित्थरन्तथिरमुहज्झवसाण-
 स्स मेरुस्स व णिप्पयंपतणुणो भयवओ ण चक्खुपसरस्स संखोहो रक्खसदंसणेणं, ण सवणाण घणघणुग्घोसेणं, ण
 मण-कायाणं घोरासणिणा । अवगणिण्यासेसोवसग्गस्स य लग्गं णासियाविवरं जाव सलिलं । एत्थावसरम्मि य चलि-
 यमासणं धरणाणहो । पैउत्तोहिणा य मुणिओ भयवओ वइयरो । ताव य सरयकालो व्व ससियरुज्जलो समुवत्थिओ
 पडिपेल्लिऊण पाउसं । कहं चिय ?—

णवरि य फुरन्तपम्हउडतरलतारयचलच्छिवत्ताहिं । लीलापलोयणुव्वेलधवलकासप्पहिल्लहिं ॥ २९० ॥
 भरपरिणयचिम्बायम्भविउणसोहाहरुम्भडिल्लहिं । परिणयणासियावंसमुहयसंजणियवयणाहिं ॥ २९१ ॥
 सुविसट्टसरसतामरसमुरहिणीसासपवणवयणाहिं । झुल्लंतकण्णकोडलकवोलसंकंतकंतीहिं ॥ २९२ ॥
 भूमंगविभ्रमाणियमणहरसोहभैगारविह्लहिं । परितरलालयधोलन्तवल्लरीलुलियमालाहिं ॥ २९३ ॥
 घणकसंगंजणसच्छहल्लिउव्वेलन्तचिहुरभाराहिं । सिरणिव्वडन्तफणिफुरियफारफुकारफाराहिं ॥ २९४ ॥
 उत्तुंगपीणपीवरयणवट्टणिहिततरलहाराहिं । कोमलमुणालियावलयविभ्रमुम्भसासियमुयाहिं ॥ २९५ ॥
 वियडणियंवालम्बियकलकणिररन्तकंचिदामाहिं । तिवलीतरंगसंगयमणहरमज्झप्पएसहिं ॥ २९६ ॥
 णिच्छल्लियरंभागवभकंदलजलवरोरुतुयलाहिं । कंकेल्लिपल्लवारुणमणहरवरचलणमग्गाहिं ॥ २९७ ॥
 इय एरिसाहिं सुंदरलायणापुण्णसयलदेहाहिं । णियपणइणीहिं समयं पत्तो धरणाहिंवो तत्थ ॥ २९८ ॥

दिट्ठो य भयवं विज्जुलानलजलियघणसलिलसंपायपरिक्खित्तो पलयजलणजालाकवलज्जमाणजलणिहिपरिट्ठिओ
 व्व महिहरो । तओ दट्ठण अप्पुण्णसयलणहमंडलोहोयं सरयंवरुहरविविभ्रमं चिरइयं भयवओ उव्वरिं फणसहस्सायवचं ।
 दूरुणयफणाणिद्वयत्तणओ ण णिव्वडन्ति विसया वि सोयामणिप्पयरा, णायचलयपीडुण्णामियत्तणओ य ण पवइ तणु-
 म्मि जलावगाहो, अणेततालियाउज्ज-वेणु-वीणाणिणायभरियंवरत्तणओ य णोवल्लंक्खिज्जइ घणघणुग्घोसो ।

एयारिसम्मि य समए भयवं तारिसेणावि मणयं पि णकयमणवेयल्लो अवमणिण्यासेसोवसग्गाइसओ पज्जलियतिव्व-
 झाणाणलो य पयत्तो कम्मकाणणं डहिउं ।

ता पेच्छइ फणमंडवपडिहयघणमंडलम्मि सो तियसो । फणिमणिदीवसिहाभिण्णजलयतिमिरम्मि जिययंदं ॥ २९९ ॥
 भुवइंधवलतणुपीद्वियडसंकंतं कन्तकमजुयलं । कलहोयगंडसेलोवरिट्ठियं जलयविम्भं व ॥ ३०० ॥
 जोयणमेत्तंतरपसरपेल्लियं णियइ सलिलसंधायं । आवद्धवियडमंडलटंकच्छेओवहितं व ॥ ३०१ ॥
 जयगुरुपुरओ पज्जलियफणिसिहापसरपहपरिक्खित्तं । णिययासणिं व विज्झायमाणकसणं भुययलोयं ॥ ३०२ ॥

१ "णभीसणं स" जे । २ "लावभास" सु । ३ "बहुविहा वि" जे । ४ पयट्टिए सु । ५ पउत्तो ओही । सु । ६ "ओल्लं" सु । ७ "मत्तारवि" सु । ८ "रय" सु । ९ "लाहोयसरयवरुहविभ्रमं" सु । १० लक्खिउज्जति घणुग्घोसा जे । ११ "तवियडकम" जे ।

इय 'आयण्णइ सुइसुहविसहरवहुजणियगीयसंसदं । दूरोह्यजलहरपसरविसहरंगद्वियजिणिदं ॥ ३०३ ॥

तओ—

दट्ठण भुवणगुरुणो महाइसयसंपत्तिं गरुयविम्हयविस्वत्तमाणसो पणमिऊण जिणयंदं ।

उवसन्तदप्पपसरो अमुरो पत्तो य णियठाणं ॥ ३०४ ॥

फणिदो वि थुणिउमाहत्तो, कह ?—

पणमामि तिहुयणेकंलुधीर ! वम्महपयावणिम्महण ! । जिण ! दुज्जयगरुयमुरोवसग्गसंसग्गकयभंग ! ॥ ३०५ ॥

ण हु णवरुत्तारइ दुहरयाओ तुह गोत्तकित्तणं णाह ! । तुह पायरओ वि तणुम्मि पवणविहुओ वलम्मांतो ॥ ३०६ ॥

सुरहित्तिणाहिरामा मुहोवहोज्जफ(प्फ)ला दयं काउं । तुम्हेहिं पुण्णरौसी परुदिया धण्णरामि व्व ॥ ३०७ ॥

ताव चिय दुहरविकिरणणियरसंतावताविया होंति । जावऽल्लियन्ति ण य तुम्ह चलणजुवलायवच्छायं ॥ ३०८ ॥

वम्महणिम्हुम्हागयमायामायण्हियाए णडिण्ण । तुह वयणजलं पत्तं पिवासिणं व णाह ! मए ॥ ३०९ ॥

संभिण्णतिमिरपडलम्मि तइ मए ससहरे व्व सचविए । जलणिहिणो वेलाए व्व णिव्वुयं मज्झ मणपुलिणं ॥ ३१० ॥

सुरगिरिसिहरे व्व समुण्णयम्मि ठाऊण तैह(?) इ) मए णाह ! । णिवडन्तो पुलइज्जइ कुत्तियपंयेण वालजणो ॥ ३११ ॥

इय ललियलोयणुव्वेलेपत्तकरपल्लवे तइ जणस्स । कप्पतरुम्मि व जायन्ति सेविए सयलसोक्खाइं ॥ ३१२ ॥

एवं च भत्तिभरुल्लसंतपुलयपडल्लुचइयचारुदेहो थोऊण तिहुयणगुरुं गओ सट्ठाणसुरगाहिरई ।

भयवओ वि अणिचाइभावणुव्वमडवियम्मन्तमुकज्झाणाणलपुल्लुदसयलकम्मिधणस्स चित्तकिण्हचउत्थीए विसाहाहिं समुप्पणं केवलं नाणं । तओ दिण्णाहस्स व गरुओययसमुम्मिल्लतेयपवरिसो वियम्मिओ तणुम्मि पहापेसरो, पज्जलिय-सिहिसिहाकलावविम्भमफुरन्तधारुद्धुरं संठियं पुरओ धम्मचकं, सयलसंसारवासविच्छेयणुच्छलियजसवियाणं व पसरियं णहमंडलम्मि सेयलत्तितियं, अहिद्ववज्जिरुव्वेलेगहिरघणरवोरल्लिसुंदरो रसितं पयत्तो दुंदुहिरवो, उच्छलियसुरहिपरिम-लायहिदयालिमुहला णिवडिया णहंगणाओ सुरकुसुमवुद्धी ।

णवरि य परिमंदागयपवणुच्छिप्पन्तवहलधूलिल्लं । णहमंडलोपरिद्वियं(य)घणसंलिलोयड्ढमहिद्वं ॥ ३१३ ॥

वणसिरिविमुक्कवहुवण्णकुसुमवेंटद्वियाहिरामेले । रययकलहोयणिम्मलघडन्तपायारतियवल्लयं ॥ ३१४ ॥

मयवइसणाहविरइयगिरिकडयणिहासैणोवसोडिल्लं । संजणियकप्पपायवपसूयपरिमलियसव्वदिसं ॥ ३१५ ॥

इय सयलसुरा-ऽसुर-णर-तिरिक्खेपम्भारधारणसमत्थं । तियसेहिं समोसरणं आजोयणमंडलं रइयं ॥ ३१६ ॥

तओ तप्पहावुप्पणकणयकमलरिंछोलिणिहित्तपयणिकखेवो अविहावियसुरकराहउच्छलन्तवज्जिराउज्जपडिरवो विमु-कजाणवाहणोइण्णसुरगणकीरन्तजयजयारवो सुरवइकरकलिउव्वेलेमाणचडुलचमरवीइज्जमाणो आसण्णकप्पपायवुप्पणवि-विहरयणकुसुमोवहसिए णिसण्णो भयवं सीहासणे । णिसण्णस्स य जयगुरुणो महियलल्लुलन्ततारहारयं सुरगणा पणमि-ऊणोवविट्ठा जहोइयट्ठाणेसुं ।

ताव च चउमु(म्मु)हद्वियसयलजणाणंदसुंदरालोयं । ख्वं पवरसुरा-ऽसुर-णर-तिरियविदिण्णसण्णेज्झं ॥ ३१७ ॥

णवरि य कयत्तित्थपणामपुव्वयं घणघणेन्तपडिरवो(?) रवओ) । आहत्तो सम्मइसणाइयं साहिउं धम्मं ॥ ३१८ ॥

जह गुरुपरिग्गाहारम्भभरवियम्मन्तकम्मघणबंधा । जीवा णिवडन्ति दुहोहदुत्तरे णरयकुवम्मि ॥ ३१९ ॥

जह य दुसहाइं तक्खणसंगयसंभमत्रिणासपिसुणाइं । सुइरं दुहाइं पावन्ति थावरत्तम्मि पाणिगणा ॥ ३२० ॥

जह डडणं-ऽकण-वाहण-बंध-वह-च्छेयसंभवं सुइरं । तिरियत्तणे वि अइरेयनिम्भरं अणुहवन्ति दुहं ॥ ३२१ ॥

१ आइण्णइ सू । २ 'द' । गओ निययट्ठाणं उवसग्गकारी । फणिदो जे । ३ 'शली' सू । ४ तुह सू । ५ 'पवरिसो, प' जे । ६ 'क्षल्लिपुट्टम' जे । ७ 'सणोयसो' सू । ८ 'वससम्भावथा' ।

जह य पावंति भवसयपरियत्तणदुल्लहं सु मणुयत्तं । अप्पपरिभाहयलहुयकम्मणुहावेण मणुयत्तं ॥ ३२२ ॥
 जह य सुदुकरतवचरणकरणसंजणियथोवकम्मंसा । सयलजियलोयदुल्लहं जीवा गच्छंति सुरलोयं ॥ ३२३ ॥
 पावंति जह य दुल्लहं दंसण-णाणप्पहाणुहाविहं । सयलमुहाण णिहाणं जयम्मि जिणभासियं धम्मं ॥ ३२४ ॥
 जह परियडिदयझाणमिदड्ढकम्मिधणोहमाहणं । केवलणाणं पावेति पुलइयाऽलोयै-लोयंतं ॥ ३२५ ॥
 जह य तियमुद्धणीसेसवहलमलपडललेवपम्मुका । असरिसमुहसंभोयं जीवा पावेति णिव्वाणं ॥ ३२६ ॥
 इय सयलसत्तसंसारकारणुदलणपच्चलकडाए । परिसा णिचलैणिक्खित्तलोयणा सहइ लिहिय व्व ॥ ३२७ ॥
 एवं चे सयलजंतुसंताणतारणसहम्मि साहिए भयवया धम्मे तओ मुणिऊणासारयं संसारसरुवस्स परिचत्तसयलसंगा
 पवण्णा केइ समणत्तणं, अण्णे सावगत्तणं ति । कडावसाणम्मि य थोउं पयत्तो सुरवई, कइं ?—
 पणमामि मुकसंसारवासवासंग ! पासजिणयंद ! । अन्धुदारियभीमयरभवभउम्भन्तभव्वज्जण ! ॥ ३२८ ॥
 स्वरणहरकटिणकुलिसग्गभीसणो ददकरालदाढालो । तुम्ह पणामेण कमागयं पि णऽकमइ मियेणाहो ॥ ३२९ ॥
 वियडकैवोलोयल्लियवहुलियमयसलिलसित्तपेरन्तो । पणिचइए तुह जयगुरु ! णऽल्लियइ समागओ वि गओ ॥ ३३० ॥
 पज्जलियवहलजालाकलावकवलियदियन्तराहोओ । ण डहइ तुहवयणजलाहिसित्तमणुयं वणदवग्गी ॥ ३३१ ॥
 उम्भटयरफणफुकारमारुउच्छित्तविसकणुक्केरो । कुनियागओ वि ण डसइ मणुयं तुह गोत्तमंतेण ॥ ३३२ ॥
 आयण्णायडिदयददपयंडकोयंडवाणदुप्पेच्छो । णऽल्लियइ णरं तुह पणिहिपडिहओ तकरसमूहो ॥ ३३३ ॥
 तुह गोत्तकित्तणुदलियदीहदहणियलबंधपम्मुको । काराहराओ पुरिसो पावइ हियइच्छियं ठाणं ॥ ३३४ ॥
 णिदलियजाणवत्तम्मि णीरलहरीहिं पेडिओ पुरिसो । तुह पणइतरण्डलम्याणियतणू तरइ जेलणिहिणो ॥ ३३५ ॥
 दददादकरालविटंविद्याणणं सिहिणिहच्छिदुप्पेच्छं । छायं पि पिसायउलं ण छलइ तुह णाममेत्तेण ॥ ३३६ ॥
 तडितरलसच्छहुच्छलियविसमनिसियासिभासुरिल्लम्मि । समरम्मि जयं पावइ तुह पणइरओ लहं मुहडो ॥ ३३७ ॥
 वियलन्तपूयफभारसडियकर-चरण-बुड्ढनासो वि । रोगाउ मुचइ णरो तुम्हपणामामियरसेण ॥ ३३८ ॥
 इय हरि-करि-सिहि-फणि-चोर-[कार]-जलणिहि-पिसाय-रण-रोगं । ण णरस्स जायइ भयं तुह चलणपणामणिरयस्स ॥ ३३९ ॥

एवमाइयं च काउण बहुप्पयारं भयवओ थुइं असेसमुरगणसमेओ सुरवई गओ णिययं ठाणं । णर-तिरिया वि संठि-
 (संपट्टि)या सट्ठाणेसु ।

भयवं पि अहाविहारं विहरमाणो संपत्तो सम्मेयगिरिचरं । समारुदो तस्स सिहरं । वैडुपडिपुण्णम्मि णिययाउए
 सियसावणऽट्ठमीए विसाहार्हि संपत्तो सयलमुहावासं णेव्वाणं ति । कया जहकमं सुरसमूहेहिं णिव्वाणमहिमा ।

एत्थ परिट्ठाइ इमं चरियं सिरिपासजिणवरिंदस्स । णिसुयन्ताण भणेन्ताण कुणइ दुक्खक्खयमवस्सं ॥ ३४० ॥

“इय सीलंकविरइए महापुरिसचरिए सिरिपाससामिचरियं परिसमत्तं ॥ ५३ ॥

[ग्रन्थाग्रम् १०७०० ।]

१ दुल्लहं सं । २ “य-लोयमं” जे । ३ “काणु” स् । ४ “लनिव्वत्तलो” जे । ५ तु स् । ६ मयणाहो जे । ७ “कवोलकलो-
 लियवहु” जे । ८ पणइए” जे । ९ जलहीओ जे । १० बहुपुण्णम्मि स् । ११ सुरवरेहिं जे । १२ इय सीलंकविरइए सयल[सि]पुरिसाण
 कित्तणव्यविए । एत्थ समणइ चरियं मुणिओ सिरिपासणाहस्स ॥ इति महापुरिसचरिए पासणाहस्स चरियं समत्तं ॥ स् ।

[५४ वद्धमाणसामिचरियं]

परजणहियत्थकज्जे समुज्जया जणियविविहविग्घा वि । णिव्वाहन्ति चिय तं पुणो वि ण्णं महापुरिसा ॥ १ ॥

‘कइं चिय ?—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे माहणकुंडग्गामो णाम गामो । तत्थ कोडालसगोचो [उत्सहदत्तो णाम] वंमणो । तस्स देवानंदा भारिया । ताए सह जहामुहं वसन्तस्स गच्छंति दियहा । इयो य तओ पुप्फुत्तरविमाणाओ आसादमुद्धट्ठीए हत्थुत्तरहिं चडऊण अणेयभवाईयमिरीइजीवमुरवरो ‘अहो उत्तमं मह कुलं’ ति दुरुत्तवायावइयरावज्जियक्कम्मकिंचावसेसत्तणओ समुप्पणो तीए वम्मणीए उदरम्मि । दिट्ठा य णाए मुहपसुत्ताए तीए चेव रयणीए पभायसमयम्मि गय-वसहाइणो चोइस महामुमिणा । पुणो पडिणियत्तमाणा दट्ठण ससज्जसा विउद्धा । साहियं दइयस्स । सो वि हु अयाणमाणो ठिओ तुण्हिओ ।

एवं च पवड्ढमाणम्मि गब्भे गण्ठे बानीदिण्णसु ताव चलियासणोहिप्पओएण मुराहिण्णा मुणिओ भयवओ गब्भसंभवो । चित्तिउं च पयत्तो—एवंविहा महाणुभावा ण तुच्छकुलेसु जायन्ति । ति चित्तिऊण अवहरिओ वंमणीओ(ए) गब्भाओ भयवं । पक्खित्तो इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उत्तुंगधवलपौसायसिहरोवसोहिप्प ‘तीर(? खत्तिय)णगरा-हिहाणे पुरवरे । जहिं च मंतिलत्तणं महाणसधूमेसु, ण सच्चरिएसु; मुहराओ भवणकलहंसेसु, ण कोवेसु; चंचलत्तणं कय-लीदलेसु, ण मणेसु; चक्खुराओ परहुयासु, ण परकलत्तेसु; थणफंसो वेणुयासु, ण परमहिलामुं; पक्खवाओ तंवचूलेसु, ण विवाएसु; मुहभंगो जराए, ण धणाहिमाणेणं जणस्स ति । तत्थ दिणयरो व्व पवड्ढमाणोयओ, मुरकरि व्व अणव-यपयत्तदाणोल्लियकरो, णियपयावावज्जियणमन्तसामन्तमउल्लिमालच्चियचलणजुंवल्लो इक्खवागवंसपभवो राया णामेण सिद्धत्थो ति । जो य आलओ गृणगणानं, कुलभवणं कलाविसेसानं, आसओ सव्वसत्थाणं, उप्पत्ती सच्चरियाणं । तस्स ससहरंस्स व रोहिणी सयलन्तेउरप्पहाणा तिसलादेवी णाम पणइणी । अच्चन्तदइयत्तणओ य जेसु जेसु उज्जाणकीला-विसेसेसु वच्चइ णराहिवो तहिं तहिं तं पि णेइ ति ।

अणया य गामाणुगामं गच्छमाणो कीलाणिमिच्चमागओ णियभूत्तिपरिसंठियं कुंडपुंरं णाम नयरं । जहाविहोयारेण पविट्ठो णिययमंदिरं । आगओ सयलो वि पुरजणवओ दंसणत्थं । सम्माणियविसज्जियम्मि पउरलोए विसिट्ठविणोएण अइवाहिऊण दिणसेसं पमुत्तो वासभवणम्मि । णिवण्णा तयन्तिए देवी । समागया मुहेण णिहा । तओ पहायप्पायाए रयणीए चउइसमहामुविणाणुकूललाभसंसइओ समुप्पणो आसोयतेरसीए हत्थुत्तरहिं तिसलादेवीए गब्भम्मि । पहाय-समयम्मि पडिवुद्धाए य साहिओ राइणो सिविणयवइयरो । तेणावि भणियं—मुंदरि ! सयलतेल्लोक्कलग्गणवक्खम्मभूओ पुत्तो ते भविस्सइ ति । बहुमणियं च इमीए । पहरिसुल्लसन्ततेणुलया य गया णिययमावासं । एवं च पइदिणं संपज्जन्तस-विसेसमुहपरिभोयाए चडिहउमादत्तो गब्भो । केरिसा य देवी दीसितुं पयत्ता ?

सौऽऽहाणमइ-मुया-ऽवहिपसरपडिप्फलियदोसपम्भारा । घणवडलन्तद्वियदिणयर व्व पडिहाइ दिणलच्छी ॥ २ ॥

अहिययरं परिउब्भडलायण्णामलपसाहियावयवा । आसण्णोययससिबिम्बभूसिया उययभित्ति व्व ॥ ३ ॥

पसरन्तनिम्मलत्तणपहपसरुज्जोयजणियसोहग्गा । अन्तोफुरन्ता(? न्त) [मुत्ता]हलुज्जला जलहिबेल व्व ॥ ४ ॥

इय गब्भन्तद्वियजिणवरिंदसविसेसभूसियावयवा । सहइ दुरुग्गयदिणणाइभूसिया वासवदिस व्व ॥ ५ ॥

तओ अइकमंतेसु पउरवासरेसु परिवड्ढमाणो वि भयवं अच्चन्तकारुणयाए मणयं पि जणणीए पीडं णउप्पाएइ ।

१ ‘कइं चिय’ इति जेपुस्तके नास्ति । २ ‘सु चउपण्णदिणसु सु’ । ३ ‘पायारसि’ जे । ४ ‘तीए णगरा’ जे । ५ ‘मल्लित्तण जे’ । ६ ‘चंचलत्तणं जे’ । ७ ‘जुयलो जे’ । ८ ‘रस्सेव रो’ जे । ९ ‘भुत्तिस’ सु । १० ‘पुरवरं णाम जे’ । ११ ‘तणुया य गया णिययमावासं जे’ । १२ ‘साहीणं’ सु । १३ ‘हस्तद्वयान्तगतः पाडो जेपुस्तके नास्ति’ ।

णवरि य विसायमावणाए चित्तियं जणणीए-ण्णमेसो मह मंदभायाए उवराओ चेव के गावि अवहरिओ, अहवा विलीणो, अण्णहा कइं मणयं पि ण फंदइ, ण य परिबुद्धिं पावेइ ? ता जइ मह मंदभायत्तणओ जम्भविचची समुप्पज्जइ ताऽवस्स-महमेप्पणो पाणे ण धारेमि ति । एत्थावसरम्मि मुणियचित्तियत्थेण भयवया करुणापहाणत्तणओ चालिओ एको णियय-सरीरावयवो । तओ 'धरइ' ति समासत्था चित्तेण भयवती ।

तओ चिन्तियं भयवया-अहो ! एरिसो पाणिधम्मो जेण पेच्छ एक्कमुहुत्तंतरम्मि चेव हरिस-विसायाण पयरिसो, ता अवस्सं मए जीवमाणानं पित्ति-माताणं आणाखंडणं ण कायव्वं, विसयविरत्तचित्तेणावि गिहवासे चेव चिद्वियव्वं, दियलोयगएसु य जणणि-जणएसु 'णिचहियाणुट्ठाणं कायव्वं ति । एवं च संकप्पि ए भयवया जहामुहेणं समागओ पसूइ-स-मओ । तओ वासवदिस व्व ससिमंडलं समुज्जोइयसयलजियलोयं चेत्तस्स सुद्धतेरसीए हत्थुत्तरासु पंखया भयवई जिणवरं ति ।

णवरि य चलियासणतियसणाहपमुहंसुरा-ऽमुरगणेहिं । चलियं पसरियविच्छट्ठविट्ठरिल्लाणुहावेहिं ॥ ६ ॥

कयविचिहजाण-वाहणवित्थारो रुद्धगयणमग्गेहिं । पम्मुकजयजयकारमुहलकयकुसुमबुद्धीहिं ॥ ७ ॥

वेयवमुव्वेल्लिरतरलहारविप्फुरियैकिरिणराहेहिं । मणिमउडकन्तिरंजियरविकरपसरप्पयारेहिं ॥ ८ ॥

इय विविहवज्जवज्जंततियसंवदेहिं भवणकयसोहं । संपत्तो जगगुत्थो जम्मट्ठाणं सुराडिवाइ ॥ ९ ॥

तओ आगंतूण ओसोविऊण सयलपुरजणं सविणयपणामिउत्तिमंगेण पणमिओ भयवं, मणियं च—

अण्णाणतिमिरभरियं जयगुरु ! जम्मेण तुम्ह सयराहं । उययट्ठिण सहसा सुरेण व भूसियं भुवणं ॥ १० ॥

तं सि कयत्था भयवति ! सयले वि जए ण एत्थ संदेहो । पवरगुणनिहाणं जीए धारिओ जयगुरु गम्मे ॥ ११ ॥

णमिमो भारह्वासस्स जम्मि अज्ज वि अगग्घमोत्ताण । कलिकाले साहीणे वि पुरिसरयणाण उप्पत्ती ॥ १२ ॥

इय णमिउं दिण्णाएसतुद्धरिणाणणेण हरिऊण । तियसवइपाणिपंकयसेजाए पणामिओ णाहो ॥ १३ ॥

तओ सहिओ तियसवदेहिं सुरवई संपत्तो मंदरसिहरम्मि । तत्थ य विमलसिलायलसंठियसीहासणम्मि पंचप्पयार-परियप्पियणिययव्वो भयवओ अहिसेयत्थमुज्जओ अइसुहुमदेहं च भयवंतमवलोइऊण चित्तिउं पयत्तो—

कहमखिलमुरवरीसरकरचर(धारि)यवारिभरियकुंभेहिं । जुगवमहिसिचमाणो सहिही णाहो जलुप्पीलं ? ॥ १४ ॥

एयारिसमसमंजसमाखंडलहिययभावमाकलिउं । विमलोहिणा जिणिदो पयडिंसु परकमं निययं ॥ १५ ॥

वामम(य)पायंगुट्ठयकोडीए तो सलीलमह गुरुणा । तह चालिओ गिरीसो जाओ जह तिहुयणक्खोहो ॥ १६ ॥

'होही किल मह संती जिणवर[व]सहस्स मज्जे जणिए । णवरं कह वेयालो जाओ ?' इय चित्ति(त)यंतेण ॥ १७ ॥

हरिणोवओगपुव्वं ओहिण्णाणेण सम(म्म)माकलियं । जह सिरिजिणवरगुरुणो माहप्पमणणसामण्णं ॥ १८ ॥

तओ हरिणा 'मए जमण्णहा चित्तियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं' ति भणमाणेण पणमिओ भयवं । तओ पुच्चवणिय-विहिणा काऊण भयवओ जम्माहिसेयं मोत्तूण जणणीसमीवम्मि गओ सुरवती ।

एत्थावसरम्मि य पडिबुद्धा सपरियणा देवी । साहियं दासचेडीए णरवइणो । दिण्णं तीए पारिओसियं । कयं वद्धावणादियं सयलं पि करणीयं ।

तओ जम्मदिणप्पेहुइ सविसेससयलरिद्धिपवट्ठमाणत्तणओ कयवद्धमाणगामश्रेयो वडिहउं पयत्तो । अइकंतो बाल-त्तणाओ । पत्तो कुमारभावं । कीलिउं पयत्तो सह कुमारेहि । कीलंतो य णिमाओ णयरवाहिं । पारदं च ऐकम्मि(स्स) तरुणो हेट्ठम्मि आमलयखेड्डं । लद्धपत्थावम्मि य सुराहिवइणो सुरस्थाइयाणिसण्णस्स पयत्ता सुरवरेहिं सह

१ 'मण्णा जे । २ नियमाणुट्ठाणं जे । ३ 'संकरण' जे । ४ 'संवदेहि जे । ५ भयवइ ! सयले वि जयामि वसुमइए व्व । पवर' जे ।

६ पवरगुणाण निहाणं धरेसि जा जयगुरु गम्मे सु । ७ णाहो ॥ एव च पंचप्पयारपरिकप्पियणिययव्वेण सुरवइणा जहापुव्वणिज्जविहिणा सुरगुरु(? गिरि) मत्थसम्मि काऊण भयवओ जम्माहिसेयं, मोत्तूण सु, (१८ गाथानन्तरम्) । ८ 'ए । णरवइणा दि' सु । ९ 'पमिइ स' सु । १० एक्कतरुणो जे । ११ सुरवइणो जे ।

विविहसंकहालावा । तओ वीरैत्तणपत्थावम्मि मुराहिवेणं भणियं—जइ एवं तओ वीरैत्तणसंकहासुं संपयं भयवओ
वद्धमाणस्स सरिसो ण दीसइ अणो ति । एत्थावसरम्मि य एक्को मुरो असइहंतो गओ जत्थ भयवं सह कुमारैहि
कीलइ ति । तत्थ काऊणं रुद्धुयइन्द्रुवं वेदिओ सो पायवो । तओ तारिसं दट्ठण दिसोदिसिं समोसका कुमारा ।
णवरं पलाणे पेच्छिऊण कुमारे भयवया ईसि विहसियं काऊण हेलाए चेव उवसप्पिऊण करयलेणायडिदऊण पक्खित्तो
एकपासम्मि भुयंगमो । पुणो पारद्धा खेलिउं जाव ताव पुणो वि सो मुरो काऊण बालरुवं पयत्तो तेहिं समं कीलिउं ।
णवरि य पराजिया सयला वि बोलया भयवया । तत्थ य एवंविहो पणो—जो जिप्पे सो पट्ठीए समावहिऊण वाहि-
जइ । तओ वाहिज्जाणेषु सयलेसुं णि नेपु सपमाओ तस्स मुरकुमारयस्स वारओ । पणामिया तेण पुट्ठी । आरुद्धो
तत्थ भयवं । एत्थंतरम्मि य वडिदउमादत्तो मुरो, कयं च महापमाणं णिययरुवं । केरिसं च ?—

गंभीरवयणकंदर-दहुद्धीसन्तभीमदाढालं । कंकेल्लिदलारुणतरलचलियजीहाविहाइल्लं ॥ १९ ॥

पज्जलियजलणकविलच्छदच्छपक्खित्तभामुरच्छोहं । भीमुद्धमडभुमयघडन्तमंगमंमुखियभालयलं ॥ २० ॥

तवणिज्जर्पिजरुद्धुच्छलन्तदीसन्तकेसपम्भारं । णिम्मंलया-SSमुयालिद्धकयकरालोयरुद्धंतं ॥ २१ ॥

इय दिदं जयगुरुणा पट्टिवलग्गेण मुरकुमारस्स । रुवं भेसियतेलोकमीसणं णवरि रीहाए ॥ २२ ॥

तओ तं तारिसं तस्स कयकडयववियम्मियं दट्ठण पढओ कुल्लिसकडिणयरमुट्ठिणा पुट्टिवद्धम्मि । तप्पहारुप्पणविय-
णाजणियवेयल्लो य संठिओ पुव्वपयइम्मि । एवं च मुणिऊण भयाओ धीराइसयं, कलिऊण सत्ताइत्तिचणं,
मुमरिऊण तियसिंदजं पियं, 'एवमेयं' ति पणमिऊण जयगुरुं गओ जहागयं मुरवरो ति ।

भयवं पि कीलिऊण सह बालएहिं विविहकीलाविणोएहिं पविट्ठो णयरैस्सडिभन्तरं । एवमाइणा विणोएण अहंकंतो
कुमारभावाओ । संपत्तो य जोव्वणं । तस्साणुहाव-गुणगणाणुराया य राइणो समागया णिययधूयाओ वेत्तूण । पणा-
मियाओ भयवओ । ताव य चित्तियं भयवया—इहरा वि मए परियण्वियमासि जहा 'जाव जीवन्ति जणणि-जणए ताव
ण दिक्खाविहाणमब्भुवगन्तव्वं' ति । एवं च परियप्पेऊण विसयविरत्तचित्तेणावि पडिच्छियाओ कण्णयाओ । वत्तं
जहाविहिं वारेजं ।

एवं च जहाभिरुइयसंपज्जंतसयलविसयइंदियत्थं रज्जमुहमणुहवन्तस्स आजम्माओ अइकन्ता तीसइसंवच्छरा ।
परलोयमइगतेसुं जणणि-जणएसुं पणामिऊण णियकणिट्ठस्स भाउणो रज्जं, दाऊण संवच्छरियं महादाणं समब्भुज्जओ
दिक्खाविहाणं पति । एत्थावसरम्मि य मुणिऊण भयवओ सेमीहियं समागया लोयन्तियमुरगणा । भणिउं च पयत्ता,
कहं चिय ?—

तो विणओणामियसिरमिलन्तरयलकयंजलिउडेहिं । भण्णति भत्तिभरुवेल्लिणियपणयं वहेतेहिं ॥ २३ ॥

जइ तिहुयणभवणग्भिन्तरम्मि भावा जइट्ठिया भयवं ! । जागसि तुमं ति तह किं व मुणइ अम्हारिसो लोओ ? ॥ २४ ॥

तह वि हु 'लोयट्ठी एरिस' ति कलिऊण तेण अम्हेहिं । विणप्पइ पुरओ तुम्ह मुमरणामेत्तकज्जेण ॥ २५ ॥

दे ! पयडिज्जउ भयभीरैयंभव्वसत्ताण जणियसत्ताणं । तित्थं तित्थंकर ! कुमयपंथपत्थाणमूढाणं ॥ २६ ॥

कुसमयपइपयरपयावसरपम्हुट्ठदूरमंतरियं । जाण-चरणोवएसेण मोक्खमग्गं पयासेसु ॥ २७ ॥

तुह विविहाइसयवियम्ममाणगुणरयणणियरभरियाओ । अपु(ए)व्वसायराओ गेण्डउ वयणामयं लोओ ॥ २८ ॥

तुह भोत्तकित्तणुल्लसियवहलरोमंचकुंजुइल्लाण । जाव जुंयन्तो वित्थरउ ताव भव्वाण तुम्ह कहा ॥ २९ ॥

इय विणओणयमुरगणवयणवियासिज्जमागकरणीओ । जाओ भयवं सैइसोक वमोक्खलंभुज्जयमईओ ॥ ३० ॥

१-२ धीराओ जे । ३ 'ण रुद्धुयइन्द्रुवं रुवं पयत्तो तेहिं समं कीलिउं । णवरि य पराजिया सयला वि दिय समोसका कुमारा ॥ भयवया
ईसि वि' जे । ४ कीलिउं जे । ५ जिज्जइ सु । ६ मुरवरो सु । ७ रम्भेतर जे । ८ तीसव' जे । ९ समीहियमागया सु । १०
'यसव' सु । ११ जयतो जे । १२ सहमोक्खसोक्खलं सु ।

एत्थावसरम्मि य मुणियजयगुरुकायव्ववइयरा समागया सयलसुरगणा । कयपणामा य पुब्बोइयकमेण परिय-
प्पियसिवियारयणा य समीवमल्लीणा भयवओ । कओ सुराहिवेण मुणिपत्थिवाहिसेयाइओ विही । तयणंतंरं समारूढो
जयगुरु सिवियारयणं । उक्खित्ता णर-सुरगणेहिं । तओ कयसुर-णरजयजयासइसंवलियपडुपडहपडिरेवुल्लसंतसंखकलका-
हलारवभरियदियन्तरालकलयलेण णिग्गओ णयराओ । गओ वाहिरुज्जाणं । विमुक्काए सिवियाए ओइण्णो सिविया-
रयणाओ । सयलकज्जभारो व्व ओयारिओ सरीराओ आहरणणियरो, देहालिंणणगारवग्घवियविसयसंगसोक्खं व मुक्कं
वोसोजुयलं, अवणीओ उत्तिमंगाओ अविहावियवज्जकप्पिओ केससंघाओ, पडिवणं पुब्बकमेण मग्गसिरसुद्धसमीए
इत्थुत्तराहिं दिक्खाविहाणं ति ।

तो वेत्तूण समुब्भडकम्मवणफलंतरालणिग्गमणं । णौणरविकिरणपयडियणिम्मलतव-चरणकयमग्गं ॥ ३१ ॥

णवरि य वणा-ऽहि-सुर-णरअणुमग्गपैवट्टजणियसंवट्टो । सुरवइएकंऽसणिहित्तदेवदूसोवसोहिल्लो ॥ ३२ ॥

तो उब्बुट्ठचरित्तस्स भुवणगुरुणो विसिट्ठपरमत्था । चउरो णाणाइसया जायन्ति समुब्भडवियासा ॥ ३३ ॥

इय कयतिउणपयाहिणपणामहरिसुल्लसन्तपुल्लला । थोऊण जयगुरुं णियणिहेलणं जंति सुरसंघा ॥ ३४ ॥

एवं च वज्जियावज्जपव्वज्जविहाणमब्भुज्जओ पडिवणसंजमुज्जोयणिज्जियासेसदूसहपरीसहो, पम्मुकासेसभूसणो
वि सच्चरियविहूसणो, विसज्जियासेसवसणो वि वासवणिहित्तेकंऽसपहोलन्तवसणो, विमुक्कतुरंगसाहणो वि दमियदुट्ठि-
दियासो, सिट्ठिलियकरिवरसमूहो वि मत्तगइंदगमणो, गामाणुगामोवलक्खियं वत्तुमइं विहरिउं पयत्तो ।

ताव य अण्णदियहम्मि समागंतूण ईसिंपरिणयवओ एक्को रोरवंभणो पणामं काऊण भणिउं पयत्तो एयं । जहा—
“भो भयवं ! महं मंदभायस्स परं पत्थमाणस्स जम्मो चियं समइच्छिओ, जेण गरुयदारिद्रोवइवियदेहेण पुलइयाइं
पत्थणाभंगकयकसिणिमाकलंकियाइं परमुहाइं, जंपियाइं कंठम्भन्तरखलन्तक्खरगगायक्खराइं दीणवयणाइं, णिसुयाइं कय-
हत्थयालहरिसिट्ठहासगम्भिणाइं धणइत्तयखलजंपियाइं, पडिच्छिओ सी-उण्हाएण वाहिरे चेव परघरदुवारपवेसावसरो, लल्लइयं
किलन्तकुटुम्बकज्जम्मि परजणस्स त्ति । किं बहुणा ? जाव अहं परपत्थणाणिमित्तम्मि चेय परविसयं पत्थिओ ताव य
भयवया वि दिण्णं महादाणं । कहं चिय ?—

केसिं पि पउर-पट्टण-गामा-ऽऽयर-सारपउरभंडारा । दिज्जन्ति दरियदारिद्रुंदसंदोहविहवणा ॥ ३५ ॥

अण्णाणं पुण मयगंधलुद्धवद्धालिवहलहलवोला । मय-भद-मंद-संकिण्णरूविणो करिवरुग्घाया ॥ ३६ ॥

काण वि तोवखार-तुरुक-पवरकंबोयजाणो तुरया । दिण्णा मणि-रयणसणाहकणयपल्लाणसंजुत्ता ॥ ३७ ॥

काणं पि चडुलसुरखयखमायलुद्धन्ततुरयसंजुत्ता । दिज्जंति जच्चकंचणसमुज्जला संदणणिहाया ॥ ३८ ॥

केसिं पि विविहमणि-रयण-कणयसंपत्तिजणियसोक्खेण । णवघणसमएणं पिव तुमए तण्हा परिच्छिण्णा ॥ ३९ ॥

मह पुण पुब्बि कयदुकयकम्मवसयस्स दूरदेसाओ । गेहागयस्स सीसइ सच्चरियं तुम्ह णरणाह !” ॥ ४० ॥

इय एरिसेहिं णिम्भरतण्हावसपसरपल्लहुभणिएहिं । जयगुरुपुरओ रुणं व दीणविमणं भणंतेण ॥ ४१ ॥

तओ भयवया सोऊण तं तारिसं तस्स जंपियं अब्बन्तकारुणयावणचित्तेण भणियं जहा—देवाणुप्पिया ! परिचत्तस-
यलसंगो हं संपयं, तुमं च दारिद्रोवदुओ, ता इमस्स मज्झंसावसत्तवासस्स अद्धं वेत्तूण गच्छसु त्ति । तओ तमायणिऊण
हरिसिओ वंभणो । अणुट्ठियं जं भयवया भणियं । गओ णिययगेहाभिमुहं । दंसियं च तं वासद्धं तेण तुण्णवायस्स ।
भणिओ य तुण्णवाएणं वंभणो जहा—तं पि वीयं अद्धं तस्स महामुणियो णिरीहत्तणओ पैवणाहयं वा सरीराओ अवेहिइ,
कंठयजालीसु वा विहरमाणस्स लग्गिही, ता तं पि वेत्तूण आगच्छसु, जेणाहं तुह पुण्णवणं काऊण उत्पेमि । एवं भणिए

१ “रवउल” सू । २ वासोजुयलं, अ” सू । ३ णाणवरकिं जे । ४ “पयइ” जे । ५ ईसप” सू । ६ चेव सू । ७ “ए परजणस्स
त्ति । किं बहुणा जे । ८ तुमाए सू । ९ पवणहयं सू ।

गओ सो बंभणो । मग्गणुलमो य ताव परिहिंदिओ जाव भयवं संपत्तो सुवण्णवालियं णाम णिणयं । तहिं च परिसकन्तस्स भयवओ वलमं कंटयाहिद्वियदुमम्मि । अणवेकिलुज्जण गओ तप्पप्साओ भयवं । तओ वंभणेण चिन्तियं—अहो ! पेच्छ महच्छरियमेयं इमस्स ववसियं, अहवा जस्स णियसरीरे वि अलुदया तस्स किमण्णेण गण्ण(गणण)? चि । चित्तिज्जण तप्पप्साओ वोलीणस्स भयवओ गहियं तं तेण । समप्पियं तुण्णवायस्स । तेणै वि तहा संघियं जहा पुण्णवं संजायं । समप्पियं वंभणस्स । तं च तारिसं दट्ठूण हरिसिओ वंभणो । तओ गंतूणं णंदिवद्वणस्स भयवओ भाउणो 'रयणाण भायणं' ति कलिज्जण संमोप्पियं । तेणावि राइणा महया अत्थसमुदणं पडूओ वंभणो चि ।

इय धैणविरहिओ वि लोयणाहो, तं विप्पं पैवरधणेण दिण्णतोसं ।

काऊणं विहरइ णिच्छिओ महप्पा, किं चोज्जं ? सयलज्जणोवयारिणो हु धीरा ॥ ४२ ॥

इति वंभणवत्थदाणो णाम पत्थावो [१] ॥

संस्कृत- भाषा में श्री बुद्धिमान्ताम श्री गुरुदेव

✽

अणया य भयवं परिक्खमन्तो पत्तो कम्मरगामंतियं । तत्थ य णाइदूरपरिसंठियस्स णग्गोहपायवस्स हेट्ठओ संठिओ पडिमाए । तत्थ य सयलविण्णाणविणयवाहिरमती संपत्तो एको गोवालमुक्खो बइल्ले वेत्तूण । भयवंतमुद्दिसिज्जण भणिउं पयत्तो जहा—भो देवज्जय ! जावाहमण्णे बइल्ले वेत्तूणमागच्छामि ताव तुमे इमे बइल्ला दट्ठव्व चि । भणिज्जण गओ जहासमीहियं । तओ पहायप्पायाए रयणीए तहद्वियस्स चेव भयवओ समागओ । अपेच्छमाणो बइल्ले भणिउं पयत्तो जहा—भो देवज्जय ! जे मए तुम्ह समप्पिया बइल्ला ते साहसु कइं(हिं) ? ति । पुणो वि पुच्छमाणस्स जाहे भयवं ण जंपति ताहे अविवेयवहुलत्तणओ चिन्तिउं पयत्तो—पुणमेएणं चेव कत्थइ णूमिया भविस्संति चि । पुणो वि खरफरुसवयणेहिं भणिउं पयत्तो, कइं ?—

उप्पेज्जणं तुम्हाण णासयं पत्थिओ म्हि कज्जेण । णूमंतेण तए तं खु णूण गरहीकओ अप्पा ॥ ४३ ॥

जीयं पि पणंति परस्स श्चि णिक्खेवयं खु रक्खन्ता । अह सज्जणाण पयई, तइ पुण विवरीयमायरियं ॥ ४४ ॥

ता साहसु सिग्घं एत्थ बहुविहं किं मुहा पलत्तेण ? । अण्ह खमामि णो तुह इय विवरीयं कुणन्तस्स ॥ ४५ ॥

इय तं गुरुकोवकरालियाणणं हंतुमुज्जयमतीयं । सको समागओ तत्थ तं कलेज्जण सिग्घयरं ॥ ४६ ॥

तओ सकविमुक्कहुंकारपलाणस्स गोवाल्यस्स भणिउं पयत्तो पुरंदरो जहा—भयवं ! अज्ज वि दुवालस संवच्छरं जाव तुम्ह गुरूआ उवसग्गा भविस्संति, ता जइ तुम्हे समाइसह ता अहं तेसि पडिप्फलणं करेमि चि । एत्थावसरम्मि य ओसारेज्जण काउस्सग्गं भणियं भयवया जहा—देवाणुप्पिया !

ण कयाइ भूयपुव्वं ण य होही एत्थ भुवणमज्झम्मि । जं परवले णिसण्णस्स केवलं होइ केवलिणो ॥ ४७ ॥

संजणियमप्पण च्चैयमप्पणा हंति सत्तिसंजुत्ता । णिइलइ सई चिय दिणयरो वि णिसिसंचियं तिमिरं ॥ ४८ ॥

णियसत्तिवलेणं चिय जयंति जइणो महातवोकम्मे । जइ उवउज्जइ अण्णो वि तत्थ ता तेण किं व कयं ? ॥ ४९ ॥

जो जं भारं ण तरइ उव्वोहुं सेंतहीणयाए णरो । अविहाविउं बलं णियतणुम्मि किं तस्स भारेण ? ॥ ५० ॥

सुर-णर-तिरियसमुत्थाण सयलविग्घाण उँट्टिज्जणं । दुकरतवचरणं काउमुज्जया साहुणो भुवणे ॥ ५१ ॥

सक ! समत्थो सि तुमं णिवोँरियं बहुविहाइं विग्घाइं । किंतु ण कम्मोवसमो जायइ अण्णस्स णिस्सोए ॥ ५२ ॥

इय एवं बहुविहजंपिहिं पचाइज्जण सुरणाहं । अइदुद्धरदुसहतवोविहाणमब्भुज्जओ भयवं ॥ ५३ ॥

१ तेणावि जे । २ समप्पियं जे । ३ घणरहिओ जे । ४ परमधं जे । ५ जोवं जे । ६ पुण सु । ७ गदओवसग्गा जे । ८ सयं जे । ९ उववज्जइ जे । १० सत्तिही जे । ११ ओविकं जे । १२ निवारयितुम् । १३ णीसाए जे ।

तओ सुराडिवेणावि भयवओ चेव माउभइणीए तणओ कयवालतवविसेसो वंतरसुरेसु समुप्पण्णो सिद्धत्थो णाम भणिओ जहा—जे दिव्वाइणो गरुओवसग्गा संभवन्ति ते तुमए पेडिफलियव्व च्छि । भणिऊण गओ सुरवती सत्थामं । तओ सो सिद्धत्थो सकाएससंजणियगारवग्गविओ णिययसंवंधसंभूयणेहाइसओ य कायरहियओ व्व भगवओ तणुम्मि समल्लीणो । जत्थ जत्थ भयवं अहाविहारं विहरइ तहिं तहिं निययाणहाओवमामिज्जन्तोवसग्गाविसेसो चिट्ठति ।

[बलिवद्दायगमुक्खगोवालपत्थावो २]

✽

भयवं पि पहायाए जामिणीए चलिओ तयंतियाओ । गामाणुगामं गच्छमाणो संपत्तो बहुलाहिहाणं सणिवेसं । तत्थऽट्ठियकाणगम्मि महाययणे संठिओ पडिमाए । तहिं चाणेयसत्तसंवायवायणकारी अट्ठिओ णाम णायराया परिवसइ । तेण य अणेयसत्तन्तरारिणा जणवयाराहणाणुवरोहेण भणियं—जे मह दंसणवित्रणा पाणिणो तेसिं सयल्ले- [ट्ठि]संचतेण मह आययणं विहेह च्छि । सो य अट्ठिओ भुयंगाहिर्वई पडिमोवगयं भयवंतं कलिऊण रोसवसविर्णितविस- जलणजालाकरालियदियन्तरालो विष्फुरियफारफुंकारपवणगज्जन्तकाणणाहोओ उव्वविउं पयत्तो । कहं ?—

सयलंगावेढणगाढजणियसंरोहवडिद्वयप्पसरो । सम्मुहणिदित्तणयणन्तणेन्तविसजलणजालोहो ॥ ५४ ॥

विष्फुरियतुंडमंडलपयंडपक्खित्तफारफुंकारो । तट्ठवियफणासयजणियभीसणायारदुप्पेच्छो ॥ ५५ ॥

सिरमणिकिरणकणुक्केरसवलियंवरधरायलदंतो । वयणन्तरपरितरलुल्लसन्तजीहाकरालिल्लो ॥ ५६ ॥

इय दसणवणंकियसयलदेहसंजणियवयणवित्थारो । अमुहकयकम्मपरिणइभरो व्व सच्छंदमोत्थरइ ॥ ५७ ॥

एवं च तिब्बोवसग्गापरंपराखलीकयस्स भुवणगुरुणो मुट्ठुयं वियंभिओ मुहपरिणामो । पहायप्पायाए य जामिणीए तहट्ठियस्सेव ईसीसि समागया णिदा । दसमुविणयदंसणपणट्ठणिदाविसेस्स य पहाया रयणी । उग्गओ किरणमाली ।

[अट्ठियणायरओवसग्गपत्थावो ३]

✽

एत्थावसरम्मि य पासयंदत्तिथाहिवइत्तिथपडिवण्णासामण्णो उप्पलो णाम महरिसी भयवओ वंदणत्थमागओ । वंदिऊण य जहाविहिं णिसण्णो भयवओ चलणजुयलंतिए । तओ भगवओ काउस्सग्गावसाणम्मि पुणरवि वंदिऊण एवं भणिओ जहा—“सामि ! तुम्हेहिं अंतिमराईए दस मुविणया दिट्ठा तेसि महू(हा)फलं ति । जो तालपिसाओ निहओ तुमए तमचिरेण मोहणीयमुम्मूलेहिसि । जो य सेयसउणो तं मुक्कज्झाणं झाहिसि च्छि । जो विचित्तसउणो तं दुवालसंगं पण्णवेहिसि । गोवग्गफलं च ते उ(च)उच्चिहो समण-समणीपभितिसंघो भविस्सइ । पउमसरो य चउच्चिहो देवसंघाओ । जं च सागरं तिण्णो तं संसारमुत्तरिहिसि । जो सूरुओ तमचिरेण केवलनाणं ते उप्पज्जिही । जं च अंतेहि माणुसोत्तरो वेडिओ दिट्ठो तं ते निम्मलज्जम-किचि-पयावा सयलतिहुयणे भविस्संति । जं च मंदरमारुडो सि तं सीहासणत्थो सदेव-मणुया-ऽसुराए परिसाए धम्मं पण्णवेहिसि च्छि । दामदुगं पुण ण याणामि” । तओ सामिणा भणियं—हे उप्पल ! जं णं तुमं ण

१ पडिखलिं जे । २ लट्ठिविसंचयं विहेह सु । ३ उंकारो सु । ४ सावण्णो सु । ५ इत्तद्वयान्तर्गतपाठस्थाने सुपुस्तके एतादृशः पाठ उपलभ्यते—“चलणजुयलम्मि । तओ भयवया काउस्सग्गावसाणम्मि समालतो जहोइयं, साहिओ णिययसुविणयं, लंओ, वुग्गओ एयाण कि फले ? ति । तेण भणियं—किमेत्थ वुज्जयव्वं ? साहन्ति इमे सयलतेलोक्कपरमेसरियन्ति । अचिछऊण य किंचि वेलं जहायं पडिगओ सो सुणो” ।

याणसि तमहं कहेमि—दुविहं सागारा-उणमारियं धम्मं पणवेहामि चि । तओ आउ(?)अच्छिऊण कंचि वेलं जहागयं पडिगओ उप्पलो । २७

[उप्पलपत्थावो ४]

पार्श्विक — आसारं श्री सुविजितसारं श्री पार्श्विक

✽

भयवं पि तप्पएसाओ चलिओ जहाविहिं संपत्तो मूलागं णाम सण्णिवेसं । तहिं च संठिओ एक्कम्मि उज्जाणव-
णम्मि । तओ भयवन्तागमणमुणियवइयरेण य जणसमूहेण वंदणाइणा पूइओ जयगुरु । पज्जुवासिउं च पयत्तो जणो ।
तं च भयवओ समीवं जणसमूहं गच्छन्तं पलोएऊण अछ्छंदओ णाम पासंडो वियप्पेइ—किमेस लोओ मं उज्झिऊण एय-
स्स समूहं गच्छइ ? चि, ता अवणेमि एयस्स गंतूण जइत्तणाहिमाणं । ति चित्तिऊण गओ जत्थ भयवं जणसमूहोवसे-
विज्जमाणपयपंकओ चिट्ठति चि । गंतूण य वेत्तूण पाणिमुट्ठीए तणं भयवओ दंसिऊण भणिउं पयत्तो—भो ! किमेयं
तणं छिज्जिही उवाहु ण व ? चि । एत्थावसरम्मि य भयवओ तणुम्मि समल्लीणसिद्धत्थेण जंपियं—णो इमं छिज्जइ चि ।
तओ तप्पभावाओ संजायकडिणभावं तं तणं इओ तओ तं विमदमाणेण अछ्छंदएणं जाहे मज्जयं पि भंजिउं ण तिण्णं
ताहे संजायवेलक्खभावो सयलजणोवइसिज्जमाणो गओ तप्पएसाओ ।

[अछ्छंदकपत्थावो ५]

✽

भगवं पि तप्पएसाओ संपत्थिओ । अहामुहं विहरमाणो गओ अणेयवणसंडमंडियं वणंतरालं ति । तं च केरिसं ?—

णियफलसमूहसंपत्तिपत्तसउणयणजणियतोसिद्धं । णचइ व पवणधुयसाहेलीचलुव्वेत्थुयवलयं ॥ ५८ ॥

आहासइ व्व फलतुट्ठसउणसंजणियवहलवोलेण । सहसा संपत्थियपंथियाण संदोहमजवरयं ॥ ५९ ॥

अच्छुट्ठइ व्व समुहुल्लसन्तइल्लन्तपल्लवोहेण । उग्गायइ व्व मणहरपसुयपरिलेन्तभमरगणं ॥ ६० ॥

इय तं जयगुरुदंसणसविसेसवियम्भमाणभत्तिभरं । भणइ व्व सागयं तसियविविहसावयसमूहेण ॥ ६१ ॥

एवंविहं च वणगइणं लंघिऊण संपत्तो त्रिसदवाणलणिइड्डपविरलोवलक्खिज्जमाणत्थाणुमेत्तपायवं वणयरपरि-
चत्तविहाराहारत्यसंचरणं णकयणिग्गम-पवेसं अणवरयसंधुकिउद्धूमायमाणदीसन्तसयलदियंतरालं, अवि य—
कुणरिदं पिव दूरपरिच्छूट्सउणसत्थं, मूयल्लयसरूवं पिव पणट्ठवाणियं, कुमयममां पिव दूरविबलाणसावयगणं,
दिट्ठीविसणयणसिहिसिहाकरालियमेक्कं भूमिप्पएसं । तस्स मज्झप्पएसम्मि पलोइयमच्चुचसंठाणं वम्मीयसिहरं । तं च
तारिसं भयवया दट्ठूण 'अहो ! णिज्जंतुओ पप्सो' चि भाविऊण संठिओ तत्थ पडिमाण ।

१ अच्छंदो सु । २ छिज्जिहिं उवाहु जे । ३ तप्पहावओ जे । ४ 'यदुमसं' जे । ५ 'हुलीयलव्वेत्थुय' जे । ६ भणिय व्व
सु । ७ इस्तद्वान्तर्गतः पाठो जेपुस्तके नास्ति ।

तर्हि च वणंतराले अणभवन्तरम्मि चंडकोसिओ णामाऽऽसि लोइओ रिसी । सो य कोववैसयत्तणओ रोइज्जाणोव-
गयमाणसो कालं काऊण समुप्पणो तम्मि रणम्मि दिट्ठीविसो महोरओ । तत्थ वि अचंडकम्मत्तणओ लोयपसिद्धिं
गओ चंडकोसिओ त्ति । तेणमहिट्ठियं वणंतरालं सयलसत्तसंभोयवज्जियं च संजायं ति । णवरि य सो भयव[त्तं] पडि-
मौसंठियं पलोएऊण अबन्तकूरपयइत्तणओ 'किं णिइहेमि' त्ति कप्पिऊण विणिन्तविससिहिसिहाभामुरेच्छविच्छोहं
णियच्छिउं पयत्तो, कह ?—

अह णिगंगंतुं भूमंदिराउ भीमयरभोगपम्भारो । भुयइंदो दंडट्ठियमउल्लियफणमंडलायारो ॥ ६२ ॥
पज्जलियाणलकणसवलणितणीसासखित्वाहिहरो । अन्तोपरियडिहयफुरियफारफुंकारसंसइओ ॥ ६३ ॥
पेरन्तविणितच्छिच्छडप्पहाविजियहा(?) भा)णुपहपसरो । अलिउल-कु[व]लदल-तमालकसणदेहा विहाइल्लो ॥ ६४ ॥
'अहमेव एत्थ तेयत्तणेण पयरिसमणोवमं पत्तो । ता तं किं मज्झोवरि परिट्ठिओ ?' इय कळेऊण ॥ ६५ ॥
वम्मीयविवरगहिरंतराउ उद्धाविऊण गयणम्मि । परिसंठिओ विमंडलकुंडलियायारभोयभरो ॥ ६६ ॥
सरलपरियत्ततणुवलयवयणपसरन्ततरलजीहालो । उच्चत्तणेण लहुइयपसरं हसइ व्व तालतरुं ॥ ६७ ॥
तो उम्मिल्लइ पुरओ जयगुरुणो पज्जलन्तणयणजुयं । णिइहणमणो णिइडुडपउरपावस्स भुव(?) य)इंदो ॥ ६८ ॥
तो सा दिट्ठी विप्फुरियविसकणुककेरजलणजाल्लिहा । विज्जु व्व कणयगिरिकंदरम्मि गंतुं पडिप्फलिया ॥ ६९ ॥
दिट्ठिप्पहाहिं विप्फुरियजरदरविकिरणविम्भमहिं जिणो । ददकणयरज्जुसंदाणिउ व्व सकज्झओ सहइ ॥ ७० ॥
इय सा दिट्ठी दिट्ठीविसस्स गुरुरोसपसरपक्खित्ता । ण समत्था जयगुरुणो णिइहिउं रोममेचं पि ॥ ७१ ॥

तओ सा दिट्ठी दिट्ठीविसपेसिया भयवओ विणिग्गयसीयलेसाणुहावपडिप्फलियमाहप्पा निरत्थया संजाया । तओ
पडिप्फलियं णिययदिट्ठिप्पहावं पेच्छिऊण भुयंगमो रोसवसविणिन्तफुकारविसजलणजालाकरालवयणो कवलणमणो पहा-
विओ भयवओ समुहं, डसिउं च पयत्तो जयगुरुं । अणवरयडसणुज्जओ वि जाहे ण भयवओ मणयं पि किं पि पीडं उप्पा-
एउं समत्थो, तओ तं तारिसं विमुक्कासेसविसविसेसं पेक्खिऊण भयवया भणियं—“भो चंडकोसिरियं ! ण सुमरसि तं 'इओ
तइयभवम्मि तुमं इरियावहसोहणणिमित्तं [खुड्डेण] चोइओ पहाविओ कोवेण तस्स चेव वहणत्थं, णिवडिऊण मओ समाणो
उववण्णो तावसासमम्मि । तत्थ परियडिहओ समाणो काल्हायस्स कुलवइणो तुमं चेव कुलवती संवुत्तो । तत्थ य समि-
हाणिमित्तं गयस्स रणम्मि कोवकारणाओ चेव परसुं उण्णामेऊण पहाविओ पेक्खुलिउं पडमाणो परियेत्तिउं णिययपर-
मुणा चेव विणिवाइओ । तओ विवण्णो संजाओ इह भुयंगमत्तणेण' । ता अज्ज वि कोवं कीस कारणा समुव्वहसि ? त्ति ।
ता भाविऊणेवं सिद्धिल्लेसु कोवं, कोवो हि" माण विग्गभूओ मुहसंपयाणं, अणत्थो अत्थसत्थसंभवाणं, पडिक्खो कल्लाण-
संपैत्तीण, पडिक्खो मुहविवेयस्स, पडिमल्लो कुसलाणुट्ठाणस्स, णिइल्लो सिणेहसंतईण, मूलमविवेयतरुणो, जणओ
दुग्गइवेंडणस्स त्ति, अवि य—

गुरुकोवजलणजालाकलावसविसेसकवलियविवेओ । ण वियाणइ अप्पाणं परं व परमत्थओ "लोओ ॥ ७२ ॥
कोववसओ हु पुरिसो अप्पाणं चिय डहेइ पढमयरं । जत्थुप्पणो तं चेय इंधणं धूमकेउ व्व ॥ ७३ ॥
सो किं व कुणउ अणस्स पेसिओ खीणसत्तिसंजोओ । जो णिययमौसमं णिइहेइ कोवो तुमं व फुडं ? ॥ ७४ ॥
इय "कोवेणं सयले जयम्मि जे जंतुणो समहिइया । इह परलोए वि णराण ताण ण हु होंति सोक्खाइं ॥ ७५ ॥

अणं च एएण अहिइया जंतुणो ण गणंति परं ण अप्पयं, ण सोक्खं ण दुक्खं, ण आवयं ण संपयं, ण हियं णाहियं, ण
सुंदरं ण मंगुलं, ण जीवियं ण मरणं ति । सव्वहा तं तहा समायरन्ति जेणागाहदुत्तरे णिवडंति भवसमुदे त्ति । ता सुमरिऊण

१ लोइयरिसो स्र । २ 'वसत्त' स्र । ३ च जायं स्र । ४ 'माए सं' जे । ५ 'रच्छिच्छिच्छोहं' णियत्तो । तो सा दिट्ठी दिट्ठीविसस्स
जे, (५० गाथा) । ६ 'ओ समीव' । ७ 'जे' । ८ 'य सुम' जे । ९ कालकयस्स स्र । १० पक्खलिउं जे । ११ 'यत्तिऊण' जे । १२ दि
णाविट्ठिप्पहाओ (?) स्र जे । १३ अत्थसंभं स्र । १४ 'संपत्तीणं' जे । १५ मूलं वेरत्तण(६)णो स्र । १६ 'वयणस्स' स्र । १७ पुरिसो
जे । १८ 'संजोओ' स्र । १९ 'मासयं' जे । २० कोवेण इमेण(५) जं स्र ।

तं पुण्यभवसंजणियकोवविवायफलं, भाविऊण गिरस्थीकयं तमइदुकरं तवोविहाणं उज्झमु कोवपयइं, मा गच्छसु इंधण-
चणं णरयदुक्खणीं” ति । एयारिसं च णिसामिऊण भयवओ भणियं भुयंगमस्स समुम्मिळो विवेओ, समुल्लसिओ
चिंचोवसमो । तओ पणामपुण्वयं समल्लीणो भयवओ पयपंकयसमीवं । पयइकराला वि पसण्णभावमुक्खया दिट्ठी । णिदिउं
च पयत्तो अप्पाणं—धिरत्थुं मह कूरकम्भुणो जम्मेणं, जेण पैहयकालावज्जियं पि तं तारिसं दुक्करं तवोविसेसं पणासिऊण
कोववसंत्तणओ इमं एयारिसं अचन्तकूरपयइत्तणं अबुववण्णो मि ति । एवं च संविग्गो चित्ते होऊण, णिदिऊण अप्पणो
विलसियं ति, काऊण अणसणं जहाविहिं, कालं काऊण समुप्पणो भोगभूमीए ति ।

चंडकोसिओवसमं णाम [६]



तओ तप्पएसाओ भयवं वद्धमाणसामी उवसामिऊण चंडकोसियं पयटो सयलसत्तवोहकारी वसुंधरं विहरिउं ।
विविहुमातवविसेसाऽसेसणसिज्जमाथाधुक्कम्भो संपत्तो विविहतरंगमं गंगामहाणं । [सा] च पयत्तो (१ य केरिसा)—
तउपायवपरूढवियदुब्भट्ठणिवडियकुमुमराहियं (२ हारियं), मज्जिरवणकरिंदकरपायसमुच्छलियुद्धलहरियं ।
सवरपुरंधितीरपरियप्पियणयणलयाहरिलियं, अविरयसज्जमाणणिच्चुज्जलजलवयमणहरिलियं ॥ ७६ ॥
जलकयतरंगमं गुरपसरियतरलुच्छलन्तसतुसारं । मंदाहणी जयगुरु संपत्तो पउरदुत्तरागाहजलं ॥ ७७ ॥

अवि य—

तीरद्वियवणगयदन्तकोडिविणिवाडिउब्भटतडोहं । तडविवरविणिगयलम्बमाणवेल्हन्तभुयइंदं ॥ ७८ ॥
भुयइंदोलोजीहमाफंसविलिहिज्जमाणजलणिवहं । जलणिवहलिण्णमूलोवडन्ततडविडवपडिवद्धं ॥ ७९ ॥
पडिवद्धलहरिसंयद्वहवोसद्वसेयडिण्डीरं । डिण्डीरपिंडपंडुरसविसेसपयासियगुणोहं ॥ ८० ॥
इय जयगुरुदंसणवद्धमाणपहरिसवियासपडहच्छं । अगधं व देइ पवणुच्छलन्तलहरीतुसारं ॥ ८१ ॥

तओ तं अणोरपारं पलोयमाणस्स भुवणगुरुणो परतीरुत्तारणणिमित्तम्मि समागया णावा तमुदेसं । समारुहिउं पयत्तो
परतीरगामी जणो । भयवं पि तेणेयं समयं समारुहो णावाए । पवाहिया णावा जलंतियं । वाहियाइं अवल्लयाइं । गंतुं
पयत्ता णावा । एत्थावसरम्मि य पुण्वजम्मंतरावद्धवेरो तिचिट्ठणो पडिसत्तु आसग्गीवजीवो तहाविहकम्मवसगओ
समुप्पणो णागगोत्तम्मि सुदाहो णाम ‘भुयइंदो अवहिप्पओएण णाऊण भयवंतं णावापरिसंठियं वियम्भियकोवत्तणओ
समागंतूण मायापओएण पक्खोहियं महाणदीसलिलं । उच्छलिओ महल्लवीइसंवाओ । भीमा संठिया महाणदी ।
केरिसा य ?—

मारुयपणोल्लिउब्बेल्लिवीलिविसमुच्छलन्तणीरोहा । णीरोहतडंतुदंतवेयस्विप्पन्तचलमच्छा ॥ ८२ ॥
मच्छपरिहच्छवलणुच्छलन्तपुंछच्छडाहयजलोहा । असरोसणिच्चरप्पहरपहयजलतरल्लियतरंगा ॥ ८३ ॥
तरल्लियतरंगसंगयकारं दुद्धन्तखुहियचकाया । चकायजणियहलवोलवहलकंपंतवहुविहगा ॥ ८४ ॥
इय जणियन्मिंतरगहिरणीरपक्खोहखुहियकल्लोला । गंगाणदी समुब्भट्ठभीमा संजणइ भुयइंदो ॥ ८५ ॥

१ चित्तविवेओ । तओ जे । २ बहुयकां जे । ३ ‘स’पुण्यदत्तणओ जे । ४ ‘तणत्तुं अ’ जे । ५ ‘णइं । सा य—अह जयगुरुदं’
जे, (८० गाथा) । ६ ‘व समा’ जे । ७ आवावाइं जे । ८ भुवइंदो सु । ९ वियाणिऊण जे । १० इस्तद्वसान्तर्मतः पाठो जे पुस्तके
नास्ति ।

एत्थावसरम्मि य समाउलीहो गावाजणो, विसंण्णा णिज्जामइल्ला 'असंजायपुच्चं किमेयं?' ति चित्तिउं पैयत्ता । सो वि हु सुदाहो पुच्चभवपडिबद्धामरिसविसंठुलो हंतुमुज्जओ सयलं पि गावाजणं । तओ तं तारिसं पलोएऊण भयवया कयक-
रुणापहाणचित्तेण चित्तियं—पेच्छ, मह णिमित्तसंजणिओ एयाणं पि खलीकारो । एत्थावसरम्मि य सुदाहेण जलंतराओ
विणिग्गायवियडकरसंपुडेण उप्पाडिया महाणदीमज्झाओ गावा । तं च तारिसं दट्ठण 'परिचायह परिचायह' चि संमुच्छ-
लिओ हाहारवो । णवरि य जयगुरुप्पहावओ तं तारिसं णियच्छिऊण कम्बल-संबैलादिहाणेहिं समागतूण थंभिओ सो
उवहवो । उत्तारिया जहिच्छियं कूलं गावा । णमिओ तेहिं पयडीहोऊण भयवं । तं च दट्ठण संजाओ लोयस्स विम्हओ ।
भणिउं पयत्तो—अहो ! कोइ अमाणुसप्पहावो मुणी, एयस्स पभावओ अम्हे संमुच्चरिया । पुणो पुणो भणमाणा णिवडिया
जयगुरुणो पायकमलेसुं । कंबल-संबैला वि पणमिऊण सह जणसमूहेण गया जहोचियं ठाणं ।

अह पुच्चवेरसंभरणकोवपडिहयपयावपसरम्मि । विगयम्मि सुदाहे सयललोयसंजणियचोज्जम्मि ॥ ८६ ॥
पडिबोहेतो मैवभीयमच्चकमलायरे तिलोयगुरु । अभणंतो वि हु अइसयवसेण विहरइ धरावेढं ॥ ८७ ॥

इय सुदाहमुयइंदोयसग्गाविहाणोवस्समं णाम [७] ॥



तओ भयवं पि तयंतियाओ अहाणुकमेणं विहरमाणो संपत्तो जलतरलतरंगोवसोहियं वरंगं णाम णिण्णयं । तीसे
य तीरप्पएसेणं मुकुमारवाल्यावटोवरिं फामुयपएसपरियप्पणाए पयाइं णियमंतो गंतुं पयत्तो । णवरि य समुम्मिल्लंतचक्कं-
डकुस-कुलिसलक्खणं पयपन्तिं पलोइऊण पूसो णाम सामुदलक्खणणुओ चित्तिउं पयत्तो—अहो ! महच्छरियमेयं, जेण
पेच्छ चक्कवट्टिलंछणा पयपन्ती कस्सइ पयाइण(णो) दीसइ, ता महंतमेत्थ कोउहल्लं, अहवा किमेत्थ चोज्जं ?, कस्स वा
विसमदसापरिणइं ण होइ ? । चि चित्तिऊण 'पेच्छामि णं महाणुभावं' पयाणुसारेण लग्गो पयमग्गे । 'अवस्सं इमम्मि महाणु-
भावे दिट्ठम्मि मह संपज्जइ सयलत्थसंसिद्धि' चि तहेचाणुट्ठियं । कइवयपयन्तरम्मि य दिट्ठो भयवं असोयतरुणो हेट्ठओ संठिओ
पडिमाए । दट्ठणं च भयवओ तंणुसरूवं चिन्तिउं पयत्तो—ण केवलमिमस्स चलणेसु लक्खणं, सरीरं पि पवरसिरिवच्छ-
लंछणमुवलक्खिज्जइ चि, ता एयारिसा पवरलक्खणसंपया, वासोमेत्तं पि से ण संपज्जइ, ता किं लक्खणाणि वा वित-
हाणि ?, उवाहु लक्खणसत्थमलियं ?, ता धिरत्थु मह परिस्समस्स, जेण मायन्धियाए मुद्धहरिणो विव विणडिओ लक्ख-
णसत्थपंजियाए, अण्णइ कहिमेसा भरहादिवतणुप्फला समत्तलक्खणसंपत्ती ?, कहिं वा असंपज्जन्तभिक्षाभोयणकिसा
एयस्स तणू ? । एयं च अत्तणो णिदापरं पूस्सामुदं 'वियाणिऊण पुरंदरेण भणियं—भो भो सामुद ! ण सम्ममहिगयं तुमे
सामुदं, जेण सुच्चउ—

णो चक्कवट्ठिणो लंछणाणमलियत्तणं वियप्पेसु । धम्मवरचक्कवट्ठि चि कह तुमे ण मुणिओ भयवं ? ॥ ८८ ॥

भरहादिवत्तणं जाइं चक्किणो लक्खणाइं साहेति । ताइं चिय मुदि ! साहेति धम्मचक्कित्तणमुयारं ॥ ८९ ॥

कूरत्तणप्फलं णूणमेकमण्णं मुहप्फलं जाण । एत्तियमेत्तो एयाणमेत्थ पयडो पर विसेसो ॥ ९० ॥

इय मा गच्छ विसायं 'लक्खणमलियं' ति साहियं सत्थे । 'अच्चग्गलो गुणेहिं इयराओ धम्मवरचक्की' ॥ ९१ ॥

१. एत्थतरम्मि समां जे । २. विसण्णो णिज्जामओ 'असं' जे । ३. पयत्तो जे । ४. 'सबला' सु । ५. उच्चरिया सु । ६. 'सबला' सु । ७. भयमो सु । ८. धरावेढं जे । ९. 'इ' पयाण णवीए दीसइ जे । १०. तणुसुवं सु । ११. उवाहु जे । १२. वियारिऊण सु ।

एवमादि बहुप्पयारं भणंतेण पचाइओ पूससामुदो । बहुधण-धण-कणयसमूहेणं च वोच्छिण्णतण्हाऽऽसो काउं भणिओ य-तुममेयपरियप्पणाए समागओ जहा 'इमम्मि महाणुहावे पलोइयम्मि संपज्जिहिन्ति मे मणोरहा', पुणो एयस्स सख-वमवलोइऊण विसायमब्भुवण्णो सि च्छि, ता भुवणगुरुणो पायपंसुपरिमोसो वि सत्ताण पुंसइ दारिदोवदवं, किं पुण दंसणं ? । ति भणिऊण तिरोहिओ पुरंदरो ।

पणइमह विहेउं दिट्ठसिद्धाणुहावो, सुरवइधणदाणुप्पणपज्जत्तभावो ।

रहसवसविसट्ठुच्चुद्धरोमंचसोहो, णियअवसहिहुत्तं जाइ पूसो विमोहो ॥ ९२ ॥

पूस-पुरंदरसंचाओ णाम [८] ॥



भयवं पि तंओ पप्साओ जहकमं विहरमाणो संपत्तो रायगिहं । तत्थ णांगलंदणामाए पुरवाहिरियाए एकन्ते पेच्छि-ऊणमेकं आवायपरिवज्जियं वसहिं संठिओ सच्चराइयं पडिमं । पहायसमयम्मि य मासक्खमणपारणयम्मि पारिओ जय-मंदिरम्मि विचित्तं भोयणं । 'अहो ! दाणं' ति भणमाणेहिं पमुका देवेहि हिरण्णवुद्धी । पुणो अण्णयरपारणयम्मि णंदणणांमधेयस्स गेहम्मि मासाओ चेय पारियं । तहिं पि तहेव सुरवरेहिं तस्स कओ सकारो ।

एवं च सयलजणपरंपरापूज्जमाणं भयवन्तं दट्ठूण गोसालो णाम पूयाहिलासी समागंतूण भयवओ सीसत्तणमुव-गओ । भयवं पि अणुप्पणकेवलणाणो वि 'भव्वीयमिहत्थि' च्छि अणुवत्तिमब्भुवण्णो । तओ जं जं तवोविहाणं भयवं आयरइ तमेसो वि । ण उणो तस्स तारिसं फलं ति । किं कारणं ?—

अइदुकरतवकरणे वि णेय तं तारिसं फलं तस्स । भावविसुद्धीए विणा जो हु तवो सो छुहामारो ॥ ९३ ॥

जस्स ण सद्धा भत्ति व्व पवयणे चित्तमुद्धया णेय । बहवं पि किलिस्संतस्स तस्स तं जायइ णिरत्थं ॥ ९४ ॥

जो पूया-सकाराइ-दाण-सम्माण-किच्चिकलणाए । कीरइ तवो ण सो होइ तस्स णेव्वाणपज्जन्तो ॥ ९५ ॥

इय सो जयगुरुकीरन्तपूय-सकारजणियतल्लिच्छो । तह वि ण सो तं पावइ अओ पहाणा मणविसोही ॥ ९६ ॥

एवं च तेण तिब्बोववाससोसियतणुणा पारणयचारयम्मि एकया जयगुरु आगंतूण पुच्छिओ-देवज्जय ! किं मए अज्ज भोत्तव्वं ? ति । सिद्धत्थो भणइ-आरणालेण कोदवोयणं ति । तओ एयं तह च्चेय संजायं ति ।

तओ भयवं अण्णया गओ कोल्लागसण्णिवेसं । तहिं च गोसालेण गोवाले पायसपसाहणुज्जए दट्ठूण पुच्छिओ जयगुरु-भयवं ! किमेत्थ मज्झं पायसलंभो भविस्सइ ण व ? च्छि । सिद्धत्थेण भणियं-दरसिद्धे पायसम्मि इमा थाली चेय भिज्जिही । तओ गोसालसिद्धवइयराण पयत्तपराणं पि गोवालदारयाणं तहेव संजायं । पुणो वि तिल्लेचंतंरम्मि पुच्छिओ जयगुरु-कइ एत्थ तिल्लत्थंवे तिला होहिंति ? । सिद्धत्थेण भणियं-सत्त भविस्सन्ति । तओ समुप्पाडेऊण खित्तो गोसालेण 'तिल्लत्थंवे' । गोखुरणिवडिओ य तहिं चेव लग्गो 'थंवे' । पुणो पडिपहपत्थियाण पुच्छियं गोसालेण-कहिं सो तिल्लत्थंवे ?, केत्थिया वा तहिं तिल ? च्छि । दंसिओ सिद्धत्थेण । पुणो वि पुच्छियमण्णवारम्मि-किं मए अज्ज भोत्तव्वं ? । सिद्धत्थेण भणियं-माणुसमंसं ति । तओ गंतूण भणिया एका महिला जहा-मह अज्ज पायसस्सुवरि तण्हा । सा य णिंद । तीए मयल्लयवाल पोसिऊण दुद्धम्मि पक्खिविऊण पायसविहाणेण रंभिऊण पुत्ताहिलासिणीए दिण्णं

१ तप्पसाओ जे । २ णामल्लिंद जे । ३ पाराविओ जे । ४ 'णामस्स' जे । ५ 'करणा' सु । ६ तिल्लत्थंवे सु । ७ थंवे सु । ८ तिल्लत्थंवे जे । ९ 'वासरम्मि' जे । १० 'यं-तीए मयल्लयवलं' जे ।

गोसालस्स भोयणं । तओ सो भुत्तुत्तरसमयम्मि ईसि विहसिऊण भयवओ पुरओ सोप्पासं भणिउं पयत्तो—अहो ! मिट्ठं मंसभोयणं ति । सिद्धत्थेण भणियं—अवितहमेयं, जइ पुण ण सहसि ता उव्वमसु ति । तहेवाणुद्वियं, दिट्ठं च तं तारिसं ति । तओ कुविओ तीए उवरिं, गओ य तयहुत्तं । एत्थावसरम्मि य सिद्धत्थेण परियत्तेऊण अण्णओ-मुहं कयं तीए मंदिरं । अलहमाणेण य तं महिलं णिययतेयं पक्खिऊण गामद्धं चेव दीवियं । एवं च भयवओ तिच्चत-वोविहाणमञ्जुज्जयस्स वचन्ति वासरा । कइं चिय ?—

तिच्चयरजरहरविकिरणपसर[प]सरियपयावपउरम्मि । गिम्हम्मि दिणद्धे संठियस्स आयावणोसग्गं ॥ ९७ ॥

अणवरयगज्जिरुभडयडन्तयणरवयणोहसमयम्मि । गिरिविवरकंदरन्तरगयस्स सज्झाणणिरयस्स ॥ ९८ ॥

सिसिरम्मि तुहिणकणसवलमारुयुद्धामभरियभुवणम्मि । णेइ णिसं लम्बभुओ काउस्सग्गेण जयणाहो ॥ ९९ ॥

इय णाणाविहपडिमाविसेसपरिहीयमाणकम्मंसो । विहरइ भयवं भूमंडलम्मि भव्वाण कयताणो ॥ १०० ॥

अणया य सिसिरसमयम्मि माहमासरयणीए ठिओ सव्वराइयं पडिमं । पुर्वि तावसीतवोविहाणेण भरिऊण एक्का [भगवओ तिविट्ठुभवअंतेउरी] वंतरेसु समुप्पणा । भयवन्तं पडिमसंठियं दट्ठण पयत्ता तुहिणाणिलालिद्धेण जल-विंदुवासेण अभिहविउं । तओ भयवं णिप्पयंपत्तणओ चित्तस्स, थिरत्तणओ सत्तस्स सोहुं पयत्तो सीओवसग्गं । कइं ?—

ते तुहिणयणकणुकेरगग्गिणो वारिर्विंदुणो लग्गा । विसहिज्जन्ति सरीरम्मि सीयला सीयपवणेण ॥ १०१ ॥

पयतीए चिय सीयलसरुविणो तुहिणपवल(ण)संवलिया ।

सिसिरजलविंदुणो किं पुणो [य] वन्तरी(रि)परिग्गहिया ॥ १०२ ॥

वन्तरिसहत्थणिद्धूयचकलुग्गारवेयपरिखित्ता । अन्तो जयगुरुतणुणो विसंति वाण व्व णिसियग्गा ॥ १०३ ॥

इय एवं जयगुरुणो दूसहसिसिरोवसग्गसदिरस्स । आरुद्धं सविसेसं झाणं कम्मोहणिदल्लं ॥ १०४ ॥

तओ सा पूयणा पूयपावं णिप्पयंपं भयवंतं वियाणिऊण रयणीविरामम्मि जहागयं पडिगया । दिणयरकिरणपरिमा-सपरिसुद्धे धरायलम्मि पयट्ठो भुवणगुरू, संपत्तो सूरसेणजणवयन्तियं । गोसालेणावि तहेव तवोविहाणुज्जण भयवया सह गच्छमाणेण पलोइओ फुडियग्गजडाजुडमंडलो ज्याणियरपउरुत्तिमंगो जरकप्पडवसणपरिग्गहो विडो णाम बालत-वस्सी । दट्ठणं च तं तारिसं गोसालेण हसिओ जहा—किमभिहाणं तुम्हाणं लिं ? किमायारं वा ? । एवमाइणा ताव खलीकओ जाव रुसियस्स तस्स तेयमसहमाणो समागओ जयगुरुपायमूलम्मि । भयवओ पहावेणं च णिरत्थीकओ तस्स तेओ । तं च रक्खियं पेच्छिऊण भणिउं पयत्तो विडो—रक्खिओ एसो तुम्हेहि । ति भणिऊण गओ ।

एवं च तस्स गोवा(सा)लस्साणेयदुच्चरियपरायणस्स वि जयगुरू मज्झत्थभावो । गोसालो वि जयगुरुणो अइसय-विसेसे दट्ठण समागयपच्छायावो णिदिऊण अत्तणो णियडिसहावं भयवओ चलणजुवलन्तियाओ जहासमीहियं पत्थिओ । तहिं च गंतूण परुवियं सत्थं—

पायसथालिविणासो, तिलथम्भो, मंसभोयणादीयं । जह सिट्ठं सिद्धत्थेण तं तह च्चेय संजायं ॥ १०५ ॥

इय भन्ती-समइवियप्पणाए परियप्पिउं तओ रइयं । णियइपरियप्पणाए ' णियतीवाओ ' ति सिद्धिगयं ॥ १०६ ॥

आजीवीणं आजीवकारणे कयणिमित्तमच्चत्थं । तं चिय णियतीवादीण दिट्ठिमुप्पायणं जायं ॥ १०७ ॥

इय विणियत्ते गोसालयम्मि कयणियइवायदिट्ठिम्मि । भयवं पि वद्धमाणो हिडइ लोयं समियपावो ॥ १०८ ॥

भयवओ वद्धमाण[सामिणो] चरिए गोसालाणुगमो णाम [९] ॥



भयवं पि सुसमाहियमणो णिरुवयन्तो चरा-उचरजंतुचरियं संवरिउं पयत्तो भावयंतो विचित्तभावणाओ हिययम्मि । समसत्तु-मित्तभावत्तणओ य संजणिओ णिययचित्तस्स अण्णहाभावो । कइ ?—

कथं पृष्ठज्जन्तो सयलमुरा-ऽमुर-णरेहिं सविसेसं । निदिज्जन्तो कथं पडणियघणज्जणवओहेण ॥ १०९ ॥
 कथं निदियगुरुओवसग्गवग्गेण खवियसव्वंगो । कथं अणुल्लमुरा-ऽमुरेहिं संजणियवयसेवो ॥ ११० ॥
 अणभिण्णसरुवे सयलजंतुणो अत्तणो णियच्छन्तो । वेदं [ण] गच्छं(च्छ)ति बुद्धं(च्छ)ति निदिज्जन्तो ॥ १११ ॥
 इय मुचरियविविहतवोविसेसपरियड्ढमाणमुहलेसो । विहरइ भयवं निदिलियगरुयविविहोवसग्गभओ ॥ ११२ ॥

एवं च बद्धमाणसामिणो अणेयतवोविहाणणिरयस्स ण पक्खुइइ मणो पढमसमुब्भिण्णसहयारमंजरीजालपरिमलालमामिरभमरउल्लज्जंकारपसरेण मणहरदुमसंडमंडललीणकणिरकोइलालावमुहलियदियंतरेण मणहरतरुणजणजणियरुइरणेवच्छभिज्जन्तचवरीवण्णउहीवियमयरकेउणा महुसमएण, [ण] य तिव्वतरणिकरणियरपसरसंतावतवियभुवणंतारालेण परितवियधरायलुद्धन्तमारुयपणोछिउल्लसंतखरफरुससकरुक्केरदूसहेण णिव्वरविरसमाणक्षिड्डियाज्जंकारज्जं पियासेससदेण निदाहसमएण, ण य घणघडंतघणमंडलीगहिरगज्जिउप्पित्थपंधियसमूहेण तरलतडिदंडताडणाहित्थपउत्थजायापयंपियतणुणा अणवरयणिव्वरासारथोरभाराणिवाउप्पहपयट्टपयभरेण पाउसउउणा, ण य सरसवोसट्टंपकयपरायधूसरियसधराधरणहन्तरालेण कलमगोवियाकलरुग्गीवा(या)यण्णणु(गु)ण्णइयसंठियपंधिओहेण गयदानसच्छहुच्छलियसत्तच्छयामोयमिलियकुलंधुयावद्धकोलाहलेण सरयकालेण, ण य पामरजगारद्ध(ध)ण्णमलगमणहरारोलियगामसण्णिवेसेण वियसंतपियंगुलयाजडिलमंजरीपुंजर्पिजरिज्जंतकाणणेण सिप्पीरपडलपाउरणपहियपामुत्तपरियत्तमाणमुव्वन्तखरहरासदेण हेमन्तागमणेण, ण य तुहिणघणकणुक्केरसंवलियवियरन्तदूसइतुसाराणिलेण गामेसजणियधम्मग्गिपासपरिमुत्तपावामुयघोरन्तधुरुधुरारावगहिरेण सुपरिप्फुडविसट्टकंदोइहासहसिरपउरारामणियरेण सिसिरसमएणं ति ।

एवं च बहूणि तवचरणाणि मम्मसन्तो संपत्तो ददभूमिवाहिपरिसंठियं चिरयालपम्मकुसव्वोउअपायवसिरि पेढालं णाम जिण्णोववणं ति । तओ तस्स जिण्णोववणस्स जिणाणुहावओ साहा चियंभिउं पयचा । कहं ?—

परिगलियपत्तसंचयपउत्थसोहा वि तक्खणं चेव । अणुरायं पायडइ व्व सरसकिसलयदलोहेण ॥ ११३ ॥
 होन्ति परिजुण्णवावीमु कमलिणीसंडमंडियजलाइं । अणलक्खियघणसेवालविसय[विय]सन्तकमलाइं ॥ ११४ ॥
 अल्लियइ दंसणे चिय रहियामोयं पि पढमपडिभिण्णं । महुपाणलालसं कमलमंडल(संड)महियं भमरवलं ॥ ११५ ॥
 जयणाहदंसणे वणसिरीए दरदिट्टमउलदसणग्गं । हसियं व हरिसपसराए भमरपरिलेतमहुरसरं ॥ ११६ ॥
 विहसइ मुहं व णलिणीए तक्खणुव्वेद्धदलउडं कमलं । जयगुरुदंसणपसरियवियासवद्धन्ततोसिद्धं ॥ ११७ ॥
 सज्जीकयाइं विम्हयगयाए सहसागयम्मि जिणयंदे । उववणलच्छीए लयाहराइं मुइरं विमुक्काइं ॥ ११८ ॥
 अहियं वहन्ति उहामभत्तिजणियं समोणमंतीओ । कलियुग्गेयं पुलउग्गमं व तणुपायवलयाओ ॥ ११९ ॥
 इय तं तक्खणपसरियपाउससोहं मुपाउसेणं व । जायं जिण्णोववणं जिणचलणगुणाणुहावेण ॥ १२० ॥

तओ तम्मि जिणचलणपडियग्गणुप्पण्ण-पवद्धमाणसोहासमुदए उववणम्मि अवरदिसामुहोणमंततरणिमंडले वासरावसाणसमयम्मि पविरलहरियंकुरपरिणए धरायलद्धन्ते काउस्सग्गम्मि ठिओ एगराइयं महापडिमं । कहं ति ?—

सहसा सन्विदियदुद्ध[भावपडि]रुद्धदिद्विच्छोहो । णीसासपसरसंरोहजणियणिकंपसव्वंगो ॥ १२१ ॥
 परिसंठियज्ञाणेकग्गचित्तमुज्जन्तहिययमुहलेसो । मुर-णार-तिरिओरयदूसहोवसग्गाणऽदिण्णमणो ॥ १२२ ॥
 सव्वजणिच्छासंजणियमुहफलो लम्बमाणभुयसाहो । मुरपायवो व्व सोहइ मुरपायवपायपामूलो ॥ १२३ ॥
 इय गरुयाभिग्गहवसविसेसवद्धन्तधम्ममुहज्ञाणो । पडिमाए संठिओ बहुभुत्थदुक्खक्खयणिमित्तं ॥ १२४ ॥

ताव य परिणामवसोवहीयमाणपयावपसरो णरवइ व्व अत्थन्तरमुवगओ सहस्सकिरणो, अवरदिसामुहसरवरे व्व तरणिकपरिग्गहिया कमलिणि व्व पडिबुद्धा संज्ञा, दुज्जणकसणचयणविब्भमा मित्तो(? ता)वगमम्मि लद्धावयासो पसरिओ

बहलतमसंघाओ, उइयं च पु(धु)सिणारुणयणमंडलं पिव पुब्बदिसावहृष्ट ससिबिम्बं, दूरद्विण्णावि दूरयरमुप्पुसिओ पहा-
पयरिसेण तिमिरणियरो ससिणा, बोसट्टदलउडन्तरल्लीणभसलवलयाइं जायाइं सरोवरेसु कुमुयसंडाईं । एवं च भसलवल-
यचलचलणपक्खाविकिखचचंदुज्जुयपरायपरिधूसरससि(स)हरपवड्डमाणसोदाए सव्वरीए एकया णियमुरभडत्थाइयामंड-
वट्ठिओ सोहम्माहिबई दूरंतरालववहियं पि सइसमालुणं अण्णासा समुव्वहंतो जयवुहं पयत्तो चित्तिउं—कहिं पुण संपयं पएसे
णियपयपंकयपरिमासपूयपावं धरायलं कुणंतो वद्धमाणसामी विहरइ ? त्ति । एवं च चित्तिऊण पउत्तमोहिण्णाणं । दिट्ठो
य णयरवाहिरोववणविचित्तभूमिभायम्मि पडिमापरिसंठिओ जयणाहो । केरिसं च तिहुयणगुरुं पडिमापरिसंठियं निय-
च्छिउं पयत्तो मुरवई ?—

णिकंपतणुपयड्ढियविमलच्छाओवसोहियधरन्तं । मुरगिरिवरं व तियसा-उमुरेहिं सेविज्जमाणपयं ॥ १२५ ॥

णिदहमाणं ज्ञाणाणलेण बहुभवियकम्मसंदोहं । संखवियजलहिणिवहं फुरन्तवडवाणलोहं [व] ॥ १२६ ॥

वालायवच्छविहरं आसण्णभविस्सकेवलपहोयं(धं) । उव(य)यन्तरियफुरंतुद्धकिरणसूरं व णहमग्गं ॥ १२७ ॥

इय पेच्छइ दिण्णमणो ओहिविहाणेण सयलजयणाहं । मुरणाहो तिहुयणभंवणतेयरासिं व दिप्पन्तं ॥ १२८ ॥

पेच्छिऊणं च भयवंतं सहसा दूरयरपरिच्छलसीहासणो उभयकरकयंजलीमिल[न्त]भालवट्ठो धरणियलमिलियजाणु-
मंडलजुयलो रंखोलन्ततारहारं वमुहायलम्मि णिस्सम्मिऊण मउलिमंडलं पणमितं मुरणाहो थोउं पयत्तो । कह ?—

जय जय जिण ! जु(इ)ज्जयजेयपक्खविवखोहवड्ढियपयाव ! । भवजलहिणिवुड्ढन्ताण तं सि सरणं असरणाण ॥ १२९ ॥

जे तुम्ह दंसणे दलियतिमिरपसरम्मि भाणुविम्बे व्व । णो पडिबुद्धा ण कयाइ होज्ज ताणं पुण विवोहो ॥ १३० ॥

संसारसायरे ता भमन्ति जीवा अणोरपारम्मि । तुम्ह णयणावलोयम्मि जाव जायन्ति ण य पुरओ ॥ १३१ ॥

विसयापासणिवद्धाण रायवाहोवहम्ममाणानं । जीवाण कुरंगाणं व णवर मोक्खो तुमार्हितो ॥ १३२ ॥

तुम्ह वयणामयरसं ण य जे सवणंजलीहिं घोटन्ति । ते विसयपिवासायाससोसिया णासिहिंति फुडं ॥ १३३ ॥

अण्णाणतिमिरणिइल्लण ! विमलकेवलकउज्जालोयं । मज्झ कुमुपायरस्स व कुणमु विवोहं जणाणंद ! ॥ १३४ ॥

णिज्जियरायस्स वि खवियविग्गहुब्भडपयावपसरिउं । तुह सासणं पयट्टउ कयकेवलविक्रमग्गवियं ॥ १३५ ॥

इय महियलसंचारिमकमलोयरसंचरन्तमुहयाण । तुम्ह चलणाण णमिमो पुणो पुणो वीर जिणयंद ! ॥ १३६ ॥ त्ति ।

एवं च मुरिंद-चंद-गह-इंदाईं(?) [पूइयं] वंदिऊण जिणयंदं विविहमणिविचित्तम्मि सीहासणे पहरिसुप्फुल्लोयणसह-
स्सपलोइयसमासीणमुरभडसमूहो य मुरवई भणिउं पयत्तो—भो सोहम्ममुरलोयणिवासिणो मुरभडा ! पेच्छइ भुवणगुरुणो
धीरयाइसयं जेण गरुयाभिग्गहविंसेसपडिवण्णपडिमाविसेसं समुरा-उमुर-जक्ख-रक्खस-भुयग-भूयसंव(घा) वि मणयं पि
ज्ञाणाओ चालिउं ण समत्था । अवि य—

अवि रेइयणिज्जरणियरसरियसोमुब्भडं पि पायालं । संठाविज्जइ उवरिं भुययफणामणिकरारुणियं ॥ १३७ ॥

अवि उच्छलि(?) छि)यजलणिहिवलयदलंतुद्धसेलसंभारं । णहमंडलं [—] अहो मुचन्तपडन्तगहयक्कं ॥ १३८ ॥

चालिजइ [.....] विमलकंदरुइलियसिहरसंघाओ । अवियं(धं)ससंभवु(?) मु)त्तयतियसमिहुणो मुरगिरी वि ॥ १३९ ॥

ण य चालिज्जंति अणुं पि तुलियतेलोकधीरमाइप्पा । ज्ञाणाओ जिणवरिंदा मुरा-उमुरिंदेहिं वि जयम्मि ॥ १४० ॥

तओ तं मुराहिब[मुह]विणिग्गयं वीरजिणयंदधीरयामाहप्पगुणगणुकित्तणं णिसामेऊण परिकुविओ अमरिसुल्लसन्तसं-
जणियभिउडिभामुरो पुरंदरसमाणविहववित्थरो मिच्छत्ततमोहावरियविवेयपसरो संगमओ णाम मुरवरो, भणिउं च पय-
त्तो—सामि ! मुराहिबइ ! कीस एवं विविहवाहिवेयणाकिलन्तजरज्जरत्तणोवहासिरस्साकालमरणपरिभवुब्भट्टपण्णदुक्खव-
हुलस्स विच्छद्वियकमागयखत्तियधम्मस्स विरुद्धधम्मायरणनिरयस्स पल्लुसत्तस्स माणुसमेत्तस्स कए सइ समारुडजोव्व-

णमृणग्धवियपरकमं मुराणुहावमवमण्ह, अण्णं किं च ण मुणियं मुराहिवेण जहा—

णिच्चडियगुणा वि मुराण एन्ति मणुया ण चेव समसीसं । सरिसत्तणं ण पावेति कायमणिणो महमणीणं ॥ १४१ ॥
ता अच्छउ तावेसो णमुणियपरमत्थसाहणणिमित्तो । चायमुज्झंतमणसो पमुकवीरिओ खत्तियणराहिवो (?) ॥ १४२ ॥

पेच्छ—

गुरुखयकालाणलविम्भमुल्लसन्तो रुदिद्विवाएहिं । जे णिड्डहन्ति रोसेण तक्खणं सयलजियलोवं ॥ १४३ ॥
आमूलुम्मूलणणिच्चडन्तदीसन्तगहिरपायालं । सहसा कुणंति जे करयलुक्खयं मुरवरगिरिं पि ॥ १४४ ॥
ते वि महामुणिणो णियतवाहितियसप्पहावपसरेण । वो(वा)हिज्जंति मुराहिव ! का गणणा भणमु एएण ? ॥ १४५ ॥
ता अज्जं चिय दीसउ विच्छडियगहियकवडमुणिवेसं । णियरज्जहुत्तपरियत्तमाणसं संठविज्जन्तं ॥ १४६ ॥

एवं चाणवेक्खियणिययसामत्थयाप्पलहुअं भरि(णि)ऊण णीहरिओ महत्थाइयामंडवाओ, जयगुरुसंजणियाहिवखेवु-
पण्णपावपसरपण्डसोहासमुदओ राहुमुइग्गहोवहयविम्भो ससि व्व दीसितुं पयत्तो । ओइण्णो सम्मावमहीओ । पयट्ठो
वट्ठमाणं जयो । खयकालाणिलसमुम्भडगइविसेसो य पत्तो तिहुयणगुरुसमीवं । कहं चिय ?—

वेयाणिलविसमुब्बेल्लविहडिउम्भडयडन्तघणवडलं । सभओसरन्तमुरवहुविमाणसंजणियसंखोहं ॥ १४७ ॥
वियडोरत्थलसंलग्गारुद्धपुंजइयविमलगहयक्खं(क्कं) । विप्फुरियविमलमणिमउडकिरणपडिवद्धमुरचावं ॥ १४८ ॥
गइवेयुच्छलियमुहारकिरणपसरन्तधवलियदियन्तं । आयडुडंतो व्व विमग्गलग्गघणमंडलं गयणं ॥ १४९ ॥
पेच्छइ य वीरणाहं ससिकिरणपसाहियम्मि महिवट्ठे । संकंतच्छायं मंदि(द)रं व दुद्धोवहिजलम्मि ॥ १५० ॥
तओ तं णिकारणेक्कलुबंधवं जयजंतुसंताणस्स वीरणाहं पलोयन्तस्स य से मुट्ठुयरं पवडिडओ मच्छरो । अहवा—
पसरयइ चिय खलाण परोवयारेक्ककरणरसियम्मि । अवलोइयम्मि सुयणम्मि अमरिसो पयइदोसेण ॥ १५१ ॥

तओ दंसणवसविसट्ठन्तमच्छरेणं च तेण उप्पाइओ पलयपवियम्मिउप्पायसच्छहो पवणपम्भारो, खयकालाणलसंबद्ध-
धूमवडलम्भहियभीसणो णिहितो धूलिणिवहो, सयलजलयगहिरगज्जिरुम्भुक्कथोरभाराणिवायदुसहा पसरिया अयालवुद्धी,
णीसेसजंतुपडिरुद्धलोयणवियासप्पहापयरिसा [? पसरिया] तिमिरपत्थारी, दूरंतरियससि-गहगण-णक्खत्तणिवहं जायं गय-
णंगणं, तं च तारिसं पि अयालघणदुहिणं सरयसमएणं व पेळियं भयवओ पडिथिरज्झाणेण । तओ कओ णेण पसरन्तगइ-
वेयचलचलणदोणिवारो पिवीलियाणिवहो, लद्धावयासो खलयणो व्व दूरयरमारुद्धो, संजणियतिव्ववियणाविसेसो य
अहिद्वितुं पयत्तो । णवरि य पसण्णभावं जयगुरुं णियच्छिऊण 'णेय पिवीलियाहिं पि काउं तीरइ' चि कलिऊण कयाइं
तियसेण कुलिसकटिणतुंडग्गभायाइं पयंगवंद्राइं, संजणियतिव्ववियणाविसेसेहिं च तेहिं पि समयं चेयाहिल(ड)संतेहिं
[ण] परियालिओ जयगुरु । तओ ते पणइणो व्व जहिच्छासयंगहसंपत्तसयलमुहपरिभोया विणियत्तियसयलिच्छा
समोसरिया । ते वि समोसरिए पयंगे दट्ठणं चित्ठुव्विया णेण फुरमाणपिगलच्चुग्गभंगुत्तुंगणंगूलतिकखम्माविसट्ठपसरहुद्धरा
विच्चुयपमुहा । तेहिं च पलयउप्पायफुलिगविम्भमेहिं थोरणंगूलकंटयाघायभिज्जन्तस्स वि भयवओ जाहे ण भिज्जइ मणो
[ताहे] पुणो पसरन्तमच्छरेणं च तेणं किं कयं ?—

अह रुसियामरचलणाहिघायजजरियमहियलाहेन्तो । सहसा रुहिरुग्घाउ व्व पसरिओ फणिमणिकरोहो ॥ १५२ ॥
तो णेति तक्खणे चिय फणिणो फणिमणिवहुम्भडुज्जोया । परिदेविरीए उद्धंभुय व्व धरणीए उक्खित्ता ॥ १५३ ॥
ता जलएहिं व विसणिम्भरेहिं भोएहिं भुययसंघाण । पसरंतेहिं जयगुरु संछण्णो कणयसेलो व्व ॥ १५४ ॥
जयगुरुणो भुययफणुल्लसन्तफुकारफारपवणेण । ज्ञाणाणलो समहियं पज्जलिओ कम्मगहणम्मि ॥ १५५ ॥
इय विसहरतक्खणगुरुविमुक्कमुक्कारविसलवजलोल्लो । जयणाहो धरणिधरो व्व पाविओ सामलच्छायं ॥ १५६ ॥

जाहे विसहरवलण कलुसिज्जमाणस्स वि भयवओ वणयं पि ण कलुसिज्ज मणो जाहे कयं णेण सयलजलजलहरु-
णमन्तमहम्मकूडविम्भमं चलकणताल[ण]विक्खेवविसमविक्खित्तमसलवलयं चलणभरपेण(णो)णमन्तदलियवसुहावलयं
अविरलगंडयलगलन्तमयजलावद्धदुहिणं वित्थरियं(य)थोरथिरसोंडणीहरन्तसीयरासारं ददभिन्नदन्तमुसलावलग्गमडभीस-
णकलेवरं गइवेयाणिलपलहत्थवियडवडपायवुग्गमडं गइंदरुवं । पत्तो य तह परिणओ करिंदो रोसेगायंविच्छिवत्तणओ
कौडलियसोंडग्गमाओ । कहं ति ?—

अल्लियइ पडिगयं पिव अहियं गुणदाणपरिमलुप्पित्थो । दीहरकरग्गमायं वीरं निम्महियत्तमपंकं ॥ १५७ ॥

परियट्ठइ रोसवमुल्लसन्तपरिदीहरंगुलीएण । खयकालासणिपडणाइरित्तकटिणेण हत्थेण ॥ १५८ ॥

तुलियपरिवियडगिरिकडयकटिणसारम्मि वीरवच्छयले । रहसेण परिणओ वज्जकटिणदंतग्गसंघयणो ॥ १५९ ॥

अत्थमियं थामे चिय [.....] जह से दददन्तमुसलजुयं ॥ १६० ॥

तओ पमुक्ककिंदरुवेणं च तेणं कयं पसरियामरिसवसरसियप्फुरन्तपडिसइकंदरं समुग्गमडयडन्तभिउडिभीसणमुहकुहर-
संजणियणिम्भरभयं पज्जलियजलगजालाकविलच्छिच्छडाविच्छोहपयरं दुइंसणवयणकंदरुग्गउव्विडिमदददीहदाद(हं)सदद-
ल्लरुवं । ओवइओ य मुरकिंदकुंमुग्गमडणए भयवओ बाहुसिहरम्मि । अवि य—

तिक्खणहणंगलुल्लिहणवद्धलक्खो परित्थिरपउट्ठो । लमो तिहुयणणाहस्स उण्णए ददभुयासिहरे ॥ १६१ ॥

परिवियडवयणकंदरकवलियभुयसिहरलग्गमचलगग्गो । धुणइ धुणंतो गुरुणो समज्जियं कम्मसंदोहं ॥ १६२ ॥

णभणंतीए वि थेवं पि तक्खणं अकयरोसपसराए । ओसारिउ व्व दूरं खमाए वग्गो भुवणगुरुणो ॥ १६३ ॥

इय द्रोसारियकुवियवग्गरुवेण तक्खणो(णा) चेव । संगमयमुरेण वियम्भमाणगरुयाहिमाणेण ॥ १६४ ॥

कयं च णेण अच्चुष्णमंतघणकसणदेहपग्गभारभरियभूमंडलुग्गमडवयणकंदरललंतजीहालो(लं) ददजलयणिवहं च णिसा-
यररुवं । केरिसं च ?—

गुरुजलयकालपसरन्तकसणरयणीतमोहसच्छायं । चम्म-उट्ठिमेत्तपरिसण्णदीहणहरुग्गमडावयवं ॥ १६५ ॥

जलियच्छिसिहिसिहावलयदूरविच्छूदतारयाणियरं । उव्विडिमदसणविप्फुरियचंदिमाधवलियदियंतं ॥ १६६ ॥

ददगादपरियरावद्धकुइयभुययंदमुक्कफुकारं । वच्छच्छलरंखोलंतसरसकयसहियणरसिरोमालं ॥ १६७ ॥

मुहकंदरमुक्कट्टहासहुयवहविणिग्गयफुलिगं । तरलतडिदंडसच्छहकरकलिउल्लालियतिसुलं ॥ १६८ ॥

तकालुकत्तियकरिवराणा धरण(णि)खित्तहिरकणं । पायक्खेयायंपियधरणियलपडन्तगिरिसिहरं ॥ १६९ ॥

भूय[इ]दपासबंधणगण्ठिणिवद्धुद्धकविलकेसोहं । भीसणणयणंतविणितदीहरुक्कासरिसदिट्ठिं ॥ १७० ॥

इय भीसणयरमल्लुंकिमुक्के(फे)काररावसंवलयं । तिहुयणभयजणणणिसायरेंदरुवं मुरेण कयं ॥ १७१ ॥

तओ तिमिरसंघाउ व्व णिसियरो(रं) जिणयंदमुइविउमादत्तो । अणेयप्पयारं तहा णेण खलीकओ जयगुरू जहा से
वियलिओ वलाहिमाणो ।

एत्थावसरम्मि य विमुक्कणिसायररुवेण सयलसुरा-उमुरेंददुव्वारवेयपसरो गुरुवेयवमुद्धूयमहिमंडलुच्छलियरयवड-
लोच्छाइयणहंगणो आमूल्लुम्मूलियपडन्तगयतुंगतरुसंडसंकुलो अविरलणिवद्धावडन्तघणतिक्खसकरावरिसजणियवियणो
सरहसोरुद्धरणधरसंपाडियकंपावियधरामंडलो पमुक्को पयंडकोयंडमारुओ । तेणं च पुंजइज्जतरयवडलपरिग्गमंतवाओ-
लिणिवहेण किं कयं ? अवि य—

अत्तिसमुच्छलियपउरमहि(ही)रउद्धूयवायवलण । महिमंडलं समन्तो[न्ता] संवेल्लिज्जइ व तव्वेलं ॥ १७२ ॥

वेउव्वूदा णिवडंति तक्खणं दूसहोवलणिहाया । जयणाहोवरि खरतिक्खकोरधारा णहार्हितो ॥ १७३ ॥

फरुसकयसकरासारचरिससंजणियतिव्वव(१ वि)यणिहं । दिसिदिसिणिबद्धपज्जलियजलणजालासउप्पायं ॥ १७४ ॥
इय भामंतेण समत्तसयलवणकाणणं धरारेणुं । ण उणो भामिज्जइ भमिरवायचकेण मुणिहिययं ॥ १७५ ॥

एत्थावसरम्मि य जिणतणुसंभेडपडिप्फलणपडिभम्मावायचकपसरेण जयगुरुगरुयाभिग्गहमंगोवसग्गारंभणिप्फलत्तण-
सम्मोहसंभमुब्भयमाणेण णिहणणकयववसायसाहसेकरसिण्ण परमपयरिसुप्पणकुमइसंभमएण संगमएण विणिम्मियं
विप्फुरियविज्जुलावलपलित्तसमुणयंबुहरसिहरविब्भमं सुरगिरिचरसारगरुववीरियं कालायसभारसहसुब्भडं अयालचकं ।
किं च कयं ?—

तो तं पज्जलिउज्जलजलणसिहावलपदसहालोयं । महिमंडल व्व वेत्तुं पलयपलित्तं समुप्पइओ ॥ १७६ ॥
उवरिद्विण जयगुरुकयवववसायसाहसमणेण । खित्तं णिहित्तपसरियफुल्लिगवित्त्यसुर-सिद्धं ॥ १७७ ॥
णवरि य पडइ पडंतुद्धउकसंजणियभुवणभयसकं । उप्पाउप्पाइयमज्झयारयं भाणुविम्बं व ॥ १७८ ॥
इय तं सहसुद्धाइयपज्जलियसिहाकलावसवल्लिहं । दीसइ णिवडन्तं सभवणद्व-विज्जाहरणरेहिं ॥ १७९ ॥
तओ य कज्जलुज्जलं, समुल्लसंतविज्जुलं । रसंतरुन्दसइयं, खए व्व मेहवंदयं ॥ १८० ॥
पलोइउं भयाउरा, समंतओ सुरा-उसुरा । विमुक्कवोममग्गया, दिसामुहाइं संगया ॥ १८१ ॥
णहम्मि तप्पहावओ, पयड्ढमाणतेयओ । पणट्ठरं(चं)दिमाउलं, ण भाइ चंदमंडलं ॥ १८२ ॥
पणट्ठतारयागणं, पदीव(वि)यं णहंगणं । पयंपिया धराहरा, पयट्ठिया वमुंघर ॥ १८३ ॥ त्ति ।
पडियं च घडियघ[य]णवियणिप्पयंपुद्धुमायसिहिजालं । तह जयगुरुणो सहसा सुहुत्तिमंगप्पएसम्मि ॥ १८४ ॥
जह सुत्तो चिक्खल्ले व्व कट्ठिणमहिमंडलम्मि जयणाहो । आजाणुमंडलावहि णमुक्कसुद्धाणवावारो ॥ १८५ ॥
तो णजणियजयगुरुल्लानमग्गमंगेण तेण चक्केण । अकयत्थपडिप्फलिण्ण दूमिओ अह सुरो चेव ॥ १८६ ॥
इय एवमाइएसु वि बहुपडिक्कूलोवसग्गनिवहेसु । जाहे जयगुरुणो ण मणयं पि परियत्तियं चित्तं ॥ १८७ ॥

ताहे चित्तिउं पयत्तो—पेच्छ से सत्ताइरित्तत्तणं, ता पेच्छामि णं अणुकूलायरणेण से सामत्थं जेण महापुरिसा वि
दीसन्ति परव्वसीकया विसयाहिलासेण, पक्खित्ता महिलाविलासेहिं पम्हुसन्ति अत्ताणयं । एवं चाणेयप्पयारं मुहुत्तं तर-
मेकं किं पि कलिउण णिययहियएण समुप्पाइओ समुत्तिभण्णमायंदमंजरीजालमंजालमंदमयरंदपिंजरालिदलमुहलियवणंत-
रालो सुविसट्ठपाडलाकुसुमपडलच्छाडयधरामंडलो कोरइयकुसु[व]यकुसुमामोयवेलविज्जमाणमुद्धफुल्लंधुओ कोइलकुलकला-
वकुइयवियत्थाहित्थपंधियजणो कोमलमलयमारुयंदोलिज्जमाणतरुलयावलयो माणिणिजणमणतक्खणविसंवाइसाणुवंधओ
अयिराविणिग्गयपियजणदंसणुओ य वसन्तसमओ । अवि य—

सहसा णंदणलच्छीए जणियमहुमाससंगमूससियं । हिययं व असोयं होइ णिवडियपडिवद्धराइल्लं ॥ १८८ ॥
परहुयववएसेणं व कहइ विसउल्लसंतपरिरावो । महुमासो जियतियसोवस[ग्गभ]ग्गं महाधी(वी)रं ॥ १८९ ॥
पडिलग्गमलयमारुयपवेविरी पल्लवग्गहत्थेहिं । विच्छुद्धइ व भमरं अणवणलया परिमलग्गवियं ॥ १९० ॥
दइएणं पिव चट्टयारएण महुणा पस्ययरयधवलं । तिलएहिं अलंकिज्जइ वयणं महुमासलच्छीए ॥ १९१ ॥
णियगंधसिर्णि पल्लवणवरंगयसंगया छणदिणम्मि । भायइ पहेणयं पिव वसंतलच्छी दिसिवहूण ॥ १९२ ॥
वासभवणं व महुपिययमस्स धवलइ लयाहरावलयं । छणदियहे कुरयं-उंकोल्लकुसुमधूलीए वणलच्छी ॥ १९३ ॥
सुमणमइयाए मयणेण मालिया [य]वइया महुयरान । वणलच्छीए जीवं व उवह माइंदलइयाए ॥ १९४ ॥
इय भुवणुम्मायणदिण्णमयणसण्णेज्जकुसुमरय(म)णीयो । तियसेण तक्खणं चिय विउव्विओ पवरमहुमासो ॥ १९५ ॥
एवं च अणवरयभसलउल्लचलपक्खविकखेवुक्खित्तपंकयपरायपिंजरियदिसामुहे सुरहिसमयम्मि पेसियाओ य तेण

विविहरसकरणकलतारमंदसंगीयवियक्खणाओ णट्टकुसलाओ परिकलियकलवल्लईवंसव(म)णहराउज्जसंजुयग्गाहत्थाओ मणह-
रवेसा-उलंकारसललियंगीओ तियसविलासिणीओ, समागयाओ य जिणपायमूलं, साहिलासं च पलोइउं पयत्ताओ ।
कहं ?—

सुरविलयाणं तक्खणविलासगुणघडणणिग्गाया सहसा । जयगुरुणो कुमुमसरं व्व पेसिया दिट्ठिविच्छोदा ॥१९६॥
कीए वि कुमुमसंसत्तभमरमुहलोलसन्तधम्मेल्लो । कुणइ व्व भुवणगुरुणो संगममुहपत्थणावणइ ॥ १९७ ॥
वेल्लुहलकरयलंगुलिकलणारंजणियणीविविण्णासं ! संजमइ ल्हसंतुवेल्लुपल्लवं का वि हु कडिल्लं ॥ १९८ ॥
रमणपुल्लिणम्मि णिवडइ का(की)य वि भीया पओहराणं व । इंसावलि व्व णिम्मलरणंतकलरयणमेहलिया ॥१९९॥
वेल्लुहलकरयलोयरणिवेसियं ललियभुवलयणाणं । लीलाकमलं पिव वडइ का वि महुगंधरिद्धिल्लं ॥ २०० ॥
पत्थेइ कण्णमूलावल्लगणीलुप्पलावयंसेण । णिययकडक्खेण व मणहरेण रइकीलियव्वाइ ॥ २०१ ॥
कोमलमुणालवेल्लुहलविब्भमिल्लहिं वाहुलइयाहिं । महइ अवयासिउं रसवमुच्चरोमंचमुहयाहिं ॥ २०२ ॥
ल्हसियंसुयसंजमणेण काइ पडिवक्खमच्छरेणं व । पडिमावडियं सिहिणत्थलम्मि पिहइ व्व जयणाइ ॥ २०३ ॥
इय सयलजला(णा)हिगमुल्लसन्तसविसेसरुवसोहग्गो । सुरकामिणीयणो होइ भुवणगुरुलंभलोहिल्लो ॥ २०४ ॥

एवं च तियसंगणायणो भूमंगविलासोल्लसंतलोयणाहिरामो कवल्लमूलावल्लगलंवालउल्लसियकोन्तलकलावो वद्ध-
सिद्धिलियंसणो कसणरोमावलीकलियत्तिवलीतरंगमज्झो वियडणियम्भुव्वहणकिलन्तवेविरोरुजुयलो अच्चुण्णयपेढाल-
सिद्धिमंडलो जयगुरुदंसणजणियाउउव्वविम्हओ पुरओ लिहिउ व्व परिसंठिओ, ससज्झसवेविरावयवो य जंषिउं
पयत्तो । कहं ?—

अणहिमओ कीस मणम्मि तुम्ह सुसुरहिविलेवणविलासो ? । ओ ! मुणियं तुह साहीणपरिमले लहइ ण हु सोइ ॥२०५॥
कीस ण रज्जइ हिययं सुविचित्तविहत्तवण्णरुइरेहिं । पयइचलयंपिराएहिं सुहय ! मणलमिरेहिं पि ? ॥ २०६ ॥
दे ! पसिय पणामिज्जउ घडन्तगाढोवगुहियव्वमुहं । अलियकरुणाकिलम्मिर ! किलामियंगाण णियययणे ॥२०७॥
तेल्लोक्कपत्थणिज्जम्मि मणुयदुलहे मणोरहाणं पि । सुररमणिमुहे णो घडइ सुहय ! विवरम्भुहीहोउं ॥ २०८ ॥
कह वा अणुयं ण य कुणेसि रमियव्वपरिचणं पि ? । मयणाउराण णिक्किव ! मुणसि चिय जूरियव्वाइ ॥२०९॥
अच्छउ वा विविहविलास-हास-सम्भावणिव्वमं पेमं । सामणाए वि दिट्ठोए सुहय ! किं णो पलोएसि ? ॥२१०॥
जे तुह मणम्मि मउए वि सायया मयरकेउणो भग्गा । ते चेय मंतुकडिणऽम्ह कह णु भिंदंति सुहय ! मणं ? ॥२११॥
अहवा अणमुहासंगरायरसिए जणम्मि अणुराओ । जं कीरइ तं जायइ अरण्णरुइयस्स सारिच्छं ॥ २१२ ॥
इय जयगुरुणो मयणाउराण सुरसुंदरीण भणियाइ । सिद्धिसुहसंगमूसुयमणस्स चित्तं ण रामन्ति ॥ २१३ ॥

एवं च तारिं ण सुइमुहजणणीयसदेण, ण य महुरवेणु-वीणाविणोएण, ण विविहकरणंगहारकलियणट्ठोवहारेण,
ण य सविब्भमुब्भडवियंभियदिट्ठिविच्छोहेहिं, ण साणुणयसणिउणभणियव्वयविसेसेहिं पक्खुहिओ जयगुरु । एत्थाव-
सरम्मि य पहायप्पाया जामिणी ।

तो(तत्तो) अरुणकरफंसकयवियासा सरोरुहच्छाया । तियसंगणाण हसइ व्व मुहसिर्णि भग्गमाणाण ॥ २१४ ॥
पच्छिमदिसासमल्लीणमंडले ससहरे कुमुडणीए । कज्जलकलसा वियलंति वाहविंदु व्व भमरगणा ॥ २१५ ॥
उव्वेल्ललवंगामोयमासलो कमलपरिमलमुयंथो । अणुलिपइ व्व पच्चूसमारुओ सयलजियलोयं ॥ २१६ ॥
ससिकिरणपहरफुट्टं पडिज्जए पवणविहुयदलणियरं । रविणा सवेयणं पिव करेहिं परिचेविंरं कुमुयं ॥ २१७ ॥
मेलेइ विरहविहुराई चक्कमिहुणाई पियसहि व्व फुटं । संज्ञासरोयरुच्छंगरुइरसयणीववट्ठम्मि ॥ २१८ ॥

उययायलन्तरद्वियतरणिफुरंतुदपउरकरणियरो । णहमंडलस्स णुमइ विवरसमूहं च गहयकं ॥ २१९ ॥

ता सिंदूरियमणिदप्पणे व्व दिट्ठो तिलोयलच्छीए । अप्पाणो समुहपरिद्वियम्मि सहसा दिणयरम्मि ॥ २२० ॥

इय रवियरपरिमज्जियसयलदियम्बरधरायलद्वन्ते । जाए विसट्टतामरसपरिमलिल्लम्मि जियलोए ॥ २२१ ॥

तओ एवं च तरणिकिरणपरिमासवोसट्टसररुहामोयसंजणियहरिसकलहंसकलयलारावमणहरे पच्चूससमयम्मि अमरमायासंजणियपच्चूससंकाविड्ढोवओओ भयवं वट्ठमाणसामी ओहिण्णाणेण विद्याणियगोससमओ णिव्वाहियगरुयाभिग्गहणिव्वडियपडिमाविसेसो पयट्ठो पोलासजिण(? ण)हराओ । तिक्वाहिणिवेसवित्थरंतामरिसेणं च अमराहमेणाणुसंभिज्जमाणमग्गाणुमग्गो पत्तो ए(व)यगामाहिहाणं सण्णिवेसं । अलदपसरेणं च पउत्तोहिणा मुणिऊण भयवओ णिप्पयंपत्तणं समावज्जियपावपडलुव्वहणपवड्ढमाणपरिस्समो णिव्विण्णो उवसग्गकरणाओ । णिप्फलपइण्णं च जूरिऊण अत्ताणयं पडिभग्गमच्छरप्पसरो चित्तियमेत्तविमागरयणं समारूढो । पडिहयदिक्वाणुहावं च तं पलोइयं । केरिसं च ?—

अमरविलासिणिजणिओवयारपव्वायविविहमणिकुमुमं । धूमसिहाकलुसालंबमाणमोत्ताहलोऊलं ॥ २२२ ॥

जलवाविकमलमउलायमाणभसलउलवलयरुइरं व । पडिबद्धधूमघणवडलमलिणमणिमंगलपदीवं ॥ २२३ ॥

घरदीहियमउलायन्तकणयकमलायरोयरट्टंतं । उव्वत्तचित्तमित्थिलुच्छलंतारुणच्छायं ॥ २२४ ॥

इय तं वियलियदिक्वाणुहावसोहं पि पेच्छिउं तियसो । उप्पइओ पसउप्पइयपावपुंजो व्व पचक्खो ॥ २२५ ॥

गंतुं च पयत्तो वेयवससमोसारियगहगणो णहंगणम्मि । भग्गपइण्णोऽणुसयविच्छायमुहमंडलो य संपत्तो तियसालयं । पयट्ठो सुराहिक्त्थाणिमंडवाभिमुहं गंतुं । पलोइओ समुहमइंतो रोसारुणिज्जंतणयणुल्लसन्तरायरंजियसहामंडवेण आहित्यपलोइयामरणियरमज्झट्टिण सुराहिवेण । कह ?—

अचयंतेण पुलइउं बहुपावसमूहसंठियाऽऽवसहिं । अणमिसउव्वाया णिमिसियाइं हरिणा णियच्छीणि ॥ २२६ ॥

सहसा वियम्मिउव्वमडघडन्तभूभंगमिउडिभालयलो । जाओ सुराहिवो पलयजलियजलणो व्व दुप्पेच्छो ॥ २२७ ॥

तउ तक्खणमेत्तुट्ठन्तजलणजालासमुज्जलं वज्जं । अमरिसवस्ससंतोरुदलियकडयं करम्मि ठियं ॥ २२८ ॥

णवरि य गरुयक्खेवुल्लसन्तरयणासणाहिचलिण । उप्पयणमणुव्वमडचलणदलियमणिपायवीडेण ॥ २२९ ॥

मुणिऊण 'सायरोवमसेसाउटिइ' ति णिययचित्तेण । विणियत्तामरणिहणविमणद्वियवज्जदेवेण ॥ २३० ॥

तह तियसपत्थिवेणं समाहयं गुरुणिबद्धरोसेणं । संगमयविमाणं णिययवामचलणप्पहारेणं ॥ २३१ ॥

जह पडियं पडणाहित्तियसमुंदरिसिलिद्धमणिखंभं । णिहलियविमलमणिवेइयाउलं सासयथिरं पि ॥ २३२ ॥

तओ—

वियलियददपीदसंठाणभज्जंतखंभुव्वमडालग्गदेवंगवित्थारि-

उल्लोयहल्लन्तमुत्ताहलोऊलपज्जन्तमाणिक्कगोच्छुच्छलन्तालिमालाउलं,

विउडियरयणमालादंडचंडोरुसंसदफुट्तंभिणिदणीलत्थलालग्ग-

दारुदसाहाविसट्टन्तलिप्पन्तसेज्जाअणाउज्जभज्जंतणिज्जूहयं ।

गुरुयमणिभित्तिपव्वमारसंभेडभिज्जंतविक्खित्तसोवाणपंती-

समायडिदयालिंदयावद्धयंटाटणकारयं किंकिणीमालमुव्वन्तशंकारयं,

विहडियमणिमेहलावद्धसंवद्धसच्छंडंमुट्ठु(? घ)ट्तपल्लत्थदीसन्त-

थोरत्थणावेदपाणिप्पहाराउरक्कंदभीयच्छरादीसमाणं विमाणं धुयं ॥ २३३ ॥ ति ।

पडियं च पडणवेयाणिलुच्छलंतुद्विचिधयमालं । धुयकणयरेणुकविले जलणे व्व सुमेरुसिहरम्मि ॥ २३४ ॥

दारट्टिएहिं वियलन्तसलिलभरचारयणुयमुहेहिं । मंगलकलसेहिं अहोमुहेहिं सोइज्जमाणं व ॥ २३५ ॥

रुइरं व कणयकिंकिणिकलावसंसहभरियणहविवरं । णियठाणम्भंसुप्पण्णदुसहगुरुदुक्खसंदोहं ॥ २३६ ॥

इय तियसभवे चिय तस्स एरिसं माणमलणमइदुसहं । जायं जयगुरुणो जणियदुसहगरुओवसग्गफलं ॥ २३७ ॥

इति महापुरिसचरिए बद्धमाणसामिणो संगमयामरजणिओवसग्गाहियारो समत्तो [१०] ॥

✽

भयवया वि तप्पसाओ पत्थिएण णिच्छि(त्थि)ण्णसंगमयामरमहोवसग्गेण एवंविहो अभिग्गहो पडिवणो जहा-
जति परं णियलाबद्धचलणजुवला अवणियउत्तिमंगसिरोरुहा मण्णुभरावद्धग्गमयं रुयमाणा रायकण्णया वि होइऊण पेस-
त्तणमुवगया घरम्भन्तरणिहितेकचलणा वीयचलणकन्तवहियरदुवारा सुप्पेक्कोणेण कुम्मासे पणामेइ ता परं पारेमि ति ।
एवं च जणेण अणोवलक्खिज्जमाणाभिग्गहविसेसो गामाणुगामं विहरमाणो संपत्तो उत्तुंगगोउरुस्सेहचुंवियंवरं कोसंबिण-
यरिं ति । तहिं च पविट्ठस्स जहुचवेलाए चरियाणिमिच्चं जाहे दिज्जमाणं अणेयप्पयारं पयप्पियं ण पडिच्छइ जयगुरु
ताहे अबन्ताउलीकयमाणसो चित्तिउं पयत्तो [लोओ] । कहं ?—

एस अपुण्णो सन्वो वि जणवओ जेण जयगुरु पेच्छ । णाणुग्गहेइ ववएसवि[वि]हदिण्ण[ऽण्ण]-पाणेहिं ॥ २३८ ॥

जस्स जइणो ण गेण्हंति कह वि जंते(जत्ते)ण जोइयं दाणं । सो किं गिही ?, मुहा होइ तस्स घरवासवासंगो ॥ २३९ ॥

जह जह य ण गेण्हइ बहुविहप्पयारं पणामियं पुरओ । तह तह किलम्मइ जणो जयगुरुचित्तालसविओलो ॥ २४० ॥

इय णिंदियणियविहवोवहोयसंपत्तिविहलजियलोओ । अकयत्थं पिव मण्णइ सयलं धण-परियणसमिद्धिं ॥ २४१ ॥

एवं च कहंचि असंपज्जज्झा(मा)णभोयणविही वि अमिलायन्तलायण्णदेहच्छवी अण्णेसमाणो जहासमीहियं पिण्डमुद्धि
संठिओ तीए चेव पुरवती(री)ए कइवयवासरे ।

इओ य तेण राइणा सयाणिएण पुर्वि वेरकारणा चंपाहिर्वइ दहिवाहणो णाम राया अवक्खंदं दाऊण विणिवा-
इओ आसि । लुडाविया पुरी, भणियं च-जो जं अण्णिसंतो पावइ तं तस्स च्चेय । तओ एककेण कुलउत्तएण दहिवाहण-
स्स पणइणी धारिणी णाम वसुम्मईणामा य दुहिया समणिया पलायमाणा उवलद्धा, गहिया य । पयट्ठो सह
साहणेणं पडिवहहुत्तं । अद्धवे चेव गच्छमाणस्स सोयाइरेएण विवण्णा धारिणी । सा य बालिया वसुमती कोसंबि
आणेऊण विकीया धणसेट्ठिणो हत्थे । तेणावि 'मह एसो धूय' ति भणिऊण समणिया णियभज्जाए मूलाहिहाणाए ।
गच्छंति दियहा । गच्छंतेसु दिनेसु वियम्भिओ वसुम्मईए जोव्वणारम्भो, समुम्मिल्लो लायणपयरिसो । चंदणसारिच्छ-
सिसिरचंदसहावत्तणओ य तीए चंदणा चेव णामं कयं ।

अण्णया य सो धणसेट्ठी गिम्हायवकिल्हन्तगत्तो आगओ णिययमंदिरं । आगएणं च अपेच्छमाणेण णियवरिणी
भणिया चंदणा जहा-पुत्त ! मह चलणे पक्खालमु ति । तीए वि सविणयं दाऊणासणं चलणसोयं काउमादत्तं । तओ
णीसहत्तणओ कुमारभावस्स, वियलत्तणओ अवयवारं सिद्विलीहोऊण णिवडिओ कोन्तलकलावो । दरणिवडिओ धरिओ
धणसेट्ठिणा लीलालट्ठीए । एत्थावसरम्मि घन्तरपरिसंठियाए दिट्ठो मूलाए लीलालट्ठीए विहारिज्जमाणो केसपासो । तं
च पलोएऊण धीसहावत्तणओ मुलहयाए ईसाभम्मस्स, अमुद्धसहावयाए चित्तस्स, रुव-लायण्णक्कु(क)डयाए वसुम्मईए,
चलिओ हिययभावो सेट्ठिणीए । चित्तिउं पयत्ता, कहं ?—

अह ईसावसपसरन्तदुसहामरिसगयविवेयाए । महिलासहावओ सुलहविविहसंकप्पमूलाए ॥ २४२ ॥

‘एसा इमस्स भूया, एसो वि इमीए होइ जणउ’ ति । पडिक्कणं पम्हुसिऊण संगमं ताण तकन्ती ॥ २४३ ॥

ववहरइ अण्ण[ह] चिय सुद्धसहावो जयम्मि साहुजणो । मण्णइ तमण्णह चिय दुट्ठसभावो खलयणो ति ॥ २४४ ॥

इय णिययदुट्ठिमाए सरलं पि जणं तमण्णहा कलिउं । मूला मूलमणत्थाण चंदणोवरि तओ जाया ॥ २४५ ॥

तओ विगए सेट्ठिम्मि ईसावसुप्पणमच्छराए सेट्ठिभज्जाए वाहरिऊण ष्ठावियं मुंडावियमुत्तिमंगं चंदणाए । वंधे-
ऊण णियलेहिं पक्खित्ता उवरम्मि । भणिओ य परियणो-जो सेट्ठिणो इमं साहिस्सइ तस्स वि एस चेव दण्डो ति ।
ण य तीए भयाओ पुच्छमाणस्स वि सेट्ठिणो को पि कहेइ । अण्णम्मि दिणे णिवंधेण पुच्छमाणस्स ‘किं मह मूला
करिस्सइ ?’ ति सिट्ठमेकाए बुद्धदासीए सेट्ठिणो परमत्थं । तओ समाउलचिचेण उग्घाडिऊण णीणिया तयन्तियाओ ।
दिट्ठा य सिरोवणीयचिहुरपव्वभारा । लुहाकिलामियं च तं पलोएऊण वाहोल्लोयणेण अण्णेसन्तेण उ(ठ)इयदुवारत्तणओ
न किंचि समासाइयं विसिद्धमसणं, परं कम्मयरभोयणमुत्तिण्णा पलोइया कुम्मासथाली । तओ य थालीओ धेत्तूण सुप्प-
म्मि कुम्मासे समोप्पिया चंदणाए । भणिया य-पुत्ति ! जावाहं तुह णियलभंजणणिमित्तं लोहारं धेत्तूण समागच्छामि
ताव भुंजसु । ति अणिऊण गत्तो सेट्ठी । तओ सुप्पत्ताए दट्ठण कुम्मासे सोइउं पयत्ता अत्तणो अवत्थंतरं वसुमई ।
कह ?—

जइ देव ! सयलजियलोयतिलयभूए कुले कओ जम्मो । ता कीस अयंडपयंडमागयं दुसहदारिइं ? ॥ २४६ ॥

जइ जाया पिइ-माईण णियतणूओ वि वल्लहा अहियं । ता ताण मरणदुक्खाण भायणं कीस णिम्मविया ? ॥ २४७ ॥

जइ णाम विओओ वंधवाण णिकरुण ! तइं कओ देव्व ! । ता किमवरमेयं मज्झ पेसभावत्तणं जायं ? ॥ २४८ ॥

इय णिययावत्थं णिदिऊण मुकुलुग्गयं च सविसेसं । पुणरुत्तणेन्तवाहंभुणिम्भरं रुयइ सा बाला ॥ २४९ ॥

एवं च णिदिऊण अत्तणो जम्मं, सोइऊण णिययावत्थं, लुहाकिलामियकवोलमंडलं वयणं करयलम्मि णिवेसिऊण
पलोइयं कुम्मासाहिमुहं । ते य तारिसे णेहाइगुणवज्जिए मच्छियाकूडसच्छहे कुम्मासे दट्ठण अहिययरमण्णुभररु-
द्धकंठविवरा चित्तिउं पयत्ता-ण य लुहाकिलन्तजंतुणो किंचि ‘ण रोयइ’ ति, ता किमहं विसमागयदसा वि अदाऊण
अइहिणो भुंजिस्सं ? । चित्तिऊण पलोइयं धरदुवारहुत्तं ।

एत्थावसरम्मि समइच्छिए पा[र]णयदिणजहुत्तवेलाए गरुयाभिग्गहत्तणओ कत्थइ असंपज्जन्तजहासमीहियण्णविसेसो
अणाउरत्तणविमुज्जन्तमुहलेसो जहकमं गेहंगणमग्गेण विहरमाणो तीए सुहकम्मोयउ व्व संपत्तो भयवं जयगुरु तग्गेहंगणं ।
दिट्ठो तीए । दट्ठणं च जयगुरुं ‘एयावत्थगयाए वि सफलो मह जम्मो, कयत्था अहं ति जइ एस महाणुभावो कुम्मा-
सग्गहणेण मज्झाणुग्गहं करेइ’ एवं च वाहजलपव्वालियगंडयला वि हरिसवसविसट्ठपुलयपडलमुव्वहंती, दुसहदुक्खाया-
ससोसियतणू वि असमसमासाइयपायसुहसंपया, ददणियलसंदाणियचलणजुयला वि णिदलियदददुक्खबंधणमप्पाणयं
मण्णमाणी, काऊण दुवारवाहिरुहेसम्मि एक्कं चलणं करकलियमुप्पेक्कोणेण पणामिया जयगुरुणो कुम्मासा । भयवया
वि सुविसत्थचित्तेण णिरुविऊण पुव्वा-उवरविमुद्धिं ‘संपण्णो अभिग्गहो’ ति कलिऊण पणामिओ करयलंजली । पक्खिया
कुम्मासा इमीए । एत्थावसरम्मि य णिवडिया णहंगणाओ वियसंतकुमुमबुट्ठी, विमुक्कं गंधोययं मेहमंडलेहिं, पवाइओ
सुसुरहिसमीरणो, वज्जिया देवदुंदुही णहंगणे, विमुक्का मुरवरेहिं रयणबुट्ठी । कहं चिय ?—

सुरवरसइत्थ.....यत्ता । अण्णोणवण्णसोहा विहाइ मुरचावलट्ठि व्व ॥ २५० ॥

परिमलमिलन्तभसलउलवलयपरिलेन्तवद्धसंकारा । मुरतरुपसूयवुट्ठी णिवडइ रयमासलदियंता ॥ २५१ ॥

उच्छलइ ललियकरकमलतालणुवेल्लमंदसदालो । दुंदुभिरवो मुगंभीरवज्जिराउज्जंसवल्लिओ ॥ २५२ ॥

इय ललियभुयुवेष्टियकरमउलंजलिमिलन्तसिरकमलं । सुरजयजयसंरावेण णिवडिया रयणवुद्धि चि ॥ २५३ ॥

एवं च 'अहो ! दाणमहो ! दाणं' ति भणमाणेहिं समंतओ रयणवरिसेण पूरियं धणसेट्ठिणो मंदिरं । समुच्छलिओ जयरीए हलहलारवो-जयगुरुणो पारणयम्मि धणसेट्ठिगेहे वसुधारा णिवडिय चि । एवं च जणपरंपराओ सोऊण सयाणियणरवई समागओ तं चेव सेट्ठिगेहं । दिट्ठं च दिसिदिसिणिहिस्तरयणसंचयं धणसेट्ठिसमञ्जासियं मंदिरं । विम्ह-उप्फुल्लोयणो य भणिउं पयत्तो णरवई जहा-भो महासेट्ठि ! धणो सि तुमं जरस तुञ्ज तिहुयणतिलयभूया भूया समु-प्पण्णा, एईए इहलोए चेव इमं एरिसं भयवओ दाणफलमासाइयं, जेण सुव्वउ—

अहमेत्थ पत्थिवो किर पुरीए, कोटुम्बिओ पुण तुमं ति । इय अंतरे वि गुरुणा तह वि तुमं चिय अणुग्माहिओ ॥ २५४ ॥
ण य विहवो ण य जाई ण पहुत्तं कारणं कुसल्याए । भवणम्मि अत्थिणो जरस एंति सो पुण्णहेउ चि ॥ २५५ ॥
पावेइ पुण्णभाई तइया भुवणम्मि एरिसं पत्तं । जइया महल्लकल्लाणसंभवो जंतुणो होइ ॥ २५६ ॥
इय एव पत्थिवो धुइसमिद्धिसंबद्धविहभणिएहिं । अहिणंदइ जा सव्वायरेण कयगोरवं सेट्ठी ॥ २५७ ॥

ताव य तेण सह— — — — — (समागएण एकेण) महल्लएण दिट्ठा चंदणा । पुणरुत्तवियकापरायणेण पच्च-भिण्णाया । पच्चभिण्णायाणंतरे चचलणेसु णिवडिऊण रोविउं पयत्तो । तओ तं तहारुइरं दट्ठण राइणा भणियं-भो किमेयं ? । तेणावि धाडिप्पभिइसंभूयविम्भमावट्ठियं [साहिऊण भणियं-] सेसं एसा चेय साहिस्सइ चि । तओ राइणा वसुमत्ती पुच्छिया । तीए वि जं जहा वत्तं तं तहा चेव साहियं जाव धणसेट्ठिहत्यावगमणं, धूयापडिवज्जणं च, धूयासिणेहणिम्भरं च जहा पालिया सेट्ठिणा जाव अज्जोदिणं, सपयं पुण तुमए सेट्ठिणा य अणुण्णाया इच्छामि धम्मायरणं काउं, जेण सुव्वउ—

संसारे बहुविहदुहकिलेससयसंकुले असारम्मि । को णाम कयविवेओ रमेज्ज सुहसंगवामूहो ? ॥ २५८ ॥
इह जम्मे चिय दट्ठण तारिसीं मुकुलजम्मसंपत्तिं । जाया पुणो वि एसा परपेसकिलेसिया मुत्ती ॥ २५९ ॥
तं तारिसबहुविच्छइविट्ठिरिल्लइम्ह पुव्वसंभूई । संपइ को गोट्ठीसु वि साहिप्पंतं पि सहइ ? ॥ २६० ॥
इय कलिउं संसारम्मि कम्मुणो वसवियम्भियव्वाइं । को णाम सयण्णो णिमिसयं पि सज्जेज्ज संसारे ? ॥ २६१ ॥

एयं च समायणिऊण राइणा भणियं जहा-पुत्ति ! अज्ज वि बालो वयविसेसो, अलंघो जोव्वणवियारो, दुज्जओ मोहप्पसरो, बलिओ इंदिओवचओ, ता विलसिऊण संसारविलसियव्वाइं, उवभुंजिऊण सयल्लिदियमुहाइं, सुरवरसमासाइयं च धणसमिद्धि उवभुंजिऊण, पच्छा परिणयवयाए जुज्जइ काउं धम्मज्जमो, संपयं पुण—

कत्थ इमं तुह तेल्लोक्कजंतुकयविम्भयं तणुसरुवं ? । कत्तो लायणइलणपच्चलो तवविसेसो ? चि ॥ २६२ ॥
तुह ललियकंतिलायणहारिणो सुंदरस्स रुवस्स । हिमपवणो कमलस्स व विणासभूओ इवेज्ज तवो ॥ २६३ ॥
जं जत्थ जया जुज्जइ काउं तं तह कुणंति बुहसंधा । किं कुणइ दारुकुम्भम्मि कोइ बालो वि हव्ववहं ? ॥ २६४ ॥
इय तह तुह तणुलइयाए रुइरलायणकन्तिसोहाए । होइ तवो कीरन्तो विट्ठंसणकारओ पूणं ॥ २६५ ॥
अण्णं च—

तामरससच्छइं तुह सरीरयं कह सहेज्ज तिच्चतवं ? । तिच्चायवं दुमो च्चेव सहइ णो किसलउब्भेओ ॥ २६६ ॥
तिच्चं तवसंतावं सहेइ वयपरिणया ण बालतणू । आयवदंसणमेत्तेण सुसइ गोवयगयं वारि ॥ २६७ ॥
काउं तवो हु तीरइ ककसवयवेण जंतुणा पूणं । किं वणिहकणो कत्थइ जलेइ पउरिधणविहणो ? ॥ २६८ ॥
इय वयवुद्धि चिय होइ कारणं इट्ठसाहणत्थम्मि । उज्जोयइ पुण्णससी ण इंदुलेहा जयं सयलं ॥ २६९ ॥

तत्रो एयमायण्णिऊण ईसिवियसावियवयणकमला जंपितं पयत्ता चंदणा जहा-महाराय ! किं पडिबुद्धुदिणो एवंविहाइं जंपति ? जेण मुव्वउ—

सो चिय का पंडिया पसंसंति । सामत्थं जत्थ समत्थवीरिण् ॥ २७० ॥
सामत्थयाजुओ पढमजोव्वणे चेय । सयलाण वि करणीयाण पव्वलो जायए जंतू ॥ २७१ ॥
 जइया पुण वियलिंदियवेयल्लविइण्णीसहसरीरो । इय उट्ठितं पि तइया ण तरइ किं कुणउ कायव्वं ? ॥ २७२ ॥
 वारिय मेत्तसाहणो णेय । कुलिसं णिहलइ गिरी, कयाइ णो मट्टियापिंडो ॥ २७३ ॥
 इय रहिओ कह सामत्थयाए काउं तरेज्ज किं पि णरो ? । इच्छामि तेण काऊण जोव्वणे चेय धम्ममई ॥ २७४ ॥

अण्णं च एस चेय रयणवुट्ठी — — — — — उच्छाहेइ मं धम्मज्जमे, किं त्य तुम्होहिं ण समायण्णियं विउसजं-
 पियं?— ण धम्मरहिया सब्वसंपयाणं भायणं इवति । एत्थावसरम्मि य समागतूण पुरंदरेण भणिओ सयाणियपत्थिवो
 जहा-भो णराहिव ! मा ए — — — (वं जंप)सु, जेण मुव्वउ—

किं ण मुणिया तुमाए एसा संपण्णसीलगुणविहवा । चंदणतरुणो साह व चंदणा सीलपव्वभारा ? ॥ २७५ ॥
 एसा हु भयवओ वट्ठमाणातित्थंकरस्स पढमयरा । अज्जाण संजमुज्जमपवित्तिणी होहिइ अणग्घा ॥ २७६ ॥
 हिययविइन्नयसहर(रि)सपव्वज्जाकाललालसा एसा । आहासितं पि जुज्जइ ण अण्णहा, किं त्य भणिण्ण ? ॥ २७७ ॥
 चिट्ठउ णिहेलणे चिय तुम्हं ता जाव होइ सो समओ । जयगुरुणो पव्वज्जाणुग्गहकरणस्स जो जोओ ॥ २७८ ॥
 एयं पि इमाए चिय होइ(ई) मुरमुकरयणवुट्ठिधणं । गिण्हउ, जहिच्छियं देउ जस्स जं जोग्गमेत्ताहे ॥ २७९ ॥
 तो सा मुराहिवइणो अणुमइमेत्तेण गहियधणसारा । णीया सयाणिएणं समंदिरं गोरवं काउं ॥ २८० ॥
 इय सा एक्कं भायं णरवइणो, सेट्ठिणो तद्वा बीयं । तइयं तु अप्पणा नेहिऊण विगया णरिंदहरं ॥ २८१ ॥

एवं च दीणा-ऽणाह(णाहाण) पयच्छन्ती जह(हि)च्छियमत्थलाहं पत्थिया सेट्ठिमंदिराओ । पत्थिवेणावि पुरंदरवय-
 णपोच्छाहिण्ण पूइऊण धणसेट्ठिं तयणुमतीए णीया समंदिरं वसुमई विहिणा, णिहिता कण्णंतेउरमज्झम्मि । तत्रो सा
 विमुक्कासेसालंकारा वि साहीणसीलालंकारविहूसियावयवा, अचन्तमणहरुप्पण्णलायण्णजोव्वणपयरिसा वि परिणयवया-
 इरित्तं ववसिया, अवमण्णियासेसविसयइंदियमुहा वि असमसमासाइयसममुहा भयवओ केवलणाणुप्पत्तिसमयं पडिच्छ-
 माणा सयाणियमंदिरे चिट्ठइ ।

वसुमइसंविहाणयं [११] ॥



अण्णया य विविहमणिकिरणविक्षिण्णतिमिरणियरम्मि अव्वायसरसकुसुमोवयारपउरम्मि महमहन्तकालायरुधूम-
 वडलम्मि समन्तओ आणाहिलासपरिसंठियासुरभडसमूहम्मि पायालमुरलोयम्मि समुप्पण्णेण चमरासुरेण अवहिं पउं-
 जमाणेणं पलोइयं सोहम्महाहिवइणो सयलमुररिदिसं— — (भारसुं)दरिडं विमाणमुवरिभाएण गच्छमाणं,
 केरिसं च ?—

वेलाणिलरहमुद्धूय [—]धुव्वंतधयचिंधयालिहं । दारद्वियमंगलकलसमुहणिहिप्पन्ततामरसं ॥ २८२ ॥
 णिम्मलमणिभित्तिथलसंगयससि-सूर-तारयालोयं । वचित्तियसारहिसंतट्ठरवितुरयं ॥ २८३ ॥

आवद्धुम्भडचलकणिरकिंकिणीजाल्हाइलियदियन्तं । देवंगवियाणोलम्बरयण-मुत्ताहलकलावं ॥ २८४ ॥
 उचुंगविविहमणहरविसट्टमणिरयणवेइयावल्यं । यकरयल्लदधुयचमरचयं ॥ २८५ ॥
 मणिमयसंभुम्भडरयणचंदिमालाहिरामणिज्जहं । घरदीहियायडुड्डीणमुहलविलसंतहंसउलं ॥ २८६ ॥
 इय णिज्जियमुहसोहाणुहावविहवं णहंगणाभोए । हरिणो विमाणरयणं च मा ॥ २८७ ॥

--(एवं) च सुराहिवड्ढो विमाणरयणावभासिणिं सिरिं दट्टण सेवागयपासपरिसंठियासुरभडसमूहवयणाई पलोइऊण भणियं चमरामुरेण-भो भो ! को वुण एसो मं तणं वाऽवमणिय उवरिभाएण वच्चइ ? । तओ --(तेहिं)
 --(भणियं)-- -- -- -- --णसुरभडमणिमउडमसणियपायवीढो णिम्भरकुंभयडपलोइणिम्भरमयंघपरावणणाहो मणहरसुरलोयविहूइभायणभूओ सोहम्माहिर्वई वज्जणाहो । तओ ताण वयणाणंतुरुप्पणामरिसवियम्भन्तभिउडिमीसणो भणिउं पयत्तो-जइ णामाहमेत्थ वहुत्तणगुणगारवग्घविओ ता को एसो मं परिहावेऊण उवरिभाएण वच्चइ ? अहवा एस चेव पट्ट ता किं मह [पट्ट]त्तणेण ? ण हु दोण्हि पट्टत्तणाहिलासिणो चिरं केणावि पलोइया, कह ?--

उवभुंजन्ती अण्णेण पट्टसिरी णेय तीरण सोहुं । किं कोइ सहइ दट्टं णियदइयं अण्हत्थययं ? ॥ २८८ ॥
 महिलाण वि होइ चिय सरसं सोहम्मासुंदरं रुवं । तं चिय धीराइगुणेहिं जाइ भेयं सुवुरिसाण ॥ २८९ ॥
 हिययं च धीरयासंजुयं ति को अण्णउण्णइं सहइ ? । करकोडिगोयरारणं तरुण किं दुकरं करिणो ? ॥ २९० ॥
 अहिलसइ जो ण वेत्तूण परसिरिं णियवहुत्तसंतुट्ठो । सो ससिरीए वि मुच्चइ 'अव्ववसाइ' त्ति कलिऊण ॥ २९१ ॥
 तस्स हु जीयं जाएज्ज माणिणो सहलयाए संबद्धं । जो जियइ सव्वयालं णियतेओहूयपरत्तेओ ॥ २९२ ॥
 असुराणं पट्ट सको हवेज्ज अहवा [अहं] सुराणं पि । किं एकम्मि कयाइ वि कोसे संठाइ खग्गजुयं ? ॥ २९३ ॥
 इय एकदइयपरिपालिया मुहं वसउ अज्ज जयलच्छी । दुक्खं चित्तग्गहणं कीरइ एकाए दोण्हं पि ॥ २९४ ॥

एवं च चमरामुरस्स अविहावियणियबलमाहप्पदप्पजंपियं सोऊण पयंपियं चिरंतणामुरमहल्लएहिं जहा-सामि असुराहिवड ! एसो हु पवरसुरसुंदरीणाहसुरलोयाहिवो सुपरियप्पियतवाणुहावेण सम्पुण्णो, तुमं पुण मुहोययाओ चेव भवणवासीणमाह(हिं)वच्चत्तणेण संजाओ, ता उवभुंजसु तुमं णियमुहकम्मावज्जियमाहिवबलच्छि, एसो वि चो मर्हिदपयपडिवद्धं सुरलोयलच्छि, को एत्थ तुम्हाणं विरोहो ? एयस्स पुण अण्णणिकायपडिवद्धा वि आहिवचया वसे चेय चिट्ठन्ति त्ति, तह वि णाहिमाणो । एयं च ताण वयणं णिसामेऊण गरुयामरिसवसवियम्भन्तभिउडिमासुरो जंपिउं पयत्तो जहा--"महपरिहवुप्पत्तिपिमुणं जंपमाणान तुम्हाण चिरन्तणगुणगरुयया वि पल्लुया संवुत्ता, जेण गुणा हु गारव-मुव्वहन्ति जंतुणो, ण कालपरिणती, गुणाइरित्तो हु पल्लू वि गरुओ, गुणविरहिओ उण महल्लो वि लल्लुओ । अहवा अविणायमहपरकमाण को तुम्हाण दोसो ?

ता किं करयल्लैकडिडयवियडपडंतोरुसिहरपम्भारं ? । एकपदेसोवगयं करेमि वरकुलगिरिणिहायं ॥ २९५ ॥
 ओम(मु)हभुयागलच्छणपल्लत्थियपउरसलिलपम्भारं । विवरम्भुहं पलोइेमि सयलसलिलाहिवइवेलं ॥ २९६ ॥
 अहवा सुरगिरिसिहरावयासपरिसप्पिरं महगजोहं । पडिक्कलं परियत्तेमि विसमविकिस्खणतारोहं ॥ २९७ ॥
 उयय-उत्थधराहररविविज्जियं संजणेमि एत्ताहे । ससि-सुराणं व करेमि अणुदयं उययमत्थमणं ॥ २९८ ॥

१ दस्यत्तो १७ गाथापूर्ववर्तिगणविभागस्थितहस्ताचक्रोपरिवर्तिनी टिप्पणी । २ "लवट्टियं" जे । ३ उज्जु(मु)हं जे । ४ ॥ ॥ एतदस्त-विहादारभ्य ४०४ गाथानन्तरवर्तिगणविभागस्थितहस्ताचक्रं (॥ ॥) मध्यगतपाठसन्दर्भस्थाने जेपुस्तके एतावानेव पाठ उपलभ्यते--"इच्छेवमादि बहुप्पयारं दप्पुदपुरं गणिऊण णियमहल्लयाणं बलामोडियाए निग्गओ चमरामुरो [सुरवड्ढो]इहिसुहं । वच्चत्तेण य दिट्ठो भयवं पडिमाए संठिओ बद्धमाणसामी । चित्तिय च जेण--जइ कहवि पुरंदराहेत्तो भयं भविस्सइ ता एस मह सरणं । ति हियए निवेसिय तिइपक्खो पहाविओ तुरियवु-रियं । तओ लंछिऊण सखि-सुर-यक्खल-तारयं णहंगणं संपत्तो वेएण सुर" ।

अह अ[ण]णिकाएमु(यस्स) वि बहुत्तणं तस्स संसमाणेहिं ।

अवणंतेहिं मह पुणो ण याणियं कह वि महविरियं ? ॥ २९९ ॥

ता भो ! तुम्हेहिं तस्स पक्खवायं कुणंतेहिं सो चेव सलाहिओ, मह उण अवण्णा कया । ता जो एकाणुयत्तिपरायणो सो जाइ रजिउं, जो उण अण्णोणचिच्चारहणपरो तस्स वेसायणस्स व दुक्खेहिं वेहु चित्तं तीरइ । तओ तं अवमण्णियसामाणियगोरवं चमरासुरस्स जंपियं सोऊण भणियं सामाणियासुरमहल्लएहिं जहा-महाऽसुरराय ! ण हु अम्हाणं पइ परलोयणिमित्तिया भत्ती इहलोयणिमित्तिया वा, ण य तुम्हाहेतो अम्हाण किं पि संपज्जइ अवेइ वा, किंतु जहावद्वियम-म्हेहिं भणियं, ण उणो विभेयकारि त्ति, ण हि सज्जणाण अण्णहट्ठियं अण्णहा जंपिउं जुज्जइ, ण य अम्हे तुह बल-पर-कममयाणमाणा भीसावणत्थं भणामो, जेण एसो हु इंदस्स वि पूयणिज्जो, जइ वा जं जहावद्वियं ण भणिमो तं पि अम्हाण दोसावहं ति, संसिएण हियमिच्छुणा जं जहा कीरमाणं हाणि-बुड्ढिकारयं होइ तं तहेव भणियच्चं, ण य एसो दियलोयाहिवई तुम्हाणमहिक्खिविउं जुज्जइ त्ति । तओ तमवहीरिऊण ताण वयणं भणिउं पयत्तो, कहं ?—

“भयमेकरसं बहुसो पयंसमाणाण णिच्चमच्चत्थं । बलहुत्तणं चिय मया कलियं तुम्हाण बुद्धीए ॥ ३०० ॥

णयरहिओ भयदरिसि व्व मंतिसत्थो हु जारिसो होइ । सिद्धी वि तारिस चिय पहुणो कज्जाण संपडइ ॥ ३०१ ॥

‘असमच्चबलो पढमुग्गवो’ त्ति अहयं मुणेह मा चित्ते । आजम्माओ चिय सत्तजुत्तया वेप्पए हरिणो ॥ ३०२ ॥

जम्मदिणेणेय समं महोज्जियं होइ यं । उययाहिं तो णीहरइ तेयजुत्तो दियसणाहो ॥ ३०३ ॥

अज्झवसायविहूणेहिं अप्पण च्चैय बहुभयं भणियं । जो जणइ अप्पणो च्चिय भयाइं सो कह परं जिणइ ? ॥ ३०४ ॥

ता मुयसु भयं अहमेव केवलो णियसमत्थयाजुत्तो । भयतरलपुल्लइयत्थं करेमि देवाण रायाणं ॥ ३०५ ॥

चिद्धइ सुहेण तुम्हे समयं णियपणइणीहिं परियरिया । म्हाण अहव कत्तो भयासंका ? ॥ ३०६ ॥

गलियमउडा-ऽऽयवत्तं अवहियसीहासणं विगयभूइं । अहमेकभुयबलो पहयबल-भयं कुणमि सुरणाहं ॥ ३०७ ॥

ण य अण्णबलं बलिणो समागयं भुयबलं च मोत्तूण । हरिणो करिक्कुम्भवियारणम्मि किं परबलावेक्खा ? ॥ ३०८ ॥

इय अमुरवई वोत्तूण णिययदप्पुद्धुमायमाहणो । सहसा समुट्ठिओ आसणाउ कयभिउडिभीमच्छो ॥ ३०९ ॥

तओ णिच्चरकरस्तलप्पहारदलियरसायलभित्तिथल्लुच्छलंतविसहररयणप्पहाहोयं दलिऊण पायालमूलं गुरुयरपरिहा-परिक्खेवविग्गमं भुयजुयलदप्पुव्वहमाणो विणिग्गओ उयराओ व्व पायालमूलाओ चमरासुरो । गुरुवेयाणिलविसमवि-क्खिण्णजोइसगणे समुप्पइओ णहंगणे । कहं ?—

उप्पइओ वेउप्पइयवायचक्कुल्लसन्तचलचूलो । विसमंदोलियहारोलिबलयरिहट्ठियावयो ॥ ३१० ॥

विप्फुरियतरणिकरमिलियमउडमणिकिरणमासलच्छाओ । लीलंदोलियकुंडलपरिहट्ठियविमलगंडयलो ॥ ३११ ॥

वेयवसा हित्थुत्तत्थतियसमुंदरिविदिण्णहमग्गो । संभेडफुडणभयओसरन्तविवलाणसिद्धगणो ॥ ३१२ ॥

इय पडियभिउडिमंगुरमुहमंडलजणियजीवलोयभओ । वेएण समुप्पइओ चमरो णहमंडलाभोयं ॥ ३१३ ॥

गच्छंतेणं च तेण ‘सुराहिवई एसो’ त्ति णासंसियं मणयं पि तस्स समीवाओ भयं । समइबलावलेबुम्मत्तमाणसो गंतुं पयत्तो । गच्छमाणेणं च तेण सच्चवियो एकम्मि पएसे समो व्व मुत्तिमंतो पडिमासंठिओ भयवं वद्धमाणसामी । दरिसणान्तरं च करकमलंजलिमिलंतुत्तिमंगो पणमिऊण भणिउं पयत्तो, कहं ?—

तुह जयगुरु ! भच्चिसंगओ, अहममराहिवईं जिगीसया । सरणमिहमिमं तु भाविउं, पयजुयलं आवइसंगयस्स ॥ ३१४ ॥

मोइयमुणियभवं भवंतयं, भवणवई भवणासयं गुरुं । सरणम्मि परो बहूयउ, विणिवयणप्पडियारसंगउ ॥ ३१५ ॥

हियभणियकयावहीरणो, सरणमवलंबइ णाउमं जहा । चिरमवि हु असप्पहं गओ, अवयरए सयमेव पंथए ॥ ३१६ ॥

परिचलियकिरीड-कौंडलो, फुरियउरत्थलहारमंडलो । पवणजवसोवहूणणा, पडिवहहूत्तं विलं परंपरो ॥ ३१७ ॥
जवविहडियमेहडंबरो, समुहवियासविसालउज्जलो । अहिमुहमहिदंसणुवडो, भयविवलाइयसिद्ध-चारणो ॥ ३१८ ॥ चि ।

एवं च समुपपज्जमाणजवेणाणिलमहो व्व पक्खिवन्तो अहिलंघिऊण ससि-सूर-णक्खत्त-तारयं णहंगणं संपत्तो
वेण मुरलोयं । अविहावियभय-संभमेहिं च पलोइज्जमाणो मुरच्छरगणेहिं संगओ महिदत्थाणियासणभूमिं चमरा-
सुरो । दट्ठणं च तं वासवेण (वासवो) अणुइयपएसगमणत्तणओ चमरासुरस्स परिहवं व्व (व) य (अ)त्तणो वियकंतो
चित्तिउं पयत्तो-किमेस एत्थागओ ? चि । एत्थावसरम्मि य चवलत्तणओ अविहावियवयणकमो चमरासुरो जंपिउं
पयत्तो, कह ?—

“ण मुराहिवत्तणे भायणं सि तं, भूमि संपइ महेसा । परसंसिया चिराओ वि णियपइ जाइ पइभत्ता ॥ ३१९ ॥
जमसाहीणम्मि मए जाओ सि तुमं बहु चि तं बहवं । [....] वि रविणो गयणंगणम्मि सोहं लहेइ ससी ॥ ३२० ॥
सो हं समागओ वक्कमाहि मुरणाह ! भाविउं चित्ते । अहिरमउ समालच्छी चिराउ समयं मए बहुसो ॥ ३२१ ॥
इय भाविऊण णियए मणम्मि-उप्पेसि (सु) मुरसिरिं मज्झ । येवेणं चिय कीरउ परिओसो किं थ बहवेणं ?” ॥ ३२२ ॥

एवं चासमंजसपलविणं सोऊण हेलाए भणियं मुरभडेहिं जहा—“भो चमरासुर ! ण सुमरेसि अण्यं ?, किमियम-
इभूमिमागओ सि ?, जेण णियायकामो विव दुण्णयपहम्मि अण्णो पयं पक्ख (क्ख) वसि ?, णयभाइणो हु पुरिसा
सज्जणसलाहणिज्जाणं सिरीणं भायणं जायन्ति, कह ?—

णयभायणम्मि संपडइ सयलगुणरिद्धिसंभवो पूणं । णयरहियाणं पुण संगओ वि ण थिरत्तणं महइ” ॥ ३२३ ॥
अह तेहिं इमं भणिए पुणो वि चावल्लदोसवामूहो । चमरो [ते] णिल्लज्जुज्जयासयं भणिउमादत्तो ॥ ३२४ ॥
“ण हु मज्झं णय-विणओवएससंसुइणो तुमे ठविया । एवंविहम्मि भणियव्वयम्मि को तुम्ह अहियारो ? ॥ ३२५ ॥
जं भुयवल्लसामत्थं जस्स जहा चडइ तं पयंसेह । मइ जुज्जलालसे एरिसेहिं किं जंपियव्वेहिं ?” ॥ ३२६ ॥
इय अवहत्थियणयमग्गजंपियव्वम्मि दणुअगाहम्मि । सुहिया मुराहिवइणो सहा विसंभंतल्लवोला ॥ ३२७ ॥

सुहिया य देहसम्मइदलियकेऊरकोडितुट्ठंतहारवियलंतमोत्तियप्पयरभरियभवणंगणा,
संचलणचलियमणिमउडणिविडसंघट्टफट्टपडिबंधवद्धभिर्णिणदणीलसामलियदिसिवहा ।
पसरन्तणिभ्रामरिसवसविसट्ठन्तपुलयपडल्लससंतकयगाहकडय केयूरसुंदरा,
हण हण हण चि गहभभवयणडकोट्टभिउडिभंगुरियभुमयभीसणपलोयण ॥ ३२८ ॥ चि ।

एवं च ते मुरभडा मुराहिवान्ति विणा वि समुज्जया चमरासुरं हंतुं । सो वि संकिण्णामरभूमि चि कलिऊण
अमराणमहिमुहो च्चेय समोसरिओ पयक्खेवेहिं, ण उण चित्तेण । तेहिं पि बहुपहरणोहरणसंभेडसंजणियखणखणासदपू-
रियदियंतरालेहिं समंतओ परियालि - - - - - रो वि रणरहमुद्धाए णियच्छिऊण मुरभडे परिहच्छखग्गग्गधाराणिवा-
यपसरपडिभग्गपसरे समन्तओ काऊण णिक्खंतो ताण मज्झाओ । तओ चमरासुरेण हरिणाहिवेणं व कुरंगसंदोहो, जल-
णिहिवेलासमूहेणं व महाणदीसोतो विक्खित्तो मुरभडसमूहो । पुणो वि णणसंततिघडणसंघट्टकयणरवा रणपरियरावद्धमे-
त्तपडियारकारिणी संठिया अहिमुहं मुरवाहिणी, कह ?—

आयण्णायडिडयजच्चकंचणावद्धपुंखभाएहिं । उत्थरियमंवरयलं घणवडलेहिं व वाणेहिं ॥ ३२९ ॥
करपक्खत्ता णिवडन्ति तिक्खकोन्तग्गसेल्लसंदोहा । परमम्मभेइणो खल्लयण व्व सञ्चत्तओ दुसहा ॥ ३३० ॥
अणिसियचक्क-भोग्गर-मुसुंदि-करवालणियरदुप्पेच्छो । पहरणगणो समन्ता अमुरोवरि पडइ भयजणणो ॥ ३३१ ॥

तो सो वि असंभंतो परिहत्थुक्खित्तपायवक्खेवो । उद्धाई महिमुहं मुरभडाण अणिवारियप्पसरो ॥ ३३२ ॥

तो सो परिहापरिभमभामियामरगणो घडन्तभिउडिभासुरो

समागयं मुरोहयं, कुणेइ सत्तओहयं । विमुक्कधीरिमायरा, पडन्ति तत्थ कायरा ॥ ३३३ ॥

विमुक्कलज्ज-माणया, रणं अणिच्छमाणया । मुरा रणाहिसंगया, महाऽसुरेण भग्गय ॥ ३३४ ॥ चि ।

तओ ते मुरभडा तस्स पहावमसहमाणा पमुक्कलज्ज-मज्जाया भग्गा समाणा समागतूण संठिया महिंदपुट्टिभायम्मि ॥

ते य तारिसे सुभडे विमुक्कसमरमच्छरुच्छाहे पेच्छिऊण कुविओ मुराहिवो, कह ?—

जायं च गरुयमच्छरवसपरियट्ठियघडन्तराडलं । उप्पाऽऽयट्ठियरविमंडलं व वयणं दुरालोयं ॥ ३३५ ॥

तह कुविणं हसियं विसट्ठपडिरवघडन्तसव्वदिसं । जह से भएण हित्थो णट्ठो पासाउ परिवारो ॥ ३३६ ॥

तह सा दिट्ठी अमरिसवियम्मिउव्वत्तभिउडिभंगुरिया । अण्ण व्व संठिया जह पयइपसणा वि दुल्लक्खा ॥ ३३७ ॥

इय वडिडयगुरुमच्छरपयावपसरो मुदूहालोओ । जाओ मुराहिवो कुवियकालकयरुवसारिच्छो ॥ ३३८ ॥

णवरि य कोवुल्लसंतवेल्लपरिययं मुराहिवं मुणेऊण समागओ पज्जलियजलणजालाकलावकलियदिसामंडलो अविरल-
विणीहरन्तफुल्लिगकणसंवलयणहंगणाहोओ णिगतत्तत्थयासवत्थियत्तमत्थवेहेओवीरिओ कपल्यंतो व्व समत्थं महिंदप-
डिवक्खं वज्जदेवो । भणियं च [तेण]—सामि ! मुरणाह ! कीस उण हिययचित्तियमेत्तमज्झम्मि वि मए एवमप्पा आया-
सिज्जइ ? ता दिज्जउ मे समाएसो । तओ तमागयं दट्ठूण पेसिओ मुराहिवेण चमरासुरसम्भुहं । लद्धापसो य पहाविउं
पयत्तो वज्जदेवो, कह ?—

णवरि य खयकालसारिच्छविच्छडुजालाकलावुज्जल [— — — — —] तिक्वप(प्प)होहूयगिम्हुम्भडुम्भूयदिप्पन्तसु-
रायवो,

पसरियगुरुतेयसामत्थसत्थ[त्थ]चित्तत्थदेवंगणार्हिं समोसकणुव्वेल्लोलंमुयदन्तधुप्पन्तकंचीकलावुज्जलं जोइओ ।

भयभरविहलाउलुत्तत्थपल्लत्थ — — — — — सट्ठुंगत्थलीगंडवाहाण संवेहिं भीएहिं णीसेससेलेहिं दिट्ठो,

अहिमुहपरिसंठियामुक्कपंथेहिं णीसेसदेवेहिं णिज्झाइओ वेयवि(वे)यल(ल्ल)दूरुल्लसंतोरुहारालिमुत्ताहिं सत्तारयासंक-
माभासमाणो णह(हो)मंडले ॥ ३३९ ॥ चि ।

दिट्ठो य समुहमागच्छमाणो चमरासुरेण । दूरओ चेय तप्पहावपणट्ठवीरिओ अच्छउ ता जुज्झियव्वं, — — — — —
(किंतु तं अव)लोइउं पि अपारयंतो अवियाणियकिंकरणीओ 'ण अणो उवाओ चि जयगुरुणो चलणकमलं सरणं' ति
मुमरिऊण पलाइउं पयत्तो, कह ?—

वडिडयभीमभयाउलदेहो, देहपणासियधीरसमूहो । मुहसंताससमुग्गयसामो, सामपयम्मि य दिण्णविरामो ॥ ३४० ॥
रामसरिच्छवियम्मिभयभावो, भावियलोयगुरुत्तमणामो । णामियपोरुसदप्पविसेसो, सेसोवट्ठियपहपरिवेसो ॥ ३४१ ॥ चि ।

संपत्तो य चित्तमणिं पिव समत्तजंतुचित्तियमेत्तसंभावियत्थं, कप्पतरुं पिव परियप्पणानंतरुप्पाइयसमीहियं जयगुरुणो
चलणकमलंतिथं । जं च केरिसं ?—

विप्पुरियविमलणहमणिमयूहसंजणियकेसरायारं । उव्वेल्लकोमलंगुलिदलोहपरिवेसराहिल्लं ॥ ३४२ ॥

वित्थिण्णालिलयलायणसलिलमज्झट्ठियामलच्छायं । संपत्तपत्तसंकंतकंतिकयकोमलच्छायं ॥ ३४३ ॥

तवखुवलच्छिरमियव्वजोग्गसुसिलिट्ठसंगयरहंगं । पण्हियलकणियावलयकयसि(स)णाहोरुपरिवेसं ॥ ३४४ ॥

इय चलणपंकयं तिक्वतवविसपंतगंधरिदिल्लं । तिहुयणगुरुणो सरणं पत्तो भसलो व्व दणुराया ॥ ३४५ ॥

अल्लीणो जयगुरुणो सयलतेल्लोक्काससणं पयपायवच्छायं । एत्थंतरम्मि दट्ठूणं जयगुरुणो पायपंकयच्छाओवगयं
चमरासुरं भणिउं पयत्तो वज्जदेवो जहा—

भो भो चमरासुर ! साहु तइ कयं एरिसं कुणंतेण । आजीयाओ आवज्जियाइं तुमएऽम्ह चित्ताइं ॥ ३४६ ॥

ण हु एस परं तुह चमर ! जयगुरु सयलतिहुयणां पि । सरणं अम्हाण वि असरणाण समुराहिवाणं पि ॥ ३४७ ॥
 तं(जं) च तुमए सुराहिवपरकमं एत्यमुवइसंतेण । संलत्तं तं इमिणा कएण दूरं समुप्पुसियं ॥ ३४८ ॥
 इय भणिऊण वियम्भन्तभावभरमंधराए दिट्ठीए । जयगुरुणो पयपायवछायासु परिट्ठियं चमरं ॥ ३४९ ॥
 अन्तोपसरन्तसमुप्पणसोमयासंजुओ तिपयाहिणीकाउमादत्तो । केरिसो दीसिओ ?, अवि य—
 विष्फुरियतेयमंडलपसंडिसंपिडियामलच्छाए । मुरगिरिकडए तरणि व्व विमलकरकन्तिपेज्जालो ॥ ३५० ॥
 पज्जलियजलणजालावियासपसरो णिहित्तमणिवट्ठो । आरत्तियापदीवो व्व दीसिओ रामकयखेवो ॥ ३५१ ॥
 दूरविणिग्गयभामंडलप्पहं भाविऊण अत्ताणं । जलणो जयगुरुदेहप्पहाए पाएसु पडइ व्व ॥ ३५२ ॥
 इय तिपयाहिणपुव्वं णमिउं वज्जामरो तिलोयगुरुं । वेएण पुणो वि गओ समयं समइच्छियं ठाणं ॥ ३५३ ॥
 गए य तम्मि चमरासुरो महियलपरिलुलियतरलहारो पणमिऊण थोउं पयत्तो जयणाहं, कह ?—
 जय णिज्जियसुर-[णर]-तिरियजणियगरुओवसग्गभय ! वीर ! अंतोपसरियग्गणग्गिदड्ढकम्मिधणसमूह ! ॥ ३५४ ॥
 णिदोयजचकंचणसमुज्जल्लसियतणुपहप्पसर ! असरिसगुणसंभावणवियंभियाइसयसंदोह ! ॥ ३५५ ॥
 ण हु णवर अहं एको तुह चलणपहाववज्जियावज्जो । सयलं पि तिहुयणं भवभयाहि णित्थारियं तुमए ॥ ३५६ ॥
 इय विहिणा तिउणपयाहिणकमं पणमिऊण जयणाहं । णियभवणवसहिङ्गत्तं चलिओ चलकुंडलुज्जोओ ॥ ३५७ ॥
 संपत्तो णिययाणुहावपरियड्ढमाणगइविसेसो सभवणालयं चमरासुरो चि ।

इति महापुरुष(रिस)चरिए चमरुपायसंविहाणयं [१२] ॥

✽

तओ तिहुयणगुरुणो पवरपयपंकयभसलाइयं काऊण गयम्मि [अ]सुराहिवे चमरासुरे जयगुरुचलणाणुहावरवस्त्रणा-
 परितुट्ठे संपत्ते णिययपायालभवणं भयवं चद्धमाणसामी अणेयतवविसेसावसोसिज्जंतकम्मसमुयओ विसहन्तो सुर-मणुय-
 तिरियजणिए णाणाविहोवसग्गे कमेण विहरमाणो संपत्तो मंदाणिलसमुव्वेल्लकल्लोलमालासमुम्मिल्लतरलतरंगजालंतरुच्छ-
 लन्तमच्छपुंछच्छडाघायभिज्जन्तसिप्पिसंपुडं सिप्पिसंपुडंतोविणंतमुत्ताहलधवलप्पहापरिकखेवदिट्ठिविविहजलयरं जलयरप-
 रोप्परावडणुम्भडविसट्ठिंडीरपिंडपंडुरियपेरंतं मंदाइणीकच्छं ति । तहिं च समत्तजंतुसंताणोवदविरहिए ठिओ एकपा-
 सम्मि मुणिवई पडिमाए ।

एत्यावसरम्मि य अन्तोवियंभिउदामविसायवसकसणीकयवयणमंडलो समुम्भडयरभिउडिभंगमंगुरियभालमग्गो
 दढावर(य)थिरथोरकुट्टदीहदंडचंडीकयमुयादंडो इओ तओ ससंभमपलोयणवसा विसप्पंतदिट्ठिविच्छोहो पत्तो तं पएसं एको
 पणट्ठगोमंडलो तरुणगोवो । अवि य—

कट्ठियरपाणिपडिवद्धमुट्ठिणिट्ठुरकउड्ढदददंडो । थिरथोरमडहपयडोवलक्खिउव्वेल्लभुयजुयलो ॥ ३५८ ॥
 अच्चुम्भडसिरपडिवद्धजुडउव्विडिमकुडियकयडमरो । खरफरुसफुडणफारुल्लसन्तपिहुदीहपयजुयलो ॥ ३५९ ॥
 परिचिबुयणासियातुंगगहिरपुल्लज्जमाणगुरुविवरो । थोरोट्ठफु(पु)डन्तरधवलदीहदीसन्तदसणग्गो ॥ ३६० ॥
 इय कयपयंडरुवो णिव्वरवयणोवसिट्ठचंडिज्जो । अट्ठीणो सहसा गोवदारओ कालपडिरुवो ॥ ३६१ ॥

आगंतूण य भणिउं पयत्तो-हंहो ! णइ — — — — — रूवोवलक्खिए गोरूवे पुलोइयपुव्वे तुमए !
 चि । पुणो पुणो भणिज्जमाणेणावि जाहे ण किंचि जंपियं भयवया ताहे रौसवसफुरुफुरायमाणोदुउडेण भणियं-मह
 सव्वायासेण भणमाणस्स — — — — — पुरोहो ण समुप्पणो ता तहा करिस्सं जहा पुणो वि एयारिसमव-

ज्जमणस्स वि ण कुणसि । त्ति भणिऊण समादयाओ भयवओ कण्णविवरेसु णिकरुणेण कासकीलियाओ, कयाओ भग्ग-
पेरन्ताओ । भयवं पि अवमण्णियतिव्वयरवेयणाणुहाओ समम्भहियवियम्भियसुहज्झाणपसरो मुरगिरि व्व णिप्पयंपपरि-
संठियसयलंगविहाओ पडिमासंठिओ तहेव चिट्ठइ त्ति । इयरो उण चित्तिउं पयत्तो—

‘णियचरियदुट्ठयाऽमुद्धचिचउप्पाइयऽण्णहाभावो । इय संठिए वि अज्ज वि पेच्छ अवण्णा कहं कुणइ ?’ ॥ ३६२ ॥

अवियारिउं सरूवं मुणिवइणो तेण पहरमाणेण । गोवेण गोवया णिकिवेण कह पेच्छ पायडिया ? ॥ ३६३ ॥

णावेक्खियं सरूवं, ण संतया, ण य वियारिओ वेसो । णिययं मुद्धसरूवाण उवह होन्ति चिय इमाइं ॥ ३६४ ॥

माया-णियाण-मिच्छत्तसल्लरहिओ वि जयगुरू जाओ । को(का)ससलायासल्लेण सवणविवरन्तरससल्लो ॥ ३६५ ॥

साहीणभोयचाओ असंगया तवकिसंगया चेव । अवयारमवयरन्तेण णियसरूवं जए सिट्ठं ॥ ३६६ ॥

इय मुर-गर-तिरियगणाण जणियगुरूहिययवणचमकारं । उवसग्गं काउं पडिगयम्मि गोवालयणरम्मि ॥ ३६७ ॥

भयवं पि सवणविवरन्तरणिहित्ताससलायापडिभग्गपेरन्तो दूसहवियणावसोवलप्पिज्जमाणपव्वायवयणलायणो
सविसेसतवविसेससंपज्जन्तकुसलकम्माइसओ एकं संपत्तो मज्झदेसाहिट्ठियं मज्झिमाहिहाणं सण्णिवेसं । तत्थ पारणय-
दियहम्मि पविट्ठो सिद्धयत्तवणियगेहं । तेणावि जहासमीहियसंपाइयं भोयणमुवभुंजिउं पयत्तो ।

एत्थावसरम्मि य पुव्वागयवेज्जमुएण दट्ठण भयवओ सरूवं भणिओ य सिद्धयत्तो जहा-ससल्लो वि[व]
भयवओ तण्ण समुवलक्खिज्जइ, जेण पेच्छसु रवियरपडिवोहियकणयकमलसप्पहं पि मिलाणलायणमुवलक्खिज्जइ
वयणकमलं, जच्चतवणिज्जपुंजुज्जला वि वियणावसेण मंदप्पहा देहच्छवी, रवियरदरदलियकुवल्लयदलोवल्लसोहं पि
मउलाइ लोयणजुयं, पुरगोउरपरिहपरिक्खेवदददीहत्तणमुंदरं पि किसत्तणमुवगयं बाहुजुवल्लयं, ता ‘कहिं पुण सल्लं ?’ ति
पुलोइया समन्तओ भयवओ तण्ण । दिट्ठं च सवणविवरन्तरणिहित्तं कासकीलियाजुयं । दंसियं सिद्धयत्तवणिणो । तं च
तारिसं दट्ठण कारुणयापवण्णमाणसेण भत्तिभराइसयत्तणओ य भणिओ णेण वेज्जमुओ-अह एवं ठिए को उण एत्थ
उवाओ ? । इयरेण भणियं-अत्थि एत्थ उवाओ, किंतु एस भयवं ण पत्थए चिकिच्छियव्वं, ण बहुमण्णए सरीरद्विइं,
ण गणेइ पयट्ठियं ि- - ि- - - - , - - (ण इ)च्छइ जीवियव्वाहिलासं ति, जेण पेच्छ परितुलियासेसमुर-गरपरकमो
वि अवलं व अत्ताणयं समुव्वहइ, अण्णहा कहं पाययपुरिसेण केणावि एवमवयरिज्जइ । एवं च ताण परोप्पसालावं
उवेक्खिऊण णिग्गओ भयवं भोयणावसाणे वणियभवणाओ । विणिग्गए तम्मि भणिओ सिद्धयत्तेण वेज्ज-
तणओ जहा—

सयला वि गुणा सहला जयम्मि जायन्ति पत्तसंपत्ता । वण्णकम व्व मुविहत्तभित्तिसंपत्तपरभाया ॥ ३६८ ॥

तं विण्णाणं, सो बुद्धिपयरिसो, वल्लसमत्थया सा वि । जा उवओयं वच्चइ सयलगुणाहाणमणुयम्मि ॥ ३६९ ॥

सव्वो कुणेइ कज्जं दिणेककज्जोवयारकज्जम्मि । इह उण जायन्ति दुवे वि तज्झ लोयाहिउत्तस्स ॥ ३७० ॥

मह अत्थो अत्थि समत्थकज्जकरणोवओयपज्जत्तो । जं उवओयं वच्चइ, कीरउ, ण वियारणाकालो ॥ ३७१ ॥

इय भणिए वणियमुएण बहलरोमंचपुल्लयपडल्लो । वेज्जमुओ वयणवियम्भमाणपरिओसपडहच्छो ॥ ३७२ ॥

भणिउं च पयत्तो—“जं तुम्हेहिं संलत्तं [तं] परिसंठियं मज्झ हियए, किन्तु चत्तारि किरियाए अंगाणि भवन्ति,
तं जहा-रोयाउरो अइतिग(णि)च्छणीओ, साहीणमोसहं, सण्णिहिओ परिवारओ अणुक्खो, सरूवोवलक्खओ वेज्जो त्ति ।
इय संपत्तिजुत्ता तिगिच्छा सहला संपज्जइ त्ति । एत्थं पुण जो चेय तिगिच्छणीओ सो अणाउरो अणत्थी य । तत्थेवं
ववत्थिए किमहं करेमि ?” त्ति । सिद्धयत्तेण भणियं—

“हियए अणिच्छमाणो(णे) वि मुख्यणे जत्थ होइ ण विरोहो । होइ सयत्थो कुसलस्स आयरो तम्मि कायव्वे ॥ ३७३ ॥

संजुज्जइ गिरवाएण भत्तिजुत्तो गुणेण जो जेण । अणलक्खिओ वि गुरुणा तं चेय गुणं पउंजेज्ज ॥ ३७४ ॥
 दोसा ण जत्थ जायंति हांति हियइच्छिया गुणा जत्थ । अणुण्णाएण वि तं गुरुम्मि मुवि(यि) होइ करणीयं ॥ ३७५ ॥
 इय भणिण वणियमुएण वेज्जतणओ पयडिडउच्छाहो । अल्लोणो पडिमासंठियम्मि गुरुणो तरुतलम्मि ॥ ३७६ ॥
 तओ ओणामेऊण उभयपासेमु तरुणो साहाओ, संदामिऊण रज्जूए कीलियाओ पेरंतेसु, णिवद्धाओ साहासु ।
 विमुक्काओ जहावट्ठियं साहाओ । तर्हि च गच्छमाणाहिं समुक्खयाओ कीलियाओ । णीसल्लीकओ जयगुरु । णिग(म्मा)च्छन्ते
 य सल्ले जमण्णभवन्तरावज्जियं वेयणीयं तस्सेस विमुको भयवया गंभीरतारमहुरो दीहहुंकारो ।
 ण तहा णिक्खमंते हि मुणिवइणो तिव्ववेयणा जाया । जह कडिडयम्मि सल्ले — (पय)ट्ठिया गरु(य)या वियणा ॥ ३७७ ॥
 पीहं(डं) पवड्ढमाणेण तेण चिरसंठिई ण परिगणिया । णिहसे वि खल्यलो णिययमासयं दुक्करं कुणइ ॥ ३७८ ॥
 एवं च णिकडिडए सवणंत्ताओ लल्लम्मि वेयं गणि(य)या — — — — — ण अब्भंगणापुण्वयं पडियरंतेण पउणी-
 कया पहारा, जायमणहं विगयवेयणावेयं सवणजुवल्लं ति । तओ गया दो वि वणिय-वेज्जा णमिऊण जयगुरुं जहट्ठाणेसु ।
 तेणावि गोवे — — — — — (ण तइया समुप्पा) इयतिव्ववियणोवसग्गेण णिवद्धं महात्तमापुटवीए आउयं ति ।

इय कयवयकप्पुप्पाइयावग्गमग्गो, सहियणर-तिरिक्खाणेय-दिव्वोवसग्गो ।

गहियगरुयऽभग्गाभिग्गहे संगयप्पा, विहरइ महिवेहं तिव्वसत्तो महप्पा ॥ ३७९ ॥

इय वद्धमाणसामिचरिए गोवालाइयं गोवालपज्जवसाणमुचसग्गविहाणं समत्तं [१३] ॥

✽

एवं च विहुयगुरुयोवसग्गोवलेवो कणयपिंडो व्व णिययपहापरिक्खेवस्वइयदिसामंडलो अणया य संपत्तो जंभिया-
 हिहाणं गामं । तत्थ परिणिबिडविडबुग्भिज्जन्तपल्लवं पल्लवंतरुव्वेल्लमाणुल्लसियकुसुमणियरं कुसुमणियरुच्छलन्तसुरहिपरि-
 मलामोयं आमोयमत्तालिमिलन्तकयकल्लवं सुहृमवालि(ल्ल)याणदीतीरं ति । तर्हि च ददवियडथिरयोरुद्धुंधणिवद्धसा-
 हम्मि साहासमालिद्धकिसलयदलन्तरुचरन्तपद्धयपयरम्मि पद्धयपयरारुणविसट्ठसरसमयरंदम्मि मयरंदणियरोवरंजियधरामं-
 डलम्मि महासालतरुतलम्मि संठिओ पडिमाए ।

णवरि य णिरुद्धसयल्लिंदियत्थपसरस्स णिपयंपस्स । दुज्जयकम्ममहामोहवूहणिब्भेयणसहस्स ॥ ३८० ॥

हिययंतदुरज्जवमुल्लसंतगुरुमुक्कझाणपसरस्स । छउमत्थवीयरायं संपत्ततोमुहुत्तस्स ॥ ३८१ ॥

घणघाइकम्मविहडणसंपाडियणियजहिच्छसिद्धस्स । लोयाऽलोउब्भासणपदीवमसमप्पहावस्स ॥ ३८२ ॥

उप्पण्णं सयलतिलोयसिद्धभावाणुभावसन्भावं । संसारुच्छेयकरस्स केवलं केवलप्पाणो ॥ ३८३ ॥

इय जं गुरुररदुक्करतवोविहाणस्स जायइ जयम्मि । फलमसमं संपत्तं जयगुरुणो गुरुगुणग्घवियं ॥ ३८४ ॥

एत्थावसरम्मि य चलियासणप्पओएण वियाणियजिणणा[ण]लंभो मोत्तूण णिययमासणं तांतूण जिणाभिमुहं सत्तपयाइं
 धरायलमिलंतजाणुमंडलो काऊण पणामं किं काउं पयत्तो पुरंदरो ?—

पक्खिप्पइ करकमलुल्लसन्तणहकिरणकेसरकराला । तक्खणमुल्लहरियसुरदुमुत्थकुसुमंजली सहसा ॥ ३८५ ॥

काऊण कणिरकंणमुहल्लभुयामंडलं णिडालम्मि । करकमलं लल्लिउव्वेल्लिरंगुलीदलसणाहिहं ॥ ३८६ ॥

कीरइ णिव्वडिउब्भडयदन्तसंकिणवण्णासंपणो । वज्जरियव्वितरमत्तिणिब्भरो जयजयकारो ॥ ३८७ ॥

इय जाणिऊण गुरुणो णाणुप्पत्तिं पयडिडयामोओ । जाओ तयणु वियम्भन्तपुलयपडलो तियसणाहो ॥ ३८८ ॥

तओ समासीणो मणिमयासणम्मि । भणिओ पडिहारो जहा-मेलवेसु घंटारवप्पओएण सयलं पि सुरा-ऽमुरगणं । तव्वयणाणंतरं च समाहया णेण घंटा ।

णवरि य मुरकरतालणणिम्भरपसरन्तभरियदिसिविवरो । हरिमंदं (दि)रम्मि पसरइ रणंतघंटाटणकारो ॥ ३८९ ॥

अह तस्स रचायण्णपयत्तपरिओसपसरिउच्छाहो । संगलइ जाण-परियणसमणिओ सयलमुरसत्थो ॥ ३९० ॥

संगलइ णियंवत्थलमिलन्तमणिमेहलाकलाविल्लो । गइवेउत्थल्लियहारमंडलो तियसतरुणियणो ॥ ३९१ ॥

इय सव्वावरंवेइयणियविहवसरिच्छविहवणेवच्छो । मुरसत्थो सहस चिय पत्तो मुरपत्थिवत्थाणं ॥ ३९२ ॥

आगयम्मि मुरसमूहे तक्खणविणिम्मियकलहोयसेलप्पमाणतणुविहायम्मि पडि(रि)वियडकुंभत्थलालीणवहलसिंदूर-
रायम्मि अणवरयपयलंतदाणसलिलपव्वालियकवोलमूलम्मि कण्णमूलावलग्गइल्लन्तचारुवमरचूलम्मि थिर-थोर-दीहरव्व-
(?द)न्तकौंडलियसोंडदंढम्मि समाखुओ मुरकरिम्मि मुराहिवो । मुरकिंकरकरप्फालियविविहाउज्जवज्जिरुच्छलन्तपडिरवो
य गंतुं पयट्ठो । पयट्ठं च सयलं मुरवलं, कह ?—

मुरकरपहराइणन्तवज्जन्तवज्जाउलं, वयणपवणपूरियाऽसंखसंखोरुकोलाहलं ।

गयणगमणदच्छविजाहरुग्गीयसोहायरं, पसरियपरिदच्छगंधव्व-सिद्धं गणासायरं ॥ ३९३ ॥

पवणपसरपेलुणुव्वेल्लुचिंवावलीसोहयं, मुरकरिकयकंठगज्जारवुत्तासियाऽसोहयं ।

तरल्लतुरयवेयपम्मुकवित्थारियावाहणं, पसरियगुरुसीहणायं पयट्ठं मुराण(णं) वलं ॥ ३९४ ॥ ति ।

एवं च जहाविहवित्थरुप्पाइयाणेयणेवच्छवेसमुरगणसमणिओ मुराहिवो समागतूण जहकमं भयवओ णिव्वत्ते(न्ने)ऊण
गाणमहिमं मुरगणे भणिउं पयत्तो जहा-भो ! सज्जीकरेह समोसरणभूमिं । तओ मुराहिवाणत्तिसमणंतरमेव विरइउं पयत्ता
मुरा, कह ?—

णवरि य सव्वत्तो चिय जोयणपरिमंडलं धरावीढं । संठाइ समत्तणविमलसुंदरऽहायसारिच्छं ॥ ३९५ ॥

वित्थरइ मुरहिपरिमलमासलमिलियालिमुहलियदियंतो । परिमंदं दूरोहयमुरतरुगुणगारवो पवणो ॥ ३९६ ॥

ओवडइ दलउडंततरविणेन्तमयरंद[रं]जियदियंतो । पंचप्पयारमुरतरुपस्रयपयरो गहाहिन्तो ॥ ३९७ ॥

णिम्मलयरददमित्तिथलुच्छलंतुद्धकंतिवित्थारो । अहिहरइ पक्खी(खी)रोयहि व्व कलहोयपायारो ॥ ३९८ ॥

अचंतर्पिजरुज्जलपज्जुत्तामलपट्ठापरिक्खेवो । णिव्वडइ विज्जुपुंजो व्व कणयपायारपरिवेदो ॥ ३९९ ॥

अण्णणवण्णमणहरमयुद्धमासलमिलंतकंतिव्वो । मणिपायारो संठाइ रुइरमुरचावसारिच्छो ॥ ४०० ॥

उम्मिल्लइ सरसुम्मिल्लपल्लुवुव्वेल्लमाणराहिल्लो । कंकेल्लिपायवो मुहपस्रयगोत्थुच्छलन्तसिहो ॥ ४०१ ॥

ठंति णहंगणमग्गम्मि विमलससिदप्पणावहासाइं । छत्ततियाइं संछण्णतरणिकरणियरपसराइं ॥ ४०२ ॥

चाउदिसिं वियंभंतसीहमुहकंदराहिरामाइं । सीहासणाइं संठंति विविहमणिबद्धपेढाइं ॥ ४०३ ॥

इय चउगोउरदारोवलक्खियं तक्खणं समोसरणं । विरइज्जइ मुरसत्थेहिं हरिमुहाणत्तितुट्ठेहिं ॥ ४०४ ॥

एवं च सयलाइसयसणिहाणजणियजणमणाइसओ पवरपंकयपरिवाडिणिहिप्पन्तपयणिकुखेवो मुरपत्थिवससंभम-
णिवारिज्जमाणमुरसम्मदो किण्णरगणसमुग्गीयथुइमंगलहलहलारावो मुर-णरजणभत्तिणिम्भरकउच्छलन्तजयजयासइमुहलो
समल्लीणो जयगुरु पुव्वदुवारदेसेण समोसरणभूमिं गओ । सिद्धिवह्विवाहवेइयाभवणस्स व कयत्थो वि काऊण पया-
हिणं सव्वस्स वि समुहत्तणोवलक्खिओ णिसण्णो चउमु वि सीहासणेसु । णिसण्णस्स य समुग्गायं णिययदेहप्पहा-
परिक्खेवमुंदरं भांमंडलवियाणं । समुट्ठिओ सदक्खजक्खपाणिपक्खित्तो चटुलचामरसमीरो । एत्थावसरम्मि य 'णमो
तित्थस्स' ति भणिऊण सयलजंतुसंताणसाहाराण वाणीए पत्थुया भम्मदेसण ति ।

णवरि य एका वि अणेयजंतुजणियावबोहणसमत्था । वित्थरइ भारई भरियजलहरोरल्लिगंभीरा ॥ ४०५ ॥
 तीए समायण्णजणियगरुयपरिओसियाई वियसंति । तरणिकिरणप्पहाए व वयणकमलाई परिसाए ॥ ४०६ ॥
 अण्णणवण्णमणहरणिव्वाणविणिच्चल्लिदियप्पसरा । परिसा विहाइ तक्खणविणिच्चलालेक्खभित्ति व्व ॥ ४०७ ॥
 एवंविहाए तिहुयणमणहरजणजणियहिययसोहाए । धम्मं साहइ वाणीए जयगुरु मुहसरुवाए ॥ ४०८ ॥
 अवि य—

जीवा-ऽजीवाइपयत्थपट्टियं ठाइ सत्तहा तत्तं । जह पंचगाण-चारित्तपंचेया सं(१)सणमणंतं ॥ ४०९ ॥
 पंचमहव्वय-समितीविसेससाहिप्पमाणपरमत्थं । तह वज्झ-ऽव्वभंतरैसिद्धवारसं तत्तत्तिव्वतवं ॥ ४१० ॥
 सत्तरसाऽऽसवदास्सेवलक्खियं विविहभावणाकलियं । दसलक्खणोववेयं तिगुत्तिगुत्ताहिहाणजुयं ॥ ४११ ॥
 दूसहपरीसहुम्माविहाणपरिसिद्धजइजणायारं । आयरिय-गिलाणाइमु कयवेयावच्चपत्थाणं ॥ ४१२ ॥
 परिवज्जियव्वत्तिव्वऽट्ठ-रोइकयधम्म-सुकक्षाणभरं । मेत्ती-पमोय-कारुणविहियमज्झत्थभावंगं ॥ ४१३ ॥
 जह णरय-तिरिय-णर-देवसंठिई संठिया जयम्मि भवे । जह मुह-दुहाई जायंति मज्झिमुत्तिम-जहण्णाई ॥ ४१४ ॥
 धम्मकहातग्गयमाणमुम्मुही णिप्फुरद्वियावयवा । लेप्पमइय व्व टंकुक्खय व्व परिसा विहाइ ददं ॥ ४१५ ॥
 इय सुर-णर-तिरियगाण जणियणियाणुहावमुइसोक्खं । धम्मं जहद्वियं जणियगुरुयसग्गा-ऽपवग्गाफलं ॥ ४१६ ॥

एत्थंतरे बहुप्पयारं धम्मं साहमाणस्स भयवओ सुरा-ऽसुरसंपाइज्जमाणपूयाइसयं जणरवाओ समायण्णिऊण गोय-
 मगोत्तसंभवो इंद-भूई णाम दियवरो बहुदियवरज्झावओ पंचसयसिस्सगणाहिद्विओ इंद-इपरिसामज्झपरिसंठियं भयवंतं धम्म-
 माइक्खमाणं पेच्छिऊण 'एस भौइंदजालिओ' चि कलिऊण समुप्पण्णत्तिव्वाहिणिवेसो 'अवणेमि से विउसवायं' ति भण-
 माणो समागओ समोसरअभूमि । भयवया चि दहूग दूराओ चैव उदाराच्छमाणं मुणिऊण तैस्स हिययाभिप्पायं आहासिओ
 गोत्तकित्तणा-ऽहिहाणेहि जहा—“भो इंद-भूइ ! सुव्वउ,

णाहमिहमिदजालोवलक्खिओ कोई तं कलेज्जामु । इंदेण भूतिजालं अहव कयं किं ण लक्खेसि ? ॥ ४१७ ॥
 तो इंद-भूइ सोउं णियगोत्ताहासणं जणसमक्खं । मुणियमणचित्तियत्थो विम्हयमसमं समावण्णो ॥ ४१८ ॥
 जंपइ पुणोवि भयवं तुह हियए संसओ समुप्पण्णो । 'जीवो किं अत्थि ? ण वऽत्थि ?' एत्थ तं मुणमु परमत्थं ॥ ४१९ ॥
 अत्थि णिरुत्तं जीवो, इमेहिं सो लक्खणेहिं मुणियव्वो । चित्तं-चेयण-सण्णा-विण्णाणादीहिं चिंचेहिं ॥ ४२० ॥
 तं सोउं जयगुरुणो वयणं परिभाविऊण मतिपुव्वं । वोच्छिण्णसंसओ जणियहिययपरिओसपडहत्थो ॥ ४२१ ॥
 इय विच्छिद्वियणियाइगरुयसंजायदप्पमाहणो । जयगुरुणो चलणग्गासदेसमुवसप्पिऊण ददं ॥ ४२२ ॥

महियलमिलंतभालवट्टो य पणमिऊण सविणयं भणिउं पयत्तो जहा—भयवं ! अलियजाइत्तणाहिमाणावलेवदूसियं
 संसारायडणिवडणुप्पण्णभयपज्जाउलमत्ताणयं भयवयाणुग्गहिज्जमाणमिच्छामि, ता कुणह पसायं णियसीसत्तणोर्वसंपायणेणं
 मज्झं । ति भणिऊण पुणो वि णिवडिओ भयवओ चलणेमु । भयवया चि णाणाइसएण वियाणिऊण 'पढमगणहरो
 एसो' चि जहाविहिं दिक्खिओ संजाओ पढमसीसो चि । तओ पव्वज्जाविहाणाणंतरमेव वेसमणाहिहाणसुरवरेण
 समोप्पियं पव्वज्जापरिपालणोवओग्गं धम्मोवगरणं । तं च परिचत्तसयलसंगेणावि अब्भुवगंतूण पुव्वा-ऽवराविरोहकारणं
 परिग्गहियं, चित्तियं च—

णिरवज्जसंजमावज्जणम्मि उवउज्जए जमिह जइणो । धम्मवगरणं धम्मज्जएण सज्जो गहेयव्वं ॥ ४२३ ॥
 अण्णाह छउमत्थमतीहिं कह मुणिज्जइ जयम्मि पाणिदया । काउं अविदयल्लजीवकायजैयणेहिं अणवज्जा ? ॥ ४२४ ॥

१ 'पंचहा सं' सू । २ 'रदिट्ठ' जे । ३ 'तरम्मि जे । ४ भायंद' सू । ५ 'तस्सामि' सू । ६ 'को वि जे । ७ 'एय वंसु' सू ।
 ८ 'वयाणेणं जे । ९ 'समप्पियं जे । १० 'जइणेहि जे ।

जं सुद्धमुग्गमुप्यायेसणाणुगयसयल्लगुणकलियं । गहियं च ण हिंसादोससंजुतं तं गहेयव्वं ॥ ४२५ ॥
 संपुण्णणाण-दंसण-सच्चरणायरणसत्तिसंपु(प)ण्णो । सोहइ समत्थमत्ताइसज्जस-मएण मुज्झंतो ॥ ४२६ ॥
 जो उण णाणाइसयावलोयरहिओऽहिमाणमेत्तधणो । 'जणियपरिग्गहभन्ति' चि हिंसओ सो मुणेयव्वो ॥ ४२७ ॥
 'धम्मवगरणं पि परिग्गहो' चि जो मूढमाणसो मुणइ । अविइयतत्तं सो बालजणवयं तोसिउं महइ ॥ ४२८ ॥
 जल-जलणा-ऽणिल-पुहई-तरुवर-तससंभवा बहु जीवा । धम्मवगरणेण विणा परिरक्खेउं ण तीरन्ति ॥ ४२९ ॥
 जो वि गहिओवगरणो करणत्तियदूसियाओ धिइवियलो । उय अत्ताणं चिय सो पयारिउं महइ मूढमई ॥ ४३० ॥
 इय भाविउण बहुगुणमुवगरणं संजमुज्जयमणेण । पंचहिं सएहिं सह इंदम्मइणा वेप्पए तत्थ ॥ ४३१ ॥

एत्थावसरम्मि य गहियपव्वज्जं सोऊण जणपरंपराओ विज्जाबलाबळेवुम्मइपलोइयतहिसो णिवारंणुज्जुयमती पंचस-
 यपमाणपरिसाणुगम्ममाणमग्गो पुव्वकमेणेव पुच्छिउ सभादत्तां अग्गिभूई-भो भो ! साहसु कम्मं किमत्थि ण व? चि ।
 एवं भणियावसाणम्मि य भयवया भणियं-“भो भो गोयमा ! अत्थि सुह-दुक्खाण हेउभूयं कम्मं, कज्जत्ताओ तेसिं, ण
 हि कज्जं कारणमंतरेण समुप्पज्जइ, वीयाउ व्व अंकुरप्पत्ती । अह एवंपण्णसे 'अहेउया सुह-दुक्खुप्पत्ती', अंकुरस्स वि
 अहेउप्पसंगो, फलत्ताओ । अहेवमन्नुवगयं भवया 'सुहादीणं दिट्ठमेव कारणं भविस्सइ, फलत्ताओ, अंकुरस्सेव, अण्णहा
 दिट्ठहाणी अदिट्ठपरियप्पण' चि तं ण जुत्तं अब्भियाराओ, जओ साहारणसाहणोवउत्तस्स चेय सुरहिमल्लंगराय-मणोहर-
 केसविण्णाससणाहंगणासणिहाणे वि पुरिसजुवलस्स फले सुह-दुक्खाणुहवविसेसलक्खणे ण समयया, ण य तं अदिट्ठहेउयं,
 कज्जत्ताओ, घटो व्व । जं पुण विणा हेउणा कज्जमुप्पज्जइ तं जहा आयासं, ण य सुहादीणि तहा, जं च साहारणसाहणसं-
 जुयाण विसेसाहिहाणाय तं कम्मं, ण य म(अ)दिट्ठपरियप्पणा । गोयमा ! पडिवज्जमु 'अत्थि कम्मं' ति । अण्णं च—

णिम्मलमणिकिरणपहापदीवपडिभिण्णतिमिरपसरम्मि । एके वसंति भवणम्मि विमलमुत्तालिकलियम्मि ॥ ४३२ ॥
 अण्णे मूसयसयच्छिडुपउरपक्खित्तपंसुपसरम्मि । कालं गमंति सयच्छिडुज्जरे जरकुडियरम्मि ॥ ४३३ ॥
 वियडणियम्बत्थल-थोरधणभरुववहणतणुयमज्झाहिं । एके समयं रइलालसाहिं णिवसंति दइयाहिं ॥ ४३४ ॥
 अण्णे रुंदोयरदीहदसणवयणाहिं पिंगलच्छीहिं । महिलाहिं लल्लिकरणुज्जया वि दुक्खं सह वसंति ॥ ४३५ ॥
 एके मणि-कणयसणाहयाल-कचोलपउरसिप्पीहिं । भुंजंति भोयणं बहुमणोज्जस्वज्जाइपज्जुत्तं ॥ ४३६ ॥
 अण्णे जरक्कपडपिहियपुंददरदिट्ठगुज्जपेरन्ता । अणुदियहं भिक्खाहिंडमाण पोट्टं पि ण भरंति ॥ ४३७ ॥
 एके मणहरजंपाण-जाण-हय-गय-मुहेल्लियारूढा । लीलाए सुहविहारं गच्छंति जहिच्छियत्थेसु ॥ ४३८ ॥
 अण्णाण पुणो संपडइ णेय जडखेट्टरी वि पंथम्मि । खरतरणितावणुत्तचपंसुडज्जन्तचलणाण ॥ ४३९ ॥
 इय एएहि पयट्ठन्तगरुयसुह-दुक्खविविहकज्जेहिं । पडिवज्ज गोयमा ! दिट्ठकारणं कम्ममेत्थऽत्थि ॥ ४४० ॥
 एवं च हेउवाएयपयत्थादीहिं विच्छिण्णसंसओ अग्गिभूती पंचसयपरिवारो वि जहाविहिं पवण्णो पव्वज्जं ति ।

तम्मि य पवण्णे पव्वज्जं चाउभूई णाम तइओ दियाई समागओ णियविज्जाहिमाणी । आगंतूणं च भणिउं पयत्तो-भो
 महापंडिच्चाहिमाणि ! साहसु मे वेयत्थं ति । भयवया वि जहावट्ठिओ साहिओ सविसेसं । साहिए य तम्मि अवगयसंस-
 यचामोहो संपंचसयपरिवारो पव्वज्जं पवण्णो चि ।

तओ तं पव्वज्जमन्नुवगयं जाणिऊण चउत्थो भारद्वाओ णाम दियवरो णियजाइत्तणाहिमाणुप्पण्णामरिससामलिय-
 वयणमंडलो 'अवणेमि से पंडिच्चाहिमाणं' ति पंचसयपरिसाणुगओ समागओ भयवयंतिं । भणिउं च पयत्तो-भो भो
 माइंदजालिय ! साहसु महं किं पंचभूइवरित्तो जीवो णाम कोइ पयत्थो समत्थि ? चि । भयवया भणियं-देवाणुप्पिया !

१ "जावलेवु" सु । २ "रणयमई जे । ३ ॥ ॥ एतद्वस्तिनिहादारभ्य ४५९ गायानन्तरवर्तिगयविभागद्विस्तहस्तचिह्न(॥ ॥)मध्यगतः
 पालन्दर्भो जेपुस्तके नास्ति ।

अत्थि, जइ पुण जीव-भूयाणं एक्कया भवे मरणमेव ण भवे, अणहसरीरेण चेय सव्वया भवियव्वं, दिस्सए य मरणपज्ज-
वसाणो देवपरिष्फंदाइओ बावारो, अओ अवगन्तव्वं गोयम ! पंचभूइवइरित्तो जीवो त्ति । एवं च सो वि विचयत्तो अवग-
यसंसओ होऊण परिचत्तसयलविसयाइसंगवामोहो तहेव पव्वज्जं सपरिवारो पवणो त्ति ।

तम्मि पव्वज्जं पवण्णे सुहम्मो णाम माइणसुओ आगंनूण भणिउं पयत्तो-भो ! किं कोइ इहलोयवइरित्तो परलोओ
अत्थि ?, किं वा नत्थि ? त्ति । भयवया भणियं-अत्थि त्ति । इयरेण भणियं-कहमेयं मुणिज्जइ ? । भयवया भणियं-
तुह ताव पच्चक्खाणुभवो ण तीरेण काउं, अणुमाणेण पच्चओ भणेयव्वो, कह ? जेण दीसंति बहवे तुम्हाणं पि समए
दाण-त्तवोविहाणाइणो कुसलकम्ममव्वुवगया, जायस्सरणादीहि चोवल्लभए परभवुप्पत्ती, अओ मुणिज्जए 'अत्थि पर-
लोओ' त्ति, अण्णाहा णिरत्थया कुसलकम्मायरियव्वस्स जातीसरणस्स वेति । एवं च सो वि विच्छिण्णासंसओ सपंचसय-
परिवारो पव्वज्जं पवणो त्ति ।

एवमण्णे वि वासिट्ठ-कासव-कोसिया(य)-हरिय-कोडिण्णणामा य सपरिवारा विच्छिण्णणियसंसया पव्वज्जं
पवण त्ति ।

सव्वे [ते] दियवरगोत्तसंभवा पवरकित्तिसंपण्णा । सव्वे वि वज्जसंघयणकित्तिसामत्थयाजुत्ता ॥ ४४१ ॥
ऐकारसंगमुत्तत्थधारिणो विविहलद्धिसंपण्णा । असयरिद्धीए जुया हवन्ति छउमत्थभावे वि ॥ ४४२ ॥
पंचसयसंजुया पंच दोणिं य अद्भुत्तसयसमणियया । चत्तारि तिसयपरिवारसंजुया संजमं पत्ता ॥ ४४३ ॥
वोच्छिण्णा तत्थ दसाण संतती कालजोगओ इहइं । जाया सिस्साण सुहम्मसामिणो संतई एसा ॥ ४४४ ॥
णेव्वाणगया काले जिणस्स णव ताण गुणसमग्गाण । गोयमसामि-सुहम्मा णिव्वाणा णिव्वुए चीरे ॥ ४४५ ॥
इय सोहम्मपसिस्साइवित्थयं तित्थमेयमणवज्जं । अज्ज वि संजमपज्जन्तसंजयावज्जणसमत्थं ॥ ४४६ ॥

[केवलुप्पत्ति-] गणहरपव्वज्जाविहाणं समत्तं ति [१४] ॥



तओ तमंतरं चिय पव्वज्जं पवण्णेसुं गणहरेसुं भयवं अहाविहारेण गामाणुगामं विहरमाणो पुव्वविरुद्धचित्तरप-
डालेक्खदंसणुप्पणगरुयाहिलासेण भिय्यावइपत्थणाणिमित्तपेसियदूयपरिहवरणामरिसिएण पज्जोयणरवइणा रोहियं
कोसम्बि मुणिऊण 'इह बुज्झंति जंतुणो' त्ति गओ कोसंबिं भयवं । भयवन्ताइसयाणुहावओ य पसन्ता सयलजंतुण
वेरव(चे)ट्ठा । विरइयं मुराहिवेहिं पुव्वक्कमेणेव समोसरणं । कहं ?

वित्थरइ मुरहिपरिमलमंदोदोन्तविविहवणगहणो । अवहरियसक्करुक्करमुंदरो सीयलसमीरो ॥ ४४७ ॥
तयणंतरपउरासारणियरपरिसित्तमुहयदिसियकं । कीरइ घणेहिं परिसंतरयभरं महियलद्धन्तं ॥ ४४८ ॥
मुच्चइ परिमलमिलियालिवलयरुद्धन्तमुहलियदियन्ता । बेण्टट्टियवोसट्टन्तदलउडा कुमुमवरखुट्ठी ॥ ४४९ ॥
तक्खणणिम्माणियरयय-विमलकलहोय-एवरमणियडियं । विविहट्टालयकलियं कीरइ पायारतियवल्लयं ॥ ४५० ॥
शुल्लन्तचारुचामरकलावमुत्तावलीसणाहाइं । गोपुरमुहाइं चत्तारि चउदिसिं होति राहाइं ॥ ४५१ ॥
संठाइ सुंदरारुणविणीलदलबहलसहलदियन्तो । कंकेलिपायवो मुहपखयगंधालिकयसदो ॥ ४५२ ॥

हेद्विम्म तस्स पासत्थचमरधारोवहूयचमराइं । सीहासणाइं गयणत्थच्छत्तियवल्लयकलियाइं ॥ ४५३ ॥

इय णिव्वत्तियविच्छित्तिविहविधावलीकलाविल्लं । तियसेहिं णिम्मविज्जइ जयगुरुणो मुहसमोसरणं ॥ ४५४ ॥

एवं णिव्वत्ते समोसरणे भयवं मुरवइसव्वायरसहत्थगहियकट्टियाणिवारिज्जमाणकयजयजयासइसम्मइसुरगणो णिविट्ठो सीहासणे । जहोइयट्ठाणसंठिएसु मुर-णर-तिरिएसु पत्थुया धम्मदेसणा ।

एत्थावसरम्मि य वियाणिऊण मियावई भयवंतं समोसरणसंठियं गुरुवेरम्मग्गाणुगयमाणसा समागया भयवओ समीवं । वंदिओ सविणयं धरणिगलपणामिउत्तिमंगाए जयगुरु । णिसण्णा णाइदूरे । सोउमादत्ता धम्मदेसणं । दिट्ठो य तीए तत्थेक्कपप्से पज्जोयणरवती वि धम्मं मुणमाणो ।

कहावसाणम्मि य भणिओ य णाए पज्जोयणरवती—जइ तुमं भणसि तो अहं पव्वज्जं पव्वज्जामि । ‘तह’ त्ति तेणावि पडिक्खणं । तओ तस्सुच्छंगे णिवेसिऊण वालयं गया जयगुरुणो पुरओ । भयवया वि मुणिऊण तस्साहिप्पायं सह अज्जच्चंदणाए पढमपवण्णसिस्सिणियाए पव्वाविया मियावती, अण्णाओ य अणेयरायकण्णयाउ त्ति ।

तओ तयन्तियाओ जहाविहारं विहरमाणो गओ रायगिहं णयरं । तत्थ वलाहयगिरिसमीवम्मि कयसमोसरणवइ-यरो सेणियमहारायाट्ठिण्णसम्मत्तो जाणियसेट्ठिउत्तपुरिसदत्त-पिह्नुसेण-णंदिसेणकुमाराइणो पव्वावेऊण गओ सावत्थिपुरवरिं । तत्थ वि समवसरणक्रमेण पसेणइणरिंदपमुहे पडिवोहमाणो परिसंठिओ कइ वि दियहे । तत्थावसरम्मि य गोसाल-विसाल-विसाहिल-पारासरा पड्यमंत-रिद्धिसमणिया सव्वण्णुत्तणाहिमाणो परिब्भमन्ता संपत्ता तं चेव सावत्थिपुरवरिं त्ति । तेहिं च मन्त-तन्तोववेयवज्जरिद्धिसंपण्णत्तणओ माइंदजालिएहिं व अवियाणियत्तत्तसरूवो समाव-ज्जिओ बहुमुद्धजणवओ । तओ ते गोसाल-विसाहिला विज्जावलगव्वमुव्वहमाणा दप्पुत्तुत्तणओ समागया भयवंतियं, सहिययाहिप्पेयं पुच्छाओ य काउं पयत्ता । तओ समहिगयपुच्छियत्थस्स विदियत्तणओ तेसिं ‘एस सव्वण्णु’ त्ति णिव्विसंकं कलिऊण सयलो वि जणवओ परिसेसिऊण गोसालादी भयवन्तं पज्जुवासिउमादत्तो । अहवा—

सव्वण्णुत्तणणावावलोयकलियस्स ते भुवणगुरुणो । खज्जोयफुलिंगा भाणुणो व्व ण लहन्ति परभायं ॥ ४५५ ॥

तेट्ठोकोयरविवरं पि जस्स णियकरयलामुलसरिच्छं । पडिहाइ तस्स गणणा का कीरइ इयरपुच्छाहिं ? ॥ ४५६ ॥

एवं चिय णूण सरूवममर-वरकेवलावलोयस्स । लोया-ऽलोयन्तो अ(ण)त्थि जेण ण हु अमुणियं किंचि ॥ ४५७ ॥

णिइलियऽण्णाणतमेण विमलविप्फुरियकेवलकरेण । उज्जोइज्जइ भुवणं जयगुरुणा दिणयरें व ॥ ४५८ ॥

इय णिम्मलय[र]मुहयंददंसणुज्जोइयम्मि भुवणयले । आणंदिज्जइ लोओ जयगुरुणा ससहरेणं व ॥ ४५९ ॥

इय वट्ठमाणचरिए गणहरूप्पत्ती [मियावईपव्वज्जा य १५] ॥

✽

इओ य सो पज्जोयणरवती जयगुरुप्पहावपडिसन्तवेरवंधो दट्ठूण मियावतीए णिययंकपक्खित्तं वालयं, मुमरिऊण ‘इमिणा वालएण समं भलेज्जमु’ त्ति तीए जंणियं, कलिऊण भयवओ धम्मदेसणाहितो संसारविलसियं, दट्ठूणं च कोसंबिं पुरिं समन्तओ वित्थि(च्छ)णपज्जो(वज्जो)हारप्पसरं पक्खीणप्पायजवसिधणाऽऽहारिण्णफुरं समंतओवरोहत्तणो-वरुद्धजणणिग्गम-पवेसं अकयदेवया-ऽतिहिपूओवसंपाइयसरीरथिइं णियपियपरिचत्तं व पणइणिं परं पच्छायावमावण्णो चित्तिउं पयत्तो—“अहो ! एस रायत्तणाहिमाणो ण खलु सव्व-या णिव्वट्ठिमावहइ । ता सूरकिरणप्पहापरिक्खित्तो

व्व दिणयरो अवस्समत्थंतरावसाणो । जेण नियबलपयत्तपरिपालिया वि 'दूसीलमहिल व्व वियारं जणेइ रायलच्छी, दुद्ध-
पिसाइय व्व छिहण्णेसणपरा, पवरवेस व्व अबन्तदुवखोवयरणीयसरूवा, खलविज्जुलेह व्व खणदिट्ठणट्ठदंसणा, सरय-
संघभरोय व्व मुहुत्तरमणीया । को वा इमीए दुरायाराए ण चेलविओ ? । जेण पेच्छ परिवियडकरिघडापरिवालिया वि
दूरमवक्कमइ, तरलतुरयस्वरलुरुवस्वेवक्कमणीय व्व सिग्घमोसरइ, णवणिसियस्वग्गग्गभाराविच्छेयणाहित्य व्व विवलाइ,
कमलवणसंचरणणालकण्टयालग्गवियणाविय व्व ण कहिचि थिरवयं नियमेइ । अवि य—

एसा अचंतावद्धमूलमुविणिचला वि चलणम्मि । करिणो कण्णचैमेड व्वऽकारणण्णमभिलसइ ॥ ४६० ॥
अणुरायणिभरा वि हु पयत्तमन्तोववासिया वि दहं । णासइ कयंजलिवुडं पणया वि पओससंघ व्व ॥ ४६१ ॥
पमुहरसियाऽवसाणे विरायविरसा चलुब्भडसहावा । पिसुणपयईण पीइ व्व होइ णो णिचला धणियं ॥ ४६२ ॥
पडुपवणवमुव्वेळिरपडायपंती वि कह वि होज्ज थिरा । ण उणो एसा अणुरत्तपयइपरिवालिया वि दहं ॥ ४६३ ॥
पयईए दिप्पमाणा वि ण्णमचन्तमणहरपया वि । पज्जन्तजलणजाल व्व णवर जलिऊण विज्जाइ ॥ ४६४ ॥
गंभीरुब्भडपैरिपुण्णवियडपत्ता पयड्हियप्पसरा । रिता जायइ भरिया वि सरयसरिय व्व कालेण ॥ ४६५ ॥
पइदिणपडिचरणसओवैवि(रि)ज्जमाणा मुणिम्ममत्तेसा । परपुट्ठव्व परिचयइ णिचपोसिज्जमाणा वि ॥ ४६६ ॥
इय एयाए तणग्गावलम्बिजललवसहावतरलाए । इह अत्थि रायलच्छीए भणमु को वा ण जूरविओ ? ॥ ४६७ ॥

ता मए वि कह पेच्छ अणिलवमुव्वेळणलिणिदलडोवट्टियजललवचवलाए चिय इमाए कए एसा पुरवरी
खलीकय ?" ति । तओ विमुक्कावरोहणं काऊण पुरवरिं, अहिसिंचिऊण निययरज्जम्मि उदयणकुमारं, "समोप्पिऊण
मंतिपुरस्सराणं सयलपण(य)तीण गओ निययरज्जम्मि ।

इय बद्धमागसागिचरिण उदयणपरिट्ठावणं णाम [१६]



अणया य भगवं समुरा-ऽसुरणमंसिओ जहकममणुग्गहंतो भव्वजणजंतुसंघाए समागओ रायगिहं पुरवरं ति । तत्थ
पुव्वक्कमेणेव णिव्वत्तिए सुरगणेहिं समवसरणे सयलजोइवस्वक्काहिवड्ढो सुर-ससहरा पुव्वभवावज्जियसम्मत्तसंपत्तिदिव्व-
रिद्धिसंभोयपरितोसा जयगुरुवंदणणिमित्तुप्पण्णभेत्तिणिभराणुराया चित्तिउं पयत्ता-सव्वे वि एए सुरा-ऽसुरगणा कय-
कारिमजाण-विमाण-परियणाइविहिविच्छडुप्पसरा वचन्ति जयगुरुणो वंदणणिमित्तं, अम्हे उण कीस साहीणे वि नियय-
जोइप्पहापरिगयम्मि विमाणरयणे" सविमाणा वंदणत्थं भयवओ ण वच्चामो ? । चि मंतिऊण पयट्ठा दो वि दिणाहिंवे-
तारयाहिवड्ढो सविमाणा चेव भयवओ समीवं । ओइणा निययप्पएसाओ । ओयरमाणं केरिसं विमाणजुंवल्लयं दीसिउं
पयत्तं ? , अवि य—

णिम्मलपहापरिवस्वकिरणजालाकलावसंवलयं ! विमलमणिमित्तिपज्जत्तकंतिचित्ताहिरीं हिहं ॥ ४६८ ॥
धोइंदणीलमणिमयसंभुब्भडघडियवियडपम्भारं । लद्धपरमायवरसालमंजियारूवयविसालं ॥ ४६९ ॥
वेयवमुव्वेळपयल्लणिविडघण्टाविसट्टंकारं । दारद्वियमंगलकलसवयणवियसन्तकमलिहं ॥ ४७० ॥
उव्वेळत्तरलचूलौवलंविघोल्लतचारुचमैरंचयं । उद्धणिवद्धुद्धयविहिवण्णविधुद्धुरालोयं ॥ ४७१ ॥

१ दुस्सोल जे । २ "राइ व्व सु । ३ "चवेड जे । ४ "पडिपु" सु । ५ "वज्जमाणा सु । ६ एसाए जे । ७ समप्पि" जे । ८
"लपईण जे । ९ "भसिभरा" सु । १० "जे कीस सवि" सु जे । ११ "व-रुहिव" जे, राइभहिव"=राहिव" चन्द्र इत्यर्थः । १२ "जुयलं
जे । १३ "अवि य" इति सुपुस्तके नास्ति । १४ "रामिहं जे । १५ "लाविलम्बि" सु । १६ "स्वयं जे ।

इय विविहसुंदरीवंद्रसुंदरुदामसोहसंपुण्णं । वज्जन्तवहुविहाउज्जगेज्जरुइरं णहाहिन्तो ॥ ४७२ ॥

एवं च वेयवसोवयणविहलतुरयपग्गहायड्डणाहित्थसारहिभयणिउंचियग्गीवोससंतघोणग्गलग्गवियडोरत्थलपेल्लणुव्वे-
ल्लघडियविहडन्तमेहमंडलं मेहमंडेलोम्वकसिसिरसीयरासारपसण्णमहिरयं समोइण्णं विमाणजुंवलयं ति । तओ दूराओ चैव
सविम्हयक्खित्तसुरा-ऽसुरपलोइज्जमाणा तरणि-ताराहिवड्ढो तिपयाहिणीकाउं पणमिऊण तेलोक्केकल्लवंधवं जयगुरुं णिसण्णा
जहोइयट्ठाणे । भगवया वि धम्मसवणुमुयं परिसं मुणिऊण पत्थुया धम्मदेसणा । कह ?—

जह जीवो गुरुपाणाइवायवड्डन्ततिव्वववसाओ । अबन्तकिलिद्धाणिद्वदुद्धकम्मं समज्जिणइ ॥ ४७३ ॥

जह णियसयत्थवित्थरियचप्फलालावजंपिरो धनियं । बंधइ अविमुद्धमणो खणेण पावं जणं जंतू ॥ ४७४ ॥

जह णेयचोरिया-बंधणेकरसिओ परं विलुंपंतो । आवज्जइ असमंजसमवज्जमोजल्लयाए जिओ ॥ ४७५ ॥

जह अबन्तमणोहरकयपरमहिलापसंगदुल्लिओ । अज्जिणइ कुगइगमणोवउज्जममुहं विमूढप्पा ॥ ४७६ ॥

जह गरुयारंभपरिग्गहेण संगलियधण-कणणिहाओ । संचइ दुच्चरियव्वंतचरणचित्तोऽमुहं विउलं ॥ ४७७ ॥

जह कोह-माण-भाया-लोहविलुंपंतमुकयपरिणामो । अप्पाणं णरय-तिरिक्खगमणजोमां जिओ जणइ ॥ ४७८ ॥

जह वज्जियसव्वावज्जसंजमुज्जोयजणियमुहझाणो । जीवो [उ] सुर-णरसुहाणुसंगिमत्ताणयं जणइ ॥ ४७९ ॥

इय जह णिदलियासेसकम्ममलपडलपंकपम्मुक्को । जीवो पाचइ अबन्तसासयं पवरमुत्तिमुहं ॥ ४८० ॥

एवं धम्मकहावसाणम्मि ते दिणयर-ससहरा कयपयाहिणा पणमिऊण जणककप्पतरुपायवं जिणं विमलयरकरणिय-
रजालाकलाक्कविलियदिसावलयया दिसावलयविवरूपरणोवओग्गाहिद्वियविमाणरयणा विमाणरयणंतरुल्लोयपहल्लंतमुत्ताह-
लोउल्लावल्गपलम्बविमलमणिगोच्छुच्छया मणिगोच्छुच्छयाऽऽहउच्छलियरणज्झणंतकलकिंकिणीरवा किंकिणीरवसणा-
हपवणुद्धुयधवलधयवडा समुप्पइया समोसरणाओ । संठिया तमालदलसामलम्मि णहयलाहोए । गया य णिययवसइ ।
तं च तहाविहमणुण्हयपुव्वं पुलोइऊण सुर-णरा परं विम्हयमुवगया । विम्हउप्फुल्लोयणा य परोप्परं मंतिउं पयत्ता
जहा-अच्छरियमेयं । अहवा 'अणंतकालेण होति चिय अच्छरियाइ' ति कलिऊण जहागयं गया परिसा ।

इय चद्धमाणसामिचरिए ससि-सूरागमणं [१७] ॥



अह सो वि गोसालो बालतवसमावज्जियं तेयमुव्वहंतो जत्थ जत्थ भयवं अहाविहारेण संचरइ तत्थ तत्थ 'अहं
चेय सव्वण्णु' ति अत्ताणयं पसंसन्तो परिव्वमइ । अण्णया य एक्कस्सि समवसरणणिसण्णस्स भयवओ समागओ, पुच्छं
च काउमादत्तो । तओ सुर-णरसणाहपरिसासमक्खं विहलणाणाहिमाणी कओ । अण्णया य भिक्खुसव्वाण(णु)भूईहिं
समं विवाओ संजाओ । तओ विवायवमुप्पण्णकोवाइसएण य पक्खित्ता ताणोवरिं तेउलेसा, तेहिं पि तस्स सतेउलेस
त्ति । ताणं च परोप्परं तेउलेसाणं संपलगं जुज्झं । एत्थावसरम्मि य भयवया तस्सुवसमणणिमित्तं पेसिया सीयलेसा ।
तओ सीयलेसापदावमसहमाणा विवलाया तेउलेसा, मंदसाहियकिच्च व्व पयत्ता अहिद्विउं गोसालयं । णवरमसह-

१ 'डुल्लमुक्क' जे । २ 'जुयलं' जे । ३ गाथेयं जेपुस्तके नास्ति । ४ जह जह णिं जे । ५ 'कवलिय' जे । ६ एक्कसि जे ।

७ 'वाहिवाणी' जे । ८ 'मंदिसा' जे ।

माणो तेयजलणप्पहावं समल्लीणो जयगुरुं । जयगुरुचलणप्पहावपणद्वोवसमापसरो य संबुद्धो पयत्तो चित्तिउं-हा ! दुद्ध
मे कयं जं भयवया सह समसीसिमारुहेतेण अचासायणा कया । एवं च पइदिणं णिदणाइयं कुणमाणो कालमासे कयपाणे-
परिचाओ समुप्पण्णो अच्चुए देवलोए चि ।

गोसालसंचोहणं [१८] ॥



भयवं पि अण्णया जहाविहारेण विहरमाणो संपत्तो रायगिहं पुरवरं । सुरकयसमोसरणाइपुव्वकमो णिसण्णो
सीहासणे साहिउं पयत्तो दयइभूल धम्मं । एत्थ पत्थावम्मि य सेणियणराहिवो भगवंतं समोसरणसंठियं सोऊण विणि-
ग्गओ वंदणत्थं जयगुरुणो । कह ?—

अह चल्ह चलियसामन्तपहयठकाणिणायसंबलिओ । वरंवदिसइअमंदुच्छलन्तवहुजयजयासहो ॥ ४८१ ॥
दोघट्टपयट्टमरट्टयट्टकयकंठगैजियणिणाओ । गुरुदंसणसम्मदुच्छलन्तघणघडियघणसहो ॥ ४८२ ॥
तोरेवियतरलतुरयुच्छलन्तसुरखयस्वमायलरओहो । संचलपकपाइकचककयहलहलारावो ॥ ४८३ ॥
इय धरियउद्धवलायवत्तकयमउलिमंडलाहरणो । णीहरइ वारविलयाचलचमरपसामियरओहो ॥ ४८४ ॥

एवं च पत्थिण्ण सेणियणराहिवेण दिट्ठो एकचलणावट्टमणिमियसयलंगहारो उद्धसमुक्खित्तोभयभुयानुवलो ज्ञाण-
वसणिमियणिचललोयणप्पसरो णिप्पयंपत्तणतुलियकुलमहिहरो पडिमासंठिओ रायरिसी पसण्णचंदो । दट्ठणं च तं अंतो-
वियंभिउहामहरिसैवसपयट्टन्तपुलयपडलो समोइण्णो जाणाओ सेणियणराहिवो । गओ जत्थ भयवं पसण्णचंदो ।
पणमिओ य सविणयपणामियकरयलंजलिसिरेण राइणा । वंदिऊण पत्थिओ जयगुरुसमोसरणट्ठाणं । एवमण्णे वि महा-
सामन्त-तलवग्गाइणो 'राइणा वंदिय' चि कलिऊण कयसविणयोवयारा वंदिऊण पुणो पत्थिय चि ।

ताव य तत्थ संपत्ता तस्स चेय राइणो भिचा सुमुह-दुम्मुहाहिहाणा । तत्थेकेणं भणियं-एसो मुणिपसण्ण-
चंदपत्थिवमहरिसी, तओ एयस्स वंदणेण पक्खालियकलिमलं अत्ताणयं करेमो चि । वीएण संलत्तं-किं मे एयस्स
वंदिज्जइ ? अदट्ठवो सु एसो, कहं ? जेण पेच्छ कमागयं रज्जं अणहिगयणीइसत्थस्स अदिट्ठसमरारंभविब्भमस्स णिय-
यतणयस्स बालयस्स समोप्पिऊण पक्खणो पव्वज्जं, इमं च गहियदिकखाविहाणं वियाणिऊण एयस्स गोत्तिएहिं आगंतूण
सयलवलसामगिएहिं रुद्धं एयतणयस्स पुरवरं, पडिरुद्धो पुरजणवयाण णिम्मम-पवेसो, भग्गो पज्जोहारो, तओ सो
[स]पुरजणवओ पक्खीणप्पायजवसिंधणो परं विसायमावण्णो, तं च तद्वाविहं दट्ठण सो रायकुमारो किंकायव्वमूढमाणसो
संजाओ चि, अओ भणामो 'किमेएणं वंदिएणं ?' । ति भणमाणा दो वि बोलीणा तयंतिएणं ।

तं च सोऊण मुणिपसण्णचंदमहरिसिणो विम्हरिओ अप्पा, पम्हुट्ठो गुरुजणोवएसो, अइकन्तो विवेयावसरो, विमु-
मरिओ जइत्तणारंभो, पयडिहउं पयत्तो मणम्मि कोवाणलो । चित्तिउं पयत्तो—"ण केवलं सो कुमारो सारीरसामत्थया-
रहिओ पाएण मंतिमंडलप्पमुहपयइपम्मुको य, अण्णहा इमेको परं तत्थ ण साहीणो । अण्णं पुण तयवत्थं चेव तस्स समो-
प्पियं मए । अहवा सव्वं पि तं पडुपरिसेसियं ण किंचि चि । ता सो बालसरूवो कुमारो अदिट्ठपरचक्कविब्भमो अणहि-
गयसमरारंभो । जइ पुण अहं तत्थ भवेज्ज ता सुसज्जियकव(वि)सीसगगमणिमग्गं अट्ठालयावलग्गिज्जंतधौणुक-
परियम्मं परपुरिसालंघणिज्जं पुरं काऊण, अप्पणा वि एकओ घणगुडियघेडंतगयघडावीटणिवहो, अण्णओ सव्वावरण-

१ 'णभाओ' सु । २ 'वरंवदिविदसदुच्छ' जे । ३ 'गजियणिणाओ' सु । ४ 'जुयलो' जे । ५ 'सपय' सु । ६ 'जत्ताणं' करेमि जे ।
७ 'समण्य' जे । ८ 'सामग्गोहि' सु । ९ 'बोलीया' तस्संति' जे । १० 'पारेक' सु । ११ 'वणंत' सु ।

पहरणादिद्वियपयदन्तरहवरुग्याओ, एकओ सपक्खरापरिगयतुरयखणखणारावगन्मिणुद्धावियारोहो, अण्णओ हणहणासद-
गन्मिणुद्धमडमुहडघडन्तपडिमडो समरवावारपडियिरो होऊण परवलमसमंजसं पढारेहिं करेज्जं ति । कइ ?—

वियडकवोलयलमलन्तमयजलंधलियलोयणवहं पि । णीहरियसोंडदंडग्गसीयरं वरगयाणीयं ॥ ४८५ ॥

वेउदधुरदुद्धरतुरयखंधपज्जुत्तसंदणणिहायं । हिययपडित्थिरवरजोहपहरणावरणकलियं पि ॥ ४८६ ॥

विसमुद्धाइयसण्णद्धदुद्धारोहकयहणकारं । रणदक्खपक्खरुक्खित्तखरखुरं तुरययहं पि ॥ ४८७ ॥

दूरुल्लसंतवावल्ल-सेल्ल-कयखग्गखरखणकारं । तमुद्धोत्थरन्तपरांतरल्लवडिक्कं पि ॥ ४८८ ॥

पेतिदिणपयडिहयण्णवूहविण्णासविरयणपरं पि । ओहरियपहरणं दुसहमोत्थरन्तं पराणीयं ॥ ४८९ ॥

भग्गम्मि वि णिययवलम्मि हिययपसरन्तसाहससहाओ । एको चिय अहयं समरसमुहणिकंपथिरचित्तो ॥ ४९० ॥

णवणिसियमंडलग्गाहिघायदेहाविउट्ट(ट्ट)भडदेहो । कोटिं लक्खं च सहस्समेकपुरिसं व मण्णंतो ॥ ४९१ ॥

इय जुज्झंतो^१ हं घडियगयघडुद्धाममुहडचकेण । परसेण्णेण समं समयमुक्कपहरणणिहाएण ॥ ४९२ ॥

अण्णं च समोवयंतो मइंदो व्व रिघुघडासुं, पलयजलणो व्व संदणधुरासुं, दुव्वाउ व्व समोत्थरन्ततरल्लतुरययट्ठेसुं,
कुवियकयंतो व्व मुहडसंघाएसुं” ति ।

एवं च णिययमणे चेव तस्स पसण्णचंदमहरिसिणो जुज्झन्तस्स बोलीणो तमुद्देसं सेणियणराहिवो । संपत्तो य
समोसरणभूमिं । दूराओ चिय त्रिमुक्कजाण-छत्ताइरायचिंधो पयट्ठो समोसरणं । तिपयाहिणं वंदिऊण जयगुरुं णिसण्णो णाइ-
दूरप्पएसे । कहावसाणम्मि ये मुणिपसण्णचंदमुद्दिसिय पुच्छिउं पयत्तो जहा-भयवं ! एवं ज्ञाणोवगयस्स का गती मुणि-
पसण्णचंदस्स ? चि । भयवया भणियं-अहो सत्तमपुटवीए । पुणो वि कइंतरे पुच्छिएण भणियं भयवया-तिरिपमु ।
पुणो वि कइंतरम्मि पुच्छिएण साहियं गुरुणा-मणुएमु । पुणो वि देवेसुं, जाव केवलं समुप्पण्णं ति ।

एत्यावसरम्मि य सविम्हयपयत्तपुलयपसरेण पणमिऊण सेणियराइणा भणियं-भयवं ! किमेदहमेवमंतरं ? किं वा
मह चेयं कुस्सुई संजाया ? । भयवया भणियं-“ण तुमए कुस्सुयं, किंतु तुज्झ समागयस्स भग्गओ तुहसंतया चेयं दोणि
पयाइणो तेणुदेसेण समागया । ताणं च वयणवडयरुप्पण्णगरुयामरिसवसपयत्तसमरारंभस्स संकप्पणामेत्तंविणिद्वियसयल-
त्थस्स गैरुयक्खेयपरासुसियसिरत्ताणस्स लग्गं करयलम्मि भुंडमुत्तिमंगं । तओ तप्फंसपचागयमुमरणेण चित्तियं च-क-
त्थाहं ? , कैत्थ वा मह सुओ ? , कहिं वा अचन्तावत्थविरुद्धं मह ववसियं ? । एवं च समुल्लसन्तजीववीरियमुहज्झवसाणो ‘हा
हा ! दुट्ठ मे चित्तियं’ ति णिदण-गरहणाइपयत्तधम्मज्झाणाणंतुरुप्पण्णमुक्कज्झाणारोहणुप्पाइयकेवलणाणो संवुत्तो । अओ
एयस्स अज्झवसैयावत्थाविसेसामु पुच्छिएण तुमए मए एवं संलत्तं ति । ता ओ णराहिव ! अज्झवसायविसेसमूलो खु
जीवाणं मुहा-उमुहकम्माणुबंधो” । मुणिऊणं च भयवओ णपियं णराहिवो : अन्तोवियम्मिउव्वमडविम्हयप्पसरो वंदिऊण
जयगुरुं पविट्ठो पुरवरं ति ।

इति वद्धमाणसामिचरिए पसण्णचंदस्स केवलणाणुप्पत्ती [१९] ॥



अह पुरमइगयम्मि णराहिवे अभयकुमारो पणमिऊण सैमवणओ पुच्छिउमादत्तो-भगवं ! एसो हु मेहकुमारो
सव्वजणणयण-मणहरणरुवो वि अचन्तसीलालंकारोववेओ केवलं इत्थिसिक्खावियारणिरओ इत्थिवावारपरायणो य इत्थि-

१ पहरणपराहियं जे । २ उद्धमडं जे । ३ ‘तो मंतो पडि’ सु । ‘तो हंतो पडि’ जे । ४ जुज्झमाणस्स जे । ५ य पयं सु ।
६ वन्तरं सु । ७-८ चेव जे । ९ ‘तथिणिच्छिव’ सु । १० गुरुयक्खेयपरां सु । ११ कहिं सु । १२ ‘साणाकया’ जे । १३ समोणओ जे ।

साहणमज्झमि चेव णिवसइ, सव्वसत्तदयालू वि अरण्ण-गिरि-सरिया-सरोयरविहारणिरओ, हेमंते वि सेयं चिय संपलगा-
दवग्गिविज्झावणरई, करिवरो व्व सद-फरिसरई धिमियकरियाकलावचेट्ठो य, पतिदिणं च करिवरज्जहालेक्खविस्वत्तमा-
णसो दिवसे गमेइ, ता किमेयमेयस्स ववसियं ? । ति पुच्छिण्ण भयवया भणियं—“भो देवाणुप्पिया ! अत्थि इहाइकंतचउ-
त्थभवन्तरे एसो मेहकुमारो धियडगिरिकडयकुडनिविडाम्म उद्धुद्धाइयंतुगतस्संकडिळ्ळिम्म बहुसावयसहस्ससंकुलम्मि
विज्झाडइरण्णगहणम्मि आसि पंचसयज्जहाडिर्वई करिराया । अणेयकरिणीपरियारिओ सच्छंदविहारणिरओ विचित्तकी-
लाहि कीलमाणो विहरइ । अइकंतो कोइ कालो ।

अण्णया य पच्छिमदसाए बट्टमाणो जलावगाहणत्थमोइण्णो एक्कं महासरवरं । तर्हि च णिउड्डो अगाहे पंकम्मि । तओ
वयपरिणामत्तणओ सरीरस्स, णित्थामत्तणओ अवयवाणं, तओ णिगंतुमपारयन्तो एक्केण तरुणगयकलहेण ईसावसवेईस-
मुच्चवहेतेण तहा तहा दसनप्पहारेहि भिण्णो जहा तेत्थेय पंचत्तमुवगओ ।

पुणो वि तहाविहकम्मजोएण तम्मि चेव” जूहम्मि गयकलहेत्ताए समुप्पण्णो । वडिडओ कमेणं । जाओ य सयल-
ज्जहाडिर्वई । णवरि य संपलग्गम्मि वणदवे कर्हि पि गंतुमपारयन्तो दड्डो दवग्गिणा ।

मओ समाणो कम्माणुहावेओ जूहम्मि चेव गयत्ताए संजाओ । अइक्कंतो वालभावं । संपत्तो जोव्वणं । जाओ ज्जहा-
डिह्वी । जहिच्छं हिडमाणो पत्तो तमुद्देसं जत्थासि वणदेवदाहेण य दड्डो ति । तं च दट्ठणं पपसं इहा-उपूढ-भग्गणं
कुणन्तस्स समुप्पण्णं जाईसरणं । सुमरिओ पुव्वभववइयरो । सुमरिऊणं च इओ तओ परिब्भमन्तेण आजोयणमेत्ते धरणि-
मंडले चलणचप्पणापणासियतण-कट्टणियरं दवग्गिभयरक्खणक्खममेकमुद्देसं कयं । तओ तर्हि जहिच्छाविहारकीलापसत्त-
चित्तो सच्छंदमच्छिउं पयत्तो । अगणियासेसोवइवमओ य अहाकवलं सुवित्तिकप्पणाए य गयं पि कालं ण लक्खेइ ।
जाव संपत्ते गिम्हसमए, विप्फुरन्ते तरणिकरणियरे, सुव्वंते ”वीरियाणियरविरुए, सव्वओ पवट्टमाणानुं शल्लल्लकासुं, एक्क-
म्मि दिणे मज्झणसमए मारुयपहट्टणुव्वेळवंससंधामुट्ठिओ समंतओ संपलग्गो वणदवो । केरिसो य ”सो ?—

अविरलजलंतजालाकलावसंवलियसयलदिसियको । कालो व्व कवलितं वणवणंतराले समकमइ ॥ ४९३ ॥

सविसेससंपलगंतवंसफुट्टन्तकयतडकारो । दूहसददुद्धाइयकुवियकयंतट्टहासो व्व ॥ ४९४ ॥

णिवडन्तदड्डवणदुमविसदविसट्टन्तमीसणफुलिंणो । अमरिसवसन्तउव्विडिमभिउडिभीसणपहोहो व्व ॥ ४९५ ॥

उद्धणिवद्धुद्धयधूममंडलावरियंवरहोओ । कैसणच्छविसंछाइयदियन्तरो णिसियरोहो व्व ॥ ४९६ ॥

इय सव्वत्तो चिय सयलजंतुसंताणपरिगयमरणं । णिडुहमाणो वित्थरइ विज्जुपुंजो व्व वणदाहो ॥ ४९७ ॥

अवि य—

जलियजलणजालमालो मुदिप्पंतसत्तासओ, पउरपडियपायवुप्पण[? सं]सइसंतासओ ।

वणयरविहिहंमुहुम्मुकरावोहसंखोहओ, चियरइ वणदावदाहो थिराणं पि सम्मोहओ ॥ ४९८ ॥

तओ पडन्तपायवं, पयाववडिडयायवं । रसंतमूदसंचरं, रओहधूसरं परं ॥ ४९९ ॥

विसट्टभीमणीसणं, जलंतजालभीसणं । मइंदसइकारुणं, फुलिंजालयारुणं ॥ ५०० ॥

धुरुक्कमाणसूररं, पलाणपुल्लिमायरं । पणट्टदुट्टचित्तयं, भओवरुद्धचित्तयं ॥ ५०१ ॥

विसण्णवुणरोज्झयं, भयाउराविसज्झयं (?) । ससंगेसंगसंगयं (?), वणं दवेण संगयं ॥ ५०२ ॥ ति ।

एवं च णिडुहमाणो सयलदियंतरालं संपत्तो तमुद्देसं” जत्थ सो गयज्जहाडिर्वई । सो वि करिवरो दट्ठण वणदयं

१ सइ जे । २ “विज्झवण” स । ३ दिपसं स । ४ “जणिवविग्गम्मि उ” स । ५ “परिवारिओ जे । ६ “दसामु वत्तमाणो स ।
७ महासरं स । ८ “वेहयसु” स । ९ तत्थेय जे । १० “व गयवइ” जे । ११ “हइत्ताए जे । १२ “वओ गयवइम्मि जे । १३ “दव-
दव्वो स । १४ “वीरिया” जे । १५ सो दोसितं पवतो !—अवि” जे । १६ कसिणं जे । १७ “हमुक्कम्मकरा” जे । १८ पलायउ” जे ।
१९ “गय(इल्ल)कसंगयं स । २० “सं । तत्थ सो गयज्जहाडिर्वई दट्ठण स ।

संठिओ पुव्वपरियप्पियम्मि पएसे सज्जपरिवरो । संठियस्स तमुहेसम्मि जूहाहिवइणो जह जह दवाणलो आसण्णीहोइ
तह तह सेयला वि सावयगणा चिरपख्खंराइं पि विम्भारिउण विरोहिणो । वे समं चय समल्लीणा गयज्जहन्तरालम्मि ।
जलणदाहभयाउरेहिं च णिव्विवरीकओ सो पएसो करिकुलगचंतरालं विसंतेहिं । तहिं च एको अलद्धावयासो ससो जूहा-
हिवइसमीवं समल्लीणो । एत्थावसरम्मि य करिणाहेण सरीरकंहुयणणिमित्तमुप्पाडिक्कचलणप्पएसन्तरालमवल्लोइउण
संठिओ तत्थ ससो । करिरायां वि मुणिउण तं तत्थावट्ठियं अणुकंपागयमाणसो तह चेव तिरुईए संठिओ । कहं चिय ?—

कंडुयणणिमित्तमुप्पाडिक्कचलणावयासमल्लीणं । "वट्ठंतससं" वड्ढंतहिययपरिओसपडहच्छो ॥ ५०३ ॥

अंतोवड्ढन्तदयापरिणामसमुल्लसंतलेसिल्लो । तिरुईए संदोलणपयत्तकौडलियसौडग्गो ॥ ५०४ ॥

संठाई तमुक्खिक्कम्मि णिययचलणम्मि णिप्पयंपमणो । णिहसे सत्तं चिय संठवेइ अधिरं पि थिरचित्तं ॥ ५०५ ॥

संकुइयक्कचलणस्स पवरजूहाहिवस्स वचन्ति । पज्जलमाणे दावाणलम्मि राइंदिया सत्तं ॥ ५०६ ॥

सव्वत्तो णिव्वाणम्मि दड्ढदड्ढव्वयम्मि जलणम्मि । बोलीणम्मि समन्ता जहागयं सावयगणम्मि ॥ ५०७ ॥

पायट्ठाणं दट्ठण सुण्णमविमुण्णणिहियकारुण्णो । "वमुहायलम्मि चलणं" णिमेइ किर कलियकयकिच्चो ॥ ५०८ ॥

"णवर ण सकइ संकोयणुब्भट्ठप्पण्णतिव्ववियणिल्लं । काउण उज्जुयं परहिक्ककज्जुज्जओ सहसा ॥ ५०९ ॥

इय ताव तिव्ववियणपरिणामुप्पण्णणीसहावयवो । पडिओ गलन्तसत्तो धरायले पवरकरिणाहो ॥ ५१० ॥

तओ निवडिओ समाणो गरुययाए णिययगत्ताणं, परिसंतयाए सयलावयवाणं, णीसहंताए समुच्छाहस्स, विसण्ण-
याए चित्तपरिणतीए, परिक्वीणयाए आउयस्स, उट्ठेउमपारयंतो किलिस्सिउण कइवयदिणे पंचत्तमुक्खगओ सो । देवाणु-
प्पिया ! हिययंतल्लसन्तदयापरिणामसंजणियसोमलेसाणुहावओ समुप्पण्णो चेल्लणाए महादेवीए कुच्छंसि । जाओ
कालकमेणं । पड्ढावियं च से णामं मेहकुमारो ति । वडिहओ देहोवचणं कलाकलावेणं च ।

ता सो तस्स पुव्वभवकयगयकील्लाविसेमुप्पण्णतव्विहपरिणामो अणुदिणं तहचेट्ठो चेय विहरइ ति । ऐवं च तस्स
पुव्वभवैवासणाणुरूवं ववसियं लेमुइसेण तुह मए सिट्ठं" ति ।

एयं च णिसामिउण भयवओ साहियं अन्तोवियम्भन्तहरिसपसरो वंदिउण जयगुरुमइगओ [अभओ] पुरवरं ।
गया कइ वि दिणा ।

अण्णया य जणरवाओ मुणिउण पुव्वभवसंबद्धं णियपउत्तिं हियैअंतोसमुल्लसन्तवेरग्गवासणो चित्तिउं पयत्तो मेह-
कुमारो—एक्कजंतुमेत्तदयापरिणामस्स एरिसविहवत्थरे कुलम्मि मह समुप्पत्ती, जे उण जइणो महाणुहावा णिरवज्जसं-
जमावज्जियमुहसमूहा ते णिस्संसयं णिव्वाणं पावेंति ति । तओ सो समुज्झिउण सयलविसयवासंगवामोहं, कलिउण
तडितरलमाउविलसियं, संझम्भरायसरिसं विहवपैरिणइं, सरयकोज्जयपसूयविब्भमं जोव्वणारंभं, हिययकयसामण्णग्गहण-
ववसाओ समागओ अभयकुमारसमीवं । भणिउं च पयत्तो जहा—"इच्छामि अहं तुंवेहिं अब्भणुण्णाओ पव्वज्जं
पव्वज्जिउं जयगुरुणो समीवम्मि, मुणिओ य तुम्हेहिं मह पुव्वभववइयरो भयववार्हितो, ता तइया मया तिरियत्तणम्मि वि
पाणिघाओ रक्खिओ कहमियार्णि मणुयत्तणे लद्धसण्णो होउण पाणिणो ण रक्खिस्सं ? ति । कह ?—

जेण णे तीरइ गेहम्मि पाणिरक्खा खणं पि काउण । छिप्पइ जो उयएणं उययस्स कहं ण मज्झत्थो ? ॥ ५११ ॥

बहुविहपरिग्गहासंगलोहवट्ठन्तमूढमइमग्गो । कह तरइ पाणिघायाइरक्खणं परियणारंभो ? ॥ ५१२ ॥

आमिसलोहेण मुणाइणो वि वट्ठन्ति पाणिघायम्मि । मुक्कविसया-ऽऽमिसा उज्जमन्ति जइणो जए तेण ॥ ५१३ ॥

इय जयगुरुणो इच्छामि पवरपयजुयलसेवणं काउं । सीसत्तणेण तुमएऽणुण्णाओ सव्वकालं पि" ॥ ५१४ ॥

१ सयले सू । २ वड्ढंतससं जे । ३ वट्ठंतहिं सू । ४ गाथेयं जेपुस्तके नास्ति । ५ बहुहां सू । ६ णियमेइ(दे) कलियं सू ।
७ णवर जे । ८ "जाऽऽवेवसु" जे । ९ "हत्तयाए जे । १० एयं जे । ११ "वभासणा" जे । १२ हिययतोससमु" जे । १३ "परिणइ" जे ।
१४ तुम्हेहिं अणुणा" जे । १५ इ सू ।

एवं च सोऽज्ज मेहकुमारजंपियं भणिउं पयचो अभयकुमारो जहा—“सुंदरं तुमए जंपियं जइ जह चिय भणियं तह चिय पालिउं तीरइ । कुओ ? जेण विसमो जोव्वणारम्भो, दुज्जओ मयरकेउपसरो, दुद्धरा विसयंजुत्ता इंदियतु-रंगमा, सम्मोहैकारया महिलाविलासा, दुरज्जवसाया पव्वज्जा, दुप्परियल्ला वयविसेसा, दूरहियासा परीसहा, अणिवारि-यप्पसरा कसाया, अओ भणामि ‘दुक्खेण णिव्वाहेउं तीरइ’ । अपरिपककसायस्स य जंतुणो पव्वज्जुज्जमो लाहवावसाणो णंदिसेणस्स विय संजायइ” ति । मेहकुमारेण भणियं—को सो णंदिसेणो ? । अभयकुमारेण भणियं—

आसि इह अम्ह सहोयरो णंदिसेणो णाम कुमारो । सो कयाइ समुच्चिग्गसंसारवासो पव्वज्जाकरणुज्जयमती वारिओ मुहि-मित्त-चंधुवग्गेहिं, भणिओ य जहा—दुकरा पव्वज्जाकिरिया, जोव्वणओ य समुच्चयसत्ती मयरदओ, उम्मिंठो य मयणवारणो अहिलसइ पमयावणमभिद्वेउं ति । इय जंपियावसाणम्मि य भणियमिमेण—“एवमेयं, किंतु तहा जइस्से हं जहा चक्खुगोयरवहे वि मह महिलायणो ण संठाइ ति । कहं ?—

ईसिं पि विणासो होज्ज जस्स संगहि सो ण तं कुणइ । को णाम कालकूडं कवलइ कवलेहिं जीयत्थी ? ॥ ५१५ ॥
सच्चं पमया पमयस्स कारणं पउरपच्चवायस्स । को होज्ज विवेई दूरओ ण जो तं परिचयइ ? ॥ ५१६ ॥
पच्चक्खं चिय मुव्वन्ति राम-रामण-णलाइणरणहा । संपत्ता वसणसयाइं रमणिवासंगवामूढा ॥ ५१७ ॥
ता उज्झिऊण जो हं णियवरविलयायणं कुसलकज्जे । अब्भुज्जमामि सो कहमणा पुलम्मि परम्महिला” ॥ ५१८ ॥
इय जंपिऊय वड्डन्ति पियवपरिओसगणिकरोमंचो । पव्वज्जेमव्वु[व]गओ जिणवरभणिण मग्गेण ॥ ५१९ ॥

तओ गिण्हिऊं जणिपवयणविहीए सामण्णं, अहिज्जियसयलमुत्तत्थकिरियाकलावो परिचइऊण वसिमं जणक्खं पविट्ठो अणेयताल-तमाल-सरल-देवदारु-पुण्णायाइसंकिण्णं महारण्णं । जं च आहासन्तं व परपुट्टाविरुएहिं, उग्गायन्तं पिव हंतंतमसलचंद्रेहिं, पणचिरं पिव पवणुव्वेळसाहाभुयाहिं, पमुइयं पिव विविहविहयऽट्टहासेहिं, अवि य—

कहिंचि संचरंतवारणिंदरुंदजूहयं, कहिंचि संपडन्तघोरपुंछि-पील(लु)ओहयं ।
कहिंचि संठिउद्वियन्तरुद्धदुद्वसीहयं, कहिंचि णिम्भरोरसन्तभल्लुयासणाहयं ॥ ५२० ॥
कहिंचि मच्छरागयच्छहल्लुरुद्धमग्गयं, कहिंचि साहिलंघणुच्छलन्तवाणरंगयं ।
कहिंचि दादिघोणयायजज्जरोरुकंदरं, कहिंचि जिज्जरन्तणीरधौरसट्ठि(इ)रं [वणं] ॥ ५२१ ॥ ति
किंच—

कत्थइ पुलिंदसुंदरिपउत्तकीलाविसेसरमियाइं । साहइ विसम-समुव्वेळपल्लेवुत्थरणकयलक्खं ॥ ५२२ ॥
कत्थइ मैइंदणिइलियमलियकरिकुम्भमोत्तियप्पयरं । उव्वहइ वणसिरी वरविसइकुसुमोवयारं व ॥ ५२३ ॥
कत्थइ णिलिन्तकरिकण्णतालणुच्छलियभमरविरुएहिं । कहइ व्व पाणगिरयाण एरिसु बेय होइ गती ॥ ५२४ ॥
इय तं सव्वचो चिय गुरुपायवविहवणयरोइण्णं । अल्लियइ णंदिसेणो तयोविहाणं व वणमहणं ॥ ५२५ ॥

तहिं च संचरन्तेण सच्चविओ णाइदूरप्पएससंठिओ विमलकलहोयधवल्लुसन्तसिलाभित्तिथलो भित्तिथलुच्छलन्त-कयकलरवजलणिज्जरो जिज्जरैतडपरुद्धिडिमलयाहरासीणकिण्णरमिहुणो किण्णरमिहुणमणहरुग्गीयायण्णणिसण्णदि-सिवहुगणो हिमचंतो णाम गिरिवरो । दट्ठूणं च तं अबन्तविचित्तणसंपत्तपरमपरिसं एकंतरुइरत्तणओ समारुढो तत्त्येकं कडयप्पएसं । तहिं च मुरसरियायडवियडकफाडप्पएसं हियउल्लसंतवेरग्गवासणाविसेसो” समारद्धदमासाइदु-

१ एवं जे । २ “गुह्यता” सू । ३ “हकम्मा” महिं जे । ४ दूरहियमा सू । ५ दुक्खेहिं सू । ६ “लाशो” जे । ७ “कुल” सू ।
८ “महिल” जे । ९ “ज्जमुक्कओ [सो] जिण” सू । १० गहिऊण जिणवयणं जे । ११ “पुलि-पिण्णो” सू । १२ “भारसदिरं” ति सू ।
१३ “लवपुण” जे । १४ मयंद” जे । १५ “इह” सू । १६ “खव” सू । १७ “जो परिचत्त” सू ।

द्धरतवविसेसो परिचत्तसयलदंदाइदुहकारणो आसाइयसममुहोवमीयमाणसग्गाइमुहो सुहज्झयण-ज्ञाणणिरओ पवयणभणिण्ण विहिणा अच्छिउं पयत्तो । कह ?—

णो छाया णेय फलाइं णेय कंदाइं कारणं कलिउं । एकं विविचयगुणं हियए काऊण तत्थ ठिओ ॥ ५२६ ॥
णिच्चुववासकिलंतो विदिच्चदेहो मुहासियज्झाणो । सेविज्जंतो मयमुद्धलोयणो मयउलसएहिं ॥ ५२७ ॥
संठाइ तिच्चरविकिरिणपसर[सं]तावणुम्मुहो गिम्हे । उद्धट्टियभुयजुवलो कएकचरणो धरावीदे ॥ ५२८ ॥
घणसमए घणरडिकयतडिच्छडौडोयभासुरिल्लम्मि । संठाइ जंतुरहियम्मि वियडगिरिकंदरुदेसे ॥ ५२९ ॥
सिसिररयणीसु खरपवणपहयपंचिच्छत्तुहिणणियरामु । चउजामम्मि समोलंबभुयजुओ गमइ ज्ञाणेण ॥ ५३० ॥
इय विविहच्चुग्गतवोविसेसणीसेसियासुहप्पसरो । णमुणियणिसि-दिण-सुह-दुक्खकप्पणो णंदिसेणमुणी ॥ ५३१ ॥

एवं च मासाओ दुमासाओ जाव चउमासाओ कट्टहारयाहिं तो लद्धजहौमुद्धाहारसंपाडयपाणवित्ती कालं गमेइ । तओ तस्स तवप्पहावओ वडिदया अपत्तपुव्वा वि वणदुमाण फल-कुसुमसमिद्धी, चिरयालपरूढाईं पि उवसंताईं सत्ताण परोप्परं बेराईं । तयणुहावावज्जियाओ वणदेवयाओ वि पज्जुवासणं कैरंति । पत्तिदिणमुवासमाणा वणयरा वि धम्मसवणुज्जुयमती संजाया । ते य तस्साइसयाणुहावओ जणयम्मि व वेसम्भमुवगया तहिं चेय णिसि-दिणावसाणं पि गमन्ति चि ।

तत्थ य णाइदूरे गंगाजलमहल्लकल्लोलपक्खालियपायारपेढं पायारपेढावंधुद्धाइयतुंगट्टालयसमूहं अट्टालयसमूहा-वलग्गपज्जुत्तजंतपेरंतं जंतपेरन्तावद्धुद्धयधयचिधमालाउलं वप्पिणं णाम पुरवरं । तत्थेक्का अब्बन्तसलाहणिज्जजोव्व-णारम्भा णियरूवोवहसियसुरसुंदरी ससोहग्गविस्वत्तरइविलासा णिययवित्तीविदत्तपभूयदविणसंभारा तिलोयसुंदरी णाम पवरवेसविलया । सा य णियधूयाए विवाहसमयम्मि अत्थिजणम्मि महादाणं दाउमुज्जया । तीए य सिद्धमणोहिं जहा—“अत्थि इह एगो महामुणी महातवतेपण दिप्पमाणो दिणयरो व्व मुत्तिमन्तो, तस्स परं जइ दाणं दाउं केणइ ववएसेण तीरइ तओ महाफलं होइ चि । कह ?—

‘वंदणमेत्तेण वि तस्स होइ अब्बन्तपुण्णपद्धारो । किं पुण जो तं सकइ परिग्गहं गाहिउं णिययं ? ॥ ५३२ ॥
मुद्धं पत्तं तारेइ जाणवत्तं व भवजलाहिं तो । णो बहवे पासाण व्व जे सइं चेय मज्जंति ॥ ५३३ ॥
पत्ताहासेहिं ण किंचि कज्जमेत्थं बहहिं मिलिएहिं । उज्जोयं कुणइ मणी कायमणीमज्झयारम्मि ॥ ५३४ ॥
अप्पाणं पि ण तारइ गरुयप्पा ताव चिट्ठउ इहज्झणो । ईसिं पि वल्लंगो लोहपिंडए बुद्धइ णिरुत्तं” ॥ ५३५ ॥
इय सोउं सवणपरंपराओ बहुजणपयंपियं बहुसो । बाहरिउं वणयरेणियरमेत्थ कज्जे णिउंजेइ ॥ ५३६ ॥

एवं च ते वणयरा तीए सव्वायरेण विणिउत्ता गेया पुव्वपणएणेव जत्थउच्छइ सो महामुणी । सा वि चेत्तूण णियय-धूयं सयलसामग्गिसंपण्णं तेसु चेय वणयरउंढवेसु संठिया । तेहिं च वणयरेहिं लद्धावसरेहिं कदाणयसंपाडयं काऊण भणि-यं—भयवं ! इह णाइदूरे अम्हाण आवासणिमित्तं कप्पिणसु [उडवेसुं] जइ गमणेणं पसायं कैरेह ता अम्हाणमणुग्गाहो होइ, सव्वस्स वि य अदिट्ठपुव्वस्स वि तुम्हे अणुग्गाहपरा, किं पुण पुत्तभंडसरिसाणमम्हाणं ? ति । तओ एवं च पुणो पुणो भण्णमाणस्स पुणरुत्तदंसणसंजायईसीसिसणेहस्स समुप्पण्णा गमणइच्छा । पयट्ठो तयंतियाओ । कह ?—

जणरहियं जस्स कएण संसिओ सावयाउलं रण्णं । तं चिय संगं अल्लियइ पउरपंकं व करिणाहो ॥ ५३७ ॥
उडयहिं तो उडयं भिच्छौकज्जुज्जओ परिब्भमइ । पासयणिवदयं पिव आयड्ढइ पुव्वकयकम्मं ॥ ५३८ ॥
ण कयाइ आगओ, णेय दिट्ठपुव्वो कहिं पि जो देसो । तत्थउल्लीणो अहवा जायइ जं जस्सें तं तस्स ॥ ५३९ ॥
इय सो महारिसी जायमाणसंजोग्गायाणुहावेण । अट्ठीणो परियणपवरपरिगयं उडवयं एकं ॥ ५४० ॥

१ “जुयलो जे । २ “बालोवमा” सु । ३ “पविस्वत्त” जे । ४ “हासदा” सु । ५ कुणंति जे । ६ संवुत्ता जे । ७ “स्तावंधुद्धयं” सु । ८ नयरं जे । ९ विलग्गो जे । १० “रमेत्थ णवर कज्जे जे । ११ गयपुव्वपं” जे । १२ “उडवेसु” सु । १३ करेहि सु । १४ भिक्षा-कज्जुज्जुओ जे । १५ “स्स पुव्वकयं जे ।

तओ तमागच्छमाणं दट्ठणं सा तिलोयसुंदरीधूया अहिट्टिया भिच्छो दाउं । दिट्ठा य सा महारिसिणा संजायणिण्णु-
ण्णयायंणहमऊहेणं चलणजुयलेणं, णिऊडगुण्ण-जाणुमंडलेणं सैहिणजंघियाजुएणं, णिच्छल्लियरंभागवभविभमेणं ऊरुजुय-
लेणं, वियडणियम्बविम्बमगेणं कडियडाहोएणं, मयणभवणसोवाणसणिहेणं तिवलीकलिणं मज्जेणं, वम्महरायाहिसे-
यकलससच्छहेणं थणमंडलेणं, मुणालियावलयविम्बमार्हि बाहुल्लयार्हि, असोयपल्लवसरिच्छेहिं करकिसलएहिं, भरपरिण-
यविम्बायम्बिरेणं अहरदलउहेणं, अहिणवविसट्ठकंदोदरदीहरुज्जलेणं णयणजुयलेणं, सारयकोमुईपुणिमायंदसरिच्छेणं
वयणविम्बेणं, भमरं-उज्जणसमिद्धमंगुरेणं च केसकलावेणं चि । तं च तारिसं पेच्छमाणस्स तस्स मुणिणो वियसिया
णीलकुवलयावलि व्व णियमकीलन्ती वियं णियदिट्ठी, विम्हरिओ चिरयरव्भत्थो वि णियमसंजमो, पम्हुट्ठो सयलसत्था-
ववोहकलिओ वि विवेओ, पंगलिओ रयणि-दिण्णमासपडित्थिरो वि सयलमुत्तथो, केवलं वियम्भिया अरती, उल्लसिओ
रणरणओ, पज्जलिओ मणम्मि मयणाणलो, वित्थरिओ रमियव्वयाहिलासो चि । तं च दट्ठणं थंभिओ व्व लिहिओ व्व
टंकुकीरिओ व्व "मुच्छिओ व्व णिच्चलणिरुद्धणीसास-णयण-वयणो ठिओ मुहुत्तमेत्तं । तं च तद्वावत्थियं पेच्छिऊण,
लक्खिऊण तस्स हिययचित्तियं भणिउं पयत्ता तीए जणणी-अम्हे पणित्थियाओ, ण दविणसंचयमंतरेण कस्सइ वयणं
पि पलोएमो, अम्हाणं सु अत्थलोहेणं कोहिओ वि मयरद्धओ, तेण विणा मयरद्धओ वि दूहवो चि, ता जइ इमीए किंचि
कज्जमत्थि ता दविणं पयच्छमु चि । तं च तीए जणणं सोल्लण [तेज] मुहुरं गहंगणाहुवं । जओ अहासणिहियदेवयाणु-
हावओ णिवडिया तमुद्देसमुज्जोययंती जच्चकंचणवुट्ठि चि । जायं च तम्मि उद्देसे महाखलं । तओ तप्पिभिति 'कणयखलं'
ति पसिद्धिं गयं । पइट्ठियं च कणयखेलाभिहाणं पट्ठणं ति ।

इय वद्धमाणेसामिचरिए कणयखलुप्पत्ती [२०] ॥

✽

पलोएऊणं च तं णंदिसेणमुणिवरो णहार्हितो णिवडियं कणयमहाखलं 'एसो तवाणुभावो' [चि] कलिऊण लज्जिओ
व्व मुहुत्तमेत्तं होऊण अवक्तो तयंतियाओ । पडिगए य तम्मि सा तिलोयसुंदरी 'गहेमि' चि चित्तिऊण समल्लीणा
जाव जत्तियमेत्तं गहियं तत्तियमेत्तं सयलं पि विज्झायंगारसणिहं संवुत्तं । चित्तिउं च पयत्ता-ण हु इमं कणयजायं एय-
मुणिवरवईयेरेण विणोवभुंजिउं लब्भइ चि, ता जइ पुणो वि "एसो कहिं(हं)चि समागच्छइ । एवं च चित्तिऊण परियप्पि-
यऽण्णारिसरूवणिहेल्लणा णिययधूयं सव्वालंकारविहूसियं पुरओ ठवेऊणं संठिया तस्स पइं पलोयमाणा ।

अण्णया य पुणो वि विहरणणिमित्तमागयं दट्ठणं सा सह धूयाए चेतूण तं मुणिं णिविट्ठा गेहम्मितरे । भणिउं च
पयत्ता—"एसा हु कण्णया मज्झ धूया, एयाए जैप्पहइं तुमं पलोइओ तेप्पहइं ण अण्णो पडिहाइ, एसा वि तुम्हाभिरुइया ।
ता मए एसा तुह पणामिय चि । तुममिमीए वरो, कीस संपयं परिचयैसि ? । अण्णं च—

तुम्हाणुहावओ देवयाए दिण्णं इमं कणयरारिं । एयाए समं उवभुंजमु चि तं दिव्वेरूवाए ॥ ५४१ ॥

रायकुमारसरिच्छं मुकुमारतणुं मुणेहिं संपण्णं । लद्धुं जुवाणजुवइं सजोव्वणं कुणमु कयकिचं ॥ ५४२ ॥

अण्णह गिरत्थयं तुज्झ जोव्वणं जं वणं पवणो सि । जुवईए जविज्जन्तस्स जोव्वणं होइ सकयत्थं ॥ ५४३ ॥

गहिया तुज्झ कए देवयाए दाउं इमं कणयरारिं । संपइ पडिच्छ एयं, अज्ज वि किं चित्तसम्मोहो ? ॥ ५४४ ॥

जाण णिमित्तं विविहोववासकिसिओ तए इमो अण्णा । ते विसया उवभुंजमु इहं भवे चेव संपण्णा ॥ ५४५ ॥

को णाम वालिसो सयलरिद्धिसंभोयसमुदयविसेसं । उज्झइ पच्चक्खगयं परोक्खकज्जम्मि मूढमणो ? ॥ ५४६ ॥

१ निक्खं जे । २ सिहिणं सु । ३ "जुवल्लएणं जे । ४ विय दिट्ठी सु । ५ परिगलिओ जे । ६ "पत्थिरो जे । ७ मुच्छलिओ जे ।
८ तद्वावत्थं वे" जे । ९ फलोइयं जे । १० "खलयाहिहाणं सु । ११ "गचरिए सु । १२ "गरे(रिए)णोव्वुं" सु । १३ एषो वमा" सु ।
१४ जण्णमिइ जे । १५ तप्पिभिइ जे । १६ "यदसि" जे । १७ "व्वचारिच्छ(सरिस)क्वाए सु । १८ संपुणं जे । १९ "जुवइं जे ।

इय एसा 'तुम्ह मए पणामिया रूविणि व्व सरकुमरी । अब्भत्थणाए अम्हं अणायरो जेय कायव्वो' ॥ ५४७ ॥
 तओ तीए वयणविण्णासविसविमोहियमाणसेण भवियव्वयाए तारिसस्स, दुँजयाए मयरकेउणो, अणाइभव्वम्भत्थ-
 याए विसयविलासाणं, संवरिओ वि पुणो वि विसंखलीहूओ अप्पा । अहवा—
 कारिमकयाणुरायाण चित्तमत्थं परत्तमाणीणं । वेसाण 'कवड्डीणं वसंगओ को जए चुको' ॥ ५४८ ॥
 चुवंति कवोले दाणलोहदरिसियमयंविस्था(च्छी)ओ । मायंगाण वि पसरन्तभसलव्वयावलीओ व्व ॥ ५४९ ॥
 छहंति अम्बरं साणुरायगुणसंसिया ससोहाओ । तरणिकिरणावलीओ व्व अत्थमंतस्स पइदियहं ॥ ५५० ॥
 पायवडियं पि दूरागयं पि लेहं व सयलगहियत्थं । फालेऊण समुज्झंति दूरमकयणुयाओ दहं ॥ ५५१ ॥
 बहुजणपयत्तपाडणकरणवसपयत्तकयजयासाओ । हीरन्ति अम्माओ चिय जाओ जूइयरेकत्त व्व ॥ ५५२ ॥
 सव्वायरकइवय(यव)संपउत्तभणियव्वपेसल्लिओ । जायंति वंधणं णेहबंधपरिमूढचित्ताण ॥ ५५३ ॥
 अमुणियकिच्चा-ऽकिच्चाइरित्तसंवरणंचित्तचरियाओ । संचारिमकिच्चाउ व्व मूढचित्ताण पच्चक्खं ॥ ५५४ ॥
 मिच्छाणुयत्तिणीओ मिच्छापरियडिडयाणुरायाओ । दुव्विणयपंडियाओ सुपंडियं पि हु विडंबन्ति ॥ ५५५ ॥
 सविवेउत्तमजणवज्जियाओ मज्जायमुक्कऽलज्जाओ । हिययाणुकूलववसियभणिएहिं जणं विमोहन्ति ॥ ५५६ ॥
 इय णिदणिज्जचरियाओ णिदणिज्जाणुरत्तचित्ताओ । वेसाणिहेण संसारवाउराओ वियम्भन्ति ॥ ५५७ ॥

तओ सैमुदामभोयरिद्धिदंसणसंपणमोहपयरिसो पयरिसपरिखलणखलियनिवडिओ विसयसल्लिमाहगंभीरकुवे ।
 जेण तस्स सिद्धन्तवासणासमुब्भूओ सो समो, मास-ऽदमासाइसंचिओ सो तवविसेसो, असमंजसकेसलुंचणाविसेस-
 विचित्तं तमुच्चिमंगं, सरयसमयजोण्हासमूहसमुज्जलं णियकुलं, सयलं पि पम्हुसिऊण संठिओ विसयसंभोयलाळसो
 तत्थ गेहे ।

एवं च तस्स पयत्तउअओवसमपुणरुत्तोयएण जलहरपयलियंतरसरयससिविम्भमेण वियम्भियं तस्स कम्मणो सोऊण
 कह विस्संभिज्जउ तवकिसियतणुणो ?, केह वा सयलगमाववोहियमइणो ? जेण तारिसस्स वि तव्विहदुक्करतवोविहाणतणु-
 यत्तणुणो एयारिसमवत्थंतरं दीसइ । एवं च तहाविहवासंगमूढमाणसस्स वि ण वियलिओ धम्मपरिणामो, जेण पतिदिणं
 सयलहेउ-जुत्तिसंगयं धम्मस(सा)वणं करेमाणो संबोहेऊण बहं जणसमूहं पेसेइ जयगुरुणो समीवं । एयारिसपवारेण
 वचंति दिपहा ।

अणया य णंदिसेणवइयरमुवलदधूण इंदेण पेसिओ एको दियचरो । समागयस्स य तस्स पारद्धा धम्मदेसणा ।
 आवज्जिया परिसा, भणिउं पयत्ता—एवमेयं । वंभणेण भणियं—जइ एवं कहमेसो जेय पढममारम्भिऊण ऐयमेयारिसं
 पच्छा परिबुद्धो ? त्ति । ऐयं च समायणिऊण णंदिसेणस्स समागया सुमरणा, वियम्भिओ पच्छायावो, समुल्लसिओ
 विसयविरामो, समुप्पणो वेरम्मापरिणामो । चित्तिउं च पयत्तो—हा हा ! धी दुट्ठु मे ववसियस्स, जेण मह समाखुदस्स
 वि तं तारिसं पयविं विसयमुहमेत्तस्स वि कए अत्ताणयं विम्हरिऊण एयमच्चन्तेविवेइगरहणीयमारियं । तओ समुज्झि-
 ऊण तं सयलं पि विसयवोसंगं गओ जयगुरुणो समीवं । जहाविहिं पुणो वि सामण्णं पवणो त्ति ।

ता भो मेहकुमारें ! एवं दुकरा पव्वज्जा । मेहकुमारेण भणियं—कम्मवसतयाणं पाणीणं एवमेयं, संभवन्ति एया-
 रिसां अमुणियपरमत्थाणं पुव्वमपरियम्मियसरीराण एकल्लविहारणिरयाणं, मह उण जयगुरुणो पायपायवच्छायासंग-
 यस्स मणयं पि ण पव्वइ विसयाहिलासाऽऽयवो, ईसि पि ण पसरइ विलासिणीदंसणतण्हा, ता अणुमण्ह ममं ति । तओ
 सोऊण तस्स वयणं भणियं अभयकुमारेण—अविग्यं कल्लाणभाइणो, जहासमीदियं पुज्जंतु ते मणोरहा । एवं च अणु-

१ दुज्ज जे । २ दुज्जयाए=दुज्जयाए=दुज्जयाए, दुज्जयतयेत्यर्थः । ३ कवड्डीम ——— (पाण वय)गओ सु । ४ 'कति जे ।
 ५ 'वरित्त' सु । ६ 'जुत्तिसरताओ सु । ७ समुदयरिदि' । ८ 'परिखलणकलणकलियनिवडिओ जे । ९ पयत्तउवसमु' जे । १० 'पय-
 क्षित्तरसरय' सु । ११ अहवा स' सु । १२ एयारिसं सु । १३ एवं जे । १४ 'न्नाविधेयम' जे । १५ 'वासंगं जहावि हि सु । १६ 'रि-
 एयारिसमवत्थंतरं होइ ति । तओ मेहकुमारेण भणियं—कुमार ! एवमेयं, सम्भवन्ति एया' सु ।

ष्णाओ समानो गओ भयवओ समीवं मेहकुमारो, जहाविहि पवणो समणलिमं । समणगणमज्झसंठिओ समुज्जओ तवसंजमे । गच्छंति दियहा ।

अणया य संकिण्णत्तणओ वेसहि विसेसस्स, पट्टयत्तणओ समणसंघस्स, अन्तोणलद्धप्पवेसो दुवारदेसभाए पमुत्तो मेहकुमारो । जाय णिक्खम-पवेससंजणियजइजणपयसंघट्टमसहमाणो चित्तिउं पयत्तो-अहो ! पेच्छ एए जइणो अविण्णाय-लोयायारवइयरा अगणिऊण मंदरसरिसं मह कुलुमामं तणं पिव कलेऊण कर-चलण-तणुत्तिमंगप्पएसेमु णिमेऊण णिय-यचलणे णिक्खमंति विसंति य । समुच्चिग्गमाणसस्स य कह कह वि पभाया रयणी । पहायसमयम्मि य जयगुरुणा मुणिऊण मणोगयं भणिओ मेहकुमारो जहा-भो देवाणुप्पिया ! किं विम्हरिओ सो तुह पुब्बभवो ?, ण सुमरेसि तं णियगयरूवकलेवरं ?, सलिलावगाहणणिमित्तमइणओ सरसलिलम्मि पंकस्वुत्तो समाणो पंचत्तमुवगओ, तुहकलेवरुप्परेणं च सयलसमागयसियाल-गिद्धाइसावयगणा चलणे णिमेऊण सलिलगहणत्थं इओ तओ संचरंता ? ता किं ताण चलणचप्पणाओ वि अंतरेण जइजणचलणचप्पणं तुह दुक्खमुप्पाए ? । तओ सोऊण तं जयगुरुणो वयणं 'मिच्छा मि दुक्खं' ति परियप्पिऊण समुप्पणमुहज्झवसाणो पयत्तो चित्तिउं, कह ?—

जर-मरण-वाहिवियणा विसेसगज्झस्स हयसरीरस्स । एयस्स कए अप्पा कह शु मए वंचिओ होन्तो ? ॥ ५५८ ॥
 ईमिणा ण किंचि कज्जं असारसंसारमज्झयारम्मि । मोचुं परत्थसाहणमेकं इह जीवलोयम्मि ॥ ५५९ ॥
 तं च जिण-साहुवंदण-वेयावच्चुज्जुयाण संपडइ । धज्झ-उभंत्तरतव-वरण-करण-सुहभावणाए य ॥ ५६० ॥
 ता अच्छउ ताव तयं कायव्वं मज्झ मूढहिययस्स । कह वा काहं ? जो जइविहट्टेणोवि कुप्पेज्जा ॥ ५६१ ॥
 ता ते धणा जे सव्वया वि उवओगयं पउंजंति । वेयावच्चुज्जंमजणियविहविण्णानादोणेहि ॥ ५६२ ॥
 अहयं पुण अमुणियसयलसत्थसव्भाववाहिरमईओ । मूढपडियत्तिकम्मो चुको कह एहहे कज्जे ? ॥ ५६३ ॥
 इय एवं जयगुरुवयणपवणसंधुकिओ पचित्तरइ । अंतो विणिट्ठंतो पच्छायावाणलो सहसा ॥ ५६४ ॥
 एवं च पुब्बभववइयरुप्पणवेरग्गमग्गो सयलसावज्जवैजणुज्जुओ पवणो संजमुज्जोयं ति ।

इति महापुरिसचरिए णंदिसेण-मेहकुमारसंविहाणयं [२१] ॥



अणम्मि दिणे समुग्गए कमलकोसवियासपच्चले दिणयरम्मि विणिग्गओ जयगुरुवंदणणिमित्तं सेणियणराहिओ । आगंतूण य वंदिऊण जहाविहि णिसण्णो जहोइयपएसे । पत्थुया भयवया धम्मदेसणा । तर्हि च 'अप्पमा-यपरेण होयव्वं' ति पत्थावेण पयत्ता धम्मकहा जहा-अप्पमाओ हि णाम जइणो मूलं सामण्यस्स, भयंगयो कंदप्पतरुणो, पहंजणो समुण्णमन्तमणमेहडंवरस्स, धूमदओ कसायवणगहणस्स, पंचाणणो इंदियेकुरंगानं, णवघणो कुसलकिसलउग्ग-मस्स, सरयसमओ सत्थसासपरिणतीए, [हिमकालो.....], सिसिरो विसयविसट्टकमलसंडाणं, महुसमओ सुमइकुसुमुब्भेयस्स, गिम्हयालो कम्मवणगहणस्स ति । अण्णं च—

मूलं धम्मस्स जयम्मि अप्पमाइत्तणं जए पढमं । जइयव्वं जइणा तेण सयलगुत्तिदियत्थेण ॥ ५६५ ॥

१ वसहणिवेद्यस्स जे । २ एएण किंचि सू । ३ 'णाइ' सू । ४ 'जययज' सू । ५ 'वव्वओ प' सू । ६ इय सू । ७ पवत्ता जे ।
 ८ वसग्गमो(?) इ' सू । ९ 'वतुरंगमाणं, णव' सू ।

इह अप्पमाइणो होति सयलसंचितियत्थवित्थारा । सविसयगुणसंपत्तीओ अप्पमाया हि जायंति ॥ ५६६ ॥

लोए वि वणियं अप्पमाइणो होइ अत्थसंसिद्धी । किं पुण जइणो पढमं जं अंगं धम्मसिद्धीए ॥ ५६७ ॥

जइणो संजमजोयम्मि अप्पमाउज्जयस्स जइ कह वि । जाएज्ज जीवेघाओ तह वि अहिंसा मुणेयव्वा ॥ ५६८ ॥

मज्जाइएसु एएसु जो जई मैयपमायठाणेसु । जाएज्ज अप्पमाई तमिंदियत्था ण लंघन्ति ॥ ५६९ ॥

इय मुणिउं एयं जइजणेण धम्मज्जमुज्जएण दहं । सव्वायरेण जत्तो मणप्पेमायम्मि कायव्वो ॥ ५७० ॥

एत्थावसरम्मि य सेणिएण भणियं—भयवं ! अप्पहिंदियसाग्गिसंपण्णस्स मुणिओ वि पमाओ साहीणो चेव, जओ जंतुणो पवणुव्वेल्लभयचंचलं चित्तं, विसयाहुत्तं पत्थिया दुंदुरा सयलिंदियासा, दुज्जओ विसविसमविसयप्पसरो, अणिवारि-
यप्पसरो मयरकेऊ, अहिद्वंति पतिदिणं कोहादिणो कसाया, दुदुरो य जंतू विसंयवासंगलालसो ति । एयं च समाय-
णिऊण जंपियं भयवया—जइ वि एवं तहा वि संमुव्वउ कारणं, जेण—

अप्पा जायइ ताणं पओज्जकज्जम्मि चित्तसाइज्जो । इंदियविसयाण सगोयरम्मि पवियंभमाणाण ॥ ५७१ ॥

सो चिय अप्पा सइ चित्तजणियसंरोहणिप्फुरप्पसरो । जइ कीरइ ता जायइ जिइंदियत्थो सयस्सेव ॥ ५७२ ॥

अप्पा जइया संगं राएण समणिओ महइ गंतुं । तइया कयत्थया इंदियाण विसयाण वि सयत्थो ॥ ५७३ ॥

विसयाण इंदियाण य परोप्परं दूयकज्जपत्तदो । संबंघं कुणइ मणो सरायसंजोयणग्गविओ ॥ ५७४ ॥

ताई चिय णीरायाण विसयसंबंधवज्जियाइं दहं । जायंति णिणयाण व णिरुद्धसोत्ताण सलिलाइं ॥ ५७५ ॥

पेच्छइ चक्खु पुरओ पईट्ठियं रूवइयरविसेसं । रायपरियड्ढिओ जाइ संगमहिंयं पुणो अप्पा ॥ ५७६ ॥

राय-विरायंतरकारणाइं विसएसु अप्पणा चेव । जायंति अप्पहुत्तं हयेंदियाणं तहिं होइ ॥ ५७७ ॥

इय तेण णराहिव ! अप्पमत्तया कारणं सकज्जस्स । जायइ सयले वि जए विसेसओ संजयजणस्स ॥ ५७८ ॥

अओ णराहिव ! सिंदिओ वि मुणिवरो अप्पमायी रायरहिओ मुणेयव्वो, जेण रूवाइसणिहाणे वि मणयं पि ण मुज्झइ ति । जहा केणइ णरवइणा णियपुरवरीए पयचे कोमुईछणे, पेंवट्टियासुं दिसिदिसि कीलामंडलीसुं, छणवसपयत्तज-
णवहलहलबोले, हरिसणिभराए सयलपुरवरीए, स्यणीसु वि णिरंतरदीवप्पहापणद्वितिमिरासु हट्टवीहीसु, दीवतेल्लस्स कंपि-
याळेज्जं पत्ति भरिउं सैमोप्पेऊण भणिओ णिययभिचो जहा—एयं आयणसंपुणं तेल्लपत्तिं वेत्तूण तुमए ऐंयाओ पप्साओ
पैइल्लया(णपा)सं जाव अप्पमाइणा तहा गंतव्वं जहा बिंदुमेत्तं पि धरणीए ण पडइ । पयट्टे तम्मि पुरिसे तहा गंतुं, उभयपासेसु
णिउत्तददणिसियकड्ढिदयासिवावडकरा चत्तारि णियपुरिसा [पेसिया] भणिया य—जइ कह वि एयस्स पमायपरव्वसस्स
तेल्लस्स बिंदुमेत्तयं पि णिवडइ जत्थ तत्थ तुम्हेहिं इमस्स सीसं पाडेयव्वं ति । एवं च सो तेल्लपत्तिं वेत्तूण णिमियणिच-
ललोयणपसरो पयट्टो गंतुं । ता भो णराहिव ! एकओ पयट्टिविविहकरणंगहारवमुव्वेल्लतणुलयं पुरसुंदरीयणं, अण्णओ
सर-करणे-कलतालमंदमुइसुहं नेयमागाइयमायण्णउ पुलोएउ वा ? किं वा सिरपडणभउव्वन्तमाणसो अप्पमाई होईऊण वैचउ ?
ति । राइणा भणियं—तारिसमवत्थमावण्णस्स किं तस्स मणहरेणावि णेट्टविहिंदंसणेणं ? किं वा किण्णरुग्गीयमणहरेणा-
वि कल्लगीयायण्णेण कज्जं ?, अण्णेण वा सुंइफरिसाइणा समहिलसिपणं ?, सव्वं पि तस्स णियजीयसंसए अवत्थुं
पडिहाइ ति । भयवया भणियं—जइ एवं ता तस्स वि जइणो णियंम-तव-संजमुज्जोउज्जयमणस्स सव्वं पि तं विसयाइयं
तह च्चेय दट्ठव्वं । तओ पत्थिवेण अवितहं तह च्चेय पडिवण्णं । पत्थुया भयवया धम्मदेसणा । एत्थावसरम्मि य तमु-
हेसं णिययपहापरिवेवपसरेणं समुज्जोएन्तो सैमागओ एको दिव्वपुरिसो । दिट्ठो णराहिवं वज्जिऊण सयलाए वि
रायपरिसाए, केरिसो य ?—

१ जियग्घाओ सु । २ महपं सु । ३ उज्जएण होव्वं । सव्वा सु । ४ प्पमाओ ण कां जे । ५ उरुदुरा सु । ६
सयसंगला सु । ७ यत्था वसस्सेव सु । ८ परिट्ठियं जे । ९ हुत्तं इहेदियाणं जे । १० पयट्टियासुं सु । ११ सवपे जे । १२
संपणं सु । १३ इमाओ जे । १४ पव्वापासं जे । १५ णमंदं जे । १६ होऊण जे । १७ वव्वसु जे । १८ णट्टविहिंसं जे । १९
मुफरिसा सु । २० णियतव सु । २१ समासओ जे ।

अचन्तमुंदरुहामसोहसंपण्णमणहरायारो । मउडमणिकिरणणियरप्पहासमुज्जोइयदियंतो ॥ ५७९ ॥
 सवणमणिकुंडलजलपरिमंडियगंडवासपेरन्तो । वच्छत्यलरंखोलन्तहार-हारावलिसणाहो ॥ ५८० ॥
 भुयदंडधडियमणिमयकेऊरुज्जोयरुइरभुयसिहरो । कणयकडउब्भडुव्विडिमसोहरेहंतकरजुंवल्लो ॥ ५८१ ॥
 कणयकडिमुत्तयौवद्धलम्भकलरणणुंतरसणिहो । मुरतरुपस्यमालामिलंतभसलालिवल्लो ॥ ५८२ ॥
 गइवसपहल्लदेवंगपल्लवुव्वेहमाणाराहिल्लो । कर-चरणणहमऊहोहभिण्णरविकिरणपम्भारो ॥ ५८३ ॥
 इय णियदेहाहरणप्पहापरिक्खेवजणियपरिवेसो । रविर्विवविम्भमो वंदणत्थमौओ मुरो एको ॥ ५८४ ॥
 एवं च सविम्भय-विलासं दीसमाणो सयलाए परिसाए वंदितुं पयत्तो, कहं ?—

जय जयाहि तवणिज्जसमुज्जलदेहया !, मोहपसररयपडलपणोल्लणमेहया !
 जम्म-मरण-जर-वाहिविणासणवेज्जया !, मुगतिमग्गामणुज्जयजंतुसहज्जया ॥ ५८५ ॥
 णहमणिकेसरसोहए, ललियंगुलिदलराहए । भवियजणुब्भडभसलए, णमिमो तुह पयकमलए ॥ ५८६ ॥
 एवं च अणेयप्पयारं वंदिऊण जयगुरुं, सरसगोसीसचंदणरसच्छडासणाहं धरणिमंडलं काऊण णिसण्णो जहामिरु-
 इए पएसे । णरवइणा य कयचित्तसम्मोहेण केरिसो दीसितुं पयत्तो ?—

कर-चलणसडियरुहिरोहणितदुग्गंधपूयपम्भारो । कर-चैरणसूणफुट्टन्तवणमुहुट्टंतरसियालो ॥ ५८७ ॥
 णिब्बुडुण्णयगरुयग्गगहिरदीसन्तणासियाविरो । पडिसडियपम्हपडलारुणप्पहुम्मिल्लणयणजुओ ॥ ५८८ ॥
 पवणवमुच्छलियपयल्लवहल्लदुग्गंधपरिमल्लपीलो । करपोत्तंचलवारियसमंधरुच्छलियमच्छिगणो ॥ ५८९ ॥
 इय खामत्तणदुल्लक्खवयणविण्णासगगिरालावो । दिट्ठिवहे ठाई णराहिवस्स कुट्ठी मुरो होउं ॥ ५९० ॥

तओ तं तहाविहमुव्वेयणिज्जरुवं पेच्छिऊण णराहिवेण चित्तियं-केण पुण इमस्स कुट्ठिणो इह पवेसो दिण्णो ?, ण
 केवलं पवेसमेत्तेण एयस्स परिओसो, पुणो आसण्णविणितदुग्गंधवाहेण उव्वेवयंतो सैयलं पि परिसं भगवओ अच्चासायणं
 करेइ, ता उट्ठियाए परिसाए अवस्सं एसो मए णिग्गहेयव्वो ।

एत्थंतरम्म छीयं पत्थिवेण । कोटिण भणियं-जीवसु त्ति । ठिया मुहुत्तरं । अभयकुमारेण छिकिण
 भणियं-जीवाहि वा मराहि वा । कालसोयरिण छीए भणियं-मा जीव मा मर त्ति । गया काइ वेला । पुणो वि
 जयगुरुणा छिकियं । इयरेण भणियं-मरसु त्ति । तं च सोऊण राइणो समुल्लसिओ मणम्मि कोवाणलो । लक्खिओ
 भावो राइणो जयगुरुणा, भणिओ य जहा-भो देवाणुप्पिया ! मा एवं वियप्पेसु जहा 'एस कुट्ठी', देवो हु एसो, अज्जं
 चेव ददुदुरंके विमाणे समुप्पण्णो । राइणा भणियं-कहं चिय ? । भयवया भणियं-मुव्वउ,

अत्थि इह मज्झदेसभायम्मि बहुविविहपासायमालालंकियं मणहरतिय-चउक-चचरोववेयं वसंतपुरं णाम णयरं ।
 तत्थ णिसियैन्निकडिडयासिणिहलियदरियारिमंडलो अजायसत्तू णाम णरवती । तहिं च जण्णयत्तो नाम वंभणो ।
 जण्णसिरी से भारिया । सो य आजम्माओ चिय अईवदरिदोवइवाभिभूओ पइदिणं परसंपाइयपाणवित्ती कालं गमेइ ।

तस्स य अण्णया आवण्णसत्ता भारिया संजाया । समइच्छिओ तीए वेलामासो । भणिओ य तीए णिययदइओ
 एवं जहा-भो वंभण ! मह आसण्णो पसूइकालो, ण य गेहे दिणमेत्तेस्स वि घय-तंदुलाइयमत्थि, ता कीस णिचित्तो
 चिद्वसि ? । इयरेण भणियं-ण य मह विज्जा, ण विण्णाणं, ण पोरुसं, ण य कम्मम्मि वि कायव्वे सामत्थं, ता तुमं चेव
 उव्वएसं पयच्छ, किमहं करेमि ? त्ति । तीए भणियं-गच्छ पत्थिवं पत्थेसु । गओ सो मैज्जितुं कुमुम-दुव्वं-डंकराइहत्यो ।
 राया वि तदिवसं पंचतियस्सोवरिं महया अक्खेवेण पयट्ठो । दिट्ठो य वंभणेणं सियकुमुम-दुव्वं-डंकरादिहत्येणं । राइणा

१ 'जुवलो जे । २ 'वावंचल' सु । ३ आओ =आयातः । ४ 'चलण' जे । ५ 'समच्छर' जे । ६ समगं जे । ७ 'यकहिदया'
 सु । ८ अइदरि' सु । ९ 'तइस्सं वि जे । १० मणिज्जकं जे ।

वि 'सुसउणो' ति मण्णमाणेणं भणिओ णियपुरोहितो जहा—मह सिद्धयत्तासमागयस्स दंसियव्वो एसो वंभणो । पुरोहिण्ण भणियं—जमाइसह चि । गओ णराहिओ । पत्तो पवन्तियसणिवेसं । पराजिओ एसो । दवाविओ पगामं कप्यं । आगओ य णियणयरं । पविट्ठो महया विभूर्हए णिययमंदिरं । दिट्ठो पुरोहियपुरस्सरेणं तेण वंभणेण । राइणा वि तहंसण-सुणिमित्तसिद्धकज्जपरितुट्ठेणं भणिओ वंभणो—मग्गमु जेमिच्छियं । तेण भणियं—देव ! वंभणिं पुच्छिऊण आगच्छामि । राइणा हसिऊण भणियं—एवं करेसु ति । गओ सो वंभणीसमीवं । साहिओ तीए णरवइपरितुट्ठवइयरो जहा—मम राया तुट्ठो, भणइ य 'मग्गमु जहिच्छियं,' ता साह 'किसहं पत्थेमि ?' ति । चितियं च तीए—जइ एयस्स रायसिरी भविस्सइ ता अण्णाओ मुरूवाओ जुवईओ भविस्संति, ममोवरि मंदायरो हविस्सइ, ता जहा ण ममोवरि सिणेहं मुयइ तहा भणामि । भणियं वंभणीए जहा—भट्ट ! अम्हे वंभणैजाईयाइं, ता राइणो अग्गासणभोयणं पइदिणं दक्खिणाए दीणारो, अणवसर-म्मि वि उस्सारउ ति । तमायण्णेऊण गओ णरवइसमीवं वंभणो । मग्गिओ जहाभणियं । पडिक्खणं च सहसिसं राइणा ।

एवं च अणवरयं भुंजमाणस्स दक्खिणागहणेण पणद्धारिओ संवुत्तो । 'राइणो पाइओ' ति पइदिणमामंतिज्जइ सयलपयइवग्गेहि । सो वि अइलोल्लु[य]त्तणओ वंभणपयतीए भुत्तपुव्वो वि राइणो भवणम्मि अंगुलिदाणेण घत्तिऊण चिरभुत्तभोयणं पुणो भुंजमाणो अच्छिउं पयत्तो ।

एवं च अइकंतो कोइ कालो । समुप्पण्णा बहवे पुत्त-पोत्ताइणो, पवहिट्ठओ पवररिद्धिसमुद्धओ । तहाविहं चाणवरयं भुंजमाणस्स समुप्पण्णो कुट्टवाही, क्खरिओ सक्कलीरापयवेसु ति दुष्णिवारो जाओ । तओ तं तारिसं दट्ठण ते पुत्त-पोत्ताइणो तस्स उव्विज्जिउं पयत्ता । अच्छिउ ता पडियरियव्वं, तेणं चेय लज्जंति । तं च तारिसं ताण ववसियं दट्ठण तेण चितियं—अहो ! पेच्छ मह विट्ठेणं चेव विट्ठेण एयाणं मओ समुप्पण्णो, जेण ममं पि आणं ण करंति । अहवा—

बहुसुकयसहस्सेहि वि ण तीरए खलयणस्स वेत्तूण । हिययममुद्धसहावस्स णिययकज्जुज्जयमतीयं ॥ ५९१ ॥
ससणेहं मुद्धसहावयाए ववहरइ अण्णाहा मुयणो । अण्णाह कप्पेइ खँलो सदुट्ठभावेण दुट्ठमती ॥ ५९२ ॥
भुंजइ जहिं चिय फुडं तं चिय भंजेइ भायणममुद्धो । पिसुणो सदुट्ठभावेण किं पि अण्णं कलेऊण ॥ ५९३ ॥
जत्थुप्पण्णो सयच्छिड्जज्जरं सव्वहा समीहंतो । तं चिय दाहं घुणकीडउ व्व मुयणं खलो खवइ ॥ ५९४ ॥
जौया जस्स सयासाओ उव्वह कहमप्पणो वि उप्पत्ती । भूमद्धउ व्व दाहं तं चिय मुयणं खलो डहइ ॥ ५९५ ॥
एस सहावो खलकंटयाण बहुमम्मभेयकारीण । दूराओ वज्जणं अहव खेट्ठीरिं वयणभंगो ॥ ५९६ ॥
दियहं चिय परगुणविहवदंसणे ठाइ मुच्छिउ व्व खलो । तेलोकरज्जलंभे वि णवर दोसे दिहिं पत्तो ॥ ५९७ ॥
इय जइ वि तस्स कज्जम्मि कह वि दिज्जइ सिरं पयत्तेण । तह वि कयावि ण तीरइ पिसुणो मुयणेण वेत्तूण ॥ ५९८ ॥

एवं च सो णिययपरियणपरिहूयमप्पाणयं कलिऊण अंतोपसरियामरिसो चित्तिउं पयत्तो—एयमकयण्णयं परियणं तहा करेमि जहा एयस्स वि एस चेव अवत्था होइ । ति चित्तिऊण वाहिता णिययतणया । भणिया य एक्कंते जहा—“पुत्त ! अहं सु वाहिवसओ अयंगमो संवुत्तो, ता किमेयावत्थगयस्स मह जीवियव्वेण ? । ता अम्हाण कुले एरिसो आयारो—जेण अंतकालम्मि पमुणा चरं णिव्वत्तिऊण पुणो अप्पणो उवसंहारो कीरइ । ता संपाडिज्जउ मह एक्को पक्ख, जेणाहं तहेवाणु-चिद्दामि” । संपाडिओ य तेहिं । तेणावि अप्पाणयं घयाइणा अग्गंभेऊण उव्वलिऊण य उव्वलिणियाओ भुंजाविओ सो पक्ख । एवं च पइदिणं भुंजमाणेण वाही तस्स संचारिओ । संकंतवाहिं पमुं मुणेऊण तस्स भंसेण णिव्वत्तिओ चरु । दिण्णो पुत्त-णत्तुयाणं । भुत्तं तं तेहिं पमुमंसं, जाव तेसिं पि संकंतो वाही । सुणिओ एस वइयरो राइणा पुरज्जणवणं य । तओ कुविण्ण राइणा णिव्विसओ आणत्तो । णिग्गओ य णयरओ । पतिदिणं गच्छमाणो पत्तो सज्ज-उज्जुणै-ताल-तमा-

१ जहिच्छियं जे । २ 'णयाइजायाइं, जे । ३ राइणो आइअग्गासणे भोयणं दीणारयुग्गेणं मग्गमु, जाव जा(इरा)इणो सयल्लामन्ता पवईसु । गओ णरवइसमीवं वं' सु । ४ खलो अउं' सु । ५ जाओ सु । ६ डयइ जे । ७ 'मप्पणा जे । ८ 'ए अयराहमुहभंगो सु । ९ दिहिं जे । १० उव्वलिआओ जे । ११ 'ण-साल' जे ।

स्त्रुविलं महाडङ् । तओ तण्हुण्हाकिलन्तो बुधुक्खापरिमिलाणदेहाववओ हिंङिउं पयत्तो । कह ?—

तिव्वयरतरणियरणिअरदुसहसंतावतविपत्तुभाओ । दिसिदिसिपज्जलियाणलकरालकयधणझलकारो ॥ ५९९ ॥

अणवरयवणदवोदड्ढयणदुमुद्धंतधूलिधूसरिओ । लल्लकक्षिल्लियारववहिरियणियकण्णगुरुविरो ॥ ६०० ॥

तण्हुण्हाइयविम्भलकिलन्तलहुमयसिलिम्भतरलच्छो । मायण्हियापयारणतदिसिवहदिण्णपयमग्गो ॥ ६०१ ॥

परिमूसियगिरिणइयडवियडहहदंसणेण [ण]द्दासो । वित्थिण्णतल्लसंसुकदंसणुडीणजीयासो ॥ ६०२ ॥

इय तिव्वतिसासंभवकंठोद्धमुसंततालु-जीहालो । परिभमइ वियडगिरिकंदरेसु एको कुरंगो व्व ॥ ६०३ ॥

एवं च तिव्वतण्हावेयणीसइतणुणा इओ तओ पलोयमाणेण दिट्ठं एकम्मि गिरिणिज्झरुदेसे पउरपण्णूरकल्लसिबं सल्लिलं । तं च दट्ठण पवरणिहिलंमे व्व जम्मरोरो तुट्ठो हियएणं । पच्छुज्जीविंयं च अप्पाणयं मण्णामाणो अल्लोणो तय-
न्तिंयं । तओ तं णिब्भररवियरविहट्ठणुवत्तिंयं बहुविहतरुदल-फल-मूलसंगलन्तकसायरसविसेसं तण्हावसत्तणओ आयंठप्प-
माणं वीसमिऊण पुणो पुणो पीयं । अवगयतण्हाविसेसो य णिग्गओ तयन्तियाओ, गंतुं पयट्ठो । जाव थेवं भूमिभायं
गच्छइ ताव बहुतरुदल-मूल-फलकसायकलियजलपाणत्तणओ अंडुड्यालियं पोड्ढिभतरं । जाओ से अचंतविरेओ । तओ
बुक्खापरिमूसियत्तणओ तणुविहायाणं, गुरुविरेयाकरिसियत्तणओ रत्तपित्ताइवियाराणं मिलाणो से कुट्टवाही, पउणीह्याओ
वणणाहीओ, परितणुइह्यओ णासियापएसो, पत्तलीकया कैर-चरणंगुलीविहाया ।

एवं च असंपज्जंताहारविसेसो अणिच्छिओवत्थियलंघणविहाणदेहपणद्ववाहिवियारो संपत्तो कह कह वि कण्ठगयपाणो
तुहणयरगोउरदुवारं । जाव छायासमल्लोणो य मुच्छावसंमउलन्तलोयणो णिवडिओ महीवट्ठे । तं च दट्ठण कंठदेसावलंबियव-
ममुत्तं 'वंभणो एसो' चि कलिऊण तुहणित्तगोउरदुवारपालएणं सिचो सिसिरसलिलेणं समासत्थो जाओ । सण्णाए
'तण्हाइउ' चि उड्डिओ अंजली । पाइओ अचंतसुंदरं सीयलजलं । पुच्छिओ पउत्तिं-कओ तुमं ? । तेण वि सिट्ठं जहोइयं ।
मुंजाविओ जहाजोगं पत्थमण्णविसेसं । ठिओ तस्स चेव दुवारपालस्स समीवे । अइकंता कइइ दियहा । अण्णया य दुवा-
रवासिणीए संजाया जत्ता । आगच्छइ सयलो वि पुरमुंदरीजणो वल्लि-लड्डुयपडलए देवीए वेत्तूणं । तं च तेण
चिरयाल्लुबुक्खाखामतणुणा ताव स्वइयं अहोभागाओ आकंठं जाव जलघोट्टमेत्तस्स वि पवेसो ण मुक्को ।

एत्थावसरम्मि य अहमेत्थ समोसहो । 'भयवं समागओ, वंदणनिमित्तं गच्छामो' चि समुच्छलिओ जणहलहला-
रावो । एत्थावसरम्मि य एस ददुदुरंकदेवजीवो तहापहूयलड्डुयाहारकवलणऽप्परियपोट्ठो अंतोअमायन्तसलिलविद्
उद्धायमाणतिव्वतण्हाविसेसो 'जलं जलं' ति ज्ञायमाणो समुप्पण्णविमुइयवेयणाए मओ समाणो पउरजलवावीए
महाददुदुरो जाओ । जाव तत्थ वि समुच्छलिओ जलवाहिविलयाणं हल्लहलो जहा-हला ! मग्गं मे पैयच्छसु, भयवं मए
बंदियव्वो । तं च विलयाकयकलयलं मुणमाणस्स ददुदुरस्स 'कत्थइ मए एसो सहो णिसुवपुव्वो' चि ईहा-ऽपोह-मग्गणं
कुणमाणस्स समुप्पण्णं जातीसरणं, सुमरिओ पुव्वभववइयरो । तओ 'अहं पि भगवं वंदामि' चि चित्तिऊण पत्थिओ
तयंतियाओ ददुदुरो । पयट्ठो आगंतुं रायवत्तिणीए, जाव तुह महंतियं वंदणत्थमागच्छमाणस्स तुह चेव तुरयचल्लणेण
चण्णियसरीरो सुहज्जवेसाणवसेण मओ समाणो समुप्पण्णो देवत्तणेणं ददुदुरंके विमाणे । तत्थ य अवहिण्णओएण मुणि-
ऊण अप्पणो वइयरं, समागओ तुह चित्तसम्मोहं काऊण किरै 'कुट्ठि' चि, परिसाए उण मणहरदिव्वरुववेसधारी
अप्पाणयं दंसंतो । अओ भणामि 'ण एसो कुट्ठी, एसो हु ददुदुरंको सुरवरो' ।

एत्थावसरम्मि य पच्चक्खीइओऊण सुरवरेण दिण्णो राइणो हारो, रज्जुणिचदं लक्खामयमणिजुंयलं च । दाऊण
अहंसणीह्यओ ।

१ 'व्यामय' ख । २ अहमालिये पोड्ढिभतरं जे । ३ करंगुली । ४ 'सविबलतलो' जे । ५ हल्लोहलो जे । ६ पेच्छसु ख ।
७ 'वत्तणीए' ख । ८ 'लणचण्ण' ख । ९ 'वसायव' जे । १० देवरेणं ख । ११ किल जे । १२ 'जुवल्लयं' जे ।

सेणिएण भणियं—भयवं ! कीस उण इमेण मया छिकिए भणियं ‘जीव’, अभयकुमारेण छिकिए ‘जीवसु वा मरसु व’ चि, कालसोयरिएण छिकिए भणियं ‘मा जीव मा मर’ चि, तुम्हेहि छिकिए भणियं ‘मरसु’ चि ? । भयवया भणियं—“सुणसु एत्थ कारणं, तुमं राया, रज्जं च बहुयाहिगरणत्तणओ णरयगतिजोग्गं कम्ममावहइ, ता ‘तुमं जीवमाणो रज्जसुहमुवभुंजसि, मरणे य णिरयं गच्छसि’ चि कल्लिउण भणियं जहा ‘जीवसु’ चि । अभयकुमारो वि सुविदियधम्मा-उधम्मत्तणओ अतीवसावज्जपरिवज्जणरती, ता तस्स जीवमाणस्स तुह पसाएण रायलच्छीसंभोओ, मयस्स वि मुरलोयगमणं, [? अओ भणियं ‘जीवसु वा मरसु व’ चि] । कालसोयरियस्स य पुणो बहुसत्तयाणरयस्स गच्छंति दियहा, सो वि हु जीवमाणो पाणिसंहारकारी, मओ वि अवस्सं णिरयगइं गच्छिस्सइ, अओ भणियं ‘मा जीव मा मर’ चि । मया छिकिए भणियं जहा ‘मरसु’ चि तत्थ वि इमं णिमित्तं जहा—किमिह मच्चलोए ठिएणं?, णिव्वाणं गच्छसु चि” । एयं च सोऊण राइणा सेणिएण णिरयगमणं अप्पणो समुप्पण्णणिरयाइदुक्खभयसंभमेण भणियं—“भयवं ! तुमए वि तेलोकलग्गणक्खंभभूएण मह सामिणा मए णिरयं गंतव्वं?, जेण—

तुह एकणमोकारा वि पाणिणो भावसंपउत्तस्स । जायइ समत्तसंसारवासपासाण वोच्छेओ ॥ ६०४ ॥

तुम्हेकणमोकारेण कह वि कम्मंतरालजणिएण । ण उणो जयम्मि जायन्ति जंतुणो णिरयदुक्खाइं ॥ ६०५ ॥

एका वि तुम्ह पयपंकयाण पणती पणासइ दुहाइं । तिरियगइ-कुमाणुस्साइयाइं भावेण कीरंती ॥ ६०६ ॥

दारिद-वाहि-जर-मरणपीलणासंभवाइं दुक्खाइं । ण हु होंति तुम्ह पहु ! चलणकमलभसलाइयव्वम्मि ॥ ६०७ ॥

जे उण सययं पणमंति पाणिणो पवरसुद्धसम्मत्ता । तुह चलणे ताण ण दुल्लहाइं मुरपवरसोक्खाइं ॥ ६०८ ॥

ता अच्छउ मुरलोयम्मि मज्झ तियसत्तणाइयं सोक्खं । तुह चलणरयस्स वि कह णु णिरयदुक्खं समावडियं?” ॥ ६०९ ॥

इय एवं दिययंतरविणिंतदुक्खोदगगयगिरेण । तिहुयणगुरुणो पुरयम्मि उवह रुणं व णरवइणा ॥ ६१० ॥

एवं च जंपिरं पत्थिवं पैलोइऊण भयवया भणियं—भो देवाणुप्पिया ! मा अद्धिइं करेसु, वद्धाउओ तुमं, ण य एत्थ अण्णो पतीयारो, तहा वि मा विसायं वच्च, दुल्लंघा कम्मपरिणती, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए तुमए तित्थयरेण होयव्वं ति । तओ तं सुहा-उसुहकम्मपरिणइं सोऊण भयवओ सयासाओ ‘धिरत्थु रज्जपरिणइए’ चि मण्णमाणो पणमि-ऊण जयगुरुणो चलणे पविट्ठो नयरं ति ।

इति महापुरिसचरिए सेणियरज्जणिंदा [२२] ॥

✽

तओ सो सेणियणराहिवो अप्पणो समुप्पण्णणरयपडणसंभैवभयणिम्मरो णियपरियणं-उंतेउराहिट्टिए सयले वि पुरवरे अणुमैइं दाउं पवन्नो जहा—जो जयगुरुणो समीवे पव्वज्जं पव्वज्जइ तमहं ण वारेमि । तं च पत्थिवजंपियं सोऊण पहुओ राइणो अंतेउरप्पेहूती णयरजणवओ पव्वज्जगहणम्मि समुज्जओ । परिचत्तसयलरिद्धिसमुययं तहापव्वज्जुज्जयं दट्ठण जणवयं तत्थेको जम्मदरिदो चित्तिउं पयत्तो—“पेच्छ, एए महाणुभावा जहिच्छियसंपज्जन्तणियविद्वविसयसुहसं-

१ एवं सु । २ “ति सया तुह चलं जे । ३ इय—एवं दिययन्तितरवि” सु । ४ उवह जे । ५ पुलोइं जे । ६ “ममभय” सु ।
७ “मती दाउ पयत्तो सु । ८ बहुओ जे । ९ “यमिइं जे ।

भोया तणं व सयलं पि परिच्छेदण पव्वज्जं पव्वज्जंति, मह पुण ॥ किं ण बंधणो एत्थ थिरत्तणाहिमाणो ? जेण पेच्छ
एए सयलजण ॥ लोहणिज्जं तं सयलं मोत्तूण णियमुंदरीयणं पवरमणि-कणय-रयण-मुत्ताहलाइयं उज्झिऊण णियरिद्धि-
समुदयं पव्वज्जं पव्वज्जंति, मह उण दारिदोवदवपीडियस्स भणोरहाणं पि असंभावणिज्जमुद्वेसस्स विहलो वेय मणुयजम्मो ।
जेण—

अइजजरजरमंदिरदरिविवरुग्गयभुयंगमफणाओ । दीसंति रुंददालिहकंदलीओ व्व णिक्खंता ॥ ६११ ॥

दियहं चिय वच्चइ धाविरस्स जरजरदपूरणपरस्स । धम्म-उत्थ-कामअमुणियविसेससंपायणरयस्स ॥ ६१२ ॥

एत्थ जरकप्पडोमलिणतणुसंमोवडियडंडिखंडस्स । दुवखं परकयघरहिंडणेण संपडइ पोट्टं पि ॥ ६१३ ॥

इय जेत्तियं घरासायलंभणडियस्स होइ मज्झ दुहं । विसहिज्जइ जइभावम्मि तेत्तियं ता ण किं ल्हं ? ॥ ६१४ ॥

चित्तिऊण पुणरुत्तं पयटो जगगुरुसमीचं । विणिक्खंतो सममण्णजणवणं । उज्जमिउं पयत्तो जहासत्तीए । अणुदिणं
च साहुजणस्स भत्त-पाणसंपायणुज्जओ णयरमज्झम्मि परिहिंडंतो लोएहिं दिट्ठो । दट्ठणमवण्णाए भणिउं पयत्तो—“किं
पुणाइ दुक्करमेण्णा काऊण दिक्खा गहिया ?, भणियं च—

जो णिग्गच्छइ मणि-रयण-कणयकलियं पि उज्झिऊण सिरिं । अत्थित्तपरिच्चाई सो पव्वतिओ फुडं भणिओ ॥ ६१५ ॥

जो उण अकिंचणो चिय गिण्हति दिक्खा णिरत्थया तस्स । धणसंपत्ती गेहं तेण विणा होइ वणवासो ॥ ६१६ ॥

पव्वज्जा किल णिक्किंचणाइया जस्स तं चिय परेक्कं । वणवाससमाणणिहेलणस्स किं तस्स दिक्खाए ? ॥ ६१७ ॥

इय निच्चं चिय णमुणियधणाइवासंगवाउलमत्तीओ । परजणजणियावणो जती दरिदो ति ण विसेसो” ॥ ६१८ ॥

एवं च कयावणवायं सहवासपरिचरणं तस्स जतिणो कलिऊण पुरजणं अभयकुमारेण तस्स पचायणत्थं कया
णियभवंगणुदेसे णाणाविहरयण-कणयसमणिया तिणिण कोडिप्पमाणा तिणिण उक्कुरुडा, घोसावियं च णयरे—जो
महिलं अग्गि पाणिं च परिचयइ जावज्जीवं तस्साहं एयाओ तिणिण धणकोडीओ पयच्छामि । तं च सोऊण समागओ
बहुओ पुरजणवओ । भणिओ य अभयकुमारेण—गेण्हइ इमं दविणजायं एण्णा वियारेण—सव्वहा सव्वया महिलं अग्गि
पाणियं च परिच्छेदण । एवं च समायण्णेऊण पढमं अवियारिऊण वेत्तुं पयत्ता केइ, पच्छा सइं चेव विथारिउं पयत्ता,
कह ?—

महिलं जला-ऽणले उज्झिऊण परिगेण्हिऊण धणणिवहं । किं च कुणंताण हवेज्ज अम्ह सोक्खाण संभोओ ? ॥ ६१९ ॥

सुरहंगराय-तंबोल-वसण-कुसुमाइओ वि परिभोगो । जलमज्जणं विणा हो ! निरत्थओ होइ कीरंतो ॥ ६२० ॥

मज्जियविलित्तंतंबोलसुरहिकयकुसुमकेसवासस्स । सयलरसजुत्तभोयणरहियस्स णिरत्थयं सव्वं ॥ ६२१ ॥

तं पि ण विणा हुयासणसंगेणं कह वि भोयणं घडइ । सयलिदिओव्विहणकरणं बहुसो वि कीरंतं ॥ ६२२ ॥

अह एसो मज्जणकयविलेवणालिद्धकुसुमपरिभोओ । महिलासंभोयपरम्मुहाण सव्वो वि हु निरत्थो ॥ ६२३ ॥

सेविज्जइ णरणाहो, लंघिज्जइ सायरो धणणिमित्तं । तं होति जुवइसंभोयकज्जरसियस्स सकयत्थं ॥ ६२४ ॥

वररमणिविलासालसपलोयणुप्पण्णरमणरसियस्स । उवउज्जइ विहवो, ण उण महिलसंभोयरहियस्स ॥ ६२५ ॥

इय दुप्परियल्लमिमं तियल्लयं उज्झिउं जए गिहिणो । कं वच्चइ उक्कओयं धणं तियल्लयविहीणस्स ? ॥ ६२६ ॥

१ हस्तद्वयान्तर्गतः पाठो जैपुस्तके नास्ति । २ असंभव” सू । ३ सइ” जे । ४ “समाव” सू । ५ “णि कूडा, जे । ६ सुरयंग”
जे । ७ “वहरणक” सू ।

एवं च सयलो वि पुरजणवओ भणियं पयत्तो—कुमार ! को हु एयं जियलोयसारभूयं तियं पि असारस्स धणमेत्तस्स कए परिचयति ? जो उण महाणुहावो इमं परिचइतुं तरइ तस्स ण किंचि दुपरिचयणीयमत्थि । तं च सोऊण अभयकुमारेण भणियं—“एवमेवं, ण एत्थं उंवेहो, कह ?—

जो चयइ चारुचरिओ दुपरिचयणीयमेयमच्चत्थं । ण हु णवर सो णराणं देवाण वि होइ णमणिज्जो ॥ ६२७ ॥
अचंतसत्तिजुत्तो चाई सो चेयं णवर लोयम्मि । सो चेयं महाभाई जो चयइ तियल्लयं एयं ॥ ६२८ ॥
सो चेयं भडो सो चिय महोयओ सो हवेज्ज सप्पुरिसो । जो सच्चपइणो इय तियल्लयं चयइ लीलाए ॥ ६२९ ॥
इय ‘संसारियमुहलालसाण जायइ जयम्मि जंतूण । कम्मवसयाण जायइ दुपरिचयं तियं’ ति फुडं ॥ ६३० ॥

ता भो महापुरजणा ! इमं एरिसं अचंतसत्तिजुत्तेणावि दुपरिचयणीयं परिचइऊण गहिया पव्वज्जा इमिणा महाणुभावेण, ता कीस तुम्हे भणइ जहा ‘दुग्गयस्स पव्वज्जा ण किंचि पुरिसत्थं जणेइ’ । ण य तुम्हाणमेसो ‘रोरो’ चि कलिऊण परिहविउं जुत्तो चि, जओ—

अह एको चिय दोसो गुणसयकलियस्स होइ रोरस्स । जं पसहं चिय दिट्ठं ‘अत्थि’ चि जणो परिकलेइ ॥ ६३१ ॥
उव्वेव-भया-ऽहंकारवज्जओ णिम्ममो णिरासंसो । महलोहसल्लरहिओ जइ व्व रोरो सुहावेइ ॥ ६३२ ॥
संघासो होइ परोप्परेण संतोस-धणसमिद्धीण । को समहिओ गुणेहिं सुद्धा-ऽसुद्धाइजणिएहिं ? ॥ ६३३ ॥
सुद्धत्तणेण जायइ समुज्जलो तत्थ णवर संतोसो । धणविहवो उण जायइ ‘णिहसे कसणो तमोहो व्व ॥ ६३४ ॥
आवज्जण-रक्खण-खय-वयातिउव्विग्गामाणसो अत्थी । अधणो सऽत्थत्तणणिव्वुतीए दूरं समब्भहिओ ॥ ६३५ ॥
किसि-भोरक्खा-वाणिज्ज-सेवकज्जुज्जओ धणत्थी हु । कालं गमेइ दुक्खं ण उणाऽणत्थी तहा पुरिसो ॥ ६३६ ॥
रायउल-त्तकरा-ऽऽरक्खिय-ऽग्गि-णीरेण अवहियम्मि धणे । जं दुक्खं होइ धणीण तस्स भाई ण णिल्लोहो ॥ ६३७ ॥
इय एवं दालिइं णिदिज्जइ दुब्बियइहमणुएहिं । अचंतभोयसंपयंथइहुदय-दुट्ठचित्तेहिं ॥ ६३८ ॥

ता भो ! मज्झत्थभावेण वियारिज्जमाणं दूरेण बहुगुणं रोरत्तणं, जेण ण आसंकइ पत्थिवाणं, ण तकराणं, ण दुज्जणाणं, ण रयणीसु, ण दिणे, ण मेहे, ण पंथे, केवलं जहासंपज्जन्ताहारसंतुट्ठविच्ची जहासेज्जासंपज्जन्तसुहणिदो आजम्मं पि सुहेण गमेइ, सयत्थसंपायणुज्जयस्स ण कोइ कैहिंचि जायइ पडिबंधकारणं” ति । एयं च अभयकुमारजंपियं सोऊण पुरजणवएण भणियं—कुमार ! एवमेयं जहा भणियं तुम्हेहिं, अवणीओ अम्हाण मोहप्पसरो । तओ सो तेण णायरजणेण मुणिवरो भत्तिभरणिब्भरं पइओ वंदिओ य । खंमिउं च तं जहागयं पडिगया णयरणायरजणा । अभयकुमारो वि भावयन्तो जयगुरुणो वयणं णियणिओए लभो ।

[अभयकुमारकया समणखिसणानिवारणा २३]



अणया य भयवया ‘कोण्डिण्णसगोत्ताणं तावसाणं पणरस सयाणि संबुज्झंति’ चि तण्णिमित्तं पेसिओ अट्ठावय-सेलं गोयमो गंतुं पयत्तो । दिट्ठो य णाइदूरंमूमिभायसंठिएणं अट्ठावयगिरी । जो य कैरिसो ?—

१-२-३ चेव जे । ४ तुम्हे जे । ५ णिहसह कं सु । ६ अहणो जे । ७ ‘यत्थपुदय’ जे । ८ ण संकं सु । ९ कहि पि जे । १० आमियं जे । ११ ‘रसंठि’ सु ।

कथइ मणिमयसिहलसंतरेविकिरणविउणियप्पसरो । कथइ तवणिज्जुज्जलपहासमोरंजियदियंतो ॥ ६३९ ॥
कथइ कलहोयसिलासमूहधवलियधरायलद्धंतो । कथइ णिसामु ससिकंतसलिलपञ्चालियदियन्तो ॥ ६४० ॥
कथइ कडयुग्गयपवरपायवुप्पणपउरफलविहवो । सुर-सिद्ध-जक्खकिण्णरमिहुणयणौदिणपरिवेदो ॥ ६४१ ॥
इय सो जोयणजोयणपयविविणिम्मोविओ महासेलो । अट्ठायदाहिहाणे मोग्गसणहरिणा दिट्ठो ॥ ६४२ ॥

तहिं च पड्ढावियं भरहाहिवेण मणि-कंचणमयाणं आइमतित्यगरपडिमाणं रुवं । 'तं च वंदामि' चि कलिऊण
आरोहुं पयत्तो पव्वयं । दिट्ठाइं च पढमपइयासुं अचंतहुं चरतवविसेससोसियतणुतय-उट्ठिसेसाइं तावसाणं पंच सयाइं । पुल-
इओ तेहिं । दिट्ठो य कणयउज्जलसरिसदेहच्छवी अमाणुससरिसंसरुवो समारुहंतो वीयं पइयं । तहिं पि तह चेय [सचवियाई]
दुकरतवविसेसकिसीकयसरीराइं अण्णाइं पंच सयाइं । तेहिं पि सचविओ तइयपइयमारुहंतो । तत्थ विं पुलइयाइं तह
चेय पंच सयाइं । समीवेणं चेव आरुहिउं पयत्तो । तओ ते तं अचञ्चुयसरीरसामत्थं पलोएऊण विम्हयं गया तावसगणा
चित्तिउं पयत्ता-पूणमेस जइरुवो को विं दिव्वो, कइमण्णहा मणुस्सरुविणा पीणतणुणा एसो समारोहुं तीरइ, ? एसो खु
मुणिवरेहिं पि तिच्चतवोवज्जियलद्धिविसेसेहिं दुक्खमारुहिज्जति, जेण पेच्छ—

चिट्ठति हेट्ठिमपइयासु णीलसेवालकणियाहारं । आरोहुमणं इह तावसाण तवकिसियपंचसयं ॥ ६४३ ॥
तह चेय वीयपइयासु सुकसेवालपिहियपोट्ठग्गी । आरोहुकंठमणं दूसहतवतवियतणुभायं ॥ ६४४ ॥
अम्हे उण दुकरकयेंतिरच-पंचाइरचरचेहिं । सुसियसेवालकणियपाणाहारा परिवसामो ॥ ६४५ ॥
तह वि ण तरामु मणयं पि उवरिभायं सयं समारोहुं । एसो हु समारुहइ चि पूण चित्तउम्ह पडिहाइ ॥ ६४६ ॥
इय एव विम्हउप्फुल्लोयणेहिं पलोइओ सहसा । रविकिरणकरालम्बणवसेण अहंसणं पत्तो ॥ ६४७ ॥

एवं च विम्हयवसविसट्ठंतलोयणेहिं पुलइज्जमाणो 'एसेस वच्चति' चि 'अंपिराणमहंसणीहूओ । आरुढो य सिह-
रग्गमायं । पलोइया य पढमजिणाइया भरहेविणिम्मविवा मंदिरावली । केरिसा य ?—

सच्छफलिहामल्लम्भददपीढोवरिणिविट्ठमिच्छिहा । उवणेति चित्तमायासैदेसपरिसंठिय व्व दहं ॥ ६४८ ॥
पवणवसुब्बेल्लियधवलधयवहुद्धंतपल्लवकरेहिं । मंभीसइ व्व भवभीयभत्तिसंपत्तभवियजणं ॥ ६४९ ॥
दूरुल्लसंतमणिमुहल्लकिंकिणीजालकयविरावेण । जिणगुणगहणं कुणइ व्व उवह भुवणस्स विंधाली ॥ ६५० ॥
इय पोमराय-मरगय-णीलमहामणिविणिम्मियसरुवा । जिणभवणमालिया गणहरेण दूराओ सचविया ॥ ६५१ ॥

दट्ठणं च हिययन्मतल्लसंतहरिसपसरो बहलरोमंचुचइयतणुविहाओ अइसाओ जिणभवणवन्तरं । पणमिऊणं च
विणिज्जियसुरा-उसुरमयरद्वयदलणपच्चलं पढमजिणविम्भं थोउं पयत्तो । कइ ?—

जय जुयपदमुप्पाइयवहुविहसिप्पप्येयारकोसेल्ल ! । जय पढमरायणीईविसेससंपायणसेमत्थ ! ॥ ६५२ ॥
जय पढमधम्मदुद्धरधुरधरणुद्धंतधवलकयलीलं ! । जय पढमदुग्गहाभिग्गेहुग्गसंगहियपरमत्थ ! ॥ ६५३ ॥
जय पढमकेवलालोयसयलणिम्मलविलोइयतिलोय ! । जय लक्खियदुल्लक्खोरुमोक्खमुहमग्गवहुमंग ! ॥ ६५४ ॥
इय पढम ! पत्थिवाणं पढम ! जिणिंदाणमिहसमासमए । पढमजिणेसर ! णमिमो पुणो पुणो तुम्ह चल्लाण ॥ ६५५ ॥

१ 'ततरणिंकरि' ख । २ 'णाइल(ण)प' ख । ३ 'म्माणिओ जे । ४ 'दुकर' जे । ५ 'सरुवो ख । ६ 'तवकिलेसकि' जे ।
७ इ ख । ८ ते तावसा ते अच' ख जे । ९ इ ख । १० 'वतिरतेहिं । सु' जे । ११ जंपि(५)यन्ताणमहं जे । १२ 'हविणिम्मिवा जे ।
१३ 'खदेव' जे । १४ 'पयावको' ख । १५ 'कोसाला । जे । १६ 'समत्था ! जे । १७ 'लीला ! जे । १८ 'ग्गहग्ग' जे ।

एवं च कयतिपयाहिणं पणमिऊण जयगुरुं गिसण्णो पुरओ पल्लकवंधेणं, ठिओ कंचि वेलं भयवंतं ज्ञायमाणो । एत्थाव-
सरम्मि य गंधव्वरई णाम विज्जाहरो सदइओ भगवओ वंदणणिमित्तमेवागओ । वंदणावसाणे य पुलइऊण पीणतणुवि-
हायं गोयमगणहारिणं चित्तिउं पयत्तो-ण हु एसो महिहरो माणुसाण समहिगम्मो अइसयं विणा, अइसओ य तिब्बतव-
विसेसोवलंभो, तवस्सिणो य किसंगलिगिणो हवन्ति, एसो य णाणुरूववेसधारी घणसिणिद्धपीवरतणुच्छवी य
लक्खिज्जइ, ण य एत्थ साइसयतवस्सियण वज्जिय इह माणुस्स सभारोहो । एवं च ससंसय-वियक्कपज्जाउलमणस्स
णहयरस्स भावं लक्खिऊण भणियं गोयमगणहारिणा जेहा-भो देवाणुप्पिया ! ण एत्थ दुब्बलया कारणं कल्लापंसंत-
तीए, ण य अकारणं वलियया, जेण मुच्चउ एकमक्खाणयं—

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे पुंडरिगिणी णाम णयरी । तत्थ सकुलकमाणुसासियणिययरज्जो पुंडरीओ णाम
णरवती । सो य उवभुंजिऊण बहूयं कालं रज्जमुहं णिव्विण्णकामसंभोओ णिवेसिऊण णिययरज्जे कणिट्ठसहोयरं पवण्णो
जयणाहसासणे पव्वज्जं । तओ तस्स तिब्बतवविसेसायरणत्तणओ जहाविहिसमासाइयअंतपंतासणभोइणो पयइसुकुमारत्त-
णओ पुव्वकयकम्माणुहावओ य संभूओ तिब्बतोगायंको । कमेण य परिभमंतो संपत्तो पुंडरिगिणिं णयरिं । मुणियवुत्तंतेण
य णिग्गतूण वंदिओ सबहुमाणं नरवइणा । मुणियसरीरोगायंकविसेसेण य कराविया चिगिच्छा जाव पउणसरीरो
संवुत्तो । पच्छा असणाईहिं च पयामं पोसिया से तणू । पतिदिणं च तहा भुंजमाणस्स वियलिओ कुसलपरिणामो,
वियारं गयं चित्तं, विसंखलोहूयाणि सयलिंदियाणि, पवियंभिओ विसयाहिलासो । तओ लज्जमाणो जणवयाणं विणिग्गओ
किल तवं काउं । पविट्ठो वणगहणं । पविट्ठस्स य किं जायं ?—

णवरि य मणे वियम्भइ भोउब्भइभुंजणेकतल्लिच्छा । सुतवुज्जयस्स वि दढं जइलिगैविरोहिणी गिच्चं ॥ ६५६ ॥
चित्तं भोएमु गयं तणुं च धम्मज्जमम्मि लज्जाए । संवरइ, 'लज्जइ जणे पायं पारदपरिहारी' ॥ ६५७ ॥
पुणरुत्तं तस्स परत्तचित्तया होइ विसयलिच्छाए । 'कुसलकरणेहिं मुज्झइ पायं पडिक्कलकयचित्तो' ॥ ६५८ ॥
इय सो वणवासाओ मणसा संजणियविसयवामोहो । आयडिदज्जइ तुरियं रज्जूप व भोगतण्हाए ॥ ६५९ ॥

आगतूणं च णयरवाहिरुज्जाणवणे विणीलतरुसाहामु समोलइयपत्ताइउवयरणो गिसण्णो पायवस्स हेट्ठे । समा-
गयं च सोऊण विणिग्गओ कणिट्ठभाया वंदिउं । दिट्ठो य णाइदूरओ । दंसणमेत्तोवलक्खियहिययाहिप्पाओ वंदिऊण
य भणिउं पयत्तो, कह ?—

आयारं तस्सुवलक्खिऊण विसयोवभुंजणसयणं । राया ससिणेहं पिव सहोयरं भणिउमादत्तो ॥ ६६० ॥
“सोयर ! मह रज्जधुरं णिक्खिउं दिक्खमइगओ जं सि । तदियसाओ मह एस गुरुकिलेसो व्व पडिहाइ ॥ ६६१ ॥
तुम्हारिसेहिं तीरइ णिव्वोहुं एस दुद्धरो णवरं । दुप्परियल्लो वि दढं रज्जभरो, ण उण अम्हेहिं ॥ ६६२ ॥
जो सव्वया वि अहियं सिमु त्ति पैरिवालिओ सि(मि) णेहेण ।
सोइहमयंडे चिय किं तुमाए दुक्खम्मि विणिउत्तो ? ॥ ६६३ ॥
करुणमवेक्खंति दढं दुक्खाहिगए जणे महापुरिसा । कारुणयापहाणं जयम्मि धम्मं पसंसंति ॥ ६६४ ॥
इय रज्जगुरुकिलेसेण संजुयं मेल्लवेमु मं इहिं । काऊण दयं अइदुग्गचारयाउ व्व रज्जाओ” ॥ ६६५ ॥

सोऊणं च तं तहाविहं तस्स जंपियं महाधणोवलंभे व्व रोरो, वाहिविगमे व्व वाहिगहिओ, पियसमागमे व्व विर-
हविहुरो दढं परिओसमावण्णो । सरहसं च पडिवण्णं जं तेण जंपियं । तओ सो कणिट्ठभाया कयपंचमुट्ठिलोयपरियम्मो

चेत्तूण तस्स तणयं चेय रयहरणाइमुवगरणं समोप्पिऊण तस्स मउड-कडयं-डंगयाइयं गियमाहरणं वणमइगओ । इयरो वि-
पसाहियाहरणतणुविसेसो सयलसामंतं-उंतेउर-भिचपरिगओ अइगओ णयरं । पविटो गिययमंदिरं ति । समागयपुरजण-
वयदंसणविणोएण ठिओ कंचि वेळं । पुणो पच्छा वाहितो सूवयारो, भणिओ य-अट्टारसखंडप्पयारजुत्तं संपाडेसु भोयणं ।
तेण वि 'जमाइससि' ति भणिऊण पात्थएण गिब्वत्तियं जभाइत्तं । तओ सो पुंडरीओ गिब्वत्तियमज्जणपरियम्मो सुर-
हिधुवाइसुरहीकयतणु-गिवसणो अइगओ आहारमंडवं । वित्थारियं थालाई, विविहवित्थरेणं परिवेसितं पयत्तं पवरंतेउरवि-
लयार्हि, कह ?—

वोसट्टसरससियकुंददलउड्डुवामदिचिसोहिल्लो । पक्खिप्पइ मणिथालम्मि सुरहिगंधुवमडो कूरो ॥ ६६६ ॥
दलियहलिदीरमणिज्जपिजरायारकंतिराहिल्लो । सुमुयंभगंधमणहरमुहया पक्खिप्पए दाली ॥ ६६७ ॥
तव्वेलदद्धणवणीयसुरहिणिम्महियमासलामोयं । अगवइ वेप्पन्तं घाणपीइसंपाइ पवरवयं ॥ ६६८ ॥
तयणंतं च सालणय-पवरपक्कणदिण्णविहिणियमो । वित्थरइ सरसपरितुद्ववण्णो तिम्मणुग्घाओ ॥ ६६९ ॥
इय एवं पज्जन्तोवहुत्तखीरावसाणराहिल्लं । भुत्तं पयाममसमं सुभोयणं पुंडरीएण ॥ ६७० ॥

भोयणावसाणे य गहियहत्थुव्वट्टणाइयं(य)-तंबोलविसेसो संपत्तो रइहरं । भणिओ य अंतेउरमहल्लओ-वाहिप्पउ
अंतेउरं । महल्लयवाहिचाणंतं च संपत्तमंतेउरं । जं च केरिसं ?—कप्पतरुवणं पिव समुव्वेलवाहुल्लइयावियाणं, णंदणवणं
पिव कोमलकरकिसलयाउलं, माणससंरं पिव कणयप्पहविसट्टन्तवयणकमलं, मंदाइणीपुल्लिणं पिवं परिमंदपयसंचारं । गिसण्णं
समीवे । तओ छट्ठण्णकालिओ न्व दियवरो पवरभोयणलंभेण वेहूयकालवम्भपरिपालणुप्पण्णरमणाभिलासो परं पीइमइ-
गओ । तओ तं दिणसेसं रयणिं च जहकमं संतोसणिव्वत्तियरइविलासो अच्छित्तं पयत्तो । णवरि य बहुयत्तणओ भोय-
णस्स, परियट्ठियत्तणओ रइपरिस्समस्स, तवकिसत्तणओ अंगाणं, समुप्पण्णसीयलविलेवणावट्ठंभो ण परिणओ से आहारो,
संजाया से विमुइया । तओ तिब्ववियणाविसेसायडिडयजीविओ मओ समाणो गिरत्थीकयतहाविहविण्णतवच्चरणो
गिरयं गओ पुंडरीओ । सो वि हु कणिट्ठो से सइयरो तहाविहपरिणामगहियसमणलिओ गओ तण्णयरीओ चित्तिउं
पयत्तो, केहं ?—

बहु जाइ-जरा-जम्मण-मरणुव्वत्तणपयत्तणीरम्मि । गुरुकम्मणियरणिव्वरविसट्टदुल्लंघलहरिम्मि ॥ ६७१ ॥
पसरन्तकाम-कोहाइकुडिल्लकुंभीरपक्काहम्मि । हियउम्मुच्छाविसमुच्छलन्तमच्छच्छडोहम्मि ॥ ६७२ ॥
दुव्वारोयमयरोवरुद्धम्मन्तजंतुणियरम्मि । पियविप्पओगवड्ढन्तविरहवडवाणलिल्लम्मि ॥ ६७३ ॥
इय एरिसम्मि संसारसायरे दुल्लहम्मि मणुयत्ते । धण्णो हं जेण मए पत्तं समणत्तणमणग्घं ॥ ६७४ ॥

एवं च पतिसमयं पवड्ढन्तमुहपरिणामो गंतुं पयत्तो । पत्तो एकं गामं । तर्हि च गरुयाभिग्गहाइसयअन्तपंतासणो
जहाविहिकयभोयणपरियम्मो समागए रयणिसमए कयससमयावस्सओ गिवण्णो एकम्मि सुण्णहरे । तओ सुकुमारत्तणओ
सरीरयस्स, अमुत्तपुव्वत्तओ कुभोयणस्स, कुसेज्जासयणत्तणओ अंगाणं ण जिण्णं भोयणं । समुप्पण्णं पोट्टमुलं, वियंभिया
अरती, समुब्भूया "सिरोवेयणा । एत्थावसरम्मि य काऊण हियए धीरैयं, अवलम्बिऊण गरुयावट्ठंभं, अंगीकाऊण साहसं,
चित्तिउं पयत्तो—"णूणं मह एयपज्जवसाणो चेव जियलोओ । अहवा किमेइणा चित्तिएणं ? धण्णो हं, जेण—

बहुभवकोडिसैहस्सेहि दुल्लहे पावियम्मि मणुयत्ते । पत्तं अपत्तपुव्वं सामण्णं बहुभवेहि पि ॥ ६७५ ॥

१ 'नियत्तियं' जे । २ 'वित्थरियं' जे । ३ 'इविहववि' सु । ४ 'रुणं' सु । ५ 'सरं व सु' । ६ 'व मंदं' जे । ७ 'छट्ठण्णका' सु ।
८ 'पवरं' जे । ९ 'पहुयं' जे । १० 'कहं' इति सुपुस्तके नास्ति । ११ 'सिरवे' जे । १२ 'वीरयं' जे । १३ 'सहस्सम्मि' दुल्लहे पाविऊण
मं जे । १४ 'भवेत्तुं पि' जे ।

ता वक्तो मं जो जह्णवणं सत्ताणसंयमं पत्तो । अज्जं चिय विच्छट्ठियसंसारोवासवासंगो ॥ ६७६ ॥
अण्णह दुरज्जसंजोयजणियऽवज्जो हु जइ विवज्जेज्ज । ता निवडंतो गुरुघोरणिरयपोयालमूलम्मि ॥ ६७७ ॥
इय तस्स कयणिरायारवित्तिणो धम्मज्ञाणनिरयस्स । वच्चइ णिसाए सुहभावणाए जा पच्छिमो जामो ॥ ६७८ ॥

णवरि य अपडियारत्तणओ वाडिवियारस्स समुब्भूओ तिव्ववियणोदओ । तहा वि तह चिय पवडंतमुहपरिणामो
कालं काऊण समुप्पण्णो सुरवरेसुं ।

ता भो देवाणुप्पिया ! ण एत्थ दुब्बलयाए, ण वलिययाए, ण बहुदिणपरियायकरणेणं, ण एकदिणपरियाएणं,
जेण विसमा कम्मपरिणई, कम्मवसपरिणओ हु जीवो सुह-दुहाणं भायणं होइ त्ति ।

एयं च सोऊण जंपियं गणहारिणो 'एवमेयं' ति भणमाणो णहयरो वंदिऊण सविणयं पैत्थिओ जहासमीहियं ।
गोयमसामी वि जहाविहिं पज्जुवासिऊण जुयाइजयगुरुं ओयरिउं पयत्तो अट्ठावयसेलाओ । दिट्ठो य तेहिं तावसगणेहिं,
केरिसो य ?—

अह तं अट्ठावयसेलमेहलोयरणविक्रमकमिणं । धीरमइदं व विसालकट्ठिणवच्छत्थलाहोयं ॥ ६७९ ॥
दट्ठुं परोप्परुप्पणविम्वयचन्तवडिदयालावा । जंपंति कह वि किच्छेण एत्थियऽम्हे भुवं पत्ता ॥ ६८० ॥
एसो हु को वि दिव्वोवलंभिउडामसत्तिसंपण्णो । जो आयासेण विणा ओयरइ समारुहेऊण ॥ ६८१ ॥
'दुक्खेण कह वि तीरइ आरोहुं, तह मुहेण ओयरिउं' । अज्ज पसिद्धी एसा पुणो वि एएण पायडिया ॥ ६८२ ॥
अहवा मुहेण धीरो उच्चं पयमारुहेइ ववसाई । ओयरइ पुणो दुक्खेण एयमत्थं पयासेउं ॥ ६८३ ॥
ता एयं चिय सरणं वचामो 'भुवणकयमहच्छरियं' । एस सरण्णो 'भुवणे' अण्णसत्तो महाभाओ ॥ ६८४ ॥
एयस्स चलणपंकयपहावओ णूण तीरए दट्ठुं । तिहुयणणाहस्स मुहं आरोहुं वा इमं सेलं ॥ ६८५ ॥
तं णत्थि जए जं सप्पहावपयसंसिया ण साहंति । किं पुण सेलारुहणं जिणिदपयवंदणत्थम्मि ? ॥ ६८६ ॥
सम्भावसंसएणं महाणुभावण जायइ जमिट्ठं । आसयवसेण अहवा मुहा-ऽमुहो होइ फललंभो ॥ ६८७ ॥
इय तेसिं तस्स महाणुहावयायडिडओरुचित्ताण । वच्चइ मज्जेणं चिय परोप्परं मंतयंताणं ॥ ६८८ ॥

तओ ते तावसगणा तहंसणुप्पणहरिसपसरा भत्तिभरवियंभंतपुलयपडला दट्ठूण गोयममहरिसिं 'सुसागयं' ति
भणमाणा अम्भुट्ठिया, उभयकरकमलमउलिं सिरम्मि णिवेसिऊण भणिउं पयत्ता—भयवं ! अचिन्तसत्ती माणुसवेसधारी
को वि दिव्वो तुमं, ता कीरउ पसाओ अम्हं सोसत्तणपरिगहेणं, उत्तारेसु अम्हे दयं काऊण संसारसायराओ । त्ति भणिउं
महियलमिलन्तजाणु-सिरमंडला णिवडिया पायपंकएसुं 'अज्जदिवसाओ तुमं अम्हाण गुरु' त्ति । एवं भणियावसाणम्मि
य भणिया गणहारिणा—अत्थि इहं सुरा-ऽसुरमउलिलालियचलणजुंवल्लो वीरवद्धमाणसामी तुम्हाण अम्हाणं च गुरु,
ण केवलं तुम्हाण अम्हाणं च सयलस्स वि तिहुयेणस्स गुरु त्ति, जारिसो हं तारिसा तस्स बहवे महप्पभावा मुणिणो ।
तओ ते ॥ ६८९ ॥ जंपिउं पयत्ता—जो तुम्हाण वि गुरु सो विसेसेण अम्हाण वंदणिज्जो । भणिया य पुणो गोयमसामिणा—
मह प्पहावओ इमं सेलं समारुहिऊण वंदिऊण जुवा(या)दिजयगुरुं समागच्छह, जेण अम्ह गुरुणो वंदणत्थं वच्चह । तओ
ते तावसगणा तप्पहावओ समारुढा अट्ठावयगिरिवरं । वंदिऊण भत्तिभरणिभरमाणसा उस्सभसामिं समागया गणहा-
रिणो समीवं । 'सफलो अम्ह एस परिस्समो जं तुमेहिं समं दंसणं जायं' ति भणमाणा णिवडिया पुणो पयजुवलम्मि ।
भणिया गोयमेण—एह, अम्ह गुरुं वंदह त्ति । पयट्ठा सरहसं । ओइण्णा गिरिवराओ । गंतुं पयत्ता ।

१ 'पायारसुं' जे । २ एवं सु । ३ अदच्छिओ जे । ४ वीर' जे । ५ वीरो' जे । ६ भुयण' जे । ७ भुवणे जे । ८ पुण्ण' सु ।
९ मंतमाणं सु । १० अत्थिहिं सु' सु । ११ 'जुयलो जे । १२ तुम्ह अं' जे । १३ एतद्वस्तुविहादारम्भ ५५४ गायोत्तराधंस्थितद्वस्तुचिह्न-
पदं पद्यन्तः पाठसन्दर्भो जेपुस्तके नास्ति ।

एकम्मि सण्णिवेसे [? गयाणं] गणहारिणा [भणियं] - किमज्ज भोयणं अज्ज ! तुम्हाण अभिरुइयं ? । तेहिं भणियं-पायसो । गोयमेण भणियं-चिट्ठह मुहुत्तंतरमेत्थ पएसे जाव अहं वेत्तूणागच्छामि । तह चेय पडिक्खणमेएहिं । मुहुत्तंतराओ संपत्तो पवरपायव(स)स्स पत्तयं भरेऊण । भणिया य ते-उवविसह, भुंजह चि । तओ ते परोप्परं वयणाई पलोएऊण पहसिया । 'कहमेकस्स भोयणं पण्णरससयाणं संपज्जिही ?, अहवा किमम्हाण वियारेण ?, जं चेय गुरु समाइसइ तं तह चेय अणुट्टियच्चं' [? ति चित्तिऊण] णिविद्धा जहाणुकमेणं, कह ?—

णवरि य हिययन्मितररहसवमुद्धन्तमुद्धपरिणामो । विसउल्लसंतयणपुलयमासलिय[?.....]तणुभाओ ॥ ६८९ ॥

आढत्तो पक्खिविउं विसट्ठकुंदेहुकंतिकयसोहं । संपुण्णसालितंदुलकलियं वरपायसं सहसा ॥ ६९० ॥

अह सन्वाण समन्महियपीतिसंपत्तित्तितोसाण । पण्णरसाणं पि सयाण अच्छरीयं जणन्तेण ॥ ६९१ ॥

इय अक्खीणमहाणसलच्छी(दी)अणुहावओ मुणिदेण । भुंजाविऊण भुत्तं महारिसिणा अप्पणा पच्छा ॥ ६९२ ॥

यागविक - आगव भी दुविहितार भी कडाव

तओ ते तावसगणा दट्ठण तं गणहारिणो महापदावं लद्धिविहवं अप्पाणं जूरिउं पयत्ता-वहयकालं अम्हेहिं अप्पा ययारिओ किलेसवहुलेणं, कह ?—

जस्सेरिसप्पहावा सिस्सा अण्णे वि गुणमहग्गविया । सो उण तिलोयअच्चन्नुउ चि मण्णे गुरु को वि ॥ ६९३ ॥

जोगम्मि य वरसिस्से गुरुणो संकमइ सयलविण्णाणं । इय अणुमाणाहिं तो पयस्स गुरु गुरु को वि ॥ ६९४ ॥

तम्हा अवितहमेयं जं भणियमिमेण 'मह गुरु अण्णो' । अण्णह अणुवासियगुरुकुलस्स कत्तो इमा सिद्धी ? ॥ ६९५ ॥

वच्चाओ तस्स वयं भुवणकयाणुग्गहस्स जयगुरुणो । चलणाण जए संसारसायरुत्तारण — — — (? यराणं) ॥ ६९६ ॥

इय ते सम्मदंसणसंपयसंपत्तचित्तमुद्गझाणा । संपत्ता जयगुरुणो आसण्णसमोसरणभूमी ॥ ६९७ ॥

तओ दूराउ चिय पलोइऊण रुपमयपायारवलं दिप्पन्तमणिकुंडलुप्पयन्त — — — — — विह-
दिव्वंसुयपरियप्पियचिधमालालं कियं जयगुरुणो समोसरणं हिययपहरिमुल्लसन्तमुद्गज्जवसायाण समुप्पणं तइयपइयासं-
सियतावसंपंचसयाणं केवलणाणं । — — — — — समासण्णयरत्तणओ जयगुरुणो धम्मदेसणाणिमित्तविय-
म्मिओ सजलजलहररवाणुयारी दूराइसंठियदुंदुहिणीसणो सयलजणाणंदयारी वाणीरवो । तं च सोऊण दुइयपइयासंसि-
— — — — — (? यतावसंपंचसयाणं) समुप्पणं केवलं णाणं, अण्णाणं जिणमुहयंददंसणपणट्टकम्मममसमूहाणं ।

तओ समुप्पणपण्णरससयकेवलपरियाओ(यरिओ) पविट्ठो जयगुरुपायमूलं । ते वि केवल्लिणो केवल्लिपरिसासमुह
— — — — — न्ता भणिया य गोयमेणं-जयगुरुं वंदह चि । भयवया भणियं-गोयमा ! मा केवल्लिआसायणं
कुणमु । गोयमेण चित्तियं-एए मए चेव वोहिया, णवरमेएसिं चेव केवलसमुप्पत्ती जाया, पयासिओ हं चरमदेहो ।
चि चित्ताउरस्स गणहारिणो भयवया भणियं-गोयमा ! मा संतप्प, तुमं पि चरमदेहो आसण्णसिद्धिलंभो य, किंतु
मण्णेहवंधणकम्मावरणपडिक्खलियं केवलं ण समुप्पज्जइ, ता मा विसायं गच्छमु चि ।

[गोयमसामिणो अट्ठावयारुहणा २४]



एवं च प्रतिदिनं संबोध्यन्तो बह्व्यजंतुसंघायं, पसमंतो चिरपरुदाइं पि वेराइं अहामुहं विहरमाणो [संपचो]
दस्पर्णाहिहाणं देसं । तर्हि च दस्पर्णा महाणदी । तीए तीरे दस्पर्णाउरं णाम णयरं । जं च केरिसं ?—महासइसीलं
पिव परपुरिसालंघणिज्जं, वेसाविलासजंपियं पिव सरसवाणीयं, चतुरजणहासियं पिव मुहासियणिलयं, मुकलचविलसियं
पिव गोउरविणिन्तमुह्यवायं ति । तर्हि च णियभुयबलोज्जला(छा)वज्जियरायलच्छी गुरुपयावपसरुच्छाइयपडिवक्खचको
राया णामेण दस्पर्णाभदो । सो य केरिसो ?—

सयलजणस्स वि धम्मो व्व जो सया णियमणम्मि पच्चवस्सो । कोवकर[ण]म्मि कालो व्व दलियरिबुवेरिवग्गाण ॥ ६९८ ॥
धणउ व्व जो पसाएण सव्वया सयलसंसियजणाण । तिव्वपयावेण हुयासणो व्व दुइंसणालोओ ॥ ६९९ ॥
इच्छासंपाइयजणमणोरहो जो सिरि व्व दिट्ठीए । सारस्स(स)उ व्व गयाए पयडं संजणियसोहग्गो ॥ ७०० ॥
इय सो दस्पर्णाया सुपसाहियसययरज्जसंभोओ । णिययकुलक्कमपालियभरणियलो भुंजए रज्जं ॥ ७०१ ॥

अण्णाया य अत्थसइसए ककुलाररबंधवे सहस्सकिरणे, वियलिए संज्ञासमए, ईसिपरियट्ठिए तिमिरपसरे, — — — —
— वणिसणस्स तस्स दस्पर्णाभदराइणो णिवेइयं चारपुरिसेहिं जहा—देव ! कलं इह तुह पुरवरस्स बाहिं सयलज-
एकलबंधवो भयवं बद्धमाणसामी समोसरिही । तओ ताण वयणाणंतए — — — — — स्स किं जायं ?—

अन्तोपवियंभियहरिसणिभरुम्भासिया विरायन्ति । सव्वत्तो चिय देहम्मि विसयरोमंकुरुब्भेया ॥ ७०२ ॥
ण यणइ परोप्पराणम्मिडन्तमणिकणयकडयपम्भारो । जयगुरु — — — — — इयकरजुयलो ॥ ७०३ ॥
वियसइ तोससमाणंदवारिभरगरुयमुहयलालोया । जलगम्भिणसरमुग्गयकुवलयमाल व्व से दिट्ठी ॥ ७०४ ॥
हिययपसरन्तपहरिसविसेसणमुणियपरावरिल्लाइं । अप्पडिफुडक्खरालक्खजंपियाइं मुहावेति ॥ ७०५ ॥
इय चारवयणवड्ढियहरिसविसट्ठन्तपुलयपडलोहो ।
वट्ठन्तसोहमुहओ सो चिय अण्णो — — — — — (? व्व संजाओ) ॥ ७०६ ॥

— — — — — (? तओ चार) यपुरिसाण दाऊण जहासमीहियमम्भहियं पारिओसियं अंतोसमुल्लसन्तहरिसपसरो
सयलसामन्तत्थाइयासमक्खं जंपिउं पयत्तो जहा—अचन्तरिद्धिवित्थरेणं कलं तह मए भयवं वंदियव्वो — — — — —
(?जहा ण को वि) तिहुयणे वि वंदइ । त्ति भणिऊण विसज्जियासेससामंतो अंतेउरमइगओ णराहिवो । तर्हि च जय-
गुरुसंकहाविणोएण गमिऊण सयलजामिणिं पुणो अणुइए चेव दिणणाहे बाहरिऊण सयल — — — निओइयगणं भणिउं
पयत्तो जहा—महं मंदिरुदेसाओ जाव समोसरणगोउरमुहं ताव जहाविहवणिम्माणियं मह गमणजोगं कायव्वं । भणि-
ऊण विसज्जिया एते । संपाडियं तेहिं राइणो सासणं । केरिसं च तं दीसिउं पयत्तं ?—महापुरिगेहिं(हं) पिव सउण-
यणक्खवालिसोहं, तारावीढत्थाणं(ण) धरायलं पिव साहीणमुयणासं, महाडइरणं पिव मुरहिवलग्गज्जुल्लन्तचामरचयं,
वेलायडपुलिणं पिव पइणमुत्ताहलोवयारं, अवि य—

मणिमयखंभुम्भडजणियविविहमणितोरणोरुराहिंलं । अचन्तजच्चकंचण[सु]चारुतुलणिमियमंडवयं ॥ ७०७ ॥
वरपरियप्पियपट्ठंमुयुज्जल्लसियहल्लिरुल्लोयं । देवंगवियाणयसाहिरामलम्बन्तचलचूलं ॥ ७०८ ॥
पेरन्तो [.....] ज्जुल्लन्तकंतमुत्ताहलावलिकलावं । मारुयमंदंदोलन्तसच्छमणिगोच्छसंछणं ॥ ७०९ ॥
दिसिदिसिचलन्तज्जुल्लन्तचारुचलचमरचूलचंचइयं । डज्जन्तमुरहिपरिमलविणिंतकालायरूपीलं ॥ ७१० ॥
पक्खिचकुमुमपरिमलमिलन्तभमरउलवद्धंकारं । मुरहिपडवासपक्खिचवासियासेसदिसियकं ॥ ७११ ॥
जुणियकप्परपरायपंडुरिज्जन्तसयलमहिवेदं । कुंकुमरमुच्छडुच्छरियधवलस[य]वत्तसिचयन्तं ॥ ७१२ ॥

धुव्वन्तधवलधयवडवलमचलकणिरकिंकिणिकलावं । सुपसत्थपंचवणुच्छलन्तचिधुम्भडाडोवं ॥ ७१३ ॥

इय तं सन्वत्तो चिय णिव्विचविसिद्धकुसुमदामिलं । — — — मयचुणुल्लसंतरंगावलिसणाहं ॥ ७१४ ॥

एयारिसं च णिम्मविऊण रायमग्गं णिवेइयं णिओइएहिं णरवइणो । तओ राया णिसामिऊण ताण वयणं णिव्वत्तियसुरहिसलिलमज्जणोवयारो पिणद्धसियसिचयचारुजुयलो विलित्तसियचंदणुदामभूसियसरीरो सियमुत्तावलिकला-
वरंखोलन्तवच्छत्थलो सियकुसुमदावा(मा)वलंबियकंठवासो सियचमरचयालंकियसियतुरयमारुहेऊण उपरि — (धरि)-
ज्जंतसियायवत्तो णिगंतुं पयत्तो । पयट्ठं च सुरविलयासमाणमखिलमंतैउरं, तद्वा सयलसामंताइणरवइवलं ति । तओ
पडुपडहपाडिरवुल्लसन्तघणगजियरवो सियचिधावलपसरियप(व)लायमाणो विविहमणिमउडकिरणुल्लसंततियसचावो
वियडकरिकरडकोडरोवडन्तमयसलिलधारो वारिहरो व्व पयट्ठो दस्सणभद्धराया । तओ ऊसियसियधयमालाउलं
रायमग्गपरिट्ठियतोरणवज्जंतंयंयं पडिय(प)यहरियगोमओवलित्तसंतवियवंदणकलसं समुहणिमियसहयारपल्लवसणा-
हाऽऽपुणकुंभं अवहोवाससंगलंतदंसणुसुयं(य)वहुपुरजणं वज्जंतंभीरसंखजणियकोलाहलं पयपयलम्बमाणपउरपेच्छणयं
धुइमुहलवंदिवंदुच्छलन्तजयजयारवं सुइसुहयमंगलुग्गीयसणाहसंगलंतविलयायणं पयट्ठं राइणो पहाणपरियणं ति ।
संपत्तो समोसरणभूमिं । वंदिओ भयवं तिपयाहिणं काऊण । एत्थावसरम्मि य तं तारिसं तस्स महिड्ढिवंदणुप्पणाहि-
माणगव्वं मुणिऊण पुरंदरेण तस्स संबोहणत्थं विउरुव्वियमंभोमयं विमाणं, केरिसं च ?—

सुविचित्तविमलफलिहच्छसलिलपेरंतवियडसंभोयं । उडुंतइंस-सारसणिलिन्तकयकलरवसणाहं ॥ ७१५ ॥

आसण्णविणिम्मियपवरसुरतुरुवेल्लकुसुमराहिल्लं । सललिलयाहरोवडियकुसुममयरंदर्पिजरियं ॥ ७१६ ॥

मरगयमणिमयणलिणीविसट्ठवरकणयकयस(कमलकय)सोहं । [—]सइंदणीलकुवलयदलुज्जल्लुव्वेल्लकंतिचयं ॥ ७१७ ॥

इय णिम्मियवहुविहकयविसेसविच्छित्तिवड्ढियच्छायं । समुवत्थियं च पुरओ जलकंतविमाणवररयणं ॥ ७१८ ॥

णवरि य किंकरकरपहयवज्जियाउज्जवहिरियदियंतं । बहुवणंसुयपवणुल्लसंतचिधावलिकलावं ॥ ७१९ ॥

सन्वत्तो चिय मणिमयविमाणसंघट्ठभरियणहविवरं । सुरगणसंचरणसमुल्लसन्तमणिमउडकरजालं ॥ ७२० ॥

सुरवारविलयकरकलियचारुचमरावलीजणियसोहं । मारुयपहम्मिरुव्वेल्लकणिरकरकिंकिणिसणाहं ॥ ७२१ ॥

दूरुगयमरगयणाण(णील)कणयकमलेकणिमियपयभारं । मयणिम्मरगंडत्थलगलंतदाणंवुराहिल्लं ॥ ७२२ ॥

संपाइयमणि[....]मासणाहणिव्विडियदीहरदग्गं । उव्वहमाणं रुंद(इ)ड्ढदन्तमुसलं सुरकरिदं ॥ ७२३ ॥

आरुहो पढमारुदतियसमुंदरिपरिट्ठियालम्बो । सुरणाहो जयगुरुवंदणत्थकयभत्ति-वहुमाणो ॥ ७२४ ॥

इय विविहवज्जवज्जंतवंदिसदुल्लसंतदिसियको । आगच्छइ जलकंतप्पहाविहावी तियसणाहो ॥ ७२५ ॥

तओ दिसिदिसिपयत्तियसतरुणियणपयत्तपउरपेच्छणयपम्भारो सुरजणकयजयजयासइमंगलमुहलो ओइण्णो मणुय-
लोयं सुराहिवो । केरिसं च समोसरणसंसियसुर-णरेहिं पलोइयं जलकंतविमाणं ?—

सन्वदिसामु वि फलिहासमुल्लसंतोरूपोवखरिणिग्राहं । धोइंदणीलणलिणीविर्णितवरकणयकमलोहं ॥ ७२६ ॥

एकेकयम्मि कमलम्मि जणियणवणट्ठरसगुणसणाहं । तिहुयणविम्हयजणयं पेच्छणयं तियसविलयाहिं ॥ ७२७ ॥

पेच्छणए एकेकम्मि तियसणाहाणुरुववरविहवो । सुरवइसमाणवेवच्छ[.....]धारी य वरतियसो ॥ ७२८ ॥

एकेकस्स य तियसस्स पवरविहवोवहोयसंजुत्ता । तियसवइणो व्व परिसा विहाइ अचंतगुणकलिया ॥ ७२९ ॥

इय अप्पणो वि तियसाहिवस्स दट्ठण तं वरविमाणं । जाओ मणम्मि अचन्तविम्हओ रम्मयाए खणं ॥ ७३० ॥

तं च दट्ठण विमाणं समवसरणसंठिएहिं सुर-णरेहिं 'किमेस सुरलोओ सयं चेव समवया(य)रिओ भत्ति-वहुमाणओ
उयाउ इंदयालं?' ति भणमाणे चेव सुरवई तिपयाहिणं काउं पयत्तो । कह ?—

अचन्तललियलायणविभम्भमेयभूसणधराहिं । णिज्जियतवणिज्जुज्जलविरायमाणंगसोहाहिं ॥ ७३१ ॥
 जिणधुइसंबद्धखरपढमविसइंतवयणकमलाहिं । विम्बायम्बुवेळिरमणोहराहरदलिह्वाहिं ॥ ७३२ ॥
 उम्मिल्लदसणकिरणप्पहाविरायन्तवयणसोहाहिं । सुमुयंधसासपवणल्लियन्तभसलउलवलयाहिं ॥ ७३३ ॥
 भत्तिभरोणयसिरकमलमिलियकरयलकयंजलिउडाहिं । पवणुवेळलचलंमुयसंनमणकयायरिल्लहिं ॥ ७३४ ॥
 इय एरिसाई(हि) मणहरणेवळपा(पमा)सियंगसोहाहिं । — — — — — समयं मुरादिवो पढिउमादत्तो ॥ ७३५ ॥
 कह ?—

दुक्खोहुदामणीरे पियत्रिरहघणच्छुग्मादुग्माहगाहे, जम्मावत्तम्मि भीम्भडमरणचल्लोलकल्लोलवाहे ।
 संसारंभोहिमज्झे भवमयरमुहासंसियाणं जियाणं, तेल्लोकेकल्लणाहो जिण ! गरुयगुणो तं सि ताणं जियाणं ॥ ७३६ ॥
 अचंतुद्दाममाणुम्भडघडियसमुब्बुग्माहोइचके, दुइंतच्चिदियत्योत्थवियसरिसयाहुत्तपत्थाणवके ।
 जीवाणं कम्मतिवुम्भडतरणिकरप्फंसतावं गयाणं, संताणं होइ णूणं तुहचलणतरुळ्ळायमासंसियाणं ॥ ७३७ ॥
 णिरयगतीसु विविहदुक्खोहसमुम्भडभिण्णगतओ, तिरियगतीसु तह य डहणं-डंफण-वाहणकयदुहचओ ।
 मणुयगतीसु दरियदारिइसमुग्गयतावियंगओ, मुच्चइ दुइसएहिं सइ पाणिगणो तुहपणइसंगओ ॥ ७३८ ॥
 जं मुरसंभम(व)म्मि मुरविलयसमुम्भवविहसोक्खयं, जं खविऊण सयलकम्माइं जिया पावेति सोक्खयं ।
 जं मणुयत्तणे वि सामण्णरया ज(जा)यन्ति सममुहा, तं तुह चलणकमलसेवाणुरया पावेति, णो मुहा ॥ ७३९ ॥
 इय थोऊण मुरादिवो, काउं तिपयाहिणं पुणो पुणो वि ।
 पणमइ जिणस्स चलणए, महियलरंखोलमाणतरलहारो ॥ ७४० ॥

तओ दसण्णभइराया तं तियसाहिवइरिद्धिसमुदयं दट्टण गरुयविम्भयपरव्वसायमाणदेहविदाओ थंभिउ व्व खण-
 मेत्तं ठिओ, चित्तिउं [च] पयत्तो—अहो ! विमाणरयणस्स सोहासमुदओ, अहो ! मुरकरिणो रुइरंगया, अहो ! तियसवइणो
 विहववित्थरो, जेण पेच्छ एयं विमाणं,

णंदणवणं किमेयं संताणय-पारियाययसणाहं । मणिमयपस्सयगोच्छुच्छलन्तमयरंदरिद्धिल्लं ? ॥ ७४१ ॥
 किं वा—
 मणिमयखंभुम्भडणिविडपट्टउतुंगसिहरमालोहं । वरमंदिरसिरणिवहुल्लसं — (तमु)त्तावलिकलावं ? ॥ ७४२ ॥
 किं वा सलिलं फलिहच्छभित्तिसंकंतमुर-णरगणोहं । वेउद्धुयपवणसमुल्लसन्तविधालिल्लहरिल्लं ? ॥ ७४३ ॥
 किं वा थलं महीयलपरिद्धियामरविलासिणीरुइरं । बहुमुरसंचरणकयायरेहिं चलणेहिं छिप्पन्तं ? ॥ ७४४ ॥
 किं वा एसो वि महीहरो त्ति एरावणो मुरकरिंदो । जेण गय[ण]ग्गचुंवी विहाइ परिचियडकुंभयडो ? ॥ ७४५ ॥
 इय एव विम्भयत्थिमियललियलोयणवियारपसरस्स । आलेक्खसंठियस्स व जाइ मुहुत्तंतरमहेकं ॥ ७४६ ॥

एवं च भरियणहयलाहोयं मुरमयं व सयलं जियलोयं मण्णमाणो, मुरविलासिणीमयाइं व सयलदिसामुहाइं पेच्छ-
 माणो, जाण-वाहणमयं व भुवणं भावयंतो, मणि-रयण-कणयभरियं पिय जणवयं णियच्छंतो, 'णिप्फलपइण्णाफलो अहं'
 ति चित्तिउं पयत्तो । ता—

एसा हु मज्झ जा मंदिरम्मि संभोयलालसस्स सिरी । पेच्छ दरिदाइ मुरिंदरिद्धि[सं]दंसणे एसा ॥ ७४७ ॥
 उवमाणं जह गंभीरयाए गोप्पय-समुदसल्लिण । तह उवमिज्जइ रिद्धीए मज्झ रिद्धी तियसवइणो ॥ ७४८ ॥
 जह रवि-खजोयपरोप्परप्पहाअंतरं पसंसन्ति । तह मुरवइणो मज्झ य रिद्धीए अंतरं एयं ॥ ७४९ ॥
 इय अमुणियपरविहवेण पेच्छ तुच्छीकओ मए अप्पा । अहवा तुच्छो धिय होइ तुच्छहिययाण जंतुण ॥ ७५० ॥

एवं च भावयन्तस्स समुल्लसिओ परिणामो—जइ वि अहमेइणा सुराहिवेण रिद्धीए णिज्जिओ तहा वि णियसत्तीप-
हावत्तणओ सामण्णग्गहणेण पराजिणिऊण पयं सफलपइणो भवामि, अण्णं च—जो णियभणियं पि ण पालइ सो हु
'अलियजंपिरो' ति कलिऊण परिहरिज्जइ बुद्धयेण, परिसेसिज्जइ मिच्चग्गेण, णायरिज्जइ बंधुलोएणं, अवमणिज्जइ
साहुपरिसाए । ति चित्तिऊण ओयारियमउड-कडयाइआहरणो पंचमुट्टिकयलोओ गणहराहंतो गहियसमणलिंगो पेच्छमा-
णस्स सुराहिवइणो णिवडिओ जयगुरुणो [? काऊण] तिपयाहिणं चलणजुयले । तं च तहाविहं अचंतुत्तिमसत्तित्तणओ
गहियसमणलिंगं दट्ठूण सुरवइणा भणिओ दसण्णभइओ राया—साहु साहु भो महाराय !, उचिओ ते विवेओ, अचिन्ता
भवओ भत्ती, अलंघणियमण्णेहिं पोरुसं, णिब्बाहियं णिययजंपियं, पूरिया पइणा, किं बहुणा ? पराजिओ अहं । ति
भणमाणो णिवडिओ चलणेमुं । गओ सुराहिवो सट्ठाणं । दसण्णभइरिसी वि जहासत्तीए समुज्जओ संजमे ति ।

इति बद्धमाणसामिचरिए दसण्णभइणिक्खमणं णाम परिसमत्तं [२५] ॥



तओ भयवं जयणाहो तप्पएसओ पतिदिणं वोइयंतो भवियकमलायरे पत्तो कुंडग्गामं । तत्थ वि पुव्वक्कमेणेव
तियसा-ऽसुरकयसमोसरणविहाणी णिसण्णो सीहासणे भयवं । पत्थुया देसणा । सिट्ठो अभयप्पयाणमूलो अलियविरइ-
प्पहाणो परधणपरिवज्जणरुई सुर-णर-तिरिक्खमेहुणपरम्महो आकिंचणगुणगारवग्गविओ जइधम्मो, तहा पंचाणुव्वयाइओ
गुणव्वयतियल्लयालंकिओ चत्तारिसिक्खावयसमेओ सावयधम्मो । तं च सोऊण संबुद्धा बहवे पाणिणो, के वि गहिय-
सामण्णा, अण्णे पवण्णदंसणा जाय ति ।

अण्णम्मि दिणे णियदइयासमणियं संबोहिऊण जमालिणामं जामाउयं, दाऊण तेसिं पव्वज्जं, अण्णं च बहुबंधुवग्गं
गहियसमणलिंगं काऊण, जहक्कमं तयंतियाओ विहरमाणो पत्तो पोयणं णाम णयरं । तहिं च वीर-सिक्ख-खंडभइप्पमुहा
बहवे णरिंदा दिक्खं गाहिऊण संपत्तो कुणालाहिहाणं णयरिं । तत्थ वि सुरविरइयसमोसरणविहिणा भयवया [पत्थुया]-
सु धम्मदेसणामु कइतरं जाणिऊण जणसंबोहणत्थं पुच्छिओ गोयमगणहारिणा भयवं जहा—'एसा कुणालणयरी
मुणिसावेणं जळेण पूरिइ' ति सुव्वइ, ता सीसउ कहमेयं संविहाणयं ? । भयवया भणियं—'णिसामिज्जउ
देवाणुप्पिया !,

इह अण्णया समासणे पाउससमए करिस्सण-कटुयणामाणो दोणिण मुणी इमं पुरिं समइच्छिया वासारत्तमइवाहिउं ।
दो वि संठिया णयरणिज्झरुदेसे वसइं काउं । 'एत्थ द्वियाणं च मा अम्हाणं सलिलोवइवो भविस्सइ' ति परिचित्तिऊण,
'वाहिं चेय णयरीए सलिलवासेण पओयणं, ण उणउडिभतरम्मि' [ति] परियप्पणाए थंभियं णयरीए अडिभतरम्मि
वासं । अणुमणियं च ताण अहासणिहियदेवयाए । एवं जंति दियहा । जाव णयरीए वाहिं वासमाणम्मि पुण जणो
भणिउं पयत्तो—कीस पुण एसा पुरवरी वारिहरेहिं परिहरिया ?, णूणमेयाए कोइ महापावयम्मकारी परिवसइ, कहमण्णहा
णयरीए मज्जे ण वाहिरा(वारिहरा) मुयंति सलिलं ? । एत्थावसरम्मि य भणियमेक्केण दियाइणा—इमे एत्थ णयरणिज्झ-
रदुवारे जे सेयंवररिसिणो परिवसंति ते जइ णयरीओ णिद्धारि(डि)ज्जन्ति ता णयरीए णिवडइ सलिलं ति । एवं भणिए
दियाइणा समागओ सयलो वि पुरजणो, लेइडु(ट्टु)यप्पहाराइणा उवइवेणं उवसग्गं काउमाढत्तो । तओ तेणोवइवेणं
दहं वेविज्जमाणा अन्तोवियम्भिउडामकोवप्पसरा णीसरिउं पयत्ता । णिग्गच्छंतेहिं भणियं—

वर्ष देव ! कुणालायां, दिनानि दश पञ्च च । धाराभिर्मुशलमात्राभिर्यथा रात्रौ तथा दिवा ॥ ७५१ ॥

एवं च भणियमेत्ताणंतरा सणिहियदेवयाए तह च्चेय संपाडियं, कह ?—

णवरि य सजल[घण]घणुदामघडंतोरुगज्जियारावं । फुडइ व्व फुडिय[? तियस]णरहिययददबंधणं गयणं ॥ ७५२ ॥

सजलघणमारुयाद्भुदिम्बुहुदन्तणीसणा यन्ति । असमंजसवासपवत्तधोरधारा घणुग्घाया ॥ ७५३ ॥
 अणवरयतरलविष्फुरियभासुरोरसिरवड्ढियच्छायं । जलइच्छे व्व विज्जुपुंजुज्जलंतजालाहयं भुवणं ॥ ७५४ ॥
 अविरयपडंतथिरथोरदीहधाराणिवायजज्जरियं । दलइ व्व दलियपंथियघरासपासं धरणिवट्ठं ॥ ७५५ ॥
 तव्वेलुप्पणरसन्तपसरियाऽऽसा वणम्मि सालूरा । वच्चंति णिम्भरासारधारपहराहया मुच्छं ॥ ७५६ ॥
 कमलसरेसु पयड्ढन्तसलिलपरिसड्ढियदलउडाहोयं । बुड्ढइ दरवुड्ढइणीभसलवल्लयं कमलमहणं ॥ ७५७ ॥
 जूरइ धारासंपायपहयदूरलक्खकलियकेसरयं । वासाजलोल्लविल्ललियकलावभारं सिहंढिउलं ॥ ७५८ ॥
 इय णिम्भरपसरियजलणिवायखणभरियमहियलाहोयं । जाया रुंभंतपवेस-णिग्गमा सा पुरी सहसा ॥ ७५९ ॥

एवं च अविहावियणिण्णुणायधरणियलं पयत्तं गरुयवासं । खणमेत्तेणं चेव सा पुरवरी सज्जणा सगो-माहिसऽक्का
 सपासायमाला अहंसणीहूला । ते नि मुणिणो दलालकसतिव्वत्तल्लयाणुहावओ कालमासे कालं काऊण अहोसचमीए
 णरयपुहवीए णारयत्तणेण समुप्पण्ण चि ।

ता कोहो णाम अपडियारो सत्तू, अणोसहो वाही, अणिधणो जलणो, अकारणो मच्चु चि । जेण पेच्छ—

रुद्धो पढमं हिययंतरुद्धडुल्लसियतिव्वसंतावो । अप्पाणं चिय णिड्ढइ रोइज्झाणोवगयचित्तो ॥ ७६० ॥
 कम्मं रोइज्झाणाहि वंधए तं च णिरयगइहेउं । णिरयदुहभीरुणा कोहवेरिणो तेण भेयव्वं ॥ ७६१ ॥
 उप्पणो चिय कोहो सहसा णियंआसयं विणिड्ढइ । अणडडुद्धारणिकट्ठो जलणो किं डइइ दारुचयं ? ॥ ७६२ ॥
 अक्कोसतालणुज्जयजणम्मि णियंजीयसंसए वि दढं । धम्मव्वंसणभीरू खमन्ति तेणेह महरिसिणो ॥ ७६३ ॥
 अण्णाणी कोहट्ठा कट्ठमहोगमणमिच्छणो(णो) होइ । इय कारुणं वच्चंति कोहगहियम्मि महरिसिणो ॥ ७६४ ॥
 ‘मज्झ कए एस दढं कुद्धो अज्जिणइ कम्मममुहं’ ति । णिययावराहभीय व्व तेण लज्जंति महरिसिणो ॥ ७६५ ॥
 ‘अवयारी किर वेरि’ चि होइ एकम्मि चेय सो जम्मे । कोहो उण होइ दढं दोसु वि जम्मेसु अवयारी ॥ ७६६ ॥
 जइ कोहो तइ अणे वि वेरिणो होन्ति दुज्जयकसाया । जेयव्वा ते जइणा णियएण विक्खस्वचक्केणं ॥ ७६७ ॥
 अविणिज्जिया पमायाहि ते समं वड्ढिउणं दढमुवरिं । अवयारकारिणो होन्ति णिइया वेरिणियर व्व ॥ ७६८ ॥
 जं संजमुज्जमावज्जियं चरित्तं बहूहि वासेहि । तं तूलं व खणेणं कोहो निड्ढइ जलणो व्व ॥ ७६९ ॥
 संसारवत्तिमन्तो णूण कसाया कसंति जंतुगणं । अंधीकुणंति सव्वं गय व्व पवियंभियवियारा ॥ ७७० ॥
 अवहरिउण सरुवं एते पररुवधारिणं काउं । णेति समुम्मग्गेणं मंत व्व परव्वसं जणिउं ॥ ७७१ ॥
 ‘हेट्ठाहुत्तं वच्चइ कसायसहिओ, तए चिणा उड्ढं’ । इय मुणिउणं उज्जंति तेण वीरा कसायचयं ॥ ७७२ ॥
 इय णिरयणिवायं कोहदोसेण ताणं, विहल्लगयमुयारं संजमुज्जोयजोयं ।
 णरयपडणभीरू बुद्धिमं भाविउणं, पईदिणमिह कुज्जा कोहवायाणभंगं ॥ ७७३ ॥

इति वद्धमाणसामिचरिए कुणालावक्खेणं [२६] ॥



अहं अण्णया जयगुरु अप्पणो लक्खिऊण मोक्खक्खणं पक्खीणपावप्पसरो संपत्तो पावाहिहाणं पुरिं । चित्तिं च भगवया गोयमसामिमुदिसिऊण-एसो हु महसिणेहमोहियमती मुहुत्तयं पि महविरहमणिच्छयंतो ण केवलं पाउणइ । चित्ति परियप्पिऊण भणिओ गोयमसामी जहा-देवाणुप्पिया ! देवसम्मो णाम अत्थि दियवरो, सो तुंझ दंसणेण संबुज्झइ, ता तस्स संबोहणत्थं तुमए गंतव्वं । गणहारी वि 'इच्छामो' चित्ति भणिऊण पयट्ठो तयन्तियाओ । जुंवन्त-रमेत्तणिहित्तिद्वी पयत्तो गंतुं ।

विगयम्मि य गोयमगणहारिम्मि पक्खीणकम्मावसेसत्तणओ आरुढो जोयकिरियं जयगुरु । तओ य किरियाइ-झाणाणलपुल्लुट्ठणीसेसकम्मिधणो कत्तियवहुलपंचयसिरयणीए पच्छिमम्मि जामे साइणक्खत्तम्मि उज्झिऊण अधुवत्तणुं पहीणवेयणीय-णाम-गोत्ता-ऽऽउकिंचावसेसो, जस्स य कयम्मि सैमुज्झिऊण विसयवासंगं, आराहिऊण गुरुणो चलणक-मलं, अहिगंतूण सयलकिरियाकलावं, गिम्हम्मि तिक्कतैरगिक्कणियरपरियाविया, पाउसम्मि मुहुमजंतुसंताणरक्ख-णत्थं कयसंलीणया, सिसिररयणीमु तुहिणाणिलफंससोसवियतगुणो छट्ठ-ऽऽम-ऽऽदनास-मासाइतवोविहाणेण जयन्ति जइणो तं सिवमयलमणुवममुहं संपत्तो णेव्वाणं ति ।

अहं णेव्वाणं विगयम्मि तिहुयणेकल्लबंधवे वीरे । चलिवासणा समन्ता समागया तियसरायाणो ॥ ७७४ ॥
णमिउं तिहुयणगुरुणो चलणे महियलमिलन्तमालयला । सव्वायरेण काउं णेव्वाणमहं समादत्ता ॥ ७७५ ॥
वेत्तुं णिरेइं तिहुयणेकगुरुणो सगुल्लिपत्तेखाः मिम्मलमणिसीहासणीदोवरिसंठियं काउं ॥ ७७६ ॥
गोसीसचंदणुदामगंधरिद्विल्लीरसलिलेण । मज्जंति जंतुमज्जजणिउद्धरणं पयत्तेण ॥ ७७७ ॥
उव्वेल्लसिल्लहयामोयमासलुम्मिल्लपउरधगसारं । काउं कसणायरु-कुंदुरुक्कधुंबंधयारदिसं ७७८ ॥
वोसट्ठसरससुरतरूपसूयमालामणोहरुत्तंसं । सव्वायरेण विरंयन्ति भुवणगुरुणो सिरुच्छंणे ॥ ७७९ ॥
इय हिययंतैरपसरन्तभत्तिसव्भावणिम्भरा तियसा । जणिऊण मज्जणाइयसकारं सयलरिद्धीए ॥ ७८० ॥

णवरि य सुरकिण्णरुद्धन्तगंधव्वसिद्धंगणुग्गीयकोलाइलुब्भासियं,

पहयपट्टपट्टभेरिगंभीरसंसइसदुंदुहीमइल्लुहामगइब्भयं ।

पसरियकलयलारावसंसइसखुद्धैयारावणीसेससत्तोहंसपुण्णकण्णंतरं,

सुरवरकरतालणुव्वेल्लतौलुब्भडापण्णणुप्पणकोऊहलं ताडियं तूरयं ॥ ७८१ ॥ ति ।

तओ रैसोहसंगयं, लयाणुल्लगमगयं । विसट्ठहोवभावयं, सैमगादिद्विदावयं ॥ ७८२ ॥

समन्तचारुराहयं, पसत्थइत्थसोहयं । विहावियंगहारयं, समुच्छलन्तहारयं ॥ ७८३ ॥

रणंतणेउरोहयं, रसंतकंचिसोहयं । सुमुत्तवाहियालयं, अणेगमंगसालयं ॥ ७८४ ॥

पयाणुममालंबियं, समंचलं विलंबियं । सहावसोहचबियं, सुरच्छरार्हि णचियं ॥ ७८५ ॥ ति ।

एवं च काऊण जयगुरुणो सरीरट्ठाणम्मि णट्ठविहिं महियलमिलन्तमउलिमाला पणमिऊण थोउं पयत्ता, कहं ?—

जय जयाहि विद्धंसियसयलैविधम्मया, विमलकेवलप्पसरपयासियणियमया ।

पवरसंजमुज्जोयपणासियकम्मया, पैइ णमामि(मु) जिणदेव ! सुदरिसियधम्मया ॥ ७८६ ॥

कीरइ तवो जयत्थयं, उज्झिज्झइ संगओ जयत्थयम्मि । तं सिवमयलमणुत्तरं, पत्तं तुमए सकम्मक्खप्पण ॥ ७८७ ॥

दंसियसिवमुहममयं, नासियदूरविमग्गयं । भवभयमूर्धे विवोहयं, तुम्ह णमामु मुदेहयं ॥ ७८८ ॥

१ अण्णया य जय" सू । २ तुह जे । ३ जुगतरं जे । ४ उज्झिऊण सू । ५ "तरणियरपरि" सू । ६ "मणुत्तरब्भ(म)णुवममुहं जे ।
७ "धूमं" जे । ८ "हंसि" सू । ९ वियरंति जे । १० "तपस" सू । ११ "दभीराव" जे । १२ "तापुब्भ" जे । १३ "सोह" जे ।
१४ "हासमा" जे । १५ "संग" सू । १६ "लविहम्मिया" सू । १७ "पहं" सू । १८ "दविमोहयं" सू ।

परिभाविऊण विच्छिण्णणेहवासंगबंधणगुणस्स । गोयममुणिणो वड्हंतहिययसंवेगपसरस्स ॥ ७९९ ॥
 मुक्कञ्जाणाणलदड्ढसयलकम्मिधणस्स तव्वेलं । उप्पणं भूयाऽभूयभावयं केवलणाणं ॥ ८०९ ॥
 इय णिययमाउयं पालिऊण संबोहिऊण भवियजणं । कम्मावलेवमुक्को गणहारी सिवपयं पत्तो ॥ ८०१ ॥

[गोयमगणहरणिब्बाणं २८]

✽

इय वद्धमाणचरियं अणेषगुणसयसहस्सपरिकलियं । हरउ कलिकालकलिलं भवियाण ग(म)णम्मि वियरन्तं ॥ ८०२ ॥
 इति महापुरिसचरिए वद्धमाणसामिचरियं समत्तं ति ॥ ५४ ॥

[गंधयारपस्तथी]

चउप्प(प)णमहापुरिसाण एत्थ चरियं समप्पए एयं । मयदेवयाए पयकमलकंतिसोहाणुहावेणं ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ आसि जमुज्ज[ल]जोण्हाधवलियनेव्वुयकुलंबराभोओ । तुहिणकिरणो व्व सूरी इहइं सिरिमाणदेवो ति ॥ २ ॥
 सीसेण तस्स रइयं सीलायरिएण पायडफुडत्थं । सयलजणवोहणत्थं पाययभासाए मुपसिद्धं ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ जं एत्थ लक्खण-ऽक्खर-छंदक्खलियं पमायओ मज्झ । लेहयवसउ व्व भवे तं खमियव्वं बुहयणेण ॥ ४ ॥
 इय महापुरिसचरियं समत्तं ॥

चउप्पणमहापुरिसाण कित्ठणं जो मुणेइ एगमो । सो पावइ मुत्तिमुहं विउलं णत्वेत्य संदेहो ॥ ५ ॥



१ गायेयं जेपुस्तके नास्ति । २ परिसम्मत्तं जे । ३ हस्तद्वयचिह्नान्तर्गतं नाये सूपुस्तके न स्तः । ४ 'इ' ॥ ग्रन्थाग्रम्-१४००० ॥
 संवत् ११(१२)२७ वर्षे मागसिर सुदि ११ शने(नी) ॥ अथेह श्रीमद्वर्णहिलपाटके समस्तराजावलीसमलंकृतमहाराजाधिराजश्रीमदकुमारपालदेव-
 कल्याणविजयराज्ये तत्प्रा(इ)प्र)साद मा(म)हं वाधुचल श्रीश्रीकरणादौ समस्तव्यापारान्तपथनयति(व्यापारान् परिपन्थयति) ॥ विषय-दंडाज्य(व्य)-
 पथके पालउद्रग्रामे वास्तव्य ले० आणंदेन महापुरि(रु)पचरितेन(चरित)पुस्तकं समर्थयति(समर्थितम्) ॥ जे । ५ हस्तद्वयचिह्नान्तर्गतः पाठो
 जेपुस्तके नास्ति । ६ 'हो' ॥ संवत् १३२६ वर्षे भावण वदि २ सोमेऽथेह धवलककै महाराजाधिराजश्रीश्रीमदजुनदेवकल्याणविजयराज्ये
 तत्पादपद्मोपजीविनि महामात्यश्रीमल्लदेवे स्तम्भतीर्थनिवासिन्या पल्लीवालज्ञातीय भण०लीलादेवया आत्मनः श्रेयोऽर्थं महापुरिचरित्रपुस्तकं
 लिखापितमिति ॥ छ ॥ मंगलं महाधीः ॥ छ ॥ शुभमस्तु सर्वत्र जगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र जनः सुखी
 भवतु ॥ छ ॥ सु । 'हो' ॥ प्रत्यक्षरं निरूप्यास्या(स्य) ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । अष्टशतधिकानुष्टुप्सहस्राण्येकादशैव च ॥ १ ॥ मंगलं महाधीः ॥ छ ॥
 शुभमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र जनः सुखी भवतु ॥ छ ॥ संवत् १६०३ मागसिरमासे कृष्णपक्षे
 १३ त्रयोदशांश(दशांश) तौ(ति)थौ शुक्लाशरे श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्यजोसीनानजीसुतवधामेन पुस्तकं लिखितं ॥ छ ॥ अमणसंघस्य शुभं भवतुः
 ॥ छ ॥ कल्याणमस्तुः ॥ छ ॥ श्रौरस्तुः ॥ छ ॥ ग्रंथा० ११८०० ॥ कागदीया सुप्रतिः ।

प्रथमं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’ अन्तर्गतानां विशेषनाम्नामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका ।

नाम	किम् ?	पञ्चम्	नाम	किम् ?	पञ्चम्	नाम	किम् ?	पञ्चम्
अ			अणहिलपाटक नगरम्, लेखकप्रशस्ती ३३५			अवरमरह क्षेत्रम् १		
अहङ्गकबल	मेरुशिला	३६	अणगमईन्ती	विद्याधरपुत्री १६१, १६२		अवरविदेह क्षेत्रम् ६, १०, १६, १६९, २०५, २५१		
अइबल	राजा	५०	अणगवई	राज्ञी ५५		अवराइय-तिय विमानम् १७७, २०६		
अतिबल			अणगसुंदरी	राज्ञी १४८		अवराइय राजा २०५		
अइमुत्तमुणि	धमणः	१८३	„	राजपुत्री १५४-१५९, १६१, १६२		अवराजिया नगरी ६		
अइरत्तकबल	मेरुशिला	३६	अणतइ	तीर्थकरः १२९, १३१, १३३		अवंति देशः ६६		
अइरा	राज्ञी	१४९	अणतविरिय	वासुदेवः १४८		अव्वावाह देवः ३९		
अउज्जा	नगरी ५५, १२९, १७५		अणाहिट्टिय	राजा १८४		असणिघोस विद्याधरराजः १४७, १४८		
अओज्जा	„ ७५		अणिदिया	दिवकुमारी ३५		असणिघेग विद्याधरः १४०, १४२		
अक्खोह	राजा १८२, १८४, १८६		अणुत्तरोवकाइय	देवलोकः ८५		असियक्ख देवः १४०, १४१, १४२		
अक्खोह			अणुधरी	पुरोहितपत्नी २४५		असुरकुमार देवः ८४, १४८		
अग्गिअ	बहुस्तापस्य १६५, १६६		अपइट्टाण	नरकः १०३		असोयदत्त वणिक्पुत्रः ७, ८, ९		
अमयगमी			अपराजिअ	बलदेवः १४८		असोयचंद राजा ६२		
अग्गिकुमार	देवः ८४		अभवकुमार	राजपुत्रोऽमात्यश्च ३०८, ३१०, ३११, ३१४, ३१७, ३२०, ३२१		असोयभइ राजपुत्रः ६२		
अग्गिअ	„ ३९		अभयमती	सार्धवाहपत्नी ३१		अंभिरस युद्धशास्त्रनिर्माता ३८		
अग्गिओअ	भ्रातृपणः ९७		अभिचंद	कुलकरः १०		अंध देशः ६२		
अग्गिभूइ	„ ९७		„	राजा १८२		अंधरतिलय पर्वतः २९, ३०		
अग्गिभूइ-ति	गणधरः ३०२		अभिणंदण	तीर्थकरः ७५, ७९		अंधुवीरिय राजा ५०		
अग्गिसिह	राजा १६८		„	धमणः १४८		आ		
„	विद्याधरः २३४		अभिणंदिया	राज्ञी १४७		आइअ देवः ३९, ८४		
अग्गेय	अस्त्रम् १८९		अभियत्तेय	विद्याधरराजः १४६-१४८		आइअजस राजा ५०		
अचलग्गाम	ग्रामः १४७		अभियवाइण	राजा २१५		आणह देशः १९४		
अचुय	देवलोकः ३२, ८४, १४८, १६२, २५१		अयल	बलदेवः ९५, १०३		आणय देवलोकः ७२, ८४		
अच्छेदअ	पासण्डः २७६		„	राजा १८२, १८४		आणइ बलदेवः १६४		
अजायसत्तु	राजा ३१७		अयलसामि	तीर्थकरः १४६		„ जेसंजकप्रतिलेखकः ३३५		
अजिअ	तीर्थकरः ५१, ७३		अर	तीर्थकरः १५३, १६३, १६४, १६९		आणंदपुर नगरम् १८९		
अजियसामि			अरविंद	राजा २४५, २४६, २४९		आमलखेट्ट बालक्रीडा २७१		
अज्जुण	राजपुत्रः १८२, १८८		अरहंतासणय	जिनमन्दिरम् १८९		आयारिओ लिपिः ३८		
अज्जुण	राजा १६५, १६७		अरिष्टुणेमि	तीर्थकरः १८०, १८३, १८४, १८८, १९०, १९१, २०४, २०९, २६३		आयार जैनाग्रमः १३, ३२, ९३		
कत्तविरिय			अर्जुनदेव	गूर्जरेश्वरः, लेखकः ३३५		आयारंग देवलोकः ८४, २०५		
अट्टावय	पर्वतः ४९, ५०, ६३, ६४, ६५, ६९, ७०, ७१, २३४, २४८, २४९, ३२२, ३२६			प्रशस्ती		प्रतिवासुदेवः १००-१०२, २७८		
अट्टिय	सर्पः २७५					आसग्गीव ग्रामः ६६		
अट्टियकाणण	वनम् २७५					आससेण राजा २५७		
अडवइअ	देशः ४१							
अणहिया	मातङ्गपत्नी २१५							

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
इ			ए			क		
इक्खान	वंशः	१-२, २७०	ए(व)क्खगाम	सन्निवेशः	२८८	कंपिल+पुर	नगरम्	११५, १६२, १६४, २१०, २१२, २१८, २२१, २२८, २४१
इक्खगाम्-			एरवय	क्षेत्रम्	५, ३०, ७२, १६२	कंपल	देवः	२७९
-भूमि	देशः	३४, ३५, ९७				कंस+असुर	सारथी राजा च	१८२, १८३, १९५, २०८
इण्णुवंस	वंशः	३७	क			कायंथी	नगरी	९१
इंददत्त	श्रेष्ठी	६२	कन्धायण	नारीलक्षणादाखनिर्माता	३८	कायंथय	वनम्	१९८, २००
इंदभुड	गणधरः	३००, ३०१	कच्छ	राजपुत्रः	४०	काळ	निधिः	४३, २१०
इण्णव	उत्सवः	२२८	"	ग्रामः	२२९	"	सेनापतिः	१८३, १८४
ई			कटुय	धमणः	३३१	कालजिन्ना	पाठी	५८
ईसरदत्त	वणिक्	२८, ८४	कडय	राजा	२१८, २४०, २४१, २४२	कालसोयरिव	शौकरिकः	३१७, ३२०
ईसाण	देवलोकः	२८, ८४	कडयावई	राजपुत्री	२४१	कालिजर	पर्वतः	२१२, २१४
"	इन्द्रः	५२	कड	माद्धानपुत्रस्तापसश्च	२५६, २६१, २६२	कालिंथी	राज्ञी	१३८
ईसाणचंद	राजा	६	कणकण्णभा	राज्ञी	१०६	कासभूमि	देशः	२१२
"	"	३१	कणगमई-ती	राजपुत्री	११७, ११८, १२०-१२६	कासव	गोत्रं गणधरश्च	३०३
"	"	११७	कणकणल	नगरम्	३१३	कासिगाविसव	देशः	८६, २१५, २१८, २५७
"	"	१२७	कणयगिरि	पर्वतः	२५१	कासी	देवः	८४
"	"	१६१	कणयतिलया	विद्याधरराज्ञी	२५०	किण्णर	विद्याधरराजः	२५०
उ			कणयमती	राज्ञी	३१	किरणवेग	विद्याधरराजः धमणश्च	२५०, २५१
उगगसेण	राजा	१८२, १९२	कणयरह	चक्रवर्ती	२५४, २५५, २५७	किरिमाल	यक्षः	४३
उज्जयंत	पर्वतः	१९३	कणयाह	वासुदेवः	१८०, १८३, १९४, १९५, १९९, २००, २०२, २०४	किपुरिस	देवः	८४
उज्जैत	पर्वतः	२०५, २०७	कण्ह	राजा	१६५, १६७	कुणाला	नगरी	३३१, ३३२
उज्जी	लिपिः	३८	कणविरिय	पुरोहितपुत्रः परित्राजकश्च	२४५, २४६, २५०	कुमारपाल	गूर्जेश्वरः, लेखकप्रसास्ती	३३५,
उत्तरकुरा	क्षेत्रम्	१६, ३०	अज्जुण			कुरंगय	वनचरः	२५३, २५४, २५६
उत्तरज्जयण	जैनागमः	१३	कमड			कुरु+कुल	वंशः	१६६, १८२, १४०, १४१
उत्तरसिधु-			कमलसिरि	राज्ञी	१६९	कुलिसबाहु	राजा	२५४
शिवस्तुड	प्रदेशः	४३	कम्मारागाम	ग्रामः	२७४	कुसट्ट	देशः	१९४
उत्तरायह	देशः	२०५	कन्धम्म	राजा	११५	कुसुमपुर	नगरम्	१८२
उदयण	राजपुत्रः	३०५	करिसण	धमणः	३३१	कुंडगाम	ग्रामः	३३१
उणल	धमणः	२७५, २७६	करेणुदत्त	राजा	२१८, २४१	कुंडपुर	नगरम्	२७०
उम्मुग्गा	नदी	४३	कल्लिम	देशः	१९४	कुंडिल	कापालिकः	२२८
उवत्तिकुमार	देवः	८४	कविल	परित्राजको राजपुत्रश्च	४९, ९७	कुंती	राजपुत्री	राज्ञी च १८२, २०५
उसमकुड	पर्वतः	४३, १७९	कविल्ल	ब्राह्मणपुत्रः	१४७	कुंती	तीर्थकरः	१५२, १५३
उसहकुड			कविला	दासी	१४७	कुंभ	राजा	१६९
उसमसामि	तीर्थकरः	१०, ४४, ४८, ५०, ६३, ३२६	कंचणपुर	नगरम्	२०५	कुंभगण	राक्षसवंशीयः	१७५
उसमसेण	गणधरः	४२	कंटय	चौराधिपः	२३२	केकई	राज्ञी	१७५
उसह	तीर्थकरः	१, ३७	कंतप्पह	विमानम्	२०९	केडव	देवः	१३१, १३२
उसहदत्त	श्रेष्ठी	१५४, १६१				केसव	वणिक्पुत्रः	३१, ३२
"	ब्राह्मणः	२७०						
उसहसामि	तीर्थकरः	४, ३७, ५१, ९७, १२१, १२३, १२४						
उसहसेण	धमणः	६२						

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
"	कुलकारः १८३, १८५, १८८, १८९, २००, २०१, २०४		गङ्गा	देवः	८४	चक्रवर्त	कुलकारः	१०
केसि	देवः १८३, १८९		गङ्गादत्त	राजा	२४१	चन्द्रदेवता	राजपुत्रीसखी १८, २०, २१, २३-२६	
कोट्टम	ग्रामः २२०		गङ्गादत्ता	देवीकन्या	४३	चन्द्रापीड	राजा	२२
कोडाल	गोत्रम् २७०		गङ्गा	गङ्गा ४३, ४४, ६४, ६९, ७१, २२०, २७८, ३१२		चमर+असुर	देवः १, १४८, २९२-२९७	
कोडिण्ण	गोत्रं गणधरश्च ३०३		गङ्गापिण्ड	प्रदेशः ४३, ४४		चमरचंचा	विद्याधरनगरी १४७	
कोडिण्ण	गोत्रम् ३२२		गङ्गा	राजपुत्रः १८२		चंदकोसिअ	शशिः सर्पव २७७, २७८	
कोमुल्लण	उत्सवः २१५, ३१६		गङ्गायाण	पर्वतः ३६, ७१		चंद	देवः ८४	
कोलाय	ग्रामः ९७		गङ्गाव्य	देवः ८४		चंदउत्त	राजपुत्रः १०६, १०८, १११, ११२	
"	सन्निवेशः २८०		गङ्गावरह	विद्याधरः ३२४		चंदउत्तर	नगरम् १३१	
कोसल	देशः २१८, २२९		गङ्गाव्यवैज	सज्जीतशास्त्रम् १९५		चंदउत्तरी	नगरी ८८	
कोसला	राज्ञी १७९		गङ्गाव्यी	लिपिः ३८		चंदपता	कुलकरफानी १०	
कोसिअ	ग्रामः ९७		गङ्गासमिद्ध	नगरम् १६		"	राज्ञी १६	
कोसंबवण	वनम् २००		गङ्गाधर	देशः १६		चंदजसा	कुलकरफानी १०	
कोसंघी	नगरी ५२, ८३, १३४, १८०, २२९, २८९, ३०३, ३०४		गङ्गाधराइ	राजा १८२		चंदजदास	श्रेष्ठी ६	
"	देशः २३२		गङ्गाधरी	राजपुत्री राज्ञी च १८२		चंदणा	राजपुत्री श्रमणी च २८९-२९२, ३०४	
कोसिय	गोत्रं गणधरश्च ३०३		गङ्गाधरी	क्षेत्रम् १६		चंद[पण्यसि]	जैनागमः १३	
ख			गुणचंद	श्रमणः १६		चंदपम-ह	तीर्थकरः ८८, ९१	
खडविगडा	लिपिः ३८		"	राजपुत्रः १२७		चंदपम्मा	राज्ञी १३१	
खरदूखण	राक्षसवंशीयः १७५		गुणधम्म	" ११७		चंदलेहा	राजपुत्रीसखी २४	
खरोट्टी	लिपिः ३८		गुणपुंजय	श्रेष्ठी २१७		"	राज्ञीसखी १३४	
खसाणिया	" ३८		गुणसिद्धय	चैत्यम् ४		चंदवेग	विद्याधरपुत्रः १४२	
खंडप्पवाया	गुहा ४३		गुणायर	श्रेष्ठपुत्रः ३१		चंदसीह	राजा २४१	
खंडभट्ट	राजा ३३१		"	श्रमणः ३१		चंपा	नगरी ७९, १०४, १११, १८०, १८१, २१८, २८९	
खंडा	विद्याधरपुत्री २२५		गोवेज	देवलोकाः ८४, ८६, २५४		चाणूर	महः १८३, १८९	
खितिपहट्टिअ	नगरम् १०, १६		गोवेजय	गोत्रं गणधरश्च १००, ३०२, ३०३, ३२२-३२४, ३२६, ३२७, ३३१, ३३३-३३५		चित्त	मातङ्गपुत्रः ३, २१५	
खीर	पर्वतः २५६		गोयम	गोयमसामि ३३५		चित्तगह	विद्याधरराजः २०५	
खीरवण	वनम् २५६		गोयमसामि	कुणवासुदेवः २००		चित्तरस	कल्पवृक्षः ९	
खेमपुरी	नगरी ७२		गोसाल+य	आजीवकः २८०, २८१, ३०६, ३०७		चित्तरह	सज्जीतशास्त्रनिर्माता ३८	
खेमकर	राजा १४८		गोसाल	पासण्डः ३०४		चित्तंगय	कल्पवृक्षः ९	
"	तीर्थकरः १४९		घ			चित्रलेखा	राज्ञी २६, २७	
"	" २५३		घणरह	राजा १४९		चिलिस	जातिः १६६	
ग			घ			चुलणा	राज्ञी २१८	
गदंद	स्वप्रशास्त्रनिर्माता ३८		च			चुल्लहिमवंत	पर्वतः ४३	
गदतोय	देवः ३९		चउरिआ	चेटी १९		चुल्लहिमवंतगि-रिकुमार	देवः ४३	
गदउर	नगरम् ४१, २१८		चतुरिका	कुणवासुदेवः १९१		चेहव	ग्रामः ९७	
गदसुकुमाल	राजपुत्रः २०५		चकाउह	राजपुत्रः २५२, २५३		चेहणा	राज्ञी ३१०	
			चकवर्कता	कुलकरफानी १०				

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
ज			१३१, १३३, १३४, १३८, १४६, १४८, १४९, १५२-१५४, १५६-१५९, १६३-१६५, १६८, १६९, १७४, १७५, १७७-१८०, २१०, २१४, २४५, २५०, २५१, २५४, २५७, २५९, २७०, ३२४	जंदण गंदा जदिमाम जदिणी जदिमित जंदिवदण जदिसेण ..	गृहपतिः राज्ञी श्रेष्ठिफरनी अमात्यपुत्री ग्रामः राज्ञी बलदेवः राजपुत्रः बणिक राजपुत्री मुनिध	२८० ९२ २१७ २४० २९ १६४ १६८ २७४ ७६ ३०४, ३११-३१५		
जठणा	नदी	१८२	जंबुद्वीप-	जैनागमः	१३	जंदीजयरा	लिपिः	३८
जकल	देवः	८४	[पणती]	जिमानम्	२५१	जंदीसर	द्वीपः	३०
जकली	लिपिः	३८	जंबुद्वीपवत्	ग्रामः	२९९	जाइल	गृहपतिः	२९
जगदेव	धर्मणः	१४८	जंभिय	राज्ञी	१७४	जागकुमार	देवः ४३, ४४, ६३, ६४, ८४	
जडाउ	पत्नी	१७५	जाला	श्रेष्ठी	१७३	जामदेव	अमात्यः	२२५
जगदण	कृष्णवासुदेवः	१९१, १९५, २०१	जिणधम्म	श्रेष्ठिपुत्रः	१६२	जामलंदा	राजगृहपाठकः	२८०
जणरत्त	ब्राह्मणः	३१७	जियसत्तु	राजा	५१	जामसिरी	गृहपतिफरनी	२९
जण्टवी	नदी	७१	..	..	१७२	जामि-हि	कुलकरः १, १०, ३४, ३५, ३७, ९७	
जण्टुकुमार	राजपुत्रः ६३, ६४, ७१		जीवजसा	राज्ञी	१८२, १८३	जामेयसामि	तीर्थकरः	४६
जम	श्रुतिः	१६५	जीवाणंद	वैद्यपुत्रः	३१	जामधम्मकहा	जैनागमः	१३
जमयमि	श्रुतिः बाह्यण- १६५, १६६		जुगंधर	धर्मणः	२९	जामसिंह	मुसिहावतारः	१६७
जमिज	बटुध		जुगंधिणि	तीर्थकरः	१	जामरावण	कृष्णवासुदेवः	२०९
जमाली	क्षत्रियः	३३१	जुहिष्ठिल	राजपुत्री राजा च	१८२, १८८, २००	जिणामिया	गृहपतिपुत्री	२९, ३०, ४१
जय	चक्रवर्ती	१७९	जोदसगाम	कल्पवृक्षः	९	जिमुगगा	नदी	४३
..	गृहपतिः	२८०	जोगाविसय	देशः	४१	जिसह	पर्वतः	१६९
जयहर	गणधरः	१४८				जेमिगाह	तीर्थकरः	१७९, २०४
जया	राज्ञी	१०४				जेसण	निधिः	४३, २१०
जरातुमार	राजपुत्रः १९८, २०१, २०२, २०५					त		
जरातणअ-य			जोदसगाम	कल्पवृक्षः	९	तकलसिला	नगरी	४१, ४४, ४६
जरासुध			जोगाविसय	देशः	४१	तमण्डहा	नरकः	५१
जरासंध	प्रतिवासुदेवः १८२, १८३, १८४, १८७					तरंगमण्डवा	ग्रन्थः	३८
जरासंधि						तानलिती	नगरी	१६१
जरासिधु						तारय	प्रतिवासुदेवः	११४
जरासंध						तारा	राज्ञी	१६५
जलवंत	विमानम्	३२९				तिमिसगुहा	गुहा	४३
जलग	देवः	२९७				तिलया	नगरी	२५०
जलगिरि	पर्वतः	२५३, २५४				तिलोयसुंदरी	गणिका	३१२, ३१३
जलगण्ड	देवः	६३, ६४				तिविट्टु	वासुदेवः ४९, ९५, ९९- १०२, २७८	
जलगवीरिय	राजा	५०						
जलगसिह	विद्याधरराजः	२३४						
जवणी	लिपिः	३८						
जसमती	दासी	२१४						
जसहसी	कुलकरः	१०						
जबबई-ती	राज्ञी	१९१, १९२						
जंबुगाम	धर्मणः	४						
जंबुदीव	द्वीपः ५, ९, १०, १६, ३०, ३२, ३४, ३५, ५१, ५५, ७२, ७६, ८३, ८६, ८८, ९२, ९३, ९५, ९०, १०४, १०५, ११५, ११७, १२९, १०५, ११५, ११७, १२९,							

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
तिसलदेवी	राज्ञी	२७०	दारयाउरी	नगरी	१८९, २००	धरणिजह	ब्राह्मणः	१४७
तीर(स्वस्ति)नगरम्		२७०	दिडिवाय	जैनागमः	१३	धरणिद	देवः	४०
मुडियंग	कल्पवृक्षः	९	दियवर	देवः	२५०	धवलकक	नगरम्, लेखकप्रस्तावः	३३५
तुसिय	देवः	३९	दिसाकुमार	देवः	८४	धायदसंड	ह्रीफः	२९, ३०, ७२
तुगिय	पर्वतः	२०८	दीवकुमार	देवः	८४	धारिणी	राज्ञी	३०, ३२
तेयवीरिय	राजा	५०	दीवसिह	कल्पवृक्षः	९	"	युवराजपत्नी	९८
तेलोकासुंदरी	राज्ञी	१५७	दीवायण	श्रमिः	१९८-२००	"	राज्ञी	१६९
तोयधारा	दिक्कुमारी	३५	दीह	राजा	२१८-२२१, २४१, २४२	"	"	२८९
थ			दुग्गा	देवी	१०८	धुमापमा	नरकः	५१
थणियकुमार	देवः	८४	दुन्नाहण	राजपुत्रो राजा च	१८२	धूमा	"	२५१
थावर	ब्राह्मणः	९७	दुम्मुह	राजसेवकः	३०७	न		
थिमिअ-य	राजा	१८२, १८४	दुण्ढराय	राजा	१२४	नानजी	कागदीयप्रतिष्ठेयकपिता,	
थिमिसागर	राजा	१४८	दुवइ	छन्दोनाम	१२	निसुन	लेखकप्रस्तावः	३३५
द			दुविट्ट	वासुदेवः	१०५, ११४, ११५	नेमिनाथः	प्रतिवासुदेवः	१३५, १३६
दइचय	राजपुत्रः	५५	देवई-ती	राज्ञी	१८३, १९५, १९७-१९९	नेव्युकुल	तीर्थकरः	१७
दक्खिणमहुरा	नगरी	२००, २०२, २०५	देवकुरा	क्षेत्रम्	१४७	धमणकुलम्, ग्रन्थकार-प्रस्तावः		
दडभूमि	देशः	२८२	देवसम्म	ब्राह्मणः	२२९	प		
दडरह	राजा	९२	"	ब्राह्मणः	३३३, ३३४	पइणतारम	देवः	८४
"	राजपुत्रः	१४९	देवार्णदा	ब्राह्मणपत्नी	२७०	पडम	राजा	१७४
दडयम्म	राजा	११७	देवी	राज्ञी	१५३	पडमगुम्म	विमानम्	२११
दत्त	वासुदेवः	१६८	दोमिलो	लिपिः	३८	पडमचरिय	ग्रन्थः	१७६
ददुदुरंक	विमानम्	३१७	ध			पडमपम	तीर्थकरः	८३, ८६
"	देवः	३१९	धण	सार्धवाहः	१०, ११, १५	पडमावती	राज्ञी	१४९
दमवर	श्रमणः	२०५	"	धेष्ठी	२८९, २९१, २९२	"	"	१७२
दमिसारि	प्रतिवासुदेवः	१४८	धणदत्त	"	८	पञ्जुण	राजपुत्रः	१८४
दसण	देशः	३२८	धणपवर	"	२३२	पजोय	राजा	३०३, ३०४
दसण+भइ	राजा	३२८, ३२९, ३३१	धणय	"	३१	पडिरुवा	कुलकरपत्नी	१०
दसणउर	नगरम्	३२८	"	देवः	१८३	पडमाणुजोग	ग्रन्थः	४
दसणय	पर्वतः	२१२	धणु	अमात्यः	२१८, २१९, २२०, २२८, २२९, २४१	पणत्तो	विद्या	१४२
दसण्णा	नदी	३२८	धणंतरी	आयुर्वेदनिर्माता	३८	पभावती	राज्ञी	१८०, १८१
दसरह	राजा	१७५	धम्म	तीर्थकरः	१३३, १३४, १३७, १४६	पथावइ-ति	राजा	९५, ९९-१०१
दहिवाहण	राजा	२८९	धम्मघोस	श्रमणः	११, १३	परकम्मो	लिपिः	३८
दंडयारण	वनम्	२४६	"	"	६२	परसुराम	तापसपुत्रः	१६५-१६७
दंडाउय(व्)पयक	प्रदेशः, लेखकप्रस्तावः	३३५	"	"	२०५	पडीयाल	जातिः, लेखकप्रस्तावः	३३५
दामोयर	ब्राह्मणः	५३	धयरट्ट	राजा	१८२	फहाअ	प्रतिवासुदेवः	१६८
"	कृष्णवासुदेवः	१८५, १८६, १८७, १९०, १९३, १९४, १९९, २०१, २०३, २०५	धर	"	८३	पसणवद	राजा	१०
			धरण	"	१८२	"	अमात्यपुत्रः	१०७-१०९, ११२
			धरणराइ	इन्द्रः	२६७	"	श्रमणः	३०७, ३०८
			धरणाडिब			फसेणइ	कुलकरः	१०

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
पसेणइ	राजा	२६१	पुष्कमाला	दिकुमारी	३५	बलभइ	राजा	५०
"	"	३०४	पुष्कवई	राज्ञी २१३, २२४,		बलाहगा	दिकुमारी	३५
पहृत्थ	"	१७५	पुष्कवती	२२५, २३६, २३७, २४३		बलि	राजपुत्री राजा च	१४९
पहावती	राज्ञी	१६९	पुष्कत्तर	विमानम्	२७०	"	प्रतिवासुदेवः	१६४
पहावती	राजपुत्री	२६१	पुरंदरदत्त	भेष्टिपुत्रः	६२	बहली	देवः	४१
पहास	तीर्थम्	४३	पुरिमताल	नगरम् ४१, ४२, २१७		बहस्सतिमत	दर्शनम्	४
पकप्पमा	नरकः	५१, २५६	पुरिसदत्त	भेष्टिपुत्रः	३०४	बहुल	सन्निवेशः	२७५
पकप्पहा			पुरिससीह	राजपुत्रः	७७-७९	बंभुमई-ती	राजपुत्री	१८-२६
पंजग	वनम्	३६	"	राजा	९८	बंभुमई-ती	ब्राह्मणपुत्री	२२१
पंड	राजा	१८२	"	वासुदेवः	१३४-१३६	बंभ	राजा	१०५
पंडुअ	निधिः	४३, २१०	पुरिसोत्तिम	वासुदेवः	१३१, १३२	"	राजा २१८, २२२,	
पंडुकवल	मेरुशिला	३६	पुण्यविदेह	क्षेत्रम् २९, ३२, १०६,			२२५, २२७, २४१	
पाणय	देवलोकः ८४, ९२, १४८,			१४८, १४९, १६३,		बंभयत्त	चक्रवर्ती २१०, २११,	
	१७२, २५६, २५७, २६४			२५०, २५४			२१८, २२१, २२४,	
पारासर	परिमाजकः	३०४	पुइइपाल	राजा	३१		२२७, २३०, २३१,	
पालउग्रग्राम	ग्रामः, लेखकप्रशस्तौ	३३५	पुइई	राज्ञी	८६		२३२, २३६, २४०-२४४	
पालित्तय	ग्रन्थकारः	३८	पुंडरिमिणि	नगरी ३२, ३३, १४९,		बंभलोय	देवलोकः ८४, ९७,	
पावा	नगरी	३३३		३२४			१६२, २०९	
पास	तीर्थकरः २६०, २६१,		पुंडरीअ	वासुदेवः	१६४	बंभी	राजपुत्री भ्रमणी च ३८,	
पासयद	२६९, २७५		"	राजा	३२४, ३२५		४२, ४८	
पासवामि			पूवणा	देवी	१८३	"	लिपिः	३८
पियदंसणा	भेष्टिपुत्री	७-९	पूरण	राजा	१८२	बारवई-ती	नगरी ११७, १९४,	
"	भ्रंष्टिपुत्री	१५४, १५९,	पूस	सामुद्रिकः	२७९, २८०		१९८, १९९, २०१,	
		१६१, १६२	पेडाल	उपवनम्	२८२		२०४, २०५	
पियंगुलया	भेष्टिपुत्रीसखी	२३१	पोइणीखेड	नगरम् १५३, १५९-६१,		बाहु	राजपुत्री मुनिव ३२, ३४	
पिसाव	देवः	८४	पोमिणीखेड	१७३			३८	
पिहुसेण	राजपुत्रः	३०४	पोक्सरी	लिपिः	३८	बाहुबली	राजपुत्री राजा भ्रमण्य	
पिंगल	निधिः	४४, २१०	पोयण	नगरम् ४९, ९५, ९९,			३८, ४०, ४१, ४४-४८	
पीड	राजपुत्रः भ्रमण्य	३२,	प्रोयणपुर	१००, १४६, २४५, ३३१		विहीराण	राक्षसवंशीयः	१७५
		३४, ३८	पोराणपुर	नगरम्	२५४	बुद	भगवान् बुदः	१६०
पुक्खरदीव	द्वीपः	५	पोलास	जीर्णग्रहम्	२८८	बुददास	परावर्तितनामा	१५९,
पुक्खरद	द्वीपः	३०					भेष्टिपुत्रः	१६०
पुक्खरवरदीवद	द्वीपः	२५१				बुदिल	भेष्टिपुत्रः	२२९-२३२
पुक्खलावई	क्षेत्रम् ३०, ३२, ७६,					बुह	मज्जलक्षणशास्त्रनिर्माता	३८
	१४९							
पुण्णभइ	भेष्टी	७, ८						
पुन्नभइ								
"	"	११३						
"	सार्थवाहपुत्रः	३१						
पुष्करंडय	उद्यानम्	९८						
पुष्कल	राजा २१८, २१९,							
	२२४, २०१							
पुष्कदेत	तीर्थकरः	९१, ९२						

नाम	किम् !	पत्रम्	नाम	किम् !	पत्रम्	नाम	किम् !	पत्रम्
	६९, ७२-७४, ८७, ९९, ९४, १०३, ११४, ११६, ११७, १२९, १३०, १३३, १४२, १४७, १६०, १६७, १६८, १७४, १७६, १७८, १७९, १८७, २०६, २३४, २४३		म			महाविदेह	क्षेत्रम्	३१
भरह	चक्रवर्ती ४, ३८-४१, ४३, ४४, ४७-५०, ६३, ९७, ३२३		मदसागर	अमात्यपुत्रः १२१, १२२		महावीर	तीर्थकरः	१
भरह	नाटपथास्त्रनिर्माता ३८		मगाहा	देशः १४७, १८७-१८९, २३३		महावीरिय	राजा	५०
भरह	राजपुत्रः, रामभ्राता १७५		मगाहापुर	नगरम् २३२		महासीह(सिव)	..	१६४
भरहगच्छ	क्षेत्रम् १३१		मधव	चक्रवर्ती १३७		महासुक	देवलोकः ९३, ९५, ९९, १०४	
भरुपच्छ	नगरम् १७२		मगधदेश	देशः ३१७		महासेण	राजा ८८	
भक्कगच्छ	कल्पवृक्षः ९		मज्झिम	सन्निवेशः २९८		महिषा	नगरी १६५, १६९, १७७	
भागवय	प्रवर्जितलिङ्गम् ४९		मज्झिम	कल्पवृक्षः ९		महिहर	राजपुत्रः ३१	
भागवय	दशमम् ९७		मणिरह	राजपुत्रः ११३		महिदसीह	राजपुत्रः १३८-१४०, १४२	
भागीरह	राजपुत्रः ७०-७१		मणोरम	उद्यानम् २१२, १४९		महु	प्रतिवासुदेवः १३१, १३२	
भागीरह्वी	नदी ७१		मणोरमा	राज्ञी १४९		महुगिहाद	कृष्णवासुदेवः १९०, १९१	
भाणु	राजा १३३		मसंग	कल्पवृक्षः ९		महुमई	नदी २१४	
भाणुवेग	विद्याधरपुत्रः १४२		मदनिका	दासी २६, २७		महुमहण	कृष्णवासुदेवः १८३, १९१	
भारराज	ब्राह्मणः ९७		मदी	राजपुत्री राज्ञी च १८२, २०५		महुमासच्छण	उत्सवः २६४	
"	गणधरः ३०२		मद्यमंजुया	विद्याधरपत्नी १५९		महुवरिगीव	नाटपत्रकारः २११, २४३	
भारह	क्षेत्रम् ९, ५१, ५५, ६२, ८३, ८६, ८८, ९१-९३, ९५, १०४, १०५, ११५, ११७, १२९, १३१, १३३, १३४, १३८, १४९, १५२, १६४, १६८, १६९, १७२, १७४, १७५, १७७-१८०, २१०, २१२, २४५, २५७, २७०, २७१		मयंगतीर	द्रव्यः २१५		महुरा+उरी	नगरी १८३, १८९	
भिम	कल्पवृक्षः ९		मयंगतीरा	नदी २१२		महेसर	क्षेत्रम् ३१	
भीम+सेण	राजपुत्रः १८२, १८८		मरुदेव	कुलकरः १०		"	" १६२	
भूय	देवः ८४		मरुदेवा	कुलकरपत्नी ३४, ३५, ३७, ४१, ४२		महोरग	देवः ८४	
भूयदिण्य	मातङ्गः २१५		मरुदेवी	कुलकरपत्नी १०, ३४, ९७		मंगला	राज्ञी ७९	
भूयलिङ्गी	लिपिः ३८		मरुभूद-ति	पुरोहितपुत्रः २४५, २४६, २४९		मंगलावई	क्षेत्रम् १४८	
भोगभूमि	देशः १८१		मातदेव	अमात्यः, लेखक- प्रशस्तौ ३३५		मंदर	पर्वतः ३६, १६९, २७१	
भोगमालिणी	दिक्कुमारी ३५		मलि+सामि	तीर्थकरः १६९-१७२		मंदाइणी	नदी २७८	
भोगवई	" ३५		महस्पह	विमानम् २५६		मंदाइणीकच्छ	वनम् २९७	
भोगकरा	" ३५		महसेण	वनम् ५१		मंदिर	नगरम् ९७	
भोय	राजा १८४-१८९		महाकच्छ	राजपुत्रः ४०		मागाह	तीर्थम् ४३, ४४	
			महाकाल	निधिः ४४, २१०		माणदेव	अमणः, अमणकारप्रशस्ती ३३५	
			महाजस	राजा ५०		माणव	निधिः ४४, २१०	
			महातमपहा	नरकः ५१, २४३, २९९		माणिमह	वणिक् ११, १२, १६	
			महातमा	निधिः ४४, २१०		माणुसोत्तर	पर्वतः ५	
			महापञ्चम	चक्रवर्ती १७४		मायंगी	विद्या २२८	
			महापीठ	राजपुत्रः अमणव ३२, ३४, ३८		मालवत	पर्वतः ३६	
			महाबल	राजपुत्री राजा च १६		माहणकुण्ड	ग्रामः २७०	
			"	" १६९		माहव	कृष्णवासुदेवः २०२	
			महामति	अमणः १४८		माहिद	देवलोकः ८४, ९७, २०५	
						मिमावई	राज्ञी ९५	
						मित्तवम्म	क्षत्रियः ५७	
						मियावई-ती	राज्ञी अमणी च ३०३, ३०४	
						मिदिह	राजपुत्रः परिभाजकव ४९, ९५, ९७	

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
मिरिची	"	४९	रक्कागर	"	१५४	लक्ष्मीधर	राजपुत्रः	१८, २६, २७
मिरीह	"	४९, २७०	रस	वैद्यः	३१	लच्छिमती	राज्ञी	२५१
मिरीची	"	४९	रहणेतरचक-			लच्छी	"	३०
मिरीची	"	९७	बालपुर	नगरम्	१४६	ललियंगय	देवः	२८-३०, २५४
महिला	नगरी	१६५, १६९, १७०	राजशेखरः	राजा	१८	लवणसमुद्र	समुद्रः	५
मिहिला			राजीमती	राजपुत्री	१७	लंका	नगरी	१७५
मुष्टिप	मलः	१८३, १८९	राम	बलदेवः, कृष्णभ्राता	१८५, १८८, २००, २०४	लंतभ	देवलोकः	८४
मुष्टिचंद	श्रमणः	११७	राम+भद्र	बलदेवः, दशरथपुत्रः	१७५, १७६	लीलादेवी	वणिक्कनी, लेखक-	३३५
"	"	२०५	रामा	राज्ञी	९१	लीलावती	राजपुत्री	१०८, १०९
मुष्टिमुखज-य	तीर्थंकरः	१७२-१७७	रायागह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	लोयपवासा	लिपिः	३८
मुद्रभट्ट	ब्राह्मणः	५३	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	लोहगल	नगरम्	३०
मूला	श्रेष्ठिफर्नी	२८९, २९०	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	व		
मूलाग	सन्निवेशः	२७६	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदरजय	राजपुत्री राजा च	३०
मेरक	प्रतिवासुदेवः	१२७, १२८	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदरगाम-ह	राजपुत्रसकवती ३२१, श्रमणव ३२-३४, ४१	
मेरु	पर्वतः	५१, ७२, २८८	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदरदत्त	राजा	३०
मेरु	राजा	७९	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदरसेण	राजा तीर्थंकरव ३२, ३३	
मेरुकुमार	देवः	४३, ७३, २६२	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वक्खार	पर्वतः	३०
"	राजपुत्री श्रमणव ३०८-३१५		रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वग	पत्नीपतिः	६०, ६१
मेहपाव	देवः	१२०	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वच्छमिला	दिकुमारी	३५
मेहणियाव	राक्षसवंशीयः	१७५	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वच्छा	परिवानिका	२३०
मेहमालि	देवः	२६२, २६६	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्रगाह	राजा मुनिव २५१-२५४	
मेहमालिणी	दिककुमारी	३५	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्राहिव	देवः	२९६
मेहरह	राजपुत्रः	१४९	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्रदेव	राजा	२५१
मेहवई	दिककुमारी	३५	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्रवीरिज	विद्याधरः	१५९
मेहवरा	"	३५	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्रवेग	इन्द्रः	३५
र			रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वज्राउह	राजपुत्री राजा च	१४८, १४९
रङ्गलहर	उद्यानम्	७	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	"	राजपुत्रीसखी २२५, २२६	
रङ्गलहर	विद्याधरः	१५९	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वणकिसल्लया	देवः	३९
रक्खस	देवः	८४	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वण्डी	तीर्थंकरः	१, ४९, १००, १०३, २७१, २७२, २८१, २९२, ३०४
रक्खसी	विद्या	१७५	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदमाण	ग्रामः	२८४
रक्तकवल	मेरुशिला	३६	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वदमाणसामि	तीर्थंकरः	२७८, २८२, २८३, २८८, २९४, २९७, २९९, ३०५, ३०८, ३१३, ३२८, ३३१, ३३२, ३३५
रमणियज	क्षेत्रम्	१४८	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वपा	राज्ञी	१७७
रक्कागहपुर	नगरम्	१३३	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वपिण	नगरम्	३१२
रक्कापुर	नगरम्	११३, १४७, १६२	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वम्मा+एवी	राज्ञी	२५७, २५८, २६०
रक्कापभा-हा	नरकः	५, ५१, ११४	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७	वरदाम	तीर्थम्	४३
रक्कापहा	विद्याधरपुत्री	१५९, १६०	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			
रक्कामाला	राज्ञी	१४८	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			
रक्कावई-ती	श्रेष्ठिपुत्री	२३०, २३२, २३३, २३७, २३९	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			
रक्कासंनयपुरी	नगरी	१४८	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			
रक्कासंनया	श्रेष्ठिपत्नी	२३२	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			
रक्कासेहर	राजा	११३	रायगह	नगरम्	४, ९७, ९८, १६८, १७२, १७८, २३३, २८०, ३०४, ३०५, ३०७			

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
वरधनु	अमात्यपुत्रः २१२, २१९- २२२, २२६-२३०, २३२, २३३, २३७, २३८, २४०, २४१		विचित्तवीरिज	राजपुत्रो राजा च १८२		विरसभू-ति	राजपुत्रः ९८, ९९	
वरयत्	गणधरः २०५		विचिता	दिकुमारी ३५		"	पुरोहितः २४५	
वरंगा	नदी २७९		विजय	विमानम् ५१, ७५		विहाण	कुलशास्त्रनिर्माता ३८	
वरुण	देवः ३९		"	धमणः १०५		विशाडई	अटवी २०५, ३०९	
वरुणवम्भ	क्षत्रियः ५७		"	बलदेवः १०५		वीयसोया	नगरी १६९	
वरुणा	पुरोहितपुत्रवधुः २४५		"	राजा १७७		वीर+य	पत्नीपतिः ६१, ६२	
बलाहय	पर्वतः ३०४		विजयवती	राज्ञी ५५		वीर+ग, य	सामन्तः १८०, १८१, १८२	
बध्नाम	कागरीयप्रतिशेखकः ३३५		विजयसेण	राजा ७६		वीर	तीर्थकरः २८३, २८५, २९७, ३०३, ३३३	
वसंतउर-पुर	नगरम् १०, १३, १९, २२६, ३१७		"	धमणः ११३		"	राजा ३३१	
वसंततिलया	राजपुत्रीसखी १०८-११०		"	" १४४		वीरणाह	तीर्थकरः २८४	
वसु	राजा १०४		विजया	राज्ञी ५१		वीरवद्दमाण-		
वसुदेव	राजा १८२-१८४, १९५, १९७-२००		"	" २५२		सामि	" ३२६	
वसुभाग	परिवाजकः २२८		विजयाहर	पत्रशेखकलाशास्त्रनिर्माता ३८		वीरभद्र	भेष्टिपुत्रः १५५-१५९, १६१, १६२	
वसुमर्ह-ती	राजपुत्री २८९-२९२		विज्जुकुमार	देवः ८४		वीरमर्ह	नारीस्वाज्ञः भेष्टिपुत्रः १५५	
वसुमती	राज्ञी १०५		विज्जुगति	विद्याधरराजा २५०		वीरसेण	राजा १३८, १४०, १४९	
"	" १६८		विज्जुदाड	विद्याधरः १४८		वेगवती	विद्याधरपत्नी १५९	
वसुंधरा	पुरोहितपुत्रवधुः २४५		विज्जुपभ	पर्वतः ३६		वेजयंत	विमानम् ७९, ८८, ९१, १३३, १६९	
वसुंधरी	राज्ञी १४८		विज्जुसिहा	विद्याधरराज्ञी २३४		वेत्तमती	नदी २१४	
वाउकुमार	देवः ७३, ८८		विड	तपस्वी २८१		वेयड्ड	पर्वतः १६, ४०, १४०, १४२, १४६, १४८, १५९, १६०, २०५, २३४, २५०	
वाउभू	गणधरः ३०२		विणमि	राजपुत्री विद्याधरराजा च ४०, ४३		वेयड्डगिरि-		
वाणरविज्जा	विद्या १७५		विणयगेंदण	धमणः ७७		कुमार	देवः ४३	
वाणारसी	नगरी ८६, १७४, १७९, २४०, २५७, २५८		विणयवई	राजपुत्री १६		वेयालिणी	विद्या १४७	
वाधुवल	अमात्यः, लेखकप्रवासी ३३५		विणयवई-ती	भेष्टिपुत्री १५४, १५६		वेसमण	देवः ३८, ३००	
वारणसी	नगरी २१५		विणीयणयरी	नगरी ३८, ४१, ४४, ४६, ४८, ५१		"	सार्थवाहः २३९	
वारिसेणा	दिकुमारी ३५		विणीया	राजा ९३		"	यक्षः १४६	
वारुण	अलम् १८९		विण्डु	राजपुत्रः १८२		श		
वाल्लि	वानरवंशीयः १७५		विदेह	क्षेत्रम् ३०, ४९		शीलाङ्क	प्रस्तुतग्रन्थकारः १७	
वाल्लयप्पभा	नरकः ५१		विदुधानन्द	नाटकम् १७		स		
वासिटठ	गोत्र-गणधरव ३०३		विमल	तीर्थकरः ११५, ११७, १२९		सङ्गायरिय	परिवाजकः ११२, १२०	
वासुदेव	छण्णवासुदेवः १८३, १८४, १८९-१९१, १९७, १९८		विमलमद्	अमात्यः १६, २८		सक	इन्द्रः ५२	
वासुपुत्र	तीर्थकरः १०४, ११५		विमलमति	प्रस्तुतग्रन्थकारः १७		सककरप्पभा	नरकः ५१	
विडलमति	धमणः १४८		विमलवाहण	कुलकरः १०		सकच	पुरोहितः २१५, २१६	
विडलवाहण	राजा ७२		वियत्त	गणधरः ३०३		सकचमामा	ब्राह्मणपत्नी १४७	
विडला	धमणी ५३		विसाल	परिवाजकः ३०४		सकचवीरिय	राजा ५०	
विचित्त	धमणः ३		विसाहणदि	राजपुत्रः ९८		सकचा	इन्द्राणी ३६, ३७	
			विसाहभू	सुवराजः ९८		सका	राज्ञी १९१, १९२	
			विसाहा	विद्याधरपुत्री २२५		सकभामा		
			विसाहिल	परिवाजकः ३०४				
			विस्सणदि	राजा ९८, ९९				

नाम	किम् !	पत्रम्	नाम	किम् !	पत्रम्	नाम	किम् !	पत्रम्
सङ्कृत	ग्रन्थः	९७	संस्तर	नगरम् १६, ९९, ११७,		सिद्धादेश	सांवरसारिकः	१८
सङ्कुमार	देवलोकः ८४, ९७, १३७,	१४५		१२४, १५४		सिद्धावरिय	श्रमणः	२८, ३२
"	चक्रवर्ती १३८-१४२, १४४	२१५, २१६	संगमअ-य	देवः १, २८३, २८५,		सिरी	राज्ञी	९३
सङ्गामसा	लिपिः	३८		२८६, २८८, २८९, २९३		"	"	१५३
सङ्गाय	राजपुत्रः	१७५	संज्ञिहायण	ब्राह्मणः	२१४	सिरिकंता	कुलकरपानी	१०
सङ्गजय	पर्वतः	२०७	संतणु	राजा	१८२	"	राजपुत्री राज्ञी च	३०
समरकेसरी	राजपुत्रः	११२	संज्ञि+सामि	तीर्थकरः १३७, १४६,		"	राजपुत्री	२२५, २२६
समरसीह	राजा	१११, ११२		१५०-१५२		सिरिगुप्त	राजा	१०६, १०८
समुद्र	पुरुषलक्षणशास्त्रनिर्माता ३८		संय	राजपुत्रः	१८४, २०२	सिरिहृह	ग्रामः	२१४
समुद्रविजय-य	राजा १८२-१८९, १९३		संवल	देवः	२७९	सिरिपण्वय	पर्वतः	६२
सम्मेय	पर्वतः ५४, ७४, ७५,		संभव	तीर्थकरः ७२, ७३, ७५		सिरिपण्व	विमानम्	२८
सम्मेयगिरि	८२, ८५, ८७, ९०-९२,		संभूय	मातङ्गपुत्रः श्रमणश्च	२१५, २१६	सिरिमती	राज्ञी	२२६
सम्मेयसेल	९४, ११६, १३०, १३३,		संवर	राजा	७५	"	सापेवाहपुत्री	२३९
	१४९, १५२, १६३, १७१,		साण्ण	नगरम्	७९	सिरिविजय	राजा	१४६-१४८
	१७३, १७७, २४८, २६६		सागरचन्द	श्रेष्ठिपुत्रः	६-९	सिरिसेण	"	१४७
सयधणु	राजा	१८२	सागरचन्द	श्रेष्ठिपुत्रः	१६१, १६२	"	"	२०६
सयचल	"	१६	सागरदत्त	श्रेष्ठिपुत्रः	२२९-२३२	सिलावती	क्षेत्रम्	१६९
सयर	चक्रवर्ती ५५, ६३-६५,		सागरदत्त	साथवाहः	२४८, २४९	सिव	राजा	१३४
	७०, ७१		सामा	राज्ञी	११५	"	"	३३१
सयंपम	श्रमणः	७२	सायर	राजा	१८२	सिवमंदिर	नगरम्	२३४
सयंपभा	देवी	२८, ३०, ३१	सायरदत्त	साथवाहः	३१	सिवा+देवी	राज्ञी १८३, १९३, २०७	
सयंभू	वासुदेवः	१२७, १२८	"	श्रेष्ठि	१७३	सिहिर्पदिया	राज्ञी	१४७
सयाधिय	राजा २८९, २९१, २९२		सायरदत्त	देवः	३९	सिधपुरी	नगरी	९३
सरस्वदे-ती	नदी	१८६, १८७	सारस्वय			सिधलदीप	द्वीपः १५४, १५५-१६१	
सर	इन्द्रजालशास्त्रनिर्माता ३८		सालवाहण-			सिधुणिक्कुड	प्रदेशः	४३
सवजसा	राज्ञी	१२९	स्थाणि	राजसभा	१३८	सिधुदत्ता	देवीकन्या	४३
सव्वट्टुसिद्ध	विमानम्	३४, ८९	सालिगाम	ग्रामः	५३	सिधुदेवी	पेशी	४३
सव्वरयण	निधिः	४४, २१०	सालिमह	अश्वशास्त्रनिर्माता ३-		सोओया	नदी	१६९
सव्वाण(ण)भूह	श्रमणः	३०६	सावती	नगरी ७२, १३७, ३०४		सीयल	तीर्थकरः ९२, ९३, १८०	
सहदेव	राजपुत्रः	१८२, १८८	सिधवण्डिय	ग्रामः	१८६	सीया	नदी १६, ३०, १४८,	
सहदेवी	राज्ञी	१३८	सिद्धत्व	वनम्	४०	"	राज्ञी रामफणी	१७५,
सहसंब	वनम्	५१, ७३, ७५	"	राजा	२७०		१७६	
सहस्सकल	राजपुत्रः	५५	"	बलदेव-	२०४, २०८	सीराउह	बलदेवः, कृष्णघाता	
सहस्सबाहु	"	५५	"	सारथिदेवः		सीलवई	श्रेष्ठिपत्नी	३१
सहस्संसु	"	५५, ५६, ६३	"	वर्द्धमानस्वामिमा-	२७५,	"	क्षत्रियपत्नी ५७-५९, ६२	
सहस्साउह	"	१४८, १४९	"	तुस्वसातनबदेवः	२८०,	सीलवरिय	प्रस्तुतग्रन्थकारः	
सहस्सार	देवलोकः ८४, ११५,			२८१		सीह	पत्नीपतिः ५७, ५८, ५९	
	१२९, २५०		सिद्धत्वा	राज्ञी	७५	सीहपुर	नगरम्	२०५
संख	निधिः	४४, २१०	सिद्धभट्ट	ब्राह्मणः	५३	सीहरह	राजा	१८२
"	श्रेष्ठी १५४, १५६, १५७		सिद्धवत्त	वणिक्	२९८	सीहराय	"	३४१
"	गोत्रम्	६२०	सिद्धवड	वृक्षः	६२	सीहसेण	"	१२९

नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्	नाम	किम् ?	पत्रम्
सुक्लवृ	क्षेत्रम्	२५३	राज्ञी		१७५	सेनिय	राजा ३०४, ३०७, ३०८, ३१५, ३१६, ३२०	
सुकटय	चौराधिपः	२३२	समुह	राजा	१८०	सेयकूट	पर्वतः	७१
सुक्	देवलोकः	८४	"	राजसेवकः	३०७	सेयवड	प्रवर्जितलिङ्गम्	१७३
सुगंधि	क्षेत्रम्	२५१	सुमेह	दिवकुमारी	३५	सेयविद्या	नगरी	९७
सुग्रीव	बानरवंशीयः	९१	सुयदेवया	देवी	२	सेयधर	प्रवर्जितलिङ्गम्	३३१
"	बानरराजा	१७५	सुयसागर	धमणः	२५०	सेयस	तीर्थकरः	१८०
सुजसा	राज्ञी	१३४	सुरगुरु	"	२५०	सोम	राजा	१३१
सुजप्यह	विमानम्	२५०	सुरसरिया	नदी	३११	सोमणस	पर्वतः	३६
सुद्वि	यक्षः	४३	सुरिदत्त	राजा	१०६	"	वनम्	३६
"	धमणः	७१	सुरुवा	कुलकरपत्नी	१०	सोमपन	राजा	१८२
सुणदा	राज्ञी	३७, ३८	सुलक्षणा	ब्राह्मणपत्नी	५३	सोमा	ब्राह्मणपत्नी	५३
"	"	२१६, २१७	"	वणिक्पत्नी	७६	सोरिय	राजा	१८२
सुणासीर	अमात्यः	३१	सुलसा	"	१८३, १९४	सोरियपुर	नगरम्	११७, १८२
सुणासीरा	अमात्यपत्नी	३१	सुवच्छा	दिवकुमारी	३५	सोहम्म	देवलोकः ५, १६, ३०, ३४, ३५, ४०, ४१, ७२, ७३, ७९, ८३, ८४, ८६, ८९, ९७, १४०, १४७, २०५, २११, २१६, २५९, २८३, २९२	
सुतारा	राज्ञी	१४६, १४७	सुवण्णकुणार	देवः	८४	सोहम्मवसेसय	विमानम्	३५, १४२
सुदंसण	बलदेवः	१३४, १३६	सुवण्णदेव	राजा	३०	स्तम्भतीर्थ	नगरम्, लेखकप्रसास्ती ३३५	
"	राजा	९५३	सुवण्णभूमि	देशः	४१	ह		
"	देशः	२१४	सुवण्णवालिवा	नदी	२७४	हणुवत	बानरवंशीयः	१७५
सुदंसणा	राज्ञी	७६	सुवेग	दूतः	४४	हत्थिणाडर	नगरम्	१३८, १४२, १४९, १५२, १५३, १६५, १८९, २०६, २१५, २१६
"	"	२५४	सुवय	तीर्थकरः	२०९	हरगण	नटः	१६
सुदाड	सर्पः	२७८, २७९	सुव्वया	धमणी	१११	हरि	कृष्णवासुदेवः	१८३, १८४
सुधदु	राजा	८६	"	राज्ञी	१३३	हरिणाण	देवः	
सुधद्वि	"		"	धमणी	१५९	हरिणगोसि	३५, १८३, १९५, २५९, २७१	
सुधास	तीर्थकरः	८६, ८८	सुसीमा	राज्ञी	८३	हरिणगोसि		
सुधण्णहा	राक्षसवंशीया नारी	१७५	सुसेण	सेनापतिः	४२, ४३	हरिवरिस	क्षेत्रम्	१८१
सुधमह	बलदेवः	१३१, १३२	सुसेल	पर्वतः	१७५	हरिवंस	वंशः	१८०, १८२, १८३, २००, २०९
सुधाहु	राजपुत्रो मुनिश्च	३२, ३४, ३८	सुहम्म	गणधरः	४, ३०३	हरिकुल	वक्त्रवर्ती	१७८, १७९
सुधुद्धि	अमात्यः	२८	सोहम्म			हरिसेण	बलदेवः	१९१, २०२
"	अमात्यपुत्रः	३१	सुहंकरा	नगरी	२५१	हलहर	कृष्णभ्राता	२०४, २०८
"	अमात्यः	४४	सुहावह	पर्वतः	१६९	हलाडह	"	१९७, २००, २०२-२०४, २०७
"	"	६५, ६९	सुहुमवालिवा	नदी	२९९	हलि	"	२०१, २०३
"	"	२४०	सुंदरी	राजपुत्री धमणी च	३८, ४४, ४८	हलोस	"	२०४, २०४
सुमगा	नगरी	१४८	सूर	राजा	१३८	हंसी	लिपिः	३८
सुमहा	राज्ञी	२१६	"	"	१५२	हारिय	गोत्रं गणधरश्च	३०३
सुभूय	चक्रवर्ती	१६५-१६७	"	विद्याधरराजा	२०५	हिमवत	पर्वतः	७१, २०५, ३११
सुभोम			"	जैनायमः	१३	"	राजा	१८२
सुभोगा	दिवकुमारी	३५	सूरपण्णति	देशः	२८१			
सुमङ्गति	तीर्थकरः	७९, ८२, ८३	सुजंजस	राजा	४१			
सुमंगला	राज्ञी	१०, ३७, ३८	"	तीर्थकरः	९३, ९५, १०३, १०४			
सुमिता	राजा	५५	सेणा	राज्ञी	७२			
"	"	१७२	सेणावह	शकुन्तलाकनिर्माता	३८			
सुमिता	वन्धा नारी	५८, ५९, ६१						



द्वितीयं परिशिष्टम्

‘चउप्यन्नमहापुरिसचरिय’अन्तर्गतानां विशेषनाम्नां विभागशोऽनुक्रमणिका

[परिशिष्टेऽस्मिन् विशेषनाम्नां ये विभागाः परिकल्पितास्तेऽधस्तादुल्लिख्यन्त इति तत्तद्विभागदिदं भुविस्तत्तदङ्काङ्कितो विभागोऽ-
वलाकनीयः ।]

१ अमात्यास्तत्प- रिवारथ	१४ ग्रन्थकार- -शास्त्रकाराः	२७ देव-देवीन्द्रे- न्द्राण्यः	३९ पर्वताः	५२ राजगृहपाठकः	६५ विद्याधर-विद्या- धरराजानस्तेषां- परिवारथ
२ अवतारी	१५ चक्रवर्तिनः	२८ देवल्लोकाः	४० पक्षी	५३ राजसभा	
३ उत्सवाः	१६ चैत्य-मन्दिर-	२९ देश-प्रदेशाः	४१ पुरोहितास्तत्परि- वारथ	५४ राजा-युवराजाः तेषां परिवारथ	६६ विमानानि
४ कल्पवृक्षाः	१७ चौराधिप-	३० मन्त्र-मन्त्रिण्यः	४२ प्रतिवासुदेवाः	५५ लिप्यः	६७ वृक्षनाम
५ कुलकरास्त- त्परिवारथ	१८ छन्दोनाम	३१ सन्निवेशाः	४३ प्रवाजितलिङ्गे	५६ लेखकौ	६८ वैद्यौ
६ कुण्ठवासुदेव- नामानि	१९ जैनागमाः	३२ नटः	४४ बलदेव(कुण्ठ- भाता)नामानि	५७ वणिक्-श्रेष्ठि- गृहपत्यस्तेषां परिवारथ	६९ भ्रमण-भ्रमण्यौ
७ ऋषिनाम	२० तीर्थकराः	३३ नदी-द्रव-समुद्राः	४५ बलदेवाः	५८ वनचरः	७० सार्पाः
८ क्षत्रियाः क्षत्रिय- धर्मा च	२१ तीर्थानि	३४ नाटकम्	४६ ब्राह्मणास्तत्परि- वारथ	५९ वनोद्यानोपवना- ऽटक्यः	७१ सामुद्रिक-
९ क्षेत्राणि	२२ दर्शने	३५ नाट्यप्रकारः	४७ मल्लौ	६० वन्या नारी	सांकेतिकौ
१० गणधराः	२३ दास-दासी-चेटी- -सखी-दूताः	३६ निधयः	४८ मातङ्गस्तत्परिवा- रथ	६१ वंश-जाति-कुल- भ्रमणकुल-मौत्राणि	७२ सारथी
११ गणिका	२४ दिक्कुमार्यः	३७ पक्षिनाम	४९ मेरुशिलानामानि	६२ वानरवंशीयाः	७३ सार्थवाहास्त- त्परिवारथ
१२ गृहे	२५ दिग्वासे	३८ परिव्राजक-प्रति- मात्रिका-पास- पडा-ऽऽजीवकवि- तापस-तापसपुत्र- तापसपत्न्यः	५० यक्षाः	६३ वामुदेवाः	७४ सेनापति-सामन्ताः सामन्तपत्नी च
१३ ग्रन्थ-शास्त्राणि	२६ द्वीपाः		५१ राक्षसवंशीयनर- नार्यः	६४ विद्याः	७५ सौकरिकः

१ अमात्यास्तत्परिवारथ

अभयकुमार	धनु	माधव	विमलमह	सुबुद्धि	सुबुद्धि
पंदा	पसण्वचंद	वरधनु	सुणासीर	"	"
वामदेव	महसागर	वाधुबल	सुणासीरा	"	

२ अवतारी

नारसिंह
सुद्ध

इंदुसव

३ उत्सवाः

कोमुई
कोमुईछण

महुमासच्छण

४ कल्पवृक्षाः

आइण	चित्तंगय	तुडियंग	भवनरुक्म	मणियंग
चित्तरस	जोइस	दीवयसिद्ध	मिंग	मत्तंग

५ कुलकरास्तत्परिवारश्च

अभिचंद	चंदकंठा	णामि	पसेणइ	विमलवाहन
चक्युकंठा	चंदजसा	णाहि	मरुदेव	सिरिकंठा
चक्युमं	जसस्सी	पडिरुवा	मरुदेवा	सुरूवा
			मरुदेवी	

६ कृष्णवासुदेवनामानि

केसव	चकाउइ	णारायण	महुणिहाइ	माहव	हरि
गोविंद	जणहण	दामोयर	महुमहण	वासुदेव	

७ क्रीडानाम

आमलगेइ

८ क्षत्रियाः क्षत्रियपत्नी च

जमाली	मितवम्म	वरुणवम्म	सीलवई
-------	---------	----------	-------

९ क्षेत्राणि

अवरभरह	एरवय	पुष्पलावई	भरहलाव	रमणिज्ज	सुगेधि
अवरविदेह	गंधिलावई	पुल्लविदेह	भारह	सिलावती	हरिवरिस
उत्तरकुरा	देवकुरा	भरह	मेगलावई	सुकच्छ	

१० गणधराः

अग्निभुइ	कासव	गोयम	भारदाज	वासिट्ट	हारिय
इंदभुइ	कोडिण्ण	गोयमसामि	वरयत्त	सुहम्म	
उसभसेण	कोसिय	जयहर	वाजभूइ	सुहम्मसामि	
				सोहम्म	

११ गणिका

तिलोवसुंदरी

१२ गुहे

खंडप्पवाया
तिमिसुइ

१३ ग्रन्थ-शाखाणि

संज्ञितशास्त्र	पठमचरिय	लक्ष्मणसत्थपंजिया
तरंगमइया	पठमाणुओग	सट्ठित्त

१४ ग्रन्थकार-शास्त्रकाराः

अंगिरस	णग्गइ	जुब्बुइ	शीलाइ	सीलंक
कन्वायण	णल्ल	भरह	समुइ	सिलावरिय
गइंद	अण्णंतरी	विमलमति	सवर	सेणावइ
चित्तरइ	पालित्तय	विहाण	सालिभइ	

१५ चक्रवर्तिनः

अर	कुंयु	भरह	सर्णकुमार	सुभूम
कणयरह	जय	मधव	सयर	सुभोम
कणयाह	बंभयत	महापउम	संति	हरिसेण

१६ चैत्य-मन्दिर-गृहाणि

अरहंतासणय	पोलास
गुणसिलय	रुहाययण

कंटय	वीर	सीह
वग्ध	वीरय	सुकंटय

१८ छन्दोनाम

दुवइ

१९ जैनाग्रमाः

उत्तरउत्तयण	जंहुदीव[पण्णत्ती]	णायधम्मकहा	दिट्ठिवाव	सुरपण्णत्ति
-------------	-------------------	------------	-----------	-------------

२० तीर्थकराः

अजिअ	उसह	णमि	पास+वेद, सामि	रिट्ठणेमि	संति+सामि
अणंतइ	कुंयु	णामेयसामि	गुण्णदंन	गइरसेण	संभय
अभिणंदय	खेमंकर	णेमि+णाह	मत्ति	वट्ठमाण+सामि	सीयल
अयलसामि		धम्म	मत्तिसामि	वासुपुज्ज	सुपास
अर	चंदप्पम-ह	नेमिनाथ	महावीर	विमल	सुव्वय
अरिट्ठणेमि	जुयाइजिण	पउमण्णम	सुणिमुव्वज-य	वीर+णाह	सेउजंस
				वीरवट्ठमाणसामि	सेयंस

२१ तीर्थाणि

पहास	मागह	वरदाम	बहस्सतिमत	भागवय
------	------	-------	-----------	-------

२२ दर्शने

२३ दास-दासी-चेटी-सखी-दूताः

कविला	चंदलेहा	डुम्मुह	वसंततिलया
चउरिआ	जसमती	पियंगुलया	सुमुह
चउरिका		मदनिका	सुवेग

२४ दिक्कुमार्यः

अर्णिदिया	बलाहगा	भोगकरा	मेहकरा	विचिता	सुवच्छा
तोयधारा	भोगमाळिणी	मेहमालिणी	वच्छमिता	सुभोगा	
पुण्णमाला	भोगवई	मेहवई	वारिसेणा	सुमेहा	

२५ दिव्याखे

२६ द्वीपाः

अग्नेय
वासण

जंबुद्वीप
णदीसर
भावहसंघ

पुष्करद्वीप
पुष्करद्व
पुष्करवरद्वीप

सिंघलद्वीप

२७ देव-देवीन्द्रेन्द्राण्यः

सामंजसः आचारं श्री सुविदितमार्गं श्री भगवतः

अग्निगुमार	गहलोय	णक्खल	पिसाय	वज्रदेव	संघल
अब्बाबाह	गह	णागकुमार	पूयणा	वण्डी	सारस्वय
असिगवन्त	गंमदत्ता	सुसिय	भूय	वहण	सिंधुदत्ता
असुरकुमार	गंधण्व	अणियकुमार	महोरग	वाउकुमार	सिंधुदेवी
आहृच	चमर	ददुदुरक	मेहकुमार	विज्जुकुमार	सुयदेव्या
ईसाण	चमरासुर	दियवर	मेहणाथ	वेयड्डगिरिकुमार	सुवण्णकुमार
उवहिकुमार	चंद	दिसाकुमार	मेहमालि	वेसमण	हरिणाण
कवल	पुल्लहिमवंत-	वीवकुमार	रक्खस	सक्क	हरिणेगमेसि
किण्णर	गिरिकुमार	हुग्गा	रिट्ठ	सच्चा	हरिणेगमेसि
किंपुरिस	जक्ख	धरणराड्	रिट्ठासुर	सवंपभा	हरिणेगमेसि
केडव	जलग	धरणाहिव	ललियगय	संगमज	
केसि	जलगण्ह	धरणिद		संगमव	

२८ देवलोकाः

अच्युय	ईसाण	वंभलोअ	संताअ
अणुत्तरोववाद्य	गेवेज्ज	वंभलोय	सहस्सार
आणय	गेवेज्जय	महासुक्क	सुक्क
आरण	पाणय	मार्हिद	सोहम्म

२९ देश-प्रदेशाः

अडंवल्ल	इक्खाम्भू	कासिगविसय	गंगाणिवसुद्ध	दंडाज्ज(व्य)पधक	सिंधुणिकसुद्ध
अवंति	इक्खाम्भूमि	कासी	गंधार	बहली	सुदंसण
अंध	उत्तरसिंधुणिकसुद्ध	कुसुद्ध	जोगविसय	भोगभूमि	सुवण्णभूमि
आणट्ट	उत्तरावह	कोसल	दण्डभूमि	मगहा	सूरसेण
	कालिग	कोसंबी	इसण्ण	मज्जादेस	
	कासभूमि				

३० नगर-नगरी-ग्राम-सन्निवेशाः

अउज्झा	कुसुमपुर	चेइय	पोयण	रहणेउरचक्कवालपुर	वीयसीया
अओज्झ	कुंडमगाम	जंभिय	पोयणपुर	रायगिह	संखउर
अवलग्गाम	कुंडपुर	णंदिग्गाम	बहुल	रयणणाहिपुर	साएअ
अणहिलपाटक	कोट्टम	तक्कसिला	बारई	रयणपुर	सालिग्गाम
अवराजिवा	कोल्लग	तामिली	बारवती	रयणसंचयपुरी	सावत्थी
आणंदपुर	कासंबी	तिल्लवा	महिलपुर	रिद्धावती	सिणवल्लिय
आसमइ	मिक्किपइट्टिय	तीर(खलिय)णयर	भरुयच्छ	लंका	सिरिहह
ए(व)यग्गाम	खिप्पइट्टिय	दक्खिणमहुरा	मग्गहापुर	लोहग्गल	सिवमेदिर
कच्छ	खेमपुरी	दसण्णउर	मज्झिम	वद्धमाण	सिंघपुरी
कणवस्सल	गयउर	भवलक्कक	महिला	वप्पिण	सीहपुर
कम्मारगाम	गयपुर	पालउइप्राम	मिहिला	वसंतउर	सुभगा
कंचणपुर	गंधसमिद्ध	पावा	महुरा	वसंतपुर	सुहंकरा
कंपिल्ल	चमरचंचा	पुरिमताल	महुराउरी	वाणारसी	सेवविया
कंपिल्लपुर	चंदउर	पुंडरिमिणि	मंदिर	वाराणसी	सोरियपुर
कायंबी	चंदउरी	पोइणीखेड	माहणकुंड	विणीयणयरी	स्तम्भतीर्थ
कुनाला	चंपा	पोमिणीखेड	मूलाग	विणीया	हत्थिणाउर

३१ नटः

हरगणः

३२ नदी-द्रह-समुद्राः

३३ नरकाः

उम्मुग्गा	मयंगतीर	सरस्सई	अप्पट्टाण	महातमप्पहा
गंगा	मयंगतीरा	सरस्सती	तमप्पहा	महातमा
जडणा	मंदाइणी	सीओया	धूमप्पभा	रयणप्पभा
जण्हुवी	लवणसमुद्ध	सुरसरिया	धूमा	रयणप्पहा
दक्षणा	वरंगा	सुवण्णवालिया	पेक्कप्पभा	वाल्लयप्पहा
भागोरही	वेत्तमती	सुहुमवालिया	पेक्कप्पहा	सक्करप्पभा

३४ नाटकम्

३५ नाट्यप्रकारः

३६ निधयः

३७ पक्षिनाम

विशुधानन्द

महुयुरिगीय

काल

महाकाल

जडाउ

गिसप्प

महापउम

पंडुअ

माणव

पिमल

सम्बरवण

संख

३८ परिव्राजक-परिव्राजिका-पासण्डा-ऽऽजीवकर्षि-तापस-तापसपुत्र-तापसफल्यः

अग्निज	गोसाल	जमयगि	मिरिद	वच्छा
जमयगि	गोसालय	वीषायण	मिरिची	वसुभाग
अच्छेदभ	गोसाल	परसुराम	मिरीह	विसाल
कड	चंडकोष्ठिभ	पारासर	मिरीची	विसाहिल
कमड	जम	भद्रवायरिय	रेणुया	सहवायरिय
कविल				

३९ पर्वताः

अट्टावय	कणयगिरि	गिसह	मेरु	सम्मेय	सेयकूड
अंबरतिलय	कालिञ्जर	तुंगिय	वक्कार	सम्मेयगिरि	सोमणस
उज्जयंत	शोर	दसण्य	बलाहय	सम्मेयसेल	हिमवत
उज्जैत	गंधमायण	मंदर	विज्जुण्णम	सिरिपण्वय	
उसभकूड	शुल्लहिमवत	माणुसोत्तर	वेयड्ड	मुसेल	
उसहकूड	जलणगिरि	मालवत	सनुजय	मुदावह	

४० पल्ली

कालजिम्भा

४१ पुरोहितास्तपरिवारश्च

अणुधरी
कमड

मरुभूट
मरुभूति

वसुधा
वसुधरा

विस्सभूति
सब

४२ प्रातवासुदेवाः

आसग्गीव	तारय	महु
जरासंध	दमियारि	मेरक
जरासंधि	गिसुंम	रावण
जरासिधु	फल्हाज	रामण
जरासंध	बलि	दससिर

४३ प्रवजितलिङ्गे

भागवय
सेयवर

४४ बलदेव(कृष्णभाता)नामानि

बल	हलहर
राम	हलाउह
रोहिण्य	हलि
सीराउह	हलीस

४५ बलदेवाः

अपराजिय	आणंद	बल	राम	विजय	सुप्पम
अयल	पादमिन्न	बलाव	रामभट्ट	सुदंशण	सुणह
		भट्ट			

४६ ब्राह्मणास्तपरिवारश्च

अग्निजोअ	कविल	दामोयर	बंभुमई	संविहायण
अग्निभूट	कविलम	देवसम्म	बंभुमती	सिद्धभट्ट
उसहदत्त	कोसिय	"	नानजी	मुलकलणा
कड	जणयरा	देवाणंदा	भारहाज	सोमा
	थावर	धरणिजट्ट	मुद्धभट्ट	

४७ मल्लौ

चाणूर
मुट्टिय

४८ मातङ्गस्तत्परिवारश्च ४९ मेरुशिलानामानि ५० यक्षाः ५१ राक्षसर्वशीयनर-नार्यः ५२ राजगृहपाटकः ५३ राजसभा

अणहिया	अहपेडुकंवल	किरिमाल	कुंभयण	गामर्लदा	सालवाहणऽध्यापि
चित्त	अहरतकंवल	वेसमण	खरदूतण		
भूयदिण	पेडुकंवल	सुट्ठिय	बिहीसण		
संगूअ	रत्तकंवल		मेहणिमाय		
			सुपण्णहा		

५४ राज-युवराजाः तेषां परिवारश्च

अदवल	कणगमई	चित्रलेखा	दसण्ण	पुरिससीह	मंगला
अकयबोह	कणगमती	चुलणा	दसण्णभइ	"	मियावई
अखोह	कणयमती	चेळणा	दसरह	पुइइपाल	मियावई
अगिसिह	कत्तविरिय	जण्ह	दहिवाहण	पुहई	मियावती
अजायसत्तु	कमलसिरी	जण्हकुमार	वीह	पुंडरीअ	मिरिइ
अज्जुण	कयवम्म	जया	हुज्जोहण	पूरण	मिरियी
"	करेणुदत्त	जराकुमार	दुल्लहराय	बडलमती	मिरीइ
अणगवई	कविल	जरातणय	पेवई	बन्धुमती	मिरीपी
अणंसमुंदरी	कंस	जरासुय	देवती	बल	मिरीपी
"	कंसासुर	जलणवीरिय	देवी	बलभइ	मेह
अणाहिट्ठिय	कालिंदी	जंबवई	धवरट्ठ	बलि	मेहकुमार
अभवकुमार	कुमारपाल	जंबवती	धर	बंडुमई	मेहरह
अभिणदिया	कुलिंसबाहु	जाला	धरण	बंभ	रयणमाला
अभिचंद	कुंती	जियसत्तु	धारिणी	"	राजशेखर
अमियवाहण	कौंती	"	"	बंभी	राजीमती
अयल	कुंभ	जीवजसा	"	बाहु	रामा
अरविंद	केकई	जुहिट्ठल	पउम	बाहुबली	रायमई
अजुंनदेव	कोसला	णउल	पउमावती	भरह	रायमती
अवराहय	खंडभइ	णमि	"	भागोरह	रियुपडिसत्तु
असोयचंद	खेमंकर	णरसेण	पज्जुण	माणु	रुप्पा
असोयभइ	गयसुकुमाल	णंदा	पज्जोय	भीमसेण	रेणुवा
अंबुवीरिय	गमदत्त	णंदिणी	पयावइ	भोय	रोहिणी
आइच्चजस	गमेय	णंदिवद्ध	पयावति	मणिरह	लक्खणा
आससेण	गंवारराइ	णंदिसेण	पसण्णचंद	मणोरमा	लक्ष्मीधर
ईसाणचंद	गंधारी	तारा	पसेणइ	मही	लच्छिमती
"	शुणचंद	तिसलादेवी	"	महाकच्छ	लच्छी
"	धणरह	तेववीरिय	पहरय	महाजस	लोलावती
"	बन्नाउह	तेळोककुमुंदरी	पहावती	महापीड	वइरजंघ
"	बन्दापीड	थिमिअ	"	महाबल	वइरदत्त
उगमसेण	चंदउत्त	थिमियसागर	पंड	"	वइरसेण
उदयण	चंदकता	वइच्चय	पिहुसेण	महावीरिय	वज्जणाह
कच्छ	चंदणा	वइरह	पीड	महासीह(सिह)	वज्जवाहिव
कडय	चंदणभा	"	पुण्णचूल	महासेण	वज्जवीरिय
कडयावई	चंदसीह	वडवम्म	पुण्णवई	महिहर	वन्नाउह
			पुण्णवती	महिंदसीह	वण्णा

वम्मा	विणयवई	सयधणु	सिरिकत्त	सुग्गीव	सुसुह
वम्माएवी	विणु	सयबल	"	"	सुरिंददत्त
वसु	विदुर	सयाणिय	सिरिगुत्त	सुजसा	सुवण्णजंघ
वसुदेव	विसाहणंदि	सव्वजसा	सिरिमत्ते	सुणंदा	सुव्वया
वसुमई	विसाहभूह	सहदेव	सिरिविजय	"	सुसीमा
वसुमती	विस्सणंदि	सहदेवी	सिरिसेण	सुतारा	सुंदरी
"	विस्सभूह	सहस्सक्ख	"	सुदंण	सूर
"	विस्सभूति	सहस्सबाहु	सिरी	सुदंणणा	"
वसुंधरी	वीर	सहस्संसु	"	"	"
विठलवाहण	वीससेण	सहस्साउह	सिव	सुपदट्ट	सेज्जंघ
विचित्तवीरिअ	सच्चवीरिय	संतणु	"	सुपदट्टिय	सेणा
विजय	सत्तवा	संघ	सिवा	सुवा	सेणिय
विजयवती	सच्चमामा	सवर	सिवादेवी	सुमदा	सोम
विजयसेण	सत्तुगघ	सामा	सिद्धिणंदिया	सुमंगला	सोमणभ
विजया	समरकेसरी	सायर	सीहरह	सुमित्त	सोरिव
विजियारि	समरसीह	सिद्धरथ	सीहराय	"	हिमवंत
विणमि	समुहविजय	सिद्धत्था	सीहसेण	सुमिप्ता	

५५ लिप्यः

भायरिसी	खसाणिया	गंभीणयरा
उड्डी	गंधव्वी	सोमिली
खडवियडा	जक्की	परकम्मी
खरोट्टी	जवणी	पोक्खरी
		बच्चरी

५६ लेखकौ

भाणंद
वन्नाम

५७ वणिक्-श्रेष्ठि-गृहपतयस्तेषां परिवारश्च

असोयदत्त	जय	णिण्णामिया	पुरंदरदत्त	रयणवई	सागरचंद
असोयदत्त	जिणधम्म	धण	पुरिसदत्त	रयणवती	सायरचंद
ईंददत्त	जिणयास	धणपवर	सुद्धदास	रयणसंचया	सागरदत्त
ईसरदत्त	णंदण	धणय	सुद्धिल	लीलादेवी	"
उसहदत्त	णंदा	पियदंसणा	महेसर	विणयवई	सिद्धयत्त
केसव	णंदिसेण	"	"	विणयवती	सीलवई
गुणपुजय	णाइल	पुण्णभइ	माणिभइ	वीरभइ	सुलभसणा
गुणायर	णागसिरी	"	मूला	वीरमई	सुलसा
चंदणदास				संस	

५८ वनचरः

कुरंगव	अट्टियकाण	वीरवण
	कायंबयवण	णंदण
	कायंबयारण	णंदणवण
	कोसंबवण	दडयारण

५९ वनोद्यानोपवना-उटल्यः

पडम	महसेण	विहावई
पुप्फकरंडय	मंदाहणीकच्छ	सहसंब
पेडाल	रडकुलहर	सिद्धरथ
मणोरम	रेवय	सोमणस

६० वन्या नारी

मुमिता

इक्खाग

इक्खुवंध

कायव

कुरु

कुरुकुल

कटरवकुल

कोटिण

कोसिय

गोयम

चिलिस

बोइ

मेवुयकुल

पडोवाल

राप्पूकुट

वासिठु

संख

हरिकुल

हरिवंस

हारिव

६२ वानरवंशीयाः

मालि

सुग्गीव

इणुयंत

६३ वासुदेवाः

अणंतविरिय

कण्ह

तिविट्ठ

दत्त

डुविट्ठ

पुरिससीह

पुरिसोत्तिम

पुंडरीअ

लक्खण

सयंभू

पण्णत्ती

मायंगी

रक्खसो

वाणरविज्जा

वेयालिणी

६४ विद्याः

६५ विद्याधर-विद्याधरराजानत्तेषां परिवारश्च

अग्गिसिह

अणंगमई

अणंगमती

अमियत्तेय

असणिघोस

असणिघेरा

कण्यतिलया

किरणवेग

खंडा

गंधव्वरइ

चंदवेग

चित्तगइ

जलणसिह

णट्टुम्मत्तय

णमि

भाणुवेग

मयणमंजुया

रइववइ

रयणपहा

वज्जवेग

विज्जुगति

विज्जुदाड

विज्जुसिहा

विणमि

विसाहा

वेगवती

सूर

६६ विमानानि

अवराइय

अवरातिव

कंतप्पह

जलकंत

जंजुदुहमावत्त

णलिणीगुम्म

ददुडुरंक

पउमगुम्म

पुप्फुत्तर

महप्पह

विजय

वेजयंत

सव्वट्टसिद्ध

सिरिप्पह

सुत्तप्पह

सोहम्मवडेंडय

६७ वृक्षनाम

सिद्धवड

६८ वैद्यो

जीवाणं

रस

६९ श्रमण-श्रमण्यः

अइमुत्त

अमिणंदण

उप्पल

उसइसेण

कट्टय

करिस्सण

किरणवेग

गुणचंद

शुणावर

चंदणा

चित्त

जगणंदण

जंजुणाम

जुगंधर

दमवर

धम्मघोस

..

पसण्णचंद

पीड

बंभी

बाहु

बाहुबली

महापीड

महामति

माणदेव

मियावइ

मियावती

मुण्णिचंद

..

मेहकुमार

वहरणांस

वहरणाह

विडलमति

विडला

विजय

विजयसेण

..

विणयणंदण

सयपम

सव्वाण(णु)भइ

संभूज

सिद्धावरिय

सुट्टिय

सुयसागर

सुरगुह

सुव्वथा

..

दरी

७० सर्पाः

७१ सानुद्रिक-सांवत्सरिकौ

७२ सारथी

७३ सारथवाहास्तत्परिवारश्च

७४ सेनापति-सामन्ताः

७५ शौकरिकः

समन्तपत्नी च

अट्टिय

चंडकोसिय

सुदाड

पूस

सिद्धादेश

कंस

अनयमती

धन

पुण्णभइ

वेसमण

सागरदत्त

सिरिमती

काल

पमावती

पहावती

वीर

वीरग

वीरय

सुसेण

कालसोवरिय

तृतीयं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’अन्गगतानां देश्य-प्राकृतशब्दानां सङ्ग्रहः

पञ्चांक	पञ्चांक	पञ्चांक
अकोलउत्त २०८	आवरिल्ल (दे०) २०८, २५६	उयाउ १७, १२४, ३२९
अकखणिय ११०	आवल्लय २७८ टि०	उडाल २६२, २६६
अन्नासणा=अन्नासणया ७४	आचीढ ९५	उडिहड ९६
अट्टयालिय (दे०) ३१९ टि०	आसपास (दे०) ३३२	उडोड ११०
अट्टुवालिय ३१९	आसंदिया ५८	उडोय २६५, २८८
अणवत्तणीय १८१	इदमाला २०० टि०	उडोळ ६४
अण्ण (दे०) ५६	इंदसाणि १४६	उवक्कम १८५
अद्याय २४८, ३००	ईसद्धिय ७	उवट्टिय १३
अद्धत २३०, २९६, ३२३	उडिडिठ ४० टि०	उवर ५५, १७०, १७१, १८०
अप्पलेव ३१	उक्कुदय (दे०) १२	उवह ६३, २८६, ३२०
अप्पसीडुय १५८	उक्कुड ३२१	उवहित्त २६७
अप्पुय २८८	उच्चंड १९८	उवहुत्त २४८
अप्परिय (दे०) ३१९	उच्छरिय ३२८	उवाह १०६, १०९, १२२
अप्पाल ३०६	उज्जलिल्ल २२१	उवासग १६१
अप्पुण्ण २६७	उड्ड २७४	उवाहु २७६, २७९
अम्मिड २४१	उड्डिअ (दे०) ३१९	उवल्लण=उवल्लण १९३
अयड २५८	उत्तावल १४२	उव्वल्लणिया ३१८
अरिसा १४४	उत्तुण+त+त्तण (दे०) ६२, ६९, ३०३, ११, ४९	उव्वल्लिया ३१८ टि०
अरुणिण १८४	उत्थल (दे०) २२६	उव्विडिअ (दे०) १०८, १६७, १७०, २६०, २८५, ३११
अल्लंबओ=आलंबओ १२	उत्थमण १३८	उव्वुण्ण (दे०) २६३
अलिहय २०४	उव्वुण्ण+य (दे०) १२, १२४	ऊसलिय २६० टि०
अवणत्त २९४	उपण्ण=उपण्ण १९३	एक्कल्ल-गल्ल (दे०) ९९, १४४, २०२
अवत्तय (दे०) २७८	उपण्णिम २५९	एक्कल्लपुडियाय १२, १३९
अवहोवास २५९	उपेक (दे०) २६०	एगट्टीया=एगट्टिडिया १४७
अवीय=अविडय ६८	उप्पावाविअ १४६	ओआल्ल (दे०) २००
अव्वाय २९२	उप्पिथ (दे०) ६३, ९६, ९८, १३२, २८५	ओच्छुत्त १९९
असाहार=असाहारण २४२	उप्पिय ११७	ओजल्लया (दे०) ३०६
अहोरण (दे०) १०१	उप्पील (दे०) ६३, ६४, १३४, १६५, २०८, ३१७, ३२८	ओडणय १०६
अंगुत्थल+य (दे०) १८२	उप्पेड ८८, १९३, २५४	ओमालिय १८१ टि०
अंतहि २६१	उप्पेसा ६०	ओयड्ड २६८
अंतैहि ५२	उव्वोल्लिअ ५७	ओयल्ल (दे०) २५१
आगी=आगिई १०५	उव्वडिय २५०	ओयल्लिय २६९
आमास=अम्मास १८३	उव्विड (दे०) २३७	ओरल्ली १७३, १८८, १९२, २०३, २४२, २४९, २६८, ३०१
आमेल्लिय २०२	उव्वच्च २३५	
आयल्लय (दे०) ११०		

पत्रांक

ओराति ,,	४२, १३९
ओरगगा ,,	२११
ओल्लिय ,,	२०३
ओवाल्लिय	१८१
ओसरिय ,,	१५४
ओसरी ,,	१५४
ओमुहेल्ल (दे०)	१८६
ओहरिय ,,	२५१
कट्टिआ	३०४
कडप्प (दे०)	२००
कडवडम	१८७
कडिल्ल (दे०)	८८, १३९, १२९ टि०, २०८, २८७
कडुवाल+अ (दे०)	८८, २११ टि०
कडुयाविय ,,	२३३
कणियार	१५३
कतरिप्पहार	१२०
कत्तोत्तिय	१७१
कप्फाड (दे०)	३११
कम्बड	१६९
करणि (दे०)	१७०
करवत्ता	२१९, २५०
करसणिय	२४२
करिण्वय	१२४
कंठम	६५
कालेज्ज (दे०)	१७०
किच्चा ,,	३०६, ३१४
किरिण	२५८
कुक्कुड (दे०)	१४६, २५०
कुडंगी ,,	९२
कुदिअ ,,	१८९
कुहणी ,,	७७
कुआखंभ	१५८
कुयखंभ	१५८
कुरवडम	१८७
कोइय	१७५
कोलउत्त	२०८ टि०
कोलि	१९८
कोल्लुय (दे०)	९९
कोहाड	२६२ टि०
कोंगी	१८५, १८६, २६६
कावफडा (दे०)	२१९
काडिफडा ,,	२१९ टि०

पत्रांक

खशेलय ,,	२१४
खणखणा	२१५
खन्वड	१६९ टि०
खल	२१९
खलीअ	२१६ टि०
खव	३१८
खिप्पइट्टिय=खिप्पइट्टिय	
खील	६०
खेहरी (दे०)	३०२, ३१८
खोबी ,,	२६२
खोर ,,	१८६, २६३
गइम्म ,,	२३३, ३३३
गलच्छण ,,	२९३
गलच्छल्लिय ,,	१५८
गंड	२११
गंडय ,,	२२१
गुंदल ,,	३६, ४०
गोरी	२१५
गोमुणअ	८३
गोमुणह	८३
घराधरी	२२८
घुणतअ	१४४
घुण्णेट्टअ	१४४ टि०
चक्कल (दे०)	१८६, २८१
चक्कलिय ,,	११०, १८९, २४२
चक्किय	२१९
चडफडट (दे०)	१४९
चडयर ,,	१४२
चङ्गा	११०
चाप्पिअ (दे०)	७० टि०
चमडिय ,,	२४१
चमेडा	३०५
चर (दे०)	२२८
चवक्कार	३४
चांचिल्लिय=चेल्लिय (दे०)	२४६, २६३
चांजिज्ज ,,	२९७
चांयिय (दे०)	७७
चिक्कल्ल ,,	२१४, २८६
चित्तल ,,	२०३ टि०
चिल्लिचिल	१७०
,,	२५४
चिल्लिअ	१६५
चीरिया	२००, ३०९

पत्रांक

चीरी	२२२
चुडुनी (दे०)	८
चोतीस	९७
चोतीस	९७ टि०
छउय (दे०)	१०८
छकण्णा ,,	१६२
छट्ठण्णकालिय	३२५ टि०
छट्ठण्णकालिय	३२५
छट्ठणय (दे०)	१७०
छवय	२६२
छछई (दे०)	२१९
छिक्क ,,	२२३, २३१
जण्णायलिया (दे०)	२२०
जलहा	२१३
जल्ल (दे०)	२०८
जहार्ह	३०
जह्दिट्ठिय	५२, ५३
झल्लज्जल्ल (दे०)	१३९
झल्लसत्ताव ,,	१२
झल्लज्जल्ल ,,	१२
झल्लिया	१२
झपिय (दे०)	१८०, २८२
झिल्लिया	२८२
झुल्लिकिय (दे०)	१९९, २२२ टि०
झुल्लिकिय ,,	१७१, १९९
डंठि ,,	३२१
डोड	१६६
,, (दे०)	२२१
णडिय ,,	२६८
णयर ,,	१५८
णउम	२९४
णामल्लय	२८०
णार्गल्लिद	२८० टि०
णारोड (दे०)	९२
णिवड्डुण ,,	१२६
णिज्जहय ,,	२१९
णिलुक्क ,,	५९, ६०, १६०
णिण्वर	२९७
णिब्बाणि (दे०)	६२
णिम्बिक्क ,,	३२९
णिब्बुट्टि	३०४
णिहाम (दे०)	२६७

पत्रांक	पत्रांक	पत्रांक	पत्रांक		
गिहृज (दे०)	२१२	पञ्जुत+य	२२६	गृहक	१७०
गिहृजग " "	२५५, २९२	पञ्जोहार	३०४, ३०७	भञ्ज-पदय	५३
गुण्य " "	२३६	पट्टाडा (दे०)	१४१	भल्लुया	२५४
गुणिय	१८४	पटलम " "	११	भविष्यायण	२३५
तत्त्वत=अरुचत	४८	पट्टच्छ " "	२३८, २९८, ३१०	भुम्भुय	२५४
तट्टिल्ल	२४२	पट्टहृत्थ " "	११, ५७, ९५, ३०१	भग्ग+य	२३३, २४०
तणकार	१३५	पट्टार " "	४	मडहिय (दे०)	२३४
तणीकार	१८५	पट्टीर " "	४	मडव " "	६३
तत्ती (दे०)	२२१	पत्तल " "	३१९	मण्य_मण्य	५९
तलवम	१८६, १८७	पत्थारी " "	९३, १७१, २३३	मतय	२०४
तल्लिच्छ (दे०)	१६८, २६४	पत्ति=पत्ति	११९ टि०	मत्ती	२१४
तल्लुवेल्ल " "	२३१	पम्हुड्ड (दे०)	१८१, २२७, २७२	मम्मसंत=अम्मसंत	२८२
ताचिता=तस्सिता	१३१ टि०	पयल्लिय	२४०	मरट्ट (दे०)	१५०
तियल्लिय (दे०)	१९६	पयमय	२५८	मरमरा+सद्	२२७
तीरा	१२४, १२५	परयाण (दे०)	१५९	मरोग=भरोग	८९ टि०
तुही (दे०)	२५२	परहुय " "	८८	मल्लत (दे०)	२६०
तोड	१४४	परायणा=परायणया	७४	मसक्क	१८३
थक्क (दे०)	१४१, २३३	परिहच्छ (दे०)	१८८, १९२, २७८, २९५	महत्तण	१३५
थड " "	१९६, २१३, ३०८	परिहण+य " "	११२, १८०	महवालदिवस	११३
थिल्ल (दे०)	२३	परिहल्लिय	१३७	महल्ल+य (दे०)	६४, १६१, १९३
थुद्धक्कम " "	१९६	पल्लुत्थियाम्भ	१०१	महाल=महावाल	११३ टि०
थोर " "	२२३	पसय (दे०)	७३, २२७	मंगुल (दे०)	२७७
थोरिय	१६	पसारय	५८	मंभीसंत	१३६
दर (दे०)	३१३	पेकिल्ल	२१०	माणल्लय	१८६
दंतवल्ली	१०८	पेभल्ल (दे०)	७७	मावित्त	१९७ टि०
दंडणी=दंडणीइ	३७ टि०	पाट्टय " "	१९०, ३१८	मासल	१३९, २५१, २५३, २८७
दिककरि=दिग्गज	२५७	पाण+वाडय"	२२८, २२९		३००, ३९६
दिककरिया (दे०)	१२१, १५७	पिगला	२५४	मासलिल्ल	२३५
दुज्जया=दुज्जयया	३१४	पुल्लि	२२७, २६६	मुच्छलिय	३१३ टि०
दुपरियल्ल (दे०)	१४४, १४५, १६७, १९४, १९६	पुण्वट्टी=पुण्वट्टिइ	३७	मुद्धव (दे०)	१२०
धणिय	१६६, १७५, १८०, १८१ २५१	पेज्जाल (दे०)	१९२, २२६	मेज्ज	१४३
धण्यट्टी	२६३	पेडाल " "	१८६, २०८	मोक्कल (दे०)	६०
घाडा (दे०)	२२६	पेहुण " "	२६६	रटि	३१२
पीठल्लिवा " "	२६१	पोक्क	२४१, २४२	रणरणय (दे०)	१८०, २२१, २३९
धूमल्लिय	१८९	पोड (दे०)	२११	रफ्फ	१४४
पइरिक्क (दे०)	१०२	पोत्तवाड	२३८	रसिवाल	३१७
पक्कल " "	८८	कुल्लधुय (दे०)	२५७, २८२	रंधणी	१४४
पक्कल	२७७	फोप्पस " "	१४३	राहिल्ल	९५, ९६, १०८, १८९, २३४, ३००
पच्चोणी (दे०)	१७५	खलाणय " "	१६०		३०५ टि०
पच्छयण " "	१६२	वैदिय+य	७	राहिव	१२६, १४४, २६८
पच्छाहरय	१०६	बाएत्तालीस	२५५	रिडोली (दे०)	२३०
		बुक्कार (दे०)	६०, ६१, ८०	रटंत	

पत्रांक	पत्रांक	पत्रांक			
रेल्लिअ (दे०)	१८५	विवज्ज-वि+दग्ध	२२१	संमेव	२८६, २८८, २९४
रोर "	२७३	" "विदग्ध	२४६	संसाइय (दे०)	१८२
रोल+अ "	१७३ टि०, १८७	विरल्ल	१९१	सावय "	१९३
ल्लगढा "	१६	विलइयम्भ	२५०	साहुलो "	२७६
लल्लकक "	६०, ८०, २२२, २४१, २४२	विवल्लग्रथ	१८८	सिडिग "	१८६, २६३
लल्लि "	३०२	विबल्लत्थिय	१८८	सिलिब "	७३, १५६
लेसुरवय	२४३ टि०	विसट्ट (दे०)	९३, १८४, १९१, १९२, १९४, १९८, २०३, २०६	सिन्धिय	३३३
लेसुसडय	२४३	विसट्टंत "	१९३	सिहिय (दे०)	१८६, २३०, २३४
लेहारिय	१००	विहरण	३१३	सुडिय "	२६३
लेहाल (दे०)	२०६	विहाइल्ल	२५१, २७२	सुण्वेज्ज	२२३
लोयट्टी-लोयट्टिइ	७३, २७२	विहाय		सुलंकिअ-मुलं(१ सुलं)	१७१
लोहिल्ल	१८६	विहाविल्ल	२३०	सुहल्ली (दे०)	१८०
खडइल्ल (दे०)	२०८	विजिज्जमाण	१४३	सुहेल्लिया "	३०२
वइल "	२१४	विट्ट (दे०)	१९६	सूआर-सूआयार	१०६
वरहुया "	८८	वीली "	२२७, २७८	सेट्टिणी	२८९
वरालय	२०८	वुण्ण "	६५, ६६, १३८, २००, २६३, ३०९	सेयाल-सेवाल	२५९
वरिल्ल (दे०)	२१५	वृग	२२२	सोण्पास	२८१
वल्हिया "	१०७	वेल्लहल	३६, ४२, २४७, २८७	हक्खुरा	२६०
वल्लहो-वल्लहया	२२० टि०, ३२०, ३३६ टि०	वेल्लावेल्ली	१९०	हच्छ	२२२, २२३, २२६
वल्लहिय	१८३	वैसाह-वइसाह	५१, ९२, ११५ टि०, १३३ टि०, १५२ टि०	हडि	३३४
वल्लाएल्ल (दे०)	१९६	वोसविय	२५१	हत्थिहड्डा	१८८
ववत्थम "	६५	स्वक्करिल्ल	२२९	हरियंदपुर-पुरी	३०, २३०
वहु	२६२	सच्छह (दे०)	२६७, २९०	हलबोल (दे०)	६३, १५८, १९४, २१३
वहुव	३२४, ३२५, ३२७, ३२८	समय	१२२	हलबोलिय "	१६०
वहोलिया (दे०)	२१४	समसीस (दे०)	२८४	हलभूह	८०
वार	२३२	समसीधिय "	९९	हलहलारव-राव	२१२, २३८
वारेज्ज (दे०)	२७२	समसीसी "	३०७	हल्लफल (दे०)	५९
वाहलिया "	८८	समी-सामिइ	७१, २०६ टि०	हल्लफल "	७७
विओल+य "	१८६, १९९, २११, २८९	समुव्वग्ग (दे०)	३३०	हल्लिर "	१९०, ३२८
विच्चल "	१८२	सरीरट्टी-सरीरट्टिइ	२०५ टि०	हल्लीस "	२३४
विच्छट्ट "	१६०, २०९, २२१, २९१	सहस्सट्टी-सहस्सट्टिइ	१४८ टि०	हल्लोहलज्ज "	२३८
विडिधिय "	२५१	संक्किल्ल (दे०)	२३२	हल्लोहल्ल "	१४१
विट्ठरिल्ल "	२७१	संथाण	१४२	हारिल्ल	१०८, १८९
विट्ठिरिल्ल "	२९१			हित्थ	५९, २८२
				हियवय	२३१
				हुयासय	२५८



चतुर्थ परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’अन्तर्गतः अपभ्रंशसङ्ग्रहः

सयणु परियणु [सयणु परियणु] बंधुवागं पि,

मिचयणु सुहि सज्जणु वि घरि कलत्तु आणावडिच्छउं । अत्थुम्ह किल धरइ जाव ताव पुण्होहि सम्मगल ॥

(अर्थप्राधान्ये पत्र-३ गा० ३९)

पिय अणुकुली घरि सरइ, अणु भुवणि जसयडहउ वज्जइ । एत्थ सम्पइ मोक्ख सुहुं, मोक्खे सोक्ख कि कवलेहि खज्जइ ? ॥

(कामप्राधान्ये पत्र-३ गा० ४४)

संसारे असारए माणुसहो केण वि तेण सहं षडइ । जम्मइ अणिच्छए दइवहो केण वि उप्परि सुहरासिहे चडइ ॥

(कालनिवेदकगीतम् पत्र-१३ गा० ४७)

भुवण भूसिउ [भुवण भूसिउ] कउ सुहालोओ,

पह पयडिय दलियु तमो उइउ मित्तो दोसंतकारओ । पडिडुज्जेवि ठाहि तुहुं गुणणिहाण ! गियक्खसज्जओ ॥

(सूर्योदये कालनिवेदकगीतम् पत्र-१३ गा० ४८)

पयडरुवहो [पयडरुवहो] सिद्धमंतस्स,

को अग्गए ठाइ तहो सयल लोउ णिदणह लम्गहो, पुच्छंतह अप्पणउं जाइआइं बहुजणियक्खहो ।

जसु जोईसरु अप्पणिहिं, मज्जइ किं पि करेवि, ते फुडवियडुक्कित्तणउं, इयर किं जागइ कोइ ? ॥

(प्रहेलिका पत्र-१२० गा० १०)

वैसाहियउं जइ सिय केणइ अलद्धमज्ज, सुवइचरिउ जइ सिय अइकुडिलमग्ग, सालवाहणत्थाणि जइ सिय कइसयसंकुल, महासरु जइ सिय पौडरीयसमाउल, वरणयरु जइ सिय बीहसालालंकिय, बाहुपल्लिमुत्ति जइ सिय महासत्ताहिट्ठिय, अहिंस जइ सिय बहुमय, जिणपवणु जइ सिय बहुसावचाहिट्ठिय, जिणवाणि जइ सिय सव्वसत्तापुण्य, कालिदीवलप्पवाहु जइ सिय हरिवलमलियणागंय ।

(अटवीवर्णना पत्र-१३८-३९)

अलिउलचलपम्हउडविशसियसुमणदलो, उम्मडमहुमाओ वि वियंमइ भूसियभुवणयलो ।

उन्निमण्णयूयणवपज्जवकिसलयसइलए, ‘को पिउ वज्जेवि कचइ ?’ कूविउ कोइलए ॥

जइ दइयविओए विवज्जइ ता कहे दुज्जरिउ, इय चित्तवतो कलयंठिओ ‘तुह तुह’ उप्परिओ ।

इय एव वियंमियमणहरबहुविहचचरिओ, णिसुणंदु जणहणो लीलए वियरइ सचरिओ ॥

(चर्चरीगीतम् पत्र १९१ गा० १४३, १४४)



पञ्चमं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’ अन्तर्गतो वर्णकसंग्रहः

पत्राङ्क	पत्राङ्क	पत्राङ्क
अटयोवर्णना १११, १३८, १३९, २०३, २२२, २५३	पार्श्वजिनजन्मवर्णना-यौ- वनवर्णना २६०	वसन्तचवरी-मज्जनवर्णना १९१
अप्सरसा कामप्रार्थनावर्णना २८७	पार्श्वजिनजन्माभिषेकवर्णना २५९-६०	वसन्तवर्णना ६, ७, ८८, १९०-९१, २३८, २६२, २६३, २८६
अप्सरसोवर्णना २८७	प्रभासतीवर्णना २६१	वाणारसीवर्णना २५७
अरुणवर्णना ३११	प्रासादवर्णना ६	विजयिनुपनगरप्रवेशवर्णना २४२
अष्टापदवर्णना ३२३	प्रियमिलनोत्सुकनारीवर्णना २३९	विरहिणीवर्णना १०८-९
इभ्यवर्णना ६	मुनिवर्णना २५३	विलासिजनसङ्घाकार्यवर्णना २११
गच्छवासिसाधुगणवर्णना १३, १४	मेरुवर्णना २५९	विविधक्रीडावर्णना २४०
प्रीत्यवर्णना ११, १२, ९३	युद्धवर्णना १८८, २४१	शरद्वर्णना १५-१६
चतुर्दशस्वप्नवर्णना २५७-५८	युद्धसज्जयोधवर्णना १८५-८६	आवक-साधुसङ्घाकार्यवर्णना २१०-११
चन्द्रोदयवर्णना २६४	युवतीनां प्रदोषव्यापारवर्णना २६५	षड्भक्तवर्णना १३९
जलकान्तविमानवर्णना ३२९	राजकुमारवर्णना २३१	समवसरणवर्णना ८३, २९९-३००, ३०३-४
जिनस्नात्रवर्णना २३४-३५	राजकुमारीदेहवर्णना १०८	सरोवरवर्णना २२६-२७, २४८
द्वानलवर्णना ३०९	राजमन्त्रोपायवर्णना ३२८	सुधेष्टिवर्णना ११
दैवीवर्षावर्णना २६६-६७	राक्षसवर्णना ९५	सुर्यास्तवर्णना २६४
निशाचरवर्णना २८५	राक्षीवर्णना २४६	सूर्योदयवर्णना २६५, २८७-८८
नृपतिवर्णना ६, ३२८	रूपमुष्णनारीसमूहवर्णना २०८	हस्तिवर्णना २४६
पल्लवीवर्णना ५८	वर्धमानजिननिर्वाणोत्सववर्णना ३३३	
	वर्षावर्णना १२, १५०, २०३	

षष्ठं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’ अन्तर्गताः स्तुति-वन्दनाः

पत्राङ्क	पत्राङ्क	पत्राङ्क
अरिष्टनेमिजिनस्तुतिः १९४ १७४-७७	अरिष्टनेमिजिनस्तुतिः ४२ १२७-३३	वर्धमानजिनवन्दना १ ११-२०
” ” २०७ २७९-९३	” ” ४६ १७७-८०	” स्तुतिः २८३ १२९-३६
प्रथमजिनवन्दना १ १-१०	” ” ३२३ ६५२-५५	” ” ३१७ ५८५-८६
” स्तुतिः ३५ १०६-८	जिनस्तुतिः २३५ १८१-८२	” ” ३३० ७३६-३९
” ” ३५-३६ ११०-१७	पार्श्वजिनस्तुतिः २६८ ३०५-१२	” ” ३३३ ७८६-८८
” ” ३६ ११९-२०	” २६९ ३२८-३९	धृतदेवता (सरस्वती)- वन्दना १-२ २२-२९

सप्तमं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’अन्तर्गतानां सुभाषितगाथानां सङ्ग्रहः

पत्राङ्क गाथाङ्क

अद्दुक्करत्तवकरणे वि नेय तं तारिसं फले तस्स । भावविमुद्धोए विणा जो हु तवो सो सुहामारो ॥	भावशुद्धिरहिततपोनैष्कल्ये	२८०	१३
अद्दुल्लं मणुयत्तं विसमा कम्माण परिणइ दुरता । लहिकण विवेयमओ तं कीरउ जं असामण्यं ॥	सुकृतकरणे	२८	८०
अक्कोसतालणुज्जयजणम्मि गियजीयसंसए वि दढं । धम्मभंसणभीरु खमेति तेणेह महुरिसिणो ॥	क्षमायाम्	३३२	७६३
अचन्तणेहणिकरपरव्वसासंधजणियपसरस्स । इट्टवियोगा जायंति देव्ववसओ ण कस्सेह ॥	वियोगे	२३६	२०१
अट्टञ्जाणोवगया परवुक्खुप्पाणम्मि य पसत्ता । बहुमोह-ऽण्णाणपरा जीवा तिरियत्तणमुवेति ॥	कर्मविपाके	८०	५५
अणमिप्पेयम्मि वि संघदंति, विहदंति सम्मए वि जणे । चलविज्जुविलसिवाइ व नेय पेम्माइ वि चिराइ ॥	स्नेहानित्यत्वे	२१७	५१
अणवरयजणणिभोयणवियारसंघट्टियस्स देहस्स । भेज्जस्स सुइत्तणकारणेण तम्ममति बालजणा ॥	देहासारतायाम्	१४३	५१
अणवरयजहिच्छियसंपदंतभोगेहि लालिओ जीवो । सम्मम्मि, ण उण तित्ती जलणस्स व हव्वणिवहेण ॥	विषयविरागे	१२६	३३
अणवरयणदाणेण संजुओ होइ बहुसुओ लोए । सुक्खो उण विवरीओ अप्पहियं पि हु ण याणेइ ॥	कर्मविपाके	८१	७२
अणवेक्खिऊण कज्जं जसं च जीयं च जे पयइति । कज्जारंभेसु सया ताण सिरी देइ सण्णेज्जं ॥	उद्यमे	९६	१२
अणहे चिय सामत्थम्मि जंतुणो जुज्जए समुज्जमिउं । वियलम्मि इंदियत्थे काउं ण य तीरए किं पि ॥	धर्मकरणे	२५२	८२
अणुकुले पडिक्कूले परम्मूहे सम्मूहं चलसहावं । पेम्मं महिलाहियं ण याणिमो ‘कहं शु संठविमो !’ ॥	नारीनिन्दायाम्	१११	४९
अणुकूलो जइ कस्स वि हवेज्ज सहि । सुकयपरिणइवसेण । तो ववहरइ जहिच्छं पिउ व्व देव्वो ण संदेहो ॥	दैवे	११०	३७
अणुवत्ताह मिच्चं पयइसज्जणे हुज्जणे य तह चेव । गियपयइमणुसरंताण ताण किं कीरइ विसेसो ? ॥	दुर्जन-सुजनविवेके	२	३०
अण्णाणी कोहट्ठा कट्टमहोगमगमिच्छणो(र)गो होइ । इय कारुणं वच्चांति कोहगहियम्मि महुरिसिणो ॥	क्षमायाम्	३३२	७६४
अण्णोणकज्जवद्वरकज्जभराव्वणचपिं हियं । ऊससइ णवर मणुवाण तणवमुहयंदसचवणे ॥	पुत्रे	७६	४
अण्णोणकज्जवद्वरदुसहसंतावतावियं हियं । णिव्वाइ णवर ददवासर(र)समवल्लोयणजळेण ॥	नारीप्रशंसायाम्	२८	८३
अण्णो तुमं सरीराओ पीडओ अक्खओ अमुत्तो य । रोगहरं पुण देहो, रे त्रिय ! मा विज्जसु तयत्थं ॥	देहासारतायाम्	१४४	५९
अत्थं ववति, सेवति खलकं, जीवियं पि तोलेति । माणम्मंसं पि कुणंति माणिणो जुवदसंणेण ॥	नारीनिन्दायाम्	६०	३९
अप्पकसाया दाणेक्कसंगया खंति-मव्वसमेया । पयतीए भव्वा जे य होति ते जंति मणुयत्तं ॥	कर्मविपाके	८०	५६
अप्पवहाए गिययं होइ बलं उल्लुणाण भुवणम्मि । गियपक्खवळेण चिय पडइ पयंगो पवीवम्मि ॥	अविनये	६३	६९
अप्पाणं पि ण तारइ गरुडप्पा ताव चिट्ठइ इहऽण्णो । ईसि पि वल्लमो लोहपिण्डए बुइइ निरुत्तं ॥	कुशुरी	३१२	५३५
अप्पाणमप्पण चिय लहुया सलहंति जं तयं जुत्तं । इहरा गुणाणुवेक्खो को अण्णो ते पसंसेउ ? ॥	आत्मश्लाघानिरासे	४७	१२०
अचमुद्धरणसमत्था जयम्मि जायंति ते महासत्ता । जेहिं परिगलियपावाइ तक्कणं होति भुवणाइ ॥	महापुरुषे	१३३	१
अमयमयसिसिरिकरणं चंदं णिव्ववियसयलजियल्लोयं । ण सहंति हृत्तिदसणा कमला पि य गियवदोसेण ॥	गुणाग्रहणे	४५	१५३
अमुणियकिक्खा-ऽकिक्खाइरित्तंवरणचित्तचरियाओ । संचारिमकिक्खाउ व्व मूढचित्तान पक्कखं ॥	गणिकायाम्	३१४	५५४
अल्लियऽव्वमक्खानरओ गियडिमहावज्जवचणाकुसलो । साहसपावणिसेवी महिलाभावत्तणमुवेइ ॥	कर्मविपाके	८०	५९
अवणेइ कलसभावं सुंदरि । ससिरोहस्स हिययस्स । कारेइ मइ धम्मे जराए सरिसो सुही णत्थि ॥	जरायाम्	३०	६४
‘अवयारी किर वैरि’ ति होइ एक्कम्मि चेय सो जम्मे । कोहो उण होइ दढं दोसु वि जम्मेसु अवयारी ॥	कोपपरिहारे	३३२	७६६
अवरंणसमागमपयवियराओ दिणक्खाए सरो । कमसोसरंतकरसंगसामदेहं दिवं मुयइ ॥	तेजःशये	४६	१६४
अवहरइ टिडं, परिहरइ पोरसं, चयइ कुलवत्थं । सोयमहागहमहिओ पुरिसो किं किं ण आयरइ ? ॥	शोके	६९	१७२
असको खेतिसमेओ सुसहावो अप्पमोहगुणवत्तओ । जीवो जायइ पुरिसो विरुत्ते संसारकंतारे ॥	कर्मविपाके	८०	५८
असुइणिहाणे देहे सव्वासुइसंगमेकणिव्वडिए । चित्तिजंतं पि दढं सुइत्तणं तस्स कहं होउ ? ॥	देहासारतायाम्	१४३	५२
असुइम्मि गलियवहुल्लियम्मि मूत्तुत्तकज्जियगुणम्मि । देहीण हयसरिम्मि को गुणो सइ कव्वणम्मि ? ॥	देहासारतायाम्	१७०	७
असुइविणिग्गमणिद्धमणविवरदेसम्मि गुरुणियवम्मि । कंदप्पकेलिरइहरारिच्छलुद्धो अहन्वाण ॥	नारीदेहनिन्दायाम्	१७०	१६

अमुये पि सुये भासइ, तह य विरुदाइ कहइ लोयस्स । पिसुणो परतत्तिओ सो बहिरो होइ मूओ य ॥
 अह एको चिय दोसो गुणसयकलियस्स होइ रोरस्स । जे पसहं चिय दिट्ठं 'अरि' ति जणो परिकळेइ ॥
 अहवा 'दोसाहि'तो राओ चिय गुरुयो' ति पबिहाइ । जेण पउतो गुरुणो वि होइ पडिबंघहेट ति ॥
 अहिजाइ सयलकलाकलावकलिये हिओवएसयरे । संपहइ मंदभायाण णो सुभितं कलसं च ॥
 अहिलसइ जो ण वेत्तु परसिरे किम्वहुसंसेट्ठो । सो सुसिरीए वि सुब्ब 'अव्ववसाइ' ति कलिऊण ॥
 आइमि सवलरसवज्जेहि जुत्तं पयडिडयपमोयं । पाणहणं परिणाममि विसयसोक्खं विसउण्य व ॥
 आगतुमभूयसभूसियस्स णिचपरिसीलणीयस्स । चित्तिज्जेतं किं किं पि सोहणं हयसरीरस्स ? ॥
 आवडण्डियस्स वि सुवुरिसस्स उव्वहइ तह वि ववसाओ । विरहियववसायं पुण लच्छी वि ण महइ अहिलसिउं ॥
 आवज्जण-रक्खण-सय-दयातिउव्विग्गमाणसो अत्थी । अधणो सउपत्तण्णियुत्तीए दूरं समग्गोहिओ ॥
 आहिउतो जया पस्से ण किंचि सुहमपणो । जुज्झियव्वं तया होइ फुड्ढेसो उवकमो ॥
 इय अगणियणिययकुलकमाण पम्मकुलजियव्वयाण । खलमहिलणं ण हु णवर कुवुरिसाणं पि अह मग्गो ॥
 इय अहपुव्वमि जीए पुने विणासमि सव्वदेहोण । को णाम बालिसो जो उवेक्खए अप्पणो अप्प ? ॥
 इय अप्पडियारे हयविहिमि संसारवत्तिणो जीवा । वट्ठति तस्स आणाए, तत्थ को कीरउ उवाओ ? ॥
 इय एवं दालिइ णिदिज्जइ सुव्वियट्ठमणुएहि । अघंतमोयसंपययइदुदयदुदुचित्तेहि ॥
 इय कित्तिये च भण्णइ, जे केइ दुहस्स हेयवो भणिया । ते संभवंति नियये णराण रमणीय संगेण ॥
 इय कूट-कवड-माया-पवंच-विच्छेय-कामभरियाण । णामं पि जे ण गेण्हेति णवर महिल्लाण ते धण्णा ॥
 इय केचिरं व किपागफलसरिच्छमि सुच्छभोयसुहे । सत्तेण चिट्ठियव्वं असारसंसारवासमि ? ॥
 इय कोवेणं सयले जयमि जे जंतुणो समहिहूया । इह परलोए वि णराण ताण ण हु होति सोक्खाइ ॥
 इय जइ वि तस्स कज्जमि वइ वि दिज्जइ सिरं पयलेणं । तह वि कयाइ ण तीरइ पिसुणो सुयणेण वेत्तुण ॥
 इय जइ जइ चित्तिज्जइ देहस्य थिरत्तणं सुदत्तं च । तह तह विहइइ सव्वं पणुच्छित्तं व सरयव्वं ॥
 इय जुय-समिलादिट्ठतदुल्लहे पावियमि मणुयत्ते । जो ण कुणइ धम्मं सो सिवेइ णियभायणे छारं ॥
 इय जे णित्थियमहणो अवहत्थियसुहजसोहसोडोरा । विण्णावगुणविसेसा ताण सिरि देइ सण्णिज्जे ॥
 इय जो वि भाइ भइणी भजा सयणो ज्व जेहपडियओ । ण हु मच्चुमोयरगं सो वि परिस्ताइउं तरइ ॥
 इय णिसुणे सरीरमि णवर एसो सुणो जए पयडो । जे सव्वदुक्खमोक्खं सुदं धम्मं समज्झिणइ ॥
 इय णिधं चिय णमुणियधणाइवासंगवाउलमतीओ । परजणजणियापणो जत्ती दरिरो ति ण विसेसो ॥
 इय णिभरगुरुसव्वभावपसरवीसंभवडिडयसुहल्लरी । अण्णोण्णजंणिएहि वि जयमि मिहूणाइ पावति ॥
 इय णियचरिएहि चिय पुरिसा णजंति कुल-वाणसमेया । मजाइक्खमणेणं जेणं लहुएति अप्पाणं ॥
 इय णिरवणियायं कोहदोसेण ताणं, विहलमयमुयारं संजमुज्जोयजोयं ।
 णरयपण्णणीरु बुद्धिमं भाविकणं, पडिणिमिह कुजा कोहवायाणभंगे ॥
 इय णिदिज्जचरियाओ णिदण्णिजापुरत्तचित्ताओ । वेसाणिहेण संसारवाउराओ वियंभति ॥
 इय दीहट्ठिणिवेसियचम्मसिराजालचरण-जंघासु । वरकमलदल्लगुलि-करिकरोकरणी दुरताणं ॥
 इय पियमं पि सिट्ठिलेति, अहव अत्थं, मुयंति णियदेसं । माणग्गं ण कुणंति कइ वि जे होति सपुुरिसा ॥
 इय बहुसो संसारमि वियरमाणाण कम्मवसयाण । सुहि-सत्तु-मित्त-पुत्तणाइ जीवाण पावति ॥
 इय मंसमसुइसंभवसमुभवं सीसमानमसुदं च । को छिवइ करक्खेणावि, पूरओ भक्खणे तस्स ॥
 इय मुणिकणेवविहमसारसंसारविलसियं सहसा । अधिरमि विसयसोक्खमि भणह कइ कीरउ थिरासा ? ॥
 इय वयसुडिड चिय होइ कारणं ईट्ठसाहणथम्मि । उज्जोयइ पुण्णससी, ण इंदुलेहा जयं सरले ॥
 इय विसलियगुरुतेओ जइ जाओ कालपरिणइवसेण । अत्थमइ परं सुरो वि 'मइल्लं ण सहइ पयावी' ॥
 इय सलिलवुब्बुसव्वसंसारओवममि जीयामि । विसयसुहेसु थिरासा कइ कीरउ जाणमाणेहि ? ॥
 इय सव्वभूयदयदानकारणो जो जयमि सो धम्मो । जथ ण दया मुणिज्जइ जयमि सो केरिसो धम्मो ? ॥
 इय सव्वस्स वि मरणे साहीणे तस्स किं ण पज्जेतं । जस्स पडु-मित्तकज्जुज्जयस्स संपहइ मरियव्वं ? ॥
 इय सव्वं चिय लब्भइ जयमि जे किंचि होइ सुल्लभं । एणं मोत्तुं करिणाह ! सीवरागुग्गं धम्मं ॥
 इय सोयाओ कयकम्मपरिणइ भाविकण विणियत्ता । बहुसो चिय जणणि-सुयत्तणाइ सुलहाइ सेसारे ॥
 इह अप्पमाइणो होति सयलसंचित्तियत्थविच्चार । सविसव्वगुणसंपत्तीओ अप्पमाया हि जायति ॥
 इह जाइ-जरा-जमण-मरणव्वत्तणपरंपराकलिए । जलकल्लोल व्व भवंति जंतुणो भवसमुदमि ॥

कर्मविपाके	८१	८३
दरिद्रप्रशंसायाम्	३२२	६३१
रागपरिहारे	३३४	७७७
मित्रे	२२५	११०
शौर्म	२९३	२९१
विषयविरागे	२१८	६६
देहासारतायाम्	५०	२२९
उद्यमे	२३८	२१४
दरिद्रप्रशंसायाम्	३२२	६३५
नीतौ	१८५	७४
नारीनिन्दायाम्	२१९	७२
आत्मार्थे	२३६	१९८
इदमे	६७	१२१
द्वारिद्र्यप्रशंसायाम्	३२२	६३८
नारीनिन्दायाम्	१८०	१३
"	६१	५४
विषयविरागे	२५६	१३०
कोपपरिहारे	२७७	७५
हुर्जने	३१८	५९८
देहासारतायाम्	१४३	५४
धर्मकरणे	२५३	९३
पुरुषार्थे	१३८	५
मृत्यौ	२३५	१९२
देहसारे	५०	२३१
निर्द्वयप्रमज्जानिन्दायाम्	३२१	६१८
दाम्पत्यमुखे	२९	८९
मर्वादायाम्	६४	७६
कोपपरिहारे	३३२	७७३
गणिकायाम्	३१४	५५७
नारीदेहनिन्दायाम्	१७०	१७
स्वमाने	५७	३३
निर्वेदे	२१३	३८
मांसपरिहारे	१९३	१६८
विषयविरागे	२१७	५२
वौचनवयस्तपोनिषेधे	२९१	२६९
तेजःक्षये	४६	१७१
विषयविरागे	२४८	३७
दयायाम्	२६२	२०७
सुखेवकमरणे	२३३	१६९
जैनधर्मे	२४९	५४
निर्वेदे	१९७	२०२
अप्रमादे	३१६	५६६
निर्वेदे	२३५	१८३

इन्दियजएण विणओ, विणएण गुरु, तओ वि सत्थइत्थो । ततो वि गुरुविणओ कज्जा-उकजेसु होइ फुवो ॥
 होति विवेण गुणा भुवणम्मिअतरविट्ठमाहप्पा । गुणवत्तम्मि जायइ जणापुराओ असामणो ॥
 ते णत्थि जं ण सिज्जइ जणापुराएण तिहुयणे सयले । तम्हा सिक्खसु विणयं कल्लाणपरंपरामूलं ॥
 ईसि पि विणासो होज्ज जस्स संगाहि सो ण तं कुणइ । को णाम कालकूटं कवलइ कवलेहि जीयथी? ॥
 ईसीसिबल्लंतइच्छिपेच्छयं सुदरीण सविहारं । इह संभावजइ किं कयाइ णरयगिणिववणं? ॥
 उत्तट्टमयसिलिबन्धि! कीस मूढत्तणेणनंतरसि । अत्तायं पियसंगमसुहाण जणफण्णिजाण? ॥
 उत्तत्तकणयकल्लसोर्म्मलियवक्कलिययोरयणवट्ठं । वीसामस्थानं किं कयाइ भवजलधिवुट्ठाण? ॥
 उत्तुंग-पीण-पेडालसिहिणतटविद्यदमंछणिल्लेण । मण्यं ण होइ ताणं कयंतजोहावलीदस्स ॥
 उदओ सकम्मपरिणइवसेण बहुविहकिल्लेसल्लो वि । होइ महापुरिसाणे पि णूणमसुहृत्फलविवाओ ॥
 उणज्जइ को वि महाणिहि व्व परहियससइणुज्जुत्तो । णिद्वलिवमरुयविपोक्समगवग्गो महासत्तो ॥
 उणज्जइ भवपक्कम्मि कोइ परहियणिवदयवसाओ । तप्यंककविमुक्को कमलं पिय णिम्मलच्छाओ ॥
 उणज्जति पयाणं पुण्णेहि महीए के वि सत्पुरिसा । कप्पत्तकणोकरा इव हिबइच्छिअदिण्णफलविवरा ॥
 उणज्जति पयाणं पुण्णेहि जणम्मि ते महासत्ता । जे णियज्जसेण भुवणं भरति णिव्वियजियलोया ॥
 उण्णो चिय कोहो सहसा णियआसवं विणिट्ठइ । अणडद्वाराणिकट्ठो जलणो किं उहइ दाहचयं? ॥
 उणत्तिस्कारणं उण इमस्स देहस्स जं जयपसिद्धं । तं चित्तियं पि विउसाण भाययं होइ लज्जाए ॥
 उवभुज्जती अण्णेण पडुसिरी णेव तीरण सोट्ठं । किं कोइ सहइ दट्ठं णियदइयं अण्णहत्थमयं? ॥
 उववारोहिं परो चिय पिण्णइ, अयंवेति ते तहिं चेव । इयरम्मि पवत्ताता पेमाभाव पयासंति ॥
 उववारो होइ परम्मि सुयणु! अह सहइ सो तहिं चेव । सम्भावपेसले पुण जणम्मि सो कइवे पडइ ॥
 उवसंहरइ सइ चिय तेयं, अबलत्तणं लहइ सरो । 'णियचेट्ठ चिय थीराण णवर हेउं विणासम्मि ॥
 उवहिस्स मुहं रेवा सययं विहस्स ओप्पइ णिययं । सव्वमणावारधराण मित्त! महिल्लाण सम्माइ ॥
 उय्येव-भवा-उहंकारज्जिओ णिम्ममो णिरासंओ । महमोहसत्तरहिओ जइ व्व रोरो सुहावेइ ॥
 एकथ कह वि परिमोदया वि अण्णत्थ लमइ खणेणं । दूरेण होउ सुहिया महिला कथारिसाह व्व ॥
 एकग्गामे विसए व्व अहव णयरम्मि ओ समुप्पण्णो । दट्ठण विएसे तं सुहि व्व मण्णति सत्पुरिसा ॥
 एककेवकमुच्चिणंतो खिण्णो व्व णराण कालजोएणं । जलणो व्व हवक्कंतो जुग्वं अह णेउमुज्जुत्तो ॥
 एककेण विणा शविणा सायमयत्थेतरं जयं णीयं । लद्धखणेण तमेणं, 'तेयंसी सव्वहा जयइ' ॥
 एगिदियाइजीवाण चायणे मंसभक्खणे णिरओ । मज्जसत्तो य तहा अप्पाळ जायइ मणुस्सो ॥
 एतत् कार्यं पण्णे निवतिपरिणतं वैषमोऽन्यद् विधेयं, एतत् त्वयैव कृष्यं श्रद्धितं निपतितं साम्प्रतं कार्यमेतत् ।
 स्पर्धातस्त्रयक्षणेदं जगति परिणतानित्यमेतान् पदार्थान्, विस्तीर्णं दीर्घहस्तो लिखति जनमनश्चित्रशुतः प्रमादित् ॥
 एते वि बहुपवीया सुग्गमज्जायणिप्पुरपवावा । णडग्गति, पसिद्धमिणं 'गुणाहिओ इयरनंतरइ' ॥
 एयं पि अत्थि, अण्णं पि अत्थि, तं णत्थि जं इहं णत्थि । अण्णोणविकुट्ठाइ पि होति महिल्लामणे विउले ॥
 एयाए महियले कमलिणीदलोवगवण्णीतरलाए । लच्छीए पयारिज्जति णिव्विवेण चिय जयम्मि ॥
 एस चिय णेहगती, किं कीरउ?, जं कुलुग्गवाणं पि । महिलासंगो मड्ढेइ, साडयं तेलपडउ व्व ॥
 एस चिय पेम्ममती अणवेक्खिपदोस-गुणविसारम्मि । णियडम्मि लहुं लम्माति बलि व्व वियंभियप्पसरा ॥
 एस सहावो खल्लकट्ठाण बहुमम्ममैयधारीणं । दूराओ वज्जणं अहव खेहुरीए वयणभेगो ॥
 एसा अर्धतावद्धमूलमुविण्णिवला वि चलणम्मि । करिणो कण्णचमेड व्वडकारणज्जणमभिलसति ॥
 अणुरायणिभर्रा वि हु पयत्तपंतोववासिया वि दट्ठं । णासइ कवेज्जलिमुदं पणया वि पओससंज व्व ॥
 पमुहरसियावसाणे विरायविरसा चलुम्भडसहावा । पिसुणपगईण पीइ व्व होइ णो णिचला धगिणं ॥
 पडुपवणवसुव्वेहिरपडावपंती वि कइ वि होज्ज विरा । ण उणो एसा अणुरत्तपयइपरिवालिया वि दट्ठं ॥
 पयइए दिपमाणा वि णूणमणंतमणहरपया वि । पज्जंतजल्लजाल व्व णवर जल्लज्ज विज्जइ ॥
 पंभीरुम्भडपरिपुण्यवियडपता पयइडयप्पसरा । रिता जायइ भारिया वि सरयसरिय व्व काळेण ॥
 पइदिणपडिबरणसओववि(रे)ज्जमाणा सुणिम्ममत्तेसा । परपुट्ट व्व परिचयइ णिव्वयोसिज्जमाणा वि ॥
 इय एयाए तण्णमावलेविल्लवसहावतरलाए । इह अत्थि रायलच्छीए भणसु को वा ण जुरविजो? ॥
 एसा वि जए लच्छी सोहइ मग्गट्ठियाण पुरिसाण । इयरणं पुण सिग्गं णासइ आसयविणासेणं ॥
 'एओ चिय परमत्थो जं कीसइ मुज्जई य संसारं' । एवं कयववसाया भमंति संसारकंतारे ॥
 कज्जं कुणति णिययं उवरोहं जेय कस्सइ जणंति । गुणवत्तयाण कपो भमराण व्व होइ कमलेसु ॥
 कम्मकलएण मोक्खो, तस्स खओ अणुइवेण तवसा या । उभयं पि संपति महं गुणो वि दोसो ति अबुहाण ॥

विनये ७०-७१ १८७-८९	
नारीनिन्दायाम् ३११ ५१५	
" २८ ७१	
प्रियसंयोगे १५६ १३	
नारीदेहनिन्दायाम् २८ ७४	
" २५६ १२५	
कर्मविषाके २१० १	
महापुरुषे २४५ १	
" ८८ १	
" ७२ १	
" ७६ १	
कोवे ३३२ ७६२	
देहासारतायाम् १४३ ५०	
शौर्गे २९७ २८८	
स्नेहे १२७ ३९	
" १०९ ३४	
तेजःक्षये ४६ १६५	
नारीनिन्दायाम् ९ २७	
दरिद्रप्रसंसायाम् ३२२ ६३२	
नारीनिन्दायाम् ९ २३	
राष्ट्रबान्धवे २४१ २४९	
कृतान्ते ५५ २	
तेजःक्षये ४६ १७०	
कर्मविषाके ८० ६१	
कृतान्ते २७ ३८	
तेजःप्रसरे ४६ १७४	
नारीनिन्दायाम् ६२ ५६	
लक्ष्मीचापत्ये २५२ ८४	
नारीनिन्दायाम् २१९ ६९	
स्नेहे २१४ ४१	
दुर्जने ३१८ ५९६	
राज्यश्रीनिन्दायाम् ३०५ ४६०-६७	
मर्यादायाम् ६३ ७१	
संसारसारतायाम् १२९ ४	
शुणिनि ६४ ८०	
निर्बन्धे १४४ ६१	

कम्म रोहज्जाणाहिं वेषए, तं च गिरियगह्वरेणं । गिरिवदुहमीरुणा कोहवेरिणो तेण मेयव्वं ॥	मोक्षपरिहारे	३३२ ७६१
कयसमकएण ण हु होइ णिण्डुं तेयणिज्जिवज्जाण । वायामेत्तुत्तविओ वि जेण पंचाणणो एलइ ॥	महापुरुषे	१६५ १
कर-चरण-नयन-वयणोवलक्खिया माणुसा कल्लिज्जति । मत्तराणेण ते रिए रत्तमएण च सिद्धंति ॥	मांसपरिहारे	१९३ १६६
करयलपरियं दृढदत्तणकट्टियं संसमहिलसत्तस्स । सुणयस्स माणुसस्स य को व विसेसो?, भणसु सुव ॥	मांसपरिहारे	१९३ १६५
करिणीरहितं व्व करी, कंठिय रहितं व्व जह निसाणाहो । तह होइ जोव्वणं सुवुरिसस्स रहियं पणइणीए ॥	प्रियतमासुखे	१९२ १५३
करणमवेकलंति दंढं दुक्खहादिगए जणे महापुरिसा । करुणयापहाणं जयम्मि धम्मं पसंति ॥	दयावाम्	३२४ ६६४
कल्लिडाविलसंमुच्चैयपिडलंढम्मि सिहिणजुयलम्मि । उत्तत्तकणयकलसोवमाणनण्णाणणडियाण ॥	नारीदेहनिन्दायाम्	१७० १४
कस्स ण जायइ कोकल्लाउलं हिययमच्चुमुहवियं । रवणायरं व दट्ठं सुचरियचरियाणि वा सोउं? ॥	सुचरितश्रवणे	४ ४९
कस्स व समगसयल्लिदित्थसंजणिवसयलसोक्खइ । जायंति णिययकम्माबुद्धावओ णेव मणुयस्स? ॥	पुण्योदये	२३६ २००
कह कह वि दिज्जइ मणो वेवतुप्पिण्णहियहियएहिं । खलवेरियाण पुरयो रणे य तह कव्वकरणे व ॥	दुर्जने	२ ३६
कह कह वि पराहेतो(?) यत्तो) पयत्तसोक्खणमिदियथाण । अप्पायत्तं कयकुसलकारि को सुवइ मोक्खसुइ? ॥	मोक्षे	२१८ ५९
कह कह वि विसयवग्गुग्गवागुरासंगणिग्गया अम्हे । कहमिच्छामो पडिउं तत्थेव पुणो कुरंग व्व? ॥	श्रामण्यस्थिरीकरणे	१९७ २०७
कह कह वि विसयसंपत्तिपत्तसोक्खो खणं सुही होइ । पियविरह-डप्पियजणसंपओयजणियं हुइ लहइ ॥	विषयपरिहारे	२४७ २६
कह कीरउ तम्मि वळे कुमार । हियमम्मि सासया बुद्धो । जं रीयणियरकलियं खणेण विवलत्तणमुवेइ? ॥	बलान्तिवदे	२५२ ८३
कह सहइ परिभवं सो ओ राइ सत्तोए कह वि परियरिओ? । बलमणपरिहवो वि य, तेओ तिमिरं व किं हणइ? ॥	सवले	१८१ २२
काउं तयो हु तीरइ ककसवयणेण जंतुणा णयं । किं वणिक्कणो कथइ जलेइ पउरिधणविहूणो? ॥	यौवनवयस्तपोनिषेधे	२९१ २६८
काळण पयं जीयं तुलाए जे णिक्खिण्ठंति अप्पाणं । ते साहेति सकजं, सकति देवो वि ताण फुडं ॥	पुरुषार्थे	१३८ ४
कान्त्या चन्द्रमसं जिगाय सुमुखी नीलोत्पलं चक्षुषा, यस्या हसमशोककान्तवर्णं पाण्याकृतिर्बाधते ।		
सञ्चामीकरचारुकुम्भयुगवत् तन्व्याः स्तनौ राजतः, श्रोणीमन्मथमन्दिरौद्युगलं स्तम्भायतेऽस्याः स्फुटम् ॥	नारीदेहसौन्दर्ये	२४ २७
कापुरिसाणं विसमो विसमसुरो, ण उण पीरपुरिसाणं । मेसम्मि खग्गधारा तिण्हा, ण उणाइ वज्जम्मि ॥	कामपरिहारे	१२६ ३२
कायेण विणा धनसंपया वि पुरिसाण जायति अणत्थो । सीलं रक्खंतीए विहवाए जोव्वणमरो व्व ॥	कामे	३ ४२
कारिमकयाणुरावाण चित्तमत्थं परत्तमाणीं । वेसाण कवड्डीणं वसंगओ को जए चुको? ॥	गणिकायाम्	३१४ ५४८
काळायरु ण साहेइ डज्जसाणं धणधरारे वि । मूखल्लियं पि पुरिसं णिययणुणं धिय पयासेति ॥	गुणिनि	२३९ २२०
किसि-योरक्खा-वाणिज-सेवकज्जुज्जओ धणत्थो हु । कालं भवेइ दुक्खं, ण उणाडणत्थो तहा पुरिसो ॥	हरिप्रशंसायाम्	३२२ ६३६
किं अत्थि कोइ सुवणम्मि जस्स जायंति णेय पावाइ । णियकम्मपरिणइए जम्मण-मरणाइं संसारे? ॥	निर्वेदे	६६ १०९
किं कस्स केण कीरइ संसारे पवतिणिग्गुणे विरसे? । परिणमइ सकम्मं चिय अण्णो पर पडइ वयणिजे ।	निर्वेदे	६० ४३
किं जुत्तं विमलकुलज्जवस्स वीतंभणेहगहियस्स । थेवस्स सुहस्स कए कुलम्मि मसिकुच्चं दाउं? ॥	परस्त्रीपरिहारे	८ १८
किं तह मोहियमइणा विरसे संसारसागरे थोरे । विसयसुद्धासाणडिएण खिज्जियं स्त्रीणपुण्णेहिं? ॥	विषयपरिहारे	९९ २३
किं ताण जए मणुयत्तणेण?, किं जीविणं दिहवेण? । जाण ण जायइ तणओ गुणनिलओ सइ सुद्धावासो ॥	पुत्रे	७६ २
किंतु महावसणेणं णिचं णिज्जवइ सत्तगुणसारो । वज्जणियाए वि पडिच्छिरस्स गिरिणो व्व माहणं ॥	सहिष्णुतायाम्	६८ १५०
किं तुग्गिमाए सालस्स दुट्ठपक्खोहिं विहयसीसस्स । परपरिभवं सहत्तस्स होइ किं गहयया लोए? ॥	परिभवे	१८१ २३
किं तेणिह जाएण वि तणलहुसरिसेण दिट्ठपट्ठेण? । जस्स ण जायइ लोओ गुण-दोसवियारणक्खणिओ ॥	गुणिनि	२ ३७
किं दट्ठोऽसी क्वच्चिदपि?, डाडित इति वा?, धुतोऽपि वा, लोके? । योऽनार्यया भविष्यति न खाण्डितः कर्मणां गत्या ॥	दैवे	१७ ६
किं रयणीए?, दिवसेण किं व?, किं वोमएण? ण हु जत्थ । दइएण सने जायइ समागमो जीयणाहेणं ॥	प्रियसंयोगे	११२ ६०
कुणइ विचारं अविणट्टिया वि हाल व्व महिलिया लोए । जं पुण कुणइ विणट्ठा ते किर कह तीरए थोतुं? ॥	नारीनिन्दायाम्	६१ ५२
कुणइ विचारं कालो वि णेव पुरिसाण गुणमहग्गघाण । 'सिसिरत्तणं व सिसरो वि कुणइ जलणस्स पहपतो' ॥	सत्पुरुषे	६८ १५५
कुणिमाहारपत्तसा आरंभ-परिग्गहेसु गुरुसु । पंचिदियवहज्जुत्ता रोहमाहावपरिणामा ॥		
एए गल्लंति सया णयय कड्ज्जु(ज)एण मग्गेण । अण्णे वि महापावा सोयरिया तह य रायाणो ॥	कर्मविपाके	८० ५३-५४
केण ममेत्थुप्पत्ती?, कह व इओ तह पुणो वि गंतव्वं? । जो एत्तियं पि चित्तेइ एत्थ सो कह ण णिविण्णो? ॥	निर्वेदे	१०५ १
के व विलासा पसरियसहावदुग्गधनंथवेहाण । मणुवाण कारिमाणिवसरीसोहाण मणुवत्ते? ॥	देहासारतायाम्	२१७ ५७
के व विलासा भुवणम्मि?, तस्स हिययस्स निण्डुइ कत्तो । जस्स ण समसुहसुहिया पिया व चरिणी घरे वसइ ॥	नारीप्रशंसायाम्	२८ ८४
को णाम बाल्लिसो सयल्लिदित्तमोयसमुदवविसेसं । उज्जइ पक्कल्लगयं परोक्ककज्जम्मि मूढमणी ॥	संसारप्रशंसायाम्	३१३ ५४६
को तीए गुणो मणुयाण मणहराए वि रायारिओ? । जत्थ परमत्थवधवज्जणस्स सोक्खं ण संजणियं ॥	लक्ष्मीभोगे	२१७ ४८
कोमलमुणालवेल्लहलवाहुलइयाजुयं ससिमुहीणं । किं होइ कयाइ वि णययपडणपडिंभणसमत्थं? ॥	नारीदेहनिन्दायाम्	२८ ७३
कोववसओ हु पुरिसो अप्पाणं चिय कहेइ पडमयरं । जत्थुप्पण्णो तं चोय इधं धूमकेउ व्व ॥	कोवे	२७७ ७३

सप्तपरिणामसहाये लायणे जीवने य स्नेहः य । अणुबंधकारणे किं पि पण्थि खेवं पि कुतलान् ॥
 सप्तमं गुरमि भुवने भावा सगडादयो जियाण जहा । अति विनासं अइरिखिओ वि देहो तहा अचिरो ॥
 सप्तमेत्तमि वि बिरहमि जसस जीय पि सत्तुवमिणं । कह छट्ठिज्जद तं सुयणु । माणसं भग जियतेहिं ? ॥
 सप्तमेत्तं दुद तिलो, अण्णो पुण चयइ जीवियं जीवो । तम्हा उ ण कुलमिणं चडफडेत विवाएउ ॥
 सरपवणपहयकुवलयदलजललवतरलचंचलतरैसु । संजोय-जीव-जोवण-पणलव-वेहेसु को सोओ ? ॥
 सरपवणाहयकुवलयदलतरलं जीवियं च पेम्मे च । जीवाण जोवणं पणसिरी य पम्मे दय कुणइ ॥
 खेडिज्जद विहिणा ससहरो वि सूरस्स होति अत्थमणं । हयदिव्वपरिणइए कवलज्जद को ण कालेण ? ॥
 गम्भाहाणाळ चिय चिंवेहिं जिंवेइया महासत्ता । जायति केइ ते जेहिं णिण्णुयं जायइ जय पि ॥
 गरुइ णिहिमओ वि हु अत्थो भगइत्तयं न संदेहो । हिययणिल्लको वि पिओ ण कारणं किं विलासाण ? ॥
 गलता नेत्रेण सदा कोमलमिव लक्ष्यते मनः श्रीणाम् । चेष्टासु तदेव पुनः वज्रकणीकायते नियतम् ॥
 गुणगहणेणं सुयणो, दोसे परिभाविऊण इयरो वि । जइ दोण वि तुट्ठिकं कव्वं ता किं ण पज्जते ? ॥
 गुणिणो सुकुलसमुच्चयपरकजसमुज्जया महासत्ता । ते के वि जए जायति जेहिं भुवणं अलंकरियं ॥
 गुरुकोवजलणजालाकलावसविसेसकवलियविबोओ । ण विवाणइ अप्पायं परं न परमत्थओ लोओ ॥
 गुरुचलणकता पाठया वि परिभोगओ जणति णिंद । लच्छी उण तज्जिरहा वयणिजं कुणइ जणयस्स ॥
 गुरुयणपूया पेम्मे भसी सम्माणसंभवो विणओ । दाणेण विणा ण हु णिव्वडति सच्छम्मि वि जणम्मि ॥
 गुरु-साहुवयणकारी ददव्वओ सत्तंसेधणापरमो । सो गज्जवओ जायइ, पावमई होइ विवरीओ ॥
 घटयति विघटयति पुनः कुटुम्बकं स्नेहमर्थमनवरतम् । भवेतव्यतैव लोके, न खेदनीय मनस्तेन ॥
 घटियं पि विघडइ चिय पेम्मे, दूरद्वियं पि संघडइ । भणिइविसेसपडता वाणी दूइ ज्व, ण हु चोजं ॥
 घणपडियविहियण्णवण्णरायाण तण्डुजुवईण । मुरधपुरेहाणे पिव पडिबंधं कुणउ को व बुहो ? ॥
 घणसेधदेत-विहउतकवपरायत्तकारणमुहासा । बहुजणियविण्णलंभा छलंति कामा पिसाव व्व ॥
 चइल्लण गहयदणं विण्णं सिक्खेसु, णम्मयं भयसु । विणोणयाण पुत्तय ! जायति गुणा महपचिया ॥
 चवला मइल्लणसीला सिणेहपडिपुरिया वि तावेइ । दोववसीह ज्व महिला लज्जप्पसरा भयं देइ ॥
 चेदस्स चेदिमाए, रईए मयणस्स, कमल-कमलण । जेण कओ संजोओ अज्ज वि सो चेव सुयणु ! बिही ॥
 चित्तगओ वि पिययमो किं पि [हु] तरलेइ माणसावेयं । अणेहि सरस-पिव-कोमलेहिं किं पुण सरुवेण ? ॥
 चित्तिजंतमणिदं गम्भाहाणाइकारणमिमस्स । संवदणं पि उवरद्वियस्स जं तं कहं भणिमो ? ॥
 चुंवति क्वोले दाणलोहदरिसियमगंवरित्था(च्छी)ओ । मायगाण वि पसरंतमसलवलयवलीओ ज्व ॥
 चेठ्ठइ जियगलट्ठि परपाणप्परहेण जो मूडो । सो वाळुववर(ल)वमि वि दवत्तणे कुणइ नियवुद्धि ॥
 छट्ठइति अंबरं साधुरायगुणसंसिया ससोहाओ । तरणिकरिणावलीओ ज्व अत्थनंतस्स पडियइ ॥
 छंडइ लजं परिहरइ पोरुसं ण हु चरेइ मज्जायं । दीणत्तणं पवज्जइ उज्जइ मित्तं कालं च ॥
 णीयचरेसु वि भिक्षं भगेइ लेषइ उदयमाथारं । कं कं न करेइ नरो सोए उयरमिण्णा तविओ ? ॥
 जइ कह वि णाम जचंधणहिं चंदो ण चेव सचयिओ । किं तस्स सिरी पवडा भुवणालोयं ण भूसेइ ? ॥
 जइ ण कओ वेरमो मणुवाण जरापराहवेणं पि । ता तरुणिज्जणयसंभावणवाए भणियाण वि ण जाओ ॥
 जइणो संजमजोयमि अप्पमाउजयस्स जइ कह वि । जाएज जीवपाओ तह वि अहिंसा मुणेयव्वा ॥
 जइ भसइ तो भसिज्जइ, सुव्वइ गुणकित्तणेण य धुपेतो । कुणइ सइ चिव लोओ खल-सुयणं, ताण को दोसो ? ॥
 जइया पुण वियल्लिदियवेवावइण्णीसहसरीरो । इय उट्ठिउं पि तइया ण तरइ, किं कुणउ कायव्वं ? ॥
 जइ वि ण गेहो ण य पणयपसरसम्भाववडिउहाओ । तह वि अपुव्वागमणे इयरो वि समाउलो होइ ॥
 जणणि-जणयाणमसुइ णोसदं पाविऊण जो पडमं । पच्छा कलल-डव्वुय-मंसपेसिबुहवमुपण्णो ॥
 जणणिकाहाइरवियारकलसकवपाणवित्तित्तिहं । असुइमि गम्भवासे मुत्त-पुरीसामयामज्जे ॥
 सवडिउओ कमेणं अमेज्जमज्जमि तक्काहारो । भरिओ अइमुत्त-पुरीस-मेय-मंस-उट्ठि-रुहिराण ॥
 वस-फेकणं-उत्त-कालेज-मज्ज-बीमल्लफिच्छल्लुपुरिओ । देहो दुग्गोवसाहणंवरणिद्वयणवारिच्छो ॥
 तयमेत्तवज्जसाओ अतो मुत्त-उत्त-विट्ठपडइत्थो । कणयमयस्स सरिच्छो मज्जामेज्जस्स कल्लसस्स ॥
 जणणित्तणमि जो हिययपहरिसुवेत्तणेहरसियाए । पालिज्जइ वयणणिहित्तणचछोरेण पुणइणं ॥
 सो चेव विव्वमुच्चयहावभावेहिं मयणणडियाए । रामिज्जइ पियदइत्तणमि कव्वकमुवसयाए ॥
 जत्तेण सेविया वि हु जायति यमाखल्लमाहणा । भोया भोय ज्व कणीणं जंतुणो जीयणासाय ॥

निर्वेदे	१४३	४५
देहानित्यत्वे	२५५	१२३
स्नेहे	१५८	३४
मांसपरिहारे	१४९	५
शोकपरिहारे	६९	१७८
धर्मकरणे	१२२	१३
कुतान्ते	५५	१
महापुरुषे	१५३	१
अर्थप्राधान्ये	३	४०
नारीनिन्दायाम्	२७	३७
दुर्जन-सुजनविवेके	२	३५
महापुरुषे	१४६	१
कोपपरिहारे	२७७	७२
पितृलक्ष्मीभोगे	५६	८
दाने	११९	८
कर्मविपाके	८१	८८
द्वैते	१७	७
वाण्याम्	२४५	२
नारीनिन्दायाम्	२१७	५०
कामपरिहारे	२१७	५५
जिन्ये	७०	१८४
नारीनिन्दायाम्	८	२२
द्वैते	११०	३६
प्रियतमे	२१	१६
देहासारतायाम्	५०	२२४
गणिकायाम्	३१४	५४९
मांसपरिहारे	१९३	१६४
गणिकायाम्	३१४	५५०
सुमुखायाम्	१२	४४-४५
गुणाग्रहणे	४५	१५५
जरायाम्	२३५	१९१
अप्रमादे	३१६	५६८
दुर्जन-सुजनविवेके	२	३१
जरायाम्	२९२	२७२
अतिथौ	१०९	३३
देहासारतायाम्	१७०	२-६
निर्वेदे	१९६	१९३-१४
कामपरिहारे	२१८	६४

ज्जायुप्पणो सयसिद्धज्जरं सव्वहा समीहतो । तं चिय दाहं पुणकीडउं च सुययं खलो खव्वं ॥
जम्मो गिरत्थओ तीए जीए महिलाए मम्मणुल्लवो । रमिकण धुलिधवलो पुत्तो पारुहइ अकम्मि ॥
जलकलसकलिलभरियंउसच्छहे लोयणम्मि रायंथो । सच्छप्पयकमलदलद्विज्जमुपेक्खणक्खणिओ ॥
जलणस्स दाहणिवहेहिं नेय, जह जलणिहिस्स सलिलेहिं । तह संतोसो ण हु होइ जंतुणो कामभोगेहिं ॥
जस्स उण णाण-दंसण-वरणादे मणे जहुत्तकारिस्स । तस्स गरस्सावस्सं हवंति सग्गा-उपवग्गा वि ॥
जस्स कएणं तम्मसि पिण्णमकज्जाइं कुणसि रे जीव ! । मुत्त-पुरिसाहारस्स रोगणिलयस्स पावस्स ॥
चित्तिज्जाताऽणिट्ठा तस्सेसा पावपरिणइं णिययं । असुइ च भूहपुंज च होइ किमियाण णिवहो च ॥
जस्स किलिस्संति कए विसयमुद्दासाहिलासलोहेण । तं पि सरीरं खणभंगिपणविहुयं व पिण्णफले ॥
जस्स ण सट्ठा भत्ति च पवयणे चित्तमुदया नेय । बह्वं पि किलिस्संतस्स तस्स तं जायइ गिरत्थं ॥
जस्स ण संतोसो वरविलासरसियाहिं सुरपुरंभीहिं । सो नेय कह ण मयणो माणुसभोगेहिं तिप्पीहिं ? ॥
जस्स ण सुहेण सुहियं ददयं, ण व दुक्खदुक्खियं होइ । समसम्भावसिणेहं ण जस्स किं तस्स जम्मेण ? ॥
जस्सऽणुक्कला पियदंसणा [य] मियु-मंजुभासणसयण्हा । सयलपुणाहाणं परसिरे च परिणी सुहं तस्स ॥
जस्स परिओस-रोसा वि पिण्णफला जंति जंतुणो भुवणे । उच्छुप्पस्यस्स व पिण्णफलेण किं तस्स जम्मेण ? ॥
जह अमुणियसद्वथो कव्वं काऊण महइ महमूढो । तह अकयकुसलकम्मो इच्छइ परमेसरमुद्दाइ ॥
जह उग्गओ रवी णहयलम्मि ण खणं पि पिण्णलो होइ । तह तारुण्यं जीवाण होइ ण थिरं मुहुत्तं पि ॥
जह उसरम्मि वविकण कोइ मूढो विमग्गा सली । तह णाणुचिण्णधम्मो मग्गइ सोक्खसाइं भोत्तुणं ॥
जह जलइ पायवो नेय अपयं मूलपसरवदरितो । तह धम्मो धम्मत्थीण होइ ण विणा दयाए कुडं ॥
जह जलहिम्मि णिहितेण कह वि कुम्मेण लद्धमुवरितलं । तह लद्धं मणुयत्तं मए णिजुहेण संसारि ॥
जह जीवियं तुह पियं णिययं तह होइ सव्वजीवाणं । पियजीवियाण जीवाण रक्ख जीयं सजीयं व ॥
जह णयरं ण लहइ वियङ्गोउरहारविरहित्यं सोहं । धम्मज्जुवाण ण लहइ तहेव धम्मो दयाए विणा ॥
जह णिणयाओ उवहिम्मि ण व णियतंति णिवडियाओ पुणो । तह ण पुणो चल्लहति लुंभिं रुवाइसीहम्मं ॥
जह पवणपेल्लओ सुक्कदाख्खारो दिसोदिंसि विगओ । ण मिलइ पुणो वि तह बोलियं खु मणुयाण माणुस्सं ॥
जह पवरचित्तमिती सल्लिउपुसिया ण देइ परमायं । तह जर-मरणात्तिदं तणू वि सोहं ण पावेइ ॥
जह पव्वाया कुसुमाण मालिया नेय लहइ परिभोयं । तह विसइच्छं वयपरिणयंगलट्ठो ण पावेइ ।
जह पावितं ण तीरइ परमाणुचओ दिसा(सो)दिंसि विगओ । गुरुवरपवणाइओ तहेव विगयं खु मणुयत्तं ॥
जह बीएण विणा होइ नेय सयला वि सासनिप्पत्तो । तह धम्मत्थीण ण होइ णूण धम्मो दयाए विणा ॥
जह रहवर-तुरय-ग्गदसंकुलं साहणं विणा पट्ठणो । सोहं ण देइ, धम्मो दयाए रहिओ तह जत्तीण ॥
जह सलिलं वारिहरुण्णीतीए ण विणा कहिं पि संपवइ । तह धम्मो पाणिदयाए विरहिओ नेय संपवइ ॥
जह सुविणयम्मि रोस्स रयणलंभो तुभीए संपडिओ । सो चिय णिहाविरमम्मि दुल्लहो तह व मणुयत्तं ॥
जह सुसियपाववे नेय होति वेल्लहलपल्लमुपीला । विसयविलासा जायंति नेय तह परिणए देहे ॥
जह हव्ववहस्स सिहा पिण्वाणा ण व पुणो वि पज्जइ । तह चेट्ठा वि हु सयसिद्धियाण विगया ण संचइ ॥
जह हिययम्मि तरुणसयत्तकज्जुज्जओ वि मयविलो । पावइ ण इच्छियदिसं धम्मेण विणा तहा जंतु ॥
जं आसि दुरालोयं पुरियप्पावस्स मंडलं रविणो । उव्वत्तिज्जइ सायम्मि 'तेयरक्खा जए मइई' ॥
जं चित्तिज्जइ हिवाएण नेव, जुज्जइ ण चैव जुत्तीहिं । विहवण-संचवणपरो तं पि हयासो विही कुणइ ॥
जं जत्थ जया जुज्जइ काउं तं तह कुणति मुहसंघा । किं कुणइ दारुकुभम्मि कोइ बालो वि हव्ववहं ? ॥
जं जत्थ जेण जइया पावेयव्वं सुहं व दुक्खं वा । करहं व रज्जुगहिनं बला तहिं गेति कम्माइं ॥
जं जेण जहा जइया सुहमसुहं वा समज्जियं कम्मं । तं तस्स तहा तइया तयाणुस्सं फलं देइ ॥
जं परलोययिहं कोओ ववहरइ सुक्कमज्जाओ । तथ णिमित्तमज्जा विसया विसभोवणसमाणा ॥
जं संजमुज्जमावजियं चरितं बह्विं वासेहिं । तं तूलं व खणेणं कोहो णिड्ढइ जलणो च ॥
जा घेणइ खम्मं मंजिकण रिउणो सिरम्मि दुक्खेहिं । सा रायसिरी अणहेण भणसु कह मुचइ समेण ? ॥
जा जीवताणं चिय भुज्जइ पुत्तेहिं बंधुवग्गेहिं । सा लच्छी देइ थिइ, मयस्स उण णरिउ उ विसो ॥
जा दुहिय ति कलेऊण जुंविया सरसवयणकमलम्मि । स नेय पुणो जम्मंतरम्मि दइय ति गेहेण ॥
जाया जस्स सवासाओ उवह कहमपणो वि उप्पत्तो । धूमदउ च दाहं तं चिय सुययं खलो वइइ ॥
जाव पियत्तणसंजणियवाडुपरियम्महिययपरिओसा । णियदइया वि हु वयपरिणयाण विवरमुद्दा होइ ॥
जा समुरासुर-किण्णर-विज्जाहर-गरमुरेहिं पेयंती । सा आणा बंधुसु खव्वं णयर थेवो अलंकारो ॥

हुज्जे	३१८	५९४
पुत्रे	७६	३
नारीदेहनिन्दायाम्	१७०	१०
कामपरिहारे	२१८	६३
कर्मविपाके	८१	९१
देहासारतायाम्	५०	२२७-२८
"	२३५	१८८
तपोनैष्कल्ये	२८०	९४
कामपरिहारे	२१८	६१
प्रियसंयोगे	१५६	१६
नारीप्रशंसायाम्	२९	८५
जन्मनैरथेक्ये	२२८	१२७
धर्मकरणे	२५५	११५
बीवनास्थेयं	२४७	३१
धर्मकरणे	२५५	११४
दयायाम्	२६१	२०२
मानवभवदौर्लभ्ये	२५३	९२
दयायाम्	१४९	३
दयायाम्	२६२	२०५
जरायाम्	२४७	३०
मानवभवदौर्लभ्ये	२४८	३६
जरायाम्	२४७	२९
जरायाम्	२४८	३५
मानवभवदौर्लभ्ये	२५२	९१
दयायाम्	२६२	२०३
दयायाम्	२६२	२०४
दयायाम्	२६२	२०६
मानवभवदौर्लभ्ये	२५२	९०
जरायाम्	२४७	३३
जरायाम्	२४८	३४
धर्मकरणे	२५५	११२
तेजःक्षये	४६	१६६
दैवे	२३	२५
उचित्तकार्ये	२९१	२६४
दैवे	२१४	४४
कर्मविपाके	६०	४२
विषयासारतायाम्	४८	२०३
क्रोधपरिहारे	३३२	७६९
क्षीयं	२४२	२७२
पितृलक्ष्मीभोगे	५६	१०
निर्वदे	१९६	१९५
हुज्जे	३१८	५९५
जरायाम्	२३५	१९०
बान्धवाहामज्जशोभायाम्	४४	१४९

जिणवयणमुणियत्तण सयलकिरियाकलावसंजति । संजणइ जोवणे चेव संजमो बलसमत्थाण ॥	संयमे	२१७	५३
जीये गिरत्थयं होइ सुयणु ! पियसंगमेण रहियस्स । इह जोवणे पहाणं तत्थ वि पियसंगममुहाइ ॥	प्रियसंगमे	१५६	१२
जीवाइपयत्थडम्भासणेक्कवसायनिच्छियमइत्तं । बहुविहपवित्तसत्थडत्थविश्वराराहणं होइ ॥			
तं पि पसण्णे सुयणमणम्मि बहुविमलसत्थणिम्माए । पयडियसमतण-मणि-जेट्टु-केवणे समसुह-दुहम्मि ॥			
होइ गुरु सुपसण्णो तच्चित्तराहणेण विणएण । तस्स विणयस्स विग्घे करेइ माणो वियंभेतो ॥	गुरुपुत्तुपास्तौ	४९	२२०-२२
जीवावेइ मरत्तं, अण्णं मारेइ, मरइ सह तेण । को सुणइ जुवइचरियं पियेसजो सीलरहियाणं ॥	नारीनिन्दायाम्	५९	३५
जीयो अणादिबहुभवकालजिययसुक्कम्मसंताणो । परिभमइ दुहसवावत्तदुग्गमे भवसमुद्धम्मि ॥	निर्वेदे	२४७	२२
जे अत्थ-काम-धम्मा काटं तस्सत्तणम्मि कीरंति । परिणयवयस्स ते चेव होंति गिरिणो न्व दुल्लेधा ॥	तारुणे	२१८	६२
जेण जहिच्छं सच्छं दवित्तसिउम्ममगामिणो मूढा । अच्छेति चत्तरलोयकवहियायरणावारा ॥			
बहुदुक्खल्लवसंजणियवियणसंतावतारसमणग्घे । सुयणवयणं धोत्तेति येय अगवं व दिज्जेतं ॥	मूढे	२३५	१८६-८७
जेण जुवाणत्ते णियससुयसोहमगमिणएण ददं । परिसज्जिज्जइ उम्महविश्वारियणयणमग्गेण ॥			
तेणेय जराजजरपरिणामोअत्तणुविहाएण । अण्णसत्तकरेण णीसहं वेविरणेण ॥	जरायाम्	२४७	१६-१७
जेणडण्णमंततरसुवगयस्स वधो सुयस्स णियवयस्स । संसमसइ त्ति तुट्ठा अमो परं किं थ कट्टयरं ? ॥	निर्वेदे	१९६	१९०
जे संसारालंकारकारणं महियलम्मि ते केइ । उप्पज्जति सरुवेण पुण्णरासिं न्व सप्पुरिसा ॥	महापुरुषे	८६	१
जे होंति महापुरिसा ते डिदंभं कुणंति ण कया वि । उवल्लो किं केण वि मणुत्तिणो रहो रविणो ? ॥	मर्यादायाम्	६३	७२
जे होंति महापुरिसा ते परक्कज्जुज्जाया सया होंति । णियकज्जं पुण तं ताण जं परत्थाण णिव्वहणं ॥	महापुरुषे	११२	६३
जो आसि अरिणमंतज्जुज्जाये जरावेरसण्णरो । जे जेय वित्तपसोत्तप्पसकुसुमपहो होइ ॥	निर्वेदे	२४७	२०
जो उण अक्किणो चिय मिण्हति दिक्खा गिरत्थया तस्स । धणसंपत्तो गेहं तेण विणा होइ वणवासो ॥	निर्वेदप्रव्रज्यानिन्दायाम्	३२१	६१६
जो उण णिदेइ सुं णिण्हवइ य मोरवं विमग्गेतो । तस्स जइ कह वि विज्जा होइ फलं ण उण से देइ ॥	कर्मविपाके	८१	७४
जो उण रुक्मएणं समाउलो जिदइ य परक्खं । सो होइ कुक्खो माणुसत्तणे हुंइसंठाणे ॥	कर्मविपाके	८१	६५
जो उण सयल्लणीमरपरिणामाडसज्जदासो भुवणे । लच्छीमओ महायस । पुरिसं लहुएइ सयरइ ॥	लक्ष्मीमदे	७०	१८२
जो उवएसं पावम्मि देइ सो वेरिओ, ण संदेहो । जो कुणइ धम्मवुद्धिं सो तस्स जणो परमबंधू ॥	परमार्थबान्धवे	४५	१५०
जो उववाए वड्ड परस्स लच्छी कहंवि पत्ता वि । तस्स फल्लयइ दुक्खजिजा वि धणसंपया विउला ॥	कर्मविपाके	८१	७६
जो एस देव ! सोओ सो सोओ सयल्लपावपरस्स । अबुहेहिं सयाडसरिओ परिहरिओ पेडियजणेणं ॥			
वाहीण परं ठाणं, मूले अरतीए, सोक्खपडिवक्खो । अण्णाणपहमविधे णरवदुवारं गुणविणासो ॥			
बाहेइ सयल्लज्जाइ एव, परिहरइ उत्तमविवेयं । धम्म-डत्थ-काम-मोक्खलाण विग्घहेऊ महापायो ॥	शोके	६९	१६९-७१
जो कारवेइ पडिमे जिणाण जियराम-दीस-मोहाणं । सो पावइ अण्णमवे भवमहणं धम्मवररणं ॥	जिनप्रतिनानिर्माणे	१७३	६
जो कुणइ अंतरायं परस्सणासं जणस्स अवलवइ । सो पावइ योग्यं सयल्लज्जणपरिहवमुयारं ॥	कर्मविपाके	८१	८७
जो कुणइ महापायो जंतूणं कह वि अवयवविणासं । सो चिय तयमविगलोडसंयुण्णेणो य पावीओ (?) ॥	„	८१	८५
जो कोटएण इच्छइ ददइ णरए दुहेक्किण्माए । एकदिगइ पि रज्जं सो कुणउ अचेयणो निययं ॥	राज्यधीनिन्दायाम्	१८१	२९
जो चिय एकस्स सत्तो सो चिय अण्णस्स सज्जणो होइ । कह 'सुयणो' त्ति शुणिज्जइ !, णिदिज्जइ कह 'खको' काटं ॥	दुर्जन-सुजनविवेके	२	३३
जो जणइ य जणपीडं णिच्चुव्विग्गो य हीणदेहो य । पवणीओ जिणसंघे अणत्तसंसारिओ होइ ॥	कर्मविपाके	८१	८९
जो जम्मि चेव जायम्मि होइ णियकम्मपरिणइवसेण । सो रमइ तहिं चिय तेण अभयदानं पसंसंति ॥	दयायाम्	२१५	४६
जो णिग्गच्छइ मणि-रयण-कणयकलियं पि उज्जिज्जण सिरिं । अत्थित्तारिच्चाइ सो पवतिओ फुडं भणिओ ।	समुद्रप्रव्रज्याप्रवसायाम्	३२१	६१५
जो तुरय-वसइ-महिसाइयाण णिक्खेणं सया कुणइ । उक्कडमोहो य सया जीयो संवत्तणमुवेइ ॥	कर्मविपाके	८०	६०
जो दट्ठण जइजणे अण्णं काणफिज्जण सडभावो । णिव्वोळइ माइओ सो वक्कमुहो णरो होइ ॥	„	८१	७८
जो देइ फासुयं अवसरम्मि साहूण ओसहाइयं । सो होइ पणइवो महियलम्मि किंती थिरा तस्स ॥	„	८१	८६
जो पयइभइयाए जइ कह वि अतीजणे पयच्छेइ । फासुयदानं तस्स यडिथिरा वि लच्छी थिरा होइ ॥	„	८१	७७
जो पररंभाइ अविट्ठयाइ दिट्ठाइ जंपइ अणज्जो । छायाभंसपसत्तो जचंथो होइ जियलोए ॥	„	८१	८२
जो पूया-सक्काराइ-दाण-सम्माण-किरिक्कलाए । कीरइ तवो ण सो होइ तस्स णेव्वाणपज्जेतो ॥	तपसि	२८०	९५
जो मायावी पिसुणो वंचणसीलो तहा कयथो य । तस्सुवकयं पणस्सइ, निवरीयगुणस्स संठाइ ॥	कर्मविपाके	८१	७५
जोयणसयाओ तह समहियाओ लक्खेइ आमिसं सउणो । सो चेव मरणकाले पासवंधं ण लक्खेइ ॥	देवे	६०	४१
जो वि पियसंगमाओ सुहाहिमाणो इवेज्ज जंतूण । सो वि वियोगाणलसंगदुसिओ दइदमानहओ ॥	निर्वेदे	१०५	३
जोव्वण-मयणुम्मत्तोहिं विचयतण्हाविमोहियमणेहिं । जं कीरइ इह पुरिसाहमेहिं तं णिरयगहमूले ॥	विषयविरागे	९९	१७
जोव्वणमयणुम्मिक्कतपडुमंइयलवयणससिबिं । णिव्वणकारणं किं कयाइ णरयगितवियाणं ? ॥	नारीदेहनिन्दायाम्	२८	७२

जो सुयचहुमाणपरो विचसुज्जुतो गुरुण भत्तिगओ । सो पावेद जहिल्लं विजं तीए फलं चैव ॥
 जहणं-उक्कण-चायण-छेयणेहिं हुक्कं जियाण पकरेतो । बहुरोगी होइ णरो, विवरीओ जायद अरोगी ॥
 ण गणेइ गुरु, ण गणेइ मायरं, गेय गोरवं, ण भयं । ण य लज्जे, ण य गेहं, ण बंधवं, गेय मज्जावं ॥
 ण बज्जे, पावकयं चिय, ण य मित्तं, गेय कुल-गणावारं । अत्थो गिरत्थओ णिय, माणव्वहियस्स पुरिसस्स ॥
 ण गणेइ गिरत्थियणाओ, गेय लज्जे, ण गोरवं, ण कुले । विसयविसमोदियणंइ कज्जा-उक्कज्जे ण लक्खेइ ॥
 ण गुणेहिं, गेय रुवेण, णोव्वारेण, गेय जीएणं । चेप्पइ महिलाण मणो चक्खो पवुदधुयचओ व्व ॥
 गत्थि पंथखेयाउ परा वयपरिणइ, गेय रुददारिद्रसमो वि हु पारह्वो ।
 मरणवाहि ण हु जायद अण्णभयं परं, वेपणा वि ण छुहाए समा किर जंतुणो ॥
 जोव्वणसिरि सोहमयं, अहिमाण परक्कमो कुलं सीलं । लज्जे वत्तावत्तेयओ, सजेण एका पणासेइ ॥
 ण भणिजमेत्त चिय हियमहिच्छुणा ते सहेव पेत्तव्वं । जाव ण दिट्ठं पक्खक्कमप्पणा किमिह मह कज्जे ? ॥
 ण य अण्णवलं बल्लिणो समागयं भुयबलं च मोत्तूण । हरिणो करिं कुंभविचारणम्मि किं परबलावेक्खता ? ॥
 ण य कुसलवम्मकज्जुज्जं विणा होति जीवलोयम्मि । सोक्खाइं हियवत्तियमणोरुमुप्पादयासाइं ॥
 णयणाइ जाइं नीलापलोयणोपियमयाइं तरुणीण । आसि पुणो वयनिरमग्गि ताइं अण्णारिसाइं व ॥
 णयभायणम्मि संपवइ सयलसुगरिदिसंभवो पूर्ण । णयरहियार्ण पुण संगओ वि ण गिरत्थं महइ ॥
 णयरहिओ भयदरिसि च्व मंतिसत्थो हु जारिसो होइ । सिद्धी वि तारिसि चिय पट्ठणो कज्जाण संपवइ ॥
 ण य विह्वो ण य जाइं ण पट्ठणं कारणं कुसलयाए । भवणम्मि अत्थिणो जस्स एति सो दुण्णहेउ ति ॥
 णरयदुवारं वसणेक्कज्जुलहरं सयलपरिहवावासो । महिलायणसंबंधो चारवबंधो व्व पुरिसाणं ॥
 णरयम्मि णियवक्कमम्मवसपरं सपणामियप्पणो । अण्णवइ विविहसत्थाहियायसंजणिवियणाओ ॥
 णरसीहेणं सीहो, मंतेण पणी तहकुसेण करी । महिलामणो ण तीरइ केणावि गिरं कुसो भरिउं ॥
 णवघडणकैचिदामोहभूतिओ विरडरमणपम्भारो । अड्ढोरणरयपायालवडणवक्कक्कल्लो किं सो ? ॥
 णवरमिह ते कयत्था, ते चिय धण्णा य जीयलोयम्मि । जे मोहणोसहीगं रमणीण ण गोयरे पडिया ॥
 ण सहइ माणव्वंस इयरो इयं पि, किं पुण महप्पा ? । 'णियमज्जागवपरिहवक्कंकिओ किं पि ववसेइ' ॥
 ण हु किं पि अक्कहणज्जं मित्ते सच्चावणेहमइहम्मि । भिण्णे वि देहमेत्तण जस्स विलेण ण वि मेओ ॥
 तह वि ण जुज्जइ णियचरियसाइणं सुदवंसजायाण । 'णिसारा होति गुणा साहेप्पता सह चैव' ॥
 ण हु होइ कह वि णासो रे जीव ! सनजियाण कम्माणं । ता सहसु जं समावइइ हुक्कजाय अण्णुज्जिग्गो ॥
 पाणुवगरणे वइइ णाणीण विणय-दाणसंजुत्तो । अज्जावयणे व सुमे वट्ठो होइ मेहावी ॥
 वापुण्णभाइणो मेदिरम्मि णिहिल्लिसयलदारिद्र । बहुवण्णविविहमणिसयलमणहरा पवइ वसुहारा ॥
 णिक्कइयवम्मि पेम्मे पिययम ! विरहो अलदमाहणो । अह विरहो, ण हु पेम्मे, सारसमिहुणेण दिट्ठतो ॥
 णिक्कमणिचे असुइम्मि दुग्गहे मंस-सोणियपवइ । देहम्मि वि पक्खिं पाउ जियसना कामदोली ॥
 णिज्जियतियससमूहं रुवं सच्चवइ, किं गुणेहेण ? । 'सज्जंमसुराहिणो मरुवयस्स किं कुमुमणियरेणं ? ॥
 णिज्जियसेसुबमाणा परहियसंपाब्णेक्कववसाया । जायेति महापुरिसा पयाण पुण्णेहिं भुवणम्मि ॥
 णिच्चरमयइइवियलियकवोलमूलावलंगदानेहिं । दुज्जयओहेहिं व वारणेहिं ण य वारिउं तरइ ॥
 चट्ठलयरचरसुक्कयसमायलपुण्यचुलिप्सरहेहिं । सुरयारोहेहिं वि णिसिगसेह-जग्गुग्गहणेहिं ॥
 बहुज्जियसुहडंसंजुण्णिसिचिच्छुडसमरभारेहिं । सावरणपहरणेहिं वि रहेहिं रहियग्गओहेहिं ॥
 णिसियासिहत्थवग्गवफारफुक्कारमुक्कहकेहिं । पाइक्काण वि णिवहेहिं सच्चओ रुद्धपररेहिं ॥
 उवएसक्कयरसायण-विज्जा-मंतोसहप्पणाणेहिं । उव्वरिउं ण हु तीरइ मरणाओ सुरा-सुरेहिं पि ॥
 णियचरियावज्जियगइयकम्मदूसहविवागणिम्मविद्या । जीवाण पयतिविरसा अइदुक्कलपरंपरा होइ ॥
 णियजाइपप्पणं खल्लसुणहो भसइ जइ वि अण्णस्स । तह वि णियसुद्धयाए पिसुणं सुयणा ण याणति ॥
 णियमंसपोसणं जो इच्छइ परमंसमक्खणं काउं । सो कालकुब्बकवलणपरायणो जीविउं महइ ॥
 णियविसमकम्मकतारगहणपडिओ कुंरंगोओ व्व । को कुवियकालकेसरिकमागओ चुक्कए जंतू ? ॥
 णियसत्तिवज्जियाणं धरमहिल्लापालणे वि संदेहो । किं पुण जयसिरिगहणं हडेण जेऊण पक्खिक्कं ? ॥
 पूर्ण ण पेच्छति इमं जाइ-जरा-विविहवाहिदसणिळं । कयविविहजंतुसंताणपायणं मच्चुमुहउहरं ॥
 पेइ विसमं पि भूमिं, मिच्छा वोत्तुं पियाणि सियक्खेइ । भिदइ गइइ लज्जे पयोयं किं ण कारेति ? ॥
 पेइणिमित्तं चिय होइ जंतुणो जणियकम्मणियरस्स । उप्पसी गिरसाइसु गतीसु गुरुवक्कणियरासु ॥
 पेइवभरियं सच्चावणिक्कभरं रुव-सुणमहग्गधियं । समसुइ-दुक्खं जस्सइत्थि माणुसं सो सुइं जियइ ॥

कर्मविपाके ८१ ७३

कर्मविपाके ८१ ८४

मानत्यागे ४९ २१७-१८

विषयविरागे ४७ २००

नारीनिन्दायाम् १२७ ४०

शुभायाम् २२० ७७-७८

नीती २४५ ३

शौवं २९४ ३०८

धर्मकरणे २५५ १११

निर्वेदे २४७ १८

नीती २९५ ३२३

अमात्ये २९४ ३०१

दाने २९१ २५५

नारीनिन्दायाम् ६० ३८

निर्वेदे २४७ २३

नारीनिन्दायाम् ९ २५

नारीदेहनिन्दायाम् २८ ७६

नारीनिन्दायाम् ५७ २७

स्वनामे १७५ २

नीती १४० ३६-३७

निर्वेदे १४४ ५७

कर्मविपाके ८१ ६८

कतिथी २२५ १०८

स्नेहे १५८ ३१

वेदासारतायाम् ५० २२६

रूपे ११८ २

महापुरुषे ९२ १

सूयौ २३५-३६ १९३-१७

निर्वेदे

जुज्जं-सुज्जनावेके २ ३४

मांसपरिहारे १९३ १६३

कृतान्ते २१४ ४२

शौवं ६१ ४८

सूयौ २३५ १८५

परस्त्रीस्नेहे ८ १४

स्नेहपरिहारे ३३४ ७५४

नारीप्रशंसायाम् ५७ २६

मेहुच्छिन्नी सन्ध्यावरेण जा पुञ्जए जइजणरस । कह तस्स चैय कीरइ संघाणं जाणमाणेहिं ॥
 मेहो चिय जावइ दवणिबंधं जंतुणो बुद्धस्सावि । सविदेहो वि कुसलज्जमम्म दवविचहेउ ति ॥
 ण्हाण-विलेवण-भोयण-अच्छावण-पालणेहिं परिवरिओ । विह्वइ तह वि हु हयपुञ्जणो व्व देहो ण संदेहो ॥
 तणसिहरलमसिण्हातुसारतरला इम चिय जणेइ । लच्छी परवियण्णाण णणमसइ व्व वेरगं ॥
 तवतणुवंगण सया जो पुरिसो भणइ विण्णियमहण्णो । सो पइमुहो जायइ कुंदो पुण पण्हपाएणं ॥
 तस्स हु जीवं जाएअ माणिणो सहलयाए संभइ । जो जियइ सव्वयालं गियतेओहुयपरतेओ ॥
 तस्सेय णवर सहलं जयम्मि मरणं महाणुभावस्स । जरस पइ जणिवगुणपुरायसोयं समुव्वइ ॥
 तह ओव्वणं पि पविगसियसरयकोजयपसुससारिच्छे । तव्विरमे उण विसया मयणुम्मच्छे पि छइति ॥
 तह या उवपय्याणं पि माणिणो माणमलणमुत्तमद । गल्लियावत्तेवपिणो जेण जइए जइए ॥
 ते किं पि पइइ कज्जं पुव्वज्जियदुद्धिद्विजोएणं । मरणे वि जेण गरहा जीयं पुण पावपरिणामो ॥
 ते किं पि माणुसं महियलम्म संपइ विहिणिओएण । चित्तादियाइ जम्म उ पराण जायति सोक्खाइ ॥
 ते णत्थि चिय भुवणे वि सुपुरिसा बुद्धिगमयपयावा । महिलासणेण सया विववणं जं ण पावंति ॥
 ते णत्थि जं ण कीरइ भणल्ललोहेण जीवल्लोयम्मि । सुरो वि हु अत्थमणे रहणं बुद्धो समुदम्मि ॥
 ते तारिंसं ख मरणं णवरं धम्माणुहावओ होइ । धम्माण वि जिणधम्मो पास्य-तिरियुग्गदुहदणो ॥
 ते विण्णाणं, सो बुद्धिपरिसो, बलसमत्थया सा वि । जा उवओयं वचइ सवल्लुणाहाणमणुयम्मि ॥
 ते सहइ कलाकुसलम्मि रुव-ओव्वण-महागुणगपवि । ण हु जम्मि वि तम्मि वि माणुसम्मि रइकेलिविरसम्मि ॥
 ता तुमो मेरुगिरी, मयरहरो ताव होइ दुत्तारो । ता विसया कज्जगइ, भाव ण धीरा पवजंति ॥
 ता मरियव्वं जइ तह विवेदणो होइ जेण जायंति । ण उणो पुणो वि कुगतोत्तमुम्मवियाइ दुक्खाइ ॥
 तिरियत्तणे वि वाहण-जहण-उव्वण-कणकण्णायीणि । अणुहइ विविहदुक्खाइ खुत्तिपवासापरिस्सतो ॥
 तिल्लसंबद्धत्तणकयसणेहपसरा खलत्तपरिणामा । महिला चडियसाल व्व कस्स णो मइलणं कुणइ ? ॥
 तिण्वं तवसंतावं सहइ वयपरिणया, ण बालतण् । आयवदसणमेरेण सुखइ गोदयगवं वारि ॥
 तिहुयणसक्काहणिवा लच्छी, आणा य पारसिक्खुडा । एयाणेकेकं पि हु सुदुज्जयं, किं पुण समूहो ? ॥
 ते केइ होति भुवणोवरम्मि कप्पत्तणो महासत्ता । जेसि पारोहो वि हु परहियकरणकम्मो भणियं ॥
 ते के वि जए जायंति पुव्वपुण्णाणुहावगुणकलिया । जाणुप्पत्तीए इमो सुणिव्वुओ होइ जियलोओ ॥
 ते णवर महापुरिसा जे य अणजेण सोयसरेण । ण वसीकया कयाइ वि जाणियसंसारपरमत्था ॥
 ते दो वि राग-दोसा संसारावडणकारणं जेण । अणिवारियसामत्था भणिया समुरासुरकुर्हि ॥
 ते पइ ! मया वि ण मया, अहवा ते चैव णवर जीवंति । मरणेण जाण णिवइइ सामिमुह-मित्तकजोहो ॥
 ते पुण जयम्मि धण्णा जे जिणवरमासियं मुणेज्जण । अणिगूहियणियसामत्थमुज्जया धम्मचरणम्मि ॥
 ते पुत्ता जे पिउणो जिण्णेण पहेण सति पवजंति । तेसिं गुणगइजेणं पिपा वि सल्लिज्जइ जयम्मि ॥
 तेणनिमित्तं पीलेइ बाहुपं जह व बोइ मइ मूढो । तह धम्मेण विणा केइ सोक्खकजे किलिस्सति ॥
 ते होति सत्तवंता ते संतो ते महायसा भुवणे । जे नेति सिंरि मुपइद्विएण सप्पुरिसमणेण ॥
 खेव पि विरहदुक्खं ण सहइ, गरुयं पि चडुणं सहइ । वइइ सोमात्तिम-अरुविवाउ इए समपति ॥
 इयविरहे वि जा भरइ जाभिणी तीए मतिलणमण्णं । इय कण्ठिज्ज व दिवसो सह रविणा सायमत्थमिओ ॥
 इयविरहोवदुक्खं पुहवीलंओ वि णेय णासेइ । ववगवरज्जदुह पुण सुमित्तकजो पणासेइ ॥
 दहोहोभिउडिभासुरकरालधाराफुरंतवरवाले । पविसति माणसंजणभरण रणसंकडिल्लम्मि ॥
 दव्वस्स हुयवहेणं सो चैव महोसहं महम्मवियं । तह तुह दसणविहुरे पुणो वि तुह दसणं चैव ॥
 दपिपपडिक्खं पति सामो भीरुत्तणफलो होइ । तरुणवरस्स व पुञ्जइ समोसहं कोवकरणाय ॥
 दरदसियमक्कोववणकाणुप्पाइउच्चमइमुहासा । गोपवणवरसोह व्व पेच्छमाणस्स वि पलाइ ॥
 बहुविहगयइगंडयल्लगलियमयसल्लिपंकुल्ल व्व । अहियं पक्खलइ महाणरिदगुरुमदिरेसुं पि ॥
 अणवरयधम्मलसंवरणलमणाळमकंदयं व खणं । कत्थइ पयं णिवेसइ ण जिच्चरं अज्ज वि खणं पि ॥
 संपणमूलददंखोसंमल्लवियासासउरम्मि । दिवसावसाणकमलं व मुयइ मणुयं महियलम्मि ॥
 इय दिणयरमुत्तीए व बहुविहसंकतिल्लपसराए । एयाए को ण तविओ जयम्मि लच्छोए सच्छेदं ? ॥
 दंढ-कस-सत्थ-रज्जु-मय-सोमर-खग्ग-भोगरापीहि । दुक्खे उप्पाएतो जीवाणं होइ बहुवियणो ॥
 दंसेइ गरुयसम्भाविज्जभरं पेम्मपरिणइ महिला । णियजाइएणं अण्यं चिय किं पि चित्तेइ ॥
 दाणं दविणेण विणा ण होइ, दविणं च धम्मरहियाणं । धम्मो विणवविहूणाण, माणुजुणाण विणओ वि ॥

आमयस्थिरीकरणे	१९७	२१०
स्नेहपरिहारे	३३४	७९३
देहासारतायाम्	५०	२२५
लक्ष्मीचाफले	२१७	४९
कर्मविपाके	८१	७९
शौचं	२१३	२९२
सुखेवकमरणे	२३३	१६८
विसयविरागे	२३५	१८९
नीती	१८५	७७
दैवे	६५	१०३
नारीप्रांतायाम्	५७	२५
नारीनिन्दायाम्	६०	४०
लोमे	३	३८
सुमरणे	२५०	५७
अतिथी	२९८	३६९
स्नेहे	१५६	२२
पुरुषार्थे	१३८	३
सुमरणे	२५०	५६
निर्वेदे	२४७	२४
नारीनिन्दायाम्	२१९	७०
यौवनवयस्तपोनिषेधे	२९१	२६७
ऐश्वर्ये	७०	१८०
महापुरुषे	१८०	१
„	९१	१
शोके	६९	१७४
राग-द्वेषयोः	३३४	७९६
सुखेवकमरणे	२३३	१६६
धर्मकरणे	२५६	१२९
पुत्रे	६४	७७
धर्मकरणे	२५५	११३
सद्व्यथे	६३	७३
स्नेहे	१५७	२८
स्वजनविरहे	४६	१६८
मित्रे	२३७	२०७
स्वमाने	५७	३०
प्रियविरहे	१०८	१०
नीती	१८५	७५
लक्ष्मीचाफले	२५२	८५-८९
कर्मविपाके	८१	७०
नारीनिन्दायाम्	६१	५२
मानपरिहारे	११९	९

दियहं चिय परगुणविद्वदंसणे ठाई मुच्छिउ न्व खलो । तेलोकरजलमे वि नवर दोसे दिहि पत्तो ॥
 सीणाण समुद्धरणं, भयम्मि रक्ता, गुस्मि तह विणओ । दपुदधुराण समणं, दाणं दारिद्रतवियाणं ॥
 सव्वस्स पियंवया वंधुसिणेहो कयण्णया रुवं । सपुत्तिसाण महायस ! सयं चिय होइ, किं भणिमो ? ॥
 दुक्खदुयाण सुहवावडाण जीवाण जीवलोगम्मि । होति जहिच्छं भोगा सपत्तदाणापुहावेणं ॥
 दुक्खपाडियारहेउम्मि तम्मि को विसवसेभवे सोक्खे । अणुबंध कुणति परोऽवसाणवरसम्मि संसारे ? ॥
 दुक्खस्स उप्पियंतो हंतूण परं करेसि पडिवारं । पाविहिसि पुणो दुक्खं वदुयवरं तण्णमित्तेण ॥
 दुल्लहज्जाणुराण गहयपेमापुबंधपसरेण । एवेविहम्मि काले सलहिज्जइ मित्त ! मरणं पि ॥
 दुल्लहलभम्मि जणे जस्स अलुण्णेहि होइ अणुबंधो । गिरिसरियासलिलेण व पडुदियहं तेण सुसियव्वं ॥
 दुस्सीलेहिं सुएहिं पि लहइ वयणिज्जवं पिवा सयं । 'किरणा तथंति भुवणं लोओ सूरस्स रुसेइ' ॥
 दूरं कारुण-सुद्धताणं लज्जा य होति मुक्काइ । धम्मो दया य णूणं मेसमसेतेण मणुएण ॥
 दूरे पञ्चासत्ती, दंसणमवि जस्स दुल्लहं होइ । संसारुत्तरणसहं णामं पि हू सो जए जियइ ॥
 देयाइसु 'जीय, निएसु, सामि ! सम्माणसु' ति भणिऊण । अणुचरिओ जो सामित्तयम्मि विणओणयणेण ॥
 सो चेव भिषभावं समागओ कम्मपरिणदवसेण । अतोपसरियगुरुमच्छरेण निम्मच्छिओ पेच्छ ॥
 देवतणे वि ददुं महिद्धि-सक्काइणो सुरसमुहा । जणियाहिओग्गमीसावसाइयं लहइ बहुदुक्ख ॥
 देवायस्से जम्मम्मि कइ तु गह्याण फुरइ माहण्ये । ववसायसहाया ते कुणंति ते जं जगम्महियं ॥
 देवस्स मत्थाए पाडिऊण सव्वं सहति कापुरिसा । देवो वि ताण संकइ जाणं तेओ परिफुरइ ॥
 देहेण णिसण्णासण्णवाहिविणाकयंतकल्लेण । भुवमदुधुवेण लम्भइ मोक्खसुहं किं ण पज्जंत ? ॥
 दोग्गं पि ण जज्जइ, ण गणिज्जइ आवइ वि गह्ययरी । हिययस्स णिवुदकरो जाण सुओ गुणगणाहारो ॥
 दोग्गं पि ण जज्जइ विहवे लालाण करणमणयं । सयलसुहाण णिहाणं पुण्णेहिं जणो जणं लहइ ॥
 दो चेव नवर पीतीओ होति हियइच्छिया गुणा जत्थ । सामं व विणयस्सिणं दंबो न्व पयाववित्थारो ॥
 दोसा ण जत्थ जायंति, होति हियइच्छिया गुणा जत्थ । अणुण्णाएण वि ते गुरुम्मि सुवि(वि) होइ करणीये ॥
 धण्णा पावति जए चउन्निहं धम्ममासयविसुद्धं । सावय ! जिणपण्णसं संसारुत्तरणसमर्थं ॥
 धम्मसुद्धिविलमूलम्मवस्स मइनेहसलिलसित्तस्स । चारित्तहंदकंद-क्खमाइसाह-गपसाइस्स ॥
 छट्ठ-उट्ठम-दसम-बुवालसाइतवचरणवहलपत्तस्स । णरवइ-सुरिदधणसंपयाइकुसुमोहगहणस्स ॥
 उत्तमणवरियमहादुमस्स गुण-मोक्खफलसमिद्धस्स । सवणच्छाया वि फुडं ण होइ पुण्णेहिं रहियस्स ॥
 धम्मो सुसेविओ होइ कारणं अत्थ-कान-मोक्खानं । तेण विणा किं सिज्जउ ? , कारणओ कज्जसिद्धि ति ॥
 धि ! त्सि मणुयाणं जे मणुयमवं पि णाम लदूणं । विसयाहिलासवेजवियमाणसा णेति णियज्जमं ॥
 धीरत्तणं पि छाड्ढिति, देति दुक्खस्स णवरमण्णायं । कज्ज-उकज्जं ण मुणंति सोयगहिया जए पुरिसा ॥
 धीरपरिगहगुर्यं जाणइ चक्खम्मिउं कुलपसुओ । आचार-णयहरे पडुधरम्म संबद्धिओ य सपा ॥
 धी ! संसारो, जडियं उवहसइ जणो परस्स वसणम्मि । सो चिय तव्वेलं चिय रुइ सकरुणं रुयावेंतो ॥
 पइसमयं चिय विसरइ बल-मेहा-रु-जोण्ण-गुणेहिं । आउवलेणं च तहा तेण सरिरं ति किं भणिमो ? ॥
 पक्खीण सावयाण य विच्छेयं ण य करैइ जो पुरिसो । जीवेसु य कुणइ दये तस्स अववाइ जीवंति ॥
 पक्खं चिय सुव्वंति राम-रामण-गलाइणरणाहा । संपत्ता वसणसयाइ रमणिवारंगवामूडा ॥
 पडिणीय-अंतराइय-गानुवचाए य वइइ अभिक्खं । अवमण्णंतो य सया सुयजेउं होइ दुम्मेहो ॥
 पडमं जणंति सोक्खं साउत्तणजणियमण्डरं भोगा । किपागफलासाइवरस व पच्छा विणासंति ॥
 पडमाभासी महुरो पियंवओ विणय-वत्तिपण्णो । जणमण-णयणाणंदो सुहओ सव्वत्थ सो होइ ॥
 पत्ताहासेहिं ण विचि कज्जेत्थे बहुहिं मिलिएहिं । 'उज्जोयं कुणइ मणी कायमणीमज्जवारम्मि' ॥
 पयडेइ ससहरो चिय अणिचयं तिहुयणस्स तहियहं । बोलेति जस्स दिवहा एणसस्वेण ण हू दो वि ॥
 पयतीए जइ वि कुडित्ता चलचित्ता जइ वि दुग्गहसहावा । तह वि सुहाण णिहाणं महिलारयणं महिक्खम्मि ॥
 पयतीए णिग्गुणो चिय देहो देहीण णत्थि सदेहो । भरिओ मुत्त-पुरिसाइयस्स मेज्जस्स कडुयस्स ॥
 वस-मेस-रुहिर-फोफस-कलमलमरियस्स दुरहिगंधस्स । अविवेज्जो इमस्स वि मंडण-परिकम्मणक्खणिया ॥
 पयतीए तणुकसाओ अणुकेपा-दाण-सौल-गुणकल्लिओ । जीवाण रक्खणपरो होइ सुही जीवलामम्मि ॥
 परजणहियत्थक्के समुज्जाया जणिविविहविमथा वि । णिव्वाहति चिय ते पुणो वि णूणं महापुरिसा ॥
 परपेरिया सलोहा अगणियणिययाववायसंदोहा । तेल्लियकुसि न्व महिला खलस्स वयणं पणामेइ ॥
 पररमणिक्खदंसणसुद्धाइ जो णेय पथइ कयाइ । ण य णिइइ पररुं पुरिसो सो होइ रुवस्सी ॥

दुर्जे ३१८ ५९७

सत्पुरुषे ६७ ११६-१७

दाने १६२ ६१

विषयविरागे १७१ २८

दयायाम् १४९ ४

प्रेमपात्रासंयोगे १०७ ८

१०७ ६

कुपुत्रे ६४ ७८

मांसपरिहारे १९३ १६७

महापुरुषे १२९ १

निर्वेदे १९६ १९६-९७

२४७ २७

महापुरुषे १६९ १

पुरुषार्थे ११८ ७

देहासारतायाम् २१७ ५८

सुपुत्रे ७६ ५

नारीश्लोकायाम् २८ ८२

नीती ६४ ८७

शुरुश्लोकायाम् २९९ ३७५

धर्म ७८ १७

सुचरितश्रवणे ४ ५०-५२

धर्मकरणे ११३ ७०

विषयविरागे २५६ १२८

शोकपरिहारे ६९ १७३

कुलीनत्वे ४५ १५७

परोपदेशपाणित्रये ६९ १४६

देहासारतायाम् ५० २३०

कर्मविपाके ८१ ८१

नारीनिन्दायाम् ३११ ५१७

कर्मविपाके ८१ ६९

विषयविरागे २१८ ६५

कर्मविपाके ८१ ६६

कुसुरी ३१२ ५३४

देवे ६९ १६६

नारीश्लोकायाम् १८० ३

देहासारतायाम् १४३ ४८-४९

कर्मविपाके ८१ ७१

महापुरुषे २७०

नारीनिन्दायाम् २१९ ७१

कर्मविपाके ८१ ६४

परलोयणिपिवासा तं तं कुर्वन्ति मोहिवा जीवा । नर-नरय-तिरियमावे तं तं मोहिवात्तणे जम् ॥	निर्वेदे	१४४	५६
परलोयणिपिवासा दुल्लहं पि लद्धूण माणुसं जम्मे । अण्णाणमोहिवा न य कुर्वन्ति धम्ममि पिबयमणं ॥	अज्ञाने	२३५	१८४
परवसणम्मि सुहेणं संसाराणिचयं कहइ लोओ । णियवंपुयणविणासे सव्वस्स चलेत्ति बुद्धीओ ॥	परोपदेशपाणिष्ठये	६८	१४५
परहियकज्जेकरया चित्तामणि-कण्णसयववम्महिवा । उण्णजंति पयाणं पुण्णेहि जए महापुरिसा ॥	महापुरुषे	११५	१
परिचित्तिओ वि सहसा अंगे गिण्ववइ पिबयमो णवरं । अण्णे पि य किं पि रसंतरे तु दिट्ठो उण जणेइ ॥	प्रियसेयोगे	१०९	३२
परिछिदिउं न तीरइ पुंवि ओ गरुववडिदयपयाओ । सो चेष आकल्लिजइ सायमवत्थाकलणहेऊ ॥	तेजःक्षये	४६	१६७
परिभोयमेत्तसंकेतविसविवायं न तक्खणे जंतु । आसीविसो व्व विसया सेविजंता खय गेत्ति ॥	विषयविरागे	२१८	६०
परिमंदमारुउव्वेल्लवयल्लिदलतरलजीविबव्वम्मि । इह माणुसम्मि जम्मे कह व सवण्णो जुणउ रावं ? ॥	रागपरिहारे	२५६	१२७
परिसीलणीयरुइरे रोग-जरा-मरणपीडिए णिचं । खणविसराकसहावे देहे कह कीरउ थिरासा ? ॥	देहासारतायाम्	१४३	५३
'परिहरसु विसयसंगं, उण्णसु असमंजसं, तवं चरसु' । इय भणइ व णिहुयं सुयणु । कण्णमूलागयं पलियं ॥	जरायाम्	३०	९५
पवणुच्छलंतइसहमहल्लकळोलभीसणारावं । मयरहर पि हु पविसति न उण माणं विराहेत्ति ॥	स्वमाने	५७	३२
पवणुद्धादयमीसणजालोलिकरालिए हुयवहम्मि । माणव्वेसणभीया सहसा सलहत्तणमुवेत्ति ॥	,,	५७	३१
पव्वजा किल णिक्खिचणाइया, जस्स तं चिय परेक्खं । 'वणवाससमाणणेहेलणस्स किं तस्स दिक्खाए ?' ॥ निर्व्वयप्रव्रज्यानिन्दायाम्	दुर्जने	२८४	१५१
पसयइ चिय खलाण परोययारेक्कणरसिबम्मि । अवलोइवम्मि सुयणम्मि अमारिसो पवइदोसेण ॥			
पसुवरिसो होइ णरो विसयसुहासापिसायसव्विओ । मूढो अंधो व्व सया हियमहिंये वा न याणेत्ति ॥			
णायरइ धम्मचरणं, णिदइ गुरु-देवयं, भयं मुयइ । न गणेइ गेह-गोरव-लज्जं, न य विणय-मज्जार्यं ॥	विषयविरागे	४८	२०१-२
पंडिचं जाई पोरुसं च कुल-सील-गुणवत्थेओ । बिहंतेत्ति जीए सेगेण, दुक्खं णवर संठाइ ॥			
ण सहेइ सीलसारं, वेणुं परिहरइ, सुपुरिसं हणइ । पाणापयारवंचणसमुज्जा वा सया लोए ॥			
ण गणेइ कयं, न गुणे, दक्खिणं पावजुज्जाइ कयाइ । न य पोरुसं, न विजं, न य लज्जं, नेय मज्जार्यं ॥			
जा असमंजसकरणुज्जा सया जा खलत्तणफला य । सा रायसिरी माणुणयाण कह सम्मया होइ ? ॥	राज्यश्रीनिन्दायाम्	४८	२०९-१२
पादेइ महावत्ते पियं भूया पजोहरारंमे । वड्ढंती अणुवरिसं सरिय व्व तवं न संदेहो ॥	दुहितरे	१५४	५
पाणं गेयं णइ मयणाहि घणत्थणीओ महिलाओ । एयाइ संति जत्थ य सो सग्गो, सेसयं रणं ॥	कामे	३	४५
पायवडिये पि दुरागयं पि लेहं व सवल्लगहियत्थं । फालेऊण समुज्जाति दूरमकयणुयाओ दढं ॥	गणिकायाम्	३१४	५५१
पावं कुणमाणस्स वि न कया वि कुर्वन्ति साहुणो कह वि । इह कीरंते पावं पुणो वि समहिट्ठए पुरओ ॥	सत्पुरुषे	२१६	४७
पिप्पितपुरय श्रो वा जरापुणोस्कीरणदेहसारोऽपि । धर्मं प्रति मोदच्छति वृद्धपशुस्तित्ति निराशः ॥	धर्मकरणे	१८	९
पिय अणुकूली परि सरइ, अणु भुवणि जसवडहउ वज्जइ । एत्थ सनपइ मोक्खसुहुं, मोक्खे सोक्ख किं कवलेहिं खज्जइ	कामे	३	४४
पीडिजंते वि मओ मयारिणा किं य कुणउ बलहीणो ? । 'सत्तविट्ठो सव्वस्स सहइ गुरुपरिभवमसज्जं' ॥	निर्व्वले	१८१	२१
पुणरवि तए चिय इमं खविदव्वं जं पुरा समायरियं । सवसेण वरं खवियं बहुणिज्जरमणुपुक्खं च ॥	निर्व्वेदे	१४४	६२
पुण्णघणाणं धम्मो लच्छी पुत्तेसु शुणमहम्मेषु । इयराणं पुण अयसो वेरं च रिणं च संकमइ ॥	पितृलक्ष्मीभोगे	५६	९
पुण्णेहि पुण्णरासि व्व केइ कालकमेण जावंति । जाणुप्पसीए चिव भसहमिणं जायइ सणाइ ॥	महापुरुषे	१५२	१
पुत्तत्तणम्मि जो गेहजिम्मर लालिओऽण्ण-पाणेहि । आलिगिओ य मलकल्लिसिओ वि परिचुविउं वयणं ॥			
सो चिय अण्णमवंतरसत्तुत्तणजायमकयरोसेण । विणिवाइओ समं सुणिसियासिधारापहारेहि ॥	निर्व्वेदे	१९६	१९१-९२
पुत्तेहि जस्स भुज्जइ रायसिरी मंडलम्मणिम्माया । सो चिय णवर कयत्थो, कयपुण्णो सो चिय जयम्मि ॥	पितृलक्ष्मीभोगे	५६	७
पुत्तो होऊण पिसा, पिसा वि होऊण पुत्तओ होइ । माया वि होइ भूवा, भूवा वि हु होइ जणणि ति ॥			
सामो वि होइ दासो, दासो होऊण सामिओ होइ । संसारे णियकम्मावएत्तपसरस्स जेतुस्स ॥	निर्व्वेदे	१९६	१८८-८९
पुरिसाण णमो जे पिज्जिणंति संसारसायरे घोरे । मय-मयणवाणजणणेक्कपच्छे जुवइविक्खोए ॥	कामपरिहारे	९९	२४
पुव्वज्जियपुण्णविपक्खमाणवसजायमयमाहण्णा । ते केइ जए जायंतं जेहिं भुवणं महम्मवियं ॥	महापुरुषे	८३	१
पुव्वज्जियसुकयमहाफलोहसंभारमाविवावयवा । ते होत्ति कपत्तरुणो जेसि छाया वि गिण्ववइ ॥	,,	१७७	१
पेम्माणुरायरसिए दिट्ठे गुरुणेहिण्णरे दइए । किं किं न करेइ जणो समत्थिओ पंचबाणेण ? ॥	प्रियदर्शने	५७	२४
खहुज्जणपयत्ताडणकरणवसपयत्तकयमासाओ । तीरति अगमओ चिव जाओ जहयरक्त व्व ॥	गणिकायाम्	३१४	५५२
बहुजाइ-जरा-जम्मण-मरणवत्तणपरंपराकलिए । बहुविहविहवण-संपत्तणजणियापियविरहसंजोए ॥			
सुर-अणुय-तिरिय-नारयसकम्पपरिणामजणियजम्मम्मि । राय-विरायंतरसंपदेत्तमुह-दुहविसेसम्मि ॥			
पिय-माय-माय-महणी-भज्जामायण्डियाए णडिएहि । बहुसो परिहिंतेहिं तम्मियं जेतुहरिणेहि ॥	निर्व्वेदे	२१३	३५-३७
बहुसुकयसहस्सेहिं वि न तीरए खलवणस्स घेतूण । हियमसुद्धसाहावस्स णिययकज्जुज्जयमतीये ॥	दुर्जने	३१८	५९१
बहुसुकयसहिरालयम्मि भीमच्छंदसणिजम्मि । पमुहरसिए रइसुहे विरामविरसम्मि को राओ ? ॥	विषयविरागे	२१७	५४

बंघुयणुब्बेवकरी सयलदुहावायकारणमणजा । मरणरखणि व्व महेत्ता चित्तिजंती भवं देइ ॥
 बंघुयणो ससुरहरं जणणी सहपंमुक्तीलो भत्ता । एण्हि जुवा जुवईहिमावया संपया चेव ॥
 बालतवखवियदेहा दाणरुई सील-सेजमसमग्गा । जे होति सम्मदिट्ठो ते जीवा जंति दिक्खलोयं ॥
 बाळेऽस्ति यौवनाशा, स्पृहयति यौवनमपीह वृद्धत्वम् । स्यूतसङ्गतोऽयं वृद्धः किमपेक्ष्य निर्धमेः ? ॥
 बिब्बोयसलिलभरियं फल्लमहावत्तवंचणामयरं । महिलामणमयरहरं अज्ज वि पुरिसा ण थाहेति ॥
 भवसायरम्मि णियकम्मजणियपुक्खोहवसणपडहत्थे । तियसा वि समत्था होति णेय णियवटंतमुद्धरितं ॥
 भसणकयत्थो साणो, सीहो उण इणइ कोइओ संतो । णियवीरियाणुसारेण पसमणं होइ गरुयाण ॥
 भीमोऽसौ सुधि नैव शक्तिमनाः स्वच्छन्दस्युत्तः, पार्थोऽपीश्वरकेलवापितबलो राधेयस्त्रा रवेः ।
 पीलस्योऽतिबलो भवादानुगुणा द्रोणादयोऽप्यन्यतो, यद् जीर्यं सहजं हरेरिव सदा तद् जीर्यवान् काप्यते ॥
 भुवणोयरम्मि वियडे भुवणचुद्धरणजायवसाया । उप्पजंति सइ चिय ते जेहि जयं महग्गवियं ॥
 भुंजइ जहि चिय फुडं तं चिय भंजेइ भायणमसुद्धो । पिसुणो सहुद्धभावेण किं पि अण्णं कलेउण ॥
 भुंजता वि जहिच्छं तणया अघति संपये पिउणो । जणणीए णं सुद्धं पि सहइ पुत्तो चिय पियंतो ॥
 भुंजेइ जत्थ तं चिय णवरं भिदेइ भायणमण्यो(इज्जो) । णियचेट्ठाए सइ वीवठ व्व नेहक्खयं कुणइ ॥
 भूय-भविस्समाणपणणिदुहुम्मदणिविक्कमुक्कणए, पयणकुसम्मलमज्जलविट्ठलोयनमिण्णि जीमिए ।
 कुवियकयंतवियडमुद्धरंकरवलयजंतुणिवहए, बहुयरवाहिविविहसंजोयविणासिससुहसमूहए ॥
 जो वीसइ मोसग्गए, दिणावसाणम्मि णेय सो पुणो वि । अच्छउ ताव पओसओ, विचित्तचरिओ हु एस जियलोयओ ॥
 मेओ व कुडिलवंचणणासितुत्तम्मसुहडमाहणो । पिसुणत्तणफलो होइ साहुपुरिसाण मज्झम्मि ॥
 मज्जाइएसु एसु जो जई मयपमायठाणेसु । जाएज्ज अण्णमाई तमिदियत्था ण लंघेति ॥
 मज्जाइहमणरओ जोव्वणमहुवोहिओ जणियराओ । सणियं ओसरइ मओ सुद्धरि ! णिहाए वि(व) जराए ॥
 'मज्झ कए एस दहं कुद्धो अज्झिणइ वम्ममसुद्धे' ति । णियवावराहभोय व्व तेण लज्जेति महुरिस्तिणो ॥
 मणयं पि णेय विसहइ सरो तेयस्सिणं वियंभंतं । जेण मलिटं मियंकं पच्छा मुणणं पयासेइ ॥
 मणुयत्तणं विवेयं सुक्खुत्तणं विसिद्धससग्गी । लज्जं गुरुयणभस्सि च चयइ विसएहि वेळविओ ॥
 मन्त्रैर्वीरसायनैरनुदिनं शान्तिप्रदैः कर्मभिर्युक्तया शास्त्रविधानतोऽपि सिपजा सद्बन्धुभिः पालितः ।
 अभ्यर्त्तवस्तुभिर्नयेन पट्ना शौर्यादिभी रक्षितः, क्षीणे त्वायुषि किं क्वचित् कथमपि त्रातुं नरः शक्नोते ? ॥
 मयणवियारो वियरइ णिरकुत्तो जोव्वणम्मि सविसेस । मयणाहि-पंचमुग्गारभावसंभुजिओ णियव ॥
 मरणम्मि बंधवाणं लोओ णिदेइ णवर ससारं । परिदेविउण सज्जो कुणइ पयत्तण परकम्म ॥
 मरणं पि ताण छज्जइ जयम्मि असनं महाणुभावार्णं । कुद्धेदु-कसविओ जाण जसो भमइ भुवणम्मि ॥
 महिवाणं पि हु सुद्धरि ! ण त्हा सुद्धि जणेइ हियदस्स । पियसम्भावोपियसइरवीडयं जइ सुहावेइ ॥
 महिलाण वि होइ चिय सरसं सोहग्गसुद्धरं रूपं । तं चिय भीराइणोहि जाइ मेयं सुत्तुरिसाण ॥
 मंटा वडमा व सया साहुणमणजकारिणो होति । विच्छोयकारयाणं ण पयाण थिरत्तण होइ ॥
 मेस-ऽट्ठि-सिरा-चम्मावव(न)दसंपत्तमुयकरायारे । केकेल्लिडयाफल्लवविण्णाय णाणरहियाण ॥
 माउं जाति समुद्धो, पुणो पयारेण केण मेरु वि । सो पत्थि चिय भुवणे वि कोइ जो मिणइ जुवडमणं ॥
 माणगहियस्स चित्तं जायइ 'एसो वि माणुसो चेव । ता किं कएण एसस्स होइ वीणत्तणफलेण ?' ॥
 माणमयमोहियमई तं तं चिय कुणइ जेण बहुवियणे । पुरिसाददेसिवसेणं णिरणुसओ पंधले पडइ ॥
 माणमहागहण्हिओ अवमणियसेसपुरिससोवीरो । मरइ रणम्मि परत्थं णिरत्थयं कुणइ मणुवत्तं ॥
 माणुणयाण वि फुडं सामं गरुपत्तणं पयासेति । दंडसहाणं इहरा णराण वीणत्तणं कुणति ॥
 माणुस्सम्मि वि दारिहोसदोहग्गदूसयावयो । जम्मं विसयासासंपटंतदुद्धिओ समगमइ ॥
 माया पिया य पुत्ता भज्जा सयणो य नेहपडिपुण्णो । जम्मं जम्मं चिय होति णवर को तेसु पडिबंधो ? ॥
 मारुवविहट्ठियं पेय होइ जइ तरुदलं खणं पि थिरं । तइ विविहवाहिकलियं जियाण जीयं जए ण थिरं ॥
 मासो वि वरं चत्तारि जस्स गुणरत्तिवाओ जायति । सिंगारेणं च विणा जो अत्थो होति किं तेण ? ॥
 मिच्छाणुयत्तिणीओ मिच्छापरिविड्डयाणुरायाओ । दुक्खिणयपंधियाओ सुपडियं पि हु विडवंति ॥
 मुत्तं व्व पुण्णरासो जयम्मि जायति ते महासत्ता । जम्मोण जाण जायति णिन्नुया सयलजियलोया ॥
 मुत्तंतासुद्धिणिरुभरियवीयसरिस्सम्मि उवरवियरम्मि । तिवलीरेहालकिमसुद्धोणेज्जं ति पडिहाइ ॥
 मूलं धम्मरसं जयम्मि अप्पमाइत्तणं जए पडमं । जइयव्वं जइणा तेण सयलसुत्तिदियत्थेण ॥
 मोत्तण पक्खवायं सुद्धं कल्लिउण सत्तपुद्धीए । भोएहि सुद्धं जइ होइ किंचि ता साइसु फुडत्थं ॥

नारीनिन्दायाम्	९	२४
युवतीनां सुखानि	५८	३४
कर्मविपाके	८०	५७
धर्मकरणे	१८	१०
नारीनिन्दायाम्	९	२६
दैवे	५७	२२
शौचं	१७५	१
सत्त्वे	२०	१३
महापुरुषे	१७२	१
दुर्जने	३१८	५९३
पितृव्यमीभोगे	५६	५
दुर्जने	८	१९
निर्वेदे	३१३-१४	३९-४०
नीती	१८५	७६
अप्रमादे	३१६	५६९
जरायाम्	३०	९६
क्षमायाम्	३३२	७६५
शौचं	९५	१
विषयविरागे	९९	१९
सूयौ	२६	३५
वीर्ये	१५६	२०
संसारासक्तौ	६६	११०
यवासि	२३३	१६७
स्नेहे	१०९	३५
शौचं	२९३	२८९
कर्मविपाके	८१	८०
नारीदेहिनिन्दायाम्	१७०	१३
नारीनिन्दायाम्	६२	५८
माने	४९	२२३
मानपरिहारे	४८	२१६
„	४८	२१५
स्वमाने	६४	८६
विषयविरागे	२४७	२५
निर्वेदे	१३४	१
„	२४७	३२
कामे	३	४१
गणिकायाम्	३१४	५५५
महापुरुषे	१०४	१
नारीदेहिनिन्दायाम्	१७०	१५
अप्रमादे	३१५	५६५
विषयविरागे	९९	१६

इज्जमकजावासो, दारं परयस्स, सुकयपडिपंधो । दुक्खपरंपरहेक, पुणरुत्तमणत्थसंबंधो ॥
 रज्जं पि चलं जइ कइ वि जणइ जणियादिमाणसोक्खाइं । एकम्मि चैव जम्मम्मि गेइ णिहणं भवसयाइं ॥
 रण्णं पि होइ वसिणं जत्थ जणो हिययवण्हो वसइ । पियविरहियाण वसिणे पि होइ अउइए सारिण्हं ॥
 रविणा विणा तमोहेण णइयलं मदिलं णिरवसेसं । 'णिहुओ ता होति खलो परस्स खलियं ण जा लहइ' ॥
 रंभोरुगम्मसच्छहजं प्राजुवलं पि पंकयमुहीण । कम्मवसयं णरं किं धरेइ णरयम्मि निवडेत ? ॥
 राखउल-तक्करा-डसरिक्ख-डग्गि-णीरेण अवहियम्मि धने । जं दुक्खं होइ धणीण तस्स भाइ ण जिल्लोहो ॥
 रायाहितो जायइ गेहो सण्णत्थ जंतुणो धणियं । जो गेहो सो राजो, जो राजो तत्थ दोसो वि ॥
 रट्ठो पढमं हिययतरुम्भकुलसियतिव्वसंतावो । अप्पाणं चिय णिहुइइ रोइसाणोवगयन्ति ॥
 रहिरहंसपेसोयलम्भम्माम्नाहए अहरे । परिणयचिक्कलुप्पेक्खणम्मि राइए विण्णायं ॥
 रुठपणय पि पेम्मं विहइइ पडिक्कलवाए महिलायं । इय भाविकण सुंदरि ! पियाणुकुलं ववहरेज्जा ॥
 रुपं सा च मनोहरा चतुरता वक्खेनुकान्तिः स्फुटा, बिम्बोका हृदयज्जमाः स्मितमुधागर्भं च तपभाषितम् ।
 सावण्यातिशयः सखे ! पुनरसौ तप्रेक्षितं सष्टहम्, मुग्धायाधरितं नितान्तमुभयं तद् केन विस्मर्यते ? ॥
 इयं सक्कलपत्ती पन्नासु तस्सज्जं विणाजुत्तं । पन्नालक्षणमगम्यो न होइ वेवेहिं पुण्णेहिं ॥
 रे जीव ! तइं सइं चिय रइया दुक्खाण एस रिछोली । अमुणत्तेणाणत्थं धण-जब्बोण-जाइमत्तेणं ॥
 रोयणिमित्तं पावं, पावनिमित्तं तु अमुभया जोगा । अण्णाणमोहियमती ताण निमित्तं तुमं जीव ! ॥
 रुच्छी बहुच्छल चिय, जीयं बहुवसणसकडकडिहो । पहियं जियाण तह जोज्जणं पि विरसम्मि संसारे ॥
 रुद्धे वि हु मणुवत्ते खेत्ताइसम्मज्जोयजुत्ते वि । जायइ पुणो वि दुल्लो जयम्मि जिणभासिओ धम्मो ॥
 रुब्भंति आवियपडिक्कलपक्खलक्खा वि रज्जसंभोया । ण उणो संसारयक्कपडुद्धरणक्खमो धम्मो ॥
 रुब्भंति मणहरोवणयपवरसुरसुंदरीसणाहइं । इंदत्तणाइ, ण उणो णरेहिं मोक्खप्फलो धम्मो ॥
 रुब्भंति रुद्धकरि-सुरय-संदणुहामपक्काइक्का । णिब्बाणकारणं ण य कइ पि जिणभासिओ धम्मो ॥
 रुब्भंति रुय-सोहम्मक्कलियविण्णाणणाजविजाओ । ण उणो भवजलहिंभुज्जमाणजगतारणो धम्मो ॥
 रुब्भंति लोलोयणछडपहुब्भामसियावयंसाओ । रइयाओ रुव-सोहम्मसालिणोओ, ण जिणधम्मो ॥
 रुब्भंति विविहमणि-कणय-रयण-भवणोवहोयसंजुता । रिद्धिविसेसा, ण उणो कइ पि जिणभासिओ धम्मो ॥
 रुद्धाणिरयंविण्णायउ थोरसंसारसायकव्वहणं । जीए कएण तुल्लिजंति जयइ सा पिययमा लोए ॥
 रुद्धाणमुक्कलुक्कारपहरिणिब्भन्नसुद्धसंघाए । मरणं पि रणम्मि वरं भव्वाण, ण हु खलज्जुप्फेसा ॥
 रुद्धिज्जं मणुयमवं सोग्गदमणेक्कारणमणयं । माणिक्कं पिब दुल्लं विस्सयसंसेण हारविणं ॥
 रुद्धिज्जइ मयरहरो, अण्णा खिण्णइ भिगुम्मि थोरम्मि । पइसिज्जइ सुहजालाकराए हुयवहे कलिए ॥
 रुक्खज्जिओ चइज्जइ तणं च तुल्लिज्जं अत्थसंघाओ । अण्णा दिज्जइ अयसस्स खग्गधारए व जहिच्छं ॥
 रुद्धिज्जइ सुहिवयणं, ण वणिज्जइ गुरुयणो तुल्लं सीलं । लज्जा वि परिचइज्जइ सइ वधुयणेण पीसकं ॥
 रुद्धिज्जइ ? इयसंसारसायकव्वहणदुक्खपडिपंधो । आगामिज्जइ दइवस्स कारणा माणुसस्स जए ॥
 रुद्धाण-रुव-जोव्वण-सरीर-संधयण-कंति-सोहाओ । जीवाण जीवियं तह जलं च पतिसमयमोसरइ ॥
 रुद्धाणं रुवं जोज्जणं च महिलारुणा य सोहम्यं । माणंसिणीण माणेण पिययमणे विलिजंति ॥
 रुद्धे वि वणियं 'अप्पमाहणे होइ अत्थसंसिद्धी' । किं पुण जइणो पढमं जं जं धम्मसिद्धीए ? ॥
 रुद्धइ अहिं अहिं चिय चेत्ते धण्णो सुधम्मपच्छयणे । पावइ तहिं तहिं चिय सुहमउलं णरिथे संदेहो ॥
 रुद्धइ अहिं अहिं चिय भोगपिवासाए विण्णडिओ पुरिसो । पावइ तहिं तहिं चिय पुण्णेहिं विणा पर किलेसं ॥

वज्रप्रकोष्ठकरजामचपेटघातनिष्पिष्टदन्तिदशनोत्कटमौक्तिकौषः ।

सिंहः सहायविकलोऽपि दल्लखरातीनन्तर्गतं ननु सदैककमेव सत्त्वम् ॥

वणियाण वेमणाण य करसणिवाण य कमागया वित्ती । विक्कमभोज्जा जायइ पुहइ पुण णरवरिदाण ॥
 वयणं वयणं चिय होइ केवलं सयलज्जवपरिहीणं । णिव्वडइ भुयवलेणं जयम्मि पुरिसाण माहणं ॥
 वरमिह खाहरंभारताविणं लोहणिम्मियावयवं । उवगूह्जिज्जं सुत्तं महिलं ण उणो सरायमिणं ॥
 ववणयजोव्वणगरुयत्तणेण णिहुयाइं पवइक्खलाइं । सरसलिलाइं व सरए जराए जायंति हिययाइं ॥
 ववहरइ अण्ण[ह] चिय सुद्धताहाओ जयम्मि साहुजणो । मण्णइ तमण्णइ चिय दुद्धसभायो खल्लयणो सि ॥
 वसणम्मि ऊसवम्मि य एकवहाया हवंति सप्पुरिसा । 'जारिसओ चिय उयए अत्थमणे तारिसो सुरो' ॥
 वसणम्मि सभावडिए पयइ ण हु कइ वि सुपुरिसो सुवइ । 'राहुसुहगहियमुक्को वि तवइ सुरो भरावीवं' ॥
 वसणसयसंकडिल्लिम्मि खिवइ संसारसायरे महिला । जीवंतं चिय पुरिसं, मय पि णरए दुक्खारे ॥

राज्यभूतिनिन्दायाम्	१८१	२८
"	२१७	५६
प्रियसंबोधो	१२७	३७
दुर्जने	४६	१६९
नारीदेहिनिन्दायाम्	२८	७७
दारिद्र्यप्रशंसायाम्	३२२	६३७
रागपरिहारे	३३४	७५५
कोपे	३३२	७६०
नारीदेहिनिन्दायाम्	१७०	११
स्नेहे	१०९	३१
मुग्धायाम्	२१	१८
पुण्ये	१५५	८
निर्वेदे	१४४	५५
निर्वेदे	१४४	६०
"	१०५	२
जिनधर्मे	२५३	९४
"	२४९	५१
"	२४९	५३
"	२४९	५०
"	२४९	५२
"	२४९	४८
"	२४९	४९
नारीप्रशंसायाम्	२९	८८
क्षीयं	६०	४४
विरागे	९९	१८
स्नेहे	१२४	१९-२२
निर्वेदे	१४३	४३
मानपरिहारे	४८	२१४
अप्रमादे	३१६	५६७
धर्मपरणे	१६२	६०
दुर्भगे	११३	६९
सत्त्वे	२०	१७
क्षीयं	२४२	२७१
"	१३२	१६
नारीनिन्दायाम्	६२	५७
जरायाम्	३०	९७
दुर्जने	२९०	२४४
सहिष्णुतायाम्	६८	१५१
"	६९	१५६
नारीनिन्दायाम्	६१	५१

वस्तुपात्रयसौन्दर्यादपूर्वगुणमाप्नुवात् । स्वच्छं मौक्तिकतामेति श्रुक्तिमध्यगते जलम् ॥
 बाहिसयपौडियाणं क्रियाण जर-मरण-सोयतवियाणं । दोषणपरिहृत्तुवेद्याण भण कह ण गिन्वेओ ? ॥
 विणएण लब्भइ सिरी, लद्धा वि पलाइ दुक्खिणीयाण । णीसेसगुणाहाणं विणओ चिय जीवलोयम्मि ॥
 विणयुज्जुवाण किंनो विडसाऽऽणपणहयसहजयपडहो । धम्मो अत्थो कामो कलाओ विज्जा य विणयाओ ॥
 विष्फुरइ ताव देवो विहङ्गण-संघडणकरणतल्लिच्छो । जा ण तुल्लिज्जइ साहसधनेहि गिहसेकसारोहि ॥
 वियसंतदलउड्डम्मिल्लमालइसवलकुंतलकलावो । किं णरवडणवरणेक्कप्पलो जायइ पियाण ? ॥
 विसएहिं होरइ मणो जेसिं पुरिसाहमाण विरसेहिं । परिगलियसुहवियेयत्तणेण ते होतऽसपुसि ॥
 विसमदसावडियस्स वि जहक्कं जणियपुरिसवारस्स । जइ ण फलइ संपत्तो किंनो उण तह वि संपडइ ॥
 विसवविसमोहिवाणं रायमहागणपण्डसण्णाणं । होइ पडणं णराणं अवस्स बहुवेवणे णए ॥
 विसवसुहलालसाणं सुमग्गमंदायराण पुरिसाण । अमुणियसारविसेसाण गलइ इत्थंदिट्ठे अमयं ॥
 विसयाण कए पुरिसा विडंभणं तं जयम्मि पणति । जं साहिउं ण तीरइ वेवंतुप्पिअहियएहिं ॥
 विसयाण पसादो सो इसियसुत्तलसज्जणगुणाण । परिहरइ हियं, अहियं बहुमण्णइ जं जणो मूढो ॥
 विस-विसवाणं दो ह वि भणति अचंतमंतरं विडसा । सइ भुत्तं हणइ विसं विसया सरिया वि बहुसो वि ॥
 विहडंतदिव्य-आयंतवसण-वियलंतवंपुवग्गमाण । णियपुराणं चिय भीराण होइ वसणम्मि सुसहाओ ॥
 विहडंति चंडमास्यपणोत्तिया गज्जिऊण घणणिवाहा । उज्जोविऊण णासइ तव्वेलं चैव विज्जुलया ॥
 विहवाण वयग्गामं होइ पुत्तकलंकारणमणपं । सुत्तिमती विव चिता धूया धण्णाण ण इ जाया ॥
 विहिणो वसेण वडंति देव ! देवा वि देवलोयम्मि । 'अमर' सि णाममेत्तेण, जेण आउक्खवमुवेति ॥
 सुद्धसहाओ णवजोवणे वि भीराण भुंढरो होइ । इयराणं पुण सुद्धसणे वि णिव्वडइ तादणं ॥
 वीसंभजणियगहिए पळ्ळसम्भावपेमपसरम्मि । उवयारो कीरइ माणुसम्मि कत्तोअयं एयं ? ॥
 वेरग्गमणुसरंता णिंदंतु विलासिणीओ वरमुणिओ । किं पुण हियए ताण वि थण-णयणाडंवरं फुरइ ? ॥
 वेरमुवघावजणए उवयारी वंधवो सया होइ । कजावेक्खाए जओ मिता-ऽमित्तणम(व)वत्था ॥
 वग्गुणं च णिग्गुणं वा महाणुभावोहिं जं समायरिय । पालंति तं तह चिण जइ ण वि सीले विसंययइ ॥
 सग्गुणेहिं चिय पुरिसा पयडा चूडामणि ज्व विक्खवाया । सयलज्जणसलहणिजा पुब्भेति सिरिण भुवणम्मि ॥
 इयरे जं किंचि शुणं लहिऊण समुच्छलंति तुच्छण्णा । दुब्बलपक्खपरिग्गहगहिया सलह ज्व भुवणम्मि ॥
 सधं पमया पमयस्स कारणं पडरपधवावस्स । को होज विवेइ दूरओ ण जो तं परिचयइ ? ॥
 सण्णहणं दुग्गं आउडं च कज्जे कुणंति धीरस्स । धीरस्तरहियाणं णराणमण्यवहणिमित्तं ॥
 सदा पुब्बपसिद्धा अत्था सिद्धंतसायकल्लिया । मालागारस्स व होज मज्झ जइ को वि सोफुणो ॥
 सद्धम्मे पडिक्खीं गुरुचरणाराहणं च जियसेवा । सज्झाववावडंतं ण होति वेवेइ पुण्णेहिं ॥
 सपुसि चिय वसणं सहंति गरुणं विणिग्गयप्पावा । 'धराणं चिय सहइ जए वज्जिवायं ण उण तं' ॥
 सपुसि चिय णिव्वडइ आवया, ण उण पययपुरिसम्मि । 'लक्खिज्जइ मल्लिं ससहरम्मि, ण उणो विडणम्मि ॥
 सम्भावसंसणं महाणुभावाण जायइ जमिट्ठं । आसयवसेण अहवा सुहा-ऽसुहो होइ फल्लंभो ॥
 समवत्ती एस जओ एयस्स ण वल्लहो जए कोइ । वेसो वि गत्थि सुपुरिस ! सदेवमणुवा-ऽसुरे लोए ॥
 पावेक्कइ एस वल्लं, ण दुब्बलं गेय ईसरमण्डलं । ण य विडसं, ण य मुक्खं, ण य सवणजुयं ण एगारिं ॥
 ण जुवाणं, ण य बालं, ण परिणयं, गेय मज्झमे, ण खलं । ण य सज्जणमवि भुंछइ, पावमई रोहपरिणामो ॥
 संपज्जंतसमीहियक्कजाण वि एस सयलदेवाण । अवहरइ जीवियं, माणुसेहिं किं कीरइ इमस्स ? ॥
 समसिहरद्विवराइए दसणववएसजायमायाण । सियकुसुमकोपल्लप्येक्खणेण राजो परिफुरइ ॥
 समुहमिलिएक्केकाण कह णु आसण्णसंसयसहाओ । जायइ रणम्मि विसमे भवण मोत्तूण णिवविरियं ॥
 सयणु परियणु [? सयणु परियणु] वंधुवग्गं पि । भिच्चणु सुहिं सज्जु वि परि कलत्तु आणावडिच्छं ।
 अत्थुम्ह किल धरइ जाव ताव पुण्णेहिं समग्गल ॥
 सयला वि शुणा सहजा जयम्मि जायंति पत्तंसपत्ता । वण्णक्कम ज्व सुविहत्तभित्तिसंपत्तपरमाया ॥
 सवणा जे आसि कल्ललसंतरीधव्वलालसा सुहरं । सण्णाविहावियत्था वयपरिणामम्मि ते चैव ॥
 सविवेडतमज्जणवज्जियाओ मज्जायमुक्कलजाओ । हिययाणुकूलववसिवभणिएहिं जयं विमोहति ॥
 सव्वस्स एस मच्चू विओयकरणम्मि पक्खो धणियं । संजोयं ण उणो वुज्जइ पालंणं पावपरिणामो ॥
 सुव्वस्स वि एस गइ जं कयमण्णस्स रागवसणं । तं परिणमइ सइ चिय पुण्वज्जियक्कमदोसेणं ॥
 सव्वस्स वि एस गइ होही कालेण जीवलोयम्मि । णियक्कमऽज्जियवसगस्स जंतुणो किं य रुणेणं ? ॥

सत्सत्ते	१७	३
निवेदे	१०५	४
विनये	७०	१८६
"	७०	१८५
पुरुषार्थे	१३८	२
नारीदेहनिन्दायाम्	२८	७०
विषयविरागे	९९	२०
पुरुषार्थे	२३८	२१३
विषयविरागे	१७०	१८
"	९९	२२
"	९८	१५
"	४८	२०४
"	४७	१९९
शौचं	६१	४६
द्वैवे	६९	१६४
दुहितरि	१५३	२
द्वैवे	६९	१६३
धैर्यं	१२६	३१
स्नेहे	१२७	३८
कामे	३	४३
मित्रा-ऽमित्रविवेके	४४	१४१
प्रतिपन्नपालने	१११	५२
शुनिनि निर्गुणे च	६३	७४-७५
नारीनिन्दायाम्	३११	५१६
धैर्यं	६१	४९
कविलाधवे	४	५४
सुभगे	१५९	४३
सहिष्णुतायाम्	६८	१५२
"	६८	१५४
सद्विचारे	३२६	६८७
कृतान्ते	६९	१५९-६२
नारीदेहनिन्दायाम्	१७०	१७
शौचं	६१	४७
अर्थप्राधान्ये	३	३९
पात्रे	२९८	३६८
जरायाम्	२४७	१९
गणिकायाम्	३१४	५५६
मृत्यौ	६७	१२८
निवेदे	१४४	५८
मृत्यौ	६७	१२७

सन्धानं वि एस गती जयमि भावाण संभवताणं । संसारे बहुविदुक्खलक्ख-सयसोक्खपसरमि ॥	निर्वेदे	२४७	१५
सन्ध्यायकद्वय(यव)संपठसभगियव्वपेसल्लिआओ । जायंति वंधणं पेहवंधपरिपूडचिस्ताण ॥	गणिकायाम्	३१४	५५३
सन्धेण वि मरियव्वं जाएण जिणं केणइ निहेण । सयलमि जीवलोममि णूणमेस चिय जयठिइ ॥	सूयौ	२५०	५५
सन्धो वि जाणइ हियं, अप्पा सव्वस्स वल्लो होइ । किं विणासणकाटे विवरीयमइ मरो हवइ ॥	विपरीतमती	४५	१५९
ससणेहं सुद्धसहावयाए बवहरइ अण्णहा सुयणो । अण्णह वप्पेइ खलो सहुट्टभावेण दुट्टमती ॥	दुर्जने	३१८	५९२
सहयारमंजरिं वज्जिऊण महमाहियपरिमल्लुगारं । अहिलसइ अक्कलियं कहिं पि किं महुचरल्लुवाणो ? ॥	सुनारीस्नेहे	२१	१९
सहवड्डियण संजणियभोगण-उच्छायणेहिं अविसेतं । आकम्मं पडिबणं णिव्वहइ महाणुभावाण ॥	प्रतिपन्नपालने	२४१	२४८
संकाइसल्लरहियं सम्मत्तं जस्स होइ भुवणमि । तस्स परितो जायइ संसारो सुकयकम्मस्स ॥	कर्मविपाके	८१	९०
संधासो होइ परोपरण संतोस-धणसमिद्धीण । को समहिओ गुणेहिं मुद्धा-उद्धाडगणिहिं ? ॥			
सुद्धत्तणेण जायइ समुज्जलो तस्य णवर संतोसो । धणविहवो उण जायइ णिहसे कसणो तमोहो व्व ॥	संतोषे	३२२	६३३-३४
संजुज्जइ णिरवाएण भत्तिजुत्तो गुणेण जो जेण । अणलक्खिओ विं गुरुणा तं चेय गुणं पठजेज्ज ॥	गुरुसुभूषायाम्	२९९	३७४
संज्ञाभराय-जलवुब्बुओवमे जोव्वणमि मणुयाण । को पडिबंधो बहुवाहिवेयणोपव्विहमि ॥	गौबनानित्याये	२५२	८१
संतं पि हि वयणिजं परस्स ण भणंति सज्जणा णियं । इयरे मुत्तं गुणे दोसमसंतं पि पव्वंति ॥	दुर्जन-सुजनविवेके	४५	१५४
संपाडियसयलसमीहियथविचारवड्डियणं । कस्स व पुण्णेहिं विणा पवरणिहाणं धरमइ ? ॥	अतिथौ	२२५	१०९
संसारपूरणेण जायइ जाएण एव्व किं तेण ? । जस्स ण मरेइ भुवणतराइं किंती विवमंती ॥	कीर्त्तौ	५७	२९
संसारमहाड्डगकयविसयमायणिहयाए णडिणहिं । इह अमुणियसुहवरसेहिं स्तिजियं जंतुहरिणेहिं ॥	संसारासारतायाम्	२८	६९
संसारमावसंतस्स किं पि तं पडइ माणिणो कज्जं । जं छाडयुं ण युज्जइ ण य कहिउं णेय मरिसेउं ॥	स्वमाने	८	२१
संसारमि असारमि केइ ते णवर हंति सपुसि । जाण परमथकज्जुज्जवाण जम्मो सलहणिजो ॥	महापुरुषे	७५	१
संसारवत्तिमंतो णूण कसाया कयंति जंतुगणं । ओधीकुणंति सव्वं मय व्व पवियभियवियारा ॥			
अवहरिऊण सक्कं एते पररुवधारिणं काटे । जेति समुम्मग्गेण मंत व्व परव्वसं काटे ॥	कषायपरिहारे	३३२	७७०-७१
संसारसारभूओ पुत्तो चिय होइ सयलजियलोए । जस्स ण जायइ एक्को वि तस्स मणुयत्तणं विहल ॥	पुत्रे	७६	७
संसारव्विम्ममहाड्डेए भमिरस्स जंतुइरिणस्स । कस्स ण जायइ भीसणकयंतवाहाओ मरियव्वं ? ॥	कृतान्ते	२३६	१९९
संसारे बहुविदुक्खल्लेससयसंजुक्के असारमि । को णाम कयचिवेओ रमेज्ज सुहसंगवाम्भो ? ॥	संसारासारतायाम्	२९१	२५८
सा णवर सिरी दुक्खजिय्या वि महमहइ जीवलोममि । पेत्तं बल्ल सुइरं जा मुज्जइ पुत्तवग्गेणं ॥	पितृव्वमीभोगे	५६	४
साहंति असिद्धं पि हु चरियाइं कुं महाणुभावाण । 'किं कहइ केयइ णिययपरिमलं भमरविल्लयार्थं' ॥	कुलीनत्वे	२३९	२१९
साहीणे मोक्खपडे सुहपरिणामे य णियसमुत्थाणे । मूढत्तणेण लोओ विसए पत्थेइ बहुदोसे ॥	विषयविरागे	९९	२१
साहुणमेसाणजं दव्वं सइ खेस-कालमुणजुत्तं । देतो पावइ पुरिसो भोगे कालोचियाणंते ॥	कर्मविपाके	८१	६३
सील-दय-सीतितुत्ता दयावरा मंजुभासिणो पुरिसा । पाणवहाउ णिरत्ता सीहाऊ हंति संसारे ॥		८०	६२
सुइरं चित्तवत्तं पि इयसीरमि णत्थि तं किं पि । अवलंबिऊण जं फुरइ रायचित्तं मणुसाण ॥	देहासारतायाम्	१७०	८
सुत्तुम्मत्त-पसत्ते बाले महिलायणे व्व जो पुरिसो । पहरइ णिदियारणणिदिओ सो अदट्टवो ॥	नीती	२०२	२४१
सुद्ध पत्तं तारेइ जाणवत्तं व भवज्जलाहिंतो । णो बहवे पासाण व्व जे सइं चेय मज्जंति ॥	सुगुणै	३१२	५३३
सुयणस्स होइ सुयणो खलस्स भिसुणत्तं पि पयडेइ । कज्जावेक्खाए जओ खल-सुयणाणं पड्डाणं ॥	दुर्जन-सुजनविवेके	२	३२
सुरवइचावं विवळइ सणमेत्तं भूसिऊण गयणयलं । संज्ञा वि तक्खणं चिय किट्टइ कालाणुभावेण ॥	देवे	६९	१६५
सुविहत्तातिवल्लिगीमीरणाहिमग्गो वि सुंदरंगीण । णियकम्मपरिणइए ताणं मणयं पि किं कुणइ ? ॥	नारीदेहिनिन्दायाम्	२८	७५
सुहकम्मकंदवावियविसइसुहकिसलयाण गरुवाण । पुरिसाण संभवो ताण जाण उवमा ण संभवइ ॥	महापुरुषे	९३	१
सुह-दुक्खपरिणइवसविसेससंसायणेकरसियाण । कम्माण फलायइ को व अत्तणो संविडत्ताणं ? ॥	देवे	२१४	४३
सुहय ! तुमाओ अहियं णिययं चिय वल्लहं महं जीयं । तइ गच्छंते गच्छइ तयं पि, ता कीस मं सुयसि ? ॥	स्नेहे	१५८	२९
सुहि-पुत्त-मित्त-बंधव-सन्निहिय-साहोदरस्स ण हु रक्ख । पडियस्स मच्चुणो वयणदंतजंतउरालमि ॥	सूयौ	२५६	१२६
सुर-उग्गि-रयणतेयाउविणिजिओ दूरंविबरियवावो । जोव्वणतमो विवमइ मोहसहाओ धरणिमग्गे ॥	यौवने	७०	१८१
सुरस्स वि धरणि-गहंतरालविपुसियमकयतेयस्स । एक्कदिणे चिय णिययं उयय-उयमणाइं जायंति ॥	देवे	६९	१६७
सुरमग्गेण णासंति तारवा, होइ णिपहो चंदो । 'किं किं ण करेइ जए तेवपुत्तं विरंभेत ?' ॥	तेजोरक्षायाम्	४६	१७३
सोएण समे ण वसंति देव ! लच्छी जसो य किंती य । सोक्कं च रइ लोला विसएसु मणो-णिरावरणो ॥	शोके	६९	१७५
सा जम्मो जो मणुयत्तणमि, तं माणुसं जहिं विहवो । सो विहवो जस्स पियं, तं च पियं जस्स य पिहिं ॥	प्रियसंबोगे	१८०	५

सो णरिय चिय भुवणे वि को वि जो खल्ल तस्स माहप्पं । सण्डेदचारिणो सण्ववेरिणो हवकयंतस्स ॥
 सीयंति सण्वसत्थाइं तत्थ, ण कयंति भेत्तिणो मंता । अहिद्वपहपहरणम्मि तम्मि किं पोस्तं कुणइ ? ॥
 ण वलेय तस्स केणइ पडियारो, णेय संतजुत्तोए । आसेहिं रहवरेहिं स, अत्थो वि णिरत्थओ तत्थ ॥
 हस-गम-रहवर-पाइक्कवक्कपज्जुत्तपहरणेहिं पि । काळण परिस्ताणं ण स तीरइ जंतुणो मरणे ॥
 हंतुं जीवाण पण द्दसोडुइदमीसणाभोओ । वियरइ चोरकयंतो विगंकजो मत्तहत्थि व्व ॥
 हंतुणं परपाणे अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं । अप्पाणं दिवसाणं कएण णासेइ अप्पाणं ॥
 हियए अणिच्छमाणो(णे) वि गुरुयणे जत्थ होइ ण विरोहो । होइ सयत्थो कुसलस्स आयरो तम्मि कायव्वे ॥
 हिययद्वियदइयवसेण दुरगओ नेइ वीहरं दियहं । रयणीए पियमालावमुइयहियओ सुइं सुवइ ॥
 हिययं च भीरयासंतुयं ति को अप्पउण्यइं सहइ । करकोडिगोयराणं तरुणं किं दुक्करं करिणो ? ॥
 हिययाइं वेहरसियाण कमलदलकोमलाइं महिलानं । ताइं चैव विरत्ताण हंति करवत्तकडिणाइं ॥
 'हेट्ठाहुत्तं वचइ कसायसहिओ, द्दा विणा उट्टे' । इय मुक्किज्जं लज्जेति तेम वीरा कसायचयं ॥
 होइ गरुयाण वसणं ण उणो इयराण मुप्पसिद्धमिणं । ससि-सूर चिय पेप्पंति राहुणा, ण उण ताराओ ॥
 होइ जणसलहणिजो पिया वि पुत्तेहिं भुंजमाणीए । खरपवणुदधुवधयवंचवन्नाए सइ रावलवडीए ॥
 होइ विणीओ गरुओ, मुक्कत्तणं संपयाए पडमंगं । अविणीओ वि हु लहुओ, लहुत्तणं आवइए पयं ॥

६७	११८-२०
सुखी	२५६ १२४
कृतान्ते	१९७ १०१
मांसपरिहारे	१४९ २
सुखसुधुपायाम्	२९८ ३७३
नारीप्रणसायाम्	२९ ८६
शौचं	२९३ २९०
नारीनिन्दायाम्	२९९ ७४
कषायपरिहारे	३३२ ७७२
सहिष्णुतायाम्	६८ १५३
पितृलक्ष्मीभोगे	५६ ६
अविनये	६३ ७०



अष्टमं परिशिष्टम्

‘चउप्पन्नमहापुरिसचरिय’ अन्तर्गताः सूक्तिरूपा गाथांशाः

सूक्ति	पञ्चाङ्क	गाथाङ्क
अप्पाणमप्पणं त्वियं लहुया सलहति ।	४७	१९०
अंधल्लयपवासो जेय होइ दिणयरसएणं पि ।	५२	१३
आयवदंसणमेतेण सुसइ गोवयगयं वारि ।	२९१	२६७
इह कीरतं पावं पुणो वि समहिद्वए पुरओ ।	२१६	४७
ईसिं पि बल्लगो लोहपिद्वए बुद्धं गिरुतं ।	३१२	५३५
उज्जोयइ पुणससो ण इंदुलेहा जये सवलं ।	२९१	२६९
उज्जोयं पुणइ मणी कायमणीमज्झवारम्मि ।	३१२	५३४
उययाहिंतो णीहरइ तेयजुत्तो दियसणाहो ।	२९४	३०३
उवल्लो किं केण वि मग्गुत्तिण्यो रहो रविणो ? ।	६३	७२
करकोडिगोदराणं तरुणं किं दुक्करं करिणो ? ।	२९३	२९०
करगहियकंकणे दप्पणेण किं कज्जमइमुत्त ।	१८९	१२०
कालावसं ण साहेइ उज्जमाणं पणंपारे ।	२२९	२२०
किरणा तवंति भुवणं लोभो सूरस्स रुत्तेइ ।	६४	७८
किं एक्कम्मि कयाइ वि कोसे संठाइ खम्मजुयं ? ।	२९३	२९३
किं कइ केयइ णिययपरिमले भमरविलयाणं ? ।	२३९	२१९
किं किं ण करइ जए तेयपुत्तए विज्जंसे ? ।	४६	१७३
किं कुणइ दासकुम्भम्मि कोइ बालो वि हव्ववहं ? ।	२९१	२६४
किं कोइ कुणइ केसरि-करीण मयजुत्तसामित्ते ? ।	१६७	३०
किं कोइ सहइ दट्ठं णियदइयं अण्णहत्थययं ? ।	२९३	१८८
किं तमणियरं सूरु ण हणइ तन्नेलजाओ वि ? ।	१६६	१०
किंतु ‘विणासणकाले विवरीयमइ नरो हवइ’ ।	४५	१५९
किं तुंगिमाए तालस्स बुद्धपक्खोहिं विहयसीसस्स ? ।	१८१	२२
किं वणिहकणो कयइ जलेइ पउरिचणविट्ठो ? ।	२९१	२६८
कुलिसं णिदलइ गिरी, कयाइ णो महियपिडो ।	२९२	२७३
कुसलकरणेहिं मुज्झइ पायं पडिक्कलकयचित्तो ।	३२४	६५८
कुसले नयाहिवइणो सोहविरोहम्मि किं होइ ? ।	४७	१८५
को णाम कालकुट्टे कवलइ कवलेहिं जीयत्थी ? ।	३११	५१५
गुणाण रज्जइ जणो, ण रुवस्स ।	१८६	९३
गुणाहिओ इयरमंतरइ ।	४६	१७४
गुरुत्तणं संपयाए पडमंयं ।	६३	७०
जायइ जं जस्स तं तस्स ।	३१२	५३९
जारिसओ त्विय उयए अत्थमणे तारिसो सूरु ।	६८	१५१
जीयं पि पणंति परस्स ज्ञप्तिं निक्खेवयं खु रक्खंता ।	२७४	४४
जुवइए जविजंतस्स जीववणं होइ सकयत्थं ।	३१३	५४३
जोगम्मि य वरसिस्से गुरुणो संकमइ सयलविण्णाणं ।	३२७	६९४
जो जणइ अप्पणो त्विय भवाइ सो कइ परं जिणइ ? ।	२९४	३०४
जो ण कुणइ धम्मं सो खिवेइ णियमायणे छारं ।	२५३	९३
णत्थि किल सा अवत्था कम्मवत्ता जा ण संपवइ	१	१३
णत्थि पंथमेवाउ परा वयपरिणइ ।	२२०	७७

सुक्ति	पत्राङ्क	गाथाङ्क
गियचैट्ट चिय चीराण पवर हेउं विणासम्मि ।	४६	१६५
गियपक्खबलेणं चिय पडइ पयंगो पवीवम्मि ।	६३	६९
गियमज्जागयपरिहवकलेकिओ कि पि नवसेइ ।	१७५	२
गियमज्जायमपत्तो क्याइ कि रविरहो वणइ ।	६०	४५
गिस्सारा हौति गुणा साहिप्पंता सइ चेव ।	१४०	३७
गिहसे सत्ते चिय संठवेइ अधिरं पि धिरचिणं ।	३१०	५०५
गिहुओ ता हौति खलो परस्स खलियं ण जा लहइ ।	४६	१६९
गेय रुददारिदसमो वि हु परिहवो ।	२२०	७७
तं णत्थि संविहाणं संसारे जं ण संपडइ ।	६५	गणे
तं ' हयमाणो पुरिसो कल्लाणपरंपरं न्हइ ' ।	४९	२१९
तिज्जाययं दुमो रचेव सहइ, णो किसलउब्भेओ ।	२९१	२६६
तेयरक्का जए मइइ ।	४६	१६६
तेयंसी सव्वहा जयइ ।	४६	१७०
राहुज्झिताऽहिमहणेण मंतिणो कि पि सामत्थं ? ।	४७	१९६
धरणि चिय सहइ जए वज्जिवियं, ण उण तंतु ।	६८	१५२
परपरिभवं सइतस्स होइ कि मरुवया लोण ? ।	१८१	२२
परसंसिया चिराओ वि गियपइ जाइ पइभत्ता ।	२९५	३१९
पासयणिवदयं पिव आवडइ पुक्कयकम्मं ।	३१२	५३८
पीइ जह सज्जणस्स एक्करया पुक्खं विसंपडिज्जइ, दुक्खं चिय विहट्ठिया पडइ ।	४७	१८४
भावविसुद्धीए विणा जो हु तवो सो लुद्धामारो ।	२८०	९३
मइलं ण सहइ पयावी ।	४६	१७१
मरणवाहि ण हु जायइ अण्णभयं परं ।	२२०	७०
मंसम्मि स्वग्गपारा तिण्हा, ण उणाइ वज्जम्मि ।	१२६	३२
मारैइ य मरंतं ।	११२	६४
मूयक्खियं पि पुरिसं गिययगुणं चिय पयासेति ।	२३९	२२०
राहुमुहगहियमुक्खो वि तवइ सूरु भरावीइ ।	६९	१५६
लक्खिज्जइ मलियं ससहरम्मि, ण उणो विडणम्मि ।	६८	१५४
लक्खी पक्खिलइ अहण्णो ।	११२	६२
लज्जइ जणे पायं पारदपरिहारी ।	३२४	६५७
लहुत्तणं आवइए पयं ।	६३	७०
वायाए भवणं महिलियाण, ण उणो सुवुरिसाण ।	१८९	११९
विरहियवत्सावे पुण लक्खी वि ण मइइ अहिलसिउं ।	२३८	२१४
वेयणा वि ण लुहाए समा किर जंतुणो ।	२२०	७७
सच्छासयाणुरोहेण सुवुरिसा किं व ण करेति ? ।	१९२	१५४
सत्ताविहुणो सज्जस्स सहइ गुरुपरिभवमसज्जं ।	१८१	२१
सरित्तणं ण पावेंति कायमणिणो महमणीणं ।	२८४	१४१
सव्वंगसुराहिणो मरुवयस्स किं कुसुमणियरेण ? ।	११८	२
सत्ति-सूर चिय पेणति राहुणा, ण उण ताराओ ।	६८	१५३
साहति असिउं पि हु चरियाइ कुलं महाणुभाषाणं ।	२३९	२१९
सित्तिरत्तणं ण सित्तिरो वि कुणइ जलणस्स पइवत्तो ।	६८	१५५
मुण्णे उलम्मि वीचयदाणं भण कि गुणं लहइ ? ।	३३४	७९१
हरिणो करिकुंभवियारणम्मि किं परवत्तावेक्खा ? ।	२९४	३०८



शुद्धिपत्रम्

पत्राङ्क पंक्ति अशुद्ध

३	१३	खज्जह
॥	२३	भविस्सइ
४	३७	जंतं
५	३७	वि
११	२६	पहुडहत्थं
१२	१३	पुडि गयं गयणं ॥२६॥
१३	११	भुसिउ कउ
		सुहालोआ
॥	१५	खीइ
॥	२५	सणवहा
॥	३३	मत्थि
१४	३७	तत्थस्सु
१८	३३	धुत
१९	५	गेहान्ते
॥	९	वाहि
२०	३३	तद्दपम्
२२	२९	विलासे
२४	३	तद्भुवि
॥	२३	भणियण्वं
॥	३१	लिखिता
॥	३२	केनापिभुतः
२५	३१	हिं
२६	१४	कपूरं
॥	३२	युवते
२८	२५	ललियं
॥	३२	७ महा
२९	१९	पुण्णासि
॥	३३	तयो कम्मं
३१	५	हाणोपुत्तो
॥	११	चउकण
३२	४	दियाआ
॥	२८	कम्ममोहं
३३	३१	बहुस्सुयं
३४	३०	तरणिं
३६	२५	णधिरसच्छरं
३८	२	णीलपं
॥	२३	कलालं

शुद्ध

खज्जह ?
भविस्सइ
जंतं
वि
पहुडहत्थं
पुडिगयं गयणं ॥२६॥
भुसिउ [?भुवण भुसिउ]
कउ सुहालोओ
खीइ
सणवहा
मत्थि
तत्थ सु
धुतं
गेहान्ते
वाहि
तद्दपम्
विलासै
तद् भुवि
भणियण्वं
लिखिता ।
केनापि भुतः
हिं
कपूरं
युक्तं
ललियं
८ महा
पुण्णा सि
तयो कम्मं
हाणो पुत्तो
चउकण
दिया । आ
कम्ममोहं
बहुस्सुयं
तरणिं
णधिरउच्छरं
णील-पं
कला-लं

पत्राङ्क पंक्ति अशुद्ध

३८	२८	इयासु य कं
३९	११	खत्तिया
॥	१५	वहसेण
४१	२४	सणगं
४२	३४	देव ?
॥	३५	लंछं
४३	८	ससिसुरे
४४	११-१२	भरहं इत्यारम्भ 'किमवसेसं ?' इत्यन्तः पाठ आर्याछन्दो ज्ञेयम् ।
॥	१३	मववत्था
४५	१८	त्ति । तुम्हा
४७	४	सुपुरिस ?
॥	१३	हिआजं
४८	१५	णगुणे
५०	६	(५ ?)
॥	८	किंचि
॥	१५	जोवणगु
५१	२६	लक्ख बा
॥	२८	अदुत्तर
५२	२६	केसि च
५३	२५	णुसए ण
५५	३५	(१ वं)
६३	३०	जे होति
६४	१०	कओए स
॥	२४	चिये
६५	२८	संभाचेरं
६७	२५	एसो
॥	३०	पाडया पं
६९	११	मणुयासुरे
७१	१९	लया अमोहं
॥	२५	समीतिभिः
७४	१३	णिस्सीलव्वओ
७७	शीर्षके	सुमतिं
७९	॥	सुभतिं
८०	३	पाणिणं
॥	८	किञ्चिसियं
॥	११	जम्मणमणिद्धं

शुद्ध

इयासुय(इयाइसु) कं
खत्तिया,
वहसेण
सणगं
देव !
लंछं
ससि-सुरे
म(व)वत्था
त्ति तुम्हा
सुपुरिस !
हिआ जं
ण गुणे
(१ वं)
[१ ण] किंचि
जोवण-गुं
लक्खवा
अदुत्तर-
केसिचि
णुसएण
(१ वं)
ते होति
कओ एस
चिय
संभाचे(पा)रं
एसो
पाडयापं
मणुया-उसुरे
लयाअमोहं
समितिभिः
णिस्सील-वओ
सुमतिं
॥
पाणीणं
किञ्चिसियं
जम्मण मणिद्धं

पत्राङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पत्राङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	१७	६९	७९	१५६	१	यणाऊ ण	य णाऊण
८३	१	"चरियं	"चारियं	"	३४	सुपुस्तके	सुपुस्तके
"	२६	णं दिखं	"धं दिखणां	"	"	लज्जा	लज्जा
८८	२८	"बाहुलियां	"बाहुलियां	१५७	५	परलोयां	पर लोयां
९९	३३	पसिद्धि	पसिद्धि	"	१६	विज वट्टंभं	वि भवट्टंभं
१०४	१७	सिद्धि मणुं	सिद्धिमणुं	"	"	"मेओ पडिहारजा-	"मेओ । पडिहारजाणाविओ
१०६	३६	(त्थि	(त्थि)	"	"	णाविओ ।	
"	"	"य	"यं	१५८	१४	सीयवडो	सियवडो
१०७	३५	सवारउ	संवरितं	"	१७	"ससुद्धं	"समूहं
१११	३३	"विलय	विलयं	"	२७	णइं	भइं
११३	३४	तइयभं	तइ(पुरि)यभं	१५९	३७	करंति	करंति
११७	२२	"पेम्मवसं	"पेम्मरसं	१६०	२२	"वलक्खिया	"वलक्खिया
"	३२	"पेम्मरसं जे ।	"पेम्मवसं सु ।	१६३	४	अरत्थियरं	अरत्थियरं
११९	१३	"लोयण	"लोयणं	१६६	२	"बहिरियं	"बहिरियं
"	२१	मुउइसीए	चउइसीए	"	३३	पुत्तयं ?	पुत्तयं ।
१२०	२३	"एणउ इयरु,	"एणउ, इयरु	१६९	३	माहणं ?	माहणं
१२१	३४	तस्समीव	तस्समीवं	"	२०	जंजुहीवे	जंजुहीवे
१२२	२१	गओ	गओ	१७५	१५	मारीय-मयं	मारीयमयं
१२३	३३	"संघरिं	"संघरिं	"	३२	तेसिं	तेसिं
१२४	८	वि तिण्णि	वि तिण्णि	"	३३	"णिज्जुयं	"णिज्जुयं
"	१५	फिसमो	फि समो	१७७	१७	"इकतेहि	"इकतेहि
१२७	१०	धिण्णइ	धिण्णइ,	१७९	४	"कूड पण्णओ	"कूडपण्णओ
१२९	२८	"पसरं ।	"पसरं,	१८०	११	महिला रयणं	महिलारयणं
१३०	१४	"चरियं	"चरियं	१८१	३३	"कुतं	"कुतं
१३४	१	पुरिससहिं	पुरिससीहं	१८३	२९	"महण वत्तं	"महणवत्तं
"	११	सुणं	सुणं	"	३५	जरासिधो	जरासिधो
"	३२	दुक्खं	दुक्खं	"	३८	समइकते	समइकते
१३८	२८	अलद्ध भेज्ज	अलद्धभेज्ज	१८४	३४	"सदिट्ठं	"सदिट्ठं
"	३०	"तवयणे	"तवयणे	१८५	३७	"लावेहिं	"लावेहिं
१३९	३३	चित्तो	चित्तो	१८६	२३	वाहओ(ए)	वाहओ
१४६	२४	"णंदिओ	"णंदिओ	१९०	१४	वलं	वलं
"	३०	गाथेय	गाथेयं	१९२	६	कन्तियरहिउ	कन्तिर रहिउ
१४७	३५	णाम जे	जे	"	३२	णिरुद्धं मे	णिरुद्धा इमे
१४८	२८	"वेदिदेण	"वेदिदेण	"	३३	कत्ती	कत्ती
१४९	७-८	"अत्थियं" इयारम्भ "खाहि" इयन्तः पाठ आर्याछन्दो ज्ञेयम् ।		१९४	२४	"शुल्लन्तं	"शुल्लन्तं
१५०	२१	"वट्ठित्तणं	"वट्ठित्तणं	१९५	१९	ताएइहं	ता एइहं
"	२५	वट्ठ-माणं	"वट्ठमाणं	१९६	३०	सम्मणिया	सम्मणिया
"	३२	"व-ओ	"वओ	२०४	२७	इयसा	इयसा
१५२	१०	"सुहेणं वं	"सुहेणं [!वइण्णताणं] वं	२०८	२९	"सिद्धत्थं	"सिद्धत्थं
"	२९	"लं	"लं	२०९	१	"सय-डकं	"सयड-डं
१५३	३२	णेव्वुय	णेव्वुयं	२११	३५	कहं	कहं
१५४	१४	"भरणाओ ।	"भरणाओ	२१३	१	"णचेवडां	"णचेवेडां
				२१६	२९	सुभदा पं	सुभदापं

पत्राङ्क पंक्ति अशुद्ध

शुद्ध

पत्राङ्क पंक्ति अशुद्ध

शुद्ध

२१७	३५	धिदुब्ब	धिदुब्ब
२१८	७	कीरंति	की(ती)रंति
"	३५	६७	६८
२१९	२७	पवरजल	पवरजाल
२२१	२९	डड्ड	दड्ड
"	३७	"वियणा"	"वियणा"
२२४	१९	"चल-यत"	"चलण-त"
२२६	३५	पञ्चत्वा	पञ्च चत्वा
२२८	५	"वडियस्स	"वडियस्स
२२९	२०	"हसुविणो	"हसुविणो
२३०	२	"विवर	"विवरं
"	१२	हत्थे	हत्थे
"	२२	ण लद्ध	णलद्ध
२३१	१२	"ल [गियय] सु"	"ल[गियय]सु"
"	२७	विउज्झए	विउज्झए
"	३४	सहोहि कहियं	सहोहि कहियं
२३२	१४	भणियं	भणियं
२३५	२५	"भंगिपण्ण"	"भंगि पण्ण"
२३७	१३	एवं	एवं
"	३४	॥२११॥	॥२१२॥
२३८	३५	"लकिए	लंकिए
२४३	३३	णयारि	णयारि
२४८	शोधके ५२	वंभयत्तवक्कवट्टि- चरिय	चउत्पन्नमहापुरिसचरियं
२४९	८	पहाविको	पहाविओ
२५२	२६	णिवेसइ	णिवेसइ
२५३	१	णिहिस्से [ण]	णिहिस्से[ण]
२६३	३०	भयस	भय(व)स
"	३२	२३१	२३२
२६६	१३	तह रुंद	तह रुंद
"	२४	"गाहिष्ण"	"गाहि ष्ण"
"	२५	महुण(र)व	महुण(सुहल)व
२६७	१६	सुविसइ	सुविसइ
"	३४	"सरयवु"	"सरयवु
२६९	२९	सीलक	सीलक
२७१	२६	मिच्छामि	मिच्छा मि
२७२	३३	तेहि	तेहि
२७६	१०	तओ त वि	तओ वि
२७८	८	विहरिउं	विहरिउं
"	१०	तडपा	तडपा
"	१२	"डुत्तरागा"	"डुत्तरा(र)गा"

२८०	२८	पोसिऊण	पीसिऊण
"	३०	"बालं	"बालं
२८१	३२	संचरिउं	संचरिउं
२८२	३३	"विम्भमा	विम्भमो
२८३	५	वदूष	वदूष
२८५	२६	णिसिबरो(र)	णिसिबरो
२८६	५	"वसमार"	"वसभा(वसाSS)र"
"	"	अयालचकं	अयाल(लाय)चकं
२८८	१२	"रद्धं	"रद्धं
२९०	२२	समइच्छिए	समइच्छि[मा]ए
२९१	५	धण्णो	धण्णो
"	१२	चचलणेसु	च चलणेसु
"	३०	"परिणया	"परिणया,
२९३	३४	लंघिऊण	लंघिऊण
२९४	३२	वहुयउ	वहुयओ
"	"	"संगउ	"संगओ
२९६	२७	"रुप्पाइय"	"रुप्पाइय"
२९७	२९	तुमए !	तुमए !
२९९	८	सलयलो	सलयणो
"	१७	"वालि(लु)या"	"वालिया"
३००	११	"हणन्त"	"हण[-]न्त"
"	३४	गाथाविस्मि	गाथाविस्मि
३०१	२१	पुणोवि	पुणो वि
३०४	२७	"पज्जा(वज्जो)हार"	"पज्जोहार"
३०५	१२	"पुट्ठव्व	पुट्ठ व्व
"	२८	"घोलत"	"घोलत"
३०८	१६	भगवया-	भगवया-
३०९	१७	वीरिया	वीरिया
"	३४	वीरिया जे	वीरिया सु
३१०	१	"परिवरो	"परिवारो
३११	१३	महिला	महिला !
३१४	१६	विचित्तं	विचित्तं
"	२२	दिपहा	दिपहा
३१६	२६	अपमई	अपमई
३१७	१४	पडिस्	परिस
३२०	२८	दाउ	दाउं
३२१	१०	जणस्स	जणस्स
३२२	२८	तुक्को	तुक्को
३२४	२१	"हिप्पाजा	"हिप्पाओ
३२५	२१	बहु जाइ	बहुजाइ

पत्राङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पत्राङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२९	२२	"णिग्विडित"	"णिग्वि(ः)डिय"	३५६	११	वैद्यो	वैद्यी
३३४	३	पासिद्धि	पासिद्धि	३५७	शीर्षके	"सज्जहः	"सज्जहः
"	२१	"विग्घ हेउ	"विग्घहेउ	३६२	७	"वणना	"वर्णना
"	२८	परिसे"	परिसे"	"	१३	"	"
३३५	२०	सर्वज्ज	सर्वज्ज	"	१८	"	"
"	२१	"साण्येकादशैव	"साण्येका(आण) दशैव				

